फ़ज़ाइले आमाल

भाग–1

* हिकायाते सहाबा रज़ि०
* फ़ज़ाइले नमाज़
* फ़ज़ाइले तबलीग़
* फ़ज़ाइले ज़िक्र
* फ़ज़ाइले रमज़ान
* फ़ज़ाइले कुरआन मजीद
* फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
* मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज

शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०) कांधलवी

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً

Click-->

फ़ज़ाइले आमाल

जिसमें आठ किताबें शामिल हैं।

जिल्द अव्वल

1. हिकायाते सहाबा रज़ि०
2. फ़ज़ाइले नमाज़
3. फ़ज़ाइले तब्लीग़
4. फ़ज़ाइले ज़िक्र
5. फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद
6. फ़ज़ाइले रमज़ान
7. फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
8. मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज

लेखक :

हज़रत मौलाना अल-हाज्ज अल-हाफ़िज़

मुहम्मद ज़करिया साहब रह०

मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर

ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि०)

2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

قال النبي صلى الله عليه وسلم بلغوا عني ولو آية
कालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बल्लिग़ू अन्नी व लौ आय
फ़ज़ाइले तब्लीग़
जिसमें
तब्लीग़ की अहमियत और उसके आदाब नीज़ मुबल्लीग़ीन और
आम लोगों के फ़राइज़ बताये गये हैं।
जिसको
बकीयतुस्स लफ़, हुज्जतुलख़ल्क़ हज़रते अक़दस अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़
मौलाना हज़रत मुहम्मद इलयास साहब नव्वरल्लाहु मर्क़ द हू
बानी सिल-सिला-ए-तब्लीग़ बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन, दिल्ली के तामीले इर्शाद में
हज़रत मौलाना अल-हाफ़िज़, अल-हाज्ज मौलवी मुहम्मद ज़करिया
शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपूर ने तालीफ़ फ़रमाया
प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद
ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, अहाता इज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

बेशक उनके किस्से में (बड़ी) इबरत है
समझदारों के लिए

Click-->

हिकायाते सहाबा

यानी

सच्ची कहानियां

जिसमें

हज़रत मौलाना अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़ अश्शह अब्दुल क़ादिर साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि के इर्शाद से
फ़ख़रुल अमासिल ज़ुब्दतुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़ अल-मुहद्दिस मुहम्मद ज़करिया साहिब रह०

शैख़ुल हदीस, मदरसा मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर ने
सहाबी मर्दों, सहाबी औरतों, सहाबी बच्चों के ज़ुहद व तक़्वा, फ़क़्र व इबादत, इल्मी मशाग़िल, ईसार व हमदर्दी, बे-मिसाल जुरात व बहादुरी, हैरत अंगेज़ जांबाज़ी वग़ैरह के ईमान-अफ़रोज़ हालात बयान किये हैं।

प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद

ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, मोहल्ला हज्जन चौ. लाल कुआँ, देहली 6

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

हम अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र अदा करते हैं कि उसके फ़ज़्ल से उर्दू की मशहूर किताब 'तब्लीग़ी निसाब' जिल्द अव्वल का हिन्दी एडीशन पेश करने की हमें तौफ़ीक़ हुई है।

आज हमारे मुल्क में हिंदी का जैसा कुछ चलन है, इसे कौन नहीं जानता। मुल्क के कई सूबों में हमारे भाई सिर्फ़ हिंदी जानते और उसी में पढ़ते लिखते हैं। उर्दू उनके लिए अजनबी ज़बान बन गयी है। उन्हें इस्लामी तालीमात में से वाक़िफ़ कराने।, इस्लामी तारीख़ के ईमान बढ़ाने वाले वाक़िआत बतलाने, नमाज़ क़ुरआन मजीद, ज़िक्र, दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल समझाने और दीन की तब्लीग़ की फ़ज़ीलत और अहमियत से वाक़िफ़ कराने की शदीद ज़रूरत एक अर्से से महसूस हो रही थी। इन तमाम बातों की जामेअ किताब 'तब्लीग़ी निसाब' का इंतिख़ाब इसी लिए किया गया और उसका हिंदी एडीशन तैयार कराने की पूरी कोशिश इसी लिए की गयी, ताकि अपने भाइयों की इस ज़रूरत को पूरा किया जा सके।

हमने इस किताब की तैयारी में शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया की ख़्वाहिश वा उनकी ज़बान को, जैसी कुछ वह है, देवनागरी लिपि में बदल दी है। जहां बहुत ज़्यादा मुश्किल लफ़्ज़ आ गये हैं, उनकी हाशिए में तशरीह कर दी है ताकि लोगों को समझने में परेशानी न हो। अरबी मतन भी दे दिया गया है ताकि अरबी जानने वाले भी फ़ायदा उठा सकें या उसकी बुनियाद पर अरबी जानने वालों के मश्विरे भी लिए जा सकें और मफ़्हूम समझने में आसानी हो जाए।

अल्लाह तआला से दुआ है कि उर्दू एडीशन की तरह यह भी पढ़ने वालों के लिए ज़्यादा फ़ायदा उठाने की वजह बन जाए, आमीन!

हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० की

हालाते ज़िन्दगी

पैदाइश

हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० 'कांधला' में रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० में पैदा हुआ। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० के वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुहम्मद यह्या साहब रह० उस ज़माने में हज़रते अक़्दस मौलाना रशीद अहमद गंगोही कि ख़ानक़ाह में रहते थे। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० को भी बचपन में वहीं ले गये थे।

तालीम

गंगोह में डाक्टर अब्दुर्रहमान साहब के पास आप ने तालीम की 'बिस्मिल्लाह' की और उन्हीं से 'क़ायदा बग़दादी' पढ़ कर ख़त्म किया। इब्तिदाई क़ायदा सीपारा पढ़ने के बाद क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ किया। इस के बाद उर्दू दीनियात की इब्तिदाई किताबें और फ़ारसी की इब्तिदाई किताबें मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि से गंगोह में पढ़ीं, उस वक़्त आप की उम्र बारह-तेरह साल की थी।

इस के बाद मौलाना मुहम्मद यह्या साहब मय अह्ल व अयाल के सहारनपुर चले गये। गंगोह में आप का किताबों का तिजारती कुतुबख़ाना था, चुनांचे सहानपुर में भी यह काम जारी रहा और मदरसा मज़ाहिरुल उलूम में मुदर्रिस (टीचर) हो गये। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० की बाक़ी तालीम सहारनपुर ही में हुई। मंतिक़ (तुर्क शास्त्र) वग़ैरह की किताबें हज़रत अब्दुल लतीफ़ साहब मोहतमिम मदरसा मज़ाहिरुल उलूम और मौलाना अब्दुल वहीद साहब संभली से पढ़ी।

हदीस की किताबें, अलावा दूसरे असातज़ा (उस्तादों) के ख़ुद अपने वालिद मौलाना मुहम्मद यह्या साहब रह० से भी पढ़ीं। पढ़ने के ज़माने में आप ने बड़ी मेहनत और शौक़ से पढ़ा। वालिद साहब को भी आप की तर्बियत और तालीम वग़ैरह का बहुत ख़्याल था। अक्सर सबक़ों में निगरानी फ़रमाते थे। किताबों के और उस्तादों के एहतराम की बहुत ताकीद फ़रमाते थे। हदीस शरीफ़ की तरफ़ वालिद साहब रह०

भी उनको लगाना चाहते थे और खुद उनकी भी तबियत उसी में लगती थी।

उस्ताद की हैसियत से

तालीम से फ़ारिग़ होने के बाद मुहर्रम 1335 हि० में आप मदरसा मज़ाहिरुल उलूम में मुदर्रिस हो गये। शुरू में इब्तिदाई किताबें पढ़ाने को मिलीं, 'उसूले शाशी', 'इल्मुस्सीग़ा', इससे अगले साल में 'मक़ामाते हरीरी' 'सबअ: मुअल्लक़', पढ़ाए। इसके बाद मिश्कात पढ़ाई और ये सब किताबें बड़ी मेहनत और मुताला से पढ़ायीं। मुदर्रिसी के छठे या सातवें साल में आप के पास बुख़ारी शरीफ़ के तीन पारे आए और उनके साथ ही मिश्कात भी जारी रही।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी जो मदरसा मज़ाहिरे उलूम के शैख़ुल हदीस थे और हज़रत शैख़ुल हदीस रह० के उस्ताद और पीर व मुर्शिद थे। उन्होंने जब अबूदाऊद शरीफ़ की शरह 'बज़्लुल मज्हूद' लिखना शुरू की तो उस में शुरू ही से हज़रत शैख़ुल हदीस रह० को अपने काम में मददगार की हैसियत से रखा। किताबों में मज़ामीन तलाश करना उन को मुनासिब मक़ामात पर हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० की हिदायत के मुताबिक़ नक़ल करना और जो इम्ला करायें, उसको लिखना यह काम हज़रत शैख़ुल हदीस साहब रह० करते रहे। आख़िरी दौर में कुछ और ज़िम्मेदारियां भी आप के सुपुर्द हो गयीं थीं।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी को हज़रत रह० के ऊपर काफ़ी एतमाद था और आप के काम से ख़ुश थे, इस लिए जब आप ने हज का इरादा किया तो हज़रत शैख़ुल हदीस साहब को भी अपने साथ ही ले गये। वहां भी शरह अबूदाऊद का काम जारी रहा और शैख़ुल हदीस साहब रह० असिस्टेंट रहे, क्योंकि असल ग़रज़ आप के साथ जाने की यही थी कि शरह अबूदाऊद के काम में मदद देते रहें, चुनांचे हज़रत सहारनपुरी ने वहां मुस्तक़िल क़ियाम फ़रमाया। लेकिन मदरसा मज़ाहिरे उलूम में मुदर्रिस की ज़रूरत थी, वहां के तक़ाज़े की वजह से हज़रत सहारनपुरी ने हज़रत शैख़ुल हदीस साहब रह० को शैख़ुल हदीस के ओहदे पर लगा कर हिंदुस्तान भेज दिया और बैअत की इजाज़त भी दे दी।

हिंदुस्तान आने के बाद शैख़ुल हदीस साहब रह० पूरी तवज्जोह के साथ पढ़ाने के कामों में लग गये। इसके साथ ही 'औजज़ुल मसालिक' शरह मुअत्ता इमाम मालिक का काम भी जारी रहा, जो कि हिजाज़ के क़ियाम के ज़माने में ही शुरू कर दिया था।

किताबें

'औजज़ुल मसालिक, शरहे मुअत्ता इमाम मालिक' (छः जिल्दें) यह आप की चालीस साला मेहनतों का निचोड़ है। हिजाज़ तक के बड़े-बड़े उलमा इसकी तारीफ़ से नहीं थकते। इसमें से कुछ ऊंचे क़िस्म के उलमा का कहना है कि अगर इस किताब के मुसन्निफ़ (लेखक) किताब के शुरू में अपना हनफ़ी होना न लिख देते, तो हम उन्हें कभी भी हनफ़ी न समझते, बल्कि मालिकी ही समझते, क्योंकि फ़िक़्हे मालिकी की तफ़्सीली बातें इतनी ज़्यादा इस किताब में जमा की गयी हैं कि उनका एक ही वक़्त में किसी और मालिकी फ़िक़्ह की किताब में मिलना मुश्किल है।

इसी तरह 'लामिउद्दरारी अला जामिअिल बुख़ारी' (तीन जिल्दें) कौकबुद्दर्री (दो जिल्दें) 'जुज़ हज्जतिल विदाअ' और 'अल-अब्वाबु वत्तराजुम लिल बुख़ारी मुतअद्दद' जिल्दों में उन की हदीस की ख़िदमत का बेहतरीन नमूना है।

जैसे जैसे मुताले का शौक़ बढ़ता रहा, और नज़र में फैलाव होता रहा, नयी-नयी किताबें लिखते गये। अब आप की तमाम किताबों की तायदाद 89 है, जिन में 29 छप चुकी हैं और बाक़ी अभी नहीं छप सकी हैं।

हज़रत शैख़ुल हदीस की किताबों में 'औजज़ुल मसालिक' सब से ज़्यादा मशहूर किताब है। इसके अलावा सुनने तिर्मिज़ी शरीफ़ पर मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही मर्हूम की तक़रीरात, जो शैख़ुल हदीस रह० के वालिद हज़रत मौलाना यह्या साहब ने अरबी में लिखी थीं, आप ने उनको भी छापा और उन पर मुख़्तसर हाशिए भी लिखे। इसी का नाम 'कौकबुद्दर्री' है, यह दो जिल्दों में है।

हज़रत शैख़ुल हदीस की एक किताब 'ख़साइले नबवी' भी है। यह असल में इमाम तिर्मिज़ी की किताब 'अश-शिमाइल' का उर्दू तर्जुमा है। इस में जगह-जगह अरबी और उर्दू हाशिए भी हैं।

फ़ज़ाइल की किताबें

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रहमतुल्लाहि अलैहि, जमाअते तब्लीग़ के बानी ने यह महसूस की कि तब्लीग़ी जमाअतों में शिर्कत करने वालों के मुताले और उनकी मज़हबी और दीनी मालूमात के लिए कुछ किताबें लिखी जाएं। चुनांचे आप ने हज़रत शैख़ुल हदीस को हुक्म फ़रमाया कि फ़्लां-फ़्लां मौज़ूअ (विषय) पर किताबें लिखें, इसलिए इस मजमूए की अकसर किताबें हज़रत मौलाना मोहम्मद इलयास रह० के हुक्म से ही लिखी गयी हैं, जैसा कि इनके शुरू में इसका बयान है।

ये किताबें अवाम में बहुत मक़्बूल हुयीं और बड़ी तायदाद में मुख़्तलिफ़ जगहों पर छपी हैं।इनके मज्मूए का नाम आजकल 'फ़ज़ाइले आमाल' है। इस निसाब की दूसरी जिल्द 'फ़ज़ाइले सदक़ात मुकम्मल व फ़ज़ाइले हज' है, जो बहुत उम्दा और काफ़ी मोटी है और बड़ी मुफ़ीद मालूमात का मज्मूआ है।

एक बुज़ुर्ग इन्सान

हज़रत शैख़ बहुत मुत्तक़ी, परहेज़गार और इबादत गुज़ार थे। हर-हर बात में शरीअत का बहुत ध्यान रखते थे। आप की ज़ात से लोगों को बहुत फ़ैज़ हो रहा है। अक्सर आप के यहां मेहमानों का मज्मा रहता है। लोग दूर-दूर से आप से मुलाक़ात करने के लिए आते थे। आप के मुरीदों का हल्क़ा भी बहुत लंबा चौड़ा है। अवाम के अलावा बहुत से उलमा भी आप से बैअत का ताल्लुक़ रखते हैं।

उस वक़्त हज़रत शैख़ुल हदीस की ज़ात दीन का एक बड़ा मीनार ज़ुह्द व तक़्वा का एक रोशन स्तून और तमाम दीनी इदारों और दीन का काम करने वालों के लिये रूहानी पेशवा और सरपरस्त थे।

हिदायत चाहने वालों के नफ़्स की इस्लाह, मज़ाहिरे उलूम की जिस्मानी व रूहानी सरपरस्ती, तब्लीग़ी जमाअत की रूहानी पेशवाई, किताबों का लिखना, ये हैं वे चीजें जिन में हज़रत शैख़ुल हदीस रह० अपनी कमज़ोरी व बुढ़ापे के बावजूद दिन व रात लगे रहते थे।

बिला मुबालग़ा कहा जा सकता है कि इस वक़्त तमाम दीनी इदारों, दीनी जमाअतों और दीनी काम करने वाले लोगों के लिये हज़रत शैख़ुल हदीस की ज़ातें

बा बरकत एक मनारे की हैसियत रखती है। मुख़्तलिफ़ मिज़ाज़ वाली जमाअतें और लोग, जो आपस में काफ़ी दूरी रखते हैं, हज़रते वाला की ज़ात पर सब जमा हो जाते हैं और सभी आप को अपना पेशवा और सरपरस्त समझते थे और अपने ज़ाती मामलों में मशिवरा तलब करते रहते थे। फिर आप भी सब पर अपनी मुहब्बत का साया फैलाए हुये थे और आप का दरवाज़ा सब के लिये खुला था। अल्लाह तआला से दुआ है कि आप का लुत्फ़ व करम इसी तरह क़ायम रहे।

विषय-सूची

क्या? | कहाँ?

पहला बाब

दूसरा बाब

तीसरा बाब

चौथा बाब

पाँचवा बाब

छठा बाब

क्या? कहाँ?

सातवां बाब

आठवां बाब

नवां बाब

दसवां बाब

मालूमात

ग्यारहवां बाब

बारहवां बाब

ख़ात्मा

तम्हीद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَتْبَاعِهِ الْحُمَاةِ لِلدِّيْنِ الْقَوِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अला रसूलिहिल करीमि व आलिही व सह्बिही व अत्बाअ़िही अल-हुमाति लिद्दीनिल क़वीमि०

अम्मा बअ़्दु— अल्लाह के एक बरगुज़ीदा बन्दे और मेरे मुरब्बी व मुह्सिन का इर्शाद सन् 1353 हि० में हुआ कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के चन्द क़िस्से बिलख़ुसूस कम-सिन सहाबा और औरतों की दीनदारी की कुछ हालत उर्दू में लिखी जाए ताकि जो लोग क़िस्सों के शौक़ीन हैं, वह वाही-तबाही झूठी हिकायात के[1] बजाए अगर उनको देखें तो उनके लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और घर की औरतें अगर रातों में बच्चों को झूठी कहानियों के बजाए इनको सुनायें तो बच्चों के दिल में सहाबा रज़ि० की मुहब्बत और अज़्मत के साथ दीनी उमूर[2] की तरफ़ रग़्बत[3] पैदा हो। मेरे लिए इस इर्शाद की तामील बहुत ही ज़रूरी थी कि एहसानात में डूबे हुए होने के अलावा अल्लाह वालों की ख़ुश्नूदी दोनों जहान में फ़लाह का सबब होती है, मगर इसके बावजूद अपनी कम-मायगी से यह उम्मीद न हुई कि मैं इस ख़िदमत को मरज़ी के मुवाफ़िक़ अदा कर सकता हूं, इसलिए चार वर्ष तक बार-बार इस इर्शाद को सुनता रहा और अपनी ना-अह्लियत से शर्मिंदा होता रहा कि सफ़र सन् 1357 हि० में एक मर्ज़ की वजह से चन्द रोज़ के लिए दिमाग़ी काम से रोक दिया गया, तो मुझे ख़्याल हुआ कि इन ख़ाली अय्याम को इस बा-बरकत मश्ग़ले में गुज़ार दूं कि अगर ये औराक़ पसंद ख़ातिर[4] न हुए तब भी मेरे ये ख़ाली औक़ात तो बेहतरीन और बा-बरकत मश्ग़ला में गुज़र ही जाएंगे।

इसमें शक नहीं कि अल्लाह वालों के क़िस्से उनके हालात यक़ीनन इस क़ाबिल हैं कि उनकी तह्क़ीक़ और तफ़्तीश[5] की जाए और उनसे सबक़ हासिल किया जाए, बिल-ख़ुसूस सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की जमाअत, जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लाडले नबी और प्यारे रसूल की मुसाहबत[6] के लिए चुना, इसकी

1. क़िस्से, 2. मामलों, 3. चाव, 4. पसंदीदा, 5. खोज, छान-फटक,
6. यानी साथ रहने के लिए,

मुस्तहक है कि उसका इत्तिबाअ[1] किया जाए। इसके अलावा अल्लाह वालों के ज़िक्र से अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।

सूफ़िया के सरदार हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का इर्शाद है कि हिकायतें अल्लाह के लश्करों में से एक लश्कर है जिससे मुरीदीन के दिलों को तक़्वियत हासिल होती है। किसी ने दर्याफ़्त किया कि इसकी कोई दलील भी है? फ़र्माया, हां, अल्लाह जल्ल-शानुहू का इर्शाद है-

وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ
وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ

व कुल्लन नक़ुस्सु अलैक मिन अंबाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआद क व जाअ क फ़ी हाज़िहिल हुक़्क़ु व मोअ़िजतुंव्व जिक्रा लिल्मुअ्मिनीन०

तर्जुमा- 'और पैग़म्बरों के क़िस्सों में से हम यह सारे क़िस्से आप से बयान करते हैं जिनके ज़रिए से हम आपके दिल को तक़्वियत देते हैं। (एक फ़ायदा तो यह हुआ) और इन क़िस्सों में आपके पास ऐसा मज़्मून पहुंचता है जो ख़ुद भी रास्त और वाक़ई है और मुसलमानों के लिए नसीहत है (और अच्छे काम करने की) याद दहानी है।'[2]

एक ज़रूरी बात यह भी दिल में जमा लेने की है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें हों या बुज़ुर्गों के हालात, इसी तरह मसाइल की किताबें हो या मोतबर लोगों के वाज़ व इर्शादात, यह ऐसी चीज़ें नहीं होतीं कि एक मर्तबा देख लेने के बाद हमेशा को ख़त्म कर दिया जाए, बल्कि अपनी हालत और इस्तेदाद के मुवाफ़िक़ बार-बार देखते रहना चाहिए।

अबू सुलैमान दारानी एक बुज़ुर्ग हैं, वह फ़र्माते हैं कि मैं एक वाइज़ की मज्लिस में हाज़िर हुआ। उनके वाज़ ने मेरे दिल पर असर किया, मगर जब वाज़ ख़त्म हुआ तो वह असर भी ख़त्म हो गया। मैं दोबारा उनकी मज्लिस में हाज़िर हुआ तो उस वाज़ का असर फ़ारिग़ होने के बाद घर के रास्ते में भी रहा। तीसरी मर्तबा फिर हाज़िर हुआ, तो उसका असर घर में पहुंचने पर भी रहा। मैंने घर जाकर अल्लाह की ना-फ़र्मानी के जो अस्बाब थे, सब तोड़ दिए और अल्लाह का रास्ता इख़्तियार

---

1. पैरवी, 2. बयानुल् क़ुरआन = (लेखक)

कर लिया। इसी तरह दीनी किताबों का भी हाल है कि महज़ सरसरी तौर पर एक मर्तबा उनके पढ़ लेने से असर कम होता है, इसलिए कभी-कभी पढ़ते रहना चाहिए। पढ़ने वालों की सहूलत और मज़ामीन के दिलनशीन होने के ख़्याल से मैंने इस रिसाले को बारह बाबों और एक ख़ात्मे पर तक़्सीम किया है-

पहला बाब- दीन की ख़ातिर सख़्तियों का बर्दाश्त करना और तकालीफ़ व मशक़्क़त का झेलना।

दूसरा बाब- अल्लाह जल्ल जलालुहु का ख़ौफ़ और डर, जो सहाबा किराम की ख़ास आदत थी।

तीसरा बाब- सहाबा किराम रज़ि० के ज़ाहिदाना और फ़क़ीराना ज़िंदगी का नमूना।

चौथा बाब- सहाबा के तक़्वा और परहेज़गारी की हालत।

पांचवां बाब- नमाज़ का शौक़ और इसका एहतमाम।

छठा बाब- हमदर्दी और अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देना और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना।

सातवां बाब- बहादुरी व दिलेरी और हिम्मत व शुजाअत और मौत का शौक़।

आठवां बाब- इल्मी मशाग़िल और इल्मी इन्हिमाक का नमूना।

नवां बाब- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के इर्शादात की तामील।

दसवां बाब- औरतों का दीनी जज़्बा और बहादुरी और हुज़ूर सल्ल० की बीवियों और औलादों का बयान।

ग्यारहवां बाब- बच्चों का दीनी वल्वला और बचपन में दीन का एहतमाम।

बारहवां बाब- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के साथ मुहब्बत का नमूना।

ख़ात्मा- सहाबा रज़ि० के हुक़ूक़ और उनके मुख़्तसर फ़ज़ाइल।

पहला बाब[1]

दीन की ख़ातिर सख़्तियों का बर्दाश्त करना और तकालीफ़ और मशक़्क़त का झेलना

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० ने दीन के फैलाने में जिस क़दर तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बर्दाश्त की हैं, उन का बर्दाश्त करना तो दरकिनार, उसका इरादा करना भी हम जैसे नालायक़ों से दुश्वार है। तारीख़ की किताबें इन वाक़िआत से भरी हुई हैं, मगर उन पर अमल करना तो अलाहिदा रहा, हम उनके मालूम करने की भी तक्लीफ़ नहीं करते। इस बाब में चन्द क़िस्सों को नमूने के तौर पर ज़िक्र करना है। इनमें सबसे पहले ख़ुद हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक क़िस्से से इब्तिदा करता हूं कि हुज़ूर सल्ल० का ज़िक्र बरकत का ज़रिया है।

1. हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ताइफ़ के सफ़र का क़िस्सा

नुबुव्वत मिल जाने के बाद नौ वर्ष तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में तब्लीग़ फ़र्माते रहे, और क़ौम की हिदायत और इस्लाह की कोशिश फ़र्माते रहे, लेकिन थोड़ी सी जमाअत के सिवा, जो मुसलमान हो गई थी और थोड़े से ऐसे लोगों के अलावा जो बावजूद मुसलमान न होने के आप की मदद करते थे, अक्सर कुफ़्फ़ारे मक्का आपको और आप के सहाबा रज़ि० को हर तरह की तकलीफ़ें पहुंचाते थे, मज़ाक़ उड़ाते थे और जो हो सकता था, उससे दरगुज़र न करते थे।

हुज़ूर सल्ल० के चचा अबूतालिब भी उन्हीं नेक दिल लोगों में थे जो बावजूद मुसलमान न होने के हुज़ूर सल्ल० की हर क़िस्म की मदद फ़र्माते थे। दसवें साल में जब अबूतालिब का भी इन्तिक़ाल हो गया तो काफ़िरों को और भी हर तरह खुले मुहार[2] इस्लाम से रोकने और मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाने का मौक़ा मिला। हुज़ूर सल्ल० इस ख़्याल से ताइफ़ तश्रीफ ले गये कि वहां क़बीला सक़ीफ़ की बड़ी जमाअत है। अगर वह क़बीला मुसलमान हो जाये तो मुसलमानों को इन तकलीफ़ों

1. अध्याय, 2. खुले आम, पूरी आज़ादी के साथ।

से निजात मिले और दीन के फैलने की बुनियाद पड़ जाए। वहां पहुंच कर क़बीले के तीन सरदारों से, जो बड़े दर्जे के समझे जाते थे, गुफ़्तगू फ़र्माई और अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाया और अल्लाह के रसूल की यानी अपनी मदद की तरफ़ मुतवज्जह किया मगर उन लोगों ने बजाय इसके, कि दीन की बात को क़ुबूल करते या कम से कम अरब की मशहूर मेहमान-नवाज़ी के लिहाज़ से एक नौ-वारिद[2] मेहमान की ख़ातिर-मुदारात करने से साफ़ जवाब दे दिया और निहायत बे-रुख़ी और बद-अख़्लाक़ी से पेश आये। उन लोगों ने यह भी गवारा न किया कि आप यहां क़ियाम फ़र्मा लें। जिन लोगों को सरदार समझ कर यह बात की थी कि शरीफ़ होंगे और मुहज़्ज़ब गुफ़्तगू करेंगे, उनमें से एक शख़्स बोला, कि ओहो, आप को ही अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा है, दूसरा बोला कि अल्लाह को तुम्हारे सिवा कोई और मिलता ही नहीं था, जिसको रसूल बनाकर भेजते। तीसरे ने कहा, मैं तुझसे बात नहीं करना चाहता, इसलिए कि अगर तू वाक़ई नबी है जैसा कि दावा है, तो तेरी बात से इन्कार कर देना मुसीबत से ख़ाली नहीं, अगर झूठ है तो मैं ऐसे शख़्स से बात नहीं करना चाहता। इसके बाद उन लोगों से ना-उम्मीद होकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और लोगों से बात करने का इरादा फ़र्माया कि आप तो हिम्मत और इस्तिक़्लाल के पहाड़ थे, मगर किसी ने भी क़ुबूल न किया, बल्कि बजाए क़ुबूल करने के हुज़ूर सल्ल० से कहा कि हमारे शहर से फ़ौरन निकल जाओ और जहां तुम्हारी चाहत की जगह हो, वहां चले जाओ। हुज़ूरे अकरम सल्ल० जब उनसे बिल्कुल मायूस होकर वापस होने लगे तो उन लोगों ने शहर के लड़कों को पीछे लगा दिया कि आप का मज़ाक़ उड़ायें, तालियां पीटें, पत्थर मारें, हत्ता कि आप के दोनों जूते ख़ून के जारी होने से रंगीन हो गये। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० इसी हालत में वापस हुए। जब रास्ते में एक जगह इन शरीरों से इत्मीनान हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ मांगी-

اللهم اليك اشكو ضعف قوتي وقلة حيلتي وهواني على الناس يا ارحم الراحمين انت
رب المستضعفين وانت ربي الى من تكلني الى بعيد يتجهمني ام الى عدو ملكته امري
ان لم يكن بك علي غضب فلا ابالي ولكن عافيتك هي اوسع لي اعوذ بنور وجهك الذي
اشرقت له الظلمات وصلح عليه امر الدنيا والاخرة من ان ينزل بي غضبك او يحل
علي سخطك لك العتبى حتى ترضى ولا حول ولا قوة الا بك (كذا في سيرة ابن هشام قلت

واختلفت الروايات في الفاظ الدعاء كما
في قرة العيون)

---

1. नये आये मुसलमान

ऐ अल्लाह तुझी से शिकायत करता हूं मैं अपनी कमज़ोरी और बेकसी की और लोगों में ज़िल्लत व रुसवाई की। ऐ अर्हमर्राहमीन ! तू ही ज़ुअफ़ा[1] का रब है और तू ही मेरा परवरदिगार है। तू मुझे किस के हवाले करता है। किसी अजनबी बेगाने के, जो मुझे देख कर तुर्शरू[2] होता है और मुंह चिढ़ाता है या कि किसी दुश्मन के, जिसको तूने मुझ पर क़ाबू दे दिया। ऐ अल्लाह ! अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं है तो मुझे किसी की भी परवाह नहीं है। तेरी हिफ़ाज़त मुझे काफ़ी है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर के तुफ़ैल, जिससे तमाम अंधेरियां रौशन हो गयीं और जिससे दुनिया और आख़िरत के सारे काम दुरुस्त हो जाते हैं, इस बात से पनाह मांगता हूं कि मुझ पर तेरा ग़ुस्सा हो या तू मुझसे नाराज़ हो, तेरी नाराज़गी का उस वक़्त तक दूर करना, ज़रूरी है जब तक तू राज़ी न हो, न तेरे सिवा कोई ताक़त है, न क़ुव्वत।

मालिकुल मुल्क की शान क़ह्हारी को इस पर जोश आना ही था कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर सलाम किया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू, जो आप से हुई, सुनी और उनके जवाबात सुने और एक फ़रिश्ते को जिस के मुताल्लिक़ पहाड़ों की ख़िदमत है, आप के पास भेजा है कि आप जो चाहें उसको हुक्म दें। इसके बाद उस फ़रिश्ते ने सलाम किया, और अर्ज़ किया कि जो इर्शाद हो, मैं उसकी तामील करूं ! अगर इर्शाद हो तो दोनों जानिब के पहाड़ों को मिला दूं जिससे यह सब दर्मियान में कुचल जायें या और जो सज़ा आप तज्वीज़ फ़र्मायें। हुज़ूर सल्ल० की रहीम व करीम ज़ात ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह से इसकी उम्मीद रखता हूं कि अगर यह मुसलमान नहीं हुए तो इनकी औलादों में से ऐसे लोग पैदा हों जो अल्लाह की परिस्तिश[3] करें और उसकी इबादत करें।

फ़— यह हैं अख़्लाक़ उस करीम ज़ात के जिस के हम लोग नाम लेवा हैं कि हम ज़रा सी तकलीफ़ से किसी को मामूली गाली दे देने से ऐसे भड़क जाते हैं कि फिर उम्र भर उसका बदला नहीं उतरता ! ज़ुल्म पर ज़ुल्म करते रहते हैं और दावा करते हैं अपने मुहम्मदी होने का, नबी के पैरू बनने का। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतनी सख़्त तकलीफ़ और मशक़्क़त उठाने के बावजूद न बद-दुआ फ़रमाते हैं, न कोई बदला लेते हैं।

---

1. कमज़ोरों, 2. मुंह बिगाड़ना, 3. पूजा, बंदगी
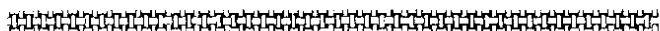
2. क़िस्सा हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० की शहादत का

हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० एक सहाबी थे जो बदर की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे। उनको इस चीज़ का सदमा था, इस पर अपने नफ़्स को मलामत[1] करते थे कि इस्लाम की पहली अज़ीमुश्शान लड़ाई और तू उसमें शरीक न हो सका। उनकी तमन्ना थी कि कोई दूसरी लड़ाई हो तो हौसले पूरे करूं। इत्तिफ़ाक़ से उहद की लड़ाई पेश आ गई, जिसमें यह बड़ी बहादुरी और दिलेरी से शरीक हुए। उहद की लड़ाई में अव्वल-अव्वल तो मुसलमानों को फ़तह हुई, मगर आख़िर में एक ग़लती की वजह से मुसलमानों को शकिस्त हुई, वह ग़लती यह थी कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ आदमियों को एक ख़ास जगह मुक़र्रर फ़र्माया था कि तुम लोग इतने मैं न कहूं, इस जगह से न हटना कि वहां से दुश्मन के हमला करने का अन्देशा था। जब मुसलमानों को शुरू में फ़तह हुई तो काफ़िरों को भागता हुआ देखकर यह लोग भी अपनी जगह से यह समझकर हट गए कि अब जंग ख़त्म हो चुकी, इसलिए भागते हुए काफ़िरों का पीछा किया जाये और ग़नीमत का माल हासिल किया जाये। इस जमाअत के सरदार ने मना भी किया कि हुज़ूर सल्ल० की मुमानअत[2] थी, तुम यहां से न हटो, मगर उन लोगों ने यह समझ कर कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सिर्फ़ लड़ाई के वक़्त के वास्ते था, वहां से हट कर मैदान में पहुंच गए। भागते हुए काफ़िरों ने उस जगह को ख़ाली देख कर उस तरफ़ से आकर हमला कर दिया। मुसलमान बे-फ़िक्र थे, इस अचानक बे-ख़बरी के हमले से मग़्लूब[3] हो गये और दोनों तरफ़ से काफ़िरों के बीच में आ गए, जिस की वजह से इधर-उधर परेशान भाग रहे थे। हज़रत अनस रज़ि० ने देखा कि सामने से एक दूसरे सहाबी हज़रत साद बिन मआज़ रज़ि० आ रहे हैं। उनसे कहा कि ऐ साद ! कहां जा रहे हो ? ख़ुदा की क़सम! जन्नत की ख़ुश्बू उहद के पहाड़ से आ रही है, यह कह कर तलवार तो हाथ में थी ही, काफ़िरों के हुजूम[4] में घुस गए और जब तक शहीद नहीं हो गये, वापस नहीं हुए, शहादत के बाद उनके बदन को देखा गया तो छलनी हो गया था। अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म तीर और तलवारों के बदन पर थे। उन की बहन ने उंगलियों के पोरों से उन को पहचाना।

---

1. बुरा-भला कहना, 2. मनाही, 3. जिन पर काबू पा लिया जाये, 4. भीड़
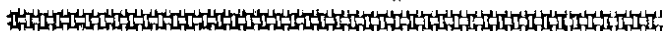
फ़- जो लोग इख़्लास और सच्ची तलब के साथ अल्लाह के काम में लग जाते हैं, उनको दुनिया ही में जन्नत का मज़ा आने लगता है। यह हज़रत अनस रज़ि० ज़िंदगी ही में जन्नत की ख़ुश्बू सूंघ रहे थे। अगर इख़्लास आदमी में हो जावे तो दुनिया में भी जन्नत का मज़ा आने लगता है। मैंने एक मोतबर शख़्स से जो हज़रते अक़्दस मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहिब रायपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि के मुख़्लिस ख़ादिम हैं, हज़रत का मक़ूला[1] सुना है कि 'जन्नत का मज़ा आ रहा है।' फ़ज़ाइले रमज़ान में इस क़िस्से को लिख चुका हूं।

3. सुलह हुदैबिया और अबूजंदल रज़ि० और अबूबसीर रज़ि० का क़िस्सा

सन् 06 हि० में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा के इरादे से मक्का तश्रीफ़ ले जा रहे थे। कुफ़्फ़ारे मक्का को इस की ख़बर हुई और वह इस ख़बर को अपनी ज़िल्लत समझे, इसलिए मुज़ाहमत[2] की और हुदैबिया में आपको रुकना पड़ा। जांनिसार सहाबा साथ थे, जो हुज़ूर सल्ल० पर जान क़ुर्बान करना फ़ख़्र समझते थे। लड़ने को तैयार हो गए। मगर हुज़ूर सल्ल० ने मक्का वालों की ख़ातिर से लड़ने का इरादा नहीं फ़र्माया और सुलह की कोशिश की और बावजूद सहाबा रज़ि० की लड़ाई पर मुस्तैदी और बहादुरी के हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुफ़्फ़ार की इस क़दर रियायत फ़र्मायी कि उन की हर शर्त को क़ुबूल फ़र्मा लिया। सहाबा रज़ि० को इस तरह दब कर सुलह करना बहुत ही नागवार था, मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद के सामने क्या हो सकता था कि जांनिसार थे और फ़र्मांबर्दार। इस लिए हज़रत उमर रज़ि० जैसे बहादुरों को दबना पड़ा। सुलह में जो शर्तें तय हुईं, इन शर्तों में एक शर्त यह थी कि काफ़िरों में जो शख़्स इस्लाम लाये और हिजरत करे, मुसलमान उस को मक्का वापिस कर दें और मुसलमानों में से ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर कोई शख़्स मुर्तद[3] हो कर चला आये तो वह वापस न किया जाए। यह सुलहनामा अभी तक पूरा लिखा भी नहीं गया था कि हज़रत अबूजंदल एक सहाबी थे, जो इस्लाम लाने की वजह से तरह-तरह की तकलीफ़ें बर्दाश्त कर रहे थे और ज़ंजीरों में बंधे हुए थे, इसी हालत में गिरते-पड़ते मुसलमानों के लश्कर में इस उम्मीद पर पहुंचे

1. कथन, क़ौल, 2. रोक थाम, बाधा 3. इस्लाम से फिर जाने वाला

कि इन लोगों की हिमायत में जाकर इस मुसीबत से छुटकारा पाऊंगा। उनके बाप सुहैल ने जो इस सुलहनामा में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से वकील थे, और उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, फ़तह मक्का में मुसलमान हुए, उन्होंने साहबज़ादे के तमाचे मारे और वापस ले जाने पर इस्रार किया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अभी सुलहनामा मुरत्तब भी नहीं हुआ, इसलिए अभी पाबंदी किस बात की, मगर उन्होंने इस्रार किया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, एक आदमी मुझे माँगा ही दे दो, मगर वह लोग ज़िद पर थे, न माने। अबूजंदल रज़ि० ने मुसलमानों को पुकार कर फ़रियाद भी की कि मैं मुसलमान होकर आया और कितनी मुसीबतें उठा चुका, अब वापस किया जा रहा हूं। उस वक़्त मुसलमानों के दिलों पर जो गुज़र रही होगी, अल्लाह ही को मालूम है मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद से वापस हुए। हुज़ूर सल्ल० ने तसल्ली फ़र्मायी और सब्र करने का हुक्म दिया और फ़र्माया अंक़रीब हक़ तआला शानुहू तुम्हारे लिए रास्ता निकालेंगे। सुलहनामा के मुकम्मल हो जाने के बाद एक दूसरे सहाबी अबूबसीर भी मुसलमान हो कर मदीना मुनव्वरा पहुंचे। कुफ़्फ़ार ने उन को वापस बुलाने के लिए दो आदमी भेजे। हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हस्बे वायदा वापस फ़र्मा दिया। अबूबसीर रज़ि० ने अर्ज़ भी किया कि या रसूलल्लाह ! मैं मुसलमान होकर आया, आप मुझे कुफ़्फ़ार के पंजे में फिर भेजते हैं। आपने उनसे भी सब्र करने को इर्शाद फ़र्माया कि इन्शा अल्लाह अंक़रीब तुम्हारे लिए रास्ता खुलेगा। यह सहाबी इन दोनों काफ़िरों के साथ वापस हुए। रास्ते में इन में से एक से कहने लगे, यार ! तेरी यह तलवार तो बड़ी नफ़ीस मालूम होती है। शेख़ी बाज़ आदमी ज़रा सी बात में फूल ही जाता है, वह नियाम से निकाल कर कहने लगा कि हां, मैंने बहुत से लोगों पर इसका तजुर्बा किया। यह कह कर तलवार उनके हवाले कर दी, उन्होंने उसी पर उसका तर्जुबा किया। दूसरा साथी यह देख कर कि एक को निमटा दिया, अब मेरा नम्बर है, भागा हुआ मदीना आया और हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरा साथी मर चुका है, अब मेरा नम्बर है। उसके बाद अबूबसीर रज़ि० पहुंचे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप अपना वायदा पूरा फ़र्मा चुके कि मुझे वापस कर दिया और मुझ से कोई अहद इन लोगों का नहीं है, जिस की ज़िम्मेदारी हो। वह मुझे मेरे दीन से हटाते हैं, इसलिए मैंने यह किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि लड़ाई भड़काने वाला है, काश ! कोई इसका मुईन व मददगार होता, वह इस कलाम से समझ गये कि अब भी अगर कोई मेरी तलब में आयेगा, तो मैं वापस कर दिया जाऊंगा, इसलिए वह वहां से चल कर समुद्र के किनारे एक जगह आ पड़े। मक्का वालों को इस क़िस्से

का हाल मालूम हुआ तो अबूजंदल रज़ि० भी, जिनका क़िस्सा पहले गुज़रा, छुप कर वहीं पहुंच गये। इस तरह जो शख़्स मुसलमान होता, वह उन के साथ जा मिलता। चन्द रोज़ में यह एक मुख़्तसर सी जमाअत हो गई। जंगल में जहां न खाने का इन्तज़ाम, न वहां बाग़ात और आबादियाँ, इस लिये उन लोगों पर जो गुज़री होगी, वह तो अल्लाह ही को मालूम है। मगर जिन ज़ालिमों के ज़ुल्म से परेशान हो कर यह लोग भागते थे, उनका नातक़ा[1] बंद कर दिया। जो क़ाफ़िला उधर को जाता, उससे मुक़ाबला करते और लड़ते, हत्ता कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने परेशान होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आजिज़ी और मन्नत करके अल्लाह का और रिश्तेदारी का वास्ता देकर आदमी भेजा कि इस बेसिरी जमाअत को आप अपने पास बुला लें कि यह मुआहदा[2] में तो दाख़िल हो जाएं और हमारे लिए आने-जाने का रास्ता खुले। लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० का इजाज़तनामा जब इन हज़रात के पास पहुंचा है तो अबूबसीर रज़ि० मरज़ुल मौत[3] में गिरफ़्तार थे। हुज़ूर सल्ल० का वाला नामा हाथ में था कि इसी हालत में इन्तिक़ाल फ़र्माया (रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु)[4]।

फ़— आदमी अगर अपने दीन पर पक्का हो, बशर्ते कि दीन भी सच्चा हो तो बड़ी से बड़ी ताक़त उसको नहीं हटा सकती और मुसलमान की मदद का तो अल्लाह का वायदा है, बशर्ते कि वह मुसलमान हो।

4. हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० का इस्लाम और मसाइब

हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० एक मशहूर सहाबी हैं, जो मस्जिदे नबवी के हमेशा मुअज़्ज़िन[5] रहे। शुरू में एक काफ़िर के ग़ुलाम थे, इस्लाम ले आये जिसकी वजह से तरह-तरह की तकलीफ़ें दी जाती थीं। उमैय्या बिन ख़ल्फ़ जो मुसलमानों का सख़्त दुश्मन था, उनको सख़्त गर्मी में दोपहर के वक़्त तपती हुई रेत पर सीधा लिटा कर उनके सीने पर पत्थर की बड़ी चट्टान रख देता था ताकि वह हरकत न कर सकें। और कहता था कि या इस हाल में मर जाएं और ज़िन्दगी चाहें तो इस्लाम से हट जायें, मगर वह इस हालत में भी 'अहद-अहद' कहते थे यानी माबूद

1. रास्ता बन्द कर दिया, 2. समझौता, 3. मौत का मर्ज़ यानी जिस मर्ज़ में मौत हो जाए, 4. बुख़ारी व फ़त्ह 5. अज़ान देने वाले,

एक ही है। रात को ज़ंजीरों में बांध कर कोड़े लगाये जाते और अगले दिन उन ज़ख़्मों को गर्म ज़मीन पर डाल कर और ज़्यादा ज़ख़्मी किया जाता ताकि बेक़रार होकर इस्लाम से फिर जायें, या तड़प-तड़प कर मर जाएं। अज़ाब देने वाले उक्ता जाते, कभी अबू जहल का नम्बर आता कभी उमैय्या बिन ख़ल्फ़ का, कभी औरों का और हर शख़्स इसकी कोशिश करता कि तकलीफ़ देने में ज़ोर ख़त्म कर दे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने इस हालत में देखा तो उनको ख़रीद कर आज़ाद फ़र्माया।

फ़– चूंकि अरब के बुतपरस्त अपने बुतों को भी माबूद कहते थे। इसलिए उनके मुक़ाबले में इस्लाम की तालीम तौहीद की थी, जिसकी वजह से हज़रत बिलाल रज़ि० की ज़बान पर 'एक ही एक' का विर्द था। यह ताल्लुक़ और इश्क़ की बात है। हम झूठी मुहब्बतों में देखते हैं कि जिससे मुहब्बत हो जाती है, उसका नाम लेने में लुत्फ़ आता है, बे-फ़ायदा उसको रटा जाता है, तो अल्लाह की मुहब्बत का क्या कहना जो दीन और दुनिया में दोनों जगह काम आने वाली है। यही वजह है कि हज़रत बिलाल रज़ि० को हर तरह से सताया जाता था, सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाई जाती थीं, मक्का के लड़कों के हवाले कर दिया जाता कि वह उनको गली-कूचों में चक्कर देते फिरें और यह थे कि 'एक ही एक है' की रट लगाते थे। इसी का यह सिला[1] मिला कि फिर हुज़ूर सल्ल० के दरबार में मुअज़्ज़िन बने और सफ़रे-हज़र में हमेशा अज़ान की ख़िदमत इनके सुपुर्द हुई। हुज़ूर सल्ल० के विसाल[2] के बाद मदीना-तय्यिबा में रहना और हुज़ूर सल्ल० की ख़ाली जगह देखना मुश्किल हो गया, इसलिए इरादा किया कि अपनी ज़िंदगी के जितने दिन हैं, जिहाद में गुज़ार दूं, इसलिए जिहाद में शिरकत की नीयत से चल दिए। एक अर्से तक मदीना मुनव्वरा लौट कर नहीं आये। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, बिलाल! यह क्या ज़ुल्म है, हमारे पास कभी नहीं आते, तो आंख खुलने पर मदीना तैयबा हाज़िर हुए। हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० ने अज़ान की फ़र्माइश की, लाडलों की दरख़्वास्त ऐसी नहीं थी कि इन्कार की गुंजाइश होती। अज़ान कहना शुरू की और मदीना में हुज़ूर सल्ल० के ज़माने की अज़ान कानों में पड़ कर कुहराम मच गया। औरतें तक रोती हुई घर से निकल पड़ीं। चंद रोज़ क़याम के बाद वापस हुए और सन् 20 हिजरी के क़रीब दमिश्क़ में विसाल हुआ।[3]

---

1. बदला, 2. इंतिक़ाल, 3. असदुलग़ाबा,

5 हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० का इस्लाम

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० मशहूर सहाबी हैं, जो बाद में बड़े ज़ाहिदों और बड़े उलमा में से हुए। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि अबूज़र रज़ि० ऐसे इल्म को हासिल किए हुए हैं, जिससे लोग आजिज़ हैं, मगर उन्होंने इसको महफ़ूज़ कर रखा है। जब उनको हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत की पहली ख़बर पहुंची तो उन्होंने अपने भाई को हालात की तहक़ीक़ के वास्ते मक्का भेजा कि जो शख़्स यह दावा करता है कि मेरे पास वही आती है और आसमान की ख़बरें आती हैं, उनके हालात मालूम करें और उसके कलाम को ग़ौर से सुनें। वह मक्का मुकर्रमा आये और हालात मालूम करने के बाद अपने भाई से जाकर कहा कि मैंने उनको अच्छी आदतों और उम्दा अख़्लाक़ का हुक्म करते देखा और एक ऐसा कलाम सुना, जो न शेर है न काहिनों का कलाम है। अबूज़र रज़ि० की इस मुजमल[1] बात से तशफ़्फ़ी[2] न हुई तो ख़ुद सामाने सफ़र किया और मक्का पहुंचे और सीधे मस्जिदे हराम में गये। हुज़ूर सल्ल० को पहचानते नहीं थे और किसी से पूछना मसलेहत के ख़िलाफ़ समझा। शाम तक इसी हाल में रहे। शाम को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने देखा कि एक परदेसी मुसाफ़िर है, मुसाफ़िरों की, ग़रीबों की, परदेसियों की ख़बरगीरी, उनकी ज़रूरतों का पूरा करना, इन हज़रात की घुट्टी में पड़ा हुआ था, इसलिए उनको अपने घर ले आये मेज़बानी फ़रमायी, लेकिन इसके पूछने की ज़रूरत न समझी कि कौन हो, क्यों आये हो, मुसाफ़िर ने भी कुछ ज़ाहिर न किया, सुबह को फिर, मस्जिद में आ गये और दिन भर इसी हाल में गुज़रा कि ख़ुद पता न चला और दर्याफ़्त किसी से किया नहीं, ग़ालिबन इसकी वजह यह होगी कि हुज़ूर सल्ल० के साथ दुश्मनी के क़िस्से बहुत मशहूर थे। आपको और आपके मिलने वालों को हर तरह की तकलीफ़ें दी जाती थीं। उनको ख़्याल हुआ हो कि सही हाल मालूम नहीं होगा। और बद-गुमानी की वजह से मुफ़्त की तकलीफ़ अलाहिदा रही। दूसरे दिन शाम को भी हज़रत अली रज़ि० को ख़्याल हुआ कि परदेसी मुसाफ़िर है। ब-ज़ाहिर जिस ग़रज़ के लिए आया है, वह पूरी नहीं हुई, इसलिए फिर अपने घर ले गये और रात को खिलाया सुलाया, मगर पूछने की उस रात को भी नौबत न आयी। तीसरी रात को फिर यही सूरत हुई तो हज़रत अली रज़ि० ने दर्याफ़्त किया

---

1. जो सपष्ट न हो, 2. तस्कीन,

कि तुम किस काम से आये हो ? क्या ग़रज़ है? तो हज़रत अबूज़र रज़ि० ने अव्वल उनको क़सम और अहद व पैमां दिए इस बात के कि वह सही बतायें। इसके बाद अपनी ग़रज़ बतायी। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु ने फ़र्माया कि वह बेशक अल्लाह के रसूल हैं और सुबह को जब मैं जाऊं तो तुम मेरे साथ चलना, मैं वहाँ तक पहुँचा दूंगा, लेकिन मुख़ालफ़त का ज़ोर है, इसलिए अगर रास्ते में मुझे कोई ऐसा शख़्स मिला जिससे मेरे साथ चलने की वजह से तुम पर कोई अन्देशा हो तो मैं पेशाब करने लगूंगा, या अपना जूता दुरुस्त करने लगूंगा, तुम सीधे चले चलना, मेरे साथ ठहरना नहीं, जिसकी वहज से तुम्हारा-मेरा साथ होना मालूम न हो। चुनांचे सुबह को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु के पीछे-पीछे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे, वहां जाकर बात-चीत हुई। उसी वक़्त मुसलमान हो गये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी तकलीफ़ के ख़्याल से फ़र्माया, अपने इस्लाम को अभी ज़ाहिर न करना। चुपके से अपनी क़ौम में चले जाओ, जब हमारा ग़लबा हो जाए, उस वक़्त चले आना। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस कलाम-ए तौहीद को उन बे-ईमानों के बीच चिल्ला चिल्ला के पढ़ूंगा, चुनांचे उसी वक़्त मस्जिदे हराम में तश्रीफ़ ले गए और बुलंद आवाज से-

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाह व अशहदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह०

(मैं गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) पढ़ा, फिर क्या था, चारों तरफ़ से लोग उठे और इस कदर मारा कि ज़ख्मी कर दिया, मरने के क़रीब हो गये। हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास जो उस वक़्त तक मुसलमान भी नहीं हुए थे, उनके ऊपर बचाने के लिए लेट गये और लोगों से कहा क्या ज़ुल्म करते हो, यह शख़्स क़बीला गिफ़ार का है और यह क़बीला मुल्क शाम के रास्ते में पड़ता है, तुम्हारी तिजारत वग़ैरह सब मुल्क शाम के साथ है। अगर यह मर गया तो शाम का आना जाना बन्द हो जायेगा, इस पर उन सब लोगों को भी ख़्याल हुआ कि मुल्क शाम से सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं, वहां का रास्ता बन्द हो जाना मुसीबत है, इसलिए उनको छोड़ दिया। दूसरे दिन फिर इसी तरह उन्होंने जाकर ब-आवाज़ बुलंद कलमा पढ़ा और लोग इस कलमे के सुनने को ताब न ला सकते थे, इसलिए उन पर टूट पड़े। दूसरे दिन भी हज़रत अब्बास रज़ि० ने इसी तरह उनको समझा कर हटाया कि तुम्हारी तिजारत का रास्ता बन्द हो जायेगा।

फ़- हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद के बावजूद कि अपने इस्लाम को छुपाओ, उनका यह फ़ेल हक़ के इज़्हार का वलवला[1] और ग़ल्बा था कि जब यह दीन हक़ है तो किसी के बाप का क्या इजारा है, जिससे डर कर छुपाया जाये और हुज़ूर सल्ल० का मना फ़र्माना शफ़क़त की वजह से था कि मुम्किन है तकालीफ़ का तहम्मुल न[2] हो वरना हुज़ूर सल्ल० के हुक्म के ख़िलाफ़ सहाबा रज़ि० की यह मजाल ही न थी। चुनांचे इसका कुछ नमूना मुस्तक़िल बाब में आ रहा है। चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद ही दीन के फैलाने में हर क़िस्म की तकलीफ़ें बर्दाश्त फ़र्मा रहे थे। इसलिए हज़रत अबूज़र रज़ि० ने सहूलत पर अमल के बजाय हुज़ूर सल्ल० के इत्तिबाअ[3] को तर्जीह दी। यही एक चीज़ थी कि जिसकी वजह से हर क़िस्म की तरक़्क़ी दीनी और दुनियावी सहाबा किराम रज़ि० के क़दम चूम रही थी और हर मैदान उनके क़ब्ज़े में था कि जो भी शख़्स एक मर्तबा कलमा-ए-शहादत पढ़ कर इस्लाम के झंडे के नीचे आ जाता था, बड़ी से बड़ी कुव्वत भी उसको रोक न सकती थी और न बड़े से बड़ा ज़ुल्म उसको दीन की इशाअत से हटा सकता था।

6 हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० बिन अल-अरित की तकलीफ़ें

हज़रत ख़ब्बाब बिन अल-अरित रज़ि० भी उन्हीं मुबारक हस्तियों में हैं जिन्होंने इम्तिहान के लिए अपने आप को पेश किया था और अल्लाह के रास्ते में सख़्त से सख़्त तक्लीफ़े बर्दाश्त कीं। शुरू ही में पांच-छ: आदमियों के बाद मुसलमान हो गये थे, इसलिए बहुत ज़माने तक तक्लीफ़ें उठायीं। लोहे की ज़िरह (कवच) पहना कर इनको धूप में डाल दिया जाता जिस से गर्मी और तपिश की वजह से पसीनों पर पसीने बहते रहते थे। अक्सर औक़ात बिल्कुल सीधा गर्म रेत पर लिटा दिया जाता, जिसकी वजह से कमर का गोश्त तक गल कर गिर गया था। यह एक औरत के ग़ुलाम थे। उसको ख़बर पहुंची कि यह हुज़ूर अक़्दस सल्ल० से मिलते हैं, तो उसकी सज़ा में लोहे को गर्म करके उनके सर को उससे दाग़ देती थी। हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा अर्से के बाद अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत ख़ब्बाब से उनकी तक्लीफ़ों की तफ़्सील पूछी, जो उनको पहुंचाई गईं। उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरी कमर देखें। हज़रत उमर रज़ि० ने कमर देख कर फ़र्माया कि ऐसी कमर किसी की देखी ही नहीं। उन्होंने अर्ज़ किया मुझे आग के अंगारों पर डाल कर घसीटा गया।

1. जोश-शौक़, 2. पैरवी, 3. बर्दाश्त, सहन

मेरी कमर की चर्बी और ख़ून से वह आग बुझी। इन हालात के बावजूद जब इस्लाम को तरक़्क़ी हुई और फ़ुतूहात[1] का दरवाज़ा ख़ुला तो उस पर रोया करते थे कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हमारी तकालीफ़ का बदला कहीं दुनियां ही में तो नहीं मिल गया। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़िलाफ़ आदत बहुत ही लम्बी नमाज़ पढ़ी। सहाबा रज़ि० ने उसके मुताल्लिक़ अर्ज़ किया, तो हुज़ूरे सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह रग़बत व डर की नमाज़ थी। मैंने इस में अल्लाह तआला से तीन दुआयें की थीं। दो उनमें से क़ुबूल हुई और एक को इन्कार फ़र्मा दिया। मैंने यह दुआ की कि मेरी सारी उम्मत क़हत से हिलाक न हो जाये, यह क़ुबूल हो गई। दूसरी यह कि उन पर कोई ऐसा दुश्मन मुसल्लत न हो जो उनको बिल्कुल मिटा दे। यह भी क़ुबूल हो गई। तीसरी यह दुआ की कि इनमें आपस में लड़ाई-झगड़े न हों यह बात मंज़ूर न हुई। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० का इन्तिक़ाल 37 हिजरी में हुआ और कूफ़ा में सबसे पहले सहाबी यही दफ़न हुए। इनके इन्तिक़ाल के बाद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु का गुज़र इनकी क़ब्र पर हुआ तो इर्शाद फ़र्माया- 'अल्लाह ख़ब्बाब पर रहम फ़र्मायें अपनी रग़बत से मुसलमान हुआ और ख़ुशी से हिजरत की और जिहाद में ज़िन्दगी गुज़ार दी और मुसीबतें बर्दाश्त कीं। मुबारक है वह शख़्स जो क़यामत को याद रखे और हिसाब किताब की तैयारी करे और गुज़ारे के क़ाबिल माल पर क़नाअत[2] करे और अपने मौला को राज़ी कर लें।[3]

फ़— हक़ीक़त में मौला को राज़ी कर लेना, उन्हीं लोगों का हिस्सा था कि इनकी ज़िन्दगी का हर काम मौला ही की रज़ा के वास्ते था।

7. हज़रत अम्मार रज़ि० और उनके वालिदैन का ज़िक्र

हज़रत अम्मार रज़ि० और उनके मां-बाप को भी सख़्त से सख़्त तक्लीफ़ें पहुंचाई गयीं। मक्का की सख़्त गर्म और रेतीली ज़मीन में उनको अज़ाब दिया जाता और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस तरफ़ गुज़र होता तो सब्र की

1. जीत-विजय, 2. बस जानना, काफ़ी समझना, 3. असदुलग़ाबा,

तल्क़ीन[1] फ़र्माते और जन्नत की बशारत फ़र्माते। आख़िर उनके वालिद हज़रत यासिर रज़ि० इसी हालते तकलीफ़ में वफ़ात पा गए कि ज़ालिमों ने मरने तक चैन न लेने दिया और उनकी वालिदा हज़रत सुमैय्या रज़ि० की शर्मगाह में अबूजह्ल मलऊन ने एक बरछा मारा, जिससे वह शहीद हो गईं, मगर इस्लाम से न हटीं, हालांकि बूढ़ी थीं ज़ईफ़ थीं मगर उस बद-नसीब ने किसी चीज़ का भी ख़्याल नहीं किया। इस्लाम में सबसे पहली शाहदत इनकी है और इस्लाम में सब से पहली मस्जिद हज़रत अम्मार रज़ि० की बनाई हुई। जब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़र्मा कर मदीना तशरीफ़ ले गये तो हज़रत अम्मार रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० के लिए एक मकान साये का बनाना चाहिए, जिसमें तशरीफ़ रखा करें, दोपहर को आराम फ़र्मा लिया करें और नमाज़ भी साये में पढ़ सकें। तो क़ुबा में हज़रत अम्मार रज़ि० ने अव्वल पत्थर जमा किए और फिर मस्जिद बनाई। लड़ाई में निहायत जोश से शरीक होते थे। एक मर्तबा मज़े में आकर कहने लगे कि अब जाकर दोस्तों से मिलेंगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी जमाअत से मिलेंगे, इतने में प्यास लगी और पानी किसी से मांगा, उसने दूध सामने किया, उसको पिया और पीकर कहने लगे मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि तू दुनिया में सबसे आख़िरी चीज़ दूध पिएगा, इसके बाद शहीद हो गए। उस वक़्त चौरानवें वर्ष कि उम्र थी। बाज़ ने एक आध साल कम बतलाई है।[2]

8 हज़रत सुहैब रज़ि० का इस्लाम

हज़रत सुहैब रज़ि० भी हज़रत अम्मार रज़ि० ही के साथ मुसलमान हुए। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अरक़म रज़ि० सहाबी के मकान पर तशरीफ़ फ़र्मा थे कि यह दोनों हज़रात अलाहिदा-अलाहिदा हाज़िरे ख़िदमत हुए और मकान के दरवाज़े पर दोनों इत्तिफ़ाक़िया इकट्ठा हो गए। हर एक ने दूसरे की ग़रज़ मालूम की तो एक ही ग़रज़ यानी इस्लाम लाना और हुज़ूर सल्ल० के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद होना दोनों का मक़्सूद था। इस्लाम लाये और इस्लाम लाने के बाद जो उस ज़माने में इस क़लील और कमज़ोर जमाअत को पेश आना था, वह पेश आया

1. नसीहत, 2. असदुलग़ाबा, 3. तीर चलाने

और हर तरह सताये गये, तकलीफ़े पहुंचाई गयीं, आख़िर तंग आकर हिजरत का इरादा फ़र्माया तो काफ़िरों को यह चीज़ भी गवारा न थी कि यह लोग किसी दूसरी ही जगह जाकर आराम से ज़िन्दगी बसर कर लें, इसलिए जिस किसी की हिजरत का हाल मालूम होता था, उसको पकड़ने की कोशिश करते थे कि तकालीफ़ से निजात न पा सके। चुनांचे इनका भी पीछा किया गया और एक जमाअत इनको पकड़ने के लिए गई। उन्होंने अपना तरकश[1] संभाला जिसमें तीर थे और उन लोगों से कहा कि देखो तुम्हें मालूम है कि मैं तुम सब से ज़्यादा तीर अन्दाज़[2] हूं। जब तक एक तीर मेरे पास बाक़ी रहेगा, तुम लोग मुझ तक नहीं आ सकोगे और जब एक भी तीर न रहेगा, तो मैं अपनी तलवार से मुक़ाबला करूंगा, यहां तक कि तलवार भी मेरे हाथ में न रहे। इसके बाद तुमसे जो हो सके करना। इस लिए अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले में अपने माल का पता बतला सकता हूं, जो मक्का में है और दो बांदियां भी हैं, वह सब तुम ले लो। इस पर वह लोग राज़ी हो गये और अपना माल देकर जान छुड़ाई। इसी बारे में आयत पाक–

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ

व मिनन्नासि मंय्यशरी नफ़्स हुब्तिग़ा अ मर्ज़ातिल्ला हि वल्लाहु रऊफ़ुम बिल अिबादि० नाज़िल हुई।[3]

तर्जुमा– बाज़ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह की रज़ा के वास्ते अपनी जान को ख़रीद लेते हैं और अल्लाह तआला बन्दों पर मेहरबान हैं। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त क़ुबा में तशरीफ़ फ़र्मा थे, सूरत देख कर इर्शाद फ़र्माया कि नफ़ा की तिजारत की। सुहैब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त खजूर नोश फ़र्मा रहे थे और मेरी आंख दुख रही थी, मैं भी साथ खाने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, कि आंख तो दुख रही है और खजूरें खाते हो। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० उस आंख की तरफ़ से खाता हूं जो तन्दुरुस्त है। हुज़ूर सल्ल० यह जवाब सुनकर हंस पड़े। हज़रत सुहैब रज़ि० बड़े ही ख़र्च करने वाले थे, हालांकि हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़र्माया कि तुम फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हो। उन्होंने अर्ज़ किया कि ना-हक़ कहीं ख़र्च नहीं करता। हज़रत उमर रज़ि० का जब विसाल होने लगा तो उन्हीं को जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की वसीयत फ़र्माई थी।[4]

---

1. जिस में तीर रखे जाते हैं, 2. दुर्रेमसूर, 3. असदुलग़ाबा, 4. मशहूर।

9 हज़रत उमर रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत उमर रज़ि० जिनके पाक नाम पर आज मुसलमानों को फ़ख़्र है और जिनके जोशे ईमानी से आज चौदह सौ वर्ष बाद तक काफ़िरों के दिल में ख़ौफ़ है, इस्लाम लाने से कब्ल मुसलमानों के मुक़ाबले और तकलीफ़ पहुंचाने में भी मुमताज़[1] थे, नबी अकरम सल्ल० के क़त्ल के दरपै[2] रहते थे। एक रोज़ कुफ़्फ़ार ने मश्वरा की कमेटी क़ायम की कि कोई है जो मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दे। उमर ने कहा कि मैं करूंगा। लोगों ने कहा कि बेशक तुम्हीं कर सकते हो। उमर रज़ि० तलवार लटकाये हुए उठे और चल दिए। इसी फ़िक्र में जा रहे थे कि एक साहब क़बीला ज़ोहरा के, जिनका नाम हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ि० है और बाज़ों ने और साहब लिखे हैं, मिले। उन्होंने पूछा उमर रज़ि० कहां जा रहे हो? कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के क़त्ल की फ़िक्र में हूं।' (नऊज़ुबिल्लाह) सअद ने कहा कि बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा और बनू अब्दे मनाफ़ से कैसे मुत्मइन हो गये वह तुमको बदले में क़त्ल कर देंगे। इस जवाब पर बिगड़ गए और कहने लगे कि मालूम होता है तू भी बे-दीन (यानी मुसलमान) हो गया, ला पहले, तुझी को निमटा दूं। यह कह कर तलवार सौंत ली और हज़रत सअद रज़ि० ने भी यह कह कर कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं, तलवार संभाल ली। दोनों तरफ़ से तलवार चलने को थी, कि हज़रत सअद रज़ि० ने कहा कि पहले अपने घर की तो ख़बर ले, तेरे बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं। यह सुनना था कि ग़ुस्से से भर गए और सीधे बहन के घर गए। वहाँ हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० जिन का ज़िक्र नं० 6 पर गुज़रा किवाड़ बन्द किए हुए दोनों मियां-बीवी को क़ुरआन शरीफ़ पढा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने किवाड़ खुलवाये। इनकी आवाज़ से हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० तो जल्दी से अन्दर छुप गए और वह सहीफ़ा[3] भी जल्दी में बाहर ही रह गया, जिस पर आयते क़ुरआनी लिखी हुई थीं। हमशीरा ने किवाड़ खोले। हज़रत उमर रज़ि० के हाथ में कोई चीज़ थी, जिसको बहन के सर पर मारा, जिससे सरसे ख़ून बहने लगा और कहा कि अपनी जान की दुश्मन, तू भी बद-दीन हो गई। इसके बाद घर में आये और पूछा कि क्या कर रहे थे और यह आवाज़ किस की थी। बहनोई ने कहा कि बात-चीत कर रहे थे, कहने लगे, 'क्या तुमने अपने दीन को छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिया ? बहनोई ने कहा कि 'अगर दूसरा दीन हक़ हो तब !' यह सुनना

---

1. मशहूर, 2. तैयार, 3. किताब,

था कि उनकी दाढ़ी पकड़ कर खींची और बे-तहाशा टूट पड़े और ज़मीन पर गिरा कर ख़ूब मारा। बहन ने छुड़ाने की कोशिश की तो उनके मुंह पर इस ज़ोर से एक तमांचा मारा कि ख़ून निकल आया। वह भी आख़िर उमर ही की बहन थीं, कहने लगीं, कि उमर ! हमको इस वजह से मारा जाता है कि हम मुसलमान हो गए। बेशक हम मुसलमान हो गए हैं, जो तुझसे हो सके तू कर ले। इसके बाद हज़रत उमर की निगाह उस सहीफ़े पर पड़ी जो जल्दी में बहार रह गया था और ग़ुस्से का जोश भी इस मार-पीट से कम हो गया था और बहन के इस तरह से ख़ून में भर जाने से शर्म सी भी आ रही थी। कहने लगे कि अच्छा मुझे दिखलाओ, यह क्या है। बहन ने कहा कि तू नापाक है और इसको नापाक हाथ नहीं लगा सकते। हरचन्द इस्रार किया[1] मगर वह बे-वुज़ू और ग़ुस्ल के देने को तैयार न हुयीं। हज़रत उमर रज़ि० ने ग़ुस्ल किया और उसको लेकर पढ़ा, उसमें सूरः ताहा लिखी हुई थी। उसको पढ़ना शुरू किया और-

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي

इन्नी अनल्लाहुला इला ह इल्ला अना फ़अबुदनी व आक़िमिस्सला त लिज़िक्री०

तक पढ़ा था कि हालात ही बदल गई। कहने लगे कि अच्छा मुझे भी मुहम्मद सल्ल० की ख़िदमत में ले चलो। यह अल्फ़ाज़ सुनकर हज़रत ख़ब्बाब अन्दर से निकले और कहा कि ए उमर ! तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं कि कल शब पंच शंबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ मांगी थी कि या अल्लाह ! उमर और अबू जह्ल में जो तुझे ज़्यादा पसन्द हो, उससे इस्लाम को क़ुवतअता फ़र्मा। (ये दोनों कुवत में मशहूर थे) मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० की दुआ तुम्हारे हक़ में क़ुबूल हो गई। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जुमा की सुबह को मुसलमान हुए।[2] उनका मुसलमान होना था कि कुफ़्फ़ार के हौसले पस्त होना शुरू हो गए। मगर फिर भी यह निहायत मुख़्तसर जमाअत थी और वह सारा मक्का, बल्कि सारा अरब इसलिए और भी जोश पैदा हुआ और जलसे करके, मश्वरे करके, इन हज़रात को नापैद[3] करने की कोशिश होती थी और तरह-तरह की तदबीरें की जातीं थीं, ताहम[4] इतना ज़रूर हुआ कि मुसलमान मक्का की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि उमर का इस्लाम लाना मुसलमानों की फ़तह थी और उनकी हिजरत मुसलमानों की मदद थी और उनकी ख़िलाफ़त रहमत थी।[5]

---

1. बहुत कहा, 2. ख़मीस, 3. ख़त्म करना, 4. फिर भी, 5. असदुलग़ाबा,

10. मुसलमानों की हब्शा की हिजरत और शुअब बिन अबी तालिब में क़ैद होना

मुसलमानों को और उनके सरदार फ़ख्रे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब कुफ़्फ़ार से तकालीफ़ पहुंचती ही रहीं और आये दिन उनके बजाए कमी के इज़ाफ़ा ही होता रहा तो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० को इसकी इजाज़त फ़र्मा दी कि वह यहां से किसी दूसरी जगह चले जाएं, तो बहुत से हज़रात ने हब्शा की हिजरत[1] फ़र्माई। हब्शा के बादशाह अगरचे नसरानी[2] थे और उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे मगर उनके रहम दिल और मुंसिफ़ मिज़ाज[3] होने की शोहरत थी। चुनांचे नुबूवत के पाँचवे वर्ष रजब के महीने में पहली जमाअत के ग्यारह या बारह मर्द और चार या पांच औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। मक्का वालों ने उनका पीछा भी किया कि यह न जा सकें, मगर यह लोग हाथ न आये, वहां पहुंच कर उनको यह ख़बर मिली कि मक्का वाले सब मुसलमान हो गये और इस्लाम का ग़ल्बा हो गया। इस ख़बर से यह हज़रात बहुत ख़ुश हुए और अपने वतन वापस आ गए लेकिन मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी और मक्का वाले उसी तरह, बल्कि उससे भी ज़्यादा दुश्मनी और तक्लीफ़ें पहुंचाने में मसरूफ़ हैं, तो बड़ी दिक़्क़त हुई। इनमें से बाज़ हज़रात वहीं से वापस हो गए और बाज़ किसी की पनाह लेकर मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए। यह हब्शा की पहली हिजरत कहलाती है। इसके बाद एक बड़ी जमाअत ने जो 83 मर्द और 18 औरतें बतलाई जाती हैं, मुतफ़र्रिक़[4] तौर पर हिजरत की और यह हब्शा की दूसरी हिजरत कहलाती है। बाज़ सहाबा रज़ि० ने दोनों हिजरतें कीं और बाज़ ने एक। कुफ़्फ़ार ने जब यह देखा कि यह लोग हब्शा में चैन की जिन्दगी बसर करने लगे तो उनको और भी ग़ुस्सा आया और बहुत से तुहफ़े-तहायफ़ ले कर नजाशी शाह हब्शा के पास एक वफ़्द भेजा जो बादशाह के लिये बहुत से तोहफ़े ले कर गया और उसके ख़वास और पादरियों के लिए भी बहुत से हदिए लेकर गया जाकर अव्वल पादरियों से और हुक्काम से मिला और हदिए देकर उनसे बादशाह के यहां अपनी सिफ़ारिश का वायदा लिया और फिर बादशाह की ख़िदमत में यह वफ़्द हाज़िर हुआ। अव्वल बादशाह को सज्दा किया, फिर तोहफ़े पेश करके अपनी दर्ख़ास्त पेश की और रिश्वतख़ोर हुक्काम ने ताईद की। उन्होंने कहा कि ऐ बादशाह ! हमारी क़ौम के

---

1. ख़ुदा के लिए अपना वतन माल दौलत छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले जाना, 2. ईसाई, 3. इंसाफ़ पसंद करने वाला 4. अलग-अलग होकर,

चंद बेवकूफ़ लड़के अपने क़दीमी दीन को छोड़कर एक नये दीन में दाख़िल हो गए, जिसको न हम जानते हैं, न आप जानते हैं और आपके मुल्क में आकर रहने लगे। हमको शुरफ़ा-ए-मक्का ने और उन लोगों के बाप-चाचा और रिश्तेदारों ने भेजा है कि उनको वापस लाएं। आप उनको हमारे सुपुर्द कर दें। बादशाह ने कहा कि जिन लोगों ने मेरी पनाह पकड़ी है, बग़ैर तहक़ीक़ उनको हवाले नहीं कर सकता। अव्वल उनसे बुलाकर तहक़ीक़ कर लूं, अगर यह सही हुआ तो हवाले कर दूंगा, चुनांचे मुसलमानों को बुलाया गया। मुसलमान अव्वल बहुत परेशान हुए क्या करें, मगर अल्लाह के फ़ज़्ल ने मदद की और हिम्मत से यह तय किया कि चलना चाहिए और साफ़ बात कहना चाहिए। बादशाह के यहां पहुंच कर सलाम किया। किसी ने एतराज़ किया कि तुमने बादशाह को आदाबे शाही के मुवाफ़िक़ सज्दा नहीं किया। उन लोगों ने कहा कि हमको हमारे नबी ने अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा करने की इजाज़त नहीं दी। इसके बाद बादशाह ने उनसे हालात दर्याफ़्त किए। हज़रत जाफ़र रज़ि० आगे बढ़े और फ़र्माया कि हम लोग जहालत में पड़े हुए थे, न अल्लाह को जानते थे, न उसके रसूलों से वाक़िफ़[1] थे, पत्थरों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, बुरे काम करते थे, रिश्ते-नातों को तोड़ते थे, हम में का कवी[2] ज़ईफ़[3] को हलाक कर देता था। हम इसी हाल में थे कि अल्लाह ने अपना एक रसूल भेजा, जिसके नसब को, उसकी सच्चाई को, उसकी अमानतदारी को, परहेज़गारी को हम ख़ूब जानते हैं। उसने हम को एक अल्लाह वह्दहू ला शरी क लहू की इबादत की तरफ़ बुलाया और पत्थरों और बुतों के पूजने से मना फ़र्माया, उसने हमको अच्छे काम करने का हुक्म दिया, बुरे कामों से मना किया, उसने हमको सच बोलने का हुक्म दिया, अमानतदारी का हुक्म किया, सिला रहमी[4] का हुक्म किया, पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया, नमाज़, रोज़ा, सदक़ा-ख़ैरात का हुक्म दिया और अच्छे अख़्लाक़ तालीम किये, ज़िना, बद-कारी, झूठ बोलना, यतीम का माल खाना, किसी पर तोहमत लगाना और इस क़िस्म के बुरे आमाल से मना फ़रमाया। हमको क़ुरआने पाक की तालीम दी, हम उस पर ईमान लाये और उसके फ़र्मान की तामील की, जिस पर हमारी क़ौम हमारी दुश्मन हो गई और हमको हर तरह सताया। हम लोग मजबूर होकर तुम्हारी पनाह में अपने नबी के इर्शाद से आये हैं। बादशाह ने कहा अच्छा जो क़ुरआन तुम्हारे नबी लेकर आये हैं, वह कुछ मुझे सुनाओ। हज़रत जाफ़र रज़ि० ने सूरः मरयम की अव्वल की आयतें पढ़ीं, जिसको सुनकर बादशाह भी रो दिया और उसके पादरी भी,

1. जानकार, 2. मज़बूत, 3. कमज़ोर, 4. रिश्ते जोड़ना,

जो कसरत से मौजूद थे, सब के सब इस कदर रोये कि दाढ़ियां तर हो गईं। इसके बाद बादशाह ने कहा कि ख़ुदा की क़सम ! यह कलाम और जो क़लाम हज़रत मूसा अलै० लेकर आये थे, एक ही नूर से निकले हैं और उन लोगों से साफ़ इन्कार कर दिया कि मैं इनको तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। वह लोग बड़े परेशान हुए कि बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ी। आपस में सलाह करके एक शख़्स ने कहा कि कल मैं ऐसी तदबीर करूंगा कि बादशाह उनकी जड़ ही काट दे। साथियों ने कहा भी कि ऐसा नहीं चाहिए। यह लोग अगरचे मुसलमान हो गये, मगर फिर भी रिश्तेदार हैं, मगर उसने न माना। दूसरे दिन फिर बादशाह के पास गए और जाकर कहा कि यह लोग हज़रत अलै० ईसा की शान में गुस्ताख़ी करते हैं, उनको अल्लाह का बेटा नहीं मानते। बादशाह ने फिर मुसलमानों को बुलाया। सहाबा रज़ि० फ़र्माते हैं कि दूसरे दिन के बुलाने से हमें और भी ज़्यादा परेशानी हुई। बहरहाल गए, बादशाह ने पूछा कि तुम हज़रत ईसा के बारे में क्या कहते हो ?' उन्होंने कहा, वही कहते हैं जो हमारे नबी पर उनकी शान में नाज़िल हुआ कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, उसके रसूल हैं, उसकी रूह हैं और उसके कलमा हैं, जिसको ख़ुदा ने कुंवारी और पाक मरयम की तरफ़ डाला। नजाशी ने कहा कि हज़रत ईसा भी इसके सिवा कुछ नहीं फ़र्माते। पादरी लोग आपस में कुछ चख़-चख़ करने लगे। नजाशी ने कहा तुम जो चाहो कहो। इसके बाद नजाशी ने उनके तोहफ़े वापस कर दिए और मुसलमानों से कहा, तुम अम्न से रहो, जो शख़्स इनको सतायेगा, उस को तावान देना[1] पड़ेगा और इसका एलान भी कर दिया कि जो शख़्स इनको सतायेगा, उनको तावान देना होगा[2] इसकी वजह से वहां के मुसलमानों का इकराम और भी ज़्यादा होने लगा और इस वफ़्द को ज़िल्लत से वापस आना पड़ा। तो फिर कुफ़्फ़ारे मक्का का जितना भी ग़ुस्सा जोश करता ज़ाहिर है। इसके साथ ही हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने ने उनको और भी जला रखा था और हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि इन लोगों का उनसे मिलना जुलना बन्द हो जाये और इस्लाम का चिराग़ किसी तरह बुझे। इसलिए सरदाराने मक्का की एक बड़ी जमाअत ने आपस में मश्वरा किया कि अब खुल्लम खुल्ला मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दिया जाये लेकिन क़त्ल कर देना भी आसान काम न था, इसलिए कि बनूहाशिम भी बड़े जत्थे और ऊंचे तब्क़े के लोग शुमार होते थे। वह अगरचे अक्सर मुसलमान नहीं हुए थे। लेकिन जो मुसलमान नहीं थे। वह भी हुज़ूर सल्ल० के क़त्ल हो जाने पर आमादा नहीं थे इसलिए इन सब कुफ़्फ़ार

1. जुर्माना, 2. ख़मीस

ने मिलकर एक मुआहदा[1] किया कि सारे बनू हाशिम और बनू अल-मुत्तलिब का बाईकाट किया जाये, न उनको कोई शख़्स अपने पास बैठने दे, न उनसे कोई ख़रीद व फ़रोख़्त करे, न बात-चीत करे, न उनके घर जाये, न उनको अपने घर में आने दे और उस वक़्त तक सुलह न की जाये जब तक कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल के लिये हवाले न कर दें। यह मुआहदा ज़बानी ही गुफ़्तगू पर ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि यकुम मुहर्रम सन् 07 न० को एक मुआहदा तहरीरी लिखकर बैतुल्लाह में लटकाया गया ताकि हर शख़्स उसका एहतराम करे और उसको पूरा करने की कोशिश करे और इस मुआहदा की वजह से तीन वर्ष तक यह सब हज़रात दो पहाड़ों के दर्मियान एक घाटी में नज़रबन्द रहे कि न कोई उनसे मिल सकता था, न यह किसी से मिल सकते थे, न मक्का के किसी आदमी से कोई कोई चीज़ ख़रीद सकते थे, न बाहर के आने वाले किसी ताजिर से मिल सकते थे। अगर कोई शख़्स बाहर निकलता तो पीटा जाता और किसी से ज़रूरत का इज़्हार करता तो साफ़ जवाब पाता। मामूली सा सामान, ग़ल्ला वग़ैरह जो उन लोगों के पास था, वह कहां तक काम देता। आख़िर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े[2] गुज़रने लगे और औरतें और बच्चे भूख से बेताब होकर रोते और चिल्लाते और उनके अइज़्ज़ा[3] को अपनी भूख और तकालीफ़ से ज़्यादा इन बच्चों की तकालीफ़ सतातीं। आख़िर तीन वर्ष के बाद अल्लाह के फ़ज़्ल से वह सहीफ़ा[4] दीमक की नज़्र हुआ और इन हज़रात की यह मुसीबत दूर हुई। तीन वर्ष का ज़माना ऐसे सख़्त बाईकाट और नज़रबन्दी में गुज़रा और ऐसी हालत में इन हज़रात पर क्या-क्या मशक़्क़तें गुज़री होंगी वह ज़ाहिर हैं, लेकिन इसके बावजूद सहाबा किराम रज़ि० तआला अलैहिम अज्मईन निहायत ही साबित क़दमी[5] के साथ अपने दीन पर जमे रहे, बल्कि उसकी इशाअत[6] फ़र्माते रहे।

फ़- यह तकालीफ़ और मशक़्क़तें उन लोगों ने उठाई हैं, जिनके आज हम नाम लेवा कहलाते हैं और अपने को उनका मत्तबअ[7] बतलाते और समझते हैं, हम लोग तरक़्क़ी के बाब में सहाबा किराम जैसी तरक़्क़ियों के ख़्वाब देखते हैं, लेकिन किसी वक़्त ज़रा ग़ौर कर के यह भी सोचना चाहिए कि इन हज़रात ने क़ुर्बानियाँ कितनी फ़र्मायीं और हमने दीन की ख़ातिर, इस्लाम की ख़ातिर, मज़हब की ख़ातिर क्या किया। कामयाबी हमेशा कोशिश और सई के मुनासिब होती है। हम लोग चाहते हैं कि ऐश व आराम, बद-दीनी और दुनियां-तलबी में काफ़िरों के दोश बदोश[8] चलें

1. समझौता, 2. उपवास, 3. रिश्तेदार, 4. किताब, लिखा हुआ समझौता, 5. पैरों के के जमाव 6. फलाना 7. पैरवी करने वाले, 8. कंधे से कंधा मिलाकर।
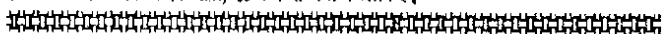
और इस्लामी तरक़्क़ी हमारे साथ हो यह कैसे हो सकता है-

तरसम न रसी बकअबा ऐ आराबी
कीं रह कि तू मीरवी ब तुर्किस्तानस्त

तर्जुमा— मुझे ख़ौफ़ है ओ बदवी ! कि तू काबा को नहीं पहुंच सकता, इसलिए कि यह रास्ता काबा की दूसरी जानिब तुर्किस्तान की तरफ़ जाता है।

दूसरा बाब

अल्लाह जल्लेजलालुहु व अम्म नवालुहु का ख़ौफ़ और डर

दीन के साथ उस जांफ़शानी के बावजूद, जिसके क़िस्से अभी गुज़रे और दीन के लिए अपनी जान व माल, आबरू सब कुछ फ़ना कर देने के बाद जिसका नमूना अभी आप देख चुके हैं, अल्लाह जल्ल शनुहू का ख़ौफ़ और डर, जिस क़दर इन हज़रात में पाया जाता था, अल्लाह करे कि उसका कुछ शम्मा[1] हम सियहकारों को भी नसीब हो जाये। मिसाल के तौर पर इसके भी चन्द क़िस्से लिखे जाते हैं-

1. आंधी के वक़्त हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि जब अब्र, आंधी वग़ैरह होती थी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर पर उस का असर ज़ाहिर होता था और चेहरे का रंग फ़क़[2] हो जाता था और ख़ौफ़ की वजह से कभी अन्दर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बाहर तशरीफ़ लाते थे और यह दुआ पढ़ते रहते-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا
وَخَيْرَ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ

1. हिस्सा, 2. फीका, 3. खुशी,

अल्लाहुम्मः इन्नी अस्अलुक खै़रहा व खै़र मा फ़ीहा व खै़र माउर्सिलत बिहि व अऊ़ज़ुबि क मिन शर्रिहा फ़ीहा व शर्रिमा उरसिलत बिही०

तर्जुमा— 'या अल्लाह इस हवा की भलाई चाहता हूं और जो इस हवा में हो, बारिश वग़ैरह उसकी भलाई चाहता हूँ और जिस ग़रज़ से यह भेजी गई उसकी भलाई चाहता हूं या अल्लाह ! मैं इस हवा की बुराई से पनाह मांगता हूं और जो चीज इसमें है और जिस ग़रज़ से यह भेजी गई, उसकी बुराई से पनाह मांगता हूं।'

और जब बारिश शुरू हो जाती तो चेहरे पर इम्बिसात शुरू[1] होता। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! सब लोग जब अब्र देखते हैं तो ख़ुश होते हैं कि बारिश के आसार मालूम हुए, मगर आप सल्ल० पर एक गरानी महसूस होती है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, आइशा मुझे इसका क्या इत्मीनान है कि इसमें अज़ाब न हो। क़ौमे-आद को हवा के साथ ही अज़ाब दिया गया और वह अब्र को देख कर खुश हुए थे कि इस अब्र में हमारे लिए पानी बरसाया जायेगा, हालाँकि इसमें अज़ाब[2] था। अल्लाह जल्ल शानुहु का इर्शाद है—

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ

'फ़लम्मा रऔहु आरिज़म् मुस्त क़्बिलः औदियतिहिम'

तर्जुमा— उन लोगों ने (यानी क़ौमे-आद ने) जब उस बादल को अपनी वादियों के मुक़ाबिले आते देखा तो कहने लगे, यह बादल तो हम पर बारिश बरसाने वाला है (इर्शादे ख़ुदावन्दी हुआ कि), नहीं, बरसाने वाला नहीं है। बल्कि यह वही (अज़ाब है) जिसकी तुम जल्दी मचाते थे (और नबी सल्ल० से कहते थे कि अगर तू सच्चा है तो हम पर अज़ाब ला), एक आंधी है, जिसमें दर्दनाक अज़ाब है जो हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से हलाक कर देगी। चुनांचे वह लोग आंधी की वजह से ऐसे तबाह हो गए कि बजुज़ उनके मकानात के कुछ न दिखलाई देता था और हम मुजरिमों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।[3]

फ़— यह अल्लाह के ख़ौफ़ का हाल उसी पाक ज़ात का है जिसका सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन[4] होना ख़ुद उसी के इर्शाद से सबको मालूम है कि ख़ुदा कलामे पाक में यह इर्शाद है कि अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको अज़ाब दें। इस वायदा-ए-ख़ुदावन्दी के बावजूद फिर हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु

---

1. ख़ुशी, 2. बयानुल क़ुरआन, 3. अगलों-पिछलों के सरदार,

अलैहि व सल्लम के ख़ौफ़े इलाही का यह हाल था कि अब्र और आंधी को देखकर पहली क़ौमों के अज़ाब याद आ जाते थे, उसी के साथ एक निगाह अपने हाल पर भी करना है कि हम लोग हर वक़्त गुनाहों में मुब्तला रहते हैं और ज़लज़लों और दूसरी क़िस्म के अज़ाबों को देखकर बजाए इस से मुतास्सिर[1] होने के, तौबा, इस्तिग़्फ़ार नमाज़ वग़ैरह में मशग़ूल होने के, दूसरी क़िस्म-क़िस्म की लग्व तहक़ीक़ात[2] में पड़ जाते हैं।

2. अंधेरे में हज़रत अनस रज़ि० का फ़ेल

नज़्र बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ि० की ज़िन्दगी में एक मर्तबा दिन में अंधेरा छा गया। मैं हज़रत अनस रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० के सामने में भी इस क़िस्म की चीज़ें पेश आती थी। उन्होंने फ़र्माया ख़ुदा की पनाह, हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में तो ज़रा सी हवा तेज़ हो जाती थी तो हम लोग क़यामत के आ जाने के ख़ौफ़ से मस्जिदों में दौड़ जाते थे। एक दूसरे सहाबी अबुद्दर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का मामूल था कि जब आंधी चलती तो हुज़ूर सल्ल० घबराये हुए मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते।[1]

फ़– आज किसी बड़े से बड़े हादसा-मुसाबित-बला में भी मस्जिदकिसी को याद आती है, अवाम को छोड़ कर ख़वास में भी इसका एहतमाम, कुछ पाया जाता है? आप ख़ुद ही इसका जवाब अपने दिल में सोचें।

3. सूरज ग्रहण में हुज़ूर सल्ल० का अमल

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सूरज ग्रहण हो गया। सहाबा रज़ि० को फ़िक्र हुई कि इस मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० क्या अमल फ़र्मायेंगे, क्या करेंगे, इसकी तहक़ीक़ की जाए। जो हज़रात अपने-अपने काम में मश्ग़ूल थे छोड़ कर दौड़े हुए आये, नव उम्र लड़के जो तीर अन्दाज़ी की मश्क़ कर रहे थे उनको छोड़कर लपके हुए आये ताकि यह देखें कि हुज़ूर सल्ल० इस वक़्त क्या करेंगे। नबी-ए-अकरम

---

1. असर लेने को, 2. ग़लत खोजों में, 3. जमउल फ़वाइद,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो रकअत कुसूफ़[1] की नमाज पढ़ी, जो इतनी लम्बी थी कि लोग ग़श खाकर गिरने लगे। नमाज़ में नबी-ए-अकरम सल्ल० रोते थे और फ़र्माते थे, ऐ रब ! क्या आपने मुझ से इसका वायदा नहीं फ़र्मा रखा कि आप इन लोगों को मेरे मौजूद होते हुए अज़ाब न फ़र्मायेंगे, और ऐसी हालत में भी अज़ाब न फ़र्मायेंगे कि वह लोग इस्तिग़्फ़ार करते रहें। सूरः अन्फ़ाल में अल्लाह जल्ले शानुहू ने इसका वायदा फ़र्मा रखा है-

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ

वा मा कानल्लाहु, लियु, अज़्ज़िबहुम व अन्त फ़ीहिम वमा कानल्लाहु मुअज़्ज़िबहुम व हुम यस्तग़्फ़िरून०

फिर हुज़ूर सल्ल० ने लोगों को नसीहत फ़र्मायी कि जब कभी ऐसा मौक़ा हो और आफ़्ताब या चांद ग्रहण हो जाये तो घबराकर नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो। मैं जो आख़िरत के हालात देखता हूं अगर तुम को मालूम हो जायें तो हंसना कम कर दो और रोने की कसरत कर दो। जब कभी ऐसी हालत पेश आये, नमाज़ पढ़ो, दुआ मांगो सदक़ा करो।

4. हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात रोते रहना

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा तमाम रात रोते रहे और सुबह तक नमाज़ में यह आयत तिलावत फ़र्माते रहे-

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

इन तुअज़्ज़िबहुम फ़इन्नहुम इबादु क व इन तग़्फ़िर लहुम फ़इन्न क अन्तल् अज़ीज़ुल् हकीम०

'ए अल्लाह ! अगर आप उनको सज़ा दें, जब भी आप मुख़्तार हैं कि यह आपके बन्दे हैं और आप इनके मालिक, और मालिक को हक़ है कि बन्दों को जरायम पर सज़ा दे और अगर आप उनको माफ़ फ़र्मा दें तो भी आप मुख़्तार है कि आप

---

1. सूरज ग्रहण,

ज़बर्दस्त क़ुदरत वाले हैं तो माफ़ी पर भी क़ुदरत है और हिकमत वाले हैं तो माफ़ी भी हिकमत के मुवाफ़िक़ होगी।'[1] इमामे आज़म रज़ि० के मुताल्लिक़ भी नक़ल किया गया है कि वह एक शब तमाम रात

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ

वम्ताज़ुल यौ म अय्युहल् मुज्रिमून०

पढ़ते रहे और रोते रहे। मतलब आयते शरीफ़ा का यह है कि क़यामत के दिन मुज़रिमों को हुक्म होगा कि दुनिया में तो सब मिले-जुले रहे मगर आज मुजरिम लोग सब अलग हो जाएं और ग़ैर मुजरिम अलाहिदा। इस हुक्म को सुनकर जितना भी रोया जाए थोड़ा है कि न मालूम अपना शुमार मुज्रिमों में होगा या फ़र्माबरदारों में।

5. हज़रत अबू बक्र रज़ि० पर अल्लाह का डर

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि जो बइज्मा अह्ले सुन्नत[2] अम्बिया के अलावा तमाम दुनिया के आदमियों से अफ़ज़ल हैं और उनका जन्नती होना यक़ीनी है कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको जन्नती होने की बशारत दी, बल्कि जन्नतियों की एक जमाअत का सरदार बताया और जन्नत के सब दरवाज़ों से उनकी पुकार और बुलावे की ख़ुशख़बरी दी और यह भी फ़र्माया कि मेरी उम्मत में सबसे पहले अबूबक्र रज़ि० जन्नत में दाख़िल होंगे, इस सब के बावजूद फ़र्माया करते कि काश ! मैं कोई दरख़्त होता जो काट दिया जाता। कभी फ़र्माते काश ! मैं कोई घास होता कि जानवर उसको खा लेते। कभी फ़र्माते काश। मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता। एक मर्तबा एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और एक जानवर को बैठा हुआ देख कर ठंडी सांस भरी और फ़र्माया कि तू किस क़दर लुत्फ़ में है कि खाता है, पीता है, दरख़्तों के साए में फिरता है और आख़िरत में तुझ पर कोई हिसाब किताब नहीं, काश अबूबक्र भी तुझ जैसा होता।[3]

रबीआ अस्लमी रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा किसी बात पर मुझमें और हज़रत अबूबक्र रज़ि० में कुछ बात बढ़ गई और उन्होंने मुझे कोई सख़्त लफ़्ज़ कह

---

1. बयानुल क़ुरआन, 2. तमाम सुन्नत वाले जिस पर एक राय हैं, 3. तारीख़ुलख़ुलफ़ा.

दिया जो मुझे नागवार गुज़रा। फ़ौरन उनको ख़्याल हुआ, मुझसे फ़र्माया कि तू भी मुझे कह दे ताकि बदला हो जाये। मैंने कहने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने फ़र्माया कि या तो कह लो वरना मैं हुज़ूर सल्ल० से जाकर अर्ज़ करूंगा। मैंने इस पर भी जवाबी लफ़्ज़ कहने से इन्कार किया। वह तो उठ कर चले गये। बनू असलम के कुछ लोग आये कहने लगे कि यह भी अच्छी बात है कि ख़ुद ही ज़्यादती की और ख़ुद ही उलटी हुज़ूर सल्ल० से शिकायत करें। मैंने कहा तुम जानते भी हो यह कौन हैं। यह अबूबक्र सिद्दीक़ हैं, अगर यह ख़फ़ा हो गए तो अल्लाह का लाडला रसूल सल्ल० मुझसे ख़फ़ा हो जाएगा और उसकी ख़फ़गी[1] से अल्लाह नाराज़ हो जायेंगे तो रबिआ की हलाकत में क्या तरद्दुद है। इसके बाद मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और क़िस्सा अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि ठीक है, तुझे जवाब में और बदले में कहना नहीं चाहिए अलबत्ता इसके बदले में यों कह कि ऐ अबूबक्र ! अल्लाह तुम्हें माफ़ फ़र्मा दें।

फ़— यह है अल्लाह का ख़ौफ़ कि एक मामूली से कलमे में, हज़रत अबू बक्र रज़ि० को बदले का इस क़दर फ़िक्र और एहतमाम हुआ कि अव्वल ख़ुद दर्ख़ास्त की और फिर हुज़ूर सल्ल० के वास्ते से उसका इरादा फ़र्माया कि रबीआ बदला ले लें। आज हम सैकड़ों बातें एक दूसरे को कह देते हैं, इस का ख़्याल भी नहीं होता कि उसका आख़िरत में बदला भी लिया जायेगा या हिसाब किताब भी होगा।

6. हज़रत उमर रज़ि० की हालत

हज़रत उमर रज़ि० बसा औक़ात[2] एक तिनका हाथ में लेते और फ़र्माते, काश, मैं यह तिनका होता, कभी फ़र्माते, काश, मुझे मेरी माँ ने जना ही न होता। एक मर्तबा किसी काम में मशग़ूल थे, एक शख़्स आया और कहने लगा कि फ़लां शख़्स ने मुझ पर ज़ुल्म किया है। आप चलकर मुझे बदला दिलवा दीजिए। आपने उसके एक दुर्रा मार दिया कि जब मैं इस काम के लिए बैठता हूं उस वक़्त तो आते नहीं, जब मैं दूसरे कामों में मशग़ूल हो जाता हूं तो आकर कहते हैं कि बदला दिलवा। वह शख़्स चला गया। आपने आदमी भेज कर उसको बुलवाया और दुर्रा उसको देकर फ़र्माया कि बदला ले लो। उसने अर्ज़ किया कि मैंने अल्लाह के वास्ते माफ़ किया। घर तशरीफ़ लाये, दो रकअत नमाज़ पढ़ी, इसके बाद अपने आपको ख़िताब करके फ़रमाया, ए उमर ! तू कमीना था, अल्लाह ने मुझ को ऊंचा किया, तू गुमराह था,

---

1. नाराज़गी 2. कभी-कभी, है,

अल्लाह ने तुझको हिदायत की, तू ज़लील था, अल्लाह ने तुझे इज़्ज़त दी, फिर लोगों का बादशाह बनाया। अब एक शख़्स आकर कहता है कि मुझे ज़ुल्म का बदला दिलवादे तो तू उसको मारता है, कल को क़यामत के दिन अपने रब को क्या जवाब देगा। बड़ी देर तक इसी तरह आपने आपको मलामत करते रहे।[1]

आपके ग़ुलाम हज़रत असलम कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० के साथ हुर्रा[2] की तरफ़ जा रहा था। एक जगह आग जलती हुई जंगल में नज़र आई, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि शायद यह कोई क़ाफ़िला है, जो रात हो जाने की वजह से शहर में नहीं गया, बाहर ही ठहर गया। चलो उसकी ख़ैर-ख़बर लें। रात को हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करें। वहां पहुंचे तो देखा एक औरत है, जिसके साथ चंद बच्चे हैं, जो रो रहे हैं और चिल्ला रहे हैं और एक देगची चूल्हे पर रखी है, जिसमें पानी भरा हुआ है और उसके नीचे आग जल रही है। उन्होंने सलाम किया और क़रीब आने की इजाज़त लेकर उसके पास गए और पूछा कि यह बच्चे क्यों रो रहे हैं? औरत ने कहा कि भूख से लाचार हो कर रो रहे हैं। दर्याफ़्त फ़र्माया, इस देगची में क्या है ? औरत ने कहा कि पानी भर कर बहलाने के वास्ते आग पर रख दी है ज़रा उनको तसल्ली हो जाये और सो जायें। अमीरुल् मोमिनीन उमर रज़ि० का और मेरा अल्लाह ही के यहां फ़ैसला होगा कि मेरी इस तंगी की ख़बर नहीं लेते। हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे और फ़र्माया कि अल्लाह तुझ पर रहम करे। भला उमर रज़ि० को तेरे हाल की क्या ख़बर है? कहने लगी कि वह हमारे अमीर बने हैं और हमारे हाल की ख़बर भी नहीं रखते। असलम कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० मुझे साथ लेकर वापस हुए और एक बोरी में बैतुल माल में से कुछ आटा और खजूरें और चर्बी और कुछ कपड़े और कुछ दिरहम लिए, ग़रज़ उस बोरी को ख़ूब भर लिया और फ़र्माया कि यह मेरी कमर पर रख दे, मैंने अर्ज़ किया कि मैं ले चलूं। आपने फ़र्माया कि नहीं, मेरी कमर पर रख दे। दो तीन मर्तबा जब मैंने इसरार किया तो फ़र्माया, क्या क़यामत में भी मेरे बोझ को तू ही उठायेगा उसको मैं ही उठाऊंगा, इसलिए कि क़यामत में मुझ ही से इसका सवाल होगा। मैंने मजबूर होकर बोरी को आपकी कमर पर रख दिया। आप निहायत तेज़ी के साथ उसके पास तशरीफ़ ले गए, मैं भी साथ था, वहां पहुंचकर उस देगची में आटा और कुछ चर्बी और खजूरें डालीं और उसको चलाना शुरू किया। और चूल्हे में ख़ुद ही फूंक मारना शुरू किया। असलम रज़ि० कहते हैं कि आपकी गुंजान दाढ़ी से धुआं निकलता हुआ मैं देखता रहा, हत्ताकि हरीरा सा तैयार हो गया। इसके बाद आपने अपने दस्ते मुबारक से

---

1. असदुलग़ाबा, 2. मदीना के क़रीब एक जगह का नाम।

निकाल कर उनको खिलाया। वह सेर होकर हंसी-खेल में मश्गूल हो गए और जो बचा था, वह दूसरे वक़्त के वास्ते उनके हवाले कर दिया। वह औरत बहुत ख़ुश हुई और कहने लगी, अल्लाह तआला तुम्हें जज़ा-एं-ख़ैर दे। तुम थे इसके मुस्तहिक़ कि बजाए हज़रत उमर रज़ि० के तुम ही ख़लीफ़ा बनाये जाते। हज़रत उमर ने उसको तसल्ली दी और फ़र्माया कि जब तुम ख़लीफ़ा के पास जाओगी तो मुझको भी वहीं पाओगी। हज़रत उमर रज़ि० उसके क़रीब ही ज़रा हट कर ज़मीन पर बैठ गये और थोड़ी देर बैठने के बाद चले आये और फ़रमाया कि मैं इसलिए बैठा था कि मैंने उनको रोते हुए देखा था। मेरा दिल चाहा कि थोड़ी देर मैं उनको हंसते हुए भी देखूं[1]। सुबह की नमाज़ में अक्सर सूरः कह्फ़ ताहा वग़ैरह बड़ी सूरतें पढ़ते और रोते कि कई-कई सफ़ों तक आवाज़ जाती। एक मर्तबा सुबह की नमाज़ में सूरः यूसुफ़ पढ़ रहे थे-

इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज्नी इलल्लाहि

पर पहुंचे तो रोते-रोते आवाज़ न निकली। तहज्जुद की नमाज़ में बाज़ मर्तबा रोते-रोते गिर जाते और बीमार हो जाते।

फ़- यह है अल्लाह का ख़ौफ़ उस शख़्स का जिसके नाम से बड़े-बड़े नामवर बादशाह डरते थे, कांपते थे। आज भी चौदह सौ वर्ष के ज़माने तक उसका दबदबा माना हुआ है। आज कोई बादशाह नहीं, हाकिम नहीं, कोई मामूली-सा अमीर भी अपनी रिआया के साथ ऐसा बर्ताव करता है ?

7. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की नसीहत

वह्ब बिन मुनब्बह कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की ज़ाहिरी बीनाई जाने के बाद मैं उनको लिए जा रहा था। वह मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए। वहां पहुंचकर एक मज्मे से कुछ झगड़े की आवाज़ आ रही थी। फ़र्माया, मुझे, उस मज्मे की तरफ़ ले चलो, मैं उस तरफ़ ले गया। वहाँ पहुंचकर आपने सलाम किया। उन लोगों ने बैठने की दर्ख़ास्त की तो आपने इन्कार फ़र्मा दिया और फ़र्माया कि तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह के ख़ास बन्दों की जमाअत में वह लोग हैं, जिनको उसके ख़ौफ़ ने चुप कर रखा है, हालांकि वह न अजिज़ हैं न गूंगे, बल्कि फ़सीह[2] लोग हैं, बोलने वाले हैं, समझदार हैं मगर अल्लाह तआला की बड़ाई के ज़िक्र ने उनकी अक़्लों को उड़ा रखा है, उसके दिल इसकी वजह से टूटे रहते हैं और ज़बानें चुप

1. अश्हर मशहीर मुंतख़ब कंजुल उम्माल, 2. अच्छी ज़बान में बातें करने वाले,

रहती हैं और जब इस हालत पर उनको पुख़्तगी मयस्सर हो जाती है तो इसकी वजह से वह नेक कामों में जल्दी करते हैं, तुम लोग उनसे कहाँ हट गए। वह्ब रज़ि० कहते हैं कि उसके बाद मैंने दो आदमियों को भी एक जगह जमा नहीं देखा।

फ़– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० अल्लाह के ख़ौफ़ से इस क़दर रोते थे कि चेहरे पर आसुओं के हर वक़्त बहने से दो नालियां सी बन गईं थीं। ऊपर के क़िस्से में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने नेक कामों पर एहतमाम का यह एक सहल नुस्ख़ा बतलाया कि अल्लाह की अज़्मत और उसकी बड़ाई का सोच किया जाये कि इसके बाद हर क़िस्म का नेक अमल सहल है और फिर वह यक़ीनन इख़्लास से भरा हुआ होगा। रात दिन के 24 घंटों में अगर थोड़ा सा वक़्त भी हम लोग इसके सोचने की ख़ातिर निकाल लें तो क्या मुश्किल है ?

8. तबूक के सफ़र में क़ौमे समूद की बस्ती पर गुज़र

ग़ज़्वा-ए-तबूक[1] मशहूर ग़ज़्वा है और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी ग़ज़्वा है। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० को इत्तिला मिली कि रूम का बादशाह मदीना-मुनव्वरा पर हमला करने का इरादा कर रहा है और बहुत बड़ा लश्कर लेकर शाम के रास्ते से मदीना को आ रहा है। इस ख़बर पर 5 रजब सन् 9 हि० पंजशंबा को नबी अक्रम सल्ल० उसके मुक़ाबले के लिए मदीना तैयिबा से रवाना हो गए। चूंकि ज़माना सख़्त गर्मी का था और मुक़ाबला भी सख़्त था, इसलिए हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने साफ़ ऐलान फ़र्मा दिया था कि रूम के बादशाह से मुक़ाबले के लिए चलना है, तैयारी कर ली जाये और हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद इसके लिए चन्दा फ़र्माना शुरू किया। यही लड़ाई है जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० घर का सारा सामान ले आये और जब उनसे से पूछा कि घर वालों के लिए क्या छोड़ा तो फ़र्माया कि उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को छोड़ आया और हज़रत उमर रज़ि० घर के पूरे सामान में से आधा ले आये, जिसका क़िस्सा न० 4 बाब 6 में आता है और हज़रत उस्मान ग़नी ने एक तिहाई लश्कर का पूरा सामान मुहय्या फ़र्माया और इसी तरह हर शख़्स अपनी हैसियत से ज़्यादा ही लाया। इसके बावजूद चूंकि आम तौर

1. ग़ज़्वा उस लड़ाई को कहते हैं, जिसमें हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद शरीक हुए हों,

से तंगी थी, इसलिए दस-दस आदमी एक ऊंट पर थे कि नौबत-ब-नौबत[1] उस पर सवार होते थे। इसी लिए इस लड़ाई का नाम जैशुल उसरत (तंगी का लश्कर) भी था। यह लड़ाई निहायत ही सख़्त थी कि सफ़र भी दूर का था और मौसम भी इस क़दर सख़्त कि गर्मी की इन्तहा नहीं थी और इसके साथ ही मदीना तैयबा में खजूर के पकने का ज़माना ज़ोर पर था कि सारे बाग़ बिल्कुल पके हुए खड़े थे और खजूर ही पर मदीना-तैयबा वालों की ज़िन्दगी का ज़्यादा दारोमदार था कि साल भर की रोज़ी के जमा करने का गोया यही ज़माना था। इन हालात में यह वक़्त मुसलमानों के लिए निहायत सख़्त इम्तिहान का था कि उधर अल्लाह का ख़ौफ़, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद, जिसकी वजह से बग़ैर जाये न बनती थी और दूसरी जानिब यह सारी दिक़्क़तें कि हर वक़्त मुस्तक़िल रोक थी, बिलख़ुसूस साल भर की मेहनत और पके-पकाये दरख़्तों का यों बे-यार व मददगार छोड़ जाना जितना मुश्किल था, वह ज़ाहिर है मगर इस सब के बावजूद अल्लाह का ख़ौफ़ इन हज़रात पर ग़ालिब था, इस लिए बजुज़ मुनाफ़िक़ीन और माज़ूरीन जिसमें औरतें और बच्चे भी दाख़िल थे और वह लोग भी जो बे-ज़रूरत मदीना तैयबा में छोड़े गए या किसी क़िस्म की सवारी न मिल सकने के वजह से रोते हुए रह गए थे, जिनके बारे में 'तवल्ल व अअयुनु हुम तफ़ीज़ु मिनद्दमअि' नाज़िल हुई और सब ही हज़रात हमरिकाब[2] थे, अल-बत्ता तीन हज़रात बिला उज़्र के शरीक नहीं थे, जिनका क़िस्सा आइंदा आ रहा है। रास्ते में क़ौम समूद की बस्ती पर गुज़र हुआ जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दामन से अपने चेहरा-ए-अन्वर को ढांक लिया और ऊंटनी को तेज़ कर दिया और सहाबा रज़ि० को भी हुक्म फ़र्माया कि यहां से तेज़ चलो और ज़ालिमों की बस्तियों में से रोते हुए गुज़रो और उससे डरते हुए गुज़रो कि तुम पर भी ख़ुदा न ख़्वास्ता वह अज़ाब कहीं नाज़िल न हो जाये जो उन पर नाज़िल हुआ था[3]।

फ़— अल्लाह का प्यारा नबी और लाडला रसूल सल्ल० अज़ाब वाली जगह से डरता हुआ, ख़ौफ़ करता हुआ गुज़रता है और अपने जांनिसार दोस्तों को, जो इस सख़्त मजबूरी के वक़्त में भी जां-निसारी का सबूत देते हैं, रोते हुए जाने का हुक्म फ़र्माता हैं कि ख़ुदा-न-ख़्वासता वह अज़ाब उन पर न नाज़िल हो जाये। हम लोग किसी बस्ती में ज़लज़ला आ जाये तो उसको सैरगाह बनाते हैं, खंडहरों की तफ़रीह को जाते हैं और रोना तो दर-किनार, रोने का ख़्याल भी दिल में नहीं लाते।

---

1. बारी-बारी, 2. साथ रवाना हुए, 3. इस्लाम खमीस.

9. तबूक में हज़रत कअब रज़ि० की ग़ैर हाज़िरी और तौबा

इसी तबूक की लड़ाई में माज़ूरीन[1] के अलावा अस्सी से ज़्यादा तो मुनाफ़िक़ अन्सार में से थे और इतने की तक़रीबन बद्वी लोगों में से। इन के अलावा एक बड़ी जमाअत बाहर के लोगों में से ऐसी थी जो शरीक नहीं हुए और इतना ही नहीं बल्कि यह लोग दूसरों को भी 'ला तंफ़िरू फ़िलहर्रि (गर्मी में न निकलो) कह कर रोकते थे। हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं कि जहन्नम की आग की गर्मी बहुत सख़्त है। इसके अलावा तीन सच्चे पक्के मुसलमान भी ऐसे थे जो बिला किसी क़वी उज़्र के लड़ाई में शरीक नहीं हो सके। एक कअब बिन मालिक रज़ि०, दूसरे हिलाल बिन उमैया, तीसरे मुरार: बिन रबीअ रज़ि०, यह तीनों हज़रात किसी निफ़ाक़ या उज़्र से नहीं ठहरे, बल्कि ख़ुशहाली ही सबब रह जाने का बन गई। काब रज़ि० अपनी सर गुज़श्त[2] जो इस मौक़े पर पेश आई, मुफ़स्सल सुनाते हैं जो आइन्दा आ रही है-

मुरार: बिन रबीअ का बाग़ ख़ूब फल रहा था। उनको ख़्याल हुआ कि अगर मैं चला गया तो यह सब ज़ाया हो जायेगा। हमेशा मैं लड़ाइयों में शरीक होता ही रहा हूं। अगर इस मर्तबा रह गया, तो क्या मुज़ायक़ा है, इसलिए ठहर गए, मगर जब तनब्बुह हुआ तो चूंकि बाग़ ही इसका सबब हुआ था, इसलिए सब को अल्लाह के रास्ते में सद्क़ा कर दिया।

हिलाल रज़ि० के अह्ल व इ़य्ज़ा,[3] जो कहीं गए हुए थे, इत्तिफ़ाक़ से उस मौक़े पर सब जमा हो गए, उनको भी यही ख़्याल हुआ कि हमेशा शिर्कत करता रहता हूं, अगर इस मौक़े पर न जाऊं तो क्या हर्ज है इसलिए ठहर गये, मगर तनब्बुह होने पर सब से ताल्लुक़ात मुंक़तअ कर लेने का इरादा किया कि यह ताल्लुक़ात ही इस लड़ाई में शिर्कत न करने का सबब हुए।

हज़रत कअब रज़ि० का क़िस्सा अहादीस में कसरत से आता है। वह अपनी सरगुज़िश्त बड़ी तफ़्सील से सुनाया करते थे। वह फ़र्माते हैं कि मैं तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना क़वी व मालदार नहीं था, जितना कि तबूक के वक़्त था, उस वक़्त मेरे पास ख़ुद अपनी ज़ाती दो ऊंटनियां थीं। इससे पहले कभी भी दो ऊंटनियां

---

1. जिन्हें शरई उज़्र या मजबूरी रही हो, 2. कहानी, रिपोर्ट, 3. बाल-बच्चे, रिश्तेदार,

मेरे पास होने की नौबत नहीं आई। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हमेशा आदते शरीफ़ा यह थी कि जिस तरफ़ लड़ाई का इरादा होता था उसका इज़्हार नहीं होता था, बल्कि दूसरी जानिबों के अह्वाल दर्याफ़्त फ़र्माते थे, मगर इस लड़ाई में चूंकि गर्मी भी शदीद थी और सफ़र भी दूर का था, इन के अलावा दुश्मनों की भी बहुत बड़ी जमाअत थी, इसलिए साफ़ ऐलान फ़र्मा दिया था ताकि लोग तैयारी कर लें। चुनांचे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमाअत हुज़ूर सल्ल० के साथ हो गई कि रजिस्टर में उनका नाम भी लिखना दुश्वार था और मज्मा की कसरत की वजह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता कि मैं न जाऊं, न पता चले तो दुशवार न था। इसके साथ ही फल बिल्कुल पक रहे थे। मैं भी सामाने सफ़र की तैयारी का सुबह ही से इरादा करता मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नौबत न आती, लेकिन मैं अपने दिल में ख़्याल करता कि मुझे वुसअत[1] हासिल है, जब इरादा पुख़्ता करूंगा, फ़ौरन हो जायेगा, हालांकि हुज़ूर अक़्दस सल्ल० रवाना भी हो गए और मुसलमान आपके साथ-साथ, मगर मेरा सामाने सफ़र तैयार न हुआ फिर भी यही ख़्याल रहा कि एक-दो रोज़ में तैयारी करके जा मिलूंगा। इसी तरह आज कल पर टलता रहा, हत्ताकि हुज़ूर सल्ल० के वहां पहुंचने का ज़माना तक़रीबन आ गया। उस वक़्त मैंने कोशिश भी की मगर सामान न हो सका। अब मैं जब मदीना तैयबा में इधर-उधर देखता हूं तो सिर्फ़ वही लोग मिलते हैं जिनके ऊपर निफ़ाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुआ था या वह माज़ूर थे और हुज़ूर सल्ल० ने भी तबूक पहुंच कर दर्याफ़्त फ़र्माया कि काब रज़ि० नज़र नहीं पड़ते, क्या बात हुई एक साहब ने कहा, या रसूलल्लाह! उसको अपने माल व जमाल की अकड़ ने रोका। हज़रत मुआज़ ने फ़र्माया कि ग़लत कहा, हम जहां तक समझते हैं वह भला आदमी है मगर हुज़ूर अक़दस सल्ल० ने बिल्कुल सुकूत फ़र्माया और कुछ नहीं बोले। हत्ताकि चन्द रोज़ में मैंने वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रंज व ग़म सवार हुआ और बड़ा फ़िक्र हुआ। दिल में झूठे-झूठे उज़्र आते थे कि इस वक़्त किसी फ़र्ज़ी उज़्र से हुज़ूर सल्ल० के ग़ुस्से से जान बचा लूं, फिर किसी वक़्त माफ़ी की दर्ख़्वास्त कर लूंगा और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मश्वरा करता रहा। मगर जब मुझे मालूम हो गया कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले ही आये तो मेरे दिल ने फ़ैसला किया कि बग़ैर सच के कोई चीज़ निजात न देगी और मैंने सच-सच अर्ज़ करने की ठान ही ली। हुज़ूर सल्ल० की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद

---

1. माल ज़्यादती।

में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअत तहीयतुल मस्जिद पढ़ते और वहां थोड़ी देर तक तशरीफ़ रखते कि लोगों से मुलाक़ात फ़र्मायें। चुनांचे हस्ब मामूल हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ फर्मा रहे और मुनाफ़िक़ लोग आकर झूठे-झूठे उज्र करते और क़स्में खाते रहे। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके ज़ाहिर हाल को क़ुबूल फ़र्माते रहे और बातिन को अल्लाह के सुपुर्द फ़र्माते रहे कि इतने में मैं भी हाज़िर हुआ और सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने नाराज़गी के अन्दाज में तबस्सुम[1] फ़र्माया और एराज़[2] फ़र्माया। मैंने अर्ज़ किया, या अल्लाह के नबी! आपने एराज़ फ़र्मा लिया। मैं ख़ुदा की क़सम! न तो मुनाफ़िक़ हूं, न मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद[3] है। इर्शाद फ़र्माया कि यहाँ आ। मैं क़रीब होकर बैठ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुझे किस चीज़ ने रोका? क्या तूने ऊंटनियां नहीं ख़रीद रखी थीं? मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं किसी दुनियादार के पास इस वक़्त होता तो मुझे यक़ीन है कि मैं उसके ग़ुस्से से माक़ूल उज़्र के साथ ख़लासी पा लेता कि मुझे बात करने का सलीक़ा अल्लाह तआला ने अता फ़र्माया है, लेकिन आपके मुताल्लिक़ मुझे मालूम है कि अगर आज झूठ से आप को राज़ी कर लूं तो क़रीब है कि अल्लाह जल्ल जलालुहु मुझसे नाराज होंगे और अगर आपसे साफ़-साफ़ अर्ज़ कर दूं तो आप को ग़ुस्सा आयेगा लेकिन क़रीब है कि अल्लाह की पाक ज़ात आपके इताब[4] को ज़ायल फ़र्मा देगी। इसलिए सच ही अर्ज़ करता हूं कि वल्लाह! मुझे कोई उज्र नहीं था और जैसा फ़ारिग़ और वुसअत वाला मैं उस ज़माने में था, किसी ज़माने में भी इससे पहले नहीं हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि उसने सच कहा फिर फ़र्माया अच्छा! उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला हक़ तआला शानुहू फ़र्मायेंगे।

मैं वहाँ से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझे मलामत की कि तूने इससे पहले कोई गुनाह नहीं किया था। अगर तू कोई उज्र करके हुज़ूर सल्ल से इस्तिग़फ़ार की दरख़ास्त करता तो हुज़ूर सल्ल० का इस्तिग़फ़ार[5] तेरे लिए काफ़ी था। मैंने उनसे पूछा कि कोई और भी ऐसा शख़्स है जिसके साथ ऐसा मामला हुआ हो। लोगों ने बताया कि दो शख़्सों के साथ और भी यही मामला हुआ कि उन्होंने भी यही गुफ़्तगू की जो तूने की और यही जवाब उनको मिला जो तुझको मिला-एक हिलाल बिन उमैया, दूसरे मुरारः बिन रबीअ। मैंने देखा कि दो सालेह[6] शख़्स जो दोनों बद्री[7] हैं, वह भी मेरे शरीके हाल हैं। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

---

1. मुस्कराये, 2. मुंह फेर लिया, 3. संकोच, 4. ग़ुस्सा, 5. ख़त्म करम, 6. नेक, 7. बद्री वे लोग कहलाते हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। उन की बुज़ुर्गी और बड़ाई मुसल्लम है। अहादीस में भी उन की बड़ाई आयी है। कितनी ही हदीसों में उन की मग़फ़िरत और अल्लाह तआला की उनसे ख़ुश होने की बशारतें आयी हैं।

ने हम तीनों से बोलने की मुमानअत भी फ़र्मा दी[1] कि कोई शख़्स हम से कलाम न करे। यह क़ायदे की बात हे कि ग़ुस्सा उसी पर आता है जिससे ताल्लुक़ होता है, और तम्बीह उसी को की जाती है जिसमें उसकी अह्लियत भी हो, जिसमें इस्लाह व सलाह की क़ाबिलयत ही न हो, उसको तम्बीह ही कौन करता है।

हज़रत कअब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की मुमानअत पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इज्तिनाब[2] करने लगे और गोया दुनियां ही बदल गई, हालांकि ज़मीन बावजूद अपनी वुसअत के मुझे तंग मालूम होने लगी। सारे लोग अजनबी मालूम होने लगे, दर व दीवार ओपरे बन गये। मुझे सबसे ज़्यादा इसका फ़िक्र था कि मैं इस हाल में मर गया तो हुज़ूर सल्ल० जनाज़े की नमाज़ भी न पढ़ेंगे और ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया तो मैं हमेशा-हमेशा के लिए ऐसा ही रहूंगा, न कोई मुझ से कलाम करेगा, न मेरी नमाज़ पढ़ेगा कि हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद के ख़िलाफ़ कौन कर सकता है, ग़रज़ हम लोगों ने पचास दिन इसी हाल में गुज़ारे। मेरे दोनों साथी तो शुरू ही से घरों में छुप कर बैठ गये थे, मैं सबमें क़वी था, चलता-फिरता बाज़ार में जाता, नमाज़ में शरीक होता, मगर मुझ से बात कोई न करता। हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर होकर सलाम करता और बहुत ग़ौर से ख़्याल करता कि हुज़ूर सल्ल० के लबे मुबारक जवाब के लिए हिलें या नहीं नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० के क़रीब ही खड़े होकर नमाज़ पूरी करता और आँख चुरा कर देखता कि हुज़ूर सल्ल० मुझे देखते भी हैं या नहीं जब मैं नमाज़ में मश्ग़ूल होता तो हुज़ूर सल्ल० मुझे देखते और जब मैं इधर मुतवज्जह होता तो हुज़ूर सल्ल० मुंह फेर लेते और मेरी जानिब से एराज़ फ़र्मा लेते।

ग़रज़ यही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बात-चीत बन्द करना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबू क़तादा रज़ि० की दीवार पर चढ़ा। वह मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई भी थे और मुझसे ताल्लुक़ात भी बहुत ही ज़्यादा थे। मैंने ऊपर चढ़ कर सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब न दिया। मैंने उनको क़सम देकर पूछा कि क्या तुम्हें मालूम नहीं, मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत है। उन्होंने इसका भी जवाब न दिया। मैंने दोबारा क़सम दी और दर्याफ़्त किया, वह फिर भी चुप ही रहे। मैंने तीसरी मर्तबा फिर क़सम देकर पूछा, उन्होंने कहा अल्लाह जाने और उस का रसूल! यह कलमा सुनकर मेरी आंखों में आंसू

---

1. मना कर दिया, 2. कतराना।

निकल पड़े और वहां से लौट आया। इसी दौरान मैं एक मर्तबा मदीना के बाजार में जा रहा था कि एक क़िब्ती को जो नसरानी था और शाम से मदीना मुनव्वरा अपना ग़ल्ला फ़रोख़्त करने आया था, यह कहते हुए सुना कि कोई कअब बिन मालिक का पता बता दो। लोगों ने उसको मेरी तरफ़ इशारा करके बताया, वह मेरे पास आया और ग़स्सान के काफ़िर बादशाह का ख़त लाकर मुझे दिया, उसमें लिखा हुआ था, हमें मालूम हुआ कि तुम्हारे आक़ा ने तुम पर ज़ुल्म कर रखा है, तुम्हें अल्लाह ज़िल्लत की जगह न रखे और न ज़ाया[1] करे। तुम हमारे पास आओ, हम तुम्हारी मदद करेंगे (दुनियां का क़ायदा होता है कि किसी बड़े की तरफ़ से अगर छोटों को तम्बीह होती है तो उनको बहकाने वाले और ज़्यादा खोने की कोशिश किया करते हैं और ख़ैर ख़्वाह[2] बनकर इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ से इश्तिआल[3] दिलाया ही करते हैं)।

कअब रज़ि० कहते हैं कि मैंने यह ख़त पढ़ कर इन्ना लिल्लाहि पढ़ी कि मेरी हालत यहां तक पहुंच गई कि काफ़िर भी मुझ में तमा करने लगे और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तद्बीरें होने लगीं। यह एक और मुसीबत आई और इस ख़त को ले जाकर मैंने एक तनूर में फ़ेंक दिया और हुज़ूर सल्ल० से जाकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपके एराज की वजह से मेरी यह हालत हो गई कि काफ़िर मुझ में तमा करने लगे। इसी हालत में चालीस रोज़ हम पर गुज़रे थे कि हुज़ूर सल्ल० का क़ासिद[4] मेरे पास हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद वाला लेकर आया कि अपनी बीवी को भी छोड़ दो। मैंने दर्याफ़्त किया कि क्या मंशा है, उसको तलाक़ दे दूं? कहा नहीं, बल्कि अलहदगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन्हीं क़ासिद की मारफ़त यही हुक्म पहुंचा। मैंने अपनी बीवी से कह दिया कि तू अपने मैके में चली जा। जब तक अल्लाह तआला शानुहू इस अम्र का फ़ैसला फ़र्मायें, वहीं रहना। हिलाल बिन उमैया रज़ि० की बीवी, हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुयीं और अर्ज़ किया कि हिलाल बिल्कुल बूढ़े शख़्स हैं, कोई ख़बरगीरी करने वाला न होगा तो हलाक हो जायेंगे। अगर आप इजाज़त दें और आपको गरानी न हो तो मैं कुछ कामकाज उन का कर दिया करूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुज़ायक़ा नहीं, लेकिन सोहबत न करें। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! इस चीज़ की तरफ़ तो उनको मैलान भी नहीं। जिस रोज़ से यह वाक़िआ पेश आया, आज तक उनका वक़्त रोते

---

1. बर्बाद, 2. भलाई चाहने वाला, 3. भड़काना, 4. दूत।

ही गुजर रहा है। कअब[1] कहते हैं, कि मुझसे भी कहा गया कि हिलाल की तरह तू भी अगर बीवी की खिद्मत की इजाज़त ले ले तो शायद मिल जाए। मैंने कहा वह बूढ़े हैं, मैं जवान हूं, न मालूम मुझे क्या जवाब मिले, इस लिए मैं जुरअत नहीं करता। ग़रज इस हाल में दस रोज़ और गुज़रे कि हमसे बात-चीत, मेलजोल छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन की सुबह की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़कर मैं निहायत ग़मगीन बैठा हुआ था, ज़मीन मुझ पर बिल्कुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी कि सलअ पहाड़ की चोटी पर से एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी कि कअब रज़ि० ! ख़ुशख़बरी हो तुमको। मैं इतना ही सुनकर सज्दे में गिर गया और ख़ुशी के मारे रोने लगा और समझा कि तंगी दूर हो गई। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद हमारी माफ़ी का एलान फ़र्माया, जिस पर एक शख़्स ने तो पहाड़ पर चढ़ कर जोर से आवाज़ दी कि वह सबसे पहले पहुंच गई इसके बाद एक साहब घोड़े पर सवार होकर भागे हुए आए, मैं जो कपड़े पहन रहा था, वह निकाल कर बशारत देने वाले की नज़र कर दिए। ख़ुदा की क़सम ! इन दो कपड़ों के सिवा और कोई कपड़ा[2] उस वक़्त मेरी मिल्क में न था। इसके बाद मैंने दो कपड़े मांगे हुए पहने और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इसी तरह मेरे दोनों साथियों के पास भी ख़ुशख़बरी लेकर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुआ तो वह लोग जो ख़िद्मते अक़्दस में हाज़िर थे, मुझे मुबारकबाद देने के लिए दौड़े और सबसे पहले अबूतलहा रज़ि० ने बढ़कर मुबारकबाद दी और मुसाफ़ा किया जो हमेशा ही यादगार रहेगा, मैंने हुज़ूर सल्ल० की बारगाह में जा कर सलाम किया तो चेहरा-ए-अन्वर खिल रहा था और अन्वार ख़ुशी के चहरे से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा-ए-मुबारक ख़ुशी के वक़्त में चांद की तरह से चमकने लगता था। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मेरी तौबा की तकमील यह है कि मेरी जायदाद जो है वह सब अल्लाह के रास्ते में सद्क़ा है (कि यह सरवत ही इस मुसीबत का सबब बनी थी।) हुज़ूर सल्ल० न फ़र्माया कि इसमें तंगी होगी, कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो। मैंने अर्ज़ किया कि बेहतर है, ख़ैबर का हिस्सा रहने दिया जाए, मुझे सच ही ने निजात दी, इसलिए मैंने अहद कर लिया कि हमेशा ही सच बोलूंगा[3]।

---

1. मुम्किन है बीवी ने कहा हो कि बीवियों से अलाहदगी का हुक्म अब तक नहीं हुआ था या किसी बच्चे या मुनाफ़िक़ ने कहा हो कि सहाबा रज़ि० तो बोलते ही न थे। 2. अगरचे कपड़े के सिवा और माल मौजूद था मगर उस वक़्त की आम ज़िन्दगी यही थी कि फ़िज़ूल चीज़ें ज़्यादा न होती थीं, इसलिए कपड़े दो ही थे। 3. दुर्रेमंसूर-फ़त्हुल बारी।

फ़- यह है सहाबा-ए-किराम की इताअत और दीनदारी का और अल्लाह के ख़ौफ का नमूना, कि हमेशा जंग में यह हज़रात शरीक रहे। एक मर्तबा की ग़ैर हाज़िरी पर क्या-क्या इताब हुआ और उसको किस फ़र्माबरदारी से बर्दाश्त किया कि पचास दिन रो कर गुज़ार दिए और माल जिसकी वजह से यह वाक़िआ पेश आया था, वह भी सद्क़ा कर दिया और काफ़िरों ने तमअ दिलाई तो बजाए मुश्तअिल होने के और ज़्यादा पशेमान हुए और उसको भी अल्लाह का इताब और हुज़ूर सल्ल० के एराज़ की वजह से समझा कि मेरे दीन का ज़ोअफ़ इस दर्जे तक पहुंच गया कि काफ़िरों को इसकी तमअ होने लगी कि वह मुझे बे-दीन बना दें। हम लोग भी मुसलमान हैं। अल्लाह और उसके पाक रसूल सल्ल० के इर्शादात भी सामने हैं। बड़े से बड़ा हुक्म नमाज़ ही का ले लो कि ईमान के बाद इसके बराबर कोई चीज़ भी नहीं। कितने हैं जो इस हुक्म की तामील करते हैं और जो करते हैं वह भी कैसे करते हैं। इसके बाद ज़कात और हज का तो पूछना ही किया कि इसमें तो माल भी खर्च होता है।

10. सहाबा रज़ि० के हंसने पर हुज़ूर सल्ल० की तंबीह और क़ब्र की याद

नबी अक्रम सल्ललाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा नमाज़ के लिए तश्रीफ़ लाये तो एक जमाअत को देखा कि वह खिलखिला कर हंस रही थी और हंसी की वजह से दांत खुल रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अगर मौत को कसरत से याद किया करो तो जो हालत मैं देख रहा हूं, वह पैदा न हो, लिहाज़ा मौत को कसरत से याद किया करो। क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिसमें वह यह आवाज न देती हो कि मैं बेगान्गी का घर हूं, तन्हाई का घर हूं, मिट्टी का घर हूं, कीड़ों का घर हूं। जब कोई मोमिन क़ब्र में रखा जाता है तो वह कहती है कि तेरा आना मुबारक है। बहुत अच्छा किया, तू आ गया। जितने आदमी ज़मीन पर चलते थे तू उन सब में मुझे ज़्यादा पसन्द था। आज जब तू मेरे पास आया है तो मेरे बेहतरीन सुलूक को देखेगा। इसके बाद वह क़ब्र जहां तक मुर्दे की नज़र पहुंच सके, वहां तक वसीअ हो जाती है और एक दरवाज़ा उसमें जन्नत का खुल जाता है जिससे वहां की हवा और ख़ुश्बुएं उसको आती रहती हैं। और जब कोई बदकिरदार क़ब्र में रखा जाता है तो वह कहती है, तेरा आना ना-मुबारक है, बुरा किया जो तू आया! ज़मीन पर जितने आदमी चलते थे, उन सब में तुझ ही से मुझे ज़्यादा नफ़रत थी। आज जब तू मेरे हवाले हुआ है तो मेरे बर्ताव को भी देख लेगा। इसके बाद वह इस तरह

से उसको दबाती है कि पसलियां आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं और सत्तर अज़दहे उस पर ऐसे मुसल्लत हो जाते हैं कि अगर एक भी ज़मीन पर फ़ुंकार मारे तो उसके असर से ज़मीन पर घास तक बाक़ी न रहे, वह उसको क़यामत तक डसते रहते हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि क़ब्र या जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा।[1]

फ़— अल्लाह का ख़ौफ़ बड़ी ज़रूरी और अहम चीज़ है। यही वजह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर किसी गहरी सोच में रहते थे और मौत को याद करना उसके लिए मुफ़ीद है। इसीलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह नुस्ख़ा इर्शाद फ़र्माया, कभी-कभी मौत को याद करते रहना बहुत ही ज़रूरी और मुफ़ीद है।

11. हज़रत हंज़ला रज़ि० को निफ़ाक़ का डर

हज़रत हंज़ला रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हम लोग हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में थे। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वाज़ फ़र्माया, जिससे क़ुलूब[2] नर्म हो गये और आंखों से आंसू बहने लगे और अपनी हक़ीक़त हमें ज़ाहिर हो गई। हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस से उठकर मैं घर आया, और बीवी-बच्चे पास आ गये और कुछ दुनिया का ज़िक्र-तज़्किरा शुरू हो गया और बच्चों के साथ हंसना-बोलना, बीवी के साथ मज़ाक़ शुरू हो गया और वह हालत जाती रही, जो हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में थी। दफ़अतन[3] ख़्याल आया कि मैं पहले से किस हाल में था, अब क्या हो गया। मैंने अपने दिल में कहा कि तू तो मुनाफ़िक़ हो गया कि ज़ाहिर में हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने तो वह हाल था और अब घर में आकर यह हालत हो गई। मैं इस पर अफ़सोस और रंज करता हुआ और यह कहता हुआ घर से निकला कि हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया। सामने से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० तशरीफ़ ला रहे थे। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया। वह यह सुन कर फ़र्माने लगे कि सुब्हानल्लाह। क्या कह रहे हो, हरगिज़ नहीं। मैंने सूरत बयान की कि हम लोग जब हुज़ूर सल्ल० कि ख़िदमत में होते हैं और हुज़ूर सल्ल० दोज़ख़ और जन्नत का ज़िक्र फ़र्माते हैं तो हम लोगे ऐसे हो जाते हैं गोया वह दोनों हमारे सामने हैं और जब हुज़ूर सल्ल० के पास से आ जाते हैं, तो बीवी-बच्चों, जायदाद

1. मिश्कात। 2. दिल, 3. यकायक,

वग़ैरह के धंधों में फंस कर उसको भूल जाते हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० ने फ़र्माया कि यह बात तो हम को भी पेश आती है, इस लिए दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जा कर हंज़ला ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क्या बात हुई ! हंज़ला रज़ि० ने अर्ज़ किया कि जब हम लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और आप जन्नत दोज़ख़ का ज़िक्र फ़र्माते हैं, तब तो हम ऐसे हो जाते हैं कि गोया वह हमारे सामने हैं, लेकिन जब ख़िदमते अक्दस से चले जाते है तो जाकर बीवी-बच्चों और घर-बाहर के धंधों में लग कर भूल जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम्हारा हर वक्त वही हाल रहे जैसा मेरे सामने होता है, तो फ़रिश्ते तुम्हारे से बिस्तरों पर और रास्तों में मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन हंज़ला ! बात यह है कि गाहे[1]-गाहे-गाहे[2] ।

फ़— यानी आदमी के साथ इन्सानी ज़रूरतें भी लगी हुई हैं जिन को पूरा करना भी ज़रूरी है। खाना-पीना, बीवी-बच्चे और उनकी ख़ैरख़बर लेना यह भी ज़रूरी हैं। इसलिए इस क़िस्म के हालात कभी-कभी हासिल होते हैं। न हर वक्त यह हासिल होते हैं, न इसकी उम्मीद रखनी चाहिए। यह फ़रिश्तों की शान है कि उनको कोई दूसरा धंधा ही नहीं। न बीवी-बच्चे, न फ़िक्रे मआश, न दुन्यवी क़िस्से और इन्सान के साथ चूंकि बशरी ज़रूरियात लगी हुई हैं इसलिए वह हर वक्त एक सी हालत पर नहीं रह सकता लेकिन ग़ौर की बात यह है कि सहाबा किराम रज़ि० को अपने दीन की कितनी फ़िक्र थी कि ज़रा सी बात से हुज़ूर सल्ल० के सामने हमारी जो हालत होती है, वह बाद में नहीं रहती, उससे अपने मुनाफ़िक़ होने का उन को बहुत फ़िक्र हो गया। इश्क़ अस्त व हज़ार बदगुमानी। इश्क़ जिससे होता है, उसके मुताल्लिक़ हज़ार तरह की बदगुमानी और फ़िक्र हो जाती हैं। बेटे से मुहब्बत हो और वह कहीं सफ़र में चला जाए फिर देखिए हर वक्त ख़ैरियत की ख़बर का फ़िक्र रहता है और जो यह भी मालूम हो जाए कि वहां ताऊन है, या फ़साद हो गया, फिर ख़ुदा जाने कितने, ख़ुतूत और तार पहुंचेंगे।

---

1. कभी-कभी होती है, 2. ए हा, मुस्लिम। 3. रोज़ी कमाने की चिंता, 4. इंसानी ज़रूरतें, 5. ख़त, पत्र, 6. एहा, मुस्लिम।

तक्मील-अल्लाह के ख़ौफ़ के मुतफ़र्रिक़ अहवाल

कुरआन शरीफ़ की आयात और हुज़ूर सल्ल० की अहादीस और बुज़ुर्गों के वाक़िआत में अल्लाह जल्ल शानुहू से डरने से मुताल्लिक़ जितना कुछ ज़िक्र किया गया है, उसका अहाता तो दुश्वार है लेकिन मुख़्तसर तौर पर इतना समझ लेना चाहिए कि दीन के हर कमाल का ज़ीना अल्लाह का ख़ौफ़ है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि हिक्मत की जड़ अल्लाह का ख़ौफ़ है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बहुत रोया करते थे हत्ताकि रोते-रोते आंखें भी बेकार हो गई थीं। किसी शख़्स ने एक मर्तबा देख लिया तो फ़र्माने लगे कि मेरे रोने पर ताज्जुब करते हो, अल्लाह के ख़ौफ़ से सूरज रोता है। एक मर्तबा ऐसा ही क़िस्सा आया तो फ़र्माया कि अल्लाह के ख़ौफ़ से चांद रोता है।

एक नो-जवान सहाबी रज़ि० पर हुज़ूर सल्ल० का गुज़र हुआ, वह पढ़ रहे थे। जब-

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ

फ़इज़न्श क़्क़तिस्समाउ फ़ कानत वर्दतन कद्दिहानि०

पर पहुंचे तो बदन के बाल खड़े हो गए, रोते-रोते दम घुटने लगा और कह रहे थे, हां जिस दिन आसमान फट जावेंगे (यानी क़यामत के दिन) मेरा क्या हाल होगा, हाय मेरी बर्बादी ! हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि तुम्हारे इस रोने की वजह से फ़रिश्ते भी रोने लगे।

एक अन्सारी ने तहज्जुद पढ़ा और फिर बैठ कर बहुत रोये। कहते थे अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूं जहन्नम की आग से बचने की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तुमने आज फ़रिश्तों को रूला दिया।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० एक सहाबी हैं रो रहे थे। बीवी भी उनकी इस हालत को देखकर रोने लगी। पूछा कि तुम क्यों रोती हो, कहने लगीं कि जिस वजह से तुम रोते हो। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने कहा कि मैं इस वजह से रो रहा हूं कि जहन्नम पर तो गुज़रना है ही, न जाने निजात हो सकेगी या नहीं, रह

---

1. रोज़ी कमाने की चिंता, 2. यकायक, 3. दिल, 4. कभी-कभी होती है।

जाऊंगा ।

ज़ुरारह बिन औफ़ा एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ा रहे थे। 'फ़इज़ा नुक़ि र फ़िन्नाक़ूरि अल आयत, पर जब पहुंचे, तो फ़ौरन गिर गए और इन्तिक़ाल हो गया। लोग उठा कर घर तक लाये।[1]

हज़रत ख़ुलैद रज़ि० एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे। 'कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौति' पर पहुंचे तो उसको बार-बार पढ़ने लगे। थोड़ी देर में घर के एक कोने से आवाज़ आई कि कितनी मर्तबा इसको पढ़ोगे तुम्हारे इस बार-बार के पढ़ने से चार जिन मर चुके हैं। एक और साहब का क़िस्सा लिखा है कि पढ़ते-पढ़ते जब 'व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल हक़्क़ि' पर पहुंचे तो एक चीख़ मारी और तड़प-तड़प कर मर गए। और भी इसी क़िस्म के वाक़िआत कसरत से गुज़रे हैं।

हज़रत फ़ुज़ैल रह० मशहूर बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि अल्लाह का ख़ौफ़ हर ख़ैर की तरफ़ रहबरी करता है। हज़रत शिब्ली रह० के नाम से सभी वाक़िफ़ हैं। वह कहते हैं कि जब से मैं भी अल्लाह से डरा हूं, उसकी वजह से मुझ पर हिक्मत और इबरत[2] का ऐसा दरवाज़ा खुला है जो इससे पहले नहीं खुला।

हदीस में आया है, अल्लाह जल्ल शानुहू फ़र्माते हैं कि मैं अपने बंदे पर दो ख़ौफ़ जमा नहीं करता और दो बे फ़िक्रियां नहीं देता। अगर दुनिया में मुझ से बेफ़िक्र रहे तो क़यामत में डराता हूं, और दुनिया में डरता रहे तो आख़िरत में बेफ़िक्री अता करता हूँ। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो अल्लाह से डरता है, उससे हर चीज़ डरती है और जो ग़ैर-अल्लाह से डरता है, उसको हर चीज़ डराती हैं।

यह्या बिन मुआज़ कहते हैं कि आदमी बेचारा अगर जहन्नम से इतना डरने लगे जितना तंगदस्ती से डरता है, तो सीधा जन्नत में जाये। अबू सुलैमान दारानी कहते हैं कि जिस दिल से अल्लाह का ख़ौफ़ जाता रहता है, वह बर्बाद हो जाता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस आंख से अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से ज़रा-सा आंसू ख़्वाह मक्खी के सर के बराबर ही क्यों न हो, निकल कर चेहरे पर गिरता है, अल्लाह तआला उस चेहरे को आग पर हराम फ़र्मा देता है। हुज़ूर सल्ल० का एक और इर्शाद है कि जब मुसलमान का दिल अल्लाह के ख़ौफ़ से कांपता है तो उसके गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे दरख़्तों से पत्ते झड़ते हैं। मेरे नबी सल्ल० का एक और इर्शाद

1. कियामुल्लैल, 2. सबक़।

है कि जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ से रोये उसका आग में जाना ऐसा ही मुश्किल है जैसा दूध का थनों में वापस जाना।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० एक सहाबी हैं। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि निजात का रास्ता क्या है। आपने फ़र्माया कि अपनी ज़बान को रोके रखो, घर में बैठे रहो, और अपनी ख़ताओं पर रोते रहो। हज़रत आइशा रज़ि० ने एक मर्तबा दर्याफ़्त किया कि आपकी उम्मत में कोई ऐसा भी है जो बे हिसाब-क़िताब जन्नत में दाख़िल हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया हां, जो अपने गुनाहों को याद करके रोता रहे।

मेरे आक़ा सल्ल० का एक और इर्शाद है कि अल्लाह के नज़दीक दो क़तरों से ज़्यादा कोई क़तरा पसन्द नहीं-एक आंसू का क़तरा जो अल्लाह के ख़ौफ़ से निकला हो, दूसरा ख़ून का क़तरा जो अल्लाह के रास्ते में गिरा हो। एक जगह इर्शाद है कि क़यामत के दिन सात आदमी ऐसे होंगे जिन को अल्लाह जल्ल शानुहू अपना साया अता फ़र्मायेंगे-एक वह शख़्स जो तन्हाई में अल्लाह को याद करे और उसकी वजह से उसकी आंखों से आंसू बहने लगें।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का इर्शाद है, कि जो रो सकता हो, वह रोये और जिसको रोना न आये, वह रोने की सूरत ही बना ले। मुहम्मद बिन मुन्कदिर रज़ि० जब रोते थे तो आंसुओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और कहते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि जहन्नम की आग उस जगह को नहीं छूती जहां आंसू पहुंचे हों।

साबित बनानी रह० की आंखें दुखने लगीं। तबीब ने कहा कि एक बात का वायदा कर लो, आंख अच्छी हो जावेंगी कि रोया न करो। कहने लगे, आंख में कोई ख़ूबी ही नहीं अगर वह रोये नहीं। यज़ीद बिन मैसरा रह० कहते हैं कि रोना सात वजह से होता है, 1. ख़ुशी से, 2. जुनून से, 3. दर्द से, 4. घबराहट से, 5. दिखलावे से, 6. नशा से और 7. अल्लाह के ख़ौफ़ से। यही है वह रोना कि उसका एक आंसू भी आग के समुद्रों को बुझा देता।

कअब अह्बार रज़ि० कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम! जिसके कब्ज़े में मेरी जान है कि अगर मैं अल्लाह के ख़ौफ़ से रोऊं और आंसू मेरे रुख़्सार पर बहने लगें, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि पहाड़ के बराबर सोना सद्क़ा करूं। इनके अलावा

और भी हजारों इर्शादात हैं, जिनसे मालूम होता है की अल्लाह कि याद में और अपने गुनाहों के फिक्र में रोना कीमिया है और बहुत ही ज़रूरी और मुफ़ीद और अपने गुनाहो पर नज़र करके यही हालत होनी चाहिए। लेकिन इसके साथ ही यह भी ज़रूरी है कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत की उम्मीद में भी कमी न हो, यक़ीनन अल्लाह की रहमत हर शै को वसीअ है। हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि अगर क़यामत में यह एलान हो कि एक शख़्स के सिवा सब को जहन्नम में दाख़िल करो तो मुझे अल्लाह की रहमत से यह उम्मीद है कि वह शख़्स मैं ही हूं। और अगर यह एलान हो कि एक शख़्स के सिवा सब को जन्नत में दाख़िल करो, तो मुझे अपने आमाल से यह ख़ौफ़ है कि वह शख़्स मैं ही न हूं। इसलिए दोनों चीज़ों को अलाहिदा-अलाहिदा समझना और रखना चाहिए। बिलख़ुसूस मौत के वक़्त में उम्मीद का मामला ज़्यादा होना चाहिए।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि तुम में से कोई शख़्स न मरे, मगर अल्लाह तआला के साथ हुस्न ज़न रखता हो। इमाम अहमद बिन हंबल रह० का जब इन्तिक़ाल होने लगा तो उन्होंने अपने बेटे को बुलाया और फ़र्माया कि ऐसी अहादीस मुझे सुनाओ जिन से अल्लाह तआला के साथ उम्मीद बढ़ती हो।
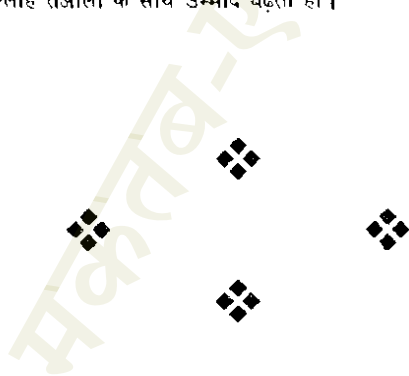
तीसरा बाब

सहाबा किराम रज़ि० अन्हुम अज्मईन के ज़ुह्द और फ़क्र के बयान में

इस बारे में ख़ुद नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना मामूल और वाक़िआत जो इस अम्र पर दलालत करते हैं कि यह चीज़ हुज़ूर सल्ल० की ख़ुद इख़्तियार फ़र्मायी हुई और पसन्द की हुई थी, इतनी कसरत से हदीस की किताबों में पाये जाते हैं कि इनका मिसाल के तौर पर भी जमा करना मुश्किल है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि फ़क्र[1] मोमिन का तोहफ़ा है।

1. हुज़ूर सल्ल० का पहाड़ों को सोना बना देने से इंकार

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरे रब ने मुझ पर यह पेश किया कि मेरे लिए मक्का के पहाड़ों को सोना बना दिया जावे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह ! मुझे तो यह पसन्द है कि एक दिन पेट भर कर खाऊं तो दूसरे दिन भूखा रहूं ताकि जब भूखा रहूं तो तेरी तरफ़ज़ारी करूं और तुझे याद करूं और जब पेट भरूं तो तेरा शुक्र करूं, तेरी तारीफ़ करूं।[2]

फ़— यह उस ज़ाते मुकद्दस का हाल है, जिसके हम नाम लेवा हैं और उसकी उम्मत में होने पर फ़ख़्र है, जिसकी हर बात हमारे लिए क़ाबिले इत्तिबाअ है।

---

1. त्याग, दुनिया की किसी चीज़ से लगाव न होना। 2. तिर्मिज़ी।

2. हज़रत उमर रज़ि० के वुस्अत तलब करने पर तंबीह और हुज़ूर सल्ल० के गुज़र की हालत

बीवियों की बाज़ ज़्यादतियों पर एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने क़सम खा ली थी कि एक महीने तक उनके पास न जाऊंगा, ताकि उनको तंबीह हो और अलाहिदा ऊपर एक हुजरे में क़याम फ़र्माया था। लोगों में यह शोहरत हो गई कि हुज़ूर सल्ल० ने सबको तलाक़ दे दी। हज़रत उमर रज़ि० उस वक़्त अपने घर थे, जब यह ख़बर सुनी तो दौड़े हुए आए, मस्जिद में देखा कि लोग मुतफ़र्रिक[1] तौर पर बैठे हुए हुज़ूर सल्ल० के रंज और गुस्से की वजह से रो रहे हैं, बीवियां भी सब अपने-अपने घरों में रो रही हैं। अपनी बेटी हज़रत हफ़्सा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए, वह भी मकान में रो रही थीं। फ़र्माया कि अब क्यों रो रही है? क्या मैं हमेशा इससे नहीं डराया करता था कि हुज़ूर सल्ल० की नाराज़गी की कोई बात न किया कर। इसके बाद मस्जिद में तशरीफ़ लाए। वहां एक जमाअत मिम्बर के पास बैठी रो रही थी। थोड़ी देर वहां बैठे रहे, मगर शिद्दते रंज से बैठा न गया, तो हुज़ूर सल्ल० जिस जगह तशरीफ़ फ़र्मा थे उसके क़रीब तशरीफ़ ले गए और हज़रत रिबाह रज़ि० एक गुलाम के ज़रिये से जो दोबारी के ज़ीने पर पांव लटकाये बैठे थे, अन्दर हाज़िरी की इजाज़त चाही। उन्होंने हाज़िरे ख़िदमत होकर हज़रत उमर रज़ि० के लिए इजाज़त मांगी मगर हुज़ूर सल्ल० ने सुकूत[2] फ़र्माया, कोई जवाब न दिया। हज़रत रिबाह रज़ि० ने आकर यही जवाब उमर रज़ि० को दे दिया कि मैंने अर्ज़ कर दिया था, मगर कोई जवाब नहीं मिला। हज़रत उमर रज़ि० मायूस होकर मिम्बर के पास आ बैठे मगर बैठा न गया तो फिर थोड़ी देर में हाज़िर होकर हज़रत रिबाह रज़ि० के ज़रिए से इजाज़त चाही। इसी तरह तीन बार पेश आया कि यह बेताबी से गुलाम के ज़रिए इजाज़त हाज़िरी की मांगते। उधर से जवाब में सुकूत और ख़ामोशी ही होती। तीसरी बार जब लौटने लगे तो हज़रत रिबाह रज़ि० ने आवाज़ दी और कहा कि तुम्हें हाज़िरी की इजाज़त हो गई। हज़रत उमर रज़ि० हाज़िरे ख़िदमत हुए तो देखा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बोरिए पर लेटे हुए हैं, जिस पर कोई चीज़ बिछी हुई नहीं हैं, इस वजह से जिस्मे अतहर पर बोरिए के निशानात भी उभर आये हैं। ख़ूबसूरत बदन पर निशानात साफ़ नज़र आया ही करते हैं और सरहाने एक चमड़े

1. अलग-अलग, 2. ख़ामोशी।

का तकिया है जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है। मैंने सलाम किया और सबसे अव्वल तो यह पूछा, क्या आपने बीवियों को तलाक़ दे दी है? आपने फ़र्माया, नहीं। इसके बाद मैंने दिलबस्तगी के तौर पर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हम क़ुरैशी लोग औरतों पर ग़ालिब रहते थे, मगर जब मदीना आये तो देखा कि अन्सार की औरतें मर्दों पर ग़ालिब हैं। उनको देखकर क़ुरैशी की औरतें भी उससे मुतास्सिर हो गयीं। इसके बाद मैंने एक आध बात और की, जिससे नबी अकरम सल्ल० के चेहरा-ए-अनवर पर तबस्सुम के आसार ज़ाहिर हुए। मैंने देखा कि घर का कुल सामान यह था, तीन चमड़े बग़ैर दबाग़त दिये हुए और एक मुट्ठी जौ, एक कोने में पड़े हुए थे। मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाकर देखा तो इसके सिवा कुछ न मिला। मैं देखकर रो दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि क्यों रो रहे हो ? मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाहु ! क्यों न रोऊं कि यह बोरिए के निशानात आपके बदने मुबारक पर पड़ रहे हैं और घर की कुल कायनात यह है जो मेरे सामने है। फिर मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! दुआ कीजिए कि आपकी उम्मत पर भी वुसअत हो यह रूम व फ़ारस बेदीन होने के बावजूद कि अल्लाह की इबादत नहीं करते, इन पर तो यह वुसअत, यह क़ैसर व कसरा तो बाग़ों और नहरों के दर्मियान हों और आप अल्लाह के रसूल और ख़ास बन्दे होकर यह हालत। नबी सल्ल० तकिया लगाये हुए लेटे थे। हज़रत उमर रज़ि० की यह बात सुनकर बैठ गए और फ़र्माया कि उमर ! क्या अब तक इस बात के अन्दर शक में पड़े हुए हो। सुनो, आख़िरत की वुसअत दुनिया की वुसअत से बहुत बेहतर है। इन कुफ़्फ़ार की तय्यिबात[1] और अच्छी चीज़ें दुनिया में मिल गयीं और हमारे लिए आख़िरत में हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मेरे लिए इस्तिग़फ़ार फ़र्मायें कि वाक़ई मैंने ग़लती की।[2]

फ़- यह दीन व दुनिया के बादशाह और अल्लाह के लाडले रसूल सल्ल० का तर्ज़े अमल है कि बोरिए पर कोई चीज़ बिछी हुई भी नहीं, निशानात बदन पर पड़े हुए हैं, घर के साज़ व सामान का हाल भी मालूम हो गया, उस पर एक शख़्स ने दुआ की दरख़्वास्त की तो तंबीह फ़र्माई। हज़रत आइशा रज़ि० से किसी ने पूछा था कि आपके घर में हुज़ूर सल्ल० का बिस्तरा कैसा था। फ़र्माया कि एक चमड़े का था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। हज़रत हफ़्सा रज़ि० से भी किसी ने पूछा कि आपके घर में हुज़ूर सल्ल० का कैसा बिस्तर था, फ़र्माया कि एक टाट था, जिसको दोहरा करके हुज़ूरे सल्ल० के नीचे बिछा देती थी। एक रोज़ मुझे ख़्याल हुआ कि

1. साफ़ सुथरी पाक चीज़ें, 2. फ़त्ह।

अगर इसको चोहरा करके बिछा दूं तो ज़्यादा नर्म हो जाए। चुनांचे हमने बिछा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने सुबह को फ़र्माया कि रात क्या बिछा दिया था। हमने अर्ज़ कर दिया कि वही टाट था, उसको चोहरा कर दिया था, फ़र्माया, उसको वैसा ही कर दो जैसा पहले था। उसकी नर्मी रात को उठने में मानेअ[1] बनती है। अब हम लोग अपने नर्म-नर्म और रोएंदार गद्दों पर भी निगाह डालें कि अल्लाह ने किस क़दर वुसअत फ़र्मा रखी है और फिर भी बजाय शुक्र के हर वक़्त तंगी की शिकायत ही ज़बान पर रहती हैं।

3. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की भूख में हालत

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० एक मर्तबा कतान के कपड़े में नाक साफ़ करके फ़र्माने लगे, क्या कहने अबूहुरैरह के, आज कतान के कपड़े में नाक साफ़ करता है, हालांकि मुझे वह ज़माना भी याद है जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिम्बर और हुज्रे के दर्मियान बेहोश पड़ा हुआ होता था, और लोग मजनून समझकर पांव से गर्दन दबाते थे, हालांकि जुनून नहीं था, बल्कि भूख थी।

फ़— यानी भूख की वजह से कई-कई रोज़ का फ़ाक़ा हो जाता था। बेहोशी हो जाती थी और लोग समझते थे कि जुनून हो गया। कहते हैं कि उस ज़माने में मजनून का इलाज गर्दन को पांव से दबाने से किया जाता था। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बड़े साबिर और क़ानेअ[2] लोगों में थे। कई-कई वक़्त फ़ाक़े में गुज़र जाते थे। हुज़ूर सल्ल० के बाद अल्लाह ने फ़ुतूहात फ़र्माई तो उन पर तवंगरी आई। इसके साथ ही बड़े आबिद थे। उनके पास एक थैली थी जिसमें ख़जूर की गुठलियां भरी रहतीं, उस पर तस्बीह पढ़ा करते। जब वह सारी थैली ख़ाली हो जाती, तो बांदी फिर भरकर उसका पास रख देती। उनका यह भी मामूल था कि ख़ुद और बीवी और ख़ादिम तीन आदमी रात के तीन हिस्से कर लेते और नम्बरवार एक शख़्स तीनों में से इबादत में मशग़ूल रहता।[3] मैंने अपने वालिद साहब रह० से सुना कि मेरे दादा साहब रह० का भी तक़रीबन यही मामूल था कि रात को एक बजे तक वालिद साहब रह० मुताला में मशग़ूल रहते। एक बजे दादा साहब तहज्जुद के लिए उठते, तो तक़ाज़ा फ़र्माकर वालिद साहब को सुला देते और ख़ुद तहज्जुद में मशग़ूल हो जाते और सुबह से तक़रीबन पौन घण्टा क़ब्ल मेरे ताया साहब रह० को तहज्जुद के लिए जगा देते

---

1. रुकावट, रोक, 2. थोड़े पर बस करने वाले, 3. तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़,

और ख़ुद इत्तिबाए सुन्नत[1] में आराम फ़र्माते।

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्नी इत्तिबाअहुम०

4. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के यहां कपड़े की तिजारत होती थी और इसी से गुज़र औक़ात था। जब ख़लीफ़ा बनाये गए तो हस्बे मामूल सुबह को चन्द चादरें हाथ पर डालकर बाज़ार में फ़रोख़्त के लिए तशरीफ़ ले चले। रास्ते में हज़रत उमर रज़ि० मिले पूछा, कहां चले फ़र्माया, बाज़ार जा रहा हूँ। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अगर तुम तिजारत में मशग़ूल रहोगे तो ख़िलाफ़त के काम का क्या होगा? फ़र्माया, फिर अह्ल व अयाल को कहां से खिलाऊं। अर्ज़ किया कि अबू उबैदा रज़ि० जिनको हुज़ूर सल्ल० ने अमीन होने का लक़ब दिया है, उनके पास चलें, वह आपके लिए बैतुल माल से कुछ मुक़र्रर कर देंगे। दोनों हज़रात उनके पास तशरीफ़ ले गए, तो उन्होंने एक मुहाजिरी को जो औसतन मिलता था, न कम, न ज़्यादा, वह मुक़र्रर फ़र्मा दिया। एक मर्तबा बीवी ने दरख़्वास्त की कि कोई मीठी चीज़ खाने को दिल चाहता है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़र्माया कि मेरे पास तो दाम नहीं, कि खरीदूं। अह्लिया ने अर्ज किया कि हम अपने रोज के खाने में से थोड़ा-थोड़ा बचा लिया करें, कुछ दिनों में इतनी मिक़्दार हो जाएगी। आपने इजाज़त फ़र्मा दी। अह्लिया ने कई रोज़ में कुछ थोड़े से पैसे जमा किये। आपने फ़र्माया कि तजुर्बे से यह मालूम हुआ कि इतनी मिक़्दार हमें बैतुलमाल से ज़्यादा मिलती है इसलिए जो अह्लिया ने जमा किया था, वह भी बैतुलमाल में जमा कर दिया और आइन्दा के लिए उतनी मिक़्दार जितना उन्होंने रोज़ाना जमा किया था, अपनी तनख़्वाह में से कम कर दिया।

फ़ — इतने बड़े ख़लीफ़ा और बादशाह पहले से अपनी तिजारत भी करते थे और वह ज़रूरियात को काफ़ी भी थी, जैसा कि उस एलान से मालूम होता है जो बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से मरवी है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा बनाये गए तो आपने फ़र्माया कि मेरी क़ौम को यह बात मालूम है कि मेरा

1. सुन्नत की पैरवी में।

पेशा-ए-तिजारत मेरे अह्ल व अयाल के खर्च को ना-काफ़ी नहीं था, लेकिन अब ख़िलाफ़त की वजह से मुसलमानों के कारोबार में मशगूली है, इसलिए बैतुलमाल से मेरे अह्ल व आयल का खाना मुक़र्रर होगा। इसके बावजूद हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विसाल होने लगा तो हज़रत आइशा रज़ि० को वसीअत फ़र्माई कि मेरी ज़रूरतों में जो चीज़ें बैतुलमाल की हैं वह मेरे बाद आने वाले ख़लीफ़ा के हवाले कर दी जायें। हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि आपके पास कोई दीनार और दिरहम नहीं था, एक ऊंटनी दूध की, एक प्याला, एक ख़ादिम था। बाज़ रिवायात में एक ओढ़ना, एक बिछौना भी आया है। यह अश्या[1] हज़रत उमर रज़ि० के पास जब नियाबत में पहुंची, तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़र्माएं कि अपने से बाद वाले को मशक़्क़त में डाल गए।[2]

5. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा

हज़रत उमर रज़ि० भी तिजारत किया करते थे। जब ख़लीफ़ा बनाये गये तो बैतुल माल से वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुआ। मदीना-ए-तय्यबा में लोगों को जमा फ़र्मा कर इर्शाद फ़र्माया कि मैं तिजारत किया करता था। अब तुम लोगों ने इसमें मशगूल कर दिया। इसलिए अब गुज़ारे की क्या सूरत हो। लोगों ने मुख़्तलिफ़ मिक़्दारें तज्वीज़ कीं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु चुप बैठे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने दर्याफ़्त किया तुम्हारी क्या राय है? आपने फ़र्माया तवस्सुत[3] के साथ जो तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को काफ़ी हो जाए? हज़रत उमर रज़ि० ने इस राय को पसन्द फ़र्माया और क़ुबूल कर लिया और मुतवस्सित मिक़्दार तज्वीज़ हो गई। इसके बाद एक मर्तबा एक मज्लिस में, जिसमें ख़ुद हज़रत अली रज़ि० भी थे और हज़रत उस्मान रज़ि० हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत तलहा शरीक थे, यह ज़िक्र आया कि हज़रत उमर रज़ि० के वज़ीफ़े में इज़ाफ़ा करना चाहिए कि गुज़र में तंगी होती है, मगर उन से अर्ज़ करने की हिम्मत न हुई, इसलिए इनकी साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा रज़ि० जो हुज़ूर सल्ल० की बीवी होने की वजह से उम्मुल मोमिनीन भी थीं, उनकी ख़िदमत में यह हज़रात तशरीफ़ ले गए और इनके ज़रिए से हज़रत उमर रज़ि० की इजाज़त और राय मालूम करने की कोशिश

1. चीजें, 2. फ़त्ह 3. द मियाना खर्च,

की और साथ ही यह भी कह दिया कि हम लोगों के नाम न मालूम हों। हजरत हफ्सा रजि० ने जब हजरत उमर रजि० से इसका तज़्किरा किया तो चेहरे पर गुस्से के आसार ज़ाहिर हुए। हज़रत उमर रजि० ने नाम दर्याफ्त किये[1]। हजरत हफ्सा रज़ि० ने अर्ज किया कि पहले आपकी राय मालूम हो जाये। हजरत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि मुझे उनके नाम मालूम हो जाते, तो उनके चेहरे बदल देता, यानी ऐसी सख़्त सजाएं देता कि मुंह पर निशान पड़ जाते। तू ही बता कि हुजूर सल्ल० का उम्दा से उम्दा लिबास तेरे घर में क्या था। उन्होंने अर्ज किया कि दो कपड़े गेरुवी रंग के जिनको हुज़ूर सल्ल० जुमा के दिन या किसी वफ़्द की वजह से पहनते थे, फिर फ़र्माया कि कौन सा खाना तेरे यहां अच्छे से अच्छा खाया जाता। अर्ज किया कि हमारा खाना जौं की रोटी थी। हमने गर्म-गर्म रोटी पर घी के डिब्बे की तलछट-उलट कर उसको एक मर्तबा चुपड़ दिया तो हुज़ूर सल्ल० ख़ुद भी इसको मज़े लेकर नोश फ़र्मा रहे थे और दूसरों को भी खिलाते थे। फ़र्माया, कौन-सा बिस्तर उम्दा होता था, जो तेरे यहां बिछाते थे। अर्ज किया, एक मोटा सा कपड़ा था, गर्मी में इसको चौहरा करके बिछा लेते थे और सर्दी में आधे को बिछा लेते, और आधे को ओढ़ लेते, फ़र्माया कि हफ्सा (रज़ि०) उन लोगों तक यह बात पहुंचा दे कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने तर्जे अमल से एक अन्दाज़ा मुक़र्रर फ़र्मा दिया और उम्मीद (आख़िरत) पर किफ़ायत फ़र्माई। मैं भी हुज़ूर सल्ल० का इत्तिबाअ[1] करूंगा। मेरी मिसाल और मेरे दो साथी हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की मिसाल उन तीनों शख़्सों की सी है जो एक रास्ते पर चले। पहला शख़्स एक तोशा ले कर चला और मक़सद को पहुंच गया। दूसरे ने भी पहले का इत्तिबाअ किया और उसी के तरीक़े पर चला, वह भी पहले के पास पहुंच गया। फिर तीसरे शख़्स ने चलना शुरू किया। अगर वह इन दोनों के तरीक़े पर चलेगा तो उनके साथ मिल जाएगा और अगर उनके तरीक़े के ख़िलाफ़ चलेगा तो कभी भी उनके साथ नहीं मिल सकेगा।[2]

फ़ — यह उस शख़्स का हाल है जिससे दुनिया के बादशाह डरते थे, कांपते थे कि किस ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के साथ उम्र गुज़ार दी। एक मर्तबा आप ख़ुत्बा पढ़ रहे थे और आपकी लुंगी में 12 पैवंद थे, जिन में से एक चमड़े का भी था। एक मर्तबा जुमा की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाने में देर हो गई तो तशरीफ़ लाकर माज़रत फ़र्माई कि मुझे अपने कपड़े धोने में देर हो गई और इन कपड़ों के अलावा और थे

---

1. पैरवी, 2. अशहर,

नहीं।[1] एक बार हज़रत उमर खाना नोश फ़र्मा रहे थे, ग़ुलाम ने आकर अर्ज किया कि उत्बा बिन अबी फरक़द रज़ि० हाज़िर हुए हैं। आपने अन्दर आने की इजाज़त फ़र्माई और खाने की तवाज़ो फ़र्माई, वह शरीक हो गए तो ऐसा मोटा खाना था कि निगला न गया। उन्होंने अर्ज किया कि छने हुए आटे का खाना भी तो हो सकता था। आपने फ़र्माया, क्या सब मुसलमान मैदा खा सकते हैं ? अर्ज किया कि सब तो नहीं खा सकते। फ़र्माया कि अफ़सोस तुम यह चाहते हो कि मैं अपनी सारी लज़्ज़तें दुनियां ही में ख़त्म कर दूं।[2] इस क़िस्म के सैकड़ो-हज़ारों नहीं बल्कि लाखों वाक़िआत इन हज़राते किराम के हैं। उनका इत्तिबाअ न अब हो सकता है, न हर एक शख़्स को करना चाहिए कि क़ुवा ज़ईफ़ हैं, जिसकी वजह से तहम्मुल भी उनका इस ज़माने में दुश्वार है। इसी वजह से इस ज़माने में मशायखे तसव्वुफ़ ऐसे मुजाहदों की इजाज़त नहीं देते, जिससे ज़ोफ़ पैदा हो कि क़ुव्वतें पहले ही से ज़ईफ़ हैं, इन हज़रात को अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुव्वतें भी अता फ़र्माई थीं। अलबत्ता, यह ज़रूरी है कि इत्तिबाअ की ख़्वाहिश और तमन्ना ज़रूर रखना चाहिए कि उस की वजह से आराम तलबी में कुछ कमी वाक़े हो और निगाह कुछ तो नीची रहे और इस ज़माने के मुनासिब ऐतदाल पैदा हो जायें कि हम लोग हर वक़्त लज़्ज़ाते दुनिया में बढ़ते जाते हैं और हर शख़्स अपने से ज़्यादा माल व दौलत वाले की तरफ़ निगाह रखता है और इस हसरत में मरा जाता है कि फ़्लां शख़्स मुझ से ज़्यादा वुसअत में हैं।[3]

6. हज़रत बिलाल रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के लिए एक मुश्रिक से क़र्ज़

हज़रत बिलाल रज़ि० से एक साहब ने पूछा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इख़राजात[4] की क्या सूरत होती थी ? हज़रत बिलाल रज़ि० ने फ़र्माया कि हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ जमा तो रहता ही नहीं था, यह ख़िदमत मेरे सुपुर्द थी, जिसकी सूरत यह थी कि कोई मुसलमान भूखा आता, तो हुज़ूर अक़्दस सल्ल० मुझे इर्शाद फ़र्मा देते। मैं कहीं से कर्ज लेकर उसको खाना खिला देता। कोई नंगा आता, तो मुझे इर्शाद फ़र्मा देते, मैं किसी से कर्ज लेकर उसको कपड़ा बनवा देता। यह सूरत होती रहती थी। एक मुश्रिक एक मर्तबा मुझे मिला। उसने मुझ

---

1. अशहर, 2. असदुलग़ाबा, 3. जिस्म की ताक़त कमज़ोर हैं, 4. ख़र्चे,

से कहा कि मुझे वुसअत और सरवत हासिल है, तू किसी से कर्ज न लिया कर जब ज़रूरत हुआ करे तो मुझ से ही कर्ज लिया कर, मैंने कहा, इससे बेहतर क्या होगा। उस से क़र्ज लेना शुरू कर दिया। जब इर्शाद आली होता उस से क़र्ज ले आता और इर्शाद वाला की तामील कर देता। एक बार वुज़ू कर के अज़ान कहने के लिए खड़ा ही था कि वही मुश्रिक एक जमाअत के साथ आया और कहने लगा, ओ हब्शी ! मैं उधर मुतवज्जह हुआ तो एकदम बेतहाशा गालियां देने लगा और बुरा-भला जो मुंह में आया, कहा और कहने लगा कि महीना ख़त्म होने में कितने दिन बाक़ी हैं। मैंने कहा, क़रीब ख़त्म के हैं। कहने लगा कि चार दिन बाक़ी है। अगर महीने के ख़त्म तक मेरा सब क़र्जा अदा न किया तो तुझे अपने क़र्जे में ग़ुलाम बनाऊंगा और उसी तरह बकरियां चराता फिरेगा, जैसा पहले था। यह कह कर चला गया। मुझ पर दिन भर जो गुज़रना चाहिए था, वही गुज़रा। तमाम दिन रन्ज व सदमा सवार रहा और इशा की नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में तंहाई में हाज़िर हुआ और सारा क़िस्सा सुनाया और अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! न आपके पास इस वक़्त अदा करने को फ़ौरी इन्तिज़ाम है और न खड़े-खड़े मैं कोई इन्तिज़ाम कर सकता हूं। वह ज़लील करेगा, इसलिए अगर इजाज़त हो तो इतने कर्ज उतरने का इन्तिज़ाम हो, मैं कहीं रूपोश हो जाऊं, जब आप के पास कहीं से कुछ आ जायेगा, मैं हाज़िर हो जाऊंगा। यह अर्ज करके मैं घर आया, तलवार ली, ढाल उठाई, जूता उठाया, यही सामाने सफ़र था और सुबह होने का इन्तिज़ार करता रहा कि सुबह के क़रीब कहीं चला जाऊंगा। सुबह क़रीब ही थी कि एक साहब दौड़े हुए आये कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में जल्दी चलो। मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो देखा कि चार ऊंटनियां, जिन पर सामान लदा हुआ था, बैठी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ख़ुशी की बात सुनाऊं कि अल्लाह तआला ने तेरे क़र्जे[1] की बे बाक़ी का इन्तिज़ाम फ़र्मा दिया। ये ऊंटनियां भी तेरे हवाले हैं और इनका सब समान भी, फ़िदक के रईस ने यह नज़राना मुझे भेजा है। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और ख़ुशी-ख़ुशी उनको लेकर गया और सारा क़र्जा अदा करके वापस आया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने मस्जिद में इन्तिज़ार फ़र्माते रहे। मैंने वापस आकर अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! अल्लाह का शुक्र है कि हक़ तआला ने सारे क़र्जे से आपको सुबुक दोश कर दिया और (अब कोई चीज़ भी कर्ज की बाक़ी नहीं रही। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि सामान में से भी कुछ बाक़ी है ? मैंने अर्ज़ किया, कि जी हां, कुछ बाक़ी है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उसे भी तक़्सीम ही कर दे ताकि मुझे राहत हो

---

1. उधार लिया हुवा।

जाये। मैं घर में भी उस वक़्त तक नहीं जाने का जब तक यह तक़्सीम न हो जाये। तमाम दिन गुज़र जाने के बाद इशा की नमाज़ से फ़राग़त पर हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि वह बचा हुआ माल तक़्सीम हो गया या नहीं ? मैंने अर्ज़ किया कि कुछ मौजूद है। ज़रूरत मन्द आये नहीं । तो हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद ही में आराम फ़र्माया। दूसरे दिन इशा के बाद फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, कहो जी ! कुछ है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह जल्ल शानुहु ने आपको राहत अता फ़र्माई कि वह सब निमट गया। हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह जल्ल जलालुहू की हम्द व सना फ़र्माई। हुज़ूर सल्ल० को यह डर हुआ कि ख़ुदा न ख़्वास्ता मौत आ जाये और कुछ हिस्सा माल का आपकी मिलक में रहे। इसके बाद घरों में तश्रीफ़ ले गए और बीवियों से मिले।[1]

फ़ — अल्लाह वालों की यह भी ख़्वाहिश रहती है कि उनकी मिल्क में कुछ भी माल व मताअ न रहे, फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तो क्या पूछना, जो सारे नबियों के सरदार, सारे औलिया के सरताज, हुज़ूर सल्ल० को इसकी ख़्वाहिश क्यों न होती कि मैं दुनिया से बिल्कुल फ़ारिग़ हो जाऊं।

मैंने मुअत्बर ज़राए से सुना है कि हज़रत अक़्दस मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी नूरुल्लाहु मर्क़दहू का मामूल यह था कि जब नज़रानों की रक़म कुछ जमा हो जाती तो एहतमाम से मंगवा कर सब तक़्सीम फ़र्मा देते और विसाल से क़ब्ल तो अपने पहनने के कपड़े वग़ैरह भी अपने ख़ादिमे ख़ास हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रह० को दे दिए थे और फ़र्माया था कि बस अब तुम से मुस्तआर[2] लेकर पहन लिया करूंगा और अपने वालिद साहब रहमतुल्लाह अलैहि को मैंने बारहा देखा कि मग़रिब के बाद जो कोई रूपया पास होता, वह किसी क़र्ज़, ख़्वाह को दे देते कि कई हज़ार के मक़रूज़ थे। और यह फ़र्माया करते कि यह झगड़े की चीज़ मैं रात को अपने पास नहीं रखता। इस नौअ के बहुत से हालात अकाबिर के हैं, मगर यह ज़रूरी नहीं कि हर शैख़ का एक ही रंग हो। मशायख़ के अल्वान[3] मुख़्तलिफ़ होते हैं और चमन के फूलों में हर फूल की सूरत-सीरत मुम्ताज़ होती है।

7. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० का भूख में मस्अला दर्याफ़्त करना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि तुम लोग उस वक़्त हमारी हालतें देखते

---

1. बज़्ल, 2. उधार, 3. बुज़ुर्गों के रंग,

कि हम में से बाज़ों को कई-कई वक़्त तक इतना खाना नहीं मिलता था, जिससे कमर सीधी हो सके। मैं भूख की वजह से जिगर को ज़मीन से चिपटा देता और कभी पेट के बल पड़ा रहता था और कभी पेट पर पत्थर बांध लेता था। एक मर्तबा मैं रास्ते में बैठ गया, जहां को इन हज़रात का रास्ता था। अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० गुज़रे, मैंने उनसे कोई बात पूछना शुरू कर दी, ख़्याल था कि यह बात करते हुए घर तक लेते जायेंगे और फिर आदते शरीफ़ा के मुवाफ़िक़ जो मौजूद होगा उसमें तवाज़ो[1] ही फ़र्मायेंगे, मगर उन्होंने ऐसा न किया। ग़ालिबन ज़ेहन मुंतक़िल नहीं हुआ या अपने घर का हाल मालूम होगा कि वहां भी कुछ नहीं। इसके बाद हज़रत उमर तश्रीफ़ लाये, उनके साथ भी यही सूरत पेश आई, फिर नबी अकरम सल्ल० तश्रीफ़ लाये और मुझे देख कर मुस्कराये और मेरी हालत और ग़रज़ समझ गए, इर्शाद फ़र्माया अबू हुरैरह रज़ि० ! मेरे साथ आओ। मैं साथ हो लिया। हुज़ूर सल्ल० घर तश्रीफ़ ले गए, मैं साथ अन्दर हाज़िरी की इजाज़त लेकर हाज़िर हुआ। घर में एक प्याला दूध का रखा हुआ था जो ख़िदमते अक़्दस में पेश किया गया। दर्याफ़्त फ़र्माया कि कहां से आया है, अर्ज़ किया कि फ़लां जगह से हुज़ूर सल्ल० के लिए हदिए में आया है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अबू हुरैरह ! जाओ अह्ले सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। 'अह्ले सुफ़्फ़ा' इस्लाम के मेहमान शुमार होते थे। यह वह लोग थे जिनके न घर था न दर, न ठिकाना, न खाने का कोई मुस्तक़िल इन्तिज़ाम। इन हज़रात की मिक़्दार कम व बेश होती रहती थी, मगर इस क़िस्से के वक़्त 70 थी। हुज़ूर सल्ल० का यह भी मामूल था कि इनमें से दो-दो, चार-चार को खाते-पीते सहाबी का कभी-कभी मेहमान भी बना देते और ख़ुद अपना मामूल यह था कि कहीं से सदक़ा आता तो उन लोगों के पास भेज देते और ख़ुद इस में शिरकत न फ़र्माते और कहीं से हदिया आता तो उनके साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ख़ुद भी उसमें शिरकत फ़र्माते। हुज़ूर सल्ल० ने बुलाने का हुक्म दिया, मुझे गरां[2] तो हुआ कि इस दूध की मिक़्दार ही क्या है, जिस पर सब को बुला लाऊं ? सब का क्या भला होगा ? एक आदमी को भी मुश्किल से काफ़ी होगा और फिर बुलाने के बाद मुझ ही को पिलाने को हुक्म होगा, इसलिये नम्बर भी आख़िर में आयेगा, जिसमें बचेगा भी नहीं। लेकिन हुज़ूर सल्ल० की इताअत बग़ैर चारा ही क्या था ? मैं गया और सबको बुला लाया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ले, इनको पिला। मैं एक-एक शख़्स के प्याला हवाले करता और वह ख़ूब सेर होकर पीता और प्याला मुझे वापिस देता। इसी तरह,

1. आव भगत, 2. बोझ हुआ।

सबको पिलाया और सब सैर हो गए तो हुज़ूर सल्ल० ने प्याला दस्ते मुबारक में लेकर मुझे देखा और तबस्सुम फ़र्माया, फिर फ़र्माया कि बस, अब तो मैं और तू ही बाक़ी हैं। मैंने अर्ज किया कि बेशक, फ़र्माया कि ले पी। मैंने पिया। इर्शाद फ़र्माया और पी। मैंने और पिया। बिल आख़िर मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह! अब मैं नहीं पी सकता। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने सबका बचा हुआ ख़ुद नोश फ़र्माया।

8. हुज़ूर सल्ल० का सहाबा रज़ि० से दो शख़्सों के बारे में सवाल

नबी अक्रम सल्ल० की ख़िद्मत में कुछ लोग हाज़िर थे कि एक शख़्स सामने से गुज़रा। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुम लोगों की उस शख़्स के बारे में क्या राय है ? अर्ज किया या रसूलल्लाह ! शरीफ़ लोगों में है, वल्लाह ! इस क़ाबिल है कि अगर कहीं निकाह का पयाम दे दे तो क़ुबूल किया जाये, किसी की सिफ़ारिश कर दे तो मानी जाये। हुज़ूर सल्ल० सुनकर ख़ामोश हो गए, इसके बाद एक और साहब सामने से गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० ने उनके मुतल्लिक़ भी सवाल किया। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह ! एक मुसलमान फ़क़ीर है, कहीं मंगनी करे तो ब्याहा न जाये, कहीं सिफ़ारिश करे तो क़बूल न हो, बात करे तो कोई मुतवज्जह न हो। आपने इर्शाद फ़र्माया कि इस पहले जैसों से अगर सारी दुनिया भर जाए तो इन सबसे यह शख़्स बेहतर है।

फ़ — मतलब यह है कि महज़ दुनियावी शराफ़त अल्लाह के यहां कुछ भी वक़अत नहीं रखती। एक मुसलमान फ़क़ीर जिसकी दुनिया में कोई भी वक़अत न हो, उसकी बात कहीं भी नहीं सुनी जाती हो, अल्लाह के नज़दीक सैकड़ों उन शुरफ़ा से बेहतर है, जिनकी बात दुनिया में बड़ी वक़अत से देखी जाती हो और हर शख़्स उनकी बात सुन्ने और मान्ने को त्यार हो। लेकिन अल्लाह के यहां उसकी कोई वक़अत न हो। दुनिया का क़याम ही अल्लाह वालों की बरकत से है। कि यह तो हदीस में ख़ुद मौजूद है कि जिस दिन दुनिया में अल्लाह का नाम लेने वाला न रहेगा, क़यामत आ जायेगी और दुनिया का वजूद भी ख़त्म हो जायेगा। अल्लाह के पाक नाम ही की यह बरकत है कि यह दुनिया का सारा निज़ाम क़ायम है।

9. हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत करने वाले पर फ़क्र की दौड़

एक सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मुझे आपसे मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, देख क्या कहता है। उन्होंने फिर यही अर्ज़ किया कि मुझे आपसे मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० ने फिर यही इर्शाद फ़र्माया। जब तीन बार यह सवाल व जवाब हुआ तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अच्छा, अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो फ़क्र के ओढ़ने-बिछानें के लिए तैयार हो जाओ, इसलिये कि मुझ से मुहब्बत रखने वालों की तरफ़ फ़क्र ऐसे ज़ोर से दौड़ता है जैसा कि पानी की रौ निचान की तरफ़ दोड़ती है।

फ़ – यही वजह है कि हज़रात सहाबा किराम रज़ि० तो अक्सर फ़क्र व फ़ाक़े में रहे ही। अकाबिर मुहद्दिसीन, अकाबिर सूफ़िया, अकाबिर फ़ुक़हा भी तवंगरी में ज़्यादा नहीं रहे।

10. सरीयतुल अम्बर में फ़क्र की हालत

नबी अक्रम सल्ल० ने रजब सन् 08 हिजरी में समुन्दर के किनारे एक लश्कर तीन सौ आदमियों का जिन पर हज़रत अबूउबैदा रज़ि० अमीर बनाये गए थे, भेजा। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक थैली में खजूरों का तोशा भी उनको दिया। पन्द्रह रोज़ इन हज़रात का वहां क़याम रहा और तोशा ख़त्म हो गया।

हज़रत क़ैस ने जो इस क़ाफ़िले में थे, मदीना मुनव्वरा में क़ीमत अदा करने के वायदे पर क़ाफ़िला वालों से ऊंट ख़रीद कर ज़िब्ह करना शुरू किए और तीन ऊंट रोज़ाना ज़िब्ह करते, मगर तीसरे दिन अमीरे क़ाफ़िला ने, इस ख़्याल से कि सवारियां ख़त्म हो गयीं, तो वापसी भी मुश्किल हो जायेगी, ज़िब्ह की मुमानअत की और सब लोगों के पास अपनी-अपनी जो कुछ खजूरें मौजूद थीं, जमा करके एक थैली में रख ली और एक-एक खजूर रोज़ाना तक़्सीम फ़र्मा दिया करते, जिसको चूसकर यह हज़रात पानी पी लेते और रात तक के लिए यही खाना था। कहने को मुख़्तसर सी बात है, मगर लड़ाई के मौक़े पर जबकि क़ुव्वत और ताक़त की भी ज़रूरत हो, एक खजूर पर दिन भर गुज़ार देना, दिल व जिगर की बात है। चुनांचे हज़रत जाबिर रज़ि०

ने जब यह क़िस्सा लोगों को हुज़ूर सल्ल० के बाद सुनाया तो एक शागिर्द ने अर्ज़ किया कि हज़रत ! एक खजूर क्या काम देती होगी ? आपने फ़र्माया, इसकी क़द्र जब मालूम हुई, जब वह भी न रही कि बजुज़ फ़ाक़े के कुछ भी न था। दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते झाड़ते और पानी में भिगोकर खा लेते। मजबूरी सब कुछ करा देती है और हर तंगी के बाद, अल्लाह तआला जल्ल शानुहू के यहां से सहूलियत होती है। हक़ तआला ने इन तकालीफ़ और मशक़्क़तों के बाद समुन्दर में से एक मछली उन लोगों को पहुंचाई, जिसको अम्बर कहते हैं, इतनी बड़ी थी कि अठ्ठारह रोज़ तक यह हज़रात उसमें से खाते रहे और मदीना मुनव्वरा पहुंचने तक उसका गोश्त तोशों में साथ था। हुज़ूर सल्ल० के सामने जब सफ़र का मुफ़स्सल क़िस्सा सुनाया गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह अल्लाह का एक रिज़्क़ था, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया।

फ़ — मशक़्क़त और तकालीफ़ इस दुनिया में ज़रूरी हैं और अल्लाह वालों को ख़ास तौर पर पेश आती हैं। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलात, व स्सलाम को सबसे ज़्यादा मशक़्क़त में रखा जाता है फिर जो सबसे अफ़ज़ल हों। फिर उनके बाद जो बक़ीया में अफ़ज़ल हों। आदमी की आज़माइश उसकी दीनी हैसियत के मुवाफ़िक़ होती है और हर मशक़्क़त के बाद अल्लाह की तरफ़ से उसके लुत्फ़ व फ़ज़्ल से सहूलत भी अता होती है। यह भी ग़ौर किया करें कि हमारे बड़ों पर क्या-क्या गुज़र चुका और यह सब दीन ही की ख़ातिर था। इस दीन के फैलाने में, जिसको आज हम अपने हाथों से खो रहे हैं, इन हज़रात ने फ़ाक़े किए, पत्ते चाबे और अपने ख़ून बहाये और इसको फैलाया, जिस को आज हम बाक़ी भी नहीं रख सकते।

चौथा बाब

सहाबा किराम रज़ि० के तक़्वा के बयान में

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि० की हर आदत, हर ख़सलत इस क़ाबिल है कि उसको चुना जाए और उसका इत्तिबाअ किया जाए और क्यों न हो कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लाडले और महबूब रसूल सल्ल० की मुसाहबत के लिए इस जमाअत को चुना और छांटा। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मैं बनी आदम के बेहतरीन

क़र्न और ज़माने में[1] भेजा गया। इसलिए हर एतबार से यह ज़माना ख़ैर का था और ज़माने के बेहतरीन आदमी हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में रखे गए।

1. हुज़ूर सल्ल० की एक जनाज़े से वापसी और एक औरत की दावत

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक जनाज़े से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि एक औरत का पयाम खाने की दरख़्वास्त लेकर पहुंचा हुज़ूर सल्ल० ख़ुद्दाम समेत तशरीफ़ ले गए और खाना सामने रखा गया, तो लोगों ने देखा की हुज़ूरे अक्दस सल्ल० लुक़्मा चबा रहे हैं, निगला नहीं जाता। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ऐसा मालूम होता है कि इस बकरी का गोश्त मालिक की बग़ैर इजाज़त ले लिया गया। उस औरत ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! मैंने रेवड़ में बकरी ख़रीदने आदमी को भेजा था, वहां मिली नहीं पड़ोसी ने बकरी ख़रीदी थी, मैंने उसके पास क़ीमत से लेने को भेजा, वह तो मिले नहीं, उनकी बीवी ने बकरी भेज दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया क़ैदियों को खिला दो।[2]

फ़ – हुज़ूर सल्ल० की उलूवे शान[3] के मुक़ाबले में एक मुशतब्हा चीज़ का गले में अटक जाना कोई ऐसी अहम बात नहीं कि हुज़ूर के अद्ना ग़ुलामों को भी इस क़िस्म के वाक़िआत पेश आ जाते हैं।

2. हुज़ूर सल्ल० का सदक़ा की खजूर के ख़ौफ़ से तमाम रात जागना

एक मर्तबा नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम रात जागते रहे और करवटें बदलते रहे। अज़्वाज मुतह्हरात में से किसी ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह आज नींद नहीं आती। इर्शाद फ़र्माया कि एक खजूर पड़ी हुई थी, मैंने उठाकर खाली थी कि ज़ाया न हो, अब मुझे यह फ़िक्र है कि कहीं वह सदक़ा की न हो।

फ़ – अक़रब यही है कि वह हुज़ूर सल्ल० की अपनी ही होगी, मगर चूंकि

---

1. शिफ़ा, 2. अबूदाऊद, 3. ऊंची शान,

सदका का माल भी हुज़ूर सल्ल० के यहां आता था, इस शुब्हा की वजह से नबी अकरम सल्ल० को रात भर नींद न आई कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वह सदका की हो और इस सूरत में सदका का माल खाया गया हो, यह तो आका का हाल है कि महज़ शुब्हे पर रात भर करवटें बदलीं और नींद नहीं आई। अब गुलामों का हाल देखो कि रिश्वत, सूद, चोरी, डाका हर किस्म का नाजायज माल किस सुर्खरूई से खाते हैं और नाज़ से अपने को गुलामाने मुहम्मद सल्ल० शुमार करते हैं।

3. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० का एक काहिन के खाने से कै करना

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० का एक गुलाम था, जो गल्ला[1] के तौर पर अपनी आमदनी में से हजरत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० की ख़िदमत में पेश किया करता था। एक मर्तबा वह कुछ खाना लाया और हज़रत ने इसमें से एक लुक्मा नोश फ़र्मा लिया। गुलाम ने अर्ज किया कि आप रोज़ाना दर्याफ़्त फ़र्माया करते थे कि किस ज़रिए से कमाया, आज दर्याफ़्त नहीं फ़र्माया। आपने फ़र्माया कि भूख की शिद्दत की वजह से दर्याफ़्त करने की नौबत नहीं आई, अब बताओ। अर्ज किया कि मैं ज़माना-ए-जाहिलियत में एक क़ौम पर गुज़रा और उन पर मन्तर पढ़ा। उन्होंने मुझ से वायदा कर रखा था, आज मेरा गुज़र उधर को हुआ तो उनके यहां शादी हो रही थी। उन्होंने यह मुझे दिया था। हजरत अबूबक्र रज़ि० ने फ़र्माया कि तू मुझे हलाक ही कर देता। इसके बाद हलक में हाथ डालकर क़ै करने की कोशिश की मगर एक लुक्मा वह भी भूख की शिद्दत की हालत में खाया गया, न निकाला। किसी ने अर्ज़ किया पानी से क़ै हो सकती है। एक बहुत बड़ा प्याला पानी मंगवाया और पानी पी-पीकर क़ै फ़र्माते रहे, यहां तक कि वह लुक्मा निकाला। किसी ने अर्ज किया कि अल्लाह आप पर रहम फ़र्माएं। यह सारी मशक़्क़त उस एक लुक्मे की वजह से बर्दाश्त फ़र्माई। आपने इर्शाद फ़र्माया कि अगर मेरी जान के साथ भी यह लुक्मा निकलता, तो मैं निकालता। मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो बदन माले हराम से परवरिश पाये, आग उसके लिए बेहतर है। मुझे यह डर हुआ कि मेरे बदन का कोई हिस्सा इस लुक्मे से परवरिश न पा जाये।[2]

---

1. गुलाम पर कोई तादाद तै कर दी जाये कि रोजाना या माहवार हमें दिया करो बाकी जो कमाओ वह तुम्हारा है यह गल्ला कहलाता है यह जायज है और इस तरह सहाबा के ज़माने में गुलामों से मुकर्रर कर लिया जाता था। 2. मुतख़ब कंजुल उम्माल,

फ़ – हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को इस क़िस्म के वाक़िआत गुत अद्द[1] बार पेश आये कि एहतियात मिज़ाज में ज़्यादा थी। थोडा सा भी शुबहा हो जाता था तो क़ै फ़रमाते थे।

बुख़ारी शरीफ़ में एक और क़िस्सा इसी क़िस्म का है कि किसी गुलाम ने ज़माना-ए-जाहिलियत में कोई कहानत यानी ग़ैब की बात नजूमियों के तौर पर किसी को बतलाई थी, वह इत्तिफ़ाक़ से सही हो गई। उन लोगों ने उस गुलाम को कुछ दिया, जिसको उन्होंने अपनी मुक़र्ररा रकम में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को लाकर दे दिया। हज़रत ने नोश फ़र्माया और फिर जो कुछ पेट में था, सब क़ै किया। इन वाक़िआत में गुलामों का माल ज़रूरी नहीं कि नाजायज़ ही हो, दोनों एहतमाल हैं, मगर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की कमाले एहतियात ने इस मुश्तबहा माल को भी गवारा न किया।

4. हज़रत उमर रज़ि० की सदक़ा के दूध से क़ै

हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा दूध नोश फ़र्माया कि उसका मज़ा कुछ अजीब सा नया सा मालूम हुआ। जिन साहब ने पिलाया था, उन से दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह दूध कैसा है, कहां से आया है ? उन्होंने अर्ज़ किया कि फ़्लां जंगल में सद्क़ा के ऊंट चर रहे थे कि मैं वहां गया तो उन लोगों ने दूध निकाला, जिसमें से मुझे भी दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने मुंह में हाथ डाला और सारे का सारा क़ै फ़र्मा दिया।[2]

फ़ – इन हज़रात को इसका हमेशा फ़िक्र रहता था कि मुश्तबहा माल भी बदन का जुज़ न बने चै जाए कि बिल्कुल हराम जैसा कि हमारे इस ज़माने में शाया हो गया।[3]

5. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एहतियातन बाग़ वक़्फ़ करना

इब्ने सीरीन रह० कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की जब वफ़ात

1. कई, 2. मुअत्ता इमाम मालिक, 3. आम रिवाज हो गया है,

का वक़्त क़रीब आया तो आपने हज़रत आइशा रज़ि० से फ़र्माया कि मेरा दिल नहीं चाहता था कि बैतुल माल से कुछ लूँ, मगर उमर रज़ि० न माने कि दिक़्क़त होगी और तुम्हारी तिजारत की मशग़ूली से मुसलमानों का हरज होगा। इस मजबूरी से मुझे लेना पड़ा। इसलिए अब मेरा फ़्लां बाग़ इसके एवज़ में दे दिया जाए। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विसाल हो गया तो हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के पास आदमी भेजा और वालिद की वसीयत के मुवाफ़िक़ वह बाग़ दे दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला शानुहू तुम्हारे बाप पर रहम फ़र्मायें, उन्होंने यह चाहा कि किसी को लब कुशाई[1] का मौक़ा ही न दें।[2]

—किताबुल अम्वाल

फ़ — ग़ौर करने की बात है कि अव्वल तो वह मिक़्दार ही क्या थी जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने ली। इसके बाद लेना भी अहलुर्राए के इस्रार से था और मुसलमानों के नफ़ा की वजह से उसमें भी जितनी मुम्किन से मुम्किन एहतियात हो सकती थी, इसका अन्दाज़ा क़िस्सा 4 बाब 3 से मालूम हो गया कि बीवी ने तंगी उठाकर, पेट काट कर कुछ दाम मीठे के लिए जमा किये तो उनको बैतुलमाल में जमा फ़र्मा दिया और इतनी मिक़्दार मुस्तक़िल कम कर दी। इस सबके बाद यह आख़िरी फ़ेल है कि जो कुछ लिया, उसका भी मुआवज़ा दाख़िल कर दिया।

6. हज़रत अली बिन माबद रह० का किराये के मकान से तहरीर को ख़ुश्क करना

अली बिन माबद रह० एक मुहद्दिस हैं, फ़र्माते हैं, मैं एक किराये के मकान में रहता था, एक मर्तबा मैंने कुछ लिखा और उसको ख़ुश्क करने के लिए मिट्टी की ज़रूरत हुई कच्ची दीवार थी। मुझे ख़्याल आया कि इस पर से ज़रा सी ख़ुरच के तहरीर पर डाल लूं, फिर ख़्याल आया कि मकान किराये का है (जो रहने के वास्ते किराये पर लिया गया, न मिट्टी लेने के वास्ते) मगर साथ ही यह ख़्याल आया कि इतनी ज़रा सी मिट्टी में क्या मज़ायक़ा है। मामूली चीज़ है। मैंने मिट्टी ले ली और रात को ख़्वाब में देखा कि एक साहब खड़े हैं, जो यह फ़र्मा रहे हैं कि कल क़यामत को मालूम होगा, यह कहना कि मामूली मिट्टी क्या चीज़ है।

---

1. ज़ुबान खोलना, 2. किताबुल अम्वाल, 3. बचना, , 4. एह्या.

फ़ — 'कल मालूम होगा' का ब-ज़ाहिर मतलब यह है कि तक्वा के दरजात बहुत ज़्यादा हैं, कमाल दर्जा यह यक़ीनन था कि इससे भी एहतराज़[1] किया जाता अगर्चे उर्फ़न मामूली चीज़ शुमार होने से जवाज़ की हद में था।[2]

7. हज़रत अली रज़ि० का एक क़ब्र पर गुज़र

कुमैल रज़ि० एक शख़्स हैं, कहते हैं कि मैं हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के साथ एक मर्तबा जा रहा था। वह जंगल में पहुंचे, फिर एक मक़्बरे की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया, ऐ मक़्बरे वालो। ऐ बोसीदगी वालो! ऐ वहशत और तन्हाई वालो! क्या ख़बर है, क्या हाल है? फिर इर्शाद फ़र्माया हमारी ख़बर तो यह है कि तुम्हारे बाद अम्वाल तक़्सीम हो गये। औलादें यतीम हो गयीं, बीवियों ने दूसरे ख़ाविन्द कर लिए। यह तो हमारी ख़बर है, कुछ अपनी तो कहो। इसके बाद मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़र्माया, कुमैल! अगर इन लोगों को बोलने की इजाज़त होती और यह बोल सकते तो यह लोग जवाब में यह कहते हैं कि बेहतरीन तोशा तक्वा है। यह फ़र्माया और फिर रोने लगे और फ़र्माया, ऐ कुमैल! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मौत के वक़्त बात मालूम हो जाती है।[3]

फ़— यानी आदमी जो कुछ अच्छा या बुरा काम करता है, वह उसकी क़ब्र में महफ़ूज़ रहता है, जैसा कि सन्दूक़ में, मुतअद्दद अहादीस में यह मज़मून वारिद हुआ है कि नेक आमाल अच्छे आदमी की सूरत में होते हैं जो मय्यत के जी बहलाने और उन्स पैदा करने के लिए रहता है और उस की दिलदारी करता है और बुरे आमाल बुरी सूरत में बदबूदार बन कर आते हैं, जो और भी अज़ीयत का सबब होता है।

एक हदीस में वारिद है कि आदमी के साथ तीन चीज़ें क़ब्र तक जाती हैं, उसका माल जैसा कि अरब में दस्तूर था, उसके रिश्तेदार और उसके आमाल। दो चीज़ें माल और रिश्तेदार दफ़न करके वापस आ जाते हैं, अमल उसके साथ रह जाता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सहाबा रज़ि० से इर्शाद फ़र्माया कि तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी मिसाल और तुम्हारे अह्ल व अयाल और माल व आमाल की मिसाल क्या है। सहाबा रज़ि० के दर्याफ़्त फ़र्माने पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक शख़्स के तीन भाई

---

1. बचना, 2. एहया, 3. अशहर,

हों और वह मरने लगे। उस वक़्त एक भाई को वह बुलाये और पूछे कि भाई तुझे मेरा हाल मालूम है कि मुझ पर क्या गुज़र रही है, इस वक़्त तू मेरी क्या मदद करेगा। वह जवाब देता है कि तेरी तीमारदारी करूंगा, इलाज करूंगा, हर क़िस्म की ख़िदमत करूंगा और जब तू मर जाएगा, तो नहलाऊंगा, कफ़न पहनाऊंगा और कांधे पर उठाकर ले जाऊंगा। दफ़न के बाद तेरा ज़िक्रे ख़ैर करूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, यह भाई तो अह्ल व अयाल है। फिर वह दूसरे भाई से यही सवाल करता है! वह कहता है कि मेरा तेरा वास्ता ज़िन्दगी का है। जब तू मर जाएगा तो मैं दूसरी जगह चला जाऊंगा। यह भाई माल है। फिर वह तीसरे भाई को बुलाकर पूछता है वह कहता कि मैं क़ब्र में तेरा साथी हूं, वह्शत की जगह तेरा दिल बहलाने वाला हूं। जब तेरा हिसाब-किताब होने लगे, तो नेकियों के पलड़े में बैठ कर उसको झुकाऊंगा, यह भाई अमल है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अब बताओ कौन सा भाई कारआमद हुआ। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यही भाई कार आमद है, पहले दो तो बे-फ़ायदा ही रहे।

8. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद, जिसका खाना हराम हो, लेना हराम

नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह तआला शानुहू ख़ुद पाक हैं और पाक ही माल क़ुबूल फ़र्माते हैं। मुसलमानों को उसी चीज़ का हुक्म दिया जिसका अपने रसूलों को हुक्म फ़र्माया, चुनांचे कलाम पाक में इर्शाद है:-

يَآاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ

या ऐयुहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्‌मलू सालिहन इन्नी बिमा तअ्‌मलून अलीम०

'ऐ रसूलों! पाक चीज़ों को खाओ और नेक अमल करो। मैं तुम्हारे आमाल से बा-ख़बर हूं।

दूसरी जगह इर्शाद है।

---

1. कज

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ

या एयुहल्लज़ी न आमनू कुलू मिनत्तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम०

'ए ईमान वालो ! हमारे दिए हुए पाक रिज़्क़ में से खाओ। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने एक शख़्स का ज़िक्र फ़र्माया कि लंबे-लंबे सफ़र करता (और मुसाफ़िर की दुआ क़ुबूल होती है) और उसके साथ ही बिखरे हुए बालों वाला, ग़ुबार आलूद[1] कपड़ों वाला, (यानी परेशान हाल) दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर कहता है, ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! लेकिन खाना भी उसका हराम है, पीना भी हराम है, लिबास भी हराम है, हमेशा हराम ही खाया तो उसकी दुआ कहां क़ुबूल हो सकती है।[2]

फ़— लोगों को हमेशा सोच रहता है कि मुसलमानों की दुआएं क़ुबूल नहीं होतीं, लेकिन हालात का अन्दाज़ा इस हदीस शरीफ़ से किया जा सकता है। अगरचे अल्लाह जल्ल शानुहू अपने फ़ज़्ल से कभी काफ़िर की भी दुआ क़ुबूल फ़र्मा लेते हैं, चैजाए कि फ़ासिक़ की लेकिन मुत्तक़ी की दुआ असल चीज़ है। इसीलिए मुत्तक़ियों से दुआ की तमन्ना की जाती है। जो लोग चाहते हैं कि हमारी दुआएं क़ुबूल हों, उनको बहुत ज़रूरी है कि हराम माल से एहतराज़ करें और ऐसा कौन है जो यह चाहता है कि मेरी दुआ मक़्बूल न हो।

9. हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को मुश्क तौलने से इन्कार

हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में एक मर्तबा बहरैन से मुश्क आया, इर्शाद फ़र्माया कि कोई इसको तौल कर मुसलमानों में तक़्सीम कर देता। आपकी अह्लिया हज़रत आतिका रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैं तौल दूंगी। आपने सुनकर सुकूत फ़र्माया। थोड़ी देर में फिर यही इर्शाद फ़र्माया कि कोई इसको तौल देता ताकि मैं तक़्सीम कर देता। आप रज़ि० की अह्लिया ने फिर यही अर्ज़ किया। आपने सुकूत फ़र्माया। तीसरी दफ़ा में इर्शाद फ़र्माया कि मुझे यह पसंद नहीं कि तू उसको अपने हाथ से तराज़ू के पलड़े में रखे और फिर इन हाथों को अपने बदन पर फेर ले और इतनी मिक़्दार की ज़्यादती मुझे हासिल हो।

---

1. परेशानहाल, 2. जमउल फ़वाइद।

फ़— यह कमाल एहतियात थी और अपने आपको महल्ले तोहमत[1] से बचाना वरना जो भी तौलेगा, उसके हाथ को तो लगेगा ही। इसलिए इसके जवाज़ में कोई तरद्दुद न था, लेकिन फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी बीवी के लिए उसको गवारा न फ़र्माया।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० जिनको उमर सानी भी कहा जाता है, इनके ज़माने में एक मर्तबा मुश्क तोला जा रहा था, तो उन्होंने अपनी नाक बन्द फ़र्मा ली, और इर्शाद फ़र्माया कि मुश्क का नफ़ा तो ख़ुश्बू ही सूंघना है।[2]

फ़— यह है एहतियात इन सहाबा रज़ि० और ताबईन रह० की और हमारे बड़ों की पेशवाओं की।

10. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० का हज्जाज के हाकिम को हाकिम न बनाना

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने एक शख़्स को किसी जगह का हाकिम बनाया, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया कि यह साहब हज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में उसकी तरफ़ से हाकिम रह चुके हैं। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने उन हाकिम को माज़ूल[3] कर दिया। उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने तो हज्जाज बिन यूसुफ़ के यहां थोड़े ही ज़माना काम किया। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने फ़र्माया कि बुरा होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि तू उसके साथ एक दिन या उससे भी कम रहा।[4]

फ़— मतलब यह है कि पास रहने का असर ज़रूर पड़ता है। जो शख़्स मुत्तक़ियों के पास रहता है, उसके ऊपर ग़ैर-मामूली और ग़ैर महसूस तरीक़े से तक़्वा का असर पड़ता है और जो फ़ासिक़ों के पास रहता है, उसके ऊपर फ़िस्क़ का असर होता है, इसी वजह से बुरी सोहबत से रोका जाता है। आदमी तो दर किनार जानवरों तक के असरात पास रहने से आते हैं।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि फ़ख़्र और बड़ाई ऊंट और घोड़े वालों में होती है और मस्कनत[5] बकरी वालों में[6]। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सालेह आदमी के पास बैठने वालों की मिसाल उस शख़्स की सी है, जो मुश्क वाले के पास बैठा है कि अगर मुश्क न भी मिले तब भी उसकी ख़ुश्बू से दिमाग़ को फ़रहत होगी और

1. बदनामी, 2. अलम, 3. कंज, 4. एहया, 5. कमज़ोरी, 6. बुख़ारी नरमी।

बुरे साथी की मिसाल आग की भट्टी वाले की सी है कि अगर चिंगारी न भी पड़े तो धुंआ तो कहीं गया ही नहीं।

पाँचवां बाब

नमाज़ का शग़फ़ और शौक़ और उसमें ख़ुशू व ख़ुज़ूअ

नमाज सारी इबादतों में सबसे ज़्यादा अहम चीज है क़यामत में ईमान के बाद सबसे पहले नमाज़ ही का सवाल होता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि कुफ़्र और इस्लाम के दर्मियान में नमाज ही आड़ है, इसके अलावा और बहुत से इर्शादात इस बारे में, वारिद हैं जो मेरे एक दूसरे रिसाले, में मज़्कूर हैं।[1]

1. अल्लाह तआला का इर्शाद नवाफ़िल वाले के हक़ में

हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्माते हैं, जो शख़्स मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है, मेरी तरफ़ से उसको लड़ाई का एलान है और कोई शख़्स मेरा क़ुर्ब उस चीज़ की बनिस्बत ज़्यादा नहीं हासिल करता, जो मैंने उस पर फ़र्ज की है, यानी सब से ज़्यादा क़ुर्ब और नजदीकी मुझसे फ़रायज के अदा करने से हासिल होती है और नवाफ़िल की वजह से बन्दा मुझसे क़रीब होता रहता है, यहां तक कि मैं उसको अपना महबूब बना लेता हूं, तो फिर मैं उसका कान बन जाता हूं, जिससे सुने और उस की आंख बन जाता हूं, जिससे वह देखे और उसका हाथ बन जाता हूं, जिससे वह किसी चीज़ को पकड़े और उसका पांव बन जाता हूं, जिससे वह चले। अगर वह मुझसे कुछ मांगता है तो मैं उसको अता करता हूं और किसी चीज से पनाह चाहता है, तो पनाह देता हूं।[2]

फ़— आंख-कान बन जाने का मतलब यह है कि उसका देखना, सुनना, चलना, फिरना, सब मेरी ख़ुशी के ताबेअ बन जाता है और कोई बात भी मेरी ख़िलाफ़े

---

1. यानी फ़ज़ाईल नमाज़ में, 2. जमउल फ़वाइद,

मर्जी नहीं होती। किस क़दर खुशनसीब हैं वह लोग जिनको फ़रायज़ के बाद नवाफ़िल पर कसरत की तौफ़ीक़ हो और यह दौलत नसीब हो जाए। अल्लाह तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से मुझे और मेरे दोस्तों को भी नसीब फ़र्मायें।

2. हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात नमाज़ पढ़ना

एक शख़्स ने हज़रते आइशा रज़ि० से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल० की कोई अजीब बात, जो आपने देखी हो, वह सुना दें। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़र्माया कि हुज़ूर सल्ल० की कौन सी बात अजीब न थी। हर बात अजीब ही थी। एक दिन रात को तशरीफ़ लाये और मेरे पास लेट गये, फिर फ़र्माने लगे, ले छोड़ मैं तो अपने रब की इबादत करूं। यह फ़र्मा कर नमाज़ के लिए खड़े हो गये और रोना शुरू किया, यहां तक कि आंसू सीनः मुबारक तक बहने लगे। फिर रुकूअ फ़र्माया, उसमें भी इसी तरह रोते रहे, फिर सजदा किया। उसमें भी इसी तरह रोते रहे। फिर सजदे से उठे। यहाँ तक कि हज़रत बिलाल रज़ि० ने आकर सुबह की नमाज़ के लिए आवाज़ दी। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप इतना रोये, हालांकि आप मासूम हैं, अगले पिछले सब गुनाहों की (अगर बिलफ़र्ज़ हो भी तो) मग्फ़िरत का वायदा अल्लाह तआला ने फ़र्मा रखा है। आपने इर्शाद फ़र्माया कि फिर मैं शुक्रगुज़ार न बनूं। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि मैं ऐसा क्यों न करता, हालांकि आज मुझ पर यह आयतें नाज़िल हुईं– إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

–'इन्नफ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल् अर्ज़ि,[1] आले इम्रान का आख़िरी रुकूअ।[2]

यह मुतअद्दिद रिवायात में आया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इस क़दर लंबी नमाज़ पढ़ा करते थे कि खड़े-खड़े पांव पर वरम आ गया था। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप इतनी मशक़्क़त उठाते हैं, हालांकि आप बख़्शे-बख़्शाये हैं। आपने फ़र्माया कि मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं।[3]

3. हुज़ूर सल्ल० का चार रकात में छः पारे पढ़ना

हज़रत औफ़ रज़ि० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. इक़ामतुल-हुज्जा, 2. जमउल फ़वाइद, 3. बुख़ारी।

सल्लम के हमरिकाब[1] था। हुज़ूर सल्ल० ने मिस्वाक फ़र्मायी वुज़ू फ़र्माया और नमाज़ की नीयत बांध ली। मैं भी हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ में शरीक हो गया। हुज़ूर ने सूरः बकरः एक रक्अत में पढ़ी और जो आयत रहमत की आती, हुज़ूर सल्ल० उस जगह देर तक रहमत की दुआ माँगते रहते और जो आयत अज़ाब की आती उस जगह देर तक अज़ाब से पनाह मांगते रहते। सूरः के ख़त्म पर रुकूअ किया और उतना ही लम्बा रूकुअ किया, जितनी देर में सूरः बकरः पढ़ी जाती और रुकूअ में

سُبْحَانَ ذِی الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْعَظَمَةِ

'सुब्हान ज़िल् जब रूति वल मलकूति वल् अज़मति०

पढ़ते जाते थे फिर उतना ही लंबा सज्दा किया फिर दूसरी रक्अत में इसी तरह सूरः आले इम्रान पढ़ी और इसी तरह एक-एक रक्अत में एक-एक सूरः पढ़ते रहे। इस तरह चार रक्अतों में सवा छः सिपारे होते हैं। यह कितनी लम्बी नमाज़ हुई होगी। जिसमें हर आयते-रहमत और आयते अज़ाब पर देर तक दुआ का मांगना और फिर उतना ही लंबा रुकूअ और सज्दा था।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० अपना एक क़िस्सा हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ने का इसी तरह से नक़्ल करते हैं और फ़र्माते हैं कि चार रक्अतों में चार सूरतें सूरः बकरः से लेकर माइदः के ख़त्म तक पढ़ीं।

फ़- इन चार सूरतों के सवा छः सिपारे होते हैं, जो हुज़ूर सल्ल० ने चार रकअतों में पढ़े और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदतें शरीफ़ा तज्वीद व तर्तील[2] के साथ पढ़ने की थी, जैसा कि अक्सर अहादीस में है। इसके साथ ही हर आयते रहमत और आयते अज़ाब पर ठहरना और दुआ मांगना, फिर उतना ही लंबा रुकूअ-सज्दा, इससे अन्दाज़ा हो सकता है कि इस तरह चार रक्अत में किस क़दर वक़्त ख़र्च हुआ होगा। बाज़ मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक रक्अत में सूरः बक़रः, आले इम्रान, माइदः तीन सूरतें पढ़ीं, जो तक़रीबन पांच पारे होते हैं। यह जब ही हो सकता है, जब नमाज़ में चैन और आंखों की ठंडक नसीब हो जाए। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मेरी

---

1. साथ 2. पूरी अदायगी के साथ पढ़ना।

आंखों की ठंडक नमाज़ में है। अल्लाहुम्मर्ज़ुक्नी अत्तिबाअहु

4. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ व हज़रत इब्ने ज़ुबैर हज़रत अली रज़ि० वग़ैरह की नमाज़ों के हालात

मुजाहिद रज़ि० हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का हाल नक़ल करते हैं कि जब वह नमाज़ में खड़े होते थे, तो ऐसा मालूम होता था कि एक लकड़ी गड़ी हुई है।[1] यानी बिल्कुल हरकत नहीं होती थी।

उलमा ने लिखा है कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से नमाज़ सीखी और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से यानी जिस तरह हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ते थे, उसी तरह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० पढ़ते थे और उसी तरह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०।

साबित रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की नमाज़ ऐसी होती थी कि गोया लकड़ी एक जगह गाढ़ दी। एक शख़्स कहते हैं कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि० जब सज्दा करते तो इस क़दर लम्बा और बे-हरकत होता था कि चिड़ियां आकर कमर पर बैठ जातीं। बाज़ मर्तबा इतना लम्बा रुकूअ करते कि तमाम रात सुबह तक रुकूअ ही में रहते। बाज़ औक़ात सज्दा इतना ही लम्बा होता कि पूरी रात गुज़र जाती। जब हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से लड़ाई हो रही थी तो एक गोला मस्जिद की दीवार पर लगा, जिससे दीवार का एक टुकड़ा उड़ा और हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० के हल्क़ और दाढ़ी के दर्मियान को गुज़रा, मगर न उन्को कोई इन्तिशार[2] हुआ, न रुकूअ सज्दा मुख़्तसर किया।

एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे। बेटा जिसका नाम हाशिम था, पास सो रहा था, छत में से एक सांप गिरा और बच्चे पर लिपट गया। वह चिल्लाया। घर वाले सब दौड़े हुए आये। शोर मच गया। उस सांप को मारा। इब्ने ज़ुबैर रज़ि० उसी इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते रहे, सलाम फेर कर फ़रमाने लगे, कुछ शोर की-सी आवाज़

---

1. तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, 2. बिखराव,

आयी थी, क्या था ! बीवी ने कहा, अल्लाह तुम पर रहम करे, बच्चे की तो जान भी गई थी, तुम्हें पता ही न चला! फ़र्माने लगे तेरा नास हो, अगर नमाज़ में दूसरी तरफ़ तवज्जोह करता तो नमाज़ कहां बाक़ी रहती। (हिदाय: वग़ैरह)

हज़रत उमर रज़ि० के अख़िर ज़माने में, जब उनके खंजर मारा गया, जिसकी वजह से उनका इंतिक़ाल हुआ तो हर वक़्त ख़ून बहता था और अक्सर ग़फ़लत भी हो जाती थी, लेकिन इस हालत में भी जब नमाज़ के लिए मुतनब्बह किये जाते, तो उसी हालत में नमाज़ अदा फ़र्माते और इर्शाद फ़र्माते कि इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं, जो नमाज़ छोड़ दे।

हज़रत उस्मान रज़ि० तमाम रात जागते और एक रक्अत में पूरा क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते[1]।

हज़रत अली रज़ि० की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो बदन में कंपकपी आ जाती और चेहरा ज़र्द हो जाता। किसी ने पूछा कि यह क्या बात है ? फ़र्माया कि उस अमानत का वक़्त है, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर उतारा तो वह उसके तहम्मुल से आजिज़ हो गये और मैंने उसका तहम्मुल किया है।

ख़ल्फ़ बिन अय्यूब रज़ि० से किसी ने पूछा कि तुम्हें नमाज़ में मक्खियां दिक़ नहीं करतीं। फ़र्माया कि फ़ासिक़ लोग हुकूमत के कोड़े खाते हैं और हरकत नहीं करते और इस पर फ़ख़्र करते हैं और अपने सब्र व तहम्मुल पर अकड़ते हैं कि इतने कोड़े मारे मैं हिला तक नहीं ! मैं अपने रब के सामने खड़ा हूं और एक मक्खी की वजह से हरकत कर जाऊं।

मुस्लिम बिन यसार रह० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने घर वालों से कहते कि तुम बातें करते रहो, मुझे तुम्हारी बात का पता ही नहीं चलेगा। एक मर्तबा बसरा की जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे कि मस्जिद का एक हिस्सा गिरा। लोग उसकी वजह से दौड़े, वहाँ जमा हुए, शोर व शग़ब हुआ मगर उनको पता ही न चला।

1. मुंतख़ब कंज़,

हातिम असम्म रह० से किसी ने उनकी नमाज़ की कैफ़ियत पूछी, तो कहने लगे कि जब नमाज़ का वक़्त आता है तो वुज़ू के बाद उस जगह पहुंच कर जहां नमाज़ पढ़ूं, थोड़ी देर बैठता हूं कि बदन के तमाम हिस्से में सुकून पैदा हो जाये। फिर नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं? इस तरह कि बैतुल्लाह को अपनी निगाह के सामने समझता हूं और पुलसिरात को पाँव के नीचे, जन्नत को दायीं तरफ़ और जहन्नम को बायीं तरफ़ और मौत के फ़रिश्ते को अपने पीछे खड़ा हुआ ख़्याल करता हूं और समझता हूं कि यह आख़िरी नमाज़ है। इसके बाद पूरे ख़ुशू-ख़ुज़ूअ[1] से नमाज़ पढ़ता हूं और इसके बाद उम्मीद और डर के दर्मियान रहता हूं कि न मालूम क़ुबूल हुई या नहीं।[2]

5. एक मुहाजिर और एक अंसारी की चौकीदारी और मुहाजिर का नमाज़ में तीर खाना

नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ग़ज़्वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे, शब[3] को एक जगह क़याम फ़र्माया और इर्शाद फ़र्माया कि आज शब को हिफ़ाज़त-चौकीदारी कौन करेगा। एक मुहाजिरी और एक अंसारी हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० और हज़रत उब्बाद बिन बिश्र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हम दोनों करेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने एक पहाड़ी, जहां से दुश्मन के आने का रास्ता हो सकता था, बता दी कि इस पर दोनों क़याम करो। दोनों हज़रात वहां पर तशरीफ़ ले गए। वहां जाकर अंसारी ने मुहाजिर से कहा कि रात को दो हिस्सों पर मुंक़सिम करके एक हिस्से में आप सो रहें, मैं जागता रहूं। दूसरे हिस्से में आप जागें मैं सोता रहूं कि दोनों के तमाम रात जागने में यह भी एहतमाल है कि किसी वक़्त नींद का ग़लबा हो जाये और दोनों की आंख लग जाये। अगर कोई ख़तरा जागने वाले को महसूस हो तो अपने साथी को जगा ले। रात का पहला आधा हिस्सा अंसारी के जागने का क़रार पाया और मुहाजिर सो गये। अंसारी ने नमाज़ की नीयत बांध ली। दुश्मन की जानिब से एक शख़्स आया और दूर से खड़े हुए शख़्स को देखकर तीर मारा और जब कोई हरकत न हुई तो, दूसरा, और फिर इसी तरह तीसरा तीर मारा और हर

1. ख़ुदा के डर के साथ, 2. एह्या, 3. रात

तीर उनके बदन में घुसता रहा और यह हाथ से उसको बदन से निकाल कर फेंकते रहे। इसके बाद इत्मीनान से रुकूअ किया, सज्दा किया, नमाज़ पूरी करके अपने साथी को जगाया, वह तो एक की जगह दो को देखकर भाग गया कि न मालूम कितने हों, मगर साथी ने जब उठकर देखा तो अंसारी के बदन से तीन जगह से ख़ून ही ख़ून बह रहा था। मुहाजिर ने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह ! तुमने मुझे शुरू ही में न जगा लिया। अंसारी ने फ़र्माया कि मैंने एक सूरः (सूरह कह्फ़) शुरू कर रखी थी ! मेरा दिल न चाहा कि उसको ख़त्म करने से पहले रुकूअ करूं। अब भी मुझे इसका अंदेशा हुआ कि ऐसा न हो, मैं बार-बार तीर लगने से मर जाऊं और हुज़ूर सल्ल० ने जो हिफ़ाज़त की ख़िदमत सुपुर्द कर रखी है, वह फ़ौत हो जाये। अगर मुझे यह अंदेशा न होता, तो मैं मर जाता, मगर सूरः ख़त्म करने से पहले रुकूअ न करता।[1]

फ़— यह थी उन हज़रात की नमाज़ और इसका शौक़ कि तीर पर तीर खाये जायें और ख़ून ही ख़ून हो जाये, मगर नमाज़ के लुत्फ़ में फ़र्क़ न पड़े। एक हमारी नमाज़ है कि अगर मच्छर भी काट ले तो नमाज़ का ख़्याल जाता रहे। भिड़ का तो पूछना ही क्या।

यहां एक फ़िक़ही मस्अला भी इख़्तिलाफ़ी है कि ख़ून निकलने से हमारे इमाम यानी इमाम आज़म रह० के नज़दीक वुज़ू टूट जाता है, इमाम शाफ़िई के नज़दीक नहीं टूटता। मुम्किन है कि इन सहाबी का मज़हब भी यही हो या उस वक़्त इस मस्अले की तहक़ीक़ न हुई हो कि हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस मज्लिस में तश्रीफ़ फ़र्मा न थे, या उस वक़्त तक यह हुक्म ही न हुआ हो।

6. हज़रत अबू तल्हा रज़ि० का नमाज़ में ख़्याल आ जाने से बाग़ वक्फ़ करना

हज़रत अबूतल्हा रज़ि० एक मर्तबा अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। एक परिंदा उड़ा और चूंकि बाग़ गंजान था, इसलिए उसको जल्दी से बाहर जाने का रास्ता न मिला। कभी इस तरफ़ कभी उस तरफ़ उड़ता रहा और निकलने का रास्ता ढूंढता रहा। उनकी निगाह उस पर पड़ी, और इस मंज़र की वजह से उधर ख़्याल लग गया और निगाह उस परिंदे के साथ फिरती रही। दफ़अतन[2] नमाज़ का ख़्याल आया

1. बैहक़ी, अबूदाऊद, 2. यकायक,

तो सह्व हो गया कि कौन-सी रक्अत है। निहायत क़लक़ हुआ कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई कि नमाज़ में भूल हुई फ़ौरन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा क़िस्सा अर्ज करके दरख़्वास्त की कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई। इसलिए मैं उसको अल्लाह के रास्ते में देता हूं। आप जहां दिल चाहे, इसको सर्फ़ फ़र्मा दीजिए।

इसी तरह एक और क़िस्सा हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में पेश आया कि एक अंसारी अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। खजूरें पकने का ज़माना शबाब पर था, और खोशे[1] खजूरों के बोझ और कसरत से झुके पड़े थे। निगाह खोशों पर पड़ी और खजूरों से भरे होने की वजह से बहुत ही अच्छे मालूम हुए। ख़्याल उधर लग गया, जिसकी वजह से यह भी याद न रहा कि कितनी रक्अतें हुईं। इसके रंज और सदमे का ऐसा ग़लबा हुआ कि इसकी वजह से यह ठान ली कि इस बाग़ को अब नहीं रखना जिसकी वजह से यह मुसीबत पेश आई। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आकर अर्ज किया कि यह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना चाहता हूं, इसको जो चाहे कीजिए। उन्होंने उस बाग़ को पचास हज़ार में फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दीनी कामों में ख़र्च फ़र्मा दी।[2]

फ़— यह ईमान की ग़ैरत है कि नमाज़ जैसी अहम चीज़ में ख़्याल आ जाने से पचास हज़ार दिरहम का बाग़ एक दम सदक़ा कर दिया। हमारे हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब रह० ने 'क़ौले जमील' में सूफ़िया की निस्बत की क़िस्में तहरीर फ़र्माते हुए उसके मुताल्लिक़ तहरीर फ़र्माया है कि यह निस्बत है। अल्लाह की इताअत को मासिवा पर मुक़द्दम रखना और इस पर ग़ैरत करना कि इन हज़रात को इस पर ग़ैरत आई कि अल्लाह की इताअत में किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ तवज्जोह क्यों हुई ?

7. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का नमाज़ की वजह से आंख न बनवाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की आँख में जब पानी उतर आया तो आंख बनाने वाले हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज किया कि इजाज़त हो तो हम

---

1. गुच्छे, 2. मुअत्ता इमाम मालिक,
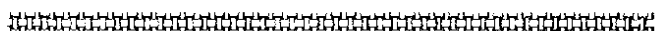
आंख बना दें, लेकिन पांच दिन तक आपको एहतियात करना पड़ेगी कि सज्दा बजाय ज़मीन के किसी ऊंची लकड़ी पर करना होगा। उन्होंने फ़र्माया, यह हरगिज नहीं हो सकता। वल्लाह एक रक्अत भी इस तरह पढ़ना मुझे मंज़ूर नहीं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद मुझे मालूम है कि जो शख़्स एक नमाज़ भी जान कर छोड़ दे, वह हक़ तआला शानुहू से ऐसी तरह मिलेगा कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस उसपर नाराज़ होंगे।[1]

फ़— अगरचे शरअन नमाज इस तरह से मजबूरी की हालत में पढ़ना जायज है और यह सूरत नमाज़ छोड़ने की वईद[2] में दाख़िल नहीं होती, मगर हज़रात सहाबा रज़ि० को नमाज़ के साथ जो शग़फ़ था और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद पर अमल की इस क़दर अहमियत थी, उसकी वजह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने आँख बनवाने को भी पसंद न किया कि इन हज़रात के नज़दीक एक नमाज़ पर सारी दुनिया क़ुर्बान थी। आज हम बे-हयाई से जो चाहें, इन मर मिटने वालों की शान में मुंह से निकाल दें। जब कल उनका सामना होगा कि यह फ़िदाई मैदाने हश्र की सैर के लुत्फ़ उड़ा रहे होंगे, जब हक़ीक़त मालूम होगी कि यह क्या था और हमने इनके साथ क्या बर्ताव किया।

8. सहाबा रज़ि० का नमाज़ के वक़्त फ़ौरन दुकानें बन्द करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में तशरीफ़ रखते थे कि जमाअत का वक़्त हो गया, देखा कि फ़ौरन सबके सब अपनी-अपनी दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल हो गये। इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि इन्हीं लोगों की शान में यह आयत नाज़िल हुई-

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ

रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजारतुंन ला बैअुन अन ज़िक्रिल्लाह

(सूरः नूर, पारा 18)

तर्जुमा पूरी आयत शरीफ़ा का यह है कि इन मस्जिदों में ऐसे लोग सुबह और शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं, जिनको अल्लाह की याद से और बिलख़ुसूस

1. दुर्रेमंसूर, 2. धमकी, डरावा,

नमाज पढ़ने और ज़कात देने से न ख़रीदना ग़फ़लत में डालता है, न बेचना। वह ऐसे दिन की पकड़ से डरते हैं, जिसमें बहुत से दिल और बहुत सी आंखें उलट जाएंगी।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि फ़र्माते हैं कि वह लोग तिजारत वग़ैरह अपने-अपने कारोबार में मशग़ूल होते थे, लेकिन जब अज़ान की आवाज़ सुनते तो सब कुछ छोड़कर फ़ौरन मस्जिद में चले जाते। एक जगह कहते हैं, ख़ुदा की क़सम! यह लोग ताजिर थे, मगर इनकी तिजारत उनको अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में तश्रीफ़ रखते थे कि अज़ान हो गयी। उन्होंने देखा कि लोग अपने-अपने सामान को छोड़कर नमाज़ की तरफ़ चल दिये। इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़र्माया, यही लोग हैं, जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू ने "लातुल्हीहिम तिजारतुंन ला बैअुन अन ज़िक्रिल्लाहि" से याद फ़र्माया।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन जब हक़ तआला शानुहू तमाम दुनिया को एक जगह जमा फ़र्मायेंगे, तो इर्शाद होगा, 'कहां हैं वह लोग जो ख़ुशी और रंज दोनों हालतों में अल्लाह की हम्द करने वाले थे। तो एक मुख़्तसर जमाअत उठेगी और बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएगी। फिर इर्शाद होगा कहां हैं वह लोग, जो रातों में अपनी ख़्वाबगाह से दूर रहते और अपने रब को ख़ौफ और रग़बत के साथ याद करते थे। तो एक दूसरी मुख़्तसर जमाअत उठेगी और वह भी जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जायेगी। फिर इर्शाद होगा, कहां हैं, वह लोग, जिनको तिजारत या बेचना, अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकता था तो एक तीसरी जमाअत मुख़्तसर-सी खड़ी होगी और जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल होगी। उसके बाद बक़िया लोगों का हिसाब शुरू हो जाएगा।[2]

9. हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का क़त्ल के वक़्त नमाज़ पढ़ना और ज़ैद रज़ि० व आसिम रज़ि० का क़त्ल

उहद की लड़ाई में जो काफ़िर मारे गये थे, उनके अज़ीज़ों में इंतिक़ाम का जोश ज़ोर पर था। सुलाफ़ा ने जिसके दो बेटे इस लड़ाई में मारे गए थे, मन्नत मानी

1. 'बयानुलक़ुरआन' से, 2. दुर्रेमंसूर

थी कि अगर आसिम का (जिन्होंने उसके बेटे का क़त्ल किया था) सर हाथ आ जाए, तो उसकी खोपड़ी में शराब पियूंगी इसलिए उसने एलान किया था कि जो आसिम का सर लायेगा उसको सौ ऊंट इनाम दूंगी। सुफ़ियान बिन ख़ालिद को इस लालच ने आमादा किया कि वह उनका सर लाने की कोशिश करे। चुनांचे उसने उज़्ल व क़ारा के चंद आदमियों को मदीना मुनव्वरा भेजा। उन लोगों ने अपने को मुसलमान ज़ाहिर किया और हुज़ूरे अक्दस सल्ल० से तालीम व तब्लीग़ के लिए अपने साथ चंद हज़रात को भेजने की दर्ख़्वास्त की और हज़रत आसिम रज़ि० को भी साथ भेजने की दर्ख़्वास्त की कि उनका बाज़ पसन्दीदा बतलाया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने दस आदमियों को और बाज़ रिवायात में छः आदमियों को उनके साथ कर दिया, जिनमें हज़रत आसिम रज़ि० भी थे। रास्ते में जाकर इन ले जाने वालों ने बद'अहदी की और दुश्मनों को मुकाबले के लिए बुलाया, जो दो सौ आदमी थे और उनमें से सौ बहुत मशहूर तीरदांज थे और बाज़ रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इन हज़रात को मक्का वालों की ख़बर लाने के लिए भेजा था। रास्ते में बनू लह्यान के दो सौ आदमियों से मुकाबला हुआ। यह मुख़्तसर जमाअत दस आदमियों की या छः आदमियों की, यह हालत देखकर एक पहाड़ी पर, जिसका नाम फ़दफ़द था, चढ़ गयी। कुफ़्फ़ार ने कहा कि हम तुम्हारे ख़ून से अपनी ज़मीन रंगना नहीं चाहते, सिर्फ़ अह्ले मक्का से तुम्हारे बदले में कुछ माल लेना चाहते हैं। तुम हमारे साथ आ जाओ हम तुम्हें क़त्ल न करेंगे। मगर उन्होंने कहा कि हम काफ़िर के अह्द में आना नहीं चाहते और तरकश से तीर निकाल कर मुकाबला किया। जब तीर ख़त्म हो गये तो नेज़ों से मुकाबला किया। हज़रत आसिम रज़ि० ने साथियों से जोश में कहा कि तुम से धोखा किया गया, मगर घबराने की बात नहीं। शहादत को ग़नीमत समझो, तुम्हारा महबूब तुम्हारे साथ है और जन्नत की हूरें तुम्हारी मुंतज़िर हैं। यह कहकर जोश से मुकाबला किया और जब नेज़ा भी टूट गया तो तलवार से मुकाबला किया। मुकाबिलों[1] का मज्मा कसीर था, और आख़िर शहीद हो गए और दुआ की कि या अल्लाह! अपने रसूल सल्ल० को हमारे क़िस्से की ख़बर कर दे। चुनांचे यह दुआ क़ुबूल हुई और उसी वक़्त इस वाक़िए का इल्म हुज़ूर सल्ल० को हो गया, और चूंकि आसिम रज़ि० यह भी सुन चुके थे कि सुलाफ़ा ने मेरे सर की खोपड़ी में शराब पीने की मन्नत की है। इसलिए मरते वक़्त दुआ की कि या अल्लाह! मेरा सर तेरे रास्ते में काटा जा रहा है तू ही इसका मुहाफ़िज़ है। और वह दुआ भी क़ुबूल हुई और शहादत के बाद जब काफ़िरों

1. सामने के दुश्मन

नें सर काटने का इरादा किया, तो अल्लाह तआला ने शहद की मक्खियों का और कुछ रिवायतों में भिड़ों का एक ग़ोल भेज दिया, जिन्होंने उनके बदन को चारों तरफ़ से घेर लिया। काफ़िरों का ख़्याल था कि रात के वक़्त जब यह उड़ जाएंगी तो सर काट लेंगे, मगर रात को एक बारिश की रौ आई और उनकी लाश को बहाकर ले गयी। इस तरह सात आदमी या तीन आदमी शहीद हो गये, ग़रज तीन बाक़ी रह गये-हज़रत ख़ुबैब रज़ि० और ज़ैद बिन दस्ना रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन तारिक रज़ि०।

इन तीनों हज़रात से फिर उन्होंने अहद-पैमान किया कि तुम नीचे आ जाओ, हम तुम से बद-अह्दी न करेंगे। यह तीनों हज़रात नीचे उतर आये और नीचे उतरने पर कुफ़्फ़ार ने उनकी कमानों की तांत उतार कर उनकी मश्कें बांधी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि० ने फ़र्माया कि यह पहली बद-अह्दी है, मैं तुम्हारे साथ हरगिज़ न जाऊंगा। इन शहीद होने वालों का इक़्तिदा ही मुझे पसंद है। उन्होंने ज़बर्दस्ती उनको खींचना चाहा, मगर यह न टले, तो उन लोगों ने उनको भी शहीद कर दिया। सिर्फ़ दो हज़रात उनके साथ रहे, जिनको ले जाकर उन लोगों ने मक्का वालों के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। एक हज़रत ज़ैद बिन दस्ना रज़ि० जिनको, सफ़वान बिन उमैया ने पचास ऊंट के बदले में ख़रीदा ताकि अपने बाप उमैया के बदले में क़त्ल करे। दूसरे हज़रत ख़ुबैब रज़ि० जिन को हुजैर बिन अबी अह्हाब ने सौ ऊंट के बदले में ख़रीदा, ताकि अपने बाप के बदले में उनको क़त्ल करे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि हारिस बिन आमिर की औलाद ने ख़रीदा कि उन्होंने बद्र में हारिस को क़त्ल किया था।

सफ़वान ने तो अपने क़ैदी हज़रत ज़ैद रज़ि० को फ़ौरन ही हरम से बाहर अपने ग़ुलाम के साथ भेज दिया कि क़त्ल कर दिये जायें। इसका तमाशा देखने के वास्ते और भी बहुत से लोग जमा हुए, जिनमें अबू सुफ़ियान भी था। उसने हज़रत ज़ैद से शहादत के वक़्त पूछा कि ऐ ज़ैद ! तुझको ख़ुदा की कसम ! सच कहना क्या तुझको यह पसंद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गरदन तेरे बदले में मार दी जाये और तुझको छोड़ दिया जाए कि अपने अह्ल व अयाल में ख़ुश व ख़ुर्रम रहे। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने फ़र्माया कि ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह भी गवारा नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहां हैं, वहीं उनके एक कांटा भी चुभे और हम अपने घर आराम से रहें। यह जवाब सुनकर क़ुरैश हैरान रह गये। अबू सुफ़ियान ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को जितनी

उनसे मुहब्बत देखी उसकी नजीर कहीं नहीं देखी। इसके बाद हज़रत ज़ैद शहीद कर दिए गए।

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० एक अर्से तक क़ैद में रहे। हुजैर की बांदी, जो बाद में मुसलमान हो गई, कहती हैं कि जब ख़ुबैब रज़ि० हम लोगों की क़ैद में थे, तो हमने देखा कि ख़ुबैब रज़ि० एक दिन अंगूर का बहुत बड़ा खोशा[1] आदमी के सर के बराबर हाथ में लिए हुए अंगूर खा रहे थे और मक्का में उस वक़्त अंगूर बिल्कुल नहीं था। वही कहती हैं जब उनके क़त्ल का वक़्त करीब आया तो उन्होंने सफ़ाई के लिए उस्तरा मांगा, वह दे दिया गया। इत्तिफ़ाक़ से एक कम-सिन बच्चा उस वक़्त ख़ुबैब रज़ि० के पास चला गया। उन लोगों ने देखा कि उस्तरा उनके हाथ में है और बच्चा उनके पास, यह देखकर घबराये। ख़ुबैब रज़ि० ने फ़र्माया, क्या तुम यह समझते हो मैं बच्चे को क़त्ल कर दूंगा, ऐसा नहीं कर सकता। इसके बाद उनको हरम से बाहर लाया गया और सूली पर लटकाने के वक़्त आख़िरी ख़्वाहिश के तौर पर पूछा गया कि कोई तमन्ना हो तो बताओ। उन्होंने फ़र्माया कि मुझे इतनी मोहलत दी जाये कि दो रक्अत नमाज पढ़ लूं कि दुनिया से जाने का वक़्त है और अल्लाह जल्ल शानुहू की मुलाक़ात क़रीब है। चुनांचे मोहलत दे दी गयी। उन्होंने दो रक्अतें निहायत इत्मीनान से पढ़ीं और फिर फ़र्माया कि अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तुम लोग यह समझोगे कि मौत के डर की वजह से देरकर रहा हूं तो दो रक्अत और पढ़ता। इसके बाद वह सूली पर लटका दिये गए तो उन्होंने यह दुआ की या अल्लाह ! कोई ऐसा शख़्स नहीं है जो तेरे रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक मेरा आख़िरी सलाम पहुंचा दे। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बज़रिया वही उसी वक़्त सलाम पहुंचाया गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, व अलैकुम अस्सलाम या ख़ुबैब! और साथियों को इत्तिला फ़र्मायी कि ख़ुबैब रज़ि० को क़ुरैश ने क़त्ल कर दिया। हज़रत ख़ुबैब को जब सूली पर चढ़ाया गया तो चालीस काफ़िरों ने नेज़े लेकर चारों तरफ़ से उन पर हमला किया और बदन को छलनी कर दिया। उस वक़्त किसी ने क़सम देकर यह भी पूछा कि तुम यह भी पसन्द करते हो कि तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल कर दें और तुमको छोड़ दें। उन्होंने फ़र्माया वल्लाहिल अज़ीम ![2] मुझे यह भी पसन्द नहीं कि मेरी जान के फ़िदए में एक कांटा भी हुज़ूर सल्ल० के चुभे।[3]

---

1. गुच्छा, 2. अल्लाह की क़सम, जो महान हैं, 3. फ़त्हे इस्लाम,

फ़—वैसे तो इन क़िस्सों का हर-हर लफ़्ज़ इबरत[1] है, लेकिन इस क़िस्से में दो चीज़ें ख़ास-तौर से क़ाबिले क़द्र, क़ाबिले इबरत हैं। उन हज़रात की नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत व इश्क़ कि अपनी जान जाए और उसके बदले में इतना लफ़्ज़ कहना भी गवारा नहीं कि हुज़ूर सल्ल० को किसी क़िस्म की तकलीफ़ मामूली सी भी पहुंच जाए, इसलिए कि हज़रत ख़ुबैब रज़ि० से सिर्फ़ ज़बान से ही कहलाना चाहते थे और सिर्फ़ ज़बान ही से कहना था, वरना बदले में हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ पहुंचाने पर तो उन कुफ़्फ़ार को भी, क़ुदरत न थी, बल्कि वह लोग ख़ुद ही हर वक़्त तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश में रहते थे, जिसमें बदला, बे-बदला सब बराबर था।

दूसरी चीज नमाज़ की अज़्मत और उसका शग़फ़[2] कि ऐसे आख़िरी वक़्त में आम तौर से बीवी बच्चों को आदमी याद करता है, सूरत देखना चाहता हैं, पयाम व सलाम कहता है, मगर इन हज़रात को पयाम व सलाम देना है तो हुज़ूर सल्ल० को और आख़िरी तमन्ना है तो दो रक्अत नमाज़ की।

10. हुज़ूर सल्ल की जन्नत में मअइयत के लिए नमाज़ की मदद

हज़रत रबीआ रज़ि० कहते है कि मैं नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रात गुज़ारता था और तहज्जुद के वक़्त वुज़ू का पानी और दूसरी ज़रूरियात, मसलन मिस्वाक, मुसल्ला वग़ैरह रखता था। एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी ख़िदमात से ख़ुश होकर फ़र्माया, मांग क्या मांगता है। उन्होंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त। आप सल्ल० ने फ़र्माया और कुछ कि बस यही चीज मतलूब है। आपने फ़र्माया, अच्छा मेरी मदद कीजियो सज्दों की कसरत से।

फ़— इसमें तंबीह है इस अम्र पर कि सिर्फ़ दुआ पर भरोसा करके न बैठना चाहिए, बल्कि कुछ तलब और अमल की भी ज़रूरत है और आमाल में सबसे अहम नमाज़ है कि जितनी उसकी कसरत होगी, उतने ही सज्दे ज़्यादा होंगे। जो लोग इस

1. सबक़, शिक्षा, 2. लगाव, चाव, 3. साथ,

सहारे पर बैठे रहते हैं कि फ़्लां पीर, फ़्लां बुज़ुर्ग से दुआएं करायेंगे, सख़्त ग़लती है। अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस दुनिया को अस्बाब के साथ चलाया है। अगरचे बे अस्बाब हर चीज़ पर क़ुदरत और क़ुदरत के इज़्हार के वास्ते कभी ऐसा भी कर देते हैं, लेकिन आम आदत यही है कि दुनिया के कारोबार अस्बाब से लगा रखे हैं। हैरत है कि हम लोग दुनिया के कामों में तो तक़्दीर पर और सिर्फ़ दुआ पर भरोसा करके कभी नहीं बैठते। पचास तरह की कोशिश करते हैं मगर दीन के कामों में तक़्दीर और दुआ बीच में आ जाती है। इसमें शक नहीं कि अल्लाह वालों की दुआ निहायत अहम है, मगर हुज़ूर सल्ल० ने यह भी इर्शाद फ़र्माया कि सज्दों की कसरत से मेरी दुआ की मदद करना।

छठा बाब

ईसार व हमदर्दी और अल्लाह की राह में ख़र्च करना

ईसार कहते हैं अपनी ज़रूरत के वक़्त दूसरे को तर्जीह देना[1], अव्वल तो सहाबा किराम रज़ि० की हर अदा, हर आदत ऐसी ही है, जिसकी बराबरी तो दूर रही, उसका कुछ भी किसी ख़ुश क़िस्मत को नसीब हो जाए तो ऐनसआदत[2] है, लेकिन बाज़ आदतें उन में से ऐसी मुमताज़[3] हैं कि उन्हीं का हिस्सा थीं। इनके मिन-जुम्ला[4] ईसार है कि हक़ तआला शानुहू ने कला मुल्लाह शरीफ़ में इसकी तारीफ़ फ़र्माई और-

يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

'युअ़ सिरू न अला अन्फुसिहिम व लौ का न बिहिम ख़ासासः, में इस सिफ़त को ज़िक्र फ़र्माया कि वह लोग अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देते हैं, गो उन पर फ़ाक़ा ही हो।

---

1. बढ़ावा देना, 2. बड़ी ख़ुशक़िस्मती है,
3. मशहूर, नुमाया, 4. उन्हीं में से एक,

1. सहाबी का मेहमान की ख़ातिर चिराग़ बुझा देना

एक सहाबी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूख और परेशानी की हालत की इत्तिला दी। हुज़ूर सल्ल० ने अपने घरों में आदमी भेजा, कहीं कुछ न मिला तो हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया कि कोई शख़्स है जो इनकी एक रात की मेहमानी क़ुबूल करे। एक अंसारी सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मैं मेहमानी करूंगा। उनको घर ले गये और बीवी से फ़र्माया कि यह हुज़ूर सल्ल० के मेहमान हैं, जो इकराम[1] कर सके, इसमें कसर न करना और कोई चीज छुपा कर न रखना। बीवी ने कहा, ख़ुदा की क़सम, बच्चों के क़ाबिल कुछ थोड़ा सा रखा है और कुछ भी घर में नहीं। सहाबी रज़ि० ने फ़र्माया कि बच्चों को बहलाकर सुला दीजियो और जब वह सो जाएं तो खाना लेकर मेहमान के साथ बैठ जावेंगे और तू चिराग़ दुरुस्त करने के बहाने से उठ कर उसको बुझा देना। चुनांचे बीवी ने ऐसा ही किया। दोनों मियां-बीवी और बच्चों ने फ़ाक़े से रात गुज़ारी, जिस पर यह आयत, 'यू सि रू-न अला अन्फ़ुसिहिम' नाज़िल हुई।

तर्जुमा– और तर्जीह देते हैं अपनी जानों पर , अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो।

फ़–इस क़िस्म के मुतअद्दद वाक़िआत हैं जो सहाबा रज़ि० के यहां पेश आये। चुनांचे एक दूसरा वाक़िआ इसी क़िस्म का लिखा है।

2. रोज़ादार के लिए चिराग़ बुझा देना

एक सहाबी रज़ि० रोज़े पर रोज़ा रखते थे। इफ़्तार के लिए कोई चीज खाने की मयस्सर न आती थी। एक अंसारी सहाबी हज़रत साबित रज़ि० ने ताड़ लिया। बीवी से कहा कि मैं रात को एक मेहमान को लाऊंगा। जब खाना शुरू करें तो तुम चिराग़ को ठीक करने के हीले से बुझा देना और इतने मेहमान का पेट न भर जाए.

1. इज़्ज़त,

खुद न खाना। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया साथ में सब शरीक रहे जैसे खा रहे हों। सुबह को हजरत साबित रज़ि० जब हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि रात का तुम्हारा, अपने मेहमान के साथ बर्ताव हक तआला शानुहू को बहुत ही पसन्द आया।[1]

3. एक सहाबी रज़ि० का ज़कात में ऊंट देना

हजरत उबई बिन कअब रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़कात का माल वसूल करने के लिये भेजा। मैं एक साहब के पास गया। और उनसे उनके माल की तफ़्सील मालूम की तो उन पर एक ऊंट का बच्चा एक साला वाजिब था। मैंने उनसे उसका मुतालबा किया। वह फ़र्माने लगे कि एक साल का बच्चा न दूध के काम का, न सवारी के काम का। उन्होंने एक नफ़ीस उम्दा जवान ऊंटनी सामने की, कि यह ले जाओ। मैंने कहा कि मैं तो इसको नहीं ले सकता कि मुझे उम्दा माल लेने का हुक्म नहीं। अलबत्ता अगर तुम यही देना चाहते हो तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में है और आज का पड़ाव फ्लां जगह तुम्हारे क़रीब ही है। हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर पेश कर दो। अगर मंज़ूर फ़र्मा लिया तो मुझे इंकार नहीं वरना मैं माज़ूर[2] हूं। वह इस ऊंटनी को लेकर मेरे साथ हो लिए और हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! मेरे पास आपके क़ासिद ज़कात का माल लेने आये थे और खुदा की क़सम मुझे आज तक यह सआदत नसीब न हुई थी कि रसूलुल्लाह या उनके क़ासिद ने मेरे माल में कभी तसर्रुफ़[3] फ़र्माया हो, इसलिए मैंने अपना सारा माल सामने कर दिया। उन्होंने फ़र्माया इसमें एक साला ऊंट का बच्चा ज़कात का वाजिब है। हुज़ूर एक साल के बच्चे से न तो दूध ही का नफ़ा है, न सवारी का। इस लिए मैंने एक उम्दा जवान ऊंटनी पेश की थी, जिसको उन्होंने क़ुबूल नहीं फ़र्माया, इसलिए मैं खुद लेकर हाज़िर हुआ हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम पर वाजिब तो वही है जो उन्होंने बतलाई मगर तुम अपनी तरफ़ से उससे ज़्यादा और उम्दा माल दो तो क़ुबूल है। अल्लाह तुम्हें इसका अज्र मरहमत फ़र्माये[4]। उन्होंने अर्ज किया कि यह हाज़िर है। हुज़ूर सल्ल०

1. दुर्रेमंसूर, 2. मजबूर हूं, 3. मनमानी इस्तेमाल, 4. बदला दे।

ने क़ुबूल फ़र्मा लिया और बरकत की दुआ फ़र्माई।

फ़— यह ज़कात के माल का मंज़र है। आज भी इस्लाम के बहुत से दावेदार हैं और हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत का दम भी भरते हैं, लेकिन ज़कात के अदा करने में ज़्यादती का तो क्या ज़िक्र है, पूरी मिक्दार भी अदा करना मौत है। जो ऊंचे तब्क़े वाले ज़्यादा माल वाले कहलाते हैं, उनके यहां तो अक्सर बेशतर इसका ज़िक्र ही नहीं है, लेकिन जो मुतवस्सित[1] हैसियत के लोग हैं, और अपने को दीन्दार भी समझते हैं। वह भी इसकी कोशिश करते हैं कि जो ख़र्च अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों में या किसी दूसरी जगह मजबूरी से पेश आ जाये, उसमें ज़कात ही की नीयत कर लें।

4. हज़रात शैख़ेन का सदक़े में मुक़ाबला

हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदक़ा करने का हुक्म फ़र्माया। इत्तिफ़ाक़न[2] उस ज़माने में मेरे पास कुछ माल मौजूद था। मैंने कहा, आज मेरे पास इत्तिफ़ाक़ से माल मौजूद है। अगर मैं अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कभी भी बढ़ सकता हूं, तो आज बढ़ जाऊंगा। यह सोचकर मैं ख़ुशी-ख़ुशी घर गया और जो कुछ भी घर में रखा था, उसमें से आधा ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि घर वालों के लिए क्या छोड़ा ? मैंने अर्ज़ किया, कि छोड़ आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, आख़िर क्या छोड़ा ? मैंने अर्ज़ किया, आधा छोड़ आया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० जो कुछ रखा था, सब ले आये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अबूबक्र ! घर वालों के लिये क्या छोड़ा ? उन्होंने फ़र्माया, उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को छोड़ आया यानी अल्लाह और उसके रसूल पाक सल्ल० के नाम की बरकत और उनकी रज़ा और ख़ुशनूदी को छोड़ आया।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने कहा हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कभी नहीं बढ़ सकता।

फ़— ख़ूबियों और नेकियों में इसकी कोशिश करना कि दूसरे से बढ़ जाऊं यह मुस्तहसन और मंदूब है[3] क़ुरआन पाक में भी इसकी तर्ग़ीब[4] आयी है। यह क़िस्सा ग़ज़वा-ए-तबूक का है। उस वक़्त में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चंदे की ख़ास तौर से तर्ग़ीब फ़र्मायी थी और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने

1. दर्मियानी, 2. संयोग से, 3. पसंददीदा काम, 4. चाव पैदा करना,

अपने-अपने हौसले के मुवाफ़िक़ बल्कि हिम्मत व वुस्अत से ज़्यादा इआनतें फ़र्मायीं, जिनका ज़िक्र बाब 2 के क़िस्सा 9 में भी मुख़्तसर तौर पर गुज़रा है।

جزاهم الله عنا وعن سائر المسلمين (احسن الجزاء)

जज़ाहुमुल्लाहु अन्ना व अन साइरिल मुस्लिमी न (अह्सनल जज़ाइ०)

5. सहाबा रज़ि० का दूसरों की वजह से प्यासे मरना

हज़रत अबू जह्म बिन हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि यर्मूक की लड़ाई में मैं अपने चचाज़ाद भाई की तलाश में निकला कि वह लड़ाई में शरीक थे और एक मशकीज़ा पानी का मैंने अपने साथ लिया कि मुम्किन है वह प्यासे हों तो पानी पिलाऊं। इत्तिफ़ाक़ से वह एक जगह इस हालत में पड़े हुए मिले कि दम तोड़ रहे थे और जांकनी शुरू थी। मैंने पूछा पानी का घूंट दूं। उन्होंने इशारे से कहा हां कि इतने में दूसरे साहब ने जो क़रीब ही पड़े थे, और वह भी मरने के क़रीब थे, आह की। मेरे चचाज़ाद भाई ने आवाज़ सुनी तो मुझे उनके पास जाने का इशारा किया। मैं उनके पास पानी लेकर गया। वह हिशाम बिन अबिल आस थे। उनके पास पहुंचा ही था कि उनके पास एक तीसरे साहब उसी हाल में पड़े दम तोड़ रहे थे। उन्होंने आह की। हिशाम रज़ि० ने मुझे उनके पास जाने का इशारा कर दिया। मैं उनके पास पानी लेकर पहुंचा, तो उनका दम निकल चुका था। हिशाम रज़ि० के पास वापस आया तो वह भी जां-ब-हक़ हो चुके थे। उनके पास से अपने भाई के पास लौटा तो इतने में वह भी ख़त्म हो चुके थे। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०[1]

फ़—इस नौअ के मुतअद्दद वाक़िआत कुतुबि हदीस में ज़िक्र किये गये हैं। क्या इंतिहा है इस ईसार की कि अपना भाई आख़िरी दम तोड़ रहा हो और प्यासा हो ऐसी हालत में किसी दूसरे की तरफ़ तवज्जोह करना भी मुश्किल हो जाता है, च-जाय-कि उसको प्यासा छोड़कर दूसरे को पानी पिलाने चला जाय। और इन मरने वालों की रूहों को अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ व फ़ज़्ल से नवाज़ें कि मरने के वक़्त भी जब होश व हवास सब ही जवाब दे देते हैं, यह लोग हमदर्दी में जान देते हैं।

---

1. दिरायः

6. हज़रत हमज़ा रज़ि० का कफ़न

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा ग़ज़वा-ए-उहद में शहीद हो गये और बे-दर्द काफ़िरों ने आपके कान-नाक वग़ैरह आज़ा[1] काट दिये और सीना चीर कर दिल निकाला और तरह-तरह के ज़ुल्म किये। लड़ाई के ख़त्म पर हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे सहाबा शहीदों की लाशें तलाश फ़र्माकर उनकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन[2] का इंतिज़ाम फ़र्मा रहे थे कि हज़रत हमज़ा रज़ि० को इस हालत में देखा, निहायत सदमा हुआ और एक चादर से उनको ढांक दिया।

इतने में हज़रत हमज़ा रज़ि० की हक़ीक़ी बहन हज़रत सफ़ीया रज़ि० तश्रीफ़ लायीं कि अपने भाई की हालत को देखें। हुज़ूर सल्ल० ने इस ख़्याल से कि आख़िर औरत हैं, ऐसे ज़ुल्मों को देखने का तहम्मुल[3] मुश्किल होगा। उनके साहबज़ादा हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से इर्शाद फ़र्माया कि अपनी वालिदा को देखने से मना करो। उन्होंने वालिदा से अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० ने देखने को मना फ़र्मा दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यह सुना है कि मेरे भाई के कान-नाक वग़ैरह काट दिए गए। अल्लाह के रास्ते में यह कौन-सी बड़ी बात है। हम इस पर राज़ी हैं। मैं अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखती हूं और इन्शाअल्लाह सब्र करूंगी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से जाकर इस कलाम का ज़िक्र किया तो हुज़ूर सल्ल० ने इस जवाब को सुनकर देखने की इजाज़त अता फ़र्मा दी। आकर देखा, इन्नालिल्लाह पढ़ी और उनके लिए इस्तिग़्फ़ार और दुआ की।

एक रिवायत में है कि ग़ज़्वा-ए-उहुद में जहां लाशें रखी थीं, एक औरत तेज़ी से आ रही थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, देखो औरत को रोको, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने पहचान लिया कि मेरी वालिदा हैं। मैं जल्दी से रोकने के लिए बढ़ा मगर वह क़वी थीं, एक घूंसा मेरे मारा और कहा परे हट जा। मैंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है, तो फ़ौरन खड़ी हो गईं, इसके बाद दो कपड़े निकाले और फ़र्माया कि मैं अपने भाई के कफ़न के लिए लाई थी कि मैं उनके इंतिक़ाल की ख़बर सुन चुकी थी। इन कपड़ों में उन्हें कफ़ना देना।

हम लोग वह कपड़े लेकर हज़रत हमज़ा रज़ि० को कफ़नाने लगे। कि बराबर

---

1. अंग, 2. कफ़न-दफ़न, 3. बर्दाश्त,

में एक अंसारी शहीद पड़े हुए थे, जिनका नाम हजरत सुहैल रज़ि० था। इनका भी कुफ़्फ़ार ने ऐसा ही हाल कर रखा था, जैसा कि हज़रत हमज़ा रज़ि० का था। हमें इस बात से शर्म आई कि हजरत हमजा रज़ि० को दो कपड़ों में कफ़न दिया जाए और अंसारी के पास एक भी न हो। इसलिए हमने दोनों के लिए एक-एक कपड़ा तज्वीज कर दिया। मगर एक कपड़ा इनमें बड़ा था, दूसरा छोटा, तो हमने क़ुर्आ डाला कि क़ुर्आ में जो कपड़ा जिनके हिस्से में आ जाएगा, वह उनके कफ़न में लगाया जाए। क़ुर्आ में बड़ा कपड़ा हजरत सुहैल रज़ि० के हिस्से में आया और छोटा हज़रत हमज़ा रज़ि० के हिस्से में आया जो उनके क़द से भी कम था। कि अगर सर को ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव की तरफ़ किया जाता तो सर खुल जाता। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि सर को कपड़े से ढांक दो और पांव पर पत्ते वग़ैरह डाल दो।[1]

इब्ने साद रज़ि० की रिवायत में है कि हज़रत सफ़ीया रज़ि० जब दो कपड़े लेकर हज़रत हमजा रज़ि० की लाश पर पहुंची तो उनके क़रीब ही एक अंसारी रज़ि० उसी हाल में पड़े हुए थे तो एक-एक कपड़े में दोनों को कफ़न दिया गया। हज़रत हमज़ा रज़ि० का कपड़ा बड़ा था, यह रिवायत मुख़्तसर है और ख़मीस की रिवायत मुफ़स्सल है।

फ़— यह दो जहान के बादशाह के चचा का कफ़न है, वह भी इस तरह कि एक औरत अपने भाई के लिए दो कपड़े देती है। उसमें यह गवारा नहीं कि दूसरा अंसारी रज़ि० बे-कफ़न रहे, एक-एक कपड़ा बांट दिया जाता है और फिर छोटा कपड़ा उस शख़्स के हिस्से में आता है जो कई वजह से तर्जीह का इस्तिह्क़ाक़[2] भी रखता है। ग़रीब परवरी और मुसावात[3] के दावेदार अगर अपने दावों में सच्चे हैं तो इन पाक हस्तियों की इत्तिबाअ करें, जो कहकर नहीं, बल्कि करके दिखला गये। हम लोगों के लिए इनका पैरो कहना भी शर्म की बात है।

7. बकरे की सिरी का चक्कर काट कर वापस आना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक सहाबी रज़ि० को किसी शख़्स ने बकरे की सिरी हदिया के तौर पर दी। उन्होंने ख़्याल फ़र्माया कि मेरे फ़्लां साथी

1. ख़मीस, 2. हक़दार होना, 3. बराबरी,

ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं, कुंबे वाले हैं। वह और उनके घर वाले ज़्यादा मुहताज हैं, इसलिए उनके पास भेज दी। उनको एक तीसरे साहब के मुताल्लिक़ यही ख़्याल पैदा हुआ और उनके पास भेज दी। ग़रज इसी तरह सात घरों में फिरकर वह सिरी सबसे पहले सहाबी रज़ि० के घर लौट आयी।[1]

फ़— इस क़िस्से से इन हज़रात का आम तौर से मुहताज और ज़रूरतमंद होना भी मालूम होता है और यह भी कि हर शख़्स को दूसरे की ज़रूरत अपने से मुक़द्दम मालूम होती थी।

8. हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को ज़चगी में ले जाना

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में बसा औक़ात[2] रात को चौकीदारी के तौर पर शहर की हिफ़ाज़त भी करते थे। एक मर्तबा इसी हालत में एक मैदान में गुज़र हुआ, देखा कि एक ख़ेमा बालों का बना हुआ लगा हुआ है, जो पहले वहां नहीं देखा था। उसके क़रीब पहुंचे तो देखा कि एक साहब वहां बैठे हैं और ख़ेमे से कुछ कराहने की आवाज़ आ रही है। सलाम करके उन साहब के पास बैठ गये और दर्याफ़्त किया कि तुम कौन हो ? उन्होंने कहा, एक मुसाफ़िर हूं, जंगल का रहने वाला हूं। अमीरुल मोमिनीन के सामने कुछ अपनी ज़रूरत पेश करके मदद चाहने के वास्ते आया हूं। दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह ख़ेमे में से कैसी आवाज़ आ रही है। इन साहब ने कहा, मियां जाओ, अपना काम करो। आपने इसरार फ़र्माया कि नहीं बता दो, कुछ तक्लीफ़ की आवाज़ है। इन साहब ने कहा औरत की विलादत का वक़्त क़रीब है, दर्दे ज़ेह[3] हो रहा है। आपने दर्याफ़्त फ़र्माया कि कोई दूसरी औरत भी पास है। उन्होंने कहा, कोई नहीं।

आप वहां से उठे और मकान तशरीफ़ ले गये और अपनी बीवी उम्मे कुल्सूम रज़ि० से फ़र्माया कि एक बड़े सवाब की चीज़ मुक़द्दर से तुम्हारे लिए आई है। उन्होंने पूछा, क्या है ? आपने फ़र्माया, एक गांव की रहने वाली बेचारी तन्हा है उसको दर्दे ज़ेह हो रहा है। उन्होंने इर्शाद फ़र्माया कि हां, हां तुम्हारी सलाह हो, तो मैं तैयार हूं और क्यों न तैयार होती कि यह भी आख़िर हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि० की ही

1. दुर्रेमंसूर, 2. कभी-कभी, 3. प्रसव-पीड़ा,

साहबजादी थीं। हज़रत उमर ने फ़र्माया कि विलादत के वास्ते जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती हो, तेल गूदड़, वग़ैरह, ले लो और एक हांडी और कुछ घी और दाने वग़ैरह भी साथ ले लो। वह लेकर चलीं। हज़रत उमर रज़ि० ख़ुद पीछे-पीछे हो लिये।

वहां पहुंचकर हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० तो ख़ेमें चली गयीं और आपने आग जलाकर उस हांड़ी में दाने उबाले, और घी डाला। इतने में विलादत से फ़राग़त हो गई। अन्दर से हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० ने आवाज़ देकर अर्ज़ किया, अमीरुल मोमिनीन ! अपने दोस्त को लड़का पैदा होने की बशारत[1] दीजिए।

अमीरुल मोमिनीन का लफ़्ज़ जब उन साहब के कान में पड़ा तो वह बड़े घबराये। आपने फ़र्माया घबराने की बात नहीं। वह हांडी ख़ेमे के पास रख दी कि उस औरत को भी कुछ खिला दें। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० ने उसको खिलाया। इसके बाद हांडी बाहर दे दी। हज़रत उमर रज़ि० ने उस बद्दू से कहा कि लो तुम भी खाओ, रात भर तुम्हारे जागने में गुज़र गई। इसके बाद अह्लिया को साथ लेकर घर तशरीफ़ ले आये और उन साहब से फ़र्मा दिया कि कल आना तुम्हारे लिए इंतिज़ाम कर दिया जायेगा।[2]

फ़— हमारे ज़माने का कोई बादशाह या रईस नहीं। कोई मामूली हैसियत का मालदार भी ऐसा है, जो ग़रीब की ज़रूरत में मुसाफ़िर की मदद के वास्ते इस तरह बीवी को रात में जंगल में ले जाये और ख़ुद अपने आप चूल्हा धौंक कर पकाए। मालदार को छोड़िए, कोई दीनदार भी ऐसा करता है ? सोचना चाहिए कि हम जिनके नाम लेवा हैं और उन जैसी बरकात की हर बात में उम्मीदें रखते हैं कोई काम भी हम उन जैसा कर लेते हैं।

9. अबू तल्हा का बाग़ वक़्फ़ करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि अबू तल्हा अंसारी रज़ि० मदीना मुनव्वरा में सबसे ज़्यादा और सबसे बड़े बाग़ वाले थे। उनका एक बाग़ था, जिसका नाम बेरहा था। वह उनको बहुत ही ज़्यादा महबूब था। मस्जिदे नबवी के क़रीब था। पानी भी उसमें निहायत शीरीं[3] और इफ़रात से था। हुज़ूर सल्ल० भी अक्सर उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका पानी नोश फ़र्माते। जब क़ुरआन शरीफ़ की

1. ख़ुशख़बरी, 2. दुर्रेमन्सूर, 3. मीठा।

आयत–

لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ

लन् तनालुल बिर्र तुंफ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून०

तर्जुमा– तुम नेकी के कामिल दर्जे को नहीं पहुंच सकते, जब तक ऐसी चीज़ों से ख़र्च न करोगे, जो तुमको पसंद है।

नाज़िल हुई तो अबूतल्हा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया कि मुझे अपना बाग़ बेरहा सबसे ज़्यादा महबूब है और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि महबूब माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो। इसलिए वह अल्लाह के रास्ते में देता हूं। आप जैसा मुनासिब समझें, उसके मुवाफ़िक़ उसको ख़र्च फ़र्मा दें। हुज़ूर सल्ल० ने बहुत ज़्यादा मसर्रत का इज़्हार फ़र्माया और फ़र्माया कि बहुत ही उम्दा माल है। मैं यह मुनासिब समझता हूं कि उसको अपने अह्ले क़राबत[2] में तक़्सीम कर दो। अबू तल्हा रज़ि० ने उसको अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम फ़र्मा दिया।[3]

फ़—हम भी अपना कोई महबूबतरीन माल, जायदाद, कोई एक-आध वाज़ सुनकर, क़ुरआन पाक की कोई आयत पढ़कर या सुनकर इस तरह बे-धड़क ख़ैरात कर देते हैं। अगर वक़्फ़ वग़ैरह करने का ख़्याल भी आता है तो ज़िन्दगी से मायूस हो जाने के बाद वारिसों से ख़फ़ा होकर उनको महरूम करने की नीयत से और बरस के बरस इस सोच में लगा देते हैं कि कोई सूरत ऐसी पैदा हो जाए कि मेरी ज़िन्दगी में तो मेरे ही काम आये, बाद में जो हो वह होता रहे, हां, नाम व नमूद की कोई चीज हो, ब्याह-शादी की तक़रीब हो, तो सूदी क़र्ज़ से भी इन्कार नहीं।

10. हज़रत अबूज़र रज़ि० का अपने ख़ादिम को तंबीह फ़र्माना

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० मशहूर सहाबी हैं, जिनके इस्लाम लाने का क़िस्सा बाब 1 के नं० 5 पर गुज़र चुका है। यह बड़े ज़ाहिद लोगों में थे। माल न अपने पास जमा रखते थे, न यह चाहते थे कि कोई दूसरा जमा रखे। मालदार लोगों से हमेशा लड़ाई रहती थी। इसलिए हज़रत उस्मान रज़ि० के हुक्म से रब्ज़ा में रहने लगे थे, जो जंगल में एक मामूली–

1. रिश्तेदारों, 2. दर्रेमंसूर,

सी आबादी थी।

हज़रत अबूज़र रज़ि० के पास चन्द ऊंट थे और एक नातवान ज़ईफ़[1] सा चरवाहा था, जो उनकी ख़बरगीरी करता था, उसी पर गुज़र था। एक शख़्स क़बीला बनूसुलैम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह तमन्ना ज़ाहिर की, कि मैं आपकी ख़िदमत में रहना चाहता हूं, ताकि आपके फ़ुयूज़[2] से इस्तिफ़ादा[3] करूं। मैं आपके चरवाहे की मदद करता रहूंगा और आपकी बरकात से फ़ायदा भी हासिल करूंगा।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरा दोस्त वह है जो मेरी इताअत करे, अगर तुम भी मेरी इताअत के लिए तैयार हो, शौक़ से रहो, कहना न मानो तो तुम्हारी ज़रूरत नहीं। सुलैमी साहब ने अर्ज़ किया, किस चीज़ में आप अपनी इताअत चाहते हैं। फ़र्माया कि जब मैं अपने माल में से किसी चीज़ के ख़र्च का हुक्म करूं तो उम्दा से उम्दा माल ख़र्च किया जाये।

वह कहते हैं कि मैंने क़ुबूल किया और रहने लगा। इत्तिफ़ाक़ से एक दिन किसी ने ज़िक्र किया कि पानी पर कुछ लोग रहते हैं, जो ज़रूरतमंद हैं, खाने के मुहताज हैं। मुझ से फ़र्माया, एक ऊंट ले आओ। मैं गया, मैंने देखा कि एक बहुत ही उम्दा ऊंट है जो निहायत क़ीमती, निहायत कारआमद और सवारी में मुतीअ[4]। मैंने हस्बे वायदा उसको ले जाने का इरादा किया, मगर मुझे ख़्याल हुआ कि ग़ुरबा को खिलाना ही तो है और यह ऊंट बहुत ज़्यादा कारआमद है, हज़रत की और मुताल्लिक़ीन की ज़रूरत का है, उसको छोड़कर उससे ज़रा कम दर्जे की उम्दा ऊंटनी कि उस ऊंट के अलावा और बाक़ी सबसे बेहतर थी, लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ। फ़र्माया कि तुमने ख़ियानत की, मैं समझ गया और वापस आकर वही ऊंट ले गया। पास बैठने वालों से इर्शाद फ़र्माया कि दो आदमी ऐसे हैं, जो अल्लाह के वास्ते एक काम करें? दो आदमी उठे। उन्होंने अपने आपको पेश किया, फ़र्माया कि इसको ज़िब्ह करो और ज़िब्ह के बाद गोश्त काटकर जितने घर पानी पर आबाद हैं, उनको शुमार करके, अबूज़र रज़ि० का यानी अपना घर भी एक अदद उनमें शुमार कर लो, और सबको बराबर तक़्सीम कर दो। मेरे घर भी उतना ही जाये, जितना उनमें से हर घर में जाए। उन्होंने तामीले इर्शाद की और तक़्सीम कर दिया।

इसके बाद मुझे बुलाया और फ़र्माया कि तू ने मेरी वसीयत उम्दा माल ख़र्च

---

1. कमज़ोर-बूढ़ा, 2. फ़ैज़, मेहरबानीयों, 3. फ़ायदा उठाना, 4. इताअत गुज़ार,

करने की जान-बूझकर छोड़ी या भूल गया था ? अगर भूल गया था तो माज़ूर है। मैंने अर्ज़ किया कि भूला तो नहीं था। मैंने अव्वल उसी ऊंट को लिया था, मगर मुझे ख़्याल हुआ कि यह बहुत कारआमद है आपको अक्सर इसकी ज़रूरत रहती है, महज़ इस वजह से छोड़ दिया था। फ़र्माया कि महज़ मेरी ज़रूरत से छोड़ा था। अर्ज़ किया कि महज़ आपकी ज़रूरत से छोड़ा था। फ़र्माया अपनी ज़रूरत का दिन बताऊं ? मेरी ज़रूरत का दिन वह है जिस दिन मैं क़ब्र के गढ़े में अकेला डाल दिया जाऊंगा, वह दिन मेरी ज़रूरत और एहतियाज[1] का है।'

माल के अन्दर तीन हिस्सेदार हैं- एक तक़्दीर, जो माल के ले जाने में किसी चीज का इन्तिज़ार नहीं करती। अच्छा-बुरा हर क़िस्म का ले जाती है। दूसरा वारिस जो इसके इन्तिज़ार में है, तू मरे तो वह ले ले और तीसरा हिस्सेदार तू ख़ुद है। अगर हो सकता हो और तेरी ताक़त में हो तो तीनों हिस्सेदारों में सबसे ज़्यादा आजिज़ न बन। अल्लाह तआला का इर्शाद है-

لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ

लन् तनालुलबिर्रहत्ता तुंफ़िक़ू मिम्मातुहिब्बून०

इसलिए जो माल मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है, उसको मैं अपने लिए आगे चलता करूं, ताकि वह मेरे लिए जमा रहे[2]।

फ़– 'तीन हिस्सेदारों में सबसे ज़्यादा आजिज़ न बन' का मतलब यह है कि जो हो सके, अपने लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा जमा कर ले। ऐसा न हो कि मुक़द्दर ग़ालिब आ जाए और वह माल तुझ से ज़ाया हो जाय या तू मर जाए और वह दूसरों के क़ब्ज़े में आ जाए कि बाद में कोई किसी को नहीं पूछता। आल-औलाद, बीवी-बच्चे, सब थोड़े-बहुत दिनों रोकर चुप हो जायेंगे। ऐसा बहुत कम होता है कि म[illegible] वाले के लिए भी कुछ सद्क़ा ख़ैरात कर दें और उसको याद रखें।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद है, आदमी कहता है कि मेरा माल, मेरा माल। हालांकि उसका माल सिर्फ़ वह है जो खा लिया और ख़त्म कर दिया या पहन लिया और पुराना कर दिया या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दिया और अपने लिए ख़ज़ाने में जमा कर दिया। इसके सिवा जो कुछ है, वह दूसरों का माल है, लोगों के लिए जमा कर रहा है।

एक हदीस में आया है, हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, तुम में से ऐसा कौन

---

1. मुहताजगी, 2. दुर्रेमंसूर,

शख़्स है जिसको अपने वारिस का माल अपने से अच्छा लगे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ऐसा कौन होगा जिसको दूसरे का माल अपने से ज़्यादा महबूब हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अपना माल सिर्फ़ वही है जो आगे भेज दिया जाए और जो छोड़ दिया, वह वारिस का माल है[1]।

11. हज़रत जाफ़र रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत जाफ़र तैयार रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई और हज़रत अली रज़ि० के हक़ीक़ी भाई हैं। अव्वल तो यह सारा ही घराना और ख़ानदान बल्कि आले-औलाद सख़ावत,[2] करम, शुजाअत[3], बहादुरी में मुमताज़ रहे और हैं, लेकिन हज़रत जाफ़र रज़ि० मसाकीन के साथ ख़ास ताल्लुक़ रखते थे और ज़्यादा उठना-बैठना ग़ुरबा ही के साथ होता था। कुफ़्फ़ार की तकालीफ़ से तंग होकर अव्वल हब्शा की हिजरत की और कुफ़्फ़ार ने वहां भी पीछा किया, तो नजाशी के यहां अपनी सफ़ाई पेश करना पड़ी, जिसका क़िस्सा पहले बाब के नं० 10 पर गुज़रा। वहां से वापसी पर मदीना तय्यिबा की हिजरत की और ग़ज़्वा-ए-मौता में शहीद हुए जिसका क़िस्सा अगले बाब के ख़त्म पर आ रहा है।

इनके इंतिक़ाल की ख़बर पर हुज़ूर सल्ल० उनके घर ताज़ियत[4] के तौर पर तशरीफ़ ले गये और उनके साहबज़ादों अब्दुल्लाह और औन और मुहम्मद को बुलाया, वह सब कम उम्र थे। उनके सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ फ़र्मायी। सारी ही औलाद में बाप का रंग था, मगर अब्दुल्लाह में सख़ावत का मज़्मून बहुत ज़्यादा था। इसी वजह से उनका लक़ब क़ुत्बुएसख़ा (सख़ावत का क़ुत्ब) था। सात वर्ष की उम्र में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुई।

इन्हीं अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से किसी शख़्स ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के यहां सिफ़ारिश करायी। उनकी सिफ़ारिश पर उसका काम हो गया तो उसने नज़राने के तौर पर चालीस हजार दिरहम भेजे, उन्होंने वापस कर दिये कि हम लोग अपनी नेकी को फ़रोख़्त नहीं किया करते।

एक मर्तबा कहीं से दो हज़ार दिरहम नजराने में आये, उसी मज्लिस में तक़्सीम फ़र्मा दिये। एक ताजिर बहुत सी शकर लेकर आया, मगर बाज़ार में फ़रोख़्त न हुई।

1. मिश्कात, 2. दान-पुण्य, 3. बहादुरी, 4. मातमपुर्सी,

उसको फ़िक्र व रंज हुआ। अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने अपने कारिंदों से कहा कि सारी शकर इससे ख़रीद लो और लोगों में मुफ़्त लुटा दो। रात को क़बीलें में जो मेहमान आ जाता था, वह उनके यहां से ख़ाना-पीना हर क़िस्म की ज़रूरियात[1] पूरी करता।[2]

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० एक लड़ाई में शरीक थे। एक दिन अपने बेटे अब्दुल्लाह को वसीयत फ़र्मायी कि मेरा ख़्याल यह है कि आज मैं शहीद हो जाऊंगा, तुम मेरा क़र्ज़ा अदा कर देना, और फ़्लां-फ़्लां काम करना। यह वसीयतें करके उसी दिन शहीद हो गए। साहबज़ादे ने जब क़र्ज़ा को जोड़ा तो बाईस लाख दिरहम थे और यह क़र्ज़ा भी इसी तरह हुआ था कि अमानतदार बहुत मशहूर थे, लोग अपनी-अपनी अमानतें बहुत कसरत से रखते। यह फ़र्मा देते कि रखने की जगह तो मेरे पास नहीं, यह रक़म क़र्ज़ है, जब तुम्हें ज़रूरत हो तो ले लेना, यह कहकर उसको सदक़ा कर देते और यह भी वसीयत की कि जब कोई मुश्किल पेश आये तो मेरे मौला से कह देना।

अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं मौला को न समझा। मैंने पूछा आपके मौला कौन ? फ़र्माया कि अल्लाह तआला। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह ने तमाम क़र्ज़ा अदा किया। कहते है कि जब कोई दिक़्क़त पेश आती तो मैं कहता, ऐ ज़ुबैर के मौला! फ़्लां काम नहीं होता, वह फ़ौरन हो जाता।

यह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक बार इन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से कहा कि मेरे वालिद के क़र्ज़े की फ़िहरिस्त में तुम्हारे ज़िम्मे दस लाख दिरहम लिखे हैं। कहने लगे कि जब चाहो ले लो। इसके बाद मालूम हुआ कि मुझ से ग़लती हुई। मैं दोबारा गया। मैंने कहा कि वह तो तुम्हारे उनके ज़िम्मे हैं। कहने लगे मैंने माफ़ कर दिए। मैंने कहा कि मैं माफ़ नहीं कराता। कहने लगे जब तुम्हें सहूलत हो, दे देना। मैंने कहा उसके बदले ज़मीन ले लो। ग़नीमत के माल में ज़मीन बहुत सी आयी हुई थी, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने कहा अच्छा। मैंने एक ज़मीन उनको दे दी जो मामूली हैसियत की थी। कि पानी वग़ैरह भी उसमें नहीं था। उन्होंने फ़ौरन क़ुबूल कर ली और ग़ुलाम से कहा उस ज़मीन में मुसल्ला बिछा दे। उसने मुसल्ला बिछा दिया,, दो रक्अत नमाज़ वहां पढ़ी और बहुत देर तक सज्दे में पड़े रहे। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर ग़ुलाम से कहा कि इस जगह को खोदो। उसने खोदना शुरू किया एक पानी का चश्मा वहां से उबलने लगा।[3]

1. ज़रूरतें, 2. असाबा, 3. असदुलग़ाबा,

फ़— इन हज़रात सहाबा किराम रज़ि० के यहां यह और इसी क़िस्म की चीज़ें जो इस बाब में लिखी गयीं, कोई बड़ी बात न थी, इन हज़रात की आम आदतें ऐसी ही थीं।

सातवां बाब

बहादुरी, दिलेरी और मौत का शौक़

जिसका लाज़िमी नतीजा बहादुरी है कि जब आदमी मरने ही के सर हो जाये तो फिर सब कुछ कर सकता है। सारी बुज़दिली, सोच-फ़िक्र ज़िन्दगी ही के वास्ते है और जब मरने का इश्तियाक़ पैदा हो जाए तो न माल की मुहब्बत रहे और न दुश्मन का ख़ौफ़। काश मुझे भी उन सच्चों के तुफ़ैल यह दौलत नसीब हो जाती।

1. इब्ने जह्श रज़ि० और इब्ने सअद रज़ि० की दुआयें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० ने गज़्वा-ए-उहद में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से कहा कि ऐ सअद! आओ मिलकर दुआ करें। हर शख़्स अपनी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दुआ करे। दूसरा आमीन कहे कि यह क़ुबूल होने के ज़्यादा करीब है। दोनों हज़रात ने एक कोने में जाकर दुआ फ़र्मायी।

अव्वल हज़रत सअद रज़ि० ने दुआ की, या अल्लाह! जब कल को लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़र्मा जो सख़्त हमले वाला हो, वह मुझ पर सख़्त हमला करे और मैं उस पर ज़ोरदार हमला करूं। फिर मुझे उस पर फ़ताह नसीब फ़र्मा कि मैं उसको तेरे रास्ते में क़त्ल करूं और उसकी ग़नीमत हासिल करूं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने आमीन कही और उस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने दुआ की, ऐ अल्लाह! कल को मैदान में एक बहादुर से मुक़ाबला करा। जो सख़्त हमले वाला हो, मैं उस पर शिद्दत से हमला करूं, वह भी मुझ पर ज़ोर से हमला करे और फिर वह मुझे क़त्ल कर दे, फिर मेरे नाक-कान काट ले। फिर क़यामत में जब तेरे हुज़ूर में पेशी हो, तो तू कहे कि अब्दुल्लाह! तेरे नाक-कान क्यों काटे गये? हज़रत साद रज़ि० ने आमीन कही। दूसरे दिन लड़ाई हुई और दोनों

हज़रात की दुआएं उसी तरह से क़ुबूल हुईं, जिस तरह मांगी थी।[1]

सअद रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन जह्श की दुआ मेरी दुआ से बेहतर थी। मैंने शाम को देखा कि उनके नाक-कान एक तागे में पिरोए हुए हैं, उहद की लड़ाई में उनकी तलवार भी टूट गयी थी। हुज़ूर सल्ल० ने उनको एक टहनी अता फ़र्मायी, जो उनके हाथ में जाकर तलवार बन गई और अर्से तक बाद में रही और दो सौ दीनार को फ़रोख़्त हुई।[2]

दीनार सोने के एक सिक्के का नाम है।

फ़— इस क़िस्से में जहां एक जानिब कमाले बहादुरी है कि बहादुर दुश्मन से मुक़ाबले की तमन्ना है वहां दूसरी जानिब कमाले इश्क़ भी है कि महबूब के रास्ते में बदन के टुकड़े-टुकड़े होने की तमन्ना करे और आख़िर में जब वह पूछें कि यह सब क्यों हुआ, तो मैं अर्ज़ करूं कि तुम्हारे लिए-

रहेगा कोई तो तेग़ सितम की यादगारों में।
मेरे लाशे के टुकड़े दफ़्न करना सौ मज़ारों में।।

2. उहद की लड़ाई में हज़रत अली रज़ि० की बहादुरी

ग़ज़्वा-ए-उहद में मुसलमानों को कुछ शकिस्त हुई थी, जिसकी बड़ी वजह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक इर्शाद पर अमल न करना था, जिसका ज़िक्र बाब 1 क़िस्सा 2 में गुज़र चुका।

उस वक़्त मुसलमान चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार के बीच में आ गये, जिसकी वजह से बहुत से लोग शहीद भी हुए और कुछ भागे भी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी कुफ़्फ़ार के एक जत्थे के बीच में आ गये और कुफ़्फ़ार ने यह मशहूर कर दिया था कि हुज़ूर सल्ल० शहीद हो गये।

सहाबा रज़ि० इस ख़बर से बहुत परेशान हाल थे और इसी वजह से बहुत से भागे और इधर उधर मुतफ़र्रिक़[3] हो गए। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़र्माते

1. ख़मीस 2. असाबा, 3. बिखर जाना,

हैं कि जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को घेर लिया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी नज़र से ओझल हो गए, तो मैंने हुज़ूर सल्ल० को अव्वल ज़िंदों में तलाश किया, न पाया, फिर शहीदों में जाकर तलाश किया, वहां भी न पाया तो मैंने अपने दिल में कहा कि ऐसा तो हो नहीं सकता कि हुज़ूर सल्ल० लड़ाई से भाग जाएं। बज़ाहिर हक़ तआला शानुहू हमारे आमाल की वजह से हम पर नाराज़ हुए, इसलिए अपने पाक रसूल सल्ल० को आसमान पर उठा लिया, इसलिए अब इससे बेहतर कोई सूरत नहीं कि मैं भी तलवार लेकर काफ़िरों के जत्थे में घुस जाऊं, यहां तक कि मारा जाऊं।

मैंने तलवार लेकर हमला किया, यहां तक कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गये और मेरी निगाह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ गयी, तो बेहद मसर्रत हुई और मैंने समझा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मलाइका[1] के ज़रिए से अपने महबूब की हिफ़ाज़त की। मैं हुज़ूर सल्ल० के पास जाकर खड़ा हुआ कि एक जमाअत की जमाअत कुफ़्फ़ार की हुज़ूर सल्ल० पर हमला के लिए आयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अली ! इनको रोको।

मैंने तन्हा ने उस जमाअत का मुक़ाबला किया और उनके मुंह फेर दिये और बाज़ों को क़त्ल कर दिया। इसके बाद फिर एक और जमाअत हुज़ूर सल्ल० पर हमले की नीयत से बढ़ी। आपने फिर हज़रत अली की तरफ़ इशारा फ़र्माया। उन्होंने फिर तन्हा उस जमाअत का मुक़ाबला किया। इसके बाद हज़रत जिब्रील अलै० ने आकर हज़रत अली रज़ि० की इस जवांमर्दी और मदद की तारीफ़ की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, 'इन्नहू मिन्नी व अना मिन्हु' (बेशक अली मुझ से हैं और मैं अली से हूं) यानी कमाले इत्तिहाद की तरफ़ इशारा फ़र्माया, तो हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया, 'व अनामिन्कुमा' (मैं तुम दोनों से हूं)।[2]

फ़— एक तन्हा आदमी का जमाअत से भिड़ जाना और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुक़द्दस ज़ात को न पाकर मर जाने की नीयत से कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस जाना, जहां एक तरफ़ हुज़ूर सल्ल० के साथ सच्ची मुहब्बत और इश्क़ का पता देता है, वहां दूसरी जानिब कमाले बहादुरी और दिलेरी, जुर्अत का भी नक़्शा है।

---

1. फ़रिश्तों, 2. क़ुर्रतुल उयून,

3. हज़रत हंज़ला रज़ि० की शहादत

ग़ज़्वा-ए-उहुद में हज़रत हंज़ला रज़ि० अव्वल से शरीक नहीं थे। कहते हैं कि उनकी नई शादी हुई थी, बीवी से हम-बिस्तर हुए थे। उसके बाद ग़ुस्ल की तैयारी कर रहे थे और ग़ुस्ल करने के लिए बैठ भी गए, सर को धो रहे थे कि एकदम मुसलमानों के शकिस्त की आवाज़ कान में पड़ी, जिसकी ताब न ला सके। उसी हालत में तलवार हाथ में ले ली और लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़े चले गए और कुफ़्फ़ार पर हमला किया और बराबर बढ़ते चले गए कि उसी हालत में शहीद हो गए। चूंकि शहीद को अगर जुनबी न हो तो बग़ैर ग़ुस्ल दिए दफ़न किया जाता है, इसलिए उनको भी उसी तरह कर दिया। मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने देखा, मलायका उन्हें ग़ुस्ल दे रहे हैं, हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा से मलाइका के ग़ुस्ल देने का तज़्किरा फ़र्माया।

अबूसईद साइदी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद सुनकर हंज़ला रज़ि० को जाकर देखा तो उनके सर से ग़ुस्ल का पानी टपक रहा था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वापसी पर तहक़ीक़ फ़र्माया तो उनके बग़ैर नहाये जाने का क़िस्सा मालूम हुआ।[1]

फ़- यह भी कमाले बहादुरी है। बहादुर आदमी को अपने इरादे में ताख़ीर करना दुश्वार होता है, इसीलिए इतना इन्तिज़ार भी नहीं किया कि ग़ुस्ल पूरा कर लेते।

4. अम्र बिन जमूह रज़ि० की तमन्ना-ए-शहादत

हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ि० पांव से लंगड़े थे। उनके चार बेटे थे, जो अक्सर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भी हाज़िर होते और लड़ाइयों में शिर्कत भी करते थे। ग़ज़्वा-ए-उहद में उम्र बिन जमूह रज़ि० को भी शौक़ पैदा हुआ कि मैं भी जाऊं। लोगों ने कहा, तुम माज़ूर हो, लंगड़े पन की वजह से चलना दुश्वार है। उन्होंने फ़र्माया, कैसी बुरी बात है कि मेरे बेटे तो जन्नत में जाएं और मैं रह जाऊं। बीवी ने भी

1. नापाक,

उभारने के लिए ताने के तौर पर कहा कि मैं तो देख रही हूं कि वह लड़ाई से भाग कर लौट आया। अम्र रज़ि० ने यह सुनकर हथियार लिये और क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके दुआ की, 'अल्लाहुम्मा ला तरुद्दनी इला अह्ली' (ऐ अल्लाह ! मुझे अपने अह्ल की तरफ़ न लौटाइयो)।'

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी क़ौम के मना करने का और अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया और कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि अपने लंगड़े पैर से जन्नत में चलूं-फिरूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह ने तुम को माज़ूर किया है, तो न जाने में क्या हर्ज है। उन्होंने फिर ख़्वाहिश की, तो आपने इजाज़त दे दी।

अबूतल्हा रज़ि० कहते हैं कि मैंने अम्र रज़ि० को लड़ाई में देखा कि अकड़ते हुए जाते थे और कहते थे कि ख़ुदा की क़सम ! मैं जन्नत का मुश्ताक़[1] हूं। उनका एक बेटा भी उनके पीछे दौड़ा हुआ जाता था। दोनों लड़ते रहे हत्ताकि दोनों शहीद हुए उनकी बीवी अपने ख़ाविन्द और बेटे की लाश को ऊंट पर लादकर दफ़न के लिए मदीना लाने लगीं तो वह ऊंट बैठ गया। बड़ी दिक़्क़त से उसको मार कर उठाया और मदीना लाने की कोशिश की, मगर वह उहद की तरफ़ मुंह करता था। उनकी बीवी ने हुज़ूर सल्ल० से ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया, ऊंट को यही हुक्म है। क्या अम्र चलते हुए कुछ कहकर गये थे, उन्होंने अर्ज़ किया कि क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके यह दुआ की थी, 'अल्लाहुम्मा ला तरुद्दनी इला अह्ली' आपने फ़र्माया, इसी वजह से यह ऊंट उस तरफ़ नहीं जाता[2]।

फ़— इसी का नाम है जन्नत का शौक़ और यही है वह सच्चा इश्क़ अल्लाह का और उसके रसूल का, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि० कहां से कहां पहुंच गये कि उनके जज़्बे मरने के बाद भी वैसे ही रहते। बहुतेरी कोशिश की कि ऊंट चले मगर, वह या तो बैठ जाता था या उहद की तरफ़ चलता था।

5. हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० की शहादत

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० इस्लाम लाने से पहले बड़े नाज़ के पले हुए

---

1. शौक़ व तमन्ना करने वाला, 2. क़ुर्ब

और मालदार लड़कों में थे। उनके बाप इनके लिए दो-दो सौ दिरहम का जोड़ा खरीद कर पहनाते थे, नव उम्र थे, बहुत ज़्यादा नाज़ व नेमत में परवरिश पाते थे। इस्लाम के शुरू ही ज़माने में घर वालों से छुपकर मुसलमान हो गये और उसी हालत में रहते। किसी ने उनके घर वालों को भी खबर दी। उन्होंने उनको बांधकर कैद कर दिया। कुछ रोज़ इसी हालत में गुज़रे और जब मौक़ा मिला, तो छुपकर भाग गये और जो लोग हब्शा की हिजरत कर रहे थे उनके साथ हिजरत करके चले गये। वहां से वापस आकर मदीना मुनव्वरा की हिजरत फ़र्मायी और ज़ुह्द व फ़क्र[1] की ज़िंदगी बसर करने लगे और ऐसी तंगी की हालत थी कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत मुसअब सामने से गुज़रे। उनके पास सिर्फ़ एक चादर थी जो कई जगह से फटी हुई थी और एक जगह बजाय कपड़े के चमड़े का पेवंद लगा हुआ था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी इस हालत और उस पहली हालत का तज़्किरा फ़र्माते हुए आंखों में आंसू भर लाये।

ग़ज़्वा-ए-उहद में मुहाजिरीन का झंडा उनके हाथ में था। जब मुसलमान निहायत परेशानी की हालत में मुंतशिर हो रहे थे, तो यह जमे हुए खड़े थे। एक काफ़िर उनके क़रीब आया और तलवार से हाथ काट दिया कि झंडा गिर जाये और मुसलमानों को गोया खुली शिकस्त हो जावे। उन्होंने फ़ौरन दूसरे हाथ में ले लिया। उसने दूसरे हाथ को भी काट डाला। उन्होंने दोनों बाज़ुओं को जोड़कर सीने से झंडे को चिमटा लिया कि गिरे नहीं। उसने उनके तीर मारा, जिससे शहीद हो गए, मगर ज़िंदगी में झंडे को गिरने न दिया। इसके बाद झंडा गिरा, जिसको फ़ौरन दूसरे शख़्स ने उठा लिया।

जब उनको दफ़न करने की नौबत आयी तो सिर्फ़ एक चादर उनके पास थी, जो पूरे बदन पर नहीं आती थी। अगर सर की तरफ़ से ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव की तरफ़ की जाती तो सर खुल जाता। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि चादर को सर की जानिब कर दिया जाये और पांव पर इज़खिर के पत्ते डाल दिया जाए।[2]

फ़— यह आख़िरी ज़िन्दगी है उस नाज़ुक और नाज़ों में पले हुए की, जो दो सौ दिरहम का जोड़ा पहनता था कि आज उसको कफ़न की एक चादर भी पूरी नहीं मिलती और उस पर हिम्मत यह कि ज़िन्दगी में झंडा गिरने न दिया। दोनों

---

1. तंगी, 2. क़ुर्रः, असाबा

हाथ कट गये मगर फिर भी उसको न छोड़ा। बड़े नाज़ों के पले हुए थे, मगर ईमान उन लोगों के दिलों में कुछ ऐसी तरह से जमता था कि फिर वह अपने सिवा किसी चीज़ को भी न छोड़ता था। रुपया-पैसा, राहत-आराम, हर क़िस्म की चीज़ से हटाकर अपने में लगा लेता था।

6. यर्मूक की लड़ाई में हज़रत सअद रज़ि० का ख़त

इराक़ की लड़ाई के वक़्त हज़रत उमर रज़ि० का इरादा ख़ुद लड़ाई में शिर्कत फ़र्माने का था, अवाम और ख़वास दोनों क़िस्म के मज्मों में कई रोज़ तक इसमें मश्वरा होता रहा कि हज़रत उमर रज़ि० का ख़ुद शरीक होना ज़्यादा मुनासिब है या मदीना रह कर लश्करों के रवाना करते रहने का इंतिज़ाम ज़्यादा मूनासिब है। अवाम की राय थी कि ख़ुद शिर्कत मुनासिब है और ख़्वास की राय थी कि दूसरी सूरत ज़्यादा बेहतर है। मश्वरों की गुफ़्तगू में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का भी तज़्करा आ गया। उनको सबने पसंद कर लिया कि उनको अगर भेजा जावे तो बहुत मुनासिब है, फिर हज़रत उमर रज़ि० के जाने की ज़रूरत नहीं।

हज़रत सअद रज़ि० बड़े बहादुर और अरब के शेरों में शुमार होते थे, ग़रज़ यह तज्वीज़ हो गई और उनको भेज दिया गया। जब क़ादसिया पर हमला के लिए पहुंचे तो शाहकिस्रा ने उनके मुक़ाबले के लिए रुस्तम को जो मशहूर पहलवान था, तज्वीज़ किया। रुस्तम ने हर चन्द कोशिश की और बादशाह से बार-बार इसकी दर्ख़्वास्त की कि मुझे अपने पास रहने दें। ख़ौफ़ का ग़ल्बा था, मगर इज़्हार इसका करता था कि मैं यहां से लश्करों के भेजने में और सलाह-मश्वरा में मदद करूंगा। मगर बादशाह ने जिसका नाम यज़्दजुर्द था। क़ुबूल न किया और उसको मजबूरन जंग में शरीक होना पड़ा।[1]

हज़रत सअद रज़ि० जब रवाना होने लगे तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको वसीयत फ़र्मायी, जिसके अल्फ़ाज़ का मुख़्तसर तर्जुमा यह है- सअद तुम्हें यह बात धोखे में न डाले कि तुम हुज़ूर सल्ल० के मामू कहलाते हो और हुज़ूर सल्ल० के सहाबी हो। अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं धोते, बल्कि बुराई को भलाई से धोते

1. अश्हर,

हैं, अल्लाह तआला के और बन्दों के दर्मियान कोई रिश्ता नहीं है। उसके यहां सिर्फ़ उसकी बन्दगी मक़बूल है। अल्लाह के यहां शरीफ़-रज़ील[1] सब बराबर हैं, सब ही उसके बन्दे हैं और वह सबका रब है। उसके इन्आमात बन्दगी से हासिल होते हैं हर अम्र में इस चीज़ को देखना, जो हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा था, वही अमल की चीज़ है। मेरी इस नसीहत को याद रखना। तुम एक बहुत बड़े काम के लिए भेजे जा रहे हो, उससे छुटकारा सिर्फ़ हक़ के इत्तिबाअ से हो सकता है। अपने आप को और अपने साथियों को ख़ूबी का आदी बनाना, अल्लाह के ख़ौफ़ को इख़्तियार करना, और अल्लाह का ख़ौफ़ दो बातों में जमा होता है- उसकी इताअत में और गुनाह से परहेज़ करने में और अल्लाह की इताअत जिसको भी नसीब हुई, दुनिया से बुग़्ज़ और आख़िरत की मुहब्बत से नसीब हुई।[2]

इसके बाद हज़रत सअद रज़ि० निहायत बशाश्त[3] से लश्कर लेकर रवाना हुए, जिसका अन्दाज़ा उस ख़त से होता है, जो उन्होंने रुस्तम को लिखा है, जिसमें वह लिखते हैं, फ़ इन्न मअिय क़ौमंय्युहिब्बुनल मौत कमा युहिब्बूनल अआजिमुल ख़म्र 'बेशक मेरे साथ ऐसी जमाअत है, जो मौत को ऐसा ही महबूब रखती है, जैसा कि तुम लोग शराब पीने को महबूब रखते हो।[4]

फ़— शराब के दिलदादों से पूछो कि इसमें क्या मज़ा है। जो लोग मौत को ऐसा महबूब रखते हों, कामियाबी क्यों न उनके क़दम चूमे।

7. हज़रत वह्ब बिन क़ाबूस रज़ि० की उहद में शहादत

हज़रत वह्ब बिन क़ाबूस रज़ि० एक सहाबी हैं जो किसी वक़्त में मुसलमान हुए थे और अपने घर किसी गांव में रहते थे, बकरियां चराते थे, अपने भतीजे के साथ एक रस्सी में बकरियां बांधे हुए मदीना मुनव्वरा पहुंचे, पूछा कि हुज़ूर सल्ल० कहां तश्रीफ़ ले गये। मालूम हुआ कि उहद की लड़ाई पर गये हुए हैं। बकरियों को वहीं छोड़कर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंच गये। इतने में एक जमाअत कुफ़्फ़ार की हमला करती हुई आयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो उनको मुंतशिर[5] कर दे, वह जन्नत में मेरा साथी है। हज़रत वह्ब रज़ि० ने ज़ोर से तलवार चलानी शुरू की

1. अच्छे बुरे 2. अशहर, 3. ख़ुशी-ख़ुशी, 4. तफ़्सीरी अज़ीज़ी अव्वल, 5. बिखरादे,

और सबको हटा दिया। दूसरी मर्तबा फिर यही सूरत पेश आयी। तीसरी मर्तबा फिर ऐसा ही हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उनको जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। इसका सुन्ना था कि तलवार लेकर कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस गये और शहीद हुए।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि मैंने वह्ब रज़ि० जैसी दिलेरी और बहादुरी किसी की भी किसी लड़ाई में नहीं देखी और शहीद होने के बाद हुज़ूर सल्ल० को मैंने देखा कि वह्ब रज़ि० के सिरहाने खड़े थे और इर्शाद फ़र्माते थे कि अल्लाह तुम से राज़ी हो, मैं तुम से राज़ी हूं। इसके बाद ख़ुद हुज़ूर सल्ल० ने अपने दस्ते मुबारक से दफ़न फ़र्माया, बावजूद यह कि उस लड़ाई में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी ज़ख़्मी थे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते थे कि मुझे किसी के अमल पर भी इतना रश्क नहीं आया, जितना वह्ब रज़ि० के अमल पर आया। मेरा दिल चाहता है कि अल्लाह के यहां उन जैसा आमालनामा लेकर पहुंचूं।[1]

फ़— उन पर रश्क उस ख़ास कारनामे की वजह से है कि जान को जान नहीं समझा वरना ख़ुद हज़रत उमर रज़ि० और दूसरे हज़रात के दूसरे कारनामे इससे कहीं बढ़े हुए हैं।

8 बिअरेमऊना की लड़ाई

बिअरे मऊना की लड़ाई एक मशहूर लड़ाई है, जिसमें सत्तर सहाबा रज़ि० की एक जमाअत पूरी की पूरी शहीद हुई, जिनको क़ुर्रा[2] कहते हैं, इसलिए कि सब हज़रात क़ुरान मजीद के हाफ़िज़ थे और सिवाए चन्द मुहाजिरीन के अक्सर अंसार थे। हुज़ूरे सल्ल० को उनके साथ बड़ी मुहब्बत थी, क्योंकि यह हज़रात रात का अक्सर हिस्सा ज़िक्र व तिलावत में गुज़ारते थे और दिन को हुज़ूर सल्ल० की बीवियों के घरों की ज़रूरियात लकड़ी, पानी वग़ैरह पहुंचाया करते थे। इस मक़्बूल जमाअत को नज्द का रहने वाला क़ौम बनी आमिर का एक शख़्स जिसका नाम आमिर बिन मालिक और कुन्नियत अबूबरा थी, अपने साथ अपनी पनाह में तब्लीग़ और वाज़ के नाम से ले गया था।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद भी फ़र्माया कि मुझे अंदेशा

---

1. असाबा, क़ुर्रा, 2. क़ुरआन पढ़ने वाले,

है कि मेरे असहाब को मज़र्रत[1] न पहुंचे, मगर उस शख़्स ने बहुत ज़्यादा इत्मीनान दिलाया। आपने इन सत्तर सहाबा रज़ि० को हमराह कर दिया और एक वालानामा आमिर बिन तुफ़ैल के नाम जो बनी आमिर का रईस था, तहरीर फ़र्माया, जिसमें इस्लाम की दावत थी। यह हज़रात मदीने से रुख़्सत होकर बिअरे मऊना पहुंचे तो ठहर गये और दो साथी एक हज़रत उमर बिन उमैया रज़ि०, दूसरे हज़रत मुंज़िर बिन उमर रज़ि० सब के ऊंटों को लेकर चराने के लिए तशरीफ़ ले गये और हज़रत हराम रज़ि० अपने साथ दो हज़रात को साथियों में से लेकर आमिर बिन तुफ़ैल के पास हुज़ूर सल्ल० का वालानामा देने के लिए तशरीफ़ ले गये। क़रीब पहुंच कर हज़रत हिराम रज़ि० ने अपने दोनों साथियों से फ़र्माया कि तुम यहां ठहर जाओ, मैं आगे जाता हूं। अगर मेरे साथ कोई दग़ा न की गई तो तुम भी चले आना, वरना यहीं से वापस हो जाना कि तीन के मारे जाने से एक का मारा जाना बेहतर है।

आमिर बिन तुफ़ैल उस आमिर बिन मालिक का भतीजा था, जो इन सहाबा रज़ि० को अपने साथ लाया था। उसको इस्लाम से और मुसलमानों से ख़ास अदावत थी। हज़रत हराम रज़ि० ने वालानामा दिया तो उसने ग़ुस्से में पढ़ा भी नहीं, बल्कि हज़रत हराम रज़ि० के एक ऐसा नेज़ा मारा जो पार निकल गया।

हज़रत हराम रज़ि० 'फ़ुज़्तु व रब्बिल कअबति' (रब्बे काबा की क़सम, मैं तो कामियाब हो गया) कहकर जां-ब-हक़[2] हुए।

उसने न इसकी परवाह की कि क़ासिद को मारना किसी क़ौम के नज़दीक भी जायज़ नहीं और न इसका लिहाज़ किया कि मेरा चचा इन हज़रात को अपनी पनाह में लाया है। उनको शहीद करने के बाद उसने अपनी क़ौम को जमा किया और इस पर आमादा किया कि इन मुसलमानों में से एक को भी ज़िन्दा न छोड़ो, लेकिन इन लोगों ने अबूबरा की पनाह की वजह से तरद्दुद किया तो उसने आस-पास के और लोगों को जमा किया, बहुत बड़ी जमाअत के साथ इन सत्तर सहाबी रज़ि० का मुक़ाबला किया। यह हज़रात आख़िर कहां तक मुक़ाबला करते और चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार में घिरे हुए थे। बजुज़ एक काब बिन ज़ैद रज़ि० के, जिन में कुछ ज़िन्दगी की रमक़[3] बाक़ी थी और कुफ़्फ़ार उनको मुर्दा समझ कर छोड़ गये थे, बाक़ी सब शहीद हो गये।

---

1. नुक़्सान 2. इंतिक़ाल फ़रमा गये, 3. यानी सांस चल रही थी,

हज़रत उमर रज़ि और मुंज़िर, जो ऊंट चराने गए हुए थे, उन्होंने आसमान की तरफ़ देखा तो मुर्दारख़ोर जानवर उड़ रहे थे। दोनों हज़रात यह कहकर लौटे कि ज़रूर कोई हादसा पेश आया। यहां आ कर देखा तो अपने साथियों को शहीद पाया और सवारों को ख़ून की भरी हुई तलवारें लिए हुए उनके गिर्द चक्कर लगाते देखा। यह हालत देख कर दोनों हज़रात ठिठके और बाहम मश्वरा किया कि क्या करना चाहिए।

उमर बिन उमैया रज़ि० ने कहा कि चलो वापस चलकर हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला दें। मगर हज़रत मुंज़िर रज़ि० ने जवाब दिया कि ख़बर तो हो ही जायेगी। मेरा तो दिल नहीं मानता कि शहादत को छोडूं और उस जगह से चला जाऊं, जहां हमारे दोस्त पड़े सो रहे हैं। आगे बढ़ो और साथियों से जा मिलो। चुनांचे दोनों आगे बढ़े और मैदान में कूद गए। हज़रत मुंज़िर रज़ि० शहीद हुए और हज़रत उमर बिन उमैया रज़ि० गिरफ़्तार हुए, मगर चूंकि आमिर की मां के ज़िम्मे किसी मन्नत के सिलसिले में एक ग़ुलाम का आज़ाद करना था, इसलिए आमिर ने उनको इस मन्नत में आज़ाद कर दिया।

इन हज़रात में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के ग़ुलाम हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० भी थे। उनके क़ातिल जब्बार बिन सलमा कहते हैं कि मैंने जब उनके बरछा मारा और वह शहीद हुए तो उन्होंने कहा, फ़ुज़्तु वल्लाहि (ख़ुदा की क़सम! मैं कामियाब हुआ) इसके बाद मैंने देखा कि उनकी लाश आसमान को उड़ी चली गई। मैं बहुत मुतहय्यर[1] हुआ और मैंने बाद में लोगों से पूछा कि मैंने ख़ुद बरछा मारा, वह मरे, लेकिन फिर भी वह कहते हैं, मैं कामियाब हो गया, तो वह कामियाबी क्या थी ? लोगों ने बताया कि वह कामियाबी जन्नत की थी, इस पर मैं मुसलमान हो गया।[2]

फ़— यह ही हैं वह लोग, जिन पर इस्लाम को बजा तौर पर फ़ख़्र है। बेशक मौत उनके लिए शराब से ज़्यादा महबूब थी और क्यों न होती, जब दुनिया में काम ही ऐसे किये थे, जिन पर अल्लाह के यहां की सुर्ख़ रूई[3] यक़ीनी थी, इसलिए जो मरता था, वह कामियाब होता था।

---

1. हैरत व ताज्जुब में, 2. ख़मीस 3. कामियाबी,

9. हज़रत उमैर रज़ि० का क़ौल कि खजूरें खाना तवील ज़िन्दगी है

ग़ज़्वा-ए-बद्र में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ख़ेमे में तशरीफ़ फ़र्मा थे। आपने सहाबा से इर्शाद फ़र्माया कि उठो और बढ़ो ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन से कहीं ज़्यादा है और मुत्तक़ियों के वास्ते बनायी गई हैं।

हज़रत उमैर बिन अलहम्माम रज़ि० एक सहाबी हैं। वह भी सुन रहे थे, कहने लगे वाह, वाह! हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वाह! वाह! किस बात पर कहा। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे यह तमन्ना है कि मैं भी उनमें से होता। आपने फ़र्माया तुम भी उनमें से हो। इसके बाद झोली में से कुछ खजूरें निकाल कर खाने लगे। इसके बाद कहने लगे कि इन खजूरों के ख़त्म होने का इन्तज़ार, जो हाथ में हैं, बड़ी लम्बी ज़िन्दगी है, कहां तक इन्तज़ार करूंगा। यह कहकर उनको फेंक दिया और तलवार लेकर मज्मा में घुस गए और शहीद होने तक लड़ते रहे।[1]

फ़— हक़ीक़त में यही लोग जन्नत के क़द्रदां न हैं और इस पर यक़ीन रखने वाले हम लोगों को भी अगर यक़ीन नसीब हो जायें तो सारी बातें सहल हो जायें।

10. हज़रत उमर रज़ि० की हिजरत

हज़रत उमर रज़ि० का तो ज़िक्र ही क्या है, बच्चा-बच्चा उनकी बहादुरी से वाक़िफ़ और शुजाअत का मोतरिफ़[2] है। इस्लाम के शुरू में जब मुसलमान सभी ज़ोफ़ की हालत में थे, हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद इस्लाम की क़ुव्वत के वास्ते उमर रज़ि० के मुसलमान होने की दुआ की और क़ुबूल हुई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि हम लोग काबा के क़रीब उस वक़्त तक नमाज़ नहीं पढ़ सकते थे, जब तक कि उमर मुसलमान नहीं हुए।

हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं कि अव्वल-अव्वल हर शख़्स ने हिजरत छुप कर की, मगर जब उमर रज़ि० ने हिजरत का इरादा किया तो तलवार गले में डाली,

---

1. तबक़ात इब्ने, 2. एतराफ़ (स्वीकार) करने वाला,

कमान हाथ में ली और बहुत से तीर साथ लिये, अव्वल मस्जिद में गये, तवाफ़ इत्मीनान से किया, फिर निहायत इत्मीनान से नमाज़ पढ़ी। इसके बाद कुफ़्फ़ार के मज्मों में गये और फ़र्माया कि जिसका यह दिल चाहे कि उसकी मां उसको रोये, उसकी बीवी रांड हो, उसके बच्चे यतीम हों, वह मक्का से बाहर आकर मेरा मुक़ाबला करे। यह अलग-अलग जमाअतों को सुनाकर तशरीफ़ ले गये। किसी एक सख़्स की भी हिम्मत न पड़ी कि पीछा करता।[1]

11. ग़ज़्वा-ए-मौता का क़िस्सा

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ बादशाहों के पास तब्लीग़ी दावतनामे इर्साल[2] फ़र्माए थे। इनमें एक ख़त हज़रत हारिस बिन उमैर बिन अज़दी रज़ि० के हाथ बसरा के बादशाह के पास भी भेजा था। जब यह मौता पहुंचा तो शुरहबील ग़स्सानी ने, जो क़ैसर के हुक्काम में से एक शख़्स था, उनको क़त्ल कर दिया। क़ासिदों का क़त्ल किसी के नज़दीक भी पसंदीदा नहीं। हुज़ूर सल्ल० को यह बात बहुत गरां हुई और आपने तीन हज़ार का एक लश्कर तज्वीज़ फ़र्मा कर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को उनपर अमीर मुक़र्रर फ़र्माया और इर्शाद फ़र्माया कि अगर यह शहीद हो जायें तो जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० अमीर बनाये जायें वह भी शहीद हो जायें तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० अमीर हों। वह भी शहीद हो जायें तो फिर मुसलमान जिसको दिल चाहे अमीर बना लें।

एक यहूदी इस गुफ़्तगू को सुन रहा था। उसने कहा, यह तीनों तो ज़रूर शहीद होंगे। पहले अंबिया के इस क़िस्म के कलाम का यही मतलब होता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सफ़ेद झंडा बना कर हज़रत ज़ैद रज़ि० के हवाले फ़र्माया और ख़ुद मय एक जमाअत के इन हज़रात को रुख़्सत फ़र्माने तशरीफ़ ले गये। शहर के बाहर जब पहुंचाने वाले वापस आने लगे तो इन मुजाहिदीन के लिए दुआ की कि हक़ तआला शानुहू तुमको सलामती के साथ, कामियाबी के साथ वापस लाये और हर क़िस्म की बुराई से महफ़ूज़ रखे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने इसके जवाब में तीन शेर पढ़े, जिनका मतलब यह था कि मैं तो अपने रब से गुनाहों की मग़्फ़िरत चाहता हूं और यह चाहता

---

1. असदुलग़ाबा, 2. भेजे थे,

हूं कि एक ऐसी तलवार हो, जिससे मेरे ख़ून के फ़व्वारे छूटने लगें या ऐसा बरछा हो जो आंतों और कलेजे को चीरता हुआ निकल जाए और जब लोग मेरी क़ब्र पर गुज़रें तो यह कहें कि अल्लाह तुझ ग़ाज़ी को रशीद[1] और कामयाब करे, वाक़ई तू तो रशीद और कामियाब था।

इसके बाद यह हज़रात रवाना हो गये। शुरहबील को भी उन की रवानगी का इल्म हुआ। वह एक लाख फ़ौज के साथ मुक़ाबले के लिए तैयार हुआ। यह हज़रात कुछ आगे चले तो मालूम हुआ कि खुद हिरक़्ल, रूम का बादशाह भी एक लाख फ़ौज साथ लिये हुए मुक़ाबले के लिए आ रहा है। इन हज़रात को इस ख़बर से तरद्दुद हुआ कि इतनी बड़ी जमाअत का मुक़ाबला किया जावे या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी जावे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने ललकार कर फ़र्माया, ऐ लोगों ! तुम किस बात से घबरा रहे हो ? तुम किस चीज़ के इरादे से निकले हो? तुम्हारा मक़्सूद शहीद हो जाना है। हम लोग कभी भी क़ूव्वत और आदमियों की कसरत के ज़ोर पर नहीं लड़े। हम सिर्फ़ उस दीन की वजह से लड़े हैं, जिसकी वजह से अल्लाह ने हमें इक्राम नसीब फ़र्माया है, आगे बढ़ो, दो कामियाबियों में से एक तो ज़रूरी है- या शहादत या ग़ल्बा।

यह सुनकर मुसलमानों ने हिम्मत की और आगे बढ़ गये, हत्ताकि मौता पर पहुंचकर लड़ाई शुरू हो गई। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने झंडा हाथ में लिया और मैदान में पहुंचे, घमासान की लड़ाई शुरू हुई। शुरहबील का भाई भी मारा गया और उसके साथी भाग गये। खुद शुरहबील भी भागकर एक किले में छुप गया और हिरक़्ल के पास मदद के लिए आदमी भेजा। उसने तक़रीबन दो लाख फ़ौज भेजी और लड़ाई ज़ोर से होती रही।

हज़रत ज़ैद रज़ि० शहीद हुए तो जाफ़र रज़ि० ने हाथ में झंडा लिया और अपने घोड़े के ख़ुद ही पांव काट दिये ताकि वापसी का ख़्याल भी दिल में न आए और चन्द अश्आर पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है:-

ऐ लोगों ! क्या ही अच्छी है जन्नत और क्या ही अच्छा है उसका क़रीब होना, कितनी बेहतरीन चीज़ हैं और कितना ठंडा है इस का पानी और मुल्क रूम के लोगों पर अज़ाब का वक़्त आ गया। मुझ पर भी लाज़िम है कि उनको मारूं।'

---

1. हिदायत पाने वाला,

यह अश्आर पढ़े और अपने घोड़े के पांव खुद ही काट चुके थे कि वापसी का ख़्याल भी दिल में न आवे और तलवार लेकर काफ़िरों के मज्मे में घुस गये। अमीर होने की वजह से झंडा भी उन्हीं के पास था। अव्वल झंडा दाहिने हाथ में लिया। काफ़िरों ने दाहिना हाथ काट दिया कि झंडा गिर जाए। उन्होंने फ़ौरन बायें हाथ में लिया। उन्होंने वह भी काटा, तो उन्होंने दोनों बाज़ुओं से उसको थामा और मुंह से मज़बूत पकड़ लिया। एक शख़्स ने पीछे से उनके दो टुकड़े कर दिए, जिससे यह गिर पड़े। उस वक़्त उनकी उम्र तैंतीस साल की थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हमने बाद में लाशों में से हज़रत जाफ़र रज़ि० को जब उठाया तो उनके बदन के अगले हिस्से में नव्वे ज़ख़्म थे। जब यह शहीद हो गये तो लोगों ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा को आवाज़ दी। वह लश्कर के एक कोने में गोश्त का टुकड़ा खा रहे थे कि तीन दिन से कुछ चखने को भी न मिला था। वह आवाज़ सुनते ही गोश्त के टुकड़े को फेंक कर अपने आपको मलामत करते हुए कि जाफ़र रज़ि० तो शहीद हो जायें और तू दुनिया में मशग़ूल रहे। आगे बढ़े और झंडा लेकर क़िताल[1] शुरू कर दिया, उंगली में ज़ख़्म आया, वह लटक गई तो उन्होंने पाँव से कटी हुई उस उंगली को दबाकर, हाथ खींचा, वह अलग हो गई, उसको फेंक दिया और आगे बढ़े।

इस घमसान और परेशानी की हालत में थोड़ा सा तरद्दुद भी पेश आया कि न हिम्मत, न मुक़ाबले की ताक़त। लेकिन इस तरद्दुद को थोड़ी ही देर गुज़री थी कि अपने दिल को मुख़ातिब बनाकर कहा, ओ दिल! किस चीज़ का अब इश्तियाक़[2] बाक़ी है, जिसकी वजह से तरद्दुद है, क्या बीवी का है, तो उसको तीन तलाक़ या ग़ुलामों का है तो वह सब आज़ाद या बाग़ का है तो वह अल्लाह के रास्ते में सदक़ा।

इसके बाद चन्द शेर पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है, 'क़सम है ओ दिल तुझे, उतरना होगा, खुशी से उतर या नागवारी से उतर। तुझे इत्मीनान की ज़िन्दगी गुज़ारते हुए एक ज़माना गुज़र चुका, सोच लो आख़िर तू एक क़तरा-ए-मनी है। देख काफ़िर लोग मुसलमानों पर खिंचे हुए आ रहे हैं। तुझे क्या हुआ जन्नत को पसन्द नहीं करता, अगर तू क़त्ल न हुआ तो वैसे भी आख़िर मरेगा ही।

इसके बाद घोड़े से उतरे। उनके चचाज़ाद भाई गोश्त का एक टुकड़ा लाये कि ज़रा सा खा लो, कमर सीधी कर लो। कई दिन से कुछ नहीं खाया। उन्होंने ले लिया। इतने में एक जानिब से हल्ले की आवाज़ आयी उसको फेंक दिया और

1. लड़ाई, 2. शौक़,

तलवार लेकर जमाअत में घुस गये और शहीद होने तक तलवार चलाते रहे।[1]

फ़– सहाबा रज़ि० की पूरी ज़िन्दगी का यही नमूना है, इनका हर-हर क़िस्सा दुनियां की बे-सबाती[2] और आख़िरत के शौक़ का सबक़ देता है। सहाबा किराम रज़ि० का तो पूछना ही क्या, ताबिईन पर भी यही रंग चढ़ा हुआ था। एक क़िस्से पर इस बाब को ख़त्म करता हूं, जो दूसरे रंग का है। दुश्मन से मुक़ाबले के नमूनें तो आप देख ही चुकें हैं, अब हुकूमत के सामने का मंज़र भी देख लीजिए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है-

12. हज़रत सअद बिन ज़ुबैर और हज्जात की गुफ़्तगू

افضل الجهاد كلمة حق عند سلطان جائر

'अफ़्ज़ुल जिहादि कलिमतुलहक़्क़ि इन्द सुल्तानिन जाइर' (बिहतरीन जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कहना है।)

हज्जाज[3] का ज़ुल्म व सितम दुनियां में मशहूर है, गो उस ज़माने के बादशाह बावजूद ज़ुल्म व सितम के दीन की इशाअत का काम भी करते रहते थे, लेकिन फिर भी दीनदार और आदिल बादशाहों के लिहाज़ से वह बद-तरीन शुमार होते थे और इस वजह से लोग उनसे बेज़ार थे।

सईद बिन जबीर रज़ि० ने भी इब्नुल अश्अस के साथ मिलकर हज्जाज का मुक़ाबला किया। हज्जाज अब्दुल मलिक बिन मर्वान की तरफ़ से हाकिम था सईद बिन जबीर मशहूर ताबई हैं और बड़े उलमा में से हैं हुकूमत और बिल ख़ुसूस हज्जाज को उनसे बुग़्ज़ व अदावत[4] थी और चूंकि मुक़ाबला किया था इसलिए अदावत का होना भी ज़रूरी था। मुक़ाबले में हज्जाज उनको गिरफ़्तार न कर सका।

यह शकिस्त के बाद छुपकर मक्का मुकर्रमा चले गये। हुकूमत ने अपने एक ख़ास आदमी को मक्के का हाकिम बनाया और पहले हाकिम को अपने पास बुला लिया। इस नये हाकिम ने जाकर ख़ुत्बा पढ़ा, जिस के आख़ीर में अब्दुल मलिक बिन मर्वान बादशाह का यह हुक्म भी सुनाया कि जो शख़्स सईद बिन जबीर को ठिकाना दे, उसकी ख़ैर नहीं।

इसके बाद उस हाकिम ने ख़ुद अपनी तरफ़ से भी क़सम खायी कि जिस

---

1. ख़मीस, 2. मुस्तिक़ल न रहना, 3. हज़रत सईद बिन ज़ुबैर और हज्जाज की गुफ़्तगू, 4. दुश्मनी

के घर में वह मिलेगा, उसको कत्ल किया जायेगा और उसके घर को नीज़ उसके पड़ोसियों के घर को ढाऊंगा, गरज़ बड़ी दिक्क़त से मक्का के हाकिम ने उनको गिरफ्तार करके हज्जाज के पास भेज दिया। उसको गुस्सा निकालने और उनको कत्ल करने का मौका मिल गया। सामने बुलाया और पूछा–

हज्जाज– तेरा क्या नाम है ?
सईद– मेरा मान सईद है।
हज्जाज– किसका बेटा है ?
सईद– जबीर का बेटा हूं।

सईद का तर्जुमा नेक बख़्त है और जबीर का मतलब इस्लाह की हुई चीज़- अगर्चे नामों में मानी अक्सर मक्सूद नहीं होते, लेकिन हज्जाज को इनके नाम अच्छे मानी वाला होना पसन्द नहीं आया। इसलिए कहा, नहीं तू शक़ी बिन कुसैर है। शक़ी कहते है बद बख़्त को और कुसैर टूटी हुई चीज़।

सईद– मेरी वालिदा मेरा नाम तुझ से बेहतर जानती थीं।
हज्जाज– तू भी बद-बख़्त, तेरी मां भी बद- बख़्त।
सईद– ग़ैब को जानने वाला तेरे अलावा और शख़्स है (यानी अल्लामुल ग़ुयूब)।
हज्जाज– देख, मैं अब तुझे मौत के घाट उतारता हूं।
सईद– तो मेरी मां ने मेरा नाम दुरुस्त रखा।
हज्जाज– अब मैं तुझ को ज़िन्दगी के बदले कैसा जहन्नाम रसीद करता हूं।
सईद– अगर मैं जानता कि यह तेरे इख़्तियार में है तो तुझको माबूद बना लेता।
हज्जाज– हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत तेरा क्या अक़ीदा है ?
सईद– वह रहमत के नबी थे और अल्लाह के रसूल थे, जो बेहतरीन नसीहत के साथ तमाम दुनिया की तरफ़ भेजे गये।

हज्जाज– खुलफ़ा की निस्बत तेरा क्या ख़्याल है ?
सईद– मैं उनका मुहाफ़िज़ नहीं हूं, हर शख़्स अपने किए का ज़िम्मेदार है।
हज्जाज– मैं उनको बुरा कहता हूं या अच्छा ?
सईद– जिस चीज़ का मुझे इल्म नहीं, मैं उसमें क्या कह सकता हूं? मुझे अपना ही हाल मालूम है।

हज्जाज– इनमें सबसे ज़्यादा पसंदीदा तेरे नज़दीक कौन है ?

सईद– जो सबसे ज़्यादा मेरे मालिक को राज़ी करने वाला था। बाज़ कुतुब में बजाय इसके यह जवाब है कि इनके हालात बाज़ को बाज़ पर तर्जीह देते हैं।

हज्जाज– सबसे ज़्यादा राज़ी रखने वाला कौन था ?

सईद– इसको वही जानता है जो दिल के भेदों, और छुपे हुए राज़ों से वाक़िफ़ है।

हज्जाज– हज़रत अली रज़ि० जन्नत में हैं या दोज़ख़ में ?

सईद– अगर मैं जन्नत और जहन्नम में जाऊं और वहां वालों को देख लूं तो बतला सकता हूं।

हज्जाज– मैं क़यामत में कैसा आदमी हूंगा ?

सईद– मैं इससे कम हूं कि ग़ैब पर मुत्तला किया जाऊं।

हज्जाज– तू मुझ से सच बोलने का इरादा नहीं करता ?

सईद– मैंने झूठ भी नहीं कहा।

हज्जाज– तू कभी हंसता क्यों नहीं।

सईद– कोई बात हंसने की देखता नहीं और वह शख़्स क्या हंसे जो मिट्टी से बना हो और क़यामत में उसको आना हो और दुनिया के फ़ित्नों में दिन-रात रहता हो ?

हज्जाज– मैं तो हंसता हूं।

सईद– अल्लाह ने ऐसे ही मुख़्तलिफ़ तरीक़ों में हमको बनाया है।

हज्जाज– मैं तुझे क़त्ल करने वाला हूं ?

सईद– मेरी मौत का सबब पैदा करने वाला अपने काम से फ़ारिग़ हो चुका।

हज्जाज– मैं अल्लाह के नज़दीक तुझ से ज़्यादा महबूब हूं ?

सईद– अल्लाह पर कोई भी जुर्अत नहीं कर सकता, जब तक कि अपना मर्तबा मालूम न कर ले और ग़ैब की अल्लाह ही को ख़बर है।

हज्जाज– मैं क्यों नहीं जुर्अत कर सकता ? हालांकि मैं जमाअत के बादशाह के साथ हूं और तू बाग़ियों की जमाअत के साथ है।

सईद– मैं जमाअत से अलाहिदा नहीं हूं और फ़ित्ने को ख़ुद ही पसंद नहीं करता और जो तक़दीर में है, उसको कोई टाल नहीं सकता।

हज्जाज– हम जो कुछ अमीरुल मोमिनीन के लिए जमा करते हैं, उसको तू कैसा समझता है ?

सईद– मैं नहीं जानता कि क्या जमा किया ?

हज्जाज– ने सोना–चांदी कपड़े वग़ैरह मंगा कर उन के सामने रख दिये।

सईद– यह अच्छी चीज़ें है अगर अपनी शर्त के मुवाफ़िक़ हों।

हज्जाज– शर्त क्या है ?

सईद– यह कि तू उनसे ऐसी चीज़ें ख़रीदे जो बड़े घबराहट के दिन यानी क़यामत के दिन अम्न पैदा करने वाली हों, वरना हर दूध पिलाने वाली दूध पीते को भूल जाएगी और हमल गिर जायेंगे और आदमी को अच्छी चीज़ के सिवा कुछ भी काम न देगी।

हज्जाज– हमने जो जमा किया वह अच्छी चीज़ नहीं ?

सईद– तूने जमा किया, तू ही उसकी अच्छाई को समझ सकता है।

हज्जाज– क्या तू इसमें से कोई चीज़ अपने लिए पसन्द करता है ?

सईद– मैं सिर्फ़ उस चीज़ को पसन्द करता हूं, जिसको अल्लाह पसन्द करे।

हज्जाज– तेरे लिए हलाकत हो।

सईद– हलाकत उस शख़्स के लिए है, जो जन्नत से हटाकर जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाए।

हज्जाज– (दिक़ होकर) बतला कि मैं तुझे किस तरीक़े से क़त्ल करूं ?

सईद– जिस तरह से क़त्ल होना अपने लिए पसन्द हो।

हज्जाज– क्या तुझे माफ़ कर दूं ?

सईद– माफ़ी अल्लाह के यहां की माफ़ी है। तेरा माफ़ करना कोई चीज़ भी नहीं।

हज्जाज ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इसको क़त्ल कर दो। सईद बाहर लाये गए और हंसे। हज्जाज को इसकी इत्तिला दी गई। फिर बुलाया और पूछा–

हज्जाज– तू हंसा क्यों ?

सईद– तेरी अल्लाह पर जुरअत और अल्लाह तआला की तुझ पर हिल्म से।

हज्जाज– मैं उसको क़त्ल करता हूं जिसने मुसलमानों की जमाअत में तफ़रीक़ (फ़र्क़) की।

फिर जल्लाद से ख़िताब करके कहा, मेरे सामने इसकी गर्दन उड़ाओ।

सईद– मैं दो रक्अत नमाज़ पढ़ लूं। नमाज़ पढ़ी फिर क़िब्ला रुख़ होकर– वज्जह्तु वज्हि य लिल्लज़ी फ़ त रस्समावाति वल् अर्ज़ हनीफ़ंव्व मा अना मिनल मुश्रिकीन०

पढ़ा, यानी मैंने अपना मुंह उस पाक ज़ात की तरफ़ किया, जिसने आसमान-ज़मीन बनाये और मैं सब तरफ़ से हटकर उधर मुतवज्जह हुआ और नहीं हूं मुश्रिकों से।

हज्जाज– इसका मुंह क़िब्ले से फेर दो और नसारा के क़िब्ले की तरफ़ कर दो कि इन्होंने भी अपने दीन में तफ़रीक़[1] की और इख़्तिलाफ़ पैदा किया। चुनांचे फ़ौरन फेर दिया गया।

सईद– 'फ़ ऐन, मा तुवल्लू फ़ सम्म वज्हुल्लाहि अल-काफ़ी बिस्सरराइर०

'जिधर तुम मुंह फेरो, उधर भी ख़ुदा है, जो भेदों का जानने वाला है।'

हज्जाज– औंधा डाल दो। (यानी ज़मीन की तरफ़ मुंह कर दो) हम तो ज़ाहिर पर अमल करने के ज़िम्मेदार हैं।

सईद– मिन्हा ख़लक़्नाकुम व फ़ीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़रा०

हमने ज़मीन ही से तुमको पैदा किया और उसी में तुमको लौटायेंगे और उसी से फिर दुबारा उठायेंगे।'

हज्जाज– इसको क़त्ल कर दो।

सईद– मैं तुझे इस बात का गवाह बनाता हूं–

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसू लुहू०

तो उसको महफ़ूज रखना। जब मैं तुझ से क़ियामत के दिन मिलूंगा, तो ले लूंगा। इसके बाद वह शहीद कर दिये गये इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

इनके इन्तिक़ाल के बाद बदन से ख़ून बहुत ज़्यादा निकला, जिससे हज्जाज को भी हैरत हुई। अपने तबीब[2] से इसकी वजह पूछी। उसने कहा कि उनका दिल निहायत मुत्मइन था और क़त्ल का ज़रा भी ख़ौफ़ उनके दिल में नहीं था। इसलिए उनका ख़ून अपनी असली मिक़्दार पर क़ायम रहा, ब-ख़िलाफ़ और लोगों के कि ख़ौफ़ से उनका ख़ून पहले ही ख़ुश्क हो जाता है।[3]

फ़– इस क़िस्से के सवाल-जवाब में कुतुब में कमी-ज़्यादती भी है और भी बाज़ सवाल-जवाब नक़ल किए गए। हमें तो नमूना ही दिखाना था, इसलिए

---

1. फ़र्क़ करना, 2. हकीम, डाक्टर, 3. उलमा-ए-सलफ़ किताबुल इमामत व सियासत

इसी पर इक्तिफ़ा किया गया। ताबिईन के इस क़िस्म के क़िस्से बहुत ज़्यादा है। हज़रत इमामे आज़म रह०, इमाम मालिक रह०, इमाम अहमद बिन हंबल रह० वग़ैरह हज़रात इसी हक़ गोई की वजह से हमेशा मशक़्क़तें बर्दाश्त फ़र्माते रहे, लेकिन हक़ को हाथ से नहीं छोड़ा।

आठवां बाब

इल्मी वलवला और उसका इन्हिमाक

चूंकि असल दीन कलिमा-ए-तौहीद है और वही सब कमालात की बुनियाद है। जब तक वह न हो कोई कारे ख़ैर भी मक़बूल नहीं, इसलिए सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की हिम्मत बिलख़ुसूस इब्तिदाई ज़माने में ज़्यादा तर कलिमा-ए-तौहीद के फैलाने और कुफ़्फ़ार से जिहाद करने में मशग़ूल थी और वह इल्मी इंहिमाक के लिए फ़ारिग़ व यक्सू न थे, लेकिन इसके बावजूद इन मशाग़िल के साथ इनका इंहिमाक और शौक़ व शग़फ़, जिसका समरा आज चौदह सौ वर्ष तक उलूमे क़ुरआन व हदीस का बक़ा है, एक खुली हुई चीज़ है।

इब्तिदा-ए-इस्लाम के बाद जब कुछ फ़रागत इन हज़रात को मयस्सर हो सकी और जमाअत में भी कुछ इज़ाफ़ा हुआ तो आयते कलामुल्लाह-

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ
لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ○

व मा कानल मुअमिनून लियन्फ़िरू काफ़्फ़तन फ़ लौला न-फ़-र मिनकुल्लि फ़िर्क़तिम मिन्हुम ताइफ़तुल्लिय-तफ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौम हुम इज़ा र-ज-ऊ इलैहिम ल अल्लहुम यह्ज़रून०

नाज़िल हुई जिसका तर्जुमा यह है-

'मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, सो ऐसा क्यों न किया जावे कि उनकी हर-हर बड़ी जमाअत में से एक छोटी जमाअत जाया करे ताकि बाक़ी मांदा लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें और ताकि वह क़ौम को जब वह उनके पास वापस आवें, डरावें ताकि वह एहतियात रखें।[1]

1. बयानुल क़ुरआन।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं- اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا और
'इंफ़िरू ख़िफ़ाफ़न्न सिक़ालन' और اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا
'इल्ला तन्फ़िरू युअज़्ज़िबु कुम अज़ाबन अलीमा०' से जो उमूम मालूम होता है उसको مَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً
'मां कानल मुअ् मिनूनालियन्फ़िरू काफ़्फ़तन' ने मंसूख़ कर दिया।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को हक़ तआला शानुहू ने जामईयत अता फ़र्मायी थी और उस वक़्त के लिए यह चीज़ निहायत ही ज़रूरी थी कि वही ऐक मुख़्तसर सी जमात दीन के सारे काम संभालने वाली थी, मगर ताबिईन के ज़माने में जब इस्लाम फैल गया और मुसलमानों की बड़ी जमाअत और जमईयत हो गई। नीज़ सहाबा-ए-किराम जैसी जामईयत भी बाक़ी न रही तो हर-हर शोबा-ए-दीन के लिए पूरी तवज्जोह से काम करने वाले अल्लाह तआला ने पैदा फ़र्माये।

मुहद्दिसीन की मुस्तक़िल जमाअत बननी शुरू हो गयी, जिनका काम अहादीस का ज़ब्त और उनका फैलाना था। फ़ुक़हा की अलाहिदा जमाअत हुई। सूफ़िया, क़ुर्रा, मुजाहिदीन, ग़रज़ दीन के हर-हर शोबे को मुस्तक़िल संभालने वाले पैदा हुए। उस वक़्त के लिए यह ही चीज़ मुनासिब और ज़रूरी थी। अगर यह सूरत न होती तो हर शोबे में कमाल और तरक़्क़ी दुश्वार थी, इसलिए कि हर शख़्स तमाम चीज़ों में इंतिहाई कमाल पैदा कर ले, यह बहुत दुश्वार है। यह सिफ़त हक़ तआला शानुहू ने अंबिया अलैहिसलातु वस्सलाम बिलख़ुसूस सय्यिदुल अंबिया अलैहि अफ़ज़लुस्सलातु वस्सलाम ही को अता फ़र्मायी थी, इसलिए इस बाब में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के अलावा और दीगर हज़रात के वाक़िआत भी ज़िक्र किए जाएंगे।

1. फ़तवे का काम करने वाली जमात की फ़ेहरिस्त

अगर्चे सहाबा किराम राज़ अन्हुम जिहाद और ऐला-ए-कलिमतुल्लाह[1] की मश्ग़ूली के बावजूद सब ही इल्मी मश्ग़ले में हर वक़्त मुंहमिक[2] थे और हर शख़्स हर वक़्त जो कुछ हासिल कर लेता था, उसको फैलाना-पहुँचाना यही उसका मश्ग़ला

1. अल्लाह के कलमे को बुलन्द करने की, 2. लगे रहना।

था, लेकिन एक जमाअत फ़त्वे के साथ मख़्सूस थी जो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में भी फ़त्वे का काम करती थी, वह हज़रात ज़ैल हैं- हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, उबई बिन कअब रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद, मुआज़ बिन जबल रज़ि० अम्मार बिन यासिर रज़ि०, हुज़ैफ़ा रज़ि०, सल्मान फ़ारसी रज़ि०, ज़ैद बिन साबित रज़ि०, अबूमूसा रज़ि०, अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।[1]

फ़– यह उन हज़रात के कमाले इल्म की बात है कि हुज़ूर सल्ल० की मौजूदगी में यह लोग अह्ले फ़त्वा शुमार किये जाते थे।

2. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का मज्मूए को जला देना

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मेरे बाप हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने पांच सौ अहादीस का एक ज़ख़ीरा जमा किया था। एक रात मैंने देखा कि वह निहायत बेचैन हैं, करवटें बदल रहे हैं। मुझे यह हालत देखकर बे-चैनी हुई। दर्याफ़्त किया कि कोई तक्लीफ़ है या कोई फ़िक्र की बात सुनने में आई है। ग़रज़ तमाम रात इसी बेचैनी में गुज़री और सुबह को फ़र्माया कि वह अहादीस, जो मैंने तेरे पास रखवा रखी हैं, उठा ला, मैं लेकर आयी। आपने उनको जला दिया। मैंने पूछा कि क्यों जला दिया? इर्शाद फ़र्माया कि मुझे अंदेशा हुआ कहीं ऐसा न हो कि मैं मर जाऊं और यह मेरे पास हों, इनमें दूसरों की सुनी हुई रिवायतें भी हैं कि मैंने मोतबर[2] समझा हो और वह वाक़िआ में मोतबर न हों, और उसकी रिवायत में कोई गड़-बड़ हो, जिसका वबाल मुझ पर हो।[3]

फ़– हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह तो इल्मी कमाल और शग़फ़ था कि उन्होंने पांच सौ अहादीस का एक रिसाला जमा किया और इसके बाद उसको जला देना यह कमाले एहतियात था।

अकाबिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का हदीस के बारे में एहतियात का यही हाल था। इसी वजह से अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायतें बहुत कम नक़ल की जाती हैं। हम लोगों को इस वाक़िए से सबक़ लेने की ज़रूरत है जो मिम्बरों

---

1. तल्क़ीह, 2. एतबार के क़ाबिल, 3. तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़,

पर बैठकर बे-धड़क अहादीस नक़ल कर देते है। हालांकि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हर वक़्त के हाज़िर बाश, सफ़र-हज़र के साथी, हिजरत के रफ़ीक़ थे।

सहाबा रज़ि० कहते हैं कि हम में बड़े आलिम हज़रत अबूबक्र रज़ि० थे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के विसाल के बाद जब बैअत का क़िस्सा पेश आया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़रीर फ़र्मायी तो कोई आयत और कोई हदीस ऐसी नहीं छोड़ी जिसमें अंसार की फ़ज़ीलत आयी हो और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी तक़रीर में न फ़र्मा दी हो। इससे अन्दाज़ा होता है कि क़ुरआन पाक पर कितना उबूर[1] था और अहादीस किस क़दर याद थीं, मगर फिर भी बहुत कम रिवायतें हदीस की आप से मन्क़ूल हैं। यही राज़ है कि हज़रत इमामे आज़म रज़ि० से भी हदीस की बहुत कम रिवायतें नक़ल की गई हैं।

3. तब्लीग़ हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि०

मुस्अब बिन उमैर रज़ि० जिनका एक क़िस्सा सातवें बाब में न० 5 पर भी गुज़र चुका है, उनको हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा की उस जमाअत के साथ, जो सबसे पहले मिना की घाटी में मुसलमान हुई थी, तालीम और दीन के सिखाने के लिए भेज दिया था। यह मदीना तैयबा में हर वक़्त तालीम और तब्लीग़ में मशग़ूल रहते, लोगों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाते और दीन की बातें सिखलाते थे। अस्अद बिन ज़ुरारा रज़ि० के पास इनका क़याम था और मुक़रई (पढ़ाने वाला, मुदर्रिस) के नाम से मशहूर हो गये थे।

सअद बिन मुआज़ और उसैद बिन हुज़ैर यह दोनों सरदारों में थे, उनको यह बात ना-गवार हुई। साद ने उसैद से कहा कि तुम अस्अद के पास जाओ और उनसे कहो कि हमने यह सुना है कि तुम किसी परदेसी को अपने साथ ले आये हो, जो हमारे ज़ईफ़ लोगों को बेवक़ूफ़ बनाता है, बहकाता है। वह अस्अद के पास गये और उनसे सख़्ती से यह गुफ़्तगू की। अस्अद रज़ि० ने कहा, तुम इनकी बात सुन लो, अगर पसन्द आये तो क़ुबूल कर लो, अगर सुनने के बाद ना-पसन्द हो तो रोकने का मुज़ाइक़ा नहीं। उसैद ने कहा कि यह इंसाफ़ की बात है। सुनने लगे। हज़रत

1. महारत

मुस्अब रज़ि० ने इस्लाम की ख़ूबियां सुनायीं और कलामुल्लाह शरीफ़ की आयतें तिलावत कीं।

हज़रत उसैद ने कहा, क्या ही अच्छी बातें हैं और क्या ही बेहतर कलाम है। जब तुम अपने दीन में किसी को दाख़िल करते हो तो किस तरह दाख़िल करते हो, उन्होंने कहा कि तुम नहाओ, पाक कपड़े पहनो और कलमा शहादत पढ़ो।

हज़रत उसैद रज़ि० ने उसी वक़्त सब काम किए और मुसलमान हो गये।

इसके बाद यह सअद के पास गये और उनको भी अपने हमराह लाये। उनसे भी यही गुफ़्तगू हुई। सअद बिन मुआज़ भी मुसलमान हो गए और मुसलमान होते ही अपनी क़ौम बनूल अश्हल के पास गये। उनसे जाकर कहा कि मैं तुम लोगों की निगाह में कैसा आदमी हूं। उन्होंने कहा कि हम में सबसे अफ़ज़ल और बेहतर हो। इस पर सअद ने कहा कि मुझे तुम्हारे मर्दों और औरतों से कलाम हराम है जब तक तुम मुसलमान न हो जाओ और मुहम्मद सल्ल० पर ईमान न लाओ।

उनके इस कहने से क़बीला अश्हल के सब मर्द-औरत मुसलमान हो गये और हज़रत मुसअब उनको तालीम देने में मशग़ूल हो गये।[1]

फ़०— सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का यह आम दस्तूर था कि जो शख़्स भी मुसलमान हो जाता वह मुस्तक़िल एक मुबल्लिग़ होता था और जो बात इस्लाम की उसको आती थी, उसका फैलाना और दूसरों तक पहुंचाना उसकी ज़िन्दगी का एक मुस्तक़िल काम था, जिसमें न खेती मानेअ[2] थी, न तिजारत, न पेशा, न मुलाज़मत।

4 हज़रत उबई बिन कअब रज़ि० की तालीम

हज़रत उबई बिन कअब मशहूर सहाबा रज़ि० और मशहूर क़ारियों में हैं। इस्लाम लाने से पहले से लिखना-पढ़ना जानते थे। अरब में लिखने का आम दस्तूर नहीं था इस्लाम के बाद से इसका चर्चा हुआ, लेकिन यह पहले से वाक़िफ़ थे। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रह कर वही भी लिखा

1. तल्क़ीह, 2. रुकावट

करते थे। क़ुरआन शरीफ़ के बड़े माहिर थे और उन लोगों में थे जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ज़िन्दगी में ही तमाम क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ कर लिया था। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत के बड़े क़ारी उबई बिन कअब हैं। तहज्जुद में आठ रातों में क़ुरआन पाक के ख़त्म करने का एहतमाम था। एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे इर्शाद फ़र्माया है कि तुम्हें क़ुरआन शरीफ़ सुनाऊं। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने मेरा नाम लेकर कहा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हां तुम्हारा नाम लेकर कहा। यह सुनकर फ़र्ते ख़ुशी[1] से रोने लगे।

ज़िक्र मेरा मुझ से बेहतर है कि उस महफ़िल में है।

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं मदीना तैयबा इल्म हासिल करने के लिए हाज़िर हुआ तो मस्जिदे नबवी में हदीस पढ़ाने वाले मुतअद्दद हज़रात थे और शागिर्दों के हल्के मुतफ़र्रिक़ तौर पर अलाहिदा-अलाहिदा हर उस्ताद के पास मौजूद थे। मैं इन हल्क़ों पर गुज़रता हुआ एक हल्के पर पहुंचा, जिसमें एक साहब मुसाफ़िराना हैअत के साथ सिर्फ़ दो कपड़े बदन पर डाले हुए बैठे हदीस पढ़ा रहे थे मैंने लोगों से दर्याफ़्त किया कि यह कौन बुज़ुर्ग है। बताया कि मुसलमानों के सरदार उबई बिन कअब रज़ि० हैं। मैं उनके हल्क़ा-ए-दर्स में बैठ गया। जब हदीस से फ़ारिग़ हुए तो घर जाने लगे। मैं भी पीछे हो लिया। वहाँ जाकर देखा, एक पुराना-सा-घर, ख़स्ता हालत, निहायत मामूली सामान, ज़ाहिदाना ज़िन्दगी।[2]

हज़रत उबई रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मेरा इम्तिहान लिया) इर्शाद फ़र्माया कि क़ुरआन शरीफ़ में सबसे बड़ी आयत (बरकत और फ़ज़्ल के एतबार से) कौन सी है। मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ही बेहतर जानते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा सवाल फ़र्माया, मुझे अब अदब मानेअ हुआ। मैंने फिर वही जवाब दिया। तीसरी मर्तबा फिर इर्शाद फ़र्माया। मैंने अर्ज़ किया, आयतल कुर्सी। हुज़ूर सल्ल० ख़ुश हुए और फ़र्माया, अल्लाह तुझे तेरा इल्म मुबारक करे।

एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ा रहे थे। एक आयत छूट गयी। हज़रत उबई रज़ि० ने नमाज़ में लुक़्मा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ के बाद इर्शाद फ़र्माया कि किसने बताया। हज़रत उबई रज़ि० ने अर्ज़ किया,

---

1. बहुत ज़्यादा ख़ुशी, 2. तब्क़ात।

मैंने बताया था, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मेरा भी यह गुमान था कि तुमने ही बताया होगा।[1]

फ़ – यह हज़रत उबई रज़ि०, बावजूद इस इल्मी शग़फ़ और क़ुरआन पाक की मख़्सूस ख़िदमात के, हुज़ूर सल्ल० के साथ हर ग़ज़्वा में शरीक हुए हैं। हुज़ूर सल्ल० का कोई जिहाद ऐसा नहीं, जिसमें उनकी शिर्कत न हुई हो।

5. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का एहतमामे फ़ितन

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० मशहूर सहाबा में हैं। साहिबुस्सिर (भेदी) उनका लक़ब है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुनाफ़िक़ीन और फ़ित्नों का इल्म इनको बताया था। कहते हैं कि ऐक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़यामत तक जितने फ़ित्ने आने वाले हैं, सबको नम्बरवार बताया था। कोई ऐसा फ़ित्ना जिसमें तीन सौ आदमियों के बक़द्र लोग शरीक हों, हुज़ूर सल्ल० ने नहीं छोड़ा, बल्कि इस फ़ित्ने का हाल और इसके मुक़्तदा[2] का हाल मय उसके नाम के नीज़ उसकी माँ का नाम, उसके बाप का नाम, उसके क़बीले का नाम, साफ़-साफ़ बता दिया था। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़र्माते हैं कि लोग हुज़ूर सल्ल० से ख़ैर की बातें दर्याफ़्त किया करते थे और मैं बुराई की बातें दर्याफ़्त किया करता था ताकि उससे बचा जाए।

एक मर्तबा मैंने दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह ! यह ख़ैर व ख़ूबी, जिस पर आजकल आपकी बरकत से हम लोग हैं, इसके बाद भी कोई बुराई आने वाली है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हां बुराई आने वाली है। मैंने अर्ज़ किया कि इस बुराई के बाद फिर भलाई लौटकर आयेगी या नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हुज़ैफ़ा ! अल्लाह का कलाम पढ़ और उसके मआनी पर ग़ौर कर, उसके अह्काम की इत्तिबाअ[3] कर (मुझे फ़िक्र सवार था) मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! इस बुराई के बाद भलाई होगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हां, फिर भलाई होगी, लेकिन दिल ऐसे नहीं होंगे, जैसे पहले थे, मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! इस भलाई के बाद फिर बुराई होगी? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हां ऐसे लोग पैदा हो जाएंगे जो आदमियों को गुमराह करेंगे और जहन्नम की तरफ़ ले जाएंगे। मैंने अर्ज़ किया अगर मैं उस ज़माने को पाऊं तो क्या करूं ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर मुसलमानों की कोई मुत्तहिदा जमाअत

1. मसनद अहमद, 2. जिसकी पैरवी की जाए, 3. पैरवी,

हो और उनका कोई बादशाह हो तो उसके साथ हो जाना वरना इन सब फ़िर्कों को छोड़कर एक कोने में अलाहिदा बैठ जाना या किसी दरख़्त की जड़ में जाकर बैठ जाना और मरने तक वहीं बैठे रहना। चूंकि उनको मुनाफ़िक़ों का हाल हुज़ूर सल्ल० ने सबका बतला दिया था, इसलिए हज़रत उमर रज़ि० उनसे दर्याफ़्त फ़र्माया करते थे कि मेरे हुक्काम में कोई मुनाफ़िक़ तो नहीं। एक मर्तबा उन्होंने अर्ज़ किया कि एक मुनाफ़िक़ है, मगर मैं नाम नहीं बताऊंगा। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको माज़ूल[1] कर दिया। ग़ालिबन अपनी फ़रासत[2] से पहचान लिया होगा। जब कोई शख़्स मर जाता तो हज़रत उमर रज़ि० तहक़ीक़ फ़र्माते कि हुज़ैफ़ा रज़ि० उनके जनाज़े में शरीक हैं या नहीं। अगर हुज़ैफ़ा रज़ि० शरीक होते तो हज़रत उमर रज़ि० भी नमाज़ पढ़ते, वरना वह भी न पढ़ते। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का जब इंतिक़ाल होने लगा, तो निहायत घबराहट और बेचैनी में रो रहे थे। लोगों ने दर्याफ़्त किया, फ़र्माया, दुनिया के छूटने पर नहीं रो रहा हूं, बल्कि मौत तो मुझे महबूब है अल-बत्ता इस पर रो रहा हूं कि मुझे इसकी ख़बर नहीं कि मैं अल्लाह की नाराज़ी पर जा रहा हूं या ख़ुशनूदी पर। इसके बाद कहा कि यह मेरी दुनिया की आख़िरी घड़ी है या अल्लाह ! तुझे मालूम है कि मुझे तुझ से मुहब्बत हैं, इसलिए अपनी मुलाक़ात में बर्कत अता फ़र्मा।[3]

6. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० का अहादीस को हिफ़्ज़ करना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० निहायत मशहूर और जलीलुलक़द्र सहाबी हैं और इतनी कसरत से उनसे हदीसें नक़ल हैं कि किसी दूसरे सहाबी से इतनी ज़्यादा नक़ल की हुई मौजूद नहीं है, इस पर लोगों को ताज्जुब होता था कि सन् 7 हि० में यह मुसलमान होकर तशरीफ़ लाए और सन् 11 हि० में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया। इतनी क़लील मुद्दत में तक़रीबन चार वर्ष होती है. इतनी ज़्यादा हदीसें कैसे याद हुई, ख़ुद हज़रत अबूहुरैरह इसकी वजह बताते हैं। फ़र्माते हैं कि लोग कहते हैं कि अबूहुरैरह (रज़ि०) बहुत रिवायतें नक़ल करते हैं, मेरे मुहाजिर भाई तिजारत पेशा थे, बाज़ार में आना जाना पड़ता था और मेरे अन्सारी भाई खेती का काम करते थे। इसकी मशग़ूली उनको दरपेश रहती थी और अबू हुरैरह रज़ि० अस्हाबे सुफ़्फ़ा के मसाकीन में से एक मिस्कीन था जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि

1. निकाल दिया, 2. ज़ेहन, अक़्ल 3. अबूदाऊद, असदुलग़ाबा।

व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में जो कुछ खाने को मिल जाता था उस पर क़नाअत किये पड़ा रहता था ऐसे औक़ात में मौजूद होता था, जिसमें वह नहीं होते थे और ऐसी चीज़ें याद कर लेता था जिनको वह याद नहीं कर सकते थे। एक मर्तबा मैंने हुज़ूर सल्ल० से हाफ़िज़े की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, चादर बिछा, मैंने चादर बिछायी। हुज़ूर ने दोनों हाथों से उसमें कुछ इशारा फ़र्माया। इसके बाद फ़र्माया, इस चादर को मिला ले। मैंने अपने सीने से मिला लिया। इसके बाद से कोई चीज़ नहीं भूला।[1]

फ़— अस्हाबे सुफ़्फ़ा वह लोग कहलाते हैं जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गोया ख़ानक़ाह के रहने वाले थे। इन हज़रात के इख़्राजात[2] का कोई ख़ास नज़्म नहीं था, गोया हुज़ूर सल्ल० के मेहमान थे, जो कहीं से कुछ हदिया या सदक़े के तौर पर आता, इस पर उनका ज़्यादातर गुज़र था। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० भी उन्हीं लोगों में थे। बसा औक़ात[3] कई-कई वक़्त के फ़ाक़े भी उन पर गुज़र जाते थे। बाज़ औक़ात भूख की वजह से जुनून की-सी हालत हो जाती थी जैसा कि तीसरे बाब के क़िस्से न० 3 व न० 7 में गुज़रा, लेकिन इसके बावजूद अहादीस का कसरत से याद करना उनका मश्ग़ला था, जिसकी बदौलत आज सब से ज़्यादा अहादीस उन्हीं की बतलाई जाती हैं।

इब्ने जौज़ी रह० ने 'तल्क़ीह' में लिखा है कि पांच हज़ार तीन सौ चौहत्तर (5374) हदीसें उन से मर्वी हैं।

एक मर्तबा हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने जनाज़े के मुताल्लिक़ एक हदीस बयान की कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स जनाज़े की नमाज़ पढ़ कर वापस आ जाए उस को एक क़ीरात सवाब मिलता है और जो दफ़न तक शरीक रहे, उसको दो क़ीरात सवाब मिलता है और क़ीरात की मिक़्दार उहद के पहाड़ से भी ज़्यादा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को इस हदीस में कुछ तरद्दुद हुआ। उन्होंने फ़र्माया, अबूहुरैरह रज़ि० ! सोच कर कहो।

उनको गुस्सा आ गया। सीधे हज़रत आइशा रज़ि० के पास गए और जाकर अर्ज़ किया कि मैं आपको क़सम देकर पूछता हूं, यह क़ीरात वाली हदीस आपने हुज़ूर

---

1. बुख़ारी, 2. ख़र्चे, 3. कभी-कभी।

सल्ल० से सुनी है ? उन्होंने फ़र्माया, हां सुनी है।

अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माने लगे कि मुझे हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में न तो बाग़ में कोई दरख़्त लगाना था, न बाज़ार में माल बेचना था। मैं तो हुज़ूर रज़ि० के दरबार में पड़ा रहता था और सिर्फ़ यह काम था कि कोई बात याद करने को मिल जाए या कुछ खाने को मिल जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़र्माया, बेशक तुम हम लोगों से ज़्यादा हाज़िर बाश थे और अहादीस को ज़्यादा जानने वाले थे।

इसके साथ ही अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैं बारह हज़ार मर्तबा रोज़ाना इस्तग़्फ़ार पढ़ता हूं और एक तागा उनके पास था, जिसमें एक हज़ार गिरह लगी हुई थी। रात को उस वक़्त तक नहीं सोते थे जब तक उसको सुब्हानअल्लाह के साथ पूरा न कर लेते थे।

7. क़त्ले मुसैलिमा व क़ुरआन का जमा करना

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद मुसैलिमा कज़्ज़ाब[1] का, जिसने हुज़ूर सल्ल० के सामने ही नुबूवत का दावा कर दिया था, असर बढ़ने लगा चूंकि अरब में इर्तिदाद[2] भी ज़ोर-शोर से शुरू हो गया था, इससे उसको और भी तक़्वियत पहुंची। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने उससे लड़ाई की। हक़ तआला शानुहू ने इस्लाम को क़ुव्वत[3] अता फ़र्मायी मुसैलिमा क़त्ल हुआ। लेकिन इस लड़ाई में सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की भी एक बड़ी जमाअत शहीद हुई बिलख़ुसुस क़ुराने पाक के हाफ़िज़ों की एक बड़ी जमाअत शहीद हुई। हज़रत उमर रज़ि० अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अर्ज़ किया कि इस लड़ाई में क़ारी[4] बहुत शहीद हो गये। अगर इसी तरह एक दो लड़ाई में और शहीद हो गए तो क़ुरआन पाक का बहुत सा हिस्सा ज़ाया हो जाने का अंदेशा है, इसलिए उसको एक जगह लिखवा कर महफ़ूज़ कर लिया जाए।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़र्माया, ऐसे काम की कैसे जुर्अत करते हो, जिसको कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया, हज़रत उमर रज़ि० इस पर इस्रार फ़र्माते रहे और ज़रूरत का इज़्हार करते रहे, बिल आख़िर हज़रत

1. झूठा, 2. दीन से फिर जाना, 3. ताक़त, 4. क़िरअत (क़ुरआन पाठ) करने वाले।

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की राय भी मुवाफ़िक़ हो गई तो हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को, जिन का क़िस्सा बाब 11 क़िस्सा 18 पर आ रहा है, बुलाया।

ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत उमर रज़ि० भी तशरीफ़ रखते थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अव्वल अपनी और हज़रत उमर रज़ि० की सारी गुफ़्तगू नक़ल फ़र्मायी। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि तुम जवान हो और दानिशमन्द, तुम पर किसी क़िस्म की बद-गुमानी भी नहीं और इन सब बातों के अलावा यह कि ख़ुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में भी तुम वही के लिखने पर मामूर रह चुके हो। इसलिए इस काम को तुम करो लोगों के पास से क़ुरआन पाक जमा करो और उसको एक जगह नक़ल कर दो।

ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम अगर मुझे यह हुक्म फ़र्माते कि फ़्लां पहाड़ को तोड़कर इधर से उधर मुंतक़िल कर दो यह हुक्म भी मेरे लिए क़ुरआन पाक जमा करने के हुक्म से सह्ल था। मैंने अर्ज़ किया कि आप हज़रात ऐसा काम किस तरह कर रहे हैं, जिसको हुज़ूर सल्ल० ने नहीं किया। वह हज़रात मुझे समझाते रहे।

एक हदीस में आया है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने ज़ैद रज़ि० से कहा कि अगर तुम उमर रज़ि० की मुवाफ़िक़त करो तो मैं इसका हुक्म दूं और नहीं तो फिर मैं भी इरादा न करूं।

ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं कि तवील गुफ़्तगू के बाद हक़ तआला शानुहू ने मेरा भी उसी जानिब शरहे सद्र[1] फ़र्मा दिया कि क़ुरआन पाक को यकजा जमा किया जाए। चुनांचे मैंने तामील इर्शाद में लोगों के पास जो क़ुरआन शरीफ़ मुतफ़र्रिक़ तौर पर लिखा हुआ था और जो इन हज़रात सहाबा किराम के सीनों में भी महफ़ूज़ था, सब को तलाश करके जमा किया।[2]

फ़— इस क़िस्से में अव्वल तो इन हज़रात के इत्तिबाअ का एहतमाम मालूम होता है कि पहाड़ का मुंतक़िल करना उनके लिए इससे सह्ल था कि कोई ऐसा काम किया जाए जिसको हुज़ूर सल्ल० ने नहीं किया। इसके बाद कलाम पाक का जमा करना जो दीन की असल है, अल्लाह ने इन हज़रात के आमालनामे में रखा था।

---

1. सीना खोल दिया, 2. बुख़ारी,

फिर हज़रत ज़ैद रज़ि० ने इतना एहतमाम इसके जमा फ़र्माने में किया कि कोई आयत बग़ैर लिखी हुई नहीं लेते थे जो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने की लिखी हुई थीं, उन्हीं से जमा करते थे और हुफ़्फ़ाज़ के सीनों से उसका मुक़ाबला करते थे और चूंकि तमाम क़ुरआन शरीफ़ मुतफ़र्रिक़ जगहों में लिखा हुआ था, इसलिए उसकी तलाश में गो मेहनत ज़रूर करनी पड़ी, मगर सब मिल गया।

उबई बिन कअब रज़ि० जिनको ख़ुद हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरआन पाक का सबसे ज़्यादा माहिर बताया, उनकी इआनत[1] करते थे, इस मेहनत से कलामुल्लाह शरीफ़ को इन हज़रात ने सबसे पहले जमा फ़र्माया।

8. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० की एहतियात रिवायते हदीस में

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० बड़े मशहूर सहाबा में हैं और उन सहाबा में शुमार है जो फ़त्वे के मालिक थे। इब्तिदा-ए-इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे और हब्शा की हिजरत भी की थी। तमाम गज़वात[2] में हुज़ूर सल्ल० के साथ शरीक रहे हैं और मख़्सूस ख़ादिम होने की वजह से साहिबुन्नअल, साहिबुल विसादः, साहिबुल मुतह्हरः (जूते वाले, तकिए वाले, वुज़ू के पानी वाले) अल्क़ाब भी उनके हैं, इसलिए कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह ख़िदमतें अक्सर इनके सुपुर्द रहती थीं, हुज़ूर सल्ल० का उनके बारे में यह भी इर्शाद है कि अगर मैं किसी को बग़ैर मश्वरा अमीर बनाऊं तो अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद को बनाऊं। हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद था कि तुम्हें हर वक़्त हाज़िरी की इजाज़त है। हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद है कि जिस शख़्स को क़ुरआन शरीफ़ बिल्कुल ऐसी तरह पढ़ना हो, जिस तरीक़े से उतरा है तो अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के तरीक़े के मुवाफ़िक़ पढ़े।[4]

हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद है कि इब्ने मस्ऊद रज़ि० जो हदीस तुम से बयान करें, उस को सच समझो।

अबूमूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि हम लोग जब यमन से आये तो एक ज़माने तक इब्ने मस्ऊद को अह्लेबैत में से समझते रहे, इसलिए कि इतनी कसरत

1. मदद, 2. लड़ाइयों, 3. आना-जाना, 4. बुख़ारी

से उनकी और उनकी वालिदा की आमद व रफ़्त हुज़ूर सल्ल० के घर में थी जैसी घर के आदमियों की होती है।

लेकिन इन सब बातों के बावजूद अबूअम्र शैबानी रज़ि कहते हैं कि मैं एक साल तक इब्ने मस्ऊद रज़ि० के पास रहा। मैंने कभी उनको हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मंसूब कर के बात करते नहीं सुना, लेकिन कभी अगर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ कोई बात मंसूब कर देते थे तो बदन पर कपकपी आ जाती थी।

अम्र बिन मैमून रज़ि० कहते हैं कि मैं हर जुमेरात को एक साल तक इब्ने मस्ऊद रज़ि० के पास आता रहा। मैंने कभी हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ निस्बत करके बात करते नहीं सुना, एक मर्तबा हदीस बयान फ़र्माते हुए ज़बान पर यह जारी हो गया कि हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फ़र्माया तो बदन कांप गया, आंखों में आंसू भर आये, पेशानी पर पसीना आ गया, रगें फूल गयीं और फ़र्माया, इन्शाअल्लाह यही फ़र्माया था या इसके क़रीब-क़रीब था या इससे कुछ ज़्यादा या इससे कुछ कम।[1]

फ़— यह थी उन हज़रात सहाबा किराम रज़ि० की एहतियात हदीस शरीफ़ के बारे में, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो मेरी तरफ़ से झूठ नक़ल करे, अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले, इस ख़ौफ़ की वजह से यह हज़रात बावजूदे कि मसाइल हुज़ूर सल्ल० के इर्शादात और हालात ही से बताते थे, मगर यह नहीं कहते थे कि हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद है कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता झूठ न निकल जाए। इसके बिल मुक़ाबिल हम अपनी हालतें देखते हैं कि बे धड़क, बे-तहक़ीक़ हदीस नक़ल कर देते हैं, ज़रा भी नहीं झिझकते, हालांकि हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मंसूब करके बात का नक़ल करना बड़ी सख़्त ज़िम्मेदारी है। फ़िक़्हे हन्फ़ी इन्हीं अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से ज़्यादातर लिया गया है।

9. हज़रत अबूदर्दा रज़ि० के पास हदीस के लिए जाना

कसीर बिन कैस रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास दमिश्क़ की मस्जिद में बैठा हुआ था। एक शख़्स उनकी ख़िदमत में आये और कहा कि मैं मदीना मुनव्वरा से सिर्फ़ एक हदीस की वजह से आया हूं। मैंने सुना

1. मुक़द्दमा अवजज़, मस्नद अहमद,

है कि यह आपने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है।

अबूदर्दा रज़ि० ने पूछा, कोई और तिजारती काम नहीं था ?

उन्होंने कहा नहीं।

अबूदर्दा रज़ि० ने फिर पूछा, ऐसी कोई दूसरी ग़रज़ तो न थी ?

कहा नहीं, सिर्फ़ हदीस ही मालूम करने के लिए आया हूं।

अबूदर्दा रज़ि ने फ़र्माया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो शख़्स कोई रास्ता इल्म हासिल करने के लिए चलता है, हक़ तआला शानुहू उसके लिए जन्नत का रास्ता सह्ल फ़र्मा देते हैं और फ़रिश्ते अपने पर तालिबे इल्म की ख़ुश्नूदी के वास्ते बिछा देते हैं, और तालिबे इल्म के लिए आसमान-ज़मीन के रहने वाले इस्तिग़फ़ार करते हैं, हत्ताकि मछलियां जो पानी में रहती हैं वह भी इस्तिग़फ़ार करती हैं, और आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसा कि चांद की फ़ज़ीलत तमाम सितारों पर है और उलमा अंबिया के वारिस हैं। अंबिया अलैहिस्सातु वस्सलाम किसी को दीनार व दिरहम का वारिस नहीं बनाते, बल्कि इल्म का वारिस बनाते हैं। जो शख़्स इल्म को हासिल करता है, वह एक बड़ी दौलत को हासिल करता है।[1]

फ़ – हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़ुक़्हा-ए-**सहाबा** रज़ि० में हैं, हकीमुल उम्मत कहलाते हैं। फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की नुबूवत **के वक़्त** में तिजारत किया करता था। मैंने मुसलमान होने के बाद चाहा कि तिजारत और इबादत दोनों को जमा करूं, मगर दोनों इकट्ठी न रह सकीं, तो मुझे तिजारत छोड़ना पड़ी। अब मेरा दिल यह भी गवारा नहीं करता कि बिल्कुल दरवाज़े ही पर दुकान हो, जिसकी वजह से एक भी नमाज़ फ़ौत न हो और रोज़ाना चालीस दीनार का नफ़ा हो और मैं इन सबको सदक़ा कर दूं। किसी ने पूछा ऐसी तिजारत से क्यों ख़फ़ा हुए कि नमाज़ भी न जाए और इतना नफ़ा रोज़ाना का अल्लाह के रास्ते में ख़र्च हो, फिर भी पसन्द नहीं करते। फ़र्माया हिसाब तो देना ही पड़ेगा।

अबूदर्दा रज़ि० यह भी फ़र्माते हैं कि मुझे मौत से मुहब्बत है। अपने मौला से मुलाक़ात के शौक़ में और फ़क़्र से मुहब्बत है तवाज़ो[2] के वास्ते और बीमारी से मुहब्बत है गुनाह धुलने के वास्ते।[3]

---

1. इब्नेमाजा, 2. आजिज़ी और नर्मी, 3. तज़्किरा।

ऊपर के क़िस्से में एक हदीस की खातिर इतना तवील सफ़र किया है। इन हज़रात के यहां हदीस हासिल करने के लिए सफ़र करना कुछ अहम नहीं था एक-एक हदीस सुनने और मालूम करने के लिए दूर-दूर का सफ़र तै कर लेना इन हज़रात को बहुत सह्ल था।

शअबी रह० एक मशहूर मुहद्दिस हैं। कूफ़ा के रहने वाले हैं। अपने किसी शागिर्द को एक मर्तबा हदीस सुनाई और फ़र्माया कि ले घर बैठे मुफ़्त मिल गई, वरना इससे कम के लिए भी मदीना मुनव्वरा का सफ़र करना पड़ता था कि इब्तिदा में हदीस का मख़्ज़न[1] मदीना तैयबा ही था। इल्मी शग़फ़ रखने वाले हज़रात ने बड़े-बड़े तवील सफ़र इल्म की ख़ातिर इख़्तियार फ़र्माये हैं।

सईद बिनुल मुसय्यिब रह० जो एक मशहूर ताबई हैं, कहते हैं कि मैं एक-एक हदीस की ख़ातिर रातों और दिनों पैदल चला हूं।

इमामुल अइम्मा इमाम बुख़ारी रह० शव्वाल सन् 194 हि० में पैदा हुए। सन् 205 हि० में यानी ग्यारह साल की उम्र में हदीस पढ़ना शुरू की थी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की सब तसानीफ़[2] बचपन ही में हिफ़्ज़ कर ली थीं। अपने शहर में जितनी अहादीस मिल सकीं, उनको हासिल कर लेने के बाद 216 हि० में सफ़र शुरू किया। वालिद का इंतिक़ाल हो चुका था, इस वजह से यतीम थे। वालिदा सफ़र में साथ थीं, इसके बाद बल्ख़, बग़दाद, मक्का मुकर्रमा, बसरा, कूफ़ा, शाम, अस्क़लान, हिम्स, दमिश्क़, इन शहरों में गये और हर जगह जो ज़ख़ीरा हदीस का मिल सका, हासिल फ़र्माया और ऐसी नव उम्री में उस्तादे हदीस बन गये थे कि मुंह पर दाढ़ी का एक बाल भी नहीं निकला था। कहते हैं कि मेरी अठारह वर्ष की उम्र थी, जब मैंने सहाबा रज़ि० और ताबईन के फ़ैसले तस्नीफ़ किये।

हाशिद रह० और उनके एक साथी कहते हैं कि इमाम बुख़ारी रह० हम लोगों के साथ उस्ताद के पास जाया करते। हम लोग लिखते और बुख़ारी रह० वैसे ही वापस आ जाते। हमने कई रोज़ गुज़र जाने पर उन से कहा कि तुम वक़्त ज़ाया करते हो, वह चुप हो गये। जब कई मर्तबा कहा, तो कहने लगे तुमने दिक़ ही कर दिया। लाओ तुमने क्या लिखा। हमने अपना मजमूआ-ए-अहादीस निकाला जो पन्द्रह हज़ार हदीसों से ज़्यादा मिक़दार में था। उन्होंने इन सब को हिफ़्ज़ सुना दिया, हम दंग रह गये।

---

1. जहां ख़ज़ाना मिले, 2. किताबें।

10. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का अंसारी के पास जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद मैंने एक अंसारी से कहा कि हुज़ूर सल्ल० का तो विसाल हो गया, अभी तक सहाबा किराम रज़ि० की बड़ी जमाअत मौजूद है। आओ, उन से पूछ-पूछ कर मसाइल याद करें। इन अंसारी ने कहा, क्या इन सहाबा किराम की जमाअत के होते हुए भी लोग तुम से मस्अला पूछने आयेंगे। सहाबा रज़ि० की बहुत बड़ी जमाअत मौजूद है। ग़रज़ उन साहब ने तो हिम्मत नहीं की। मैं मसाइल के पीछे पड़ गया और जिन साहब के मुताल्लिक़ भी मुझे इल्म होता कि फ़्लां हदीस उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से सुनी है, उनके पास जाता और तहक़ीक़ करता। मुझे मसाइल का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा अंसार से मिला। बाज़ लोगों के पास जाता और मालूम होता कि वह सो रहे हैं तो अपनी चादर वहीं चौखट पर रख कर इन्तिज़ार में बैठ जाते, गो हवा से मुंह पर और बदन पर मिट्टी भी पड़ती रहती, मगर मैं वहीं बैठा रहता। जब वह उठते तो जिस बात को मालूम करना था, वह दर्याफ़्त करता।

वह हज़रात कहते भी कि तुमने हुज़ूर सल्ल० के चचाज़ाद भाई होकर क्यों तक्लीफ़ की, मुझे बुला लेते, मगर मैं कहता कि मैं इल्म हासिल करने वाला हूं, इसलिए मैं ही हाज़िर होने का ज़्यादा मुस्तहिक़ था। बाज़ हज़रात पूछते कि तुम कब से बैठे हो, मैं कहता बहुत देर से। वह कहते कि तुमने बुरा किया, मुझे इत्तिला कर देते। मैं कहता, मेरा दिल न चाहा कि तुम मेरी वजह से अपनी ज़रूरियात से फ़ारिग़ होने से पहले आओ, हत्ताकि एक वक़्त में यह नौबत भी आई कि लोग इल्म हासिल करने के वास्ते मेरे पास जमा होने लगे। तब उन अंसारी साहब को भी क़लक़ हुआ, कहने लगे कि यह लड़का हम से ज़्यादा होशियार था।[1]

फ़- यही चीज़ थी, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०[2] को अपने वक़्त में हिब्रुल उम्मत और बहरुल इल्म का लक़ब दिलवाया जब उनका विसाल हुआ तो तायफ़ में थे। हज़रत अली रज़ि० के साहबज़ादे मुहम्मद ने जनाज़े की नमाज़

---

1. दारमी, 2. मुख़्तलिफ़ इल्मी कारनामे।

पढ़ाई और फ़र्माया कि इस उम्मत का इमाम रब्बानी आज रुख़्सत हुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि इब्ने अब्बास रज़ि० आयतों के शाने नुज़ूल जान्ने में सब से मुम्ताज़ हैं। हज़रत उमर रज़ि० उनको उलमा की मुमताज़ सफ़ में जगह देते थे। यह सब इसी जाफ़शानी का समरा[1] था, वरना अगर यह साहबज़ादगी के ज़ोओम[2] में रहते तो यह मरातिब[3] कैसे हासिल होते ? खुद आक़ा-ए-नामदार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिन से इल्म हासिल करो, उनके साथ तवाज़ो से पेश आओ।

बुख़ारी में मुजाहिद रह० से नक़ल किया है कि जो शख़्स पढ़ने में हया करे या तकब्बुर करे वह इल्म हासिल नहीं कर सकता।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि जिस शख़्स ने मुझको एक हर्फ़ भी पढ़ा दिया, मैं उसका ग़ुलाम हूं, ख़्वाह वह मुझे आज़ाद कर दे या बेच दे।

यह्या बिन कसीर रह० कहते हैं कि इल्म तन परवरी[4] के साथ हासिल नहीं होता।

इमाम शाफ़ई रह० का इर्शाद है कि जो शख़्स इल्म को बेदिली और इस्तग़्ना[5] के साथ हासिल करे, वह कामियाब नहीं हो सकता। हां, जो शख़्स ख़ाकसारी और तंगदस्ती के साथ हासिल करना चाहे, वह कामियाब हो सकता है।

मुग़ीरह रह० कहते हैं कि हम लोग अपने उस्ताद इब्राहीम रह० से ऐसे डरते थे, जैसा कि बादशाह से डरा करते हैं।

यह्या बिन मुईन रह० बहुत बड़े मुहद्दिस हैं। इमाम बुख़ारी रह० उनके मुताल्लिक़ कहते हैं कि मुहद्दिसीन का जितना एहतराम वह करते थे, उतना किसी दूसरे को करते मैंने नहीं देखा।

इमाम अबूयूसुफ़ रह० कहते हैं कि मैंने बुज़ुर्गों से सुना है कि जो उस्ताद की क़द्र नहीं करता, वह कामियाब नहीं होता।

इस क़िस्से में जहां हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के असातज़ा[6] के साथ तवाज़ो और इंकिसारी मालूम होती है, उसके साथ ही इल्म का शग़्फ़ और

1. फल, 2. घमंड, 3. रुत्बे, 4. सुख-सुविधा, 5. बे-नियाज़ी, 6. उस्तादों।

एहतमाम भी मालूम होता है कि जिस शख़्स के पास किसी हदीस का होना मालूम होता, फ़ौरन जाते, उसको हासिल फ़र्माते, ख़्वाह उसमें कितनी ही मशक़्क़त, मेहनत और तक्लीफ़ उठानी पड़ती और हक़ यह है कि बे-मेहनत और मशक़्क़त के इल्म तो दर किनार[1] मामूली सी चीज़ भी हासिल नहीं होती और यह तो ज़र्बल मसल[2] है, मन त ल बल उला सहरल्लयाली (जो शख़्स बुलन्द मर्तबा का तालिब होगा, रातों को जागेगा)

हारिस बिन यज़ीद, इब्ने शब्रमा, क़अक़ाअ, मुग़ीरह रज़ि० चारों हज़रात इशा की नमाज़ के बाद इल्मी बहस शुरू करते थे। सुबह की अज़ान तक एक भी जुदा न होता।

लैस बिन सअद रज़ि० कहते हैं कि इमाम ज़ोहरी रह० इशा के बाद बा वज़ू बैठ कर हदीस का सिलसिला शुरू फ़र्माते तो सुबह कर देते।[3]

दरावरदी रह० कहते हैं कि इमाम अबूहनीफ़ा रज़ि० और इमाम मालिक रज़ि० को मैंने देखा कि मस्जिदे नबवी में इशा के बाद से एक मस्अले में बहस शुरू फ़र्माते और वह भी इस तरह कि न कोई तान तश्नीअ होती, न तग़लीत[4] और इसी हालत में सुबह हो जाती, और इसी जगह सुबह की नमाज़ पढ़ते।[5]

इब्ने फ़ुरात बग़दादी रह० एक मुहद्दिस हैं। जब इंतिक़ाल हुआ तो अठारह सन्दूक़ किताबों के छोड़े, जिनमें से अक्सर खुद अपने क़लम की लिखी हुई थीं और कमाल यह है कि मुहद्दिसीन के नज़दीक सेहते नक़ल और उम्दगी-ए-ज़ब्त के ऐतबार से उनका लिखा हुआ हुज्जत भी है।

इब्ने जौज़ी रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। तीन साल की उम्र में बाप ने मुफ़ारक़त[6] की। यतीमी की हालत में परवरिश पाई लेकिन मेहनत की हालत यह थी कि जुमा की नमाज़ के अलावा घर से दूर नहीं जाते थे। एक मर्तबा मेम्बर पर कहा कि मैंने अपनी इन उंगलियों से दो हज़ार जिल्दें लिखी हैं। ढाई सौ से ज़्यादा खुद इनकी अपनी तस्नीफ़ात[7] हैं। कहते हैं कि कोई वक़्त ज़ाया नहीं जाता था। चार जुज़ रोज़ाना लिखने का मामूल था। दर्स का यह आलम था कि मज्लिस में बाज़ मर्तबा एक लाख से ज़्यादा शागिर्दों का अन्दाज़ा किया गया। उमरा, वुज़रा, सलातीन[8] तक मज्लिसे दर्स में हाज़िर होते थे।

---

1. दूर रहा, 2. कहावत, 3. दारमी, 4. ग़लत करना, 5. मुक़दमा, 6. वफ़ात हो गयी, 7. किताबें, 8. सरदार, वज़ीर, बादशाह,

इब्ने जौज़ी रह० खुद फ़र्माते हैं कि एक लाख आदमी मुझ से बैअत हुए और बीस हज़ार मेरे हाथ पर मुसलमान हुए हैं। इस सबके बावजूद शीओं का ज़ोर था। इस वजह से तक्लीफ़ें भी उठानी पड़ीं।[1] अहादीस लिखने के वक़्त में क़ल्मों का तराशा जमा करते रहे थे। मरते वक़्त वसीयत की थी कि मेरे नहाने का पानी इसी से गर्म किया जाए। कहते हैं कि सिर्फ़ गुस्ले मैय्यत का पानी गर्म करने ही के लिए काफ़ी न था, बल्कि गर्म करने के बाद बच भी गया था।

यह्या बिन मुईन रह० हदीस के मशहूर उस्ताद हैं। कहते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से दस लाख हदीसें लिखी हैं।

इब्ने जरीर तबरी रज़ि० मशहूर मुवर्रिख़[2] हैं। सहाबा रज़ि० और ताबओन रह० के अस्वाल के माहिर चालीस साल तक हमेशा चालीस वर्क़ रोज़ाना लिखने का मामूल था। उनके इंतिक़ाल पर शागिर्दों ने रोज़ाना की लिखाई का हिसाब लगाया तो बुलूग़ के बाद से मरने तक चौदह बरक़ रोज़ाना का औसत निकला। उनकी तारीख़ मशहूर है, आमतौर से मिलती है। जब इस की तस्नीफ़ का इरादा ज़ाहिर किया तो लोगों से पूछा कि तमाम आलम की तारीख़ से तो तुम लोग बहुत खुश होगे।

लोगों ने पूछा कि अन्दाज़न कितनी बड़ी होगी ?

कहने लगे कि तक़रीबन तीस हज़ार वरक़ (पन्ना) पर आयेगी।

लोगों ने कहा कि उसके पूरा करने से पहले उम्रें फ़ना हो जायेंगी।

कहने लगे कि इन्नालिल्लाहि हिम्मतें पस्त हो गई।

उसके बद मुख़्तसर किया और तक़रीबन तीन हज़ार वरक़ पर लिखी।

इसी तरह उनकी तफ़्सीर का भी क़िस्सा हुआ, वह भी मशहूर है, और आम तौर से मिलती है।

दारे क़ुत्नी हदीस के मशहूर मुसन्निफ़ हैं। हदीस हासिल करने के लिए बग़दाद, बसरा, कूफ़ा, वासित, मिस्र और शाम का सफ़र किया।

एक बार उस्ताद की मज्लिस में बैठे थे। उस्ताद पढ़ रहे थे, और यह कोई किताब नक़ल कर रहे थे। एक साथी ने एतराज़ किया कि तुम दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो, कहने लगे कि मेरी और तुम्हारी तवज्जुह में फ़र्क़ है। बताओ उस्ताद ने अब तक कितनी हदीसें सुनाईं। वह सोचने लगे। दारे क़ुत्नी रह० ने कहा कि शेख़ ने अठारह हदीसें सुनाई हैं पहली यह थी, दूसरी यह थी, इसी तरह तर्तीबवार सब की सब मय

1. तज़्किरा, 2. तारीख़ लिखने वाले।

सनद के सुना दीं।

हाफ़िज़ असरम एक मुहद्दिस हैं। अहादीस के याद करने में बड़े मश्शाक़[1] थे। एक मर्तबा हज को तशरीफ़ ले गये। वहां ख़ुरासान के दो बड़े उस्तादे हदीस आये हुए थे और हरम शरीफ़ में दोनों अलाहिदा-अलाहिदा दर्स दे रहे थे। हर एक के पास पढ़ने वालों का एक बड़ा मज्मा मौजूद था। यह दोनों के दर्मियान में बैठ गये और दोनों की हदीसें एक ही वक़्त में लिख डालीं।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। हदीस हासिल करने में उनकी मेहनतें मशहूर हैं। ख़ुद कहते हैं कि मैंने चार हज़ार उस्तादों से हदीस हासिल की हैं।

अली बिन हसन रह० कहते हैं कि एक रात सख़्त सर्दी थी। मैं और इब्ने मुबारक रह० मस्जिद से इशा के बाद निकले। दरवाज़े पर एक हदीस में गुफ़्तगू शुरू हो गयी, मैं कुछ कहता रहा, यह भी फ़र्माते रहे। वहीं खड़े-खड़े सुबह की अज़ान हो गई।

हुमैदी रह० एक मशहूर मुहद्दिस हैं, जिन्होंने बुख़ारी और मुस्लिम की अहादीस को एक जगह जमा भी किया है। रात भर लिखते थे और गर्मी के मौसम में जब गर्मी बहुत सताती तो एक लगन में पानी भर लेते और उसमें बैठ कर लिखते, सब से अलग रहते थे। शाइर भी हैं, उनके शेर हैं :-

لقاء الناس ليس يفيد شيئا سوى الهذيان من قيل وقال
فاقلل من لقاء الناس الا لاخذ العلم او اصلاح حال

तर्जुमा- लोगों की मुलाक़ात कुछ फ़ायदा नहीं देती, बजुज़ क़ील व क़ाल के, बकवास के, इसलिए लोगों की मुलाक़ात कम कर, ब-जुज़ इसके कि इल्म हासिल करने के वास्ते उस्ताद से या इस्लाहे नफ़्स के वास्ते किसी शेख़ से मुलाक़ात हो।

इमाम तिब्रानी रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। बहुत सी तसानीफ़ फ़र्मायी हैं। किसी ने उनकी कसरते तसानीफ़ को देख कर पूछा कि किस तरह लिखीं, कहने लगे कि तीस वर्ष बोरिए पर गुज़ार दिए यानी रात-दिन बोरिए पर पड़े रहते थे।

---

1. मश्क़ों वाले (अभ्यस्त),

अबुल अब्बास शीराज़ी रह० कहते हैं कि मैंने तिबरानी रह० से तीन लाख हदीसें लिखी हैं।

इमाम अबूहनीफ़ा रह० बड़ी शिद्दत के साथ नासिख़ और मंसूख़[1] अहादीस की तहक़ीक़ फ़र्माते थे। कूफ़ा जो उस ज़माने में इल्म का घर कहलाता था, उसमें जितने मुहद्दिसीन थे, सबकी अहादीस को जमा फ़र्माया था और जब कोई बाहर से मुहद्दिस आते तो शागिर्दों को हुक्म फ़र्माते कि इनके पास कोई ऐसी हदीस हो जो अपने पास न हो तो उसकी तहक़ीक़ करो।

एक इल्मी मज्लिस इमाम साहब रह० के यहां थी, जिस में मुहद्दिस, फ़क़ीह, अह्ले लुग़त का मज्मा था। जब कोई मस्अला दर पेश होता तो इस मज्लिस में उस पर बहस होती और बाज़ मर्तबा एक-एक महीने बहस रहती। इसके बाद जब कोई बात तै होती तो वह मज़हब क़रार दी जाती और लिख ली जाती।

इमाम तिर्मिज़ी रह० के नाम से कौन ना-वाक़िफ़ होगा। अहादीस का कसरत से याद करना और याद रखना उनकी ख़ुसूसी शान थी और क़ुव्वते हाफ़िज़ा में ज़र्बुल मसल थे। बाज़ मुहद्दिसीन ने उन का इम्तिहान लिया और चालीस हदीसें ऐसी सुनाईं जो ग़ैर मारूफ़[2] थीं। इमाम तिर्मिज़ी रह० ने फ़ौरन सुना दीं।

ख़ुद इमाम तिर्मिज़ी रह० कहते हैं कि मैंने मक्का मुकर्रमा के रास्ते में एक शेख़ की अहादीस के दो जुज़्व नक़ल किये थे। इत्तिफ़ाक़ से ख़ुद उस शेख़ से मुलाक़ात हो गई। मैंने दर्ख़्वास्त की कि वह दोनों जुज़्व अहादीस के उस्ताद से सुन भी लूं। उन्होंने क़ुबूल कर लिया। मैं समझ रहा था कि वह जुज़्व मेरे पास हैं। मगर उस्ताद की ख़िद्मत में गया तो बजाए उन के दो सादे जुज़्व हाथ में थे। उस्ताद ने सुनाना शुरू कर दिया। इत्तिफ़ाक़न उनकी नज़र पड़ी तो मेरे हाथ में सादे जुज़्व थे। नाराज़ होकर फ़र्माया, तुम्हें शर्म नहीं आती। मैंने क़िस्सा बयान किया और अर्ज़ किया कि आप जो सुनाते हैं, वह मुझे याद हो जाता है। उस्ताद को यक़ीन न आया, फ़र्माया अच्छा सुनाओ। मैंने सब हदीसें सुना दीं। फ़र्माया कि यह तुम को पहले से याद होंगी। मैंने अर्ज़ किया कि और नयी हदीसें सुना दीजिए। उन्होंने चालीस हदीसें और सुना दीं। मैंने उनको भी फ़ौरन सुना दिया और एक भी ग़लती नहीं की।

---

1. वह आयत या हदीस जो अपने से पहले को निरस्त कर दे, नासिख़ है और जो निरस्त हो, मंसूख़ है 2. अनजानी,

मुहद्दिसीन ने जो-जो मेहनतें अहादीस के याद करने में, उनको फैलाने में की हैं, उनका इत्तिबाअ तो दूर किनार, उनका शुमार भी मुश्किल है।

कर्तमा रह० एक मुहद्दिस हैं, ज़्यादा मशहूर भी नहीं हैं। उनके एक शागिर्द दाऊद रह० कहते हैं कि लोग अबूहातिम रह० वग़ैरह के हाफ़िज़े का ज़िक्र करते हैं। मैंने कर्तमा रह० से ज़्यादा हाफ़िज़ नहीं देखा। एक मर्तबा मैं उनके पास गया। कहने लगे कि इन कुतुब में से जो भी चाहो, उठा लो, मैं सुना दूंगा। मैंने किताबुल अश्रबा उठायी। वह हर बाब के अख़ीर से अव्वल की तरफ़ पढ़ते चले गये और पूरी किताब सुना दी।

अबूज़ुर्आ रह० कहते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल रह० को दस लाख हदीसें याद थीं।

इस्हाक़ बिन राहविया रह० कहते हैं कि एक लाख हदीसें मैंने जमा की हैं, तीस हज़ार मुझे अज़बर[1] याद हैं।

ख़फ़्फ़ाफ़ रह० कहते हैं कि इस्हाक़ रह० ने ग्यारह हदीसें अपनी याद से हमें लिखवाईं और फिर उनको नम्बरवार सुनाया, न कोई हर्फ़ कम हुआ, न ज़्यादा।

अबूसअद अस्बहानी बग़दादी रह० सोलह साल की उम्र में अबूनस्र रह० की अहादीस सुनने के लिए बग़दाद पहुंचे। रास्ते में उनके इन्तिक़ाल की ख़बर सुनी, बे-साख़्ता रो पड़े, चीख़ें निकल गयीं कि उनकी सनद कहां मिलेगी, इतना रंज कि रोने में चीख़ें निकल जाएं, जब ही हो सकता है, जब किसी चीज़ का इश्क़ हो जाये। उनको मुस्लिम शरीफ़ पूरी हिफ़्ज़ याद थी और हिफ़्ज़ ही तलबा[2] को लिखवाया करते थे ग्यारह हज किये। जब खाना खाने बैठते तो आंखों में आंसू भर आते।

अबूउमर ज़रीर रह० पैदाइशी ना-बीना थे, मगर हुफ़्फ़ाज़े हदीस में शुमार है। इल्मे फ़िक़्ह, तारीख़, फ़राइज़, हिसाब में कामिल महारत रखते थे।

अबुलहुसैन अस्फ़हानी रह० को बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ दोनों याद थीं, बिलख़ुसूस बुख़ारी शरीफ़ का तो यह हाल था कि जो कोई सनद पढ़ता, उसका मतन यानी हदीस पढ़ देते और जो मतन पढ़ता उसकी सनद पढ़ देते थे।

---

1. ज़बानी, 2. तालिब इल्म, छात्र,

शेख़ तक़ीयुद्दीन बालबकी रह० ने चार महीने में मुस्लिम शरीफ़ तमाम हिफ़्ज़ कर ली थी और जमा बैनस्सहीहैन के भी हाफ़िज़ थे। साहिबे करामात बुज़ुर्ग थे। क़ुरान पाक के भी हाफ़िज़ थे। कहते हैं कि सूर: अन्आम सारी एक दिन में हिफ़्ज़ कर ली थी।

इब्नुस्सुनी रह० इमाम नसाई रह० के मशहूर शागिर्द हैं। हदीस लिखने में अख़ीर तक मशग़ूल रहे। उनके साहबज़ादे कहते हैं कि मेरे वालिद रह० ने लिखते-लिखते दवात में क़लम रखा और दोनों हाथ दुआ के वास्ते उठाये और इसी हालत में इन्तिक़ाल हो गया।

अल्लामा साजी रह० ने बचपन में फ़िक्ह हासिल किया। इसके बाद इल्मे हदीस का शुग्ल रहा, हिरात में दस वर्ष क़याम किया, जिसमें छ: मर्तबा तिर्मिज़ी शरीफ़ अपने हाथ से लिखी। इब्ने मुंदा रह० से ग़राइबे शोबा पढ़ रहे थे कि इसी हाल में इब्ने मुंद: रह० का इशा की नमाज़ के बाद इन्तिक़ाल हुआ। पढ़ने वाले से पढ़ाने वाले का वलवला इल्मी है कि आख़िर वक़्त तक पढ़ाते रहे।

अबूअम्र ख़िफ़ाफ़ रह० को एक लाख हदीसें अज़बर[1] थीं।

इमाम बुख़ारी रह० के उस्ताद आसिम बिन अली रह० जब बग़दाद पहुंचे तो शागिर्दों का इस क़दर हुजूम[2] था कि अक्सर एक लाख से ज़ायद हो जाते थे। एक मर्तबा अन्दाज़ा लगाया गया तो एक लाख बीस हज़ार हुए। इसी वजह से बाज़ अल्फ़ाज़ को कई-कई मर्तबा कहना पड़ता। उनके एक शागिर्द कहते हैं कि एक मर्तबा 'हद्दस्नल्लैस' को चौदह मर्तबा कहना पड़ा। ज़ाहिर बात है कि सवा लाख आदमियों को आवाज़ पहुंचाने के वास्ते बाज़ लफ़्ज़ों को कई-कई मर्तबा कहना ही पड़ेगा।

अबूमुस्लिम बसरी रह० जब बग़दाद पहुंचे तो एक बड़े मैदान में हदीस का दर्स शुरू हुआ, सात आदमी खड़े होकर लिखवाते थे, जिस तरह ईद की तक्बीरें कही जाती हैं। सबक़ के बाद दवातें शुमार की गयीं तो चालीस हज़ार से ज़्यादा थीं और जो लोग सिर्फ़ सुनने वाले थे, वह उनसे अलाहिदा।

फ़र्याबी रह० की मज्लिस में इसी तरह लिखवाने वाले तीन सौ सोलह थे, इससे मज्मे का अन्दाज़ा अपने आप हो जाता है। इस मेहनत और मशक़्क़त से यह

---

1. ज़बानी, याद, 2. भीड़,

पाक इल्म आज तक ज़िन्दा है।

इमाम बुख़ारी रह० फ़र्माते हैं कि मैंने छः लाख हदीसों में से इन्तिख़ाब करके बुख़ारी शरीफ़ लिखी है, जिसमें सात हज़ार दो सो पछत्तर हदीसें हैं और हर हदीस लिखते वक़्त दो रकअत नफ़्ल नमाज़ पढ़ कर हदीस लिखी है। जब यह बग़दाद पहुंचे तो वहां के मुहद्दिसीन ने इनका इम्तिहान लिया, इस तरह कि दस आदमी मुतअय्यन[1] हुए। इनमें से हर शख़्स ने दस-दस हदीसें छांटीं, जिनको बदल-बदल कर उनसे पूछा। यह हर सवाल के जवाब में मुझे मालूम नहीं कहते रहे, जब दस के दस पूछ चुके तो उन्होंने सबसे पहले पूछने वाले को मुख़ातिब करके फ़र्माया कि तुम ने सब से पहली हदीस यह पूछी थी, तुमने इस तरह बयान की, यह ग़लत है और सही इस तरह है। दूसरी हदीस यह पूछी थी, वह इस तरह तुमने बयान की, यह ग़लत है, और सही इस तरह है, ग़रज़ इसी तरह सौ की सौ हदीसें तर्तीबवार बयान फ़र्मा दीं कि हर हदीस को अव्वल इस तरह पढ़ते, जिस तरह इम्तिहान लेने वाले ने पढ़ा था, फिर कहते कि यह ग़लत है और सही इस तरह है।

इमाम मुस्लिम रह० ने चौदह वर्ष की उम्र में हदीस पढ़ना शुरू की थी, उसी में अख़ीर तक मशग़ूल रहे। ख़ुद कहते हैं कि मैंने तीन लाख हदीस में से छांट कर मुस्लिम शरीफ़ तस्नीफ़[2] की है, जिसमें बारह हज़ार हदीसें हैं।

इमाम अबूदाऊद रह० कहते हैं कि मैंने पांच लाख अहादीस सुनी हैं, जिनमें से इन्तिख़ाब करके 'सुनन अबूदाऊद' शरीफ़ तस्नीफ़ की है, जिसमें चार हज़ार आठ सौ हदीसें हैं।

यूसुफ़ मज़ी मशहूर मुहद्दिस हैं, अस्मा-ए-रिजाल के इमाम हैं। अव्वल अपने शहर में फ़िक्ह और हदीस हासिल किया। इसके बाद मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा, हल्ब, हिमात, बालबक वग़ैरह का सफ़र किया। बहुत सी किताबें अपने क़लम से लिखीं, तहज़ीबुल कमाल दो सौ जिल्दों में तस्नीफ़ की और किताबुल अत्राफ़ अस्सी जिल्दों से ज़्यादा। उनकी आदते शरीफ़ा थी कि अक्सर चुप रहते, बात किसी से बहुत ही कम करते थे, अक्सर औक़ात किताब के देखने में मशग़ूल रहते थे। हासिदों[3] की अदावत का शिकार भी बने, मगर इन्तिक़ाम नहीं लिया।

---

1. तैनात, 2. लिखना, 2. जलन रखने वालों की दुश्मनी, 3. कामों,

इन हज़रात के हालात का अहाता दुश्वार है। बड़ी-बड़ी किताबें इनके हालात और जांफ़शानियों का अहाता नहीं कर सकीं। यहां नमूने के तौर पर चन्द हज़रात के दो चार वाक़िआत का ज़िक्र इसलिए किया, ताकि यह मालूम हो कि वह इल्मे हदीस, जो आज चौदह सौ वर्ष तक निहायत आब व ताब से बाक़ी है, वह किस मेहनत और जांफ़शानी से बाक़ी रखा गया है और जो लोग इल्म हासिल करने का दावा करते हैं, अपने आप को तालिबे इल्म कहते हैं, वह कितनी मेहनत व मशक़्क़त इसके लिए गवारा करते हैं। अगर हम लोग यह चाहें कि हम अपनी ऐश व इश्रत, राहत व आराम, सैर व तफ़रीह और दुनियां के दूसरे मशाग़िल[1] में लगे रहें और हुज़ूर सल्ल० के पाक कलाम का यह शयूअ[2] इसी तरह बाक़ी रहे तो 'ईं ख़्यालस्त व महालेस्त व जुनूं' (यह ख़्याल जो मुश्किल भी है और पागलपन का भी) के सिवा और क्या हो सकता है।

नवां बाब

हुज़ूर सल्ल० की फ़र्मांबर्दारी और इम्तिसाले हुक्म और यह देखना कि हुज़ूर सल्ल० का मन्शा-ए-मुबारक क्या है

वैसे तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का हर फ़अल फ़र्माबर्दारी का था और गुज़िश्ता[3] क़िस्सों से भी यह बात ख़ूब रौशन है, लेकिन ख़ास तौर से चन्द क़िस्से इस बाब में इसलिए ज़िक्र किये जाते हैं कि हम लोग अपनी हालतों का इस बाब से ख़ास तौर पर मुक़ाबला करके देखें कि हम अल्लाह की और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्काम की फ़र्माबर्दारी कहां तक करते हैं जिस पर हम लोग हर वक़्त इसके भी मुंतज़िर रहते हैं कि वह बरकात, तरक़्क़ियात और समरात, जो सहाबा किराम को हासिल होते थे, हमें भी हासिल हों। अगर वाक़ई हम लोग इस चीज़ के मुतमन्नी[4] हैं तो हमें भी वह करना चाहिए जो वह हज़रात करके दिखला गये हैं।

1. कामों, 2. फैलाना, 3. पिछले, 4. तमन्ना करने वाले।

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० का चादर को जला देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा सफ़र में हम लोग हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। मेरे ऊपर एक चादर थी जो कुसुम के रंग में हल्की सी रंगी हुई थी। हुज़ूर सल्ल० ने देख कर फ़र्माया, यह क्या ओढ़ रखा है? मुझे इस सवाल से हुज़ूर सल्ल० की नागवारी के आसार मालूम हुए। घरवालों के पास वापस हुआ तो उन्होंने चूल्हा जला रखा था। मैंने वह चादर उसमें डाल दी। दूसरे रोज़ जब हाज़री हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वह चादर क्या हुई? मैंने क़िस्सा सुना दिया। आपने इर्शाद फ़र्माया, औरतों में से किसी को क्यों न पहना दी। औरतों के पहनने में तो कोई मुज़ाइक़ा न था।[1]

फ़— अगरचे चादर के जला देने की ज़रूरत न थी मगर जिस के दिल में किसी की नागवारी और नारज़गी की चोट लगी हुई हो, वह इतनी सोच का मुतहम्मिल[2] ही नहीं होता कि उसकी कोई और सूरत भी हो सकती है। हां मुझ जैसा नालायक होता तो न मालूम कितने एहतमालात[3] पैदा कर लेता कि यह न-गवारी किस दर्जे की है और दर्याफ़्त तो कर लूं और कोई सूरत इजाज़त की भी हो सकती है या नहीं और हुज़ूर सल्ल० ने पूछा ही तो है, मना तो नहीं किया, वग़ैरह-वग़ैरह।

2. अंसारी का मकान को ढाह देना

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा दौलत कदा[4] से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में एक क़ुब्बा (गुंबददार हुजरा) देखा जो ऊंचा बना हुआ था। साथियों से दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया फ़लां अंसारी ने क़ुब्बा बनाया है। हुज़ूर सल्ल० सुनकर ख़ामोश हो रहे। किसी दूसरे वक़्त वह अंसारी हाज़िरे ख़िद्मत हुए और सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने एराज़[5] फ़र्माया, सलाम का जवाब भी न दिया। उन्होंने इस ख़्याल से कि शायद ख़्याल न हुआ हो, दोबारा

---

1. अबूदाऊद, 2. बर्दाश्त करने वाला, 3. शक व शुब्हे, 4. मकान, 5. मुंह फेर लिया,

सलाम किया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर भी एराज़ फ़र्माया और जवाब नहीं दिया। वह इसके कैसे मुतहम्मिल हो सकते थे। सहाबा रज़ि० से जो वहां मौजूद थे, दर्याफ़्त किया, पूछा तहक़ीक़ किया कि मैं आज हुज़ूर सल्ल० की नज़रों को फिरा हुआ पाता हूं, ख़ैर तो है ? उन्होंने कहा हुज़ूर सल्ल० बाहर तश्रीफ़ ले गये थे, रास्ते में तुम्हारा क़ुब्बा देखा था और दर्याफ़्त फ़र्माया था कि यह किस का है। यह सुनकर वह अंसारी फ़ौरन गये और उसको तोड़ कर ऐसा ज़मीन के बराबर कर दिया कि नाम व निशान भी न रहा और फिर आकर अर्ज़ भी नहीं किया। इत्तिफ़ाक़न हुज़ूर सल्ल० ही का उस जगह किसी दूसरे मौक़े पर गुज़र हुआ तो देखा कि वह क़ुब्बा वहां नहीं है। दर्याफ़्त फ़र्माया। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अंसारी आं हज़रत के एराज़ का कई रोज़ हुए ज़िक्र किया था। हमने कह दिया था। कि तुम्हारा क़ुब्बा देखा है। उन्होंने आकर उसको बिल्कुल तोड़ दिया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि हर तामीर[1] आदमी पर वबाल है, मगर वह तामीर तो सख़्त ज़रूरत और मजबूरी की हो।[2]

फ़— यह कमाले इश्क़ की बातें हैं, इन हज़रात को इसका तहम्मुल ही नहीं था कि चेहरा-ए-अन्वर को रंजीदा देखें या कोई शख़्स अपने से हुज़ूर सल्ल० की गरानी को महसूस करे। इन सहाबी रज़ि० ने क़ुब्बे को गिराया और फिर यह भी नहीं कि गिराने के बाद जताने के तौर पर आकर कहते कि आप की ख़ुशी के वास्ते गिरा दिया, बल्कि जब हुज़ूर सल्ल० का ख़ुद ही इत्तिफ़ाक़ से उधर को तश्रीफ़ ले जाना हुआ तो मुलाहिज़ा फ़र्माया। हुज़ूर सल्ल० को तामीर में रुपये का ज़ाया करना ख़ास तौर से ना-गवार था। बहुत सी अहादीस में इसका ज़िक्र आया है। ख़ुद अज़्वाजे मुतह्हरात के मकानात खजूर की टहनियों के टट्टे थे, जिन पर टाट के पर्दे पड़े रहते थे, ताकि अजनबी निगाह अन्दर न जा सके।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० कहीं सफ़र में तश्रीफ़ ले गये। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० को कुछ सर्वत[3] हासिल थी। उन्होंने अपने मकान पर बजाए टट्टों के कच्ची ईंटें लगा लीं। वापसी पर जब हुज़ूर सल्ल० ने मुलाहिज़ा फ़र्माया तो दर्याफ़्त किया कि यह क्या किया। उन्होंने अर्ज़ किया कि इसमें बे-पर्दगी का एहतमाल रहता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि बद-तरीन चीज़, जिसमें आदमी का रुपया ख़र्च हो, तामीर है।

---

1. निर्माण, 2. अबूदाऊद, 3. ख़ुशहाली।

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा मैं और मेरी वालिदा अपने मकान की एक दीवार को जो ख़राब हो गई थी, दुरुस्त कर रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने मुलाहिज़ा फ़र्माया और इर्शाद फ़र्माया कि मौत इस दीवार के गिरने से ज़्यादा क़रीब है।[1]

3. सहाबा रज़ि० का सुर्ख़ चादरों को उतारना

हज़रत राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं कि हम लोग एक मर्तबा सफ़र में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हम-रिकाब[2] थे और हमारे ऊंटों पर चादरें पड़ी हुई थीं, जिनमें सुर्ख़ डोरे थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मैं देखता हूं कि यह सुर्ख़ी तुम पर ग़ालिब होती जाती है। हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद फ़र्माना था कि हम लोग एक दम ऐसे घबरा के उठे कि हमारे भागने से ऊंट भी इधर-उधर भागने लगे और हमने फ़ौरन सब चादरें ऊंटों से उतार लीं।[3]

फ़—सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की ज़िन्दगी में इस क़िस्म के वाक़िआत कोई अहमियत नहीं रखते, हां, हमारी ज़िन्दगी के एतबार से इन पर ताज्जुब होता है। इन हज़रात की आम ज़िन्दगी ऐसी ही थी।

उर्व : बिन मस्ऊद जब सुलह हुदैबिया में जिसका क़िस्सा बाब 1 नं० 3 पर गुज़रा, कुफ़्फ़ार की तरफ़ से क़ासिद की हैसियत से आये थे तो मुसलमानों की हालत का बड़ी ग़ौर से मुताला किया था और मक्का वापस जाकर कुफ़्फ़ार से कहा था कि मैं बड़े-बड़े बादशाहों के यहां क़ासिद बन कर गया हूं, फ़ारस व रूम और हब्शा के बादशाहों से मिला हूं। मैंने किसी बादशाह के यहां यह बात नहीं देखी कि उसके दरबारी उसकी इस क़द्र ताज़ीम[4] करते हों, जितनी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जमाअत उनकी ताज़ीम करती है। कभी उनका बल्ग़म ज़मीन पर नहीं गिरने देती। वह किसी न किसी के हाथ पर पड़ता है और वह उसको मुंह पर और बदन पर मलता है। जब वह कोई हुक्म करते हैं तो हर शख़्स दौड़ता है कि तामील करे। जब वह वुज़ू करते हैं तो वुज़ू का पानी बदन पर मलने और लेने के वास्ते ऐसे दौड़ते हैं गोया आपस में जंग व जदल[5] हो जावेगा और जब वह बात करते हैं तो सब चुप हो जाते हैं। कोई शख़्स उनकी तरफ़ अज़्मत की वजह से निगाह उठा कर नहीं देख सकता।

---

1. अबूदाऊद, 2. साथ, 3. अबूदाऊद, 4. इज़्ज़त, 5. लड़ाई-झगड़ा,

4. हज़रत वाइल रज़ि० का ज़ुबाब के लफ़्ज़ से बाल कटवा देना

वाइल बिन हजर रज़ि० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हाज़िरे ख़िद्मत हुआ। मेरे सर के बाल बहुत बढ़े हुए थे। मैं सामने आया जो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया 'ज़ुबाब-ज़ुबाब'। मैं यह समझा कि मेरे बालों को इर्शाद फ़र्माया। मैं वापस गया और उनको कटवा दिया। जब दूसरे दिन ख़िद्मत में हाज़िरी हुई तो इर्शाद फ़र्माया कि मैंने तुम्हें नहीं कहा था, लेकिन यह अच्छा किया।[1]

फ़— ज़ुबाब के मानी मनहूस के भी हैं और बुरी चीज़ के भी। यह इशारों पर मर मिटने की बात है कि मंशा समझने के बाद, ख़्वाह वह ग़लत ही समझा हो, उसकी तामील में देर न होती थी।

यहां हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद ही फ़र्मा दिया कि तुमको नहीं कहा था, मगर यह चूंकि यह अपने मुताल्लिक़ समझे, इसलिए क्या मजाल थी कि देर होती। इब्तिदा-ए इस्लाम में नमाज़ में बोलना जायज़ था, फिर मंसूख़[2] हो गया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हाज़िरे ख़िद्मत हुए। हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ रहे थे। उन्होंने हस्बे मामूल सलाम किया, चूंकि नमाज़ में बोलना मंसूख़ हो चुका था, हुज़ूर सल्ल० ने जवाब न दिया। वह फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के जवाब न देने से नई और पुरानी बातें याद आकर मुख़्तलिफ़ ख़्यालात ने मुझे आ घेरा। कभी सोचता, फ़्लां बात से नाराज़ी हुई, कभी ख़्याल करता कि फ़्लां बात पेश आयी, आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने जब सलाम फेरा और इर्शाद फ़र्माया कि नमाज़ में कलाम करना मंसूख़ हो गया है, इसलिए मैंने सलाम का जवाब नहीं दिया था, तब जान में जान आयी।

5. हज़रत सुहैल बिन हंज़ला की आदत और ख़ुरैम रज़ि० का बाल कटवा देना

दमिश्क़ में सुहैल बिन हज़ंला रज़ि० नामी एक सहाबी रहा करते थे, जो निहायत यकसू थे, बहुत कम किसी से मिलते-जुलते थे और कहीं आते-जाते न थे।

---

1. अबूदाऊद, 2. ख़त्म हो जाना।

दिन भर नमाज़ में मशग़ूल रहते या तस्बीह और वज़ाइफ़[1] में मस्जिद में आते जाते रास्ते में हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु पर जो मशहूर सहाबी हैं, गुज़र होता। अबूदर्दा रज़ि० फ़र्माते कि कोई कलमा-ए-ख़ैर[2] सुनाते जाओ, तुम्हें कोई नुक़सान नहीं, हमें नफ़ा हो जायेगा। तो वह कोई वाक़िआ हुज़ूर सल्ल० के ज़माने का या कोई हदीस सुना देते।

एक मर्तबा इसी तरह जा रहे थे। अबूदर्दा रज़ि० ने मामूल के मुवाफ़िक़ दरख़्वास्त की कि कोई कलमा-ए-ख़ैर सुनाते जाएं। कहने लगे कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि ख़ुरैम असदी अच्छा आदमी है, अगर दो बातें न हों, एक सर के बाल बहुत बढ़े रहते हैं, दूसरे लुंगी टख़नों से नीचे बांधता है। उनको हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद पहुंचा, फ़ौरन चाक़ू लेकर बाल कानों के नीचे से काट दिये और लुंगी आधी पिंडली तक बांधना शुरू कर दी।[3]

फ़— बाज़ रिवायात में आया है कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से इन दोनों बातों को इर्शाद फ़र्माया और उन्होंने क़सम खाकर कहा कि अब से न होंगी।

मगर दोनों रिवायतों में कुछ इश्काल[4] नहीं। यह हो सकता है कि ख़ुद उन से भी इर्शाद फ़र्माया हो, और ग़ैबत में भी इर्शाद फ़र्माया हो जो सुनने वाले ने उनसे जाकर अर्ज़ कर दिया।

6. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का अपने बेटे से न बोलना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने एक मर्तबा इर्शाद फ़र्माया था कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया था कि औरतों को मस्जिद में जाने की इजाज़त दे दिया करो। इब्ने उमर रज़ि० के एक साहबज़ादे ने अर्ज किया कि हम तो इजाज़त नहीं दे सकते क्योंकि वह उसको आइंदा चलकर बहाना बना लेंगी, आज़ादी और फ़साद व आवारगी का।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बहुत नाराज़ हुए, बुरा-भला कहा और फ़र्माया कि मैं तो हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सुनाऊं और तू कहे कि इजाज़त नहीं दे सकते।

---

1. वज़ीफ़े, 2. भली बात, 3. अबूदाऊद, 4. एतराज़ शक।

इसके बाद हमेशा के लिये साहबज़ादे से बोलना छोड़ दिया।[1]

फ़— साहबज़ादे का यह कहना कि किसी फ़साद का हीला बना लेंगी, अपने ज़माने की हालत को देख कर था। इसी वजह से ख़ुद हज़रत आइशा रज़ि० इर्शाद फ़र्माती हैं कि अगर हुज़ूर सल्ल० इस ज़माने की औरतों का हाल देखते, तो ज़रूर औरतों को मस्जिद में जाने से मना फ़र्मा देते। हालांकि हज़रत आइशा रज़ि० का ज़माना हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ ज़्यादा बाद का नहीं, लेकिन इसके बावजूद हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को इसका तहम्मुल नहीं हो सका कि हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद को सुनकर उसमें कोई तरद्दुद या ताम्मुल[2] किया जाये और सिर्फ़ इस बात पर कि हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद पर उन्होंने इन्कार किया, उम्र भर नहीं बोले और हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी इसमें दिक़्क़तें उठानी पड़ीं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शाद की अहमियत की वजह से जो उनकी जान थी, मस्जिद से रोकना भी मुश्किल था और ज़माने के फ़साद की वजह से जिसका अन्देशा उसी वक़्त से शुरू हो गया था, इजाज़त भी मुश्किल थी। चुनांचे हज़रत आतिका रज़ि० जिनके कई निकाह हुए, जिन में से हज़रत उमर रज़ि० से भी हुआ, वह मस्जिद में तश्रीफ़ ले जाती थीं और हज़रत उमर रज़ि० को गरां होता था।

किसी ने उन से कहा कि उमर रज़ि० को गरां होता है। उन्होंने कहा कि अगर उनको गरां है, तो मना कर दें। हज़रत उमर रज़ि० के विसाल के बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से निकाह हुआ। उनको भी यह चीज़ गरां थी, मगर रोकने की हिम्मत न हुई तो एक मर्तबा इशा की नमाज़ के लिए यह जहां को जाती थीं, रास्ते में बैठ गये और जब यह पास से गुज़रीं तो उनको छेड़ा। ख़ाविन्द थे, इसलिए उनको तो जायज़ था ही, मगर उनको ख़बर न हुई। अंधेरा था कि यह कौन है। इसके बाद से उन्होंने जाना छोड़ दिया। दूसरे वक़्त हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने पूछा कि मस्जिद में क्यों जाना छोड़ दिया, कहने लगीं कि अब ज़माना नहीं रहा।

7. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से सवाल कि नमाज़ क़स्र क़ुरआन में नहीं?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से एक शख़्स ने पूछा कि क़ुरआन शरीफ़ में मुक़ीम की नमाज़ का भी ज़िक्र है और ख़ौफ़ की नमाज़ का भी, मुसाफ़िर की नमाज़

1. मुस्लिम अबूदाऊद, 2. झिझक।

का ज़िक्र नहीं। उन्होंने फ़र्माया कि बिरादर ज़ादे ! अल्लाह जल्ल शानुहू ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बना कर भेजा। हम लोग अन्जान थे, कुछ नहीं जानते थे। बस जो हमने उनको करते देखा है, वह करेंगे।[1]

फ़– मक्सूद यह है कि हर मस्अले का सराहतन[2] कुरआन शरीफ़ में होना ज़रूरी नहीं। अमल के वास्ते हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हो जाना काफ़ी है।

ख़ुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे कुरआन शरीफ़ अता हुआ और उसके बराबर और अहकाम दिये गये। अंक़रीब वह ज़माना आने वाला है कि पेट भरे लोग अपने गद्दों पर बैठ कर कहेंगे कि बस कुरआन शरीफ़ को मज़बूत पकड़ लो, जो उसमें अह्काम हैं उन पर अमल करो।[3]

फ़– पेट भरे से मुराद यह है कि इस क़िस्म के फ़ासिद[4] ख़्याल दौलत के नशे से ही पैदा होते हैं।

८. हज़रत इब्ने मुग़फ़्फ़ल रज़ि० का ख़ज़्फ़ की वजह से कलाम छोड़ देना

अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि० का एक नव-उम्र भतीजा ख़ज़्फ़[5] से खेल रहा था। उन्होंने देखा और फ़र्माया कि बिरादर ज़ादा ! ऐसा न करो। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इससे फ़ायदा कुछ नहीं, न शिकार हो सकता है, न दुश्मन को नुक़्सान पहुंचाया जा सकता है और इत्तिफ़ाक़न किसी के लग जाये, तो आंख फूट जाये, दांत टूट जाये। भतीजा कम-उम्र था। उसने जब चचा को ग़ाफ़िल देखा तो फिर खेलने लगा। उन्होंने देख लिया, फ़र्माया, मैं तुझे हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सुनाता हूं, तू फिर उसी काम को करता है। ख़ुदा की क़सम ! तुझ से कभी बात नहीं करूंगा।

एक दूसरे क़िस्से में इसके बाद है, ख़ुदा की क़सम ! न तेरे जनाज़े में शरीक हूंगा, न तेरी अयादत[6] करूंगा।[7]

---

1. शिफ़ा, 2. साफ़ – साफ़, 3. अबूदाऊद, 4. बिगाड़ पैदा करने वाले, 5. कंकरिया, 6. बीमार पुर्सी, 7. इब्ने माजा दारमी,

फ़- ख़ज़्फ़ इस को कहते हैं कि अंगूठे पर छोटी-सी कंकरी रखकर उसको उंगली से फेंक दिया जाए। बच्चों में आमतौर से इस तरह खेलने का मर्ज होता है, वह ऐसा तो होता नहीं कि उससे शिकार हो सके, हां, आंख में किसी के इत्तिफ़ाक़न लग जाए, तो उसको ज़ख़्मी ही कर दे।

हजरत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रह० को इसका तहम्मुल न हो सका कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सुनाने के बाद भी वह बच्चा इस काम को करे। हम लोग सुबह से शाम तक हुज़ूर सल्ल० के कितने इर्शादात सुनते हैं और उनका कितना एहतमाम करते हैं, हर शख़्स खुद ही अपने मुताल्लिक़ फ़ैसला कर सकता है।

9: हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० का सवाल से अह्द

हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० एक सहाबी हैं। हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुए कुछ तलब किया। हुज़ूर सल्ल० ने अता फ़र्माया, फिर किसी मौके पर कुछ मांगा। हुज़ूर सल्ल० ने फिर मरहमत फ़र्मा दिया। तीसरी दफ़ा फिर सवाल किया। हुज़ूर सल्ल० ने अता फ़र्माया और यह इर्शाद फ़र्माया कि हकीम ! यह माल सब्ज़ बाग़ है, ज़ाहिर में बड़ी मीठी चीज है, मगर इसका दस्तूर यह है कि अगर यह दिल के इस्तिग़ना से मिले तो इस में बरकत होती है और अगर तमा और लालच से हासिल हो तो इस में बरकत नहीं होती, ऐसा हो जाता है (जैसे जूउल बक़र की बीमारी हो) कि हर वक़्त खाये जाए और पेट न भरे।

हकीम रज़ि० ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! आप के बाद अब किसी को नहीं सताऊंगा। इसके बाद हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में हकीम रज़ि० को बैतुलमाल से कुछ अता फ़र्माने का इरादा किया। उन्होंने इन्कार कर दिया।

इसके बाद हजरत उमर रज़ि० ने अपने जमाना-ए-ख़िलाफ़त में बार-बार इस्रार किया, मगर उन्होंने इन्कार ही फ़र्मा दिया।[1]

फ़- यही वजह है कि आज कल हम लोगों के मालों में बरकत नहीं होती

1. बुख़ारी,

कि लालच और तमा में घिरे रहते हैं।

10. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का जासूसी के लिए जाना

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़र्माते हैं कि ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ में हमारी एक तरफ़ तो मक्का के कुफ़्फ़ार और उनके साथ दूसरे काफ़िरों के बहुत से गिरोह थे, जो हम पर चढ़ाई करके आये थे और हमले के लिए तैयार थे और दूसरी तरफ़ ख़ुद मदीना मुनव्वरा में बनू क़ुरैज़ा के यहूद हमारी दुश्मनी पर तुले हुए थे, जिन से हर वक़्त अंदेशा था कि कहीं मदीना मुनव्वरा को ख़ाली देखकर वह हमारे अह्ल व अयाल[1] को बिल्कुल ख़त्म न कर दें। हम लोग मदीना मुनव्वरा से बाहर लड़ाई के सिलसिले में पड़े हुए थे। मुनाफ़िक़ों की जमाअत घर के ख़ाली और तंहा होने का बहाना करके इजाज़त लेकर अपने घरों को वापस जा रही थी और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर इजाज़त मांगने वाले को इजाज़त मरहमत फ़र्मा देते थे।

इसी दौरान में एक रात आंधी इस क़दर शिद्दत से आयी कि न इस से पहले कभी आयी, न इसके बाद, अंधेरा इस क़दर ज़्यादा कि आदमी के पास वाला आदमी तो क्या अपना हाथ भी नजर नहीं आता था और हवा इतनी सख़्त कि इसका शोर बिजली की तरह गरज रहा था। मुनाफ़िक़ीन अपने घरों को लौट रहे थे, हम तीन सौ का मज्मा उसी जगह था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक-एक का हाल दर्याफ़्त फ़र्मा रहे थे और इस अंधेरी में हर तरफ़ तहक़ीक़ात फ़र्मा रहे थे। इतने में मेरे पास को हुज़ूर सल्ल० का गुज़र हुआ। मेरे पास न तो दुश्मन से बचाव के वास्ते कोई हथियार, न सर्दी से बचाव के लिए कोई कपड़ा, सिर्फ़ एक छोटी सी चादर थी जो ओढ़ने में घुटनों तक आती थी और वह भी मेरी नहीं बीवी की थी। मैं उसको ओढ़े हुए घुटनों के बल ज़मीन से चिमटा हुआ बैठा था।

हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, कौन है? मैंने अर्ज़ किया, हुज़ैफ़ा ! मगर मुझ से सर्दी के मारे उठा भी न गया और शर्म के मारे ज़मीन से चिमट गया। हुज़ूर ने इर्शाद फ़र्माया कि उठ खड़ा हो और दुश्मनों के जत्थे में जाकर उनकी ख़बर ला कि क्या हो रहा है। मैं उस वक़्त घबराहट और ख़ौफ़ और सर्दी की वजह से सबसे

1. बाल-बच्चे,

ज़्यादा ख़स्ता हाल था। मगर तामीले इर्शाद में उठकर फ़ौरन चल दिया। जब मैं जाने लगा तो हुज़ूर ने दुआ दी :-

اَللّٰهُمَّ احفظہ من بین یدیہ ومن خلفہ وعن یمینہ وعن شمالہ ومن فوقہ ومن تحتہ

अल्लाहुम्मह्फ़ज़हू मिम बैनी यदैहि व मिन ख़ल्फ़िही व अन यमीनिही व अनशिमालिही व मिन फ़ौक़िही व मिन तह्तिही।

'या अल्लाह ! आप इसकी हिफ़ाज़त फ़र्माएं, सामने से और पीछे से, दाएं से और बाएं से, ऊपर से और नीचे से।

हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद फ़र्माना था, गोया मुझ से ख़ौफ़ और सर्दी बिल्कुल ही जाती रही। और हर-हर क़दम पर यह मालूम होता था गोया गर्मी में चल रहा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने चलते वक़्त यह भी इर्शाद फ़र्माया था कि कोई हरकत न कर के आइयो। चुप-चाप देख कर आओ कि क्या हो रहा है। मैं वहां पहुंचा तो देखा कि आग जल रही है और लोग सेंक रहे हैं। एक शख़्स आग पर हाथ सेंकता है और कोख पर फेरता है और हर तरफ़ से वापस चल दो, वापस चल दो की आवाज़ें आ रही हैं। हर शख़्स अपने क़बीला वालों को आवाज़ देकर कहता है कि वापस चलो और हवा की तेज़ी की वजह से चारों तरफ़ से पत्थर उनके ख़ेमों पर बरस रहे थे। ख़ेमों की रस्सियां टूटती जाती थीं और घोड़े वग़ैरह जानवर हलाक हो रहे थे।

अबूसुफ़ियान जो सारी जमाअतों का उस वक़्त गोया सरदार बन रहा था, आग पर सेंक रहा था। मेरे दिल में आया कि मौक़ा अच्छा है, उसको निमटाता चलूं। तरकश में से तीर निकाल कर क़मान में भी रख लिया, मगर फिर हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद याद आया कि कोई हरकत न कीजियो, देख कर चले आना। इसलिए मैंने तीर को तरकश में रख दिया। उनको शुबहा हो गया, कहने लगे तुम में कोई जासूस है। हर शख़्स अपने बराबर वाले का हाथ पकड़ ले, मैंने जल्दी से एक आदमी का हाथ पकड़ कर पूछा, तू कौन है ? वह कहने लगा सुब्हानल्लाह ! तू मुझे नहीं जानता, मैं फ्लां हूं। मैं वहां से वापस आया। आधे रास्ते पर था तो तक़रीबन बीस सवार अमामा बांधे हुए मुझे मिले। उन्होंने कहा, अपने आक़ा से कह देना कि अल्लाह ने दुश्मनों का इंतिज़ाम कर दिया, बेफ़िक्र रहें।

मैं वापस पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० एक छोटी सी चादर ओढ़े नमाज़ पढ़ रहे थे। यह हमेशा की आदत शरीफ़ा थी कि जब कोई घबराहट की बात पेश आती तो हुज़ूर सल्ल० नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करते थे। नमाज़ से फ़राग़त

पर मैंने वहां का जो मंज़र देखा था, अर्ज कर दिया।

जासूस का क़िस्सा सुन कर दन्दाने मुबारक[1] चमकने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अपने पांव मुबारक के क़रीब लिटा लिया और अपनी चादर का ज़रा-सा हिस्सा मुझ पर डाल दिया। मैंने अपने सीने को हुज़ूर सल्ल० के तलवों से चिमटा लिया।[2]

फ़— इनही हज़रात का यह हिस्सा था और इनही को यह ज़ेबा था कि इस क़दर सख़्तियों और दिक़्क़तों की हालत में भी तामील इर्शाद तन मन जान-माल, सब से ज़्यादा अज़ीज़ थी। अल्लाह जल्ल शानुहू बिला इस्तिहक़ाक़ और बिला अहलियत मुझ नापाक को भी उनके इत्तिबाअ का कोई हिस्सा नसीब फ़र्मा दें तो ज़हे क़िस्मत।

दसवां बाब
औरतों का दीनी जज़्बा

हक़ीक़त यह है कि अगर औरतों में दीन का शौक़ और नेक आमाल का जज़्बा पैदा हो जाये तो औलाद पर उसका असर ज़रूरी है। इसके बर-ख़िलाफ़ हमारे ज़माने में औलाद को शुरू ही से ऐसे माहौल में रखा जाता है जिस में उस पर दीन के ख़िलाफ़ असर पड़े या कम अज़ कम यह कि दीन की तरफ़ बे-तवज्जोही पैदा हो जाए। जब ऐसे माहौल में इब्तिदाई ज़िन्दगी गुज़रेगी, तो इससे जो नताइज पैदा होंगे वह ज़ाहिर हैं।

1. तस्बीहात हज़रत फ़ातिमा रज़ि०

हज़रत अली रज़ि० ने अपने एक शागिर्द से फ़र्माया कि मैं तुम्हें अपना और फ़ातिमा रज़ि० का, जो हुज़ूर सल्ल० की सब से ज़्यादा लाडली बेटी थीं, क़िस्सा सुनाऊं। शागिर्द ने कहा, ज़रूर। फ़र्माया कि वह अपने हाथ से चक्की पीसती थीं, जिस की वजह से हाथ में निशान पड़ गये थे और ख़ुद पानी की मश्क भर कर लाती थीं, जिसकी वजह से सीने पर मश्क की रस्सी के निशान पड़ गये थे और घर की झाड़ू वग़ैरह भी ख़ुद ही देती थीं, जिसकी वजह से तमाम कपड़े मैले-कुचैले रहते थे।

---

1. मुबारक दांत, 2. दुर्रे मंसूर,

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ ग़ुलाम-बाँदियां आयीं। मैंने फ़ातिमा रज़ि० से कहा कि तुम भी जाकर हुज़ूर सल्ल० से एक ख़िदमतगार मांग लो ताकि तुमको कुछ मदद मिल जाए। वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई। वहां मज्मा था और शर्म, मिज़ाज में बहुत ज़्यादा थी, इसलिए शर्म की वजह से सब के सामने बाप से भी मांगते हुए शर्म आयी। वापस आ गयीं। दूसरे दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद तश्रीफ़ लाये। इर्शाद फ़र्माया कि फ़ातिमा कल तुम किस काम के लिए गयीं थीं ? वह शर्म की वजह से चुप हो गयीं। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! इनकी यह हालत है कि चक्की की वजह से हाथों में गट्टे पड़ गये और मशक की वजह से सीने पर रस्सी के निशान हो गये, हर वक़्त के कारोबार की वजह से कपड़े मैले रहते हैं। मैंने उनसे कल कहा था कि आपके पास ख़ादिम आये हुए हैं, एक यह भी मांग लें, इसलिए गई थीं।

बाज़ रिवायत में आया है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मेरे और अली के पास एक ही बिस्तरा है और वह भी मेंढे की एक खाल है। रात को उसको बिछाकर सो जाते हैं, सुबह को उसी पर घास - दाना डाल कर ऊंट को खिलाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि बेटी सब्र करो। हज़रत मूसा और उनकी बीवी के पास दस वर्ष तक एक ही बिछौना (बिस्तरा) था। वह भी हज़रत मूसा का चोग़ा था। रात को उसी को बिछाकर सो जाते थे, तू तक़्वा हासिल कर और अल्लाह से डर, और अपने परवरदिगार का फ़रीज़ा अदा करती रह और घर के कारोबार को अंजाम देती रह और जब सोने के वास्ते लेटा करे तो सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल्हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा और अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़ लिया कर। यह ख़ादिम से ज़्यादा अच्छी चीज़ है। हज़रत फ़ात्तिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह से और उसके रसूल से राज़ी हूं।[1]

फ़— यानी जो अल्लाह की और उसके रसूल की रज़ा मेरे बारे में हो, मुझे बा-ख़ुशी मंज़ूर है। यह थी ज़िन्दगी दो जहान के बादशाह की बेटी की। आज हम लोगों में से किसी के पास दो पैसे हो जायें तो उसके घर वाले घर का काम-काज दर किनार अपना काम भी न कर सकें। पाख़ाने में लोटा भी मामा ही रख कर आये। इस वाक़िआ में जो ऊपर ज़िक्र किया गया, सिर्फ़ सोने के वक़्त का ज़िक्र है। दूसरी हदीसों में हर नमाज़ के बाद 33 मर्तबा यह तीनों कलमे और एक मर्तबा-

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

---

1. अबूदाऊद,

ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर, भी आया है।

2. हज़रत आइशा रज़ि० का सदक़ा

हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िद्मत में दो गोनेंनदिरहमों की भर कर पेश की गयीं जिनमें एक लाख से ज़्यादा दिरहम थे। हज़रत आइशा रज़ि० ने तबाक़ मंगाया और उनको भर-भर कर तक़्सीम फ़र्माना शुरू कर दिया और शाम तक सब ख़त्म कर दिए। एक दिरहम भी बाक़ी न छोड़ा, ख़ुद रोज़ेदार थीं। इफ़्तार के वक़्त बांदी से कहा कि इफ़्तार के लिए कुछ ले आओ, वह एक रोटी और ज़ैतून का तेल लाई और अर्ज़ करने लगीं, क्या अच्छा होता कि एक दिरहम का गोश्त ही मंगा लेतीं, आज हम रोज़ा गोश्त से इफ़्तार कर लेते। फ़मनि लगीं, अबताना देने से क्या हो, उस वक़्त याद दिलाती तो मैं मंगा लेती।[1]

फ़— हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में इस नौअ के नज़राने अमीर मआविया रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० वग़ैरह हज़रात की तरफ़ से पेश किये जाते थे, क्योंकि वह ज़माना फ़ुतूहात की कसरत का था। मकानों में ग़ल्ला की तरह से अशर्फ़ियों के अंबार पड़े रहते थे और इसके बावजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और निहायत मामूली गुज़ारी जाती थी, हत्ताकि इफ़्तार के वास्ते भी मामा के याद दिलाने की ज़रूरत थी। पचीस हज़ार रुपये के क़रीब तक़्सीम कर दिया और यह भी ख़्याल न आया कि मेरा रोज़ा है और गोश्त भी मंगाना है।

आजकल इस क़िस्म के वाक़िआत इतने दूर हो गये हैं कि ख़ुद वाक़िआ के सच्चा होने में तरद्दुद होने लगा, लेकिन उस ज़माने की आम ज़िन्दगी जिन लोगों की नज़र में है, उनके नज़दीक यह और इस क़िस्म के सैकड़ों वाक़िआत कुछ भी ताज्जुब की चीज़ नहीं। ख़ुद हज़रत आइशा रज़ि० के बहुत से वाक़िआत इसके क़रीब -क़रीब हैं।

एक दफ़ा रोज़ेदार थीं और घर में एक रोटी के सिवा कुछ न था। एक फ़क़ीर ने आकर सवाल किया। ख़ादिमा से फ़र्माया कि वह एक रोटी इसको दे दो। उसने अर्ज़ किया कि इफ़्तार के लिए घर में कुछ भी नहीं। फ़र्माया क्या मुज़ाइक़ा है, वह रोटी इस को दे दो, उसने दे दी।[2]

---

1. तज़्किरा, 2. मुअता,

एक मर्तबा एक सांप मार दिया। ख़्वाब में देखा, कोई कहता है कि तुम ने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया, फ़र्माया, अगर वह मुसलमान होता तो, हुज़ूर सल्ल० की बीवियों के यहां न आता। उसने कहा, मगर पर्दे की हालत में आया था, इस पर घबरा कर आंख खुल गई और बारह हज़ार दिरहम, जो एक आदमी का ख़ूंबहा[1] होते हैं, सदक़ा किये।

उर्वः रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक दफ़ा देखा कि सत्तर हज़ार दिरहम सदक़ा किये और अपने कुर्ते में पैबंद लग रहा था।[2]

3. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० का हज़रत आइशा रज़ि० को सदक़े से रोकना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० हज़रत आइशा रज़ि० के भांजे थे और वह उनसे बहुत मुहब्बत फ़र्माती थीं। उन्होंने ही गोया भांजे को पाला था। हज़रत आइशा रज़ि० की इस फ़य्याज़ी से परेशान होकर कि ख़ुद तक्लीफ़ें उठायें और जो आये वह फ़ौरन ख़र्च कर दें, एक दफ़ा कह दिया कि ख़ाला का हाथ किसी तरह रोकना चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० को भी यह फ़िक़रा[3] पहुंच गया, इस पर नाराज़ हो गईं कि मेरा हाथ रोकना चाहता है और उनसे न बोलने की नज़्र के तौर पर क़सम खाई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को ख़ाला की नाराज़ी का बहुत सदमा हुआ। बहुत से लोगों से सिफ़ारिश करायी, मगर उन्होंने अपनी क़सम का उज़्र फ़र्मा दिया। आख़िर जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० बहुत ही परेशान हुए तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ननिहाल के दो हज़रात को सिफ़ारशी बनाकर साथ ले गए। वह दोनों हज़रात इजाज़त लेकर अन्दर गये। यह भी छुप कर साथ होलिये। जब वह दोनों पर्दे के पीछे बैठे और हज़रत आइशा रज़ि० पर्दे के अन्दर बैठकर बात-चीत फ़र्माने लगीं, तो यह जल्दी से पर्दे में चले गये और जाकर ख़ाला रज़ि० से लिपट गये।

और बहुत रोये, और ख़ुशामद की। वह दोनों हज़रात भी सिफ़ारिश करते रहे और मुसलमान से बोलना छोड़ने के मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्ल० के इर्शादात याद

1. ख़ून बहा का सदक़ा, 2. तब्क़ात, 3. वाक्य,

दिलाते रहे और अहादीस में जो मुमानअत[1] इसकी आयी है, वह सुनाते रहे, जिसकी वजह से हज़रत आइशा रज़ि० उन अहादीस में, जो मुमानअत और मुसलमान से बोलना छोड़ने पर जो इताब[2] वारिद हुआ है, उसकी ताब न ला सकीं रोने लगीं। आख़िर माफ़ फ़र्मा दिया और बोलने लगीं। लेकिन अपनी इस क़सम के कुफ़्फ़ारे में बार-बार ग़ुलाम आज़ाद करती थीं, हत्ताकि चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये और जब भी इस क़सम के तोड़ने का ख़्याल आ जाता, इतना रोतीं कि दोपट्टा तक आंसुओं से भीग जाता[3]।

फ—हम लोग सुबह से शाम तक कितनी क़स्में एक सांस में खा लेते हैं और फिर उसकी कितनी परवाह करते हैं, इसका जवाब अपने ही सोचने का है। दूसरा शख़्स कौन हर वक़्त पास रहता है जो बता दे, लेकिन जिन लोगों के यहां अल्लाह के नाम की वक़अत है और अल्लाह से अहद कर लेने के बाद पूरा करना ज़रूरी है, उनसे पूछो कि अहद के पूरा न होने से दिल पर क्या गुज़रती है। इसी वजह से हज़रत आइशा रज़ि० को जब यह वाक़िआ याद आता था, तो बहुत ज़्यादा रोती थीं।

4. हज़रत आइशा रज़ि० की हालत अल्लाह के ख़ौफ़ से

हज़रत आइशा रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जितनी मुहब्बत थी, वह किसी से मख़्फ़ी[4] नहीं, हत्ताकि जब हुज़ूर सल्ल० से किसी ने पूछा कि आप को सबसे ज़्यादा मुहब्बत किससे है, तो आपने फ़र्माया कि आइशा रज़ि० से।

इसके साथ ही मसाइल से इतनी ज़्यादा वाक़िफ़ थीं कि बड़े-बड़े सहाबा रज़ि० मसाइल की तह्क़ीक़ के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते थे। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उनको सलाम करते थे। जन्नत में भी हजरत आइशा रज़ि०को हुज़ूर सल्ल० की बीवी होने की बशारत दी गई है। मुनाफ़िक़ों ने आप पर तोहमत लगाई तो क़ुरआन शरीफ़ में आप की बरअात[5] नाज़िल हुई।

ख़ुद हजरत आइशा रज़ि० फ़र्माती है कि दस ख़ुसूसियात मुझमें ऐसी हैं कि कोई दूसरी बीवी उनमें शरीक नहीं। इब्ने सअद रज़ि० ने उन को मुफ़स्सल नक़ल

1. मनाही, 2. ग़ुस्सा, 3. बुख़ारी, 4. छुपी हुई, 5. अलगाव, बे ताल्लुक़ी।

किया है। सदके की कैफ़ियत पहले किस्सों से मालूम हो ही चुकी, लेकिन इन सब बातों के बावजूद अल्लाह के ख़ौफ़ का हाल यह था फ़र्माया करती कि काश! मैं दरख़्त ही हो जाती कि तस्बीह करती रहती और कोई आख़िरत का मुतालबा मुझ से न होता। काश ! मैं पत्थर होती, काश ! मैं मिट्टी का ढेला होती, काश ! मैं पैदा ही न होती, काश ! मैं दरख़्त का पत्ता होती, काश ! मैं कोई घास होती।[1]

फ़— अल्लाह के ख़ौफ़ का यह मंज़र दूसरे बाब के पांचवें-छठे किस्से में भी गुज़र चुका है। इन हज़रात की यह आम हालत थी, अल्लाह से डरना उन्हीं का हिस्सा था।

5. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के ख़ाविन्द की दुआ और हिजरत

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले हज़रत अबूसलमा सहाबी रज़ि० के निकाह में थीं, दोनों में बहुत ही ज़्यादा मुहब्बत और ताल्लुक़ था, जिसका अन्दाज़ा इस किस्से से होता है कि एक मर्तबा उम्मे सलमा रज़ि० ने अबूसलमा रज़ि० से कहा कि मैंने यह सुना है कि अगर मर्द और औरत दोनों जन्नती हों और[2] औरत मर्द के बाद किसी से निकाह न करे तो वह औरत जन्नत में उसी मर्द को मिलेगी, इसी तरह अगर मर्द दूसरी औरत से निकाह न करे तो वही औरत उसको मिलेगी इसलिए लाओ, हम और तुम दोनों अहद कर लें कि हम में से जो पहले मर जाए, दूसरा निकाह न करे।

अबूसलमा रज़ि० ने कहा, तुम मेरा कहना मान लोगी ?

उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा कि मैं तो इसी वास्ते मश्वरा कर रही हूं कि तुम्हारा कहना मानूं।

अबूसलमा रज़ि० ने कहा कि मेरे बाद तुम निकाह कर लेना फिर दुआ की

---

1. इब्ने सअद, 2. अगर औरत दूसरे ख़ाविंद से निकाह कर ले तो इसमें दो हदीसें वारिद हुई। एक हदीस में आया है कि वह दूसरों को मिलेगी और दूसरी हदीस में आया है कि उसको इख़्तियार दे दिया जायेगा कि जिस ख़ाविंद के पास रहना चाहे, उसको ख़ाविंद इख़्तियार कर ले। यह दूसरी हदीस ज़्यादा मशहूर है और यह भी हो सकता है कि जिन औरतों को दोनों ख़ाविंद बराबर हो, उनके हक़ में पहली हदीस हो। इस बारे में रिवायत मुख़्तलिफ़ है कि हर शख़्स को कितनी बीवियां मिलेंगी।

कि या अल्लाह ! मेरे बाद उम्मे सलमा रज़ि० को मुझसे बेहतर ख़ाविंद अता फ़र्मा, जो न इसको रंज पहुंचाये, न तक्लीफ़ दे।

इब्तिदा-ए-इस्लाम में दोनों मियां-बीवी ने हब्शा की हिजरत साथ ही की। इसके बाद वहां से वापसी पर मदीना तैयबा की हिजरत की जिसका मुफ़स्सल क़िस्सा ख़ुद उम्मे सलमा रज़ि० बयान करती हैं कि जब अबूसलमा ने हिजरत का इरादा किया तो अपने सामान ऊंट पर लादा और मुझे और मेरे बेटे सलमा रज़ि० को सवार कराया और ख़ुद ऊंट की नकेल हाथ में लेकर चले। मेरे मैके के लोगों बनू मुग़ीरा ने देख लिया। उन्होंने अबूसलमा से कहा कि तुम अपनी ज़ात के बारे में तो आज़ाद हो सकते हो, मगर हम अपनी लड़की को तुम्हारे साथ क्यों जाने दें कि यह शहर दर शहर फिरे।[1]

यह कह कर ऊंट की नकेल अबूसलमा रज़ि० के हाथ से छीन ली और मुझे ज़बरदस्ती वापस ले आये। मेरी सुसराल के लोग बनू अब्दुल असद को जो अबूसलमा के रिश्तेदार थे, जब इस क़िस्से की ख़बर मिली तो वह मेरे मैके वालों बनू मुग़ीरा से झगड़ने लगे कि तुम्हें अपनी लडकी का तो इख़्तियार है मगर हम अपने लडके सलमा रज़ि० को तुम्हारे पास क्यों छोड़ दें। जबकि तुमने अपनी लड़की को उसके ख़ाविंद के पास नहीं छोड़ा और यह कह कर मेरे लड़के सलमा को भी मुझसे छीन लिया। अब मैं और मेरा लड़का और शौहर तीनों जुदा-जुदा हो गए, ख़ाविन्द तो मदीना चले गये। मैं अपने मैके में रह गई और बेटा अपनी ददिहाल में पहुंच गया। मैं रोज़ मैदान में निकल जाती और शाम तक रोया करती। इसी तरह पूरा एक साल मुझे रोते गुज़र गया, न मैं ख़ाविंद के पास जा सकी, न बच्चा मुझे मिल सका।

एक दिन मेरे एक चचाज़ाद भाई ने मेरे हाल पर तरस खाकर अपने लोगों से कहा कि तुम्हें इस मिस्कीना पर तरस नहीं आता कि उसको बच्चा और ख़ाविंद से तुमने जुदा कर रखा है, उसको क्यों नहीं छोड़ देते। ग़रज़ मेरे चचाज़ाद भाई ने कह सुन कर इस बात पर उन सबको राज़ी कर लिया। उन्होंने मुझे इजाज़त दे दी कि तू अपने ख़ाविंद के पास जाना चाहती है, तो चली जा। यह देखकर बनू अब्दुल असद ने भी लड़का दे दिया। मैंने एक ऊंट तैयार किया और बच्चा गोद में लेकर ऊंट पर तन्हा सवार होकर मदीना को चल दी। तीन-चार मील चली थी कि तनअीम में उस्मान बिन तल्हा मुझे मिले।

---

1. एक शहर से दूसरे शहर को

मुझसे पूछा, कि अकेली कहां जा रही हो ?

मैंने कहा अपने ख़ाविन्द के पास मदीना जा रही हूं।

उन्होंने कहा, कोई तुम्हारे साथ नहीं।

मैंने कहा अल्लाह की ज़ात के सिवा कोई नहीं है। उन्होंने मेरे ऊंट की नकेल पकड़ी और आगे-आगे चल दिए। ख़ुदा पाक की क़सम! मुझे उस्मान से ज़्यादा शरीफ़ आदमी कोई नहीं मिला। जब उतरने का वक़्त होता, तो वह मेरे ऊंट को बिठा कर ख़ुद अलाहिदा दरख़्त की आड़ में हो जाते मैं उतर जाती और जब सवार होने का वक़्त होता, ऊंट को सामान वग़ैरह लाद कर मेरे क़रीब बिठा देते। मैं उस पर सवार हो जाती और वह आकर उसकी नकेल पकड़ कर आगे-आगे चलने लगते इसी तरह हम मदीना मुनव्वरा पहुंचे। जब क़ुबा में पहुंचे तो उन्होंने कहा कि तुम्हारा ख़ाविन्द यहीं है। उस वक़्त तक अबूसलमा रज़ि० क़ुबा ही में मुक़ीम थे। उस्मान मुझे वहां पहुंचा कर ख़ुद मक्का मुकर्रमा वापस हो गए। फिर कहा कि ख़ुदा की क़सम! उस्मान बिन तल्हा से ज़्यादा करीम और शरीफ़ आदमी मैंने नहीं देखा और इस साल में जितनी मशक़्क़त और तक्लीफ़ मैंने बर्दाश्त की, शायद ही किसी ने की हो।[1]

फ़—अल्लाह पर भरोसे की बात थी कि तंहा हिजरत के इरादे से चल दीं। अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने फ़ज़्ल से उनकी मदद का सामान मुहय्या कर दिया। जो अल्लाह पर भरोसा कर लेता है, अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी मदद फ़र्माता है। बन्दों के दिल उसी के क़ब्ज़े में हैं। हिजरत का सफ़र अगर कोई महरम न हो तो तंहा भी जायज़ है, बशर्ते कि हिजरत फ़र्ज़ हो, इसलिए उनके तन्हा सफ़र पर शरओ इश्काल[2] नहीं।

6. हज़रत उम्मे ज़ियाद रज़ि० की चन्द औरतों के साथ ख़ैबर की जंग में शिर्कत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मर्दों को तो जिहाद की शिर्कत का शौक़ था ही, जिसके वाक़िआत कसरत से नक़ल किये जाते हैं। औरतें भी इस चीज़ में मर्दों से पीछे नहीं थीं। हमेशा मुश्ताक़ रहती थीं और जहां मौक़ा मिल जाता, पहुंच जातीं।

---

1. असदुल ग़ाबा, 2. परेशानी, दिक़्क़त,

उम्मे ज़ियाद रज़ि० कहती हैं कि ख़ैबर की लड़ाई में हम छः औरतें जिहाद में शिर्कत के लिए चल दीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली तो हमको बुलाया। हुज़ूर सल्ल० के चेहरा-ए-अन्वर पर ग़ुस्से के आसार थे। इर्शाद फ़र्माया कि तुम किस की इजाज़त से आईं और किस के साथ आईं।

हम ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हमको ऊन बुनना आता है और जिहाद में उसकी ज़रूरत पड़ती है। ज़ख़्मों की दवाएं भी हमारे पास हैं और कुछ नहीं तो मुजाहिदीन को तीर ही पकड़ाने में मदद दे देंगे और जो बीमार होगा, उसकी दवा दारू की मदद हो सकेगी। सत्तू वग़ैरह घोलने और पिलाने में काम दे देंगे। हुज़ूर सल्ल० ने ठहर जाने की इजाज़त दे दी।[1]

फ़—हक़ तआला शानुहू ने उस वक़्त औरतों में भी कुछ ऐसा वलवला और जुरअत पैदा फ़र्माई थी, जो आजकल मर्दों में भी नहीं है। देखिए, यह सब अपने शौक़ से ख़ुद ही पहुंच गयीं और कितने काम अपने करने के तज्वीज़ कर लिए।

हुनैन की लड़ाई में उम्मे सुलैम बावजूद कि हामिला थीं, अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा रज़ि० पेट में थे, शरीक हुईं और एक ख़ंजर साथ लिए रहती थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया , यह किस लिए है ?

अर्ज़ किया कि, अगर कोई काफ़िर मेरे पास आयेगा तो उसके पेट में घोंप दूंगी। इससे पहले उहद वग़ैरह की लड़ाई में भी यह शरीक हुई थीं। ज़ख़्मियों की दवा-दारू और बीमारों की ख़िदमत करती थीं।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ि० और उम्मे सुलैम को देखा कि निहायत मुस्तैदी से मश्क भर कर लाती थीं और ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं। और जब ख़ाली हो जाती तो फिर भर लातीं।

7. हज़रत उम्मे हराम रज़ि० की ग़ज़वतुल बहर में शिर्कत की तमन्ना

हज़रत उम्मे हराम रज़ि० हज़रत अनस रज़ि० की ख़ाला थीं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कसरत से उनके घर तश्रीफ़ ले जाते और कभी दोपहर वग़ैरह को वहीं आराम भी फ़र्माते थे।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके घर आराम फ़र्मा

रहे थे कि मुस्कराते हुए उठे। उम्मे हराम रज़ि० ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, किस बात पर आप मुस्करा रहे थे ?

आपने फ़र्माया, मेरी उम्मत के कुछ लोग मुझे दिखलाये गये, जो समुन्दर पर लड़ाई के इरादे से इस तरह सवार हुए जैसे तख़्तों पर बादशाह बैठे हों।

उम्मे हराम रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह! दुआ फ़र्मा दीजिए कि हक़ तआला शानुहू मुझे भी उन में शामिल फ़र्मा दे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम भी इन में शामिल होगी। इसके बाद फिर हुज़ूर सल्ल० ने आराम फ़र्माया, फिर मुस्कराते हुए उठे। उम्मे हराम रज़ि० ने फिर मुस्कराने का सबब पूछा। आप ने फिर उसी तरह इर्शाद फ़र्माया। उम्मे हराम रज़ि० ने फिर वही दर्ख़्वास्त की कि, या रसूलल्लाह। आप दुआ फ़र्मा दें कि मैं भी उन में हूं। आप ने इर्शाद फ़र्माया, तुम पहली जमाअत में होगी।

चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में अमीर मआविया रज़ि० ने, जो शाम के हाकिम थे, जज़ाइर क़ब्रस पर हमले की इजाज़त चाही। हज़रत उस्मान रज़ि० ने इजाज़त दे दी।

अमीर मआरिया रज़ि० ने एक लश्कर के साथ हमला फ़र्माया जिसमें उम्मे हराम रज़ि० भी अपने ख़ाविंद हज़रत उबादा रज़ि० के साथ लश्कर में शरीक हुईं और वापसी पर एक ख़च्चर पर सवार हो रही थीं कि वह बिदका, और यह उस पर से गिर गयीं जिस से गर्दन टूट गयी, और इंतिक़ाल फ़र्मा गईं और वहीं दफ़्न कर दी गयीं।[1]

फ़—यह वलवला[2] था जिहाद में शिर्कत का कि हर लड़ाई में शिर्कत की दुआ कराती थीं, मगर चूंकि इन दोनों लड़ाइयों में से पहली लड़ाई में इंतिक़ाल फ़र्माना मुतअय्यन[3] था, इसलिए दूसरी लड़ाई में शिर्कत न हो सकी और इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने इसमें शिर्कत की दुआ भी न फ़र्मायी।

8. हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० की लड़के के मरने पर ख़ाविंद से हमबिस्तरी

उम्मे सुलैम रज़ि० हज़रत अनस रज़ि० की वालिदा थीं, जो अपने पहले ख़ाविंद

1. बुख़ारी, 2. जज़्बा, जोश, 3. निश्चित।

यानी हज़रत अनस रज़ि० के वालिद की वफ़ात के बाद बेवा हो गई थीं और हज़रत अनस रज़ि० की परवरिश के ख़्याल से कुछ दिनों तक निकाह नहीं किया था। इसके बाद हज़रत अबूतल्हा रज़ि० से निकाह किया जिनसे एक साहबज़ादे अबूउमैर रज़ि० पैदा हुए, जिन से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब उनके घर तश्रीफ़ ले जाते, हंसी भी फ़र्माया करते थे।

इत्तिफ़ाक़ से अबूउमैर रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया। उम्मे सुलैम रज़ि० ने उनको नहलाया-धुलाया कफ़न पहनाया और एक चारपाई पर लिटा दिया। अबू तल्हा रज़ि० का रोज़ा था। उम्मे सुलैम रज़ि० ने उनके लिए खाना वग़ैरह तैयार किया, और ख़ुद अपने आपको भी आरास्ता[1] किया। ख़ुश्बू वग़ैरह लगायी, रात को ख़ाविंद आये, खाना वग़ैरह भी खाया, बच्चे का हाल पूछा तो उन्होंने कह दिया कि अब तो सुकून है मालूम होता है, बिल्कुल अच्छा हो गया। वह बे-फ़िक्र हो गये। रात को ख़ाविंद ने सोहबत भी की। सुबह को जब वह उठे तो कहने लगीं कि एक बात दर्याफ़्त करनी थी। अगर कोई शख़्स किसी को मांगी चीज़ दे दे, फिर वह उसे वापस लेने लगे तो वापस कर देना चाहिए या उसे रोक ले, वापस न करे। वह कहने लगे कि ज़रूर वापस कर देना चाहिए। रोकने का क्या हक़ है। मांगी चीज़ का तो वापस करना ही ज़रूरी है।

यह सुन कर उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा कि तुम्हारा लड़का जो अल्लाह की अमानत था, वह अल्लाह ने ले लिया। अबूतल्हा रज़ि० को इस पर रंज हुआ, और कहने लगे कि तुमने मुझ को ख़बर भी न की।

सुबह को हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में अबूतल्हा रज़ि० ने सारे क़िस्से को अर्ज़ किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ दी और फ़र्माया कि शायद अल्लाह जल्ल शानुहू इस रात में बरकत अता फ़र्मावें।

एक अंसारी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की दुआ की बरकत देखी कि उस रात के हमल से अब्दुल्लाह बिन अबीतल्हा रज़ि० पैदा हुए, जिनके नौ बच्चे हुए। सबने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा।[2]

फ़—बड़े सब्र और हिम्मत की बात है कि अपना बच्चा मर जाए और इसी तरह उसको बर्दाश्त करे कि ख़ाविंद को भी महसूस न होने दे, चूंकि ख़ाविंद का रोज़ा

---

1. सजाया, 2. बुख़ारी, फ़त्ह।

था, इसलिए ख़्याल हुआ कि ख़बर होने पर खाना भी मुश्किल होगा।

9. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० का अपने बाप को बिस्तर पर न बिठाना

उम्मुल्मोमिनीन हजरत उम्मे हबीबा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० से पहले अब्दुल्लाह बिन जह्श के निकाह में थीं। दोनों ख़ाविंद-बीवी साथ ही मुसलमान हुए और हब्शा की हिजरत भी इकट्ठे ही की। वहां जाकर ख़ाविंद मुर्तद[1] हो गया और इसी हालते इर्तिदाद[2] में इंतिक़ाल किया। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने यह बेवगी का ज़माना हब्शा ही में गुज़ारा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहीं निकाह का पयाम भेजा और हब्शा के बादशाह की मार्फ़त निकाह हुआ जैसा कि बाब के ख़त्म पर बीवियों के बयान में आयेगा।

निकाह के बाद मदीना तैयबा तश्रीफ़ ले आयीं। सुलह के ज़माने में उनके बाप अबू सुफ़ियान मदीना तैयबा आये कि हुज़ूर सल्ल० से सुलह की मज़बूती के लिए गुफ़्तगू करनी थी। बेटी से मिलने गये, वहां बिस्तर बिछा हुआ था, उस पर बैठने लगे तो हजरत उम्मे हबीबा रज़ि० ने वह बिस्तर उलट दिया। बाप को ताज्जुब हुआ कि बजाए बिस्तर बिछाने के उस बिछे हुए को भी उलट दिया। पूंछा कि यह बिस्तरा मेरे क़ाबिल नहीं था, इस लिए लपेट दिया, या मैं बिस्तरे के क़ाबिल नहीं था ?

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने फ़र्माया कि यह अल्लाह के पाक और प्यारे रसूल का बिस्तर है। और तुम ब-वजह मुश्रिक होने के[3] नापाक हो, उस पर कैसे बिठा सकती हूं। बाप को इस बात से बहुत रंज हुआ और कहा कि तुम मुझ से जुदा होने के बाद बुरी आदतों में मुब्तला हो गयीं, मगर उम्मे हबीबा रज़ि० के दिल में हुज़ूर सल्ल० की जो अज़्मत[4] थी उसके लिहाज़ से वह कब इसको गवारा कर सकती थीं कि कोई नापाक मुश्रिक बाप हो, या ग़ैर हो, हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर बैठ सके।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० से चाश्त की बारह रक्अतों की फ़ज़ीलत सुनी तो हमेशा उनको पाबन्दी से निभा दिया। उनके वालिद भी जिन का क़िस्सा अभी गुज़रा है, बाद में मुसलमान हो गये थे। जब उनका इंतिक़ाल हुआ तो तीसरे दिन ख़ुश्बू

---

1. इस्लाम से फिर जाने वाला, 2. इस्लाम से फिर जाने की हालत में, 3. मुश्रिक होने की वजह से, 4. बड़ाई, महानता।

मंगायी और उसको इस्तेमाल किया और फ़र्माया कि मुझे न ख़ुश्बू की ज़रूरत, न रग़बत[1], मगर मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़र्माते हुए सुना कि औरत को जायज़ नहीं कि ख़ाविंद के अलावा किसी पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करे, हां ख़ाविंद के लिए चार महीने दस दिन हैं, इसलिए ख़ुश्बू इस्तेमाल करती हूं कि सोग न समझा जाए।

जब ख़ुद अपने इन्तिक़ाल का वक़्त हुआ तो हज़रत आइशा रज़ि० को बुलाया और उन से कहा कि मेरा तुम्हारा मामला सौकन का था और सौकनों में आपस में किसी न किसी बात पर थोड़ी बहुत रंजिश हो ही जाती है। अल्लाह मुझे भी माफ़ फ़र्मा दें और तुम्हें भी।

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़र्माया, अल्लाह तुम्हें सब माफ़ करे और दर गुज़र फ़र्मायें। यह सुन कर कहने लगीं कि तुम ने मुझे इस वक़्त बहुत ही ख़ुशी पहुंचाई, अल्लाह तुम्हें भी ख़ुश व ख़ुर्रम रखे। उस के बाद इसी तरह उम्मे सलमा रज़ि० के पास भी आदमी भेजा।

फ़—सौकनों के जो ताल्लुक़ात आपस में होते हैं, वह एक दूसरे की सूरत भी देखना नहीं चाहा करतीं, मगर इनको यह एहतिमाम था कि दुनिया का जो मामला हो, वह यहीं निमट जाए। आख़िरत का बोझ सर पर न रहे और हुज़ूरे सल्ल० की अज़्मत और मुहब्बत का अन्दाज़ा तो उस बिस्तर के मामले से हो ही गया।

10. हज़रत ज़ैनब रज़ि० का इफ़्क के मामले में सफ़ाई पेश करना

उम्मुलमोमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ि० बिन्ते जह्श रज़ि० रिश्ते में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफीज़ाद बहन थीं। शुरू ही ज़माने में मुसलमान हो गयी थीं। इब्तिदा में आपका निकाह हज़रत ज़ैद रज़ि० से हुआ, जो हुज़ूर सल्ल० के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे और हुज़ूर सल्ल० के मुतबन्ना[3] थे, जिसको लयपालक कहते हैं, इसी वजह से ज़ैद बिन मुहम्मद कहलाते थे, मगर हज़रत ज़ैद रज़ि० से हज़रत ज़ैनब रज़ि० का निबाह न हो सका, तो उन्होंने तलाक़ दे दी।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस ख़्याल से कि ज़माना-ए-जाहिलीयत की एक रस्म टूटे, वह यह कि मुतबन्ना बिल्कुल ही बेटे जैसा

---

1. चाव, 2. बबक़ात, 3. लयपालक, मुंह बोले लड़के,

होता है, और इसकी बीवी से निकाह भी न करना चाहिए इसलिए अपने निकाह का पयाम भेजा।

हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने जवाब दिया कि मैं अपने रब से मश्वरा कर लूं। यह कह कर वुज़ू किया और नमाज़ की नीयत बांधी कि अल्लाह से मश्वरा बग़ैर मैं कुछ जवाब नहीं देती, जिसकी बरकत यह हुई कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने ख़ुद हुज़ूर सल्ल० का निकाह हज़रत ज़ैनब रज़ि० से किया और क़ुरआन पाक की आयत–

فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي
أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا

फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम मिन हा वत्रन ज़व्वज्ना क हा लि कैला यकू न अलल मुअ्मिनी न ह र जुनफ़ी अज़्वाजि अद्अियाइहिम इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्न वत्रन व का न अम्रुल्लाहि मफ़अूला०

(पस जब ज़ैद रज़ि० ने अपनी हाजत को उससे पूरा कर लिया तो हमने उसको तुम्हारे निकाह में दे दिया ताकि न रहे मोमिनीन पर तंगी अपने लयपालकों की बीवियों के बारे में, जब कि वह अपनी हाजत उनसे पूरी कर चूकें और अल्लाह का हुक्म हो कर ही रहा।)

जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० को इस आयत के नाज़िल होने पर निकाह की ख़ुशख़बरी दी गई तो जिसने बशारत दी थी, उसको वह ज़ेवर निकाल कर दे दिया जो वह उस वक़्त पहन रही थीं और ख़ुद सज्दा में गिर गईं और दो महीनों के रोज़ों की मन्नत मानी। हज़रत ज़ैनब को इस बात पर बजा तौर पर फ़ख़्र था कि सब बीवियों का निकाह उनके अज़ीज़-रिश्तेदारों ने किया, मगर हज़रत ज़ैनब रज़ि० का निकाह आसमान पर हुआ और क़ुरआन पाक में नाज़िल हुआ, इसी वजह से हज़रत आइशा रज़ि० से मुक़ाबले की नौबत भी आ जाती थी कि उनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे ज़्यादा महबूब होने पर नाज़ था और इनको आसमान के निकाह पर नाज़ था, लेकिन इसके बावजूद हज़रत आइशा रज़ि० पर तोहमत के क़िस्से में, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिनजुम्ला औरों के, उनसे भी दर्याफ़्त किया तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं आइशा रज़ि० में भलाई के सिवा कुछ नहीं जानती।

यह थी सच्ची दीनदारी, वरना वक़्त सौकन के ऊपर इल्ज़ाम लगाने का था और ख़ाविंद की निगाह से गिराने का, बिलख़ुसूस उस सौकन के जो लाडली भी थीं, मगर इसके बावजूद ज़ोर से सफ़ाई की और तारीफ़ की। हज़रत ज़ैनब रज़ि० बड़ी बुज़ुर्ग थीं, रोज़े भी कसरत से रखती थीं और नवाफ़िल भी कसरत से पढ़ती थीं, अपने हाथ से मेहनत भी करती थीं और जो हासिल होता था, उसको सद्क़ा कर देती थीं।

हुज़ूर सल्ल० के विसाल के वक़्त अज़वाजे मुतह्हरात ने पूछा कि हम में से सबसे पहले आप से कौन सी बीवी मिलेगी ? आपने फ़र्माया, जिसका हाथ लम्बा हो। वे लकड़ी लेकर हाथ नापने लगीं। लेकिन बाद में मालूम हुआ कि हाथ के लम्बा होने से बहुत ज़्यादा ख़र्च करना मुराद था।

चुनांचे सबसे पहले हज़रत ज़ैनब रज़ि० का ही विसाल हुआ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अज़्वाजे मुतह्हरात की तंख़्वाह मुक़र्रर फ़र्मायी और उनके पास उनके हिस्से का माल बारह हज़ार दिरहम भेजे तो यह समझीं कि यह सबका हिस्सा है। फ़र्माने लगीं कि तक़सीम के लिए तो और बीवियां बीवियां ज़्यादा मुनासिब थीं। क़ासिद ने कहा, यह सब आप ही का हिस्सा है और तमाम साल के लिए है, तो ताज्जुब से कहने लगीं, सुब्हानल्लाह ! और मुंह पर कपड़ा डाल लिया कि इस माल को देखें भी नहीं। इसके बाद फ़र्माया कि हुज्रे के कोने में डाल दिया जाए और उस पर एक कपड़ा डलवा दिया।

फिर बर्ज़ा रज़ि० से फ़र्माया (जो इस क़िस्से को नक़ल कर रहे हैं) कि इसमें से एक मुट्ठी भर कर फ़्लां को दे आओ और एक मुट्ठी फ़्लां को। गरज़ रिश्तेदारों ग़रीबों-बेवाओं को एक-एक मुट्ठी तक़सीम फ़र्मा दिया। उस में जब ज़रा सा रह गया तो बर्ज़ा रज़ि० ने भी ख़्वाहिश ज़ाहिर की। फ़र्माया कि जो कपड़े के नीचे रह गया, वह तुम ले जाओ। वह कहते हैं कि मैंने, जो रह गया था, वह ले लिया और लेकर गिना तो चौरासी दिरहम थे। उस के बाद दोनों हाथ उठा कर दुआ की कि या अल्लाह ! आइन्दा साल यह माल मुझे न मिले कि इसके आने में भी फ़ित्ना है। चुनांचे दूसरे साल की तंख़्वाह आने से पहले ही इनका विसाल हो गया।

हज़रत उमर रज़ि० को ख़बर हुई कि वह बारह हज़ार दिरहम तो ख़त्म कर दिये गये तो उन्होंने एक हज़ार और भेजे कि अपनी ज़रूरतों में ख़र्च करें। उन्होंने वह भी उसी वक़्त तक़सीम कर दिये। बावजूद कसरते फ़ुतूहात के,इंतिक़ाल के वक़्त न कोई दिरहम छोड़ा, न कोई माल, सिर्फ़ वह घर तर्का था जिसमें वह रहती थीं। सद्क़ा

की कसरत की वजह से 'मावल मसाकीन' (मासाकीन का ठिकाना) उनका लक़ब था।[1]

एक औरत कहती है कि मैं हजरत ज़ैनब रज़ि० के यहां थीं और हम गेरू से कपड़े रंगने में मश्गूल थे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये। हमको रंगते हुए देखकर वापस तश्रीफ़ ले गए। हजरत ज़ैनब रज़ि० को ख़्याल पैदा हुआ कि हुज़ूर सल्ल० को यह चीज नागवार हुई, सब कपड़ों को जो रंगे थे, फ़ौरन धो डाला। दूसरे मौके पर हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ लाये। जब देखा कि वह रंग का मंजर नहीं है तो अन्दर तश्रीफ़ लाये।[2]

फ़— औरतों को बिलख़ुसूस माल से जो मुहब्बत होती है, वह भी मख़्फ़ी[3] नहीं और रंग वग़ैरह से जो उन्स[4] होता है, वह भी मुहताजे बयान नहीं, लेकिन वह भी आख़िर औरतें थी जो माल का रखना जानती ही न थीं और हुज़ूर सल्ल० का मामूली सा इशारा पाकर सारा रंग धो डाला।

11. हज़रत खंसा रज़ि० की अपने चार बेटों समेत जंग में शिर्कत

हजरत ख़न्सा रज़ि० मशहूर शायरा हैं। अपनी क़ौम के चन्द आदमियों के साथ मदीना आकर मुसलमान हुई।

इब्ने असीर रह० कहते हैं कि अहले इल्म का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी औरत ने इन से बेहतर शेर नहीं कहा, न इन से पहले, न इनके बाद। हजरत उमर रज़ि० के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में सन् 16 हि० में क़ादसिया की लड़ाई हुई, जिसमें ख़न्सा अपने चारों बेटों समेत शरीक हुईं। लड़कों को एक दिन पहले बहुत नसीहत की और लड़ाई की शिर्कत पर बहुत उभारा, कहने लगीं कि मेरे बेटों! तुम अपनी ही ख़ुशी से मुसलमान हुए हो और अपनी ही ख़ुशी से तुमने हिजरत की। उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि जिस तरह तुम एक मां के पेट से पैदा हुए हो, उसी तरह एक बाप की औलाद हो। मैंने न तुम्हारे बाप से ख़ियानत की, न तुम्हारे मामू को रुसवा किया, न मैंने तुम्हारी शराफ़त में कोई धब्बा लगाया, न तुम्हारे नसीब को ख़राब किया। तुम्हें मालूम है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुसलमानों के लिए काफ़िरों से लड़ाई में क्या-क्या सवाब रखा है। तुम्हें यह बात भी याद रखना

1. तब्क़ात, 2. अबूदाऊद, 3. छिपा हुआ, 4. मुहब्बत लगाव.

चाहिए कि आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी दुनिया की फ़ना हो जाने वाली ज़िन्दगी से कहीं बेहतर है। अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है-

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

या ऐ युहल्लज़ी न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू वत्तक़ुल्ला ह लअल्लकुम तुफ़्लिहून०

ऐ ईमान वालों ! तकालीफ़ पर सब्र करो और कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सब्र करो और मुक़ाबले के लिए तैयार रहो ताकि तुम पूरे कामियाब हो, ।[1]

लिहाज़ा कल सुबह को जब तुम सही सालिम उठो, तो बहुत होशियारी से लड़ाई में शरीक हो और अल्लाह तआला से दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद मांगते हुए बढ़ो और जब तुम देखो, लड़ाई ज़ोरों पर आ गई और उसके शोले भड़कने लगे तो उसकी गरम आग में घुस जाना और काफ़िरों के सरदार का मुक़ाबला करना। इन्शाअल्लाह जन्नत में इकराम के साथ कामियाब होकर रहोगे। चुनांचे जब सुबह को लड़ाई ज़ोरों पर हुई तो चारों लड़कों में से एक-एक नम्बर वार आगे बढ़ता था और अपनी मां की नसीहत को अश्आर में पढ़ कर उमंग पैदा करता था और जब शहीद हो जाता था, तो इसी तरह दूसरा बढ़ता था और शहीद होने तक लड़ता रहता था बिलआख़िर चारों शहीद हुए और जब मां को चारों के मरने की ख़बर हुई तो उन्होंने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि जिसने उनकी शहादत से मुझे शर्फ़ बख़्शा, मुझे अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि उसकी रहमत के साये में उन चारों के साथ मैं भी रहूंगी।[2]

फ़— ऐसी भी अल्लाह की बन्दी माएं होती है जो चारों जवान बेटों को लड़ाई की तेज़ी और ज़ोर में घुस जाने की तर्ग़ीब दें और जब चारों शहीद हो जायें और एक ही वक़्त में सब काम आ जायें तो अल्लाह का शुक्र अदा करें।

12 हज़रत सफ़िया रज़ि० का यहूदी को तन्हा मारना

हज़रत सफ़िया रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी और हज़रत हमज़ा रज़ि० की हक़ीक़ी बहन थीं, उहद की लड़ाई में शरीक हुईं और

1. बयानुल क़ुरआन, 2. असदुल ग़ाबह,

जब मुसलमानों को कुछ शकिस्त हुई और भागने लगे, तो वह बरछा उनके मुंह पर मार-मार कर वापस करती थीं। ग़ज़्वा-ए ख़न्दक़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब मस्तूरात[1] को एक क़िला में बन्द फ़र्मा दिया था और हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० को बतौर मुहाफ़िज़ के छोड़ दिया था, यहूद के लिए यह मौक़ा बहुत ग़नीमत था कि वह तो अन्दरूनी दुश्मन थे ही, यहूद की एक जमाअत ने औरतों पर हमले का इरादा किया और एक यहूदी हालात मालूम करने के लिए क़िले पर पहुंचा। हज़रत सफ़िया रज़ि० ने कहीं से देख लिया। हज़रत हस्सान रज़ि० से कहा कि यह यहूदी मौक़ा देखने आया है, तुम क़िले से बाहर निकलो और उसको मार दो। वह ज़ईफ़ थे, ज़ोफ़[2] की वजह से उनकी हिम्मत न हुई तो हज़रत सफ़िया रज़ि० ने एक ख़ेमे का खूंटा अपने हाथ में लिया और ख़ुद निकल कर उसका सर कुचल दिया। फिर क़िले में वापस आकर हज़रत हस्सान रज़ि० से कहा कि चूंकि वह यहूदी मर्द था, नामहरम होने की वजह से मैंने उसका सामान और कपड़े नहीं उतारे, तुम उसके सब कपड़े उतार लाओ और उसका सर भी काट लाओ।

हज़रत हस्सान रज़ि० ज़ईफ़ थे, जिसकी वजह से इसकी भी हिम्मत न फ़र्मा सके तो दोबारा तश्रीफ़ ले गईं और उसका सर काट लाईं और दीवार पर से यहूद के मज्मे में फेंक दिया। वह देख कर कहने लगे कि हम तो पहले ही से समझते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम औरतों को बिल्कुल तंहा नहीं छोड़ सकते हैं, ज़रूर उनके मुहाफ़िज़ मर्द अन्दर मौजूद हैं।[3]

फ़— सन् 20 हि० में हज़रत सफ़िया रज़ि० का विसाल हुआ उस वक़्त उनकी उम्र तिहत्तर साल की थी। इस लिहाज़ से ख़न्दक़ की लड़ाई में जो सन् 05 हि० में हुई, उनकी उम्र 58 साल की हुई। आज कल इस उम्र की औरतों को घर का काम भी दूभर हो जाता है, चजाए कि एक मर्द का इस तरह तंहा क़त्ल कर देना और ऐसी हालत में कि यह तंहा औरतें और दूसरी जानिब यहूद का मज्मा।

13. हज़रत असमा रज़ि० का औरतों के अज्र के बारे में सवाल

असमा बिन्ते यज़ीद अंसारी रज़ि० सहाबिया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप

1. औरतें, 2. कमज़ोरी, 3. असदुल ग़ाबा,

आप पर क़ुर्बान, मैं मुसलमान औरतों की तरफ़ से बतौर क़ासिद के हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई हूं। बेशक आपको अल्लाह जल्ल शानुहू ने मर्द और औरत दोनों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा। इसलिए हम औरतों की जमाअत आप पर ईमान लाई और अल्लाह पर ईमान लाई लेकिन हम औरतों की जमाअत मकानों में घिरी रहती है, पर्दों में बन्द रहती है, मर्दों के घरों में गड़ी रहती है और मर्दों की ख़्वाहिशें हम से पूरी की जाती हैं, हम उनकी औलाद को पेट में उठायें रहती हैं और इन सब बातों के बावजूद मर्द बहुत से सवाब के कामों में हम से बढ़े रहते हैं, जुमा में शरीक होते हैं, जमाअत की नमाज़ों में शरीक होते हैं, बीमारों की इयादत करते हैं, जनाज़ों में शिर्कत करते हैं, हज पर हज करते रहते हैं और इन सब से बढ़कर जिहाद करते रहते हैं और जब वह हज के लिए या उमर: के लिए या जिहाद के लिए जाते हैं, तो हम औरतें उनके मालों की हिफ़ाज़त करती हैं, उनके लिए कपड़ा बुनती हैं, उनकी औलाद को पालती हैं, क्या हम उनके सवाब में शरीक नहीं ?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सुनकर सहाबा रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह हुए और इर्शाद फ़र्माया कि तुमने दीन के बारे में इस औरत से बेहतर करने वाली कोई सुनी ?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! हमको ख़्याल भी न था कि औरत भी ऐसा सवाल कर सकती है ? इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्मा रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह हुए और इर्शाद फ़र्माया कि ग़ौर से सुन और समझ और जिन औरतों ने तुझको भेजा है, उनको बता दे कि औरत का अपने ख़ाविंद के साथ अच्छा बर्ताव करना और उसकी ख़ुशनूदी को ढूंढ़ना और उस पर अमल करना, इन सब चीज़ों के सवाब के बराबर है।

अस्मा रज़ि० यह जवाब सुनकर निहायत ख़ुश होती हुई वापस हो गईं।[1]

फ़— औरतों का अपने ख़ाविंदों के साथ अच्छा बर्ताव करना और उनकी इताअत व फ़र्माबरदारी करना बहुत ही क़ीमती चीज है, मगर औरतें इससे बहुत ही ग़ाफ़िल है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में अर्ज किया कि अजमी लोग अपने बादशाहों और सरदारों को सज्दा करते हैं। आप इसके ज़्यादा मुस्तहक़ हैं कि हम आपको सज्दा

1. असदुल ग़ाबा

किया करें। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़र्माया और इर्शाद फ़र्माया कि अगर मैं अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा का हुक्म करता तो औरतों को हुक्म देता कि अपने ख़ाविंदों को सज्दा किया करें। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि औरत अपने रब का हक़ उस वक़्त तक अदा नहीं कर सकती, जब तक ख़ाविंद का हक़ अदा न करे।

एक हदीस में आया है कि एक ऊंट आया और हुज़ूर सल्ल० को सज्दा किया। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि जब यह जानवर आपको सज्दा करता है तो हम ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि आपको सज्दा करें। हुज़ूर ने मना फ़र्माया और यही इर्शाद फ़र्माया कि अगर मैं किसी को हुक्म करता कि किसी को अल्लाह के सिवा सज्दा करें तो औरत को हुक्म करता कि अपने ख़ाविंद को सज्दा करे।

एक हदीस में आया है कि जो औरत ऐसी हालत में मरे कि ख़ाविंद उससे राज़ी हो, वह जन्नत में जाएगी।

एक हदीस में आया है कि अगर औरत ख़ाविंद से नाराज़ होकर अलाहिदा रात गुज़ारे तो फ़रिश्ते उस पर लानत करते रहते हैं।

एक हदीस में आया है कि दो आदमियों की नमाज़ क़ुबूलियत के लिए आसमान की तरफ़ इतनी भी नहीं जाती कि सर से ऊपर हो जाए। एक वह ग़ुलाम जो अपने आक़ा से भागा हो और एक वह औरत कि जो ख़ाविंद की ना फ़र्मानी करती हो।

14. हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि० का इस्लाम और जंग में शिर्कत

हज़रत उम्मे अम्मारा अन्सारिया रज़ि० उन औरतों में है जो इस्लाम के शुरू ज़माने में मुसलमान हुईं और बैअतुल उक़्बा में शरीक हुईं उक़्बा के मानी घाटी के हैं। हुज़ूर सल्ल० अव्वल छुपकर मुसलमान करते थे, क्यों कि मुश्रिक व काफ़िर लोग नव-मुस्लिमों को सख़्त तक्लीफ़ पहुंचाते थे। मदीना के कुछ लोग हज के ज़माने में आते थे और मिना के पहाड़ में एक घाटी में छुपकर मुसलमान होते थे। तीसरी मर्तबा जो लोग मदीना से आये हैं उनमें यह भी थीं। हिजरत के बाद जब लड़ाइयों का सिलसिला शुरू हुआ तो यह अक्सर लड़ाइयों में शरीक हुईं। बिलख़ुसूस उहद, हुदैबिया, ख़ैबर, उमरतुल क़ज़ा, हुनैन और यमामा की लड़ाई में। उहद की लड़ाई का क़िस्सा ख़ुद ही सुनाती है। कि मैं मश्कीज़ा पानी का भरकर उहद को चल दी कि देखूं मुसलमानों

पर क्या गुज़री और कोई प्यासा ज़ख़्मी मिला तो पानी पिला दूंगी। उस वक़्त उनकी उम्र 43 वर्ष की थी। उनके ख़ाविंद और दो बेटे भी लड़ाई में शरीक थे। मुसलमानों को फ़त्ह और ग़ल्बा हो रहा था, मगर थोड़ी देर में जब काफ़िरों को ग़ल्बा ज़ाहिर होने लगा तो मैं हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंच गयी और जो काफ़िर उधर का रुख़ करता था, उसको हटाती थी, इब्तिदा में उनके पास ढाल भी न थी, बाद में मिली, जिस पर काफ़िरों का हमला रोकती थी। कमर पर एक कपड़ा बांध रखा था, जिस के अन्दर मुख़्तलिफ़ चीथड़े भरे हुए थे। जब कोई ज़ख़्मी हो जाता तो एक चीथड़ा निकाल कर जलाकर उस ज़ख़्म में भर देती, ख़ुद भी कई जगह से ज़ख़्मी हुई, बारह-तेरह जगह ज़ख़्म आये, जिन में एक बहुत सख़्त था।

उम्मे सईद रज़ि० कहती हैं कि मैंने उनके मोंढे पर एक बहुत गहरा ज़ख़्म देखा। मैंने पूछा यह किस तरह पड़ा था, कहने लगीं की उहद की लड़ाई में जब लोग इधर-उधर परेशान फिर रहे थे तो इब्ने क़ुमैया यह कहता हुआ बढ़ा कि मुहम्मद सल्ल० कहां हैं ? मुझे कोई बता दो कि किधर हैं। अगर वह आज बच गये तो मेरी निजात नहीं।

मुस्अब बिन उमैर रज़ि० और चन्द आदमी उसके सामने आ गए जिनमें मैं भी थी।उसने मेरे मोंढ़े पर वार किया, मैंने भी उस पर कई वार किये, मगर उस पर दोहरी ज़िरह थी, इसलिए ज़िरह से हमला रुक जाता था, यह ज़ख़्म ऐसा सख़्त था कि साल भर तक इलाज हुआ, मगर अच्छा न हुआ। इसी दौरान में हुज़ूर सल्ल० ने हमरउल असद की लड़ाई का ऐलान फ़र्मा दिया। उम्मे अमारा रज़ि० भी कमर बांध कर तैयार हो गईं मगर चूंकि पहला ज़ख़्म बिल्कुल हरा था, इसलिए शरीक न हो सकीं। हुज़ूर सल्ल० जब हमरउल असद से वापस हुए तो सबसे पहले उम्मे अम्मारा की ख़ैरियत मालूम की और जब मालूम हुआ कि इफ़ाक़ा[1] है तो बहुत ख़ुश हुए।

इस ज़ख़्म के अलावा उहद की लड़ाई में और भी बहुत से ज़ख़्म आये थे। उम्मे अम्मारा रज़ि० कहती है कि असल में वह लोग घोड़े पर सवार थे और हम पैदल थे। अगर वे भी हमारी तरह से पैदल होते जब बात थी उस वक़्त असल मुक़ाबले का पता चलता। जब घोड़े पर कोई आता और मुझे मारता तो उसके हमलों को मैं ढाल पर रोकती रहती और जब वह मुझसे मुंह मोड़कर दूसरी तरफ़ चलता तो में उसके घोड़े की टांग पर हमला करती और वह कट जाती, जिससे वह भी गिरता

1. फ़ायदा,

सवार भी गिरता और जब वह गिरता तो हुज़ूर सल्ल० मेरे लड़के को आवाज़ देकर मेरी मदद के लिए भेजते, मैं और वह दोनों मिलकर उसको निमटा देते।

उनके बेटे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मेरे बायें बाज़ू में ज़ख़्म आया और ख़ून थमता न था। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इस पर पट्टी बांध लो। मेरी वालिदा आयीं, अपनी कमर में से कुछ कपड़ा निकाला, और पट्टी बांधी और बांध कर कहने लगीं कि जा काफ़िरों से मुक़ाबला कर। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मंज़र को देख रहे थे, फ़र्माने लगे, उम्मे अम्मारा रज़ि० इतनी हिम्मत कौन रखता होगा जितनी तू रखती है। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दौरान में उनको और उनके घराने को कई बार दुआयें भी दीं और तारीफ़ भी फ़र्मायी।

उम्मे अमारा रज़ि० कहती हैं कि उसी वक़्त एक काफ़िर सामने आया तो हुज़ूरे सल्ल० ने मुझ से फ़र्माया कि यही है जिसने तेरे बेटे को ज़ख़्मी किया है, मैं बढ़ी और उसकी पिंडली पर वार किया, जिससे वह ज़ख़्मी हुआ और एक दम बैठ गया। हुज़ूर सल्ल० मुस्कराये और फ़र्माया कि बेटे का बदला ले लिया। इसके बाद हम लोग आगे बढ़े, और उसको निमटा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने जब हम लोगों को दुआयें दीं तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! दुआ फ़र्माइए कि हक़ तआला शानुहू जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त नसीब फ़र्माये। जब हुज़ूर सल्ल० ने उसकी दुआ फ़र्मा दी तो कहने लगीं कि अब मुझे कुछ परवाह नहीं कि दुनिया में मुझ पर क्या मुसीबत गुज़री।

उहद के अलावा और भी कई लड़ाइयों में उनकी शिर्कत और कारनामे ज़ाहिर हुए हैं। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद जब इर्तिदाद[1] का ज़ोर-शोर हुआ और यमामा में ज़बरदस्त लड़ाई हुई। इसमें भी उम्मे अम्मारा रज़ि० शरीक थीं उनका एक हाथ भी उसमें कट गया था इसके अलावा ग्यारह ज़ख़्म बदन पर आये थे, उन्हीं ज़ख़्मों की हालत में मदीना तैयबा पहुंची।[2]

फ़—एक औरत के यह कारनामे हैं। जिनकी उम्र उहद की लड़ाई में 43 वर्ष की थी, जैसा कि पहले गुज़रा और यमामा की लड़ाई में तक़रीबन बावन वर्ष थी। इस उम्र में ऐसे मारकों की इस तरह शिर्कत करामत ही कही जा सकती है।

1. इस्लाम से फिर जाना; 2. तब्क़ात,

15. हज़रत उम्मे हकीम रज़ि० का इस्लाम और जंग में शिर्कत

उम्मे हकीम रज़ि० बिन्ते हारिस जो इक्रमा रज़ि० बिन अबी जह्ल की बीवी थीं और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से उहद की लड़ाई में भी शरीक हुई थीं, जब मक्का मुकर्रमा फ़तह हो गया तो मुसलमान हो गईं। ख़ाविंद से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी, मगर वह अपने बाप के असर की वजह से मुसलमान नहीं हुए थे और जब मक्का फ़त्ह हो गया तो यमन भाग गये थे।

उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से अपने ख़ाविंद के लिए अम्न चाहा और ख़ुद यमन पहुंची। ख़ाविंद को बड़ी मुश्किल से वापस आने पर राज़ी किया और कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार से उनके दामन ही में पनाह मिल सकती है, तुम मेरे साथ चलो। वह मदीना तैयबा वापस आकर मुसलमान हुए और दोनों मियां बीवी ख़ुश व ख़ुर्रम रहे।

फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में जब रूम की लड़ाई हुई तो इसमें इक्रिमा रज़ि० भी शरीक हुए और यह भी साथ ही थीं। हज़रत इक्रिमा इसमें शहीद हो गए तो ख़ालिद बिन सईद रज़ि० ने उनसे निकाह कर लिया और इसी सफ़र में मर्जुस्सफ़र एक जगह का नाम है, वहां रुख़्सती का इरादा किया। बीवी ने कहा, अभी दुश्मनों का जमघटा है उसको निमटने दीजिए। ख़ाविन्द ने कहा मुझे इस मार्का में अपने शहीद होने का यक़ीन है, वह भी चुप हो गईं और वहीं एक मंज़िल पर ख़ेमे में रुख़्सती हुई। सुबह को वलीमे का इंतिज़ाम हो ही रहा था कि रूमियों की फ़ौज चढ़ आई और घमासान की लड़ाई हुई, जिस से ख़ालिद बिन सईद रज़ि० शहीद हुए।

उम्मे हकीम रज़ि० ने उस ख़ेमे को उखाड़ा, जिस में रात गुज़ारी थी और अपना सब समान बांधा और ख़ेमे का खूंटा लेकर ख़ुद भी मुक़ाबला किया और सात आदमियों को तने तंहा ने क़त्ल किया।[1]

फ़— हमारे ज़माने की कोई औरत दर किनार, मर्द भी ऐसे वक़्त में निकाह को तैयार न होता और अगर निकाह हो भी जाता तो इस अचानक शहादत पर रोते-रोते

1. असदुल ग़ाबा,

न मालूम कितने दिन सोग मे गुज़रते। उस अल्लाह की बन्दी ने ख़ुद भी जिहाद शुरू कर दिया और औरत होकर सात आदमियों को क़त्ल किया।

16. हज़रत सुमैया, उम्मे अम्मार की शहादत

सुमैया रज़ि० बिन्ते ख़य्यात हज़रत अम्मार रज़ि० की वालिदा थीं, जिनका क़िस्सा पहले बाब के सातवें नम्बर पर गुज़र चुका है। यह भी अपने लड़के हज़रत अम्मार रज़ि० और अपने ख़ाविन्द हज़रत यासिर रज़ि० की तरह इस्लाम की ख़ातिर क़िस्म-क़िस्म की तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त करती थीं, मगर इस्लाम की सच्ची मुहब्बत जो दिल में घर कर चुकी थी, उसमें ज़रा भी फ़र्क़ न आता था। उनको सख़्त गर्मी के वक़्त धूप में कंकरियों पर डाला जाता था और लोहे की ज़िरह पहना कर धूप में खड़ा किया जाता था ताकि धूप से लोहा तपने लगे और उसकी गर्मी से तक्लीफ़ में ज़्यादती हो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उधर से गुज़र होता तो सब्र की तलक़ीन फ़र्माते और जन्नत का वायदा फ़र्माते।

एक मर्तबा हज़रत सुमैया रज़ि० खड़ी थीं कि अबू जह्ल का उधर को गुज़र हुआ, बुरा भला कहा और ग़ुस्से में बर्छा शर्मगाह पर मारा, जिसके ज़ख़्म से इंतिक़ाल फ़र्मा गईं। इस्लाम की ख़ातिर सबसे पहली शहादत इन्हीं की हुई।[1]

फ़—औरतों का इस क़दर सब्र, हिम्मत और इस्तक़्लाल क़ाबिले रश्क है। लेकिन बात यह है कि जब आदमी के दिल में कोई चीज़ घर कर जाती है, तो उसको हर बात सहल हो जाती है। अब भी इश्क़ के बीसियों क़िस्से इस क़िस्म के सुनने में आते हैं कि जान दे दी, मगर यही जान देना अगर अल्लाह के रास्ते में हो, दीन की ख़ातिर हो, तो दूसरी ज़िन्दगी में जो मरने के साथ ही शुरू हो जाती है, सुर्ख़रूई का सबब है और अगर किसी दुनियावी ग़रज़ से हो तो दुनिया तो गई थी ही, आख़िरत भी बर्बाद हुई।

17. हज़रत अस्मा रज़ि० बिन्ते अबूबक्र रज़ि० की ज़िन्दगी और तंगी

हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बेटी और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की वालिदा और हज़रत आइशा रज़ि० की सौतेली बहन

1. असदुल ग़ाबा,

मशहूर सहाबियात में हैं। शुरू ही में मुसलमान हो गई थीं। कहते हैं कि सत्रह आदमियों के बाद यह मुसलमान हुई थीं। हिजरत से सत्ताईस साल पहले पैदा हुईं और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० हिजरत के बाद मदीना–तैयबा पहुंच गये तो हज़रत ज़ैद रज़ि० वग़ैरह को भेजा कि इन दोनों हज़रात के अह्ल व अयाल को ले आयें। उनके साथ ही हज़रत अस्मा रज़ि० भी चली आयीं। जब क़ुबा में पहुंची तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० पैदा हुए और हिजरत के बाद सबसे पहली पैदाइश उनकी हुई।

उस ज़माने की आम ग़ुर्बत, तंगदस्ती, फ़क़्र व फ़ाक़ा मशहूर व मारूफ़[1] है और उसके साथ ही उस ज़माने की हिम्मत, जफ़ा कशी, बहादुरी जुर्अत ज़र्बुलमसल है। बुख़ारी में हज़रत अस्मा रज़ि० का तर्ज़े ज़िन्दगी ख़ुद उन्की ज़बान से नक़ल किया है। फ़र्माती हैं कि जब मेरा निकाह ज़ुबैर रज़ि० से हुआ तो उनके पास न माल था, न जायदाद, न कोई ख़ादिम काम करने वाला, न कोई और चीज, एक ऊंट पानी लाद कर लाने वाला और एक घोड़ा। मैं ही ऊंट के लिए घास वग़ैरह लाती थी और खजूर की गुठलियां कूटकर दाने के तोर पर खिलाती थी। ख़ुद मैं पानी भर कर लाती और पानी का डोल फट जाता तो उसको आप ही सीती थी और ख़ुद ही घोड़े की सारी ख़िदमत घास दाना वग़ैरह करती थी और घर का सारा कारोबार भी अंजाम देती थी, मगर इन सब कामों में घोड़े की ख़बरगीरी और ख़िदमत मेरे लिए ज़्यादा मशक़्क़त की चीज थी। रोटी अलबत्ता मुझे अच्छी तरह पकाना नहीं आती थी। तो मैं आटा गूंध कर अपने पड़ोस की अंसार औरतों के यहां ले जाती, वह बड़ी सच्ची मुख़्लिस औरतें थीं, मेरी रोटी भी पका देती थीं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना पहुंचने पर ज़ुबैर रज़ि० को एक ज़मीन जागीर के तौर पर दे दी जो दो मील के क़रीब थी। मैं वहां से अपने सर पर खजूर की गुठलियां लाद कर लाया करती थी।

मैं एक मर्तबा इसी तरह आ रही थी और गठरी मेरे सर पर थी। रास्ते में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिल गये। ऊंट पर तशरीफ़ ला रहे थे और अंसार की एक जमाअत साथ थी। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे देखकर ऊंट ठहराया और उसको बैठने का इशारा किया ताकि मैं उस पर सवार हो जाऊं। मुझे मर्दों के साथ जाते हुए शर्म आई और यह भी ख़्याल आया कि ज़ुबैर रज़ि० को ग़ैरत बहुत ही ज़्यादा

1. जाना पहचाना, 2. जाना पहचाना।

है, उनको यह भी ना-गवार होगा। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे अंदाज़ से समझ गये कि मुझे उस पर बैठते हुए शर्म आती है। हुज़ूर तश्रीफ़ ले गये, मैं घर आई और ज़ुबैर रज़ि० को क़िस्सा सुनाया कि इस तरह हुज़ूर सल्ल० मिले और यह-इर्शाद फ़र्माया। मुझे शर्म आई और तुम्हारी ग़ैरत का भी ख़्याल आया। ज़ुबैर रज़ि० ने कहा कि ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारी गुठलियां सर पर रख कर लाना मेरे लिए इससे भी ज़्यादा गरां है, (मगर मजबूरी यह थी कि यह हज़रात ख़ुद तो ज़्यादा तर जिहाद में और दीन के दूसरे उमूर[1] में मशग़ूल रहते थे। इसलिए घर के कारोबार आम तौर पर औरतों ही को करना पड़ते थे।)

इसके बाद मेरे बाप हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एक ख़ादिम जो हुज़ूर सल्ल० ने उनको दिया था, मेरे पास भेज दिया, जिसकी वजह से घोड़े की ख़िदमत से मुझे ख़लासी मिली, गोया बड़ी क़ैद से मैं आज़ाद हो गई।[2]

फ़—अरब का दस्तूर पहले भी था और अब भी है खजूर की गुठलियां कूट कर या चक्की में दल कर फिर पानी में भिगो कर जानवरों को दाने के तौर पर खिलाते हैं।

18. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का हिजरत के वक़्त माल ले जाना और हज़रत अस्मा रज़ि० का अपने दादा को इत्मिनान दिलाना

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० हिजरत फ़र्मा कर तश्रीफ़ ले जा रहे थे तो इस ख़्याल से कि न मालूम रास्ते में क्या ज़रूरत पेश हो कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी साथ थे, इसलिए जो कुछ माल उस वक़्त मौजूद था, जिसकी मिक़्दार पाँच छः हज़ार दिरहम थी, वह सब साथ ले गए थे। इन हज़रात के तश्रीफ़ ले जाने के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० के वालिद अबूक़ुहाफ़ा, जो ना-बीना हो गए थे, और उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, पोतियों के पास तसल्ली के लिए आये, आकर अफ़सोस से कहने लगे कि मेरा ख़्याल है कि अबूबक्र रज़ि० ने अपने जाने का सदमा भी तुमको पहुंचाया और माल भी शायद सब ले गया कि यह दूसरी मशक़्क़त तुम पर डाली। अस्मा रज़ि० कहती हैं, मैंने कहा, नहीं दादाअब्बा, वह बहुत कुछ छोड़ गये हैं। यह कहकर मैंने छोटी-छोटी पथरियां जमा करके घर के उस ताक़ में भर

1. कामों में, 2. बुख़ारी।

दीं, जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० के दिरहम पड़े रहते थे और उन पर एक कपड़ा डालकर दादा का हाथ उस कपड़े पर रख दिया, जिससे उन्होंने हाथ से यह अन्दाज़ा किया कि यह दिरहम भरे हुए हैं। कहने लगे, ख़ैर, यह उसने अच्छा किया, तुम्हारे गुज़ारे की सूरत इसमें हो जायेगी। अस्मा रज़ि० कहती है कि ख़ुदा की क़सम ! कुछ भी नहीं छोड़ा था, मगर मैंने दादा को तसल्ली के लिए यह सूरत इख़्तियार की थी कि उनको इसका सदमा न हो।[1]

फ़—यह दिल गुर्दे की बात है वरना दादा से ज़्यादा इन लड़कियों को सदमा होना चाहिए था और जितनी भी शिकायत उस वक़्त दादा के सामने करतीं, दरुस्त था कि उस वक़्त का ज़ाहिरी सहारा उन पर ही था। उनके मुतवज्जह करने की बज़ाहिर बहुत ज़रूरत थी कि एक तो बाप की जुदाई, दूसरे गुज़ारे की कोई सूरत ज़ाहिरा नहीं। फिर मक्का वाले आमतौर से दुश्मन और बे-ताल्लुक़ मगर अल्लाह जल्ल शानुहू ने एक-एक अदा इन सब हज़रात को मर्द हों या औरत, ऐसी अता फ़र्मायी थी कि रश्क आने के सिवा और कुछ भी नहीं।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अव्वल में निहायत मालदार और बहुत बड़े ताजिर थे, लेकिन इस्लाम की और अल्लाह की राह में यहां तक ख़र्ज फ़र्माया कि ग़ज़्वा-ए-तबूक में जो कुछ घर में था, सब ही कुछ ला दिया जैसा कि छठे बाब के चौथे क़िस्से में मुफ़स्सल गुज़रा है, इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा नहीं पहुंचाया, जितना अबू बक्र रज़ि० के माल ने, मैं हर शख़्स के एहसान का बदला दे चुका हूँ मगर अबू बक्र रज़ि० के एहसान का बदला अल्लाह ही देंगे।

19. हज़रत असमा रज़ि० की सख़ावत

हज़रत अस्मा रज़ि० बड़ी सख़ी थीं, अव्वल जो कुछ ख़र्च करती थीं, अन्दाज़े से नाप-तौल कर ख़र्च करती थीं, मगर जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि बांध-बांध कर न रखा कर और हिसाब न लगाया कर, जितना भी क़ुदरत में हो, ख़र्च किया कर, तो फिर ख़ूब ख़र्च करने लगीं। अपनी बेटियों और घर की औरतों को नसीहत किया करती थीं कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और सदक़ा करने में ज़रूरत से ज़्यादा होने और बचने का इंतिज़ार न किया करो कि अगर ज़रूरत से ज़्यादती का इंतिज़ार करती रहोगी तो होने का ही नहीं कि ज़रूरत ख़ुद

1. मस्नद अहमद।

बढ़ती रहती है। और अगर सद्का करती रहोगी तो सद्का में ख़र्च कर देने से नुक़्सान में न रहोगी।[1]

फ़—इन हज़रात के पास जितनी तंगी और नादारी थी, उतनी ही सद्का व ख़ैरात और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की गुंजाइश और वुसअत थी। आजकल मुसलमानों में इफ़्लास व तंगी की आम शिकायत है, मगर शायद ही ऐसी कोई जमाअत निकले जो पेट पर पत्थर बांध कर गुज़ारा करती हो या उन पर कई-कई दिन का मुसलसल फ़ाक़ा हो जाता हो।

20. हुज़ूर सल्ल० की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० की हिजरत और इन्तिक़ाल

दो जहान के सरदार हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सब से बड़ी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब नुबुव्वत से दस वर्ष पहले, जब कि हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ तीस वर्ष की थी, पैदा हुईं और ख़ालाज़ाद भाई अबुलआस बिन रबीअ से निकाह हुआ। हिजरत के वक़्त हुज़ूर सल्ल० के साथ न जा सकीं। इन के ख़ाविंद बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साथ शरीक हुए और क़ैद हुए। अहले मक्का ने जब अपने क़ैदियों की रिहाई के लिए फ़िदए इर्साल किए तो हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने भी अपने ख़ाविंद की रिहाई के लिए माल भेजा, जिसमें वह हार भी था जो हज़रत ख़दीजा ने जहेज़ में दिया था। नबी अक्रम सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको देखा तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० की याद ताज़ा हो गई। आबदीदा हुए और सहाबा रज़ि० के मश्वरे से यह क़रार पाया कि अबुलआस को बिला फ़िदया के इस शर्त पर छोड़ दिया जाए कि वह वापस जाकर हज़रत ज़ैनब रज़ि० को मदीना तैयिबा भेज दें, हुज़ूर सल्ल० ने दो आदमी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को लेने के लिए साथ कर दिये कि वह मक्का से बाहर ठहर जाएं और उन के पास तक अबुल आस पहुंचावा दें। चुनांचे हज़रत ज़ैनब रज़ि० अपने देवर कनाना के साथ ऊँट पर सवार होकर रवाना हुईं।

कुफ़्फ़ार को जब इस की ख़बर हुई तो आग बगोला हो गये और एक जमाअत मुज़ाहमत के लिए पहुंच गयी, जिनमें हिबार बिन अस्वद जो हज़रत ख़दीजा रज़ि० के चचाज़ाद भाई का लड़का था और इस लिहाज़ से हज़रत ज़ैनब रज़ि० का भाई हुआ, वह और उस के साथ एक और शख़्स भी था। इन दोनों में से किसी ने और

1. तब्क़ात,

अक्सरों ने हिबार ही को लिखा है, हज़रत ज़ैनब रज़ि० के नेज़ा मारा, जिससे वह ज़ख़्मी होकर ऊंट से गिरीं। चूंकि हामिला थीं, इस वजह से पेट से बच्चा भी ज़ाया हुआ कनाना ने तीरों से मुक़ाबला किया। अबूसुफ़ियान ने उनसे कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी और इस तरह अलल एलान चली जाए, यह तो गवारा नहीं, इस वक़्त वापस चलो, फिर चुपके से भेज देना। कनाना ने उस को क़ुबूल कर लिया और वापस ले आए दो एक रोज़ बाद फिर रवाना किया।

हज़रत ज़ैनब रज़ि० का यह ज़ख़्म कई साल तक रहा और कई साल इसमें बीमार रहकर सन० 8 हि० में इंतिक़ाल फ़र्माया , रज़ियल्लाहु अन्हा व अर्ज़ाहा। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह मेरी सबसे अच्छी बेटी थी, जो मेरी मुहब्बत में सतायी गयी। दफ़्न के वक़्त नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद क़ब्र में उतरे और दफ़न फ़र्माया। उतरते वक़्त बहुत रंजीदा थे, जब बाहर तशरीफ़ लाये, तो चेहरा खिला हुआ था, सहाबा रज़ि० ने दर्याफ़्त किया तो इर्शाद फ़र्माया कि मुझे ज़ैनब रज़ि० के ज़ोफ़ का ख़्याल था। मैंने दुआ की कि क़ब्र की तंगी और उसकी सख़्ती हटा दी जाए। अल्लाह तआला ने क़ुबूल फ़र्मा लिया।[1]

फ़— हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहाबज़ादी और दीन की ख़ातिर इतनी मशक़्क़त उठायी कि जान भी उसी में दे दी, फिर भी क़ब्र की तंगी के लिए हुज़ूर सल्ल० की दुआ की ज़रूरत पेश आई तो हम जैसों का क्या पूछना, इसलिए आदमी को अक्सर औक़ात क़ब्र के लिए दुआ करनी चाहिए। ख़ुद नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तालीम की वजह से अक्सर औक़ात अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगते थे :–

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ بِمَنِّكَ وَكَرَمِكَ وَفَضْلِكَ

'अल्लाहुम्मह्फ़ज़्ना मिन्हु बिमन्नि क व क र मि क व फ़ज़्लि क'

21 हज़रत रुब्बीअ बिन्ते मअव्वज़ की ग़ैरते दीनी

रुब्बीअ बिन्ते मुअव्वज रज़ि० एक अंसारी सहाबिया रज़ि० हैं। अक्सर लड़ाइयों

1. ख़मीस, असदुल ग़ाबा,

में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ

शरीक हुई है। ज़ख्मियों की दवा-दारू फ़र्माया करती थीं। और मक्तूलीन और शुहदा की नाशें उठा कर लाया करती थीं। हुज़ूर सल्ल० की हिजरत से पहले मुसलमान हो गई थीं। हिजरत के बाद शादी हुई। हुज़ूरे अक्रम सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम भी शादी के दिन उनके घर तश्रीफ़ ले गये थे। वहां चन्द लड़कियां खुशी में शेर पढ़ रही थीं, जिन में अंसार के इस्लामी कारनामे और उनके बड़ों का ज़िक्र था, जो बद्र की लड़ाई में शहीद हुए थे उनमें से एक ने यह मिस्रा भी पढ़ा, "व फ़ीना नबीयुन यअलमु माफ़ी ग़दिन" (हममें एक ऐसे नबी हैं जो आइन्दा की बातों को जानते हैं) हुज़ूरे सल्ल० ने इसको पढ़ने को मना फ़र्मा दिया, क्योंकि आइंदा के हालात अल्लाह ही को मालूम हैं।

रुब्बीअ के वालिद हज़रत मुअव्वज रज़ि० अबूजहल के क़त्ल करने वालों में हैं। एक औरत जिसका नाम अस्मा रज़ि० था, इत्र बेचा करती थी, वह एक मर्तबा चंद औरतों के साथ हज़रत रुब्बीअ रज़ि० के घर भी गई। और उनसे नाम-हाल-पता वग़ैरह जैसे कि औरतों की आदत होती है, दर्याफ़्त किया, उन्होंने बता दिया। उनके वालिद का नाम सुनकर वह कहने लगी कि तू अपने सरदार के क़ातिल की बेटी है। अबूजह्ल चूंकि अरब का सरदार शुमार किया जाता था, इसलिए अपने सरदार का क़ातिल कहा। यह सुनकर रुब्बीअ को गुस्सा आ गया। कहने लगीं कि मैं अपने ग़ुलाम के क़ातिल की बेटी हूँ, रुब्बीअ को ग़ैरत आई कि अबूजह्ल को अपने बाप का सरदार सुने। इसलिए उन्होंने अपने ग़ुलाम के लफ़्ज़ से ज़िक्र किया।

अस्मा रज़ि० को अबूजहल के मुताल्लिक़ ग़ुलाम का लफ़्ज़ सुनकर गुस्सा आया और कहने लगी कि मुझ पर हराम है कि तेरे हाथ इत्र फ़रोख़्त करूं। रुब्बीअ ने कहा कि मुझ पर भी हराम है कि तुझसे ख़रीदूं। मैंने तेरे इत्र के सिवा किसी इत्र में गन्दगी और बदबू नहीं देखी।[1]

फ़—रुब्बीअ कहती है कि मैंने बदबू का लफ़्ज़ उसके जलाने को कहा था यह हमय्यत और दीनी ग़ैरत थी कि दीन के उस सख़्त दुश्मन के मुताल्लिक़ वह सरदारी का लफ़्ज़ न सुन सकीं। आजकल दीन के बड़े से बड़े दुश्मन पर भी इससे ऊंचे-ऊंचे लफ़्ज़ बोले जाते हैं और अगर कोई शख़्स मना करे तो वह तंग नज़र बता दिया जाता है। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुनाफ़िक़ को सरदार मत कहो अगर वह तुम्हारा सरदार हो गया तो तुमने अपने रब को नाराज़

1. मोटी।

किया ।[1]

मालूमात

हुज़ूर सल्ल० की बीवियां और औलादें

अपने आक़ा और दो जहान के सरदार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियों और औलादों का हाल मालूम करने का इश्तियाक़ हुआ करता है और हर मुसलमान को होना चाहिए भी। इसलिए मुख़्तसर हाल उनका लिखा जाता है कि तफ़्सीली हालात के लिए तो बड़ी ज़ख़ीम[2] किताब चाहिए।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह, जिन पर मुहद्दिसीन और मुवर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है, ग्यारह औरतों से हुआ। इससे ज़्यादा में इख़्तिलाफ़ है और इस पर भी इत्तिफ़ाक़ है कि इन सबमें पहला निकाह हज़रत ख़दीजा रज़ि० से हुआ, जो बेवा थीं। हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ उस वक़्त पचीस वर्ष की थी और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की उम्र चालीस वर्ष की थी। हुज़ूर सल्ल० की औलाद भी बजुज़ हज़रत इब्राहीम रज़ि० के सब इन्हीं से हुई, जिनका बयान बाद में आयेगा। हज़रत ख़दीजा रज़ि० के निकाह की सबसे अव्वल तज्वीज़ वर्क़ा बिन नौफ़ुल से हुई थी मगर निकाह की नौबत नहीं आई। इसके बाद दो शख़्सों से निकाह हुआ। अहले तारीख़ का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इन दोनों में पहले किससे हुआ है अक्सर की राय यह है कि पहले अतीक़ बिन आइज़ से हुआ जिनसे एक लड़की पैदा हुई, जिनका नाम हिंद था और वह बड़ी होकर मुसलमान हुईं और साहिबे औलाद भी। और बाज़ों ने लिखा है कि अतीक़ से एक लड़का भी हुआ जिसका नाम अब्दुल्लाह या अबदे मुनाफ़ था। अतीक़ के बाद फिर हज़रत ख़दीजा का निकाह अबूहाला से हुआ जिनसे हिंद और हाला दो औलाद हुईं। अक्सरों ने लिखा है कि दोनों लड़के थे और बाज़ों ने लिखा कि हिंद लड़का है और हाला लड़की। हिंद हज़रत अली के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त तक ज़िंदा रहे।

अबूहाला के इंतिकाल के बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह हुआ, जिस वक़्त कि हज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस वर्ष की थी निकाह के बाद पचीस वर्ष हुज़ूर के निकाह में रहीं और रमज़ान सन् 10 नबवी में 65 बरस

1. अबूदाऊद, 2. मोटी।

की उम्र में इंतिक़ाल फ़र्माया।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनसे बेहद मुहब्बत थी। और उनकी ज़िन्दगी में कोई दूसरा निकाह नहीं किया। उनका लक़ब इस्लाम से पहले ही से ताहिरा था, इसी वजह से उनकी औलाद जो दूसरे ख़ाविंदों से है वह भी बनुत्ताहिरा कहलाती है। इनके फ़ज़ाइल हदीस की किताबों में कसरत से हैं। उनके इंतिक़ाल पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद क़ब्र मुबारक में उतर कर उनको दफ़न फ़र्माया था, नमाज़े जनाज़ा उस वक़्त तक मशरूअ[1] नहीं हुई थी।

उनके बाद उसी साल शव्वाल में हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत सौदा रज़ि० से निकाह हुआ, इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि इन दोनों में किसका निकाह पहले हुआ। बाज़ मुवर्रिख़ीन ने हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह पहले होना लिखा है और बाज़ों की राय यह है कि हज़रत सौदा रज़ि० से पहले हुआ, बाद में हज़रत आइशा रज़ि० से। हज़रत सौदा रज़ि० भी बेवा थीं। उनके वालिद का नाम ज़मआ बिन क़ैस है। पहले से अपने चचाज़ाद भाई सकरान बिन अम्र के निकाह में थीं। दोनों मुसलमान हुए और हिजरत फ़र्मा कर हब्शा तशरीफ़ ले गये और हब्शा में सकरान का इंतिक़ाल हो गया। बाज मुवर्रिख़ीन ने लिखा है कि मक्का वापस आकर इंतिक़ाल फ़र्माया। उनके इंतिक़ाल के कुछ बाद सन् 10 नबवी में हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इंतिक़ाल के कुछ दिनों बाद उनसे निकाह हुआ और रुख़्सती हज़रत आइशा रज़ि० की रूख़्सती से सबके नज़दीक पहले ही हुई।

हुज़ूर सल्ल० की आदते शरीफ़ा तो कसरत से नमाज़ में मशग़ूल रहना थी ही, एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० से उन्होंने अर्ज़ किया कि रात आपने इतना लंबा रुकूअ किया कि मुझे अपनी नाक से नक्सीर निकलने का डर हो गया। (यह भी हुज़ूर सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ रही थीं। चूंकि बदन की भारी थीं, इस वजह से और भी मशक़्क़त हुई होगी।)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने उनको तलाक़ देने का इरादा फ़र्माया, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह। मुझे ख़ाविंद की ख़्वाहिश नहीं, मगर यह तमन्ना है कि जन्नत में हुज़ूर सल्ल० की बीवियों में दाख़िल रहूं, इसलिए मुझे आप तलाक़ न दें। मैं अपनी बारी आइशा को देती हूं, इसको हुज़ूर सल्ल० ने क़ुबूल फ़र्मा लिया और इस वजह से उनकी बारी का दिन हज़रत आइशा रज़ि० के हिस्से में आता था। सन्

1. शरीअत से ज़रूरी,

54 या 55 हि० में और ,बाज ने लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि० के अख़ीर ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में वफ़ात पायी। इनके अलावा एक सौदा और भी हैं जो क़ुरैश ही की हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे निकाह का इरादा फ़र्माया। उन्होंने अर्ज किया कि मुझे सारी दुनिया में सबसे ज़्यादा महबूब आप हैं, मगर मेरे पांच-छः बच्चे हैं। मुझे यह बात गरां है कि वह आपके सिरहाने रोयें, चिल्लाएँ। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी इस बात को पसन्द फ़र्माया, तारीफ़ की और निकाह का इरादा मुलत्वी फ़र्मा दिया।

हज़रत आइशा से भी निकाह मक्का मुकर्रमा में हिजरत से पहले शव्वाल सन् 10 नबवी में हुआ, जिस वक़्त उनकी उमर छः साल की थी। हुज़ूर सल्ल० की बीवियों में यही सिर्फ़ एक ऐसी हैं, जिनसे कुंवारेपन में निकाह हुआ और बाक़ी सबसे निकाह बेवगी की हालत में हुआ। नुबूव्वत से चार साल बाद यह पैदा हुईं और हिजरत के बाद जब कि उनकी उम्र को नवां वर्ष था रुख़्सती हुई और अठारह साल की उम्र में हुज़ूर सल्ल० का विसाल हुआ और छियासठ साल की उम्र में 17 रमज़ान सन् 57 हि० को मंगल की शब में उनका विसाल हुआ। ख़ुद ही वसीयत फ़र्मायी थी कि मुझे आम क़ब्रस्तान में जहां और बीवियां दफ़्न की गई हैं, दफ़्न किया जाये, हुज़ूर सल्ल० के क़रीब हुजरा-ए-शरीफ़ा में न दफ़्न किया जाए, चुनांचे बक़ीअ में दफ़्न की गयीं। अरब में यह मशहूर था कि शव्वाल के महीने में निकाह ना मुबारक होता है। हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मेरा निकाह भी शव्वाल में हुआ, रुख़्सती भी शव्वाल में हुई। हुज़ूर सल्ल० की बीवियों में कौन-सी मुझसे ज़्यादा नसीबावर और हुज़ूर सल्ल० की महबूबा थी।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद ख़ौला रज़ि० हकीम की बेटी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज किया, या रसूल्लाह ! आप निकाह नहीं करते। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, किस से ? अर्ज किया कुंवारी भी है, बेवा भी है, जो मंज़ूर हो, हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, तो अर्ज किया कि कुंवारी तो आप के सबसे ज़्यादा दोस्त अबूबक्र रज़ि० की लड़की आइशा रज़ि० हैं और बेवा सौदा बिन्त ज़मआ। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अच्छा तज़्किरा करके देख लो। वह वहां से हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घर आयीं और हज़रत आइशा रज़ि० की वालिदा उम्मे रोमान रज़ि० से अर्ज किया कि मैं एक बड़ी ख़ैर व बरकत लेकर आई हूं और दर्याफ़्त करने पर कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे आइशा रज़ि० से मंगनी करने के लिए भेजा है। उम्मे रोमान रज़ि० ने कहा, वह तो उनकी भतीजी हैं, उससे कैसे निकाह हो सकता है ? अच्छा अबूबक्र को आने दो।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० उस वक़्त घर पर मौजूद न थे। उनके तश्रीफ़ लाने

पर उनसे भी यही ज़िक्र किया गया। उन्होंने भी यही जवाब दिया कि वह तो हुज़ूर सल्ल० की भतीजी हैं। हुज़ूर सल्ल० से कैसे निकाह हो सकता है। ख़ौला रज़ि० ने जाकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज किया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह मेरे इस्लामी भाई हैं। उनकी लड़की से मेरा निकाह जायज़ है। ख़ौला रज़ि० वापस हुई और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जवाब सुनाया। वहां क्या देर थी, कहा, बुला लाओ। हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले गये और निकाह हो गया।

हिजरत के बाद चंद महीने गुज़र जाने पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने दर्याफ़्त किया कि आप अपनी बीवी आइशा को क्यों नहीं बुला लेते ? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सामान मुहय्या न होने का उज्र फ़र्माया। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने नज़राना पेश किया, जिससे तैयारी हुई और शव्वाल सन् 01 हि० या 02 हि० में चाश्त के वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ही के दौलत कदे[1] पर बिना यानी रुख़्सती हुई।

यह तीन निकाह हुज़ूर सल्ल० के हिजरत से पहले हुए, इसके बाद जितने निकाह हुए वह हिजरत के बाद हुए। हज़रत आइशा रज़ि० के बाद हज़रत उमर रज़ि० की साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा रज़ि० से निकाह हुआ। हज़रत हफ़्सा नुबुव्वत से पांच वर्ष क़ब्ल मक्का में पैदा हुईं। पहला निकाह मक्का ही में ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० से हुआ। यह भी पुराने मुसलमान हैं जिन्होंने अव्वल हब्शा की हिजरत की, फिर मदीना तैय्यिबा की हिजरत की, बद्र में भी शरीक हुए और उसी लड़ाई में या उहुद की लड़ाई में उनके ऐसा ज़ख़्म आया, जिससे अच्छे न हुए और सन् 02 हि० या 03 हि० में इन्तिक़ाल फ़र्माया।

हज़रत हफ़्सा रज़ि० भी अपने ख़ाविंद के साथ हिजरत फ़र्मा कर मदीना तैय्यिबा ही में आ गयी थीं। जब बेवा हो गई तो हज़रत उमर रज़ि० ने अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से दर्ख़्वास्त की कि मैं हफ़्सा रज़ि० का निकाह तुम से करना चाहता हूं। उन्होंने सुकूत फ़र्माया। इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि० की अह्लिया, हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत रुक़ैया रज़ि० का जब इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत उस्मान रज़ि० से ज़िक्र फ़र्माया। उन्होंने फ़र्मा दिया कि मेरा तो इस वक़्त निकाह का इरादा नहीं। हुज़ूर सल्ल० से हज़रत उमर रज़ि० ने इसकी शिकायत की तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं हफ़्सा रज़ि० के लिए उस्मान रज़ि० से बेहतर ख़ाविंद

1. मकान,

और उस्मान रज़ि० के लिए हफ़्सा रज़ि० से बेहतर बीवी बताता हूं। इसके बाद हज़रत हफ़्सा रज़ि० से सन् 02 हि० या सन् 03 हिजरी में ख़ुद निकाह किया और हज़रत उस्मान रज़ि० का निकाह अपनी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० से कर दिया। इनके पहले ख़ाविंद के इन्तिक़ाल में मुवर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है कि बद्र के ज़ख़्म से शहीद हुए या उहद के, बद्र सन् 02 हि० में है और उहद सन् 03 हि० में। इसी वजह से इनके निकाह में भी इख़्तिलाफ़ है। इसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से फ़र्माया कि जब तुमने हफ़्सा रज़ि० के निकाह का ज़िक्र किया था और मैंने सुकूत किया था, तुम्हें उस वक़्त ना-गवारी हुई होगी, मगर चूंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे निकाह का तज़्किरा फ़र्मा चुके थे, इसलिए न तो मैं क़ुबूल कर सकता था और न हुज़ूर सल्ल० के राज़ को ज़ाहिर कर सकता था, इसलिए सुकूत किया था। अगर हुज़ूर सल्ल० इरादा मुल्तवी फ़र्मा देते तो मैं ज़रूर कर लेता। हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सुकूत का हज़रत उस्मान रज़ि० के इंकार से भी ज़्यादा रंज था। हज़रत हफ़्सा रज़ि० बड़ी आबिदा ज़ाहिदा थीं। रात को अक्सर जागती थीं और दिन में कसरत से रोज़ा रखा करती थीं। किसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको एक तलाक़ भी दी थी, जिसकी वजह से हज़रत उमर रज़ि० को बहुत रंज हुआ और होना भी चाहिए था। हज़रत जिब्रील अलै० तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया, अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि हफ़्सा रज़ि० से रुजूअ कर लो। यह बड़ी शब-बेदार[1] और कसरत से रोज़ा रखने वाली हैं और उमर रज़ि० की ख़ातिर भी मंज़ूर है। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने रुजूअ फ़र्मा लिया। जुमादुल ऊला सन् 45 हि० में, जबकि उनकी उम्र तक़रीबन 63 बर्ष की थी, मदीना तैयबा में इंतिक़ाल फ़र्माया। बाज़ ने उनका इंतिक़ाल सन् 41 हि० में और उम्र साठ बर्ष की लिखी है।

इनके बाद हुज़ूर सल्ल० का निकाह हज़रत ज़ैनब रज़ि० से हुआ। हज़रत ज़ैनब रज़ि० ख़ुज़ैमा की बेटी, जिनके पहले निकाह में इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने लिखा है कि पहले अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० से निकाह हुआ था। जब वह ग़ज़्वा-ए-उहद में शहीद हुए, (जिनका क़िस्सा बाब सात की पहली हदीस में गुज़रा) तो हुज़ूर सल्ल० ने निकाह किया और बाज़ ने लिखा कि उनका पहला निकाह तुफ़ैल बिन हारिस से हुआ था, उनके तलाक़ देने के बाद उनके भाई उबैदा बिन हारिस से हुआ था, जो बद्र में शहीद हुए। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हिजरत

1. रात में जाग कर इबादत करने वाली,

के 31 महीने बाद रमज़ान सन् 03 हि० में हुआ। आठ महीने हुज़ूर सल्ल० के निकाह में रहीं और रबीउल आख़िर सन् 04 हि० में इन्तिक़ाल फ़र्माया।

हुज़ूर सल्ल० की बीवियों में हज़रत ख़दीजा रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० दो ही बीवियां ऐसी हैं, जिनका विसाल हुज़ूर सल्ल० के सामने हुआ। बाक़ी नौ हुज़ूर सल्ल० के विसाल के वक़्त ज़िन्दा थीं, जिनका बाद में इन्तिक़ाल हुआ हज़रत ज़ैनब रज़ि० बड़ी सख़ी थीं, इसी वजह से इनका नाम इस्लाम से पहले भी उम्मुल मसाकीन (मिस्कीनों की मां) था।

इनके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से हुआ। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० अबूउमय्या की बेटी थीं, जिनका पहला निकाह अपने चचाज़ाद भाई अबूसलमा रज़ि० से हुआ था, जिनका नाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद रज़ि० था। दोनों मियां-बीवी इब्तिदाई मुसलमानों में हैं। कुफ़्फ़ार के हाथ से तंग आकर अव्वल दोनों ने हब्शा की हिजरत की। वहां जाकर एक लड़का पैदा हुआ, जिनका सलमा रज़ि० नाम था। हब्शा से वापसी के बाद मदीना तैय्यिबा की हिजरत की, जिस का क़िस्सा इसी बाब के न० 5 पर मुफ़स्सल गुज़र चुका है। मदीना मुनव्वरा पहुंच कर एक लड़का उमर रज़ि० और दो लड़कियां दुर्रा और ज़ैनब पैदा हुयीं। अबूसलमा रज़ि० दस आदमियों के बाद मुसलमान हुए थे। बद्र और उहद की लड़ाई में भी शरीक हुए थे। उहद की लड़ाई में एक ज़ख़्म आ गया था, जिस की वजह से बहुत तक्लीफ़ उठायी। इसके बाद सफ़र सन् 04 हि० में एक सरीया में तश्रीफ़ ले गए तो वापसी पर वह ज़ख़्म फिर हरा हो गया और उसी में आठ ज़ुमादल उख़्रा सन् 04 हि० में इन्तिक़ाल किया। हज़रत उम्मे सलमा उस वक़्त हामिला थीं और ज़ैनब रज़ि० पेट में थीं। जब वह पैदा हुयीं तो इद्दत पूरी हुयी। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने निकाह की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़र्मायी, तो उन्होंने उज़्र कर दिया। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादा फ़र्माया। उन्होंने अर्ज किया कि मेरे बच्चे भी हैं और मेरे मिज़ाज में ग़ैरत का मज़्मून बहुत है और मेरा कोई वली यहां है नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि बच्चों का अल्लाह मुहाफ़िज़[1] है और यह ग़ैरत भी इन्शा अल्लाह जाती रहेगी और कोई वली इसको ना-पंसद नहीं करेगा। तो उन्होंने अपने बेटे सलमा रज़ि० से कहा कि हुज़ूर सल्ल० से मेरा निकाह कर दो। अख़ीर शव्वाल सन् 04 हि० में हुज़ूर सल्ल० से निकाह

1. हिफ़ाज़त करने वाला, ठहरी,

हुआ। बाज़ ने सन् 03 हि० में और बाज़ ने सन् 02 हि० में लिखा है।

उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना था कि जिस शख़्स को कोई मुसीबत पहुंचे और वह यह दुआ करे–

اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاخْلُفْنِیْ خَیْرًا مِّنْهَا

अल्ला हुम्मा अजिर्नी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़्नी ख़ैरम मिन्हा

ऐ अल्लाह ! मुझे इस मुसीबत में अज्र अता फ़र्मा और इसका नेमलबदल नसीब फ़र्मा, तो उसको अल्लाह जल्ल शानुहू बेहतरीन बदल अता फ़र्माते हैं। अबू सलमा रज़ि० के मरने पर मैं यह दुआ तो पढ़ लेती मगर यह सोचती थी कि अबू सलमा रज़ि० से बेहतर कौन हो सकता है अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० से निकाह करा दिया।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि उनके हुस्न की बहुत शोहरत थी, जब निकाह हो गया तो मैंने छुपकर हीला से जाकर देखा तो जैसा सुना था, उससे ज़्यादा पाया। मैंने हफ़्सा रज़ि० से उसका ज़िक्र किया। उन्होंने कहा नहीं, ऐसी हसीन नहीं हैं, जितनी शोहरत है। उम्महातुल मोमिनीन में सबसे आख़ीर में हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० का इंतिक़ाल सन् 59 हि० या 62 हि० में हुआ। उस वक़्त 84 साल की उम्र थी। इस लिहाज़ से नुबूवत से तक़रीबन नौ वर्ष पहले पैदा हुईं। हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद इनसे निकाह हुआ और हज़रत ज़ैनब रज़ि० के मकान में मुक़ीम[1] हुईं। उन्होंने वहां देखा कि एक मटके में जौ रखे हैं और एक चक्की और हांडी भी, उन्होंने जौ ख़ुद पीसे और चिकनाई डाल कर मलीदा तैयार किया और पहले ही दिन हुज़ूर सल्ल० को वह मलीदा खिलाया, जो निकाह के दिन अपने ही हाथ से पकाया था।

इनके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि० से हुआ। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफीज़ात बहन हैं। उनका पहला निकाह हुज़ूर सल्ल० ने अपने मुतबन्ना[2] हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० से किया था। उनके तलाक़ देने के बाद अल्लाह जल्ले शानुहू ने ख़ुद निकाह

1. ठहरी, 2. लयपालक,

हुज़ूर सल्ल० से कर दिया, जिसका क़िस्सा सूरः अहज़ाब में भी है। उस वक़्त उनकी उम्र 35 साल की थी। मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ ज़ीक़ादा सन् 05 हि० में निकाह हुआ। बाज़ ने सन् 03 हि० में लिखा है। मगर सही सन् 05 हि० है और इस हिसाब से नुबूवत से गोया सत्रह साल क़ब्ल उनकी पैदाइश हुई। इनको इस पर फ़ख़्र था कि सब औरतों का निकाह उनके औलिया ने किया और उनका निकाह अल्लाह जल्ल शानुहू ने किया।

हज़रत ज़ैद रज़ि० ने जब उनको तलाक़ दी और इद्दत पूरी हो गई तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके पास पयाम भेजा। तो उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया कि मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं कह सकती, जब तक अपने अल्लाह से मश्वरा न कर लूं और यह कह कर वुज़ू किया और नमाज़ की नीयत बांध ली और यह दुआ की कि या अल्लाह! तेरे रसूल मुझसे निकाह करना चाहते हैं अगर मैं उनके क़ाबिल हूं तो मेरा निकाह उनसे फ़र्मा दे। इधर हुज़ूर सल्ल० पर क़ुरआन शरीफ़ की आयत–

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا

फ़ लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम मिन्हा व त रन ज़व्वज्ना क हा

नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुशख़बरी भेजी। हज़रत ज़ैनब रज़ि० ख़ुशी की वजह से सज्दे में गिर गईं। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके निकाह का वलीमा बड़ी शान से किया। बकरी ज़िब्ह की और गोश्त रोटी की दावत फ़र्मायी, एक–एक जमाअत को बुलाया जाता था और जब वह फ़ारिग़ हो जाती थी तो दूसरी जमाअत इसी तरह बुलाई जाती, हत्ताकि सब ही लोगों ने पेट भर कर खाया।

हज़रत ज़ैनब रज़ि० बड़ी सख़ी थीं और बड़ी मेहनती, अपने हाथ से मेहनत करतीं और जो हासिल होता वह सदक़ा कर देतीं। उन ही के बारे में हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया था कि मुझ से सबसे पहले मरने के बाद वह मिलेगी जिसका हाथ लम्बा होगा। बीवियां ज़ाहिरी लम्बाई समझीं इसलिए लकड़ी लेकर सबके हाथ नापने शुरू कर दिए। देखने में हज़रत सौदा रज़ि० का हाथ सबसे लम्बा मिला, मगर जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० का इंतिक़ाल सबसे पहले हुआ, जब समझीं कि हाथ की लम्बाई से मुराद सद्क़ा की कसरत थी। रोज़े भी बहुत ज़्यादा रखती थीं। सन् 20 हि० में इंतिक़ाल फ़र्माया। हज़रत उमर रज़ि० ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। पचास वर्ष की उम्र थी। (उनका क़िस्सा इसी बाब के न० 10 पर भी गुज़रा है)

इनके बाद आपका निकाह हज़रत जुवैरिया बिन्तुल हारिस बिन अबी ज़िरार

से हुआ। यह ग़ज़्वा मरीसीअ् में क़ैद होकर आयी थीं और ग़नीमत में हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० के हिस्से में आईं। क़ैद होने से पहले मुसाफ़अ बिन सफ़वान के निकाह में थीं। हज़रत साबित रज़ि० ने उनको नौ औक़िया सोने पर मुकातिब कर दिया। मुकातिब उस ग़ुलाम या बांदी को कहते हैं, जिससे यह मुकर्र कर लिया जावे कि इतने दाम तुम अगर दे दो तो तुम आज़ाद। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है और एक दिरहम तक़रीबन साढ़े तीन आने का। इस हिसाब से नौ औक़िया की क़ीमत रु० 78.75 हुई और चार आने का अगर दिरहम हो तो 90.00 हुई। यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आयीं और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मैं अपनी क़ौम के सरदार हारिस की बेटी जुवैरिया हूं जो मुसीबत मुझ पर नाज़िल हुई, आप को मालूम है अब इतनी मिक़्दार पर में मुकातब हुई हूं और यह मिक़्दार मेरी ताक़त से बाहर है। आपकी उम्मीद पर आयी हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मैं तुझे इससे बेहतर रास्ता बताऊं कि तुझे माल अदा करके आज़ाद करा दूं और तुझसे निकाह कर लूं। उनके लिए इससे बेहतर क्या था, ब-ख़ुशी मंज़ूर कर लिया और सन् 05 हि० में मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ और बाज़ों ने 06 हि०में इस क़िस्से को बताया है, निकाह हो गया। सहाबा रज़ि० ने जब सुना कि बनुल मुस्तलिक़ हुज़ूर सल्ल० की ससुराल बन गई तो उन्होंने भी इस रिश्ते के एजाज़ में अपने-अपने ग़ुलाम आज़ाद कर दिए। कहते हैं कि एक हज़रत जुवैरिया रज़ि० की वजह से सौ घराने अज़ाद हुए, जिन में तक़रीबन सात सौ आदमी थे। इस क़िस्म की मसलहतें हुज़ूर सल्ल० के इन सब निकाहों में थीं। हज़रत जुवैरिया रज़ि० निहायत हसीन थीं। चेहरे पर मलाहत थीं। कहते हैं कि जो निगाह पड़ जाती थी उठती न थी। हज़रत जुवैरिया ने इस लड़ाई से तीन दिन पहले एक ख़्वाब देखा था कि यस्रिब से एक चांद चला और मेरी गोद में आ गया। कहती हैं कि जब मैं क़ैद हुई तो मुझे अपने ख़्वाब की ताबीर की उम्मीद बंधी। उस वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी और रबीउल अव्वल सन् 50 हि० में सही क़ौल के मुवाफ़िक़ पैंसठ वर्ष की उम्र में मदीना तैयबा में इंतिक़ाल हुआ और बाज़ों ने उनका इंतिक़ाल सन् 56 हि० में सत्तर वर्ष की उम्र में लिखा है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० अबूसुफ़ियान की साहबज़ादी, उनके नाम में इख़्तिलाफ़ है। अक्सरों ने मर्मला, बाज़ों ने हिन्द बताया है। उनका पहला निकाह उबैदुल्लाह बिन जह्श से मक्का मुकर्रमा में हुआ था। दोनों मियां-बीवी मुसलमान हो गए थे। कुफ़्फ़ार की तकालीफ़ की बदौलत वतन छोड़ना पड़ा और हब्शा की हिजरत दोनों ने की, वहां जाकर ख़ाविंद नस्रानी हो गया, यह इस्लाम पर बाक़ी रहीं। उन्होंने उसी रात में अपने ख़ाविन्द को ख़्वाब में निहायत बुरी शक्ल

में देखा। सुबह को मालूम हुआ कि यह नस्रानी हो गया। इस तंहाई में इस हालत में उन पर क्या गुज़री होगी, अल्लाह ही को मालूम है। लेकिन हक़ तआला शानुहू ने इसका नैमलबदल[1] यह अता फ़र्माया कि हुज़ूर के निकाह में आ गयीं।

हुज़ूर सल्ल ने हब्शा के बादशाह नजाशी के पास प्याम भेजा कि इनका निकाह मुझसे कर दो। चुनांचे नजाशी ने एक औरत अबरहा को इनके पास उसकी ख़बर के लिए भेजा। उन्होंने ख़ुशी में अपने दोनों कंगन जो पहन रहीं थीं, उसको अता कर दिए और पांव के छल्ले–कड़े वग़ैरह मुतअद्दद चीज़ें दीं। नज्जाशी ने निकाह किया और अपने पास से चार सौ दीनार महर के अदा किये और बहुत कुछ सामान दिया। जो लोग मज्लिसे निकाह में मौजूद थे, उनको भी दीनार दिए और खाना खिलाया। इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि यह निकाह सन् 07 हि० में हुआ जैसा कि अक्सर का क़ौल है या सन् 06 हि० में जैसा कि बाज़ ने कहा है।

साहिबे तारीख़ ख़मीस ने लिखा है कि इनका निकाह सन् 06 हि० में हुआ और रुख़्सती सन् 07 हि० में। जब यह मदीना तैयबा पहुंची, नज्जाशी ने बहुत सी ख़ुश्बू और सामाने जहेज़ वग़ैरह देकर उनको निकाह के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया।

बाज़ कुतुब व तवारीख़ और अहादीस से मालूम होता है इनके बाप ने निकाह किया, मगर यह सही नहीं इसलिए कि उनके बाप उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, वह इस क़िस्से के बाद मुसलमान हुए हैं। (उनका एक क़िस्सा इसी बाब के न० 9 पर गुज़र चुका है) इनके इंतिक़ाल में बहुत इख़्तिलाफ़ है। अक्सर ने सन् 44 हि० में बताया है और इसके अलावा सन् 42 हि० और सन् 55 हि० और सन् 50 हि० वग़ैरह अक़्वाल भी हैं।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ीया रज़ि० हई की बेटी, हज़रत मूसा अलै० के भाई हारून अलै० की औलाद में हैं। अव्वल सलाम बिन मिश्कम के निकाह में थीं, इसके बाद कनाना बिन अबीहक़ीक़ के निकाह में आयीं। इस से निकाह उस ज़माने में हुआ था कि ख़ैबर की लड़ाई शुरु हो गयी थी। और उनका ख़ाविंद क़त्ल हो गया था। ख़ैबर की लड़ाई के बाद दह्या कल्बी रज़ि० एक सहाबी थे। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से एक बांदी मांगी। हुज़ूर ने उनको मरहमत फ़र्मा दिया। चूंकि मदीना में भी दो

1. अच्छा बदला,

कबीले क़ुरैजा और नज़ीर आबाद थे और यह सरदार की बेटी थीं, इसलिए लोगों ने अर्ज किया कि यह बात बहुत से लोगों को ना गवार होगी। सफ़ीया रज़ि० को अगर हुज़ूरसल्ल० अपने निकाह में ले लें तो बहुत से लोगों की दिलदारी है। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने दहया को ख़ातिरख़्वाह एवज देकर उनको ले लिया और उनको आज़ाद फ़र्मा कर निकाह कर लिया और ख़ैबर से वापसी में एक मंज़िल पर उनकी रुख़्सती हुई। सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिसके पास जो चीज खाने की हो, वह ले आये। सहाबा के पास मुतफ़र्रिक़ चीजें खजूर, पनीर वग़ैरह जो था वह ले आये। एक चमड़े का दस्तर्ख़्वान बिछा दिया और उस पर वह सब डाल दिया गया और सबने ने शरीक होकर खा लिया। यही वलीमा था।

बाज़ रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्ल० ने उनको इख़्तियार दे दिया था कि अगर तुम अपनी क़ौम और अपने मुल्क में रहना चाहो तो आज़ाद हो, चली आओ और मेरे पास मेरे निकाह में रहना चाहो तो रहो। उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मैं शिर्क की हालत में हुज़ूर सल्ल० की तमन्ना करती थी, अब मुसलमान होकर कैसे जा सकती हूं। इससे मुराद ग़ालिबन उनका वह ख़्वाब है, जो उन्होंने मुसलमान होने से पहले देखा था कि एक चांद का टुकड़ा मेरी गोद में है। इस ख़्वाब को उन्होंने अपने ख़ाविंद कनाना से कहा। उसने एक तमांचा इस ज़ोर से मुंह पर मारा कि आंख पर उस का निशान पड़ गया और यह कहा कि तू यस्रिब के बादशाह के निकाह की तमन्ना करती है।

एक मर्तबा ख़्वाब देखा कि आफ़्ताब उनके सीने पर है। ख़ाविंद से उस का भी ज़िक्र किया। उसने इस पर भी यही कहा कि तू यह चाहती है कि यस्रिब के बादशाह के निकाह में जाए। एक मर्तबा उन्होंने चांद को गोद में देखा, तो अपने बाप से ज़िक्र किया, उसने भी एक तमांचा मारा और यह कहा कि तेरी निगाह यस्रिब के बादशाह पर जाती हैं, मुम्किन है कि चांद का वही एक ख़्वाब ख़ाविंद और बाप दोनों से कहा हो या चांद को दो मर्तबा देखा हो।

रमज़ान सन् 50 हि० में सही क़ौल के मुवाफ़िक़ इंतिक़ाल हुआ और तक़रीबन साठ वर्ष की उम्र पाई। ख़ुद कहती हैं कि मैं जब हुज़ूर सल्ल० के निकाह में आयी तो मेरी उम्र सत्तरह साल की नहीं हुई थी।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना हारिस बिन हुज़्न की बेटी, उनका असल नाम बर्रा था, हुज़ूर सल्ल० ने बदल कर मैमूना रज़ि० रखा पहले से अबूरहम बिन

अब्दुल उज़्ज़ा के निकाह में थीं। अक्सर मुवर्रिख़ीन का यही क़ौल है और भी बहुत से अक़्वाल उनके पहले ख़ाविंद के नाम में हैं। बाज़ ने लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० से पहले भी दो निकाह हुए थे। बेवा हो जाने के बाद ज़ीक़ादा 7 हि० में जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा के लिए मक्का मुकर्रमा तश्रीफ़ ले जा रहे थे, मौज़ा सरफ़ में निकाह हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने इरादा फ़र्माया कि उमरा से फ़रागत के बाद मक्का में रुख़्सती हो जाये, मगर मक्का वालों ने क़याम की इजाज़त न दी, इसलिए वापसी में सरफ़ ही में रुख़्सती हुई और सरफ़ ही में ख़ास उसी जगह, जहाँ रुख़्सती का ख़ेमा था, सन् 51 हि० में सही क़ौल के मुवाफ़िक़ इन्तिक़ाल हुआ और बाज़ ने सन् 61 हि० में लिखा है। उस वक़्त उनकी उम्र 81 वर्ष की थी और उसी जगह क़ब्र बनी, यह भी इबरत का मुक़ाम है और तारीख़ का अजीबा[1] है कि एक सफ़र में वहां निकाह हुआ और दूसरे सफ़र में वहां रुख़्सती और अर्से के बाद उसी जगह क़ब्र बनी।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैमूना रज़ि० हम सब में ज़्यादा मुत्तक़ी और सिला रहमी[2] करने वाली थीं।

यज़ीद बिन असस्म रज़ि० कहते हैं कि इनका मश्ग़ला हर वक़्त नमाज़ था या घर का काम। अगर दोनों से फ़रागत होती तो मिस्वाक करती रहती थीं। जिन औरतों के निकाह पर मुहद्दिसीन व मुवर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है, उनमें हज़रत मैमूना रज़ि० का निकाह सबसे आख़िरी निकाह है। उनकी दर्मियानी तर्तीब में अल-बत्ता इख़्तिलाफ़ है, जिसकी वजह इन निकाहों की तारीख़ का इख़्तिलाफ़ है, जैसा कि मुख़्तसर तौर पर मालूम हुआ। इन ग्यारह बीवियों में से दो का विसाल हुज़ूर सल्ल० के सामने हो चुका था। हज़रत ख़दीजा रज़ि० का और हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ि० का, बाक़ी नौ बीवियां हुज़ूर सल्ल० के विसाल के वक़्त मौजूद थीं। इनके अलावा और भी बाज़ निकाह बाज़ मुहद्दिसीन और मुवर्रिख़ीन ने लिखे हैं, जिनके होने में इख़्तिलाफ़ है, इसलिए उन्हीं बीवियों का ज़िक्र लिखा है, जिन पर इत्तिफ़ाक़ है।

---

1. अनोखी बात, 2. रिश्तों को जोड़ने वाली,

मालूमात

हुज़ूर सल्ल० की औलादें

मुवर्रिख़ीन और मुहद्दिसीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि आपके चार लड़कियां हुईं और अक्सर की तहक़ीक़ यह है कि इन में सब से बड़ी हज़रत ज़ैनब रज़ि०, फिर हज़रत रुक़ैया रज़ि०, फिर हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि०, फिर हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि०। लड़कों में अल-बत्ता बहुत इख़्तिलाफ़ है, जिसकी वजह यह है कि यह सब हज़रात बचपन ही में इन्तिक़ाल फ़र्मा गये थे और अरब में उस ज़माने में तारीख़ का एहतमाम कुछ ऐसा न था। सहाबा रज़ि० जैसे जां-निसार भी उस वक़्त तक कसरत से नहीं हुए थे, जो हर बात पूरी-पूरी महफ़ूज़ रहती।

अक्सर की तहक़ीक़ यह है कि तीन लड़के हज़रत क़ासिम रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि०, हज़रत इब्राहीम रज़ि० हुए। बाज़ों ने कहा कि चौथे साहबज़ादे हज़रत तैय्यब रज़ि० और पाँचवें हज़रत ताहिर रज़ि० थे। इस तरह पाँच हुए। बाज़ कहते हैं कि तैय्यब और ताहिर दोनों एक ही साहबज़ादे के नाम हैं। इस तरह चार हुए और बाज़ ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह ही का नाम तैय्यब और ताहिर था, इस तरह तीन ही लड़के हुए। और बाज़ों ने दो लड़के और भी बताये, मुताय्यिब और मुतहहर और लिखा है कि तैय्यब और मुतय्यब एक साथ पैदा हुए और ताहिर मुतहहर एक साथ पैदा हुए, इस तरह सात लड़के हुए। लेकिन अक्सर की तहक़ीक़ तीन लड़कों की है और हुज़ूर सल्ल० की सारी औलाद हज़रत इब्राहीम अलै० के सिवा हज़रत ख़दीजा रज़ि० ही से पैदा हुई।

लड़कों में हज़रत क़ासिम रज़ि० सबसे पहले पैदा हुए, लेकिन इस में इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० उनसे बड़ी थीं या छोटी। हज़रत क़ासिम रज़ि० ने बचपन ही में इन्तिक़ाल फ़र्माया, दो साल की उम्र अक्सर ने लिखी है और बाज़ों ने इससे कम या ज़्यादा भी लिखी है।

दूसरे साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० जो नुबूवत के बाद पैदा हुए और इसी वजह से उनका नाम तैय्यब और ताहिर रज़ि० भी पड़ा और बचपन ही में इन्तिक़ाल

हुआ। उनके इन्तिक़ाल पर और बाज़ ने लिखा है कि हज़रत क़ासिम रज़ि० के इन्तिक़ाल पर कुफ़्फ़ार बहुत ख़ुश हुए कि आपकी नस्ल मुंक़तअ[1] हो गयी, जिस पर सूरः इन्ना आतैना नाज़िल हुई और कुफ़्फ़ार के इस कहने का कि जब नस्ल ख़त्म हो गई तो कुछ दिनों में नामे मुबारक भी मिट जायेगा, यह जवाब मिला कि आज चौदह सौ वर्ष के बाद तक भी हुज़ूर सल्ल० के नाम के फ़िदाई करोड़ों मौजूद हैं।

तीसरे साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ि० थे, जो हिजरत के बाद मदीना तय्यबा में बिल इत्तिफ़ाक़ ज़िलहिज्जा सन् 08 हि० में पैदा हुए। यह हुज़ूर सल्ल की बाँदी हज़रत मारिया रज़ि० के पेट से पैदा हुए और हुज़ूर सल्ल० की सबसे आख़िरी औलाद हैं। हुज़ूर सल्ल० ने सातवें दिन उनका अक़ीक़ा किया। और दो मेंढे ज़िब्ह किये और बालों के बराबर चांदी सदक़ा फ़र्मायी और बालों को दफ़्न कराया। अबू हिन्द बयाज़ी रज़ि० ने सर के बाल उतारे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैंने अपने बाप हज़रत इब्राहीम अलै० के नाम पर नाम रखा है और सोलह महीने की उम्र में उन साहबज़ादे ने भी 10 रबीउल अव्वल सन् 10 हि० में इन्तिक़ाल फ़र्माया। बाज़ों ने अठारह महीने की उम्र बतलाई है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि इब्राहीम के लिए जन्नत में दूध पिलाने वाली तज्वीज़ हो गयी।

साहबज़ादियों में सबसे बड़ी हज़रत ज़ैनब रज़ि० हैं और जिन मुवर्रिख़ीन ने इसके ख़िलाफ़ लिखा है, ग़लत है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह से पाँच वर्ष बाद जब कि आपकी उम्र शरीफ़ तीस वर्ष की थी, पैदा हुईं और अपने वालिदैन की आग़ोश में जवान हुईं, मुसलमान हुईं और अपने ख़ालाज़ाद भाई अबुल आस बिन रबीअ से निकाह हुआ। ग़ज़्वा-ए-बद्र के बाद हिजरत की जिसमें मुश्रिकीन की नापाक हरकतों से ज़ख़्मी हुईं (जिसका क़िस्सा इसी बाब के न० 20 पर गुज़र चुका है) और इसी बीमारी का सिलसिला आख़िर तक चलता रहा, यहां तक कि सन्० 8 हि० के शुरु में इन्तिक़ाल फ़र्माया, इनके ख़ाविंद भी सन् 06 हि० या सन० 7 हि० में मुसलमान होकर मदीना मुनव्वरा पहुंच गये थे और उन्हीं के निकाह में रहीं। इनसे दो बच्चे हुए, एक लड़का, एक लड़की, लड़के का नाम हज़रत अली रज़ि० था, जिन्होंने अपनी वालिदा के इन्तिक़ाल के बाद बुलूग़ के क़रीब हुज़ूर सल्ल० की ज़िन्दगी ही में इन्तिक़ाल फ़र्माया। फ़त्हे मक्का में हुज़ूर सल्ल० के साथ ऊंटनी पर जो सवार थे वह यही हज़रत अली थे, लड़की का नाम हज़रत उमामा रज़ि० था, जिनके मुताल्लिक़ हदीस की किताबों में कसरत से क़िस्सा आता है कि जब हुज़ूर

1. कट गयी,

सल्ल० नमाज में सज्दा करते, तो यह कमर पर सवार हो जातीं। यह हुज़ूर सल्ल० के बाद तक ज़िंदा रहीं। हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ि० के विसाल के बाद, जो उनकी ख़ाला थीं, हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने उन से निकाह किया, और उनके विसाल के बाद मुग़ीरा बिन नौफ़ुल रज़ि० से निकाह हुआ।

हज़रत अली रज़ि० से कोई औलाद उनसे नहीं हुई , अलबत्ता मुग़ीरा रज़ि० से बाज़ों ने एक लड़कार यह्या लिखा है और बाज़ों ने इन्कार किया है। कहते हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने ख़ुद वसीयत फ़र्मायी थी कि मेरे बाद हज़रत अली रज़ि० का निकाह मेरी भाँजी से कर दिया जाए। उनका इंतिक़ाल सन् 50 हि० में हुआ।

हुज़ूर सल्ल० की दूसरी साहबज़ादी हज़रत रुक़ैया रज़ि०, थीं जो अपनी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ि० से तीन वर्ष बाद पैदा हुईं, जबकि हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ तैंतीस वर्ष की थी और बाज़ों ने हज़रत रुक़ैया रज़ि० को हज़रत ज़ैनब रज़ि० से बड़ा बताया है, लेकिन सही यही है कि यह हज़रत ज़ैनब रज़ि० से छोटी थीं। हुज़ूर सल्ल० के चचा अबूलहब के बेटे उत्बा से निकाह हुआ था। जब सूर: तब्बत नाज़िल हुई, तो अबूलहब ने उनसे और उनके दूसरे भाई उतैबा से, जिसके निकाह में हुज़ूर सल्ल० की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० थीं यह कहा कि मेरी, मुलाक़ात तुम दोनों से हराम है, अगर तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बेटियों को तलाक़ न दे दो, इस पर दोनों ने तलाक़ दे दी। यह दोनों निकाह बचपन में हुए थे, रुख़्सती की नौबत भी नहीं आयी थी।

उसके बाद फ़त्हे मक्का पर हज़रत रुक़ैया रज़ि० के ख़ाविंद उत्बा मुसलमान हो गये थे, मगर बीवी को पहले ही तलाक़ दे चुके थे और हज़रत रुक़ैया रज़ि० का निक़ाह हज़रत उस्मान रज़ि० से अर्सा हुआ हो चुका था। हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत रुक़ैया रज़ि० ने दोनों मर्तबा हब्शा की हिजरत की थी जिसका बयान पहले बाब के नं 10 पर गुज़र चुका इसके बाद जब हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फ़र्माया कि मुझे भी हिजरत का हुक्म होने वाला है, और मदीना मुनव्वरा मेरी हिजरत की जगह होगी, तो सहाबा रज़ि० ने मदीना तैय्यबा की हिजरत शुरू कर दी, इसी सिलसिले में हुज़ूर सल्ल० से पहले ही यह दोनों हज़रात भी मदीना तैय्यबा पहुंच गये थे। हुज़ूर सल्ल० की हिजरत के बाद हुज़ूर सल्ल० बद्र की लड़ाई में तशरीफ़ ले जाने लगे, तो हज़रत रुक़ैया बीमार थीं, इसलिए हुज़ूर सल्ल० हज़रत उस्मान रज़ि० को उनकी तीमारदारी के वास्ते मदीना छोड़ गये। बद्र की फ़तह की ख़ुश-ख़बरी मदीना तय्यिबा में उस वक़्त पहुंची, जब यह हज़रात हज़रत रुक़ैया रज़ि० को दफ़्न करके आ रहे

इसी वजह से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके दफ़्न में शिर्कत न फ़र्मा सके।

हज़रत रुक़ैया रज़ि० के पहले ख़ाविंद के यहां रुख़्सती भी नहीं हो सकी, तो औलाद का क्या ज़िक्र, अल-बत्ता हज़रत उस्मान रज़ि० से एक साहबज़ादा जिनका नाम अब्दुल्लाह था, हब्शा में पैदा हुए थे, जो अपनी वालिदा के इन्तिक़ाल के बाद तक ज़िन्दा रहे और छः साल की उम्र में सन् 04 हि० में इन्तिक़ाल फ़र्माया और बाज़ ने लिखा है कि अपनी वालिदा से एक साल पहले इन्तिक़ाल किया। इनके अलावा कोई और औलाद हज़रत रुक़ैया रज़ि० से नहीं हुई।

हुज़ूरे अक्दस सल्ल० की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० थीं। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इनमें और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० में से कौन सी बड़ी थीं। अक्सर की राय यह है कि उम्मे कुल्सूम रज़ि० बड़ी थीं। अव्वल उतैबा बिन अबीलहब से निकाह हुआ, मगर रुख़्सती नहीं हुई थी कि सूरः तब्बत के नाज़िल होने पर तलाक़ की नौबत आयी, जैसा कि हज़रत रुक़ैया रज़ि० के बयान में गुज़रा, लेकिन इनके ख़ाविंद तो बाद में मुसलमान हो गये थे जैसा कि गुज़र चुका और उनके ख़ाविंद उतैबा ने तलाक़ दी और हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मते अक्दस में आकर निहायत गुस्ताख़ी, बे-अदबी और ना मुनासिब अल्फ़ाज़ भी ज़बान से निकाले। हुज़ूर सल्ल० ने बद-दुआ दी कि या अल्लाह ! अपने कुत्तों में से एक कुत्ता इस पर मुसल्लत फ़र्मा। अबूतालिब उस वक़्त मौजूद थे। बावजूद मुसलमान न होने के सहम गये और कहा कि उसकी बद-दुआ से तुझे ख़लासी नहीं। चुनांचे उतैबा एक मर्तबा शाम के सफ़र में जा रहा था। उसका बाप अबूलहब बावजूद सारी अदावत और दुश्मनी के कहने लगा कि मुझे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बद-दुआ का फ़िक्र है, क़ाफ़िले के सब लोग हमारी ख़बर रखें। एक मंज़िल पर पहुँचे, वहां शेर ज़्यादा थे। रात को तमाम क़ाफ़िले का सामान एक जगह जमा किया और उसका टीला-सा बना कर उस पर उतैबा को सुलाया और क़ाफ़िले के तमाम आदमी चारों तरफ़ सोये। रात को एक शेर आया, और सब के मुंह सूंघे, उसके बाद एक जकंद लगायी और उस टीले पर पहुँच कर उतैबा का सर बदन से जुदा कर दिया। उसने एक आवाज़ दी, मगर साथ ही काम तमाम हो चुका था। बाज़ मुवर्रिख़ीन ने लिखा है कि यह मुसलमान हो गया था और यह क़िस्सा पहले भाई के साथ पेश आया।

बहरहाल हज़रत रुक़ैया रज़ि० और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० के पहले शौहरों में से एक मुसलमान हुए। दूसरे के साथ यह इबरत का वाक़िआ पेश आया।

इसी वास्ते अल्लाह वालों की दुश्मनी से डराया जाता है। ख़ुद अल्लाह जल्ले शानुहू का इर्शाद है–

'मन आदाली वलीयन फ़क़द आज़नतुहू बिल् हर्बि०'
'जो मेरे किसी वली को सताये, उस को मेरी तरफ़ से लड़ाई का ऐलान है।'

हजरत रुक़ैया रज़ि० के इन्तिक़ाल के बाद रबीउल अव्वल सन् 03 हि० में हजरत उम्मे कुल्सूम रज़ि० का निकाह भी हज़रत उस्मान रज़ि० से हुआ। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मैंने उम्मे कुल्सूम रज़ि० का निकाह आसमानी वही के हुक्म से उस्मान रज़ि० से किया। बाज़ रिवायात में हज़रत रुक़ैया रज़ि० और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० दोनों के मुताल्लिक़ यही इर्शाद फ़र्माया। पहले ख़ाविंद के यहां तो रुख़्सती भी नहीं हुई थी औलाद कोई हजरत उस्मान रज़ि० से भी नहीं हुई और शबान सन 09 हि० में इन्तिक़ाल फ़र्माया। हुज़ूर सल्ल० ने उनके इन्तिक़ाल के बाद इर्शाद फ़र्माया कि अगर मेरे सौ लड़कियाँ होतीं और इन्तिक़ाल करतीं तो इसी तरह एक दूसरी के बाद सब का निकाह हज़रत उस्मान रज़ि० से करता।

हुज़ूर सल्ल० की चौथी साहबज़ादी जन्नती औरतों की सरदार हजरत फ़ातिमा रज़ि० हैं, जो उम्र में अक्सर मुवर्रिख़ीन के नज़दीक सब से छोटी हैं। नुबूव्वत के एक साल बाद, जबकि हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ इक्तालीस वर्ष की थी, पैदा हुईं और बाज़ ने नुबूव्वत से पांच साल पहले पैंतीस साल की उम्र में लिखा है। कहते हैं कि उनका नाम फ़ातिमा रज़ि० इलहाम या वही से रखा गया। फ़तम के माना रोकने के हैं यानी यह जहन्नम की आग से महफ़ूज़ है।

सन० 2 हि० मुहर्रम या सफ़र या रजब या रमज़ान में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से निकाह हुआ और निकाह से सात माह और पन्द्रह दिन बाद रुख़्सती हुई। यह निकाह भी अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक्म से हुआ कहते है कि निकाह के वक़्त आपकी उम्र। पन्द्रह साल पाँच माह की थी। इससे भी इक़्तालीसवें साल में पैदाइश यानी पहले क़ौल की ताईद होती है। और हजरत अली रज़ि० की उम्र 21 साल पांच माह या चौबीस साल डेढ़ माह की थीं। हुज़ूर सल्ल० को अपनी तमाम साहबज़ादियों में इन से ज़्यादा मुहब्बत थी। जब हुज़ूर सल्ल० सफ़र को तश्रीफ़ ले जाते तो सब से आख़ीर में इन से रुख़्सत होते और जब सफ़र से वापस आते तो सबसे पहले इनके पास तश्रीफ़ ले जाते। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने अबूजहल की लड़की से दूसरे निकाह का इरादा फ़र्माया, तो इनको रंज हुआ, हुज़ूर सल्ल० से शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि फ़ातिया मेरे बदन का टुकड़ा है, जिसने उसको रंज

पहुंचाया, उसने मुझको रंज पहुंचाया, इसलिए हजरत अली रज़ि० ने उनकी ज़िंदगी में कोई निकाह नहीं किया। आप के विसाल के बाद आपकी भाँजी उमामा रज़ि० से निकाह किया, जिसका ज़िक्र हज़रत जैनब रज़ि० के बयान में गुज़रा। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के छः महीने बाद हजरत फ़ातिमा रज़ि० बीमार हुई और एक रोज ख़ादिमा से फर्माया कि मैं गुस्ल करूंगी, पानी रख दो। गुस्ल फ़र्माया, नये कपड़े पहने, फिर फ़र्माया कि मेरा बिस्तर घर के बीच में कर दो उस पर तशरीफ़ ले गयीं और क़िब्ला रुख़ लेट कर दाहिना हाथ रुख़सार के नीचे रखा और फ़र्माया कि बस, अब मैं मरती हूँ, यह फ़र्माकर विसाल फ़र्माया।

हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद का सिलसिला इन्हीं से चला और इन्शाअल्लाह क़यामत तक चलता रहेगा। इनकी छः औलाद, तीन लड़के तीन लड़कियाँ हुईं। सब से अव्वल हज़रत हसन रज़ि० निकाह से दूसरे साल में पैदा हुए फिर हज़रत हुसैन रज़ि० तीसरे साल सन्० 4 हि० में, फिर हज़रत मुहस्सिन पैदा हुए, जिनका इन्तिकाल बचपन ही में हो गया। साहबज़ादियों में से हज़रत रुक़ैया का इन्तिक़ाल बचपन ही में हो गया था, इसी वजह से बाज मुवर्रिख़ीन ने इनको लिखा भी नहीं। दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० का पहला निकाह हज़रत उमर अमीरुल मोमिनीन से हुआ, जिनसे एक साहबज़ादे जैद रज़ि० और एक साहबज़ादी रुक़ैया पैदा हुईं।

हजरत उमर रज़ि० के विसाल के बाद उम्मे कुल्सूम रज़ि० का निकाह औन बिन जाफ़र रज़ि० से हुआ। उनसे कोई औलाद नहीं हुई। उनके इन्तिक़ाल के बाद उनके भाई मुहम्मद बिन जाफ़र से हुआ, उनसे एक लड़की पैदा हुई जो बचपन ही में इन्तिक़ाल कर गयी। उनके इन्तिक़ाल के बाद उनके तीसरे भाई अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से हुआ। उनसे भी कोई औलाद नहीं हुई और उन्हीं के निकाह में हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० का इन्तिकाल हुआ और उसी दिन उनके साहबज़ादे जैद रज़ि० का भी इन्तिक़ाल हुआ। दोनों जनाज़े साथ ही उठे, और कोई सिलसिला औलाद का उनसे नहीं चला। यह तीनों भाई वही अब्दुल्लाह औन और मुहम्मद रज़ि० हैं, जिनका क़िस्सा छठे बाब के 11 पर गुज़रा है। यह हजरत अली के भतीजे और जाफ़र तैयार के साहबज़ादे हैं। हजरत फ़ातिमा रज़ि० की तीसरी साहबज़ादी हजरत जैनब रज़ि० थीं, जिनका निकाह अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से हुआ और दो साहबज़ादे अब्दुल्लाह और औन रज़ि० पैदा हुए उन ही के निकाह में इंतिकाल फ़र्माया। उन

के इंतिक़ाल के बाद अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० का निकाह उनकी हमशीरा हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० से हुआ था। यह औलाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से है। वरना हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की दूसरी बीवियों से, जो बाद में हुई और भी औलादें हैं।

मुवर्रिख़ीन ने हज़रत अली की तमाम औलाद 32 लिखी हैं, जिनमें 16 लड़के ओर 16 लड़कियां है और हज़रत इमाम हसन रज़ि० के 15 लड़के, आठ लड़कियां और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० के छः लड़के, तीन लड़कियां।

رضی اللہ تعالے

عنہم وارضاہم اجمعین وجعلنا بھدیہم متبعین واللہ اعلم وعلمہ اتم ملخص

من الخمیس والزرقانی علی المواھب والتلقیح والاصابہ واسد الغابۃ

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व अर्ज़ाहुम अज्मईन व जअल्ना बिहदीयिहिम मुत्तबिअीन वल्लाहु आलम व इल्मुहू अतम्मु०

ग्यारहवां बाब

बच्चों का दीनी वल्वला और बचपन में दीन का एहतमाम

कम-सिन और नव-उम्र बच्चों में जो दीन का जज़्बा था, वह हक़ीक़त में बड़ों की परवरिश का समरा[1] था। अगर मां-बाप और दूसरे औलिया औलाद को शफ़क़त में खो देने और ज़ाया कर देने के बजाय शुरू ही से उनकी दीनी हालत की ख़बरगीरी और उस पर तंबीह रखें तो दीन के उमूर बच्चों के दिलों में जगह पकड़ें और बड़ी उम्र में जाकर वह चीज़ें उनके लिए ब-मंज़िला-ए-आदत[2] के हो जाएं, लेकिन हम लोग इसके बर-ख़िलाफ़ बच्चे की हर बुरी बात पर बच्चा समझ कर चश्म-पोशी[3]

1. फल, 2. आदत जैसी, 3. आंखें बचाना,

करते हैं, बल्कि ज़्यादा मुहब्बत का जोश होता है, तो इस पर ख़ुश होते हैं और दीन में जितनी कोताही देखते हैं, अपने दिल को यह कहकर तसल्ली देते हैं कि बड़े होकर सब दुरुस्त हो जावेगा, हालांकि बड़े होकर वही आदात पकती हैं जिनका शुरू में बीज बोया जा चुका है। आप चाहते हैं कि बीज चने का डाला जाये और उससे गेहूं पैदा हो। यह मुश्किल है, अगर आप चाहते हैं कि बच्चे में अच्छी आदतें पैदा हों, दीन का एहतमाम हो, दीन पर अमल करने वाला हो, तो बचपन ही से उसको दीन के एहतमाम का आदी बनायें, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन बचपन ही से अपनी औलाद की निगहदाशत[1] फ़र्माते थे और दीनी उमूर का एहतमाम कराते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में एक शख़्स पकड़ कर लाया गया, जिसने रमज़ान में शराब पी रखी थी और रोज़े से नहीं था। हज़रत उमर रज़ि० ने इर्शाद फ़र्माया कि तेरा नास हो, हमारे तो बच्चे भी रोज़ादार हैं।[2]

फ़—यानी तू इतना बड़ा होकर भी रोज़ा नहीं रखता, इसके बाद उसके अस्सी कोड़े शराब की सज़ा में मारे और मदीना मुनव्वरा से निकल जाने का हुक्म फ़र्मा कर मुल्क शाम को चलता कर दिया।

1. बच्चों को रोज़ा रखवाना

रुब्बीअ बिन्त मुअव्विज रज़ि० जिनका क़िस्सा पहले बाब के अख़ीर में गुज़रा है, कहती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा एलान कराया कि आज आशूरा का दिन है, सबके सब रोज़ा रखें। हम लोग इस के बाद से हमेशा रोज़ा रखते रहे और अपने बच्चों को भी रोज़ा रखवाते थे। जब वह भूख की वजह से रोने लगते तो रूई के गाले के खिलौना बनाकर उनको बहलाया करते थे और इफ़्तार के वक़्त तक इसी तरह उनको खेल में लगाये रखते थे।[3]

फ़—बाज़ अहादीस में यह भी आया है कि माँयें दूध पीते बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं, अगरचे उस वक़्त क़ुवा[4] निहायत क़वी थे और अब बहुत ज़ईफ़, वह लोग और वह बच्चे उसके मुतहम्मिल थे, लेकिन देखना यह है कि जितने का अब तहम्मुल है, वही कहां किया जाता है। तहम्मुल का देखना तो निहायत ज़रूरी है, मगर अब जिसका तहम्मुल हो उसमें कोताही यक़ीनन ना-मुनासिब है।

---

1. देखभाल, निगरानी, 2. बुख़ारी, 3. बुख़ारी 4. जिस्म के हिस्से,

2. हज़रत आइशा रज़ि० की अहादीस और आयत का नुज़ूल

हज़रत आइशा रज़ि० छ: साल की उम्र में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आयीं, मक्का मुकर्रमा में निकाह हुआ और नवें साल की उम्र में मदीना तैयबा में रुख़्सती हुई। अठारह साल की उम्र में हुज़ूर सल्ल० का विसाल हुआ अठारह साल की उम्र ही क्या होती है जिसमें इस क़दर दीनी मसाइल और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात और अफ़आल उनसे नक़ल किये जाते है कि हद नहीं।

मसरूक़ रज़ि० कहते है कि बड़े-बड़े सहाबा रज़ि० को मैंने देखा कि हज़रत आइशा रज़ि० से मसाइल दर्याफ़्त करते थे।

अता रज़ि० हैं कि मर्दों से ज़्यादा मसाइल से वाक़िफ़ और आलिम थीं।

अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि जो इल्मी मुश्किल हमें दरपेश आती थी, हज़रत आइशा रज़ि० के पास उसके मुताल्लिक़ तहक़ीक़ मिलती थी।[1] दो हज़ार दो सौ दस हदीसें कुतुबे हदीस में उनकी मिलती हैं।[2]

खुद फ़र्माती हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में बचपन में खेल रही थी उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सूरा कमर की आयत–

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ

बलिस्सा अतु मौ अिदु हुम वस्साअ तु अद्हा व अमर्र०

नजिल हुई[3] मक्का मुकर्रमा में आठ वर्ष की उम्र तक हज़रत आइशा रज़ि० रही हैं। इस कम उम्री में इस आयत के नाज़िल होने की ख़बर होना और फिर उसका याद भी रखना दीन के साथ ख़ास ही लगाव से हो सकता है, वरना, आठ वर्ष की उम्र ही क्या होती है।

1. असाबा, 2. तल्क़ीह, 3. बुख़ारी,

3. हज़रत उमैर रज़ि० का जिहाद की शिर्कत का शौक़

हज़रत उमैर रज़ि० आबिल लह्म के ग़ुलाम और कम-उम्र बच्चे थे, जिहाद में शिर्कत का शौक़ उस वक़्त हर बड़े-छोटे की जान था। ख़ैबर की लड़ाई में शिर्कत की ख़्वाहिश की। उनके सरदारों ने भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में सिफ़ारिश की कि इजाज़त फ़र्मा दी जावे। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त फ़र्मा दी और एक तलवार मरहमत फ़र्मायी जो गले में लटका ली। मगर तलवार बड़ी थी और क़द छोटा था, इसलिए वह ज़मीन पर घिसटती जाती थी। इसी हाल में ख़ैबर की लड़ाई में शिर्कत की। चूंकि बच्चे भी थे और ग़ुलाम भी, इसलिए ग़नीमत का पूरा हिस्सा तो मिला नहीं, अलबत्ता बतौर अता के कुछ सामान हिस्से में आया।[1]

फ़—इन जैसे हज़रात को यह भी मालूम था कि ग़नीमत में हमारा पूरा हिस्सा भी नहीं, इसके बावजूद फिर यह शौक़ कि दूसरे हज़रात से सिफ़ारिशें करायी जाती थीं। इसकी वजह दीनी जज़्बा और अल्लाह तआला और इसके सच्चे रसूल सल्ल० के वायदों पर इत्मीनान के सिवा और क्या हो सकती है?

4. हज़रत उमैर रज़ि० का बद्र की लड़ाई में छुपना

हज़रत उमैर बिन अबीवक़्क़ास रज़ि० एक नव-उम्र सहाबी हैं, शुरू ही में मुसलमान हो गये थे। सअद बिन अबीवक़्क़ास रज़ि० मशहूर सहाबी के भाई हैं, सअद रज़ि० कहते हैं कि मैंने अपने भाई उमैर रज़ि० को बद्र की लड़ाई के वक़्त देखा कि लश्कर की रवानगी की तैयारी हो रही थी और वह इधर-उधर छुपते फिर रहे थे कि कोई देखे नहीं। मुझे यह बात देखकर ताज्जुब हुआ। मैंने उनसे पूछा कि क्या हुआ, छुपते क्यों फिर रहे हो?

कहने लगे, मुझे यह डर है कि कहीं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल०

---

1. अबूदाऊद,

मुझे न देख लें और बच्चा समझकर जाने की मुमानअत कर दें कि फिर न जा सकूंगा और मुझे यह तमन्ना है कि लड़ाई में ज़रूर शरीक होऊं। क्या बईद है अल्लाह तआला मुझे भी किसी तरह शहादत नसीब फ़र्मायें। आख़िर जब लश्कर पेश हुआ तो जो ख़तरा था, वह पेश आया और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके कम उम्र होने की वजह से इंकार फ़र्मा दिया और जो ख़तरा था, वह सामने आ गया। मगर शौक़ का ग़ल्बा था, तहम्मुल न कर सके और रोने लगे। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शौक़ का और रोने का हाल मालूम हुआ तो इजाज़त अता फ़र्मा दी। लड़ाई में शरीक हुए और दूसरी तमन्ना भी पूरी हुई कि उसी लड़ाई में शहीद हुए।

उनके भाई सअद रज़ि० कहते हैं कि उनके छोटे होने और तलवार के बड़े होने की वजह से मैं उसके तस्मों में गिरहें लगाता था, ताकि ऊँची हो जाए।[1]

5. दो अंसारी बच्चों का अबू जह्ल को क़त्ल करना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० बड़े मशहूर और बड़े सहाबा रज़ि० में हैं। फ़र्माते हैं कि मैं बद्र की लड़ाई के मैदान में लड़ने वालों की सफ़ में खड़ा था। मैंने देखा कि मेरे दाएं और बायें जानिब अन्सार के दो कम उम्र लड़के हैं। मुझे ख़्याल हुआ कि मैं अगर क़वी और मज़बूत लोगों के दर्मियान होता तो अच्छा था कि ज़रूरत के वक़्त एक-दूसरे की मदद कर सकते। मेरे दोनों जानिब बच्चे हैं, यह क्या मदद कर सकेंगे। इतने में इन दोनों लड़कों में से एक ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, चचा जान! तुम अबू जहल को भी पहचानते हो। मैंने कहा, हां पहचानता हूं, तुम्हारी क्या ग़रज है? उसने कहा, मुझे यह मालूम हुआ है कि वह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गालियां बकता है। उस पाक ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैं उसको देख लूं तो उस वक़्त तक उससे जुदा न हूंगा कि वह मर जाए या मैं मर जाऊं।

मुझे उसके इस सवाल व जवाब पर ताज्जुब हुआ। इतने में दूसरे ने यही सवाल किया और जो पहले ने कहा था, वही उसने भी कहा कि इत्तिफ़ाक़न मैदान

---

1. असाबा,

में अबूजहल दौड़ता हुआ मुझे नजर पड़ गया। मैंने उन दोनों से कहा कि तुम्हारा मतलूब[1] जिसके बारे में तुम मुझ से सवाल कर रहे थे वह जा रहा है। दोनों यह सुनकर तलवारें हाथ में लिए हुए एकदम भागे चले गये और जाकर उस पर तलवार चलानी शुरू कर दी, यहाँ तक कि उसको गिरा दिया।[2]

फ़—यह दोनों साहब ज़ादे मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह और मआज़ बिन उफ़रा हैं। मआज़ बिन अम्र कहते हैं कि मैं लोगों से सुनता था कि अबूजह्ल को कोई नहीं मार सकता, वह बड़ी हिफ़ाजत में रहता है। मुझे उसी वक़्त से ख़्याल था कि मैं उसको मारूंगा। यह दोनों साहबज़ादे पैदल थे और अबूजहल घोड़े पर सवार था, सफ़ों को दुरुस्त कर रहा था। जिस वक़्त अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने देखा और यह दोनों दौड़े तो घोड़े सवार पर ब-राहे रास्त हमला मुश्किल था, इसलिए एक ने घोड़े पर हमला किया और दूसरे ने अबूजहल की टाँग पर हमला किया, जिससे घोड़ा भी गिरा और अबूजह्ल भी गिरा और उठ न सका। यह दोनों हज़रात उसको ऐसा करके छोड़ आये थे कि उठ न सके, वहीं पड़ा तड़पता रहे, मगर मुअव्वज बिन अफ़रा, इनके भाई ने और ज़रा ठंडा कर दिया कि मुबादा[3] उठकर चला जाए लेकिन बिल्कुल उन्होने भी न निमटाया। इसके बाद अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने बिल्कुल ही सर जुदा कर दिया।

मुआज बिन अम्र रज़ि० कहते है कि जिस वक़्त मैंने उसकी टांग पर हमला किया, तो उसका लड़का इक्रिमा साथ था। उसने मेरे मोंढे पर हमला किया, जिससे मेरा हाथ कट गया और सिर्फ़ खाल में लटका हुआ रह गया।[4] मैंने उस लटके हुये हाथ को कमर के पीछे डाल दिया और दिन भर दूसरे हाथ से लड़ता रहा, लेकिन जब उसके लटके रहने से दिक़्क़त हुई तो मैंने उसको पाँव के नीचे दबाकर ज़ोर से खींचा, वह खाल भी टूट गई, जिससे वह अटक रहा था और मैंने उसको फेंक दिया।[5]

6. हज़रत राफ़ेअ रज़ि० और हज़रत जुन्दुब रज़ि० का मुक़ाबला

नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब लड़ाई के लिए तश्रीफ़ ले जाते तो मदीना मुनव्वरा से बाहर जाने के बाद लश्कर

1. जिसकी तलब हो, 2. बुख़ारी, 3. शायद, 4. असदुल ग़ाबा, 5. ख़मीस,

का मुआयना फ़र्माते, उनके अह्वाल को, उनकी ज़रूरतों को देखते और लश्कर की इस्लाह फ़र्माते, कम-उम्र बच्चों को वापस फ़र्मा देते। यह हज़रात शौक में निकल पड़ते, चुनांचे उहद की लड़ाई के लिए जब तशरीफ़ ले जाना हुआ तो एक मौक़े पर जाकर लश्कर का मुआयना फ़र्माया और नव-उम्रों को लड़कपन की वजह से वापस फ़र्मा दिया, जिन में हज़राते ज़ैल भी थे—अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ज़ैद बिन साबित रज़ि० उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ज़ैद बिन अर्कम रज़ि० बरा बिन आज़िब रज़ि० अम्र बिन हज़म रज़ि० उसैद बिन ज़ुहैर रज़ि०, उराबा, बिन औस रज़ि०, अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० समरबिन जुन्दुब रज़ि० राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० कि इनकी उम्रें तक़रीबन तेरह-चौदह वर्ष की थीं, जब उनको वापसी का हुक्म हुआ तो हज़रत ख़दीज रज़ि० ने सिफ़ारिश की और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मेरा लड़का राफ़ेअ तीर चलाना बहुत अच्छा जानता है और ख़ुद राफ़ेअ भी इजाज़त के इश्तियाक़ में उभर-उभर कर खड़े होते थे कि क़द लम्बा मालूम हो। हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त अता फ़र्मा दी तो समुरः बिन जुन्दुब रज़ि० ने अपने सौतेले बाप मुर्रा बिन सनान से कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने राफ़ेअ को तो इजाज़त मरहमत फ़र्मा दी और मुझे इजाजत नहीं अता फ़र्मायी, हलांकि मैं राफ़ेअ रज़ि० से क़वी हूँ, अगर मेरा और उसका मुक़ाबला हो तो मैं उसको पछाड़ लूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने दोनों का मुक़ाबला कराया, तो समरा ने राफ़ेअ को वाक़ई पछाड़ लिया। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने समरा रज़ि० को भी इजाज़त अता फ़र्मा दी। इसके बाद और बच्चों ने भी कोशिश की और बाज़ों को और भी इजाज़त मिल गयी। इसी सिलसिले में रात हो गयी, हुज़ूर सल्ल० ने तमाम लश्कर की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम फ़र्माया और पचास आदमियों को पूरे लश्कर की हिफ़ाज़त के वास्ते मुतअय्यन फ़र्माया। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि हमारी हिफ़ाज़त कौन करेगा। एक साहब उठे। हुज़ूर-सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम्हारा क्या नाम है? उन्होंने कहा ज़कवान (रज़ि०) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अच्छा बैठ जाओ। फिर फ़र्माया, हमारी हिफ़ाज़त कौन करेगा? एक साहब उठे। हुज़ूर-सल्ल० ने नाम दर्याफ़्त किया, अर्ज किया, अबूसब्अ (सब्अ का बाप) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया बैठ जाओ। तीसरी मर्तबा फिर इर्शाद हुआ कि हमारी हिफ़ाज़त कौन करेगा? फिर एक साहब खड़े हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नाम दर्याफ़्त किया। उन्होंने अर्ज किया, इब्ने अब्दुलक़ैस रज़ि० (अब्दे क़ैस का बेटा) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अच्छा बैठ जाओ। इसके थोड़ी देर बाद इर्शाद हुआ कि तीनों आदमी आ जाओ, तो एक साहब हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम्हारे दोनों साथी कहां गये? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह। तीनों दफ़ा मैं ही उठा था। हुज़ूर सल्ल० ने दुआ दी और हिफ़ाज़त

का हुक्म फ़र्माया। रात भर यह हुज़ूर सल्ल० के ख़ेमे की हिफ़ाज़त फ़र्माते रहे।[1]

फ़—यह शौक़ और यह वलवले थे उन हज़रात के कि बच्चा हो या बड़ा, हर शख़्स कुछ ऐसा मस्त था कि जान देना मुस्तक़िल मक़्सूद था, इसी वजह से कामियाबी उन के क़दम चूमती थी। राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० ने बद्र की लड़ाई में भी अपने आप को पेश किया था, मगर उस वक़्त इजाज़त न मिल सकी थी, फिर उहद में पेश किया, जिस का क़िस्सा अभी गुज़रा। इसके बाद से हर लड़ाई में शरीक होते रहे। उहद की लड़ाई में सीने में एक तीर लगा, जब उसको खींचा गया तो सारा निकल आया, मगर भाल का हिस्सा अंदर बदन में रह गया, जिसने ज़ख़्म की सूरत इख़्तियार कर ली और अख़ीर ज़माने में बुढ़ापे के क़रीब यही ज़ख़्म हरा होकर मौत का सबब बना।[2]

7. हज़रत ज़ैद रज़ि० का क़ुरआन की वजह से तक़द्दुम

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र हिजरत के वक़्त ग्यारह साल की थी और छः साल की उम्र में यतीम हो गये थे। बद्र की लड़ाई में अपने आप को पेश किया, इजाज़त न मिली, फिर उहद की लड़ाई में निकले, मगर वापस कर दिए गये, जैसा कि अभी मालूम हुआ।

बाज़ों ने कहा है कि चूंकि समरा और राफ़ेअ रज़ि० दोनों को इजाज़त हो चुकी थी, जैसा कि इससे पहले क़िस्से में गुज़रा, इसलिए उनको भी इजाज़त हो गयी थी। इसके बाद से हर लड़ाई में शरीक होते रहे। तबूक की लड़ाई में बनूमालिक का झंडा हज़रत अम्मारा रज़ि० के हाथ में था, हुज़ूर सल्ल० ने अम्मारा रज़ि० से लेकर हज़रत ज़ैद रज़ि० को दे दिया। अम्मारा रज़ि० को फ़िक्र हुआ कि शायद मुझ से कोई ग़लती सादिर हुई या कोई वजह नाराज़ी पेश आयी। दर्याफ़्त किया या रसूलल्लाह! मेरी कोई शिकायत हुज़ूर सल्ल० तक पहुँची है। इर्शाद फ़र्माया, यह बात नहीं, बल्कि ज़ैद क़ुरआन शरीफ़ तुम से ज़्यादा पढ़ा हुआ है, क़ुरआन ने उसको झंडा उठाने में मुक़द्दम कर दिया।[3]

फ़—हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम मामूल था कि

1. ख़मीस, 2. असदुलग़ाबा, 3. असदुल ग़ाबा।

फ़ज़ाइल में दीन के एतबार से तर्जीह फ़र्माते थे, यहां अगरचे लड़ाई का मौक़ा था और क़ुरआन शरीफ़ के ज़्यादा पढ़े हुए होने को इसमें कोई दख़ल नहीं था, इसके बावजूद हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरआन पाक की ज़्यादती की वजह से झंडे के उठाने में उनको मुक़द्दम फ़र्माया। अक्सर चीज़ों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस का लिहाज़ फ़र्माते थे, हत्ताकि अगर कई आदमियों को किसी ज़रूरत से एक क़ब्र में दफ़न फ़र्माने की नौबत आती तो जो क़ुरआन शरीफ़ ज़्यादा पढ़ा हुआ होता था, उसको मुक़द्दम फ़र्माते जैसा कि ग़ज़्वा-ए-उहद में किया।

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० के बाप का इन्तिक़ाल

हज़रत अबू ख़ुदरी रज़ि० फ़र्माते हैं कि मैं उहद की लड़ाई में पेश किया गया। तेरह साल की मेरी उम्र थी। हुज़ूर सल्ल० ने क़बूल नहीं फ़र्माया। मेरे वालिद ने सिफ़ारिश भी की कि उसके क़ुवा अच्छे हैं, हड्डियां भी मोटी हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निगाह मेरी तरफ़ ऊपर को उठाते थे, फिर नीचे कर लेते थे। बिल् आख़िर कम उम्र होने की वजह से इजाज़त नहीं दी। मेरे वालिद इस लड़ाई में शरीक हुए और शहीद हो गये। कोई माल वग़ैरह कुछ न था। मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सवाल करने की ग़रज़ से हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे देख कर इर्शाद फ़र्माया कि जो सब्र माँगता है, अल्लाह तआला उसको सब्र अता फ़र्माते हैं और जो पाकबाज़ी अल्लाह से मांगता है, हक़ तआला शानुहू उसको पाकबाज़ बना देते हैं, और जो ग़िना चाहता है, उसको ग़िना अता फ़र्माते हैं। मैंने यह मज़मून हुज़ूर सल्ल० से सुना, फिर कुछ न मांगा, चुपके ही वापस आ गया। इसके बाद हक़ तआला शानुहू ने उनको वह रुत्बा अता फ़र्माया कि नव-उम्र सहाबा रज़ि० में इस बड़े दर्जे का आलिम दूसरा मुश्किल से मिलेगा।[1]

फ़—बचपन की उम्र और बाप के सदमे के अलावा ज़रूरत का वक़्त लेकिन नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक आम नसीहत को सुन कर चुप-चाप चले आना और अपनी परेशानी का इज़्हार तक न करना, क्या आजकल कोई बड़ी उम्र वाला भी कर सकता है? सच यह है कि हक़ तआला शानुहू ने अपने

1. असाबा इस्तीआब,

रसूल की मुसाहबत के लिए ऐसे ही लोग चुने थे जो उसके अह्ल थे। इसीलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, जो ख़ात्मे में आता है कि अल्लाह ने सारे आदमियों में से मेरे सहाबा रज़ि० को चुना है।

9. हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० की ग़ाबा पर दौड़

ग़ाबा मदीना तय्यिबा से चार-पाँच मील पर एक आबादी थी। वहां हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ ऊंट चरा करते थे। काफ़िरों के एक मज्मे के साथ अब्दुर्रहमान फ़ज़ारी ने उनको लूट लिया, जो साहब चराते थे, उनको क़त्ल कर दिया और ऊंटों को लेकर चल दिए। यह लुटेरे लोग घोड़ों पर सवार थे और हथियार लगाये हुए थे। इत्तिफ़ाक़न हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० सुबह के वक़्त पैदल, तीर कमान लिए हुये ग़ाबा की तरफ़ चले जा रहे थे कि अचानक उन लुटेरों पर निगाह पड़ी। बच्चे थे, दौड़ते बहुत थे। कहते हैं कि उनकी दौड़ ज़ुर्बुलमसल[1] और मशहूर थी। यह अपनी दौड़ में घोड़े को पकड़ लेते थे और घोड़ा उनको नहीं पकड़ सकता था। उसके साथ ही तीरंदाज़ी में भी मशहूर थे।

हज़रत सलमा बिन अक्वअ ने मदीना मुनव्वरा की तरफ़ मुंहकर के एक पहाड़ी पर चढ़ कर लूट का एलान किया और ख़ुद तीर कमान साथ थी ही, उन लुटेरों के पीछे दौड़ लिए, हत्ताकि उन के पास तक पहुंच गये और तीर मारने शुरू किये और इस फ़ुर्ती से दमादम तीर बरसाये कि वह लोग बड़ा मज्मा समझे और चुंकि ख़ुद तंहा थे और पैदल भी थे, इसलिए जब कोई घोड़ा लौटा कर पीछा करता तो किसी पेड़ की आड़ में छुप जाते और आड़ में से उसके घोड़े के तीर मारते, जिससे वह ज़ख़्मी होता और वह इस ख़्याल से वापस जाता कि घोड़ा गिर गया तो मैं पकड़ा जाऊंगा।

हज़रत सलमा रज़ि० फ़र्माते हैं, ग़रज़ वह भागते रहे और मैं पीछा करता रहा, हत्ताकि जितने ऊंट उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के लूटे थे, वह मेरे पीछे हो गए और इसके अलावा तीस बरछे और तीस चादरें वह अपनी छोड़ गये। इतने में उयैना बिन हिस्न की एक जमाअत मदद के तौर पर उनके पास पहुंच गई और उन लुटेरों को क़ुव्वत हासिल हो गई। यह भी उनको मालूम हो गया कि मैं अकेला हूं। उन्होंने

---

1. अबूदाऊद,

कई आदमियों ने साथ मिल कर मेरा पीछा किया। मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया, वह भी चढ़ गये, जब मेरे क़रीब हो गये तो मैंने ज़ोर से कहा कि ज़रा ठहरो, पहले मेरी एक बात सुनो। तुम मुझे जानते भी हो कि मैं कौन हूं। उन्होंने कहा कि बता कौन है। मैंने कहा कि मैं इब्नुल अक्वअ हूं, उस ज़ाते पाक की क़सम, जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इज़्ज़त दी, तुम में से अगर कोई मुझे पकड़ना चाहे, तो नहीं पकड़ सकता और तुम में से जिसको मैं पकड़ना चाहूं, वह मुझ से हरगिज़ नहीं छूट सकता। उनके मुताल्लिक़ चूंकि आम तौर से यह शोहरत थी कि बहुत ज़्यादा दौड़तेहैं, हत्ताकि अरबी घोड़ा भी उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता, इसलिए यह दावा कुछ अजीब नहीं था।

सलमा रज़ि० कहते हैं कि मैं इसी तरह उनसे बात-चीत करता रहा और मेरा मक्सूद यह था कि उन लोगों के पास तो मदद पहुंच गयी है, मुसलमानों की तरफ़ से मेरी मदद भी आ जाए कि मैं भी मदीने में एलान करके आया था, ग़रज़ उनसे इसी तरह मैं बात करता रहा और दरख़्तों के दर्मियान से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ ग़ौर से देखता था कि मुझे एक जमाअत घोड़े सवारों की दौड़ कर आती हुई नज़र आयी। उनमें से सबसे आगे अख़्रम असदी रज़ि० थे। उन्होंने आते ही अब्दुर्रहमान फ़ज़ारी पर हमला किया और अब्दुर्रहमान भी उन पर मुतवज्जह हुआ। उन्होंने अब्दुर्रहमान के घोड़े पर हमला किया और पांव काट दिए, जिससे वह घोड़ा गिरा और अब्दुर्रहमान ने गिरते हुए उन पर हमला कर दिया जिस से वह शहीद हो गये और अब्दुर्रहमान फ़ौरन उनके घोड़े पर सवार हो गया। उनके पीछे अबूक़तादा रज़ि० थे, फ़ौरन उन्होंने हमला शुरू कर दिया। अब्दुर्रहमान ने अबूक़तादा रज़ि० के घोड़े के पांव पर हमला किया, जिससे वह गिरे और गिरते हुए उन्होंने अब्दुर्रहमान पर हमला किया, जिससे वह क़त्ल हो गया और अबूक़तादा रज़ि० फ़ौरन उस घोड़े पर जो अख़्रम असदी रज़ि० का था और अब उस पर अब्दुर्रहमान सवार हो रहा था सवार हो गये।[1]

फ़— बाज़ तवारीख़ में लिखा है कि हज़रत सलमा रज़ि० ने अख़्रम असदी को हमले से रोका भी था कि ज़रा ठहर जाओ, अपना मज्मा और आने दो, मगर उन्होंने फ़र्माया कि मुझे शहीद होने दो। कहते हैं कि मुसलमानों में सिर्फ़ यही शहीद हुए और कुफ़्फ़ार के बहुत से आदमी इस लड़ाई में मारे गये। इसके बाद बड़ा मज्मा मुसलमानों का पहुंच गया और वह लोग भाग गये, तो हज़रत सलमा रज़ि० ने हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि मेरे साथ सौ आदमी कर दें, मैं उनका पीछा करूं, मगर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि वह अपनी जमाअतों में

पहुंच गये। अक्सर तवारीख़ से मालूम होता है कि हज़रत सलमा रज़ि० की उम्र उस वक़्त बारह या तेरह वर्ष की थी। बारह-तेरह वर्ष का लड़का घुड़सवारों की एक बड़ी जमाअत को इस तरह भगा दे कि होश व हवास गुम हो जाएं, जो लूटा था, वह भी छोड़ दें और अपना सामान भी छोड़ जाएं, यह उसी इख़्लास की बरकत थी जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने उस जमाअत को नसीब फ़र्माया था।

10. बद्र का मुक़ाबला और हज़रत बरा रज़ि० का शौक़

बद्र की लड़ाई सबसे अफ़ज़ल और सबसे ज़्यादा मुहतम्म बिश्शान[1] लड़ाई है इसलिए कि इसमें मुक़ाबला निहायत सख़्त था। मुसलमानों की जमाअत निहायत क़लील, कुल तीन सौ पंद्रह आदमी थे, जिनके पास सिर्फ़ तीन घोड़े, छः या नौ ज़िरहें और आठ तलवारें थीं और सत्तर ऊंट थे। एक-एक ऊंट पर कई-कई आदमी बारी-बारी सवार होते थे और कुफ़्फ़ार की जमाअत एक हज़ार के क़रीब थी, जिनमें सौ घोड़े और सात सौ ऊंट और लड़ाई का काफ़ी सामान था। इसी वजह से वह लोग निहायत इत्मीनान के साथ बाजों और गाने वाली औरतों के साथ मैदान में आये। इधर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निहायत मुतफ़क्किर[2] कि मुसलमान निहायत कमज़ोरी की हालत में थे। जब हुज़ूर सल्ल० ने दोनों जमाअतों का अन्दाज़ा फ़र्माया तो दुआ मांगी, या अल्लाह! यह मुसलमान नंगे पांव हैं, तू ही उनको सवारी देने वाला है, यह नंगे बदन हैं, तू ही उनको कपड़ा पहनाने वाला है। यह भूखे हैं, तू ही इनका पेट भरने वाला है, यह फ़क़ीर हैं तू ही इनको ग़नी करने वाला है। चुनांचे यह दुआ क़ुबूल हुई। इन सब बातों के बावजूद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० दोनो हज़रात लड़ाई में शिर्कत के शौक़ में घर से चल दिए। नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बच्चा होने की वजह से रास्ते में से लौटा दिया।[3]

यह दोनों हज़रात उहद की लड़ाई में से भी वापस किए गये थे जैसा कि पहले क़िस्से में गुज़र चुका है। उहद की लड़ाई बद्र की लड़ाई से एक साल बाद हुई। जब उसमें भी यह बच्चों में शुमार किये गये तो बद्र में ब-तरीक़े औला[4] बच्चे थे, मगर उन हज़रात का शौक़ था कि बचपन ही से यह वल्वला और शौक़ दिल में

---

1. शानदार, 2. फ़िक्र में डूबे हुए, 3. ख़मीस, 4. बेहतर तरीक़े से,

जोश मारता था और हर लड़ाई में शरीक होने और इजाज़त मिलने की कोशिश करते थे।

11. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई का अपने बाप से मामला

सन् 05 हि० में बनुल मुस्तलिक़ की मशहूर जंग हुई। इसमें एक महाजिरी और एक अंसारी की बाहम लड़ाई हो गई। मामूली बात थी, मगर बढ़ गयी। हर एक ने अपनी-अपनी क़ौम से दूसरे के ख़िलाफ़ मदद चाही और दोनों तरफ़ जमाअतें पैदा हो गयीं और क़रीब था कि आपस में लड़ाई का मार्का गरम हो जाए कि दर्मियान में बाज़ लोगों ने पड़कर सुलह करा दी। अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ों का सरदार और निहायत मशहूर मुनाफ़िक़ और मुसलमानो का सख़्त मुख़ालिफ़ था, मगर चूंकि इस्लाम ज़ाहिर करता था, इसलिए उसके साथ ख़िलाफ़ का बर्ताव न किया जाता था और यही उस वक़्त मुनाफ़िक़ों के साथ आम बर्ताव था, उसको जब इस क़िस्से की ख़बर हुई तो उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ाना लफ़्ज़ कहे और अपने दोस्तों से ख़िताब करके कहा कि यह सब कुछ तुम्हारा अपना ही किया हुआ है। तुमने इन लोगों को अपने शहरों में ठिकाना दिया। अपने मालों को इनके दर्मियान आधों-आध बांट लिया। अगर तुम उन लोगों की मदद करना छोड़ दो, तो अब भी सब चले जावें और यह भी कहा कि ख़ुदा की क़सम, हम लोग अगर मदीना पहुंच गये तो हम इज़्ज़त वाले मिलकर इन ज़लीलों को वहां से निकाल देंगे।

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि० नव-उम्र बच्चे थे, वहां मौजूद थे, यह सुन कर ताब न ला सके। कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! तू ज़लील है, तू अपनी कौम में भी तिरछी निगाहों से देखा जाता है, तेरा कोई हिमायती नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इज़्ज़त वाले हैं, रहमान की तरफ़ से भी इज़्ज़त दिए गए हैं और अपनी क़ौम में भी इज़्ज़त वाले हैं। अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा कि अच्छा चुपका रह, मैं तो वैसे ही मज़ाक़ में कह रहा था, मगर हज़रत ज़ैद रज़ि० ने जाकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने दर्ख़्वास्त भी की कि उस काफ़िर की गरदन उड़ा दी जाए मगर हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त मरहमत न फ़र्मायी।

अब्दुल्लाह बिन उबई को जब इस की ख़बर हुई कि हुज़ूर सल्ल० तक यह क़िस्सा पहुंच गया है तो हाज़िरे ख़िदमत हो कर झूठी क़स्में खाने लगा कि मैंने कोई लफ़्ज़ ऐसा नहीं कहा। ज़ैद रज़ि० ने झूठ नक़ल कर दिया। अंसार के भी कुछ लोग हाज़िरे ख़िदमत थे, उन्होंने भी सिफ़ारिश की कि या रसूलल्लाह ! अब्दुल्लाह क़ौम का सरदार है, बड़ा आदमी शुमार होता है, एक बच्चे की बात उसके मुक़ाबले में क़ाबिले क़ुबूल नहीं। मुम्किन है कि सुनने में कुछ ग़लती हुई हो, या समझने में। हुज़ूर सल्ल० ने उसका उज़्र क़ुबूल फ़र्मा लिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० को जब इस की ख़बर हुई कि उस ने झूठी क़स्मों से अपने को सच्चा साबित कर दिया और ज़ैद रज़ि० को झूठला दिया, तो शर्म की वजह से बाहर निकलना छोड़ दिया। हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में भी नदामत की वजह से हाज़िर न हो सके। बिल आख़िर सूरः मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई जिससे हज़रत ज़ैद रज़ि० की सच्चाई और अब्दुल्लाह बिन उबई की झूठी क़स्मों का हाल ज़ाहिर हुआ।

हज़रत ज़ैद रज़ि० की वक़अत मुवाफ़िक़-मुख़ालिफ़ सबकी नज़रों में बढ़ गयी और अब्दुल्लाह बिन उबई का किस्सा भी सब पर ज़ाहिर हो गया। जब मदीना मुनव्वरा क़रीब आया तो अब्दुल्लाह बिन उबई के बेटे, जिनका नाम भी अब्दुल्लाह रज़ि० था और बड़े पक्के मुसलमानों में थे, मदीना मुनव्वरा से बाहर तलवार खींच कर खड़े हो गए और बाप से कहने लगे कि उस वक़्त तक मदीना में दाख़िल नहीं होने दूंगा, जब तक इसका इक़रार न करे कि तू ज़लील है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ीज़ हैं। उस को बड़ा ताज्जुब हुआ कि यह साहबज़ादे हमेशा से बाप के साथ बहुत एहतराम और नेकी का बर्ताव करने वाले थे, मगर हुज़ूर सल्ल० के मुक़ाबले में तहम्मुल न कर सके। आख़िर उस ने मजबूर हो कर इस का इक़रार किया कि वल्लाह! मैं ज़लील हूं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ीज़ हैं, इसके बाद मदीने में दाख़िल हो सका।[1]

12. हज़रत जाबिर रज़ि० की हमरउल असद में शिर्कत

उहद की लड़ाई से फ़राग़त पर मुसलमान मदीना तय्यिबा पहुंचे सफ़र और लड़ाई की थकान ख़ूब थी, मगर मदीना मुनव्वरा पहुंचते ही यह इत्तिला मिली कि

अबू सुफ़ियान ने लड़ाई से वापसी पर हमरउल असद (एक जगह का नाम है) पहुंचकर साथियों से मश्वरा किया और यह राय क़ायम की कि उहद की लड़ाई में मुसलमानों को शकिस्त हुई है, ऐसे मौक़े को ग़नीमत समझना चाहिए था कि न मालूम फिर ऐसा वक़्त आ सके या न आ सके, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नऊज़ु बिल्लाह क़त्ल करके लौटना चाहिए था। इस इरादे से उसने वापसी का मश्वरा किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान कर दिया कि जो लोग उहद में साथ थे, वही सिर्फ़ साथ हों और दोबारा हमले के लिए चलना चाहिए। अगरचे मुसलमान उस वक़्त थके हुए थे, मगर इसके बावजूद सबके सब तैयार हो गये, चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने एलान फ़र्मा दिया था कि सिर्फ़ वही लोग साथ चलें जो उहद में साथ थे, इसलिए हज़रत जाबिर रज़ि० ने दर्ख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह! मेरी तमन्ना उहद में भी शिर्कत की थी, मगर वालिद ने यह कह कर इजाज़त न दी कि मेरी सात बहनें हैं, कोई मर्द और है नहीं, उन्होंने फ़र्माया था कि हम दोनों में से एक का रहना ज़रूरी है और वह ख़ुद जाने का इरादा फ़र्मा चुके थे, इसलिए मुझे इजाज़त न दी थी। उहद की लड़ाई में उनकी शहादत हो गयी। अब हुज़ूर सल्ल० मुझे इजाज़त मरहमत फ़र्मा दें कि मैं भी हमरिकाब[1] चलूं। हुज़ूर ने इजाज़त अता फ़र्मा दी। इनके अलावा कोई और ऐसा शख़्स नहीं गया, जो उहद में शरीक न हो।[2]

फ़— हज़रत जाबिर रज़ि० का इस शौक़ व तमन्ना से इजाज़त मांगना किस क़दर क़ाबिले रश्क है कि वालिद का अभी इंतिक़ाल हुआ है। क़र्ज़ा भी बाप के ज़िम्मे बहुत सा है। वह भी यहूद का। जो सख़्ती का बर्ताव किया करते थे और इनके साथ ख़ास तौर से सख़्ती का मामला कर रहे थे इस सबके अलावा बोहनों के गुज़र उन का फ़िक्र कि सात बहनें भी बाप ने छोड़ी हैं, जिनकी वजह से उनको उहद की लड़ाई में शिर्कत की, बाप ने इजाज़त भी न दी थी, लेकिन जिहाद का शौक़ उन सब पर ग़ालिब है।

1. साथ, 2. ख़मीस।

13. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० की बहादुरी, रूम की लड़ाई में

हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में सं० 26 में मिस्र के पहले हाकिम हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के बजाए जब अब्दुल्लाह बिन अबी सर्ह रज़ि० हाकिम बनाये गये तो वह रूम की लड़ाई के वास्ते बीस हज़ार के मज्मे के साथ निकले। रूमियों का लश्कर दो लाख के क़रीब था। बड़े घमासान की लड़ाई हुई। रूमियों के अमीर जर्जीर ने एलान किया कि जो शख़्स अब्दुल्लाह बिन अबी सर्ह रज़ि० को क़त्ल कर देगा, उससे अपनी बेटी का निकाह करूंगा और एक लाख दीनार इनाम भी दूंगा। इस एलान से बाज़ मुसलमानों को फ़िक्र हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को मालूम हुआ, उन्होंने कहा यह फ़िक्र की बात नहीं। हमारी तरफ़ से भी एलान किया जाए कि जो जर्जीर को क़त्ल करेगा, उसकी बेटी से उसका निकाह किया जाएगा और एक लाख दीनार इनाम और मज़ीद यह कि उसी को इन शहरों का अमीर भी बना दिया जाएगा। अल-ग़रज़ देर तक मुक़ाबला होता रहा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने देखा कि जर्जीर सारे लश्कर के पीछे है और लश्कर उससे आगे बढ़ा हुआ है। दो बांदियां मोर के परों से उस पर साया किये हुए हैं। उन्होंने ग़फ़लत की हालत में लश्कर से हट कर उस पर तंहा जाकर हमला किया। वह यह समझता रहा कि यह तंहा इस तरह बढ़े आ रहे हैं, कोई पैग़ामे सुलह लेकर आये हैं, मगर उन्होंने सीधे पहुंच कर उस पर हमला कर दिया और तलवार से सर काट कर बरछे पर उठा कर ले आये और सब देखते के देखते रह गये।

फ़—हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० नव-उम्र ही थे। हिजरत के बाद सबसे पहली पैदाइश मुहाजिरीन में उनकी ही है। मुसलमानों को उनकी पैदाइश से बहुत ख़ुशी हुई थी, इसलिए कि एक साल तक किसी मुहाजिरी के कोई लड़का न हुआ था, तो यहूद ने यह कह दिया था कि हमने इन मुहाजिरीन पर जादू कर रखा है, उनके लड़का नहीं हो सकता। हुज़ूर सल्ल० का मामूल बच्चों को बैअत फ़रमाने का नहीं था, लेकिन हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० को सात वर्ष का उम्र में बैअत फ़र्मा लिया था। इस लड़ाई के वक़्त उनकी उम्र चौबीस-पचीस साल की थी। इस उम्र में दो लाख के मज्मे को फलांग कर इस तरह से बादशाह का सर काट लाना मामूली चीज़ नहीं।

14. हज़रत अम्र बिन सलमा का कुफ़्र की हालत में क़ुरआन पाक का याद करना

अम्र बिन सलमा रज़ि० कहते हैं कि हम लोग मदीना तय्यिबा के रास्ते में एक जगह रहा करते थे। वहां के आने-जाने वाले हमारे पास से गुज़रते थे। जो लोग मदीना मुनव्वरा से वापस आते हम उनसे हालात पूछा करते कि लोगों का क्या हाल-चाल है? जो साहब नुबुव्वत का दावा करते हैं, उनकी क्या ख़बर है? वह लोग हालात बयान करते कि वह कहते हैं, मुझ पर वही आती है। ये-ये आयतें नाज़िल हुईं। मैं कम उम्र बच्चा था, वह जो बयान करते, मैं उसको याद कर लिया करता। इसी तरह मुसलमान होने से पहले ही मुझे बहुत सा क़ुरआन शरीफ़ याद हो गया था। अरब के सब लोग मुसलमान होने के लिए मक्का वालों का इंतिज़ार कर रहे थे। जब मक्का मुकर्रमा फ़त्ह हो गया तो हर जमाअत इस्लाम में दाखिल होने के लिए हाज़िरे ख़िदमत हुई। मेरे बाप भी अपनी क़ौम के चंद आदमियों के साथ सारी क़ौम की तरफ़ से क़ासिद बनकर हाज़िरे ख़िदमत हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको शरीअत के अहकाम बताये और नमाज़ सिखायी, जमाअत का तरीक़ा बताया और इर्शाद फ़र्माया कि जिस को तुम में सबसे ज़्यादा क़ुरआन याद हो, वह इमामत के लिए अफ़ज़ल है। मैं चूंकि आने वालों से आयतें सुनकर हमेशा हिफ़्ज़ कर लिया करता था, इसलिए सबसे ज़्यादा हाफ़िज़े क़ुरआन मैं ही था, सब ने तलाश किया तो मुझसे ज़्यादा हाफ़िज़े क़ुरआन कोई भी क़ौम में न निकला, तो मुझ ही को उन्होंने इमाम बनाया। मेरी उम्र उस वक़्त छः सात वर्ष की थी। जब कोई मज्मा होता या जनाज़े की नमाज़ की नौबत आती तो मुझ ही को इमाम बनाया जाता।[1]

फ़—यह दीन की तरफ़ तबई मैलान और रुज्ञान का असर था कि इस उम्र में बग़ैर मुसलमान हुए क़ुरआन शरीफ़ का हिस्सा बहुत सा याद कर लिया। रहा बच्चे की इमामत का क़िस्सा, यह मस्अले की बहस है जिनके नज़दीक जायज़ है उनके नज़दीक तो इश्काल नहीं और जिनके नज़दीक जायज़ नहीं, वह फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इन ही लोगों को इर्शाद फ़र्माया था कि तुम में जिसको क़ुरआन ज़्यादा याद हो, बच्चे इससे मुराद नहीं थे।

---

1. बुख़ारी-अबूदाऊद, बुख़ारी, इब्ने साद,

15. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का अपने ग़ुलाम के पांव में बेड़ी डालना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के ग़ुलाम हज़रत इक्रिमा रज़ि० मशहूर उलमा में हैं। कहते हैं कि मेरे आक़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने क़ुरआन और हदीस और शरीअत के अहकाम पढ़ाने के लिए मेरे पांव में बेड़ी डाल दी थी कि कहीं आऊं-जाऊं नहीं। वह मुझे क़ुरआन शरीफ पढ़ाते और हदीस शरीफ़ पढ़ाते।

फ़—हक़ीक़त में पढ़ना इसी सूरत से हो सकता है। जो लोग पढ़ने के ज़माने में सेर व सफ़र और बाज़ार की तफ़रीह के शौक़ में रहते हैं, वह बेकार अपनी उम्र ज़ाया करते हैं, इसी चीज का असर था कि फिर इक्रिमा ग़ुलाम हज़रत इक्रिमा रज़ि० बन गये कि बहरुल उमत और हिब्रुल उमत के अल्क़ाब से याद किये जाने लगे।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि तमाम ताबईन में ज़्यादा आलिम चार हैं, जिन में से एक इक्रिमा रज़ि० हैं।

16. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का बचपन में हिफ़्ज़े क़ुरआन

खुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझ से तफ़्सीर पूछो। मैंने बचपन में क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ किया है।

दूसरी हदीस में है कि मैंने दस वर्ष की उम्र में अख़ीर की मंज़िल पढ़ ली थी।[1]

फ़—उस ज़माने का पढ़ना ऐसा नहीं था जैसा कि इस ज़माने में हम लोग ग़ैर ज़बान वालों का, बल्कि जो कुछ पढ़ते थे, वह मय तफ़्सीर के पढ़ते थे। इसी वास्ते हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० तफ़्सीर के बहुत बड़े इमाम हैं कि बचपन का याद किया हुआ बहुत महफ़ूज़ होता है। चुनांचे तफ़्सीर की हदीसें जितनी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से नक़ल हैं, बहुत कम दूसरे हज़रात से इतनी नक़ल होंगी।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि क़ुरआन के बेहतरीन मुफ़स्सिर

1. बुख़ारी फ़त्ह

इब्ने अब्बास रज़ि० हैं।

अबूअब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि जो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम हमको क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाते थे, वह कहते थे कि सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से दस आयतें क़ुरआन की सीखते थे। इसके बाद दूसरी दस आयतें उस वक़्त तक नहीं सीखते थे जब तक पहली दस आयतों के मुवाफ़िक़ इल्म और अमल नहीं हो जाता था[1]।

तेरह साल की उम्र थी, जिस वक़्त कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हुआ। इस उम्र में जो दर्जा तफ़्सीर व हदीस में हासिल किया, वह खुली करामत और क़ाबिले रश्क है कि इमामे तफ़्सीर हैं और बड़े-बड़े सहाबा-ए-तफ़्सीर उनसे दर्याफ़्त करते हैं। अगरचे यह हुज़ूर सल्ल० ही की दुआ का समरा[2] था कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्तिंजा को तशरीफ़ ले गये बाहर तशरीफ़ लाये तो लोटा भरा हुआ रखा था। आपने दर्याफ़्त फ़र्माया, यह किसने रखा है? अर्ज़ किया गया कि इब्ने अब्बास रज़ि० ने, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़िदमत पसंद आयी और दुआ फ़र्मायी कि अल्लाह तआला दीन का फ़हम[3] और किताबुल्लाह की समझ अता फ़र्मायें।

इसके बाद एक मर्तबा हुज़ुरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नवाफ़िल पढ़ रहे थे। यह भी नीयत बांधकर खड़े पीछे हो गये। हुज़ूर सल्ल० ने हाथ से खींचकर बराबर खड़ा कर लिया कि एक मुक़्तदी अगर हो तो उसको बराबर खड़ा होना चाहिए। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० तो नमाज़ में मशग़ूल हो गये, यह ज़रा-सा पीछे को हट गये। हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ के बाद दर्याफ़्त फ़र्माया। अर्ज किया कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आपके बराबर किस तरह खड़ा हो सकता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने इल्म व फ़हम के ज़्यादा होने की दुआ दी।[4]

17. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस रज़ि० का हिफ़्ज़े हदीस

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु उन आबिद और ज़ाहिद सहाबा रज़ि० में थे कि रोज़ाना एक कलाम मजीद ख़त्म करते और रात भर

1. मुतक कज, 2. फल नतीजा, 3. समझ, 4. असाबा,

इबादत में मशगूल रहते थे और दिन को हमेशा रोज़ेदार रहते। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस कसीर मेहनत पर तंबीह भी फ़र्मायी और इर्शाद फ़र्माया कि ऐसी सूरत में बदन ज़ईफ़[1] हो जाएगा, आंखें रात भर जागने से पथरा जाएंगी बदन का भी हक़ है, अह्ल व अयाल का भी हक़ है, आने-जाने वालों का भी हक़ है।

कहते हैं कि मेरा मामूल था कि रोज़ाना एक क़ुरआन ख़त्म करता था। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि एक महीने में एक क़ुरआन पढ़ा करो। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुझे अपनी क़ुव्वत और जवानी से मुन्तफ़ा[2] होने की इजाज़त फ़र्मा दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अच्छा बीस रोज़ में एक ख़त्म कर लिया करो। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! बहुत कम है,। मुझे अपनी जवानी और क़ुव्वत से मुतमत्ता[3] होने की इजाज़त दीजिए। ग़रज़ इसी तरह अर्ज करता रहा। अख़ीर में तीन दिन में एक ख़त्म की इजाज़त हुई।

उनका मामूल था कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात को तहरीर किया करते थे, ताकि याद रहें। चुनांचे इनके पास एक मज्मूआ हुज़ूर सल्ल० की अहादीस का लिखा हुआ था, जिस का नाम उन्होंने 'सादिक़ा रखा था। वह कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० से जो सुनता, उसको लिख लिया करता, ताकि याद रहे। मुझे लोगों ने मना किया कि हुज़ूर सल्ल० बहरहाल आदमी हैं, कभी ग़ुस्सा और नाराज़ी में किसी को कुछ फ़र्माते हैं, कभी ख़ुशी और मज़ाह[4] में कुछ इर्शाद होता है, हर बात न लिखा करो मैंने छोड़ दिया।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० से मैंने इसका ज़िक्र किया, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि लिखा करो, उस पाक ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस मुंह से ग़ुस्से में या ख़ुशी में हक़ के सिवा कोई बात नहीं निकलती।[5]

फ़—हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० बावजूद इस क़दर ज़ाहिद आबिद होन के कि कसरते इबादत में मुमताज शुमार किये जाते हैं, फिर भी अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि सहाबा रज़ि० में मुझ से ज़्यादा रिवायत करने वाला कोई नहीं, बजुज़ अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० के कि वह लिखते थे, मैं लिखता नहीं था, जिससे मालूम होता है कि उनकी रिवायात अबूहुरैरह रज़ि० से भी बहुत ज़्यादा हैं। अगरचे हमारे ज़माने में अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायात इनसे कहीं ज़्यादा मिलती हैं, जिसकी बहुत-सी वुजूह[6] हैं, लेकिन उस ज़माने में इतनी इबादत पर भी कसरत से उनकी

1. कमज़ोर, 2. फ़ायदा उठाना 3. फ़ायदा वाला, 4. हंसी ख़ुशी, 5. मुस्नद अहमद, 6. वज्हें

अहादीस मौजूद थीं।

18. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० का हिफ़्ज़े क़ुरआन

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० उन जलीलुल क़द्र सहाबी में हैं जो अपने ज़माने में बड़े आलिम और बड़े मुफ़्ती शुमार होते थे, बिल ख़ुसूस फ़राइज[1] के माहिर थे। कहा जाता है कि मदीना मनुव्वरा में फ़त्वा कज़ा-ए-फ़राइज क़िरत में उनका शुमार चोटी के लोगों में था।

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़र्मा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो उस वक़्त कम-उम्र बच्चे थे, ग्यारह वर्ष की उम्र थी। इसी वजह से बावजूद ख़्वाहिश के इब्तिदाई लड़ाइयों यानी बद्र वग़ैरह में शिर्कत की इजाज़त नहीं हुई। हिजरत से पाँच वर्ष पहले छः साल की उम्र में यतीम भी हो गये थे। हुज़ूर सल्ल० जब हिजरत के बाद मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो जैसे और लोग हाज़िरे ख़िदमत हो रहे थे और हुसूले बरकत[2] के वास्ते बच्चों को भी साथ ला रहे थे, ज़ैद रज़ि० भी ख़िदमत में हाज़िर किये गये। ज़ैद रज़ि० कहते है कि मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जब पेश किया गया तो अर्ज़ किया गया कि यह क़बीला नज्जार का एक लड़का है। आपकी तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल ही उसने सत्रह सूरतें क़ुरआन पाक की हिफ़्ज़ कर लीं। हुज़ूर सल्ल० ने इम्तिहान के तौर पर मुझे पढ़ने को इर्शाद फ़र्माया, मैंने सूरः क़ाफ़ हुज़ूर सल्ल० को सुनायी। हुज़ूर को मेरा पढ़ना पंसद आया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो ख़ुतूत यहूद के पास भेजना होते थे, वह यहूद ही लिखते थे। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यहूद की जो ख़त व किताबत होती है, उस पर मुझ को इत्मीनान नहीं कि गड़बड़ न कर देते हों, तू यहूद की ज़बान सीख ले। ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मैं पन्द्रह दिन में उनकी ज़बान इब्रानी में कामिल हो गया था। उस के बाद से जो तहरीर उनको जाती, वह मैं ही लिखता, और जो तहरीर यहूद के पास से आती, वह मैं ही पढ़ता।

एक दूसरी हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि मुझे बाज़ लोगों को सुरयानी ज़बान मे ख़ुतूत लिखना पड़ते हैं, इसलिए मुझको सुरयानी ज़बान सीखने के लिए इर्शाद फ़र्माया। मैंने सत्रह दिन में सुरयानी ज़बान सीख ली थी।[3]

---

1. मीरास के मसाइल 2. बरकत हासिल करने के लिए, 3. फ़त्ह, असाबा।

19. हज़रत इमाम हसन रज़ि० का बचपन में इल्मी मशग़ला

सय्यदुस्सादात हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश जमहूर के क़ौल के मुवाफ़िक़ रमज़ान 03 हि० में है। इस एतबार से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के वक़्त उनकी उम्र सात वर्ष और कुछ महीनों की हुई। सात वर्ष की उम्र ही क्या होती है, जिसमें कोई इल्मी कमाल हासिल किया जा सकता हो, लेकिन इसके बावजूद हदीस की कई रिवायतें उनसे नक़ल की जाती हैं।

अबुलहौरा रह० एक शख़्स हैं। उन्होंने हज़रत हसन रज़ि० से पूछा कि तुम्हें हुज़ूर सल्ल० को कोई बात याद है? उन्होंने फ़र्माया, हां मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा रहा था। रास्ते में सदक़े की खजूरों का एक ढेर लग रहा था। मैंने उसमें से एक खजूर उठा कर मुंह में रख ली। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कख़-कख़ (हा-हा) फ़र्माया और मेरे मुंह से निकाल दी और यह इर्शाद फ़र्माया कि हम सदक़े का माल नहीं खाते और मैंने पाँचों नमाज़ें हुज़ूर सल्ल० से समझी है[1]।

हज़रत हसन रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे वित्र में पढ़ने के लिए हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ बतायी थी–

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِيْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِيْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَعْطَيْتَ وَقِنِيْ شَرَّ

مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ.

अल्लाहुम्मह्दिनी फ़ीमन हदैत व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ैत व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत व बारिक ली फ़ीमा अअ्तैत व क़िना शर्रमा क़ज़ैत फ़ इन्न क तक़्ज़ी व ला युक़्ज़ा अलैक व इन्नहु ला यज़िल्लू मंव्वालैन तबारकत रब्बना व तआलैत०

तर्जुमा– ऐ अल्लाह! तू मुझे हिदायत फ़र्मा मिन जुम्ला उनके जिनको तूने हिदायत फ़र्मायी और मुझे आफ़ियत अता फ़र्मा उन लोगों के ज़ैल में जिनको तूने आफ़ियत बख़्शी और तू मेरे कामों का मुतवल्ली[2] बन जा, जहां और बहुत से लोगों का मुतवल्ली है और जो कुछ तूने मुझे अता फ़र्माया, उसमें बरकत अता फ़र्मा और जो कुछ तूने मुक़द्दर फ़र्माया है उसकी बुराई से मुझे बचा कि तू तो जो चाहे, तै फ़र्मा

1. मस्नद, अहमद, 2. ज़िम्मेदार,

सकता है। तेरे ख़िलाफ़ कोई शख़्स कुछ भी फ़ैसला नहीं कर सकता और तू जिसका वाली है, वह कभी ज़लील नहीं हो सकता। तेरी ज़ात बा बरकत है और सबसे बुलंद है।

इमाम हसन रज़ि० फ़र्माते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ के बाद से तुलू-ए-आफ़ताब तक उसी जगह बैठा रहे, वह जहन्नम की आग से निजात पायेगा। हज़रत हसन रज़ि० ने कई हज पैदल किये और इर्शाद फ़र्माते थे कि मुझे इससे शर्म आती है कि मरने के बाद अल्लाह से मिलूं और उसके घर पांव चल कर न गया हूं। निहायत हलीम मिज़ाज थे और परहेज़गार, मस्नद अहमद में मुतअद्दत रिवायात उनसे नक़ल की गयी हैं और साहिबे तल्क़ीह ने उन सहाबा रज़ि० में उनको ज़िक्र किया है जिनसे तेरह हदीसें रिवायत की जाती हैं, सात वर्ष की उम्र ही क्या होती है, उस वक़्त की इतनी अहादीस का याद रखना और नक़ल करना हाफ़िज़े का कमाल है और शौक़ की इंतिहा। अफ़सोस है कि हम लोग अपने बच्चों को सात वर्ष तक दीन की मामूली सी बातें भी नहीं बताते।

20. हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० का इल्मी मशग़ला

सैयदुस्सादात हज़रत हुसैन रज़ि० अपने भाई हज़रत हसन रज़ि० से भी एक साल छोटे थे, इसलिए उनकी उम्र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के वक़्त और भी कम थी यानी छः वर्ष और चन्द महीने की थी। छः वर्ष का बच्चा क्या दीन की बातों को महफ़ूज़ कर सकता है, लेकिन इमाम हुसैन रज़ि० की रिवायतें हदीस की किताबों में नक़ल की जाती हैं और मुहद्दिसीन ने उस जमाअत में उनका शुमार किया है, जिनसे आठ हदीसें मंक़ूल हैं।

इमाम हुसैन रज़ि० फ़र्माते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि कोई मुसलमान मर्द हो या औरत, उसको कोई मुसीबत पहुंची हो, फिर वह अर्से के बाद याद आये और याद आने पर फिर वह 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़े तो उसको इस वक़्त भी उतना ही सवाब पहुंचेगा जितना कि मुसीबत के वक़्त पहुंचा था। यह भी हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत जब दरिया पर सवार हो और सवार होते वक़्त-

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
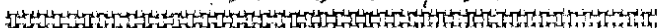
बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्न रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम० पढ़े तो यह डूबने से अम्न का ज़रिया है।

हज़रत हुसैन रज़ि० ने पच्चीस हज पैदल किये हैं। नमाज़ और रोज़े की भी बहुत कसरत फ़र्माते थे और सद्क़ा और दीन के हर काम में कसरत से एहतमाम था।

रबीआ रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत हुसैन रज़ि० से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० की कोई बात आपको याद है? उन्होंने फ़र्माया, हां, मैं एक खिड़की पर चढ़ा जिसमें खजूरें रखी थीं, उसमें से एक खजूर मैंने मुंह में रख ली। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उसको फेंक दो, हम को सदक़ा जायज़ नहीं। हज़रत हुसैन रज़ि० का यह इर्शाद भी मंकूल है कि आदमी के इस्लाम की ख़ूबी यह है कि बेकार कामों में मश्गूल न हो।[1]

इनके अलावा और भी मुतअद्दद रिवायत आप से मंकूल हैं।

फ़ – इस क़िस्म के वाक़िआत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बकसरत हैं कि बचपन के वाक़िआत हुज़ूर सल्ल० से नक़्ल किये और याद रखे। महमूद बिनरुब्बीअ रज़ि० एक सहाबी है जिनकी उम्र हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के वक़्त पांच वर्ष की थी। वह कहते हैं कि मैं उम्र भर इस बात को नहीं भूलूंगा कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे घर तशरीफ़ लाये, हमारे यहां एक कुआं था, उसके पानी से एक कुल्ली मेरे मुंह पर की।[2]

हम लोग बच्चों को वाही-तबाही, फ़ुज़ूल बातों में लगाते हैं झूठे-झूठे क़िस्से उनको सुनाकर लग्वियात में दिमाग़ को परेशान करते हैं, अगर अल्लाह वालों के क़िस्से तलाश करके उनको सुनाये जाएं और बजाए जिन्न-भूत से डराने के अल्लाह से और उसके अज़ाब से डरायें और अल्लाह की नाराज़ी की अहमियत और हैबत दिल में पैदा करें, तो दुनिया में भी उनके कारआमद हो और आख़िरत में तो मुफ़ीद है ही। बचपन का ज़माना हाफ़िज़े की क़ूव्वत का ज़माना होता है। उस वक़्त का याद किया हुआ कभी भी नहीं भूलता। ऐसे वक़्त में अगर क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करा

---

1. असदुल ग़ाबा, इस्तीआब, 2. असाबा,

दिया जाए तो न कोई दिक़्क़त हो, न वक़्त ख़र्च हो। मैंने अपने वालिद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहु से भी बारहा सुना और अपने घर की बूढ़ियों से भी सुना है कि मेरे वालिद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि का जब दूध छुड़ाया गया है तो पाव पारा हिफ़्ज़ हो चुका था और सातवें वर्ष की उम्र में क़ुरआन शरीफ़ पूरा हिफ़्ज़ हो चुका था और वह अपने वालिद यानी मेरे दादा साहब से मख़्फ़ी[1] फ़ारसी का भी मोतद बिही हिस्सा बोस्तां, सिकंदर नामा वग़ैरह पढ़ चुके थे, फ़र्माया करते थे कि मेरे वालिद साहब ने क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म होने के बाद यह इर्शाद फ़र्माया दिया था कि एक क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना पढ़ लिया करो। बाक़ी तमाम दिन छुट्टी। मैं गर्मी के मौसम में सुबह की नमाज के बाद मकान की छत पर बैठा करता था और छः सात घंटे में क़ुरआन शरीफ़ पूरा करके दोपहर की रोटी खाता था और शाम को अपनी ख़ुशी से फ़ारसी पढ़ा करता था। छः माह तक मुसलसल यही मामूल रहा। छः माह तक रोज़ाना एक कलाम मजीद पढ़ना और फिर उसके साथ ही दूसरे अस्बाक़ भी पढ़ते रहना और वह भी सात वर्ष की उम्र में कोई मामूली बात नहीं। उसी का यह समरा था कि क़ुरआन शरीफ़ में मुतशाबा लगना या भूलना जानते ही न थे, चूंकि ज़ाहिरी मआश किताबों की तिजारत पर थी और कुतुबख़ाना का अक्सर काम अपने हाथ से किया करते थे, इसलिए ऐसा कभी भी नहीं होता था कि हाथ से काम करते वक़्त ज़बान से तिलावत न फ़र्माते रहते हों और कभी-कभी उसी के साथ हम लोगों को जो मदरसे से अलग पढ़ते थे, अस्बाक़ भी पढ़ा दिया करते थे, इस तरह तीन काम एक वक़्त में कर लिया करते थे, मगर उनका तरीक़ा-ए-तालीम हम लोगों के साथ वह नहीं था जो मदरसे के अस्बाक़ का था और आम मदारिस का मुरव्विजा[2] तरीक़ा है कि सारा बोझ उस्ताद ही के ज़िम्मे रहे, बल्कि मख़्सूस तलबा के साथ यह तरीक़ा था कि शागिर्द इबारत पढ़े, तर्जुमा करे, मतलब बयान करे। अगर वह मतलब सही होता तो आगे चलो फ़र्मा देते और ग़लत होता तो अगर ग़लती क़ाबिले तंबीह होती तो तंबीह फ़र्माते और क़ाबिल बताने की होती तो बता देते। यह पुराने ज़माने का क़िस्सा नहीं है, इसी सदी का वाक़िआ है, लिहाज़ा यह भी नहीं कहा जा सकता है कि सहाबा रज़ि० जैसे क़ुवा और हिम्मतें अब कहां से लायी लाएं।

---

1. छुपकर, 2. राइज, चालू,

बारवां बाब

हुज़ूरे अक्दस सल्ल० के साथ मुहब्बत के वाक़िआत में

अगरचे जितने क़िस्से अब तक नक़ल किये गये हैं, वह सब ही मुहब्बत के करिश्मे थे कि मुहब्बत ही इन हज़रात की वालिहाना ज़िंदगी का सबब थी, जिसकी वजह से न जान की परवाह थी, न ज़िंदगी की तमन्ना, न माल का ख़्याल था, न तक्लीफ़ का ख़ौफ़, न मौत से डर। इसके अलावा मुहब्बत हिकायत की चीज़ भी नहीं, वह एक कैफ़ियत है, जो अल्फ़ाज़ व इबारात से बालातर है। मुहब्बत ही एक ऐसी चीज़ है, जो दिल में बस जाने के बाद महबूब को हर चीज़ पर ग़ालिब कर देती है, न इसके सामने नंग व नामूस[1] कोई चीज़ है, न इज़्ज़त व शराफ़त कोई शै, हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से और अपने महबूब के वसीले से अपनी और अपने पाक रसूल सल्ल० की मुहब्बत अता फ़र्माएं तो हर इबादत में लज़्ज़त है और दीन की हर तक्लीफ़ में राहत।

1. हज़रत अबू बक्र रज़ि० के ऐलाने इस्लाम और तक्लीफ़

इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था, वह अपने इस्लाम को हत्तलवसअ[2] मख़्फ़ी[3] रखता था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से भी, इस वजह से कि इनको कुफ़्फ़ार से अज़ीयत[4] न पहुंचे इख़्फ़ा[5] की तल्क़ीन होती थी। जब मुसलमानों की मिक्दार 39 तक पहुंची तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इज़्हार की दर्ख़्वास्त की कि खुल्लम खुल्ला अलल् एलान तब्लीग़ की जाए। हुज़ूरे अक्दस सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अव्वल इंकार फ़र्माया, मगर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इसरार पर क़ुबूल फ़र्मा लिया और इन सब हज़रात को साथ लेकर मस्जिद काबा में तशरीफ़ ले गये। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने

---

1. इज़्ज़त, 2. जहां तक बस चलता, 3. छुपा हुआ, 4. तक्लीफ़, 5. छुपाने की,

तब्लीगी ख़ुत्बा शुरू किया। यह सब से पहला ख़ुत्बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा सैयदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा रज़ि० उसी दिन इस्लाम लाये हैं और उसके तीन दिन बाद हज़रत उमर रज़ि० मुशर्रफ़ बइस्लाम [1]हुए हैं। ख़ुत्बा का शुरू होना था। कि चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन मुसलमानों पर टूट पड़ें। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को भी बावजूद कि मक्का मुकर्रमा में उनकी आमतौर से अज़्मत व शराफ़त मुसल्लम थी, इस क़दर मारा कि तमाम चेहरा-ए-मुबारक ख़ून में भर गया। नाक-कान सब लहू-लुहान हो गये थे, पहचाने न जाते थे, जूतों से, लातों से मारा, पांवों में रौंदा और जो न करना था, सब ही कुछ किया। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० बेहोश हो गये। बनूतीम यानी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के क़बीले के लोगों को ख़बर हुई, वह वहां से उठा कर लाये, किसी को भी इसमें तरद्दुद न था कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० इस वहिशयाना हमले से ज़िंदा बच सकेंगे। बनूतीम मस्जिद में आये और एलान किया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० की अगर इस हादसे में वफ़ात हो गयी तो हम लोग उनके बदले में उत्बा बिन रबीया को क़त्ल करेंगे। उत्बा ने हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ि० के मारने में बहुत ज़्यादा बद-बख़्ती का इज़्हार किया था। शाम तक हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बेहोशी रही। बावजूद आवाजें देने के बोलने या बात करने की नौबत न आती थी। शाम को आवाजें देने पर वह बोले, तो सब से पहला लफ़्ज़ यह था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या हाल है ? लोगों ने इस पर बहुत मलामत की कि उन ही के साथ की बदौलत यह मुसीबत पेश आयी और दिन भर मौत के मुंह में रहने पर बात की, तो वह भी हुज़ूर सल्ल० ही का जज़्बा और उन ही की लै। लोग पास से उठकर चले गये कि बद-दिली भी थी और यह भी कि आख़िर कुछ जान बाक़ी है कि बोलने की नौबत आयी और आपकी वालिदा उम्मे ख़ैर रज़ि० से कह गये कि उनके खाने-पीने के लिए किसी चीज का इंतिज़ाम कर दें। वह कुछ तैयार करके लाईं और खाने पर इस्रार किया, मगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वही एक सदा थी कि हुज़ूर सल्ल० का क्या हाल है, हुज़ूर सल्ल० पर क्या गुज़री ? उनकी वालिदा ने फ़र्माया, मुझे तो ख़बर नहीं कि क्या हाल है ? आपने फ़र्माया कि उम्मे जमील रज़ि० (हज़रतउमर रज़ि० की बहन) के पास जाकर दर्याफ़्त कर लो कि क्या हाल हैं ? वह बेचारी बेटे की इस मज़्लूमाना हालत की बेताबाना दर्ख़्वास्त को पूरा करने के वास्ते उम्मे जमील रज़ि० के पास गयीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाल दर्याफ़्त

---

1. मुसलमान हुए हैं.

किया। वह भी आम दस्तूर के मुवाफ़िक़ उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाये हुए थीं। फ़र्माने लगीं, मैं क्या जानूं कौन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और कौन अबूबक्र रज़ि० ? तेरे बेटे की हालत सुन कर रंज हुआ। अगर तू कहे, तो मैं चलकर उसकी हालत देखूं। उम्मे ख़ैर रज़ि० ने क़ुबूल कर लिया, उनके साथ गयीं और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की हालत देखकर तहम्मुल न कर सकीं। बे-तमाशा रोना शुरू कर दिया कि बद-किरदारों ने क्या हाल कर दिया। अल्लाह तआला उनको अपने किये की सज़ा दे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फिर पूछा कि हुज़ूर सल्ल० का क्या हाल है? उम्मे जमील रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वालिदा की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया कि वह सुन रही हैं। आपने फ़र्माया कि उनसे ख़ौफ़ न करो, तो उम्मे जमील रज़ि० ने ख़ैरियत सुनायी और अर्ज़ किया, कि बिल्कुल सही सालिम हैं। आपने पूछा कि इस वक़्त कहां हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि अर्क़म रज़ि० के घर तशरीफ़ रखते है। आपने फ़र्माया कि मुझको ख़ुदा की क़सम है कि उस वक़्त तक कोई चीज़ न खाऊंगा, न पियूंगा, जब तक हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत न कर लूं। इनकी वालिदा को तो बेक़रारी थी कि वह कुछ खा लें और उन्होंने क़सम खा ली कि जब तक ज़ियारत न कर लूं, कुछ न खाऊंगा। इसलिए वालिदा ने इसका इंतिज़ार किया कि लोगों की आमद व रफ़्त बंद हो जाए, मुबादा कोई देख ले और कुछ अज़ीयत, पहुंचाये। जब रात का बहुत-सा-हिस्सा गुज़र गया तो हज़रत अबूबक्र को लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्क़म के घर पहुंची। हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से लिपट गये। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी लिपट कर रोये और मुसलमान भी सब रोने लगे कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० की हालत देखी न जाती थी। इसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने दर्ख़्वास्त की कि यह मेरी वालिदा हैं। आप इन के लिए हिदायत की दुआ भी फ़र्मा दें और इनको इस्लाम की तब्लीग़ भी फ़र्मायें। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अव्वल दुआ फ़र्मायी, इसके बाद उनको इस्लाम की तर्ग़ीब दी। वह भी उसी वक़्त मुसलमान हो गयीं।[1]

फ़- ऐश व इश्रत, निशान व फ़रहत के वक़्त मुहब्बत के दावे करने वाले सैकड़ों होते हैं, मुहब्बत व इश्क़ वही है जो मुसीबत और तक्लीफ़ के वक़्त भी बाक़ी रहे।

---

1. ख़मीस,

2. हज़रत उमर रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के विसाल पर रंज

हज़रत उमर रज़ि० बावजूद अपनी उस जर्बल मसल क़ुव्वत, शुजाअत, दलेरी, और बहादुरी के, जो आज चौदह सौ वर्ष के बाद भी शोहरा-ए-आफ़ाक़[2] है और बावजूदे कि इस्लाम का ज़हूर हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने ही से हुआ कि इस्लाम लाने के बाद अपने इस्लाम का इख़्फ़ा गवारा न हुआ, हुज़ूर सल्ल० के साथ मुहब्बत का एक अदना सा करिश्मा यह है कि अपनी इस बहादुरी के बावजूद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल की हालत का तहम्मुल न फ़र्मा सके। सख़्त हैरानी और परेशानी की हालत में तलवार हाथ में लेकर खड़े हो गये कि जो शख़्स यह कहेगा कि हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया है, तो उसकी गरदन उड़ा दूंगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अपने रब के पास तशरीफ़ ले गये हैं, जैसा कि हज़रत मूसा अला नबीयिना अलैहिस्सलातु वस्सलाम तूर पर तशरीफ़ ले गये थे। अक़रीब हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ लायेंगे और उन लोगों के हाथ-पांव काट देंगे जो हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल की झूठी ख़बर उड़ा रहे हैं। हज़रत उस्मान रज़ि० बिल्कुल गुमसुम थे कि दूसरे दिन तक बिल्कुल आवाज़ नहीं निकली, चलते-फिरते थे मगर बोला नहीं जाता था।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू चुपचाप बैठे रह गये कि हरकत भी बदन को न होती थी सिर्फ़ एक हज़रत अबूबक्र रज़ि० का दम था कि उस वक़्त के पहाड़ जैसे वक़्त को बर्दाश्त किया और अपनी उस मुहब्बत के बावजूद जो पहले क़िस्से में गुज़री उस वक़्त निहायत सुकून से तशरीफ़ ला कर अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशानी मुबारक को बोसा दिया और बाहर तशरीफ़ ला कर हज़रत उमर रज़ि० को इर्शाद फ़र्माया कि बैठ जाओ। इसके बाद ख़ुत्बा पढ़ा, जिसका हासिल यह था कि जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की परिस्तिश करता हो, वह जान ले कि हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो चुका, लेकिन जो शख़्स अल्लाह की परिस्तिश करता हो, वह समझ ले कि अल्लाह तआला शानुहू ज़िंदा है और हमेशा रहने वाले हैं। इसके बाद कलाम पाक की आयत–

1. पूरी दुनिया में मशहूर है,

व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुलु अख़ीर तक तिलावत फ़र्मायी।[1]

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

तर्जुमा– मुहम्मद (सल्लम) निरे रसूल ही तो हैं (ख़ुदा तो नहीं जिस पर मौत वग़ैरह न आ सके) सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जाए या आप शहीद भी हो जायें तो क्या तुम लोग उलटे फिर जाओगे और जो शख़्स उलटा फिर जाएगा तो ख़ुदा-ए-तआला का तो कोई नुक़्सान नहीं करेगा (अपना ही कुछ खोवेगा) ख़ुदा-ए-तआला शानुहू जल्द ही जज़ा देगा हक़ शनास लोगों को।[2]

फ़– चूंकि अल्लाह जल्ल शानुहू को हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० से ख़िलाफ़त का अहम काम लेना था, इसलिए उनकी शायाने शान उस वक़्त यही हालत थी। इसी वजह से उस वक़्त जिस क़दर इस्तक़्लाल और तहम्मुल हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ि० में था, किसी में भी न था और इसके साथ ही जिस क़दर मसाइल दफ़्न व मीरास वग़ैरह के उस वक़्त के मुनासिब हज़रत सिद्दीक अक्बर रज़ि० को मालूम थे, मजमूई तौर पर किसी को भी मालूम न थे। चुनांचे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दफ़्न में इख़्तिलाफ़ हुआ कि मक्का मुकर्रमा में दफ़्न किया जाए या मदीना मुनव्वरा में या बैतुल मुक़द्दस में, तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक ने फ़र्माया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि नबी की क़ब्र उसी जगह होती है, जहां उसकी वफ़ात हो, लिहाज़ा जिस जगह वफ़ात हुई है, उसी जगह क़ब्र खोदी जाए। आपने फ़र्माया, मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि हम लोगों (यानी अंबिया) का कोई वारिस नहीं होता। जो कुछ हम छोड़ते हैं वह सदक़ा होता है। आपने फ़र्माया, मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है जो शख़्स मुसलमानों की हुकूमत का मुतवल्ली बने और वह लापरवाही से कोताही करते हुए किसी दूसरे को अमीर बनाये, उस पर लानत हैं, नीज़ हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है क़ुरैश इस अम्र यानी सल्तनत के मुतवल्ली हैं, वग़ैरह-वग़ैरह।

3. एक औरत का हुज़ूर सल्ल० की ख़बर के लिए बेक़रार होना

उहद की लड़ाई में मुसलमानों को अज़ीयत भी बहुत पहुंची और शहीद भी बहुत से हुए। मदीना तय्यिबा में यह वहशत असर ख़बर पहुंची तो औरतें परेशान

1. बयानुल क़ुरआन, 2. ख़मीस,

होकर तहक़ीक़े हाल के लिये घर से निकल पड़ीं। एक अंसारी औरत ने मज्मे को देखा, बेताबाना पूछा कि हुज़ूर सल्ल० कैसे हैं? इस मज्मे से किसी ने कहा कि तुम्हारे वालिद का इंतिक़ाल हो गया, उन्होंने इन्नालिल्लाह पढ़ी और फिर बेक़रारी से हुज़ूर सल्ल० की ख़ैरियत दर्याफ़्त की। इतने में किसी ने ख़ाविंद के इंतिक़ाल की ख़बर सुनायी और किसी ने बेटे की और किसी ने भाई की कि यह सभी शहीद हो गये थे, मगर उन्होंने पूछा कि हुज़ूर सल्ल० कैसे हैं? लोगों ने जवाब दिया कि हुज़ूर सल्ल० बख़ैरियत हैं, तशरीफ़ ला रहे हैं। इससे इत्मीनान न हुआ, कहने लगीं कि मुझे बता दो, कहां हैं। लोगों ने इशारा करके बताया कि उस मज्मे में हैं। यह दौड़ी हुई गयीं और अपनी आंखों को हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत से ठंडा करके अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! आप की ज़ियारत हो जाने के बाद हर मुसीबत हल्की और मामूली है।

एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० का कपड़ा पकड़ कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, जब आप ज़िंदा व सलामत हैं तो मुझे किसी की हलाकत की परवाह नहीं।[1]

फ़- इस क़िस्म के मुतअद्दद क़िस्से इस मौक़े पर पेश आये हैं, इसी वजह से मुवर्रिख़ीन में नामों में इख़्तिलाफ़ भी हुआ है, लेकिन सही यह है कि इस नौअ का वाक़िआ कई औरतों को पेश आया है।

4. हुदैबिया में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० और मुग़ीरह रज़ि० का फ़ेअल और आम सहाबा रज़ि० का तर्ज़े अमल

हुदैबिया की मशहूर लड़ाई ज़ीक़ादा सन् 06 हि० में हुई, जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ि० की एक बड़ी जमाअत के साथ उमरे के इरादे से तशरीफ़ ला रहे थे। कुफ़्फ़ारे मक्का को जब इसकी ख़बर पहुंची तो उन्होंने आपस में मश्वरा किया और यह तै किया कि मुसलमानों को मक्का आने से रोका जाए, इस के लिए बहुत बड़े पैमाने पर तैयारी की और मक्का के अलावा बाहर के लोगों को भी अपने साथ शिर्कत की दावत दी और बड़े मज्मे के साथ मुक़ाबले की तैयारी की। ज़ुलहुलैफ़ा से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहब

1. ख़मीस,

को हालात की ख़बर लाने के लिए भेजा जो मक्का से हालात की तहक़ीक़ करके उस्फ़ान पर हुज़ूर सल्ल० से मिले। उन्होंने अर्ज़ किया कि मक्का वालों ने मुक़ाबले की बहुत बड़े पैमाने पर तैयारी कर रखी है और बाहर से भी बहुत से लोगों को अपनी मदद के लिए बुला रखा है। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से मश्वरा फ़र्माया कि इस वक़्त क्या करना चाहिए। एक सूरत यह है कि जो लोग बाहर से मदद को गये हैं, उनके घरों पर हमला किया जाए। जब वह ख़बर सुनेंगे तो मक्का से वापस आ जाएंगे। दूसरी सूरत यह है कि सीधे चले चलें। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! इस वक़्त आप सल्ल० बैतुल्लाह के इरादे से तशरीफ़ लाये हैं। लड़ाई का इरादा तो था ही नहीं, इसलिए आगे बढ़े चलें। अगर वह हमें रोकेंगे तो मुक़ाबला करेंगे, वरना नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने उसको क़ुबूल फ़र्माया और आगे बढ़े। हुदैबिया में पहुंच कर बुदैल बिन वर्क़ा ख़ुज़ाई एक जमाअत को साथ लेकर आये और हुज़ूर सल्ल० से उसका ज़िक्र किया कि कुफ़्फ़ार आपको हरगिज़ मक्का में दाख़िल न होने देंगे, वह तो लड़ाई पर तुले हुए हैं। आपने सल्ल० इर्शाद फ़र्माया कि हम लोग लड़ने के वास्ते नहीं आये हैं। हमारा मक़्सद सिर्फ़ उमरा करना है और क़ुरैश को रोज़मर्रा की लड़ाई ने बहुत नुक़्सान पहुंचा रखा है, बिल्कुल हलाक कर दिया है, अगर वह राज़ी हों तो मैं उनसे मुसालहत[1] करने को तैयार हूं कि मेरे और उनके दर्मियान इस पर मुआहिदा हो जाए कि मुझ से तअर्रुज़[2] न करे। मैं उनसे तअर्रुज़ न करूं मुझे औरों से निमटने दे, और अगर वह किसी चीज़ पर भी राज़ी न हो तो उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि मैं उस वक़्त तक उनसे लडूंगा जब तक कि इस्लाम ग़ालिब हो जाए या मेरी गरदन जुदा हो जाए।

बुदैल ने अर्ज़ किया कि अच्छा मैं आपका सल्ल० का पयाम उन तक पहुंचाये देता हूं, वह लौटे और जाकर पयाम पहुंचाया, मगर कुफ़्फ़ार राज़ी न हुए। इसी तरह तरफ़ैन (दोनों तरफ़) से आमद व रफ़्त का सिलसिला रहा, जिनमें एक मर्तबा उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी कुफ़्फ़ार की जानिब से आये कि उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, बाद में मुसलमान हुए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे भी वही गुफ़्तगू फ़र्मायी जो बुदैल से की थी। उर्वः ने अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगर तुम यह चाहते हो कि अरब का बिल्कुल ख़ात्मा कर दो, तो यह बिल्कुल मुम्किन नहीं। तुमने कभी न सुना होगा कि तुम से पहले कोई शख़्स ऐसा गुज़रा हो जिसने अरब को बिल्कुल फ़ना कर दिया हो और अगर दूसरी सूरत हुई कि वह तुम पर ग़ालिब

1. समझौता 2. छेड़खानी,

हो गये तो याद रखो कि मैं तुम्हारे अशराफ़ (शरीफ़ों) की जमाअत न देखता। यह अत्राफ़ के कमज़र्फ़[1] लोग तुम्हारे साथ हैं, मुसीबत पड़ने पर सब भाग जाएंगे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ पास खड़े हुए थे, यह जुम्ला सुनकर गुस्सा में भर गये और इर्शाद फ़र्माया कि तू अपने माबूद लात की पेशाबगाह को चाट। क्या हम हुज़ूर सल्ल॰ से भाग जाएंगे और आपको सल्ल॰ को अकेला छोड़ देंगे। उर्व ने पूछा कि यह कौन हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़र्माया कि अबूबक्र रज़ि॰ हैं। उन्होंने अबूबक्र रज़ि॰ से मुख़ातिब होकर कहा कि तुम्हारा एक क़दीमी एहसान मुझ पर है, जिसका मैं बदला नहीं दे सका। अगर यह न होता तो इस गाली का जवाब देता।

यह कहकर उर्व: फिर हुज़ूर सल्ल॰ से बात में मशगूल हो गये और अरब के आम दस्तूर के मुवाफ़िक़ बात करते हुऐ हुज़ूर सल्ल॰ की दाढ़ी मुबारक की तरफ़ हाथ ले जाते कि ख़ुशामद के मौक़े पर दाढ़ी में हाथ लगाकर बात की जाती है। सहाबा रज़ि॰ को यह बात कब गवारा हो सकती थी। उर्वा के भतीजे हजरत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ सर पर ख़ोद[1] ओढ़े हुए और हथियार लगाये हुए पास खड़े थे। उन्होंने तलवार का क़ब्ज़ा उर्वा के हाथ पर मारा कि हाथ परे को रखो। उर्वा ने पूछा, यह कौन है ? आपने फ़र्माया कि मुग़ीरा । उर्वा ने कहा, ओ ग़द्दार ! तेरी ग़द्दारी को मैं अब तक भुगत रहा हूं और तेरा यह बर्ताव (हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ने इस्लाम से क़ब्ल चंद काफ़िरों को क़त्ल कर दिया था, जिनकी दियत उर्वा ने अदा की थी, उसकी तरफ़ यह इशारा था) ग़रज़ उर्वा तवील गुफ़्तगू हुज़ूर सल्ल॰ से करते रहे और नजरें बचाकर सहाबा किराम रज़ि॰ के हालात का अंदाज़ा भी करते जाते थे। चुनांचे वापस जाकर कुफ़्फ़ार से कहा कि ऐ क़ुरैश ! मैं बड़े-बड़े बादशाहों के यहां गया हूं। क़ैसर व किसरा और नजाशी के दरबारों को भी देखा है और उनके आदाब भी देखे हैं। ख़ुदा की क़सम ! मैंने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उसकी जमाअत उसकी ऐसी ताज़ीम करती हो, जैसी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जमाअत उनकी ताज़ीम[2] करती है। अगर वह थूकते हैं तो जिसके हाथ पड़ जाए, वह उसको बदन और मुंह पर मल लेता है। जो बात मुहम्मद सल्ल॰ के मुंह से निकलती है, उसके पूरा करने को सबके सब टूट पड़ते हैं। उनके वुज़ू का पानी आपस में लड़-लड़कर तक़्सीम करते हैं, ज़मीन पर नहीं गिरने देते। अगर किसी को क़तरा न मिले तो वह दूसरे के तर हाथ को हाथ से मल कर अपने मुंह पर मल लेता है। उनके सामने बोलते हैं तो बहुत नीची आवाज़ से। उनके सामने ज़ोर से नहीं बोलते।

---

1. छोटे दिल के लोग, लोहे की टोपी, 2. इज़्ज़त आदर,

उनकी तरफ़ निगाह उठा कर अदब की वजह से नहीं देखते। अगर उनके सर या दाढ़ी का कोई बाल गिरता है तो उसको तबर्रुकन[1] उठा लेते हैं और उसकी ताज़ीम और एहतराम करते हैं। ग़रज मैंने किसी जमाअत को अपने आक़ा के साथ इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा, जितनी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जमाअत उनके साथ करती है। इसी दौरान में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि० को अपनी तरफ़ से क़ासिद बनाकर सरदाराने मक्का के पास भेजा।

हज़रत उस्मान रज़ि० की बावजूद मुसलमान हो जाने के मक्का में बहुत इज़्ज़त थी और उनके मुताल्लिक़ ज़्यादा अंदेशा न था, इसलिए उनको तज्वीज़ फ़र्माया था। वह तशरीफ़ ले गये तो सहाबा रज़ि० को रशक हुआ कि उस्मान रज़ि० तो मजे से काबा का तवाफ़ कर रहे होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुझे उम्मीद नहीं कि वह मेरे बग़ैर तवाफ़ करें। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० मक्का में दाख़िल हुए तो अबान बिन सईद ने उनको अपनी पनाह में ले लिया। और उनसे कहा कि जहां दिल चाहे, चलो-फिरो, तुमको कोई रोक नहीं सकता। हज़रत उस्मान रज़ि० अबूसुफ़ियान वग़ैरह मक्का के सरदारों से मिलते रहे और हुज़ूर सल्ल० का पयाम पहुंचाते रहे। जब वापस होने लगे तो कुफ़्फ़ार ने ख़ुद दर्ख़्वास्त की कि तुम मक्का में आये हो, तुम तवाफ़ करते जाओ। उन्होंने जवाब दिया कि यह मुझ से नहीं हो सकता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो रोके गये हों और मैं तवाफ़ कर लूं। क़ुरैश को इस जवाब पर ग़ुस्सा आया जिसकी वजह से उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि० को रोक लिया। मुसलमानों को यह ख़बर पहुंची कि उनको शहीद कर दिया। इस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से अख़ीर दम तक लड़ने पर बैअत[2] ली। जब कुफ़्फ़ार को इसकी ख़बर पहुंची तो घबरा गये और हज़रत उस्मान रज़ि० को फ़ौरन छोड़ दिया।[3]

फ़— इस क़िस्से में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का इर्शाद, हज़रत मुग़ीरा रज़ि० का मारना, सहाबा किराम रज़ि० का आम बर्ताव, जिसको उर्वा ने बहुत ग़ौर से देखा, हज़रत उस्मान रज़ि० का तवाफ़ से इंकार, हर वाक़िआ ऐसा है कि हुज़ूर सल्ल० के साथ बे-इंतिहा इश्क़ व मुहब्बत की ख़बर देता है। यह बैअत जिसका इस क़िस्से में ज़िक्र है, बैअतुश्शजरा कहलाती है। क़ुरआन पाक में भी इसका ज़िक्र है और अल्लाह तआला ने सूरः फ़त्ह की आयत, 'लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मुअ्मिनीन (आयत) में इसका ज़िक्र फ़र्माया है। पूरी आयत मय तर्जुमा के अंक़रीब ख़ात्मे में

---

1. बरकत के तौर पर, 2. क़मीस, 3. वही।

आ रही है।

5. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० का ख़ून पीना

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मरतबा सींगियाँ लगवायीं और जो ख़ून निकला वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को दिया कि उसको कहीं दबा दें, वह गये और आकर अर्ज किया कि दबा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कहां ? अर्ज किया, मैंने पी लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जिसके बदन में मेरा ख़ून जायेगा, उसको जहन्नम की आग नहीं छू सकती, मगर तेरे लिए भी लोगों से हलाकत है और लोगों को तुझसे।[1]

फ़- हुज़ूर सल्ल० के फ़ुज़्लात, पाख़ाना-पेशाब वग़ैरह सब पाक हैं। इसलिए इसमें कोई इश्काल नहीं। हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद का मतलब कि हलाकत है, उलमा ने लिखा है कि सल्तनत और इमारत की तरफ़ इशारा है कि इमारत होगी और लोग उसमें मुज़ाहिम[2] होंगे। चुनांचे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० जब पैदा हुए थे, उस वक्त भी हुज़ूर सल्ल० ने इस तरफ़ इशारा फ़र्माया था कि एक मेंढा है, भेड़ियों के दर्मियान, ऐसे भेड़िये जो कपड़े पहने हुए होंगे, चुनांचे यज़ीद और अब्दुल मलिक दोनों के साथ हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० की मशहूर लड़ाई हुई और आख़िर शहीद हुए।

6. हज़रत मालिक बिन सिनान रज़ि० का ख़ून पीना

उहद की लड़ाई में जब नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर या सरे मुबारक में ख़ोद के दो हल्के घुस गये थे तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े हुए आगे बढ़े और दूसरी जानिब से हज़रत अबूउबैदा रज़ि० दौड़े और आगे बढ़ कर ख़ोद के हल्के दांत से खींचने शुरू किए। एक हल्का निकाला, जिससे एक दांत हज़रत अबूउबैदा रज़ि० का टूट गया, इसकी परवाह न की। दूसरा हल्का खींचा, जिससे दूसरा दांत भी टूटा, लेकिन हल्का वह भी खींच ही लिया। इन हल्कों के निकलने से हुज़ूर सल्ल० के पाक जिस्म से ख़ून निकलने लगा, तो हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० के वालिद माजिद मालिक बिन सिनान रज़ि०

1. ख़मीस, 2. रोक बनेंगे,

ने अपने लबों से उस ख़ून को चूस लिया और निगल लिया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिसके ख़ून में मेरा ख़ून मिला है, उसको जहन्नम की आग नहीं छू सकती।[1]

7. हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० का अपने बाप को इन्कार

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ज़माना-ए-जाहिलियत में अपनी वालिदा के साथ ननिहाल जा रहे थे। बनूक़ैस ने क़ाफ़िला को लूटा, जिसमें ज़ैद रज़ि० भी थे। उनको मक्का के बाज़ार में लाकर बेचा । हकीम बिन हिज़ाम ने अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा रज़ि० के लिए उनको ख़रीद लिया। जब हुज़ूर सल्ल० का निकाह हज़रत ख़दीजा रज़ि० से हुआ तो उन्होंने ज़ैद रज़ि० को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदिया के तौर पर पेश कर दिया। ज़ैद रज़ि० के वालिद को उनके फ़िराक़ का, बहुत सदमा था और होना ही चाहिए था कि औलाद की मुहब्बत फ़ित्री चीज है, वह ज़ैद के फ़िराक़ में रोते और अश्आर पढ़ते फिरा करते थे। अक्सर जो अश्आर पढ़ते थे उनका मुख़्तसर तर्जुमा यह है कि मैं ज़ैद रज़ि० की याद में रोता हूं और यह भी नहीं जानता कि वह ज़िंदा है ताकि उसकी उम्मीद की जाए, या मौत ने उसको निमटा दिया। ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह भी नहीं मालूम कि तुझे ऐ ज़ैद ! नर्म ज़मीन ने हलाक किया या किसी पहाड़ ने हलाक किया। काश, मुझे यह मालूम हो जाता कि तू उम्र भर में कभी भी वापस आयेगा या नहीं, सारी दुनिया में मेरी इंतिहाई ग़रज तेरी वापसी है। जब आफ़्ताब तुलू होता है, जब भी मुझे ज़ैद ही याद आता है और जब बारिश होने को होती है, जब भी उसी की याद मुझे सताती हैं और जब हवाएं चलती हैं तो वह भी उसकी याद को भड़काती हैं। हाय मेरा ग़म और मेरा फ़िक्र किस क़दर तवील हो गया। मैं उसकी तलाश और कोशिश में सारी दुनिया में ऊंट की तेज़-रफ़्तारी को काम में लाऊंगा और दुनिया का चक्कर लगाने से नहीं उकताऊंगा। ऊंट चलने से उकता जाएँ तो उकता जाएं लेकिन मैं कभी भी नहीं उकताऊंगा, अपनी सारी ज़िंदगी उसी में गुज़ार दूंगा। हां, मेरी मौत ही आ गयी तो ख़ैर कि मौत हर चीज को फ़ना कर देने वाली है। आदमी ख़्वाह कितनी ही उम्मीदें लगावें, मगर मैं अपने बाद फ़्लां-फ़्लां रिश्तेदारों और आल औलाद को वसीयत कर

1. क़ुर्रतुल उयून।

जाऊंगा कि वह भी इसी तरह ज़ैद रज़ि० को ढूंढते रहें।

ग़रज़ यह अश्आर वह पढ़ते थे और रोते हुए ढूंढते फिरा करते थे। इत्तिफ़ाक़ से उनकी क़ौम के चंद लोगों का हज को जाना हुआ और उन्होंने ज़ैद रज़ि० को पहचाना। बाप का हाल सुनाया, शेर सुनाये, उनकी याद व फ़िराक़ की दास्तान सुनायी। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने उनके हाथ तीन शेर कहकर भेजे, जिनका मतलब यह था कि मैं यहां मक्का में हूं, ख़ैरियत से हूं, तुम ग़म और सदमा न करो, मैं बड़े करीम लोगों की ग़ुलामी में हूं। उन लोगों ने जाकर ज़ैद रज़ि० की ख़ैर व ख़बर उनके बाप को सुनायी और वह अश्आर सुनाये, जो ज़ैद रज़ि० ने कहकर भेजे थे और पता बताया। ज़ैद रज़ि० के बाप और चचा फ़िदए की रकम लेकर उनको ग़ुलामी से छुड़ाने की नीयत से मक्का मुकर्रमा पहुंचे, तहक़ीक़ की, पता चलाया, हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और अर्ज किया, ऐ हाशिम की औलाद और अपनी क़ौम के सरदार ! तुम लोग हरम के रहने वाले हो और अल्लाह के घर के पड़ोसी, तुम ख़ुद क़ैदियों को रिहा कराते हो, भूखों को खाना देते हो, हम अपने बेटे की तलब में तुम्हारे पास पहुंचे हैं, हम पर एहसान करो। और करम फ़र्माओ और फ़िदया क़ुबूल कर लो और इस को रिहा कर दो, बल्कि जो फ़िदया हो, उससे ज़्यादा ले लो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क्या बात है ? अर्ज किया, ज़ैद रज़ि० की तलब में हम लोग आये हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया बस इतनी सी बात है। अर्ज किया कि हुज़ूर सल्ल० बस यही ग़रज़ है। आपने इर्शाद फ़र्माया, उसको बुला लो और उससे पूछ लो। अगर वह तुम्हारे साथ जाना चाहे, तो बग़ैर फ़िदए ही के वह तुम्हारी नज़्र है और अगर न जाना चाहे तो मैं ऐसे शख़्स पर जब्र नहीं कर सकता, जो ख़ुद न जाना चाहे।

उन्होंने अर्ज किया कि आपने इस्तिह्क़ाक़ से भी ज़्यादा एहसान फ़र्माया, यह बात ख़ुशी से मंज़ूर है। हज़रत ज़ैद रज़ि० बुलाये गये। आपने फ़र्माया कि तुम इनको पहचानते हो ? अर्ज किया, जी हां पहचानता हूं, यह मेरे बाप हैं और यह मेरे चचा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया मेरा हाल भी तुम्हें मालूम है, अब तुम्हें इख़्तियार है कि मेरे पास रहना चाहो तो मेरे पास रहो, इनके साथ जाना चाहो तो इजाज़त है। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने अर्ज किया कि हुज़ूर सल्ल० ! मैं आपके मुक़ाबले में भला किसको पसंद कर सकता हूं। आप मेरे लिए बाप की जगह भी हैं और चचा की

1. ख़मीस

जगह भी। उन दोनों बाप-चचा ने कहा कि ज़ैद ! ग़ुलामी को आज़ादी पर तर्जीह देते हो और बाप-चचा और सब घर वालों के मुक़ाबले में ग़ुलाम रहने को पसंद करते हो ? ज़ैद ने कहा कि हां, मैंने इनमें (हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ इशारा करके) ऐसी बात देखी है, जिसके मुक़ाबले में किसी चीज़ को भी पंसद नहीं कर सकता। हुज़ूर सल्ल० ने जब यह जवाब सुना तो उनको गोद में ले लिया और फ़र्माया कि मैंने इसको अपना बेटा बना लिया। ज़ैद रज़ि० के चचा और बाप भी यह मंज़र देखकर निहायत ख़ुश हुए और ख़ुशी से उनको छोड़ कर चले गये।[1]

हज़रत ज़ैद रज़ि० उस वक़्त बच्चे थे। बचपन की हालत में सारे घर को, अज़ीज़ व अक़ारिब को ग़ुलामी पर क़ुर्बान कर देना जिस मुहब्बत का पता देता है, वह ज़ाहिर है।

8. हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि० का अमल उहद की लड़ाई में

उहद की लड़ाई में मुसलमानों को जब शिकस्त हो रही थी, तो किसी ने यह ख़बर उड़ा दी कि हुज़ूर सल्ल० भी शहीद हो गये। इस वहशतनाक ख़बर से जो असर सहाबा रज़ि० पर होना चाहिए था, वह ज़ाहिर है, इसी वजह से और भी ज़्यादा घुटने टूट गये। हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि० चले जा रहे थे कि मुहाजिरीन और अन्सारी की एक जमाअत में हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत तल्हा रज़ि० नज़र पड़े कि सब हज़रात परेशान हाल थे। हज़रत अनस रज़ि० ने पूछा, यह क्या हो रहा है कि मुसलमान परेशान से नज़र आ रहे हैं ? इन हज़रात ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० शहीद हो गये। हज़रत अनस रज़ि० ने कहा कि फिर हुज़ूर सल्ल० के बाद तुम्हीं ज़िंदा रह कर क्या करोगे ? तलवार हाथ में लो और चलकर मर जाओ। चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० ने ख़ुद तलवार हाथ में ली और कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस गये और उस वक़्त तक लड़ते रहे कि शहीद हुए।[1]

फ़— उनका मतलब यह था कि जिस ज़ात के दीदार के लिए जीना था, जब वही नहीं रही, तो फिर गोया जी कर ही क्या करना है। चुनांचे इसी में अपनी

1. ख़मीस,

जान निसार कर दी।

9. साद बिन रबीअ रज़ि० का पयाम उहद में

इसी उहद की लड़ाई में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि सअद बिन रबीअ रज़ि० का हाल मालूम नहीं हुआ कि क्या गुज़री। एक सहाबी को तलाश के लिए, भेजा, वह शुहदा की जमाअत में तलाश कर रहे थे, आवाज़ें भी दे रहे थे कि शायद वह ज़िंदा हों। फिर पुकार कर कहा कि मुझे हुज़ूर सल्ल० ने भेजा है कि सअद बिन रबीअ की ख़बर लाऊं तो एक जगह से बहुत ज़ईफ़-सी आवाज़ आयी, यह उस तरफ़ बढ़े, जा कर देखा कि सात मक़्तूलीन के दर्मियान पड़े हैं और एक आध सांस बाक़ी है। जब यह क़रीब पहुंचे तो हज़रत सअद ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० को मेरा सलाम अर्ज़ कर देना और कह देना कि अल्लाह तआला मेरी जानिब से आपको इससे अफ़्ज़ल और बेहतर बदला अता फ़र्माएं जो किसी नबी को उसके उम्मती की तरफ़ से बेहतर से बेहतर अता किया हो और मुसलमानों को मेरा यह पयाम पहुंचा देना कि अगर काफ़िर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गये और तुम में से कोई एक आंख भी चमकती हुई रहे यानी वह ज़िंदा रहा तो अल्लाह के यहां कोई उज़्र भी तुम्हारा न चलेगा और यह कर जां ब-हक़ हो गये।

फ़ – फ़जज़ाहुल्लाहु अन्ना अफ़्ज़लु मा जज़ा सहाबियन मिन उम्मति नबीयिही, दरहक़ीक़त इन जां-निसारों ने (अल्लाह तआला अपने लुत्फ़ से इन की क़ब्रों को नूर से भर दे) अपनी जां-निसारी का पूरा सबूत दे दिया कि ज़ख़्मों पर ज़ख़्म लगे हुए हैं, दम तोड़ रहे हैं, मगर क्या मजाल है कि कोई शिकवा, कोई घबराहट, कोई परेशानी लाहक़ हो जाए। वल-वला है तो हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त का, हुज़ूर सल्ल० पर जां-निसारी का, हुज़ूर सल्ल० पर क़ुर्बानी का ! काश ! मुझ जैसे ना अह्ल को भी कोई हिस्सा इस मुहब्बत का नसीब हो जाता।

10. हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र देखकर एक औरत की मौत

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० की ख़िदमत में एक औरत हाज़िर हुई और

1. ख़मीस,

आकर अर्ज़ किया कि मुझे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत करा दो। हज़रत आइशा रज़ि०ने हुजरा शरीफ़ा खोला। इन्होंने ज़ियारत की और ज़ियारत करके रोती रहीं और रोते-रोते इंतिक़ाल फ़र्मा गयीं, रज़ियल्लाहु अन्हा व अर्ज़ाहा।[1]

फ़— क्या इस इश्क़ की नज़ीर भी कहीं मिलेगी कि क़ब्र की ज़ियारत की ताब न ला सकीं और वहीं जान दे दी।

11. सहाबा की मुहब्बत के मुतफ़र्रिक क़िस्से

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से किसी ने पूंछा कि आपको हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कितनी मुहब्बत थी। आपने इर्शाद फ़र्माया कि ख़ुदा-ए-पाक की क़सम ! हुज़ूर सल्ल० हम लोगों के नज़दीक अपने मालों से और अपनी औलादों से और अपनी माओं से और सख़्त प्यास की हालत में ठंडे पानी से ज़्यादा महबूब थे।[1]

फ़— सच फ़र्माया दरहक़ीक़त सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की यही हालत थी और क्यों न होती, जबकि वह हज़रात कामिलुल ईमान थे और अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है-

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

क़ुल इनका न आबाउकुम व अब्नाउकुम व इख़्वानुकुम व अज़्वाजुकुम व अशीरतुकुम व अम्वालु-निक़-तरफ़्तुमूहा व तिजारतुन तख़्शौ क सा द हा व मसाकिनु तर्ज़ौ न हा अहब्ब इलैकुम मिनल्लाहि व रसूलिहि व जिहादिन फ़ी सबीलिही फ़ त रब्बसू हत्ता याति यल्लाहु बिअम्रिही वल्लाहु ला यह्दिल क़ौमल फ़ासिक़ी० नं

तर्जुमा— आप उनसे कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा कुंबा और वह माल जो तुमने कमाये हैं और वह तिजारत जिसमें निकासी न होने का तुम्हें अन्देशा हो और वह घर जिसको तुम पसंद करते हो (अगर यह सब चीजें) तुमको अल्लाह से और उसके

1. शिफ़ा,

रसूल सल्ल० से और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारी हों तो तुम मुंतज़िर रहो, यहां तक कि अल्लाह तआला अपना हुक्म भेज दें, और अल्लाह तआला बे हुक्मी करने वालों को उनके मक़्सूद तक नहीं पहुंचाता।[1]

इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत के इन सब चीजों से कम होने पर वईद हैं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि उसको मेरी मुहब्बत अपने बाप और औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा न हो जाए। हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से भी यही मज़्मून नक़ल किया गया है।

उलमा का इर्शाद है कि इन अहादीस में मुहब्बत से मुहब्बत इख़्तियारी मुराद है। ग़ैर अख़्तियारी यानी तब्ई इज़्तिरारी मुराद नहीं और यह भी हो सकता है कि अगर मुहब्बत तब्ई मुराद हो तो फिर ईमान से मुराद कमाल दर्जे का ईमान हो जैसा कि सहाबा किराम रज़ियल्लाह अन्हुम का था।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्माते है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन चीजें ऐसी हैं कि जिस शख़्स में वह पायी जाएं, ईमान की हलावत और ईमान का मज़ा नसीब हो जाए, एक यह कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत उन के मासिवा सबसे ज़्यादा होए, दूसरे यह कि जिस किसी से मुहब्बत करे, अल्लाह ही के वास्ते करे, तीसरे यह कि कुफ़्र की तरफ़ लौटना उसको ऐसा ही गरां और मुश्किल हो जैसा कि आग में गिरना।

हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! मुझे अपनी जान के अलावा और सब चीजों से आप सल्ल० ज़्यादा महबूब हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि कोई शख़्स मोमिन उस वक्त तक नहीं हो सकता जब तक उसको मेरी मुहब्बत अपनी जान से भी ज़्यादा न हो। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज० किया या रसूलल्लाह ! अब आप सल्ल० मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं तो हुज़ूर सल्ल० इर्शाद फ़र्माया, अलआन या उमर ! (इस वक़्त ऐ उमर!)।

उलेमा ने इस इर्शाद के दो मतलब बताये हैं-

एक यह कि इस वक़्त तुम्हारा ईमान कामिल हुआ है,

---

1. बयानुल कुरआन, 2. धमकी, 3. दुर्रेमंसूर,

दूसरा यह कि तंबीह है कि इस वक़्त यह बात पैदा हुई कि मैं तुम्हें अपने नफ़्स से ज़्यादा महबूब हूं। हालांकि यह बात अव्वल ही से होना चाहिए थी।

सुहैल तस्तरी रह० कहते हैं कि जो शख़्स हर हाल में हुज़ूर सल्ल० को अपना वाली न जाने और अपने नफ़्स को अपनी मिल्क में समझे, वह सुन्नत का मज़ा नहीं चख सकता।

एक सहाबी रज़ि० ने आकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि क़यामत कब आयेगी ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि क़यामत के लिए क्या तैयार कर रखा है, जिसकी वजह से इंतिज़ार है। उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मैंने बहुत सी नमाज़ें और रोज़े और सदक़े तो तैयार कर नहीं रखे हैं। अल-बत्ता अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत मेरे दिल में है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि क़यामत में तुम उसी के साथ होगे जिससे मुहब्बत रखते हो। हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद कि आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे उसको मुहब्बत है, कई सहाबा रज़ि० ने नक़ल किया है, जिनमें अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०, अबू मूसा अश्अरी रज़ि०, सफ़वान रज़ि०, अबूज़र रज़ि० वग़ैरह हज़रात हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जिस क़दर ख़ुशी इस इर्शादे मुबारक से हुई है, किसी चीज़ से भी उतनी ख़ुशी नहीं हुई और ज़ाहिर बात है, होना भी चाहिए थी कि हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत तो उनके रग व पै[1] में थी, फिर उनको क्यों न ख़ुशी होती।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० का मकान शुरू में हुज़ूर सल्ल० से ज़रा दूर था। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरा दिल चाहता था, तुम्हारा मकान तो क़रीब ही हो जाता। हज़रत फ़ातिमा ने अर्ज किया कि हारिसा रज़ि० का मकान आप सल्ल० के क़रीब है, उनसे फ़र्मा दें कि मेरे मकान से बदल लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उनसे पहले भी तबादला हो चुका है, अब तो शर्म आती है। हारिसा रज़ि० को इसकी इत्तिला हुई, फ़ौरन हाज़िर होकर अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! मुझे मालूम हुआ है कि आप फ़ातिमा रज़ि० का मकान अपने क़रीब चाहते हैं, यह मेरे मकानात मौजूद हैं, उनसे ज़्यादा क़रीब कोई मकान भी नहीं, जो पसंद हो, बदल लें। या रसूलल्लाह ! मैं और मेरा माल तो अल्लाह और उसके रसूल का ही है, या रसूल्लाह! ख़ुदा की क़सम, जो माल आप सल्ल० ले लें, वह मुझे ज़्यादा पसंद है उस माल से

---

1. नस-नस, 2. तबकात,

जो मेरे पास रहे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, सच कहते हो और बरकत की दुआ दी। और मकान बदल लिया।[2]

एक सहाबी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि आप की मुहब्बत मुझे मेरी जान व माल और अह्ल व अयाल से ज़्यादा है, मैं अपने घर में होता हूं और आप सल्ल० का ख़्याल आ जाता है तो सब्र नहीं आता, यहां तक कि हाज़िर हूं और आकर ज़ियारत न कर लूं। मुझे यह फ़िक्र है कि मौत तो आप सल्ल० को भी और मुझे भी ज़रूर आनी ही है। इसके बाद आप सल्ल० तो अंबिया के दर्जे पर चले जाएंगे तो मुझे यह ख़ौफ़ रहता है कि फिर मैं आपको नहीं देख सकूगां। हुज़ूर सल्ल० ने उसके जवाब में सुकूत फ़र्माया कि हजरत जिब्रील अलैस्सलाम तशरीफ़ लाये और यह आयत सुनायी–

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ
وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا

व मंय्युतिअिल्लाह वर्रसूल फ़ उलाइक मअ़ल्लज़ी न अन्‌अमल्लाहु अलैहिम मिनन्नबीयी व वसिद्दीक़ीन व श्शुहदाइ व स्सालिही न व हसु न उलाइ क रफ़ीक़ा ज़ालिकल फ़ज़्लु मिनल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि अलीमा०

तर्जुमा– जो शख़्स अल्लाह और रसूल सल्ल०का कहना मान लेगा तो ऐसे अशख़ास भी जन्नत में इन हजरात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़र्माया, यानी अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सुलहा और यह हजरात बहुत रफ़ीक़ हैं और इनके साथ रिफ़ाक़त महज़ अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले हैं हर एक के अमल को। इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत से सहाबा रज़ि० को पेश आये और आना ज़रूरी थे–इश्क़ व अस्त व हजार बदगुमानी। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में यही आयत सुनायी। चुनांचे एक सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे आपसे ऐसी मुहब्बत है कि जब ख़्याल आ जाता है, अगर उस वक़्त में आकर ज़ियारत न कर लूं तो मुझे ग़ालिब गुमान है कि मेरी जान निकल जाए, मगर मुझे यह ख़्याल है कि अगर में जन्नत में दाख़िल भी हो गया, तब भी आपसे तो नीचे दर्जे में हूंगा, मुझे तो जन्नत में भी आपकी ज़ियारत बग़ैरबड़ी मशक़्क़त होगी। आपने यही आयत सुनायी।

एक और हदीस में आया है कि एक अंसारी रज़ि० हाज़िरे ख़िदमत हुए और निहायत ग़मगीन थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ग़मगीन क्यों हो? अर्ज़ किया या

रसूलल्लाह ! एक सोच में हूं। आपने दर्याफ़्त फ़र्माया, क्या सोच है ? अर्ज किया या रसूलल्लाह ! हम सुबह व शाम हाज़िरे ख़िदमत होते हैं। आपकी ज़ियारत से महज़ूज़[1] होते हैं। आपकी ख़िदमत में बैठते हैं। कल को आप सल्ल० तो अंबिया के दर्जे पर पहुंच जाएंगे, हमारी वहां तक रसाई नहीं होगी। हुज़ूर सल्ल० ने सुकूत फ़र्माया और जब यह आयत नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने उन अंसारी को भी बुलाया और उनको इसकी बशारत दी।

एक हदीस में आया है कि बहुत से सहाबा रज़ि० ने यह इश्काल किया। हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत उनको सुनायी। एक हदीस में है, सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! यह तो ज़ाहिर है कि नबी को उम्मती पर फ़ज़ीलत है और जन्नत में इसके दर्जे ऊंचे होंगे, तो फिर इकट्ठा होने की क्या सूरत होगी ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ऊपर के दर्जे वाले नीचे के दर्जे वालों के पास आयेंगे, उन के पास बैठेंगे, बात-चीत करेंगे।[2]

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुझसे मुहब्बत करने वाले बाज़ ऐसे लोग होंगे जो मेरे बाद पैदा होंगे और उनकी यह तमन्ना होगी कि काश अपने अह्ल व आयल और माल के बदले में वह मुझे देख लेते।

ख़ालिद रज़ि० की बेटी अब्दा कहती है कि मेरे वालिद जब भी सोने लेटते तो इतने आंख न लगती और जगते रहते, हुज़ूर सल्ल० की याद और शौक़ व इश्तियाक़ में लगे रहते और मुहाजिरीन व अंसार सहाबा का नाम लेकर याद करते रहते और यह कहते कि यही मेरे उसूल व फ़ुरूअ (यानी बड़े और छोटे) और उनकी तरफ़ मेरा दिल खिंचा जा रहा है, या अल्लाह! मुझे जल्द ही मौत दे दे कि उन लोगों से जाकर मिलूं और यही कहते-कहते सो जाते।

हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने एक मर्तबा अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! मुझे अपने बाप के मुसलमान होने की ब निसबत आपके चचा अबूतालिब के मुसलमान हो जाने की ज़्यादा तमन्ना है, इसलिए कि इससे आपको ज़्यादा ख़ुशी होगी। हजरत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० के चचा हजरत अब्बास रज़ि० से अर्ज किया कि आप के इस्लाम लाने की मुझे ज़्यादा ख़ुशी है, अपने बाप के मुसलमान होने से, इसलिए कि आपका इस्लाम हुज़ूर सल्ल० को ज़्यादा महबूब है।

हजरत उमर रज़ि० एक मर्तबा रात को हिफ़ाज़ती गश्त फ़र्मा रहे थे कि

---

1. फ़ायदा हासिल करना, 2. दुर्रेमंसूर।

एक घर में से चिराग़ की रोशनी महसूस हुई और एक बुढ़िया की आवाज़ कान में पड़ी, जो ऊन को धुनती हुई अश्आर पढ़ रही थीं, जिन का तर्जुमा यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नेकों का दरूद पहुंचे और पाक-साफ़ लोगों की तरफ़ से जो बर्गुज़ीदा हों उनका दरूद पहुंचे । बेशक या रसूलल्लाह ! आप रातों को इबादत करने वाले थे और अख़ीर रातों को रोने वाले थे, काश ! मुझे यह मालूम हो जाता कि मैं और मेरा महबूब कभी इक्ट्ठा हो सकते हैं या नहीं, इसलिए कि मौत मुख़्तलिफ़ हालतों में आती है, न मालूम मेरी मौत किस हालत में आये और हुज़ूर सल्ल० से मरने के बाद मिलना हो सके या न हो सके। हज़रत उमर रज़ि० भी उन अश्आर को सुनकर रोने बैठ गये।

हज़रत बिलाल रज़ि० का क़िस्सा मशहूर ही है कि जब उनके इंतिकाल का वक़्त हुआ तो उनकी बीवी जुदाई पर रंजीदा होकर कहने लगीं, हाय अफ़सोस ! वह कहने लगे, सुबहानल्लाह ! क्या मजे की बात है कि कल को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत करेंगे और उनके सहाबा रज़ि० से मिलेंगे।

हज़रत ज़ैद रज़ि० का क़िस्सा बाब 5 के क़िस्सा 9 में गुज़र चुका है कि जब उनको सूली दी जाने लगी तो अबूसुफ़ियान ने पूछा, क्या मुझे यह गवारा है कि हम तुझे छोड़ दें और तेरे बजाए ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हुज़ूर सल्ल० के साथ यह मामला करें, तो ज़ैद रज़ि० ने कहा ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह भी गवारा नहीं कि हुज़ूर सल्ल० अपने दौलतकदा पर तशरीफ़ फ़र्मा हों और वहां उनके कांटा चुभ जाए और मैं अपने घर आराम से रह सकूं। अबूसुफ़ियान कहने लगा कि मैंने कभी किसी को किसी के साथ इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जमाअत को उनसे है।

तंबीह– उलमा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत की मुख़्तलिफ़ अलामात लिखी हैं। क़ाज़ी अयाज़ रह० सल्ल० फ़र्माते हैं कि जो शख़्स किसी चीज़ को महबूब रखता है, उसको मासिवा पर तर्जीह देता है। यही माना मुहब्बत के हैं, वरना मुहब्बत नहीं महज़ दावा-ए-मुहब्बत है।

पस हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत की अलामात में सबसे मुहतम्म बिश्शान[1] यह है कि आपका इक़्तिदा[2] करे, आप के तरीक़े को इख़्तियार करे और आपके अक़्वाल व अफ़आल की पैरवी करे। आपके अह्कामात की बजा

1. शानदार, 2. पैरवी,

आवरी करे और आपने जिन चीजों से रोक दिया है, उनसे परहेज़ करे, ख़ुशी में, रंज में, तंगी में, वुसअत में हर हाल में आपके तरीक़े पर चले। क़ुरआन पाक में इर्शाद है–

क़ुल इन् कुन्तुम तुहिब्बूनल्ला ह फ़त्तबिऊनी यह्बिबकुमुल्लाहु व यग़्फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम वल्लाहु ग़फ़ूरुर्र हीम०

तर्जुमा– आप सल्ल० उन लोगों से कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो, तो तुम मेरा इत्तिबाअ करो। अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे और तुमहारे गुनाहों को माफ़ कर देंगे। अल्लाह बड़े माफ़ करने वाले है, बड़े रहम फ़रमाने वाले हैं।

ख़ातमा

सहाबा किराम रज़ि० के साथ बर्ताव और उनके इज्माली फ़ज़ाइल

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के यह चंद क़िस्से नमूने के तौर पर लिखे गये हैं वरना इनके हालात बड़ी ज़खीम[1] किताबों में भी पूरे नहीं हो सकते। उर्दू में भी मुतअद्दद किताबें और रिसाले इस मज़्मून के मिलते हैं। कई महीने हुए यह रिसाला शुरू किया था, फिर मदरसे के मशाग़िल और वक़्ती अवारिज़[2] की वजह से तावीक़[3] में पड़ गया। इस वक़्त इन अवराक़ पर ख़ात्मा करता हूं कि जितने लिखे जा चुके हैं, वह क़ाबिले इंतिफ़ाअ[4] हो जाएं। अख़ीर में एक ज़रूरी अम्र पर तंबीह भी अशद्द ज़रूरी हैं, वह यह कि इस आज़ादी के ज़माने में जहां हम मुसलमानों में दीन के और बहुत से उमूर में कोताही और आज़ादी का रंग है, वहां हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की हक़ शनासी और उनके अदब व एहतराम में भी हद से ज़्यादा कोताही है, बल्कि इससे बढ़कर बाज़ दीन से बे-परवाह लोग तो उनकी शान में गुस्ताख़ी तक करने लगते हैं, हालांकि सहाबा किराम रज़ि० दीन की बुनियाद हैं, दीन के अव्वल फैलाने वाले हैं, उनके हुक़ूक़ से हम लोग मरते दम तक भी ओहदा

1. मोटी, बाधा, 2. रुकावट, बाधा, 3. देर, 4. फ़ायदा उठाने के क़ाबिल,

बरआ नहीं हो सकते। हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से इन पाक नुफ़ूस पर लाखों रहमतें नाज़िल फ़र्मायीं कि उन्होंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दीन हासिल किया और हम लोगों तक पहुंचाया, इसलिए इस ख़ात्मे में क़ाज़ी अयाज़ रह० की शफ़ा की एक फ़स्ल का मुख़्तसर तर्जुमा जो इसके मुनासिब है, दर्ज करता हूं और इसी पर इस रिसाले को ख़त्म करता हूं।

वह फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के एज़ाज़ व इकराम में दाख़िल है, हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० का एज़ाज़ व इकराम करना और उनके हक़ को पहचान्ना और उनका इत्तिबाअ करना और उनकी तारीफ़ करना और उनके लिए इस्तिग़फ़ार और दुआ-ए-मग़्फ़िरत करना और उनके आपस के इख़्तिलाफ़ात में लब कुशाई न करना और मुवर्रिख़ीन और शीआ और बिद्अती और जाहिल राबियों की इन ख़बरों से एराज़ करना, जो उन हज़रात की शान में नुक़्स पैदा करने वाली हों और इस नौअ की कोई रिवायत अगर सुनने में आये तो इसकी कोई अच्छी तावील कर ले और कोई अच्छा महमल तज्वीज़ कर ले कि वह उसके मुस्तहिक़ हैं और इन हज़रात को बुराई से याद न करे, बल्कि, उनकी ख़ूबियां और उनके फ़ज़ाइल बयान किया करें और ऐब की बातों से सुकूत करे,जैसा कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जब मेरे सहाबा रज़ि० का ज़िक्र (यानी बुरा ज़िक्र) हो तो सुकूत किया करो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के फ़ज़ाइल क़ुरआन शरीफ़ और अहादीस में बकसरत वारिद हैं। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ
رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي
وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ
أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ
الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह वल्लज़ीन मअ़हू अशिद्दाउ अलल्कुफ़्फ़ारि रुह माउ बैन हुम तराहुम रुक्कअन सुज्जदंय्यब्तग़ू न फ़ज़्लम मिनल्लाहि व रिज़्वानन सीमाहुम फ़ीवुज़ूहिहिम मिन् असरिस्सुजूदि ज़ालि क मसलुहम फ़ित्तौराति व मसलुहुम फ़िलइंजीलि क ज़र्अिन अख़्र ज शत्अहू फ आ ज़ रहू फ़स्तग़्ल ज़ फ़स्तवा अला सूक़िही युअ्जिबुज़्ज़ुर्राअ लियग़ी ज़ बिहिमुलकुफ़्फ़ार व अ दल्लाहुल्लज़ी न आ मनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम मग़्फ़िर तंव्व अज्रन अज़ीमा०

तर्जुमा- मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आपके साथ

हैं, वह काफ़िरों के मुकाबले में सख़्त हैं और आपस में मेहरबान और ऐ मुख़ातिब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ करने वाले हैं, कभी सज्दा करने वाले हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल और रज़ामंदी की जुस्तजू में लगे हुए हैं। उनकी अब्दियत के आसार बवजह तासीर उनके सिज्दे के उनके चेहरों पर नुमायां हैं। यह उनके औसाफ़ तौरात में हैं और इंजील में, उनकी यह मिसाल ज़िक्र की है कि जैसे खेती की उसने अपनी सूई निकाली, फिर उसने अपनी सूई को क़वी किया (यानी यह खेती मोटी हुई) फिर वह खेती और मोटी हुई, फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हुई कि किसानों को भली मालूम होने लगी (इसी तरह सहाबा रज़ि० में अव्वल ज़ोफ़ था, फिर रोज़ाना क़ूव्वत बढ़ती गयी और अल्लाह तआला ने सहाबा को इसलिये यह नश्व नुमा दिया) ताकि इनसे काफ़िरों को हसद में जलावें और आख़िरत में अल्लाह तआला ने उन साहिबों से जो कि ईमान लाये और नेक काम कर रहे हैं, मग़्फ़िरत और अज्रे अज़ीम का वायदा कर रखा है।'

यह तर्जुमा इस सूरत में है कि तौरात पर आयत हो और आयत के फ़र्क से तर्जुमे में भी फ़र्क हो जाएगा जो तफ़ासीर से मालूम हो सकता है। इसी सूरत में दूसरी जगह इर्शाद है لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّأْخُذُوْنَهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

ल क़द रज़ियल्लाहु अनिल मुअ्मिनी न इज़ युबायिअू न क तह्तश्श ज रति फ़ अलि म माफ़ी क़ुलूबिहिम फ़ अन्ज़लस्सकी न त अलैहिम व असा ब हुम फ़त्हन क़रीबा व मग़ानि म कसीरतंय्यअख़ुज़ू न हा व कानल्लाहु अज़ीज़न हकीमा०

तर्जुमा– तहक़ीक़ अल्लाह तआला उन मुसलमानों से (जो कि आपके हम सफ़र हैं) ख़ुश हुआ, जबकि यह लोग आपसे दरख़्त के नीचे बैअत कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ (इख़्लास और अज़्म था, अल्लाह तआला को वह भी मालूम था और अल्लाह तआला ने उनके दिल में इत्मीनान पैदा कर दिया था और उनको एक लगते हाथ फ़त्ह भी दे दी। (मुराद इससे फ़त्हे ख़ैबर है, जो उसके क़रीब ही हुई) और बहुत सी ग़नीमतें भी दीं और अल्लाह तआला बड़ा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। यह ही वह बैअत है जिसको बैअतुश्शजरा कहा जाता है। अख़ीर बाब के क़िस्से नं० 4 में इसका ज़िक्र गुज़र चुका है। सहाबा के बारे में एक जगह इर्शादे ख़ुदावंदी है–

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ

قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۙ

रिजालुन स द क़ू मा आहदुल्लाह ह अलैहि फ़ मिन्हुम मनक़जा नह्बहु व मिन्हुम मंय्न्तज़िर व मा बद्दलू तब्दीला०

तर्जुमा– इन मोमिनीन में ऐसे लोग हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से अह्द किया था, उसमें सच्चे उतरे, फिर उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि जो अपनी नज़्र पूरी कर चुके (यानी शहीद हो चुके) और बाज़ उनमें उसके मुश्ताक़ (मुंतज़िर हैं, अभी शहीद नहीं हुए) और अपने इरादे में कोई तग़य्युर व तबद्दुल नहीं किया। एक जगह इर्शादे ख़ुदा वंदी है–

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۙ

वस्साबिक़ूनल अव्वलून मिनल मुहाजिरी न वल अन्सारि वल्लज़ीनत्त ब अूहुम बिएह् सानिर्र ज़ियल्लहु अन्हुम व रज़ू अन्हु व-अ अ द्द लहुम जन्नातिन तज्री मिन त्तिह्ल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा अबदन ज़ालिकल फ़ौज़ुल अज़ीम०

तर्जुमा– 'और जो मुहाजिरीन व अन्सार (ईमान लाने में सब उम्मत से) मुक़द्दम हैं और जितने लोग इख़्लास के साथ इनके पैरो हैं, अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी हुआ और वह सब अल्लाह से राज़ी हुये और अल्लाह तआला ने उनके लिये ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वह हमेशा-हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामयाबी है।'

इन आयात में अल्लाह जल्ल शानुहू ने सहाबा रज़ि० की तारीफ़ और उनसे ख़ुश्नूदी का इज़्हार फ़र्माया है। इसी तरह अहादीस में भी बहुत क़सरत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मेरे बाद अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि०का इक़्तिदा किया करो।

एक हदीस में इर्शाद है कि मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं, जिसका इत्तिबाअ करोगे हिदायत पाओगे। मुहद्दिसीन को इस हदीस में कलाम है और इसी वजह से क़ाज़ी अयाज रह० पर उसके ज़िक्र करने में एतराज़ है, मगर मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि मुम्किन है कि तअद्दुद तुरुक़ की वजह उनके नज़दीक क़ाबिले एतबार हो या फ़ज़ाइल में होने की वजह से ज़िक्र किया हो (क्योंकि फ़ज़ाइल में मामूली ज़ोफ़

की रिवायतें ज़िक्र कर दी जाती है।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरे सहाबा रज़ि० की मिसाल खाने में नमक की सी है कि खाना बग़ैर नमक के अच्छा नहीं हो सकता। हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद है कि अल्लाह से मेरे सहाबा रज़ि० के बारे में डरो, उनको मलामत का निशाना न बनाओ। जो शख़्स उनसे मुहब्बत रखता है, मेरी मुहब्बत की वजह से उनसे मुहब्बत रखता है और जो उनसे बुग़्ज़ रखता है, वह मेरे बुग़्ज़ की वजह से बुग़्ज़ रखता है। जो शख़्स उनको अज़ीयत दे उसने मुझ को अज़ीयत दी, और जिसने मुझको अज़ीयत दी, उसने अल्लाह को अज़ीयत दी और जो शख़्स अल्लाह को अज़ीयत देता है क़रीब है कि पकड़ में आ जाए।

हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद है कि मेरे सहाबा रज़ि० को गालियां न दिया करो। अगर तुम में से कोई शख़्स उहद के पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो वह सवाब के एतबार से सहाबा के एक मुद्द[1] या आधे मुद्द के बराबर भी नहीं हो सकता और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स सहाबा रज़ि० को गालियां दे, उस पर अल्लाह की लानत और फ़रिश्तों की लानत और तमाम आदमियों की लानत, न उसका फ़र्ज मक़्बूल है, न नफ़्ल। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अल्लाह तआला ने अंबिया अलै० के अलावा तमाम मख़्लूक़ में से मेरे सहाबा रज़ि० को छांटा है और उनमें से चार को मुम्ताज़ किया- अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, उस्मान रज़ि० अली रज़ि०। उनको मेरे सब सहाबा रज़ि० से अफ़ज़ल क़रार दिया।

अय्यूब सख़्तियानी रह० कहते हैं कि जिस शख़्स ने अबूबक्र रज़ि० से मुहब्बत की, उसने दीन को सीधा किया और जिसने उमर रज़ि० से मुहब्बत की, उसने दीन के वाज़ेह रास्ते को पा लिया और जिसने उस्मान रज़ि०से मुहब्बत की, वह अल्लाह के नूर के साथ मुनव्वर हुआ और जिसने अली रज़ि० से मुहब्बत की उसने दीन की मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया, जो सहाबा रज़ि० की तारीफ़ करता है, वह निफ़ाक़ से बरी है और जो सहाबा रज़ि० की बे-अदबी करता है, वह बिद्अती मुनाफ़िक़, सुन्नत का मुख़ालिफ़ है। मुझे अंदेशा है कि उसका कोई अमल क़ुबूल न हो, यहां तक कि उन सब को महबूब रखे और उनकी तरफ़ से दिल साफ़ हो।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि ऐ लोगो ! मैं अबूबक्र रज़ि०

---

1. पैमाना

से ख़ुश हूं, तुम लोग उनका मर्तबा पहचानो। मैं उमर रज़ि० से, अली रज़ि० से, उस्मान रज़ि० से, तलहा रज़ि० से ज़ुबैर रज़ि० से, सअद रज़ि० से, सईद रज़ि० से, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से, अबूउबैदा रज़ि० से ख़ुश हूं। तुम लोग उनका मर्तबा पहचानो। ऐ लोगों! अल्लाह जल्ल शानुहू ने बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों की और हुदैबिया की लड़ाई में शरीक होने वालों की मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। तुम मेरे सहाबा रज़ि० के बारे में मेरी रियायत किया करो और उन लोगों के बारे में जिनकी बेटीयां मेरे निकाह में हैं या मेरी बेटीयां उनके निकाह में हैं, ऐसा न हो कि यह लोग क़यामत में तुम से किसी क़िस्म के ज़ुल्म का मुतालबा करें कि वह माफ़ नहीं किया जायेगा। एक जगह इर्शाद है कि मेरे सहाबा रज़ि० और मेरे दामादों में मेरी रियायत किया करो जो शख़्स उनके बारे में मेरी रियायत करेगा अल्लाह तआला शानुहू दुनिया और आख़िरत में उसकी हिफ़ाज़त फ़र्मायेंगे और जो उनके बारे में मेरी रियायत न करेगा अल्लाह तआला उससे बरी हैं। और जिससे अल्लाह तआला बरी हैं क्या बईद है कि किसी गिरफ़्त में आ जाये। हुज़ूर सल्ल० से यह भी नक़ल किया गया है कि जो शख़्स सहाबा रज़ि० के बारे में मेरी रियायत करेगा मैं क़यामत के दिन उसका मुहाफ़िज़ हुंगा, एक जगह इर्शाद है कि जो मेरे सहाबा रज़ि० के बारे में मेरी रियायत रखेगा वह मेरे पास हौज़े कौसर पर पहुँच सकेगा और जो उनके बारे में मेरी रियायत न करेगा वह मेरे पास हौज़े कौसर तक नहीं पहुंच सकेगा और मुझे सिर्फ़ दूर ही से देखेगा सहलबिन अब्दुल्लाह रह० कहते हैं कि जो शख़्स हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० की ताज़ीम न करे वह हुज़ूर सल्ल० ही पर ईमान नहीं लाया। अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ व फ़ज़ल से अपनी गिरफ़्त से ओर अपने महबूब के इताब से मुझको और मेरे दोस्तों को मेरे मोहसिनों को और मिलने वालों को मेरे मशाइख़ को तलामज़ा को और सब मोमिनीन को महफ़ूज़ रखे और उन हज़रात सहाबा किराम रज़ि० यल्लाहु अन्हुम अज्मईन की मुहब्बत से हमारे दिलों को भर दे। आमीन बिरहति क या अर्हमर्राहिमीन०।

व आख़िरु दअवाना

آخر دعوانا ان الحمد للہ رب العلمين والصلوة والسلام الاتمان
الاكملان على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه الطيبين الطاهرين وعلى اتباعه
اتباعهم حملة الدين المتين۔

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ
क़द अफ़्लह हल मुअ्मिनू नल्लज़ी न हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिअून. बेशक फ़लाह
व कामियाबी को पहुंच गये वे लोग जो अपनी नमाज़ को खुशूअ से पढ़ने वाले हैं।
फ़ज़ाइले नमाज़
जिसमें
हज़रत मौलाना अल-हाफ़िज़, अल-हाज्ज मुहम्मद इलयास साहब
नव्वरल्लाहु मर्क़ द हू
के इर्शाद से
हज़रत मौलाना अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़ अल-मुहद्दिस
मुहम्मद ज़करिया साहब दा म फ़ैज़ुहुम,
शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे उलूम
सहारनपुर ने वह हदीसें जमा फ़रमायी हैं, जिनमें नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत, नमाज़ छोड़ने का अज़ाब, जमाअत के सवाब और उसके तर्क की सज़ायें आयी हैं। हर मज़मून के मुनासिब बुज़ुर्गों के ज़ौक़ व शौक़ के वाक़िआत भी दर्ज फ़रमाये हैं।
प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद
खुर्शीद बुक डिपो (रजि.)

विषय सूची

क्या? कहाँ?

पहला बाब

क्या? कहाँ?

दूसरा बाब

तीसरा बाब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

तम्हीद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

نَحۡمَدُہٗ وَنَشۡکُرُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحۡبِہٖ وَاَتۡبَاعِہِ الۡحُمَاۃِ لِلدِّیۡنِ الۡقَوِیۡمِ وَبَعۡدُ فَھٰذِہٖ اَرۡبَعُوۡنَۃٌ فِیۡ فَضَائِلِ الصَّلٰوۃِ جَمَعۡتُھَا اِمۡتِثَالًا لِاَمۡرِ عَمِّیۡ وَصِنۡوِ اَبِیۡ رَقَّاہُ اللّٰہُ اِلَی الۡمَرَاتِبِ الۡعُلۡیَا وَوَفَّقَنِیۡ وَاِیَّاہُ لِمَا یُحِبُّ وَیَرۡضٰی ۔ اَمَّا بَعۡدُ

नह्मदुहू व नश्कुरुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अला रसूलिहिल करीमि व अला आलिही व सह्बिही व अत्बाअिहिल हुमाति लिद्दी निल क़वीम व बअ्दु फ़ हाज़िही अर्ब अ़ू न तुन फ़ी फ़ज़ाइलिस्सलाति जमअ्तुहा इम्तिसाललि अम्रि अम्मी व सिन्वाबी रक्काहुल्लाहु इलल म रातिबिल उल्या व वफ़्फ़ क़ नी व इय्याहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा[1] अम्मा बअ्दु-

इस ज़माने में दीन की तरफ़ से जितनी बे-तवज्जोही और बे-इल्तिफ़ाती की जा रही है, वह मुहताजे बयान नहीं, हत्ताकि अहमतरीन इबादत नमाज़, जो बिल इत्तिफ़ाक़ सबके नजदीक ईमान के बाद तमाम फ़राइज पर मुक़द्दम है और क़यामत में सबसे अव्वल इसी का मुतालबा होगा, इससे भी निहायत ग़फ़लत और लापरवाई है। इससे बढ़कर यह कि दीन की तरफ़ मुतवज्जह करने वाली कोई आवाज़ कानों तक नहीं पहुंचती, तब्लीग़ की कोई सूरत बार आवर[2] नहीं होती, तजुर्बे से यह बात ख़्याल में आयी है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शादात लोगों तक पहुंचाने की सई की जाए, अगरचे उसमें भी जो मुज़ाहमतें हायल हैं वह भी मुझ से बे-बज़ायत[3] के लिए काफ़ी हैं, ताहम उम्मीद यह है कि जो लोग ख़ाली-उज़ ज़हन

---

1. मुअल्लिफ़ रह० (लेखक) इस रिसाले (किताब) के लिखने की वजह बयान कर रहे हैं कि अपने चचा हजरत मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि के हुक्म की तालीम में मैंने ये चालीस हदीसें जमा की हैं,
2. फलती फूलती नजर नहीं आती, 3. जिसके पास कुछ नहीं है,

हैं और दीन का मुक़ाबला नहीं करते हैं, यह पाक अलफ़ाज़ इनशा अल्लाह तआला उन पर ज़रूर असर करेंगे और कलाम व साहिबे कलाम की बरकत से नफ़ा की तवक़्क़ाअ है, नीज दूसरे दोस्तों को इसमें क़ामियाबी की उम्मीदें ज़्यादा हैं, जिन्की वजह मुख़्लिसीन का इस्रार भी है। इस रिसाले में सिर्फ़ नमाज़ के मुताल्लिक़ चंद अहादीस का तर्जुमा पेश करता हूं, चूंकि नफ़्से तब्लीग़ के मुताल्लिक़ बन्दा-ए-नाचीज़ का एक मज़्मून रिसाला 'फ़ज़ाइले तब्लीग़' के नाम से शाया हो चुका है, इस वजह से इस को सिलसिला-ए-तब्लीग़ का नम्बर दो क़रार देकर फ़ज़ाइले नमाज़ के साथ मौसूम करता हूं।

وَمَا تَوْفِيقِيْ إِلَّا بِاللهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु०

नमाज़ के बारे में तीन क़िस्म के हज़रात आमतौर से पाये जाते हैं। एक जमाअत वह है जो सिरे से नमाज़ ही की परवाह नहीं करती। दूसरा गिरोह वह है जो नमाज़ तो पढ़ता है, मगर जमाअत का एहतमाम नहीं करता। तीसरे वह लोग हैं, जो नमाज़ भी पढ़ते हैं और जमाअत का एहतमाम भी करते हैं, मगर लापरवाही और बुरी तरह से पढ़ते हैं, इसलिए इस रिसाले में तीनों मज़ामीन की मुनासबत से तीन बाब ज़िक्र किये गये हैं और हर बाब में नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शादात और उनका तर्जुमा पेश कर दिया है, मगर तर्जुमे में वज़ाहत और सहूलत का लिहाज़ किया है, लफ़्ज़ी तर्जुमे की ज़्यादा रियायत नहीं की, नीज चूंकि नमाज़ की तब्लीग़ करने वाले अक्सर अह्ले इल्म भी होते हैं, इसलिए हदीस का हवाला और उसके मुताल्लिक़ जो मज़ामीन अह्ले इल्म से ताल्लुक़ रखते थे, वह अरबी में लिख दिए गए हैं कि अवाम को उनसे कुछ फ़ायदा नहीं है और तब्लीग़ करने वाले हज़रात[2] को बसा औक़ात ज़रूरत पढ़ जाती है और तर्जुमा व फ़वाइद वग़ैरह उर्दू में लिख दिए हैं।

1. इस मज्मूए में जितने रिसाले है उनमें से रिसाला 'फ़ज़ाइले तब्लीग़' के अलावा और भी कई रिसाले 'फ़ज़ाइले नमाज़' से पहले लिखे गये हैं जैसा कि उन के लिखने के सनों से पता चलता है, मगर ब-ज़ाहिर इसको नं० 3 और 'फ़ज़ाइले तब्लीग़' को नं० 1 क़रार देने की वजह यह है कि ख़ास तब्लीग़ी जमाअत की नीयत से यही दो रिसाले लिखे गये हैं, वरना इनमें सबसे पहले 1348 हि० में 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' लिखी गयी है।

2. तब्लीग़ करने वाले आलिम हज़रात को,

पहला बाब

नमाज़ की अहमियत के बयान में

इस बाब में दो फ़स्लें हैं। फ़स्ले अव्वल में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान है और दूसरी फ़स्ल में नमाज़ के छोड़ने पर जो वईद[1] और इताब[2] हदीस में आया है, उसका बयान है।

फ़स्ले अव्वल, नमाज़ की फ़ज़ीलत के बयान में

इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है

(1) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ شَهَادَةِ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ (متفق عليه) وقال المنذرى فى الترغيب رواه البخارى ومسلم وغيرهما عن غير واحد من الصحابة۔

1. 'हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नकल करते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पांच स्तूनों पर है। सबसे अव्वल 'ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की गवाही देना यानी इस बात का इक़रार करना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। उसके बाद नमाज़ का क़ायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना'।

फ़ – यह पांचों चीज़ें ईमान के बड़े उसूल और अहम अर्कान हैं। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस पाक हदीस में बतौर मिसाल के इस्लाम को एक ख़ेमे के साथ तश्बीह[3] दी है जो पांच स्तूनों पर कायम होता है। पस

---

1. धमकी, 2. सज़ा, 3. मिसाल देना,

कलमा-ए-शहादते[1] खेमे की दर्मियानी लकड़ी की तरह है और बाक़ी चारों अर्कान ब मंज़िला[2] उन चार स्तूनों के हैं, जो चारों कोनों पर हों। अगर दर्मियानी लकड़ी न हो तो खेमा खड़ा हो ही नहीं सकता और अगर यह लकड़ी मौजूद हो और चारों तरफ़ के कोनों में कोई सी लकड़ी न हो, तो खेमा क़ायम तो हो जाएगा, लेकिन जिस कोने की लकड़ी नहीं होगी, वह जानिब नाक़िस[3] और गिरी हुई होगी। इसके पाक इर्शाद के बाद अब हम लोगों को अपनी हालत पर ख़ुद ही ग़ौर कर लेना चाहिए कि इस्लाम के इस खेमे को हमने किस दर्जे तक क़ायम कर रखा है और इस्लाम का कौन सा रुक्न ऐसा है जिसको हमने पूरे तौर पर संभाल रखा है।

इस्लाम के यह पांचों अर्कान निहायत अहम हैं हत्ताकि इस्लाम की बुनियाद इन्हीं को क़रार दिया गया है और एक मुसलमान के लिए बहैसियत मुसलमान होने के इन सब का एहतमाम निहायत ज़रुरी है, मगर ईमान के बाद सबसे अहम चीज़ नमाज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि अल्लाह तआला शानुहू के यहां सबसे ज़्यादा महबूब अमल कौन सा है ? इर्शाद फ़र्माया कि नमाज़ । मैं ने अर्ज़ किया कि इसके बाद क्या है ? इर्शाद फ़र्माया कि वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक। मैंने अर्ज़ किया कि इसके बाद कौन-सा है ? इर्शाद फ़र्माया, जिहाद।

मुल्ला अलीक़ारी रह०[4] फ़र्माते हैं कि इस हदीस में उलमा के इस क़ौल की दलील है कि ईमान के बाद सबसे मुक़द्दम नमाज़ है। इसकी ताईद उस सहीह हदीस से भी होती है, जिसमें इर्शाद है, 'अस्सलातु ख़ैरु मौज़ूअिन'[5] यानी बेहतरीन अमल जो अल्लाह तआला ने बंदों के लिए मुक़र्रर फ़र्माया है, वह नमाज़ है।

(एक हिजरी) और अहादीस में कसरत से यह मज़्मून साफ़ और सहीह हदीसों में नक़ल किया गया कि तुम्हारे आमाल में सब से बेहतर अमल नमाज़ है। चुनांचे

---

1. यानी 'लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह', 2. जैसे, 3. अधूरा, 4. मुल्ला अली क़ारी अल-हरवी, अल हनफ़ी, वफ़ात 1014 हि०। यह मिश्कात की शरह लिखने वाले और बहुत सी किताबों के लिखने वाले हैं। इनकी किताब मिर्क़ातु मफ़ातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह का हवाला इस किताब में बहुत जगह आयेगा। 5. अहमद, इब्ने हब्बान, हाकिम अन अबीज़र रज़ि०, तबरानी अन अबी हुरैरह रज़ि०,

जामेअ़ सग़ीर में हजरत सौबान, इब्ने उमर, सल्मा, अबू उमामा, उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुम पांच सहाबा से यह हदीस नकल की गई है और हज़रत इब्ने मस्ऊद व अनस रज़ि० से अपने वक़्त पर नमाज़ का पढ़ना अफ़्ज़लतरीन अमल नकल किया गया है। (जामिउस्सग़ीर)

हज़रत इब्ने उमर और उम्मे फ़र्व से अव्वल वक़्त नमाज़ नकल पढ़ना किया गया है। मक़्सद सब का क़रीब ही क़रीब है।

नमाज़ के ज़रिए गुनाहों का झड़ना

(٢) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ خَرَجَ فِی الشِّتَاءِ وَالْوَرَقُ یَتَهَافَتُ فَاَخَذَ بِغُصْنَیْنِ مِنْ شَجَرَۃٍ قَالَ فَجَعَلَ ذٰلِکَ الْوَرَقُ یَتَهَافَتُ فَقَالَ یَا اَبَا ذَرٍّ قُلْتُ لَبَّیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ قَالَ اِنَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ لَیُصَلِّی الصَّلٰوۃَ یُرِیْدُ بِهَا وَجْهَ اللّٰہِ فَتَهَافَتُ عَنْهُ ذُنُوْبُهٗ کَمَا تَهَافَتَ هٰذَا الْوَرَقُ عَنْ هٰذِہِ الشَّجَرَۃِ (رواہ احمد باسناد حسن کذا فی الترغیب)

2. 'हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्दी के मौसम में बाहर तश्रीफ़ लाये और पत्ते दरख़्तों पर से गिर रहे थे। आपने एक दरख़्त की टहनी हाथ में ली। उसके पत्ते और भी गिरने लगे। आपने फ़र्माया, ऐ अबूज़र ! मुसलमान बन्दा जब इख़्लास से अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ता है, तो उससे उसके गुनाह ऐसे ही गिरते हैं जैसे यह पत्ते दरख़्त से गिर रहे हैं।'

फ़— सर्दी के मौसम में दरख़्तों के पत्ते ऐसी कसरत से गिरते हैं कि बाज़ दरख़्तों पर एक भी पत्ता नहीं रहता। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि इख़्लास से नमाज़ पढ़ने का असर भी यही है कि उसके सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं, एक भी नहीं रहता, मगर एक बात क़ाबिले लिहाज़ है। उलमा की तहक़ीक आयाते क़ुरआनिया और अहादीसे नबवीया की वजह से यह है कि नमाज़ वग़ैरह इबादात से सिर्फ़ गुनाह सग़ीरा माफ़ होते हैं। कबीरा गुनाह बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होता, इसलिए नमाज के साथ तौबा और इस्तग़्फ़ार का एहतमाम भी करना चाहिए, इससे ग़ाफ़िल न होना चाहिए, अल-बत्ता हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से किसी के कबीरा गुनाह भी माफ़ फ़र्मा दें, तो दूसरी बात है।

(٣) عَنْ أَبِيْ عُثْمَانَ قَالَ كُنْتُ مَعَ سَلْمَانَ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَأَخَذَ غُصْنًا مِنْهَا يَابِسًا فَهَزَّهُ
حَتّٰى تَحَاتَّ وَرَقُهُ ثُمَّ قَالَ يَا أَبَا عُثْمَانَ أَلَا تَسْأَلُنِيْ لِمَ أَفْعَلُ هٰذَا قُلْتُ وَلِمَ تَفْعَلُهُ قَالَ هٰكَذَا
فَعَلَ بِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مَعَهُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ وَأَخَذَ مِنْهَا غُصْنًا
يَابِسًا فَهَزَّهُ حَتّٰى تَحَاتَّ وَرَقُهُ فَقَالَ يَا سَلْمَانُ أَلَا تَسْأَلُنِيْ لِمَ أَفْعَلُ هٰذَا قُلْتُ
وَلِمَ تَفْعَلُهُ قَالَ إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ صَلَّى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ
تَحَاتَّتْ خَطَايَاهُ كَمَا تَحَاتَّ هٰذَا الْوَرَقُ وَقَالَ أَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا
مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذَّاكِرِيْنَ (رواه أحمد والنسائي والطبراني)

3. 'अबू उस्मान रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक दरख़्त के नीचे था। उन्होंने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी पकड़कर उसको हरकत दी, जिससे उस के पत्ते गिर गये, फिर मुझ से कहने लगे कि अबू उस्मान! तुमने मुझ से यह न पूछा कि मैं ने यह क्यों किया। मैं ने कहा बता दीजिए, क्यों किया। उन्होंने कहा कि मैं एक दफ़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक दरख़्त के नीचे था। आप ने भी दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी पकड़ कर इसी तरह किया था, जिससे इस टहनी के पत्ते झड़ गये थे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया था कि सल्मान पूछते नहीं कि मैं ने इस तरह क्यों किया। मैंने अर्ज़ किया कि बता दीजिए, क्यों किया ? आपने इर्शाद फ़र्माया था कि जब मुसलमान अच्छी तरह से वुज़ू करता है, फिर पांचों नमाज़ें पढ़ता है तो उसकी ख़ताएं उससे ऐसी ही गिर जाती हैं जैसे यह पत्ते गिरते हैं। फिर आपने क़ुरआन की आयत 'अक़िमिस्सला त त र फ़ यिन्नहारि'[1] तिलावत फ़र्मायी (जिसका तर्जुमा यह है कि क़ायम कर नमाज़ को दिन के दोनों सरों में और रात के कुछ हिस्सों में, बेशक नेकियां दूर कर देती हैं गुनाहों को। यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए।)

फ़ – हज़रत सल्मान रज़ि० ने जो अमल करके दिखलाया। यह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के तअश्शुक़[2] की अदना[3] मिसाल है, जब किसी शख़्स को किसी से इश्क़ होता है उसकी हर अदा भाती है और उसी तरह हर काम

---

1. सूरः हूद, आख़िरी रुकूअ, 2. इश्क़ व मुहब्बत, 3. मामूली, छोटी,

को जी चाहा करता है। जिस तरह महबूब को करते देखता है, जो लोग मुहब्बत का ज़ायका चख चुके हैं, वह इसकी हक़ीक़त से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं। इसी तरह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात नकल करने में अक्सर उन अफ़आल की भी नकल करते थे जो उस इर्शाद के वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने किए थे। नमाज़ का एहतमाम और उस की वजह से गुनाहों का माफ़ होना, जिस कसरत से रिवायात में ज़िक्र किया गया है, उस का अहाता दुश्वार है[1]। पहले भी मुतअद्दिद रिवायात में यह मज़्मून गुज़र चुका है। उलमा ने इस को सग़ीरा गुनाहों के साथ मख़्सूस किया है। जैसा पहले मालूम हो चुका, मगर अहादीस में सग़ीरा-क़बीरा की कुछ क़ैद नहीं है, मुत्लक़ गुनाहों का ज़िक्र है। मेरे वालिद साहब[2] रहमतुल्लाह अलैहि ने तालीम के वक़्त इसकी दो वज्हें इर्शाद फ़र्मायी थीं। एक यह कि मुसलमान की शान से यह बईद है कि उसके ज़िम्मे कोई कबीरा हो। अव्वलन तो उससे गुनाह कबीरा का सादिर होना ही मुश्किल है और अगर हो भी गया हो तो बग़ैर तौबा के उस को चैन आना मुश्किल है। मुसलमान की मुसलमानी शान का मुक़्तज़ा[3] यह है कि जब उस से कबीरा सादिर हो जाए तो इतने रो-पीट कर उस को धो न ले, उसको चैन न आये। अल-बत्ता सग़ीरा गुनाह ऐसे हैं कि उन की तरफ़ बसा औक़ात इल्तिफ़ात[4] नहीं होता है और ज़िम्मे पर रह जाते हैं, जो नमाज़ वग़ैरह से माफ़ हो जाते हैं। दूसरी वजह यह है कि जो शख़्स इख़्लास से नमाज़ पढ़ेगा और आदाब व मुस्तहिब्बात की रिआयत रखेगा, वह ख़ुद ही न मालूम कितनी मर्तबा तौबा इस्तग़फ़ार करेगा और नमाज़ में अत्तहीयात की आख़ीर दुआ 'अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी' (आख़िर तक) में तो तौबा व इस्तग़फ़ार ख़ुद ही मौजूद है। इन रिवायात में वुज़ू को भी अच्छी तरह से करने का हुक्म है, जिसका मतलब यह है कि उसके आदाब और मुस्तहिब्बात की तह्क़ीक़ करके उनका एहतमाम करो।

मिस्वाक

मस्लन एक सुन्नत इसकी मिस्वाक ही है, जिस की तरफ़ आमतौर पर बे-तवज्जोही है, हालांकि हदीस में वारिद है कि जो नमाज़ मिस्वाक करके पढ़ी जाए, वह उस नमाज़ से, जो बे-मिस्वाक। के पढ़ी जाए, सत्तर दर्जे अफ़ज़ल है।

एक हदीस में वारिद है कि मिस्वाक का एहतमाम किया करो। इसमें दस फ़ायदे हैं–

---

1. यानी जमा करना मुश्किल है, 2. मौलाना मुहम्मद यह्या साहब रह०, 3. तक़ाज़ा, 4. ध्यान, तवज्जोह,

1. मुह को साफ़ करती है, 2. अल्लाह की रज़ा की सबब है, 3. शैतान को ग़ुस्सा दिलाती है, 4. मिस्वाक करने वाले को अल्लाह तआला महबूब रखते हैं, और 5. फ़रिश्ते महबूब रखते हैं, 6. मसूढ़ों को ताक़त बख़्शती है, 7. बलग़म को दूर करती है, 8. मुंह में ख़ुश्बू पैदा करती है, 9. सफ़रा[1] को दूर करती है, 10. निगाह को तेज़ करती है, मुंह की बदबू को ज़ायल करती है और इस सब के अलावा यह है कि सुन्नत है।[2]

उलमा ने लिखा है कि मिस्वाक के एहतमाम में सत्तर फ़ायदे हैं, जिनमें से एक यह है कि मरते वक़्त कलिमा-ए-शहादत पढ़ना नसीब होता है और उसके बिल्मुक़ाबिल[3] अफ़्यून खाने में सत्तर मज़र्रतें[4] हैं, जिनमें से एक यह है कि मरते वक़्त कलमा याद नहीं आता। अच्छी तरह से वुज़ू करने के फ़ज़ाइल अहादीस में बड़ी कसरत से आये हैं, वुज़ू के आज़ा क़यामत में रोशन और चमकदार होंगे और इससे हुज़ूर सल्ल० फ़ौरन अपने उम्मती को पहचान जाएंगे।

नमाज़ की मिसाल जारी नहर से

(४) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رضِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اَرَاَيْتُمْ لَوْاَنَّ نَهْرًا بِبَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ هَلْ يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْئٌ قَالُوْا لَا يَبْقٰى مِنْ دَرَنِهٖ شَيْئٌ قَالَ فَكَذٰلِكَ مَثَلُ الصَّلَوٰتِ الْخَمْسِ يَمْحُوْ اللهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا رواه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى ورواه ابن ماجة من حديث عثمانؓ كذا فى الترغيب۔

4. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नक़ल करते हैं कि आपने एक मर्तबा इर्शाद फ़र्माया, बताओ अगर किसी शख़्स के दरवाज़े पर एक नहर जारी हो, जिस में वह पांच मर्तबा रोज़ाना ग़ुस्ल करता हो, क्या उसके बदन पर कुछ मैल बाक़ी रहेगा ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि यही हाल पांचों नमाज़ों का है कि अल्लाह जल्ले शानुहू इनकी वजह से गुनाहों को ज़ायल[5] कर देते हैं।[1]

(५) عَنْ جَابِرٍؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الصَّلَوٰتِ الْخَمْسِ كَمَثَلِ نَهْرٍ جَارٍ غَمْرٍ عَلٰى بَابِ اَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ رواه مسلم كذا فى الترغيب۔

---

1. पित, 2. मुनब्बिहात इब्ने हजर, 3. मुक़ाबले में,
4. नुक़सान, 5. ख़त्म कर देना,

4. ब. 'हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि पांचों नमाज़ों की मिसाल ऐसी है कि किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो जिस का पानी जारी हो और बहुत गहरा हो, उस में रोज़ाना पांच दफ़ा ग़ुस्ल करे।'

फ़— जारी पानी गंदगी वग़ैरह से पाक होता है और पानी जितना भी गहरा होगा, उतना ही साफ़-शफ़्फ़ाफ़ होगा, इसीलिए इस हदीस में इसका जारी होना और गहरा होना फ़र्माया गया है और जितने साफ़ पानी से आदमी ग़ुस्ल करेगा, उतनी ही सफ़ाई बदन पर आएगी। इसी तरह नमाज़ों की वजह से अगर आदाब की रिआयत रखते हुए पढ़ी जाएं, तो गुनाहों से सफ़ाई हासिल होती है। जिस क़िस्म का मज़्मून इन दोनों हदीसों में इर्शाद हुआ है इसी क़िस्म का मज़्मून कई हदीसों में मुख़्तलिफ़ सहाबा रज़ि० से मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में नक़ल किया गया है।

अबूसईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल किया गया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, पांचों नमाज़ें दर्मियानी औक़ात के लिए कफ़्फ़ारा हैं यानी एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो सग़ीरा गुनाह होते हैं वह नमाज़ की बरकत से माफ़ हो जाते हैं। इसके बाद हज़ुर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मसलन एक शख़्स का कोई कारख़ाना है, जिसमें वह कुछ कारोबार करता है, जिस की वजह से उसके बदन पर कुछ गर्द व ग़ुबार, मैल-कुचैल लग जाता है और उस के कारख़ाने और मकान के दर्मियान में पांच नहरें पड़ती हैं। जब वह कारख़ाने से घर जाता है तो हर नहर पर ग़ुस्ल करता है, इसी तरह से पांचों नमाज़ों का हाल है कि जब कभी दर्मियानी औक़ात में कुछ ख़ता लग़्ज़िश वग़ैरह हो जाती है, तो नमाज़ों में दुआ-इस्तग़फ़ार करने से अल्लाह जल्ले शानुहू बिल्कुल उसको माफ़ फ़र्मा देते हैं। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़्सूद इस क़िस्म की मिसालों से इस अम्र[1] का समझा देना है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने नमाज़ को गुनाहों की माफ़ी में बहुत क़वी तासीर अता फ़र्मायी है और चूंकि मिसाल से बात ज़रा अच्छी तरह समझ में आ जाती है, इसलिए मुख़्तलिफ़ मिसालों से हुज़ूर सल्ल० ने इस मज़्मून को वाज़ेह फ़र्मा दिया है। अल्लाह जल्ले शानुहू की इस रहमत और वुस्अते मग़्फ़िरत और लुत्फ़ व इनआम और करम से हम लोग फ़ायदा न उठाएं तो किसी का क्या नुक़्सान है, अपना ही कुछ खोते हैं। हम लोग गुनाह करते हैं, ना-फ़र्मानियां करते हैं, हुक्म उदूलियां[2] करते हैं, तामीले इर्शाद में कोताहियां करते हैं। उसका मुक़्तज़ा[3] यह था

---

1. बात, मामला, 2. ना-फ़र्मानियां, 3. तक़ाज़ा,

कि क़ादिर, आदिल बादशाह के यहां ज़रूर सज़ा होती और अपने किए को भुगतते, मगर अल्लाह के करम के क़ुर्बान कि जिसने अपनी ना-फ़र्मानियां और हुक्म उदूलियां करने की तलाफ़ी[1] का तरीक़ा भी बता दिया, अगर हम उस से नफ़ा हासिल न करें तो हमारी हिमाक़त है। हक़ तआला शानुहू की रहमत और लुत्फ़ तो अता के वास्ते बहाने ढूंढते हैं।

एक हदीस में इर्शाद है कि जो शख़्स सोते हुए यह इरादा करे कि तहज्जुद पढ़ूंगा और फिर आंख न खुले तो तहज्जुद का सवाब उसको मिलेगा और सोना मुफ़्त में रहा, क्या ठिकाना है अल्लाह की देन और अता का और जो करीम इस तरह अताएं करता हो, उससे न लेना कितनी सख़्त मेहरूमी और कितना ज़बरदस्त नुक़्सान है।

हर परेशानी के वक़्त नमाज़ का सहारा

(५) عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ فَزِعَ إِلَى الصَّلٰوةِ (رواه احمد وابوداؤد وابن جرير كذا في الدر المنثور)

5. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० इर्शाद फ़र्माते हैं कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब कोई सख़्त अम्र पेश आता था तो नमाज़ की तरफ़ फ़ौरन मुतवज्जह होते थे।

फ़— नमाज़ अल्लाह की बड़ी रहमत है, इसलिए हर परेशानी के वक़्त में उधर मुतवज्जह हो जाना गोया अल्लाह की रहमत की तरफ़ मुतवज्जह हो जाना है और जब रहमते इलाही मुसाइद[2] व मददगार हो तो फिर क्या मजाल है किसी परेशानी की कि बाक़ी रहे। बहुत सी रिवायतों में मुख़्तलिफ़ तौर से यह मज़्मून वारिद हुआ है। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन जो हर क़दम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इत्तिबाअ फ़र्माने वाले हैं, उनके हालात में भी यह चीज़ नक़ल की गयी है।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि जब आंधी चलती तो हुज़ूर सल्ल० फ़ौरन मस्जिद तश्रीफ़ ले जाते थे और जब तक आंधी बन्द न हो जाती, मस्जिद से न निकलते। इसी तरह जब सूरज या चांद ग्रहण हो जाता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

1. पूरा करना, तर्ग़ीब, 2. मददगार,

फ़ौरन नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते।

हज़रत सुहैब रज़ि० हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि पहले अंबिया का भी यही मामूल था कि हर परेशानी के वक़्त नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते थे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा सफ़र में थे, रास्ते में इत्तिलाअ मिली कि बेटे का इंतिक़ाल हो गया। ऊंट से उतरे, दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर इन्ना लिल्लाहि व इन्हा इलैहि राजिऊन पढ़ा और फिर फ़र्माया कि हमने वह किया, जिस का अल्लाह तआला ने हुक्म फ़र्माया है, और क़ुरआन पाक की आयत 'वस्तईनू बिस्सब्रि वस्सलाति' तिलावत की।

एक और क़िस्सा इसी क़िस्म का नक़ल किया गया है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में उनके भाई क़ुस्म के इंतिक़ाल की ख़बर मिली, रास्ते से एक तरफ़ को हो कर ऊंट से उतरे, दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और अत्तहीयात में बहुत देर तक दुआएं पढ़ते रहे, इसके बाद उठे और ऊंट पर सवार हुए और क़ुरआन पाक की आयत 'वस्तईनू बिस्सब्रि वस्सलाति व इन्न हा ल कबी र तुन इल्ला अलल ख़ाशिईन०' (और मदद हासिल करो सब्र के साथ और नमाज़ के साथ और बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है, मगर जिन के दिलों में ख़ुशूअ है, उन पर कुछ दुश्वार नहीं।) तिलावत फ़र्मायी। ख़ुशूअ का बयान तीसरे बाब में मुफ़स्सल आ रहा है।

इन्हीं का एक और क़िस्सा है कि अज़्वाजे मुतह्हरात[1] में से किसी के इंतिक़ाल की ख़बर मिली, तो सज्दे में गिर गये। किसी ने दर्याफ़्त किया कि यह क्या बात थी। आप ने फ़र्माया कि हुज़ूर सल्ल० का हम को यही इर्शाद है कि जब कोई हादसा देखो तो सज्दे में (यानी नमाज़ में) मश्ग़ूल हो जाओ। इससे बड़ा हादसा और क्या होगा कि उम्मुल मोमिनीन रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया। (अबू दाऊद)

हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल का वक़्त जब क़रीब आया, तो जो लोग वहां मौजूद थे, उनसे फ़र्माया कि मैं हर शख़्स को इस से रोकता हूं कि वह मुझे रोये और जब मेरी रूह निकल जाए तो हर शख़्स वुज़ू करे और अच्छी तरह से आदाब की रिआयत रखते हुए वुज़ू करे, फिर मस्जिद में जाए और नमाज़ पढ़कर मेरे वास्ते इस्तग़फ़ार करे, इसलिए कि अल्लाह जल्ले शानुहू न 'वस्तईनू बिस्सिब्रि वस्सलाति' का हुक्म फ़र्माया है। इसके बाद मुझे क़ब्र के गढ़े में पहुंचा देना।

---

1. हुज़ूर सल्ल० की बीवियां,

हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० के ख़ाविंद हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० बीमार थे और एक दफ़ा ऐसी सक्ते[1] की सी हालत हो गयी कि सब ने इंतिक़ाल हो जाना तज्वीज़ कर लिया। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० उठीं और नमाज़ की नीयत बांध ली। नमाज़ से फ़ारिग़ हुईं तो हज़रत अब्दुर्रहमान को भी इफ़ाक़ा[2] हुआ। लोगों से पूछा, क्या मेरी हालत मौत की सी हो गयी थी ? लोगों ने अर्ज़ किया, जी हां ! फ़र्माया कि दो फ़रिश्ते मेरे पास आये और मुझ से कहा, चलो, अह्कमुल हाकिमीन[3] की बारगाह में तुम्हारा फ़ैसला होना है। वह मुझे ले जाने लगे, तो एक तीसरे फ़रिश्ते आये और उन दोनों से कहा कि तुम चले जाओ। यह उन लोगों में से हैं, जिनकी क़िस्मत में सआदत उसी वक़्त लिख दी गयी थी, जब यह मां के पेट में थे और अभी उनकी औलाद को उन से और फ़वाइद हासिल करने हैं। इसके बाद एक महीने तक हज़रत अब्दुर्रहमान ज़िंदा रहे, फिर इंतिक़ाल हुआ। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत नज़्र रह० कहते हैं कि दिन में एक मर्तबा सख़्त अंधेरा हो गया। मैं दौड़ा हुआ हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में भी कभी ऐसी नौबत आयी है ? उन्हों ने फ़र्माया कि ख़ुदा की पनाह ! हुज़ूर के ज़माने में तो ज़रा भी हवा तेज़ चलती थी तो हम सब मस्जिदों को दौड़ जाते थे कि कहीं क़यामत तो नहीं आ गयी। (अबूदाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० कहते हैं कि जब नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों पर किसी क़िस्म की तंगी पेश आती तो उनको नमाज़ का हुक्म फ़र्माया करते और यह आयत तिलावत फ़र्माते–

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا الآيَ

वअ्मुर अह्ल क बिस्सलाति वस्तबिर अलैहा ला नस्अलु क रिज़्क़ा०

'अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी इसका एहतमाम कीजिए। हम आप से रोज़ी कमवाना नहीं चाहते, रोज़ी तो आप को हम देंगे।'

---

1. एक बीमारी जिसमें आदमी मुर्दे जैसा बे-हरकत हो जाता है,
2. फ़ायदा,
3. सबसे बड़े हाकिम यानी अल्लाह,

सलातुल हाजत

एक हदीस में इर्शाद है कि जिस शख़्स को कोई भी ज़रूरत पेश आये, दीनी हो या दुन्यावी, इसका ताल्लुक़ मालिकुल मुल्क[1] से हो या किसी आदमी से, उसको चाहिए कि बहुत अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़े, फिर अल्लाह जल्ले शानुहू की हम्द व सना करे और फिर दरूद शरीफ़ पढ़े इसके बाद यह दुआ पढ़े तो इन्शाअल्लाह उस की हाजत ज़रूर पूरी होगी। दुआ यह है–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

ला इला ह इल्लल्लआहुल हलीमुल करीमु सुब्हानल्लाहि रब्बिल अर्शिल अज़ीमि अलहम्दु–लिल्लाहि रब्बिल आलमीनअ सअलु क मूजिबाति रह्मति क व अज़ाइ म मग़्फ़िर ति क वल् ग़नीम त मिन कुल्लि बिर्रिंव्व स्सला म त मिन कुल्लि इस्मिन ला त दअ़ ली ज़म्बन इल्ला ग़फ़र्तहु या अर्हमर्राहिमीन व ला हम्मन इल्ला फ़र्रज्त ह व ला हा जतन हि य ल क रिज़न इल्ला क़ज़ै त हा या अर्हमर्रा हि मीन०[2]

वह्ब बिन मुनब्बह कहते हैं कि अल्लाह तआला से हाजतें नमाज़ के ज़रिए तलब की जाती हैं और पहले लोगों को जब कोई हादसा पेश आता था, वह नमाज़ ही की तरफ़ मुतवज्जह होते थे जिस पर भी कोई हादसा गुज़रता, वह जल्दी से नमाज़ की तरफ़ रुजूअ़ करता।

मुसीबत व परेशानी के वक़्त नमाज़

कहते हैं कूफ़ा में एक क़ुली था, जिस पर लोगों को बहुत एतमाद था, अमीन[3] होने की वजह से ताजिरों का सामान रुपया वग़ैरह भी ले जाता। एक मर्तबा यह सफ़र में जा रहा था, रास्ते में एक शख़्स उसको मिला, पूछा, कहां का इरादा है ? क़ुली ने कहा, फ़्लां शहर का। वह कहने लगा, मुझे भी जाना है। मैं पांव चल सकता

---

1. यानी ख़ुदा, 2. तिर्मिज़ी, इब्नेमाजः 3. अमानतदार, 4. रास्ता,

तो तेरे साथ ही चलता। क्या यह मुम्किन है कि एक दीनार किराये पर मुझे ख़च्चर पर सवार कर ले। क़ुली ने इस को मंज़ूर कर लिया। वह सवार हो गया। रास्ते में एक दोराहा मिला। सवार ने पूछा, किधर को चलना चाहिये ? क़ुली ने शारए आम[1] का रास्ता बता दिया। सवार ने कहा कि यह दूसरा रास्ता क़रीब का है और जानवर के लिए भी सहूलत का है कि सब्ज़ा इस पर ख़ूब है। क़ुली ने कहा, मैंने यह रास्ता देखा नहीं। सवार ने कहा कि मैं बारहा[2] इस रास्ते पर चला हूं। क़ुली ने कहा, अच्छी बात है। उसी रास्ते को चलें। थोड़ी दूर चल कर वह रास्ता एक वह्शतनाक[3] जंगल पर ख़त्म हो गया, जहां बहुत से मुर्दे पड़े थे। वह शख़्स सवारी से उतरा और कमर से ख़ंजर निकाल कर, क़ुली के क़त्ल करने का इरादा किया। क़ुली ने कहा कि ऐसा न कर, यह ख़च्चर और सामान सब कुछ ले ले, यही तेरा मक़्सूद है। मुझे क़त्ल न कर। वह न माना और क़सम खा ली कि पहले तुझे मारूंगा, फिर यह सब कुछ लूंगा। उसने बहुत आजिज़ी की, मगर उस ज़ालिम ने एक भी न मानी। क़ुली ने कहा, अच्छा, मुझे दो रकअत आख़िरी नमाज़ पढ़ लेने दे। उसने क़ुबूल किया और हंस कर कहा, जल्दी से पढ़ ले, इन मुर्दों ने भी यही दर्ख़्वास्त की थी, मगर इनकी नमाज़ ने कुछ भी काम न दिया। उस क़ुली ने नमाज़ शुरू की। अलहम्दु शरीफ़ पढ़ कर सूरः भी याद न आयी। उधर वह ज़ालिम खड़ा तक़ाज़ा कर रहा था कि जल्द ख़त्म कर ले। बेइख़्तियार उसकी ज़ुबान पर यह आयत जारी हुई– 'अम्मंय्युजीबुल मुज़्तर्र इज़ा द आहू' यह पढ़ रहा था और रो रहा था कि एक सवार नमूदार हुआ जिसके सर पर चमकता हुआ ख़ौद (लोहे की टोपी) था। उसने नेज़ा मार कर उस ज़ालिम को हलाक कर दिया। जिस जगह वह ज़ालिम मर कर गिरा, आग के शोले उस जगह से उठने लगे। यह नमाज़ी बे-इख़्तियार सज्दे में गिर गया, अल्लाह का शुक्र अदा किया। नमाज़ के बाद उस सवार की तरफ़ दौड़ा। उससे पूछा कि ख़ुदा के वास्ते इतना बता दो कि तुम कौन हो, कैसे आये। उसने कहा कि 'अम्मंय्युजीबुल मुज़्तर्र' का ग़ुलाम हूं। अब तुम मामून[3] हो, जहां चाहे जाओ, यह कहकर चला गया।[4]

दर हक़ीक़त नमाज़ ऐसी ही बड़ी दौलत है कि अल्लाह की रज़ा के अलावा दुनिया के मसाइब[5] से भी अक्सर निजात का सबब होती है और सुकूने क़ल्ब तो हासिल होता ही है।

---

1. आम रास्ता, 2. बार-बार, 3. भयानक, 4. अम्न में, 5. नुज़्हतुल मजालिस, 6. मुसीबतें,

इब्ने सीरीन रह० कहते हैं कि अगर मुझे जन्नत के जाने में और दो रक्अत नमाज पढ़ने में इख़्तियार दे दिया जाए तो मैं दो रक्अत नमाज़ ही को इख़्तियार करूंगा, इसलिए कि जन्नत में जाना मेरी अपनी ख़ुशी के वास्ते है और दो रक्अत नमाज़ में मेरे मालिक की रज़ा (ख़ुशी) है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, बड़ा क़ाबिले रश्क है, वह मुसलमान जो हल्का फुल्का हो (यानी अह्ल व अयाल का ज़्यादा बोझ न हो), नमाज से वाफ़िर[1] का हिस्सा उस को मिला हो, रोज़ी सिर्फ़ गुज़ारे के क़ाबिल हो, जिस पर सब्र कर के उम्र गुज़ार दे, अल्लाह की इबादत अच्छी तरह करता हो, गुमनामी में पड़ा हो, जल्दी से मर जावे, न मीरास ज़्यादा हो, न रोने वाले ज़्यादा हों।[2]

एक हदीस में आया है कि अपने घर में नमाज़ कसरत से पढ़ा करो, घर की ख़ैर[3] में इज़ाफ़ा होगा।[4]

नमाज़ी के हर-हर उज़्व के गुनाहों की मग़फ़िरत

عَنْ اَبِیْ مُسْلِمِ التَّغْلَبِیِّ قَالَ دَخَلْتُ عَلٰی اَبِیْ اُمَامَةَ وَهُوَ فِی الْمَسْجِدِ فَقُلْتُ یَا اَبَا اُمَامَةَ اِنَّ رَجُلًا حَدَّثَنِیْ مِنْكَ اَنَّكَ سَمِعْتَ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ مَنْ تَوَضَّاَ فَاَسْبَغَ الْوُضُوْءَ غَسَلَ یَدَیْهِ وَوَجْهَهٗ وَمَسَحَ عَلٰی رَاْسِهٖ وَاُذُنَیْهِ ثُمَّ قَامَ اِلٰی صَلٰوةٍ مَفْرُوْضَةٍ غَفَرَ اللهُ لَهٗ فِیْ ذٰلِكَ الْیَوْمِ مَا مَشَتْ اِلَیْهِ رِجْلَاهُ وَقَبَضَتْ عَلَیْهِ یَدَاهُ وَسَمِعَتْ اِلَیْهِ اُذُنَاهُ وَنَظَرَتْ اِلَیْهِ عَیْنَاهُ وَحَدَّثَ بِهٖ نَفْسُهٗ مِنْ سُوْءٍ فَقَالَ وَاللهِ لَقَدْ سَمِعْتُهٗ مِنَ النَّبِیِّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مِرَارًا۔ رواه احمد والغالب علی سنده الحسن وتقدم له شواهد فی الوضوء کذا فی الترغیب قلت وقد روی معنی الحدیث عن ابی امامة بطرق فی مجمع الزوائد

6. 'अबूमुस्लिम रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत अबूउमामा रज़ि० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। वह मस्जिद में तश्रीफ़ फ़र्मा थे। मैंने अर्ज़ किया कि मुझसे एक साहब ने आप की तरफ़ से यह हदीस नक़ल की है कि आपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह इर्शाद सुना है, जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे और फिर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े तो हक़ तआला जल्ले शानुहू उस दिन के वह गुनाह, जो चलने से हुए हों और वह गुनाह जिन को उसके हाथों ने किया हो, और वह गुनाह जो उसके कानों से सादिर हुए हों और वह गुनाह जिनको उसने आंखों से किया हो और वह

---

1. बहुत ज़्यादा 2. अल-जामिउस्सग़ीर, 3. भलाई, 4. जामिउस्सग़ीर,

गुनाह जो उसके दिल में पैदा हुए हों, सबको माफ़ फ़र्मा देते हैं। हज़रत अबूउमामा रज़ि० ने फ़र्माया कि मैंने यह मज़्मून नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कई दफ़ा सुना है।'

फ़— यह मज़्मून भी कई सहाबा रज़ि०से नक़ल किया गया हैं। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रात अबू हुरैरह रज़ि०, हज़रत अनस रज़ि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन सुनाबही रज़ि०, हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ि० वग़ैरह हज़रात से मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ मुतअद्दिद रिवायत में ज़िक्र किया गया है और जो हज़रात अह्ले कश्फ़[1] होते हैं, उनको गुनाहों का ज़ायल हो जाना महसूस भी हो जाता है। चुनांचे हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा मशहूर है कि वुज़ू का पानी गिरते हुए यह महसूल फ़र्मा लेते थे कि कौन-सा गुनाह इसमें धुल रहा है।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत में नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद भी नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स को इस बात से मग़रूर नहीं होना चाहिए। इसका मतलब यह है कि इस घमंड पर कि नमाज़ से गुनाह माफ़ हो जाते हैं, गुनाहों पर जुर्अत नहीं करना चाहिए, इसलिए कि हम लोगों की नमाज़ और इबादत जैसी होती है, उनको अगर हक़ तआला जल्ले शानुहू अपने लुत्फ़ और करम से क़ुबूल फ़र्मा लें, तो उनका लुत्फ़ व एहसान व इनआम है, वरना हमारी इबादतों की हक़ीक़त हमें ख़ूब मालूम है, अगरचे नमाज़ का यह असर ज़रूरी है कि इससे गुनाह माफ़ होते हैं, मगर हमारी नमाज़ भी इस क़ाबिल है, इसका इल्म अल्लाह ही को है और दूसरी बात यह भी है कि इस वजह से गुनाह करना कि मेरा मालिक करीम है, माफ़ करने वाला है, इंतिहाई बे-ग़ैरती है, इसकी मिसाल तो ऐसी हुई कि कोई शख़्स यों कहे कि अपने इन बेटों से जो फ़्लां काम करे, दर गुज़र करता हूं, तो वह नालायक़ बेटे इस वजह से कि बाप ने दर गुज़र करने को कह दिया है। जान-जान कर उसकी ना-फ़र्मानियां करें।

नमाज़ की बरकत से शहीद से भी पहले जन्नत में जाना

(७) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ کَانَ رَجُلَانِ مِنْ بَلِیٍّ حَیٌّ مِّنْ قُضَاعَةَ اَسْلَمَا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَاسْتُشْهِدَ اَحَدُهُمَا وَاُخِّرَ الْاٰخَرُ سَنَةً قَالَ

1. यानी उनके बातिन की निगाहें खुली हुई होती हैं, जिनकी वजहसे उन्हें कुछ ऐसी चीज़ें भी नज़र आ जाती हैं जो आम लोगों को नज़र नहीं आतीं।

طَلْحَةَ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ فَرَأَيْتُ الْمُؤَخَّرَ مِنْهُمَا أُدْخِلَ الْجَنَّةَ قَبْلَ الشَّهِيْدِ فَتَعَجَّبْتُ لِذَالِكَ فَأَصْبَحْتُ فَذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْ ذُكِرَ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْ ذُكِرَ لِرَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ أَلَيْسَ قَدْ صَامَ بَعْدَهٗ رَمَضَانَ وَصَلّٰى سِتَّةَ أٰلَافِ رَكْعَةٍ وَكَذَا وَكَذَا رَكْعَةً صَلٰوةِ سَنَةٍ ۔ رواه احمد باسناد حسن ورواه ابن ماجة وابن حبان فی صحیحه والبیهقی کلهم عن طلحة بنحوه اطول منه وزاد ابن ماجة وابن حبان فی اٰخره فلما بینهما اطول ما بین السماء والارض کذا فی الترغیب ولفظ احمد فی النسخة التی بایدینا اوکذا اوکذا رکعة بلفظ او وفی الدر اخرجه مالك واحمد والنسائی وابن خزیمة والحاکم وصححه والبیهقی فی شعب الایمان عن عامر بن سعد قال سمعت سعدا وناسا من الصحابة یقولون کان رجلان اخوان فی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم وکان احدهما افضل من الاٰخر فتوفی الذی هو افضلهما ثم عمر الاٰخر بعده اربعین لیلة الحدیث وقد اخرج ابوداؤد بمعنی حدیث الباب من حدیث عبید بن خالد بلفظ قتل احدهما ومات الاٰخر بعده

7. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक क़बीले के दो सहाबी एक साथ मुसलमान हुए। उनमें से एक साहब जिहाद में शहीद हो गये और दूसरे साहब का एक साल बाद इंतिक़ाल हुआ। मैंने ख़्वाब में देखा कि वह साहब, जिन का एक साल बाद इंतिक़ाल हुआ था, उन शहीद से भी पहले जन्नत में दाख़िल हो गये तो मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि शहीद का दर्जा तो बहुत ऊंचा है, वह पहले जन्नत में दाख़िल होते। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ुद अर्ज़ किया या किसी और ने अर्ज़ किया तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जिन साहब का बाद में इंतिक़ाल हुआ, उनकी नेकियां नहीं देखते, कितनी ज़्यादा हो गयीं। एक रमज़ानुल मुबारक के पूरे रोज़े भी उनके ज़्यादा हुए और छ हज़ार और इतनी-इतनी रक्अतें नमाज़ की एक साल में उनकी बढ़ गयीं।'

फ़— अगर एक साल के तमाम महीने उनतीस दिन के लगाये जायें और सिर्फ़ फ़र्ज़ और वित्र की बीस रक्अतें शुमार की जायें तब भी छ हज़ार नौ सौ साठ रक्अतें होती हैं और जितने महीने तीस दिन के होंगे। बीस-बीस रक्अतों का इज़ाफ़ा होता रहेगा और सुन्नतें और नवाफ़िल भी शुमार किये जाएं, तो क्या ही पूछना।

इब्ने माजा में यह किस्सा और भी मुफ़स्सल आया है इसमें हज़रत तल्हा रज़ि० जो ख़्वाब देखने वाले हैं, वह ख़ुद बयान करते हैं कि एक क़बीले के दो आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक साथ आये और इकट्ठे ही मुसलमान हुए। एक साहब बहुत ज़्यादा मुस्तइद और हिम्मत वाले थे, वह एक लड़ाई में शहीद हो गये और दूसरे साहब का एक साल बाद इंतिक़ाल हुआ। मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हूं और वे दोनों साहब भी वहां हैं। अन्दर से एक शख़्स आए और उन साहब को जिनका एक साल बाद इंतिक़ाल हुआ था, अन्दर जाने की इजाज़त हो गयी और जो साहब शहीद हो गये थे, वह खड़े रह गये। थोड़ी देर बाद फिर अन्दर से एक शख़्स आए और उन शहीद को भी अंदर जाने की इजाज़त हो गयी और मुझ से यह कहा कि तुम्हारा अभी वक़्त नहीं आया, तुम वापस चले जाओ। मैंने सुबह को लोगों से अपने ख़्वाब का तज़्किरा किया, सबको इस पर ताज्जुब हुआ कि इन शहीद को बाद में क्यों इजाज़त हुई, इनको तो पहले होनी चाहिए थी। आख़िर हुज़ूर सल्ल० से लोगों ने इसका तज़्किरा किया तो हुज़ूर ने इर्शाद फ़र्माया कि इसमें तअज्जुब की क्या बात है? लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! वह शहीद भी हुए और बहुत ज़्यादा मुस्तइद और हिम्मत वाले भी थे और जन्नत में यह दूसरे साहब पहले दाख़िल हो गये। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, क्या उन्होंने एक साल इबादत ज़्यादा नहीं की ? अर्ज़ किया, बेशक की। इर्शाद फ़र्माया, क्या उन्होंने पूरे एक रमज़ान के रोज़े इनसे ज़्यादा नहीं रखे ? अर्ज़ किया गया, बेशक रखे। इर्शाद फ़र्माया,क्या उन्होंने इतने-इतने सज्दे एक साल की नमाज़ों के ज़्यादा नहीं किये ? अर्ज़ किया गया, बेशक किए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, फिर तो उन दोनों में आसमान व ज़मीन का फ़र्क़ हो गया।

इस नौअ[1] के क़िस्से कई लोगों के साथ पेश आये। अबूदाऊद शरीफ़ में दो सहाबा रज़ि० का क़िस्सा इसी किस्म का सिर्फ़ आठ दिन के फ़र्क़ से ज़िक्र किया गया है कि दूसरे साहब का इंतिक़ाल एक हफ़्ते बाद हुआ। फिर भी वह जन्नत में पहले दाख़िल हुए। हक़ीक़त में हम लोगों को इस का अंदाज़ा नहीं कि नमाज़ कितनी क़ीमती चीज़ है। आख़िर कोई तो बात है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी आंखों की ठंडक नमाज़ में बतलायी है।[2] हुज़ूर सल्ल० की आंख की ठंडक जो इंतिहाई मुहब्बत की अलामत है मामूली चीज़ नहीं।

---

1. किस्म, 2. इस हदीस का ज़िक्र किताब में कई जगह आएगा। यह रिवायत अहमद, नसई, हाकिम, बैहक़ी ने हज़रत अनस रज़ि० के हवाले से नक़ल किया है। (जामिउस्सग़ीर)

एक हदीस में आया है कि दो भाई थे। उनमें से एक चालीस रोज पहले इंतिक़ाल कर गया। दूसरे भाई का चालीस रोज बाद इंतिक़ाल हुआ पहले भाई ज़्यादा बुज़ुर्ग थे। लोगों ने उन को बहुत बढ़ाना शुरू कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया क्या दूसरे भाई मुसलमान न थे ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि बेशक मुसलमान थे, मगर मामूली दर्जे में थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, तुम्हें क्या मालूम कि इन चालीस दिन की नमाज़ों में उनको किस दर्जे तक पहुंचा दिया है। नमाज़ की मिसाल एक मीठी और गहरी नहर की सी है जो दरवाज़े पर जारी हो और आदमी पांच दफ़ा उसमें नहाता हो, तो उसके बदन पर क्या मैल रह सकता है। इसके बाद फिर दोबारा हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम्हें क्या मालूम कि उस की नमाज़ों ने, जो बाद में पढ़ी गयीं, उसको किस दर्जे तक पहुंचा दिया।[1]

फ़रिश्ते का एलान कि नमाज़ के ज़रिए अपनी आग बुझालो

(٨) عَنْ اِبْنِ مَسْعُوْدٍ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَالَ يُبْعَثُ مُنَادٍ عِنْدَ حَضْرَةِ كُلِّ صَلٰوةٍ فَيَقُوْلُ يَا بَنِيْ اٰدَمَ قُوْمُوْا فَاَطْفِئُوْا مَا اَوْقَدْتُمْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ فَيَقُوْمُوْنَ فَيَتَطَهَّرُوْنَ وَيُصَلُّوْنَ الظُّهْرَ فَيُغْفَرُ لَهُمْ مَا بَيْنَهُمَا فَاِذَا حَضَرَتِ الْعَصْرُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ فَاِذَا حَضَرَتِ الْمَغْرِبُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ فَاِذَا حَضَرَتِ الْعَتَمَةُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ فَيَنَامُوْنَ فَمُدْلِجٌ فِيْ خَيْرٍ وَّمُدْلِجٌ فِيْ شَرٍّ ـ رواه الطبراني في الكبير كذا في الترغيب۔

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब नमाज़ का वक़्त आता है तो एक फ़रिश्ता एलान करता है कि ऐ आदम की औलाद ! उठो और जहन्नम की उस आग को जिसे तुमने (गुनाहों की बदौलत) अपने ऊपर जलाना शुरू कर दिया है, बुझाओ। चुनांचे (दीनदार लोग) उठते हैं, वुज़ू करते हैं, ज़ुहर की नमाज़ पढ़ते हैं, जिसकी वजह से उनके गुनाहों की (सुबह से ज़ुहर तक की) मग़फ़िरत

---

1. मुंज़री कहते हैं कि मालिक की रिवायत में एक लफ़्ज़ और है, अहमद ने हासन सनदों के साथ बयान किया है, नसई और इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी सहीह में रिवायत किया है,

कर दी जाती है। इसी तरह फिर अस्र के वक़्त फिर मग़्रिब के वक़्त फिर इशा के वक़्त (ग़रज़ हर नमाज के वक़्त यही सूरत होती है)। इशा के बाद लोग सोने में मश्ग़ूल हो जाते हैं। इसके बाद अंधेरे में बाज़ लोग बुराइयों (ज़िनाकारी, बदकारी, चोरी वग़ैरह) की तरफ़ चल देते हैं और बाज़ लोग भलाइयों (नमाज़, वज़ीफ़ा, ज़िक्र वग़ैरह) की तरफ़ चलने लगते हैं।'

फ़ायदा— हदीस की किताबों में बहुत कसरत से यह मज़्मून आया है कि अल्लाह जल्ले शानुहू अपने लुत्फ़ से नमाज़ की बदौलत गुनाहों को माफ़ फ़र्माते हैं और नमाज़ में चूंकि इस्तिग़फ़ार ख़ुद मौजूद है, जैसा कि ऊपर गुज़रा, इसलिए सग़ीरा और कबीरा हर क़िस्म के गुनाह इसमें दाख़िल हो जाते हैं, बशर्ते कि दिल से गुनाहों पर नदामत[1] हो। ख़ुद हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है-

أَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ

अक़िमिस्सलात त र फ़यिन्नहारि व ज़ुल फ़म मिनल्लैलि इन्नल ह स नाति युज़्हिब्न स्सय्यिआति॰ जैसा कि हदीस नं॰ 3 में गुज़रा।

हज़रत सल्मान रज़ि॰ एक बड़े मशहूर सहाबी हैं। वह फ़र्माते हैं कि जब इशा की नमाज़ हो लेती है, तो तमाम आदमी तीन जमाअतों में मुंक़सिम हो जाते हैं-

1. एक वह जमाअत है जिस के लिए यह रात नेमत है और कमाई है और भलाई है। यह वह हज़रात हैं जो रात की फ़ुर्सत को ग़नीमत समझते हैं और जो लोग अपने-अपने राहत व आराम और सोने में मश्ग़ूल हो जाते हैं तो यह लोग नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते हैं, इनकी रात इनके लिए अज्र व सवाब बन जाती है।

2. दूसरी वह जमाअत है जिसके लिए रात वबाल है, अज़ाब है, यह वह जमाअत है जो रात की तंहाई और फ़ुर्सत को ग़नीमत समझती है और गुनाहों में लग जाती है। उनकी रात उन पर वबाल बन जाती है।

3. तीसरी वह जमाअत है जो इशा की नमाज़ पढ़कर सो जाती है। उसके लिए न वबाल है न कमाई, न कुछ गया, न आया।[2]

---

1. शर्मिन्दगी, 2. दुर्रेमंसूर,

नमाज़ी की मग़्फ़िरत और जन्नत में दाखिले की ज़िम्मेदारी

(٩) عن أبي قتادة بن ربعي قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الله تبارك وتعالى إني افترضت على أمتك خمس صلوات وعهدت عندي عهدا أنه من حافظ عليهن لوقتهن أدخلته الجنة في عهدي ومن لم يحافظ عليهن فلا عهد له عندي كذا في الدر المنثور رواية أبي داود وابن ماجة وفيه أيضا أخرج مالك وابن أبي شيبة وأحمد وأبو داود والنسائي وابن ماجة وابن حبان والبيهقي عن عبادة بن الصامت فذكر معنى حديث الباب مرفوعا بأطول منه

9. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू ने यह फ़र्माया कि मैंने तुम्हारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की है और इसका मैंने अपने लिए अह्द कर लिया है कि जो शख़्स इन पांचों नमाज़ों को इनके वक़्त पर अदा करने का एहतमाम करे, उसको अपनी ज़िम्मेदारी पर जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो इन नमाज़ों का एहतमाम न करे तो मुझ पर इस की कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

फ़– एक दूसरी हदीस में यह मज़्मून और वज़ाहत[1] से आया है कि हक़ तआला शानुहू ने पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़र्मायी हैं। जो शख़्स इन में लापरवाही से किसी क़िस्म की कोताही न करे, अच्छी तरह वुज़ू करे और वक़्त पर अदा करे ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से पढ़े, हक़ तआला शानुहू का अह्द है कि उसको जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़र्माएंगे और जो शख़्स ऐसा न करे, अल्लाह तआला का कोई अह्द उससे नहीं, चाहे उसकी मग़्फ़िरत फ़र्माएं, चाहें अज़ाब दें। कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है नमाज़ की कि उसके एहतमाम से अल्लाह के अह्द में और ज़िम्मेदारी में आदमी दाख़िल हो जाता है। हम देखते हैं कि कोई मामूली-सा हाकिम या दौलतमन्द किसी शख़्स को इत्मीनान दिला दे या किसी मुतालबे का ज़िम्मेदार हो जाए या किसी क़िस्म की ज़मानत कर ले तो वह कितना मुत्मइन और ख़ुश होता है और उस हाकिम का किस क़दर एहसान मंद और गरवीदा[2] बन जाता है। यहां एक मामूली इबादत पर जिसमें कुछ मशक़्क़त भी नहीं है, मालिकुल मुल्क दो जहां का बादशाह अह्द करता है। फिर भी लोग इस चीज़ से ग़फ़लत और लापरवाही करते हैं, इसमें किसी का क्या नुक़्सान है, अपनी ही कम-नसीबी और अपना ही ज़रर[3] है।

---

1. खुले तौर पर, 2. मोही, 3. नुक़्सान,

दो रक्अत नमाज़ हज़ारों रुपये से ज़्यादा क़ीमती है

(١٠) عَنِ ابْنِ سَلْمَانَ اَنَّ رَجُلًا مِّنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَهُ قَالَ لَمَّا فَتَحْنَا خَيْبَرَ اَخْرَجُوْا غَنَائِمَهُمْ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لَقَدْ رَبِحْتُ رِبْحًا مَا رَبِحَ الْيَوْمَ مِثْلَهُ اَحَدٌ مِّنْ اَهْلِ الْوَادِيْ قَالَ وَيْحَكَ وَمَا رَبِحْتَ قَالَ مَازِلْتُ اَبِيْعُ وَاَبْتَاعُ حَتّٰى رَبِحْتُ ثَلٰثَمِائَةِ اُوْقِيَةٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا اُنَبِّئُكَ بِخَيْرِ رَجُلٍ رَبِحَ قَالَ مَا هُوَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الصَّلٰوةِ. اخرجه ابوداؤد وسكت عنه المنذري.

10. एक सहाबी फ़र्माते हैं कि हम लोग लड़ाई में जब ख़ैबर को फ़त्ह कर चुके तो लोगों ने अपने माले ग़नीमत को निकाला, जिसमें मुतफ़र्रिक़[2] सामान था और क़ैदी थे और ख़रीद व फ़रोख़्त शुरू हो गयी (कि हर शख़्स अपनी ज़रूरियात ख़रीदने लगा, दूसरी ज़ाइद चीज़ें फ़रोख़्त करने लगा) इतने में एक सहाबी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मुझे आज की इस तिजारत में इस क़दर नफ़ा हुआ कि सारी जमाअत में से किसी को भी इतना नफ़ा नहीं मिल सका। हुज़ूर सल्ल० ने ताज्जुब से पूछा कि कितना कमाया ? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० ! मैं सामान ख़रीदता रहा और बेचता रहा, जिसमें तीन सौ औक़िया चांदी नफ़ा में बची। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मैं तुम्हें बेहतरीन नफ़ा की चीज़ बताऊं ? उन्होंने अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल० ज़रूर बताएं। इर्शाद फ़र्माया कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रक्अत नफ़्ल।

फ़ायदा– एक औक़िया चालीस दिर्हम का होता है और एक दिर्हम चार आने का, तो इस हिसाब से तीन हज़ार रुपए हुए जिसके मुक़ाबले में दो जहान के बादशाह का इर्शाद है कि यह क्या नफ़ा हुआ। हक़ीक़ी नफ़ा वह है जो हमेशा-2 के लिए रहने वाला है और कभी न ख़त्म न होने वाला है। अगर हक़ीक़त में हम लोगों के ईमान ऐसे ही हो जाएं और दो रक्अत नमाज़ के मुक़ाबले में तीन हज़ार

---

1. कंज़ुल उम्माल, 2. बहुत, कई,

रुपए की वकअत न रहे तो फिर वाकई ज़िंदगी का लुत्फ़ है और हक़ यह है कि नमाज़ है ही ऐसी दौलत।

नबी अलैहिस्सलाम की आख़िरी वसीयत

इसी वजह से हुज़ूरे अक्दस सय्यदुल बशर फ़ख़्रे रुसुल ने अपनी आंखों की ठंडक नमाज़ में बतलायी है और विसाल के वक़्त आख़िरी वसीयत जो फ़र्मायी है, उसमें नमाज़ के एहतमाम का हुक्म फ़र्माया है।[1] मुतअद्दिद[2] हदीसों में इसकी वसीयत मज़्कूर है। मिनजुम्ला इनके हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि आख़िरी वक़्त में जब ज़ुबाने मुबारक से पूरे लफ़्ज़ नहीं निकल रहे थे, उस वक़्त भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ और गुलामों के हुक़ूक़ की ताकीद फ़र्मायी थी। हज़रत अली रज़ि० से भी यही नकल किया गया है कि आख़िरी कलाम हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमाज़ की ताकीद और गुलामों के बारे में अल्लाह से डरने का हुक्म था।[1]

नमाज़े इश्राक़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द[3] की तरफ़ एक मर्तबा जिहाद के लिए लश्कर भेजा जो बहुत ही जल्दी वापस लौट आया और साथ ही बहुत सारा माले ग़नीमत लेकर आया। लोगों को बड़ा ताज्जुब हुआ कि इतनी ज़रा सी मुद्दत में ऐसी बड़ी कामियाबी और माल व दौलत के साथ वापस आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं तुम्हें इससे भी कम वक़्त में इस माल से बहुत ज़्यादा ग़नीमत और दौलत कमाने वाली जमाअत बताऊं। ये वह लोग है जो सुबह की नमाज़ में जमाअत में शरीक हों और आफ़्ताब निकलने तक उसी जगह बैठे रहें। आफ़्ताब निकलने के बाद (जब मक्रूह वक़्त जो तक़रीबन 20 मिनट रहता है, निकल जाए) तो दो रक्अत (इश्राक़ की) नमाज़ पढ़ें। यह लोग बहुत थोड़े से वक़्त में बहुत ज़्यादा दौलत कमाने वाले हैं।

हज़रत शक़ीक़ बल्ख़ी रह० मशहूर सूफ़ी और बुज़ुर्ग हैं, फ़र्माते हैं कि हमने पांच चीज़ें तलाश कीं, उनको पांच जगह पाया–

---

1. जामिउस्सग़ीर, 2. बहुतसी–कई, 3. अरब का एक रेगिस्तानी इलाक़ा,

1. रोज़ी की बरकत चाश्त की नमाज़ में मिली,

2. क़ब्र की रोशनी तहज्जुद की नमाज़ में मिली,

3. मुन्किर-नकीर के सवाल का जवाब तलब किया, तो उसको क़िरात में पाया,

4. पुल सिरात का सहूलत से पार होना रोज़ा और सद्क़ा में पाया, और,

5. अर्श का साया ख़लवत में पाया।

हदीस की किताबों में नमाज़ के बारे में बहुत ही ताकीद और बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, उन सब का अहाता करना मुश्किल है। तबर्रुकन चन्द अहादीस का सिर्फ़ तर्जुमा लिखा जाता है।

नमाज़ की ताकीद व फ़ज़ीलत पर मुख़्तसर चहल हदीस

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने मेरी उम्मत पर सब चीज़ों से पहले नमाज़ फ़र्ज़ की और क़यामत में सबसे पहले नमाज़ ही का हिसाब होगा।

2. नमाज़ के बारे में अल्लाह से डरो, नमाज़ के बारे में अल्लाह से डरो, नमाज़ के बारे में अल्लाह से डरो।

3. आदमी और शिर्क के दर्मियान नमाज़ ही हाइल[1] है।

4. इस्लाम की अलामत नमाज़ है। जो शख़्स दिल को फ़ारिग़ करके और औक़ाते मुस्तहिब्बात की रियायत रखकर नमाज़ पढ़े, वह मोमिन है।

5. हक़ तआला शानुहू ने कोई चीज़ ईमान और नमाज़ से अफ़ज़ल फ़र्ज़ नहीं की। अगर इससे अफ़ज़ल किसी और चीज़ को फ़र्ज़ करते तो फ़रिश्तों को इसका हुक्म देते। फ़रिश्ते दिन-रात कोई रुकूअ में है, कोई सज्दे में।

6. नमाज़ दीन का स्तून है।

---

1. रूकावट, 2. नुज़हतुल मजालिस,

7. नमाज़ शैतान का मुंह काला करती है।

8. नमाज़ मोमिन का नूर है।

9. नमाज़ अफ़ज़ल जिहाद है।

10. जब आदमी नमाज़ में दाख़िल होता है तो हक़ तआला शानुहू उसकी तरफ़ पूरी तवज्जोह फ़र्माते हैं। जब वह नमाज़ से हट जाता है तो वह भी तवज्जोह हटा लेते हैं।

11. जब कोई आफ़त आसमान से उतरती है तो मस्जिद के आबाद करने वालों से हट जाती है।

12. अगर आदमी किसी वजह से जहन्नम में जाता है, तो उसकी आग सज्दो की जगह को नहीं खाती।

13. अल्लाह ने सज्दे की जगह को आग पर हराम फ़र्मा दिया है।

14. सबसे ज़्यादा पसंदीदा अमल अल्लाह के नज़दीक वह नमाज़ है जो वक़्त पर पढ़ी जाए।

15. अल्लाह जल्ले शानुहू को आदमी की सारी हालतों में सबसे ज़्यादा यह पसंद है कि उसको सज्दे में पड़ा हुआ देखें कि पेशानी ज़मीन से रगड़ रहा है।

16. अल्लाह जल्ले शानुहू के साथ आदमी को सबसे ज़्यादा क़ुर्ब सज्दे में होता है।

17. जन्नत की कुंजियां नमाज़ हैं।

18. जब आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और अल्लाह जल्ले शानुहू के और उस नमाज़ी के दर्मियान के पर्दे हट जाते हैं, जब तक कि खांसी वग़ैरह में मशग़ूल न हो।

19. नमाज़ी शहंशाह का दरवाज़ा खटखटाता है और यह क़ायदा है जो दरवाज़ा खटखटाता ही रहे, तो खुलता ही है।

20. नमाज़ का मर्तबा दीन में ऐसा है जैसा कि सर का दर्जा है बदन में।

21. नमाज़ दिल का नूर है जो अपने दिल को नूरानी बनाना चाहता है, (नमाज़ के ज़रिए से) बना ले।

22. जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू कर ले, उसके बाद ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ से दो या चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज या नफ़्ल पढ़कर अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहे, अल्लाह तआला शानुहू माफ़ फ़र्मा देते हैं।

23. ज़मीन के जिस हिस्से पर नमाज़ के ज़रिए से अल्लाह की याद की जाती है, वह हिस्सा ज़मीन के दूसरे टुकड़ों पर फ़ख़्र करता है।

24. जो शख़्स दो रक्अत नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआला से कोई दुआ मांगता है तो हक़ तआला शानुहू वह दुआ क़ुबूल फ़र्मा लेते हैं, चाहे फ़ौरन हो या किसी मस्लहत से कुछ देर के बाद, मगर क़ुबूल ज़रूर फ़र्माते हैं।

25. जो शख़्स तंहाई में दो रक्अत नमाज़ पढ़े जिसको अल्लाह और उसके फ़रिश्तों के सिवा कोई न देखे, तो उसको जहन्नुम की आग से बरी होने का परवाना मिल जाता है।

26. जो शख़्स एक फ़र्ज नमाज़ अदा करे, अल्लाह तआला शानुहू के यहां एक मक़्बूल दुआ उसकी हो जाती है।

27. जो पांचों नमाज़ों का एहतमाम करता रहे, उनके रुकूअ व सुजूद और वुज़ू वग़ैरह को एहतमाम के साथ अच्छी तरह से पूरा करता रहे, जन्नत उसके लिए वाजिब हो जाती है और दोज़ख़ उस पर हराम हो जाती है।

28. मुसलमान जब तक पांचों नमाज़ों का एहतमाम करता रहता है, शैतान उससे डरता रहता है और जब वह नमाज़ों में कोताही करने लगता है तो शैतान को उस पर जुरअत[1] हो जाती है और उसके बहकाने की तमा[2] करने लगता है।

29. सबसे अफ़्ज़ल अमलअव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ना है।

30. नमाज़ हर मुत्तक़ी की क़ुर्बानी है।

31. अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा नमाज़ को अव्वल वक़्त पढ़ना है।

32. सुबह को जो शख़्स नमाज़ को जाता है, उसके हाथ में ईमान का झंडा होता है और जो बाज़ार को जाता है, उसके हाथ में शैतान का झंडा होता है।

---

1. बे-ख़ौफ़ी, 2. लोभ,

33. ज़ुहर की नमाज़ से पहले चार रक्अतों का सवाब ऐसा है जैसा कि तहज्जुद की चार रक्अतों का।

34. ज़ुहर से पहले चार रक्अतें तहज्जुद की चार रक्अतों के बराबर शुमार होती है।

35. जब आदमी नमाज़ को खड़ा होता है तो रहमते इलाहिया उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाती है।

36. अफ़्ज़ल तरीन नमाज़ आधी रात की है, मगर उसके पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं।

37. मेरे पास हज़रत जिब्रील अलै० आए और कहने लगे, ऐ मुहम्मद सल्ल०! ख़्वाह कितना ही आप ज़िंदा रहें, आख़िर एक दिन मरना है और जिससे चाहें उससे मुहब्बत करें, आख़िर एक दिन उससे जुदा होना है और आप जिस क़िस्म का भी अमल करें (भला या बुरा) उस का बदला ज़रूर मिलेगा, इसमें कोई तरद्दुद[1] नहीं कि मोमिन की शराफ़त तहज्जुद की नमाज़ है और मोमिन की इज़्ज़त लोगों से इस्तग्ना[2] है।

38. आख़ीर रात की दो रक्अतें तमाम दुनिया से अफ़्ज़ल हैं। अगर मुझे मशक़्क़त का अंदेशा न होता तो उम्मत पर फ़र्ज़ कर देता।

39. तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो कि तहज्जुद सालिहीन[3] का तरीक़ा है और अल्लाह के क़ुर्ब का सबब है, तहज्जुद गुनाहों से रोकता है और ख़ताओं से माफ़ी का ज़रिया है, इससे बदन की तन्दुरुस्ती भी होती है।

40. हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि ऐ आदम की औलाद ! तू दिन के शुरु में चार रक्अतों से आजिज़ न बन, मैं तमाम दिन तेरे कामों की किफ़ायत करूंगा।

हदीस की किताबों में बहुत कसरत से नमाज़ के फ़ज़ाइल और तर्ग़ीबें ज़िक्र की गयी हैं। चालीस की अदद की रिआयत से इतने पर किफ़ायत की गई कि अगर कोई शख़्स उनको हिफ़्ज़[4] याद कर ले तो चालीस हदीसें याद करने की फ़ज़ीलत हासिल कर लेगा। हक़ यह है कि नमाज़ ऐसी बड़ी दौलत है कि इस की क़द्र वही कर सकता है, जिस को अल्लाह जल्ले शानुहू ने उसका मज़ा चखा दिया हो। इसी दौलत की वजह से हुज़ूर सल्ल० ने अपनी आंख की ठंडक इस में फ़र्मायी और इसी लज़्ज़त की वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात का अक्सर हिस्सा नमाज़

1. शुब्हा, 2. बे-परवाह होना, 3. भले लोग, 4. ज़ुबानी याद करना,

ही में गुज़ार देते थे। यही वजह है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विसाल के वक्त खासतौर से नमाज़ की वसीयत फ़र्मायी और इसके एहतमाम की ताकीद फ़र्मायी। मुतअद्दिद अहादीस में इर्शादे नबवी नक्ल किया गया, 'इत्तक़ुल्लाह फ़िस्सलाति' (नमाज़ के बारे में अल्लाह से डरते रहो।)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि 'तमाम आमाल में मुझे नमाज सबसे ज़्यादा महबूब है।'

हुज़ूर सल्ल० का एक रक्अत में पांच पारे का पढ़ना

एक सहाबी कहते हैं कि मैं एक रात मस्जिदे नबवी पर गुज़रा। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे। मुझे भी शौक़ हुआ। हुज़ूर सल्ल० के पीछे नीयत बांध ली। हुज़ूर सल्ल० सूर: बक़र: पढ़ रहे थे। मैंने ख़्याल किया कि सौ आयतों पर रुकूअ कर देंगे, मगर जब वह गुज़र गयीं और रुकूअ न किया तो मैंने सोचा कि दो सौ पर रुकूअ करेंगे, मगर वहां भी न किया तो मुझे ख़्याल हुआ कि सूर: के ख़त्म ही पर करेंगे। जब सूर: ख़त्म हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने कई मर्तबा 'अल्लाहुम्म लकल हम्दु' 'अल्लाहुम्म लकल हम्दु' पढ़ा और सूर: आले इम्रान शुरू कर दी। मैं सोच में पड़ गया। आख़िर मैं ने ख़्याल किया कि आख़िर इस के ख़त्म पर रुकूअ करेंगे ही। हुज़ूरे सल्ल० ने उस को ख़त्म फ़र्माया और तीन मर्तबा, 'अल्लाहुम्म लकल हम्दु' पढ़ा और सूर: माइद: शुरू कर दी और उसको ख़त्म कर के रुकूअ किया और रुकूअ में 'सुब्हा न रब्बियल अज़ीम' पढ़ते रहे और उसके साथ कुछ और भी पढ़ते थे जो समझ में न आया।

इसके बाद इसी तरह सज्दे में 'सुब्हा न रब्बियल आला' भी पढ़ते रहे। उस के साथ भी कुछ पढ़ते थे। इसके बाद दूसरी रक्अत में सूर: 'इन्आम' शुरू कर दी। मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ने की हिम्मत न कर सका और मजबूर हो कर चला आया। पहली रक्अत में तक़रीबन पांच सिपारे हुए और फिर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पढ़ना, जो निहायत इत्मीनान से तज्वीद[1] और तरतील[2] के साथ एक-एक आयत जुदा-जुदा कर के पढ़ते थे। ऐसी सूरत में कितनी लंबी रक्अत

1. हर्फ़ों की सही और साफ़ अदाएगी, 2. ठहर-ठहर कर,

हुई होगी। इन्हीं वुजूह[1] से आप के पांव पर नमाज़ पढ़ते-पढ़ते वरम आ जाता था, मगर जिस चीज की लज़्ज़त दिल में उतर जाती है, उसमें मशक़्क़त और तक्लीफ़ दुश्वार नहीं रहती।

अबूइस्हाक सबीई रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। सौ वर्ष की उम्र में इंतिक़ाल फ़र्माया। इस पर अफ़सोस किया करते थे कि बुढ़ापे और ज़ौफ़ की वजह से नमाज का लुत्फ़ जाता रहा। दो रकअतों में सिर्फ दो सूरतें-सूरः बकरः और सूरः आले इम्रान पढ़ी जाती हैं, ज़्यादा नहीं पढ़ा जाता।[2] (तिहज़ीबूल तेहज़ीब) यह दो सूरतें भी पौने चार पारे की हैं।

नमाज़ों का ज़ौक़ व शौक़

मुहम्मद बिन सिमाक रह० फ़र्माते है कि कूफ़ा में मेरा एक पड़ोसी था। उस के एक लड़का था, जो दिन को हमेशा रोजा रखता, और रात भर नमाज़ में और शौक़िया अश्आर में रहता था। वह सूख कर ऐसा हो गया कि सिर्फ हड्डी और चमड़ा रह गया। उस के वालिद ने मुझ से कहा कि तुम उसको ज़रा समझाओ। मैं एक मर्तबा अपने दरवाज़े पर बैठा हुआ था, वह सामने से गुज़रा। मैंने उस को बुलाया। वह आया, सलाम करके बैठ गया। मैंने कहना शुरू ही किया था कि वह कहने लगा, चचा, शायद आप मेहनत की कमी का मश्वरा देंगे। चचा जान ! मैंने इस मइल्ले के चंद लड़कों के साथ यह तह किया था कि देखें, कौन शख़्स इबादत में ज़्यादा कोशिश करे ? उन्होंने कोशिश और मेहनत की और अल्लाह तआला की तरफ़ बुला लिये गए। जब वह बुलाये गए तो बड़ी ख़ुशी और सुरुर के साथ गए। उनमें से मेरे सिवा कोई बाक़ी नहीं रहा। मेरा अमल दिन में दो बार उन पर ज़ाहिर होता होगा। वह क्या कहेंगे, जब इसमें कोताही पाएंगे। चचा जान ! उन जवानों ने बड़े-बड़े मुजाहदे किए, उनकी मेहनतें और मुजाहदे बयान करने लगा, जिनको सुन कर हम लोग मुतहय्यर[3] रह गए। इसके बाद वह लड़का उठ कर चला गया। तीसरे दिन हम ने सुना कि वह भी रुख़्सत हो गया।

राहमतुल्लाहि रहमतंव्वासिअतन (नुजहत) رحمہ اللہ رحمۃ واسعۃ

अब भी इस गए गुज़रे ज़माने में अल्लाह के बन्दे ऐसे देखे जाते हैं, जो रात का अक्सर हिस्सा नमाज़ में गुज़ार देते हैं और दिन में दीन के दूसरे कामों, तब्लीग़

1. वजहों, 2, तहज़ीबुत्तहज़ीब, 3. हैरत,

व तालीम में मुन्हमिक[1] रहते हैं।

हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी रह० के नामे-नामी से कौन शख़्स हिन्दुस्तान में ना-वाक़िफ़ होगा। उनके एक ख़लीफ़ा अब्दुल वाहिद लाहौरी ने एक दिन इर्शाद फ़र्माया, क्या जन्नत में नमाज़ न होगी ? किसी ने अर्ज़ किया, हज़रत ! जन्नत में नमाज़ क्यों हो ? वह तो आमाल के बदले की जगह है, न कि अमल करने की ? इस पर एक आह खींची और रोने लगे और फ़र्माया कि बग़ैर नमाज़ के जन्नत में क्यों कर गुज़रेगी ? ऐसे ही लोगों से दुनिया क़ायम है और ज़िंदगी को वसूल करने वाली हक़ीक़त में यही मुबारक हस्तियां है। अल्लाह जल्ले शानुहू अपने लुत्फ़ और अपने पर मर-मिटने वालों के तुफ़ैल से इस रू-स्याह को भी नवाज़ दे तो उसके लुतफ़े आम से क्या बईद है ?

एक पुर-लुत्फ़ क़िस्से पर इस फ़स्ल को ख़त्म करता हूं। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने मम्बहात में लिखा है, एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि मुझे दुनिया में तीन चीज़ें महबूब हैं- ख़ुश्बू, औरतें और मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है। हुज़ूर सल्ल० के पास चंद सहाबा रज़ि० तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने इर्शाद फ़र्माया, आपने सच फ़र्माया और मुझे तीन चीज़ें महबूब हैं,- आप के चेहरे का देखना, अपने माल को आप पर ख़र्च करना और यह कि मेरी बेटी आप के निकाह में है। हज़रत उमर रज़ि०ने फ़र्माया, सच है और मुझे तीन चीज़ें महबूब हैं- अम्र बिल मारूफ़ नह्यि अनिल मुन्कर (अच्छे कामों का हुक्म करना, और बुरे कामों से रोकना) और पुराना कपड़ा। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़र्माया, आप ने सच कहा और मुझे तीन चीज़ें महबूब हैं- भूखों को खिलाना, नंगों को कपड़ा पहनाना और क़ुरआन पाक की तिलावत करना। हज़रत अली रज़ि० ने इर्शाद फ़र्माया, आप ने सच फ़र्माया, और मुझे तीन चीज़ें पसन्द हैं, मेहमान की ख़िदमत, गर्मी का रोज़ा और दुश्मन पर तलवार। इतने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया कि मुझे हक़ तआला शानुहू ने भेजा है और फ़र्माया कि अगर मैं (यानी जिब्रील) दुनिया वालों में होता तो बताऊं मुझे क्या पसन्द होता। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि बताओ। अर्ज़ किया कि भूले हुओं को रास्ता बताना, ग़रीब इबादत करने वालों से मुहब्बत रखना और अयालदार मुफ़्लिसों की मदद करना और अल्लाह जल्ले शानुहू को बंदों की तीन चीज़ें पसंद हैं। (अल्लाह की राह में) ताक़त का ख़र्च करना (माल से हो या जान से) और गुनाह पर) नदामत

1. लगे रहते हैं,

के वक्त रोना और फ़ाके पर सब्र करना।

हाफ़िज इब्ने क़य्यिम 'जादुल मआद' में तहरीर फ़रमाते हैं कि नमाज रोजी को खींचने वाली है, सेहत की मुहाफ़िज[1] है बीमारियों को रफ़ा[2] करने वाली है, दिल को तक़्वीयत पहुंचाती, चेहरे को ख़ूबसूरत और मुनव्वर करती है, जान को फ़रहत पहुंचाती है, आज़ा में निशात[3] पैदा करती है, काहिली को दफ़ा करती है, शरहे सद्र[4] का सबब है, रूह की ग़िज़ा है, दिल को मुनव्वर करती है, अल्लाह के इनआम की मुहाफ़िज है, और अज़ाबे इलाही से हिफ़ाज़त का सबब है, शैतान को दूर करती है और रहमान से क़ुर्ब पैदा करती है। ग़रज़ रूह और बदन की सेहत की हिफ़ाज़त में उसको ख़ास दख़ल है और दोनों चीज़ों में इसकी अजीब तासीर हैं, नीज़ दुनिया और आख़िरत की मज़र्रतों को दूर करने में और दोनों जहान के मुनाफ़ा पैदा करने में उसको बहुत ख़ुसूसियत है।

फ़स्ले दोयम, नमाज़ के छोड़ने पर जो वईद और इताब हदीस में आया है, उसका बयान

हदीस की किताबों में नमाज न पढ़ने पर बहुत सख़्त-सख़्त अज़ाब ज़िक्र किए गए हैं। नमूने के तौर पर चंद हदीसें ज़िक्र की जाती हैं। यह सच्ची ख़बर देने वाले का एक इर्शाद भी समझदार के लिए काफ़ी था, मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त के क़ुर्बान कि आप ने कई कई तरह से और बार-बार इस चीज़ की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमाया कि उनके नाम लेवा उनकी उम्मत कहीं इसमें कोताही न करने लगे। फिर अफ़सोस है हमारे हाल पर कि हम हुज़ूर सल्ल० के इस एहतमाम के बावजूद नमाज़ का एहतमाम नहीं करते और बे-ग़ैरती और बे-हयाई से अपने को उम्मती और मुत्तबा-ए-रसूल सल्ल० और इस्लाम का धनी भी समझते हैं।

बन्दे और कुफ़्र के बीच नमाज़ ही आड़ है

(۱) عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلٰوةِ رواه احمد ومسلم وقال بين الرجل

1. हिफ़ाज़त करने वाली, 2. दूर करने वाली,
3. चुस्ती, फुरती, 4. सीना खोलना,

وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلٰوةِ ابوداؤد والنسائی ولفظه ليس بين العبد وبين الكفر الا ترك الصلوة والترمذی ولفظه قال بين الكفر والايمان ترك الصلوة وابن ماجة ولفظه قال بين العبد وبين الكفر ترك الصلوة كذا فی الترغيب للمنذری وقال السيوطی فی الدر لحديث جابر اخرجه ابن ابی شيبة واحمد وابوداؤد والترمذی وصححه والنسائی وابن ماجة وابن حبان الحاکم وصححه عن بُرَيْدَةَ مَرْفُوْعًا اَلْعَهْدُ الَّذِیْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلٰوةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ۔

1. 'हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ छोड़ना आदमी को कुफ़्र से मिला देता है। एक जगह इर्शाद है कि बन्दे को और कुफ़्र को मिलाने वाली चीज़ सिर्फ़ नमाज़ छोड़ना है। एक जगह इर्शाद है कि ईमान और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है।'

फ़— इस क़िस्म का मज़्मून और भी कई हदीसों में आया है। एक हदीस में आया है कि अब्र के दिन नमाज़ जल्दी पढ़ा करो। क्योंकि नमाज़ छोड़ने से आदमी काफ़िर हो जाता है, यानी कहीं ऐसा न हो कि अब्र की वजह से वक़्त का पता न चले और नमाज़ क़ज़ा हो जाए। उस को भी नमाज़ का छोड़ना इर्शाद फ़र्माया। कितनी सख़्त बात है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ के छोड़ने वालों पर कुफ़्र का हुक्म लगाते हैं, गो उलमा ने इस हदीस को इन्कार के साथ मुक़य्यद[1] फ़र्माया। मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद की फ़िक्र इतनी सख़्त चीज़ है कि जिस के दिल में ज़रा भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वक़अत[2] और हुज़ूर सल्ल० के इर्शादे गरामी की अहमियत होगी, उसके लिए यह इर्शादात निहायत सख़्त है। इस के अलावा बड़े-बड़े सहाबा रज़ि०, जैसा कि हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि०, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० वग़ैरह हज़रात का मज़हब यही है कि बिला उज़्र जान कर नमाज़ छोड़ने वाला काफ़िर है।

अइम्मा[3] में से हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल, इस्हाक़ बिन राहविया रहे, इब्ने मुबारक का भी यही मज़हब नक़ल किया जाता है। अल्लाहुम्म ह़िफ़ज़्ना मिन्हु० (तर्ग़ीब)।

---

1. इन्कार की शर्त के साथ क़ैद कर देना, 2. क़ीमत, अहमियत, 3. इमाम की जमा (बहुवचन),

टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाओ, तब भी नमाज़ न छोड़ना

(٢) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ أَوْصَانِي خَلِيلِي رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعِ خِصَالٍ فَقَالَ لَا تُشْرِكُوا بِاللّٰهِ شَيْئًا وَإِنْ قُطِعْتُمْ أَوْ حُرِّقْتُمْ أَوْ صُلِبْتُمْ وَلَا تَتْرُكُوا الصَّلٰوةَ مُتَعَمِّدِينَ فَمَنْ تَرَكَهَا مُتَعَمِّدًا فَقَدْ خَرَجَ مِنَ الْمِلَّةِ وَلَا تَرْكَبُوا الْمَعْصِيَةَ فَإِنَّهَا سَخَطُ اللّٰهِ وَلَا تَشْرَبُوا الْخَمْرَ فَإِنَّهَا رَأْسُ الْخَطَايَا كُلِّهَا الحديث رواه الطبراني و محمد بن نصر في كتاب الصلوة باسنادين لا باس بهما كذا في الترغيب وهكذا ذكره السيوطي في الدر المنثور وعزاه اليهما و في المشكوة برواية ابن ماجة عن ابي الدرداء نحوه

2. हजरत उबादा रजि० कहते हैं कि मुझे मेरे महबूब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सात नसीहतें कीं, जिनमें से चार यह हैं-

(1) अव्वल यह कि अल्लाह का शरीक किसी को न बनाओ, चाहे तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं या तुम जला दिये जाओ या सूली पर चढ़ा दिये जाओ।

(2) दूसरी यह कि जान कर नमाज़ न छोड़ो। जो जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ दे, वह मज़हब से निकल जाता है।

(3) तीसरे यह कि अल्लाह की नाफ़र्मानी न करो, इससे हक़ तआला नाराज़ हो जाते हैं।

(4) चौथी यह कि शराब न पियो कि वह सारी ख़ताओं की जड़ है।

फ़ायदा- एक दूसरी हदीस[1] में हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० भी इस किस्म का मज़्मून इर्शाद फ़र्माते हैं कि मुझे मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीयत फ़र्मायी कि अल्लाह का शरीक किसी को न करना, ख़्वाह तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाएं या आग में जला दिया जाए। दूसरी नमाज़ जान कर न छोड़ना। जो शख़्स जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ता है, उससे अल्लाह तआला शानुहू बरी उज़्ज़िम्मा[2] हैं। तीसरी शराब न पीना कि हर बुराई की कुंजी है।

---

1. मिश्कात, (सुनने इब्ने माजा के हवाले से), 2. ज़िम्मेदारी से अलग,

(٣) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ اَوْصَانِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بِعَشْرِ کَلِمَاتٍ قَالَ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰہِ شَیْئًا وَاِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتَ وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَیْكَ وَاِنْ اَمَرَاكَ اَنْ تَخْرُجَ مِنْ اَھْلِكَ وَمَالِكَ وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلٰوۃً مَّکْتُوْبَۃً مُّتَعَمِّدًا فَاِنَّ مَنْ تَرَكَ صَلٰوۃً مَّکْتُوْبَۃً مُّتَعَمِّدًا فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْہُ ذِمَّۃُ اللّٰہِ وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَاِنَّہٗ رَأْسُ کُلِّ فَاحِشَۃٍ وَاِیَّاكَ وَالْمَعْصِیَۃَ فَاِنَّ بِالْمَعْصِیَۃِ حَلَّ سَخَطُ اللّٰہِ وَاِیَّاكَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَاِنْ ھَلَكَ النَّاسُ وَاِنْ اَصَابَ النَّاسَ مَوْتٌ فَاثْبُتْ وَاَنْفِقْ عَلٰی اَھْلِكَ مِنْ طَوْلِكَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْھُمْ عَصَاكَ اَدَبًا وَاَخِفْھُمْ فِی اللّٰہِ رواہ احمد والطبرانی فی الکبیر واسناد احمد صحیح لو سلم من الانقطاع فان عبد الرحمن ابن جبیر لم یسمع من معاذ کذا فی الترغیب والیھا عزاہ السیوطی فی الدر ولم یذکر الانقطاع ثم قال واخرج الطبرانی عن امیمۃ

3. हज़रत मुआज़ रजि० फ़र्माते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दस बातों की वसीयत फ़र्मायी–

(1) यह कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, गो तू क़त्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए,

(2) वालिदैन की ना-फ़र्मानी न करना, गो वह तुझे इसका हुक्म करें कि बीवी को छोड़ दे या सारा माल ख़र्च कर दे,

(3) फ़र्ज़ नमाज़ जान कर न छोड़ना। जो शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ जान कर छोड़ देता है, अल्लाह का ज़िम्मा उससे बरी है,

(4) शराब न पीना कि यह हर बुराई और फ़ह्श[1] की जड़ है,

(5) अल्लाह की ना-फ़र्मानी न करना कि इससे अल्लाह तआला का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल होता है,

1. बेहयाई,

(6) लड़ाई में न भागना चाहे सब साथी मर जाएं,

(7) अगर किसी जगह वबा फैल जावे (जैसे ताऊन वग़ैरह) तो वहां से न भागना,

(8) अपने घर वालों पर ख़र्च करना,

(9) तंबीह के वास्ते उन पर से लकड़ी न हटाना,

(10) अल्लाह तआला से उनको डराते रहना।

फ़ायदा– लकड़ी न हटाने का मतलब यह है कि वह इससे बे-फ़िक्र न हों कि बाप तंबीह नहीं करता और मारता नहीं जो चाहो करते रहो, बल्कि उन्को हुदूदे शरआीया[1] के तहत में कभी-कभी मारते रहना चाहिए कि बग़ैर मार के अक्सर तंबीह नहीं होती। आजकल औलाद को शुरू में तो मुहब्बत के जोश में तंबीह नहीं की जाती, जब वह बुरी आदतों से पुख़्ता हो जाते हैं, तो फिर रोते-फिरते हैं, हालांकि यह औलाद के साथ मुहब्बत नहीं, सख़्त दुश्मनी है कि उसको बुरी आदतों से रोका न जाए और मार-पीट को मुहब्बत के ख़िलाफ़ समझा जाए। कौन समझदार इसको गवारा कर सकता है कि औलाद के फोड़े-फुंसी को बढ़ाया जाए और इस वजह से कि नश्तर लगाने से ज़ख़्म और तक्लीफ़ होगी, अमले जर्राही[2] न कराया जाए, बल्कि लाख बच्चा रोये, मुंह बनाये, भागे, बहरहाल नश्तर लगाना ही पड़ता है।

बच्चों की तर्बियत और नमाज़ की ताकीद

बहुत सी हदीसों में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नकल किया गया है कि बच्चे को सात वर्ष की उम्र में नमाज़ का हुक्म करो और दस वर्ष की उम्र में नमाज न पढ़ने पर मारो।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बच्चों की नमाज़ की निगहबानी किया करो और अच्छी बातों की आदत उनको डालो।

हज़रत लुक़मान हकीम का इर्शाद है कि बाप की मार औलाद के लिए ऐसी है, जैसा कि खेती के लिए पानी।[4]

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि कोई शख़्स अपनी औलाद को तंबीह करे, यह

---

1. शरीअत की हदें, 2. आपरेशन, 3. दुर्रे मंसूर, 4. दुर्रे मंसूर

एक साअ़ सद्क़ा करने से बेहतर है।[1] एक साअ़ तक़रीबन साढ़े तीन सेर ग़ल्ले का होता है।

एक हदीस में इर्शाद है कि अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहमत करे जो घर वालों को तंबीह के वास्ते घर में कोड़ा लटकाये रखे।[2]

एक हदीस में इर्शाद है, कोई बाप अपनी औलाद को इस से अफ़ज़ल अतीया नहीं दे सकता कि उसको अच्छा तरीक़ा तालीम करे।[7]

नमाज़ का छूट जाना गोया अपना सब कुछ लुट जाना है

(۴) عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعٰوِيَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ فَاتَتْهُ صَلٰوةٌ فَكَاَنَّمَا وُتِرَ اَهْلَهٗ وَمَالَهٗ رواه ابن حبان فى صحيحه كذا فى الترغيب زاد السيوطى فى الدر والنسائى ايضا قلت ورواه احمد فى مسنده

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गयी, वह ऐसा है कि गोया उसके घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो।[3]

फ़ायदा– नमाज़ का ज़ाया करना अक्सर या बाल-बच्चों की वजह से होता है कि उनकी ख़ैर-ख़बर में मशग़ूल रहे या माल व दौलत कमाने के लालच में ज़ाया की जाती है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ का ज़ाया करना अंजाम के एतबार से ऐसा ही है गोया बाल-बच्चे और माल व दौलत सब ही छीन लिया गया और अकेला खड़ा रह गया यानी जितना ख़सारा[4] और नुक़्सान इस हालत में है, उतना ही नमाज़ के छूटने में है। या जिस क़द्र रंज व सदमा उस हालत में हो उतना ही नमाज़ के छूटने में होना चाहिये अगर किसी शख़्स से कोई मोतबर आदमी यह कह दे और उसे यक़ीन आ जाए कि फ़्लां रास्ता लुटता है और जो रात को उस रास्ते से जाता है तो डाकू उसको क़त्ल कर देते हैं और माल छीन लेते हैं तो कौन बहादुर है कि उस रास्ते से रात को चले। रात तो दरकिनार, दिन को भी मुश्किल से उस रास्ते को चलेगा, मगर अल्लाह के सच्चे रसूल का यह पाक इर्शाद, एक दो नहीं, कई-कई हदीसों में वारिद हुआ है और हम मुसलमान

---

1. जामिउस्सग़ीर, 2. वही, 3. जामिउस्सग़ीर, 4. घाटा,

हुज़ूर सल्ल० के सच्चे होने का दावा भी झूठी ज़बानों से करते हैं, मगर इस पाक इर्शाद का हम पर असर क्या है, हर शख़्स को मालूम है।

बग़ैर सख़्त मजबूरी के दो नमाज़ें एक साथ पढ़ना

(۵) عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ مَنْ جَمَعَ بَیْنَ صَلٰوتَیْنِ مِنْ غَیْرِ عُذْرٍ فَقَدْ اَتٰی بَابًا مِنْ اَبْوَابِ الْکَبَائِرِ رواہ الحاکم وقال حنش ھو ابن قیس ثقۃ وقال الحافظ بل واہ بمرۃ لا نعلم احدا وثقہ غیر حصین بن نمیر کذا فی الترغیب زاد السیوطی فی الدر الترمذی ایضا وذکر فی اللآلی لہ شواھد وکذا فی التعقبات وقال الحدیث اخرجہ الترمذی وقال حنش ضعیف ضعفہ احمد وغیرہ العمل علی ھذا عند اھل العلم فاشار بذلک الی ان الحدیث اعتضد بقول اھل العلم وقد صرح غیر واحد بان من دلیل صحۃ الحدیث قول اھل العلم بہ وان لم یکن لہ اسناد یعتمد علی مثلہ اھ

5. नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स दो नमाज़ों को बिना किसी उज़्र के एक वक़्त में पढ़े, वह कबीरा गुनाहों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुंच गया।

फ़ायदा—हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़र्माते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तीन चीज में ताख़ीर[2] न कर-

(1) एक नमाज जब उसका वक़्त हो जाए,

(2) दूसरी जनाज़ा, जब तैयार हो जाए,

(3) तीसरी बे-निकाही औरत, जब उस के जोड़ का ख़ाविंद मिल जाए। (यानी फ़ौरन निकाह कर देना) बहुत से लोग जो अपने को दीनदार भी समझते हैं और गोया नमाज के पाबंद भी समझे जाते हैं, वह कई-कई नमाजें मामूली बहाने से, सफ़र का हो, दुकान का हो, मुलाज़मत का हो, घर आ कर इकट्ठी ही पढ़ लेते हैं। यह गुनाह कबीरा है कि बिला किसी उज़्र, बीमारी वग़ैरह के नमाज़ को अपने वक़्त पर न पढ़ा जाए तो बिल्कुल नमाज़ के बराबर गुनाह न हो, लेकिन बे-वक़्त पढ़ने का भी सख़्त गुनाह है, इससे ख़लासी[3] न हुई।

---

1. देर नहीं, 2. देर, 3. निजात, बचाव,

बे-नमाज़ी का हश्र क़ारून, फ़िरऔन और हामान के साथ

(٦) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلٰوةَ يَوْمًا فَقَالَ مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَبُرْهَانًا وَنَجَاةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ يَكُنْ لَّهُ نُوْرٌ وَّلَا بُرْهَانٌ وَّلَا نَجَاةٌ وَّكَانَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَعَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ أخرجه احمد وابن حبان والطبراني كذا في الدر المنثور للسيوطي و

قال الهيثمي رواه احمد والطبراني في الكبير والاوسط ورجال احمد ثقات وقال ابن حجر في الزواجر اخرجه احمد بسند جيد وزاد فيه قارون ايضا مع فرعون وغيره وكذا زاده في منتخب الكنز برواية ابن نصر و المشكوٰة ايضا برواية احمد والدارمي والبيهقي في الشعب وابن القيم في كتاب الصلوٰة

6. एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ का ज़िक्र फ़र्माया और यह इर्शाद फ़र्माया कि जो शख़्स नमाज़ का एहतमाम करे तो नमाज़ उस के लिए क़यामत के दिन नूर होगी और हिसाब पेश होने के वक़्त हुज्जत होगी और निजात का सबब होगी और जो शख़्स नमाज़ का एहतमाम न करे, उसके लिए क़यामत के दिन न नूर होगा और न उस के पास कोई हुज्जत होगी और न निजात का कोई ज़रिया। इसका हश्र फ़िरऔन, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा।'

फ़ायदा— फ़िरऔन को तो हर शख़्स जानता है कि किस दर्जे का काफ़िर था, हत्ताकि ख़ुदाई का दावा किया था और हामान उसके वज़ीर का नाम है और उबई बिन ख़ल्फ़ मक्का के मुश्रिकीन में से बड़ा सख़्त दुश्मने इस्लाम था। हिजरत से पहले नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा करता था कि मैंने एक घोड़ा पाला है, उसको बहुत कुछ खिलाता हूं, उस पर सवार होकर (नऊज़ुबिल्लाह) तुमको क़त्ल करूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा उससे फ़र्माया था कि इन्शाअल्लाह मैं ही तुझको क़त्ल करूंगा। उहद की लड़ाई में वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करता फिरता था और कहता था कि अगर वह आज बच गये तो मेरी ख़ैर नहीं। चुनांचे हमले के इरादे से वह हुज़ूर के क़रीब पहुंच गया। सहाबा रज़ि० ने इरादा भी फ़र्माया कि दूर ही से इसको निमटा दें। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि आने दो। जब वह क़रीब हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी के हाथ में से बरछा लेकर उसके मारा जो उसकी गरदन पर लगा और हल्की सी ख़राश आ गयी। मगर इसकी वजह से घोड़े से लुढ़कता हुआ, गिरा

और कई मर्तबा गिरा और भागता हुआ अपने लश्कर में पहुंच गया और चिल्लाता था कि ख़ुदा की क़सम ! मुझे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने क़त्ल कर दिया। कुफ़्फ़ार ने उसको इत्मीनान दिलाया कि मामूली ख़राश है, कोई फ़िक्र की बात नहीं, मगर वह कहता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में कहा था कि मैं तुझको क़त्ल कर दूंगा। ख़ुदा की क़सम ! अगर वह मुझ पर थूक भी देते तो मैं मर जाता।

लिखते हैं कि उसके चिल्लाने की आवाज़ ऐसी हो गयी थी जैसे कि बैल की होती है। अबूसुफ़ियान ने जो लड़ाई में बड़े ज़ोरों पर था, उसको शर्म दिलायी कि इस ज़रा सी ख़राश से इतना चिल्लाता है। उसने कहा कि तुझे ख़बर भी है कि यह किसने मारी है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ज़र्ब[1] है। इससे जिस क़दर तक्लीफ़ हो रही है, लात और उज़्ज़ा[2] की क़सम ! अगर यह तक्लीफ़ सारे हिजाज़ वालों को तक़्सीम कर दी जाए तो सब हलाक हो जाएं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझसे मक्का में कहा था कि मैं तुझको क़त्ल करूंगा, मैंने उसी वक़्त समझ लिया था कि मैं उनके हाथ से ज़रूर मारा जाऊंगा। मैं उनसे छूट नहीं सकता। अगर वह इस कहने के बाद मुझ पर थूक भी देते तो मैं उससे भी मर जाता, चुनांचे मक्का मुकर्रमा पहुंचने से एक दिन पहले वह रास्ते ही में मर गया।[3]

हम मुसलमानों के लिए निहायत ग़ैरत और इबरत का मुक़ाम है कि एक काफ़िर, पक्के काफ़िर और सख़्त दुश्मन को तो हुज़ूर सल्ल० के इर्शादात सच्चा होने का इस क़दर यक़ीन हुआ कि उसको अपने मारे जाने में ज़रा भी तरद्दुद, या शक न था, लेकिन हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी मानने के बावजूद, हुज़ूर सल्ल० को सच्चा मानने के बावजूद, हुज़ूर सल्ल० के इर्शादात को यक़ीनी कहने के बावजूद, हुज़ूर सल्ल० के साथ मुहब्बत के दावे के बावजूद, हुज़ूर सल्ल० की उम्मत में होने पर फ़ख़्र के बावजूद कितने इर्शादात पर अमल करते हैं और जिन चीज़ों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अज़ाब बताए हैं, उनसे कितना डरते हैं ? कितना कांपते हैं ? यह हर शख़्स के अपने ही गरेबान में मुंह डालकर देखने की बात है ? कोई दूसरा किसी के मुताल्लिक़ क्या कह सकता है ?

इब्ने हजर रह० ने 'किताबुज़्ज़वाजिर' में क़ारून का भी फ़िरऔन वग़ैरह के साथ ज़िक्र किया है और लिखा है कि उनके साथ हश्र होने की यह वजह है कि अक्सर इन्हीं वुजूह से नमाज़ में सुस्ती होती है, जो इन लोगों में पायी जाती थीं, पस, अगर इसकी वजह माल व दौलत की कसरत है तो क़ारून के साथ हश्र होगा और

1. मार, 2. दो मशहूर बुतों के नाम, 3. ख़मीस,
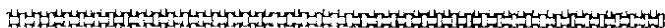
अगर हुकूमत व सल्तनत है तो फ़िरऔन के साथ और विज़ारत (यानी मुलाज़मत और मुसाहबत) है तो हामान के साथ और तिजारत है तो उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ। और जब उन लोगों के साथ हश्र हो गया तो फिर जिस क़िस्म के अज़ाब अहादीस में वारिद हुए, ख़्वाह वह हदीसें मुतकल्लम फ़ीहि[1] हों इनमें कोई इश्काल[2] नहीं रहा कि जहन्नम के अज़ाब सख़्त से सख़्त हैं, अलबत्ता यह ज़रूर है कि उसको अपने ईमान की वजह से एक न एक दिन उनसे ख़लासी हो जाएगी और वह लोग हमेशा के लिए इसमें रहेंगे। लेकिन ख़लासी होने तक का ज़माना क्या कुछ हंसी-खेल है, न मालूम कितने हज़ार बरस होंगे।

नमाज़ पढ़ने पर पांच क़िस्म के इनआमात, और उसके छोड़ने पर पन्द्रह क़िस्म के अज़ाब

قَالَ بَعْضُهُمْ وَرَدَ فِي الْحَدِيْثِ أَنَّ مَنْ
حَافَظَ عَلَى الصَّلٰوةِ أَكْرَمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى بِخَمْسِ
خِصَالٍ يَرْفَعُ عَنْهُ ضِيْقَ الْعَيْشِ وَعَذَابَ
الْقَبْرِ وَيُعْطِيْهِ اللّٰهُ كِتَابَهٗ بِيَمِيْنِهٖ وَيَمُرُّ عَلَى
الصِّرَاطِ كَالْبَرْقِ وَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ
وَمَنْ تَهَاوَنَ عَنِ الصَّلٰوةِ عَاقَبَهُ اللّٰهُ بِخَمْسَ
عَشَرَةَ عُقُوْبَةً خَمْسَةٌ فِي الدُّنْيَا وَثَلٰثَةٌ عِنْدَ
الْمَوْتِ وَثَلٰثٌ فِيْ قَبْرِهٖ وَثَلٰثٌ عِنْدَ خُرُوْجِهٖ
مِنَ الْقَبْرِ فَأَمَّا اللَّوَاتِيْ فِي الدُّنْيَا فَالْأُوْلٰى
تُنْزَعُ الْبَرَكَةُ مِنْ عُمُرِهٖ وَالثَّانِيَةُ تُمْحٰى
سِيْمَاءُ الصَّالِحِيْنَ مِنْ وَجْهِهٖ وَالثَّالِثَةُ
كُلُّ عَمَلٍ يَعْمَلُهٗ لَا يَأْجُرُهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَالرَّابِعَةُ
لَا يَرْتَفِعُ لَهٗ دُعَاءٌ إِلَى السَّمَاءِ وَالْخَامِسَةُ لَيْسَ
لَهٗ حَقًّا فِيْ دُعَاءِ الصَّالِحِيْنَ وَأَمَّا الَّتِيْ
تُصِيْبُهٗ عِنْدَ الْمَوْتِ فَإِنَّهٗ يَمُوْتُ ذَلِيْلًا
وَالثَّانِيَةُ يَمُوْتُ جُوْعًا وَالثَّالِثَةُ يَمُوْتُ
عَطْشَانًا وَلَوْ سُقِيَ بِحَارَ الدُّنْيَا مَا رُوِيَ مِنْ
عَطْشِهٖ وَأَمَّا الَّتِيْ تُصِيْبُهٗ فِيْ قَبْرِهٖ فَالْأُوْلٰى
يَضِيْقُ عَلَيْهِ الْقَبْرُ حَتّٰى تَخْتَلِفَ أَضْلَاعُهٗ
وَالثَّانِيَةُ يُوْقَدُ عَلَيْهِ الْقَبْرُ نَارًا فَيَتَقَلَّبُ عَلَى
الْجَمْرِ لَيْلًا وَّنَهَارًا وَالثَّالِثَةُ يُسَلَّطُ عَلَيْهِ
فِيْ قَبْرِهٖ ثُعْبَانٌ اِسْمُهُ الشُّجَاعُ الْأَقْرَعُ عَيْنَاهُ
مِنْ نَارٍ وَأَظْفَارُهٗ مِنْ حَدِيْدٍ طُوْلُ كُلِّ
ظُفْرٍ مَسِيْرَةُ يَوْمٍ يُكَلِّمُ الْمَيِّتَ فَيَقُوْلُ أَنَا
الشُّجَاعُ الْأَقْرَعُ وَصَوْتُهٗ مِثْلُ الرَّعْدِ
الْقَاصِفِ يَقُوْلُ أَمَرَنِيْ رَبِّيْ أَنْ أَضْرِبَكَ عَلٰى

1. जिसमें कलाम किया गया हो, 2. शुब्हा,

تَضْيِيْعِ صَلٰوةِ الصُّبْحِ اِلٰى بَعْدِ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَاَضْرِبُكَ عَلٰى تَضْيِيْعِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ اِلَى الْعَصْرِ وَاَضْرِبُكَ عَلٰى تَضْيِيْعِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ اِلَى الْمَغْرِبِ وَاَضْرِبُكَ عَلٰى تَضْيِيْعِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ اِلَى الْفَجْرِ فَكُلَّمَا ضَرَبَهٗ ضَرْبَةً يَغُوْصُ فِى الْاَرْضِ سَبْعِيْنَ ذِرَاعًا فَلَا يَزَالُ فِى الْقَبْرِ مُعَذَّبًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَاَمَّا الَّتِىْ تُصِيْبُهٗ عِنْدَ خُرُوْجِهٖ مِنَ الْقَبْرِ فِىْ مَوْقِفِ الْقِيٰمَةِ فَشِدَّةُ الْحِسَابِ وَسَخَطُ الرَّبِّ وَدُخُوْلُ النَّارِ وَفِىْ رِوَايَةٍ فَاِنَّهٗ يَاْتِىْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَعَلٰى وَجْهِهٖ ثَلٰثَةُ اَسْطُرٍ مَكْتُوْبَاتٍ اَلسَّطْرُ الْاَوَّلُ يَا مُضَيِّعَ حَقِّ اللّٰهِ السَّطْرُ الثَّانِىْ يَا مَخْصُوْصًا بِغَضَبِ اللّٰهِ الثَّالِثُ كَمَا ضَيَّعْتَ فِى الدُّنْيَا حَقَّ اللّٰهِ فَاٰيِسِ الْيَوْمَ اَنْتَ مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ وَمَا ذُكِرَ فِىْ هٰذَا الْحَدِيْثِ مِنْ تَفْصِيْلِ الْعَدَدِ لَا يطابق جملة الخمس عشرة لان المفصل اربع عشرة فقط فلعل الراوى نسى الخامس عشر كذا فى الزواجر لابن حجر المكى

قلت وهوكذلك فان ابا الليث السمرقندى ذكر الحديث فى قرة العيون فجعل ستة فى الدنيا فقال الخامسة تمقته الخلائق فى الدار الدنيا والسادس ليس له حظ فى دعاء الصالحين ثم ذكر الحديث بتمامه،

ولم يعزه الى احد وفى تنبيه الغافلين للشيخ نصر بن محمد بن ابراهيم السمرقندى يقال من داوم على الصلوٰة الخمس فى الجماعة اعطاه الله خمس خصال ومن تهاون بها فى الجماعة عاقبه الله باثنى عشر خصلة ثلثة فى الدنيا وثلثة عند الموت وثلثة فى القبر وثلثة يوم القيٰمة ثم ذكر نحوها ثم قال وروى عن ابى ذر عن النبى صلى الله عليه وسلم نحو هذا وذكر السيوطى فى ذيل اللالى بعدما اخرج بمعناه من تخريج ابن النجار فى تاريخ بغداد يسنده الى ابى هريرة قال فى الميزان هذا حديث باطل ركبه محمد بن على بن عباس على ابى بكر بن زياد النيسابورى قلت لكن ذكر الحافظ فى المنبهات عن ابى هريرة مرفوعا الصلوٰة عماد الدين وفيها عشر خصال الحديث ذكرته فى الهندية وذكر الغزالى فى دقائق الاخبار بنحو هذا اتم منه وقال من حافظ عليها اكرم الله بخمس عشرة الخ مفصلاً

7. 'एक हदीस में आया है कि जो शख़्स नमाज़ का एहतमाम करता है, हक़ तआला शानुहू पांच तरह से उसका इक्राम व एज़ाज़ फ़र्माते हैं-

(1) एक यह कि उस पर से रिज़्क़ की तंगी हटा दी जाती है।

(2) दूसरे यह कि उसे अज़ाबे क़ब्र हटा दिया जाता है।

(3) तीसरे यह कि क़यामत को उसके आमालनामें दाएं हाथ में दिए जाएंगे (जिनका हाल सूरः अल-हाक़्क़ा में मुफ़स्सल मज़्कूर है कि जिन लोगों के नामाए-आमाल दाहिने हाथ में दिए जाएंगे, वह निहायत ख़ुश व ख़ुर्रम हर शख़्स को दिखाते फिरेंगे।

(4) चौथे यह कि पुल सिरात पर से बिजली की तरह गुज़र जायेंगे।

(5) पांचवें यह कि हिसाब से महफ़ूज़ रहेंगे और जो शख़्स नमाज़ में सुस्ती करता है, उसको पन्द्रह तरीक़े से अज़ाब होता है-पांच तरह दुनिया में और तीन तरह से मौत के वक़्त और तीन तरह क़ब्र में और तीन तरह क़ब्र से निकलने के बाद । दुनिया के पांच तो यह हैं :-

(1) अव्वल यह कि उसकी ज़िंदगी में बरकत नहीं रहती।

(2) दूसरे यह कि सुलहा[1] का नूर उसके चेहरे से हटा दिया जाता है।

(3) तीसरे यह कि उसके नेक कामों का अज्र हटा दिया जाता है।

(4) चौथे उसकी दुआएं क़ुबूल नहीं होतीं।

(5) पांचवें यह कि नेक बंदों की दुआओं में उसका इस्तिहक़ाक़[2] नहीं रहता। और मौत के वक़्त तीन अज़ाब यह हैं कि-

(1) अव्वल ज़िल्लत से मरता है, (2) दूसरे भूखा मरता है,

(3) तीसरे प्यास की शिद्दत[3] में मौत आती है। अगर समुद्र भी पी ले, तो प्यास नहीं बुझती। क़ब्र के तीन अज़ाब यह हैं-

(1) अव्वल, उस पर क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि पसलियां एक दूसरी में घुस जाती हैं। (2) दूसरे क़ब्र में आग जला दी जाती है।

(3) तीसरे क़ब्र में एक सांप उस पर ऐसी शक्ल का मुसल्लत होता है, जिसकी आंखें आग की होती हैं और नाख़ून लोहे के इतने लम्बे कि एक दिन पूरा चलकर उनके ख़त्म तक पहुंचा जाए। उसकी आवाज़ बिजली की कड़क की तरह होती है। वह यह कहता है कि मुझे मेरे रब ने तुझ पर मुसल्लत किया है कि तुझे सुबह की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से आफ़्ताब के निकलने तक मारे जाऊं और ज़ुहर की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से अस्र तक मारे जाऊं और फिर अस्र की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से ग़ुरूब तक और मग़रिब की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से इशा तक और इशा की नमाज़ की वजह से सुबह तक मारे जाऊं। जब वह एक दफ़ा उसको मारता है, तो उसकी वजह से वह मुर्दा सत्तर हाथ ज़मीन में धंस जाता है। इसी

1. नेक लोग, 2. हक़, 3. तेज़ी,

तरह क़यामत तक उसको अज़ाब होता रहेगा और क़ब्र से निकलने के बाद के तीन अज़ाब यह हैं-

(1) एक हिसाब सख़्ती से किया जाएगा,

(2) दूसरे हक़ तआला शानुहू का उस पर ग़ुस्सा होगा,

(3) तीसरे जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा।

यह कुल मीज़ान[1] चौदह हुई। मुम्किन है कि पंद्रहवां भूल से रह गया हो।

और एक रिवायत में यह भी है कि उसके चेहरे पर तीन सतरें[2] लिखी हुई होती हैं-

(1) पहली सतर, ओ अल्लाह के हक़ को ज़ाया करने वाले !

(2) दूसरी सतर, ओ अल्लाह के ग़ुस्से के साथ मख़्सूस !

(3) तीसरी सतर, जैसा कि तूने दुनिया में अल्लाह के हक़ को ज़ाया किया, आज तू अल्लाह की रहमत से मायूस है।

फ़ायदा– यह हदीस पूरी अगरचे आम कुतुबे हदीस में मुझे नहीं मिली, लेकिन इसमें जितनी क़िस्म के सवाब और अज़ाब ज़िक्र किये गये हैं, उनकी अक्सर की ताईद बहुत सी रिवायात से होती है, जिनमें से बाज़ पहले गुज़र चुके और बाज़ आगे आ रहे हैं। और पहली रिवायात में बे नमाज़ी का इस्लाम से निकल जाना भी मज़्कूर है, तो फिर जिस क़दर अज़ाब हो थोड़ा है। अलबत्ता यह ज़रूर है कि जो कुछ मज़्कूर है और आइन्दा आ रहा है वह सब इस फ़ेल की सज़ा है। इसके मुस्तहिक्क सज़ा होने के बाद और इस दफ़ा की फ़र्दे जुर्म[3] के साथ ही इर्शादे ख़ुदा वंदी 'इन्नल्ला ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र क बिही व यग़्फ़िरु मा दू न ज़ालि क' लीमयं यशाऊ कि अल्लाह तआला शिर्क की तो माफ़ी नहीं फ़र्मायेंगे। इसके अलावा जिसकी दिल चाहे, माफ़ी फ़र्मा देंगे। इस आयते शरीफ़ा और इस जैसी आयात और अहादीस की बिना पर अगर माफ़ फ़र्मा दें तो ज़हे क़िस्मत।

अहादीस में आया है कि क़यामत में तीन अदालतें हैं, एक कुफ़्र व इस्लाम की इसमें बिल्कुल बख़्शिश नहीं। दूसरी हुक़ूक़ुल इबाद[4] की। इसमें हक़ वाले का हक़ ज़रूर दिलाया जायेगा, चाहे उससे लिया जाए, जिसके ज़िम्मे है या उसको माफ़ फ़र्माने की मर्ज़ी हो तो अपने पास से दिया जाएगा। तीसरी अदालत अल्लाह तआला के अपने हक़ूक़ की है। इसमें बख़्शिश के दरवाज़ें खोल दिए जाएंगे। इस बिना पर यह समझना ज़रूरी है कि अपने अफ़आल की सज़ाएं तो यही हैं जो अहादीस में वारिद हुई, लेकिन मराहिमे ख़ुसरवाना[5] इससे बालातर हैं। इसके अलावा और भी बाज़ क़िस्म

---

1. टोटल, 2. लाइनें, 3. चार्जशीट, 4. बंदों के हक़, 5. शाही इनायत,

के अज़ाब और सवाब अहादीस में आए हैं।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करा मामूल था कि सुबह की नमाज के बाद सहाबा रज़ि० से दर्याफ़्त फ़र्माते कि किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ? अगर कोई देखता तो बयान कर देता। हुज़ूर सल्ल० उसकी ताबीर इर्शाद फ़र्मा देते। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने हस्बे मामूल दर्याफ़्त फ़र्माया। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि मैंने एक ख़्वाब देखा है कि दो शख़्स आये और मुझे अपने साथ ले गये। इसके बाद बहुत लम्बा ख़्वाब ज़िक्र फ़र्माया जिसमें जन्नत–दोज़ख़ और उसमें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाब लोगों को होते हुए देखे। मिन जुम्ला उनके एक शख़्स को देखा कि उसका सर पत्थर से कुचला जा रहा है और इस ज़ोर से पत्थर मारा जाता है कि वह पत्थर लुढ़कता हुआ दूर जा पड़ता है, इतने उसको उठाया जाता है, वह सर वैसा ही हो जाता है तो दोबारा उसको ज़ोर से मारा जाता है। इसी तरह उसके साथ बर्ताव किया जा रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपने दोनों साथियों से दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह कौन शख़्स है तो उन्होंने बताया कि उस शख़्स ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा था, और उसको छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ छोड़कर सो जाता था।

एक दूसरी हदीस में इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा है, जिसमें है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जमाअत के साथ यह बर्ताव देखा तो हज़रत जिब्रील अलै० से दर्याफ़्त किया। उन्होंने फ़र्माया कि यह वह लोग हैं जो नमाज़ में सुस्ती करते थे।[1]

मुजाहिद रह० कहते हैं कि जो लोग नमाज़ के औक़ात मालूम करने का एहतमाम रखते हैं। उनमें ऐसी बरकत होती है जैसी हज़रत इब्राहीम अलै० और उनकी औलाद में हुई।[2]

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूरे अक्रम सल्ल० से नक़ल करते हैं कि जो शख़्स दुनिया से ऐसे हाल में रुख़्सत हो कि इख़्लास के साथ ईमान रखता हो, उस की इबादत करता हो, नमाज़ पढ़ता हो, ज़कात अदा करता हो, तो वह ऐसी हालत में दुनिया से रुख़्सत होगा कि हक़ तआला शानुहू उस से राज़ी होंगे।[3]

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से हक़ तआला शानुहू का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि मैं किसी जगह अज़ाब भेजने का इरादा करता हूं, मगर वहां ऐसे लोगों

---

1. अत्तर्ग़ीब, 2 दुर्रे मंसूर, 3. दुर्रे मंसूर

को दखेता हूं जो मस्जिदों को आबाद करते हैं। अल्लाह के वास्ते आपस में मुहब्बत रखते हैं, अख़ीर रातों में इस्तिग़फ़ार करते हैं, तो अज़ाब को मौक़ूफ़ कर देता हूं।[1]

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ ने हज़रत सल्मान रज़ि॰ को एक ख़त लिखा, जिस में यह लिखा कि मस्जिद में अक्सर औक़ात गुज़ारा करो। मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि मस्जिद मुत्तक़ी का घर है और अल्लाह जल्ले शानुहू ने इस बात का अह्द फ़र्मा लिया है कि जो शख़्स मस्जिद में अक्सर रहता है, उस पर रहमत करूंगा, उस को राहत दूंगा और क़यामत में पुल सिरात का रास्ता आसान कर दूंगा और अपनी रज़ा नसीब करूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल करते हैं कि मस्जिदें अल्लाह के घर हैं और घर आने वाले का इकराम होता ही है,

इसीलिए अल्लाह पर उनका इकराम ज़रूरी है, जो मस्जिदों में हाज़िर होने वाले हैं।

अबूसईद ख़ुदरी रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल करते हैं कि जो शख़्स मस्जिद से उल्फ़त रखे, हक़ तआला शानुहू उस से उल्फ़त रखते हैं। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल करते हैं कि जब मुर्दा क़ब्र में रख दिया जाता है तो जो लोग क़ब्र तक साथ गये थे। वह अभी तक वापस भी नहीं होते कि फ़रिश्ते उसके इम्तिहान के लिए आते हैं। उस वक़्त अगर वह मोमिन है तो नमाज़ उसके सर के क़रीब होती है और ज़कात दायीं तरफ़ और रोज़ा बायीं तरफ़ और बाक़ी जितने भलाई के काम किए थे, वह पांव की जानिब हो जाते हैं और हर तरफ़ से उसका अहाता कर लेते हैं[3] कि उसके क़रीब तक कोई नहीं पहुंच सकता। फ़रिश्ते दूर ही से खड़े होकर सवाल करते हैं।[4]

एक सहाबी रज़ि॰ इर्शाद फ़र्माते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों पर ख़र्च की कुछ तंगी होती तो आप उनको नमाज़ का हुक्म फ़र्माते और यह आयत तिलावत फ़र्माते-

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى۔

वअ्मुर अह्ल क बिस्सलाति वस्तबिर अलैहा ला नसअलु क रिज़्क़ा नह्नु नर्ज़ुक़ु क वल आक़िबतु लित्तक़्वा॰[5]

---

1. रोक देता हूं, 2. दुर्रे मंसूर, 3. उसे घेर लेते हैं, 4. दुर्रे मंसूर, 5. सूरः ताहा, आख़िरी रुकूअ,

तर्जुमा : अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म कीजिए और ख़ुद भी इसका एहतमाम करते रहिए। हम आप से रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते। रोज़ी तो हम देंगे और बेहतरीन अंजाम तो परहेज़गारी ही का है।'

बग़ैर हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल होने वाले

हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि क़यामत के दिन सारे आदमी एक जगह जमा होंगे और फ़रिश्ता जो भी आवाज़ देगा, सबको सुनायी देगी। उस वक़्त एलान होगा कहां हैं वह लोग जो राहत और तक्लीफ़ में हर हाल में अल्लाह की हम्द करते थे। यह सुनकर एक जमाअत उठेगी और बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएगी, फिर एलान होगा, कहां हैं वह लोग जो रातों को इबादत में मशग़ूल रहते थे और उनके पहलू बिस्तरों से दूर रहते थे। फिर एक जमाअत उठेगी और बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएगी। फिर एलान होगा, कहां हैं वह लोग जिनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं करती थी। फिर एक जमाअत उठेगी और बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएगी।

एक और हदीस में भी यही क़िस्सा आया है। उसमें यह भी है कि एलान होगा, आज महशर वाले देखेंगे कि करीम लोग कौन हैं और एलान होगा कहां हैं वह लोग जिनको तिजारती मशाग़िल अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से नहीं रोकते थे।[1]

शेख़ नस्र समरक़ंदी रह० ने तंबीहुल ग़ाफ़िलीन में भी यह हदीस लिखी है। इस के बाद लिखा है कि जब यह हज़रात बग़ैर हिसाब-किताब के छूट चुकेंगे तो जहन्नम से एक लम्बी गरदन (उनुक) ज़ाहिर होगी, जो लोगों को फांदती हुई चली आएगी। इस में दो चमकदार आंखें होंगी और निहायत फ़सीह ज़ुबान होगी। वह कहेगी कि मैं हर उस शख़्स पर मुसल्लत हूं जो मुतकब्बिर[2] बद-मिज़ाज हो और मज्मे में से ऐसे लोगों को इस तरह चुन लेगी जैसा कि जानवर दाना चुगता है। इन सबको चुन कर जहन्नम में फेंक देगी। इस के बाद फिर इसी तरह दोबारा निकलेगी और कहेगी कि अब मैं हर उस शख़्स पर मुसल्लत हूं जिस ने अल्लाह को और उसके रसूल

1. दुर्रे मंसूर, 2.घमंडी,

को ईज़ा[1] दी। उन लोगों को भी जमाअत से चुन कर ले जाएगी, इस के बाद सह बारा[2] फिर निकलेगी और इस मर्तबा तस्वीर वालों को चुन कर ले जाएगी।

इसके बाद जब यह तीनों क़िस्म के आदमी मज्मे से छट जाएंगे तो हिसाब-किताब शुरू होगा।

कहते हैं कि पहले ज़माने में शैतान आदमियों को नज़र आ जाता था। एक साहब ने उससे कहा कि कोई तरकीब ऐसी बता कि में भी तुझ जैसा हो जाऊं। शैतान ने कहा कि ऐसी फ़र्माइश तो आज तक मुझ से किसी ने भी नहीं की, तुझे इस की क्या ज़रूरत पेश आयी। उन्होंने कहा कि मेरा दिल चाहता है। शैतान ने कहा इसकी तरकीब यह है कि नमाज में सुस्ती कर और क़स्में खाने में ज़रापरवाह न कर, झूठी-सच्ची हर तरह की क़स्में खाया कर। उन साहब ने कहा कि में अल्लाह से अह्द करता हूं कि कभी नमाज न छोड़ूंगा और कभी क़सम न खाऊंगा। शैतान ने कहा कि तेरे सिवा मुझसे चाल के साथ किसी ने कुछ नहीं लिया। मैंने भी अह्द कर लिया कि आदमी को कभी नसीहत नहीं करूंगा।

हज़रत उबई फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, इस उम्मत को रफ़अत[3] व इज़्ज़त और दीन के फ़रोग़ की बशारत दो, लेकिन दीन के किसी काम को जो शख़्स दुनिया के वास्ते करे, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।[4]

एक हदीस में आया है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़र्माते हैं कि मैंने हक़ तआला शानुहू को बेतहरीन सूरत में ज़ियारत की। मुझसे इर्शाद हुआ कि मुहम्मद सल्ल०, मला-ए-आला वाले यानी फ़रिश्ते किस चीज में झगड़ रहे हैं ? मैंने अर्ज़ किया, मुझे तो इल्म नहीं। तो हक़ तआला शानुहू ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर रख दिया, जिसकी ठंडक सीने के अन्दर तक महसूस हुई और उसकी बरकत से तमाम आलम मुझ पर मुंकशिफ़[5] हो गया।

फिर मुझ से इर्शाद फ़र्माया, अब बताओ, फ़रिश्ते किस चीज में झगड़ रहे हैं ? मैंने अर्ज किया कि दर्जा बुलंद करने वाली चीजों में और उन चीजों में जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा[6] हो जाती हैं और जमाअत की नमाज़ की तरफ़ जो क़दम उठते हैं, उनके सवाब में और सर्दी के वक़्त वुज़ू को अच्छी तरह से करने के फ़ज़ाइल में और एक नमाज़ के बाद से दूसरी नमाज़ तक इंतिज़ार में बैठे रहने की फ़ज़ीलत में, जो शख़्स उनका एहतमाम करेगा, बेहतरीन हालत में ज़िन्दगी गुज़ारेगा और बेहतरीन हालत में मरेगा।[7]

1. तक्लीफ़, 2. तीसरी बार, 3. बुलंदी, 4. तर्ग़ीब, 5. खुल गया, 6. बदला,
7. तिर्मिज़ी (तर्ग़ीब, तहज़ीब),

नमाज़े इश्राक़

मुतअद्दद अहादीस में आया है, हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्माते हैं, कि ऐ इब्ने आदम ! तू दिन के शुरू में मेरे लिए चार रक्अत पढ़ लिया कर, मैं तमाम दिन के तेरे काम बना दिया करूंगा।

तंबीहुल ग़ाफ़िलीन में एक हदीस लिखी है कि नमाज़ अल्लाह की रज़ा का सबब है, फ़रिश्तों की महबूब चीज़ है, अंबिया अलै० की सुन्नत है, इससे मारफ़त का नूर पैदा होता है, दुआ क़ुबूल होती है, रिज़्क में बरकत होती है। यह ईमान की जड़ है, बदन की राहत है, दुश्मन के लिए हथियार है, नमाज़ी के लिए सिफ़ारिशी है, क़ब्र में चिराग़ है और इसकी वहशत में दिल बहलाने वाली है, मुंकर-नकीर के सवाल का जवाब है, और क़यामत की धूप में साया है और अंधेरे में रोशनी है, जहन्नम की आग के लिए आड़ है, आमाल की तराज़ू का बोझ है, पुल सिरात पर जल्दी से गुज़ारने वाली है, जन्नत की कुंजी है।

हाफ़िज़ इब्नेहज्र रह० ने मुनब्बहात में हज़रत उस्मानग़नी रज़ि० से नक़ल किया है कि जो शख़्स नमाज़ की मुहाफ़िज़त करे, औक़ात की पाबंदी के साथ उसका एहतमाम करे, हक़ तआला जल्ले शानुहू नौ चीज़ों के साथ उसका इकराम फ़र्माते हैं।

1. अव्वल, यह कि उसको ख़ुद महबूब रखते हैं,
2. दूसरे, तन्दुरुस्ती अता फ़र्माते हैं,
3. तीसरे, फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त फ़र्माते हैं,
4. चौथे, उसके घर में बरकत अता फ़र्माते हैं,
5. पांचवें, उसके चेहरे पर सुलहा के अन्वार ज़ाहिर होते हैं,
6. छठे, उसका दिल नर्म फ़र्माते हैं,
7. सातवें, वह पुल सिरात पर बिजली की तरह से गुज़र जाएगा।
8. आठवें, जहन्नम से निजात फ़र्मा देते हैं,
9. नवें, जन्नत में ऐसे लोगों का पड़ोस नसीब होगा, जिनके बारे में 'ला ख़ौफ़ुन अलैहिम व ला हुम यह्ज़नून (आयत) वारिद है। यानी 'क़यामत में न उनको कोई ख़ौफ़ होगा, न वह ग़मगीन होंगे।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ दीन का स्तून

है और इसमें दस ख़ूबियां हैं- 1. चेहरे की रौनक है, 2. दिल का नूर है, 3. बदन की राहत और तंदुरुस्ती का सबब है, 4. क़ब्र का उन्स है, 5. अल्लाह की रहमत उतरने का ज़रिया है, 6. आसमान की कुंजी है, 7. आमालनामों की तराज़ू का वज़न है, (कि उससे नेक आमाल का पलड़ा भारी हो जात है) 8. अल्लाह की रज़ा का सबब है, 9. जन्नत की क़ीमत है, 10. और दोज़ख़ की आड़ है। जिस शख़्स ने उसको क़ायम किया, उसने दीन को क़ायम रखा और जिसने उसको छोड़ा, अपने दीन को गिरा दिया।[1]

एक हदीस में वारिद हुआ कि घर में नमाज़ पढ़ना नूर है, नमाज़ से अपने घरों को मुनव्वर किया करो।[2]

और यह तो मशहूर हदीस है कि मेरी उम्मत क़यामत के दिन वुज़ू और सज्दे की वजह से रोशन हाथ-पांव वाली, रोशन चेहरे वाली होगी। इसी अलामत से दूसरी उम्मतों से पहचानी जाएगी।

एक हदीस मे आया है कि जब आसमान से कोई बला-आफ़त नाज़िल होती है, तो मस्जिद के आबाद करने वालों से हटा ली जाती हैं।[3]

मुतअद्दिद अहादीस में आया है कि अल्लाह तआला ने जहन्नम पर हराम कर दिया है कि सज्दे के निशान को जलाये (यानी अगर अपने आमाल-बद[4] की वजह से वह जहन्नम में भी दाख़िल होगा तो सज्दे का निशान जिस जगह होगा, उस पर आग का असर न हो सकेगा)। एक हदीस में है कि नमाज़ शैतान का मुंह काला करती है और सद्का उसकी कमर तोड़ देता है।[5]

एक जगह इर्शाद है कि नमाज़ शिफ़ा है।[6] दूसरी जगह उसके मुताल्लिक एक किस्सा नक़ल किया है कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० एक मर्तबा पेट के बल लेटे हुए थे। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, क्या पेट में दर्द है ? अर्ज़ किया,, जी हां। फ़र्माया, उठ, नमाज़ पढ़, नमाज़ में शिफ़ा है।[7]

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा जन्नत को ख़्वाब में देखा, तो हज़रत बिलाल रज़ि० के जूतों के घसीटने की आवाज़ भी सुनाई दी। सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि तेरा वह ख़ुसूसी अमल क्या है जिसकी वजह से

---

1. हिफ़ाज़त, 2. आयी है, 3. जामिउस्सग़ीर, 4. बुरे काम, 5. जामिउस्सग़ीर वज़्ज़वाजिर, जिल्द 1 पृ० 141 अनिद्दैलमी, 6. जामिउस्सग़ीर, 7. इब्ने कसीर,

जन्नत में भी तू (दुनिया की तरह से) मेरे साथ-साथ चलता रहा। अर्ज किया कि रात दिन में जिस वक्त भी मेरी वुज़ू टूट जाती है। तो वुज़ू करता हूं। इसके बाद (तहीयतुल वुज़ू की) नमाज़, जितनी मक़दूर हो, पढ़ता हूं।[1]

सफ़ीरी रह० ने कहा है कि सुबह की नमाज़ छोड़ने वाले को मलाइका[2] 'ओ फ़ाजिर'[3] से पुकारते हैं और ज़ुहर की नमाज़ छोड़ने वाले को 'ओ ख़ासिर'[4] (ख़सारा वाले) से और अस्र की नमाज़ छोड़ने वाले को 'आसी'[5] से और मग़रिब की नमाज़ छोड़ने वाले को काफ़िर से और इशा की नमाज़ छोड़ने वाले को 'ओ मुज़ीअ' (अल्लाह का हक़ ज़ाया यानी बरबाद करने वाले) से पुकारते हैं।[6]

अल्लामा शारानी रह० फ़र्माते हैं कि यह बात समझ लेनी चाहिए कि मुसीबत हर उस आबादी से हटा दी जाती है कि जहां के लोग नमाज़ी हों, जैसा कि हर उस आबादी पर नाज़िल होती है जहां के लोग नमाज़ी न हों। ऐसी जगहों में ज़लज़लों का आना, बिजलियों का गिरना, मकानों का धंस जाना कुछ भी मुस्तबअ़द[7] नहीं और कोई यह ख़्याल न करे कि मैं तो नमाज़ी हूं, मुझे दूसरों से क्या ग़रज़, इसलिए कि जब बला नाज़िल होती है, तो आम हुआ करती है। ख़ुद हदीस शरीफ़ में मज़्कूर है, किसी ने सवाल किया कि हम लोग ऐसी सूरत में हलाक हो सकते हैं कि हम में सुलहा मौजूद हों, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हां, जब ख़बासत[8] का ग़लबा हो जाए, इसलिए कि उनके ज़िम्मे यह भी ज़रूरी है कि अपनी वुस्अत के मुवाफ़िक़ दूसरों को बुरी बातों से रोकें और अच्छी बातों का हुक्म करें।[9]

(٨) رُوِیَ اَنَّهٗ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ قَالَ مَنْ تَرَکَ الصَّلٰوۃَ حَتّٰی مَضٰی وَقْتُهَا ثُمَّ قَضٰی عُذِّبَ فِی النَّارِ حُقْبًا وَالْحُقْبُ ثَمَانُوْنَ سَنَةً وَّالسَّنَةُ ثَلٰثُمِائَةٍ وَّسِتُّوْنَ یَوْمًا کُلُّ یَوْمٍ کَانَ مِقْدَارُهٗ اَلْفَ سَنَةٍ کذا فی مجالس الابرار قلت لم اجد فیما عندی من کتب الحدیث الاان مجالس الابرار مدحه شیخ مشائخنا الشاه عبد العزیز الدهلوی ثم قال الراغب فی قوله تعالٰی لابثین فیها احقابا قیل جمع الحقب ای الدهر قیل والحقبة ثمانون عاما والصحیح ان الحقبة مدة من الزمان مبهمة واخرج ابن کثیر فی تفسیر قوله تعالٰی فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلٰوتِهِمْ سَاهُوْنَ عن ابن عباس ان فی جهنم لوادیا تستعیذ

1. फ़त्ह, 2. फ़रिश्ते, 3. गुनाहगार, सरकश, 4. टोटे वाले, 5. गुनाहगार, 6. ग़ालियतुल मुवाइज़, 7. ना-मुम्किन बात, 8. बुराई, 9. लवाक़िहुल अन्वार,

جهنم من ذلك الوادي في كل يوم اربعمائة مرة اعد ذلك الوادي للمرائين من امة محمد الحديث وذكر ابو الليث السمرقندي في قرة العيون عن ابن عباس وهو مسكن من يؤخر الصلوة عن وقتها وعن سعد بن ابي وقاص مرفوعا اَلَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلٰوتِهِمْ سَاهُوْن قال هم الذين يؤخرون الصلوة عن وقتها وصحح الحاكم

8. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स नमाज़ को क़ज़ा कर देगा वह बाद में पढ़ भी ले, फिर भी अपने वक़्त पर न पढ़ने की वजह से एक हुक़ुब जहन्नम में जलेगा और हुक़ुब की मिक़्दार अस्सी वर्ष की होती है और एक वर्ष तीन सौ साठ दिन का और क़यामत का एक दिन एक हज़ार वर्ष के बराबर होगा। इस हिसाब से एक हुक़ुब की मिक़्दार दो करोड़ अठासी लाख वर्ष हुई।

फ़ायदा— हुक़ुब के मानी लुग़त[1] में बहुत ज़्यादा ज़माने के हैं। अक्सर हदीसों में उसकी यही मिक़्दार आयी जो ऊपर गुज़री यानी अस्सी साल। दुर्रे मंसूर में मुतअद्दिद रिवायात से यही मिक़्दार मंक़ूल है। हज़रत अली ने हिलाल हिजरी[2] से दर्याफ़्त फ़र्माया कि हुक़ुब की क्या मिक़्दार है ? उन्होंने कहा कि हुक़ुब अस्सी वर्ष का होता है और हर वर्ष बारह महीने का और हर महीना तीस दिन का और हर दिन एक हज़ार वर्ष का। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से भी सही रिवायत से अस्सी वर्ष मंक़ूल है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही नक़ल किया है कि एक हुक़ुब अस्सी साल का होता है और एक साल तीन सौ साठ दिन का और एक दिन तुम्हारे दिनों के एतबार से (यानी दुनिया के मुवाफ़िक़) एक हज़ार दिन का। यही मज़्मून हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने भी हुज़ूर सल्ल० ने नक़ल फ़र्माया है। इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि इस भरोसे पर नहीं रहना चाहिए कि ईमान की बदौलत जहन्नम से आख़िर निकल जाएंगे। इतने साल यानी दो करोड़ अठासी लाख वर्ष जलने के बाद निकलना होगा, वह भी जब ही कि कोई और वजह ज़्यादा पड़े रहने की न हो। इसके अलावा और भी कुछ मिक़्दार इससे कम व ज़्यादा हदीस में आयी है। मगर अव्वल तो ऊपर

1. डिक्शनरी, 2. यह नाम कहीं 'हिलाल हिजरी' और कहीं बिलाल हिजरी' आया है,

वाली मिक्दार कई हदीसों में आयी है। मगर अव्वल तो ऊपर वाली मिक्दार कई हदीसों में आयी है, इसीलिए यह मुकद्दम है। दूसरे यह भी मुम्किन है कि आदमियों की हालत के एतबार से कम व बेश हो।

हज़रत अबुल्लैस समरकंदी ने 'क़ुर्रतुल उयून' में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया है, जो शख़्स एक फ़र्ज़ नमाज़ को जान-बूझ कर छोड़ दे, उसका नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है और उसको उसमें जाना ज़रूरी है। और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, यह कहो कि ऐ अल्लाह ! हममें किसी को शक़ी, महरूम न कर फिर फ़र्माया जानते हो शक़ी महरूम कौन है सहाबा रज़ि० के इस्तिफ़्सार[1] पर इर्शाद फ़र्माया कि शक़ी, महरूम नमाज़ का छोड़ने वाला है, उसका कोई हिस्सा इस्लाम में नहीं।

एक हदीस में है कि दीदा व दानिस्ता[2], बिला-उज़्र नमाज़ छोड़ने वाले की तरफ़ हक़ तआला शानुहू क़यामत में इल्तिफ़ात[3] ही न फ़र्माएंगे और अज़ाबे अलीम (दुख देने वाला अज़ाब) उसको दिया जाएगा।

एक हदीस से नक़ल किया है कि दस आदमियों को ख़ास तौर से अज़ाब होगा, मिन जुम्ला उनमें नमाज़ छोड़ने वाला भी है कि उसके हाथ बंधे होंगे और फ़रिश्ते मुंह और पुश्त[4] पर ज़र्ब लगा रहे होंगे। जन्नत कहेगी कि मेरा-तेरा कोई तअल्लुक़ नहीं, न मैं तेरे लिए, न तू मेरे लिए। दोज़ख़ कहेगी कि आ जा, मेरे पास आ जा, तू मेरे लिए है, मैं तेरे लिए। यह भी नक़ल किया है कि जहन्नम में एक वादी (जंगल) है जिसका नाम है लम लम, इसमें सांप हैं, जो ऊंट की गरदन के बराबर मोटे हैं और उनकी लम्बाई एक महीने की मुसाफ़त[5] के बराबर हैं, इसमें नमाज़ छोड़ने वालों को अज़ाब दिया जाएगा।

एक दूसरी हदीस में है कि एक मैदान है, जिसका नाम हुब्बुल हज़न[6] है, वह बिच्छुओं का घर है और हर बिच्छु ख़च्चर के बराबर बड़ा है, वह भी नमाज़ छोड़ने वालों को डसने के लिए हैं। हां, मौला-ए-करीम माफ़ कर दे तो कौन पूछने वाला है, मगर कोई माफ़ी चाहे भी तो।

इब्ने हज्र[7] रज़ि० ने ज़वाजिर में लिखा है कि एक औरत का इंतिक़ाल हो गया था, उसका भाई दफ़्न में शरीक था। इत्तिफ़ाक़ से दफ़्न करते हुए एक थैली

---

1. पूछने पर, 2. जान-बूझ कर, 3. तवज्जोह, 4. पीठ, 5. दूरी,
6. रंज व ग़म का गढ़ा, 7. इब्ने हजर मक्की,

क़ब्र में गिर गयी। उस वक़्त ख़्याल नहीं आया, बाद में याद आयी तो बहुत रंज हुआ, चुपके से क़ब्र खोदकर निकलने का इरादा किया, क़ब्र को खोला तो आग के शोलों से भर रही थी। रोता हुआ मां के पास आया और हाल बयान किया और पूछा कि यह क्या बात है ? मां ने बताया कि वह नमाज में सुस्ती करती थी और क़ज़ा कर देती थी।

(۹) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا سَهْمَ فِي الْإِسْلَامِ لِمَنْ لَا صَلٰوةَ لَهٗ وَلَا صَلٰوةَ لِمَنْ لَا وُضُوْءَ لَهٗ اخرجه البزار واخرج الحاكم عن عائشة مرفوعا وصححه ثَلٰثٌ أَحْلِفُ عَلَيْهِنَّ لَا يَجْعَلُ اللّٰهُ مَنْ لَهٗ سَهْمٌ فِي الْإِسْلَامِ كَمَنْ لَا سَهْمَ لَهٗ وَسِهَامُ الْإِسْلَامِ الصَّوْمُ وَالصَّلٰوةُ وَالصَّدَقَةُ الحديث واخرج الطبراني في الاوسط عن ابن عمر مرفوعا لَا دِيْنَ لِمَنْ لَا صَلٰوةَ لَهٗ إِنَّمَا مَوْضِعُ الصَّلٰوةِ مِنَ الدِّيْنِ كَمَوْضِعِ الرَّأْسِ مِنَ الْجَسَدِ كذا في الدر المنثور۔

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि इस्लाम में कोई भी हिस्सा नहीं उस शख़्स का, जो नमाज़ न पढ़ता हो और बे वुज़ू की नमाज़ नहीं होती। दूसरी हदीस में है कि दीन बग़ैर नमाज़ के नहीं हैं। नमाज़ दीन के लिए ऐसी है जैसा आदमी के बदन के लिए सर होता है।

फ़ायदा— जो लोग नमाज़ न पढ़ कर अपने को मुसलमान कहते है या हमीयते इस्लामी के लम्बे-चौड़े दावे करते हैं, वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन इर्शादात पर ज़रा ग़ौर कर लें और जिन अस्लाफ़[1] की कामयाबियों तक पहुंचने के ख़्वाब देखते हैं, उनके हालात की भी तह्क़ीक़ करें कि वह दीन को किस मज़बूती से पकड़े हुए थे। फिर दुनिया उनके क़दम क्यों न चूमती। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की आंख में पानी उत्तर आया। लोगों ने अर्ज़ किया कि इसका इलाज तो हो सकता है, मगर चन्द रोज़ आप नमाज़ न पढ़ सकेंगे। उन्होंने फ़र्माया, यह नहीं हो सकता है। मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो शख़्स नमाज़ न पढ़े, वह अल्लाह जल्ले शानुहू के यहां ऐसी हालत में हाज़िर होगा कि हक़ तआला शानुहू उस पर नाराज़ होंगे।

एक हदीस में आया है कि लोगों ने कहा कि, पांच दिन लकड़ी पर सज्दा करना पड़ेगा। उन्होंने फ़र्माया कि एक रक्अत भी इस तरह नहीं पढ़ूंगा। उम्र भर बीनाई को सब्र कर लेना उन हज़रात के यहां इससे सह्ल था कि नमाज़ छोड़ें, हालांकि इस उज़्र की वजह से नमाज़ का छोड़ना भी जायज़ था।

---

1. बुज़ुर्गों

हज़रत उमर रज़ि० के अख़ीर ज़माने में जब बरछा मारा गया, तो हर वक़्त ख़ून जारी रहता था और अक्सर औक़ात ग़फ़लत रहती थी, हत्ताकि उसी हालत में विसाल भी हो गया, मगर बीमारी के इन दिनों में जब नमाज़ का वक़्त होता तो उनको होशियार किया जाता और नमाज़ की दर्ख़्वास्त की जाती। वह इसी हालत में नमाज़ अदा करते और यह फ़र्माते कि हां, हां, ज़रूर जो शख़्स नमाज़ न पढ़े, इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं। हमारे यहां बीमार की ख़ैर ख़्वाही[1], राहत रसानी[2] इसमें समझी जाती है कि उसको नमाज़ की तक्लीफ़ न दी जाए, बाद में फ़िदया दे दिया जाएगा, इन हज़रात के यहां ख़ैर ख़्वाही यह थी कि जो इबादत भी चलते-चलाते कर सके, दरेग़ न किया जाए-

'ब बी तफ़ा बुते रह अज कुजास्त ता ब कुजा'

हज़रत अली रज़ि० ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० से एक ख़ादिम मांगा कि कारोबार में मदद करे हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया यह तीन ग़ुलाम हैं, जो पसन्द हो, ले लो। उन्होंने अर्ज किया, आप ही पसन्द फ़र्मा दें। हुज़ूर सल्ल० ने एक शख़्स के मुताल्लिक, फ़र्माया कि इसको ले लो, यह नमाज़ी है, मगर इसको मारना नहीं, हमें नमाज़ियों के मारने की मुमानअत है। इस किस्म का वाक़िआ एक और सहाबी अबुल हैसम के साथ भी हुआ। उन्होंने भी हुज़ूर सल्ल० से ग़ुलाम मांगा था। इसके बिल-मुकाबिल हमारा मुलाज़िम नमाज़ी बन जाए, तो हम उसको तान करते हैं और हिमाक़त से उसकी नमाज़ में अपना हर्ज समझते हैं।

हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ि० पर एक मर्तबा ग़ल्बा-ए-हाल[3] हुआ तो सात रोज तक घर में रहे , न खाते थे, न पीते थे, न सोते थे। शेख़ को इसकी इत्तिला की गयी। दर्याफ़्त किया कि नमाज़ के औक़ात तो महफ़ूज़ रहते हैं (यानी नमाज़ के औक़ात का तो एहतमाम रहता है) लोगों ने अर्ज किया कि नमाज़ के औक़ात बेशक महफ़ूज़ हैं। फ़र्माया, 'अल् हम्दुलिल्ला हिल्लज़ी लमयज्अल लि श्शै तानि अलैहि सबीला०' (तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने शैतान को उस पर मुसल्लत न होने दिया।[3]

---

1. भलाई चाहना, 2. आराम पहुंचना, कोताही न कीजिए, 3. यानी ऐसी हालत हो गयी कि अक्ल पूरी तरह काम नहीं करती थी, होश व हवास पूरी तरह दुरुस्त न थे, 4. बहजतुन्नुफूस,

दूसरा बाब

जमाअत के बयान में

जैसा कि शुरू रिसाला में लिखा जा चुका है, बहुत से हज़रात नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन जमाअत का एहतमाम नहीं करते, हालांकि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिस तरह नमाज़ के बारे में बहुत सख़्त ताकीद आयी है। इसी तरह जमाअत के बारे में भी बहुत सी ताकीदें वारिद हुई हैं। इस बाब में भी दो फ़स्लें हैं। पहली फ़स्ल जमाअत के फ़ज़ाइल में, दूसरी फ़स्ल जमाअत के छोड़ने पर इताब में।

फ़स्ले अव्वल, जमाअत के फ़ज़ाइल में

(1) عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ صَلٰوةُ الْجَمَاعَةِ اَفْضَلُ مِنْ صَلٰوةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِيْنَ دَرَجَةً رواه مالك والبخاری ومسلم والترمذی والنسائی كذا فی الترغيب

1. 'हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जमाअत की नमाज़ अकेले की नमाज़ से सत्ताईस दर्जे ज़्यादा होती है।'

फ़ायदा— जब आदमी नमाज़ पढ़ता है और सवाब ही की नीयत से पढ़ता है, तो मामूली सी बात है कि घर में न पढ़े, मस्जिद में जाकर जमाअत से पढ़ ले कि न इसमें कुछ मशक़्क़त है, न दिक़्क़त और इतना बड़ा सवाब हासिल होता है। कौन शख़्स ऐसा होगा, जिसको एक रुपए के सत्ताईस या अट्ठाईस रुपए मिलते हों और वह इनको छोड़ दे मगर दीन की चीज़ों में इतने बड़े नफ़ा से भी बे-तवज्जोही की जाती है। इसकी वजह इसके सिवा क्या हो सकती है कि हम लोगों को दीन की परवाह नहीं। इसका नफ़ा हम लोगों की निगाह में नफ़ा नहीं। दुनिया की तिजारत, जिसमें एक आना दोआना फी रुपया नफा मिलता है उसके पीछे दिन भर ख़ाक छान्ते हैं आख़िरत की तिजारत जिसमें सत्ताईस गुना नफा है, वह हमारे लिए मुसीबत है, जमाअत की नमाज़ के लिए जाने में दुकान का नुक़्सान समझा जाता है, बिक्री का भी नुक़्सान बताया जाता है, दुकान के बन्द करने की भी दिक़्क़त कही जाती है, लेकिन जिन लोगों के यहां अल्लाह जल्ले शानुहू की अज़्मत है, अल्लाह के वायदों पर उनको इत्मीनान है, उसके अज्र व सवाब की की क़ोई क़ीमत है, उनके यहां यह

लचर उज़्र कुछ भी वुक़अत नहीं रखते। ऐसे ही लोगों की अल्लाह जल्ले शानुहू ने कलामे पाक में तारीफ़ फ़र्मायी है, 'रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजा रतुन' (आयत) तीसरे बाब के शुरू में पूरी आयत मय तर्जुमा मौजूद है और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन का जो मामूल अज़ान के बाद अपनी तिजारत के साथ था। वह 'हिकायात सहाबा रज़ि०' के पांचवें बाब में मुख़्तसर तौर पर गुज़र चुका।

सालिम हद्दाद रज़ि० एक बुज़ुर्ग थे, तिजारत करते थे, जब अज़ान की आवाज़ सुनते तो रंग मुतग़य्यर[1] हो जाता और ज़र्द पढ़ जाता, बे-क़रार हो जाते, दुकान खुली छोड़कर खड़े हो जाते और यह अश्आर पढ़ते-

اِذَا مَا دَعَا دَاعِيْكُمْ قُمْتُ مُسْرِعًا ‌ ‌ مُجِيْبًا لِمَوْلًى جَلَّ لَيْسَ لَهُ مِثْلٌ

इज़ा मा दआ दाओकुम क़ुम्तु मुस्रिअन
मुजीबन लि मौला जल्ला लैस लहू मिस्लुन

तर्जुमा— 'जब तुम्हारा मुनादी (मुअज़्ज़िन) पुकारने के वास्ते खड़ा हो जाता है, तो मैं जल्दी से खड़ा हो जाता हूं, ऐसे मालिक की पुकार को क़ुबूल करते हुए, जिसकी बड़ी शान है, उसका कोई मिस्ल नहीं।'

اُجِيْبُ اِذَا نَادٰى بِسَمْعٍ وَّطَاعَةٍ ‌ ‌ وَبِيْ نَشْوَةٌ لَبَّيْكَ يَا مَنْ لَّهُ الْفَضْلُ

उजीबु इज़ा ना दा बिसम्अिन्न व ताअतिन
व बी नश्वतुन लब्बैकेया नमन लहुल फ़ज़्लू०

'जब वह मुनादी (मुअज़्ज़िन) पुकारता है तो मैं ब हालत निशाते इताअत व फ़र्मांबरदारी के साथ जवाब में कहता हूं कि ऐ फ़ज़्ल व बुज़ुर्गी वाले लब्बैक यानी हाज़िर होता हूं।'

وَيَصْفَرُّ لَوْنِيْ خِيْفَةً وَّمَهَابَةً ‌ ‌ وَيَرْجِعُ لِيْ عَنْ كُلِّ شُغْلٍ بِهٖ شُغْلٌ

व यस्फ़िरु लौनी ख़ीफ़तंव्व महाबतन
वयुर्जिउ ली अन कुल्लि शुग़्लिन बिही शग़्लू०

'और मेरा रंग ख़ौफ़ और हैबत से ज़र्द पड़ जाता है, और उस पाक ज़ात

1. बदल जाता,

وَحَقِّكُمْ مَا لَذَّ لِيْ غَيْرُ ذِكْرِكُمْ — व हक़्क़ुकुमू मा लज़्ज़ ली ग़ैर ज़िक्रुकुम

وَذِكْرُ سِوَاكُمْ فِيْ فَمِيْ قَطُّ لَا يَحْلُوْ — व ज़िक्रु सिवाकुम फ़ी फ़मी क़त्तुला यह्लू०

'तुम्हारे हक़ की क़सम ! तुम्हारे ज़िक्र के सिवा मुझे कोई चीज भी लज़ीज़ नहीं मालूम होती और तुम्हारे सिवा किसी के ज़िक्र में भी मुझे मज़ा नहीं आता।'

مَتٰى يَجْمَعُ الْاَيَّامُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ — وَيَفْرَحُ مُشْتَاقٌ اِذَا جَمَعَ الشَّمْلُ

मता यज्मउल अय्यामु बैनी व बैनकुमू

व यफ़रहु मुश्ताक़ुन इज़ा जम अश्शमलू मअ श्शमलू०

'देखिए ज़माना मुझ को और तुम को कब जमा करेगा और मुश्ताक़[2] तो जब ही ख़ुश होता है, जब इज्तिमाअ[3] नसीब होता है।'

فَمَنْ شَاهَدَتْ عَيْنَاهُ نُوْرَ جَمَالِكُمْ — يَمُوْتُ اشْتِيَاقًا نَحْوَكُمْ قَطُّ لَا يَسْلُوْ

फ़ मन शा ह दत अैनाहु नू र जमालिकुमू

यमूतुइश्तियाक़न नहूव कुम क़त्तु ला यस्लू०

'जिसकी आंखों ने तुम्हारे जमाल का नूर देख लिया है, वह तुम्हारे इश्तियाक़ में मर जाएगा, कभी भी तसल्ली नहीं पा सकता।'[4]

हदीस में आया है कि जो लोग कसरत से मस्जिद में जमा रहते हों, वह मस्जिद के खूंटे हैं, फ़रिश्ते उनके हमनशीन[5] होते हैं। अगर वह बीमार हो जाएं तो फ़रिश्ते उनकी अयादत करते हैं और वह किसी काम को जाएं तो फ़रिश्ते उनकी इआनत करते हैं।

(٢) عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةُ الرَّجُلِ فِيْ جَمَاعَةٍ تُضَعَّفُ عَلٰى صَلٰوتِهٖ فِيْ بَيْتِهٖ وَفِيْ سُوْقِهٖ خَمْسًا وَّعِشْرِيْنَ ضِعْفًا وَذٰلِكَ اَنَّهٗ اِذَا تَوَضَّاَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ خَرَجَ اِلَى الْمَسْجِدِ لَا يُخْرِجُهٗ اِلَّا الصَّلٰوةُ لَمْ يَخْطُ خَطْوَةً اِلَّا رُفِعَتْ لَهٗ بِهَا دَرَجَةٌ وَّحُطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةٌ فَاِذَا صَلّٰى لَمْ تَزَلِ الْمَلٰٓئِكَةُ تُصَلِّيْ عَلَيْهِ مَا دَامَ فِيْ مُصَلَّاهُ مَا لَمْ يُحْدِثْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ وَلَا يَزَالُ فِيْ صَلٰوةٍ مَّا انْتَظَرَ الصَّلٰوةَ رواه البخاري واللفظ له ومسلم وابو داود والترمذي وابن ماجه كذا في الترغيب

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी की

1. चुस्ती, ख़ुशी, 2. आशिक़, 3. मिलना, अकट्ठा होना, 4. नुज़हत 5. साथ उठने-बैठने वाले, हाकिम,

वह नमाज़ जो जमाअत से पढ़ी गयी हो, उस नमाज़ से जो घर में पढ़ ली हो या बाज़ार में पढ़ ली हो, पचीस दर्जा अल-मुज़ाअफ़ होती है और बात यह है कि जब आदमी वुज़ू करता है और वुज़ू को कमाले दर्जे तक पहुंचा देता है, फिर मस्जिद की तरफ़ सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से चलता है, कोई और इरादा इसके साथ शामिल नहीं होता तो जो क़दम भी रखता है, इसकी वजह से एक नेकी बढ़ जाती है और एक ख़ता माफ़ हो जाती है और फिर जब नमाज़ पढ़ कर उसी जगह बैठा रहता है, तो जब तक वह बा-वुज़ू बैठा रहेगा, फ़रिश्ते उसके लिए मग़फ़िरत और रहमत की दुआ करते रहते हैं और जब तक आदमी नमाज़ के इंतिज़ार में रहता है, वह नमाज़ का सवाब पाता रहता है।

फ़ायदा– पहली हदीस में सत्ताईस दर्जे की ज़्यादती बतलायी गयी थी और इस हदीस में पचीस दर्जे की। इन दोनों हदीसों में जो इख़्तिलाफ़ हुआ है, उलमा ने उसके बहुत से जवाबात तहरीर फ़रमाये हैं, जो शुरूह हदीस में मज़कूर हैं। मिन जुम्ला उनके यह है कि यह नमाज़ियों के हाल के इख़्तिलाफ़ की वजह से है कि बाज़ों को पचीस दर्जे की ज़्यादती होती है और बाज़ों को इख़्लास की वजह से सत्ताईस की हो जाती है। बाज़ उलमा ने नमाज़ के इख़्तिलाफ़ पर महमूल फ़रमाया है कि सिर्री[1] नमाज़ों में पचीस है और जहरी[2] में सत्ताईस है। बाज़ ने सत्ताईस इशा और सुबह के लिए बताया है कि इन दोनों नमाज़ों में जाना मुश्किल मालूम होता है और पचीस बाक़ी नमाज़ों में।

बाज़ शुर्राह[3] ने लिखा है कि इस उम्मत पर अल्लाह तआला की तरफ़ से इनआमाते की बारिश बढ़ती ही चली गयी, जैसा कि और भी बहुत सी जगह इसका ज़हूर है, इसलिए अव्वल पचीस दर्जे था, बाद में सत्ताईस हो गया।

बाज़ शुर्राह ने एक अजीब बात लिखी है। वह कहते हैं कि इस हदीस का सवाब पहली हदीस से बहुत ज़्यादा है, इसलिए कि इस हदीस में यह इर्शाद नहीं कि वह पचीस दर्जे की ज़्यादती है, बल्कि यह इर्शाद है कि पचीस दर्जे अल-मुज़ाअफ़ होती है, जिसका तर्जुमा दो चंद और दोगुना होता है यानी यह कि पचीस मर्तबा तक दोगुना अज्र होता चला जाता है। इस सूरत में जमाअत की एक नमाज़ का सवाब तीन करोड़ पैंतीस लाख चव्वन हज़ार चार सौ बत्तीस (33554432) दर्जे हुआ। हक़ तआला शानुहू की रहमत से यह सवाब कुछ बईद नहीं और जब नमाज़ के छोड़ने का गुनाह एक

---

1. धीरे किरात होने वाली नमाज़ें, 2. ज़ोर से किरात होने वाली नमाज़ें,

3. शरह लिखने वाले, टीकाकार,

हुकुबा है, जो पहले बाब में गुज़रा तो उस के पढ़ने का सवाब यह होना क़रीने क़ियास[1] भी है इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने इस तरफ़ इशारा फ़र्माया कि यह तो ख़ुद ही ग़ौर कर लेने की चीज़ है कि जमाअत की नमाज़ में किस क़दर अज्र व सवाब है और किस-किस तरह हसनात[2] का इज़ाफ़ा होता चला जाता है कि जो शख़्स घर से वुज़ू कर के महज़ नमाज़ की नीयत से मस्जिद में जाए, तो उस के हर-हर क़दम पर एक नेकी का इज़ाफ़ा और एक ख़ता की माफ़ी होती चली जाती है।

बनूसलमा मदीना तय्यबा में एक क़बीला था, उनके मकानात मस्जिद से दूर थे, उन्होंने इरादा किया कि मस्जिद के क़रीब ही कहीं मुंतक़िल हो जाएं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, वहीं रहो, तुम्हारे मस्जिद तक आने का हर-हर क़दम लिखा जाता है। एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स घर से वुज़ू करके नमाज़ को जाए, वह ऐसा है जैसा कि घर से एहराम बांध कर हज को जाए। इस के बाद हुज़ूर सल्ल० एक और फ़ज़ीलत की तरफ़ इशारा फ़र्माते हैं कि जब नमाज़ पढ़ चुका, तो उसके बाद जब तक मुसल्ले पर रहे, फ़रिश्ते मग़्फ़िरत और रहमत की दुआ करते रहते हैं। फ़रिश्ते अल्लाह के मक़्बूल और मासूम बन्दे हैं, उन की दुआ की बरकात ख़ुद ज़ाहिर हैं।

मुहम्मद बिन सिमाआ रह० एक बुज़ुर्ग आलिम हैं, जो इमाम अबूयूसुफ़ रह० और इमाम मुहम्मद रह० के शागिर्द हैं। एक सौ तीन वर्ष की उम्र में इंतिक़ाल हुआ। उस वक़्त तक दो सौ रक्अत नफ़्ल रोज़ाना पढ़ते थे। कहते हैं कि मुसलसल चालीस वर्ष तक मेरी एक मर्तबा के अलावा तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुयी थी। सिर्फ़ एक मर्तबा जिस दिन मेरी वालिदा का इंतिक़ाल हुआ उस मश्ग़ूली की वजह से तक्बीरे ऊला फ़ौत हो गयी थी। यह भी कहते हैं कि एक मर्तबा मेरी जमाअत की नमाज़ फ़ौत हो गयी थी, तो मैंने इस वजह से कि जमाअत की नमाज़ का सवाब पच्चीस दर्जे ज़्यादा है, इस नमाज़ को पच्चीस दफ़ा पढ़ा ताकि वह अदद पूरा हो जाए, तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स कहता है कि मुहम्मद ! पच्चीस दफ़ा नमाज़ तो पढ़ ली, मगर मलाइका की आमीन का क्या होगा।[3]

मलाइका की आमीन का मतलब यह है कि बहुत सी अहादीस में यह इर्शादे नबवी आया है कि जब इमाम सूरः फ़ातिहा के बाद आमीन कहता है तो मलाइका भी आमीन कहते हैं। जिस शख़्स की आमीन मलाइका की आमीन के साथ हो जाती

1. अन्दाज़े के क़रीब, 2. नेकियां, 3. फ़वाइदे बहीमा,

है, उसके पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं, तो ख़्वाब में इस हदीस की तरफ़ इशारा है।

मौलाना अब्दुल हई रह० साहब फ़र्माते है कि इस क़िस्से में इस तरफ़ इशारा है कि जमाअत का सवाब मज्मूई तौर से जो हासिल होता है, वह अकेले में हासिल हो ही नहीं सकता, चाहे एक हज़ार मर्तबा उस नमाज़ को पढ़ ले। और यह बात ज़ाहिर है कि एक आमीन की मुवाफ़क़त ही सिर्फ़ नहीं, बल्कि मज्मे की शिर्कत, नमाज़ से फ़राग़त के बाद मलाइका की दुआ, जिसका इस हदीस में ज़िक्र है, उनके अलावा और बहुत सी ख़ुसूसियात हैं, जो जमाअत ही में पायी जाती हैं। एक ज़रूरी अम्र यह भी क़ाबिले लिहाज़ है। उलमा ने लिखा है कि फ़रिश्तों की इस दुआ का मुस्तहिक़ जब ही होगा, जब नमाज़-नमाज़ भी हो और अगर ऐसी ही पढ़ी कि पुराने कपड़े की तरह लपेट कर मुंह पर मार दी गयी, तो फिर फ़रिश्तों की दुआ का मुस्तहिक़ नहीं होता।[2]

(٣) عَنْ اِبْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ مَنْ سَرَّهٗ اَنْ
يَلْقَى اللّٰهَ غَدًا مُسْلِمًا فَلْيُحَافِظْ عَلٰى هٰؤُلَاءِ الصَّلَوٰتِ
حَيْثُ يُنَادٰى بِهِنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى شَرَعَ
لِنَبِيِّكُمْ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُنَنَ الْهُدٰى
وَاِنَّهُنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدٰى وَلَوْ اَنَّكُمْ صَلَّيْتُمْ فِيْ
بُيُوْتِكُمْ كَمَا يُصَلِّيْ هٰذَا الْمُتَخَلِّفُ فِيْ بَيْتِهٖ لَتَرَكْتُمْ
سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ وَلَوْ تَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ لَضَلَلْتُمْ وَمَا
مِنْ رَجُلٍ يَتَطَهَّرُ فَيُحْسِنُ الطُّهُوْرَ ثُمَّ يَعْمِدُ
اِلٰى مَسْجِدٍ مِنْ هٰذِهِ الْمَسَاجِدِ اِلَّا كَتَبَ اللّٰهُ
لَهٗ بِكُلِّ خَطْوَةٍ يَخْطُوْهَا حَسَنَةً وَيَرْفَعُهٗ
بِهَا دَرَجَةً وَيَحُطُّ عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً وَلَقَدْ رَاَيْتُنَا
وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنْهَا اِلَّا مُنَافِقٌ مَعْلُوْمُ النِّفَاقِ وَلَقَدْ
كَانَ الرَّجُلُ يُؤْتٰى بِهٖ يُهَادٰى بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ حَتّٰى
يُقَامَ فِي الصَّفِّ وَفِيْ رِوَايَةٍ لَقَدْ رَاَيْتُنَا وَمَا
يَتَخَلَّفُ عَنِ الصَّلٰوةِ اِلَّا مُنَافِقٌ قَدْ عُلِمَ نِفَاقُهٗ اَوْ
مَرِيْضٌ اِنْ كَانَ الرَّجُلُ لَيَمْشِيْ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ
حَتّٰى يَاْتِيَ الصَّلٰوةَ وَقَالَ اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَّمَنَا سُنَنَ الْهُدٰى وَاِنَّ
مِنْ سُنَنِ الْهُدٰى الصَّلٰوةَ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِيْ
يُؤَذَّنُ فِيْهِ رواه مسلم وابو داؤد والنسائى
وابن ماجة كذا فى الترغيب والدر المنثور
والسنة نوعان سنة الهدى وتاركها يستوجب
اساءة كالجماعة والاذان والزوائد وتاركها
لا يستوجب اساءة كسير النبى صلى
الله عليه وسلم فى لباسه وقعوده
كذا فى نور الانوار والاضافة
فى سنة الهدى بيانية
اى سنة هى هدى
وفى الحصر مبالغة كذا فى قمر
الاقمار

---

1. मौलाना अब्दुल हई फ़िरंगी महल्ली लखनवी, लेखक फ़वाइदे बहीमा, 2. बहजतुन,

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० इर्शाद फ़र्माते हैं कि जो शख़्स यह चाहे कि वह क़यामत के दिन अल्लाह जल्ले शानुहू की बारगाह में मुसलमान बन कर हाज़िर हो, वह इन नमाज़ों को ऐसी जगह अदा करने का एहतमाम करे जहां अज़ान होती है (यानी मस्जिद में)। इसलिए कि हक़ तआला शानुहू ने तुम्हारे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए ऐसी सुन्नतें जारी फ़र्मायी हैं, जो सरासर हिदायत हैं। उन्हीं में से यह जमाअत की नमाज़ें भी हैं। अगर तुम लोग अपने घरों में नमाज़ पढ़ने लगोगे जैसा कि फ़्लां शख़्स पढ़ता है तो तुम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को छोड़ने वाले होगे और यह समझ लो कि अगर नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे और जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे उसके बाद मस्जिद की तरफ़ जाए तो हर-हर क़दम पर एक-एक नेकी लिखी जाएगी और एक-एक ख़ता माफ़ होगी और हम तो अपना यह हाल देखते थे कि जो शख़्स खुल्लम-खुल्ला मुनाफ़िक़ हो वह तो जमाअत से रह जाता था (वरना हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में आम मुनाफ़िक़ों की भी जमाअत छोड़ने की हिम्मत न होती थी) या कोई सख़्त बीमार, वरना जो शख़्स दो आदमियों के सहारे से घिसटता हुआ जा सकता था, वह भी सफ़ में खड़ा कर दिया जाता था।

फ़ायदा– सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के यहां जमाअत का इस क़दर एहतमाम था कि अगर बीमार भी किसी तरह जमाअत में जा सकता था, तो वह भी जाकर शरीक हो जाता था, चाहे दो आदमियों को खींच कर ले जाने की नौबत आती और यह एहतमाम क्यों न होता, जब कि उनके और हमारे आक़ा नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसी तरह का एहतमाम था। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरज़ुल वफ़ात[1] में यही सूरत पेश आयी कि मर्ज़ की शिद्दत की वजह से बार-बार ग़शी होती थी और कई-कई दफ़ा वुज़ू का पानी तलब फ़र्माते थे। आख़िर एक मर्तबा वुज़ू फ़र्माया और हज़रत अब्बास रज़ि० और एक दूसरे सहाबी के सहारे से मस्जिद में तशरीफ़ ले गये कि ज़मीन पर पांव मुबारक अच्छी तरह जमता भी न था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने तामीले[2] इर्शाद में नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दी थी, हुज़ूर सल्ल० जाकर नमाज़ में शरीक हुए।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं, कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि

1. मौत के मर्ज़ से, 2. हुक्म पूरा करने के लिए, 3. सहीहैन,

व सल्लम को यह इर्शाद फ़र्माते सुना कि अल्लाह की इबादत इस तरह कर, गोया वह बिल्कुल सामने है और तू उसको देख रहा है और अपने आप को मुर्दों की फ़ेहरिस्त में शुमार किया कर (ज़िंदों में अपने को समझ ही नहीं, कि फिर न किसी बात की ख़ुशी, न किसी बात से रंज) और मज़्लूम की बद-दुआ से अपने को बचा और जो तू इतनी भी ताक़त रखता हो कि ज़मीन पर घिसट कर इशा और सुबह की जमाअत में शरीक हो सके तो दरेग़ न कर एक हदीस में इर्शाद है कि मुनाफ़िक़ों पर इशा और सुबह की नमाज़ बहुत भारी है। अगर उनको यह मालूम हो जाता कि जमाअत में कितना सवाब है, तो ज़मीन पर घिसट कर जाते और जमाअत से उनको पढ़ते।[1]

(٤) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى لِلّٰهِ أَرْبَعِيْنَ يَوْمًا فِيْ جَمَاعَةٍ يُدْرِكُ التَّكْبِيْرَةَ الْأُوْلٰى كُتِبَ لَهُ بَرَاءَتَانِ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ وَبَرَاءَةٌ مِّنَ النِّفَاقِ رواه الترمذي وقال لا اعلم احدا رفعه الا ما روى مسلم بن قتيبة عن طعمة ابن عمرو وقال المنذري ومسلم وبقية رواته ثقات كذا في الترغيب قلت وله شواهد من حديث عمر رفعه من صلى في مسجد جماعة اربعين ليلة لا تفوته الركعة الاولى من صلوة العشاء كتب الله له بها عتقا من النار رواه ابن ماجة واللفظ له والترمذي وقال نحو حديث انس يعني المتقدم ولم يذكر لفظه وقال مرسل يعني ان عمارة الراوي عن انس لم يدرك انسا وعزاه في منتخب الكنز الى البيهقي في الشعب وابن عساكر وابن النجار

4. नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स चालीस दिन इख़्लास के साथ ऐसी तरह नमाज़ पढ़े कि तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो तो उसको दो परवाने मिलते हैं, एक परवाना जहन्नम से छुटकारे का और दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का।'

फ़ायदा— यानी जो इस तरह चालीस दिन इख़्लास से नमाज़ पढ़े कि शुरू ही से इमाम के साथ शरीक हो और नमाज़ शुरू करने की तक्बीर जब इमाम कहे तो उसी वक़्त यह भी नमाज़ में शरीक हो जाये तो वह शख़्स न जहन्नम में दाख़िल होगा, न मुनाफ़िक़ों में दाख़िल होगा। मुनाफ़िक़ वह लोग कहलाते हैं जो अपने को मुसलमान ज़ाहिर करें, लेकिन दिल में कुफ़्र रखते हों और चालीस दिन की ख़ुसूसियत बज़ाहिर इस वजह से है कि हालात के तग़य्युर[2] में चालीस को ख़ास दख़ल है। चुनांचे आदमी की पैदाइश की तर्तीब जिस हदीस में आयी है, इसमें भी

---

1. तर्ग़ीब, 2. बदलना,

चालीस दिन तक नुत्फ़ा रहना, फिर गोश्त का टुकड़ा चालीस दिन तक, इसी तरह चालीस-चालीस दिन में इस का तग़य्युर ज़िक्र फ़र्माया है। इसी वजह से सूफ़िया के यहां चिल्ला भी ख़ास अहमियत रखता है। कितने ख़ुश-क़िस्मत हैं वह लोग जिनकी वर्षों भी तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई।

(٥) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ وُضُوْءَهُ ثُمَّ رَاحَ فَوَجَدَ النَّاسَ قَدْ صَلَّوْا أَعْطَاهُ اللهُ مِثْلَ أَجْرِ مَنْ صَلَّاهَا وَحَضَرَهَا لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا رواه ابوداؤد و النسائی والحاكم وقال صحيح على شرط مسلم كذا فى الترغيب وفيه ايضا عن سعيد ابن المسيب قال حضر رجلا من الانصار الموت فقال انى محدثكم حديثا ما احدثكموه الا احتسابا انى سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اذا توضأ احدكم فاحسن الوضوء الحديث وفيه فان اتى المسجد فصلى فى جماعة غفر له فان اتى المسجد وقد صلوا بعضا وبقى بعض صلى ما ادرك واتم ما بقى كان كذلك فان اتى المسجد وقد صلوا فاتم الصلوة كان كذلك رواه ابوداؤد۔

5. 'नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर मस्जिद में नामाज़ के लिए जाए और वहां पहुंच कर मालूम हो कि जमाअत हो चुकी, तो भी उस को जमाअत की नमाज़ का सवाब होगा और उस सवाब की वजह से उन लोगों के सवाब में कुछ कमी नहीं होगी जिन्होंने जमाअत से नमाज़ पढ़ी है।'

फ़ायदा— यह अल्लाह का किस क़दर इनआम व एहसान है कि महज़ कोशिश और सई पर जमाअत का सवाब मिल जाए, गो जमाअत न मिल सके। अल्लाह की इस देन पर भी हम लोग ख़ुद ही न लें, तो किसी का क्या नुक़्सान है और इससे यह भी मालूम हो गया कि महज़ इस खटके से कि जमाअत हो चुकी होगी है, मस्जिद में जाना मुल्तवी न करना चाहिए, अगर जा कर मालूम हो कि हो चुकी है, तब भी सवाब तो मिल ही जायेगा, अल-बत्ता अगर पहले से यक़ीनन मालूम हो जाए कि जमाअत हो चुकी है तो मुज़ायक़ा नहीं।

(٦) عَنْ قُبَاثِ بْنِ أَشْيَمَ اللَّيْثِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةُ الرَّجُلَيْنِ يَؤُمُّ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ أَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلٰوةِ أَرْبَعَةٍ تَتْرٰى وَصَلٰوةُ أَرْبَعَةٍ أَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلٰوةِ ثَمَانِيَةٍ تَتْرٰى وَصَلٰوةُ ثَمَانِيَةٍ يَؤُمُّهُمْ أَحَدُهُمْ أَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلٰوةِ مِائَةٍ تَتْرٰى رواه البزار والطبرانى باسناد لا باس به كذا فى الترغيب وفى مجمع الزوائد رواه البزار والطبرانى فى الكبير ورجال الطبرانى موثقون وعزاه فى الجامع الصغير الى الطبرانى والبيهقى ورقم له بالصحة وعن

أبي بن كعب رفعه بمعنى حديث الباب فيه قصة وفي آخره وكلما كثر فهو احب الى الله عز وجل رواه احمد وابو داؤد والنسائي وابن خزيمة وابن حبان في صحيحيهما والحاكم وقد جزم يحيى بن معين والذهلي بصحة هذا الحديث كذا في الترغيب

6. नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि दो आदमियों की जमाअत की नमाज़ कि एक इमाम हो और एक मुक़्तदी, अल्लाह के नज़दीक चार आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसंदीदा है। इसी तरह चार आदमियों की जमाअत की नमाज़ आठ आदमियों की मुताफ़र्रिक़ नमाज़ से ज़्यादा महबूब है और आठ आदमियों की जमाअत की नमाज़ सौ आदमियों की मुताफ़र्रिक़ नमाज़ों से बढ़ी हुई है। एक दूसरी हदीस में है, 'इसी तरह जितनी बड़ी जमाअत में नमाज़ पढ़ी जाएगी, वह अल्लाह को ज़्यादा महबूब है मुख़्तसर जमाअत से।'

फ़ायदा– जो लोग यह समझते हैं कि दो चार आदमी मिलकर घर दुकान वग़ैरह पर जमाअत कर लें, वह काफ़ी है। अव्वल तो इसमें मस्जिद का सवाब शुरू ही से नहीं होता, दूसरे कसरत जमाअत[1] के सवाब से भी महरूमी होती है। मज्मा जितना ज़्यादा होगा, उतना ही अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब है और जब अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी के वास्ते एक काम करना है तो फिर जिस तरीक़े में उसकी ख़ुश्नूदी ज़्यादा हो, उसी तरीक़े से करना चाहिए।

एक हदीस में आया है कि हक़ तआला शानुहू तीन चीज़ों को देख कर ख़ुश होते हैं, एक जमाअत की सफ़ को, एक उस शख़्स को जो आधी रात (तहज्जुद) की नमाज़ पढ़ रहा हो, तीसरे उस शख़्स को, जो किसी लश्कर के साथ लड़ रहा हो।[2]

(٧) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَشِّرِ الْمَشَّائِيْنَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

رواه ابن ماجة وابن خزيمة في صحيحه والحاكم واللفظ له وقال صحيح على شرط الشيخين كذا في الترغيب وفي المشكوة برواية الترمذي وابي داؤد عن بريدة ثم قال رواه ابن ماجة عن سهل بن سعد وانس. قلت وله شاهد في منتخب كنز العمال برواية الطبراني عن ابي امامة بلفظ بشر المدلجين الى المساجد في الظلم بمنابر من نور يوم القيمة يفزع الناس ولا يفزعون ذكر السيوطي في الدر المنثور في تفسير قوله تعالى إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللّٰهِ عدة روايات في هذا المعنى.

---

1. जमाअत की ज़्यादती, 2. जामिउस्सग़ीर,

7. हज़रत सहल रज़ि० फ़र्माते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जो लोग अंधेरे में मस्जिदों में बकसरत जाते रहते हैं।, उन को क़यामत के दिन पूरे-पूरे नूर की खुशख़बरी सुना दे।

फ़ायदा– यानी आज दुनिया में अंधेरी रात में मस्जिद में जाने की क़द्र उस वक़्त मालूम होगी, जब क़यामत का हौलनाक मंज़र सामने होगा और हर शख़्स मुसीबत में गिरफ़्तार होगा। आज के अंधेरों की मशक़्क़त का बदला और उसकी क़द्र उस वक़्त होगी जब एक चमकता हुआ नूर और आफ़्ताब से कहीं ज़्यादा रोशनी उनके साथ-साथ होगी।

एक हदीस में है कि वह क़यामत के दिन नूर के मिंबरों पर होंगे और बे-फ़िक्र और लोग घबराहट में होंगे।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू क़यामत के दिन इर्शाद फ़र्माएंगे कि मेरे पड़ोसी कहां है। फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि आप के पड़ोसी कौन हैं ? इर्शाद होगा कि मस्जिदों को आबाद करने वाले।

एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला को सब जगहों से ज़्यादा महबूब मस्जिदें हैं और सब में ज़्यादा नापसंद बाज़ार हैं।

एक हदीस में है कि मस्जिदें जन्नत के बाग़ हैं। एक सहीह हदीस में वारिद है–

हज़रत अबूसईद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से नक़ल करते हैं, जिस शख़्स को देखो कि मस्जिद का आदी है, तो उसके ईमानदार होने की गवाही दो।[2] इसके बाद 'इन्नमा यअमुरू मसाजिदल्लाहि' यह आयत तिलावत फ़र्मायी यानी मस्जिदों को वही लोग आबाद करते है।, जो अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान रखते हैं।[3] एक हदीस में वारिद है कि मशक़्क़त के वक़्त वुज़ू करना और मस्जिद की तरफ़ क़दम उठाना और नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतिज़ार में बैठे रहना गुनाहों को धो देता है।

एक हदीस में वारिद है कि जो शख़्स जितना मस्जिद से दूर होगा, उतना ही ज़्यादा सवाब होगा। इसकी वजह यही है कि हर-हर क़दम पर अज्र व सवाब

---

1. जामिउस्सग़ीर, 2. वही, 3. दुर्रे मंसूर

है और जितनी दूर मस्जिद होगी, उतने ही क़दम ज़्यादा होंगे। इसी वजह से बाज़ सहाबा रज़ि॰ छोटे-छोटे क़दम रखते थे।

एक हदीस में आया है कि तीन चीज़ें ऐसी हैं, अगर लोगों को उनका सवाब मालूम हो जाए तो लड़ाइयों से उनको हासिल किया जाए- एक अज़ान कहना, दूसरी जमाअत की नमाज़ों के लिए दोपहर के वक़्त जाना, तीसरी पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना।

एक हदीस में इर्शाद है कि क़यामत के दिन जब हर शख़्स परेशान हाल होगा और आफ़्ताब निहायत तेज़ी पर होगा, सात आदमी ऐसे होंगे जो अल्लाह की रहमत के साए में होंगे उनमें एक शख़्स वह भी है जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे कि जब किसी ज़रूरत से बाहर आये तो फिर मस्जिद ही में वापस जाने की ख़्वाहिश हो।

एक हदीस में वारिद है, जो शख़्स मस्जिद से उल्फ़त रखता है, अल्लाह जल्ले शानुहू उससे उल्फ़त फ़र्माते हैं।[1]

शरीअते मुतह्हरा[2] के हर हुक्म में ख़ैर व बरकत, अज्र व सवाब तो बे-पाया[3] है ही, उसके साथ ही बहुत सी मसलहतें भी इन अहकाम में जो मलहूज़ होती हैं।[4] इनकी हक़ीक़त तक पहुंचना तो मुश्किल है कि अल्लाह जल्ले शानुहू के उलूम और उनके मसालेह[5] तक किसकी रसाई है मगर अपनी-अपनी इस्तेदाद और हौसले के मुवाफ़िक़ जहां तक अपनी समझ काम देती है उनकी मसालेह भी समझ में आती है और जितनी इस्तेदाद होती है, उतनी ही ख़ूबियां उन अहकाम की मालूम होती रहती हैं। उलमा ने जमाअत की मसालेह भी अपनी-अपनी समझ के मुवाफ़िक़ तहरीर फ़र्मायी हैं। हमारे हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने -'हुज्जतुल्लाहिलबालिग़ा' में एक तक़रीर उस के मुताल्लिक़ इर्शाद फ़र्माई है, जिसका तर्जुमा और मतलब यह है कि-

1 रस्म व रिवाज के मुहलकात से बचने के लिए इससे ज़्यादा नाफ़ेअ कोई चीज़ नहीं कि इबादात में से किसी इबादत को ऐसी आम रस्म और आम रिवाज बना लिया जाये जो अलल् ऐलान अदा की जाये और हर शख़्स के सामने ख़्वाह समझदार हो या ना समझ, वह अदा की जा सके। उसके अदा करने में शहरी और ग़ैर शहरी

1. जामिउस्सग़ीर, 2. पाक शरीअत, 3. बहुत ज़्यादा 4. देखी जा सकती है, 5. मसलहतें,

बराबर हों। मुसाबक़त और तफ़ाख़ुर उसी पर किया जाये और ऐसी आम हो जाये कि ज़रूरियाते ज़िंदगी में इस तरह दाख़िल हो जाये कि उससे अलाहदगी ना मुम्किन और दुश्वार हो जाये ताकि वह अल्लाह की इबादत के लिए मुअय्यिद हो जाये और वह रस्म और रिवाज जो मूजिबे मुज़र्रत व नुक़्सान था, वही हक़ की तरफ़ खींचने वाला बन जाये और चूंकि इबादात में कोई इबादत भी नमाज़ से ज़्यादा मुहतम्म बिश्शान और दलील व हुज्जत के ऐतबार से बढ़ी हुई नहीं, इसलिए ज़रूरी हुआ कि आपस में उसके रिवाज को ख़ुब शाओ किया जाये और उसके लिये ख़ास तौर से इज्तिमाअ किया जाये, आपस में इत्तिफ़ाक़ से उसको अदा किया जाये।

2. नीज़ हर मज़हब और दीन में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो मुक्तदा होते हैं कि उनका इत्तिबाअ किया जाता है और कुछ लोग दूसरे दर्जे में ऐसे होते हैं जो किसी मामूली सी तर्ग़ीब व तंबीह के मुहताज होते हैं और कुछ लोग तीसरे दर्जे में बहुत नाकारा और जईफ़ुल एतक़ाद ऐसे भी होते हैं, जिनको अगर मज्मे में इबादत का तकल्लुफ़ न किया जाये तो वह सुस्ती और काहिली की वजह से इबादत भी छोड़ देते हैं। इस वजह से मसलहत का मुक्तज़ा यही है कि यह सब लोग इज्तिमाई तौर पर इबादत को अदा करें ताकि जो लोग इबादत को छोड़ने वाने हैं वह इबादत करने वालों से मुम्ताज़[1] हो जायें और रग़बत करने वालों और बे-रग़बती करने वालों में खुला तफ़ावुत[2] हो जाये और ना-वाक़िफ़ लोग उलमा के इत्तिबाअ से वाक़िफ़ बन जायें और जाहिल लोगों को इबादत का तरीक़ा मालूम हो जाये और अल्लाह की इबादत उन लोगों में उस पिघली हुई चांदी की तरह से हो जाये जो किसी माहिर के सामने रखी जाये, जिससे जायज, नाजायज और खरे खोटे में खुला फ़र्क़ हो जाये जायज की तक़वियत की जाये और नाजायज को रोका जाये।

3. इसके अलावा मुसलमानों के ऐसे इज्तिमाअ में, जिसमें अल्लाह की तरफ़ रग़बत करने वाले उसकी रहमत के तलब करने वाले और उससे डरने वाले मौजूद हों और सबके सब अल्लाह ही की तरफ़ हमातन मुतवज्जह हों, बरकतों के नाज़िल होने और रहमत के मुतवज्जह होने की अजीब ख़ासियत रखी है।

4. नीज़ उम्मते मुहम्मदिया के क़याम का मक़्सद ही यह है कि अल्लाह का बोलबाला हो और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़लबा हो और यह मुम्किन नहीं, जब तक यह तरीक़ा राइज न हो, सबके सब अवाम-ख़वास, शहर के रहने वाले और

1. अलग हो जाए, 2. फ़र्क़, 3. ताक़त पहुंचाना,

गांव के रहने वाले, छोटे-बड़े एक जगह जमा होकर उस चीज़ को जो इस्लाम का सबसे बड़ा शिआर है और सबसे बालातर इबादत है, अदा न करें, इन वजूह से शरीअत जुमा और जमाअत के एहतमाम की तरफ़ मुतवज्जह हुई। उनके इज़्हार व एलान की तर्ग़ीबें और छोड़ने पर वईदें नाज़िल हुयीं और चूंकि इज़्हार व इज्तमाअ एक सिर्फ़ मुहल्ला और क़बीले का है और एक तमाम शहर का। और मुहल्ले का इज्तिमाअ हर वक़्त सहल है और तमाम शहर का हर वक़्त मुश्किल है कि उसमें तंगी है इसलिए मुहल्ले का इजितमा हर नमाज़ के वक़्त क़रार दिया और जमाअत की नमाज़ इसके लिए मशरूअ हुई और तमाम शहर का इज्तिमाअ आठवें दिन क़रार दिया और जुमा की नमाज़ इसके लिए तज्वीज़ हुई।

फ़स्ले दोयम, जमाअत के छोड़ने पर इताब के बयान में

हक़ तआला शानुहू ने अपने अहकाम की पाबंदी पर जैसे कि इनआमात का वायदा फ़र्माया है, ऐसे ही तामील न करने पर नाराज़ी और इताब भी फ़र्माया है। यह भी अल्लाह का फ़ज़्ल है कि तामील में बे-करां[1] इनआमात का वायदा है वरना बन्दगी का मुक़्तज़ा सिर्फ़ इताब ही होना चाहिए था कि बंदगी का फ़र्ज़ है तामीले इर्शाद, फिर इस पर इनआम के क्या माना और नाफ़र्मानी की सूरत में जितना भी इताब व अज़ाब हो, वह बरमहल कि आक़ा की नाफ़र्मानी से बढ़कर और क्या जुर्म हो सकता है। पस किसी ख़ास इताब या तंबीह के फ़र्माने की ज़रूरत न थी, मगर फ़िर भी अल्लाह जल्ले शानुहू और उसके पाक रसूल सल्ल० ने हम पर शफ़क़त फ़र्मायी कि तरह-तरह से मुतनब्बह[2] फ़र्माया, उसके नुक़्सानात बताये, मुख़्तलिफ़ तौर से समझाया, फिर भी हम न समझें तो अपना ही नुक़्सान है।

(1) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَمِعَ النِّدَاءَ فَلَمْ يَمْنَعْهُ مِنِ اتِّبَاعِهِ عُذْرٌ قَالُوْا وَمَا الْعُذْرُ قَالَ خَوْفٌ اَوْ مَرَضٌ لَمْ تُقْبَلْ مِنْهُ الصَّلٰوةُ الَّتِىْ صَلّٰى رواه ابوداؤد وابن حبان فى صحيحه وابن ماجة بنحوه كذا فى الترغيب

1. नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स

1. बे-हिसाब, 2. तंबीह,

अजान की आवाज़ सुने और बिला किसी उज्र के नमाज को न जाये (वहीं पढ़ ले), तो वह नमाज़ क़ुबूल नहीं होती। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि उज्र से क्या मुराद है। इर्शाद हुआ कि मर्ज हो या कोई ख़ौफ़ हो।

फ़ायदा– क़ुबूल न होने के यह माना हैं कि इस नमाज पर जो सवाब और इनआम हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से होता, वह न होगा। गो फ़र्ज ज़िम्मे से उतर जायेगा और यही मुराद है उन हदीसों से, जिनमें आया है कि उसकी नमाज़ नहीं होती। इसलिए कि ऐसा होना भी कुछ होना हुआ, जिस पर इनआम व इक्राम न हुआ। यह हमारे इमाम के नज़दीक है, वरना सहाबा और ताबिईन की एक जमाअत के नजदीक इन अहादीस की बिना पर बिला उज्र जमाअत का छोड़ना हराम है और जमाअत से पढ़ना फ़र्ज है, यहां तक कि बहुत से उलमा के नजदीक नमाज़ होती ही नहीं। हनफ़िया के नजदीक गरचे नमाज़ हो जाती है, मगर जमाअत के छोड़ने का मुज्रिम तो होगा ही।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से एक हदीस में यह भी नकल किया गया कि उस शख़्स ने अल्लाह की नाफ़र्मानी की और रसूल सल्ल० की नाफ़र्मानी की। हज़रत इब्ने-अब्बास रज़ि० का यह भी इर्शाद है कि जो शख़्स अजान की आवाज़ सुने और जमाअत से नमाज न पढ़े, न उसने भलाई का इरादा किया, न उस के साथ भलाई का इरादा किया गया।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि जो शख़्स अजान की आवाज़ सुने और जमाअत में हाज़िर न हो, उसके कान पिघले हुए सीसे से भर दिये जाएं, यह बेहतर है।

(٢) عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَالَ اَلْجَفَاءُ كُلَّ الْجَفَاءِ وَالْكُفْرُ وَالنِّفَاقُ مَنْ سَمِعَ مُنَادِيَ اللّٰهِ يُنَادِيْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَلَا يُجِيْبُهٗ رواه احمد والطبرانى من رواية زبان بن فائد كذا فى الترغيب وفى مجمع الزوائد رواه الطبرانى فى الكبير وزبان ضعفه ابن معين ووثقه ابو حاتم وعزاه فى الجامع الصغير الى الطبرانى ورقم له بالضعف

2. नबी-अकरम सल्ल० का इर्शाद है कि सरासर ज़ुल्म है और कुफ़्र है और निफ़ाक़ है उस शख़्स का फ़ेल जो अल्लाह के मुनादी (यानी मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज को ना जाये।'

फ़ायदा– कितनी सख़्त वईद और डांट है इस हदीसे पाक में कि उस की इस हरकत को काफ़िरों का फ़ेल और मुनाफ़िक़ों की हरकत बताया है कि गोया मुसलमान से यह बात हो ही नहीं सकती। एक दूसरी हदीस में इर्शाद है कि आदमी की बद-बख़्ती और बद-नसीबी के लिए यह काफ़ी है कि मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुने और नमाज़ को न जाये।

सुलेमान बिन अबीहस्मा रज़ि० जलीलुल् क़द्र लोगों में थे। हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में पैदा हुए, मगर हुज़ूर सल्ल० से रिवायत सुनने की नौबत कम उम्री की वजह से नहीं आयी। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको बाज़ार का निगरां बना रखा था। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से सुबह की नमाज़ में मौजूद न थे। हज़रत उमर रज़ि० उस तरफ़ तशरीफ़ ले गये तो उनकी वालिदा से पूछा कि सुलेमान आज सुबह की नमाज़ में नहीं थे। वालिदा ने कहा कि रात भर नफ़्लों में मशग़ूल रहा। नींद के ग़ल्बे से आंख लग गयी। आप ने फ़र्माया, मैं सुबह की जमाअत में शरीक हूं, यह मुझे इससे पसंदीदा है कि रात भर नफ़्लें पढ़ूं।

(٣) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ فِتْيَتِي فَيَجْمَعُوْا لِي حُزَمًا مِنْ حَطَبٍ ثُمَّ آتِيَ قَوْمًا يُصَلُّوْنَ فِي بُيُوْتِهِمْ لَيْسَتْ بِهِمْ عِلَّةٌ فَأُحَرِّقَهَا عَلَيْهِمْ رواه مسلم وابو داؤد وابن ماجة والترمذي كذا في الترغيب قال السيوطي في الدر اخرج ابن ابي شيبة والبخاري ومسلم وابن ماجة عن ابي هريرة رضه اثقل الصلوة على المنافقين صلوة العشاء وصلوة الفجر ولو يعلمون ما فيهما لاتوهما ولو حبوا ولقد هممت ان امر بالصلوة فتقام الحديث بنحوه۔

3. 'हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़र्माते हैं कि– मेरा दिल चाहता है कि चंद जवानों से कहूं कि बहुत सा ईंधन इकट्ठा करके लायें, फिर मैं उन लोगों के पास जाऊं जो बिला उज़्र के घरों में नमाज़ पढ़ लेते हैं और जा कर उनके घरों को जला दूं।'

फ़ायदा– नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बावजूद उस शफ़्क़त और रहमत के, जो उम्मत के हाल पर थी और किसी शख़्स की अदना सी तक्लीफ़ भी गवारा न थी, उन लोगों पर जो घरों में नमाज़ पढ़ लेते हैं, इस क़दर ग़ुस्सा है कि उनके घरों में आग लगा देने को भी आमादा हैं।

(۴) عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِؓ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ مَا مِنْ ثَلٰثَۃٍ فِیْ قَرْیَۃٍ وَّلَا بَدْوٍ لَا تُقَامُ فِیْہِمُ الصَّلٰوۃُ اِلَّا قَدِ اسْتَحْوَذَ عَلَیْہِمُ الشَّیْطٰنُ فَعَلَیْکُمْ بِالْجَمَاعَۃِ فَاِنَّمَا یَاْکُلُ الذِّئْبُ مِنَ الْغَنَمِ الْقَاصِیَۃَ رواہ احمد وابو داؤد والنسائی وابن خزیمۃ وابن حبان فی صحیحیہما والحاکم وزاد رزین فی جامعہ وان ذئب الانسان الشیطان اذا خلا بہ اکلہ کذا فی الترغیب ورقم لہ فی الجامع الصغیر بالصحۃ وصححہ الحاکم واقرہ علیہ الذہبی

4. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस गांव या जंगल में तीन आदमी हों, और वहां बा-जमाअत नमाज़ न होती हो, तो उन पर शैतान मुसल्लत हो जाता है, इसलिए जमाअत को ज़रूरी समझो, भेड़िया अकेला बकरी को खा जाता है और आदमियों का भेड़िया यह शैतान है।

फ़ायदा— इससे मालूम हुआ कि जो लोग खेती-बाड़ी में मश्गूल रहते हैं, अगर तीन आदमी हों तो उनको जमाअत से नमाज़ पढ़ना चाहिए, बल्कि दो को भी जमाअत से पढ़ना औला है। किसान आम तौर से अव्वल तो नमाज़ पढ़ते ही नहीं कि उनके लिए खेती की मश्गूली अपने नज़दीक काफ़ी उज़्र है और जो बहुत दीनदार समझे जाते हैं, वह भी अकेले ही पढ़ लेते हैं। हालांकि अगर चंद खेत वाले भी एक जगह जमा हो कर पढ़ें तो कितनी बड़ी जमाअत हो जाये और कितना बड़ा सवाब हासिल करें। चार पैसे के वास्ते सर्दी-गर्मी, धूप बारिश सब से बे-नियाज़ होकर दिन भर मश्गूल रहते हैं, लेकिन इतना बड़ा सवाब ज़ाया करते हैं और इसकी कुछ भी परवाह नहीं करते, हालांकि यह लोग अगर जंगल में जमाअत से नमाज़ पढ़ें तो और भी ज़्यादा सवाब का सबब होता है हत्ताकि एक हदीस में आया है कि पचास नमाज़ों का सवाब हो जाता है। एक हदीस में आया है कि जब कोई बकरियां चराने वाला किसी पहाड़ की जड़ में (या जंगल में) अज़ान कहता है और नमाज़ पढ़ने लगता है, तो हक़ तआला शानुहू उससे बेहद ख़ुश होते है और ताज्जुब व तफ़ाख़ुर से फ़रिश्तों से फ़र्माते हैं, देखो जी, मेरा बंदा अज़ान कह कर नमाज़ पढ़ने लगा। यह सब मेरे डर की वजह से कर रहा है, मैंने उसकी मग्फ़िरत कर दी और जन्नत का दाख़िला तै कर दिया।

(۵) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍؓ اَنَّہٗ سُئِلَ عَنْ رَجُلٍ یَصُوْمُ النَّہَارَ وَیَقُوْمُ اللَّیْلَ وَلَا یَشْہَدُ الْجَمَاعَۃَ وَلَا الْجُمُعَۃَ فَقَالَ ھٰذَا فِی النَّارِ رواہ الترمذی موقوفا کذا فی الترغیب وفی تنبیہ الغافلین روی عن مجاھد ان رجلا جاء الی ابن عباسؓ فقال یا ابن عباسؓ ما تقول فی رجل فذکرہ بلفظہ زاد فی آخرہ فاختلف الیہ شہرا یسألہ عن ذلک وھو یقول ھو فی النار۔

5. 'हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से किसी ने पूछा कि एक शख़्स दिन भर रोज़ा रखता है और रात भर नफ़्लें पढ़ता है, मगर जुमा और जमाअत में शरीक नहीं होता (उसके मुताल्लिक़ क्या हुक्म है?) आप ने फ़र्माया कि यह शख़्स जहन्नुमी है।'

फ़ायदा– गो एक ख़ास ज़माने तक सज़ा भुगतने के बाद जहन्नम से निकल आये कि बहरहाल मुसलमान है, मगर न मालूम कितने अर्से तक पड़ा रहना पड़ेगा।

जाहिल सूफ़ियों में वज़ीफ़ों और नफ़्लों का तो ज़ोर होता है, मगर जमाअत की परवाह नहीं होती। इसको वह बुज़ुर्गी समझते हैं, हालांकि कमाले बुज़ुर्गी अल्लाह के महबूब का इत्तिबाअ है।

एक हदीस में वारिद है कि तीन शख़्सों पर हक़ तआला शानुहू लानत भेजते हैं–

एक उस शख़्स पर जिससे नमाज़ी (किसी माक़ूल वजह से) नाराज़ हों और वह इमामत करे।

दूसरे उस औरत पर, जिसका ख़ाविंद उस से नाराज़ हो।

तीसरे उस शख़्स पर जो अज़ान की आवाज़ सुने और जमाअत में शरीक न हो।

(٦) اَخْرَجَ ابْنُ مَرْدَوَيْهِ عَنْ كَعْبِ الْحَبْرِ
قَالَ وَالَّذِىْ اَنْزَلَ التَّوْرٰةَ عَلٰى مُوْسٰى
وَالْاِنْجِيْلَ عَلٰى عِيْسٰى وَالزَّبُوْرَ عَلٰى دَاوُدَ وَ
الْفُرْقَانَ عَلٰى مُحَمَّدٍ اُنْزِلَتْ هٰذِهِ الْاٰيَاتُ
فِى الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَاتِ حَيْثُ يُنَادٰى بِهِنَّ
يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ اِلٰى قَوْلِهٖ وَهُمْ سَالِمُوْنَ
اَلصَّلٰوتُ الْخَمْسُ اِذَا نُوْدِىَ بِهَا وَاَخْرَجَ الْبَيْهَقِى
فِى الشُّعَبِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ الصَّلٰوتُ
فِى الْجَمَاعَاتِ واخرج البيهقى عن ابن
عباس قال الرجل يسمع الاذان فلا
يجيب الصلوة كذا فى الدر المنثور قلت
وتمام الاية يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ
اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ خَاشِعَةً
اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوْا
يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سَالِمُوْنَ ٥

6. 'हज़रत काब अहबार रज़ि० फ़र्माते हैं कि क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसने तौरात हज़रत मूसा अलै० पर नाज़िल फ़र्मायी और क़ुरआन शरीफ़ सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़र्माया कि यह आयतें फ़र्ज़ नमाज़ों का जमाअत से ऐसी जगह पढ़ने के बारे में, जहां अज़ान होती हो, नाज़िल हुई हैं (तर्जुमा

आयात) जिस दिन हक़ तआला शानुहू साक़ की तजल्ली फ़र्माएंगे (जो एक ख़ास क़िस्म की तजल्ली होगी) और लोग उस दिन सज्दा के लिए बुलाए जाएंगे तो यह लोग सज्दा नहीं कर सकेंगे। उन की आंखे शर्म के मारे झुकी हुई होंगी और उन पर ज़िल्लत छायी हुई होगी, इसलिए कि यह लोग दुनिया में सज्दे की तरफ़ बुलाये जाते थे और सही सालिम तंदुरूस्त थे, (फिर भी सज्दा नहीं करते थे।')

फ़ायदा– साक़ की तजल्ली एक ख़ास क़िस्म की तजल्ली है जो मैदाने हश्र में होगी। इस तजल्ली को देख कर सारे मुसलमान सज्दा में गिर जाएंगे, मगर बाज़ लोग ऐसे होंगे, जिन की कमर तख़्ता हो जाएगी और सज्दे पर क़ुदरत न होगी। यह कौन लोग होंगे, इस के बारे में तफ़्सीरें मुख़्तलिफ़ वारिद हुई हैं। एक तफ़्सीर यह है जो काब अह्बार रज़ि० से मंकूल है और उसी के मुवाफ़िक़ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० वग़ैरह से भी मंकूल है कि यह वह लोग होंगे, जो दुनिया में जमाअत की नमाज़ के वास्ते बुलाये जाते थे और जमाअत की नमाज़ नहीं पढ़ते थे। दूसरी तफ़्सीर बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० से मंकूल हैकि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि यह लोग वह होंगे, जो दुनिया में रिया और दिखलावे के वास्ते नमाज़ पढ़ते थे। तीसरी तफ़्सीर यह है कि यह लोग काफ़िर हैं, जो दुनिया में सिरे से नमाज़ नहीं पढ़ते थे। चौथी तफ़्सीर यह है कि इस से मुराद मुनाफ़िक़ हैं।

वल्लाहु अअलमु व इल्मुहू अतम्म० وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَعِلْمُهٗ اَتَمُّ

बहरहाल इस तफ़्सीर के मुवाफ़िक़ जिसको हज़रत काब अह्बार रज़ि० क़सम खाकर इर्शाद फ़र्मा रहे हैं और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० जैसे जलीलुल् क़द्र सहाबी इमामे तफ़्सीर से इसकी ताईद होती है, कितना सख़्त मामला है कि मैदाने हश्र में ज़िल्लत व नुक्बत[1] हो, और जहां सारे मुसलमान सज्दे में मशग़ूल हों, उससे सज्दा अदा न हो सके। इनके अलावा और भी बहुत सी वईदें जमाअत के छोड़ने पर आयी हैं। मुसलमान के लिए तो एक भी वईद की ज़रूरत नहीं कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का हुक्म व इर्शाद ही सब कुछ है और जिसको उसकी क़द्र नहीं, उसके लिए हज़ार तरह की वईदें भी बेकार हैं। जब सज़ा का वक़्त आयेगा, तो पशेमानी[2] होगी, जो बेकार होगी।

---

1. रुसवाई बे-इज़्ज़ती, 2. शर्मिंदगी,

तीसरा बाब

ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के बयान में

बहुत से लोग ऐसे हैं, जो नमाज़ पढ़ते हैं और उनमें से बहुत से ऐसे भी हैं, जो जमाअत का भी एहतमाम फ़र्माते हैं, लेकिन इसके बावजूद ऐसी बुरी तरह पढ़ते हैं कि वह नमाज़, बजाय इसके कि सवाब व अज्र का सबब हो, नाक़िस होने की वजह से मुंह पर मार दी जाती है,गो न पढ़ने से यह भी बेहतर है, क्योंकि न पढ़ने की सूरत में जो अज़ाब है, वह बहुत ज़्यादा सख़्त है और इस सूरत में यह हुआ कि वह क़ाबिले क़ुबूल न हुई और मुंह पर फेंक कर मार दी गयी, इस पर कोई सवाब नहीं हुआ। लेकिन न पढ़ने में जिस दर्जे की नाफ़र्मानी और नख़्वत[1] हुई, वह तो इस सूरत में न होगी, अलबत्ता यह मुनासिब है कि जब आदमी वक़्त ख़र्च करे, कारोबार छोड़े, मशक़्क़त उठाये तो इसकी कोशिश करनी चाहिये कि जितनी ज़्यादा से ज़्यादा वज़नी और क़ीमती पढ़ सके, उसमें कोताही न करे। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है, गो वह क़ुर्बानी के बारे में है, मगर अह्काम तो सारे एक ही हैं। फ़र्माते हैं-

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ

लंय्यनालल्ला ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा व लाकिंय्यना ल हुत्तक्वामिनकुम०

'न तो हक़ तआला शानुहू के पास उनका गोश्त पहुंचता है, न उनका ख़ून, बल्कि उसके पास तो तुम्हारा तक़्वा और इख़्लास पहुंचता है।'

पस जिस दर्जे का इख़्लास होगा, उसी दर्जे की मक़्बूलियत होगी

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु इर्शाद फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुझे यमन को भेजा तो मैंने आख़िरी वसीयत की दर्ख़्वास्त की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि दीन के हर काम में इख़्लास का एहतमाम करना कि इख़्लास से थोड़ा अमल भी बहुत कुछ है।

हज़रत सौबान रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़र्माते हुए सुना-

---

1. घमंड,

इख़्लास वालों के लिए ख़ुशहाली हो कि वह हिदायत के चिराग़ हैं। इनकी वजह से सख़्त से सख़्त फ़िल्ने दूर हो जाते हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अल्लाह तआला ज़ईफ़ लोगों की बरकत से इस उम्मत की मदद फ़र्माते हैं, नीज उन की दुआ से, उनकी नमाज़ से, उनके इख़्लास से।[1]

नमाज़ के बारे में अल्लाह जल्ले शानुहू का इर्शाद है-

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ

फ़वैलुल्लिल् मुसल्लीनल्लज़ी न हुम अन् सलातिहिम साहून ल्लज़ी न हुम युराऊन०

'बड़ी ख़राबी है उन लोगों के लिए, जो अपनी नमाज़ से बे-ख़बर हैं, जो ऐसे हैं कि दिखलावा करते हैं।'

'बे-ख़बर' होने की भी मुख़्तलिफ़ तफ़्सीरें की गयी हैं- एक यह कि वक़्त की ख़बर न हो, क़ज़ा कर दे। दूसरे यह कि मुतवज्जह न हो, इधर उधर मशग़ूल हो, तीसरे यह कि यही ख़बर न हो, कि कितनी रक्अतें हुईं।

दूसरी जगह मुनाफ़िक़ीन के बारे में इर्शादे ख़ुदावंदी है-

وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا

व इज़ा क़ामू इलस्सलाति क़ामू कुसाला युराऊन न्ना स व ला यज़्कुरूनल्ला क़लीला०

'और जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत काहिली से खड़े होते हैं, सिर्फ़ लोगों को दिखलाते हैं (कि हम भी नमाज़ी हैं) और अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करते मगर बहुत थोड़ा सा।'

एक जगह चंद अंबिया अला नबीयिना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का ज़िक्र फ़र्मा कर इर्शाद है-

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا

'फ़ ख़ ल फ़ मिम् बअ्दिहिम ख़ल्फ़ुन अज़ाउस्सला त वत्त ब अुश्श ह वाति फ़ सौ फ़ यल्क़ौ न ग़य्या०'

---

1. तर्ग़ीब,

'पस इन नबियों के बाद बाज़ें ऐसे ना ख़लफ़[1] पैदा हुए, जिन्होंने नमाज़ को बर्बाद किया और ख़्वाहिशात नफ़्सानिया[2] के पीछे पड़ गए, सो अन्क़रीब आख़िरत में ख़राबी देखेंगे।'

'ग़य्य' का तर्जुमा लुग़त में गुमराही है, जिससे मुराद आख़िरत की ख़राबी और हलाकत है और बहुत से मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ग़य्य जहन्नम का एक तब्क़ा[3] है, जिसमें लहू पीप वग़ैरह जमा होगा, उसमें यह लोग डाल दिये जाएंगे।

एक जगह इर्शाद है-

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللهِ وَبِرَسُولِهِ وَ
لَا يَأْتُونَ الصَّلٰوةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ۞

व मा म न अहुम अन् तुक्बल मिन्हुम नफ़ क़ातुहुम इल्ला अन्नहुम क फ़ रू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअ्तूनस्सला त इल्ला व हुम कुसाला व ला युन्फ़िक़ू न इल्ला व हुम कारिहून॰

'और उनकी ख़ैर-ख़ैरात मक्बूल होने से और कोई चीज बजुज इसके मानेअ नहीं है कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया और नमाज़ नहीं पढ़ते, मगर काहिली से और नेक काम में ख़र्च नहीं करते मगर गरानी से।'

इसके बिल्-मुक़ाबिल अच्छी तरह से नमाज़ पढ़ने वालों के बारे में इर्शाद है-

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۞ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ
خَاشِعُونَ ۞ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۞ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فَاعِلُونَ ۞ وَالَّذِينَ هُمْ
لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۞ إِلَّا عَلٰى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۞ فَمَنِ ابْتَغٰى
وَرَاءَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۞ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۞ وَالَّذِينَ
هُمْ عَلٰى صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۞ أُولٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۞ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ (ترجمہ)

क़द अफ़्लहल् मुअ्मिनून ल्लज़ी न हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन॰ लल्लज़ीन हुम अनिल्लग़्वि मुअ्रिज़ून॰ वल्लज़ी न हुम लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून॰ वल्लज़ीन हुम लिफ़रूजिहिम हाफ़िज़ून॰ इल्ला अला अज़्वाजिहिम और मा मलकत ऐमानुहूम

1. नालायक़, 2. नफ़्स की ख़्वाहिशों, 3. दर्जा,

फ़इन्नहुम ग़ैरु मलूमीन॰ फ़ म निब्तग़ा वरा अ ज़ालि क फ़ उलाइ क हुमुल आदून॰ वल्लज़ी न हुम लिअमानातिहिम व अह्दिहिम राऊन वल्लज़ी न हुम अला स ल वातिहिम युहाफ़िज़ून॰ उलाइ क हुमुल वारिसून ल्लज़ी न यरिसूनल् फ़िर्दौस हुम फ़ीहा ख़ालिदून॰

'बेशक कामियाबी और फ़लाह को पहुंच गये वह मोमिन, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ करने वाले हैं और वह लोग जो लग़्वियात[1] से एराज़[2] करने वाले हैं और जो ज़कात अदा करने वाले हैं।[3] (या अपने अख़्लाक़ को दुरुस्त करने वाले हैं) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, बजुज़ अपनी बीवियों और बांदियों के, कि इनमें कोई हर्ज नहीं, अलबत्ता जो इनके अलावा और जगह शहवत पूरी करना चाहें, वह लोग हद से गुज़रने वाले हैं और जो अपनी अमानतों और अपने अह्द व पैमान की रियायत करने वाले हैं और जो अपनी नमाज़ों का एहतमाम करने वाले हैं, यही लोग जन्नत के वारिस हैं, जो फ़िर्दौस के वारिस बनेंगे और हमेशा-हमेशा को उसमें रहेंगे।'

हदीस में आया है कि फ़िर्दौस जन्नत का आला और अफ़ज़लतरीन हिस्सा है, वहां से जन्नत की नहरें जारी होती हैं, उसी पर अर्शे इलाही होगा। जब तुम जन्नत की दुआ किया करो, तो जन्नतुल फ़िर्दौस मांगा करो। दूसरी जगह नमाज़ के बारे में इर्शाद इलाही है-

وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

व इन्नहा लकबीरतुन इल्ला अलल् ख़ाशिअीन ल्लज़ीन यज़ुन्नून अन्नहुम मुलाक़ू रब्बिहिम व अन्नहुम इलैहि राजिऊन॰

'बेशक नमाज़ दुश्वार है, मगर जिनके दिलों में ख़ुशूअ है, उन पर कुछ भी दुश्वार नहीं। यह वह लोग हैं, जो इसका ख़्याल रखते हैं कि बिला शुब्हा वह अपने रब से क़यामत में मिलने वाले हैं और मरने के बाद उसी की तरफ़ लौट के जाने वाले हैं।'

ऐसे ही लोगों की तारीफ़ में एक जगह इर्शादे ख़ुदावंदी है-

---

1. बेकार की बातें और काम, 2. बचने वाले, ज़कात की तफ़्सीर में इख़्तिलाफ़ है कि इस जगह मशहूर मानी ज़कात के मुराद हैं या ज़कात बदनी यानी अपनी इस्लाह और नफ़्स का तज़्किरा।

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللّٰهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَإِقَامِ الصَّلٰوةِ وَإِيتَاءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

(ع ۵)

फ़ी बुयूतिन अज़िनल्लाहु अन् तुर्फ अ व युज़्क र फ़ीहस्मुहू युसब्बिहुलहू फ़ीहा बिल् ग़ुदूवि वल् आसालि रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजारतुंव्व ला बैअुन अन ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़कादि यौमन त त क़ल्लबु फ़ीहिल् क़ुलूबु वल् अब्सारु लियज़्जि य हुमुल्लाहु अह्सन मा अमिलू व यज़ीदहुम मिन फ़ज़्लिही वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब०

'ऐसे घरों में, जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह जल्ले शानुहू ने हुक्म फ़र्मा दिया है कि उनका अदब किया जाये, उनको बुलंद किया जाये, उनमें सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह करते हैं, ऐसे लोग, जिनको अल्लाह की याद से और नमाज़ के क़ायम करने से और ज़कात के देने से न तो तिजारत ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीद व फ़रोख़्त ग़फ़लत में डालती है। वह लोग ऐसे दिन की सख़्ती से डरते हैं, जिस दिन दिल और आंखें उलट-पुलट हो जाएंगी (यानी क़यामत का दिन) और वह लोग यह सब कुछ इसलिए करते हैं कि अल्लाह जल्ले शानुहू उनके नेक आमाल का बदला उनको अता फ़र्मा दें। और बदले से भी बहुत ज़्यादा इनआमात अपने फ़ज़्ल से अता फ़र्मा दें और अल्लाह जल्ले शानुहू तो जिसको चाहते हैं, बे-शुमार अता फ़र्मा देते हैं'–

तू वह दाता है कि देने के लिए, दर तेरी रहमत के हैं हर दम खुले।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि नमाज क़ायम करने से यह मुराद है कि उसके रुकूअ-सज्दा को अच्छी तरह अदा करे, हमातन मुतवज्जह रहे और ख़ुशूअ के साथ पढ़े। क़तादा रज़ि० से भी यह ही नक़ल किया गया कि नमाज़ का क़ायम करना, उसके औक़ात की हिफ़ाज़त रखना और वुज़ू का और रुकूअ-सज्दे का अच्छी तरह अदा करना है, यानी जहां-जहां क़ुरआन शरीफ़ में 'इक़ामस्सलात और युक़ीमूनस्सलात' आया है, यही मुराद है।[1]

1. बुराई दूर करने की बात,

यहीं लोग है जिनकी तारीफ़ दूसरी जगह इन अल्फ़ाज से इर्शाद फर्मायी गयी-

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا وَّالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا

व अिबादुर्रहमानि ल्लज़ी न यम्शून अलल् अर्जि हौनंव्व इज़ा ख़ा त ब हुमुल जाहिलू न क़ालू सलामन् व ल्लज़ी न यबीतू न लिरब्बिहिम सुज्जदंव्व क़ियामा०

'और रहमान के ख़ास बन्दे वह हैं, जो चलते हैं, ज़मीन पर आजिज़ी से (अकड़ कर नहीं चलते) और जब उनसे जाहिल लोग (जिहालत की) बात करते हैं तो कहते हैं कि सलाम (यानी सलामती की बात करते हैं जो रफ़ा-ए-शर[1] की हो या बस दूर ही से सलाम) और यह वह लोग हैं, जो रात भर गुज़ार देते हैं अपने रब के लिए सज्दे करने में और नमाज़ में खड़े रहने में।'

आगे इन के और चन्द औसाफ़ ज़िक्र फ़र्माने के बाद इर्शाद है-

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا

उलाइ क युज्ज़ौनल् ग़ुर्फ़ात बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीयतंव्व सलामन ख़ालिदी न फ़ीहा, हसुनत मुस्तक़र्रव्व मुक़ामा०

' यही लोग हैं, जिन को जन्नत के बालाख़ाने बदले में दिए जाएंगे, इसलिए कि इन्होंने सब्र किया (या दीन पर साबित क़दम रहे) और जन्नत में फ़रिश्तों की तरफ़ से दुआ व सलाम से इस्तक़्बाल[2] किया जाएगा और उस जन्नत में वह हमेशा-हमेशा रहेंगे। क्या ही अच्छा ठिकाना और रहने की जगह है।'

दूसरी जगह इर्शाद है-

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

---

1. बुराई दूर करने की बात, 2. स्वागत,

वल् मलाइकतु यद् ख़ुलून आलैहिम मिन कुल्लि बाबिन सलामु अलैकुम बिमा सबर्तुम फ़निअ् म उक़्बद्दारि०

'और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से दाख़िल होंगे और कहेंगे कि तुम पर सलाम (और सलामती) हो, इस वजह से कि तुमने सब्र किया (या दीन पर मजबूत और साबित क़दम रहे।) पस क्या ही अच्छा अंजामेकार ठिकाना है।'

उन्हीं लोगों की तारीफ़ दूसरी जगह इन अल्फ़ाज से फ़र्मायी गयी है-

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

त त जाफ़ा जुनूबुहूम अनिल् मजाजिअि यदऊन र रब्बहुम ख़ौफ़ंव्व तृ मअंव्व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून फ़ला तअ़लमु नफ़्सुम् मा उख़्फ़ि य लहुम् मिन क़ुर्रति अअ़युनिन जज़ाअम् बिमा कानू यअ़मलून०

'वह लोग ऐसे हैं कि रात को उनके पहलू उनके ख़्वाबगाहों और बिस्तरों से अलैहिदा रहते हैं (कि नमाज़ पढ़ते रहते हैं और) अपने रब को अज़ाब के डर से और सवाब की उम्मीद में पुकारते रहते हैं और हमारी अता की हुई चीज़ों से ख़र्च करते हैं, सो कोई भी नहीं जानता कि ऐसे लोगों के लिए क्या कुछ आंखों की ठंडक का सामान पर्दा-ए-ग़ैब में मौजूद है, जो बदला है उनके नेक आमाल का।'

उन्हीं लोगों की शान में है-

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ

इन्नल् मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व उयूनिन आख़िज़ीन मा आताहुम रब्बुहुम इन्नहुम कानू क़ब्ल ज़ालि क मुह्सिनीन कानू क़लीलम मिनल्लैलि मा यह्जऊन व बिल् अस्हारि हुम यस्तग़्फ़िरून० (पारा 26, रुकूअ 17)

'बेशक मुत्तक़ी लोग जन्नतों और पानी के चश्मों के दर्मियान में होंगे और उनको उनके रब और मालिक ने जो कुछ सवाब अता फ़र्माया, उसको ख़ुशी-ख़ुशी ले रहे होंगे और क्यों न हो कि वह लोग इससे पहले (दुनिया में) अच्छे काम करने वाले थे, वह लोग रात को बहुत कम सोते थे और अख़ीर शब में इस्तग़फ़ार करने वाले थे।'

एक जगह इर्शादे खुदावंदी है-

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّ قَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ

अम्मन हु व क़ानितुन आनाअल्लैलि साजिदंव्व क़ाइम न यह्ज़रुल् आख़िर त व यर्जू रह्म त रब्बिही क़ुल हल यस्तविल्लज़ी न यअ़लमून वल्लज़ी न ला यअ़लमून इन्नमा यतज़क्करु उलुल् अल् बाबि० (पारा 23 रुकूअ 14)

'(क्या बराबर हो सकता है बे दीन) और वह शख़्स, जो इबादत करने वाला हो, रात के औक़ात में, कभी सज्दा करने वाला हो और कभी नीयत बांध कर खड़ा होने वाला हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो? (अच्छा आप उनसे पूछें) कहीं आलिम और जाहिल बराबर हो सकता है (और यह ज़ाहिर है कि आलिम अपने रब की इबादत करेगा ही और जो ऐसे करीम मौला की इबादत न करे वह जाहिल, बल्कि अज्हल[1] है ही)। नसीहत वही लोग मानते हैं जो अह्ले अक़्ल हैं।'

एक जगह इर्शाद है-

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ

इन्नल् इंसा न ख़ुलिक़ हलूअन इज़ा मस्सहु श्शर्रु जज़ूअन व इज़ा मस्सहुल् ख़ैरु मनूअन इल्लल् मुसल्लीन ल्लज़ीन हुम अला सलातिहिम दाइमून०

'इसमें शक नहीं कि इंसान ग़ैर मुस्तक़िल मिज़ाज पैदा हुआ है कि जब कोई तक्लीफ़ उस को पहुंचती है, तो बहुत ज़्यादा घबरा जाता है और जब कोई भलाई पहुंचती है, तो बुख़्ल करने लगता है दूसरे को यह भलाई न पहुंचे मगर हाँ वो नमाज़ी कि जो अपनी नमाज़ के हमेशा पाबंद रहते हैं और सुकून व विक़ार से पढ़ने वाले हैं।'

आगे उनकी और चन्द सिफ़तें ज़िक्र फ़रमाने के बाद इर्शाद है कि:-

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ

वल्लज़ी न हुम अला सलाति हिम युहाफ़िज़ू न उलाइ क फ़ी जन्नातिम् मुकरमून० (पारा 29, रुकूअ 6)

---

1. बड़ा जाहिल,

'और वह लोग जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं, यही लोग हैं, जिन का जन्नतों में इक्राम किया जायेगा।'

इनके अलावा और भी बहुत सी आयात हैं, जिनमें नमाज़ का हुक्म और नमाज़ियों के फ़ज़ाइल, उन के एज़ाज़ व इक्राम ज़िक्र फ़र्माये गए हैं। और हक़ीक़त में नमाज़ ऐसी ही दौलत है। इसी वजह से दो जहान के सरदार फ़ख़्रे रुसुल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है। इसी वजह से हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह दुआ फ़र्माते हैं-

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ

रब्बिज अल्नी मुक़ीम स्सलाति व मिन ज़ुर्रीयती रब्बना व तक़ब्बल दुआइ०

ऐ रब ! मुझ को नमाज़ का ख़ास एहतमाम करने वाला बना दे और मेरी औलाद में से भी ऐसे लोग पैदा फ़र्मा, जो एहतमाम करने वाले हों। ऐ हमारे रब ! मेरी यह दुआ क़ुबूल फ़र्मा ले।'

अल्लाह का एक प्यारा नबी, जिसको ख़लील होने का भी फ़ख़्र है, वह नमाज़ की पाबंदी और एहतमाम को अल्लाह ही से मांगता है।

ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस अपने महबूब सय्यिदुल् मुर्सलीन को हुक्म फ़र्माते हैं-

وَأْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى

वअ्मुरअह्लक बिस्सलाति वस्तबिर अलैहा ला नस्अलुक रिज़्क़न नह्नु नर्ज़ुकु क वल् आक़िबतु लित्तक़्वा० (पारा 16, रुकूअ 16)

'अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और ख़ुद भी इसका एहतमाम कीजिए। हम आप से रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते। रोज़ी तो हम आप को देंगे और बेहतरीन अंजाम तो परहेज़गारी का है।'

हदीस में आया है कि जब नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ तंगी वग़ैरह पेश आती , तो घर वालों को नमाज़ का हुक्म फ़र्माते और यह आयत तिलावत फ़र्माते और यही अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम का भी मामूल नक़ल किया गया कि जब भी उन हज़रात को कोई दिक़्क़त पेश आती, तो नमाज़ में मशग़ूल

हो जाते, मगर हम लोग इस अहम चीज से ऐसे ग़ाफ़िल और बे नियाज़ हैं कि इस्लाम और मुसलमानी के लंबे-लंबे दावों के बावजूद भी इधर मुतवज्जह नहीं होते, बल्कि अगर कोई बुलाने वाला, कहने वाला खड़ा होता है, तो उस पर फ़िक़रे कसते है उस की मुख़ालफ़त करते हैं, मगर किसी का क्या नुक़सान है, अपना ही कुछ खोते हैं और जो लोग नमाज़ पढ़ते भी हैं, उनमें से भी अक्सर ऐसी पढ़ते हैं, जिसको नमाज के साथ मजाक़ से अगर ताबीर किया जाये, तो बेजा नहीं कि अक्सर अरकान भी पूरे तौर से अदा नहीं करते, ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ का तो क्या ज़िक्र है, हालांकि नबी ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमूना सामने है, वह हर काम ख़ुद करके दिखला गये। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के कारनामे भी सामने हैं, उनका इत्तिबाअ करना चाहिए। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के चंद क़िस्से नमूने के तौर पर अपने रिसाला 'हिकायते सहाबा' में लिख चुका हूं, यहां उनके दोहराने की ज़रूरत नहीं, अलबत्ता इस रिसाले में चंद हिकायात सूफ़िया की नकल करने के बाद चंद इर्शादात नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नकल करता हूं।

नमाज़ के शौक़ व लगन के चंद वाक़िआत

1. शेख़ अब्दुल वाहिद मशहूर सूफ़िया में हैं, फ़र्माते है कि एक रोज नींद का इतना ग़लबा हुआ कि रात को औराद व वज़ाइफ़ भी छूट गए। ख़्वाब में देखा, एक निहायत हसीन ख़ूबसूरत लड़की सब्ज रेशमी लिबास पहने हुए है, जिसके पांव की जूतियां तक तस्बीह में मश्ग़ूल हैं। कहती हैं कि मेरी तलब में कोशिश कर, मैं तेरी तलब में हूं। इसके बाद उसने चंद शौक़िया[1] शेर पढ़े। यह ख़्वाब से उठे और क़सम खा ली कि रात को नहीं सोऊंगा। कहते हैं कि चालीस वर्ष तक सुबह की नमाज इशा के वुज़ू से पढ़ी।[2]

2. शेख़ मजहर सादी रह० एक बुज़ुर्ग हैं, जो अल्लाह जल्ले शानुहू के इश्क़ व शौक़ में साठ वर्ष तक रोते रहे। एक शब ख़्वाब में देखा, गोया एक नहर है, जिस में ख़ालिस मुश्क भरा हुआ है। उसके किनारों पर मोतियों के दरख़्त सोने की शाखों वाले लहलहा रहे हैं। वहां चंद नव-उम्र लड़कियां पुकार-पुकार कर अल्लाह की तस्बीह में मश्ग़ूल हैं। उन्होंने पूछा, तुम कौन हो ? तो उन्होंने दो शेर पढ़े, जिनका मतलब यह था कि हम को लोगों के माबूद और मुहम्मद सल्ल० के परवर्दिगार ने उन लोगों

1. इश्क़ व मुहब्बत के, 2. मुज्हम,

के वास्ते पैदा फ़र्माया है जो रात को अपने परवर्दिगार के सामने अपने क़दमों पर खड़े रहते हैं और अपने अल्लाह से मुनाजात[1] करते रहते हैं।

3. अबूबक्र ज़रीर रह० कहते हैं कि मेरे पास एक नव-जवान ग़ुलाम रहता था, दिन भर रोज़ा रखता था और रात भर तहज्जुद पढ़ता था। एक दिन वह मेरे पास आया और बयान किया कि मैं इत्तिफ़ाक़ से आज रात सो गया था, ख़्वाब में देखा कि मेहराब की दीवार फटी, उसमें से चंद लड़कियां निहायत ही हसीन और खूबसूरत ज़ाहिर हुईं, मगर उन में एक निहायत बद-सूरत भी है। मैंने उनसे पूछा, तुम कौन हो और यह बद-सूरत कौन है ? वह कहने लगीं, कि हम तेरी गुज़िश्ता रातें हैं और यह तेरी आज की रात है।

4. एक बुज़ुर्ग रह० कहते हैं कि मुझे एक रात ऐसी गहरी नींद आयी कि आंख न खुली। मैंने ख़्वाब में देखा कि एक ऐसी निहायत हसीन लड़की है कि उस जैसी मैंने उम्र भर नहीं देखी। उसमें से ऐसी तेज़ ख़ुश्बू भी महक रही थी कि मैंने वैसी ख़ुश्बू कभी नहीं सूंघी। उसने मुझे एक काग़ज़ का पर्चा दिया, जिसमें तीन शेर लिखे हुए थे। उनका मतलब यह था कि तू नींद की लज़्ज़त में मश्ग़ूल हो कर जन्नत के बालाख़ानों से ग़ाफ़िल हो गया, जहां हमेशा तुझे रहना है और मौत भी वहां न आएगी। अपनी नींद से उठ, सोने से तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ना बहुत बेहतर है। कहते हैं, उसके बाद से जब मुझे नींद आती है और यह अश्आर याद आते हैं, तो नींद बिल्कुल उड़ जाती है।

5. हज़रत अता रह० फ़र्माते है कि मैं एक बाज़ार में गया, वहां एक बांदी फ़रोख़्त हो रही थी, जो दीवानी बतायी जाती थी। मैंने सात दीनार में ख़रीद ली और अपने घर ले आया। जब रात का कुछ हिस्सा गुज़रा तो मैंने देखा कि वह उठी, वुज़ू किया, नमाज़ शुरू कर दी और नमाज़ में उसकी हालत यह थी कि रोते-रोते उसका दम निकला जाता था। नमाज़ के बाद उसने मुनाजात शुरू की और यह कहने लगी, ऐ मेरे माबूद ! आपको मुझ से मुहब्बत रखने की क़सम ! मुझ पर रहम फ़र्मा। मैंने उससे कहा कि इस तरह न कहो, यों कहो कि मुझे तुझ से मुहब्बत रखने की क़सम ! यह सुनकर उसको ग़ुस्सा आ गया और कहने लगी, क़सम है उस पाक ज़ात की, अगर उसको मुझसे मुहब्बत न होती, तो तुझे मीठी नींद न सुलाता और मुझे यों न खड़ा रखता। फिर औंधे मुंह गिर गयी और चंद शेर पढ़े, जिनका मतलब यह

---

1. इबादत के साथ दुआएं करना,

है कि बेचैनी बढ़ती जा रही है और दिल जला जा रहा है और सब्र जाता रहा और आंसू बह रहे हैं। उस शख़्स को किस तरह क़रार आ सकता है, जिसको इश्क़ व शौक़ और इज़्तिराब[1] से चैन ही नहीं। ऐ अल्लाह !अगर कोई ख़ुशी की चीज हो, तो उसको अता फ़र्मा कर मुझ पर एहसान फ़र्मा। इसके बाद बुलंद आवाज़ से यह दुआ की कि या अल्लाह ! मेरा और आप का मामला अब तक पोशीदा था। अब मख़्लूक़ को ख़बर हो चली, अब मुझे उठा लीजिए। यह कह कर ज़ोर से एक चीख़ मारी और मर गयी।

6. इसी क़िस्म का एक वाक़िआ हजरत सिर्री रह० के साथ भी पेश आया। कहते हैं कि मैंने अपनी ख़िदमत के लिए एक बांदी ख़रीदी। एक मुद्दत तक वह मेरी ख़िदमत करती रही और अपनी हालत का मुझ से इख़्फ़ा[2] करती। उसकी नमाज की एक जगह मुतअय्यन[3] थी, जब काम से फ़ारिग़ हो जाती, वहां जा कर नमाज में मशग़ूल हो जाती। एक रात मैंने देखा कि वह कभी नमाज़ पढ़ती है और कभी मुनाजात में मशग़ूल हो जाती है और कहती है कि आप उस मुहब्बत के वसीले से, जो मुझ से है, फ़्लां-फ़्लां काम कर दें। मैंने आवाज़ से कहा, कि ऐ औरत ! यों कह कि मेरी मुहब्बत के वसीले से, जो मुझे आपसे है। कहने लगी, मेरे आक़ा ! अगर उसको मुझसे मुहब्बत न होती, तो तुम्हें नमाज से बिठला कर मुझे खड़ा न करता। हज़रत सिर्री रह० कहते हैं, जब सुबह हुई तो मैंने उसको बुला कर कहा कि तू मेरी ख़िदमत के क़ाबिल नहीं, अल्लाह ही की इबादत के लायक़ है। उसको कुछ सामान देकर आज़ाद कर दिया।[4]

7. हजरत सिर्री सक़ती रह० एक औरत का हाल बयान फ़र्माते हैं कि जब वह तहज्जुद की नमाज को खड़ी होती तो कहती, ऐ अल्लाह ! इब्लीस भी तेरा एक बंदा है। उसकी पेशानी भी तेरे क़ब्जे में है। वह मुझे देखता है और मैं उसे नहीं देख सकती। तू उसे देखता है और उस के सारे कामों पर कादिर है और वह तेरे किसी काम पर भी क़ुदरत नहीं रखता। ऐ अल्लाह अगर वह मेरी बुराई चाहे, तो तू उसको दफ़ा कर और वह मेरे साथ मक्र करे, तो तू उसके मक्र का इंतिक़ाम[5] ले। मैं उसके शर[5] से तेरी पनाह मांगती हूं और तेरी मदद से उसको धकेलती हूं। इसके बाद वह रोती रहती थी, हत्ताकि रोते-रोते उसकी एक आंख जाती रही, लोगों ने उससे कहा, ख़ुदा से डर, कहीं दूसरी आंख भी न जाती रहे। उसने कहा, अगर यह आंख जन्नत की आंख है तो अल्लाह जल्ले शानुहू उससे बेहतर अता फ़र्मायेंगे

---

1. छिपाना, 2. [illegible], 3. मुक़र्रर, 4. बदला, 5. बुराई

और अगर दोज़ख़ की आंख है, तो उसका दूर होना ही अच्छा।

8. शेख़ अबूअब्दुल्लाह जिला रह० फ़र्माते हैं कि एक दिन मेरी वालिदा ने मेरे वालिद से मछली की फ़र्माइश की। वालिद साहब बाज़ार तश्रीफ़ ले गये, मैं भी साथ था। मछली ख़रीदी, घर तक लाने के वास्ते मज़दूर की तलाश थी कि एक नव-उम्र लड़का, जो पास ही खड़ा था, कहने लगा, चचा जान! इसे उठाने के वास्ते मज़दूर चाहिए? कहा, हां! उस लड़के ने अपने सर पर मछली उठायी और हमारे साथ चल दिया। रास्ते में उसने अज़ान की आवाज़ सुन ली, कहने लगा, अल्लाह के मुनादी ने बुलाया है, मुझे वुज़ू भी करना है। नमाज़ के बाद ले जा सकूंगा। आप का दिल चाहे इंतिज़ार कर लीजिए, वरना अपनी मछली ले लीजिए, यह कह कर मछली रख कर चला गया। मेरे वालिद साहब को ख़्याल आया कि यह मज़दूर लड़का तो ऐसा करे, हमें ब-तरीक़े औला[1] अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। यह सोच कर वह भी मछली रख कर मस्जिद में चले गये। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हम सब आये तो मछली उसी तरह रखी हुई थी। उस लड़के ने उठा कर हमारे घर पहुंचा दी। घर जाकर वालिद ने यह अजीब क़िस्सा वालिदा को सुनाया। उन्होंने फ़र्माया कि उसको रोक लो, वह भी मछली खा कर जायें। उससे कहा गया। उसने जवाब दिया कि मेरा तो रोज़ा है। वालिद ने इस्रार किया कि शाम के वक़्त यहीं आकर इफ़्तार करे। लड़के ने कहा कि मैं एक दफ़ा जाकर दोबारा नहीं आता, यह मुम्किन है कि मैं पास ही मस्जिद में हूं, शाम को आप की दावत खा कर चला जाऊंगा। यह कह कर वह क़रीब ही मस्जिद में चला गया। शाम को बाद मग़िरब आया, खाना खाया और खाने से फ़राग़त पर उसको तख़लिये[2] की जगह बता दी। हमारे क़रीब ही एक अपाहिज औरत रहा करती थी। हमने देखा कि वह बिल्कुल अच्छी तंदुरुस्त आ रही है। हमने उससे पूछा कि तू किस तरह अच्छी हो गयी। कहा, मैंने इस मेहमान के तुफ़ैल से दुआ की थी कि या अल्लाह! इसकी बरकत से मुझे अच्छा कर दे। मैं फ़ौरन अच्छी हो गयी। इसके बाद जब हम उसके तख़लिए की जगह उसको देखने गये, तो देखा, दरवाज़े बंद हैं और उस मज़दूर का कहीं पता नहीं।

9. एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा लिखा है कि उनके पांव में फोड़ा निकल आया। तबीबों[3] ने कहा, अगर उनका पांव न काटा गया तो हलाकत का अंदेशा है। उनकी

---

1. डाक्टरों, 2. अकेले की जगह, 3. इबादत से ज़्यादा कोशिश करने वाले,

वालिदा ने कहा, अभी ठहर जाओ। जब यह नमाज़ की नीयत बांधे लें तो काट लेना, चुनांचे ऐसा ही किया गया, उनको ख़बर भी न हुई।

10. अबूआमिर रह० कहते हैं कि मैंने एक बांदी देखी, जो बहुत कम दामों में फ़रोख़्त हो रही थी, जो निहायत दुबली-पतली थी, उसका पेट कमर से लग रहा था, बाल बिखरे हुए थे। मैंने उस पर रहम खा कर उसको ख़रीद लिया। उससे कहा कि हमारे साथ बाज़ार चल। रमज़ानुल मुबारक के वास्ते कुछ ज़रूरी सामान ख़रीद लें। कहने लगी, अल्लाह का शुक्र है, जिसने मेरे वास्ते सारे महीने यकसां कर दिए, वह हमेशा दिन को रोज़ा रखती, रात भर नमाज़ पढ़ती, जब ईद क़रीब आयी, तो मैंने उससे कहा कि कल सुबह बाज़ार चलेंगे तू भी साथ चलना। ईद के वास्ते कुछ ज़रूरी सामान ख़रीद लायेंगे, कहने लगी, मेरे आक़ा! तुम तो दुनिया में बहुत ही मशग़ूल हो। फिर अंदर गयी और नमाज़ में मशग़ूल हो गयी और इत्मीनान से एक-एक आयत मजे ले-ले कर पढ़ती रही, हत्ताकि इस आयत पर पहुंची, 'मिंव्वराइ ही जहन्नमु व युस्क़ा मिम् माइन सदीद' (अल-आय:)

इस आयत को बार-बार पढ़ती रही और एक चीख़ मार कर इस दुनिया से रुख़्सत हो गयी।

11. एक सय्यद साहब रह० का क़िस्सा लिखा है कि बारह दिन तक एक ही वुज़ू से सारी नमाज़े पढ़ीं और पन्द्रह वर्ष मुसल्सल लेटने की नौबत नहीं आयी। कई-कई दिन ऐसे गुज़र जाते कि कोई चीज चखने की नौबत न आती थी।

बहुत से कामों के साथ बहुत-बहुत इबादत करने वाले

अह्ले मुजाहदा[1] लोगों में इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत कसरत से मिलते हैं। इन हज़रात की हिर्स तो बहुत की मुश्किल है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने उनको पैदा ही इसलिए फ़र्माया था, लेकिन जो हज़रात अकाबिर[2] कि दूसरे दीनी और दुनियावी

1. बुज़ुर्ग लोग, 2. दुनिया के कामों,

मशागिल[1] में मश्गूल थे, उनकी हिर्स भी हम जैसों का दुश्वार है।

हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज रजि० से सब ही वाक़िफ़ हैं। ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के बाद उन्हीं का शुमार है। उनकी बीवी फ़र्माती हैं कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज रजि० से ज़्यादा वुज़ू और नमाज में मश्ग़ूल होने वाले तो और भी होंगे, मगर उनसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला मैंने नहीं देखा। इशा की नमाज़ के बाद मुसल्ले पर बैठ जाते और दुआ के वास्ते हाथ उठाते और रोते रहते, हत्ता कि उसी में नींद का ग़लबा होता तो आंख लग जाती। फिर जब खुल जाती तो उसी तरह रोते रहते और दुआ में मश्ग़ूल रहते।

कहते हैं कि ख़िलाफ़त के बाद से जनाबत[2] के ग़ुस्ल की नौबत नहीं आयी। उनकी बीवी अब्दुल मलिक बादशाह की बेटी थीं। बाप ने बहुत से ज़ेवरात जवाहर दिए थे और एक ऐसा हीरा दिया था, जिसकी नजीर[3] नहीं थी। आपने बीवी से फ़र्माया कि दो बातों में से एक इख़्तियार कर, या तो वह ज़ेवर सारा अल्लाह वास्ते दे कि मैं उसको बैतुल् माल में दाख़िल कर दूं या मुझसे जुदाई इख़्तियार कर ले। मुझे यह चीज ना-गवार है कि मैं और वह माल एक घर में जमा रहें। बीवी ने अर्ज किया कि वह माल क्या चीज है ? मैं उससे कई चन्द[4] ज़्यादा पर भी आपको नहीं छोड़ सकती। यह कह कर सब बैतुल्माल में दाख़िल कर दिया। आपके इंतिक़ाल के बाद जब अब्दुल मलिक का बेटा यजीद बादशाह बना तो उसने बहन से दर्याफ़्त किया, अगर तुम चाहो तो तुम्हारा ज़ेवर तुमको वापस दे दिया जाए। फ़र्माने लगीं कि जब मैं उनकी ज़िंदगी में उस से ख़ुश न हुई तो उनके मरने के बाद उससे क्या ख़ुश हूंगी। मरज़ुल मौत[5] में आपने लोगों से पूछा कि इस मर्ज के मुताल्लिक क्या ख़्याल किया जाता है। किसी ने अर्ज किया कि लोग जादू समझ रहे हैं। आप ने फ़र्माया, यह नहीं। फिर एक ग़ुलाम को बुलाया, उससे पूछा कि मुझे जहर देने पर किस चीज ने तुझ को आमादा किया। उसने कहा, सौ दीनार दिए गए और आज़ादी का वायदा किया गया। आपने फ़र्माया, वह दीनार ले आ। उसने हाज़िर किये। आपने उनको बैतुल माल में दाख़िल फ़र्मा दिया। और उस ग़ुलाम से फ़र्माया, तू किसी ऐसी जगह चला जा, जहां, तुझे कोई न देखे।'

इंतिक़ाल के वक़्त मुस्लिमा रह० उनकी ख़िदमत में हाजिर हुए। और अर्ज किया कि आप ने औलाद के साथ ऐसा किया, जो किसी ने भी नहीं किया होगा।

---

1. नापाकी, 2. मिसाल, 3. कई गुना, 4. जिस मर्ज में मौत हो जाये, 5. ज़िम्मेदार,

आप के तेरह बेटे हैं और उनके लिए न कोई रुपया आप ने छोड़ा न पैसा। आप ने फ़र्माया, ज़रा मुझे बिठा दो। बैठ कर फ़र्माया कि मैंने उनका कोई हक़ नहीं दबाया और जो दूसरों का हक़ था, वह उनको दिया नहीं, पस अगर वह सालेह हैं तो अल्लाह जल्ले शानुहू ख़ुद उनका कफ़ील[1] है। क़ुरआन पाक में इर्शाद है, 'व हु व यतवल्लस्सालिहीन' (वही मुतवल्ली है सुलहा का) और अगर वह गुनाहगार हैं, तो उनकी मुझे भी कुछ परवाह नहीं।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० जो फ़िक्ह के मशहूर इमाम हैं, दिन भर मसायल में मशग़ूल रहने के बावजूद रात-दिन में तीन सौ रकआत नफ़्ल पढ़ते थे।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह० एक रक्त में पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लेते थे।

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर हुफ़्फ़ाज़ें हदीस में है। एक रात तहज्जुद में इतनी कसरत से रोये कि हद न रही। किसी ने दर्याफ़्त किया, तो फ़र्माया, तिलावत में यह आयत आ गयी थी-

'व बदालहुम मिनल्लाहि मा लम् यकूनू यह्तसिबून०

ऊपर की आयत में इसका ज़िक्र है कि अगर ज़ुल्म करने वालों के पास दुनिया की सारी चीज़ें हों और उतनी ही उनके साथ और भी हों, तो वह क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूटने के लिए फ़िदए के तौर पर देने लगें, इसके बाद इर्शाद है व बदा लहुम सय्यिआतु मा क स बू व हा क़ बिहिम मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन०

और अल्लाह की तरफ़ से उनके लिए (अज़ाब का) वह मामला पेश आयेगा, जिस का उन को गुमान भी न था और उस वक़्त उनको अपनी तमाम बद-आमालियां ज़ाहिर हो-जायेंगी।' हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह० वफ़ात के वक़्त भी बहुत घबरा रहे थे और फ़र्माते थे कि इसी आयत से डर रहा हूं।

हज़रत साबित बनानी रह० हुफ़्फ़ाज़े हदीस में हैं, इस क़दर कसरत से अल्लाह के सामने रोते थे कि हद नहीं। किसी ने अर्ज़ किया कि आंखें जाती रहेंगी। फ़र्माया कि इन आंखों से अगर रोये नहीं तो फ़ायदा ही क्या है। इसकी दुआ किया करते थे कि या अल्लाह अगर किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त हो सकती हो, तो मुझे भी हो जाए। अबूसनान रह० कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! मैं उन लोगों

1. इक़ामतुल हुज्जत,

में था, जिन्होंने साबित को दफ़न किया। दफ़न करते हुए लहद की एक ईंट गिर गयी तो मैंने देखा कि वह खड़े नमाज पढ़ रहे हैं। मैंने अपने साथी से कहा, देखो यह क्या हो रहा है ? उसने मुझे कहा, चुप हो जाओ। जब दफ़न कर चुके, तो उन के घर जा कर उनकी बेटी से दर्याफ़्त किया कि साबित का अमल क्या था। उसने कहा, क्यों पूछते हो ? हमने क़िस्सा बयान किया। उसने कहा पचास वर्ष शबे-बेदारी की और सुबह को हमेशा यह दुआ किया करते थे कि या अल्लाह! अगर तू किसी को यह दौलत अता करे कि वह क़ब्र में नमाज़, पढ़े, तो मुझे भी अता फ़र्मा।[1]

हज़रत इमाम अबूयूसुफ़ रह० बावजूद इल्मी मशाग़िल के, जो सब को मालूम हैं और उनके अलावा क़ाज़ियुल क़ुज़ात[2] होने की वजह से क़ज़ा (मुक़दमों) के मशाग़िल अलैहिदा थे, लेकिन फिर भी दो सौ रक्आत नवाफ़िल रोज़ाना पढ़ते थे।

हज़रत मुहम्मद बिन नस्र रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। इस इन्हिमाक से नमाज़ पढ़ते थे, जिसकी नज़ीर मुश्किल है। एक मर्तबा पेशानी पर एक भिड़ ने नमाज़ में काटा, जिसकी वजह से ख़ून भी निकल आया, मगर न हरकत हुई, न ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ में कोई फ़र्क़ आया। कहते हैं कि नमाज़ में लकड़ी की तरह से बे-हरकत खड़े रहते थे।

हज़रत बक़ी बिन मुख़ल्लद रह० रोज़ाना तहज्जुद और वित्र की तेरह रक्आत में एक क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करते थे।

हज़रत हन्नाद एक मुहद्दिस हैं। उनके शागिर्द कहते हैं कि वह बहुत ही ज़्यादा रोते थे। एक मर्तबा सुबह को हमें सबक़ पढ़ाते रहे। उसके बाद वुज़ू वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर ज़वाल तक नफ़्लें पढ़ते रहे। दोपहर को घर तश्रीफ़ ले गये और थोड़ी देर में आकर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ायी और अस्र तक नफ़्लों में मशग़ूल रहे, फिर अस्र की नमाज़ पढ़ायी और क़ुरआन पाक की तिलावत मग़्रिब तक फ़र्माते रहे। मग़्रिब के बाद में वापस चला आया। मैंने उनके एक पड़ोसी से ताज्जुब से कहा कि यह शख़्स किस क़दर इबादत करने वाले हैं। उसने कहा कि सत्तर वर्ष से उनका यही अमल है और अगर तुम उन की रात की इबादत देखोगे, तो और भी ताज्जुब करोगे।

मसरूक़ रह० एक मुहद्दिस हैं। उनकी बीवी कहती हैं कि वह नमाज़ें इतनी लम्बी-लम्बी पढ़ा करते थे कि उनकी पिंडलियों पर हमेशा इसकी वजह से वरम रहता था और मैं उनके पीछे बैठी हुई उनके हाल पर तरस खा कर रोया करती थी।

---

1. इत्तिहाफ़ 2. चीफ़ जस्टिस,

सईद बिन मुसय्यिब रह० के मुताल्लिक़ लिखा है कि पचास वर्ष तक इशा और सुबह की नमाज़ एक वुज़ू से पढ़ी।

अबुल् मुअ्तमिर रह० के मुताल्लिक लिखा है कि चालीस वर्ष तक ऐसा ही किया। इमाम ग़ज़ाली रह० ने अबूतालिब मक्की रह० से नकल किया कि चालीस ताबइयों से तवातुर के तरीक़ से यह बात साबित है कि वह इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ते थे। इनमें से बाज़ का चालीस वर्ष तक यही अमल रहा।[1]

हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के मुताल्लिक तो बहुत कसरत से यह चीज नकल की गयी कि तीस या चालीस या पचास वर्ष इशा और सुबह एक वुज़ू से पढ़ी और यह इख़्तिलाफ़ नकल करने वालों के इख़्तिलाफ़ की वजह से है कि जिस शख़्स को जितने साल का इल्म हुआ, उतना ही नकल किया। लिखा है कि आपका मामूल सिर्फ दोपहर को थोड़ी देर सोने का था और यह इर्शाद फ़र्माया करते थे कि दोपहर के सोने का हदीस में हुक्म है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० का मामूल था कि रमज़ान में साठ क़ुरआन शरीफ़ नमाज़ में पढ़ते थे। एक शख़्स कहते हैं कि मैं कई रोज़ तक इमाम शाफ़ई रह० के यहां रहा। सिर्फ़ रात को थोड़ी देर सोते थे।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० तीन सौ रक्अतें रोज़ाना पढ़ते थे और जब बादशाहे वक़्त ने आप के कोड़े लगवाये और उसकी वजह से ज़ौफ़ बहुत हो गया तो डेढ़ सौ रह गयी थीं और तक़रीबन अस्सी वर्ष की उम्र थी।

अबूइताब रह० सुलमी चालीस वर्ष तक रात भर रोते थे और दिन को हमेशा रोज़ा रखते। इनके अलावा हज़ारों-लाखों वाक़िआत तौफ़ीक वालों के कुतुबे तारीख़ में मज़्कूर हैं, जिनका अहाता भी दुश्वार है। नमूने और मिसाल के लिए यही वाक़िआत काफ़ी हैं। हक़ तआला शानुहू मुझे भी और नाज़िरीन[1] को भी इन हज़रात के इत्तिबाअ का कुछ हिस्सा अपने लुत्फ़ व फ़ज़्ल से नसीब फ़र्माए। आमीन।

(1) عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ إِنَّ الرَّجُلَ لَيَنْصَرِفُ وَمَا كُتِبَ لَهٗ إِلَّا عُشْرُ صَلٰوتِهٖ تُسْعُهَا ثُمْنُهَا سُبْعُهَا سُدُسُهَا خُمُسُهَا رُبُعُهَا ثُلُثُهَا نِصْفُهَا رواه ابوداؤد وقال المنذري في الترغيب رواه ابوداؤد والنسائي وابن

---

1. देखने वालों,

حبان في صحيحه بنحوه وعزاه في الجامع الصغير الى احمد وابي داود وابن حبان ورقم له بالصحيح وفي المنتخب عزاه الى احمد ايضاً وفي الدر المنثور اخرج احمد عن ابي اليسر مرفوعاً منكم من يصلي الصلوة كاملة ومنكم من يصلي النصف والثلث والربع حتى بلغ العشر قال المنذري في الترغيب رواه النسائي باسناد حسن واسم ابي اليسر كعب بن عمرو السلمي شهد بدرا۔

'1. नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ होता है और उसके लिये सवाब का दसवां हिस्सा लिखा जाता है। इसी तरह बाज़ के लिए नवां हिस्सा, बाज़ के लिए आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथाई, तिहाई, आधा हिस्सा लिखा जाता है।'

फ़ायदा: यानी जिस दर्जे का ख़ुशूअ और इख़्लास नमाज़ में होता है, उतनी ही मिक़्दार अज्र व सवाब की मिलती है, हत्ताकि बाज़ को पूरे अज्र का दसवां हिस्सा मिलता है, अगर उसके मुवाफ़िक़ ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ हो और बाज़ को आधा मिल जाता है और इसी तरह दसवें से कम और आधे से ज़्यादा भी मिल जाता है, हत्ताकि बाज़ को पूरा-पूरा अज्र मिल जाता है और बाज़ को बिल्कुल भी नहीं मिलता कि वह इस क़ाबिल ही नहीं होती।

एक हदीस में आया कि फ़र्ज़ नमाज़ के लिए अल्लाह के यहां एक ख़ास वज़न है, जितनी उसमें कमी रह जाती है, उसका हिसाब किया जाता है। अहादीस में आया है कि लोगों में से सबसे पहले ख़ुशूअ उठाया जायेगा कि पूरी जमाअत में एक शख़्स भी ख़ुशूअ से पढ़ने वाला न मिलेगा।[1]

(٢) رُوِيَ عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَنْ صَلَّى الصَّلَوَاتِ لِوَقْتِهَا وَاَسْبَغَ لَهَا وُضُوْئَهَا وَاَتَمَّ لَهَا قِيَامَهَا وَخُشُوْعَهَا وَرُكُوْعَهَا وَسُجُوْدَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ بَيْضَاءُ مُسْفِرَةٌ تَقُوْلُ حَفِظَكَ اللّٰهُ كَمَا حَفِظْتَنِيْ وَمَنْ صَلَّاهَا لِغَيْرِ وَقْتِهَا وَلَمْ يُسْبِغْ لَهَا وُضُوْئَهَا وَلَمْ يُتِمَّ لَهَا خُشُوْعَهَا وَلَا رُكُوْعَهَا وَلَا سُجُوْدَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ سَوْدَاءُ مُظْلِمَةٌ تَقُوْلُ ضَيَّعَكَ اللّٰهُ كَمَا ضَيَّعْتَنِيْ حَتّٰى اِذَا كَانَتْ حَيْثُ شَاءَ اللّٰهُ لُفَّتْ كَمَا يُلَفُّ الثَّوْبُ الْخَلِقُ ثُمَّ ضُرِبَ بِهَا وَجْهُهٗ رواه الطبراني في الاوسط كذا في الترغيب والدر المنثور وعزاه في المنتخب الى البيهقي في الشعب وفيه ايضاً برواية عبادة بمعناه وزاد في الاولى بعد قوله كما

1. जामिउस्सग़ीर.

حفظتنی ثم اصعد بها الی السماء حتی ینتھی بها الی اللّٰہ فتشفع لصاحبها وقال فی الثانیة وغلقت دونها ابواب السماء وعزاہ فی الدر الی البزار والطبرانی وفی الجامع الصغیر حدیث عبادة الی الطیالسی وقال صحیح۔

2. 'हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स नमाज़ों को अपने वक़्त पर पढ़े, वुज़ू भी अच्छी तरह करे, ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से भी पढ़े, खड़ा भी पूरे विक़ार से हो, फिर उसी तरह रुकूअ, सज्दा भी अच्छी तरह इत्मीनान से करे, ग़रज़ हर चीज़ को अच्छी तरह अदा करे। तो वह नमाज़ निहायत रोशन, चमकदार, बन कर जाती है और नमाज़ी को दुआ देती है कि अल्लाह तआला शानुहू तेरी भी ऐसी ही हिफ़ाज़त करे, जैसी तूने मेरी हिफ़ाज़त की और जो शख़्स नमाज़ को बुरी तरह पढ़े और वक़्त को भी टाल दे, वुज़ू भी अच्छी तरह न करे, रुकूअ, सज्दा भी अच्छी तरह से न करे, तो वह नमाज़ बुरी सूरत से स्याह रंग में बद-दुआ देती हुई जाती है कि अल्लाह तआला तुझे भी ऐसा ही बर्बाद करे जैसा तूने मुझे ज़ाया किया। इसके बाद वह नमाज़ पुराने कपड़े की तरह से लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है।'

फ़ायदा : ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ें कि अल्लाह की अहम तरीन इबादत उनके लिए दुआ करती है, लेकिन आमतौर से जैसी नमाज़ पढ़ी जाती है कि रुकूअ किया तो वहीं से सज्दे में चले गये। सज्दे से उठे तो सिर उठाने भी न पाये थे कि फ़ौरन कौवे की सी ठोंक दूसरी दफ़ा मार दी। ऐसी नमाज़ का जो हश्र है, वह इस हदीस शरीफ़ में ज़िक्र फ़र्मा ही दिया और जब वह बर्बादी की बद-दुआ करे, तो अपनी बर्बादी का गिला[1] क्यों किया जाए ? यही वजह है कि आजकल मुसलमान गिरते जा रहे हैं और हर तरफ़ तबाही ही तबाही की सदाएं गूंज रही हैं।

एक दूसरी हदीस में भी यही मज़्मून वारिद हुआ है। इसमें यह भी इज़ाफ़ा है कि जो नमाज़ ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ से पढ़ी जाती है, आसमान के दरवाज़े उसके लिए खुल जाते हैं, वह निहायत नूरानी होती है और नमाज़ी के लिए हक़ तआला शानुहू की बारगाह में सिफ़ारिशी बनती है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस नमाज़ में रुकूअ अच्छी तरह न किया जाये कि कमर पूरी तरह झुक जाए, उसकी मिसाल उस औरत की सी है जो हामिला[1] हो और जब बच्चा होने का वक़्त क़रीब आ जाये तो इस्क़ात[2] कर दे।[3]

---

1. शिकायत,

एक हदीस में इर्शाद है कि बहुत से रोज़ेदार ऐसे हैं, जिनको रोज़े से बजुज़ भूख और प्यासा रहने के कोई हासिल नहीं और बहुत से शबबेदार[4] ऐसे है जिन को जागने के अलावा कोई चीज नहीं मिलती।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती है कि मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि जो क़ियामत के दिन पांचों नमाज़ें ऐसी लेकर हाज़िर हो कि उनके औक़ात की भी हिफ़ाज़त करता रहा हो और वुज़ू का भी एहतमाम करता रहा हो और इन नमाज़ों को ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ से पढ़ता रहा हो, तो हक़ तआला शानुहू ने अह्द फ़र्मा लिया है कि उसको अज़ाब नहीं दिया जायेगा और जो ऐसी नमाज़ें न लेकर हाज़िर हो, उसके लिए कोई वायदा नहीं है, चाहे अपनी रहमत से माफ़ फ़र्मा दें, चाहे अज़ाब दें।

एक और हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ि० के पास तश्रीफ़ लाये और इर्शाद फ़र्माया, तुम्हें मालूम भी है अल्लाह जल्ले शानुहू ने क्या फ़र्माया। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ही जानते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने एहतमाम की वजह से तीन मर्तबा यही दर्याफ़्त फ़र्माया और सहाबा-ए-किराम रज़ि० यही जवाब देते रहे। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि हक़ तआला शानुहू अपनी इज़्ज़त और बड़ाई की क़सम खा कर फ़र्माते हैं कि जो शख़्स इन नमाज़ों को औक़ात की पाबंदी के साथ पढ़ता रहेगा, मैं उसको जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो पाबंदी न करेगा, तो मेरा दिल चाहेगा, रहमत बख़्श दूंगा वरना अज़ाब दूंगा।

फ़राइज़ की नवाफ़िल से कमी पूरी की जाए

(٣) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلٰوتُهُ فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَأَنْجَحَ وَ إِنْ فَسَدَتْ خَابَ وَخَسِرَ فَإِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِيْضَتِهِ قَالَ الرَّبُّ انْظُرُوْا هَلْ لِعَبْدِيْ مِنْ تَطَوُّعٍ فَيُكَمَّلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِيْضَةِ ثُمَّ يَكُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهِ عَلٰى ذٰلِكَ

رواه الترمذي وحسنه والنسائي وابن ماجة والحاكم وصححه كذا في الدر وفي المنتخب برواية الحاكم في الكنى عن ابن عمر اول ما افترض الله على امتي الصلوة الخمس

---

1. गर्भवती, 2. गिरना, 3. तर्ग़ीब, 4. रात भर इबादत करने वाले, 5. बाब अव्वल फ़स्ल अव्वल की नवीं हदीस में भी यही मज़्मून गुज़र चुका है।

الحديث بطوله بمعنى حديث الباب وفيه ذكر الصيام والزكوة نحو الصلوة وفى الدر

اخرج ابو يعلى عن انس رفعه اول ما افترض الله على الناس من دينهم الصلوة

واٰخر ما يبقى الصلوٰة واول ما يحاسب به الصلوٰة يقول الله انظروا فى صلوٰة عبدى

فان كانت تامة كتبت تامة وان كانت ناقصة قال انظروا هل له من تطوع الحديث فيه

ذكر الزكوة والصدقة وفيه ايضا اخرج ابن ماجة والحاكم عن تميم الدارى مرفوعا

3. 'नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़यामत में आदमी के आमाल में सबसे पहले फ़र्ज नमाज़ का हिसाब किया जायेगा। अगर नमाज़ अच्छी निकल आयी तो वह शख़्स कामियाब होगा और बा-मुराद और अगर नमाज़ बेकार साबित हुई तो वह नामुराद ख़सारे में होगा और अगर नमाज़ में कमी पायी गयी तो इर्शादे ख़ुदावंदी होगा कि देखो, इस बन्दे के पास कुछ नफ़्लें भी हैं, जिनसे फ़र्ज़ों को पूरा कर दिया जाये, अगर निकल आयें तो उनसे फ़र्ज़ों की तक्मील कर दी जायेगी। इसके बाद फिर उसी तरह बाक़ी आमाल, रोज़ा-ज़कात वग़ैरह का हिसाब होगा।'

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि आदमी को नफ़्लों का ज़ख़ीरा भी अपने पास काफ़ी रखना चाहिए कि अगर फ़र्ज़ों में कुछ कोताही निकले तो मीज़ान पूरी हो जाए। बहुत से लोग कह दिया करते हैं, अजी ! हम से फ़र्ज़ ही पूरा हो जाये, तो बहुत ही ग़नीमत है। नफ़्लें पढ़ना तो बड़े आदमियों का काम है। इसमें शक नहीं कि फ़र्ज़ ही अगर पूरे-पूरे हो जायें, तो बहुत काफ़ी हैं, लेकिन उन का बिल्कुल पूरा पूरा अदा हो जाना कौन-सा सहल काम है कि हर-हर चीज बिल्कुल पूरी अदा हो जाये और जब थोड़ी बहुत कोताही होती ही है तो उसके पूरा करने के लिए नफ़्लों बग़ैर चारा-ए-कार नहीं।

एक दूसरी हदीस में यह मज़्मून ज़्यादा वज़ाहत[1] से आया है। इर्शाद है कि अल्लाह तआला ने इबादात में सबसे पहले नमाज़ को फ़र्ज़ फ़र्माया है और सबसे पहले आमाल में से नमाज़ ही पेश की जाती है और सबसे पहले क़यामत में नमाज़ ही का हिसाब होगा। अगर फ़र्ज़ नमाज़ों में कुछ कमी रह गयी तो नफ़्लों से उसको पूरा किया जायेगा। और फिर उसके बाद इसी तरह रोज़ों का हिसाब किया जायेगा और फ़र्ज़ रोज़ों में जो कमी होगी, वह नफ़्ल रोज़ों से पूरी कर दी जाएगी और फिर

1. खोलकर,

ज़कात का हिसाब इसी तरीक़े से होगा। इन सब चीज़ों में नवाफ़िल को मिला कर भी अगर नेकियों का पल्ला भारी हो गया, तो वह शख़्स ख़ुशी-ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो जायेगा, वरना जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। ख़ुद नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल यही था कि जो शख़्स मुसलमान होता, सबसे अव्वल उसको नमाज़ सिखायी जाती।

(٤) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ قُرْطٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ الصَّلٰوةُ فَاِنْ صَلُحَتْ صَلُحَ سَائِرُ عَمَلِهٖ وَاِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهٖ رواه الطبرانى فى الاوسط ولاباس باسناده انشاء الله كذا فى الترغيب وفى المنتخب برواية الطبرانى فى الاوسط و ايضا عن انس بلفظه وفى الترغيب عن ابى هريرة رفعه الصلوة ثلثة اثلاث الطهور ثلث والركوع ثلث والسجود ثلث فمن اداها بحقها قبلت منه وقبل منه سائر عمله و من ردت عليه صلوته رد عليه سائر عمله رواه البزار وقال لا نعلمه مرفوعا الا من حديث المغيرة بن مسلم قال الحافظ واسناده حسن. واخرج مالك فى الموطا ان عمر بن الخطاب كتب الى عماله ان اهم اموركم عندى الصلوة من حفظها او حافظ عليها حفظ دينه ومن ضيعها فهو لما سواها اضيع كذا فى الدر.

4. 'नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़यामत में सब से पहले नमाज़ का हिसाब किया जायेगा, अगर वह अच्छी और पूरी निकल आयी, तो बाक़ी आमाल भी पूरे उतरेंगे, और अगर वह ख़राब हो गयी तो बाक़ी आमाल भी ख़राब निकलेंगे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में एक एलान सब जगह के हुक्काम[1] के पास भेजा था कि सबसे ज़्यादा मुहतम्म बिश्शान[2] चीज़ मेरे नज़दीक नमाज़ है, जो शख़्स उसकी हिफ़ाज़त और उसका एहतमाम करेगा वह दीन के और अजज़ा का भी एहतमाम कर सकता है और जो उसको ज़ाया कर देगा, वह दीन के और अजज़ा को ज़्यादा बर्बाद कर देगा।'

फ़ायदा: नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पाक इर्शाद और हज़रत उमर रज़ि० के इस एलान का मंशा बज़ाहिर यह है, जो दूसरी हदीस

---

1. हाकिमों, 2. शानदार,

में आया है कि शैतान मुसलमान से उस वक़्त तक डरता रहता है, जब तक वह नमाज़ का पाबंद और उसको अच्छी तरह अदा करता रहता है, क्योंकि ख़ौफ़ की वजह से उसको ज़्यादा जुर्अत नहीं होती, लेकिन जब वह नमाज़ को ज़ाया कर देता है तो उसकी जुर्अत बहुत बढ़ जाती है और उस आदमी के गुमराह करने की उमंग पैदा हो जाती है और फिर बहुत से मुह्लिकात और बड़े-बड़े गुनाहों में उसको मुब्तला कर देता है।[1] और यही मतलब है हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस के इर्शाद 'इन्नस्सला त तन्हा अनिल फहशाइ वल् मुंकरि०' का, जिस का बयान क़रीब ही आ रहा है।

٥۔ عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ اَبِیْ قَتَادَۃَ عَنْ اَبِیْہِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَسْوَءُ النَّاسِ سَرِقَۃً الَّذِیْ یَسْرِقُ صَلٰوتَہٗ قَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَکَیْفَ یَسْرِقُ صَلٰوتَہٗ قَالَ لَا یُتِمُّ رُکُوْعَہَا وَلَا سُجُوْدَہَا رواہ الدارمی وفی الترغیب رواہ احمد والطبرانی وابن خزیمۃ فی صحیحہ وقال صحیح الاسناد وفی المقاصد الحسنۃ حدیث ان اسوء الناس سرقۃ رواہ احمد والدارمی فی مسندیہما من حدیث الولید بن مسلم عن الاوزاعی عن یحیی بن ابی کثیر عن عبد اللہ بن ابی قتادۃ عن ابیہ مرفوعا وفی لفظ عند فان وصححہ ابن خزیمۃ والحاکم وقال انہ علی شرطہما ولم یخرجاہ لروایۃ کاتب الاوزاعی لہ عنہ عن یحیی عن ابی سلمۃ عن ابی ہریرۃ ورواہ احمد ایضا والطیالسی فی مسندیہما من حدیث علی بن زید عن سعید بن المسیب عن ابی سعید الخدری بہ مرفوعا وروایۃ ابی ہریرۃ عند ابن منیع وفی الباب عن عبد اللہ ابن مغفل وعن النعمان بن مرۃ عند مالک مرسلا فی آخرین. وقال المنذری فی الترغیب حدیث ابن مغفل رواہ الطبرانی فی معاجمہ الثلثۃ باسناد جید وقال حدیث ابی ہریرۃ رواہ الطبرانی فی الاوسط وابن حبان فی صحیحہ والحاکم وقال صحیح الاسناد
قلت وحدیث ابی قتادۃ وابی سعید ذکرہما
السیوطی فی الجامع الصغیر ورقم بالصحیح۔

5. नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बदतरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है, जो नमाज़ में से भी चोरी कर ले। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया है, या रसूलल्लाह ! नमाज़ में से किस तरह चोरी करेगा ? इर्शाद फ़र्माया

---

1. मुंतख़ब कंज़,

अच्छी तरह न करे।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आसमान की तरफ़ निगाह उठायी और यह इर्शाद फ़र्माया कि इस वक़्त इल्म दुनिया से उठ जाने का वक़्त (मुंकशफ़) हुआ है। हज़रत ज़ियाद रज़ि० सहाबी ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! इल्म हम से किस तरह उठ जायेगा, हम लोग क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं और अपनी औलाद को पढ़ाते हैं। (और वह इसी तरह अपनी औलाद को पढ़ायेंगे और सिलसिला चलता रहेगा), हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं तो तुझे बड़ा समझदार ख़्याल करता था। यह यहूद व नसारा भी तो तौरात-इंजील पढ़ते-पढ़ाते हैं, फिर क्या कारआमद हुआ। अबूदर्दा रज़ि० के शागिर्द कहते हैं कि मैंने दूसरे सहाबी हज़रत उबादा रज़ि० से जाकर यह क़िस्सा सुनाया। उन्होंने फ़र्माया कि अबूदर्दा रज़ि० सच कहते हैं और मैं बताऊं कि सबसे पहले क्या चीज़ दुनिया से उठेगी। सब से पहले नमाज़ का ख़ुशूअ उठ जायेगा, तू देखेगा कि भरी मस्जिद में एक शख़्स भी ख़ुशूअ से नमाज़ पढ़ने वाला न होगा। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० जो हुज़ूर सल्ल० के राज़दार कहलाते हैं, वह भी फ़र्माते हैं कि सबसे पहले नमाज़ का ख़ुशूअ उठाया जायेगा।[1]

एक हदीस में आया है कि हक़ तआला शानुहू उस नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं फ़र्माते जिसमें रुकूअ-सज्दा अच्छी तरह न किया जाये।

एक हदीस में इर्शाद नबवी है कि आदमी साठ वर्ष तक नमाज़ पढ़ता है, मगर एक नमाज़ भी क़ुबूल नहीं होती कि कभी रुकूअ अच्छी तरह करता है तो सज्दा पूरा नहीं, सज्दा पूरा करता है, तो रुकूअ पूरा नहीं करता।

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी नव्वरल्लाहु मर्क़दहु ने अपने मकातीब (ख़ुतूत) में नमाज़ के एहतमाम पर बहुत ज़ोर दिया है और बहुत से गरामी नामों में मुख़्तलिफ़ मज़ामीन पर बहस फ़र्मायी है। एक गरामी नामे में तहरीर फ़र्माते हैं कि सज्दे में हाथों की उंगलियों को मिलाने का और रुकूअ में उंगलियों को अलाहिदा-अलाहिदा करने का एहतमाम भी ज़रूरी है। शरीअत ने उंगलियों को मिलाने-खोलने का हुक्म बे-फ़ायदा नहीं फ़र्माया है, यानी ऐसे मामूली आदाब की रिआयत भी ज़रूरी है। इसी सिलसिले में तहरीर फ़र्माते हैं कि नमाज़ में खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह निगाह का जमाये रखना और रुकूअ की हालत में पांव पर निगाह रखना और सज्दे में जाकर नाक पर निगाह रखना और बैठने की हालत में हाथों पर निगाह रखना

---

1. दिल का जमाव, इत्मीनान,

नमाज़ में ख़ुशूअ को पैदा करता है और इससे नमाज़ में दिल-जमई[1] नसीब होती है। जब ऐसे मामूली आदाब भी इतने अहम फ़ायदे रखते हैं तो बड़े आदाब और सुन्नतों की रिआयत तुम समझ लो कि किस क़दर फ़ायदा बख़्शेगी।

(٦) عَنْ اُمِّ رُوْمَانَ وَالِدَةِ عَائِشَةَ قَالَتْ رَآنِیْ اَبُوْبَكْرٍ الصِّدِّيْقُ اَتَمَيَّلُ فِیْ صَلٰوتِیْ فَزَجَرَنِیْ زَجْرَةً كِدْتُ اَنْصَرِفُ مِنْ صَلٰوتِیْ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِذَا قَامَ اَحَدُكُمْ فِی الصَّلٰوةِ فَلْيُسَكِّنْ اَطْرَافَهٗ لَا يَتَمَيَّلْ تَمَيُّلَ الْيَهُوْدِ فَاِنَّ سُكُوْنَ الْاَطْرَافِ فِی الصَّلٰوةِ مِنْ تَمَامِ الصَّلٰوةِ اخرجه الحكيم الترمذی من طريق القاسم بن محمد عن اسماء بنت ابی بكر عن ام رومان كذا فی الدر وعزاه السيوطی فی الجامع الصغير الی ابی نعيم فی الحلية وابن عدی فی الكامل ورقم له بالضعف وذكر ايضا برواية ابن عساكر عن ابی بكر من تمام الصلوة سكون الاطراف

6. हजरत आइशा रज़ि० की वालिदा उम्मे रोमान रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैं एक मर्तबा नमाज पढ़ रही थी। नमाज़ में इधर-उधर झुकने लगी। हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने देख लिया तो मुझे इस ज़ोर से डांटा कि मैं (डर की वजह से) नमाज़ तोड़ने के क़रीब हो गयी। फिर इर्शाद फ़र्माया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जब कोई शख़्स नमाज़ को खड़ा हो, तो अपने तमाम बदन को बिल्कुल सुकून से रखे, यहूद की तरह हिले नहीं। बदन के तमाम आज़ा का नमाज़ में बिल्कुल सुकून से रहना नमाज़ के पूरा होने का जुज़्व है।

फ़ायदा: नमाज़ के दर्मियान में सुकून से रहने की ताकीद बहुत सी हदीसों में आयी है। नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा अक्सर आसमान की तरफ़ देखने की थी कि वही के फ़रिश्ते का इंतिज़ार रहता था और जब किसी चीज़ का इंतज़ार होता है, तो उस तरफ़ निगाह भी लग जाती है, इसी वजह से कभी नमाज़ में भी निगाह ऊपर उठ जाती थी।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ

जब क़द अफ़्लहल् मुअ्मिनून० ल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन० नाज़िल हुई, तो फिर निगाह नीचे रहती थी। सहाबा रज़ि० के मुताल्लिक़ भी हदीस में आया

---

1. के मुताबिक़, पूरी तरह।

है कि अव्वल-अव्वल इधर-उधर तवज्जोह फ़र्मा लिया करते थे, मगर इस आयते शरीफ़ा के नाज़िल होने के बाद से किसी तरफ़ तवज्जोह नहीं करते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० इसी आयते शरीफ़ा के ज़ेल[1] में फ़र्माते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० जब नमाज़ को खड़े होते थे, तो किसी तरफ़ तवज्जोह नहीं करते थे, हम्मतन नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह रहते थे, अपनी निगाहों को सज्दा की जगह रखते थे और यह समझते थे कि हक़ तआला शानुहू उसकी तरफ़ मुतवज्जह हैं।

हज़रत अली रज़ि० से किसी ने दर्याफ़्त किया कि ख़ुशूअ क्या चीज़ है, फ़र्माया कि ख़ुशूअ दिल में होता है। (यानी दिल से नमाज़ में मुतवज्जह रहना) और यह भी इसमें दाख़िल है कि किसी तरफ़ तवज्जोह न करे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि ख़ुशूअ करने वाले वह हैं, जो अल्लाह से डरने वाले हैं और नमाज़ में सुकून से रहने वाले हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़र्माया कि निफ़ाक़ के ख़ुशूअ से अल्लाह ही से पनाह मांगो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल०! निफ़ाक़ का ख़ुशूअ क्या चीज है? इर्शाद फ़र्माया कि ज़ाहिर में तो सुकून हो और दिल में निफ़ाक़ हो।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० भी इस क़िस्म का एक वाक़िआ नक़ल फ़र्माते हैं, जिसमें हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया कि निफ़ाक़ का ख़ुशूअ यह है कि ज़ाहिर बदन तो ख़ुशूअ वाला मालूम हो और दिल में ख़ुशूअ न हो।

हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि दिल का ख़ुशूअ अल्लाह का ख़ौफ़ है और निगाह को नीची रखना।

हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा एक शख़्स को देखा कि नमाज़ में दाढ़ी पर हाथ फेर रहा है, इर्शाद फ़र्माया कि अगर उसके दिल में ख़ुशूअ होता तो बदन के सारे आज़ा में सुकून होता।

हज़रत आइशा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से एक मर्तबा दर्याफ़्त किया कि नमाज़ में इधर-उधर देखना कैसा है? इर्शाद फ़र्माया कि यह शैतान का नमाज़ में से उचक लेना है। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जो लोग नमाज़ में ऊपर देखते हैं, वह अपनी इस हरकत से बाज़ आ जायें, वरना निगाहें ऊपर की ऊपर ही

रह जायेंगी।[1]

बहुत से सहाबा रज़ि० और ताबिईन से नक़ल किया गया है कि ख़ुशूअ सुकून का नाम है यानी नमाज़ निहायत सुकून से पढ़ी जाए। मुतअद्दिद अहादीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि नमाज़ ऐसी तरह पढ़ा करो, गोया यह आख़िरी नमाज़ है। ऐसी तरह पढ़ा करो जैसा वह शख़्स पढ़ता है, जिसको यह गुमान हो कि इस वक़्त के बाद मुझे दूसरी नमाज़ की नौबत ही न आयेगी।[2]

नमाज़ बुरे कामों से रोकती है

(٧) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ فَقَالَ مَنْ لَّمْ تَنْهَهُ صَلٰوتُهُ عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ فَلَا صَلٰوةَ لَهُ۔ اخرجه ابن ابی حاتم وابن مردويه كذا فی الدر المنثور۔

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने हक़ तआला शानुहू का इर्शाद 'इन्नस्सला त तन्हा अनिल् फ़ह्शाइ वल् मुन्करि०'

(बेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई से और नाशाइस्ता हरकतों से) के मुताल्लिक़ दर्याफ़्त किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिस शख़्स की नमाज़ ऐसी न हो और उसको बेहयायी और नाशाइस्ता हरकतों से न रोके तो वह नमाज़ ही नहीं।

फ़ायदा: बेशक नमाज़ ऐसी ही बड़ी दौलत है और उसको अपनी असली हालत पर पढ़ने का समरा यही है कि वह ऐसी ना मुनासिब बातों से रोक दे। अगर यह बात पैदा न हुई तो नमाज़ के कमाल में कमी है। बहुत सी हदीसों में यह मज़्मून वारिद हुआ है।

हज़रत इब्नेअब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि नमाज़ में गुनाहों से रोक है और गुनाहों से हटाना है।

हज़रत अबुल आलिया रज़ि० फ़र्माते हैं कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद

1. दुर्रे मंसूर, 2. जामिउस्सग़ीर,

'इन्नस्सला त तन्हा- का मतलब यह है कि नमाज में तीन चीजें होती हैं' इख़्लास, अल्लाह का ख़ौफ़ और अल्लाह का ज़िक्र। जिस नमाज़ में यह चीज़ें नहीं, वह नमाज़ ही नहीं। इख़्लास नेक कामों का हुक्म करता है और अल्लाह का ख़ौफ़ बुरी बातों से रोकता है और अल्लाह का ज़िक्र क़ुरआन पाक है जो मुस्तक़िल तौर पर अच्छी बातों का हुक्म करता है और बुरी बातों से रोकता है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हुज़ूर अक़्दस सल्ल० से नक़ल करते हैं कि जो नमाज़ बुरी बातों और ना मुनासिब हरकतों से न रोके, वह नमाज़ बजाय अल्लाह के क़ुर्ब के अल्लाह से दूरी पैदा करती है।

हज़रत हसन रज़ि० भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स की नमाज़ उसको बुरी बातों से न रोके, वह नमाज़ ही नहीं। उस नमाज़ की वजह से अल्लाह से दूरी पैदा होती है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने भी हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही मज़्मून नक़ल फ़र्माया है।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि०हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो नमाज़ की इताअत न करे, उसकी नमाज़ ही क्या और नमाज़ की इताअत यह है कि बेहयाई और बुरी बातों से रुके।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया कि फ़्लां शख़्स रात को नमाज़ पढ़ता रहता है और सुबह होते चोरी करता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उसकी नमाज़ उसको इस फ़ेल से अन्क़रीब ही रोक देगी।'

इससे मालूम हुआ कि अगर कोई शख़्स बुरी बातों में मशग़ूल हो तो उसको एहतमाम से नमाज़ में मशग़ूल होना चाहिए, बुरी बातें उससे ख़ुद ही छुट जायेंगी, हर-हर बुरी बात के छुड़ाने का एहतमाम दुश्वार भी है और देर तलब भी और एहतमाम से नमाज़ में मशग़ूल हो जाना आसान भी है और देर तलब भी नहीं। इसकी बरकत से बुरी बातें उससे अपने आप ही छूटती चली जायेंगी। हक़ तआला शानुहू मुझे भी अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मायें।

(५) عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ طُوْلُ الْقُنُوْتِ

اخرجه ابن أبي شيبة ومسلم والترمذي وابن ماجة كذا في الدر المنثور وفيه ايضاً

1. दुर्रे मंसूर

عَنْ مُجَاهِدٍ فِيْ قَوْلِهٖ تَعَالٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قَانِتِيْنَ قَالَ مِنَ الْقُنُوْتِ الرُّكُوْعُ وَالْخُشُوْعُ وَطُوْلُ الرُّكُوْعِ يَعْنِيْ طُوْلَ الْقِيَامِ وَغَضُّ الْبَصَرِ وَخَفْضُ الْجَنَاحِ وَالرَّهْبَةُ لِلّٰهِ وَكَانَ الْفُقَهَاءُ مِنْ اَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا قَامَ اَحَدُهُمْ فِي الصَّلٰوةِ يَهَابُ الرَّحْمٰنَ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى اَنْ يَّلْتَفِتَ اَوْ يُقَلِّبَ الْحَصٰى اَوْ يَشُدَّ بِصَرِهٖ اَوْ يَعْبَثَ بِشَيْءٍ اَوْ يُحَدِّثَ نَفْسَهٗ بِشَيْءٍ مِّنْ اَمْرِ الدُّنْيَا اِلَّا نَاسِيًا حَتّٰى يَنْصَرِفَ اخرجه سعيد بن منصور وعبد بن حميد وابن جرير وابن المنذر وابن ابي حاتم والاصبهاني في الترغيب والبيهقي في شعب الايمان. وهذا آخر ما اردت ايراده في هذه العجالة رعاية لعدّ الاربعين والله ولي التوفيق وقد وقع الفراغ من ليلة التروية من سنة سبع وخمسين بعد الالف وثلثمائة والحمد لله

8. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अफ़ज़ल नमाज़ वह है, जिसमें लम्बी-लम्बी रक्अतें हों। मुजाहिद कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू के इर्शाद 'क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन' (और नमाज़ में खड़े रहो अल्लाह के सामने मुअद्दब[1]) इस आयत में रुकूअ भी दाख़िल है और ख़ुशूअ भी और लम्बी रक्अत होना भी और आंखों को पस्त करना, बाज़ुओं को झुकाना (यानी अकड़ के खड़ा न होना) और अल्लाह से डरना भी शामिल है कि लफ़्ज़ क़ुनूत में जिसका इस आयत में हुक्म दिया गया, यह सब चीजें दाख़िल है, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० में से, जब कोई शख़्स नमाज़ को खड़ा होता था, तो अल्लाह तआला से डरता था, इस बात से कि इधर-उधर देखे या (सज्दा में जाते हुए) कंकरियों को उलट-पलट करे (अरब में सफ़ों की जगह कंकरियां बिछायी जाती हैं) या किसी और लग्व चीज़ में मश्ग़ूल हो या दिल में किसी दुनियावी चीज़ का ख़्याल लाये। हां, भूल के ख़्याल आ गया हो, तो दूसरी बात है।

फ़ायदा : 'क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन' की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ इर्शादात वारिद हुए हैं। एक यह भी है कि क़ानितीन के मानी चुपचाप के हैं।

इब्तिदा-ए-ज़माना[2] में नमाज़ में बात करना, सलाम का जवाब देना वग़ैरह-वग़ैरह उमूर[3] जायज़ थे। मगर जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो नमाज़ में बात करना नाजायज़ हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्माते हैं कि मुझे हुज़ूर

---

1. अदब के साथ, 2. शुरू ज़माने में, 3. काम,

सल्ल० ने इस बात का आदी बना रखा था कि जब मैं हाज़िर हूं, तो गो हुज़ूर सल्ल० में नमाज़ मश्गुल हों, मैं सलाम करता, हुज़ूर सल्ल० जवाब देते। एक मर्तबा मैं हाज़िर हुआ, हुज़ूर सल्ल० नमाज़ में मश्गूल थे। मैंने हस्बे आदत सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब नहीं दिया। मुझे सख़्त फ़िक्र हुआ कि शायद मेरे बारे में अल्लाह जल्ले शानुहू के यहां से कोई इताब नाज़िल हुआ हो। नये और पुराने ख़्यालात ने मुझे घेर लिया, पुरानी-पुरानी बातें सोचता था कि शायद फ़्ला बात पर हुज़ूर सल्ल० नाराज़ हो गए हों, शायद फ़्लानी बात हो गयी हो। जब हुज़ूर सल्ल० ने सलाम फेर लिया, तो इर्शाद फ़र्माया कि हक़ तआला शानुहू अपने अह्काम में जो चाहते हैं, तब्दील फ़र्मा देते हैं, हक़ तआला शानुहू ने नमाज़ में बोलने की मुमानअत फ़र्मा दी और यह आयत तिलावत फ़र्मायी और फिर इर्शाद फ़र्माया कि नमाज़ में अल्लाह के ज़िक्र, उसकी तस्बीह, उसकी हम्द व सना के सिवा बात करना जायज़ नहीं।

मुआविया बिन हकम सल्मा रज़ि० कहते हैं कि जब मैं मदीना-ए-तय्यबा मुसलमान होने के लिए हाज़िर हुआ, तो मुझे बहुत सी चीज़ें सिखलायी गयीं। मिन्‌जुम्ला उनके यह भी था कि जब कोई छींके, और अल्हम्दु लिल्लाहि कहे, तो इसके जवाब में यर्हमुकल्लाहु कहना चाहिए। चूंकि नयी तालीम थी, उस वक़्त तक यह भी मालूम न था कि नमाज में न कहना चाहिए। एक साहब को नमाज में छींक आयी, मैंने जवाब में यर्हमुकल्लाहु कहा। आस-पास के लोगों ने मुझे तंबीह के तौर पर घूरा, मुझे उस वक़्त तक यह भी मालूम न था कि नमाज़ में बोलना जायज नहीं, इसलिए मैंने कहा कि हाय अफ़सोस ! तुम्हें क्या हुआ कि मुझे कड़वी-कड़वी निगाहों से घूरते हो। मुझे इशारे से उन लोगों ने चुप कर दिया। मेरी समझ में तो आया नहीं, मगर मैं चुप हो गया। जब नमाज़ ख़त्म हो चुकी तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान) न मुझे मारा, न डांटा, न बुरा-भला कहा, बल्कि यह इर्शाद फ़र्माया कि नमाज़ में बात करना जायज़ नहीं। नमाज़, तस्बीह-तक्बीर और किराते क़ुरआन ही का मौक़ा है, ख़ुदा की क़सम हुज़ूर सल्ल० जैसा शफ़ीक़[1] उस्ताद न मैंने पहले देखा, न बाद में।

दूसरी तफ़्सीर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से मंक़ूल है कि 'क़ानितीन' के मानी 'ख़ाशिईन' के हैं, यानी ख़ुशूअ से नमाज पढ़ने वाले। इसी के मुवाफ़िक़ मुजाहिद यह नक़ल करते हैं, जो ऊपर ज़िक्र किया गया कि यह सब चीज़ें ख़ुशूअ में दाख़िल हैं

1. मेहरबान,

यानी लम्बी-लम्बी रक्आत का होना और ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ से पढ़ना, निगाह को नीची रखना, अल्लाह तआला से डरना।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि इब्तिदा में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० रात को जब नमाज़ के लिए खड़े होते, तो अपने को रस्सी से बांध लिया करते कि नींद के ग़लबे से गिर न जाएं, इस पर 'ताहा मा अन्ज़ल्ना अलैकल क़ुरआ न लितश्क़ा' नाज़िल हुई और यह मज़्मून तो कई हदीसों में आया है कि हुज़ूर सल्ल० इतनी तवील रक्अत किया करते थे कि खड़े-खड़े पांवों पर वरम आ जाता था। अगरचे हम लोगों पर शफ़क़त की वजह से हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फ़र्मा दिया कि जिस क़दर तहम्मुल[1] और निबाह हो सके, उतनी मेहनत करनी चाहिए। ऐसा न हो कि तहम्मुल से ज़्यादा बार उठाने की वजह से बिल्कुल ही जाता रहे चुनांचे एक सहाबी औरत रज़ि० ने भी इसी तरह रस्सी में अपने को बांधना शुरू किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्मा दिया। मगर इतनी बात ज़रूर है कि तहम्मुल के बाद जितनी लम्बी नमाज़ होगी, उतनी ही बेहतर और अफ़्ज़ल होगी। आख़िर हुज़ूर सल्ल० का इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ना कि पांव मुबारक पर वरम आ जाता था, कोई तो बात रखता है। सहाबा-किराम रज़ि० अर्ज़ भी करते हैं कि सूर: फ़त्ह में, 'लियग़्फ़िर लकल्लाहु मा तक़द्द म मिन ज़ंबि क व मा तअख़्ख़र० आपकी मग़्फ़िरत का वायदा अल्लाह तआला ने फ़र्मा लिया है, तो हुज़ूर सल्ल० इर्शाद फ़र्माते हैं कि फिर मैं शुक्र गुज़ार बन्दा क्यों न बनूं ?

एक हदीस में आया है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ते थे तो आपके सीना-ए-मुबारक से रोने की आवाज़ (सांस रुकने की वजह से) ऐसी मुसलसल आती थी, जैसे चक्की की आवाज़ होती है। एक दूसरी हदीस में आया है कि ऐसी आवाज़ होती थी जैसे कि हंडिया के पकने की आवाज़ होती है।

हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं कि बद्र की लड़ाई में मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा कि एक दरख़्त के नीचे खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे और रो रहे थे कि उसी हालत में सुबह फ़र्मा दी। मुतअद्दिद अहादीस में इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू चन्द आदमियों से बेहद ख़ुश होते हैं। मिन जुम्ला उनके वह शख़्स है, जो सर्दी की रात में नर्म बिस्तर पर लिहाफ़ में लिपटा हुआ लेटा हो और ख़ूबसूरत दिल में जगह करने वाली बीवी पास लेटी हो और फिर तहज्जुद के लिए उठे और नमाज़ में मशग़ूल हो जाए। हक़

---

1. बर्दाश्त,

तआला शानुहू उस शख़्स से बहुत ही ख़ुश होते हैं, ताज्जुब फ़र्माते हैं, बावजूद आलिमुल् ग़ैब होने के फ़रिश्तों से फ़ख़्र के तौर पर दर्याफ़्त फ़र्माते हैं कि इस बन्दे को किस बात ने मजबूर किया कि इस तरह खड़ा हो गया। फ़रिश्ते अर्ज करते हैं कि आपके लुत्फ़ व अताया की उम्मीद ने और आपके इताब के ख़ौफ़ ने। इर्शाद होता है कि अच्छा जिस चीज की उसने मुझसे उम्मीद रखी, वह मैंने अता की और जिस चीज का उसको ख़ौफ़ है, उससे अम्न बख़्शा। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि किसी बन्दे को कोई अता अल्लाह की तरफ़ से इससे बेहतर नहीं दी गयी कि उसको दो रक्अत नमाज़ की तौफ़ीक़ अता हो जाये।

क़ुरआन व हदीस में कसरत से वारिद हुआ है कि फ़रिश्ते हर वक़्त इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं।

अहादीस में आया है कि एक जमाअत उनकी ऐसी है, जो क़यामत तक रुकूअ ही में रहेगी और एक जमाअत उसी तरह हर वक़्त सज्दे में मश्ग़ूल रहती है और एक जमाअत उसी तरह खड़ी रहती है। हक़ तआला शानुहू ने मोमिन के लिए यह इकराम व एजाज फ़र्माया कि इन सब चीज़ों का मज्मूआ उसको दो रक्अत नमाज़ में अता फ़र्मा दिया, ताकि फ़रिश्तों की हर इबादत से उसको हिस्सा मिल जाये। और नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत उनकी इबादतों पर इज़ाफ़ा है और जब यह फ़रिश्तों की इबादतों का मज्मूआ है, तो उन्हीं की-सी सिफ़ात से उस में लुत्फ़ मयस्सर हो सकता है। इसीलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि नमाज के लिए अपनी कमर और पेट को हल्का रखा करो।[2] कमर को हल्का रखने का यह मतलब कि बहुत से झगड़े[3] अपने पीछे न लगाओ और पेट को हल्का रखना ज़ाहिर है कि ज़्यादा सैर होकर न खाओ, इससे काहिली-सुस्ती पैदा होती है।

नमाज़ में बारह हज़ार चीज़ें हैं

सूफ़िया कहते हैं कि नमाज में बारह हजार चीज़ें है, जिनको हक़ तआला शानुहू ने बारह चीज़ों में मुन्ज़म[4] फ़र्माया है, इन बारह की रियायात ज़रूरी है ताकि नमाज़ मुकम्मल हो जाये और इसका पूरा फ़ायदा हासिल हो। यह बारह हस्बे ज़ेल हैं-

---

1. तर्ग़ीब, 2. जामिउस्सग़ीर, 3. बखेड़े चिंताएं, 4. मिला देना,

1. अव्वल इल्म। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि इल्म के साथ थोड़ा सा अमल भी जह्ल की हालत के बहुत से अमल से अफ़ज़ल है, 2. दूसरे वुज़ू, 3. तीसरे लिबास, 4. वक़्त, 5. पांचवें, क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करना, 6. छठे नीयत, 7. सातवें, तक्बीरे तहरीमा, 8. आठवें, नमाज़ में खड़ा होना, 9. नवें क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना, 10. दसवें, रुकूअ, 11. ग्यारहवें, सज्दा, 12. बारहवें, अत्तहीयात में बैठना और इन सबकी तक्मील इख़्लास के साथ है।

फिर इन बारह के तीन-तीन जुज़्व है-

1. अव्वल इल्म के तीन जुज़्व यह हैं कि फ़र्ज़ों और सुन्नतों को अलग-अलग मालूम करे,

दूसरे यह मालूम करे कि वुज़ू और नमाज़ में कितनी चीज़ें फ़र्ज़ हैं, कितनी सुन्नत हैं,

तीसरे यह मालूम करे कि शैतान किस-किस मक्र[2] से नमाज़ में रख़ना[3] डालता है।

2. इसके बाद वुज़ू के भी तीन जुज़्व हैं-

अव्वल यह है कि दिल को कीना[4] और हसद से पाक करे, जैसा कि ज़ाहिरी आज़ा को पाक कर रहा है,

दूसरे, ज़ाहिरी आज़ा को गुनाहों से पाक रखे,

तीसरे वुज़ू करने में न इस्राफ़[5] करे, न कोताही करे।

3. फिर लिबास के भी तीन जुज़्व हैं-

अव्वल यह कि हलाल कमाई से हो,

दूसरे यह कि पाक हो,

तीसरे सुन्नत के मुवाफ़िक हो कि टख़ने वग़ैरह ढके हुए न हों, तकब्बुर और बड़ाई के तौर पर न पहना हो।

4. फिर वक़्त में भी तीन चीज़ों की रियायत ज़रूरी है-

---

1. धोखा, चाल, 2. रुकावट, 3. कपट, 4. ज़्यादती,

अव्वल यह कि धूप-सितारों वग़ैरह की ख़बरगीरी रखे, ताकि औक़ात सही मालूम हो सकें (और हमारे ज़माने में इसके क़ायम मुक़ाम घड़ी-घंटे हो गये हैं),

दूसरे अज़ान की ख़बर रखे,

तीसरे दिल से हर वक़्त नमाज़ के वक़्त का ख़्याल रखे, कभी ऐसा न हो कि वक़्त गुज़र जाये, पता न चले।

5. फिर क़िब्ले की तरफ़ मुंह करने में भी तीन चीज़ों की रियायत रखे-

अव्वल यह कि ज़ाहिरी बदन से इधर मुतवज्जह हो,

दूसरे यह कि दिल से अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह रखे कि दिल का काबा वही है,

तीसरे मालिक के सामने, जिस तरह हमतन मुतवज्जह होना चाहिए उस तरह मुतवज्जह हो।

6. फिर नीयत भी तीन चीज़ों की मुहताज है-

अव्वल यह कि कौन सी नमाज़ पढ़ रहा है,

दूसरे यह कि अल्लाह के सामने खड़ा है और वह देखता है,

तीसरे यह कि वह दिल की हालत को भी देखता है।

7. फिर तक्बीरे तहरीमा के वक़्त भी तीन चीज़ों की रिआयत करना है-

अव्वल यह कि लफ़्ज़ सही हो,

दूसरे हाथों को कानों तक उठाये (गोया इशारा है कि अल्लाह के सिवा सब चीज़ों को पीछे फेंक दिया),

तीसरे यह कि अल्लाहु अक्बर कहते हुए अल्लाह की बड़ाई और अज़्मत दिल में भी मौजूद हो।

8. फिर क़ियाम यानी खड़े होने में भी तीन चीज़ें हैं-

अव्वल यह कि निगाह सज्दे की जगह रहे,

दूसरे दिल से अल्लाह के सामने खड़े होने का ख़्याल करे,

---

1. जगह पर,

तीसरे किसी दूसरी तरफ मुतवज्जह न हो। कहते हैं कि जो शख्स नमाज़ में इधर-उधर मुतवज्जह हो। उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे कोई शख़्स बड़ी मुश्किल से दरबानों की मन्नत-समाजत करके बादशाह के हुज़ूर में पहुंचे और जब रसाई हो और बादशाह उसकी तरफ मुतवज्जह हो, तो वह इधर-उधर देखने लगे। ऐसी सूरत में बादशाह उसकी तरफ क्या तवज्जोह करेगा।

9. फिर क़िरअत में भी तीन चीज़ों की रिआयत करे-

अव्वल, सही तर्तील[1] से पढ़े,

दूसरे, उसके मानी पर ग़ौर करे,

तीसरे, जो पढ़े, उस पर अमल करे।

10. फिर रुकूअ में भी तीन चीज़ें हैं-

अव्वल यह कि कमर को रुकूअ में बिल्कुल सीधा रखे, न नीचा करे, न ऊंचा, (उलमा ने लिखा है कि सिर और कमर और सुरीन तीनों चीज़ें बराबर रहें)

दूसरे हाथों की उंगलियां खोल कर चौड़ी करके घुटनों पर रखे,

तीसरे तस्बीहात को अज़्मत और विक़ार से पढ़े।

11. फिर सज्दे में भी तीन चीज़ों की रिआयत करे-

अव्वल यह कि दोनों हाथ सज्दे में कानों के बराबर रहें,

दूसरे हाथों की कुहनियां खड़ी रहें,

तीसरे तस्बीहात को अजमत से पढ़े।

12. फिर बैठने में भी तीन चीज़ों की रिआयत करे-

अव्वल यह कि दायां पांव खड़ा करे और बायें पर बैठे,

दूसरे यह कि अज़्मत के साथ, माना की रिआयत करके तशाहुद पढ़े कि इसमें हुज़ूर सल्ल० पर सलाम है, मोमिनीन के लिए दुआ है,

फिर फ़रिश्तों पर और दायें-बायें जानिब जो लोग हैं, उन पर सलाम की नीयत करे।

---

1. ठहर-ठहर रक,

13. फिर इख़्लास के भी तीन जुज़्व हैं-

अव्वल यह कि इस नमाज़ से सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी मक़्सूद हो, दूसरे यह समझे कि अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से यह नमाज़ अदा हुई,

तीसरे इस पर सवाब की उम्मीद रखे।

सना का तर्जुमा

हक़ीक़त में नमाज में बड़ी ख़ैर और बड़ी बरकत है। इसका हर ज़िक्र बहुत सी ख़ूबियों को और अल्लाह की बड़ाइयों को लिए हुए है। एक 'सुब्हानकल्लाहुम्म' ही को देख लीजिए जो सबसे पहली दुआ है कि कितने फ़ज़ाइल पर हावी है।

'सुब्हानकल्लाहुम्म' سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ

'या अल्लाह ! तेरी पाकी का बयान करता हूं कि तू हर ऐब से पाक है, हर बुराई से दूर है।'

'व बिहम्दि क' وَبِحَمْدِكَ

'जितनी तारीफ़ की बातें है और जितने भी क़ाबिले मद्ह उमूर[1] हैं, वह सब तेरे लिए साबित हैं और तुझे ज़ेबा।' وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ

'व तबारकस्मुक तेरा नाम बाबर्क़त है और ऐसा बाबर्कत है कि जिस चीज पर तेरा नाम लिया जाये वह भी बाबर्क़त हो जाती है। व तआला जद्दुकु'

'तेरी शान बहुत बुलंद है, तेरी अज़्मत सबसे बाला तर है।'

'व लाइला ह ग़ैरु क' وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

'तेरे अलावा कोई माबूद नहीं, न कोई ज़ात परिस्तिश के लायक कभी हुई, न हो।

रुकूअ व सज्दे की तस्बीहात के मानी व मतलब

इसी तरह रुकूअ में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

1. तारीफ़ के क़ाबिल बातें,

'सुब्हा न रब्बियल अज़ीम'

'मेरा अज़्मत और बड़ाई वाला रब, हर ऐब से बिल्कुल पाक है', उसकी बड़ाई के सामने अपनी आजिज़ी और बेचारगी का इज़्हार है कि गरदन का बुलंद करना गुरूर व तकब्बुर की अलामत है और उसका झुका देना नियाज़मंदी और फ़र्माबरदारी का इक़रार है, तो रुकूअ में गोया इसका इक़्रार है कि तेरे अहकाम के सामने अपने को झुकाता हूं और तेरी इताअत और बंदगी को अपने सिर पर रखता हूं। मेरा यह गुनाहगार जिस्म तेरे सामने हाज़िर है और तेरी बारगाह में झुका हुआ है। तू बेशक बड़ाई वाला है और तेरी बड़ाई के सामने मैं सर नगूं[1] हूं।

इसी तरह सज्दे में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى

'सुब्हा न रब्बियल आला' में भी अल्लाह की बेहद रफ़्अत और बुलंदी का इक़रार है और इस बुलंदी के साथ हर बुराई और हर ऐब से पाकी का इक़रार है। अपने इस सिर को उसके सामने डाल देना है, जो सारे आज़ा में अशरफ़ शुमार किया जाता है और इसमें महबूब तरीन चीज़ें आंख, कान, नाक, ज़ुबान हैं, गोया इसका इक़रार है कि मेरी यह सब अश्रफ़ और महबूब चीज़ें तेरे हुज़ूर में हाज़िर और तेरे सामने ज़मीन पर पड़ी हुई हैं, इस उम्मीद पर कि तू मुझ पर फ़ज़्ल फ़र्माये और रहम करे और इस अजिज़ी का पहला ज़ुहूर उसके सामने हाथ बांध कर मुअद्दब खड़े होने में था, उस पर तरक़्क़ी उसके सामने सिर झुका देने में थी और उस पर भी तरक़्क़ी उसके सामने ज़मीन पर नाक रगड़ने और सर रख देने में है। इसी तरह पूरी नमाज़ की हालत है और हक़ यह है कि यही असली हैअत[2] नमाज़ की है और यही है वह नमाज़ जो दीन व दुनिया की फ़लाह व बहबूद का ज़ीना है। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से मुझे और सब मुसलमानों को इस पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये।

और जैसा कि मुजाहिद रह० ने बयान किया है, फ़ुक़हा-ए-सहाबा रज़ि० की यही नमाज़ थी। वह जब नमाज़ में खड़े होते थे, अल्लाह से डरते थे।

नमाज़ की हैबत

हज़रत हसन रज़ि० जब वुज़ू फ़र्माते, तो चेहरे का रंग मुतग़य्यर[3] हो जाता था। किसी ने पूछा, यह क्या बात है ? तो इर्शाद फ़र्माया कि एक बड़े जब्बार बादशाह

1. झुका हुआ, 2. हालत, 3. तब्दील बदल।

के हुज़ूर में खड़े होने का वक़्त आ गया है। फिर वुज़ू करके जब मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते, तो मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर यह फ़र्माते –

إِلٰهِي عَبْدُكَ بِبَابِكَ يَا مُحْسِنُ قَدْ أَتَاكَ الْمُسِيءُ وَقَدْ أَمَرْتَ الْمُحْسِنَ مِنَّا أَنْ يَتَجَاوَزَ عَنِ الْمُسِيءِ فَأَنْتَ الْمُحْسِنُ وَأَنَا الْمُسِيءُ فَتَجَاوَزْ عَنْ قَبِيحِ مَا عِنْدِي بِجَمِيلِ مَا عِنْدَكَ يَا كَرِيمُ.

इलाही अब्दु क बिबाबि क या मुह्सिनु क़द अताकल् मुसीउ व क़द अमर्तल् मुह्सि न मिन्ना अंय्य त जा व ज़ अनिल् मुसीइ फ़अन्तल् मुह्सिनु व अनल् मुसीअ फ़तजावज़ अन क़बीहि मा अिन्दी बिजमीलि मा अिन्द क या करीमु०

'या अल्लाह ! तेरा बन्दा तेरे दरवाज़े पर हाज़िर है। ऐ एहसान करने वाले, और भलाई का बर्ताव करने वाले, बद-आमाल तेरे पास हाज़िर, है तूने हम लोगों को यह हुक्म फ़र्माया है कि अच्छे लोग बुरों से दरगुज़र करें, तू अच्छाई वाला है और मैं बद-कार हूं। ऐ करीम ! मेरी बुराइयों से, उन ख़ूबियों की बदौलत, जिनका तू मालिक है, दरगुज़र फ़र्मा।'

इसके बाद मस्जिद में दाख़िल होते।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० रोज़ाना एक हज़ार रक्अत पढ़ते थे, तहज्जुद कभी सफ़र में या हज़र में नाग़ा नहीं हुआ। जब वुज़ू करते, तो चेहरा ज़र्द हो जाता था और जब नमाज़ को खड़े होते तो बदन पर लर्ज़ा (कपकपी) आ जाता। किसी ने दर्याफ़्त किया तो फ़र्माया, क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि किसके सामने खड़ा होता हूं। एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गयी। यह नमाज़ में मश्गूल रहे। लोगों ने अर्ज़ किया, तो फ़र्माया कि दुनिया की आग से आख़िरत की आग ने ग़ाफ़िल रखा। आपका इर्शाद है कि मुझे तकब्बुर करने वाले पर ताज्जुब है कि कल तक नापाक नुत्फ़ा था और कल को मुर्दार हो जायेगा, फिर तकब्बुर करता है। आप फ़र्माया करते थे कि ताज्जुब है कि लोग फ़ना होने वाले घर के लिए तो फ़िक्र करते हैं, हमेशा रहने वाले घर की फ़िक्र नहीं करते। आप का मामूल था कि रात को छिपकर सद्क़ा करते। लोगों को यह भी ख़बर न होती कि किसने दिया। जब आपका इन्तिक़ाल हुआ तो सौ घर ऐसे निकले, जिन्का गुज़ारा आपकी इआनत पर था।[1]

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु के मुताल्लिक़ नक़ल किया गया है कि जब नमाज़ का वक़्त आता, तो चेहरे का रंग बदल जाता, बदन पर कपकपी आ जाती। किसी ने पूछा, तो इर्शाद फ़र्माया कि उस अमानत के अदा करने का वक़्त है, जिसको

आसमान व ज़मीन न उठा सके, पहाड़ उसके उठाने से आजिज़ हो गये, मैं नहीं समझता कि उसको पूरा कर सकूंगा या नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ जब अज़ान की आवाज़ सुनते, तो इस क़दर रोते कि चादर तर हो जाती, रगें फूल जातीं, आंखें सुर्ख़ हो जातीं। किसी ने अर्ज़ किया कि हम तो अज़ान सुनते हैं, मगर कुछ भी असर नहीं होता, आप इस क़दर घबराते हैं, इर्शाद फ़र्माया कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाये कि मुअज़्ज़िन क्या कहता है, तो राहत व आराम से महरूम हो जायें और नींद उड़ जाये। उसके बाद अज़ान के हर-हर जुम्ले की तंबीह को मुफ़स्सल ज़िक्र फ़र्माया।

एक शख़्स नक़ल करते हैं कि मैंने हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह॰ के पीछे अस्र की नमाज़ पढ़ी। जब उन्होंने अल्लाहु अक्बर कहा, तो लफ़्ज़ अल्लाह के वक़्त उन पर जलाले इलाही का ऐसा ग़लबा था, गोया उनके बदन में रूह नहीं रही, बिल्कुल मबहूत से हो गये और जब अक्बर ज़ुबान से कहा, तो मेरा दिल उनकी इस तक्बीर की हैब्यत से टुकड़े-टुकड़े हो गया।[1]

हज़रत उवैस क़रनी रह॰ मशहूर बुज़ुर्ग और अफ़ज़ल तरीन ताबई हैं। बाज़ मर्तबा रुकूअ करते और तमाम रात उसी हालत में गुज़ार देते, कभी सज्दे में यही हालत होती कि तमाम रात एक ही सज्दे में गुज़ार देते।[2]

इसाम रह॰ ने हज़रत हातिम ज़ाहिद बलख़ी रह॰ से पूछा कि आप नमाज़ किस तरह पढ़ते हैं ? फ़र्माया कि जब नमाज़ का वक़्त आता है, अव्वल निहायत इत्मीनान से अच्छी तरह वुज़ू करता हूं, फिर उस जगह पहुंचता हूं, जहां नमाज़ पढ़ना है और अव्वल निहायत इत्मीनान से खड़ा होता हूं कि गोया काबा मेरे मुंह के सामने है और मेरा पांव पुल सिरात पर है, दाहिनी तरफ़ जन्नत है, बायीं तरफ़ दोज़ख़ है, मौत का फ़रिश्ता मेरे सिर पर है और मैं यह समझता हूं कि यह मेरी आख़िरी नमाज़ है, फिर कोई और नमाज़ शायद मयस्सर न हो। और मेरे दिल की हालत को अल्लाह ही जानता है। इसके बाद निहायत अजिज़ी के साथ अल्लाहु अक्बर कहता हूं, फिर माना को सोचकर क़ुरआन पढ़ता हूं, तवाज़ोअ के साथ रुकूअ करता हूं, आजिज़ी के साथ सज्दा करता हूं और इत्मीनान से नमाज़ पूरी करता हूं, इस तरह से कि अल्लाह

---

1. नुज़्हतुल बसातीन, 2. नुज़्हतुल बसातीन,

की रहमत से उसके क़ुबूल होने की उम्मीद रखता हूं और अपने आमाल से मर्दूद हो जाने का ख़ौफ़ करता हूं। इसाम रह० ने पूछा कि कितनी मुद्दत से आप ऐसी नमाज़ पढ़ते हैं? हातिम रह० ने कहा, तीस वर्ष से। असाम रह० रोने लगे कि मुझे एक भी नमाज़ ऐसी नसीब न हुई।

कहते हैं कि हातिम रह० की एक मर्तबा जमाअत फ़ौत हो गयी, जिसका बेहद असर था, एक दो मिलने वालों ने ताज़ियत की। इस पर रोने लगे और फ़र्माया कि अगर मेरा एक बेटा मर जाता तो आधा बलख़ ताज़ियत करता। एक रिवायत में आया है कि दस हज़ार आदमियों से ज़्यादा ताज़ियत करते, जमाअत के फ़ौत होने पर एक-दो आदमियों ने ताज़ियत की। यह सिर्फ़ इस वजह से कि दीन की मुसीबत लोगों की निगाह में दुनिया की मुसीबत से हल्की है।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं कि बीस वर्ष के अर्से में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि अज़ान हुई हो और मैं मस्जिद में पहले से मौजूद न हूँ।

मुहम्मद बिन वासिअ रह० कहते हैं कि मुझे दुनिया में सिर्फ़ तीन चीज़ें चाहियें-

एक ऐसा दोस्त, जो मेरी लग़्ज़िशों पर मुतनब्बह करता रहे,

एक बक़द्र ज़िंदगी रोज़ी, जिसमें कोई झगड़ा न हो,

एक जमाअत की नमाज़ ऐसी कि उसमें जो कोताही हो जाये, वह तो माफ़ हो और सवाब जो हो, मुझे मिल जाये।

हज़रत अबूउबैदा बिन-जर्राह रज़ि० ने एक मर्तबा नमाज़ पढ़ायी, नमाज़ के बाद फ़र्माने लगे कि शैतान ने इस वक़्त मुझ पर एक हमला किया, मेरे दिल में यह ख़्याल डाला कि मैं अफ़्ज़ल हूं (इसलिए कि अफ़्ज़ल को इमाम बनाया जाता था) आइन्दा कभी भी नमाज़ नहीं पढ़ाऊंगा।

मैमून बिन मेहरान रह० एक मर्तबा मस्जिद में तशरीफ़ ले गये तो जमाअत हो चुकी थी। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' पढ़ा और फ़र्माया कि इस नमाज़ की फ़ज़ीलत मुझे इराक़ की सल्तनत से भी ज़्यादा महबूब थी।

कहते हैं कि इन हज़राते किराम में से, जिसकी तक्बीरे ऊला फ़ौत हो जाती, तीन दिन तक उसका रंज करते थे और जिसकी जमाअत जाती रहती, सात दिन तक उसका अफ़सोस करते थे।[1]

---

1. एहया,

बक्र बिन अब्दुल्लाह रह० कहते हैं कि अगर तू अपने मालिक, अपने मौला से बिला वास्ता बात करना चाहे, तो जब चाहे कर सकता है। किसी ने पूछा, इसकी क्या सूरत है ? फ़र्माया कि अच्छी तरह वुज़ू कर और नमाज़ की नीयत बांध ले।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० हमसे बातें करते थे और हम हुज़ूर सल्ल० से बातें करते थे, लेकिन जब नमाज़ का वक़्त आ जाता, तो ऐसे हो जाते गोया हमको पहचानते ही नहीं। और हमतन अल्लाह की तरफ़ मशग़ूल हो जाते थे।

सईद तन्नैखी रह० जब तक नमाज़ पढ़ते रहते, मुसल्सल आंसुओं की लड़ी रुख़्सारों पर जारी रहती।

ख़ल्फ़ बिन अय्यूब रह० से किसी ने पूछा कि यह मक्खियां तुमको नमाज़ में दिक नहीं करतीं। कहने लगे कि मैं अपने को किसी ऐसी चीज़ का आदी नहीं बनाता, जिससे नमाज़ में नुक़्सान आये। यह बदकार लोग हुकूमत के कोड़ों को बर्दाश्त करते रहते हैं, महज़ इतनी सी बात के लिए कि लोग कहेंगे कि बड़ा मुतहम्मिल मिज़ाज है और फिर उसको फ़ख़्रिया बयान करते हैं। मैं अपने मालिक के सामने खड़ा हूं और एक मक्खी की वजह से हरकत करने लगूं।

बह्जतुन्नुफ़ूस में लिखा है कि ऐक सहाबी रज़ि० रात को नमाज़ पढ़ रहे थे। एक चोर आया, और घोड़ा खोलकर ले गया। ले जाते हुए उस पर नज़र भी पड़ गयी, मगर नमाज़ न तोड़ी। बाद में किसी ने कहा भी कि आपने पकड़ न लिया। फ़र्माया, जिस चीज़ में मैं मशग़ूल था, वह उससे बहुत ऊंची थी।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्ह का तो क़िस्सा मशहूर है कि जब लड़ाई में उनके तीर लग जाते, तो वह नमाज़ ही में निकाले जाते। चुनांचे एक मर्तबा रान में एक तीर घुस गया, लोगों ने निकालने की कोशिश की, न निकल सका। आपस में मश्वरा किया कि जब यह नमाज़ में मशग़ूल हों उस वक़्त निकाला जाये। आपने जब नफ़्लें शुरू कीं और सज्दे में गये तो उन लोगों ने उसको ज़ोर से खींच लिया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो आस-पास मजमा देखा। फ़र्माया, क्या तुम तीर निकालने के वास्ते आये हो ? लोगों ने अर्ज़ किया कि वह तो हमने निकाल भी लिया। आपने फ़र्माया मुझे ख़बर ही नहीं हुई।

मुस्लिम बिन यसार रह० जब नमाज़ पढ़ते तो घर वालों से कह देते कि तुम बातें करते रहो, मुझे तुम्हारी बातों का पता न चलेगा।

रबीअ रह० कहते हैं कि मैं जब नमाज़ में खड़ा होता हूं, मुझ पर इसका फ़िक्र सवार हो जाता है कि मुझसे क्या-क्या सवाल व जवाब होगा ?

आमिर बिन अब्दुल्लाह रह० जब नमाज़ पढ़ते, तो घर वालों की बातों की तो क्या ख़बर होती, ढोल की आवाज़ का भी पता न चलता था। किसी ने उनसे पूछा कि तुम्हें नमाज़ में किसी चीज़ की भी ख़बर होती है ? फ़र्माया, हां, मुझे इसकी ख़बर होती है कि एक दिन अल्लाह की बारगाह में खड़ा होना होगा और दोनों घरों, जन्नत या दोज़ख़ में से एक में जाना होगा। उन्होंने अर्ज़ किया, यह नहीं पूछता। हमारी बातों में से भी किसी की ख़बर होती है ? फ़र्माया कि मुझमें नेज़ों की भालें घुस जायें, यह ज़्यादा अच्छा है इससे कि मुझे नमाज़ में तुम्हारी बातों का पता चले। इनका यह भी इर्शाद है कि अगर आख़िरत का मंज़र उस वक़्त मेरे सामने हो जाये, तो मेरे यक़ीन और ईमान में इज़ाफ़ा न हो (कि ग़ैब पर ईमान उतना ही पुख़्ता है, जितना मुशाहदे पर होता है)।

एक साहब का कोई अज़ू ख़राब हो गया था, जिसके लिए उसे काटने की ज़रूरत थी लोगों ने तज्वीज़ किया कि जब यह नमाज़ की नीयत बांधे, उस वक़्त काटना चाहिए, उनको पता भी न चलेगा। चुनांचे नमाज़ पढ़ते हुए उस आज़ू को काट दिया गया।

एक साहब से पूछा गया कि तुम्हें नमाज़ में दुनिया का भी ख़्याल आ जाता है ? उन्होंने फ़र्माया कि न नमाज़ में आता है, न बग़ैर नमाज़ के।

एक और साहब का क़िस्सा लिखा है कि उनसे किसी ने दर्याफ़्त किया कि तुम्हें नमाज़ में कोई चीज़ याद आ जाती है ? उन्होंने फ़र्माया कि नमाज़ से भी ज़्यादा कोई महबूब चीज़ है जो कि नमाज़ में याद आ जाये।

बह्जतुन्नुफ़ूस में लिखा है कि एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में एक शख़्स मिलने के लिए आया, वह ज़ुहर की नमाज़ में मश्ग़ूल थे। वह इन्तिज़ार में बैठ गया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुके तो नफ़्लों में मश्ग़ूल हो गये और अस्र तक नफ़्लें पढ़ते रहे यह इंतज़ार में बैठा रहा। नफ़्लों से फ़ारिग़ हुए तो अस्र की नमाज़ शुरू कर

---

1. थकन, 2. गुनाह के काम,

दी और उससे फ़ारिग़ होकर ज़िक्र में मशग़ूल हो गये और मग़रिब तक मशग़ूल रहे। फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी और नफ़्लें शुरू कर दीं। इशा तक उसमें मशग़ूल रहे। यह बेचारा इन्तिज़ार में बैठा रहा। इशा की नमाज़ पढ़ कर, फिर नफ़्लों की नीयत बांध ली और सुबह तक उसमें मशग़ूल रहे, फिर सुबह की नमाज़ पढ़ी, और ज़िक्र शुरू कर दिया और औराद व वज़ाइफ़ पढ़ते रहे। इसी में मुसल्ले पर बैठे-बैठे आंख झपक गयी, तो फ़ौरन आंखों को मलते हुए उठे। इस्तिग़फ़ार व तौबा करने लगे और यह दुआ पढ़ी-

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ عَيْنٍ لَّا تَشْبَعُ مِنَ النَّوْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिन ऐनिल लातश्बअु मिनन्नौमि०

(अल्लाह ही से पनाह मांगता हूं, ऐसी आंख से, जो नींद से भरती ही नहीं)।

एक साहब का क़िस्सा लिखा है कि वह रात को सोने लेटते तो कोशिश करते कि आंख लग जाये, मगर जब नींद न आती, तो उठकर नमाज़ में मशग़ूल हो जाते और अर्ज़ करते, या अल्लाह! तुझको मालूम है कि जहन्नम की आग के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी और यह कहकर सुबह तक नमाज़ में मशग़ूल रहते।

सारी रात बे-चैनी और इज़्तिराब या शौक़ व इश्तियाक़ में जाग कर गुज़ार देने के वाक़िआत इस कसरत से हैं कि उनका अहाता मुम्किन नहीं। हम लोग इस लज़्ज़त से इतने दूर हो गये है कि हमको वाक़ियात की सेहत में भी तरद्दुद होने लगा। लेकिन अव्वल तो जिस कसरत और तवातुर से यह वाक़िआत नक़ल किये गये हैं, उनकी तदीद में सारी ही तवारीख़ से एतमाद उठता है कि वाक़िआ की सेहत कसरते नक़ल ही से साबित होती है। दूसरे हम लोग अपनी आंखों से ऐसे लोगों को आये दिन देखते हैं, जो सिनेमा और थिएटर में सारी रात खड़े-खड़े गुज़ार देते हैं कि न उनको तअब[1] होता है, न नींद सताती है। फिर क्या वजह कि हम ऐसे मआसी[2] की लज़्ज़तों का यक़ीन करने के बावजूद इन ताआत की लज़्ज़तों का इन्कार कर दें, हालांकि ताआत में अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से क़ूव्वत भी अता होती है। हमारे इस तरद्दुद की वजह इसके सिवा और क्या हो सकती है कि हम इन लज़्ज़तों से ना-आश्ना हैं और नाबालिग़ बुलूग़ की लज़्ज़तों से ना-वाक़िफ़ होता ही है। हक़ तआला शानुहू उस लज़्ज़त तक पहुंचावे तो ज़हे नसीब।

1. थकन, 2. गुनाह के काम,

आख़िरी गुज़ारिश

सूफ़िया ने लिखा है कि नमाज़ हक़ीक़त में अल्लाह जल्ले शानुहू के साथ मुनाजात करना और हमकलाम होना है, जो ग़फ़लत के साथ हो ही नहीं सकता। नमाज़ के अलावा और इबादतें ग़फ़लत से भी हो सकती हैं, मसलन ज़कात है कि उसकी हक़ीक़त माल का ख़र्च करना है, यह ख़ुद ही नफ़्स को इतना शाक़[1] है कि अगर ग़फ़लत के साथ हो तब भी नफ़्स को शाक़ गुज़रेगा। इसी तरह रोज़ा, दिन भर का भूखा-प्यासा रहना, सोहबत की लज़्ज़त से रुकना कि यह सब चीज़ें नफ़्स को मग़्लूब करने वाली हैं, ग़फ़लत से भी अगर मुतहक़्क़िक़[2] हों तो नफ़्स की शिद्दत व तेज़ी पर असर पड़ेगा, लेकिन नमाज़ का मुअ़ज़्ज़म[3] हिस्सा ज़िक्र है, किराते क़ुरआन है, यह चीज़ें अगर ग़फ़लत की हालत में हों, तो मुनाजात या कलाम नहीं हैं, ऐसी ही है, जैसे कि बुख़ार की हालत में हिज़यान[4] और बकवास होती है कि जो चीज़ दिल में होती है, वह ज़ुबान पर ऐसे औक़ात में जारी हो जाती है, न उसमें कोई मशक़्क़त होती है, न कोई नफ़ा।

इसी तरह चूंकि नमाज़ की आदत पड़ गयी है, इसलिए अगर तवज्जोह न हो तो आदत के मुवाफ़िक़ बिला सोचे-समझे ज़ुबान से अल्फ़ाज़ निकलते रहेंगे जैसा कि सोने की हालत में अक्सर बातें ज़ुबान से निकलती हैं कि न सुनने वाला उसको अपने से कलाम समझता है, न इसका कोई फ़ायदा है, इसी तरह हक़ तआला शानुहू भी ऐसी नमाज़ की तरफ़ इलतिफ़ात और तवज्जोह नहीं फ़र्माते जो बिला इरादे के हो, इसलिए निहायत अहम है कि नमाज़ अपनी वुसअत व हिम्मत के मुवाफ़िक़ पूरी तवज्जोह से पढ़ी जाए, लेकिन यह अम्र बहुत ज़रूरी है कि अगर यह हालात और कैफ़ीयात, जो पिछलों की मालूम हुई हैं, हासिल न भी हों, तब भी नमाज़ जिस हाल से भी मुम्किन हो, ज़रूर पढ़ी जाए, यह भी शैतान का एक सख़्त-तरीन मक्र होता है, वह यह समझाए कि बुरी तरह पढ़ने से तो न पढ़ना ही अच्छा है, यह ग़लत है, न पढ़ने से बुरी तरह का पढ़मा ही बेहतर है, इसलिए कि न पढ़ने का जो अज़ाब है, वह निहायत ही सख़्त है, हत्ताकि उलमा की एक जमाअत ने उस शख़्स के कुफ़्र का फ़त्वा दिया है, जो जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ दे, जैसे कि पहले बाब में मुफ़स्सल गुज़र चुका है, अल-बत्ता इसकी कोशिश ज़रूर होनी चाहिए कि नमाज़ का जो हक़

---

1. बोझ, 2. यानी ग़फ़लत से भी अगर अदा की जाएं, 3. बड़ा, 4. मतलब समझे बग़ैर यों ही बोलना,

है और अपने अकाबिर उसके मुताबिक़ पढ़कर दिखा गये हैं, हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से उसकी तौफ़ीक़ अता फ़र्माएं और उम्र भर में कम अज़ कम एक ही नमाज़ ऐसी हो जाए जो पेश करने के क़ाबिल हो।

अख़ीर में इस अम्र पर तंबीह भी ज़रूरी है कि हज़रात मुहद्दिसीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के नज़दीक फ़ज़ाइल की रिवायात में तवस्सोअ़[1] और मामूली ज़ोफ़ क़ाबिले तसामुह,[2] बाक़ी सूफ़िया-ए-किराम रहिम हुमुल्लाहुके वाक़िआत तो तारीख़ी हैसियत रखते ही हैं और ज़ाहिर है कि तारीख़ का दर्जा हदीस के दर्जे से कहीं कम है।

وَمَا تَوْفِيقِيٓ إِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ. رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِنْ نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ، وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَآ أَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِينَ. وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَعَلٰىٓ اٰلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ وَأَتْبَاعِهِمْ وَحَمَلَةِ الدِّينِ الْمَتِينِ بِرَحْمَتِكَ يَآ أَرْحَمَ الرّٰحِمِينَ.

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु रब्बना ज़लम्ना अन्फु सना व इल्लम तग़्फ़िर लना व तर्हम्ना ल न कू नन्न मिनल ख़ासिरीन॰ रब्बना ला तुआ ख़िज़्ना इन नसीना अव अख़्तअ्ना रब्बना व ला तह्मिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहू अलल्लज़ी न मिन क़ब्लिना रब्बना व ला तुहम्मिल्ला मा ला ता क त लना बिही व अ़ फ़ु अन्ना वग़्फ़िर लना वर्हम्ना अन्त मौलाना फ़न्सुर्ना अलल क़ौमिल काफ़िरीन॰ व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सय्यिदिल अव्वली न वल आख़िरीन व अला आलिही व अस्हाबिही व अत् बाअ़िहिम व ह म ल तिद्दीनिल मतीनि बिरह्मति क या अर्हमर्रा हि मी न॰

—ज़करिया
अ़फ़ि य अन्हु कांधलवी
शब दोशंबा, 7 मुहर्रम 1358 हि॰

---

1. फैलाव, 2. माफ़ करने के क़ाबिल,

विषय-सूची

फ़ज़ाइले तब्लीग़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०

तम्हीद

हम्द व सलात के बाद, मुजद्दिदीन इस्लाम[1] के एक दरख़्शंदा[2] जौहर और उलमा व मशाइख़े अस्र[3] के एक आबदार गौहर का इर्शाद है कि तब्लीग़ दीन की ज़रूरत के मुताल्लिक़ मुख़्तसर तौर पर चंद आयात व अहादीस लिख कर पेश करूं। चूंकि मुझ जैसे स्याहकार के लिए ऐसे ही हज़रात की रज़ा व ख़ुश्नूदी वसीला-ए-निजात और कफ़्फ़ारा-ए-सय्यिआत[4] हो सकती है, इसलिए इस उजाला-ए-नाफ़िअ[5] को ख़िदमत में पेश करते हुए हर इस्लामी मदरसे, इस्लामी अंजुमन, इस्लामी स्कूल और हर इस्लामी ताक़त, बल्कि हर मुसलमान से गुज़ारिश है कि इस वक़्त दीन का इन्हितात[6] जिस क़दर रोज़ अफ़्ज़ू है, दीन के ऊपर जिस तरह कुफ़्फ़ार की तरफ़ से नहीं, ख़ुद मुसलमानों की तरफ़ से हमले हो रहे हैं, फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल आम मुसलमानों से नहीं, बल्कि ख़ास और अख़स्सुल ख़वास[7] मुसलमानों से मत्रूक होता जा रहा है, नमाज़-रोज़े के छोड़ देने का क्या ज़िक्र, जबकि लाखों आदमी खुले हुए कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला हैं और ग़ज़ब यह है कि उनको शिर्क व कुफ़्र नहीं समझते मुहर्रमात और फ़िस्क़ व फ़ुजूर का शुयूअ[8] जिस क़दर साफ़ और वाज़ेह तरीक़े से बढ़ता जा रहा है और दीन के साथ लापरवाही, बल्कि इस्तिख़्फ़ाफ़[9] व इस्तिह्ज़ा[10] जितना आम होता जा रहा है, वह किसी फ़र्दे-बशर से मख़्फ़ी नहीं। इसी वजह से ख़ास उलमा, बल्कि

---

1. इस्लाम को नये सिरे से ज़िंदा करने वाले, 2. रोशन चमकते हुए, 3. वक़्त और ज़माने के आलिम और बुज़ुर्ग, 4. बुराइयों को दूर करने का बदला, 5. यानी यही किताब, 6. गिरावट, 7. यानी बहुत ख़ास, 8. हराम, नाजायज़ और ग़लत कामों की ज़्यादती, 9. हल्का और बे-वज़न समझना, 10. मज़ाक उड़ाना,

आम उलमा में भी लोगों से यकसूई और वह्शत बढ़ती जा रही है, जिसका लाज़िमी असर यह हो रहा है कि दीन और दीनियात से अजनबियत में रोज़ व रोज़ इज़ाफ़ा होता जा रहा है। अवाम अपने को माज़ूर कहते हैं कि उनको बतलाने वाला कोई नहीं और उलमा अपने को माज़ूर समझते हैं कि उनकी सुनने वाला कोई नहीं, लेकिन ख़ुदा-ए-क़ुद्दूस के यहां न आवाम का यह उज़्र काफ़ी कि किसी ने बतलाया न था, इसलिए कि दीनी उमूर का मालूम करना, तह्क़ीक़ करना हर शख़्स का अपना फ़र्ज़ है, क़ानून से ना-वाक़फ़ियत का उज़्र किसी हुकूमत में भी मोतबर नहीं, अह्कमुल हाकिमीन के यहां यह पोच[1] उज़्र कैसे चल सकता है। यह तो उज़्रे गुनाह बदतर अज़ गुनाह का मिस्दाक़ है। इसी तरह न उलमा के लिए यह जवाब मौज़ूं कि कोई सुनने वाला नहीं। जिन असलाफ़ की नियाबत के आप हज़रात दावेदार हैं, उन्होंने क्या कुछ तब्लीग़ की ख़ातिर बर्दाश्त नहीं फ़र्माया, क्या पत्थर नहीं खाये, गालियां नहीं खायीं, मुसीबतें नहीं झेलीं, लेकिन हर नौअ की तकालीफ़ बर्दाश्त फ़रमाने के बाद अपनी तब्लीग़ी ज़िम्मेदारियों का एहसास फ़र्मा कर लोगों तक दीन पहुंचाया, हर सख़्त से सख़्त मज़ाहमत[2] के बावजूद निहायत शफ़्क़त से इस्लाम व अह्कामे इस्लाम की इशाअत की।

आम तौर पर मुसलमानों ने तब्लीग़ को उलमा के साथ मख़्सूस समझ रखा है, हालांकि यह सही नहीं है, बल्कि हर वह शख़्स जिसके सामने कोई मुन्कर[3] हो रहा हो और वह उसके रोकने पर क़ादिर हो या उसके रोकने के असबाब पैदा कर सकता हो, उसके ज़िम्मे वाजिब है कि उसको रोके और अगर ब-फ़र्ज़े महाल मान भी लिया जावे कि यह उलमा का काम है, तब भी जबकि वह अपनी कोताही से या किसी मजबूरी से इस हक़ को पूरा नहीं कर रहे हैं या इनसे पूरा नहीं हो रहा है, तो ज़रूरी है कि हर शख़्स के ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आइद हो।

क़ुरआन व हदीस में जिस क़दर एहतमाम से तब्लीग़ और 'अम्र बिल मअरूफ़ व नही अनिल मुन्कर'[4] को इर्शाद फ़र्माया गया है, वह उन आयात व अहादीस से ज़ाहिर है जो आइन्दा फ़स्लों में आ रही हैं। ऐसी हालत में सिर्फ़ उलमा के ज़िम्मे रखकर या उनकी कोताही बताकर कोई शख़्स बरीयुज़्ज़िम्मा[5] नहीं हो सकता, इसलिए मेरी अलल उमूम दर्ख़्वास्त है कि हर मुसलमान को इस वक़्त तब्लीग़ में कुछ न कुछ हिस्सा लेना चाहिए और जिस क़दर वक़्त भी दीन की तब्लीग़ और हिफ़ाज़त में ख़र्च

---

1. कमज़ोर, 2. रोक, रुकावट, 3. बुराई, 4. भलाई का हुक्म देना और बुराई से मना करना,
5. ज़िम्मेदारी से अलग,

कर सकता हो, करना चाहिए-

हर वक़्त ख़ुश कि दस्त दहद मुग्तनम शुमार
कस रा वक़ूफ़ नेस्त कि अंजामे कार चीस्त।

यह भी मालूम कर लेना ज़रूरी है कि तब्लीग़ के लिए या अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अनिल मुन्कर के लिए पूरा कामिल व मुकम्मल आलिम होना ज़रूरी नहीं। हर वह शख़्स जो कोई मस्अला जानता हो, उसको दूसरों तक पहुंचाए। जब उसके सामने कोई नाजाइज़ उम्र किया जा रहा हो और वह उसके रोकने पर क़ादिर हो तो उसका रोकना उस पर वाजिब है।

इस रिसाले में मुख़्तसर तौर पर सात फ़स्लें ज़िक्र की हैं-

पहली फ़स्ल, आयाते क़ुरआनी, दर ताकीद अम्र बिल मअ्रुफ़ व नही अनिल मुन्कर

(इस फ़स्ल) में तबर्रुकन[1] अल्लाह पाक के बा-बरकत कलाम में से चंद आयात का तर्जुमा, जिनमें तब्लीग़ व अम्र बिल मअ्रूफ़ की ताकीद व तर्ग़ीब फ़र्मायी है, पेश करता हूं, जिससे इसका अंदाज़ा हो सकता है कि ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस को इसका कितना एहतमाम है कि जिसके लिए बार-बार मुख़्तलिफ़ उन्वानों से अपने पाक कलाम में इसका अआदा किया है।[2] तक़रीबन साठ आयात तो मेरी कोताह नज़र से इसकी तर्ग़ीब और तौसीफ़ में गुज़र चुकी है। अगर कोई दक़ीक़ुन्नज़र[3] ग़ौर से देखे तो न मालूम किस क़दर आयात मालूम हों। चूंकि इन सब आयात का इस जगह जमा करना तूल का सबब होगा, इसलिए चंद आयात ही पर इक्तिफ़ा करता हूं।

(1) قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ إِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

1. और इससे बेहतर किसकी बात हो सकती है, जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं फ़र्मां बरदारों में से हूं।[4]

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जो शख़्स भी अल्लाह तआला की तरफ़ किसी को बुलाये, वह इस बशारत और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है, ख़्वाह किसी तरीक़ से बुलाये,

---

1. बरकत के लिए, 2. इसे दोहराया हैं, 3. बारिकी से देखने वाला, 4. बयानुल क़ुरआन,

मसलन अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम मोजज़े वग़ैरह से बुलाते हैं और उलमा दलाइल से, मुजाहिदीन तलवार से, और मुअज़्ज़िनीन अज़ान से, ग़रज़ जो भी किसी शख़्स को दावत इलल ख़ैर[1] करे, वह इसमें दाख़िल है, ख़्वाह आमाले ज़ाहिरा की तरफ़ बुलाये या आमाले बातिना की तरफ़, जैसा कि मशाइख़े सूफ़िया-ए-मारफ़त अल्लाह की तरफ़ बुलाते हैं।

(ख़ाज़िन) मुफ़स्सिरीन ने यह भी लिखा है कि 'का ल इन्नी मिनल मुस्लिमीन' में इस तरफ़ इशारा है कि मुसलमान होने के साथ 'तफ़ाख़ुर'[2] भी हो, उसको अपने लिए बाअसे इज़्ज़त भी समझता हो। इस इस्लामी इम्तियाज़ को तफ़ाख़ुर के साथ ज़िक्र भी करे।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह भी इर्शाद फ़र्माया है कि मक़्सद यह है कि इस वाज़, नसीहत, तब्लीग़ से अपने को बहुत बड़ी हस्ती न कहने लगे, बल्कि यह कहे कि आम मुस्लिमीन में से एक मुसलमान मैं भी हूं।

٢- وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ-

2. ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! लोगों को समझाते रहिए, क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफ़ा देगा।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इससे क़ुरआन पाक की आयात सुना कर नसीहत फ़र्माना मक़्सूद है कि वह नफ़ारसा[3] है मोमिनीन के लिए, तो ज़ाहिर है कुफ़्फ़ार के लिए भी, इस लिहाज़ से कि वह इन्शा अल्लाह उसके ज़रिए से मोमिनीन में दाख़िल हो जाएंगे और आयत के मिस्दाक़ में शामिल होंगे। हमारे इस ज़माने में वाज़ व नसीहत का रास्ता तक़रीबन बन्द हो गया है। वाज़ का मक़्सद बिल उमूम शुस्तगी-ए-तक़रीर[4] बन गया है, ताकि सुनने वाले तारीफ़ कर दें। हालांकि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है जो शख़्स तक़रीर व बलाग़त इसलिए सीखे ताकि लोगों को अपनी तरफ़ मायल करे तो क़यामत के दिन उसकी कोई इबादत मक़्बूल नहीं, न फ़र्ज़, न नफ़्ल।

٣- وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ

---

1. भलाई की तरफ़ बुलाये, 2. यानी फ़ख़्र भी हो, 3. नफ़ा पहुंचाने वाला, 4. तक़रीर में लफ़्ज़ों की सफ़ाई-सुथराई,

وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى

3. ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ! अपने मुताल्लिक़ीन को भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी उसके पाबंद रहिए। हम आपसे मआश नहीं चाहते।[1] मआश तो आपको हम देंगे और बेहतर अंजाम तो परहेज़गारी ही का है।

मुतअद्दद रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी की तंगी-ए-मआश के रफ़ा[2] फ़र्माने का फ़िक्र होता तो उसको नमाज़ की ताकीद फ़र्माते और आयते बाला को तिलावत फ़र्मा कर गोया इस तरफ़ इशारा फ़र्माते कि वुसअते रिज़्क़ का वायदा एहतमाम – ए– नमाज़ पर मौक़ूफ़ है।[3]

उलमा ने लिखा है कि इस आयते शरीफ़ा में नमाज़ के हुक्म करने के साथ ख़ुद इस पर एहतमाम करने का हुक्म इसलिए इर्शाद हुआ है कि यह अन्फ़अ[4] है कि तब्लीग़ के साथ-साथ जिस चीज़ का दूसरों को हुक्म किया जावे, ख़ुद भी उस पर एहतमाम किया जावे कि इससे दूसरों पर असर भी ज़्यादा होता है और दूसरों के एहतमाम का सबब बनता है। इसीलिए हिदायत के वास्ते अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मब्ऊस फ़र्माया है कि वह नमूना बनकर सामने हों तो अमल करने वालों को अमल करना सहल हो और यह ख़द्शा[5] न गुज़रे कि फ़्ला हुक्म मुश्किल है, उस पर अमल कैसे हो सकता है, इसके बाद रिज़्क़ के वायदे की मस्लहत यह है कि नमाज़ का अपने औक़ात के साथ एहतमाम बसा औक़ात अस्बाबे मईशत[6] में ज़ाहिरन नुक़्सान का सबब मालूम होता है, बिल्ख़ुसूस तिजारत, मुलाज़मत वग़ैरह में, इसलिए इसको साथ के साथ दफ़ा फ़र्मा दिया कि यह हमारे ज़िम्मे है। यह सब दुनियावी उमूर के एतबार से है। इसके बाद बतौर क़ायदा-ए-कुल्लिया और अम्र बदीही[7] के फ़र्माया कि आक़िबत तो है ही मुत्तक़ियों के लिए, इसमें किसी दूसरे की शिर्कत ही नहीं।

٤- يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ۗ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ۔

---

1. रोज़ी कमाना नहीं चाहते, 2. दूर करने, 3. यानी नमाज़ की पाबंदी से अल्लाह तआला रोज़ी में वुस्अत देते हैं, 4. ज़्यादा नफ़ा देने वाला, 5. डर, ख़तरा, 6. कमाई के ज़रिए में नुक़्सान, मालूम होता है, 7. सब का माना हुआ क़ायदा और खुली बात,

4. बेटा नमाज़ पढ़कर और अच्छे कामों की नसीहत किया कर और बुरे कामों से मना किया कर और तुझ पर जो मुसीबत वाक़ेअ हो, उस पर सब्र किया कर, यह हिम्मत के कामों में से है।[1]

इस आयते शरीफ़ा में मुहतम्म बिश्शान उमूर को ज़िक्र फ़र्माया है और हक़ीक़तन यह उमूर अहम हैं, तमाम कामयाबियों का ज़रिया हैं, मगर हम लोगों ने इन्हीं चीज़ों को ख़ास तौर से पसे पुश्त[2] डाल रखा है। अम्र बिल मअ्रूफ़ का तो ज़िक्र ही क्या कि वह तक़रीबन सब ही के नज़दीक मत्रूक है। नमाज़ जो तमाम इबादात में सबसे ज़्यादा अहम चीज़ है और ईमान के बाद सबसे मुक़द्दम उसी का दर्जा है, उसकी तरफ़ से भी किस क़दर ग़फ़लत बरती जाती है। उन लोगों को छोड़ कर जो बेनमाज़ी कहलाते हैं, ख़ुद नमाज़ी लोग भी उसका कामिल एहतमाम नहीं फ़र्माते, बिल-ख़ुसूस जमाअत, जिसकी तरफ़ 'इक़ामते नमाज़' से इशारा है, सिर्फ़ ग़ुरबा के लिए रह गयी, उमरा और बा-इज़्ज़त लोगों के लिए मस्जिद में जाना गोया आर[3] बन गया है। फ़ इलल्लाहिल मुश्तका०

आंचे आरे तस्त ओ फ़ख्रेमनस्त

٥- وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ.

5. और तुम में से एक जमाअत ऐसी होना ज़रूरी है कि ख़ैर की तरफ़ बुलाये और नेक कामों के करने को कहा करे और बुरे कामों से रोका करे और ऐसे लोग पूरे कामियाब होंगे।

हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने इस आयते शरीफ़ा में एक अहम मज़्मून का हुक्म फ़र्माया है वह यह कि उम्मत में से एक जमाअत इस काम के लिए मख़्सूस हो कि वह इस्लाम की तरफ़ लोगों को तब्लीग़ किया करे। यह हुक्म मुसलमानों के लिए था, मगर अफ़सोस कि इस अस्ल को हम लोगों ने बिल्कुल्लिया तर्क कर दिया है और दूसरी क़ौमों ने निहायत एहतमाम से पकड़ लिया है। नसारा की मुस्तक़िल जमाअतें दुनया में तब्लीग़ के लिए मख़्सूस हैं और इसी तरह दूसरी अक़्वाम में इसके लिए मख़्सूस कारकुन मौजूद हैं, लेकिन क्या मुसलमानों में भी कोई जमाअत ऐसी है ? इसका जवाब नफ़ी[4] में नहीं तो इस्बात[5] में भी मुश्किल है। अगर कोई जमाअत या

1. बयानुल क़ुरआन, 2. पीठ पीछे डाल रखा है। 3. शर्म की बात, 4. नहीं, 5. हाँ,

कोई फ़र्द इसके लिए उठता भी है, तो इस वजह से कि बजाये इआनत के उस पर एहतराज़ात की इस क़दर भरमार होती है कि वह आज नहीं तो कल थक कर बैठ जाता है, हालांकि खैरख्वाही का मुक्तज़ा यह था कि उसकी मदद की जाती और कोताहियों की इस्लाह की जाती, न यह कि ख़ुद कोई काम किया जावे और काम करने वालों को एहतराज़ात का निशाना बना कर उनको काम करने से गोया रोक दिया जाये।

٦- كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ

6. तुम बेहतरीन उम्मत हो कि लोगों के (नफ़ा रसानी)[1] के लिए निकाले गये हो। तुम लोग नेक काम का हुक्म करते हो और बुरे काम से मना करते हो और अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो।

मुसलमानों का अशरफ़ुन्नास और उम्मते मुहम्मदिया का अशरफ़ुल उमम[3] होना मुतअद्दद अहादीस में तस्रीह से वारिद हुआ है। क़ुरआन पाक की आयात में भी कई जगह इस मज़मून को सराहतन व इशारतन[4] बयान फ़र्माया गया है। इस आयते शरीफ़ा में भी ख़ैरे उम्मत[5] का इत्लाक़ फ़र्माया गया है और इसके साथ ही इसकी इल्लत[6] की तरफ़ भी इशारा। फ़र्माया है कि तुम बेहतरीन उम्मत हो, इसलिए कि अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते हो।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आयते शरीफ़ा में अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अनिल मुन्कर को ईमान से भी पहले ज़िक्र फ़र्माया, हालांकि ईमान सब चीज़ों की अस्ल है, बग़ैर ईमान के कोई ख़ैर भी मोतबर नहीं। इसकी वजह यह है कि ईमान में तो और उमम् साबिक़ा[7] भी शरीक थीं, यह ख़ास ख़ुसूसियत, जिसकी वजह से तमाम अंबिया अलैहि मुस्सलातु वस्सलाम के मुत्तबईन[8] से उम्मते मुहम्मदिया को तफ़व्वुक़[9] है, वह यही अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अनिल मुन्कर है जो इस उम्मत का तम्ग़ा-ए-इम्तियाज़[10] है और चूंकि बग़ैर ईमान के कोई अमले ख़ैर मोतबर नहीं, इसलिए साथ ही बतौर क़ैद के इसको भी ज़िक्र फ़र्मा दिया, वरना असल मक़्सूद इस आयते शरीफ़ा में इसी का ज़िक्र फ़र्माना है और चूंकि वही इस जगह मक़्सूद बिज़्ज़िक्र है, इसलिए इसको मुक़द्दम फ़र्माया।

---

1. फ़ायदा पहुंचाने के लिए, 2.बयानुल क़ुरआन व तर्जुमा आशिक़ी, 3. सारी उम्मतों से बेहतर होना, 4. खुले तौर पर और इशारे में भी, 5. बेहतरीन उम्मत, 6. वज्ह, 7. पिछली उम्मतें, 8. मानने वालों, 9. बड़ाई, 10. फ़र्क़ और नुमायां करने वाली चीज़,

इस उम्मत के लिए तम्ग़ा-ए-इम्तियाज़ होने का मतलब यह है कि इसका मख़्सूस एहतमाम किया जाये, वरना कहीं चलते-फिरते तब्लीग़ कर देना इसमें काफ़ी नहीं इसलिए कि यह अम्र पहली उम्मतों में भी पाया जाता था, जिसको 'फ़लम्मा नसूमा ज़ुक्किरू बिही' वग़ैरह आयात में ज़िक्र फ़र्माया है। इम्तियाज़ मख़्सूस एहतमाम का है कि उसको मुस्तक़िल काम समझ कर दीन के और कामों की तरह से इसमें मश्ग़ूल हों।

٧۔ لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

7. आम लोगों की अक्सर सरगोशियों[1] में ख़ैर (व बरकत) नहीं होती, मगर जो लोग ऐसे हैं कि सद्का-ख़ैरात की या और किसी नेक काम की या लोगों में बाहम[2] इस्लाह कर देने की तर्ग़ीब देते हैं (और इस तालीम व तर्ग़ीब के लिए ख़ुफ़िया तद्बीरें और मश्वरे करते हैं, उनके मश्वरों में अलबत्ता ख़ैर व बरकत है) और जो शख़्स यह काम (यानी नेक आमाल की तर्ग़ीब महज) अल्लाह की रजा के वास्ते करेगा (न कि लालच या शोहरत की ग़रज से) उसको हम अंकरीब अज्रे अज़ीम अता फ़र्माएंगे।

इस आयत में हक़ तआला शानुहू ने अम्र बिल मारूफ़ करने वालों के लिए बड़े अज्र का वायदा फ़र्माया है और जिस अज्र को हक़ जल्ले जलालुहू बड़ा फ़र्मा दें, उसकी क्या इंतिहा हो सकती है। इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुबारक नक़ल किया गया है कि आदमी का हर कलाम उस पर बार है, मगर यह कि उम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर हो या अल्लाह का ज़िक्र हो।

दूसरी अहादीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, क्या मैं तुमको ऐसी चीज न बताऊं जो नफ़्ल नमाज़-रोज़ा-सदका सबसे अफ़ज़ल हो? सहाबा ने अर्ज किया, जरूर इर्शाद फर्माइए। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि, लोगों में मसालहत[3] कराना क्योंकि आपस का बिगाड़ नेकियों को इस तरह साफ़ कर देता है जैसे कि उस्तरा बालों को उड़ा देता है[4] और भी बहुत सी नुसूस[5] में लोगों के दर्मियान मसालहत कराने की ताकीद फ़र्मायी गयी है। इस जगह इसका ज़िक्र मक़्सूद नहीं।

---

1. आपस की काना-फूसियों में, 2. आपस में, 3. सुलह कराना, 4. मिश्कात शरीफ़, 5. खुली आयतें या हदीसें,

इस जगह इस बात का बयान करना मक़्सूद है कि अम्र बिल मअ्रूफ़ में यह भी दाख़िल है कि लोगों में मसालहत की सूरत जिस तरीक़े से पैदा हो सके उसका भी ज़रूर एहतमाम किया जाए।

दूसरी फ़स्ल, अहादीसे नबवी, दर ताकीद अम्र बिल मअ्रूफ़ व नही अनिल मुन्कर

(इस फ़स्ल) में उन अहादीस में से बाज़ का तर्जुमा है जो मज़्मूने बाला के मुताल्लिक़ वारिद हुई हैं। तमाम अहादीस का न अहाता मक़्सूद है, ना हो सकता है। नीज़ अगर कुछ ज़्यादा मिक़दार में आयात व अहादीस जमा भी की जाएं तो डर यह है कि देखेगा कौन। आज कल ऐसे उमूर के लिए किसे फ़ुर्सत और किसके पास वक़्त है, इसलिए सिर्फ़ यह अम्र दिखाने के लिए और आप हज़रात तक पहुंचा देने के लिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस क़दर अहमियत के साथ इसकी ताकीद फ़र्मायी है और न होने की सूरत में किस क़दर सख़्त वईद और धमकी फ़र्मायी है, चन्द अहादीस ज़िक्र की जाती हैं-

1 عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الْإِيْمَانِ (رواه مسلم والترمذى)

1. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी नाजाइज़ अम्र को होते हुए देखे, अगर उस पर क़ुदरत हो कि उसको हाथ से बन्द कर दे, तो उसको बन्द कर दे। अगर इतनी मक़्दरत[1] न हो तो ज़बान से उस पर इन्कार कर दे। अगर इतनी भी क़ुदरत न हो तो दिल से उसको बुरा समझे और यह ईमान का बहुत ही कम दर्जा है।

एक दूसरी हदीस में वारिद है कि अगर उसको ज़बान से बन्द करने की ताक़त हो तो बन्द कर दे, वरना दिल से उसको बुरा समझे कि वह इस सूरत में भी बरीउज़्ज़िम्मा है।

---

1. यानी ताक़त,

एक और हदीस में वारिद है कि जो शख़्स दिल से भी उसको बुरा समझे, तो वह भी मोमिन है, मगर इससे कम दर्जा ईमान का नहीं।

इस मज़मून के मुताल्लिक़ कई इर्शादात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़्तलिफ़ अहादीस में नक़्ल किये गये हैं। अब इसके साथ इस इर्शाद की तामील पर भी एक नज़र डालते जाएं कि कितने आदमी हम में से ऐसे हैं कि किसी नाजाइज़ काम को होते हुए देखकर हाथ से रोक देते हैं या फ़क़द ज़ुबान से उसकी बुराई और नाजाइज़ होने का इज़्हार कर देते हैं या कम अज़ कम इस ईमान के ज़ईफ़ दर्जे के मुवाफ़िक़ दिल ही से उसको बुरा समझते हैं या उस काम को होता हुआ देखने से दिल तिलमिलाता है, तंहाई में बैठकर ज़रा तो ग़ौर कीजिए कि क्या होना चाहिए था और क्या हो रहा है।

(२) عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ قَالَ مَثَلُ الْقَائِمِ فِي حُدُوْدِ اللّٰهِ وَالْوَاقِعِ فِيْهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اِسْتَهَمُوْا عَلٰى سَفِيْنَةٍ فَصَارَ بَعْضُهُمْ اَعْلَاهَا وَبَعْضُهُمْ اَسْفَلَهَا فَكَانَ الَّذِيْنَ فِيْ اَسْفَلِهَا اِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوْا عَلٰى مَنْ فَوْقَهُمْ فَقَالُوْا لَوْ اَنَّا خَرَقْنَا فِيْ نَصِيْبِنَا خَرْقًا وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا فَاِنْ تَرَكُوْهُمْ وَمَا اَرَادُوْا هَلَكُوْا جَمِيْعًا وَاِنْ اَخَذُوْا عَلٰى اَيْدِيْهِمْ نَجَوْا وَنَجَوْا جَمِيْعًا۔

(رواه البخاري والترمذي)

2. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि उस शख़्स की मिसाल, जो अल्लाह की हुदूद पर क़ायम है[1] और उस शख़्स की जो अल्लाह की हुदूद में पड़ने वाला है[2], उस क़ौम की सी है जो एक जहाज़ में बैठे हों और क़ुर्आ से (मसलन) जहाज़ की मंज़िलें मुक़र्रर हो गयी हों कि बाज़ लोग जहाज़ के ऊपर के हिस्से में हों और बाज़ लोग नीचे तुल्क के हिस्से में हों, जब नीचे वालों को पानी की ज़रूरत होती है तो वह जहाज़ के ऊपर के हिस्से पर आकर पानी लेते हैं, अगर वह यह ख़्याल करके कि हमारे बार-बार ऊपर पानी के लिए जाने से ऊपर वालों को तक्लीफ़ होती है इसलिए हम अपने ही हिस्से में यानी जहाज़ के नीचे के हिस्से में एक सुराख़ समुन्दर में खोल लें, जिससे पानी यहां ही मिलता रहे, ऊपर वालों को सताना न पड़े। ऐसी सूरत में अगर ऊपर वाले उन अहमक़ों[3] की इस तज्वीज़ को न रोकेंगे और ख़्याल

---

1. यानी अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से रुका हुआ है, 2. अल्लाह की मना की हुई बातों को करता है, 3. बेवक़ूफ़ों,

कर लेंगे कि वह जानें, उनका काम हमें उनसे क्या वास्ता, तो इस सूरत में वह जहाज़ ग़र्क हो जायेगा और दोनों फ़रीक हलाक हो जाएंगे और अगर वह उनको रोक देंगे तो दोनों फ़रीक़ डूबने से बच जाएंगे।

सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक मर्तबा दर्याफ्त किया कि हम लोग ऐसी हालत में भी तबाह व बर्बाद हो सकते हैं, जबकि हममें सुलहा और मुत्तक़ी लोग मौजूद हों। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि हां, जब ख़बासत ग़ालिब हो जाए।

इस वक़्त मुसलमानों की तबाही व बर्बादी के हर तरफ़ गीत गाये जा रहे हैं और इस पर शोर मचाया जा रहा है, नये-नये तरीक़े उनकी इस्लाह के वास्ते तज्वीज किये जा रहे है, मगर किसी रोशन ख़्याल (तालीम जदीद के शैदाई) की तो क्या, किसी तारीक ख़्याल (मौलवी साहब) की भी नजर इस तरफ़ नहीं जाती है कि हक़ीक़ी तबीब और शफ़ीक़ मुरब्बी[1] ने क्या मर्ज तश्ख़ीस फ़र्माया और क्या इलाज बतलाया है और इस पर किस दर्जे अमल किया जा रहा है। क्या इस ज़ुल्म की कुछ इंतिहा है कि जो सब्बे मर्ज है, जिससे मर्ज पैदा हुआ है, वही इलाज तज्वीज किया जा रहा है (कि दीन की तरक्क़ी के लिए दीन व अस्बाबे दीन से बे-तवज्जोही की जा रही है, अपनी ज़ाती रायों पर अमल किया जा रहा है) तो यह मरीज़ कल की जगह आज हलाक न होगा, तो क्या होगा-

मीर क्या सादा हैं बीमार हुए जिसके सबब,
उसी अत्तार के लड़के से दवा लेते हैं।

(۳) عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَّلُ مَا دَخَلَ النَّقْصُ عَلٰى بَنِىْ اِسْرَائِيْلَ اَنَّهٗ كَانَ الرَّجُلُ يَلْقَى الرَّجُلَ فَيَقُوْلُ يَا هٰذَا اتَّقِ اللّٰهَ وَدَعْ مَا تَصْنَعُ بِهٖ فَاِنَّهٗ لَا يَحِلُّ لَكَ ثُمَّ يَلْقَاهُ مِنَ الْغَدِ وَهُوَ عَلٰى حَالِهٖ فَلَا يَمْنَعُهٗ ذٰلِكَ اَنْ يَكُوْنَ اَكِيْلَهٗ وَشَرِيْبَهٗ وَقَعِيْدَهٗ فَلَمَّا فَعَلُوْا ذٰلِكَ ضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوْبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ ثُمَّ قَالَ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْ اِسْرَائِيْلَ اِلٰى قَوْلِهٖ فَاسِقُوْنَ ثُمَّ قَالَ كَلَّا وَاللّٰهِ لَتَاْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ وَلَتَاْخُذُنَّ عَلٰى يَدِ الظَّالِمِ وَلَتَاْطِرُنَّهٗ عَلَى الْحَقِّ اَطْرًا - رواه ابوداؤد والترمذى كذا فى الترغيب

3. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बनी इस्राईल में सबसे पहला तनज़्ज़ुल[2] इस तरह शुरू हुआ कि एक शख़्स किसी दूसरे से मिलता

1. यानी हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या इलाज बताया है, 2. गिरावट,

और किसी नाजाइज बात को करते हुए देखता तो उसको मना करता कि देख, अल्लाह से डर, ऐसा न कर लेकिन इसके न मानने पर भी वह अपने ताल्लुक़ात की वजह से खाने-पीने में और नशिस्त व बर्ख़ास्त[1] में वैसा ही बर्ताव करता, जैसा कि इससे पहले था। जब आमतौर पर ऐसा होने लगा तो अल्लाह तआला ने बाज़ों के क़ुलूब[2] को बाज़ों के साथ ख़लित कर दिया [3](यानी ना-फ़र्मानों के क़ुलूब जैसे थे, उनकी नहूसत से फ़र्माबरदारों के क़ुलूब भी वैसे ही कर दिए) फिर उनकी ताईद में कलाम पाक की आयतें 'लुअिनल्लज़ी न क फ़ रू' से 'फ़ासिक़ून' तक पढ़ीं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने बड़ी ताकीद से यह हुक्म फ़र्माया कि अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते रहो, ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकते रहो और उसको हक़ बात की तरफ़ खींच कर लाते रहो।

दूसरी हदीस में वारिद है कि हुज़ूर सल्ल० तकिया लगाये हुए बैठे थे, जोश में उठ कर बैठ गए और क़सम खा कर फ़र्माया कि तुम निजात नहीं पाओगे जब तक कि उनको ज़ुल्म से न रोक दो।

एक और हदीस में है कि आपने क़सम खाकर फ़र्माया कि तुम अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते रहो और ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोकते रहो और हक़ बात की तरफ़ खींचकर लाते रहो, वरना तुम्हारे क़ुलूब भी उसी तरह खलत कर दिये जाएंगे जिस तरह उन लोगों के कर दिये गए और इसी तरह तुम पर भी लानत होगी जिस तरह-इन पर यानी बनी इस्राईल पर लानत हुई। क़ुरआन पाक की आयात ताईद में इसलिए पढ़ीं कि इन आयते शरीफ़ा में उन लोगों पर लानत फ़र्मायी है और सबबे लानत मिनजुम्ला और अस्बाब के यह भी है कि वह मुन्करात[3] से एक दूसरे को नहीं रोकते थे।

आजकल यह ख़ूबी समझी जाती है कि आदमी सुलहकुल रहे, जिस जगह जावे, वैसी ही कहने लगे। इसी को कमाल और वुस्अते अख़्लाक़ समझा जाता है, हालांकि यह अलल् इत्लाक़ ग़लत है, बल्कि जहां अम्र बिल मअ्रूफ़ वग़ैरह क़तअन मुफ़ीद न हो, मुम्किन है कि सिर्फ़ सुकूत की गुंजाइश कुछ निकल आवे (न कि हां में हां मिलाने की) लेकिन जहां मुफ़ीद हो सकता है, मसलन अपनी औलाद, अपने मातहत, अपने दस्तनगर लोगों में, वहां किसी तरह भी यह सुकूत कमाले अख़्लाक़ नहीं, बल्कि सुकूत करने वाला शरअन व उर्फ़न ख़ुद मुज्रिम है।

सुफ़ियान सोरी रह० कहते हैं कि जो शख़्स अपने पड़ोसियों को महबूब हो,

---

1. उसके साथ उठने-बैठने में, 2. दिलों को, 3. बुराइयों,

अपने भाइयों में महमूद[1] हो, (अग़लब यह है कि) वह मदाहिन[2] होगा। मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून आया है कि जब कोई गुनाह मख़्फ़ी तौर[3] से किया जाता है, उसकी मज़र्रत करने वाले ही को होती है, लेकिन जब कोई गुनाह खुल्लम ख़ुल्ला किया जाता है और लोग उसके रोकने पर क़ादिर है और फिर नहीं रोकते तो उसकी मज़र्रत और नुक़्सान भी आम होता है।

अब हर शख़्स अपनी ही हालत पर ग़ौर कर ले कि कितने मआसी[4] उसके इल्म में ऐसे किये जाते हैं जिनको वह रोक सकता है और फिर बे-तवज्जोही, ला-परवाही, बे-इल्तिफ़ाती से काम लेता है और इससे बढ़ कर ज़ुल्म यह है कि कोई अल्लाह का बन्दा उसको रोकने की कोशिश करता है तो उसकी मुख़ालफ़त की जाती है, उसको कोताह नज़र बताया जाता है, उसकी इआनत करने के बजाए उसका मुक़ाबला किया जाता है- وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ.

फ स यअ्लमुल्लज़ी न ज़ ल मू अय्य मुन्क़ ल बिंय्यक़लिबून०

(٤) عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَا مِنْ رَجُلٍ يَكُوْنُ فِيْ قَوْمٍ يَعْمَلُ فِيْهِمْ بِالْمَعَاصِيْ يَقْدِرُوْنَ عَلٰى أَنْ يُّغَيِّرُوْا عَلَيْهِ وَلَا يُغَيِّرُوْنَ إِلَّا أَصَابَهُمُ اللّٰهُ بِعِقَابٍ قَبْلَ أَنْ يَّمُوْتُوْا (رواه ابو داؤد، وابن ماجة وابن حبان والاصبهاني وغيرهم)

4. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर किसी जमाअत और क़ौम में कोई शख़्स किसी गुनाह का इर्तिकाब करता है[5] और वह जमाअत व क़ौम बावजूद क़ुदरत के उस शख़्स को उस गुनाह से नहीं रोकती, तो उन पर मरने से पहले दुनिया ही में अल्लाह तआला का अज़ाब मुसल्लत हो जाता है।

मेरे मुख़्लिस बुज़ुर्गो ! और तरक़्क़ी-ए-इस्लाम व मुस्लिमीन के ख़्वाहिशमंद दोस्तों ! यह हैं मुसलमानों की तबाही के अस्बाब और रोज़ अफ़्ज़ूं बर्बादी की वुजूह। हर शख़्स अजनबियों को नहीं, बराबर वालों को नहीं अपने घर के लोगों को, अपने छोटों को, अपनी औलाद को, अपने मातहतों को एक लम्हा इस नज़र से देख लें कि कितने खुले हुए मआसी में वह लोग मुब्तला हैं और आप हज़रात अपनी ज़ाती

---

1. जिसकी तारीफ़ की जाए, 2. यानी अच्छी बातों की ताकीद नहीं करता होगा और बुरी बातों से रोकता नहीं होगा, 3. छुपे तौर पर, 4. गुनाह, 5. कोई गुनाह करता है,

वजाहत [1]और असर से उसको रोकते हैं या नहीं ? रोकने को छोड़िए, रोकने का इरादा भी कर लेते है या नहीं ? या आप के दिल में किसी वक़्त इसका ख़तरा भी गुज़र जाता है[2] कि यह लाडला बेटा क्या कर रहा है। अगर वह हुकूमत का कोई जुर्म करता है, जुर्म भी नहीं, सियासी मजालिस में शिर्कत ही कर लेता है, तो आप को फ़िक्र होती है कि कहीं हम न मुलव्वस हो जाएं।[3] उसको तंबीह की जाती है और अपनी सफ़ाई और तबर्री[4] की तद्बीरें इख़्तियार की जाती हैं, मगर कहीं अह्कमुल हाकिमीन के मुजरिम के साथ भी वही बर्ताव किया जाता है जो मामूली हाकिमे आरज़ी[5] के मुजरिम के साथ किया जाता है।

आप ख़ूब जानते हैं प्यारा बेटा शतरंज का शौक़ीन है, ताश से दिल ब्हलाता है, नमाज़ कई-कई वक़्त की उड़ा देता है, मगर अफ़सोस कि आपके मुंह से कभी हर्फ़े ग़लत की तरह भी यह नहीं निकलता कि क्या कर रहे हो, यह मुसलमानों के काम नहीं हैं, हालांकि उसके साथ खाना-पीना छोड़ देने के भी मामूर थे, जैसा कि पहले गुज़र चुका है-

बबीं तफ़ावुते रह अज़ कुजास्त ता ब कुजा

ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे जो अपने लड़के से इस लिए ना-ख़ुश हैं कि वह अह्दी[6] हैं घर पड़ा रहता है, मुलाज़मत की सई नहीं करता है, या दुकान का काम तनदेही[7] से नहीं करता है, लेकिन ऐसे लोग बहुत कम मिलेंगे, जो लड़के से इसलिए नाराज़ हों कि वह जमाअत की परवाह नहीं करता या नमाज़ क़ज़ा कर देता है।

बुज़ुर्गों और दोस्तों ! अगर सिर्फ़ आख़िरत ही का वबाल होता, तब भी यह उमूर इस क़ाबिल थे कि इनसे कोसों दूर भागा जाता, लेकिन क़यामत तो यह है कि इस दुनया की तबाही, जिसको हम अमलन आख़िरत से मुक़द्दम समझते हैं, इन्हीं उमूर की वजह से है। ग़ौर तो कीजिए इस अंधेपन की कोई हद भी है। 'मन का न फ़ी हाज़िही अअ़्मा फ़ हु व फ़िल आख़िरति अअ़्मा'[8] हक़ीक़ी बात यह है कि 'ख़त मल्लाहु अला क़ुलूबिहिम व अला सम्अ़िहिम व अला अब्सारिहिम॰ ग़िशावतुन'[9] कारफ़रमा[10] है।

---

1. रख-रखाव, 2. मतलब यह है कि ख़्याल भी आ जाता है, 3. कहीं हम न फंस जाएं, 4. यानी अलग रहने की, 5. ग़ैर-मुस्तक़िल, 6. सुस्त, कामचोर, 7. धुन और मन लगा कर, 8. यानी जो यहां अंधा होगा यानी अमल में कोरा होगा, वह आख़िरत में भी अंधा होगा, 9. अल्लाह ने मुहर लगा दी है उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर परदा पड़ा हुआ है, 10 साया, असर,

(5) رُوِيَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَزَالُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ تَنْفَعُ مَنْ قَالَهَا وَتَرُدُّ عَنْهُمُ الْعَذَابَ وَالنِّقْمَةَ مَا لَمْ يَسْتَخِفُّوا بِحَقِّهَا قَالُوا يَا رَسُولَ اللّٰهِ مَا الْاِسْتِخْفَافُ بِحَقِّهَا قَالَ يُظْهَرُ الْعَمَلُ بِمَعَاصِي اللّٰهِ فَلَا يُنْكَرُ وَلَا يُغَيَّرُ

5. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह भी नक़ल किया गया है कि (कलमा-ए-तौहीद) लाइला इ इल्लल्लाह (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) कहने वाले को हमेशा नफ़ा देता है और उससे अज़ाब व बला को दफ़ा करता है, जब तक कि उसके हुक़ूक़ से बे-परवाही व इस्तिख़्फ़ाफ़[1] न किया जाए। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि उसके हुक़ूक़ से बेपरवाही व इस्तिख़्फ़ाफ़ किये जाने का क्या मतलब है। आपने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह की ना-फ़र्मानियां खुली तौर पर की जाएं और उनको बन्द करने की कोई कोशिश न की जाए।

अब आप ही ज़रा इंसाफ़ से फ़र्माइये कि इस ज़माने में अल्लाह तआला की ना-फ़र्मानियों की कोई इन्तिहा, कोई हद है और उसके रोकने या बन्द करने की या कम अज़ कम तक़लील[2] की कोई सई, कोई कोशिश है, हरगिज़ नहीं। ऐसे ख़तरनाक माहौल में मुसलमानों का आलम में मौजूद होना ही अल्लाह का तहक़ीक़ी इनाम है, वरना हमने अपनी बर्बादी के लिए क्या कुछ अस्बाब नहीं पैदा कर लिए हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या अल्लाह का कोई अज़ाब अगर ज़मीन वालों पर नाज़िल हो और वहां कुछ दीनदार लोग भी हों तो उनको भी नुक़्सान पहुंचता है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि दुनिया में तो सबको असर पहुंचता है, मगर आख़िरत में वह लोग गुनाहगारों से अलाहिदा हो जाएंगे, इसलिए वह हज़रात जो अपनी दीनदारी पर मुतमइन होकर दुनया से यक्सू हो बैठे, इससे बे-फ़िक्र न रहें कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता अगर मुन्करात के इस शुयूअ[4] पर कोई बला नाज़िल हो गयी, तो उनको भी इस का ख़मयाज़ा भुगतना पड़ेगा।

(6) عَنْ عَائِشَةَ رض قَالَتْ دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ أَنْ قَدْ حَضَرَهُ شَيْءٌ فَتَوَضَّأَ وَمَا كَلَّمَ أَحَدًا فَلَصِقْتُ بِالْحُجْرَةِ أَسْتَمِعُ مَا يَقُولُ فَقَعَدَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَحَمِدَ اللّٰهَ وَأَثْنٰى عَلَيْهِ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يَقُولُ لَكُمْ مُرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ

1. कमी, कोताही, 2. कम करना, 3. हल्का समझना, 4. आम होना और फैलाना,

قَبْلَ اَنْ تَدْعُوْا فَلَا اُجِيْبَ لَكُمْ وَتَسْأَلُوْنِىْ فَلَا اُعْطِيَكُمْ وَتَسْتَنْصِرُوْنِىْ فَلَا اَنْصُرَكُمْ فَمَا زَادَ عَلَيْهِنَّ حَتّٰى نَزَلَ رواه ابن ماجة و ابن حبان في صحيحه كذا في الترغيب

6. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा दौलतकदे पर तश्रीफ़ लाये तो मैंने चेहरा-ए-अन्वर पर एक ख़ास असर देख कर महसूस किया कि कोई अहम बात पेश आयी है। हुज़ूर सल्ल० ने किसी से कुछ बातचीत नहीं फ़र्मायी और वुज़ू फ़र्मा कर मस्जिद में तश्रीफ़ ले गये। मैं हुजरे की दीवार से लग कर सुनने खड़ी हो गयी कि क्या इर्शाद फ़र्माते हैं। हुज़ूरे सल्ल० मिंबर पर तश्रीफ़ फ़र्मा हुए और हम्द व सना के बाद इर्शाद फ़र्माया, लोगो! 'अल्लाह तआला का इर्शाद है कि अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते रहो, मुबादा वह वक़्त आ जाए कि तुम दुआ मांगो और क़ुबूल न हो, तुम सवाल करो और सवाल पूरा न किया जाए, तुम अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ मुझ से मदद चाहो और मैं तुम्हारी मदद न करूं।' यह कलिमाते तय्यबात हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माये और मिंबर से नीचे तश्रीफ़ लाये।

इस मज़्मून पर वह हज़रात ख़ुसूसियत से तवज्जोह फ़र्माएं, जो दुश्मन के मुक़ाबले के लिए उमूरे दीनिया[1] में तसामुह और मुसाहलत[2] पर ज़ोर देते हैं और मुसलमानों की इआनत[3] और इमदाद दीन की पुख़्तगी ही में मुज़्मर[4] है।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि०, जो एक जलीलुल क़द्र सहाबी हैं, फ़र्माते हैं कि तुम अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते रहो, वरना अल्लाह तआला तुम पर ऐसे ज़ालिम बादशाह को मुसल्लत कर देगा, जो तुम्हारे बड़ों की ताज़ीम न करे, तुम्हारे छोटों पर रहम न करे, उस वक़्त तुम्हारे बर्गुज़ीदा[5] लोग दुआएं करेंगे, तो क़ुबूल न होंगी, तुम मदद चाहोगे तो मदद न होगी, मग़्फ़िरत मांगोगे तो मग़्फ़िरत न मिलेगी। ख़ुद हक़ जल्ल जलालुहू का इर्शाद है-

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ

या ऐयुहल्लज़ी न आ मनू इन् तन्सुरुल्लाह यन्सुर्कुम व युसब्बित अक़्दा म कुम०

तर्जुमा- ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह

1. दीनी मामलों में, 2. आंखें बचाना, 3. मदद, 4. छुपी हुई है, 5. चुने हुए, बुज़ुर्ग,

तुम्हारी मदद करेगा (और दुश्मनों के मुक़ाबले में) तुम्हारे क़दम जमा देगा।[1]

दूसरी जगह इर्शादे बारी अज़्ज़ इस्मुहू है–
इंय्यन्सुर्कुमुल्लाहु फ़ ला ग़ालिब लकुम إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ

तर्जुमा– अगर अल्लाह तआला शानुहू तुम्हारी मदद करें तो कोई शख़्स तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारी मदद न करें तो फिर कौन शख़्स है जो तुम्हारी मदद कर सकता है और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही पर ईमान वालों को एतमाद रखना चाहिए।

दुर्रे मंसूर[2] में ब रिवायत तिर्मिज़ी वग़ैरह हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़सम खाकर यह इर्शाद फ़रमाया कि तुम लोग अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करते रहो, वरना अल्लाह जल्ले जलालुहू अपना अज़ाब तुम पर मुसल्लत कर देंगे, फिर तुम दुआ भी मांगोगे तो क़ुबूल न होगी।

यहां पहुंच कर मेरे बुज़ुर्ग अव्वल यह सोच लें कि हम लोग अल्लाह की किस क़दर ना-फ़रमानियां करते हैं, फिर मालूम हो जाएगा कि हमारी कोशिशें बेकार क्यों जाती हैं, हमारी दुआएं बे-असर क्यों रहती हैं, हम अपनी तरक़्क़ी के बीज बो रहे हैं या तनज़्ज़ुल[3] के।

(٧) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَظَّمَتْ أُمَّتِي الدُّنْيَا نُزِعَتْ مِنْهَا هَيْبَةُ الْإِسْلَامِ وَإِذَا تَرَكَتِ الْأَمْرَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيَ عَنِ الْمُنْكَرِ حُرِمَتْ بَرَكَةَ الْوَحْيِ وَإِذَا تَسَابَّتْ أُمَّتِي سَقَطَتْ مِنْ عَيْنِ اللهِ (كذا في الدر عن الحكيم الترمذي)

7. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब मेरी उम्मत दुनिया को बड़ी चीज़ समझने लगेगी तो इस्लाम की हैबत व वक़अत[4] उसके क़ुलूब से निकल जाएगी और जब अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर को छोड़ बैठेगी, तो वही की बरकात से महरूम हो जाएगी और जब आपस में गाली-गलोज इख़्तियार करेगी, तो अल्लाह जल्ल शानुहू की निगाह से गिर जाएगी।

---

1. बयानुल क़ुरआन, 2. इमाम सुयूती की एक तफ़्सीर का नाम है, 3. गिरावट, 4. रौब और अहमियत,

ऐ बही ख़्वाहाने कौम ![1] तरक्की-ए-इस्लाम और तरक्की-ए-मुस्लिमीन के लिए हर शख़्स कोशां[2] और साऔ[3] है, लेकिन जो अस्बाब इसके लिए इख़्तियार किये जा रहे हैं, वह तनज़्ज़ुल की तरफ ले जाने वाले हैं। अगर दर हक़ीक़त तुम अपने रसूल सल्ल० (रूही फ़िदाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सच्चा रसूल समझते हो, उनकी तालीम को सच्ची तालीम समझते हो, तो फिर क्या वजह है कि जिस चीज़ को वह सबबे मर्ज़ बता रहे हैं, जिन चीज़ों को वह बीमारी की जड़ फ़र्मा रहे हैं, वही चीज़ें तुम्हारे नज़दीक सबबे शिफ़ा व सेहत[4] क़रार दी जा रही हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि, 'कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी ख़्वाहिश उस दीन के ताबेअ न हो जाए, जिसको लेकर मैं आया हूं' लेकिन तुम्हारी राय है कि मज़हब की आड़ को बीच से हटा दिया जाए ताकि हम भी दीगर अक़्वाम[5] की तरह तरक़्क़ी कर सकें। अल्लाह जल्ल जलालुहू का इर्शाद है-

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ-

मन का न युरीदु हर्स ल आख़िरति नज़िद लहू फ़ी हर्सि ही व मन का न युरीदु हर्सद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल आख़िरति मिन नसीब०

'जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, हम उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे और जो दुनया की खेती का तालिब हो, हम उसको कुछ दुनिया दे देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।'[6]

हदीस में आया है कि जो मुसलमान आख़िरत को अपना नस्बुल ऐन[7] बना लेता है। अल्लाह जल्ल शानुहू उसके दिल को ग़नी फ़र्मा देते हैं और दुनया ज़लील होकर उसके पास आती है और जो शख़्स दुनिया को अपना नस्बुल ऐन क़रार देता है, परेशानियों में मुब्तला होता है और दुनिया में से जितना हिस्सा मुक़द्दर हो चुका है, उससे ज़्यादा मिलता ही नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयते पाक को तिलावत फ़र्मा कर इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि ऐ इब्ने आदम!

---

1. ऐ क़ौम का भला चाहने वालो ! 2. 3. कोशिश करने वाला, 4. चंगेपन और तंदुरुस्ती की वजह, 5. दूसरी क़ौमों, 6. बयानुल क़ुरआन, 7. मक़्सद, निशान, लक्ष्य,

तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरे सीने को तफ़क्कुरात[1] से ख़ाली कर दूंगा और तेरे फ़क्र[2] को हटा दूंगा, वरना तेरे दिल में (सैकड़ों तरह के) मशग़िल भर दूंगा और तेरा फ़क्र बंद नहीं करूंगा।

यह अल्लाह तआला और उस के रसूल का इर्शाद है और तुम्हारी राय है कि मुसलमान तरक्क़ी में इसलिए पीछे हटे हुए है कि जो रास्ता तरक्क़ी के लिए इख़्तियार किया जाता है, यह मुल्लाने उसमें रुकावटें पैदा कर देते हैं।

आप ही ज़रा इंसाफ़ की नज़र से मुलाहज़ा फ़र्माएं कि अगर यह मुल्लाने ऐसे ही लालची हैं तो आप हज़रात की तरक्क़ियात उनके लिए तो मसर्रत का सबब होंगी, क्योंकि जब उनकी रोज़ी आप के ज़ोम में आप के ज़रिए से है तो जिस क़दर वुस्अत और फ़ुतूहात आप पर होंगी, वह इनके लिए भी सबबे वुस्अत और फ़ुतूहात होंगी, मगर यह ख़ुदग़रज़ फिर भी आप की मुख़ालफ़त करते हैं तो कोई तो मजबूरी उनको दरपेश है, जिसकी वजह से यह अपने नफ़ा को भी खो रहे हैं और आप जैसे मोह्सिन व मुरब्बियों से बिगाड़ कर गोया अपनी दुनिया ख़राब कर रहे हैं।

मेरे दोस्तों ! ज़रा ग़ौर तो करो, अगर यह मुल्लाने कोई ऐसी बात कहें जो क़ुरआन पाक में भी साफ़ तौर से मौजूद हो तो फिर तो उनकी ज़िद से मुंह फेरना, न सिर्फ़ अक़्ल ही से दूर है, बल्कि शाने इस्लाम से भी दूर है। यह मुल्लाने ख़्वाह कितने ही ना-अह्ल हों, मगर जब कि सरीह इर्शादे बारी अज़्ज़ इस्मुहू और इर्शादे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप तक पहुंचा रहे हों तो आप पर इन इर्शादात की तामील फ़र्ज़ है और हुक्म उदूली की सूरत में जवाबदही लाज़मी है। कोई बेवक़ूफ़ से बेवक़ूफ़ भी यह नहीं कह सकता कि सरकारी क़ानून की इसलिए परवाह नहीं कि एलान करने वाला भंगी था।

आप हज़रात यह न फ़र्मायें कि यह मौलवी जो दीनी कामों के लिए मख़्सूस होने का दावा करते हैं, हमेशा दुन्या से सवाल करते हैं, इसलिए कि मेरा जहां तक ख़्याल है, हक़ीक़ी मौलवी अपनी ज़ात के लिए शायद ही कभी सवाल करें, बल्कि जिस क़दर भी वह अल्लाह की इबादत में मुन्हमिक हैं, उसी क़दर इस्तिग़्ना से हद्या भी क़ुबूल फ़र्माते हैं, अलबत्ता किसी दीनी काम के लिए सवाल करने में इनशाअल्लाह वह इससे ज़्यादा माजूर है जितना अपने लिए सवाल न करने में।

---

1. फ़िक्रों, चिंताओं, 2. ग़रीबी, 3. ख़्याल, 4. एहसान करने वाले और तर्बियत देने वाले, 5. बे-नियाज़ी, 6. यानी बदला व सवाब पाते हैं, 7. यानी दुनिया छोड़ देने की,

एक आम इश्काल यह किया जाता है कि दीने मुहम्मदी अलैहिस्सलातु वस्सलाम में रहबानियत की तालीम नहीं। इसमें दीन व दुनिया दोनों को साथ रखा गया है। इर्शादे बारी अज़्ज़ इस्मुहू है-

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

'रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह स न तंव फ़िल आख़िरति ह स न तंव क़िना अज़ाबन्नारि०' और इस आयते शरीफ़ पर बहुत ज़ोर दिया जाता है, गोया क़ुरआन पाक में अमल के लिए यही एक आयत नाज़िल हुई है, लेकिन अव्वल तो आयते शरीफ़: की तफ़्सीर 'रासिख़ी न फ़िल् इल्म'[1] से मालूम करने की ज़रूरत थी और इसी वजह से उलमा का इर्शाद है कि सिर्फ़ लफ़्ज़ी तर्जुमा देखकर अपने को आलिमे क़ुरआन समझ लेना जिहालत है। सहाबा किराम और उलमा-ए-ताबईन से जो आयत शरीफ़ा की तफ़्सीरें मंक़ूल हैं, वह हस्बे ज़ैल हैं :-

हज़रत क़तादा रज़ि० से मर्वी[2] है कि दुनया की भलाई से मुराद आफ़ियत और बक़द्रे क़िफ़ायत रोज़ी है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से मंक़ूल है कि इससे सालेह[3] बीवी मुराद है।

हज़रत हसन बसरी रह० से मर्वी है कि इससे मुराद इल्म और इबादत है।

सुद्दी रह० से मंक़ूल है कि पाक माल मुराद है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से मर्वी है कि नेक औलाद और ख़ल्क़त[4] की तारीफ़ मुराद है।

जाफ़र रज़ि० से मंक़ूल है कि सेहत और रोज़ी का काफ़ी होना और अल्लाह पाक के कलाम का समझना, दुश्मनों पर फ़त्ह और सालिहीन की सोहबत मुराद है। दूसरे यह कि अगर हर क़िस्म की दुनिया की तरक़्क़ी मुराद हो, जैसा कि मेरा भी दिल चाहता है, तब भी इसमें अल्लाह तआला से दुआ का ज़िक्र है, न कि उसकी तहसील में इन्हिमाक और मश्ग़ूली का और अल्लाह तआला से मांगना ख़्वाह टूटे हुए जूते की इस्लाह ही क्यों न हो, यह ख़ुद दीन है। तीसरे यह कि दुनिया के हासिल करने को, उसके कमाने को कौन मना करता है, यक़ीनन हासिल कीजिए और बहुत

1. इल्म में पक्के, 2. रिवायत की गई है, 3. नेक, 4. आम लोग,

शौक़ से हासिल कीजिए। हम लोगों की हरगिज़ यह गरज नहीं है कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता आप दुनिया जैसी मुग्तनम व मक़्सूद[1] चीज को छोड़ें दें। जो शख़्स दुनया के नफ़ा की नियत रखेगा हम ऐसे शख़्स को दुनया में जितना चाहेंगे (और) जिसके वास्ते चाहेंगे फिल ही दे देंगे। फिर हम उसके लिए जहन्नम तज्वीज़ करेंगे वह उसमें बदहाल रान्दा दरगाह होकर दाख़िल होगा। और जो शख़्स आख़िरत के सवाब की नियत रखेगा और उसके लिये जैसी सअी करना चाहिये वैसी सअी भी करेगा बशरते कि वह मोमिन भी हो-सो ऐसे लोगों की यह सअी मक़बूल होगी।

मक़्सद यह है कि जितनी कोशिश दुनियां के लिए करें, उससे ज़्यादा नहीं तो कम अज कम उसके बराबर तो दीन के लिए करें, इसलिए कि ख़ुद आपके क़ौल के मुवाफ़िक़ दीन और दुनिया दोनों की तालीम दी गयी है, वरना मैं पूछता हूं कि जिस क़ुरआन पाक में यह आयत इर्शाद फ़र्मायी है, उसी कलाम पाक की वह आयत भी तो है, जो ऊपर गुज़र चुकी है-

مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ (پ٢٥)

मन् का न युरीदु हर्सल आख़िरति नज़िद लहू फ़ी हर्सि ही (पारा 25)

और उसी कलाम पाक में यह भी है-

مَّن كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ۝ (پ١٥ ع٢)

मन का न युरीदुल आजि ल त अज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशाउ लि मन्नुरीदु सुम्म जअल्ना लहू ज हन्नम यस्लाहा मज़्मूमम मद्हूरा व मन अरादल आख़ि रत व सआ ल हा सअ् य हा व हु व मुअ्मिनुन फ़ उलाइ क का न सअ् युहुम मश्कूरा०[2] (पारा 5, रुकूअ 2)

उसी कलाम पाक में है-

ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ (سورۂ آلِ عمران ر کوع ٢)

---

1. अच्छी और ग़नीमत चीज को, 2. तर्जुमा जो कोई चाहता हो पहला घर जल्द दे दें हम उसको उसी में जितना चाहें, जिसको चाहें, फिर ठहराया है हमने उसके वास्ते दोज़ख़, दाखिल होगा उसमें अपनी बुराई सुनकर, धकेला जाकर और जिसने चाहा पिछला घर और दौड़ की उसके वास्ते जो उसकी दौड़ है और वह यक़ीन पर है, सो ऐसों की दौड़ ठिकाने लगी है,

ज़ालिक मताअुल हयातिद्दुन्या वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल मआब०[1] (सूरः आले इम्रान, रुकूअ 2)

उसी कलाम पाक में है-

مِنْكُمْ مَنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ (پ٤ اٰل عمران)

मिन् कुम मंय्युरीदद्दुन्या व मिन कुम मंय्युरीदुल आखि र त०[2] (पारा 4, आले इम्रान)

उसी कलाम के पाक में है-

قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ وَّالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى (پ٥)

क़ुल मताअुद्दुन्या क़लीलुंन वल आख़िरतु ख़ैरु लिल म ति त क़ा०[3] (पारा 5)

उसी कलाम पाक में है- وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا لَعِبٌ
وَّلَهْوٌ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ (سورة انعام)

व मल हयातुद्दुन्या इल्ला लअिबुंव्व लह्वुन व लद्दारुल आख़िरतु ख़ैरुल्लिलल ज़ी न यत्तक़ू न०[4] (सूरः अन्आम)

उसी कलाम पाक में है-

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا (سورة انعام)

व ज़रिल्लज़ी न त्त ख़ ज़ू दी न हुम लअिबंव्व ग़र्रत हुमुलहयातुद्दुन्या० [5](सूरः अन्आम)

उसी कलाम पाक में है-

تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ (پ١٠)

तुरीदू न अ र ज़द्दुन्या वल्लाहु युरीदुल आख़िरत[6] (पारा 10)

उसी कलाम पाक में है-

---

1. 'यह फ़ायदा उठाना है दुनया की ज़िंदगी मे और अल्लाह ही के पास है अच्छा ठिकाना,' 2. 'कोई तुम में से चाहता था दुनिया और कोई तुम में से चाहता था आख़िरत,' 3. सूरः निसा, रुकूअ (कह दे कि फ़ायदा दुनया का थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिये, 4. सूरः अन्आम रुकूअ 10, 'और नहीं है ज़िंदगानी दुनिया की मगर खेल और जी बहलाना और आख़िरत का घर बेहतर है परहेज़गारों के लिए, 5. सूरः अन्आम रुकूअ 14 'और छोड़ दे उनको जिन्होंने बना रखा है अपने दीन को खेल-तमाशा और धोखा दिया उनको दुनिया की ज़िन्दगी ने, 6. सूरः अन्फ़ाल रुकूअ 5- तुम चाहते हो असबाब दुनिया का और अल्लाह के यहाँ चाहिए आख़िरत,

أَرَضِيتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ (پ)

अ रज़ीतुम बिल हयातिद्दुन्या मिनल आख़िरति फ़ मा मताअुल हयातिद्दुन्या फ़िल आख़िरति इल्ला क़लील०[1] (पारा 10)

उसी कलाम पाक में है- مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ أُولٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

मन का न युरीदुल हयातद्दुन्या व ज़ी न तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम अअ्मा ल हुम फ़ीहा व हुम फ़ीहा ला युब्ख़सून उला इकल्लज़ी न लै स लहुम फ़िल आख़िरति इल्लन्नारु व हबि त मा सन अ फ़ीहा व बातिलुम मा कानू य अ् म लून०[2] (पारा 12)

उसी कलाम पाक में है-

وَفَرِحُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ (پ)

व फ़रिहू बिल हयातिद्दुन्या व मल हयातुद्दुन्या फ़िल आख़िरति इल्ला मताअ०[3] (पारा 16)

उसी कलाम पाक में है- فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللّٰهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ (پ).

फ़ अलैहिम ग़ज़बुम मिनल्लाहि व लहुम अज़ाबुन अज़ीम० ज़ालि क बिअन्नहुमुस्त हब्बुल हयातद्दुन्या अलल आख़िरति०[4] (पारा 14)

इनके अलावा बहुत सी आयत है, जिनमें दुनिया व आख़िरत का तक़ाबुल[5]

---

1. सूर: तौब: रुकूअ 5, 'क्या ख़ुश हो गये दुनिया की ज़िंदगी पर आख़िरत को छोड़ कर, सो कुछ नहीं नफ़ा उठाना दुनया की ज़िन्दगी का आख़िरत के मुक़ाबले में, मगर बहुत थोड़ा, 2. सूर: हूद, रुकूअ 2, 'जो कोई चाहे दुनया की ज़िन्दगानी और उसकी ज़ीनत, भुगता देंगे हम उनको उनके अमल, दुनिया में और उनको इसमें कुछ नुक़सान नहीं। यही हैं, जिनके वास्ते कुछ नहीं आख़िरत में आग के सिवा और बर्बाद हुआ जो कुछ किया था यहां और ख़राब गया जो कमाया था। 3. सूर: रअ्द रुकूअ 3, 'और मोहित हैं दुनिया की ज़िंदगी पर और दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं आख़िरत के आगे, मगर मामूली पूंजी, 4. सूर: नह्ल रुकूअ 14, 'सो उन पर ग़ज़ब है अल्लाह का और उनको बड़ा अज़ाब है, यह इसलिए कि उन्होंने प्रिय रखा दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर, 5. मुक़ाबला,

किया गया है। इस वक़्त न एहसा[1] मक़्सूद, न ज़रूरत। नमूने के तौर पर चंद आयात इख़्तिसारन[2] लिख दी हैं और इख़्तिसार ही की वजह से तर्जुमे के बजाये पारे का हवाला लिख दिया है। किसी मुतर्जम (तर्जुमे वाले) क़ुरआन शरीफ़ से तर्जुमा[3] देख लीजिए। मक़्सूद सब का यह है कि आख़िरत के मुक़ाबले में जो लोग दुन्या को तर्जीह देते हैं, वे निहायत ख़ुसरान[4] में हैं। अगर दोनों को आप नहीं संभाल सकते, तो फिर सिर्फ़ आख़िरत ही क़ाबिले तर्जीह है। मुझे इंकार नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी में आदमी ज़रूरियात दुनवीया[5] का सख़्त मुहताज है, मगर इस वजह से कि आदमी को बैतुलख़ला[6] जाना लाबुद्द[7] है और इसके बग़ैर चारा नहीं है, इसलिए दिन भर वहीं बैठा रहे, उसको कोई भी अक़्ले सलीम[8] गवारा न करेगी।

हिक्मते इलाही पर एक निगाहे अमीक़[9] डालें तो आपको मालूम हो जाएगा कि शरीअते मुतह्हरा में एक-एक चीज़ का इंज़िबात[10] है। अल्लाह जल्ले जलालुहू व अम्म नवालुहू ने एक-एक चीज़ को वाज़ेह फ़र्मा दिया। नमाज़ों के औक़ात की तक़्सीम ने साफ़ तौर स इस जानिब इशारा कर दिया कि रोज़ व शब के चौबीस घंटों में निस्फ़ बन्दे का हक़ है। चाहे वह इसकी अपनी राहत में ख़र्च करे या तलबे मईशत[11] में और निस्फ़ अल्लाह तआला का हक़ है और आपकी तज्वीज़ के मुवाफ़िक़ दीन व दुनिया के साथ-साथ रखने का मुक़्तज़ा[12] भी यही होना चाहिए कि रोज़ व शब में से आधा वक़्त दीन के लिए ख़र्च होना चाहिए और आधा दुनिया के लिए, वरना अगर दुनयावी मशाग़िल, ख़्वाह फ़िक्रे मआश के हों या राहते बदन के, निस्फ़ से बढ़ गये तो यक़ीनन आपने दुनया को राजेह[13] बना लिया पस आप की तज्वीज़ के मुवाफ़िक़ भी मुक़्तज़ा-ए-अद्ल यही है कि शब व रोज़ के 24 घंटों में से 12 घंटे दीन के लिए ख़र्च किये जावें ताकि दोनों का हक़ अदा हो जाए और उस वक़्त यक़ीनन यह कहना बजा होगा कि दुनया व आख़िरत दोनों की हसनात[14] की तह्सील का हुक्म किया गया है और इस्लाम ने रहबानियत नहीं सिखलायी। यह मज़्मून इस जगह मक़्सूद न था, बल्कि इश्काल के जवाब में तबअन[15] आ गया, इसलिए मुख़्तसर व मुज्मल तौर पर इशारा करके छोड़ दिया।

इस फ़स्ल में मक़्सूद अहादीसे तब्लीग़ का ज़िक्र करना था। इनमें से सात अहादीस पर इक्तिफ़ा करता हूं कि मानने वाले के लिए सात तो सात एक भी काफ़ी

---

1. जमा करना, 2. मुख़्तसर तौर पर, 3. आसानी के लिए हाशिए में तर्जुमा दे दिया गया है, 4. घाटे, 5. दुनिया की ज़रूरत, 6. लेट्रिन, 7. ज़रूरी, 8. साफ़ ज़ेहन वाला, 9. गहरी नज़र, 10. मानी एक-एक चीज़ दर्ज है, 11. रोज़ी की तलाश में, 12. तक़ाज़ा, 13. तर्जीह, बढ़सवा, 14. भलाइयों, 15. पीछे-पीछे आ गया,

है और न मानने वाले के लिए 'फ़ स यअ़लमुल्ल ज़ी न ज़ ल मू अय्य मुंक़ ल बिंयं क़ लि बून०' काफी से ज़्यादा है। فَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْآ اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

अख़ीर में एक ज़रूरी गुज़ारिश यह भी है कि बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि फ़ित्ने के ज़माने में, जबकि बुख़्ल[1] की इताअत होने लगे और ख़्वाहिशाते नफ़सानिया का इत्तिबाअ किया जाए, दुनया को दीन पर तर्जीह दी जाए, हर शख़्स अपनी राय को पंसद करे, दूसरे की न माने, उस वक़्त में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरों की इस्लाह छोड़ कर यकसूई का हुक्म फ़र्माया है, मगर मशाइख़ के नज़दीक अभी वह वक़्त नहीं आया, इसलिए जो कुछ करना है, कर लो, ख़ुदा न करे कि वह वक़्त देखती आंखों आन पहुंचे कि उस वक़्त किसी क़िस्म की इस्लाह मुम्किन न होगी, नीज़ उन अय्यूब से, जिनका ज़िक्र इस हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ है, एहतमाम से बचना ज़रूरी है कि यह फ़ित्नों के दरवाज़े हैं, इनके बाद सरासर फ़ित्ने ही फ़ित्ने हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में उनको हलाक कर देने वाली चीज़ों में शुमार किया है।

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنَ الْفِتَنِ مَاظَهَرَ مِنْهَا وَمَابَطَنَ ـ

अल्लाहुम्माह्फ़िज़्ना मिनल फ़ि त नि मा ज़ ह र व मा ब त न०

तीसरी फ़स्ल, तंबीह बराये इस्लाहे नफ़्स

इस फ़स्ल में एक ख़ास मज़्मून पर तंबीह मक़्सूद है, वह यह कि जिस तरह इस ज़माने में नफ़्से तब्लीग़ में कोताही हो रही है और आम तौर पर लोग इससे बहुत ज़्यादा ग़ाफ़िल हो रहे हैं, इसी तरह बाज़ लोगों में एक ख़ास मर्ज़ यह है कि जब वह किसी दीनी मंसब, तक़रीर, तहरीर, तालीम, तब्लीग़, वाज़ वग़ैरह पर मामूर हो जाते हैं, तो दूसरों की फ़िक्र में ऐसे मुब्तला हो जाते हैं कि अपने से ग़फ़लत हो जाती है, हालांकि जिस क़दर दूसरों की इस्लाह की ज़रूरत है, उससे बहुत ज़्यादा अपने नफ़्स की इस्लाह की एहतियाज[2] है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतअद्दिद मवाक़े में बहुत ज़्यादा एहतमाम से मना फ़र्माया है कि लोगों को नसीहत करता फिरे और ख़ुद मुब्तला-ए-मआसी[3] रहे।

---

1. कंजूसी, 2. ज़रूरत 3. यानी ख़ुद गुनाह में पड़ा रहे,

आपने शबे मेराज में एक जमाअत को देखा, जिनके होंठ आग की क़ैंचियों से कतरे जाते थे। आपने दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह कौन लोग हैं, तो हज़रत जिब्रील अलै० ने अर्ज़ किया कि यह लोग आपकी उम्मत के वाइज़-मुक़र्रिर हैं कि दूसरों को नसीहत करते थे, ख़ुद उस पर अमल नहीं करते थे।

एक हदीस में वारिद है कि अह्ले जन्नत के चंद लोग बाज़ अह्ले जहन्नम से जाकर पूछेंगे कि तुम यहां कैसे पहुंच गये, हम तो जन्नत में तुम्हारी ही बतायी हुई बातों पर अमल करने की बदौलत पहुंचे हैं। वह कहेंगे कि हम तुम को तो बतलाते थे, मगर ख़ुद अमल नहीं करते थे।

एक दूसरी हदीस में वारिद है कि बदकार क़ुर्रा (उलमा) की तरफ़ अज़ाबे जहन्नम ज़्यादा सुरअत[1] से चलेगा। वह इस पर ताज्जुब करेंगे कि बुत परस्तों से भी पहले उनको अज़ाब दिया जाता है, तो जवाब मिलेगा कि यह जानने के बावजूद किसी जुर्म का करना अंजान होकर करने के बराबर नहीं हो सकता।

मशाइख़ ने लिखा है कि उस शख़्स का वाज़ नाफ़ेअ[2] नहीं होता, जो ख़ुद आमिल नहीं होता। यही वजह है कि इस ज़माने में हर रोज़ जल्से, वाज़, तक़रीरें होती रहती हैं, मगर सारी बे-असर, मुख़्तलिफ़ अन्वाअ् की तहरीरात व रसाइल शाया होते रहते हैं, मगर सब-बे-सूद, ख़ुद अल्लाह जल्ल जलालुहू का इर्शाद है-

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ۔

अ तअ्मुरू न न्ना स बिल बिर्रि व तन्सौ न अन्फु स कुम व अन्तुम तत्लूनल किताब अ फ़ ला तअ़किलुन०

तर्जुमा- क्या तुम हुक्म करते हो लोगों को नेक काम का और भूलते हो अपने आपको, हालांकि पढ़ते हो किताब, क्या तुम समझते नहीं ? (तर्जुमा आशिक़ी)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है- مَا تَزَالُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حَتّٰى يُسْأَلَ عَنْ أَرْبَعٍ عَنْ عُمُرِهٖ فِيْمَ أَفْنَاهُ وَعَنْ شَبَابِهٖ فِيْمَ أَبْلَاهُ وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهٗ وَفِيْمَ أَنْفَقَهٗ وَعَنْ عِلْمِهٖ مَاذَا عَمِلَ فِيْهِ

(ترغیب عن البیهقی وغیرہ)

तर्जुमा- क़यामत में आदमी के क़दम उस वक़्त तक अपनी जगह से

---

1. तेज़ी से, 2. नफ़ा देने वाला,

नहीं हट सकते, जब तक चार सवाल न कर लिए जाएं-

1. उम्र किस मश्ग़ले में ख़त्म की,

2. जवानी किस काम में ख़र्च की,

3. माल किस तरह कमाया था और किस-किस मसरफ़ में ख़र्च किया था।

4. अपने इल्म पर क्या अमल किया था ?

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० जो एक बड़े सहाबी हैं, फ़र्माते हैं कि मुझे सबसे ज़्यादा इस अम्र का ख़ौफ़ है कि क़यामत के दिन तमाम मज्मों के सामने मुझे पुकार कर यह सवाल न किया जावे कि जितना इल्म हासिल किया था, उस पर क्या अमल किया। ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी सहाबी रज़ि० ने दर्याफ़्त किया कि बदतरीन ख़लाइक़ कौन शख़्स है। आपने फ़र्माया कि बुराई के सवालात नहीं किया करते, भलाई की बातें पूछो, बदतरीन ख़लाइक़ बदतरीन उलमा हैं।

एक हदीस में इर्शाद है कि इल्म दो तरह का होता है-

एक- वह जो सिर्फ़ ज़बान पर हो, वह अल्लाह तआला का इल्ज़ाम है और गोया उस आलिम पर हुज्जते ताम्मः[1] है

दूसरे- वह इल्म है, जो दिल पर असर करे, वह इल्मे नाफ़ेअ है। हासिल यह है कि इल्मे ज़ाहिरी के साथ इल्मे बातिन भी हासिल करे ताकि इल्म के साथ अमल भी मुत्तसिफ़ हो जाए, वरना अगर दिल में इसका असर न हो तो वह अल्लाह तआला की हुज्जत होगा और क़यामत के दिन उस पर मुवाख़ज़ा[2] होगा कि उस इल्म पर क्या अमल किया। और बहुत सी रिवायात में इस पर सख़्त से सख़्त वईदें वारिद हुई हैं, इसलिए मेरी दर्ख़्वास्त है कि मुबल्लिग़ीन हज़रात अपनी इस्लाह ज़ाहिर व बातिन की पहले फ़िक्र करें, मुबादा इन वईदों में दाख़िल हो जाएं। अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म नवालुहू अपनी रहमते वासिआ[3] के तुफ़ैल इस सियहकार को भी इस्लाहे ज़ाहिर व बातिन की तौफ़ीक़ अता फ़र्मावें कि अपने से ज़्यादा बद आमाल किसी को भी नहीं पाता 'इल्ला अय्य त ग़म्म द नि यल्लाहु बिरहमतिन वासिअतिन०

1. पूरी हुज्जत, 2. पकड़, 3. बे-पनाह रहमत,

चौथी फ़स्ल, फ़ज़ाइले इकरामे मुस्लिम व वईदे तहक़ीरे मुस्लिम

इस फ़स्ल में भी एक ख़ास व निहायत अहम अम्र की तरफ़ हज़रात मुबल्लिग़ीन की तवज्जोह मब्ज़ूल कराना मक़सूद है, जो निहायत ही अहम है, वह यह कि तब्लीग़ में बसा औक़ात थोड़ी-सी-बे-एहतियाती से नफ़ा के साथ नुक़्सान भी शामिल हो जाता है, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि एहतियात के हर पहलू का लिहाज़ रखा जाए। बहुत से लोग तब्लीग़ के जोश में इसकी परवाह नहीं करते कि एक मुसलमान की पर्दादरी[1] हो रही है, हालांकि अर्ज़े मुस्लिम[2] एक अज़ीमुश्शान व दक़ीअ़ शै है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رض مَرْفُوْعًا مَّنْ

سَتَرَ عَلٰی مُسْلِمٍ سَتَرَهُ اللّٰهُ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ

اَخِيْهِ۔ (رواه مسلم وابوداؤد وغيرهما ترغيب)

तर्जुमा– जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी[3] करता है, अल्लाह जल्ल शानुहू दुनया और आख़िरत में उसकी पर्दापोशी फ़र्माते हैं और अल्लाह तआला बन्दे की मदद फ़र्माते हैं, जब तक कि वह अपने भाई की मदद करता है।

दूसरी जगह इर्शाद है- عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رض مَرْفُوْعًا مَّنْ سَتَرَ عَوْرَةَ اَخِيْهِ

سَتَرَ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَنْ كَشَفَ عَوْرَةَ اَخِيْهِ الْمُسْلِمِ كَشَفَ

اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ حَتّٰی يَفْضَحَهٗ بِهَا فِیْ بَيْتِهٖ۔ (رواه ابن ماجه۔ ترغيب)

तर्जुमा– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करता है, अल्लाह जल्ल शानुहू क़यामत के दिन उसकी पर्दापोशी फ़र्मायेगा, जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दादरी करता है, अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी पर्दादरी फ़र्माता है हत्ताकि घर बैठे उसको रुसवा कर देता है।

अल-ग़रज़ बहुत-सी रिवायत में इस क़िस्म का मज़मून वारिद हुआ है, इसलिए मुबल्लिग़ीन हज़रात को मुसलमान की पर्दापोशी का एहतमाम भी निहायत ज़रूरी है और इससे ज़्यादा बढ़ कर उसकी आबरू की हिफ़ाज़त है।

---

1. ऐब का खुल जाना, 2. मुसलमान की इज़्ज़त, 3. ऐब छुपाना, 4. आबरू लुटना,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स ऐसे वक़्त में मुसलमान की मदद न करे कि उसकी आबरू रेज़ी[1] हो रही हो तो, अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी मदद से ऐसे वक़्त में एराज़[1] फ़र्माते जबकि वह मदद का मुहताज हो।

एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे मुबारक है कि बद-तरीन सूद मुसलमान की आबरू रेज़ी है।

इसी तरह बहुत-सी रिवायत में मुसलमान की आबरूरेज़ी पर सख़्त से सख़्त वईदें[2] वारिद हुई हैं, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि मुबल्लिग़ीन हज़रात इसका पुरज़ोर एहतमाम रखें कि नही अनिल मुन्कर में अपनी तरफ़ से पर्दादरी न हो, जो मुन्कर मख़्फ़ी तौर से मालूम हो, उस पर मख़्फ़ी इंकार हो और जो एलानिया किया जाए, उस पर एलानिया इंकार होना चाहिए, नीज इंकार में भी उसकी आबरू की हत्तल वसअ[3] फ़िक्र रहनी चाहिए, मुबादा नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम का मस्दाक़ हो जावे। हासिल यह है कि मुन्कर पर इंकार ज़रूर किया जाए[4] कि साबिक़ा वईदें भी बहुत सख़्त हैं, मगर इसमें भी उसकी आबरू का हत्तल वसअ् सख़्त एहतमाम किया जाए, जिसकी सूरत यह है कि जिस मासियत का वक़ूअ[5] एलानिया तौर पर हो रहा हो, उस पर बे-तकल्लुफ़ एलानिया इंकार किया जाए, लेकिन जिस मुन्कर का करने वाले की तरफ़ से इफ़्शा[6], न हो उस पर इंकार करने में अपनी तरफ़ से कोई ऐसी सूरत इख़्तियार न फ़र्मायी जाए जिससे उसका इफ़्शा हो, नीज यह भी आदाबे तब्लीग़ में से हैं कि नर्मी इख़्तियार की जाए।

मामून रशीद ख़लीफ़ा को किसी शख़्स ने सख़्त कलामी से नसीहत की। उन्होंने फ़र्माया कि नर्मी से कहो, इसलिए कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुमसे बेहतर यानी हज़रत मूसा अलै० हज़रत हारून अलै० को मेरे से ज़्यादा बुरे यानी फ़िऔन की तरफ़ भेजा था, तो फ़र्माया था, 'क़ूला लहू क़ौलल्लय्यिनन' यानी तुम उससे नर्म गुफ़्तगू करना कि शायद वह नसीहत क़ुबूल कर ले।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में एक जवान हाज़िर हुआ और दर्ख़्वास्त की कि मुझे ज़िना की इजाज़त दे दीजिए। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन इसकी ताब न ला सके और नाराज़ होना शुरू फ़र्मा

---

1. मुंह फेर लेना, 2. अज़ाब की धमकी, 3. अपनी बात पर, 4. यानी बुरी बातों से ज़रूर रोका जाए, 5. गुनाह का किया जाना, 6. यानी खुले तौर पर न किया जाए,

दिया। हुज़ूर सल्ल० ने उस साइल से फ़र्माया, क़रीब हो जाओ और फिर फ़र्माया कि क्या तू चाहता है कि कोई तेरी मां के साथ ज़िना करे ? कहा, मैं आप पर क़ुर्बान हूं यह मैं हरगिज़ नहीं चाहता। फ़र्माया, इसी तरह और लोग भी नहीं चाहते कि उनकी माओं के साथ ज़िना किया जाये, फिर फ़र्माया, क्या तू पसन्द करता है कि कोई तेरी बेटी से ज़िना करे ? अर्ज़ किया कि मैं आप पर क़ुर्बान हूं, मैं नहीं चाहता। फ़र्माया, इसी तरह और लोग भी नहीं चाहते कि उनकी बेटियों के साथ ज़िना किया जाए। ग़रज़ इसी तरह बहन, ख़ाला, फूफी को पूछ कर हुज़ूर सल्ल० ने दस्ते मुबारक उस शख़्स के सीने पर रखकर दुआ फ़र्मायी कि या अल्लाह ! इसके दिल को पाक कर और गुनाह को माफ़ फ़र्मा और शर्मगाह को मासियत से महफ़ूज़ फ़र्मा।

रावी कहते हैं कि उसके बाद से ज़िना के बराबर कोई चीज़ उस शख़्स के नज़दीक मब्ग़ूज़[1] न थी, बिल जुम्ला दुआ से, दवा से, नसीहत से, नर्मी से यह तसव्वुर करके समझाये कि मैं इस जगह होता तो मैं अपने लिए क्या सूरत पसन्द करता कि लोग मुझको इस सूरत से नसीहत करें।

पांचवी फ़स्ल, इख़्लास और ईमान व एहतिसाब

इस फ़स्ल में भी मुबल्लिग़ीन की ख़िदमत में एक ज़रूरी दर्ख़्वास्त है, वह यह है कि अपनी हर तक़रीर व तहरीर को ख़ुलूस और इख़्लास के साथ मुत्तसिफ़ फ़र्माएं, क्योंकि इख़्लास के साथ थोड़ा-सा अमल भी दीनी और दुन्यवी समरात के एतबार से बहुत बढ़ा हुआ है और बग़ैर इख़्लास के न दुनिया में इसका कोई असर, न आख़िरत में कोई अज्र। नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुबारक है-

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ إِلٰى صُوَرِكُمْ
وَأَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ إِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ (مشكوٰة عن مسلم)

तर्जुमा- हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखते, बल्कि वह तुम्हारे दिलों को और आमाल को देखते हैं।

एक और हदीस में वारिद है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा, कि ईमान क्या चीज़ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि इख़्लास-तर्ग़ीब

---

1. सबसे ज़्यादा ना-पसंदीदा,

ने मुख़्तलिफ़ रिवायात में यह मज़मून ज़िक्र किया है, नीज़ एक हदीस में वारिद है कि हज़रत मआज़ रज़ि० को जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यमन में हाकिम बना कर भेजा, तो उन्होंने दर्ख़्वास्त की कि मुझे कुछ वसीयत फ़र्मा दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि दीन में इख़्लास का एहतमाम रखना कि इख़्लास के साथ थोड़ा-सा-अमल भी काफ़ी है।

एक हदीस में इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू आमाल में से सिर्फ़ उसी अमल को क़ुबूल फ़र्माते हैं, जो ख़ालिस उन्हीं के लिए किया गया हो।

एक और हदीस में इर्शाद है- قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَنَا اَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلًا اَشْرَكَ فِيْهِ مَعِيْ غَيْرِيْ تَرَكْتُهٗ وَشِرْكَهٗ وَفِيْ رِوَايَةٍ فَاَنَا مِنْهُ بَرِيْءٌ هُوَ لِلَّذِيْ عَمِلَهٗ (مشكوٰة عن مسلم)

तर्जुमा– हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का इर्शाद है कि मैं सब शुरका में शिर्कत से बहुत ज़्यादा बे-नियाज़ हूं, यानी दुनिया के शुरका शिर्कत के मुहताज और शिर्कत पर राज़ी होते हैं और मैं 'ख़ल्लाक़ अलल इत्लाक़' हूं, बे-परवाह हूं, इबादत में ग़ैर की शिर्कत से बे-ज़ार हूं। जो शख़्स कोई ऐसा अमल करे जिसमें मेरे साथ किसी दूसरे को भी शरीक कर ले, मैं उसको उसके शिर्क के हवाले कर देता हूं।

दूसरी रिवायत में है कि मैं उससे बरी हो जाता हूं।

एक दूसरी हदीस में वारिद है कि क़यामत के दिन मैदाने हश्र में एक मुनादी ब आवज़े बुलंद कहेगा कि जिस शख़्स ने किसी अमल में दूसरे को शरीक किया हो, वह उसका सवाब और बदला उसी से मांगे। अल्लाह तआला सब शुरका में शिर्कत से बहुत ज़्यादा बे-नियाज़ है।

एक और हदीस में वारिद है- مَنْ صَلّٰى يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ وَمَنْ صَامَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ (مشكوٰة عن احمد)

तर्जुमा– जो शख़्स रियाकारी से नमाज़ पढ़ता है, वह मुश्रिक हो जाता है और जो शख़्स रियाकारी से रोज़ा रखता है, वह मुश्रिक हो जाता है, जो शख़्स रियाकारी से सद्क़ा देता है, वह मुश्रिक हो जाता है। मुश्रिक हो जाने का मतलब यह है कि वह दूसरे लोगों को, जिनके दिखलाने के लिए यह आमाल किये हैं, अल्लाह तआला का शरीक बना लेता है। इस हालत में यह आमाल अल्लाह तआला के लिए नहीं रहते हैं, बल्कि उन लोगों के लिए बन जाते हैं, जिनको दिखलाने के लिए किये जाते हैं।

एक और हदीस में इर्शादे नबवी है-

إِنَّ أَوَّلَ النَّاسِ يُقْضَى عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ رَجُلٌ اُسْتُشْهِدَ
فَأُتِيَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعْمَتَهٗ فَعَرَفَهَا فَقَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا قَالَ قَاتَلْتُ فِيْكَ حَتّٰى اُسْتُشْهِدْتُ قَالَ كَذَبْتَ
وَلٰكِنَّكَ قَاتَلْتَ لِاَنْ يُّقَالَ جَرِيْءٌ فَقَدْ قِيْلَ ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهٖ حَتّٰى اُلْقِيَ فِي النَّارِ وَرَجُلٌ
تَعَلَّمَ الْعِلْمَ وَعَلَّمَهٗ وَقَرَأَ الْقُرْاٰنَ فَاُتِيَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعَمَهٗ فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا قَالَ تَعَلَّمْتُ
الْعِلْمَ وَعَلَّمْتُهٗ وَقَرَأْتُ فِيْكَ الْقُرْاٰنَ قَالَ كَذَبْتَ وَلٰكِنَّكَ تَعَلَّمْتَ الْعِلْمَ لِيُقَالَ اِنَّكَ عَالِمٌ وَ
قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ لِيُقَالَ هُوَ قَارِئٌ فَقَدْ قِيْلَ ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهٖ حَتّٰى اُلْقِيَ فِي النَّارِ
وَرَجُلٌ وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَعْطَاهُ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ كُلِّهٖ فَاُتِيَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعَمَهٗ فَعَرَفَهَا
قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا قَالَ مَا تَرَكْتُ مِنْ سَبِيْلٍ تُحِبُّ اَنْ يُّنْفَقَ فِيْهَا اِلَّا اَنْفَقْتُ فِيْهَا لَكَ قَالَ كَذَبْتَ وَلٰكِنَّكَ
فَعَلْتَ لِيُقَالَ هُوَ جَوَادٌ فَقَدْ قِيْلَ ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ثُمَّ اُلْقِيَ فِي النَّارِ (مشكوة عن مسلم)

तर्जुमा- क़यामत के दिन जिन लोगों का अव्वल वहला में फ़ैसला सुनाया जाएगा, उनमें से एक वह शहीद भी होगा, जिसको बुलाकर अव्वलन अल्लाह तआला अपनी उस नेमत का इज़्हार फ़र्माएंगे जो उस पर की गयी थी, वह उसको पहचानेगा और इक़रार करेगा। इसके बाद सवाल किया जायेगा कि उस नेमत से क्या काम लिया ? वह कहेगा कि तेरी रज़ा के लिए जिहाद किया हत्ताकि शहीद हो गया। इर्शाद होगा कि झूठ है। यह इसलिए किया था कि लोग बहादुर कहेंगे, सो कहा जा चुका और जिस ग़रज़ के लिए जिहाद किया गया था, वह हासिल हो चुकी। इसके बाद उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। दूसरे वह आलिम भी होगा, जिसने इल्म पढ़ा और पढ़ाया और क़ुरआन पाक हासिल किया। उसको बुला कर उस पर जो इनामात दुनियां में किये गये थे, उनका इज़्हार किया जावेगा और वह इक़रार करेगा। इसके बाद उससे भी पूछा जाएगा कि इन नेमतों में क्या-क्या काम किये। वह अर्ज़ करेगा कि तेरी रज़ा के लिए इल्म पढ़ा और लोगों को पढ़ाया। क़ुरआन पाक तेरी रज़ा के लिए हासिल किया। जवाब मिलेगा, झूठ बोलता है, तूने इल्म इसलिए पढ़ा था कि लोग आलिम कहें और क़ुरआन इसलिए हासिल किया था कि लोग क़ारी कहें, सो कहा जा चुका। (और जो ग़रज़ पढ़ने-पढ़ाने की थी, वह पूरी हो चुकी) इसके बाद उसको भी हुक्म सुना दिया जाएगा और वह भी मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

तीसरे वह मालदार भी होगा, जिसको अल्लाह तआला ने वुसअते रिज़्क़ अता

फ़र्मायी और हर किस्म का माल मरहमत फ़र्माया, बुलाया जाएगा और उससे भी नेमतों के इज़्हार और उनके इक़रार के बाद पूछा जाएगा कि इन इनामात में क्या कारगुज़ारी की है। वह अर्ज़ करेगा कि कोई मस्रफ़े ख़ैर[1] ऐसा नहीं, जिसमें ख़र्च करना तेरी रज़ा का सबब हो और मैंने उसमें ख़र्च न किया हो। इर्शाद होगा कि झूठ है। यह सब इसलिए किया गया कि लोग फ़य्याज़ कहें, सो कहा जा चुका। उसको भी हुक्म के मुवाफ़िक़ खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जायेगा।

लिहाज़ा बहुत ही अहम और ज़रूरी है कि मुबल्लिग़ीन हज़रात अपनी सारी कारगुज़ारी में अल्लाह की रज़ा, उसके दीन की इशाअत, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का इत्तिबाअ[2] मक़्सूद रखें। शोहरत, इज़्ज़त, तारीफ़ को ज़रा भी दिल में जगह न दें, अगर ख़्याल भी आ जाए तो ला हौल इस्तिग़्फ़ार से उसकी इस्लाह फ़र्मा लें। अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ और अपने महबूब के सद्क़े और महबूब के पाक कलाम की बरकत से मुझ सियाहकार को भी इख़्लास की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये और नाज़िरीन को भी। आमीन!

छठी फ़स्ल, ताज़ीम उलमा-ए-किराम व बुज़ुर्गाने दीन

इन फ़स्ल में आम्मा-ए-मुस्लिमीन को एक ख़ास अम्र की तरफ़ मुतवज्जह करना है, वह यह कि इस ज़माने में उलमा की तरफ़ से बदगुमानी, बे-तवज्जोही ही नहीं, बल्कि मुक़ाबला और तह्क़ीर[3] की सूरतें बिल उमूम इख़्तियार की जा रही है। यह अम्र दीन के लिहाज़ से निहायत ही सख़्त ख़तरनाक है। इसमें ज़रा शक नहीं कि दुनिया की हर जमाअत में जिस तरह अच्छों में बुरे भी होते हैं, उलमा की जमाअत में भी इसी तरह बल्कि इससे भी ज़्यादा झूठे-सच्चों में शामिल हैं और उलमा-ए-सू[4] उलमा-ए-रुश्द[5] में मख़्लूत[6] हैं, मगर फिर भी दो अम्र बेहद लिहाज़ के क़ाबिल हैं।

अव्वल यह कि जब तक किसी शख़्स का उलमा-ए-सू में से होना मुहक़्क़क़[7] न हो जाए, उस पर हरगिज़ कोई हुक्म न लगा देना चाहिए।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا

तर्जुमा— और जिस बात की तुझको तह्क़ीक़ न हो, उस पर अमल दरामद

1. अच्छा काम, 2. पैरवी, 3. ज़लील समझना, रुसवा करना, 4. बुरे उलमा, 5. अच्छे उलमा, 6. मिले जुले, 7. पूरी तरह मालूम न हो जाए,

न किया कर। कान और आंख और दिल हर शख़्स से इन सबकी पूछ होगी। (बयानुल क़ुरआन) और महज़ इस बदगुमानी पर कि कहने वाला शायद उलमा-ए-सू में हो, उसकी बात को बिला तह्क़ीक़ रद्द कर देना और भी ज़्यादा ज़ुल्म है।

नबी करीम सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसमें इस क़दर एहतियात फ़र्मायी है कि यहूद तौरात के मज़ामीन को अरबी में नक़ल करके सुनाते थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तुम लोग न उनकी तस्दीक़ किया करो, न तक्ज़ीब, बल्कि यह कह दिया करो कि अल्लाह तआला ने जो कुछ नाज़िल फ़र्माया है, सब पर हमारा ईमान है यानी यह कि काफ़िरों की नक़ल के मुताल्लिक़ भी बिला तह्क़ीक़ तस्दीक़ व तक्ज़ीब से रोक दिया, लेकिन हम लोगों की यह हालत है कि जब कोई शख़्स किसी क़िस्म की बात हमारी राय के ख़िलाफ़ कहता है तो उसकी बात की वक़अत गिराने के लिए कहने वाले की ज़ात पर हमले किये जाते हैं, गोया उसका अह्ले हक़ होना भी मुहक़्क़क़ हो।[1]

दूसरा—ज़रूरी अम्र यह है कि उलमा-ए-हक़्क़ानी, उलमा-ए-रुश्द, उलमा-ए-ख़ैर भी बशरीयत से ख़ाली नहीं होते। मासूम होना अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की शान है, इसलिए उनकी लग़्ज़िशों, उनकी कोताहियों, उनके क़ुसूरों की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर आइद है और अल्लाह तआला से उनका मामला है, सज़ा दें या माफ़ फ़र्मा दें। बल्कि अग़लब यह है कि उनकी लग़्ज़िशें इनशा अल्लाह तआला माफ़ ही हो जाएंगी, इसलिए कि करीम आक़ा अपने उस ग़ुलाम से जो ज़ाती कारोबार छोड़कर आक़ा के काम में मश्ग़ूल हो जाए और हमातन उसी में लगा रहे, अक्सर तसामोह और दरगुज़र किया करता है। फिर अल्लाह जल्ले व अला के बराबर तो कोई करीम हो ही नहीं सकता, लेकिन वह ब मुक्तज़ा-ए-अद्ल गिरफ़्त भी फ़र्माएं तो यह उनका अपना मामला है। इन उमूर की वजह से उलमा से लोगों को बद-गुमान करना, नफ़रत दिलाना, दूर रखने की कोशिश करना, लोगों के लिए बद-दीनी का सबब होगा और ऐसा करने वालों के लिए वबाले अज़ीम है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है-

إِنَّ مِنْ إِجْلَالِ اللّٰهِ تَعَالٰى إِكْرَامُ ذِي الشَّيْبَةِ الْمُسْلِمِ وَحَامِلِ الْقُرْاٰنِ

غَيْرِ الْغَالِي فِيْهِ وَلَا الْجَافِي عَنْهُ وَإِكْرَامُ ذِي السُّلْطَانِ الْمُقْسِطِ (ترغیب عن ابی داؤد)

तर्जुमा— तीनों अस्हाबे ज़ैल का एज़ाज़ अल्लाह तआला का एज़ाज़ है,

---

1. मालूम हो,

एक बूढ़ा मुसलमान, दूसरा वह मुहाफ़िज़े क़ुरआन[1] जो इफ़रात व तफ़रीत[2] से ख़ाली हो, तीसरा मुंसिफ़ हाकिम।

दूसरी हदीस में इर्शाद है- لَيْسَ مِنْ أُمَّتِيْ مَنْ لَّمْ يُبَجِّلْ كَبِيْرَنَا وَيَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيَعْرِفْ لِعَالِمِنَا (ترغيب عن احمد والحاكم وغيرهما)

तर्जुमा— वह शख़्स जो हमारे बड़ों की ताज़ीम न करे, हमारे बच्चों पर रहम न करे, हमारे उलमा की क़द्र न करे, वह हमारी उम्मत में से नहीं है।

एक और हदीस में वारिद है- عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ثَلٰثٌ لَا يَسْتَخِفُّ بِهِمْ اِلَّا مُنَافِقٌ ذُو الشَّيْبَةِ فِي الْاِسْلَامِ وَذُو الْعِلْمِ وَاِمَامٌ مُّقْسِطٌ (ترغيب عن الطبراني)

तर्जुमा— नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन शख़्स ऐसे हैं कि उनको ख़फ़ीफ़[3] समझने वाला मुनाफ़िक़ ही हो सकता है (न कि मुसलमान) (वह तीन शख़्स यह हैं), एक बूढ़ा मुसलमान, दूसरा आलिम, तीसरा मुंसिफ़ हाकिम।

बाज़ रिवायत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया है कि मुझे अपनी उम्मत पर सब चीज़ों से ज़्यादा तीन चीज़ों का ख़ौफ़ है-

एक यह कि उनपर दुनियावी फ़ुतूहात[4] ज़्यादा होने लगें, जिस की वजह से एक दूसरे से हसद पैदा होने लगे।

दूसरे यह कि क़ुरआन शरीफ़ आपस में इस क़दर आम हो जाएं कि हर शख़्स उसका मतलब समझने की कोशिश करे, हालांकि उस के माना व मतालिब बहुत से ऐसे भी हैं कि जिनको अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं समझ सकता और जो लोग इल्म में पुख़्ताकार हैं, वह भी यों कहते हैं कि हम इस पर यक़ीन रखते हैं, सब हमारे पर्वरदिगार की तरफ़ से है।

यानी इल्म में पुख़्ताकार लोग भी तस्दीक़ के सिवा आगे बढ़ने की जुर्रात

---

1. क़ुरआन की हिफ़ाज़त करने वाला, 2. कमी-बेशी, घट-बढ़, 3. हक़ीर-ज़लील, 4. दुनया का माल व दौलत,
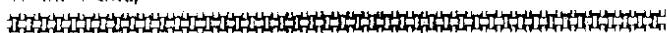
नहीं करते, तो फिर अवाम को चून व चरा का क्या हक़ है।

तीसरे यह कि उलमा की हक़तलफ़ी की जाए और उनके साथ लापरवाही का मामला किया जाये। तर्ग़ीब में इस हदीस को ब-रिवायत तिबरानी ज़िक्र किया है और इस क़िस्म की रिवायात बक्सरत हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

जिस क़िस्म के अल्फ़ाज़ इस ज़माने में उलमा और उलूमे दीनिया के मुताल्लिक़ अक्सर इस्तेमाल किए जाते हैं, फ़तावा आलमगीरी में उनमें से अक्सर अल्फ़ाज़ को अल्फ़ाज़े कुफ़्रिया में शुमार किया है, मगर लोग अपनी ना-वाक़फ़ियत से इस हुक्म से ग़ाफ़िल हैं, इसलिए निहायत ज़रूरी है कि इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ बिल उमूम इस्तेमाल करने में बहुत ज़्यादा एहतियात की जाए। ब फ़र्ज़ अगर मान भी लिया जाए कि उलमा-ए-हक़्क़ानी का इस वक़्त वजूद ही नहीं रहा और यह सब जमाअतें, जिन पर उलमा का इत्लाक़ किया जाता है, उलमा-ए-सू ही हैं, तब भी आप हज़रात की सिर्फ़ उन उलमा को उलमा-ए-सू कहने से सुबकदोशी नहीं हो सकती, बल्कि ऐसी हालत में तमाम दुनिया पर यह फ़र्ज़ आइद हो जाता है कि उलमा-ए-हक़्क़ानी की एक जमाअत पैदा की जाए, उनको इल्म सिखाया जाए, इसलिए कि उलमा का वजूद फ़र्ज़े किफ़ाया है, अगर एक जमाअत उसके लिए मौजूद है, तो यह फ़र्ज़ सबसे साक़ित है, वरना तमाम दुनया गुनाहगार है।

एक आम इश्काल यह किया जाता है कि इन उलमा के इख़्तिलाफ़ ने अवाम को तबाह व बर्बाद कर दिया है, मुम्किन है किसी दर्जे में सही हो, मगर हक़ीक़त यह है कि उलमा का यह इख़्तिलाफ़ आज का नहीं, सौ-पचास वर्ष का नहीं, ख़ैरुल क़ुरून बल्कि ख़ुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने से है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० को अपनी नालैन शरीफ़ बतौर अलामत के देकर इस एलान के लिए भेजते हैं कि जो शख़्स कलमा गो हो, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। रास्ते में हज़रत उमर रज़ि० मिलते हैं और मामला पूछते हैं। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० अपने आप को हुज़ूर सल्ल० का क़ासिद बताते हैं, लेकिन फिर भी हज़रत उमर रज़ि० इस ज़ोर से उनके सीने पर दोनों हाथ मारते हैं कि वह बेचारे सुरीनों[1] के बल पर ज़मीन पर गिर पड़ते हैं, मगर न कोई हज़रत उमर रज़ि० के ख़िलाफ़ पोस्टर शाया होता है, न कोई जल्सा होकर एहतजाजी[2] रेज़ोलेशन पास होता है।

---

1. चूतड़ों के बल, 2. विरोध ज़ाहिर करने के लिए,

हज़रात सहाबा किराम में हज़ारों मस्अले मुख़्तलिफ़ फ़ीहि[1] है और अइम्मा अर्बआ[2] के यहां तो शायद फ़िक्ह की कोई जुज़ई[3] नहीं जो मुख़्तलिफ़ फ़ीहि न हो। चार रक्अत नमाज़ में नीयत बांधने से सलाम फेरने तक तक़रीबन दो सौ मस्अले अइम्मा अर्बआ के यहां ऐसे मुख़्तलिफ़ फ़ीहि हैं, जो मुझ कोताह नजर की निगाह से भी गुजर चुके हैं और इससे ज़ायद न मालूम कितने होंगे, मगर कभी 'रफ़ा यदैन'[4] और 'आमीन बिल जह्र'[5] वग़ैरह दो तीन मस्अलों के सिवा कानों में न पड़े होंगे, न उनके लिए इश्तिहारात व पोस्टर शाया हुए होंगे, न जल्से और मुनाज़रे होते देखे होंगे, राज यह है कि अवाम के कान इन मसाइल से आश्ना नहीं हैं। उलमा में इख़्तिलाफ़ रहमत है और बदीही अम्र है जब भी कोई आलिम किसी शरई दलील से कोई फ़तवा देगा, दूसरे के नजदीक अगर वह हुज्जत सही नहीं तो वह शरअन इख़्तिलाफ़ करने पर मजबूर है। अगर इख़्तिलाफ़ न करे तो मुदाहिन[6] और आसी[7] है।

हक़ीक़त यह है कि लोग काम न करने के लिए इस लचर और पोच उज्र को हीला बनाते हैं, वरना हमेशा अतिब्बा[8] में इख़्तिलाफ़ होता है वुकला[9] की राय में इख़्तिलाफ़ होता है, मगर कोई शख़्स इलाज कराना नहीं छोड़ता, मुक़दमा लड़ाने से नहीं रुकता, फिर क्या मुसीबत है कि दीनी उमूर में इख़्तिलाफ़े उलमा को हीला बनाया जाता है, यक़ीनन सच्चे अमल करने वाले के लिए ज़रूरी है कि जिस आलिम को वह अच्छा समझता है, मुत्तबए सुन्नत[10] समझता है, उसके क़ौल पर अमल करे और दूसरों पर लग्व हमलों, तान व तश्नीअ से बाज़ रहे। जिस शख़्स के ज़ेहन की रसाई दलाइल के समझने और उनमें तर्जीह देने तक नहीं है, उसका हक़ नहीं कि इनमें दख़ल दे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया है कि इल्म को ऐसे लोगों से नक़ल करना जो उसके अहल न हों, उस को ज़ाया करना है, मगर जहां बद-दीनी की यह हद हो कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरीह इर्शादात पर लब कुशाई हर शख़्स का हक़ समझा जाता हो, वहां बेचारे, उलमा का क्या शुमार है। जिस क़दर इल्ज़ामात रखे जाएं कम हैं-

---

1. जिनमें इख़्तिलाफ़ है, 2. चारों इमाम, 3. कोई मस्अला, 4. तक्बीरों के साथ हाथों को उठाकर कानों तक ले जाना, 5. ज़ोर से आमीन कहना, 6. ग़लत कामों में भी नर्मी बरतने वाला, 7. गुनाहगार, 8. हकीमों डाक्टरों, 9 वकीलों, 10 सुन्नत की पैरवी करने वाला,

وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○

व मंय्य त अद्द हुदूदल्लाहि फ़ उलाइ क हुमुज़्ज़ालिमून॰

सातवीं फ़स्ल, अहले हक़ की पहचान और उनकी मुजालसत की अहमियत

गोया छठी फ़स्ल का तक्मला और ततिम्मा[1] है।

उसमें नाज़िरीन की ख़िदमाते आलिया में एक अहम दर्ख़्वास्त है, वह यह कि अकसर अल्लाह वालों के साथ इर्तिबात[2], उनकी ख़िदमत में कसरत से हाज़िरी, दीनी उमूर में तक्वियत और ख़ैर व बरकत का सबब होती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है-

اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰى مِلَاكِ هٰذَا الْاَمْرِ الَّذِيْ تُصِيْبُ بِهٖ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ عَلَيْكَ بِمَجَالِسِ اَهْلِ الذِّكْرِ الحديث (مشكوٰة ص٢٣)

तर्जुमा– क्या तुझे दीन की निहायत तक्वियत देने वाली चीज न बताऊं जिससे तू दीन व दुनिया दोनों की फ़लाह को पहुंचे वह अल्लाह तआला के याद करने वालों की मज्लिस है।[3] और जब तू तन्हा हुआ करे तो अपने को अल्लाह तआला की याद से रत्बुल्लिसान रखा कर।[4]

इसकी तहक़ीक़ बहुत ज़रूरी है कि अह्लुल्लाह[5] कौन लोग हैं ? अह्लुल्लाह की पहचान इत्तिबा-ए-सुन्नत है कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने अपने महबूब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत की हिदायत के लिए नमूना बनाकर भेजा है और अपने कलाम पाक में इर्शाद फ़र्माया है-

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्ला ह फ़त्तबिऊनी युह्बिबकुमुल्लाहु व यग़्फ़िर लकुम ज़ुनू ब कुम वल्लाहु ग़फ़ूर्रहीम॰

तर्जुमा– आप फ़र्मा दीजिए कि अगर तुम ख़ुदा-ए-तआला से मुहब्बत रखते हो, तो तुम लोग मेरा इत्तिबाअ करो, ख़ुदा-ए-तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे, और तुम्हारे सब गुनाहों को माफ़ कर देंगे और अल्लाह तआला ग़फ़ूर-रहीम हैं। (बयानुल क़ुरआन)

---

1. यानी जो कुछ बातें बाक़ी रह गयी हों, उन्हें पूरा करने वाला, 2. मिलना-जुलना, 3. मिश्कात पृ० 415, 4. अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखा कर, 5. अल्लाह वाले,

लिहाजा जो शख़्स नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कामिल मुत्तबिअ[1] हो, वह हक़ीक़तन अल्लाह वाला है और जो शख़्स इत्तिबाए सुन्नत से जिस क़दर दूर हो, वह क़ुर्बे इलाही से भी उसी क़दर दूर है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से मुहब्बत का दावा करे और सुन्नते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालिफ़त करे, वह झूठा है, इसलिए कि क़ायदा-ए-मुहब्बत और क़ानूने इश्क़ है कि जिससे किसी को मुहब्बत होती है, उसके घर से, दर व दीवार से, सेहन से, बाग़ से, हत्ताकि उसके कुत्ते से, उसके गधे से मुहब्बत होती है-

أَمُرُّ عَلَى الدِّيَارِ دِيَارِ لَيْلَى   أُقَبِّلُ ذَا الْجِدَارَ وَذَا الْجِدَارَا
وَمَا حُبُّ الدِّيَارِ شَغَفْنَ قَلْبِي   وَلٰكِنْ حُبُّ مَنْ سَكَنَ الدِّيَارَا

अमुर्रु अलद्दियारि दिया रि लैला,
उक़ ब्बिलु ज़ल जिदारि व ज़ल जिदारि।
व मा हुब्बुद्दयारि श ग़ फ़ न क़ल्बी,
व ला किन हुब्बू मन स क न द् यारा।

तर्जुमा—कहता है कि मैं लैला के शहर पर गुजरता हूं,, तो इस दीवार को और उस दीवार को प्यार करता हूं। कुछ शहरों की मुहब्बत ने मेरे दिल को फ़रेफ़्ता[2] नहीं किया है, बल्कि उन लोगों की मुहब्बत की कार फ़र्माई है , जो शहरों के रहने वाले हैं।

दूसरा शायर कहता है-

تَعْصِي الْإِلٰهَ وَأَنْتَ تُظْهِرُ حُبَّهُ   وَهٰذَا الْعُمْرِي فِي الْفِعَالِ بَدِيعٌ
لَوْ كَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَأَطَعْتَهُ   إِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِبُّ مُطِيعٌ

तअ़सिल इला ह व अन् त तुज़्हिरु हुब्बहू,
हाज़ा ल अु म् री फ़िल फ़ि आलि बदी अ़ू।
लौ का न हुब्बु क सादिक़न ल अतअ् तहू,
इन्नल मुहिब् ब लि मय्युहिब्बु मुती अ़ू।।

तर्जुमा— तू अल्लाह की मुहब्बत का दावा करता है और उसकी ना-फ़र्मानी

---

1. पूरे तौर पर पैरवी करने वाला, 2. मोहित,

करता है। अगर तू अपने दावे में सच्चा होता, तो कभी ना-फ़र्मानी न करता, इसलिए कि आशिक़ हमेशा माशूक़ का ताबेदार होता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मेरी तमाम उम्मत जन्नत में दाखिल होगी, मगर जिसने इंकार कर दिया। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि जिसने इंकार कर दिया से क्या मुराद है ? आपने फ़र्माया कि जो शख़्स मेरी इताअत करेगा, वह जन्नत में दाखिल होगा और जो ना-फ़र्मानी करेगा, वह इंकार करने वाला है।

एक जगह इर्शाद है कि तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता कि उसकी ख़्वाहिश उस दीन के ताबेअ न हो जाए, जिसको मैं लेकर आया हूं। (मिश्कात)

हैरत की बात है कि इस्लाम और मुसलमानों की बहबूदी के दावेदार अल्लाह और उसके रसूल की इताअत से बे-बहरा[1] हों। किसी बात को उन मुद्दइयों[2] के सामने यह कह देना कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है, हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े के ख़िलाफ़ है, गोया बरछी मार देना है-

खिलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद,
कि हर गिज ब मंज़िल नख़्वाहद रसीद।

पयम्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के तरीक़े के ख़िलाफ़ जो शख़्स भी कोई रास्ता इख़्तियार करेगा, कभी भी मंज़िल मक्सूद तक नहीं पहुंच सकता। बिल-जुम्ला इस तह्क़ीक़ के बाद कि यह शख़्स अल्लाह वालों में से है, उसके साथ रब्त[3] का बढ़ाना, उसकी ख़िदमत में कसरत से हाज़िर होना, उसके उलूम से मुन्तफ़अ[4] होना दीन की तरक़्क़ी का सबब है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अम्र[5] भी है।

एक हदीस में इर्शाद आली है कि जब तुम जन्नत के बाग़ों में गुज़रा करो तो कुछ हासिल भी कर लिया करो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या चीज़ हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इल्मी मजालिस।

दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि

---

1. अनजाने, 2. दावेदारों, 3. ताल्लुक़, 4. फ़ायदा उठाना, 5. हुक्म,

लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत की थी कि उलमा की ख़िदमत में बैठने को ज़रूरी समझो और हुक्मा-ए-उम्मत के इर्शादात को ग़ौर से सुना करो कि हक़ तआला शानुहू हिक्मत के नूर से मुर्दा दिलों को ऐसे ज़िंदा फ़र्माते हैं कि जैसे मुर्दा ज़मीन को मूसलाधार बारिश से और हुक्मा दीन के जानने वाले ही हैं, न कि दूसरे अश्ख़ास।

एक और हदीस में वारिद है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने दर्याफ़्त किया कि बेहतरीन हमनशीन हम लोगों के वास्ते कौन शख़्स है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जिसके देखने से अल्लाह की याद पैदा हो, जिस की बात से इल्म में तरक़्क़ी हो, जिसके अमल से आख़िरत याद आ जाए, 'तर्ग़ीब' में इन रिवायात को ज़िक्र किया है।

एक हदीस में है कि अल्लाह के बेहतरीन बन्दे वह लोग हैं जिनको देखकर ख़ुदा याद आ जाए। ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का इर्शाद है-

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ-

या ऐयुहल्लज़ी न आमनुत्तकुल्ला ह व कूनू मअ़स्सादिक़ीन०

तर्जुमा- ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो। (बयानुल क़ुरआन)

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि सच्चों से मुराद इस जगह मशाइख़ सूफ़िया है[1] जब कोई शख़्स उनकी चौखट के ख़ुद्दाम में दाख़िल हो जाता है, तो उनकी तर्बियत और क़ूव्वते विलायत की बदौलत बड़े-बड़े मरातिब तक तरक़्क़ी कर जाता है।

शेख़ अक्बर रज़ि० तहरीर फ़र्माते हैं कि अगर तेरे काम दूसरे की मर्ज़ी के ताबेअ नहीं होते, तो तू कभी भी अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात से इंतिक़ाल नहीं कर सकता, गो उम्र भर मुजाहदे करता रहे। लिहाज़ा जब भी तुझे कोई ऐसा शख़्स मिले, जिसका एहतराम तेरे दिल में हो, उसकी ख़िदमत गुज़ारी कर और उसके सामने मुर्दा बनकर रह कि वह तुझ में जिस तरह चाहे तसर्रुफ़ करे और तेरी अपनी कोई भी ख़्वाहिश न रहे। उसके हुक्म की तामील में जल्दी कर और जिस चीज़ से रोके, उससे एहतराज़[2] कर, अगर पेशा करने का हुक्म करे, पेशा कर, मगर उसके हुक्म से, न कि अपनी राय से, बैठ जाने का हुक्म करे तो बैठ जा। लिहाज़ा ज़रूरी है कि शेख़े कामिल की तलाश में सई कर ताकि तेरी ज़ात को अल्लाह से मिला दे।

---

1. नेक और दीनदार आलिम भी इसी में शामिल हैं जो अपने इल्म के मुताबिक़ अमल करते हों, 2. बचना, एहतियात करना,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई क़ौम किसी मज्लिस में बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करती हो, तो मलाइका उसको घेर लेते हैं, रहमत उनको ढांप लेती है और हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस अपनी पाक मज्लिस में उन लोगों का ज़िक्र फ़र्माते हैं। एक दिल खूदा[1] के वास्ते इससे बढ़कर क्या नेमत हो सकती है कि महबूब की मज्लिस में उसका ज़िक्र हो।

एक दूसरी हदीस में इर्शाद है कि अल्लाह की याद करने वाली जमाअत के लोगों को जो इख़्लास से अल्लाह को याद कर रहे हों, एक पुकारने वाला आवाज़ देता है कि अल्लाह ने तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया।

दूसरी जगह इर्शाद है कि जिस मज्लिस में अल्लाह तआला की याद नहीं, उसके रसूल पर दरूद नहीं, उस मज्लिस वालों को क़यामत के दिन हसरत होगी।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की दुआ है कि या अल्लाह ! अगर तू मुझे ज़ाकिरीन की मज्लिस से गुज़र कर ग़ाफ़िलीन की मज्लिस में जाता हुआ देखे तो मेरे पांव तोड़ दे–

जब उसकी सौत व सूरत से है महरूमी तो बेहतर है,
मेरे कानों का कर होना और आंखें कोर हो जानी।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि जिन मजालिस में अल्लाह तआला की याद होती है, वह आसमान वालों के नज़दीक ऐसी चमकती हैं जैसे कि ज़मीन वालों के नज़दीक सितारे।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में तश्रीफ़ ले गये और लोगों को मुख़ातिब करके फ़र्माया कि तुम लोग यहां बैठे हो और मस्जिद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मीरास तक़्सीम हो रही है। लोग दौड़े हुए आए, वहां कुछ भी तक़्सीम न हो रहा था, वापस जाकर अर्ज़ किया कि वहां तो कुछ भी नहीं। अबूहुरैरह रज़ि० ने पूछा कि आख़िर क्या हो रहा था। लोगों ने कहा कि चंद लोग अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल थे और कुछ तिलावत में। उन्होंने कहा कि यही तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मीरास है।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने इस नौअ की रिवायात बकसरत ज़िक्र फ़र्मायी हैं, इस सब से बढ़कर यह कि ख़ुद नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हुक्म है– وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ

---

1. दिल खोया हुआ यानी आशिक़, 2. आवाज़,

رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا۔

वस्बिर नफ़्स क मअल्लज़ी न यद् ऊन रब्बहुम बिल ग़दाति वल अ़शी यि युरीदून वज्ह हू व ला तअ़्दु अैना क अन्हुम तुरीदु ज़ी न तल हयातिद्दुन्या व ला तुतिअ़् मन अग़फ़ल्ना क़ल् ब हू अन ज़िक्रिना वत्त ब अ हवाहु व का न अम्रुहू फ़ुरुता०

तर्जुमा– और आप अपने आपको उन लोगों के साथ मुकय्यद रखा कीजिए[1] जो सुबह व शाम अपने रब की इबादत महज़ उसकी रज़ाजोई के लिए करते हैं और दुन्यवी ज़िंदगानी की रौनक़ के ख़्याल से आप की आंखें उनसे हटने न पावें और ऐसे शख़्स का कहना न मानें जिसके क़ल्ब को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है और वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता है और उसका हाल हद से बढ़ गया है।

मुतअद्दद रिवायत में वारिद है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह जल्ल जलालुहू का इस पर शुक्र अदा फ़र्माया करते थे कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़र्माये, जिनकी मज्लिस में अपने आप को रोके रखने का मामूर[2] हूं और इसी आयते शरीफ़ा में दूसरी जमाअत का भी हुक्म इर्शाद फ़र्माया गया है कि जिन के क़ुलूब अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं, अपनी ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ करते हैं, हुदूद से बढ़ जाते हैं, उनके इत्तिबाअ से रोक दिया गया है।

अब वह हज़रात जो हर क़ौल व फ़ेल, दीन व दुनिया के कामों में क़ुफ़्फ़ार व फ़ुस्साक़ को मुक्तदा[3] बनाते हैं, मुश्रिकीन व नसारा के हर क़ौल व फ़ेल पर सौ जान से निसार हैं, ख़ुद ही ग़ौर फ़र्मा लें कि किस रास्ते जा रहे हैं–

तरसम न रसी बि काबा ऐ आराबी,
की रह कि तू मीरवी ब तुर्किस्तानस्त।
मुरादे मा नसीहत बूद व करदेम
हवालत बा ख़ुदा करदेम व रफ़्तेम।
व मा अलर्रसुलि इल्लल बलाग़०

मुन्तसिले अम्र
मुहम्मद ज़करिया कांधलवी
मुक़ीम मदर्सा मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर,
5 सफ़र 1350 हि० मुताबिक़ 21 जून 1931 ई०, शब दो शंबा

---

1. यानी उनके साथ बैठा कीजिए, 2. यानी मुझे हुक्म है, 3. जिसकी पैरवी की जाए,

छः
गुनहगार औरतें
क्या आप जानते हैं ?
जो औरतें फैशन करती हैं।
ज़बान दराज़ी करती हैं।
दीन का मज़ाक उड़ाती हैं।
चुगली करती हैं।
एहसान जतलाती हैं।
बे परदगी करती हैं
उन औरतों पर
क्या अज़ाब नाज़िल होता है।
इसे जानने के लिए पढ़िये
छः गुनहगार औरतें
खुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
लाल कुआँ, देहली-6

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ
अलम् यअनि लिल्लज़ी न आ म नू अन् तख्शा अ कुलूबुहुम लिज़िकिल्लाहि॰
'क्या ईमान वालों के लिए इस का वक्त नहीं आया कि उन के
दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए झुक जाएं।'
Click-->
फ़ज़ाइले ज़िक्र
जिसमें
हज़रत मौलाना अल-हाफ़िज़, अल-हाज्ज मुहम्मद इलयास साहब
नव्वरल्लाहु मर्क़दहू
के इर्शाद से
मैं हज़रत मौलाना अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़, अल-मुहद्दिस
मुहम्मद ज़करिया साहब दा म फ़ैज़ुहुम शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे
उलूम सहारनपुर ने वह आयात व अहादीस जमा की हैं। जिनमें
ज़िक्र की बरकत, कलमा-तय्यिबा के फ़ज़ाइल और सोम कलमा यानी
तस्बीहाते फ़ातिमा के सवाब वारिद हुए हैं। ख़ात्मे में 'सलातु-
त्तस्बीह' का मुफ़स्सल बयान है।
प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद
ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

मरने
के बाद क्या होगा
?
क्या आप जानते हैं के
मरने के बाद क्या होगा ?
इसे जानने के लिए पढ़िये
हमारी एक नायाब किताब
मरने के बाद क्या होगा ?
सिराज पब्लिकेशन®
422, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली-6

क्या आप जानते हैं ?

टी.वी. देखने से क्या क्या अज़ाब नाज़िल होता है। यह जानने के लिए पढ़िये हमारी नायाब किताब

टी.वी. और अज़ाबे क़ब्र

प्रकाशक :
सिराज अहमद

सिराज पब्लिकेशन®
422, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली-6

फ़ज़ाइले ज़िक्र

तम्हीद

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نحمده ونصلي على رسوله الكريم وعلى آله وأصحابه وأتباعه حملة الدين القويم

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल् करीमि व अला आलिही व अस्हाबिही व अतबाअिही ह म लतिद्दीनिल् क़वीमि०

अल्लाह जल्ले जलालुहू अम्म नवालुहू के पाक नाम में जो बरकत, लज़्ज़त, हलावत[1], सुरूर व तमानियत[2] है, वह किसी ऐसे शख़्स मे मख़्फ़ी[3] नहीं, जो कुछ दिन इस पाक नाम की रट लगा चुका हो और एक ज़माने तक उसको हिर्ज़े जान[4] बना चुका हो। यह पाक नाम दिलों का सुरूर और तमानियत का बाइस[5] है। ख़ुद हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है- ألا بذكر الله تطمئن القلوب.

अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल् क़ुलूबु०- सूरः रअद्, रुकूअ 4

तर्जुमा- ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र में (यह ख़ासियत है कि उससे) दिलों को इत्मीनान हो जाता है। आजकल आमतौर से आलम में परेशानी है, रोज़ाना डाक में अक्सर व बेशतर मुख़्तलिफ़ नौअ[6] से परेशानियों ही का तज़्किरा और तफ़क्कुरात[7] ही की दास्तान होती है। इस रिसाले का मक़्सद यही है कि जो लोग परेशान हाल हैं, ख़्वाह इंफ़िरादी तौर पर या इज्तिमाई तरीक़े से, उनको अपने दर्द की दवा मालूम हो जाये और अल्लाह के ज़िक्र के फ़ज़ाइल की आम इशाअत से सईद व मुबारक हस्तियां बहरामंद[8] हो जायें। क्या बईद है कि इस रिसाले के देखने से किसी को इख़्लास से उस पाक नाम लेने की तौफ़ीक़ हो जाये। और यह मुझ नाकारा व बे-अमल के लिए भी ऐसे वक़्त में काम आ जाये, जिस वक़्त सिर्फ़ अमल ही काम आता है, बाक़ी अल्लाह तआला बिला अमल भी अपने फ़ज़्ल से किसी की दस्तगीरी फ़र्मा लें, यह दूसरी बात है।

इसके अलावा इस वक़्त एक ख़ास मुहर्रिक[9] यह भी पेश आया कि हक़-

1. मिठास, 2. मस्ती व इत्मीनान, 3. छुपा हुआ, 4. जो जान को लग जाए, 5. वजह, 6. तरह-तरह, 7. चिंताओं, 8. फ़ायदा उठाने वाली, 9. हरकत में लाने वाला, वजह,

तआला शानुहू अम्म नवालुहू ने अपने लुत्फ़ व एहसान से मेरे अम्मे मुहतरम (चचा जान) हज़रत मौलाना अल-हाफ़िज़ अलहाज मुहम्मद इलियास साहिब कांधलवी, मुक़ीम निज़ामुद्दीन (रह०) दिल्ली को तब्लीग़ में एक ख़ास मलका[1] और जज़्बा अता फ़र्माया है, जिसकी वह सरगर्मियां, जो हिंद से मुतजाविज़ होकर हिजाज़ तक भी पहुंच गयी हैं, किसी तआरुफ़ की मुहताज नहीं रहीं। इसके समरात[2] से हिंद व बैरूने हिंद अमूमन और ख़ित्ता-ए-मेवात ख़ुसूसन जिस क़दर मुतमत्तअ और मुन्तफ़अ[3] हुआ और हो रहा है, वह वाक़िफ़ीन से मख़्फ़ी नहीं। उनके उसूले तब्लीग़, सभी निहायत पुख़्ता, मज़बूत और ठोस हैं, जिनके लिए आदतन समरात व बरकात लाज़िम हैं। उनके अहमतरीन उसूल में से यह भी है कि मुबाल्लिग़ीन ज़िक्र का अहतमाम रखें और बिलख़ुसूस तब्लीग़ी औक़ात में ज़िक्र इलाही की कसरत की जाये, इस ज़ाब्ते की बरकात आंखों से देखें कानों से सुने जिसकी वजह से इसकी ज़रूरत ख़ुद भी महसूस हुई और आं मख़दूम[4] का भी इर्शाद हुआ कि फ़ज़ाइले ज़िक्र को उन लोगों तक पहुंचाया जाये, ताकि जो लोग महज़ तामीले इर्शाद में अब तक उसका एहतमाम करते हैं, वह इसके फ़ज़ाइल मालूम होने के बाद ख़ुद अपने शौक़ से भी इसका इहतमाम करें कि अल्लाह का ज़िक्र बड़ी दौलत है। इसके फ़ज़ाइल का अहाता न तो मुझ जैसे बे-बुज़ाअत के इम्कान में है और न वाक़ेअ में मुमकिन है। इसलिए मुख़्तसर तौर पर इस रिसाले में चन्द रिवायात ज़िक्र करता हूं और उसको तीन बाबों पर मुंक़सिम करता हूं।

1. **बाब अव्वल–** मुतलक़ ज़िक्र के फ़ज़ाइल में,

2. **बाब दोम–** अफ़्ज़लु ज़िक्र[5] कलमा-ए-तय्यिबा के बयान में,

3. **बाब सोम–** कलमा-ए-सोम यानी तस्बीहाते फ़ातिमा रज़ि० के बयान में।

---

1. ताक़त, महारत, 2. नतीजा, फल, 3. यानी उनको बहुत ज़्यादा फ़ायदा हुआ,
4. यानी मौलाना मुहम्मद इलयास रह०,
5. सब से उम्दा और अफ़्ज़ल ज़िक्र,

पहला बाब

फ़ज़ाइले ज़िक्र

अल्लाह तआला शानुहू के पाक ज़िक्र में अगर कोई आयत या हदीसे नबवी न भी वारिद होती, तब भी उस मुन्अिमे हक़ीक़ी[1] का ज़िक्र ऐसा था कि बन्दे को किसी आन भी उससे ग़ाफ़िल न होना चाहिए था कि उस ज़ाते पाक के इनाम व एहसान हर आन इतने कसीर[2] हैं, जिनकी न कोई इन्तिहा है, न मिसाल। ऐसे मुन्अिम का ज़िक्र, उसकी याद, उसका शुक्र, उसकी एहसानमंदी फ़ितरी चीज़ है–

ख़ुदावंदे आलम के क़ुर्बान मैं।
करम जिसके लाखों हैं हर आन में।

लेकिन इस के साथ, जब क़ुरआन व हदीस और बुज़ुर्गों के अक़्वाल व अहवाल उस पाक ज़िक्र की तर्ग़ीब व तहरीस[3] से भरे हुए हैं, तो फिर क्या पूछना है, उस पाक ज़िक्र की बरकात का, और क्या ठिकाना है उसके अन्वार का ताहम अव्वल चंद आयात, फिर चंद अहादीस इस मुबारक ज़िक्र के मुताल्लिक़ पेश करता हूं।

फसल अव्वल आयाते ज़िक्र में

(१) فَاذْكُرُونِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝ (سورہ بقرہ رکوع ۱۸)

1. पस तुम मेरी याद करो (मेरा ज़िक्र करो) मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा करते रहो और ना-शुक्री न करो।

(٢) فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ص وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ج وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝ (سورہ بقرہ۔ رکوع ۲۵)

---

1. असल इनआम करने वाला यानी अल्लाह, 2. ज़्यादा
3. उकसाना और लालच बढ़ाना,

2. फिर जब तुम (हज के मौके में) अरफात से वापस आ जाओ, तो मुज़दुल्फ़ा में (ठहर कर) अल्लाह को याद करो और इस तरह याद करो, जिस तरह तुमको बतला रखा है। दरहक़ीक़त तुम इससे पहले महज़ ना-वाक़िफ़ थे।

(٣) فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ (سورہ بقرہ رکوع ۲۵)

3. फिर जब तुम हज के आमाल पूरे कर चुको, तो अल्लाह का ज़िक्र किया करो, जिस तरह तुम अपने आबा (व-अज्दाद)[1] का ज़िक्र किया करते हो (कि उनकी तारीफ़ों मे रतबुल्लिसान[2] होते हो) बल्कि अल्लाह का ज़िक्र इससे भी बढ़कर होना चाहिए। फिर (जो लोग अल्लाह को याद भी कर लेते हैं), उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जो अपनी दुआओं में, यों कहते हैं, ऐ परवरदिगार ! हमें तो दुनिया ही में दे दे (सो उनको तो जो मिलना होगा, दुनिया ही में मिल जायेगा) और उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। और बाज़ आदमी यों कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार, हमको दुनिया में भी बेहतरी अता फ़र्मा और आख़िरत में भी बेहतरी अता कर और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। सो यही हैं, जिनको उनके अमल की वजह से (दोनों जहान में) हिस्सा मिलेगा और अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाले हैं।

फ़— हदीस में आया है कि तीन शख़्सों की दुआ रद्द नहीं कि जाती (बल्कि ज़रूर क़ुबूल होती है)–

एक वह जो कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो, दूसरे मज़्लूम, तीसरे वह बादशाह, जो ज़ुल्म न करता हो।[3]

(٤) وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ (سورہ بقرہ رکوع ۲۵)

4. और (हज के ज़माने में मिना में भी ठहर कर) कई रोज़ तक अल्लाह को याद किया करो, (उसका ज़िक्र किया करो)।

---

1. बाप-दादों, 2. बढ़-चढ़ कर बहुत ज़्यादा तारीफ़ें करना,

3. जामिउस्सग़ीर,

(۵) وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ (سورہ آل عمران، رکوع ۴)

5. और कसरत से अपने रब को याद किया कीजिए और सुबह शाम तस्बीह किया कीजिए।

(۶) الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (سورہ آل عمران، رکوع ۲۰)

6. (पहले से अक्लमंदों का ज़िक्र है) वह ऐसे लोग हैं जो अल्लाह तआला को याद करते हैं खड़े भी, बैठे भी और लेटे हुए भी और आसमानों और ज़मीनों के पैदा होने में ग़ौर करते हैं (और ग़ौर के बाद यह कहते हैं कि) ऐ हमारे रब! आपने यह सब बेकार तो पैदा किया नहीं, हम आपकी तस्बीह करते हैं, आप हमको अज़ाबे जहन्नम से बचा लीजिए।

(۷) فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ (سورہ نساء، ع)

7. जब तुम नमाज़ (ख़ौफ़ जिसका पहले से ज़िक्र है) पूरी कर चुको तो अल्लाह की याद में मश्ग़ूल हो जाओ, खड़े भी, बैठे भी, और लेटे भी, किसी हाल में भी उसकी याद और उसके ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हो।

(۸) وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا (سورہ نساء، رکوع ۲۱)

8. (मुनाफ़िक़ों की हालत का बयान है) और जब नमाज़ को खड़े होते हैं, तो बहुत ही काहिली से खड़े होते हैं, सिर्फ़ लोगों को अपना नमाज़ी होना दिखाते हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र भी नहीं करते, मगर यों ही थोड़ा सा।

(۹) إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ (سورہ مائدہ، رکوع ۱۲)

9. शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए से तुम में आपस में अदावत और बुग़्ज़ पैदा कर दे और तुमको अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से रोक दे। बताओ अब भी (इन बुरी चीज़ों से) बाज़ आ जाओगे?

(۱۰) وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ (سورہ انعام، ع)

10. और उन लोगों को अपनी मज्लिस से अलाहिदा न कीजिए, जो सुबह-शाम

अपने परवरदिगार को पुकारते रहते हैं, जिससे ख़ास उसकी रज़ा का इरादा करतेहैं।

(۱۱) وَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۵ (سورہ اعراف، رکوع ۳)

11. और पुकारा करो उसको (यानी अल्लाह को) ख़ालिस करते हुए उसके लिए दीन को।

(۱۲) اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۚ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۵ (سورہ اعراف، ع ۷)

12. तुम लोग पुकारते रहो अपने रब को आजिज़ी करते हुए, और चुपके-चुपके (भी) बेशक हक़ तआला शानुहू हद से बढ़ने वालों को ना पसंद करते है और दुनिया में, बाद इसके कि उसकी इस्लाह कर दी गयी, फ़साद न फैलाओ और अल्लाह जल्ले शानुहू को पुकारा करो ख़ौफ़ के साथ (अज़ाब से) और तमअ[1] के साथ बेशक (रहमत में) अल्लाह की रहमत अच्छे काम करने वालों के बहुत क़रीब है।

(۱۳) وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا (سورہ اعراف، رکوع ۲۲)

13. अल्लाह ही के वास्ते हैं अच्छे-अच्छे नाम, पस उनके साथ अल्लाह को पुकारा करो।

(۱۴) وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۵ (سورہ اعراف، رکوع ۲۴)

14. और अपने रब की याद किया कर अपने दिल में और ज़रा धीमी आवाज़ से भी, इस हालत में कि आजिज़ी भी हो और अल्लाह का ख़ौफ़ भी हो (हमेशा) सुबह को भी और शाम को भी और ग़ाफ़िलीन[2] में से न हो।

(۱۵) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۵ (سورہ انفال، رکوع ۱)

15. ईमान वाले तो वही लोग हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो (उसकी बड़ाई के तसव्वुर से) उनके दिल डर जाते हैं और जब

---

1. लालच, 2. ग़फ़लत करने वालों,

उन पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उनके ईमान को बढ़ा देती हैं और वह अपने अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं।

(आगे उनकी नमाज़ वग़ैरह के ज़िक्र के बाद इर्शाद है,) यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं, इनके लिए बड़े-बड़े दर्जे हैं, इनके रब के पास और मग़फ़िरत है और इज़्ज़त की रोज़ी है।

(١٦) وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝ (سورہ رعد۔ رکوع ۴)

16. और जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होता है, उसको हिदायत फ़रमाते हैं, वह ऐसे लोग होते हैं, जो अल्लाह पर ईमान लाये और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है। ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र (में ऐसी ख़ासियत है कि उस) से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।

(١٧) قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۭ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۚ (سورہ اسراء۔ رکوع ۱۲)

17. आप फ़र्मा दीजिए कि ख़्वाह अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारोगे (वही बेहतर है) क्योंकि उसके लिए बहुत से अच्छे-अच्छे नाम हैं।

(١٨) وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ (سورہ کہف ع ۴) وفی مسائل السلوک فیہ مطلوبیۃ الذکر ظاہر

18. और जब आप भूल जायें, तो अपने रब का ज़िक्र कर लिया कीजिए।

(١٩) وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝ (سورہ کہف ۔ رکوع ۴)

19. आप अपने को उन लोगों के साथ (बैठने का) पाबंद रखा कीजिए, जो सुबह-शाम अपने रब को पुकारते रहते हैं, महज़ उसकी रज़ा जोई[1] के लिए और महज़ दुनिया की रौनक के ख़्याल से आपकी नज़र (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाये (रौनक से यह मुराद है कि रईस मुसलमान हो जायें, तो इस्लाम को फ़रोग़ हो) और ऐसे शख़्स का कहना न मानें, जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा

---

1. ख़ुशी हासिल करना, 2. यह कुछ काफ़िरों की तरफ़ इशारा है।

है और वह अपनी ख़्वाहिशात का ताबेअ है और उसका हाल हद से बढ़ गया है।[2]

(٢٠) وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۙ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ (سورہ کہف ۔ رکوع ۱۱)

20. और हम दोज़ख को उस रोज़ (यानी क़यामत के दिन) काफ़िरों के सामने पेश कर देंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याद से परदा पड़ा हुआ था।

(٢١) ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۚ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا (سورہ مریم ۔ رکوع ۱)

21. यह तज़्किरा है आपके परवरदिगार की मेहरबानी फ़रमाने का अपने बंदे ज़करीया (अलैहिस्सलाम) पर, जब कि उन्होंने अपने परवरदिगार को चुपके से पुकारा।

(٢٢) وَاَدْعُوْ رَبِّيْ ۖ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا (سورہ مریم ۔ رکوع ۳)

22. और पुकारता हूं मैं अपने रब को (क़तई) उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार का महरूम न रहूंगा।

(٢٣) اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ۝ (طٰہٰ ع ۱)

23. बेशक मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं। पस तुम (ऐ मूसा!) मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो। बिला शुबह क़यामत आने वाली है। मैं उसको पोशीदा रखना चाहता हूं, ताकि हर शख़्स को उसके किये का बदला मिल जाये।

(٢٤) وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۝ (طٰہٰ ع ۲)

24. (हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै० को इर्शाद है) और मेरी याद में सुस्ती न करो।

(٢٥) وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ (سورہ انبیاء ع)

25. और नूह (अलैहिस्सलाम का तज़्किरा उनसे कीजिए) जब कि पुकारा उन्होंने अपने रब को (हज़रत इब्राहीम अलै० के क़िस्से से) पहले।

(٢٦) وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ (سورہ انبیاء ع)

26. और अय्यूब (अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कीजिए), जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि मुझको बड़ी तकलीफ़ पहुंची और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं।

(۲۷) وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (سورہ انبیاء، رکوع ۲)

27. और मछली वाले (पैग़म्बर यानी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कीजिए) जब (वह अपनी क़ौम से) ख़फ़ा होकर चले गये और यह समझे कि हम उन पर दार-व-गीर[1] न करेंगे, पस उन्होंने अंधेरों में पुकारा कि आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप हर ऐब से पाक हैं, बेशक मैं क़ुसूरवार हूं।

(۲۸) وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ (سورہ انبیاء، ع ۶)

28. और ज़करीया (अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कीजिए), जब उन्होंने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब! मुझे ला-वारिस न छोड़ो और (यों तो) सब वारिसों से बेहतर (और हक़ीक़ी वारिस) आप ही हैं।

(۲۹) اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ

29. बेशक यह सब (अंबिया, जिनका पहले से ज़िक्र हो रहा है) नेक कामों में दौड़ते थे और पुकारते थे हमको (सवाब की) रग़बत और (अज़ाब का) खौफ़ करते हुए और थे सब के सब हमारे लिए आजिज़ी करने वाले।

(۳۰) وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ (سورہ حج، رکوع ۵)

30. और आप (जन्नत वग़ैरह की) ख़ुशख़बरी सुना दीजिए, ऐसे ख़ुशूअ करने वालों को, जिनका यह हाल है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उनके दिल डर जाते हैं।

(۳۱) اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (سورہ مومنون، رکوع ۶)

1. पकड़,

31. (क़यामत में कुफ़्फ़ार से गुफ़्तगू के ज़ैल में कहा जायेगा, क्या तुमको याद नहीं) मेरे बंदों का एक गिरोह था (जो बेचारे हम से यों कहा करते थे, ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये, सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़र्माइए। आप सबसे ज़्यादा रहम करने वाले हैं। पस तुमने उनका मज़ाक़ उड़ाया, हत्ताकि इस मश्ग़ले ने तुमको हमारी याद भी भुला दी और तुम उनसे हंसी किया करते थे। मैंने आज उनको उनके सब्र का बदला दे दिया कि वही कामियाब हुए।

(٣٢) رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ الآية (سورہ نور، رکوع ٥)

32. (कामिल ईमान वालों की तारीफ़ के ज़ैल में है,) वह ऐसे लोग हैं कि उनको अल्लाह के ज़िक्र से न ख़रीद ग़फ़लत में डालती है, न फ़रोख़्त[1]।

(٣٣) وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (سورہ عنکبوت ع ٥)

33. और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है।

(٣٤) تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ٥ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (سورہ سجدہ، رکوع ٢)

فی الدر عن الضحاک هم قوم لا یزالون یذکرون اللّٰہ وروی نحوہ عن ابن عباس

34. उनके पहलू ख़्वाबगाहों से अलाहिदा[2] रहते हैं, इस तरह पर कि अज़ाब के डर से और रहमत की उम्मीद से, वह अपने रब को पुकारते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों से ख़र्च करते हैं, पस किसी को भी ख़बर नहीं कि ऐसे लोगों की आंखों की ठंडक का क्या-क्या सामान ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में महफ़ूज़ है, जो बदला है उनके आमाल का।

फ़– एक हदीस में आया है कि बंदा अख़ीर शब में अल्लाह के यहां बहुत मुक़र्रब होता है। अगर तुझसे हो सके, तो उस वक़्त अल्लाह का ज़िक्र किया कर।[3]

(٣٥) لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ٥ (سورہ احزاب، رکوع ٣)

35. बेशक तुम लोगों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नमूना मौजूद था, यानी हर उस शख़्स के लिए, जो अल्लाह से और आख़िरत से डरता

1. बेचना, 2. यानी रात में सोने के बजाए नमाज़ें पढ़ते हैं,

3. जामिउस्सग़ीर, 4. रोक बनना,

हो और कसरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र करता हो (कि जब हुज़ूर सल्ल० लड़ाई में शरीक हुए और जिहाद किया, तो उसके लिए क्या मानेअ[1] हो सकता है ?)

(٣٦) وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَّالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَّأَجْرًا عَظِيمًا ٥ (سورہ احزاب)

35. (पहले से मोमिनों की सिफ़ात[1] का बयान है, उसके बाद इर्शाद है) और बकसरत अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और अल्लाह का ज़िक्र करने वाली औरतें, इन सबके लिए अल्लाह तआला ने मग़फ़िरत और अज्रे अज़ीम तैयार कर रखा है।

(٣٧) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ٥ وَّسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَّأَصِيلًا ٥ (سورہ احزاب ع)

37. ऐ ईमान वालों ! तुम अल्लाह तआला का ख़ूब कसरत से ज़िक्र किया करो और सुबह-शाम उसकी तस्बीह करते रहो।

(٣٨) وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ (سورہ صٰفٰت، رکوع ٣)

38. और पुकारा था हमको नूह (अलैहिस्सलाम) ने, पस हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं।

(٣٩) فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٥ (سورہ زمر رکوع ٢)

39. पस हलाकत है उन लोगों के लिए, जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से मुतास्सिर नहीं होते। यह लोग खुली गुमराही में हैं।

(٤٠) اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ (سورہ زمر رکوع ٣)

40. अल्लाह जल्ले-जलालुहू ने बड़ा उम्दाकलाम (यानी क़ुरआन) नाज़िल फ़र्माया, जो ऐसी किताब है कि बाहम मिलती-जुलती है, बार-बार दुहरायी गयी, जिससे उन लोगों के बदन कांप उठते हैं, जो अपने रब से डरते हैं, फिर उनके बदन और दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं, यह अल्लाह की हिदायत है, जिसको चाहता है, उसके ज़रिए से हिदायत फ़र्मा देता।

(٤١) فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ٥ (سورہ مومن رکوع ٢)

41. पस पुकारो अल्लाह को ख़ालिस करते हुए उसके लिए दीन को, गो

---

1. ख़ूबियां, गुण,

काफ़िरों को ना-गवार हो।

(۴۲) هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ط (سورہ مومن ع۷)

42. वही ज़िन्दा है, उसके सिवा कोई लाइक़ इबादत के नहीं, पस तुम ख़ालिस एतक़ाद करके उसको पुकारा करो।

(۴۳) وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهُ قَرِيْنٌ ○ (سورہ زخرف رکوع ۴)

43. जो शख़्स रहमान के ज़िक्र से (जान-बूझकर) अंधा हो जाये हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह (हर वक़्त) उसके साथ रहता है।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۖۛ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ○ (سورہ فتح ع۴)

44. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आपके सोहबतयाफ़्ता[1] हैं, वह काफ़िरों के मुक़ाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान और ऐ मुख़ातिब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ कर रहे हैं और कभी सज्दा और अल्लाह के फ़ज़्ल और रज़ामंदी की जुस्तजू में लगे हुए हैं (और ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ के) आसार ब-वज्हे तासीर सज्दा के उनके चेहरों पर नुमायां हैं। यह उनके औसाफ़ तौरात में हैं और इंजील में जैसा कि खेती की उसने अव्वल अपनी सूई निकाली, फिर उसको क़वी किया, फिर वह खेती और मोटी हुई, फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हो गयी कि किसानों को भली मालूम होने लगी। (इसी तरह सहाबा में अव्वल ज़ोफ़ था, फिर रोज़ाना क़ुव्वत बढ़ती गई और अल्लाह ने यह नश्व व नुमा इसलिए दिया, ताकि इनसे काफ़िरों को जलाये। अल्लाह ने तो उन लोगों से, जो ईमान लाये और नेक अमल कर रहे हैं, मग़फ़िरत और अज्रे अज़ीम का वायदा कर रखा है।

फ़— आयते शरीफ़ में गो ज़ाहिर तौर पर रुकूअ व सुजूद और नमाज़ की फ़ज़ीलत ज़्यादा तर मक़्सूद है और वह तो ज़ाहिर है, लेकिन कलमा-ए-तय्यिबा के दूसरे जुज़्व मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की फ़ज़ीलत भी इससे ज़ाहिर है।

---

1. सोहबत पाये हुए, साथी,

इमामे राज़ी रह० ने लिखा है कि ऊपर से सुलहे हुदैबिया में कुफ़्फ़ार के इन्कार पर और इस बात के इस्रार करने पर कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह न लिखो, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखो, हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं कि अल्लाह ख़ुद गवाह हैं, इस बात पर कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जब भेजने वाला ख़ुद इक़रार करे कि फ़्लां शख़्स मेरा क़ासिद है, तो लाख कोई इन्कार करे, उसके इन्कार से क्या होता है। इसी गवाही के इक़रार के लिए अल्लाह जल्ले शानुहू ने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्ल० इर्शाद फ़र्माया।

इसके बाद आयते शरीफ़ा में और भी कई अहम मज़ामीन हैं, मिन जुम्ला उनके यह है कि चेहरे के आसार नुमायां होने की फ़ज़ीलत है। इसकी तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। एक यह भी है कि शबे बेदारों के चेहरों पर जो अन्वार व बरकात ज़ाहिर होते हैं, वह मुराद हैं।

इमाम राज़ी रह० ने लिखा है कि यह मुहक़्क़क़ अम्र[1] है कि रात को दो शख़्स जागें, एक लह्व लअिब[2] में मशग़ूल रहे, दूसरा नमाज़, क़ुरआन और इल्म के सीखने में मशग़ूल रहे, दूसरे दिन दोनों के चेहरे के नूर में ख़ुला हुआ फ़र्क़ होगा। जो शख़्स लह्व व लअिब में मशग़ूल है, वह उस जैसा हो ही नहीं सकता, जो ज़िक्र व शुक्र में रात भर लगा रहे।

तीसरी अहम बात यह है कि हज़रत इमाम मालिक रह० और उलमा की एक जमाअत ने इस आयत से उन लोगों के कुफ़्र पर इस्तद्लाल किया है जो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को गालियां देते हैं, बुरा कहते हैं, उनसे बुग़्ज़ रखते हैं।[3]

(۴۵) اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ (سورہ حدید، رکوع ۲)

45. क्या ईमान वालों के लिए इसका वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ख़ुदा की याद के वास्ते झुक जायें।

(۴۶) اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (سورہ مجادلہ، رکوع ۳)

46. (पहले से मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र है) उन पर शैतान का तसल्लुत[4] हो गया, पस उसने उनको ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल कर दिया। यह लोग शैतान का गिरोह हैं।

---

1. तहक़ीक़ (छान-बीन) की हुई बात, 2. खेल-तमाशा, 3. इब्ने कसीर, 4. क़ब्ज़ा,

ख़ूब समझ लो, यह बात मुहक़्क़क़ है कि शैतान का गिरोह ख़सारे[1] वाला है।

(٤٧) فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ٥ (سوره جمعه ـ ركوع ٢)

47. फिर जब (जुमा की) नमाज़ पूरी हो चुके तो (तुमको) इजाज़त है कि तुम ज़मीन पर चलो-फिरो और ख़ुदा की रोज़ी तलाश करो (यानी दुनिया के कामों में मश्ग़ूल होने की इजाज़त है, लेकिन उसमें भी) अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत से करते रहो, ताकि तुम फ़लाह को पहुंच जाओ।

(٤٨) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ٥ (سوره منٰفقون ـ ركوع ٢)

48. ऐ ईमान वालो ! तुमको तुम्हारे माल और औलाद अल्लाह के ज़िक्र से, उसकी याद से ग़ाफ़िल न करने पायें। और जो लोग ऐसा करेंगे, वही ख़सारा वाले हैं। क्योंकि यह चीज़ें तो दुनिया ही में ख़त्म हो जाने वाली हैं और अल्लाह की याद आख़िरत में काम देने वाली है।

(٤٩) وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ٥ (سوره جن ـ ركوع ١)

49. और जो शख़्स अपने परवरदिगार की याद से रू-गरदानी और एराज़[2] करेगा, अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा।

(٥٠) وَاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ٥ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ٥ (سوره جن ـ ركوع ١)

50. जब ख़ुदा का ख़ास बंदा (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ख़ुदा को पुकारने के लिए खड़ा होता है, तो यह काफ़िर लोग उस बन्दे पर भीड़ लगाने को हो जाते हैं। आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने परवरदिगार ही को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता।

(٥١) وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۗ (سوره مزمل ـ ركوع ١)

51. और अपने रब का नाम लेते रहें और सबसे ताल्लुक़ात मुन्क़तअ[3] करके

1. घाटा, 2. मुंह फेरना, 3. काट कर,

उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहें।

(मुन्क़तअ करने का मतलब यह है कि अल्लाह के ताल्लुक़ के मुक़ाबले में सब मग़्लूब हों)।

(۵۲) وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۝ (سورہ دہر، رکوع ۲)

52. और अपने रब का सुबह और शाम नाम लेते रहा कीजिए और किसी क़दर रात के हिस्से में भी उसको सज्दा किया कीजिए और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया कीजिए। (मुराद इससे तहज्जुद की नमाज़ है) यह लोग (जो आपके मुख़ालिफ़ हैं) दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे (आने वाले) एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं।

(۵۳) وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ (سورہ قلم، رکوع ۲)

53. यह काफ़िर लोग जब ज़िक्र (क़ुरआन) सुनते हैं (तो शिद्दते अदावत[1] से) ऐसे मालूम होते हैं कि गोया आपको अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे और कहते हैं कि (नऊज़ुबिल्लाह)[2] यह तो मजनून हैं।

फ़– निगाह से फिसला कर गिरा देना किनाया[3] है दुश्मनी की ज़्यादती से, जैसा कि हमारे यहां बोलते हैं, ऐसा देख रहा है कि खा जायेगा। हसन बसरी रह० कहते हैं कि जिसको नज़र लग गयी हो, उस पर इस आयते शरीफ़ा को पढ़कर दम करना मुफ़ीद है। (जुमल)

(۵۴) قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝ (سورہ اعلیٰ، رکوع ۱)

54. बेशक बा-मुराद हो गया वह शख़्स, जो बुरे अख़्लाक़ से पाक हो गया और अपने रब का नाम लेता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा।

1. दुश्मनी में ज़्यादती, 2. हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं,
3. इशारा, उपमा,

फ़स्ले सानी अहादीसे ज़िक्र में

जबकि इस मज़मून में क़ुरआन पाक की आयात इस कसरत से मौजूद है, तो अहादीस का क्या पूछना, क्योंकि क़ुरआन मजीद के कुल तीस पारे हैं और हदीस शरीफ़ की ला-तायदाद किताबें हैं और हर किताब में बेशुमार हदीसें हैं। एक बुख़ारी शरीफ़ ही के बड़े-बड़े तीस पारे हैं और अबूदाऊद शरीफ़ के बत्तीस पारे हैं और कोई किताब भी ऐसी नहीं कि इस मुबारक ज़िक्र से ख़ाली हो। इसलिए अहादीस का अहाता तो कौन कर सकता है। नमूना और अमल के वास्ते एक आयत और एक हदीस भी काफ़ी है और जिसको अमल ही नहीं करना, उसके लिए दफ़्तर के दफ़्तर भी बेकार हैं-

كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۔[1] क म सलिल हिमारि यह्मिलु अस्फारा०

(١) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِىْ بِىْ وَاَنَا مَعَهٗ اِذَا ذَكَرَنِىْ فَاِنْ ذَكَرَنِىْ فِىْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهٗ فِىْ نَفْسِىْ وَاِنْ ذَكَرَنِىْ فِىْ مَلَاٍ ذَكَرْتُهٗ فِىْ مَلَاٍ خَيْرٍ مِّنْهُمْ وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَىَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ ذِرَاعًا وَّاِنْ تَقَرَّبَ اِلَىَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ بَاعًا وَّاِنْ اَتَانِىْ يَمْشِىْ اَتَيْتُهٗ هَرْوَلَةً ۔ رواه احمد والبخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجة والبيهقى فى الشعب واخرج احمد والبيهقى فى الاسماء والصفات عن انس بمعناه بلفظ يَا ابْنَ اٰدَمَ اِذَا ذَكَرْتَنِىْ فِىْ نَفْسِكَ الحديث ـ وفى الباب عن معاذ بن انس عند الطبرانى باسناد حسن وعن ابن عباس عند البزار باسناد صحيح والبيهقى وغيرهما وعن ابى هريرة عند ابن ماجة وابن حبان وغيرهما بلفظ انا مع عبدى اذا ذكرنى وتحركت بى شفتاه كما فى الدر المنثور والترغيب للمنذرى والمشكوة مختصرًا وفيه برواية مسلم عن ابى ذر بمعناه وفى الاتحاف علقه البخارى عن ابى هريرة بصيغة الجزم ورواه ابن حبان من حديث ابى الدرداءؓ

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्माते हैं कि मैं बंदे के साथ वैसा ही मामला करता हूं, जैसा कि वह मेरे साथ गुमान रखता है और जब वह मुझे याद करता है, तो मैं उसके साथ होता

---

1. गधे की तरह जो बोझ ढोता है,

हूं। पस अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूं और अगर वह मेरा मज्मे में ज़िक्र करता है तो मैं उस मज्मे से बेहतर यानी फ़रिश्तों के मज्मे में (जो मासूम और बे-गुनाह हैं) तज़्किरा करता हूं। और अगर बन्दा मेरी तरफ एक बालिश्त मुतवज्जह होता है, तो मैं एक हाथ उस की तरफ़ मुतवज्जह होता हूं और अगर वह एक हाथ बढ़ता है तो मैं दो हाथ उधर मुतवज्जह होता हूं और अगर वह मेरी तरफ चल कर आता है तो मैं उस की तरफ़ दौड़ कर चलता हूं।

फ़– इस हदीस शरीफ़ में कई मज़्मून वारिद हैं–

1. अव्वल यह कि बंदे के साथ उस के गुमान के मुवाफ़िक़ मामला करता हूं, जिसका मतलब यह है कि हक़ तआला शानुहू से उसके लुत्फ़ व करम की उम्मीद रखना चाहिए। उसकी रहमत से हरगिज़ मायूस न होना चाहिए। यक़ीनन हम लोग गुनाहगार हैं और सरापा गुनाह और अपनी हरकतों और गुनाहों की सज़ा और बदले का यक़ीन है, लेकिन अल्लाह की रहमत से मायूस भी नहीं होना चाहिए। क्या बईद है कि हक़ तआला शानुहू महज़ अपने लुत्फ़ व करम से बिल्कुल ही माफ़ फ़र्मादें कि,

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ

इन्नल्ला–ह ला–यग़्फ़िरु अंय्युश्र–क बिही व यग़्फ़िरु मा दू–न ज़ालि–कलिमंय्य शाउ० कलामुल्लाह शरीफ़ में वारिद है।

तर्जुमा–हक़ तआला शानुहू शिर्क के गुनाहों को तो माफ़ नहीं फ़र्मायेंगे। इसके अलावा जिसको चाहेंगे, सब कुछ माफ़ फ़र्मायेंगे, लेकिन ज़रूरी नहीं कि माफ़ फ़र्मा ही दें। इसी वजह से उलमा फ़र्माते हैं कि ईमान उम्मीद व ख़ौफ़ के दर्मियान है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक नौ–जवान सहाबी रज़ि० के पास तश्रीफ़ ले गये। वह नज़अ[1] की हालत में थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त फ़र्माया, किस हाल में हो ? अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार हूं और अपने गुनाहों से डर रहा हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि वह दोनों, यानी उम्मीद व ख़ौफ़, जिस बन्दे के दिल में ऐसी हालत में हों, तो अल्लाह जल्ले शानुहू जो उम्मीद है वह अता फ़र्मा देते हैं और जिसका ख़ौफ़ है उससे अम्न अता फ़र्मा देते हैं।[2]

---

1. ज़िंदगी का आख़िरी वक़्त, 2. जमउल् फ़वाइद,

एक हदीस में आया है कि मोमिन अपने गुनाह को ऐसा समझता है कि गोया एक पहाड़ के नीचे बैठा है और वह पहाड़ उस पर गिरने लगा। और फ़ाजिर[1] शख़्स गुनाह हो ऐसा समझता है, गोया एक मक्खी बैठी थी, उड़ा दी, यानी ज़रा परवाह नहीं होती। मक्सूद यह कि गुनाह का ख़ौफ़ उसके मुनासिब होना चाहिए और रहमत की उम्मीद उसके मुनासिब।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ताऊन में शहीद हुए। इंतिक़ाल के क़रीब ज़माने में बार-बार ग़शी होती थी। जब इफ़ाक़ा[2] होता, तो फ़र्माते, या अल्लाह ! तुझे मालूम है कि मुझको तुझसे मुहब्बत है, तेरी इज़्ज़त की क़सम ! तुझे यह बात मालूम है, जब बिल्कुल मौत का वक़्त क़रीब आ गया, तो फ़र्माया कि ऐ मौत ! तेरा आना मुबारक है। क्या ही मुबारक मेहमान आया, मगर फ़ाक़े की हालत में यह मेहमान आया है, उसके बाद फ़र्माया, ऐ अल्लाह ! तुझे मालूम है कि मैं हमेशा तुझसे डरता रहा। आज तेरा उम्मीदवार हूं। या अल्लाह ! मुझे ज़िंदगी की मुहब्बत थी, मगर नहरें खोदने और बाग़ लगाने के वास्ते नहीं थी। बल्कि गर्मियों की शिद्दते प्यास बर्दाश्त करने और (दीन की ख़ातिर) मशक़्क़तें झेलने के वास्ते और ज़िक्र के हल्क़ों में उलमा के पास जमकर बैठने के वास्ते थी।[3]

बाज़ उलमा ने लिखा है कि हदीसे बाला में गुमान के मुवाफ़िक़ मामला आम हालात के एतबार से है, ख़ास मग़फ़िरत के मुताल्लिक़ नहीं। दुआ-ए-सेहत, वुस्अत, अम्न वग़ैरह सब चीज़ें इसमें दाख़िल हैं, मसलन दुआ के हो मुताल्लिक़ समझो। मतलब यह है अगर बन्दा यह यक़ीन करता है कि मेरी दुआ क़ुबूल होती है और ज़रूर होगी, तो उसकी दुआ क़ुबूल होती है और अगर यह गुमान करे कि मेरी दुआ क़ुबूल नहीं होती तो वैसा ही मामला किया जाता है, चुनांचे दूसरी अहादीस में आया है कि बन्दे की दुआ क़ुबूल होती है, जब तक यह न कहने लगे कि मेरी तो दुआ क़ुबूल नहीं होती। इसी तरह सेहत व तवंगरी वग़ैरह सब उमूर का हाल है।

हदीस में आया है कि जिस शख़्स को फ़ाक़े की नौबत आये, अगर उसको लोगों से कहता फिरे तो, तवंगरी नसीब नहीं होती। अल्लाह की पाक बारगाह में अर्ज़-मारूज़ करे तो जल्द यह हालत दूर हो जाये। लेकिन यह ज़रूरी है कि अल्लाह तआला शानुहू के साथ हुस्ने ज़न[4] और चीज है, और अल्लाह पर घमंड दूसरी चीज है।

कलामुल्लाह शरीफ़ में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से इस पर तम्बीह की गयी है।

---

1. ना-फ़रमान, 2. मर्ज़ में कमी, 3. तह्ज़ीबुल्लुग़ात, 4. अच्छा गुमान,

इर्शाद है- وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ

व ला यग़ुर्रन्नकुम बिल्लाहिल् ग़रूर० (और न धोखे में डाले तुमको धोखाबाज़!)

यानी यह शैतान तुमको यह न समझाये कि गुनाह किये जाओ, अल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम है।

दूसरी जगह इर्शाद है- أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا كَلَّا

अत्तलअल् ग़ै ब अमित्त ख़ ज़ अिन्दर्रहमानि अह्दन कल्ला० (क्या वह ग़ैब पर मुत्तलअ[1] हो गया या अल्लाह तआला से उसने अह्द कर लिया है ? ऐसा हरगिज़ नहीं।)

2. दूसरा मज़मून यह है कि जब बन्दा मुझे याद करता है, तो मैं उसके साथ होता हूं।

दूसरी हदीस में यह है कि जब बन्दा मुझे याद करता है, तो जब तक उसके होंठ मेरी याद में हरकत करते रहते हैं, मैं उसके साथ होता हूं यानी मेरी ख़ास तवज्जोह उस पर रहती है और ख़ुसूसी रहमत का नुज़ूल[2] होता रहता है।

3. तीसरा मज़मून यह है कि मैं फ़रिश्तों के मज्मे में ज़िक्र करता हूं यानी तफ़ाख़ुर के तौर पर उसका ज़िक्र फ़र्माया जाता है। एक तो इस वजह से कि आदमी की ख़िल्क़त[3] जिस तरकीब से हुई है, उसके मुवाफ़िक़ उसमें इताअत और मासियत,[4] दोनों का माद्दा रखा है, जैसा कि हदीस (8) के ज़ैल में आ रहा है। इस हालत में ताअत का करना यक़ीनन तफ़ाख़ुर का सबब है।

दूसरे इस वजह से कि फ़रिश्तों ने इब्तिदा-ए-ख़िल्क़त[5] के वक़्त अर्ज़ किया था, 'आप ऐसी मख़्लूक़ को पैदा फ़र्माते हैं, जो दुनिया में ख़ूरेज़ी और फ़साद करेगी।' और इसकी वजह भी वही माद्दा फ़साद का इनमें होना है, बख़िलाफ़ फ़रिश्तों के कि उनमें यह माद्दा नहीं। इसीलिए उन्होंने अर्ज़ किया था कि तेरी तस्बीह व तक़्दीस हम करते ही हैं।

तीसरे इस वजह से कि इंसान की इताअत, उसकी, इबादत, फ़रिश्तों की इबादत से इस वजह से भी अफ़ज़ल है कि इंसान की इबादत ग़ैब के साथ है और फ़रिश्तों

---

1. इत्तिला (सूचना) पया हुआ, 2. उतरना, 3. बनावट,
4. गुनाह, नाफ़रमानी, 5. बनाते वक़्त,

की आलमे आख़िरत के मुशाहदे के साथ। उसी की तरफ़ अल्लाह पाक के इस कलाम में इशारा है कि अगर वह जन्नत-दोज़ख़ को देख लेते, तो क्या होता। इन वजव्ह से हक़ तआला शानुहू अपने याद करने वालों और अपनी इबादत करने वालों के कारनामे जताते हैं।

4. चौथा मज़मून हदीस में यह है कि बन्दा जिस दर्जा में हक़ तआला शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह होता है, उससे ज़्यादा तवज्जोह और लुत्फ़ अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ से उस बन्दे पर होता है। यही मतलब है क़रीब होने और दौड़कर चलने का कि मेरा लुत्फ़ और मेरी रहमत तेज़ी के साथ उसकी तरफ़ चलती है। अब हर शख़्स को अपना इख़्तियार है कि जिस क़दर रहमत व लुत्फ़े इलाही को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करना चाहता है, उतनी ही अपनी तवज्जोह अल्लाह तआला जल्ले शानुहू की तरफ़ बढ़ाये।

5. पांचवी बहस इस हदीस शरीफ़ में यह है कि इसमें फ़रिश्तों की जमाअत को बेहतर बताया है, ज़िक्र करने वाले शख़्स से, हालांकि यह मशहूर अम्र है कि इन्सान अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है[1]।

इसकी एक वजह तो तर्जुमे में ज़ाहिर कर दी गयी कि उनका बेहतर होना एक ख़ास हैसियत से है कि वह मासूम हैं, उनसे गुनाह हो ही नहीं सकता।

दूसरी वजह यह है कि यह ब-एतबार अक्सर अफ़राद के हैं कि अक्सर अफ़राद फ़रिश्तों के, अक्सर आदमियों, बल्कि अक्सर मोमिनों से अफ़ज़ल हैं, गो ख़ास मोमिन, जैसे अम्बिया अलैहिस्सलाम सारे ही फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

इसके अलावा और भी वजह हैं, जिनमें बहस तवील है।

(۲) عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ بُسْرٍ اَنَّ رَجُلاً قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اِنَّ شَرَائِعَ الْاِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَیَّ فَاَخْبِرْنِیْ بِشَیْءٍ اَتَشَبَّثُ بِهٖ قَالَ لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِّنْ ذِكْرِ اللّٰہِ اخرجه ابن ابی شيبة واحمد والترمذی وحسنه وابن ماجة وابن حبان فی صحيحه والحاكم وصححه والبيهقی

كذا فی الدر وفی المشكوٰة برواية الترمذی وابن ماجة وحكی عن الترمذی حسن غريب اه قلت وصححه الحاكم واقره عليه الذهبی وفی الجامع الصغير برواية ابی نعيم فی الحلية مختصرا بلفظ اَنْ تُفَارِقَ الدُّنْيَا وَلِسَانُكَ رَطْبٌ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰہِ ورقم له بالضعف وبمعناه عن مالك بن يخامر اَنَّ مُعَاذ

1. तमाम जीवों में सब से बेहतर, 2. ज़ुबान से रटता रहे,

ابْنَ جَبَلٍ قَالَ اٰخِرُ كَلَامٍ فَارَقْتُ عَلَيْهِ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ قُلْتُ اَيُّ الْاَعْمَالِ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ قَالَ اَنْ تَمُوْتَ وَلِسَانُكَ رَطْبٌ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ اخرجه ابن ابى الدنيا والبزار وابن حبان والطبرانى والبيهقى كذا فى الدر وا لحصن الحصين والترغيب للمنذرى وذكره فى الجامع الصغير مختصرا وعزاه الى ابن حبان فى صحيحه وابن السنى فى عمل اليوم والليلة والطبرانى فى الكبير والبيهقى فى الشعب فى مجمع الزوائد رواه الطبرانى باسانيد.

2. एक सहाबी रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! अह्काम तो शरीअत के बहुत से हैं ही, मुझे एक चीज कोई ऐसी बता दीजिए, जिसको मैं अपना दस्तूर और अपना मश्ग़ला बना लूं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह के ज़िक्र से तो हर वक़्त रतबुल्लिसान रहे।[1] एक और हदीस में है, हज़रत मुआज़ रज़ि० फ़र्माते हैं कि जुदाई के वक़्त आख़िरी गुफ़्तगू जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई, वह यह थी, कि मैंने दर्याफ़्त किया कि सब आमाल में महबूब तरीन अमल अल्लाह के नज़दीक क्या है ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि इस हाल में तेरी मौत आये कि अल्लाह के ज़िक्र में रतबुल्लिसान हो।

फ़– जुदाई के वक़्त का मतलब यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ि० को अह्ले यमन की तब्लीग़ व तालीम के लिए यमन का अमीर बनाकर भेजा था, उस वक़्त रुख़्सत के वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने कुछ वसीयतें भी फ़र्मायी थीं और उन्होंने भी कुछ सवालात किये थे–

शरीअत के अह्काम बहुत से होने का मतलब यह है कि हर हुक्म की बजाआवरी[2] तो ज़रूरी है ही, लेकिन हर चीज़ में कमाल पैदा करना और उसको मुस्तक़िल मश्ग़ला बनाना दुश्वार है, इसलिए इनमें से एक चीज, जो सबसे अहम हो, मुझे ऐसी बता दीजिए कि उसको मज़बूत पकड़ लूं और हर वक़्त हर जगह चलते-फिरते, उठते-बैठते करता रहूं।

एक हदीस में इर्शाद है कि चार चीजें ऐसी हैं कि जिस शख़्स को यह मिल जाएं, उसको दीन व दुनिया की भलाई मिल जाये–

1. एक वह ज़ुबान, जो ज़िक्र में मशग़ूल रहने वाली हो,

2. दूसरे वह दिल, जो शुक्र में मशग़ूल रहता हो,

1. ज़ुबान से रटता रहे, 2. पूरा करना,

3. तीसरे वह बदन, जो मशक़्क़त बर्दाश्त करने वाला हो,

4. चौथे वह बीवी, जो अपने नफ़्स में और ख़ाविन्द के माल में ख़ियानत न करे।

नफ़्स में ख़ियानत यह है कि किसी क़िस्म की गंदगी में मुब्तला हो जाये।

रतबुल्लिसान का मतलब अक्सर उलमा ने कसरत का लिखा है और यह आम मुहावरा है। हमारे उर्फ़ में भी जो शख़्स किसी की तारीफ़ या तज़्किरा कसरत से करता है, तो यह बोला जाता है कि फ़्लां की तारीफ़ में रतबुल्लिसान है। मगर बन्दा-ए-नाचीज़ के ख़्याल में एक दूसरा मतलब भी हो सकता है, वह यह कि जिससे इश्क़ व मुहब्बत होती है, उसके नाम लेने से मुंह में एक लज़्ज़त और मज़ा महसूस हुआ करता है। जिनको बाबे इश्क़ से कुछ साबिक़ा पड़ चुका है, वह वाक़िफ़ हैं। इस बिना पर मतलब यह है कि इस लज़्ज़त से अल्लाह का पाक नाम लिया जाये कि मज़ा आ जाये। मैंने अपने बाज़ बुज़ुर्गों को ब-कसरत देखा है कि ज़िक्र बिल्जह्र करते[1] हुए ऐसी तरावट आ जाती है कि पास बैठने वाला भी उसको महसूस करता है और ऐसा मुंह में पानी भर जाता है कि हर शख़्स उसको महसूस करता है, मगर यह जब हासिल होता है कि जब दिल में कसक हो, और ज़ुबान कसरते ज़िक्र के साथ मानूस हो चुकी हो।

एक हदीस में आया है कि अल्लाह से मुहब्बत की अलामत उसके ज़िक्र से मुहब्बत है और अल्लाह से बुग़्ज़ की अलामत उसके ज़िक्र से बुग़्ज़ है।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि जिन लोगों की ज़ुबान अल्लाह के ज़िक्र से तर-व-ताज़ा रहती है, वह जन्नत में हंसते हुए दाख़िल होंगे।

(३) عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَا اُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ اَعْمَالِكُمْ وَاَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيْكِكُمْ وَاَرْفَعِهَا فِیْ دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٍ لَّكُمْ مِّنْ اِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ وَخَيْرٍ لَّكُمْ مِّنْ اَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوْا اَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوْا اَعْنَاقَكُمْ قَالُوْا بَلٰى قَالَ ذِكْرُ اللّٰهِ اخرجه احمد

والترمذی وابن ماجة وابن ابی الدنیا والحاکم وصححه والبیهقی کذا فی الدر والحصن الحصین قلت قال الحاکم صحیح الاسناد ولم یخرجاه واقره علیه الذهبی ورقم له فی الجامع الصغیر بالصحة واخرجه احمد عن معاذ بن جبل کذا فی الدر وفیه ایضا بروایة احمد

1. आवाज़ के साथ किया गया ज़िक्र

والترمذی والبیهقی عن أبی سعید سُئِلَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْعِبَادِ أَفْضَلُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ الذَّاكِرُونَ اللّٰهَ كَثِيرًا قُلْتُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ وَمِنَ الْغَازِي فِي سَبِيلِ اللّٰهِ قَالَ لَوْ ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الْكُفَّارِ وَالْمُشْرِكِينَ حَتَّى يَنْكَسِرَ وَيَخْتَضِبَ دَمًا لَكَانَ الذَّاكِرُونَ اللّٰهَ أَفْضَلَ مِنْهُ دَرَجَةً۔

3. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सहाबा रज़ि० से इर्शाद फ़र्माया, क्या मैं तुमको ऐसी चीज न बताऊं जो तमाम आमाल में बेहतरीन चीज है और तुम्हारे मालिक के नजदीक सबसे ज़्यादा पाकीज़ा और तुम्हारे दर्जों को बहुत ज़्यादा बुलन्द करने वाली और सोने चांदी को (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करने से भी ज़्यादा बेहतर और (जिहाद में) तुम दुश्मनों को क़त्ल करो, वह तुमको क़त्ल करें; उससे भी बढ़ी हुई। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ज़रूर बतावें। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अल्लाह का ज़िक्र है।

फ़— यह आम हालत और हर वक्त के एतबार से इर्शाद फ़र्माया है, वरना वक्ती ज़रूरत के एतबार से सद्का, जिहाद वग़ैरह उमूर सबसे अफ़ज़ल हो जाते हैं। इसी वजह से बाज़ अहादीस में इन चीज़ों की अफ़ज़लियत भी बयान फ़र्मायी गयी है कि इनकी ज़रूरतें वक्ती हैं और अल्लाह पाक का ज़िक्र दायमी[1] चीज है और सबसे ज़्यादा अहम और अफ़ज़ल एक हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हर चीज के लिए कोई साफ़ करने वाली और मैल-कुचैल दूर करने वाली चीज होती है (मसलन कपड़े और बदन के लिए साबुन, लोहे के लिए आग की भट्ठी वग़ैरह-वग़ैरह), दिलों की सफ़ाई करने वाली चीज अल्लाह तआला का ज़िक्र है और कोई चीज अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर नहीं है।

इस हदीस में चूंकि ज़िक्र को दिल की सफ़ाई का ज़रिया और सबब बताया है, इससे भी अल्लाह के ज़िक्र का सबसे अफ़ज़ल होना साबित होता है। इसलिए कि हर इबादत उसी वक्त इबादत हो सकती है, जब इख़्लास से हो और उसका मदार दिलों की सफ़ाई पर है। इसी वजह से बाज़ सूफ़िया ने कहा है कि इस हदीस में ज़िक्र से मुराद ज़िक्र क़ल्बी[2] है, न कि ज़ुबानी ज़िक्र और ज़िक्र क़ल्बी यह है कि दिल हर वक्त अल्लाह के साथ वाबिस्ता हो जाये और इसमें क्या शक है कि यह हालत सारी

---

1. हमेशा रहने वाली, 2. यानी हर वक्त अल्लाह ही का ध्यान, अल्लाह ही का ख़्याल रहे,

इबादतों से अफ़ज़ल है, इसलिए कि जब यह हालत हो जाये तो फिर कोई इबादत छूट ही नहीं सकती कि सारे आज़ा-ए-ज़ाहिरा व बातिना दिल के ताबेअ हैं। जिस चीज़ के साथ दिल वाबिस्ता हो जाता है, सारे ही आज़ा उसके साथ हो जाते हैं। उश्शाक़[1] के हालात से कौन बे-ख़बर है ? और भी बहुत सी अहादीस में ज़िक्र का सबसे अफ़ज़ल होना वारिद हुआ है।

हज़रत सल्मान रज़ि० से किसी ने पूछा कि सबसे बड़ा अमल क्या है ? उन्होंने फ़र्माया कि तुमने क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ा। क़ुरआन पाक में है-

व ल ज़िक्रुल्लाहि अक्बरु० (कोई चीज़ अल्लाह के ज़िक्र से अफ़ज़ल नहीं!)

हज़रत सल्मान रज़ि० ने जिस आयते शरीफ़ः की तरफ़ इशारा फ़र्माया, वह इक्कीसवें पारे की पहली आयत है।

साहिबे 'मजालिसुल अब्रार' कहते हैं कि इस हदीस में अल्लाह के ज़िक्र को सद्क़ा और जिहाद और सारी इबादात से अफ़ज़ल इसलिए फ़र्माया कि असल मक़्सूद अल्लाह का ज़िक्र है और सारी इबादतें उसका ज़रिया और आला हैं और ज़िक्र भी दो क़िस्म का होता है-एक ज़ुबानी और एक क़ल्बी, जो ज़ुबान से भी अफ़ज़ल है और वह मुराक़बा और दिल की सोच है और यही मुराद है उस हदीस से, जिसमें आया है कि एक घड़ी का सोचना[2] सत्तर वर्ष की इबादत से अफ़ज़ल है।

मस्नद अहमद में है, हज़रत सह्ल रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से सात लाख हिस्सा ज़्यादा हो जाता है।

इस तक़रीर से यह मालूम हो गया कि सद्क़ा और जिहाद वग़ैरह जो वक़्ती चीज़ें है, वक़्ती ज़रूरत के एतबार से उनकी फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा हो जाती है, लिहाज़ा उन अहादीस में कोई इश्काल नहीं, जिनमें इन चीज़ों की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत वारिद हुई है। चुनांचे इर्शाद है कि थोड़ी देर का अल्लाह के रास्ते में खड़ा होना, अपने घर पर सत्तर साल की नमाज़ से अफ़ज़ल है, हांलाकि नमाज़ बिल्इत्तफ़ाक़[3] अफ़ज़लतरीन इबादत है, लेकिन कुफ़्फ़ार के हुजूम के वक़्त जिहाद उससे बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल हो जाता है।

---

1. आशिक़ लोग, 2. अल्लाह का ध्यान, 3. सब की मिली जुली राय,

(٤) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ لَیَذْکُرَنَّ اللّٰہَ اَقْوَامٌ فِی الدُّنْیَا عَلَی الْفُرُشِ الْمُمَھَّدَۃِ یُدْخِلُھُمُ اللّٰہُ فِی الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی اخرجہ ابن حبان کذا فی الدر قلت ویؤیدہ الحدیث المتقدم قریباً بِلَفْظِ اَرْفَعُھَا فِیْ دَرَجَاتِکُمْ اَیْضًا وَقَوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ قَالُوْا وَمَا الْمُفَرِّدُوْنَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ قَالَ الذَّاکِرُوْنَ اللّٰہَ کَثِیْرًا وَالذَّاکِرَاتُ .... رواہ مسلم کذا فی الحصن وفی روایۃ قَالَ الْمُسْتَھْتَرُوْنَ فِیْ ذِکْرِ اللّٰہِ یَضَعُ الذِّکْرُ عَنْھُمْ اَثْقَالَھُمْ فَیَاْتُوْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ خِفَافًا رواہ الترمذی والحاکم مختصراً وقال صحیح علی شرط الشیخین وفی الجامع رواہ الطبرانی عن ابی الدرداء ایضاً۔

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बहुत से लोग ऐसे है कि दुनिया में नर्म-नर्म बिस्तरों पर अल्लाह तआला शानुहू का ज़िक्र करते हैं, जिसकी वजह से हक़ तआला शानुहू जन्नत के आला दर्जों में उनको पहुंचा देता है।

फ़– यानी दुनिया में मशक़्क़तें झेलना, सऊबतें[1] बरदाश्त करना, आख़िरत के रफ़ा-ए-दरजात[2] का सबब है। और जितनी भी दीनी उमूर में यहां मशक़्क़त उठायी जायेगी, उतना ही बुलंद मर्तबों का इस्तिहक़ाक़ होगा। लेकिन अल्लाह पाक के मुबारक ज़िक्र की यह बरकत है कि राहत व आराम से नर्म बिस्तरों पर बैठकर भी किया जाये, तब भी रफ़ा-ए-दरजात का सबब होता है।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर तुम हर वक़्त ज़िक्र में मश्ग़ूल रहो, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुमसे मुसाफ़ा करने लगें।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ कि 'मुफ़रिद' लोग बहुत आगे बढ़ गये ! सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि मुफ़रिद कौन हैं ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, जो अल्लाह के ज़िक्र में वालिहाना तरीक़े[3] पर मश्ग़ूल हैं।

इस हदीस की बिना पर सूफ़िया ने लिखा है कि सलातीन[4] और उमरा[5] को अल्लाह के ज़िक्र से न रोकना चाहिए कि वह इसकी वजह से दरजात आला हासिल कर सकते हैं।

---

1. कठिनाइयां, 2. दर्जों की बुलंदी, 3. आशिक़ाना 4. सरदार, 5. दौलतमंदी,

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि तू अल्लाह के ज़िक्र को अपनी मसर्रतों और ख़ुशियों के औक़ात में कर, वह तुझको मशक़्क़तों और तकलीफ़ों के वक़्त काम देगा।

हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि० फ़र्माते हैं कि जब बन्दा राहत के, ख़ुशी के, सरवत के औक़ात[1] में अल्लाह का ज़िक्र करता है, फिर उसको कोई मशक़्क़त और तकलीफ़ पहुंचे, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि मानूस आवाज़ है, जो ज़ईफ़[2] बन्दे की है। फिर अल्लाह के यहां उसकी सिफ़ारिश करते हैं। और जो शख़्स राहत के औक़ात में अल्लाह को याद न करे, फिर कोई तकलीफ़ उसको पहुंचे और उस वक़्त याद करे, तो फ़रिश्ते कहते हैं, कैसी ग़ैरमानूस आवाज़ है।

हज़रत इब्नेअब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। एक उनमें से सिर्फ़ ज़ाकिरीन[3] के लिए है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे, वह निफ़ाक़ से बरी है। दूसरी हदीस में है कि अल्लाह जल्ले शानुहू उससे मुहब्बत फ़र्माते हैं।

एक सफ़र से वापसी हो रही थी। एक जगह पहुंच कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, आगे बढ़ने वाले कहां हैं? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया बाज़ तेज़रौ[4] आगे चले गये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वह आगे बढ़ने वाले कहाँ हैं, जो अल्लाह के ज़िक्र में वालिहाना मशग़ूल हैं। जो शख़्स यह चाहे कि जन्नत से ख़ूब सेराब हो, वह अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे।

(٥) عَنْ اَبِىْ مُوْسٰى قَالَ قَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِىْ لَا يَذْكُرُ رَبَّهٗ مَثَلُ الْحَىِّ وَالْمَيِّتِ اخرجه البخارى ومسلم والبيهقى كذا فى الدر والمشكوٰة۔

5. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह का ज़िक्र करता है और जो नहीं करता, उन दोनों की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की सी है। ज़िक्र करने वाला ज़िंदा है और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है।

फ़— ज़िंदगी हर शख़्स को महबूब है और मरने से हर शख़्स ही घबराता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता, वह ज़िन्दा भी मुर्दे ही के हुक्म में है, उसकी ज़िंदगी भी बेकार है—

---

1. मालदारी, 2. कमज़ोर, बूढ़ा, 3. ज़िक्र करने वाले, 4. तेज़ दौड़ने वाले,

ज़िंदगानी न तवां गुफ़्त हयाते के मरास्त।

ज़िंदा आनस्त कि बा दोस्त विसाले दारद।।

कहते हैं कि 'वह ज़िंदगी ही नहीं है जो, मेरी है, ज़िंदा वह है, जिस को दोस्त का विसाल[1] हासिल हो।'

बाज़ उलमा ने फ़र्माया है, यह दिल की हालत का बयान है कि जो शख़्स अल्लाह का ज़िक्र करता है, उसका दिल ज़िंदा रहता है और जो ज़िक्र नहीं करता, उसका दिल मर जाता है।

और बाज़ उलमा ने फ़र्माया है कि तश्बीह नफ़ा और नुक़्सान के एतबार से है कि अल्लाह के ज़िक्र करने वाले शख़्स को जो सताये, वह ऐसा है, जैसा किसी ज़िन्दा को सताये कि उससे इंतिक़ाम लिया जायेगा और वह अपने किये को भुगतेगा और ग़ैर-ज़ाकिर को सताने वाला ऐसा है, जैसा मुर्दे को सताने वाला कि वह ख़ुद इंतिक़ाम नहीं ले सकता।

सूफ़िया कहते हैं कि इससे हमेशा की ज़िन्दगी मुराद है कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से, इख़्लास के साथ करने वाले मरते ही नहीं, बल्कि वह इस दुनिया से मुंतक़िल हो जाने के बाद भी ज़िंदों ही के हुक्म में रहते हैं, जैसा कि क़ुरआन पाक में शहीद के मुताल्लिक़ वारिद हुआ है।

بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ

बल अह्याउन इन्द रब्बिहिम०[2]

इसी तरह उनके लिए भी एक ख़ास तरह की ज़िन्दगी है।

हकीम तिर्मिज़ी रह० कहते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र दिल को तर करता है और नर्मी पैदा करता है और जब दिल अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली होता है, तो नफ़्स की गर्मी और शहवत की आग से ख़ुश्क होकर सख़्त हो जाता है और सारे आज़ा सख़्त हो जाते हैं, ताअत से रुक जाते हैं। अगर इन आज़ा को खींचो, तो टूट जायेंगे, जैसे कि ख़ुश्क लकड़ी के झुकाने से नहीं झुकती, सिर्फ़ काट कर जला देने के काम की रह जाती है।

(٦) عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رضی اللہ عنہ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَوْاَنَّ رَجُلًا فِیْ حِجْرِہٖ دَرَاھِمُ یَقْسِمُھَا وَاٰخَرُ یَذْکُرُ اللّٰہَ لَکَانَ الذَّاکِرُ لِلّٰہِ اَفْضَلُ۔

اخرجہ الطبرانی کذا فی الدر وفی مجمع الزوائد رواہ الطبرانی فی الاوسط ورجالہ وثقوا۔

1. मिलन, 2. 'बल्कि ज़िंदा हैं, अपने रब के पास',

6. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है अगर एक शख़्स के पास बहुत से रुपये हों और वह उनको तक़्सीम कर रहा हो, और दूसरा शख़्स अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो तो ज़िक्र करने वाला अफ़्ज़ल है।

फ़— यानी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना कितनी ही बड़ी चीज, क्यों न हो, लेकिन अल्लाह की याद उसके मुकाबले में भी अफ़्ज़ल है। फिर किस क़दर ख़ुश नसीब हैं वह मालदार, अल्लाह के रास्ते में खर्च करने वाले, जिनको अल्लाह के ज़िक्र की भी तौफ़ीक़ नसीब हो जाये।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से भी रोज़ाना बंदों पर सदक़ा होता रहता है और हर शख़्स को उसकी हैसियत के मुवाफ़िक़ कुछ न कुछ अता होता रहता है, लेकिन कोई अता इससे बढ़ कर नहीं कि उसको अल्लाह के ज़िक्र की तौफ़ीक़ हो जाए।

जो लोग कारोबार में मश्ग़ूल रहते हैं, तिजारत, ज़िराअत[1] मुलाज़मत में घिरे रहते हैं, अगर थोड़ा बहुत वक़्त अल्लाह की याद के लिए अपने औक़ात में से निकाल लें, तो कैसी मुफ़्त की कमाई है। दिन-रात के चौबीस घंटों में से दो-चार घंटे इस काम के लिए निकाल लेना कौन सी मुश्किल बात है, आख़िर फ़ुज़ूलियात-लग़्वियात[2] में बहुत-सा वक़्त ख़र्च होता है, इस कारआमद चीज के वास्ते वक़्त निकालना क्या दुश्वार है।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह के बेहतरीन बंदे वह हैं, जो अल्लाह के ज़िक्र के वास्ते चांद, सूरज, सितारे और साये की तहक़ीक़ रखते हैं, यानी औक़ात की तहक़ीक़ का एहतमाम करते हैं, अगरचे इस ज़माने में घड़ी-घंटों की कसरत ने इससे बे-नियाज़ कर दिया, फिर भी फ़िलजुम्ला वाक़फ़ीयत इन चीज़ों की मुनासिब है कि घड़ी के ख़राब और ग़लत हो जाने की सूरत में औक़ात ज़ाया न हो जायें।

एक हदीस में आया है कि ज़मीन के जिस हिस्से पर अल्ला का ज़िक्र किया जाये, वह हिस्सा नीचे सातों ज़मीनों तक दूसरे हिस्सों पर फ़ख़्र करता है।

---

1. खेती, 2. बेकार की बातें,

(७) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَیْسَ یَتَحَسَّرُ اَھْلُ الْجَنَّۃِ اِلَّا عَلٰی سَاعَۃٍ مَرَّتْ بِہِمْ لَمْ یَذْکُرُوا اللّٰہَ تَعَالٰی فِیْھَا اخرجہ الطبرانی والبیھقی کذا فی الدر وفی الجامع رواہ الطبرانی فی الکبیر والبیھقی فی الشعب ورقولہ بالحسن فی مجمع الزوائد

رواہ الطبرانی ورجالہ ثقات وفی شیخ الطبرانی خلاف واخرج ابن ابی الدنیا والبیھقی عن عائشۃ بمعناہ مرفوعًا کذا فی الدر وفی الترغیب بمعناہ عن ابی ھریرۃ مرفوعًا وقال رواہ احمد باسناد صحیح وابن حبان والحاکم وقال صحیح علی شرط البخاری۔

7. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद ही कि जन्नत में जाने के बाद अह्ले जन्नत को दुनिया की किसी चीज का भी क़लक़ व अफ़सोस नहीं होगा, बजुज़ उस घड़ी के, जो दुनिया में अल्लाह के ज़िक्र बग़ैर गुजरा गयी हो।

फ़— जन्नत में जाने के बाद जब यह मंजर सामने होगा कि एक दफ़ा उस पाक नाम को लेने का अज्र व सवाब कितना ज़्यादा मिक्दार में है कि पहाड़ों के बराबर मिल रहा है, तो उस वक़्त उस अपनी कमाई के नुक़्सान पर, जिस क़दर भी अफ़सोस होगा, ज़ाहिर है। ऐसे ख़ुश नसीब बंदे भी हैं, जिनको दुनिया ही बग़ैर ज़िक्रुल्लाह के अच्छी नहीं मालूम होती।

हाफ़िज इब्ने हज्र ने 'मुनब्बिहात' में लिखा है कि यह्या बिन मुआज़ राज़ी रह० अपनी मुनाजात में कहा करते थे–

لَا یَطِیْبُ اللَّیْلُ اِلَّا بِمُنَاجَاتِكَ وَلَا یَطِیْبُ النَّھَارُ اِلَّا بِطَاعَتِكَ وَلَا تَطِیْبُ الدُّنْیَا اِلَّا بِذِکْرِكَ وَلَا تَطِیْبُ الْاٰخِرَۃُ اِلَّا بِعَفْوِكَ وَلَا تَطِیْبُ الْجَنَّۃُ اِلَّا بِرُؤْیَتِكَ۔

इलाही लायतीबुल लैलु इल्ला बिमुनाजाति क व ला यतीबुन्नहारु इल्ला बिताअति क व ला ततीबुद्दुन्या इल्ला बिज़िक्र क व ला ततीबुल् आख़िरतु इल्ला बिअफ़्वि क व ला ततीबुल् जन्नतु इल्ला बिरुय्यतिक

'या अल्लाह ! रात अच्छी नहीं लगती, मगर तुझसे राज व नियाज के साथ और दिन अच्छा मालूम नहीं होता, मगर तेरी इबादत के साथ और दुनियां अच्छी नहीं मालूम होती, मगर तेरे ज़िक्र के साथ और आख़िरत भली नहीं, मगर तेरी माफ़ी के साथ और जन्नत में लुत्फ़ नहीं, मगर तेरे दीदार के साथ।'

हज़रत सिर्री रह० फ़र्माते हैं कि मैंने जर्जानी रह० को देखा कि सत्तू फांक

रहे हैं। मैंने पूछा, यह ख़ुश्क ही फांक रहे हो, कहने लगे कि मैंने रोटी चबाने और फांकने का जब हिसाब लगाया, तो चबाने में इतना वक़्त ज़्यादा ख़र्च होता है कि उसमें आदमी सत्तर मर्तबा

'सुब्हानल्लाह' سُبْحَانَ اللّٰہِ

कह सकता है। इसलिए मैंने चालीस वर्ष से रोटी खाना छोड़ दी, सत्तू फांककर गुज़र कर लेता हूं।

मंसूर बिन मुअ़्तमर रह० के मुताल्लिक़ लिखा है कि चालीस वर्ष तक इशा के बाद किसी से बात नहीं की।

रबीअ़ बिन हतीम रह० के मुताल्लिक़ लिखा है कि बीस वर्ष तक जो बात करते, उसको एक पर्चे पर लिख लेते और रात को अपने दिल से हिसाब करते कि कितनी बात इसमें ज़रूरी थी और कितनी ग़ैर-ज़रूरी।

(۸) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ وَاَبِیْ سَعِیْدٍ اَنَّهُمَا شَهِدَا عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَالَ لَا یَقْعُدُ قَوْمٌ یَّذْکُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِکَةُ وَغَشِیَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَنَزَلَتْ عَلَیْهِمُ السَّکِیْنَةُ وَذَکَرَهُمُ اللّٰهُ فِیْمَنْ عِنْدَهٗ - اخرجه ابن ابی شیبة واحمد ومسلم والترمذی وابن ماجة والبیهقی کذا فی الدر والحصن وللشکوٰة

وفی حدیث طویل لابی ذر اُوْصِیْكَ بِتَقْوَی اللّٰهِ فَاِنَّهٗ رَاْسُ الْاَمْرِ کُلِّهٖ وَعَلَیْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ وَذِکْرِ اللّٰهِ فَاِنَّهٗ ذِکْرٌ لَّكَ فِی السَّمَآءِ وَنُوْرٌ لَّكَ فِی الْاَرْضِ الحدیث ذکره فی الجامع الصغیر بروایة الطبرانی وعبد بن حمید فی تفسیره ورقوله بالحسن۔

8. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० और हज़रत अबूसईद रज़ि० दोनों हज़रात इसकी गवाही देते हैं कि हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, इर्शाद फ़रमाते थे कि जो जमाअत अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो, फ़रिश्ते उस जमाअत को सब तरफ़ से घेर लेते हैं और रहमत उनको ढांक लेती है और सकीना[1] उन पर नाज़िल होती है और अल्लाह जल्ले शानुहू उनका तज़्किरा अपनी मज्लिस में (तफ़ाख़ुर के तौर पर) फ़रमाते हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मैं तुझे अल्लाह के तक़्वा की वसीयत करता हूं कि तमाम चीज़ों

---

1. सुकून,

की जड़ है और क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र का एहतमाम कर कि उससे आसमानों में तेरा ज़िक्र होगा और ज़मीन में नूर का सबब बनेगा। अक्सर औक़ात चुप रहा कर कि भलाई बग़ैर कोई कलाम न हो। यह बात शैतान को दूर करती है और दीन के कामों में मददगार होती है। ज़्यादा हंसी से भी बचता रह कि उससे दिल मर जाता है और चेहरे का नूर जाता रहता है। जिहाद करते रहना कि मेरी उम्मत की फ़क़ीरी यही है, मिस्कीनों से मुहब्बत रखना, उनके पास अक्सर बैठे रहना, अपने से कम हैसियत लोगों पर निगाह रखना और अपने से ऊंचे लोगों पर निगाह न करना कि इससे अल्लाह की उन नेमतों की ना-क़द्री पैदा होती है, जो अल्लाह ने तुझे अता फ़र्मायी हैं, क़ुराबत वालों से ताल्लुक़ात जोड़ने की फ़िक्र रखना, वह अगरचे तुझसे ताल्लुक़ात तोड़ दें, हक़ बात कहने में तरद्दुद न करना, गो किसी को कड़वी लगे। अल्लाह के मामले में किसी की मलामत की परवाह न करना, तुझे अपनी ऐबबीनी,[1] दूसरों के उयूब पर नज़र न करने दे और जिस ऐब में ख़ुद मुब्तला हो, उसमें दूसरे पर ग़ुस्सा न करना। ऐ अबूज़र! हुस्ने तद्बीर से बढ़कर कोई अक़्लमंदी नहीं और ना-जायज़ उमूर से बचना बेहतरीन परहेज़गारी है और ख़ुशख़ल्क़ी के बराबर कोई शराफ़त नहीं।

फ़— सकीना के माना सुकून व विक़ार के हैं या किसी मख़्सूस रहमत के, जिसकी तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, जिनको मुख़्तसर तौर पर मैं अपने रिसाले 'चहल हदीस जदीद दर फ़ज़ाइले क़ुरआन'[2] में लिख चुका हूं।

इमाम नववी रह० फ़र्माते हैं कि यह कोई ऐसी मख़्सूस चीज़ है, जो तमानियत, रहमत वग़ैरह सबको शामिल है और मलाइका के साथ उतरती है।

हक़ तआला शानुहू का इन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने तफ़ाख़ुर के तौर पर फ़र्माना एक तो इस वजह से है कि फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश के वक़्त अर्ज़ किया था कि यह लोग दुनिया में फ़साद करेंगे, जैसा कि पहली हदीस के ज़ैल में गुज़र चुका है।

दूसरे इस वजह से है कि फ़रिश्तों की जमाअत अगरचे सरापा इबादत, सरापा बंदगी व इताअत है, लेकिन इनमें माअसियत का माद्दा भी नहीं है और इंसान में चूंकि दोनों माद्दे मौजूद हैं और ग़फ़लत और ना-फ़र्मानी के असबाब उसको घेरे हुए हैं, शहवतें-लज़्ज़तें इसका जुज़्व हैं, इसलिए इससे इन सबके मुक़ाबले में जो इबादत हो और जो माअसियत का मुक़ाबला हो, वह ज़्यादा क़ाबिले मद्ह[3] और क़ाबिले क़द्र है।

---

1. ऐब देखना, 2.यानी फ़ज़ाइले क़ुरआन, 3. तारीफ़ के क़ाबिल,

हदीस में आता है कि जब हक़ तआला ने जन्नत को बनाया तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इर्शाद हुआ कि उसको देख कर आओ। उन्होंने आकर अर्ज किया कि या अल्लाह ! आपकी इज़्ज़त की क़सम ! जो शख़्स भी इसकी ख़बर सुन लेगा, उसमें जाये बग़ैर नहीं रहेगा। यानी लज़्ज़तें और राहतें और फ़र्हतें[1] और नेमतें जिस क़दर उसमें रखी गयी हैं, उनके सुनने और यक़ीन आ जाने के बाद कौन होगा जो उस में जाने की इंतिहाई कोशिश न करेगा। इसके बाद हक़ तआला शानुहू ने उसको मशक़्क़तों से ढांक दिया कि नमाज़ें पढ़ना, रोज़े रखना, जिहाद करना, हज करना वग़ैरह-वग़ैरह इस पर सवार कर दिए गये कि उनको बजा लाओ तो जन्नत में जाओ और फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को इर्शाद हुआ कि अब देखो। उन्होंने अर्ज किया कि अब तो या अल्लाह ! मुझे यह अंदेशा है कि कोई इसमें जा ही न सकेगा।

इसी तरह जब जहन्नम को बनाया, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को इसके देखने का हुक्म हुआ। वहां के अज़ाब, वहां के मसाइब,[2] गंदगियां और तकलीफ़ें देखकर उन्होंने अर्ज किया या अल्लाह! आपकी इज़्ज़त की क़सम ! जो शख़्स इसके हालात सुन लेगा, कभी भी उसके पास न जायेगा। हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने दुनिया की लज़्ज़तों से उसको ढांक दिया कि ज़िना करना, शराब पीना, ज़ुल्म करना, अहकाम पर अमल न करना, वग़ैरह-वग़ैरह का पर्दा इस पर डाल दिया गया फिर इर्शाद हुआ कि अब देखो। उन्होंने अर्ज किया कि या अल्लाह ! अब तो मुझे यह अंदेशा हो गया कि शायद ही कोई इससे बचे। इसी वजह से जब कोई बंदा अल्लाह की इताअत करता है, गुनाह से बचता है, तो इस माहौल के एतबार से, जिसमें वह है, क़ाबिले क़द्र होता है। इसी वजह से हक़ तआला शानुहू इज़्हारे मसर्रत फ़र्माते हैं।

जिन फ़रिश्तों का इस हदीस पाक में और इस क़िस्म की बहुत सी हदीसों में ज़िक्र आया है, वह फ़रिश्तों की एक ख़ास जमाअत है, जो इसी काम पर मुतअय्यन[3] है कि जहां अल्लाह के ज़िक्र की मजालिस हों, अल्लाह का ज़िक्र किया जा रहा हो, वहां जमा हों और उसको सुनें।

चुनांचे एक हदीस में इर्शाद है कि फ़रिश्तों की एक जमाअत मुतफ़र्रिक़ तौर पर फिरती रहती है और जिस जगह अल्लाह का ज़िक्र सुनती है, अपने साथियों को आवाज़ देती है कि आ जाओ, इस जगह तुम्हारा मक़्सूद और ग़रज़ मौजूद है और

---

1. आराम व सुकून, 2. मुसीबतें, 3. मुक़र्रर, नियुक्त,

फिर एक दूसरे पर जमा होते रहते हैं हत्ताकि आसमान तक उनका हल्क़ा पहुंच जाता है, जैसा कि तीसरे बाब की दूसरी फ़स्ल के नं० 14 पर आ रहा है।

9 - عَنْ مُعٰوِيَةَ رَضِ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلٰى حَلْقَةٍ مِّنْ اَصْحَابِهٖ فَقَالَ مَا اَجْلَسَكُمْ قَالُوْا جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللّٰهَ وَنَحْمَدُهٗ عَلٰى مَا هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ وَمَنَّ بِهٖ عَلَيْنَا قَالَ آللّٰهُ مَا اَجْلَسَكُمْ اِلَّا ذٰلِكَ قَالُوْا آللّٰهُ مَا اَجْلَسَنَا اِلَّا ذٰلِكَ قَالَ اَمَا اِنِّيْ لَمْ اَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَّكُمْ وَلٰكِنْ اَتَانِيْ جِبْرَئِيْلُ فَاَخْبَرَنِيْ اَنَّ اللّٰهَ يُبَاهِيْ بِكُمُ الْمَلٰٓئِكَةَ اخرجه ابن ابي شيبة واحمد ومسلم والترمذي والنسائي كذا في الدر والمشكوة۔

9. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा रज़ि० की एक जमाअत के पास तश्रीफ़ ले गये और दर्याफ़्त फ़र्माया कि किस बात ने तुम लोगों को यहां बिठाया है ? अर्ज़ किया कि अल्लाह जल्ले शानुहू का ज़िक्र कर रहे हैं और इस बात पर उसकी हम्द-व-सना कर रहे हैं कि उसने हम लोगों को इस्लाम की दौलत से नवाज़ा। यह अल्लाह का बड़ा ही एहसान हम पर है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, कि क्या ख़ुदा की क़सम ! सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हो? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ख़ुदा की क़सम ! सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि किसी बद-गुमानी की वजह से मैंने तुम लोगों को क़सम नहीं दी, बल्कि जिब्रील अलै० मेरे पास अभी आये थे और यह ख़बर सुना गये कि अल्लाह जल्ले शानुहू तुम लोगों की वजह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़र्मा रहे हैं।

फ़— यानी मैंने जो क़सम देकर पूछा, उससे मक़्सूद एहतमाम और ताकीद थी कि मुम्किन है कोई और ख़ास बात भी इसके अलावा हो और वह बात अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़ख़्र का सबब हो। अब मालूम हो गया कि सिर्फ़ यह तज़्किरा ही सबसे फ़ख़्र है। किस क़दर ख़ुश क़िस्मत थे वह लोग, जिनकी इबादतें मक़्बूल थीं और उनकी हम्द-व-सना पर हक़ तआला शानुहू के फ़ख़्र की ख़ुशख़बरी उनके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से दुनिया ही में मालूम हो जाती थी और क्यों न होता कि इन हज़रात के कारनामे इसी के मुस्तहिक़ थे। इनके कारनामों का मुख़्तसर

---

1. इसके बावजूद कि,

तज़्किरा मैं अपने रिसाला 'हिकायते सहाबा रज़ि०' में नमूने के तौर पर लिख चुका हूं।

मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि फ़ख़्र करने का मतलब यह है कि हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि देखो, यह लोग बावजूदे कि[1] नफ़्स इनके साथ है, शैतान इन पर मुसल्लत है, शहवतें इनमें मौजूद हैं, दुनिया की ज़रूरतें इनके पीछे लगी हुई हैं, इन सबके बावजूद, इन सबके मुक़ाबले में अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल हैं और इतनी कसरत से हटाने वाली चीज़ों के बावजूद मेरे ज़िक्र से नहीं हटते। तुम्हारा ज़िक्र व तस्बीह इस लिहाज़ से कि तुम्हारे लिए कोई मानेअ भी इनमें से नहीं है, इनके मुक़ाबले में कोई चीज़ नहीं है।

(١٠) عَنْ اَنَسٍ رض عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا مِنْ قَوْمٍ اِجْتَمَعُوْا یَذْکُرُوْنَ اللّٰہَ لَا یُرِیْدُوْنَ بِذٰلِکَ اِلَّا وَجْھَہٗ اِلَّا نَادَاھُمْ مُنَادٍ مِّنَ السَّمَاءِ اَنْ قُوْمُوْا مَغْفُوْرًا لَّکُمْ قَدْ بُدِّلَتْ سَیِّاٰتُکُمْ حَسَنٰتٍ

اخرجہ احمد والبزار وابو یعلی والطبرانی واخرجہ الطبرانی عن سھل بن الحنظلیۃ ایضاً واخرجہ البیھقی عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ مُغَفَّلٍ وَزَادَ وَمَا مِنْ قَوْمٍ اِجْتَمَعُوْا فِیْ مَجْلِسٍ فَتَفَرَّقُوْا وَلَمْ یَذْکُرُوا اللّٰہَ اِلَّا کَانَ ذٰلِکَ عَلَیْھِمْ حَسْرَۃً یَّوْمَ الْقِیٰمَۃِ کذا

فی الدر قال المنذری رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط ورواتہ محتج بھم فی الصحیح وفی الباب عن ابی ھریرۃ عند احمد وابن حبان وغیرھما وصححہ الحاکم علی شرط مسلم فی موضع علی شرط البخاری فی موضع اخری وعزا السیوطی فی الجامع حدیث سھل الی الطبرانی والبیھقی فی الشعب والضیاء ورقم لہ بالحسن وفی الباب روایات ذکرھا فی مجمع الزوائد۔

10. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो भी लोग अल्लाह के ज़िक्र के लिए मुज्तमा[1] हों, और उनका मक़्सूद सिर्फ़ अल्लाह ही की रज़ा हो, तो आसमान से एक फ़रिश्ता निदा[2] करता है कि तुम लोग बख़्श दिए गए, और तुम्हारी बुराइयां नेकियों से बदल दी गयीं।

दूसरी हदीस में है, इसके बिल मुक़ाबिल जो इज्तिमाअ[3] ऐसा हो कि उसमें अल्लाह पाक का कोई ज़िक्र हो ही नहीं, तो यह इज्तिमाअ क़यामत के दिन हसरत व अफ़सोस का सबब होगा।

फ़— यानी इस इज्तिमाअ की बे-बरकती और इज़ाअत[4] पर हसरत होगी

---

1. जमा, 3. आवाज़, 3. मज्लिस, 4. बरबादी

और क्या बईद है कि वबाल का सबब किसी वजह से बन जाये।

एक हदीस में आया है कि जिस मज्लिस में अल्लाह का ज़िक्र न हो, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद न हो, उस मज्लिस वाले ऐसे हैं, जैसे मरे हुए गधे पर से उठे हों।

एक हदीस में आया है कि मज्लिस का कफ़्फ़ारा यह है कि इसके इख़्तिताम[1] पर यह दुआ पढ़ ले-
سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَكَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِكَ اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَیْكَ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हान क ल्लाहुम्म व बिहम्दि क अश्हदु अल्ला इला ह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरु क व अतूबु इलै क॰

एक दूसरी हदीस में आया है कि जो भी मज्लिस ऐसी हो, जिसमें अल्लाह का ज़िक्र, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद शरीफ़ न हो, वह मज्लिस क़ियामत के दिन हसरत और नुक़्सान का सबब होगी। फिर हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से चाहे मग़्फ़िरत फ़र्मा दें, चाहे मुताल्बा और अज़ाब फ़र्मा दें।

एक हदीस में है कि मज्लिसों का हक़ अदा किया करो और वह यह है कि अल्लाह का ज़िक्र इनमें कसरत से करो, राहगीरों को ब-वक़्त ज़रूरत रास्ता बताओ और नाजायज़ चीज़ सामने आ जाये, तो आंखें बंद कर लो। (या नीची कर लो कि उस पर निगाह न पड़े।)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू इर्शाद फ़र्माते हैं कि जो शख़्स यह चाहे कि उसका सवाब बहुत बड़ी तराज़ू में तुले (यानी सवाब बहुत ज़्यादा मिक़्दार में हो कि वही बड़ी तराज़ू में तुलेगा, मामूली चीज़ तो बड़ी तराज़ू के पासंग में आ जायेगी) उसको चाहिए कि मज्लिस के ख़त्म पर यह दुआ पढ़ा करे-

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

सुब्हान रब्बिक रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यसि फ़ून व सलामुन अलल् मुर्सलीन वल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन[2]

हदीसे बाला में बुराइयों के नेकियों से बदल देने की बशारत भी है।

क़ुरआन पाक में भी सूरे फ़ुर्क़ान के ख़त्म पर मोमिनीन की चंद सिफ़ात ज़िक्र

1. ख़ात्मे, 2. हिस्न व हाम्शा,

फ़र्माने के बाद इर्शाद है-

فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا

फ़ उलाइ क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम ह स नातिन व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा०

(पस यही लोग हैं, जिनकी बुराइयों को हक़ तआला नेकियों से बदल देते हैं और अल्लाह तआला ग़फ़ूरूर्रहीम हैं।)

इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ उलमा-ए-तफ़्सीर के चंद अक़वाल हैं-

1. एक यह कि सय्यिआत[1] माफ़ कर दी जायेंगी, और हसनात[2] बाक़ी रह जायेंगी, गोया यह भी तब्दीली है कि सय्यिआत कोई बाक़ी नहीं रही।

2. दूसरे यह कि इन लोगों को बजाय बुरे आमाल करने के नेक आमाल की तौफ़ीक़ हक़ तआला शानुहू के यहां नसीब होगी, जैसा कि बोलते हैं, गर्मी के बजाय सर्दी हो गयी।

3. तीसरे यह कि उनकी आदतों का ताल्लुक़ बजाय बुरी चीज़ों के अच्छी चीज़ों के साथ वाबस्ता हो जाता है। इसकी तौज़ीह[3] यह है कि आदमी की आदतें तब्ई[4] होती हैं, जो बदलती नहीं। इसी वजह से ज़र्बुल्मसल[5] है-

'जबल गरदद, जिबिल्लत न गरदद !'[6] और यह मिस्ल भी एक हदीस से माख़ूज़[7] है, जिसमें इर्शाद है कि अगर तुम सुनो कि पहाड़ अपनी जगह से टल गया और दूसरी जगह चला गया, तो उसकी तस्दीक़ कर लो, लेकिन अगर सुनो कि तबीयत बदल गयी, तो उसकी तस्दीक़ न करो, गोया हदीस का मतलब यह हुआ कि आदात का ज़ायल होना, पहाड़ के ज़ायल होने से भी ज़्यादा मुश्किल है।

इसके बाद फिर इश्काल होता है कि सूफ़िया और मशायख़, जो आदात की इस्लाह करते हैं, उसका क्या मतलब होगा। इसका जवाब यह है कि आदतें नहीं बदलतीं, बल्कि इनका ताल्लुक़ बदल जाता है। मसलन एक शख़्स के मिज़ाज में ग़ुस्सा है, वह मशायख़ की इस्लाह और मुजाहदों से ऐसा हो जाये कि ग़ुस्सा बिल्कुल न

---

1. बुराइयां, 2. भलाइयां, 3. विज़ाहत, व्याख्या, 4. फ़ित्री (स्वाभाविक)
5. कहावत, 6. यानी पहाड़ अपनी जगह से हट सकता है, लेकिन बुरी आदत नहीं बदलती, 7. ली गयी,

रहे, यह तो दुश्वार है, हां, इस ग़ुस्से का ताल्लुक़ पहले से जिन चीज़ों के साथ था मसलन बेजा ज़ुल्म, तकब्बुर वग़ैरह, अब बजाय इनके, अल्लाह की ना-फ़र्मानियों पर उसके अहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी वग़ैरह-वग़ैरह की तरफ़ मुंतक़िल हो जाता है। वही हज़रत उमर रज़ि० जो एक ज़माने में मुसलमानों की ईज़ारसानी[1] में कोई दक़ीक़ा न छोड़ते थे, ईमान के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ैज़े सोहबत से कुफ़्फ़ार व फ़ुस्साक़ पर उसी तरह टूटते थे। इसी तरह और अख़्लाक़ का भी हाल है।

इस तौज़ीह के बाद अब मतलब यह हुआ कि हक़ तआला शानुहू ऐसे लोगों के अख़्लाक़ का ताल्लुक़ बजाय मआसी[2] के हसनात से फ़र्मा देते हैं।

4. चौथे यह कि हक़ तआला शानुहू उनको अपनी बुराइयों पर तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़र्माते हैं, जिसकी वजह से पुराने-पुराने गुनाह याद आकर नदामत और तौबा का सबब होता है और हर गुनाह के बदले एक तौबा, जो इबादत है और नेकी है, सब्त[3] हो जाती है।

5. पांचवें यह है कि अगर मौला-ए-करीम को किसी की कोई अदा पसंद हो और उसको अपने फ़ज़्ल से बुराइयों के बराबर नेकियां दे, तो किसी के बाप क्या इजारा है, वह मालिक है, बादशाह है, क़ुदरत वाला है, उसकी रहमत की वुस्अत का क्या कहना, उसकी मग़्फ़िरत का दरवाज़ा कौन बंद कर सकता है, उसकी अता को कौन रोक सकता है, जो दे रहा है, वह अपनी ही मिल्क से देता है, उसको अपनी क़ुदरत के मज़ाहिर भी दिखाना हैं, अपनी मग़्फ़िरत के करिश्मे भी उसी दिन ज़ाहिर करना हैं।

अहादीस में महशर का नज़ारा और हिसाब की जांच मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से वारिद हुई है, जिसको 'बहजतुन नुफ़ूस' ने मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किया है और लिखा है कि हिसाब चंद अन्वाअ[4] पर मुंक़सिम होगा-

एक नौअ यह होगी कि बाज़ बंदों से निहायत मख़्फ़ी रहमत के पर्दे में मुहासबा[5] होगा और उनके गुनाह उनको गिनवाये जायेंगे। और कहा जायेगा कि तूने फ़्लां वक़्त यह गुनाह किया, फ़्लां वक़्त ऐसा किया और उसको इक़रार बग़ैर चारा-ए-कार न होगा, हत्ताकि वह गुनाहों की कसरत से यह समझेगा कि मैं हलाक हो गया, तो इर्शाद होगा कि हमने दुनिया में भी तुझ पर सत्तारी[6] की, आज भी सत्तारी करते हैं और

1. तकलीफ़ पहुंचना, 2. गुनाह, 3. यानी लिख दी जाती है, 4. क़िस्में,
5. हिसाब-किताब, 6. यानी हमने पर्दा डाला,

माफ़ करते हैं। चुनांचे जब यह शख़्स और इस जैसा जो होगा, वह हिसाब के मुकाम से वापस जायेगा, तो लोग देखकर यह कहेंगे कि यह कैसा मुबारक बंदा है कि इसने कोई गुनाह किया ही नहीं, इसलिए कि उनको इसके गुनाहों की ख़बर ही न हुई।

इसी तरह एक नौअ ऐसी होगी कि उनके लिए छोटे-बड़े गुनाह होंगे, उसके बाद इर्शाद होगा कि अच्छा, इनके छोटे गुनाहों को नेकियों से बदल दो, तो वह जल्दी से कहेंगे कि अभी और भी गुनाह ऐसे हैं, जो यहां ज़िक्र नहीं किये गये।

इसी तरह और अन्वाअ का ज़िक्र किया है कि किस-किस तरह से पेशी और हिसाब होगा।

हदीस में एक क़िस्सा आता है, नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़र्माते हैं कि मैं उस शख़्स को पहचानता हूं, जो सबसे अख़ीर में जहन्नम से निकाला जाएगा और सबसे अख़ीर में जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। एक शख़्स को बुलाया जायेगा और फ़रिश्तों से कहा जायेगा कि उसके बड़े-बड़े गुनाह तो अभी ज़िक्र न किये जायें, छोटे-छोटे गुनाह उसके सामने पेश किये जायें, उन पर बाज़पुर्स[1] की जाये। चुनांचे यह[2] शुरू हो जायेगा और एक-एक गुनाह वक़्त के हवाले के साथ उसको जताया जायेगा, वह इंकार कैसे कर सकता है इक़रार करता जायेगा। इतने में इर्शादे रब्बी होगा कि उसको हर गुनाह के बदले एक नेकी दी जाए, तो वह जल्दी से कहेगा कि अभी तो और भी बहुत से गुनाह बाक़ी हैं, उनका तो ज़िक्र ही नहीं आया। इस क़िस्से को नक़ल फ़र्माते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी हंसी आ गयी।

इस क़िस्से में अव्वल तो जहन्नम में से सबसे अख़ीर में निकलना है, यही क्या कम सज़ा है। दूसरे क्या मालूम कौन ख़ुश-क़िस्मत ऐसा हो सकता है कि जिसके गुनाहों की तब्दीली हो, इसलिए अल्लाह की पाक ज़ात से उम्मीद करते हुए फ़ज़्ल का मांगते रहना बंदगी की शान है, लेकिन इस पर मुत्मइन होना जुरअत है, अल्बत्ता सय्यिआत को हसनात से बदलने का सबब इख़्लास से मजालिसे ज़िक्र में हाज़िरी हदीसे बाला से मालूम होती ही है, लेकिन इख़्लास भी अल्लाह ही की अता से हो सकता है।

एक ज़रूरी बात यह है कि जहन्नम से अख़ीर में निकलने वाले के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात वारिद हुई हैं, लेकिन इनमें कोई इश्काल नहीं। एक मोतद्‌बिही जमाअत[3] अगर निकले तो भी हर शख़्स अख़ीर में निकलने वाला है और जो क़रीब

---

1. पकड़, 2. यह गिनवाना शुरू हो जाएगा, 3. अच्छी भली तायदाद में लोग

अख़ीर के निकले, वह भी अख़ीर ही कहलाता है,नीज ख़ास–ख़ास जमाअत का अख़ीर भी मुराद हो सकता है !

इस हदीस में अहम मस्अला इख़्लास का है और इख़्लास की क़ैद और भी बहुत सी अहादीस में, इस रिसाले में नज़र से गुजरेगी। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला के यहां इख़्लास ही की क़द्र है। जिस दर्जे का इख़्लास होगा, उसी दर्जे के अमल की क़ीमत होगी।

सूफ़िया के नजदीक इख़्लास की हक़ीक़त यह है कि क़ाल और हाल बराबर हों। एक हदीस में आइन्दा आ रहा है कि इख़्लास यह है कि गुनाहों से रोक दे।

बहजतुन्नुफ़ूस में लिखा है कि, एक बादशाह के लिए, जो निहायत ही जाबिर और मुतशद्दिद[1] था, एक जहाज़ में बहुत सी शराब लायी जा रही थी। एक साहब का उस जहाज़ पर गुजर हुआ और जिस क़दर ठेलियां[2] शराब से भरी हुई थीं, सब ही तोड़ दीं, एक छोड़ दी। किसी शख़्स की हिम्मत उनको रोकने की न पड़ी, लेकिन इस पर हैरत थी कि उस बादशाह के तशद्दुद का मुक़ाबला भी कोई नहीं कर सकता था, फिर उसने किस तरह जुरअत की, बादशाह को इत्तिला दी गयी, उसको भी ताज्जुब हुआ। अव्वलन इस बात पर कि उसके माल पर किस तरह एक मामूली आदमी ने जुर्रात की और फिर उस पर यह कि एक मटकी क्यों छोड़ दी। उन साहब को बुलाया गया, पूछा कि यह क्यों किया ? उन्होंने जवाब दिया कि मेरे दिल में इसका तक़ाज़ा हुआ, इसलिए ऐसा किया। तुम्हारा जो दिल चाहे सज़ा दे दो। उसने पूछा, यह एक क्यों छोड़ी? उन्होंने कहा, मुझे अव्वलन् इस्लामी ग़ैरत का तक़ाज़ा था, इसलिए मैंने तोड़ी, मगर जब एक रही तो मेरे दिल में एक ख़ुशी सी पैदा हुई कि मैंने एक ना–जायज़ काम को मिटा दिया तो मुझे उसके तोड़ने में यह शुब्हा हुआ कि यह हज़्ज़े नफ़्स[3] दिल की ख़ुशी की वजह से है, इसलिए एक को छोड़ दिया। बादशाह ने कहा, इसको छोड़ दो, यह मजबूर था।

एह्याउल् उलूम में लिखा है कि बनी इस्राईल में एक आबिद[4] था, जो हर वक़्त इबादत में मश्ग़ूल रहता था। एक जमाअत उसके पास आयी और कहा कि यहां एक क़ौम है, जो एक दरख़्त को पूजती है। यह सुनकर उसको ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ी कंधे पर रखकर उसको काटने के लिए चल दिया। रास्ते में शैतान एक पीरे मर्द[5] की सूरत में मिला आबिद से पूछा, कहां जा रहे हो ? उसने कहा, फ़्लां दरख़्त

---

1. शिद्दत इख़्तियार करने वाला, ज़ालिम, 2. शराब के बर्तन, 3. नफ़्स की लज़्ज़त, 4. इबादत करने वाला, 5. बूढ़ा आदमी।

काटने जाता हूं। शैतान ने कहा, तुम्हें इस दरख़्त से क्या वास्ता, तुम अपनी इबादत में मश्ग़ूल रहो, तुमने अपनी इबादत को एक मुहमल[1] काम के वास्ते छोड़ दिया। आबिद ने कहा, यह भी इबादत है। शैतान ने कहा कि मैं नहीं काटने दूंगा। दोनों में मुक़ाबला हुआ। वह आबिद उसके सीने पर चढ़ गया। शैतान ने अपने को आजिज़ देखकर ख़ुशामद की और कहा, अच्छा, एक बात सुन ले। आबिद ने उसको छोड़ दिया। शैतान ने कहा, अल्लाह ने तुझ पर इस को फ़र्ज़ तो नहीं किया, तेरा इससे कोई नुक़्सान नहीं, तू इसकी परिस्तिश नहीं करता। अल्लाह के बहुत से नबी हैं, अगर वह चाहता, तो किसी नबी के ज़रिए से उसको कटवा देता। आबिद ने कहा, मैं ज़रूर काटूंगा। फिर मुक़ाबला हुआ। वह आबिद फिर उसके सीने पर चढ़ गया। शैतान ने कहा, अच्छा सुन, एक फ़ैसले वाली बात तेरे नफ़ा की कहूं। उसने कहा, कह। शैतान ने कहा, तू ग़रीब है, दुनिया पर बोझ बना हुआ है, तू इस काम से बाज़ आ, मैं तुझे रोज़ाना तीन दीनार (अशर्फ़ी) दिया करूंगा जो रोज़ाना तेरे सिरहाने रखे हुए मिला करेंगे। तेरी भी ज़रूरतें पूरी हो जायेंगी, अपने अइज़्ज़ा[2] पर भी एहसान कर सकेगा, फ़क़ीरों की मदद कर सकेगा और बहुत से सवाब के काम कर सकेगा। इसमें एक ही सवाब होगा और वह भी बेकार कि वह लोग दूसरा लगा लेंगे। आबिद की समझ में आया, क़ुबूल कर लिया। दो दिन तो वह मिले, तीसरे दिन से नदारद। आबिद को ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ी लेकर फिर चला। रास्ते में वह बूढ़ा मिला, पूछा कहां जा रहा है ? आबिद ने कहा कि उसी दरख़्त को काटने जा रहा हूं। बूढ़े ने कहा, तू उसको नहीं काट सकता ? दोनों में झगड़ा हुआ ? वह बूढ़ा ग़ालिब आ गया और आबिद के सीने पर चढ़ गया। आबिद को बड़ा ताज्जुब हुआ। उससे पूछा कि यह क्या बात है कि तू इस मर्तबा ग़ालिब हो गया। उस बूढ़े ने कहा कि पहली मर्तबा तेरा ग़ुस्सा ख़ालिस अल्लाह के वास्ते था, इसलिए अल्लाह जल्ले शानुहू ने मुझे मग़्लूब कर दिया था, इस मर्तबा इसमें दीनारों का दख़ल था, इसलिए तू मग़्लूब हुआ। हक़ यह है कि जो काम ख़ालिस अल्लाह के वास्ते किया जाता है उसमें बड़ी क़ूव्वत होती है।

(1) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عَمِلَ اٰدَمِيٌّ عَمَلًا اَنْجٰى لَهٗ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنْ ذِكْرِ اللّٰهِ اخرجه احمد كذا فى الدر و الى احمد عزاه فى الجامع الصغير بلفظ انجى لَهٗ مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ ورقم له بالصحة وفى مجمع الزوائد رواه احمد ورجاله رجال الصحيح الا ان زياداً لم يدرك معاذاً ثم ذكره بطريق آخر وقال رواه الطبرانى ورجاله رجال الصحيح

1. 6. बेकार, 2. रिश्तेदारों,

قلت وفی المشکوٰۃ عنہ موقوفاً بلفظ ما عمل العبد عملاً انجی لہ من عذاب اللہ من ذکر اللہ وقال رواہ مالک والترمذی وابن ماجۃ اھ قلت وھکذا رواہ الحاکم وقال صحیح الاسناد واقرہ علیہ الذھبی وفی المشکوٰۃ بروایۃ البیہقی فی الدعوات عن ابن عمر مرفوعاً بمعناہ قال القاری رواہ ابن ابی شیبۃ وابن ابی الدنیا و ذکرہ فی الجامع الصغیر بروایۃ البیہقی فی الشعب ورقم لہ بالضعف وزاد فی اولہ لکل شیئ سقالۃ وسقالۃ القلوب ذکر اللہ وفی مجمع الزوائد بروایۃ جابر مرفوعاً نحوہ وقال رواہ الطبرانی فی الصغیر والاوسط ورجالھا رجال الصحیح اھ

11. नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर किसी आदमी का कोई अमल अज़ाबे क़ब्र से ज़्यादा निजात देने वाला नहीं है।

फ़— अज़ाबे क़ब्र कितनी सख़्त चीज़ है, इससे वही लोग वाक़िफ़ हैं जिनके सामने वह अहादीसें हैं, जो अज़ाबे क़ब्र के बारे में वारिद हुई हैं।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब किसी क़ब्र पर तशरीफ़ ले जाते, तो इस क़दर रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। किसी ने पूछा कि आप जन्नत के, दोज़ख़ के ज़िक्र से ऐसा नहीं रोते, जैसा कि क़ब्र के सामने आ जाने से रोते हैं। आपने इर्शाद फ़र्माया कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से सबसे पहली मंज़िल है। जो शख़्स इससे निजात पा ले, बाद की सब मंज़िलें उस पर सहल हो जाती हैं और जो इससे निजात न पाये, बाद की मंज़िलें दुश्वार ही होती जाती हैं। फिर आपने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद सुनाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह इर्शाद फ़र्माते थे कि मैंने कोई मंज़र क़ब्र से ज़्यादा घबराहट वाला नहीं देखा।

हज़रत आइशा रज़ि० इर्शाद फ़र्माती हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के बाद अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगते थे।

हज़रत ज़ैद रज़ि० इर्शाद फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, मुझे यह अन्देशा है कि तुम डर और ख़ौफ़ की वजह से मुर्दों का दफ़्न करना छोड़ दोगे, वरना मैं इसकी दुआ करता कि अल्लाह जल्ले शानुहू तुम्हें भी अज़ाबे क़ब्र सुना दे। आदमियों और जिन्नात के सिवा और जानदार अज़ाबे-क़ब्र को सुनते हैं।

एक हदीस में आया है कि नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक

ने इर्शाद फ़र्माया कि एक आदमी को क़ब्र का अज़ाब हो रहा है, उसकी आवाज़ से बिदकने लगी।

एक मर्तबा नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ ले गये, तो चन्द आदमियों को देखा कि खिलखिला कर हंस रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि अगर मौत को अक्सर याद किया करो, तो यह बात न हो। कोई दिन क़ब्र पर ऐसा नहीं गुज़रता, जिसमें वह यह एलान नहीं करती कि मैं ग़ुरबत का घर हूं, तन्हाई का घर हूं, कीड़े और जानवरों का घर हूं। जब कोई मोमिन (कामिल ईमान वाला) दफ़्न होता है, तो क़ब्र उससे कहती है, तेरा आना मुबारक है तूने बहुत ही अच्छा किया कि आ गया। जितने लोग मेरी पुश्त (यानी ज़मीन पर) चलते थे, तू उन सब में मुझे महबूब था। आज तू मेरे सुपुर्द हुआ, है तो मेरा हुस्ने सुलूक भी देखेगा। इसके बाद वह इस क़दर वसीअ हो जाती है कि मुंतहाए नज़र[1] तक खुल जाती है और जन्नत का एक दरवाज़ा उसमें खुल जाता है, जिससे वहां की हवाएं ख़ुश्बुएं वग़ैरह पहुंचती रहती हैं। और जब काफ़िर या फ़ाजिर दफ़्न किया जाता है, तो क़ब्र कहती है कि तेरा आना मनहूस और ना-मुबारक है! क्या ज़रूरत थी तेरे आने की ? जितने आदमी मेरी पुश्त[2] पर चलते थे, सबमें ज़्यादा बुग़्ज़ मुझे तुझसे था। आज तू मेरे हवाले हुआ, तो मेरा मामला भी देखेगा, इसके बाद उसको इस क़दर ज़ोर से भींचती है कि पसलियां एक दूसरी में घुस जाती हैं, जिस तरह हाथ में हाथ डालने से उंगलियां एक दूसरी में घुस जाती हैं। उसके बाद नब्बे या निन्नान्वे अज़दहे उस पर मुसल्लत हो जाते हैं, जो उसको नोचते रहते हैं और क़यामत तक यही होता रहेगा। हुज़ूर सल्ल० फ़र्माते हैं कि अगर एक अज़दहा भी उनमें से ज़मीन पर फुंकार मार दे, तो क़यामत तक ज़मीन में घास न उगे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि क़ब्र या जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा।

एक हदीस में आया है कि नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ। इर्शाद फ़र्माया कि इन दोनों को अज़ाब हो रहा है एक को चुग़लख़ोरी के जुर्म में, दूसरे को पेशाब की एहतियात न करने में (कि बदन को उससे बचाता न था)।

हमारे कितने मुहज़्ज़ब लोग हैं, जो इस्तिंजे को ऐब समझते हैं, उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं।

उलमा को पेशाब से न बचना गुनाहे कबीरा बताया है। इब्ने हजर मक्की रह० ने लिखा है कि सही रिवायत में आया है कि अक्सर अज़ाबे क़ब्र पेशाब की वजह

---

1. जहां तक नज़र जाए, 2. पीठ यानी ऊपर,

से होता है।

एक हदीस में आया है कि क़ब्र में सबसे पहले मुतालबा पेशाब का होता है, बिल् जुम्ला अज़ाबे क़ब्र निहायत सख़्त चीज है। और जैसा कि उसके होने में बाज़ गुनाहों को ख़ास दख़ल है, उसी तरह उससे बचने में भी बाज़ इबादात को ख़ुसूसी शराफ़त हासिल है। चुनांचे मुतअद्दद अहादीस में वारिद है कि सूरः 'तबारकल्लज़ी' का हर रात को पढ़ते रहना अज़ाबे क़ब्र से निजात का सबब है और अज़ाबे जहन्नम से भी हिफ़ाज़त का सबब है और अल्लाह के ज़िक्र के बारे में तो हदीसे बाला है ही।

(۱۲) عَنْ اَبِی الدَّرْدَآءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَیَبْعَثَنَّ اللّٰہُ اَقْوَامًا یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ فِیْ وُجُوْھِھِمُ النُّوْرُ عَلٰی مَنَابِرِ اللُّؤْلُؤِ یَغْبِطُھُمُ النَّاسُ لَیْسُوْا بِاَنْبِیَآءِ وَلَاشُھَدَآءِ فَقَالَ اَعْرَابِیٌّ حَلِّھِمْ لَنَا نَعْرِفْھُمْ قَالَ ھُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِی اللّٰہِ مِنْ قَبَآئِلَ شَتّٰی وَبِلَادٍ شَتّٰی یَجْتَمِعُوْنَ عَلٰی ذِکْرِ اللّٰہِ یَذْکُرُوْنَہٗ اخرجہ الطبرانی باسناد حسن کذا فی الدر و مجمع الزوائد والترغیب للمنذری وذکر ایضالہ متابعۃ بروایۃ عمرو بن عبسۃ عند الطبرانی مرفوعًا قال المنذری و اسنادہ مقارب لاباس بہ ورقم لحدیث عمرو بن عبسۃ فی الجامع الصغیر بالحسن و فی مجمع الزوائد رجالہ موثقون و فی مجمع الزوائد بمعنی ھذا الحدیث مطولا و فیہ حُلْھُمْ لَنَا یَعْنِیْ صِفْھُمْ لَنَا شَکِّلْھُمْ لَنَا فَسُرَّ وَجْہُ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بِسُؤَالِ الْاَعْرَابِیِّ الحدیث۔ قال رواہ احمد والطبرانی بنحوہ ورجالہ وثقوا قلت وفی الباب عن ابی ھریرۃؓ عند البیھقی وفی الشعب اِنَّ فِی الْجَنَّۃِ لَعُمُدًا مِّنْ یَاقُوْتٍ عَلَیْھَا غُرَفٌ مِّنْ زَبَرْجَدٍ لَھَا اَبْوَابٌ مُّفَتَّحَۃٌ تُضِیْءُ کَمَا یُضِیْءُ الْکَوْکَبُ الدُّرِّیُّ یَسْکُنُھَا الْمُتَحَابُّوْنَ فِی اللّٰہِ تَعَالٰی وَالْمُتَجَالِسُوْنَ فِی اللّٰہِ تَعَالٰی وَالْمُتَلَاقُوْنَ فِی اللّٰہِ کذا فی الجامع الصغیر ورقم لہ بالضعف وذکر فی مجمع الزوائد لہ شواھد وکذا فی المشکوۃ۔

12. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़यामत के दिन अल्लाह जल्ले शानुहू बाज़ी क़ौमों का हश्र ऐसी तरह फ़रमायेंगे कि उनके चेहरों में नूर चमकता हुआ होगा। वह मोतियों के मिंबर पर होंगे, लोग उन पर रश्क करते होंगे, वह अम्बिया और शुहदा नहीं होंगे, किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! उनका हाल बयान कर दीजिए कि हम उनको पहचान लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वह लोग होंगे, जो अल्लाह की मुहब्बत में मुख़्तलिफ़ जगहों से, मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों से आकर एक जगह जमा हो गये हों और अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल हों। दूसरी हदीस में है कि जन्नत में याकूत के स्तून होंगे, जिन पर ज़बर्जद (ज़मुर्रद) के बाला ख़ाने

होंगे, उनमें चारों तरफ़ दरवाज़े खुले हुए होंगे। वह ऐसे चमकते होंगे, जैसे कि निहायत रोशन सितारा चमकता है। उन बालाख़ानों में वह लोग रहेंगे, जो अल्लाह के वास्ते आपस में मुहब्बत रखते हों और वह लोग जो अल्लाह ही के वास्ते एक जगह पर इकट्ठे हों और वह लोग जो अल्लाह ही के वास्ते आपस में मिलते-जुलते हों।

फ़– इसमें अतिब्बा[1] का इख़्तिलाफ़ है कि ज़बर्जद और ज़मुर्रद एक ही पत्थर के दो नाम हैं या एक ही पत्थर की दो क़िस्में हैं या एक ही नौअ के दो पत्थर हैं। बहरहाल यह एक पत्थर होता है, जो निहायत ही रोशन चमकदार होता है। इसके पन्ने बनते हैं जो बाज़ार में चमकदार काग़ज़ की तरह से बिकते हैं।

आज ख़ानक़ाहों के बैठने वालों पर हर तरह इल्ज़ाम है, हर तरफ़ से फ़िक़रे कसे जाते हैं। आज उन्हें जितना दिल चाहे, बुरा-भला कह लें, कल जब आंख खुलेगी, उस वक़्त हक़ीक़त मालूम होगी कि यह बोरियों पर बैठने वाले क्या कुछ कमाकर ले गये, जब वह उन मिंबरों और बालाख़ानों पर होंगे, और यह हंसने वाले और गालियां देने वाले क्या कमा कर ले गये :-

فَسَوْفَ تَرَىٰ إِذَا انْكَشَفَ الْغُبَارُ — फ़सौ फ़ तरा इज़न्क श फ़ल् गुबारू।

أَفَرَسٌ تَحْتَ رِجْلِكَ أَمْ حِمَارٌ — अफ़र सुन तह्त रिज्लि क अम हिमारू।।

(अन्क़रीब जब ग़ुबार हट जायेगा, तो मालूम होगा कि घोड़े पर सवार थे या गधे पर।)

उन ख़ानक़ाहों की अल्लाह के यहां क्या क़द्र है, जिन पर आज चारों तरफ़ से गालियां पड़ती हैं, यह उन अहादीस से मालूम होता है जिन में इनकी फ़ज़ीलतें ज़िक्र की गयी हैं।

एक हदीस में वारिद है कि जिस घर में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता हो, वह आसमान वालों के लिए ऐसा चमकता है जैसे ज़मीन वालों के लिए सितारे चमकते हैं।

एक हदीस में है कि ज़िक्र की मजालिस पर जो सकीना[2] (एक ख़ास नेमत)

---

1. डाक्टरों, 2. सकीना का मतलब आठवीं हदीस में आ चुका है और लेखक की दूसरी किताब 'फ़ज़ाइले कुरआन' में इसकी पूरी तफ़्सील मौजूद है,

नाज़िल होती है, फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं, रहमते इलाही उनको ढांक लेती है और अल्लाह जल्ले–जलालुहू अर्श पर उनका ज़िक्र फ़र्माते हैं।

अबूरिज़ीन रज़ि० एक सहाबी हैं। वह कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि तुझे दीन की तक़्वियत[1] की चीज़ बताऊं, जिससे तू दोनों जहान की भलाई को पहुंचे। वह अल्लाह का ज़िक्र करने वालों की मज्लिसें हैं, उनको मज़बूत पकड़ और जब तू तंहा हुआ करे, तो जितनी भी क़ुदरत हो, अल्लाह का ज़िक्र करता रह।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि आसमान वाले उन[2] घरों को जिनमें अल्लाह का ज़िक्र होता है, ऐसा चमकदार देखते हैं, जैसा कि ज़मीन वाले सितारों को चमकदार देखते हैं। यह घर, जिनमें अल्लाह का ज़िक्र होता है, ऐसे रोशन और मुनव्वर होते हैं कि अपने नूर की वजह से सितारों की तरह चमकते हैं और जिनको अल्लाह जल्ले शानुहू नूर के देखने की आंखें अता फ़र्माते हैं, वह यहां भी उनकी चमक देख लेते हैं। बहुत से अल्लाह के बंदे ऐसे हैं, जो बुज़ुर्गों का नूर उनके घरों का नूर अपनी आंखों से चमकता हुआ देखते हैं, चुनांचे हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह०, जो मशहूर बुज़ुर्ग हैं, फ़र्माते हैं कि जिन घरों में अल्लाह का ज़िक्र होता है, वह आसमान वालों के नज़दीक ऐसे चमकते हैं, जैसे कि चिराग़।

शेख़ अब्दुल् अज़ीज़ दब्बाग़ रह० अभी क़रीब ही ज़माने में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, जो बिल्कुल उम्मी[3] थे, मगर क़ुरआन शरीफ़ की आयत, हदीसे क़ुदसी[4], हदीस नबवी और मौज़ूअ हदीस[5] को अलाहिदा–अलाहिदा बता देते थे और कहते थे कि मुतकल्लिम[6] की ज़ुबान से जब लफ़्ज़ निकलते हैं, तो उन अल्फ़ाज़ के नूर से मालूम हो जाता है कि किसका कलाम है कि अल्लाह पाक के कलाम का नूर अलाहिदा है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम का नूर दूसरा है और दूसरे कलामों में दोनों नूर नहीं होते।

'तज़्किरतुल् ख़लील' यानी सवानेह[7] हज़रत अक़्दस मौलाना ख़लील अहमद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू में ब–रिवायत मौलाना ज़फ़र अहमद साहब लिखा है कि

---

1. क़ूवत (शक्ति) पहुंचाना, 2. यानी फ़रिश्ते, 3. अपढ़, 4. अल्लाह तआला का इशारा हुज़ूर सल्ल० की ज़ुबानी, 5. झूठी हदीस, 6. बोलने वाला, प्रथम पुरुष, 7. जीवनी

हज़रत रह० के पांचवे हज में, जिस वक़्त हज़रत मस्जिदुल् हराम में तवाफ़े कुदूम[1] के लिए तशरीफ़ लाये, तो अह्क़र मौलाना मुहिब्बुद्दीन साहब रह० (जो आला हज़रत मौलाना अल-हाज्ज इम्दादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के ख़ास ख़ुलफ़ा में थे और साहबे कश्फ़ मशहूर थे) के पास बैठा था। मौलाना उस वक़्त दरूद शरीफ़ की किताब खोले हुए अपना विर्द[2] पढ़ रहे थे कि दफ़अतन[3] मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़र्माने लगे, इस वक़्त हरम में कौन आ गया कि दफ़अतन सारा हरम अन्वार से भर गया। मैं ख़ामोश रहा कि इतने में हज़रत रह० तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर मौलाना के पास से गुज़रे। मौलाना खड़े हो गये और हंसकर फ़र्माया कि मैं भी तो कहूं, कि आज हरम में कौन आ गया।

मजालिसे ज़िक्र की फ़ज़ीलत मुख़्तलिफ़ उन्वानात से बहुत सी अहादीस में वारिद हुई है। एक हदीस में वारिद है कि अफ़ज़ल तरीन रिबात नमाज़ है और ज़िक्र की मजालिस। रिबात कहते हैं दारुल्इस्लाम[4] की सरहद की हिफ़ाज़त करने को ताकि कुफ़्फ़ार उस तरफ़ से हमला न करें।

(۱۳) عَنْ اَنَسٍ رض اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوْا قَالَ وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ قَالَ حِلَقُ الذِّكْرِ

اخرجه احمد والترمذی وحسنه كذا فی المشكوة برواية الترمذی وزاد فی الجامع الصغير والبيهقی فی الشعب ورقم له بالصحة وفی الباب عن جابر عند ابن ابی الدنيا والبزار وابی يعلی والحاكم وصححه والبيهقی فی الدعوات كذا فی الدر وفی الجامع الصغير برواية الطبرانی عن ابن عباس بلفظ مجالس العلم وبرواية الترمذی عن ابی هريرة بلفظ المساجد محل حلق الذكر وزاد الرتع سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ۔

13. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जब जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो, तो ख़ूब चरो। किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं ? इर्शाद फ़र्माया, ज़िक्र के हल्क़े।

फ़— मक़्सूद यह है कि किसी ख़ुश-क़िस्मत को इन मजालिस और उन हल्क़ों तक रसाई हो जाये, तो इसको बहुत ज़्यादा ग़नीमत समझना चाहिए कि यह दुनिया ही में जन्नत के बाग़ हैं। और 'ख़ूब चरो' से इस तरफ़ इशारा फ़र्माया कि जैसे जानवर, जब किसी सब्ज़ाज़ार या किसी बाग़ में चरने लगता है तो मामूली से हटाने से भी

1. मक्का मुकर्रमा पहुंचने का तवाफ़, 2. वज़ीफ़ा, 3. यकायक, 4. इस्लामी मुल्क,

नहीं हटता, बल्कि मालिक के डंडे वग़ैरह भी खाता रहता है, लेकिन उधर से मुंह नहीं मोड़ता। उसी तरह ज़िक्र करने वाले को भी दुनियावी तफ़क्कुरात और मवानेअ की वजह से उधर से मुंह न मोड़ना चाहिए। और जन्नत के बाग़ इसलिए फ़र्माये कि जैसा कि जन्नत में किसी क़िस्म की आफ़त नहीं होती, उसी तरह यह मजालिस भी आफ़ात से महफ़ूज़ रहती है।

एक हदीस में आया है कि अल्लाह का ज़िक्र दिलों की शिफ़ा है, यानी दिल में जिस क़िस्म के अमराज़ पैदा होते हैं, तकब्बुर[1], हसद,[2] कीना[3] वग़ैरह सभी अमराज़ का इलाज है।

साहिबुल 'फ़वाइद रह० फ़िस्सलाति वल् अवाइद' ने लिखा है कि आदमी ज़िक्र पर मुदावमत[4] से तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है और सही हदीस में आया है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़र्माते हैं कि मैं तुम्हें ज़िक्रुल्लाह की कसरत का हुक्म करता हूं और उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे किसी शख़्स के पीछे कोई दुश्मन लग जाये और वह उससे भाग कर किसी क़िले में महफ़ूज़ हो जाये और ज़िक्र करने वाला अल्लाह जल्ले शानुहू का हमनशीन होता है। और इससे बढ़कर और क्या फ़ायदा होगा कि वह मालिकुल् मुल्क[5] का हमनशीन हो जाये।

इसके अलावा उससे शर्हेसद्र[6] हो जाता है, दिल मुनव्वर हो जाता है। उसके दिल की सख़्ती दूर हो जाती है, इसके अलावा और भी बहुत से ज़ाहिरी और बातिनी मुनाफ़े होते हैं, जिनको बाज़ उलमा ने सौ तक शुमार किया है, इन्तिहा।

हज़रत अबूउमामा रज़ि० की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, मैंने ख़्वाब में देखा कि जब भी आप अन्दर जाते हैं या बाहर आते हैं या खड़े होते हैं या बैठते हैं, तो फ़रिश्ते आपके लिए दुआ करते हैं। अबूउमामा रज़ि० ने फ़र्माया, अगर तुम्हारा दिल चाहे तो तुम्हारे लिए भी वह दुआ कर सकते हैं। फिर यह आयत पढ़ी–

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ... رَحِيمًا

या एय्युहल्लज़ी न आमनुज़्कुरुल्ला ह ज़िक्रन कसीरा० से रहीमा० तक। गोया इस तरफ़ इशारा है कि हक़ तआला शानुहू की रहमत और मलाइका की दुआ, तुम्हारे ज़िक्र पर मुतफ़र्रअ[7] है। जितना तुम ज़िक्र करोगे, उतना ही उधर से ज़िक्र होगा।

---

1. घमंड, 2. जलन, 3. मन का खोट, 4. पाबंदी के साथ, हमेशा
5. हुकूमत का मालिक, अल्लाह 6. दिल का खुलना, 7. यानी तुम्हारे ज़िक्र की वजह से,
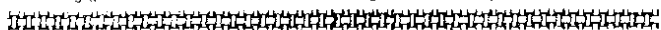
(14) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ عَجَزَ مِنْكُمْ عَنِ اللَّيْلِ اَنْ يُّكَابِدَهٗ وَبَخِلَ بِالْمَالِ اَنْ يُّنْفِقَهٗ وَجَبُنَ عَنِ الْعَدُوِّ اَنْ يُّجَاهِدَهٗ فَلْيُكْثِرْ ذِكْرَ اللّٰهِ رواه الطبرانى والبيهقى والبزار واللفظ له وفى سنده ابو يحيى القتات وبقية محتج بهم فى الصحيح كذا فى الترغيب قلت هو من رواة البخارى فى الادب المفرد والترمذى وابى داؤد وابن ماجة وثقه ابن معين وضعفه آخرون وفى التقريب لين الحديث وفى مجمع الزوائد رواه البزار والطبرانى وفيه القتات قد وثق وضعفه الجمهور وبقية رجال البزار رجال الصحيح۔

14. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो तुममें से आजिज हो रातों को मेहनत करने से और बुख्ल की वजह से माल भी खर्च न किया जाता हो यानी नफ़्ली सदकात और बुजदिली की वजह से जिहाद में भी शिर्कत न कर सकता हो, उसको चाहिए कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से किया करे।

फ़– यानी हर क़िस्म की कोताही, जो इबादाते नफ़्लिया में होती है अल्लाह के ज़िक्र की कसरत उसकी तलाफ़ी कर सकती है।

हज़रत अनस रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि अल्लाह का ज़िक्र ईमान की अलामत है और निफ़ाक़ से बराअत[1] और शैतान से हिफ़ाज़त है और जहन्नम की आग से बचाव है। और इन्हीं मुनाफ़े की वजह से अल्लाह का ज़िक्र बहुत सी इबादतों से अफ़ज़ल क़रार दिया गया है, बिलख़ुस शैतान के तसल्लुत से बचने में इसको ख़ास दख़ल है।

एक हदीस में आया है कि शैतान घुटने जमाये हुए आदमी के दिल पर मुसल्लत रहता है। जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो यह आजिज़ व ज़लील होकर पीछे हट जाता है, आदमी ग़ाफ़िल होता है, तो यह वस्वसे डालना शुरू कर देता है, इसीलिए सूफ़िया-ए-किराम ज़िक्र की कसरत कराते हैं ताकि क़ल्ब में उसके वसाविस की गुंजाइश न रहे और वह इतना क़वी हो जाये कि उसका मुक़ाबला कर सके। यही राज़ है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ैज़े सोहबत[2] से यह क़ूव्वते क़ल्बीया[3] आला दर्जे पर हासिल थी, तो उनको ज़र्बें लगाने की ज़रूरत पेश न आती थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

1. छूट, छुटकारा, 2. सोहबत के फ़ैज़से, 3. क़ल्ब कर क़ूवत (ताक़त)

के ज़माने से जितना बोद[1] होता गया, उतनी ही क़ल्ब के लिए उस मुक़व्वी-ए-क़ल्ब[2] ख़मीरा की ज़रूरत बढ़ती गयी। अब क़ुलूब इस दर्जा माऊफ़[3] हो चुके हैं कि बहुत से इलाज से भी वह दर्जा क़ुव्वत का तो हासिल नहीं होता लेकिन जितना भी हो जाता है, वही बसा ग़नीमत[4] है कि वबाई मर्ज़ में जिस क़दर भी कमी हो, बेहतर है।

एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा नक़्ल किया है कि उन्होंने अल्लाह जल्ले शानुहू से दुआ की कि शैतान के वस्वसा डालने की सूरत उन पर मुंकशफ़ हो जाये कि किस तरह डालता है, तो उन्होंने देखा कि दिल के बायीं तरफ़ मोढ़े के पीछे मच्छर की शक्ल से बैठा है। एक लम्बी से सूंड मुंह पर है, जिसको सूई की तरह से दिल की तरफ़ ले जाता है, उसको ज़ाकिर[5] पाता है, तो जल्दी से उस सूंड को खींच लेता है, ग़ाफ़िल पाता है, तो उस सूंड के ज़रिए से वसावस और गुनाहों का ज़हर इन्जेक्शन के तरीक़े से वह दिल में भरता है।

एक हदीस में भी यह मज़मून आया है कि शैतान अपनी नाक का अगला हिस्सा आदमी के दिल पर रखे हुए बैठा रहता है, जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो ज़िल्लत से पीछे हट जाता है और जब ग़ाफ़िल होता है, तो उसके दिल को लुक़्मा बना लेता है।

(۱۵) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ اَکْثِرُوْا ذِکْرَ اللّٰہِ حَتّٰی یَقُوْلُوْا مَجْنُوْنٌ. رواہ احمد وابو یعلی وابن حبان والحاکم فی صحیحہ وقال صحیح الاسناد وروی عن ابن عباس مرفوعا بلفظ اُذْکُرُوا اللّٰہَ ذِکْرًا یَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ اِنَّکُمْ مُرَاؤُنَ رواہ الطبرانی ورواہ البیھقی عن ابی الجوزاء مرسلا کذا فی الترغیب والمقاصد الحسنۃ للسخاوی ھکذا فی الدر المنثور للسیوطی الا انہ عزا حدیث ابی الجوزاء الی عبد اللّٰہ ابن احمد فی زوائد الزھد وعزاہ فی الجامع الصغیر الی سعید بن منصور فی سننہ والبیھقی فی الشعب ورقم لہ بالضعف وذکر فی الجامع الصغیر ایضا بروایۃ الطبرانی عن ابن عباس مسندا ورقم لہ بالضعف وعزا حدیث ابی سعید الی احمد وابی یعلی فی مسندہ وابن حبان والحاکم والبیھقی فی الشعب ورقم لہ بالحسن.

15. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह का ज़िक्र ऐसी कसरत से किया करो कि लोग मजनूं कहने लगें। दूसरी हदीस में है कि ऐसा ज़िक्र करो कि मुनाफ़िक़ लोग तुम्हें 'रियाकार'[6] कहने लगें।

फ़- इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि मुनाफ़िक़ों या बेवक़ूफ़ों के रियाकार

1. दूरी, 2. दिल को ताक़त पहुंचाने वाले, 3. बड़ी हद तक ग़नीमत,
4. खुल जाए, 5. ज़िक्र करने वाला, 6. दिखावा करने वाला,

कहने या मजनूं कहने से ऐसी बड़ी दौलत छोड़ना न चाहिए, बल्कि इस कसरत और एहतमाम से करना चाहिए कि यह लोग तुमको पागल समझ कर तुम्हारा पीछा छोड़ दें और मजनून जब ही कहा जायेगा जब निहायत कसरत से और ज़ोर से ज़िक्र किया जाये, आहिस्ता में यह बात नहीं हो सकती।

इब्ने कसीर रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से नक़्ल किया है, वह फ़र्माते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने कोई चीज़ बन्दों पर ऐसी फ़र्ज़ नहीं फ़र्मायी, जिसकी कोई हद मुक़र्रर न कर दी हो, और फिर उसके उज़्र को क़ुबूल न फ़र्मा लिया हो, बजुज़ अल्लाह के ज़िक्र के कि न इसकी कोई हद मुक़र्रर फ़र्मायी और न अक़्ल रहने तक किसी को माज़ूर[1] क़रार दिया। चुनांचे इर्शाद है-

उज़्कुरुल्लाह ज़िक्रन कसीरा० اُذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا

(अल्लाह जल्ले शानुहू का ख़ूब कसरत से ज़िक्र किया करो) रात में, दिन में, जंगल में, दरिया में, सफ़र में, हज़र[2] में फ़क़्र[3] में, तवंगरी[4] में, बीमारी में, सेहत में, आहिस्ता और पुकार कर और हर हाल में।

हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० ने 'मुनब्बिहात' में लिखा है कि हज़रत उस्मान रज़ि० से क़ुरआन पाक के इर्शाद-

'व का न तह्तहू कंज़ुल्लहुमा'

में मन्क़ूल है कि वह सोने की एक तख़्ती थी, जिसमें सात सतरें लिखी हुई थी,, जिनका तर्जुमा यह है-

1. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर, जो मौत को जानता हो, फिर भी हंसे।

2. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर, जो यह जानता है कि दुनिया आख़िर एक दिन ख़त्म होने वाली है, फिर भी उसमें रग़्बत करे।

3. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर , जो यह जानता हो कि हर चीज़ मुक़द्दर से है, फिर भी किसी चीज़ के जाते रहने पर अफ़सोस करे।

4. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर, जिसको आख़िरत में हिसाब का यक़ीन हो, फिर भी माल जमा करे।

---

1. मजबूर, 2. मुस्तकिल ठहरने में, 3. तंगी, 4. ख़ुशहाली,

5. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर, जिसको जहन्नम की आग का इल्म हो, फिर भी गुनाह करे।

6. मुझे ताज्जुब उस शख़्स पर, जो अल्लाह को जानता हो, फिर किसी और चीज़ का ज़िक्र करे।

7. मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर, जिसको जन्नत की ख़बर हो, फिर दुनिया में किसी चीज़ से राहत पाये।

बाज़ नुस्ख़ों में यह भी लिखा है कि 'मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो शैतान को दुश्मन समझे, फिर भी उसकी इताअत करे।

हाफ़िज़ रह० ने हज़रत जाबिर रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद भी नक़्ल किया है कि हज़रत जिब्रील अलैहि० मुझे अल्लाह के ज़िक्र की इस क़द्र ताकीद करते रहे कि मुझे यह गुमान होने लगा, कि बग़ैर ज़िक्र के कोई चीज़ नफ़ा न देगी। इन सब रिवायात से यह मालूम हुआ कि ज़िक्र की जितनी भी कसरत मुम्किन हो, दरेग़ न करे। लोगों के मजनून या रियाकार कहने की वजह से उसको छोड़ देना अपना ही नुक़्सान करना है।

सूफ़िया ने लिखा है कि यह भी शैतान का एक धोखा है कि अव्वल वह ज़िक्र से, इस ख़्याल से रोकता है कि लोग देखेंगे, कोई देखेगा तो क्या कहेगा, वग़ैरह-वग़ैरह। फिर शैतान को रोकने के लिए यह एक मुस्तक़िल ज़रिया और हीला मिल जाता है, इसलिए यह तो ज़रूरी है कि वह दिखलाने की नीयत से कोई अमल न करे, लेकिन अगर कोई देख ले, तो बला से देखे, इस वजह से छोड़ना भी न चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुलबजादैन रज़ि० एक सहाबी हैं, जो लड़कपन में यतीम हो गये थे। चचा के पास रहते थे, वह बहुत अच्छी तरह रखता था। घर वालों से छुपकर मुसलमान हो गये थे। चचा को ख़बर हो गयी, तो उसने ग़ुस्से में बिल्कुल नंगा करके निकाल दिया मां भी बेज़ार थी, लेकिन फिर मां थी। एक मोटी-सी चादर नंगा देखकर दे दी, जिसको उन्होंने दो टुकड़े करके एक से सतर[1] ढांका, दूसरा ऊपर डाल दिया। मदीना तय्यिबा हाज़िर हो गये। हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े पर पड़े रहा करते थे और बहुत कसरत से बुलंद आवाज़ के साथ ज़िक्र करते थे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि क्या यह शख़्स रियाकार है कि इस तरह ज़िक्र करता है। हुज़ूर

1. छिपाने की जगह, शर्मगाह,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, नहीं बल्कि यह अव्वाहीन[1] में है। ग़ज़्वा[2]-ए-तबूक में इंतिक़ाल हुआ। सहाबा रज़ि० ने देखा कि रात को क़ब्रों के क़रीब चिराग़ जल रहा है। क़रीब जाकर देखा कि हुज़ूर सल्ल० क़ब्र में उतरे हुए हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर को इर्शाद फ़र्मा रहे हैं कि अपने भाई को मुझे पकड़ा दो। दोनों हज़रात ने लाश को पकड़ा दिया। दफ़्न के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह ! मैं इससे राज़ी हूं, तू भी इससे राज़ी हो जा। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि यह सारा मंज़र देखकर मुझे तमन्ना हुई कि यह लाश तो मेरी होती है।

हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि०, जो अकाबिर सूफ़िया में हैं वह, फ़र्माते हैं कि किसी अमल को इस वजह से न करना कि लोग देखेंगे, यह भी रिया में दाख़िल है और इस वजह से किसी अमल को करना ताकि लोग देखें, यह शिर्क में दाख़िल है।

एक हदीस में आया है कि बाज़ आदमी ज़िक्र की कुंजियां हैं कि जब उनकी सूरत देखी जाये, तो अल्लाह का ज़िक्र किया जाये यानी उनकी सूरत देखकर ही अल्लाह का ज़िक्र याद आये।

एक और हदीस में वारिद है कि अल्लाह के वली हैं वह लोग,जिन को देखकर अल्लाह तआला याद आते हों। एक हदीस में आया है कि तुममें बेहतरीन वह लोग हैं, जिनको देखकर अल्लाह की याद ताज़ा हो।

एक हदीस में आया है, तुम में से बेहतरीन शख़्स वह है, जिसके देखने से अल्लाह तआला याद आते हों और उसके कलाम[3] से इल्म में तरक़्क़ी होती हो और उसके आमाल से आख़िरत की रग़्बत पैदा होती हो। और यह बात जब ही हासिल हो सकती है, जब कोई शख़्स कसरत से ज़िक्र का आदी हो और जिसको ख़ुद ही तौफ़ीक़ न हो, उसको देखकर क्या किसी को अल्लाह की याद आ सकती है। बाज़ लोग पुकार कर ज़िक्र करने को बिद्अत और नाजायज़ बताते हैं, यह ख़्याल हदीस पर नज़र की कमी से पैदा हो गया है।

मौलाना अब्दुल हई साहब रह० ने एक रिसाला 'सबाहतुल्फ़िक्र' इसी मस्अले में तस्नीफ़ फ़र्माया है, जिसमें तक़रीबन पचास हदीसें ऐसी ज़िक्र फ़र्मायी हैं, जिनसे जह्र (पुकार कर) साबित होता है, अल्बत्ता यह ज़रूरी अम्र है कि शरायत के साथ अपनी हुदूद के अन्दर रहे, किसी की अज़ीयत का सबब न हो।

---

1. ख़ुदा की तरफ़ तवज्जोह रखने वाले लोग, 2. लड़ाई, 3. बातें,

١٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ اَلْإِمَامُ الْعَادِلُ وَالشَّابُّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللهِ وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ بِالْمَسَاجِدِ وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللهِ اِجْتَمَعَا عَلٰى ذٰلِكَ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصَبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ إِنِّي أَخَافُ اللهَ وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتّٰى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِيْنُهُ وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ - رواه البخاري ومسلم وغيرهما كذا في الترغيب والمشكوٰة وفي الجامع الصغير برواية مسلم عن ابي هريرة وابي سعيد معاً وذكر عدة طرق اخرى.

16. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सात आदमी हैं, जिन को अल्लाह जल्ले शानुहू अपनी रहमत के साये में ऐसे दिन जगह अता फ़रमायेगा, जिस दिन उसके साये के सिवा कोई साया न होगा–

(1) एक आदिल बादशाह,

(2) दूसरे वह जवान, जो जवानी में अल्लाह की इबादत करता हो,

(3) तीसरे वह शख़्स, जिसका दिल मस्जिद में अटका रहा हो,

(4) चौथे वह दो शख़्स, जिनमें अल्लाह ही के वास्ते मुहब्बत हो, उसी पर उनका इज्तिमाअ[1] हो, उसी पर जुदाई,

(5) पांचवें वह शख़्स, जिसको कोई हसीन शरीफ़ औरत अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे और वह कह दे कि मुझे अल्लाह का डर मानेअ है,

(6) छठे वह शख़्स, जो ऐसे मख़्फ़ी तरीक़े से सद्क़ा करे, कि दूसरे हाथ को भी ख़बर न हो,

(7) सातवें वह शख़्स, जो अल्लाह का ज़िक्र तन्हाई में करे और आंसू बहने लगें।

फ़– आंसू बहने का मतलब यह भी हो सकता है कि दीदा व दानिस्ता[2] अपने मुआसी और गुनाहों को याद करके रोने लगे और दूसरा मतलब यह भी हो

1. मिलन, 2. जान-बूझकर

सकता है कि ग़ल्बा-ए-शौक़[1] में बे-इख़्तियार आंखों से आंसू निकलने लगें।

ब-रिवायत साबित बनानी रह० एक बुज़ुर्ग का मक़ूला[2] नक़ल किया है, वह फ़र्माते हैं, मुझे मालूम हो जाता है कि मेरी कौन सी दुआ क़ुबूल हुई। लोगों ने पूछा कि किस तरह मालूम हो जाता है? फ़र्माने लगे कि जिस दुआ में बदन के बाल खड़े हो जाते हैं, और दिल धड़कने लगता है और आंखों से आंसू बहने लगते हैं, वह दुआ क़ुबूल होती है।

उन सात आदमियों में, जिनका ज़िक्र हदीस पाक में वारिद हुआ, एक वह शख़्स भी है, जो अल्लाह का ज़िक्र तन्हाई में करे और रोने लगे। उस शख़्स में दो ख़ूबियां जमा हैं और दोनों आला दर्जे की हैं-

एक- इख़्लास की तन्हाई में अल्लाह की याद में मश्ग़ूल हुआ,

दूसरा- अल्लाह का ख़ौफ़ या शौक़ कि दोनों में रोना आता है और दोनों कमाल हैं-

हमारा काम है रातों को रोना यादे दिल्बर में,
हमारी नींद है मह्वे ख़्याले यार[3] हो जाना।

हदीस के अल्फ़ाज़ हैं-

रजुलुन ज़ क र ल्ला ह ख़ालियन् رَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا

(एक वह आदमी, जो अल्लाह का ज़िक्र करे, इस हाल में कि ख़ाली हो।)

सूफ़िया ने लिखा है कि ख़ाली होने के दो मतलब हैं-

एक- यह कि आदमियों से ख़ाली हो, जिसके माना तन्हाई के हैं। यह आम मतलब है।

दूसरे- यह कि दिल अग़्यार[4] से ख़ाली हो। वह फ़र्माते हैं कि असल ख़ल्वत यही है। इसलिए अक्मल दर्जा तो यह है कि दोनों ख़ल्वतें हासिल हों लेकिन अगर कोई शख़्स मज्मे में हो और दिल ग़ैरों से बिल्कुल ख़ाली हो और ऐसे वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से कोई शख़्स रोने लगे, तो वह भी इसमें दाख़िल है कि मज्मे का होना, न होना उसके हक़ में बराबर है। जब उसका दिल मज्मा तो दरकिनार, ग़ैर अल्लाह

---

1. शौक़ के ग़ालिब होने की वजह से, 2. क़ौल, 3. यार के ख़्याल में पड़ा रहना, 4. ग़ैरों,

के इल्तिफ़ात से भी ख़ाली है, तो उसको मज्मा क्या मुज़िर[1] हो सकता है। अल्लाह की याद में या उसके ख़ौफ़ से रोना बड़ी ही दौलत है। ख़ुशनसीब है वह शख़्स, जिस को हक़ तआला शानुहू मयस्सर फ़र्मा दें।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ से रोये, वह उस वक़्त तक जहन्नम में नहीं जा सकता जब तक कि दूध थनों में वापस जाये (और ज़ाहिर है कि यह ना-मुम्किन है, पस ऐसे ही उसका जहन्नम में जाना भी ना-मुम्किन है)

एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ से रोये हत्ता कि उसके आंसुओं में से कुछ ज़मीन पर टपक जाये, तो उसको क़यामत के दिन अज़ाब नहीं होगा।

एक हदीस में आया है कि दो आंखों पर जहन्नम की आग हराम है-

(1) वह एक आंख, जो अल्लाह के ख़ौफ़ से रोयी हो, और

(2) दूसरी वह, जो इस्लाम की और मुसलमानों की कुफ़्फ़ार से हिफ़ाज़त करने में जागी हो।

एक और हदीस में है कि जो आंख अल्लाह के ख़ौफ़ से रोयी हो, उस पर जहन्नम की आग हराम है और जो आंख अल्लाह की राह में जागी हो उस पर भी हराम है और जो आंख नाजायज़ चीज़ मस्लन नामहरम वग़ैरह) पर पड़ने से रुक गयी हो, उस पर भी हराम है और जो आंख अल्लाह की राह में ज़ाया[2] हो गयी हो, उस पर भी जहन्नम की आग हराम है।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला हो, वह ऐसा है, जैसे अकेला कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में चल दिया हो।

١٤ - عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُنَادِیْ مُنَادٍ یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ اَیْنَ اُولُوا الْاَلْبَابِ قَالُوْا اَیَّ اُولِی الْاَلْبَابِ تُرِیْدُ قَالَ الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ عُقِدَ لَهُمْ لِوَاءٌ فَاتَّبَعَ الْقَوْمُ لِوَاءَهُمْ وَقَالَ لَهُمْ اُدْخُلُوْهَا خٰلِدِیْنَ اخرجه الاصبهانی فی الترغیب كذا فی الدر

1. नुक़्सान पहुंचाने वाला, 2. यानी घयल होकर बेकार हो गयी हो,

17. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़यामत के दिन एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि अक्लमंद लोग कहां हैं? लोग पूछेंगे कि अक्लमंदों से कौन लोग मुराद हैं ? जवाब मिलेगा, वह लोग, जो अल्लाह का ज़िक्र करते थे, खड़े और बैठे और लेटे हुए (यानी हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करते रहते थे) और आसमानों और ज़मीनों के पैदा होने में ग़ौर करते थे और कहते थे कि या अल्लाह ! आपने यह सब बे-फ़ायदा तो पैदा किया ही नहीं, हम आपकी तस्बीह करते हैं, आप हमको जहन्नम के अज़ाब से बचा लीजिए। इसके बाद उन लोगों के लिए एक झंडा बनाया जायेगा, जिसके पीछे यह सब जायेंगे उनसे कहा जायेगा कि हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

फ़— आसमानों और ज़मीनों के पैदा होने में ग़ौर करते हैं यानी अल्लाह की क़ुदरत के मज़ाहिर और उसकी हिक्मतों के अजायब सोचते हैं, जिससे अल्लाह जल्ले जलालुहू की मारफ़त में क़ूव्वत पैदा होती है

इलाही यह आलम है .गुलज़ार तेरा।

इब्ने अबिद्दुन्या रह० ने एक मुर्सल रिवायत नक़ल की है कि नबी अकरमसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा रज़ि० की एक जमाअत के पास तशरीफ़ ले गये जो चुपचाप बैठे थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, क्या बात है ? किस सोच में बैठे हो ? अर्ज किया, मख़्लूकाते इलाहिया[1] की सोच में हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि हां, अल्लाह की ज़ात में ग़ौर न किया करो (कि वह वराउल्वरा[2] है), उसकी मख़्लूक़ात में ग़ौर किया करो।

हज़रत आइशा रज़ि० से एक शख़्स ने अर्ज किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई अजीब बात सुना दीजिए। फ़र्माया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कौन सी बात ऐसी थी, जो अजीब न थी। एक मर्तबा रात को तश्रीफ़ लाये, मेरे बिस्तर पर, मेरे लिहाफ़ में लेट गये, फिर इर्शाद फ़र्माया, छोड़, मैं तो अपने रब की इबादत करूं। यह फ़र्मा कर उठे, वुज़ू फ़र्माया और नमाज़ की नीयत बांधकर रोना शुरू कर दिया, यहां तक कि आंसू सीना-ए-मुबारक पर बहते रहे। फिर इसी तरह रुकूअ में रोते रहे, फिर सज्दे में इसी तरह रोते रहे। सारी रात इसी तरह गुज़ार दी, हत्ताकि सुबह की नमाज़ के वास्ते हज़रत बिलाल रज़ि० बुलाने के लिए आ गये

---

1. अल्लाह की मख़्लूक़ (सृष्टि), 2. यानी अल्लाह की ज़ात बहुत बुलंद व बरतर है। उसकी ज़ात में सोच-फ़िक्र करना गुमराही है।

मैंने अर्ज किया , या रसूलल्लाह ! आप तो बख़्शे बख़्शाये हैं फिर आप इतना क्यों रोये ? इर्शाद फ़र्माया, क्या मैं अल्लाह का शुक्र-गुजार बन्दा न बनूं? फिर फ़र्माया, मैं क्यों न रोता ? हालांकि आज यह आयतें नाज़िल हुयीं (यानी आयते बाला - इन्न फ़ी ख़ल्किस्समा वाति वल् अर्ज़ि से फ़ क़िना अज़ाबन्नार० तक-

फिर फ़र्माया कि हलाकत है उस शख़्स के लिए, जो इनको पढ़े और ग़ौर व फ़िक्र न करे।

आमिर बिन अब्दे कैस रह० कहते हैं कि मैंने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से सुना है कि एक से, दो से, तीन से नहीं (बल्कि इनसे ज़्यादा से सुना है) कि ईमान की रोशनी और ईमान का नूर ग़ौर व फ़िक्र है।

हजरत अबूहुरैरह रजि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि एक आदमी छत पर लेटा हुआ आसमान और सितारों को देख रहा था, फिर कहने लगा, ख़ुदा की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि तुम्हारा पैदा करने वाला भी कोई जरूर है। ऐ अल्लाह ! तू मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दे। नज़रे रहमत उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुई और उसकी मग़्फ़िरत हो गयी।

हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक साअत (लम्हे) का ग़ौर तमाम रात की इबादत से अफ़ज़ल है।

हजरत अबूदर्दा रज़ि० और हजरत अनस रज़ि० से भी यही नक़्ल किया गया है कि एक साअत का ग़ौर इन चीज़ों में अस्सी साल की इबादत से अफ़ज़ल है।

उम्मेदर्दा रज़ि० से किसी ने पूछा कि अबू दर्दा की अफ़ज़लतरीन[1] इबादत क्या थी ? फ़र्माया, ग़ौर व फ़िक्र।

ब-रिवायत अबूहुरैरह रजि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी यह नक़्ल किया गया है कि एक साअत का ग़ौर व फ़िक्र साठ वर्ष की इबादत से अफ़्ज़ल है। लेकिन इन रिवायतों का यह मतलब नहीं कि फिर इबादत की ज़रूरत नहीं रहती। हर इबादत अपनी जगह जो दर्जा रखती है, फ़र्ज हो या वाजिब, सुन्नत हो या मुस्तहब, उसके छोड़ने पर उसी दर्जा की वईद[2], अज़ाब या मलामत होगी, जिस दर्जे की वह इबादत होगी।

---

1. सबसे अच्छी, 2. धमकी,

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि ग़ौर व फ़िक्र को अफ़ज़ल इबादात इसलिए कहा गया कि इसमें मानी ज़िक्र के तो मौजूद होते ही हैं, दो चीज़ों का इज़ाफ़ा और होता है-

एक- अल्लाह की मारफ़त, इसलिए ग़ौर व फ़िक्र मारफ़त की कुंजी है।

दूसरी- अल्लाह की मुहब्बत की फ़िक्र पर यह मुरत्तब[1] होती है। यही ग़ौर व फ़िक्र है, जिसको सूफ़िया मुराक़बा से ताबीर फ़र्माते हैं। बहुत सी रिवायात से इसकी फ़ज़ीलत साबित होती है।

मस्नद अबूयाला में ब-रिवायत हज़रत आइशा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि वह ज़िक्रे ख़फ़ी,[2] जिसको फ़रिश्ते भी न सुन सकें, सत्तर दर्जा दो चंद होता है। जब क़यामत के दिन हक़ तआला शानुहू तमाम मख़्लूक़ को हिसाब के लिए जमा फ़र्मायेंगे और किरामन कातिबीन अमालनामे लेकर आयेंगे, तो इर्शाद होगा कि फ़्लां बंदे के आमाल देखो, कुछ और बाक़ी हैं। वह अर्ज़ करेंगे कि हमने कोई भी ऐसी चीज नहीं छोड़ी, जो लिखी न हो और महफ़ूज़ न हो। तो इर्शाद होगा कि हमारे पास उसकी ऐसी नेकी बाक़ी है, जो तुम्हारे इल्म में नहीं, वह ज़िक्रे ख़फ़ी है।

बेहक़ी ने शाब में हज़रत आइशा रज़ि० से भी यह हदीस नक़ल की है कि जिस ज़िक्र को फ़रिश्ते भी न सुन सकें, वह उस ज़िक्र पर जिसको वह सुनें, सत्तर दर्जे बढ़ा हुआ है। यही मुराद है उस शेर से, जिसमें कहा गया है-

मियाने आशिक़ व माशूक़ रम्जेस्त, ।
किरामन कातिबीं राहम ख़बर नेस्त ।।

(आशिक़ व माशूक़ में ऐसे रम्ज़[3] भी होते हैं, जिसकी फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं होती।)

कितने ख़ुशक़िस्मत हैं वह लोग, जिनको एक लहज़[4] भी ग़फ़लत नहीं होती कि उनकी ज़ाहिरी इबादत तो अपने-अपने अज्र व सवाब हासिल करेंगी ही, यह हर वक़्त का ज़िक्र व फ़िक्र पूरी ज़िंदगी के औक़ात में सत्तर गुना मज़ीद बरआं,[5] यही चीज़ है, जिसने शैतान को दिक़ कर रखा है।

---

1. यानी ग़ौर व फ़िक्र से यह पैदा होती है, 2. ख़ामोश ज़िक्र,
3. राज़, रहस्य, 4. लम्हा, क्षण, 5. और ज़्यादा,

हज़रत जुनैद रह० से नक़्ल किया गया है कि उन्होंने एक मर्तबा ख़्वाब में शैतान को बिल्कुल नंगा देखा। उन्होंने फ़र्माया, तुझे शर्म नहीं आती कि आदमियों के सामने नंगा होता है। वह कहने लगा कि यह कोई आदमी है। आदमी वह हैं जो शोनीज़िया की मस्जिद में बैठे हैं, जिन्होंने मेरे बदन को दुबला कर दिया और मेरे जिगर के कबाब कर दिए। हज़रत जुनैद रह० फ़र्माते हैं कि मैं शोनीज़िया की मस्जिद में गया। मैंने देखा कि चंद हज़रात घुटनों पर सर रखे हुए मुराक़बे में मशगूल हैं। जब उन्होंने मुझे देखा, तो कहने लगे कि ख़बीस की बातों से कहीं धोखे में न पड़ जाना।

मसूही रह० से भी इसके क़रीब ही नक़्ल किया गया है। उन्होंने शैतान को नंगा देखा। उन्होंने कहा, तुझे आदमियों के दर्मियान इस तरह चलते शर्म नहीं आती। कहने लगा, ख़ुदा की क़सम! यह आदमी नहीं! अगर यह आदमी होते, तो मैं इनके साथ इस तरह न खेलता, जिस तरह लड़के गेंद से खेलते हैं। आदमी वह लोग हैं, जिन्होंने मेरे बदन को बीमार कर दिया और सूफ़िया की जमाअत की तरफ़ इशारा किया।

अबू सईद ख़राज रह० कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि शैतान ने मुझ पर हमला किया। मैं लकड़ी से मारने लगा। उसने ज़रा भी परवाह न की। ग़ैब से एक अवाज़ आयी कि यह इससे नहीं डरता, यह दिल के नूर से डरता है।

हज़रत साद रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि बेहतरीन ज़िक्र ज़िक्रे ख़फ़ी है और बेहतरीन रिज़्क़ वह है, जो किफ़ायत का दर्जा रखता हो।

हज़रत उबादा रज़ि० ने भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही नक़्ल किया है कि बेहतरीन ज़िक्र ज़िक्रे ख़फ़ी है और बेहतरीन रिज़्क़ वह है, जो किफ़ायत का दर्जा रखता हो। (यानी न कम हो कि गुज़र न हो सके, न ज़्यादा हो कि तकब्बुर और फ़वाहिश में मुब्तला करे) इब्ने हब्बान रह० और अबूयाला रह० ने इस हदीस को सही बताया है।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया गया है कि अल्लाह को ज़िक्रे ख़ामिल से याद किया करो। किसी ने दर्याफ़्त किया कि ज़िक्रे ख़ामिल क्या है? इर्शाद फ़र्माया कि मख़्फ़ी ज़िक्र।

इन सब रिवायात से ज़िक्रे ख़फ़ी की अफ़ज़लियत मालूम होती है और अभी क़रीब ही वह रिवायत गुज़र चुकी जिसमें मजनून कहने का ज़िक्र गुज़रा है। दोनों

मुस्तकिल चीजें हैं, जो हालात के एतबार से मुख़्तलिफ़ हैं। इसको शेख़ तज्वीज करता है कि किस शख़्स के लिये किस वक़्त क्या मुनासिब है।

(١٨) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ قَالَ نَزَلَتْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِيْ بَعْضِ اَبْيَاتِهٖ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ. فَخَرَجَ يَلْتَمِسُهُمْ فَوَجَدَ قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ تَعَالٰى مِنْهُمْ ثَائِرُ الرَّاْسِ وَجَافُّ الْجِلْدِ وَذُو الثَّوْبِ الْوَاحِدِ فَلَمَّا رَاٰهُمْ جَلَسَ مَعَهُمْ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ فِيْ اُمَّتِيْ مَنْ اَمَرَنِيْ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ. اخرجه ابن جرير والطبراني وابن مردويه كذا في الدر.

18. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दौलतकदा में थे कि आयत 'वस्बिर नफ़्स क' नाज़िल हुई, जिसका तर्जुमा यह है कि अपने आपको उन लोगों के पास (बैठने का) पाबंद कीजिए, जो सुबह-शाम अपने रब को पुकारते हैं। हुज़ूरे अक्दस सल्ल० इस आयत के नाज़िल होने पर उन लोगों की तलाश में निकले। एक जमाअत को देखा कि अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल है। बाज़ लोग उनमें बिखरे हुए बालों वाले हैं और ख़ुश्क खालों वाले और सिर्फ़ एक कपड़े वाले हैं (कि नंगे बदन एक लुंगी सिर्फ़ उनके पास है)। जब हुज़ूर सल्ल० ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गये और इर्शाद फ़र्माया कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़र्माये कि ख़ुद मुझे उनके पास बैठने का हुक्म है।

फ़ – एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको तलाश फ़र्माया, तो मस्जिद के आख़िरी हिस्से में बैठे हुए पाया कि ज़िक्रुल्लाह अल्लाह में मश्ग़ूल थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने मेरी ज़िंदगी ही में ऐसे लोग पैदा फ़र्माये कि मुझे उनके पास बैठने का हुक्म है। फिर फ़र्माया, तुम ही लोगों के साथ ज़िंदगी है और तुम्हारे ही साथ मरना है यानी मरने-जीने के साथी और रफ़ीक़ तुम्हीं लोग हो।

एक हदीस में आया है कि हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि० वग़ैरह हज़रात सहाबा-किराम रज़ि० की एक जमाअत ज़िक्र अल्लाह में मश्ग़ूल थी। हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ लाये, तो यह लोग चुप हो गये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम क्या कर रहे थे ? अर्ज़ किया, ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मैंने देखा कि रहमते इलाही तुम लोगों पर उतर रही है, तो मेरा भी दिल चाहा कि आकर तुम्हारे साथ शिर्कत करूं। फिर इर्शाद फ़र्माया कि अल्हम्दु लिल्लाह ! (अल्लाह के

लिए तमाम तारीफ़ें) अल्लाह जल्ले शानुहू ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किये, जिनके पास बैठने का मुझे हुक्म हुआ।

इब्राहीम नख़ई रह० कहते हैं कि–

'अल्लज़ी न यद्‌ऊन' से मुराद ज़ाकिरीन की जमाअत है। इन्हीं जैसे अह्काम से सूफ़िया ने इस्तंबात[1] किया है कि मशायख़ को भी मुरीदीन के पास बैठना ज़रूरी है कि इसमें अलावा फ़ायदा पहुंचाने के इख़्तिलात[2] से शेख़ के नफ़्स के लिए भी मुजाहदा-ए-ताम्मा[3] है कि ग़ैर-मुहज़्ज़ब लोगों की बद-उनवानियों के तहम्मुल और बर्दाश्त से नफ़्स में इंक़ियाद[4] पैदा होगा, उसकी क़ूव्वत में इंकिसार पैदा होगा। इसके अलावा क़ुलूब के इज्तिमाअ को अल्लाह जल्ले जलालुहू की रहमत और राफ़्त[5] के मुतवज्जह करने में ख़ास दख़ल है। इसी वजह से जमाअत की नमाज़ मशरूअ[6] हुई और यही बड़ी वजह है कि अरफ़ात के मैदान में सब हुज्जाज-यक हाल एक मैदान में अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह किये जाते हैं, जैसाकि हमारे हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने 'हुज्जतुल्लाहिल् बालिग़' में मुतअद्दद जगह इस मज़मून को एहतमाम से इर्शाद फ़र्माया है। यह सब उस जमाअत के बारे में, है जो अल्लाह का ज़िक्र करने वाली हो कि अहादीस में कसरत से इसकी तर्ग़ीब आयी है। इसके बिल् मुक़ाबिल[7] अगर कोई शख़्स ग़ाफ़िलीन की जमाअत में फंस जाये और उस वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो तो, इसके बारे में भी अहादीस में कसरत से फ़ज़ाइल आये हैं। ऐसे मौक़े पर आदमी को और भी ज़्यादा एहतमाम और तवज्जोह से अल्लाह की तरफ़ मश्ग़ूल रहना चाहिए ताकि उनकी नहूसत से महफ़ूज़ रहे।

हदीस में आया है कि ग़ाफ़िलीन की जमाअत में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला ऐसा है, जैसे कि जिहाद में भागने वालों की जमाअत में से कोई शख़्स जमकर मुक़ाबला करे।

एक हदीस में आया है कि ग़ाफ़िलीन में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला ऐसा है, जैसे भागने वालों की तरफ़ से कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करे, नीज़ वह ऐसा है जैसे अंधेरे घर में चिराग़, नीज़ वह ऐसा है, जैसे पतझड़ वाले दरख़्तों में कोई शादाब सरसब्ज़ दरख़्त हो, ऐसे शख़्स को हक़ तआला शानुहू उसको जन्नत का घर पहले ही दिखा देंगे। और हर आदमी और हैवान के बराबर उसकी मग़्फ़िरत की जायेगी। यह जब

---

1. नतीजा निकालना, 2. मेल-जोल, 3. पूरा मुजाहदा, 4. आजिज़ी व ख़ाकसारी, 5. नर्मी, 6. शरीअत में जिसकी ताकीद आयी हो, 7. मुक़ाबले में,

है कि इन मजालिस में अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो, वरना ऐसी मजालिस की शिर्कत की मुमानअत आयी है।

हदीस में है कि अशीरा यानी याराना की मजालिस से अपने आप को बचाओ। अज़ीज़ी रह० कहते हैं, यानी ऐसी मजालिस से, जिनमें ग़ैरुल्लाह का ज़िक्र कसरत से होता हो, लग्वियात और लह्व व लअब में मश्ग़ूली होती हो।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं, मैं एक मर्तबा बाज़ार जा रहा था, एक हब्शन बांदी मेरे साथ थी। मैंने बाज़ार में एक जगह उसको बिठा दिया कि मैं वापसी में उसको ले लूंगा। वह वहां से चली आयी। जब मैंने वापसी पर उसको वहां न देखा, तो मुझे ग़ुस्सा आया। मैं घर वापस आया, तो वह बांदी आयी और कहने लगी, मेरे आक़ा ख़फ़गी में जल्दी न करें। आप मुझे ऐसे लोगों के पास छोड़ गये, जो अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल थे। मुझे यह डर हुआ कि इन पर कोई अज़ाब नाज़िल न हो, वह ज़मीन में धंस न जाएं और मैं भी उनके साथ अज़ाब में धंस न जाऊं।

(१९)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا يَذْكُرُ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى اُذْكُرْنِي بَعْدَ الْعَصْرِ وَبَعْدَ الْفَجْرِ سَاعَةً أَكْفِكَ فِيمَا بَيْنَهُمَا اخرجه احمد كذا في الدر

19. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह जल्ले जलालुहू का पाक इर्शाद फ़र्माते हैं कि तू सुबह की नमाज़ के बाद और अस्र की नमाज़ के बाद थोड़ी देर मुझे याद कर लिया कर, मैं दर्मियानी हिस्से में तेरी किफ़ायत करूंगा।

(एक हदीस में आया है कि अल्लाह का ज़िक्र किया कर, वह तेरी मतलब बरआरी[1] में मुईन[2] होगा)

फ़ – आख़िरत के वास्ते न सही, दुनिया के वास्ते हम लोग कैसी-कैसी कोशिशें कर डालते हैं, क्या बिगड़ जाये, अगर थोड़ी सी देर सुबह और अस्र के बाद अल्लाह का ज़िक्र भी कर लिया करें कि अहादीस में कसरत से इन दो वक़्तों में अल्लाह के ज़िक्र के फ़ज़ाइल वारिद हुए और जब अल्लाह जल्ले जलालुहू किफ़ायत का वायदा फ़र्माते हैं, फिर किसी दूसरी चीज़ की क्या ज़रूरत बाक़ी है।

---

1. मतलब पूरा करने में, 2. मददगार,

एक हदीस में आया है, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़र्माते हैं कि मैं ऐसी जमाअत के साथ बैठूं, जो सुबह की नमाज़ के बाद आफ़्ताब निकलने तक अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल हो, मुझे ज़्यादा पसन्द है इससे कि चार अरब ग़ुलाम आज़ाद करूं। इसी तरह ऐसी जमाअत के साथ बैठूं, जो अस्र की नमाज़ के बाद से ग़ुरूब तक अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहे, यह ज़्यादा पसन्द है चार ग़ुलाम आज़ाद करने से।

एक हदीस में है कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ जमाअत से पढ़े,फिर आफ़्ताब निकलने तक अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहे और फिर दो रक्अत नफ़्ल पढ़े, उसको ऐसा सवाब मिलेगा, जैसा कि हज और उम्रे पर मिलता है और हज और उम्रा भी वह, जो कामिल हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मैं एक जमाअत के साथ, सुबह की नमाज़ के बाद से आफ़्ताब निकलने तक ज़िक्र में मश्गूल रहूं, यह मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। इसी तरह अस्र की नमाज़ के बाद से ग़ुरूब तक एक जमाअत के साथ ज़िक्र में मश्गूल रहूं, यह मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसन्द है। इन ही वुजूह से सुबह की नमाज़ के बाद और अस्र की नमाज़ के बाद औराद का मामूल है और हज़राते सूफ़िया के यहां तो इन दोनों वक़्तों का ख़ास एहतमाम है कि सुबह की नमाज़ के बाद अमूमन अश्ग़ाल में एहतमाम फ़र्माते हैं और अस्र के बाद औराद का एहतमाम करते हैं, बिल्ख़ुसूस फ़ज्र के बाद फ़ुक़हा भी एहतमाम फ़र्माते हैं। 'मुदव्वना' में इमाम मालिक रह० से नक़्ल किया गया है कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद तुलू-ए-आफ़्ताब[1] तक बातें करना मक्रूह है और हनफ़ीया में से साहिबे 'दुर्रे मुख़्तार' रह० ने भी इस वक़्त बातें करना मक्रूह लिखा है।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ के बाद उसी हैअत् से बैठे हुए बोलने से क़ब्ल यह दुआ दस मर्तबा पढ़े-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

---

1. सूरज निकलने तक,

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अपनी ज़ात और सिफ़ात में अकेला है, कोई उसका शरीक नहीं, सारा मुल्क दुनिया और आख़िरत का उसी का है और जितनी ख़ूबियां हैं, वह उसी पाक ज़ात के लिए हैं, वही ज़िंदा करता है, वही मारता है और वह हर चीज पर क़ादिर है।)

तो उसके लिए दस नेकियां लिखी जायें, दस बुराइयां माफ़ की जायें और जन्नत में दस दर्जे बुलन्द किये जायें और तमाम दिन शैतान से और मक्रूहात से महफ़ूज रहे।

एक हदीस में आया है, जो सुबह और अस्र के बाद–

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैहि०

(मैं उसी अल्लाह से, जो ज़िन्दा है, हमेशा रहने वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत मांगता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं, तौबा करता हूं।)

तीन मर्तबा पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, ख़्वाह समुन्दर के बराबर हों।

(۲۰) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ وَمَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا إِلَّا ذِكْرُ اللّٰهِ وَمَا وَالَاهُ وَعَالِمًا أَوْ مُتَعَلِّمًا. رواه الترمذی وابن ماجة والبیهقی وقال الترمذی حدیث حسن کذا فی الترغیب وذکره فی الجامع الصغیر بروایة ابن ماجة ورقم له بالحسن وذکره فی مجمع الزوائد بروایة الطبرانی فی الاوسط عن ابن مسعودؓ وکذا السیوطی فی الجامع الصغیر وذکره بروایة البزار عن ابن مسعود بلفظ إِلَّا أَمْرًا بِمَعْرُوْفٍ أَوْ نَهْيًا عَنْ مُنْكَرٍ أَوْ ذِكْرَ اللّٰهِ ورقم له بالصحة.

20. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दुनिया मलऊन है और जो कुछ दुनिया में है, सब मलऊन (अल्लाह की रहमत से दूर) है, मगर अल्लाह का ज़िक्र और वह चीज, जो उसके क़रीब हो और आलिम और तालिबे इल्म (इल्म चाहने वाला।)

फ़– उसके क़रीब होने से मुराद ज़िक्र के क़रीब होना भी हो सकता है। इस सूरत में वह चीजें मुराद होंगी, जो अल्लाह के ज़िक्र में मुईन व मददगार हों,

जिन में खाना-पीना भी बक़द्र ज़रूरत दाख़िल है और ज़िंदगी के अस्बाबे ज़रूरीया भी इसमें दाख़िल हैं और इस सूरत में अल्लाह का ज़िक्र हर चीज को, जो इबादत की क़बील से हो, शामिल है और यह भी हो सकता है कि उसके क़रीब होने से अल्लाह का क़ुर्ब मुराद हो तो इस सूरत में सारी इबादतें इसमें दाख़िल होंगी और अल्लाह के ज़िक्र से मख़्सूस ज़िक्र मुराद होगा और दोनों सूरतों में इल्म उनमें ख़ुद दाख़िल हो गया था। पहली सूरत में इस वजह से कि इल्म ही अल्लाह के ज़िक्र के क़रीब ले जाता है कि-

'बे इल्म-नतवां-ख़ुदारा' शनाख़्त (बग़ैर इल्म के अल्लाह को पहचान नहीं सकता)

और दूसरी सूरत में इस वजह से कि इल्म से बढ़कर कौन इबादत होगी, लेकिन इसके बावजूद फिर आलिम और तालिब इल्म को आलाहिदा एहतमाम की वजह से फ़र्माया कि इल्म बहुत ही बड़ी दौलत है।

एक हदीस में आया है कि इल्म का सिर्फ़ अल्लाह के लिए सीखना, अल्लाह के ख़ौफ़ के हुक्म में है और उसकी तलब यानी तलाश के लिए कहीं जाना इबादत है और उसका याद करना तस्बीह है और उसकी तहक़ीक़ात में बहस करना जिहाद है और उसका पढ़ना सद्क़ा है और उसके अह्ल पर ख़र्च करना अल्लाह के यहां क़ुर्बत है। इसलिए कि इल्म जायज-ना-जायज के पहचानने के लिए अलामत है और जन्नत के रास्तों का निशान है, बहिशत में जी बहलाने वाला है और सफ़र का साथी है (कि किताब का देखना दोनों काम देता है, इसी तरह) तन्हाई में एक मुहद्दिस हैं, ख़ुशी और रंज में दलील है, दुश्मनों पर हथियार है दोस्तों के लिए, हक़ तआला शानुहू उसकी वजह से एक जमाअत (उलमा) को बुलंद मर्तबा करता है कि वह ख़ैर की तरफ़ बुलाने वाले होते हैं और ऐसे इमाम होते हैं कि उनके निशाने क़दम पर चला जाये और उनके अफ़आल का इत्तिबाअ[1] किया जाये, उनकी राय की तरफ़ रुजूअ किया जाये। फ़रिश्ते उनसे दोस्ती करने की रग़बत करते हैं, अपने परों को बरकत हासिल करने के लिए या मुहब्बत के तौर पर उन पर मलते हैं। और हर तर और ख़ुश्क चीज दुनिया की उनके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ करती है, हत्ता कि समुन्दर की मछलियां और जंगल के दरिन्दे और चौपाये और ज़हरीले जानवर, सांप वग़ैरह तक भी दुआ-ए-मग़्फ़िरत करते रहते हैं और यह सब इसलिए कि इल्म दिलों की रोशनी है, आंखों का नूर है। इल्म की वजह से बन्दा उम्मत के बेहतरीन

---

1. पैरवी,
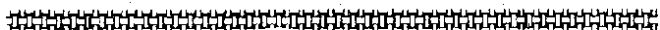
अफ़राद तक पहुंच जाता है, दुनिया और आख़िरत के बुलन्द मर्तबों को हासिल कर लेता है, उसका मुतालआ रोज़ों के बराबर है, उसका याद करना तहज्जुद के बराबर है, उसी से रिश्ते जोड़े जाते हैं और उसी से हलाल व हराम की पहचान होती है, वह अमल का इमाम है और अमल उसका ताबेअ है। सईद[1] लोगों को उसका इल्हाम किया जाता है और बद-बख़्त उससे महरूम रहते हैं।

इस हदीस पर मजमूई तौर से बाज़ ने कलाम किया है, लेकिन जिस क़िस्म के फ़ज़ाइल इसमें ज़िक्र किये गये हैं, उनकी ताईद दूसरी रिवायात से भी होती है, नीज इनके अलावा और बहुत से फ़ज़ाइल हदीस की किताबों में ब-कसरत आये हैं, इस वजह से आलिम और तालिबे इल्म को ख़ास तौर से हदीसे बाला में ज़िक्र फ़र्माया है।

हाफ़िज इब्ने क़य्यिम रह० एक मशहूर मुहद्दिस हैं, उन्होंने एक मबसूत रिसाले अरबी में 'अल-वाबिलुस्सय्यिब' के नाम से ज़िक्र के फ़ज़ाइल में तस्नीफ़ किया है, जिसमें वह फ़र्माते हैं कि ज़िक्र में सौ से भी ज़्यादा फ़ायदे हैं। इनमें से नम्बरवार उनासी फ़ायदे उन्होंने ज़िक्र फ़र्माये हैं, जिनको मुख़्तसरन इस जगह तरतीबवार नक़ल किया जाता है और चूंकि बहुत से फ़वाइद इनमें ऐसे हैं, जो कई-कई फ़ायदों को शामिल हैं, इस लिहाज़ से यह सौ से ज़्यादा को मुश्तमिल हैं-

1. ज़िक्र शैतान को दफ़ा करता है और उसकी क़ुव्वत को तोड़ता है।

2. अल्लाह जल्ले जलालुहू की ख़ुश्नूदी का सबब है।

3. दिल से फ़िक्र व ग़म को दूर करता है

4. दिल में फ़रहत, सुरूर और इंबिसात पैदा करता है।

5. बदन और दिल को क़ुव्वत बख़्शता है।

6. चेहरे और दिल को मुनव्वर करता है।

7. रिज़्क़ को खींचता है।

8. ज़िक्र करने वाले को हैबत और हलावत[2] का लिबास पहनाता है, यानी उसके देखने से रोब पड़ता है और देखने वालों को हलावत नसीब होती है।

9. अल्लाह तआला शानुहू की मुहब्बत पैदा करता है और मुहब्बत ही इस्लाम की रूह और दीन का मर्कज़ है और सआदत और निजात का मदार है। जो शख़्स

1. ख़ुश-बख़्त, नेक लोग, 2. मिठास,

यह चाहता है कि अल्लाह की मुहब्बत तक उसकी रसाई हो, उसको चाहिए कि उसके ज़िक्र की कसरत करे, जैसा कि पढ़ना और तकरार करना इल्म का दरवाज़ा है, इसी तरह अल्लाह का ज़िक्र, उसकी मुहब्बत का दरवाज़ा है।

10. ज़िक्र से मुराक़बा नसीब होता है, जो मर्तबा-ए-एहसान तक पहुंचा देता है। यही मर्तबा है, जिसमें अल्लाह तआला की इबादत ऐसी नसीब होती है, गोया अल्लाह जल्ले शानुहू को देख रहा है। (यही मर्तबा सूफ़िया का मुन्तहाए मक़सद[1] होता है।)

11. अल्लाह की तरफ़ रुजू पैदा करता है, जिससे रफ़्ता-रफ़्ता यह नौबत आ जाती है कि हर चीज में हक़ तआला शानुहू उसकी जा-ए-पनाह और मावा-व-मल्जा[2] बन जाते हैं और हर मुसीबत में उसी की तरफ़ तवज्जोह हो जाती है।

12. अल्लाह का क़ुर्ब पैदा करता है और जितना ज़िक्र में इज़ाफ़ा होता है, उतना ही क़ुर्ब में इज़ाफ़ा होता है और जितनी ज़िक्र से ग़फ़लत होती है, उतनी ही अल्लाह से दूरी होती है।

13. अल्लाह की मारफ़त का दरवाज़ा खोलता है।

14. अल्लाह जल्ले शानुहू की हैबत और उसकी बड़ाई दिल में पैदा करता है और अल्लाह के साथ हुज़ूरी पैदा करता है।

15. अल्लाह जल्ले शानुहू की बारगाह में ज़िक्र का सबब है, चुनांचे कलामे पाक में इर्शाद है-

فَاذْكُرُونِيٓ أَذْكُرْكُمْ

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम०[3]

और हदीस में वारिद है-

مَنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهٗ فِيْ نَفْسِيْ

मन ज़करनी फ़ी नफ़्सिही, ज़कर्तुहू फ़ी नफ़्सी (अल-हदीस)

चुनांचे आयात और अहादीस के बयान में पहले मुफ़स्सल गुज़र चुका है। अगर ज़िक्र में इसके सिवा और कोई भी फ़ज़ीलत न होती, तब भी शराफ़त और करामत के एतबार से यही एक फ़ज़ीलत काफ़ी थी, चजायकि[4] इसमें और भी बहुत

---

1. आख़िरी मक़सद, 2. पनाह लेने की जगह, 3. तुम मेरा ज़िक्र करो, मैं तुम्हें याद रखूंगा, 4. कहां यह कि,

सी फ़ज़ीलतें हैं।

16. दिल को ज़िंदा करता है। हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रह० कहते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र दिल के लिए ऐसा है, जैसा मछली के लिए पानी। ख़ुद ग़ौर कर लो कि बग़ैर पानी के मछली का क्या हाल होता है।

17. दिल और रूह की रोज़ी है। अगर इन दोनों को अपनी रोज़ी न मिले, तो ऐसा है, जैसा बदन को उसकी रोज़ी यानी खाना न मिले।

18. दिल को ज़ंग से साफ़ करता है, जैसा कि हदीस में भी वारिद हुआ है, हर चीज़ पर उसके मुनासिब ज़ंग और मैल-कुचैल होता है। दिल का मैल और ज़ंग ख़्वाहिशात और ग़फ़लत हैं। यह इसके लिए सफ़ाई का काम देता है।

19. लग़्ज़िशों और ख़ताओं को दूर करता है।

20. बन्दे को अल्लाह जल्ले शानुहू से, जो वह्शत हो जाती है, उसको दूर करता है कि ग़ाफ़िल के दिल पर अल्लाह की तरफ़ से एक वह्शत रहती है, जो ज़िक्र ही से दूर होती है।

21. जो अज़्कार बन्दा करता है, वह अर्श के चारों तरफ़ बन्दे का ज़िक्र करते रहते हैं, जैसा कि हदीस में वारिद है (बाब 3, फ़स्ल 2, हदीस 17)

22. जो शख़्स राहत में अल्लाह जल्ले शानुहू का ज़िक्र करता है, अल्लाह जल्ले शानुहू मुसीबत के वक़्त उसको याद करती है।

23. अल्लाह के अज़ाब से निजात का ज़रिया है।

24. सकीना और रहमत के उतरने का सबब है और फ़रिश्ते ज़िक्र करने वाले को घेर लेते हैं (सकीना के माना बाबे हाज़ा की फ़स्ल 2, हदीस 8 में गुज़र चुके हैं)

25. इसकी बरकत से ज़ुबान ग़ीबत, चुग़लख़ोरी, झूठ, बदगोई, लग्वगोई[1] से महफ़ूज़ रहती है। चुनांचे तज्रुबे और मुशाहदे से साबित है कि जिस शख़्स की ज़ुबान अल्लाह के ज़िक्र की आदी हो जाती है, वह इन अश्या से उमूमन महफ़ूज़ रहता है और जिसकी ज़ुबान आदी नहीं होती, हर नौअ की लग्वियात में मुब्तला रहता है।

---

1. बेकार की बातें करना,

26. ज़िक्र की मज्लिसें फ़रिश्तों की मज्लिसें हैं और लग्वियात और ग़फ़लत की मज्लिसें शैतान की मज्लिसें हैं। अब आदमी को इख़्तियार है, जिस क़िस्म की मज्लिसों को चाहे, पसन्द कर ले और हर शख़्स उसी को पसंद करता है, जिससे मुनासिबत रखता है।

27. ज़िक्र की वजह से ज़िक्र करने वाला भी सईद (निक-बख़्त) होता है और उसके पास बैठने वाला भी और ग़फ़लत और लग्वियात में मुब्तला होने वाला ख़ुद भी बद-बख़्त होता है और उसके पास बैठने वाला भी।

28. क़यामत के दिन हसरत से महफ़ूज़ रखता है, इसलिए कि हदीस में आया है कि हर वह मज्लिस, जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न हो, क़यामत के दिन हसरत और नुक़्सान का सबब है।

29. ज़िक्र के साथ अगर तन्हाई का रोना भी नसीब हो जाये, तो क़यामत के दिन की तपिश और गर्मी में, जब कि हर शख़्स मैदाने हश्र में बिलबिला रहा होगा यह अर्श के साये में होगा।

30. ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वालों को उन सब चीज़ों से ज़्यादा मिलता है, जो दुआएं मांगने वालों को मिलती हैं। हदीस में अल्लाह जल्ले शानुहू का इर्शाद नक़ल किया गया है कि जिस शख़्स को मेरे ज़िक्र ने दुआ से रोक दिया, उसको मैं दुआएं मांगने वालों से अफ़ज़ल अता करूंगा।

31. बावजूद सहलतरीन इबादत होने के तमाम इबादतों से अफ़ज़ल है, इसलिए कि ज़ुबान को हरकत देना, बदन के और तमाम आज़ा को हरकत देने से सहल है।

32. अल्लाह का ज़िक्र जन्नत के पौधे हैं। (चुनांचे बाब3, फ़स्ल 2, हदीस 4) में मुफ़स्सल आ रहा है।

33. जिस क़दर बख़्शिश और इनाम का वायदा इस पर है, उतना किसी और अमल पर नहीं है। चुनांचे एक हदीस में वारिद है कि जो शख़्स–

लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु वहु व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

सौ मर्तबा किसी दिन पढ़े, तो उसके लिए दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब

होता है और सौ नेकियां उसके लिए लिखी जाती हैं और सौ बुराइयां उससे माफ़ कर दी जाती हैं और शाम तक शैतान से महफ़ूज रहता है और दूसरा कोई शख़्स इससे अफ़ज़ल नहीं होता, मगर वह शख़्स कि इससे ज़्यादा अमल करे। इसी तरह और बहुत सी अहादीस हैं, जिनसे ज़िक्र का अफ़ज़ले आमाल[1] होना मालूम होता है (और बहुत सी उनमें से इस रिसाले में मज़्कूर हैं)

34. दवामे ज़िक्र[2] की बदौलत अपने नफ़्स को भूलने से अमन नसीब होता है, जो सबब है दारैन[3] की शक़ावत[4] का, इसलिए कि अल्लाह की याद को भुला देना सबब होता है ख़ुद अपने नफ़्स के भुला देने का और अपने तमाम मासालेह के भुला देने का। चुनांचे इर्शादे ख़ुदावंदी है-

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

वला तकूनू कल्लज़ी न नसुल्ला ह फ़ अन्साहुम अन्फ़ु स हु म उलाइ क हुमुल् फ़ासिक़ून० (सूरः हश्र, रुकूअ 3)

(तुम उन लोगों की तरह न बनो, जिन्होंने अल्लाह से बे-परवाई की, पस अल्लाह ने उनको अपनी जानों से बे-परवाह कर दिया, यानी उनकी अक़्ल ऐसी मारी गयी कि अपने हक़ीक़ी नफ़ा को न समझा)

और जब आदमी अपने नफ़्स को भुला देता है, तो उसकी मसालेह से ग़ाफ़िल हो जाता है और यह सबब हलाकत का बन जाता है। जैसा कि किसी शख़्स की खेती हो या बाग़ हो और उसको भूल जाये, उसकी ख़बरगीरी न करे, तो ला-मुहाला वह ज़ाया होगा। और इससे अमन जब ही मिल सकता है, जब अल्लाह के ज़िक्र से ज़ुबान को हर वक़्त तर व ताज़ा रखे और ज़िक्र उसको ऐसा महबूब हो जाये जैसा कि प्यास की शिद्दत के वक़्त पानी और भूख के वक़्त खाना और सख़्त गर्मी और सख़्त सर्दी के वक़्त मकान और लिबास, बल्कि अल्लाह का ज़िक्र इससे ज़्यादा का मुस्तहिक़ है, इसलिए कि इन अशया के न होने से, बदन की हलाकत है, जो रूह की और दिल की हलाकत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं हैं।

35. ज़िक्र आदमी की तरक़्क़ी करता रहता है, बिस्तरे पर भी और बाज़ार में भी, सेहत में भी और बीमारी में भी, नेमतों और लज़्ज़तों के साथ मशग़ूली में

---

1. तमाम कामों में बेहतर, 2. ज़िक्र हमेशा करना,
3. दुनिया और आख़िरत दोनों घर, 4. बद-बख़्ती,

भी, और कोई ऐसी चीज नहीं है जो हर वक़्त तरक़्क़ी का सबब बनती हो, हत्ताकि जिसका दिल नूरे ज़िक्र से मुनव्वर हो जाता है, वह सोता हुआ भी ग़ाफ़िल शबे-बेदारों से बढ़ जाता है।

36. ज़िक्र का नूर दुनिया में भी साथ रहता है और क़ब्र में भी साथ रहता है और आख़िरत में पुलसिरात पर आगे-आगे चलता है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है-

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ
كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا (سورۂ انعام رکوع ۱۵)

अ व मन का न मैतन् फ़अह्यैनाहु व जअ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि कमम् म स लुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै स बिख़ारिजिम् मिन्हा०

(सूर : अन्आम रुकूअ़ 15)

(ऐसा शख़्स, जो पहले मुर्दा यानी गुमराह था, फिर हमने उसको जिंदा यानी मुसलमान बना दिया और उसको ऐसा नूर दे दिया कि वह उस नूर को लिए हुए आदमियों में चलता-फिरता है यानी वह नूर हर वक़्त उसके साथ रहता है, क्या ऐसा शख़्स बदहाली में उस शख़्स की तरह हो सकता है, जो गुमराहियों की तारीकियों में घिरा हो कि उनसे निकलने ही नहीं पाता।)

पस अव्वल शख़्स मोमिन है, जो अल्लाह पर ईमान रखता और उसकी मुहब्बत और उसकी मारफ़त और उसके ज़िक्र से मुनव्वर है और दूसरा शख़्स इन चीजों से ख़ाली है। हक़ीक़त यह है कि यह नूर निहायत मुहतम्म बिश्शान[1] चीज है। और इसी में पूरी कामियाबी है, इसीलिए नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसकी तलब और दुआ में मुबालग़ा[2] फ़र्माया करते थे और अपने हर-हर जुज़्व में नूर को तलब फ़र्माते हैं। चुनांचे अहादीस में मुतअद्दद दुआएं ऐसी हैं, जिनमें हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी दुआ फ़र्मायी है कि हक़ तआला शानुहू आपके गोश्त में, हड्डियों में, पट्ठों में, बाल में, खाल में, कान में, आंख में, ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें, आगे-पीछे नूर ही नूर कर दे, हत्ताकि यह भी दुआ की कि ख़ुद मुझी को सर ता पा[3] नूर बना दे कि आपकी ज़ात ही नूर बन जाये। इसी नूर के बक़द्र आमाल में नूर होता है, हत्ताकि बाज़ लोगों के नेक अमल ऐसी हालत में आसमान

---

1. शानदार, 2. बहुत ज़्यादा दुआ करना,
3. सर से पैर तक,

पर जाते हैं कि उन पर आफ़्ताब जैसा नूर होता है और ऐसा ही नूर उनके चेहरों पर क़यामत के दिन होगा।

37. ज़िक्र तसव्वुफ़ का असल उसूल है और तमाम सूफ़िया के सब तरीक़ों में राइज है। जिस शख़्स के लिए ज़िक्र का दरवाज़ा खुल गया है, उसके लिए अल्लाह जल्ले शानुहू तक पहुंचने का दरवाज़ा खुल गया और जो अल्लाह जल्ले शानुहू तक पहुंच गया, वह जो चाहता है, पाता है कि अल्लाह जल्ले शानुहू के पास किसी चीज की भी कमी नहीं है।

38. आदमी के दिल में एक गोशा[1] है, जो अल्लाह के ज़िक्र के अलावा, किसी चीज से भी पुर नहीं होता और जब ज़िक्र दिल पर मुसल्लत हो जाता है, तो वह न सिर्फ़ उस गोशे को पुर करता है, बल्कि ज़िक्र करने वाले को बग़ैर माल के ग़नी कर देता है और बग़ैर कुंबा और जमाअत के लोगों के दिलों में इज़्ज़त वाला बना देता है और बग़ैर सल्तनत के बादशाह बना देता है और जो शख़्स ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है, वह बावजूद माल व दौलत, कुंबा और हुकूमत के ज़लील होता है।

39. ज़िक्र परागंदा[2] को मुज्तमा[3] करता है और मुज्तमा को परागंदा करता है, दूर को क़रीब करता है और क़रीब को दूर करता है। परागंदा को मुज्तमा करने का मतलब यह है कि आदमी के दिल पर जो मुतफ़र्रिक हुमूम, ग़ुमूम[5] तफ़क्कुरात[4], परेशानियां होती हैं, उनको दूर करके जमईयते ख़ातिर पैदा करता है और मुज्तमा को परागंदा करने का मतलब यह है कि आदमी पर जो तुफ़क्कुरात मुज्तमा हैं, उनको मुतफ़र्रिक कर देता है और आदमी की जो लग़्ज़िशें और गुनाह जमा हो गये हैं, उन को परागंदा कर देता है और जो शैतान के लश्कर आदमी पर मुसल्लत हैं, उनको परागंदा कर देता है और आख़िरत को, जो दूर है, क़रीब कर देता है और दुनिया को, जो क़रीब है, दूर कर देता है।

40. ज़िक्र आदमी के दिल को नींद से जगाता है, ग़फ़लत से चौकन्ना करता है और दिल जब तक सोता रहता है, अपने सारे ही मुनाफ़े खोता रहता है।

41. ज़िक्र एक दरख़्त है, जिस पर मआरिफ़ के फल लगते हैं। सूफ़िया की इस्तिलाह[6] में अहवाल और मुक़ामात के फल लगते हैं और जितनी भी ज़िक्र की कसरत होगी, उतनी ही उस दरख़्त की जड़ मज़बूत होगी और जितनी जड़ मज़बूत

---

1. कोना, 2. बिखरे हुए को, 3. इकट्ठा करना, 4. ग़म और उलझनें,
5. चिंताएं, 6. पारिभाषिक शब्द,

होगी, उतने ही ज़्यादा फल उस पर आयेंगे।

42. ज़िक्र उस पाक ज़ात के क़रीब कर देता है, जिसका ज़िक्र कर रहा है, हत्ताकि उसके साथ मओयत[1] नसीब हो जाती है। चुनांचे क़ुरआन पाक में है-

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

इन्नल्ला ह मअल्लज़ीनत्तक़ौ०

(अल्लाह जल्ले शानुहू मुत्तक़ियों के साथ है)

أَنَا مَعَ عَبْدِيْ مَا ذَكَرَنِيْ

और हदीस में वारिद है अना मआ अब्दी मा ज़ क र नी०

(मैं अपने बन्दे के साथ रहता हूं, जब तक वह मेरा ज़िक्र करता रहे।)

एक हदीस में है कि मेरा ज़िक्र करने वाले मेरे आदमी हैं, मैं उनको अपनी रहमत से दूर नहीं करता। अगर वह अपने गुनाहों से तौबा करते रहें, तो मैं उनका हबीब[2] हूं और अगर वह तौबा न करें, तो मैं उनका तबीब हूं कि उनको परेशानियों में मुब्तला करता हूं ताकि उनको गुनाहों से पाक करूं, नीज़ ज़िक्र की वजह से जो अल्लाह जल्ले शानुहू की मओयत नसीब होती है, वह ऐसी मओयत है, जिसके बराबर कोई दूसरी मओयत नहीं हैं, न वह ज़ुबान से ताबीर हो सकती है, न तहरीर में आ सकती हैं, उसकी लज़्ज़त वही जान सकता है, जिसको यह नसीब होती है।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ مِنْهُ شَيْئًا

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्नी मिन्हु शैअन[3]

43. ज़िक्र ग़ुलामों के आज़ाद करने के बराबर है, मालों के ख़र्च करने के बराबर है, अल्लाह के रास्ते में जिहाद के बराबर है (बहुत सी रिवायात में इस क़िस्म के मज़ामीन गुज़र भी चुके हैं और आइन्दा भी आने वाले हैं।)

44. ज़िक्र शुक्र की जड़ है। जो अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता,वह शुक्र भी अदा नहीं करता। एक हदीस में आया है कि हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अल्लाह जल्ले जलालुहू से अर्ज़ किया, आपने मुझ पर बहुत एहसानात किये हैं, मुझे तरीक़ा बता दीजिए कि मैं आपका बहुत शुक्र अदा करूं। अल्लाह जल्ले जलालुहू ने इर्शाद फ़र्माया कि जितना भी तुम मेरा ज़िक्र करोगे, उतना ही शुक्र अदा होगा।

दूसरी हदीस में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की यह दर्ख़्वास्त ज़िक्र की गयी है कि या अल्लाह ! तेरी शान के मुनासिब किस तरह शुक्र अदा हो। अल्लाह जल्ले जलालुहू ने फ़र्माया कि तुम्हारी ज़ुबान हर वक़्त ज़िक्र के साथ तर व ताज़ा रहे।

---

1. साथ नज़दीकी, 2. दोस्त, मित्र, 3. ऐ अल्लाह ! उसमें से कुछ मुझे भी नसीब कर,

45. अल्लाह के नज़दीक परहेज़गार लोगों में ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ वह लोग हैं, जो ज़िक्र में हर वक़्त मश्ग़ूल रहते हों, इसलिए कि तक़्वा का मुन्तहा जन्नत[1] है और ज़िक्र का मुन्तहा अल्लाह की मओयत है।

46. दिल में एक ख़ास क़िस्म की क़स्वत (सख़्ती) है, जो ज़िक्र के अलावा किसी चीज़ से भी नर्म नहीं होती।

47. ज़िक्र दिल की बीमारियों का इलाज है।

48. ज़िक्र अल्लाह के साथ दोस्ती की जड़ है और ज़िक्र से ग़फ़लत उसके साथ दुश्मनी की जड़ है।

49. अल्लाह के ज़िक्र के बराबर कोई चीज़ नेमतों को खींचने वाली और अल्लाह के अज़ाब को हटाने वाली नहीं है।

50. ज़िक्र करने वाले पर अल्लाह की सलावात (रहमत और फ़रिश्तों की सलावात (दुआ) होती है।

51. जो शख़्स यह चाहे कि दुनिया में रहते हुए भी जन्नत के बाग़ों में रहे, वह ज़िक्र की मजालिस में बैठे, क्योंकि यह मजालिस जन्नत के बाग़ है।

52. ज़िक्र की मज्लिसें फ़रिश्तों की मज्लिसें हैं (अहादीसे मज़्कूरा में यह मज़मून मुफ़स्सल गुज़र चुका है।)

53. अल्लाह जल्ले शानुहू ज़िक्र करने वालों पर फ़रिश्तों के सामने फ़ख़्र करते हैं।

54. ज़िक्र पर मुदावमत[2] करने वाला जन्नत में हंसता हुआ दाख़िल होता है।

55. तमाम आमाल अल्लाह के ज़िक्र ही के वास्ते मुक़र्रर किये गये हैं।

56. तमाम आमाल में वही अमल अफ़ज़ल है, जिसमें ज़िक्र कसरत से किया जाये। रोज़ों में वह रोज़ा अफ़ज़ल है, जिसमें ज़िक्र की कसरत हो। हज में वह हज अफ़ज़ल है, जिसमें ज़िक्र की कसरत हो, इसी तरह और आमाल, जिहाद वग़ैरह का हुक्म है।

57. यह नवाफ़िल और दूसरी नफ़्ल इबादात की क़ायम मुक़ाम[3] हैं। चुनांचे

---

1. इन्तिहा, अन्तिम सीमा, 2. हमेशा पाबंदी के साथ ज़िक्र करने वाला, 3. की जगह पर,

हदीस में आया है कि फ़ुक़रा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की कि यह मालदार लोग बड़े-बड़े दर्जे हासिल करते हैं, यह रोज़े नमाज़ में हमारे शरीक हैं और अपने मालों की वजह से हज, उम्रा, जिहाद में हमसे सब्क़त ले जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं तुम्हें ऐसी चीज बताऊं, जिससे कोई शख़्स तुम तक न पहुंच सके, मगर वह शख़्स जो यह अमल करे, उसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने हर नमाज़ के बाद-

سُبْحَانَ اللّٰہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बर

पढ़ने को फ़र्माया (जैसा कि बाब 3, फ़स्ल 2, हदीस 7 में आ रहा है) कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज-उमरा-जिहाद वग़ैरह हर इबादत का बदल ज़िक्र को क़रार दिया है।

58. ज़िक्र दूसरी इबादात के लिए बड़ा मुईन व मददगार है कि उसकी कसरत से हर इबादत महबूब बन जाती है और इबादात में लज़्ज़त आने लगती है और किसी इबादत में भी मशक़्क़त और बार नहीं रहता।

59. ज़िक्र की वजह से हर मशक़्क़त आसान बन जाती है और हर दुश्वार चीज सहल हो जाती है और हर किस्म के बोझ में ख़िफ़्फ़त[1] हो जाती है और हर मुसीबत ज़ायल हो जाती है।

60. ज़िक्र की वजह से दिल से ख़ौफ़ व हिरास दूर हो जाता है, डर के मुक़ाम पर इत्मीनान पैदा करने और ख़ौफ़ के ज़ायल करने में अल्लाह के ज़िक्र को ख़ुसूसी दख़ल है और उसकी यह ख़ास तासीर है, जितनी भी ज़िक्र की कसरत होगी, उतना ही इत्मीनान नसीब होगा और ख़ौफ़ ज़ायल होगा।

61. ज़िक्र की वजह से आदमी में एक ख़ास क़ुव्वत पैदा होती है, जिसकी वजह से ऐसे काम उससे सादिर होने लगते हैं, जो दुश्वार नज़र आते हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को जब उन्होंने चक्की की मशक़्क़त और कारोबार की दुश्वारी की वजह से एक ख़ादिम तलब किया था, तो सोते वक़्त-

---

1. हल्कापन,

सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाह سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

33-33 मर्तबा और

अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ

34 मर्तबा पढ़ने का हुक्म फ़र्माया था और यह इर्शाद फ़र्माया था कि यह ख़ादिम से बेहतर है।

62. आख़िरत के लिए काम करने वाले सब दौड़ रहे हैं और इस दौड़ में ज़ाकिरीन[1] की जमाअत सबसे आगे है। उमर मौला ग़ुफ़्रतः रह० से नक़्ल किया गया है कि क़यामत में जब लोगों को आमाल का सवाब मिलेगा, तो बहुत से लोग उस वक़्त हसरत करेंगे कि हमने ज़िक्र का एहतमाम क्यों न किया कि सबसे ज़्यादा सहल अमल था।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया गया है कि मुफ़रिद लोग आगे बढ़ गये। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि मुफ़रिद लोग कौन हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ज़िक्र पर मर-मिटने वाले कि ज़िक्र उनके बोझों को हल्का कर देता है।

63. ज़िक्र करने वाले की अल्लाह तआला शानुहू तस्दीक करते हैं और उसको सच्चा बताते हैं और जिस शख़्स को अल्लाह तआला ख़ुद सच्चा बतायें, उसका हश्र झूठों के साथ नहीं हो सकता। لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

हदीस में आया है कि जब बन्दा- लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लहु अक्बर

कहता है, तो हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं, मेरे बन्दे ने सच कहा, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं सबसे बड़ा हूं।

64. ज़िक्र से जन्नत में घर तामीर होते हैं। जब बन्दा ज़िक्र से रुक जाता है तो फ़रिश्ते तामीर से रुक जाते हैं। जब उनसे कहा जाता है कि फ़्लां तामीर तुमने क्यों रोक दी, तो वह कहते हैं कि उस तामीर का ख़र्च अभी तक नहीं आया है। एक हदीस में आया है कि जो शख़्स- سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम०

---

1. हल्कापन, 2. ज़िक्र करने वाले,

सात मर्तबा पढ़े, एक गुम्बद उसके लिए जन्नत में तामीर हो जाता है।

65. ज़िक्र जहन्नम के लिए आड़ है। अगर किसी बद-अमली की वजह से जहन्नम का मुस्तहिक़ हो जाये, तो ज़िक्र दर्मियान में आड़ बन जाता है और जितनी ज़िक्र की कसरत होगी, उतनी ही पुख़्ता आड़ होगी।

66. ज़िक्र करने वाले के लिए फ़रिश्ते इस्तग़फ़ार करते हैं। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० से ज़िक्र किया गया है कि जब बंदा-

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही — سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

कहता है या,

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० — اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

कहता है, तो फ़रिश्ते दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह ! इसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा।

67. जिस पहाड़ पर या मैदान में अल्लाह का ज़िक्र किया जाये, वह फ़ख़्र करते हैं। हदीस में आया है कि ऐक पहाड़ दूसरे पहाड़ को आवाज़ देकर पूछता है कि कोई ज़िक्र करने वाला तुझ पर आज गुज़रा है ? अगर वह कहता है कि गुज़रा है, तो वह ख़ुश होता है।

68. ज़िक्र की कसरत निफ़ाक़ से बरी होने का इत्मीनान (और सनद[1]) है, क्योंकि अल्लाह जल्ले शानुहू ने मुनाफ़िक़ों की सिफ़त यह बयान की है कि-

ला यज़्कुरूनल्ला ह इल्ला क़लीला० — لَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا

(नहीं ज़िक्र करते अल्लाह का मगर थोड़ा सा)

कअब अह्बार रज़ि० से नक़्ल किया गया है कि जो कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करे, वह निफ़ाक़ से बरी है।

69. तमाम नेक आमाल के मुक़ाबले में ज़िक्र के लिए एक ख़ास लज़्ज़त है, जो किसी अमल में भी नहीं पायी जाती। अगर ज़िक्र में इस लज़्ज़त के सिवा कोई भी फ़ज़ीलत न होती, तो यही चीज़ उसकी फ़ज़ीलत के लिए काफ़ी थी। मालिक बिन दीनार रह०कहते हैं कि लज़्ज़त पाने वाले किसी चीज़ में भी ज़िक्र के बराबर लज़्ज़त नहीं पाते।

70. ज़िक्र करने वालों के चेहरों पर दुनिया में रौनक़ और आख़िरत

में नूर होगा।

71. जो शख़्स रास्तों में, और घरों में, सफ़र में और हज़र में कसरत से ज़िक्र करे, क़यामत में उसके गवाही देने वाले कसरत से होंगे। हक़ तआला शानुहू क़यामत के दिन के बारे में फ़र्माते हैं-

यौ म इज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा। يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا

(उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें बयान करेगी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया जानते हो उसकी ख़बरें क्या हैं? सहाबा रज़ि॰ ने लाइल्मी ज़ाहिर की, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जिस मर्द व औरत ने जो काम ज़मीन पर किया है, वह बतायेगी कि फ़्लां दिन, फ़्लां वक़्त मुझ पर यह काम किया है (निक हो या बुरा), इसलिए मुख़्तलिफ़ जगहों में कसरत से ज़िक्र करने वालों के गवाह भी ब-कसरत होंगे।

72. ज़ुबान जितनी देर ज़िक्र में मश्ग़ूल रहेगी, लग्वियात, झूठ, ग़ीबत वग़ैरह से महफ़ूज़ रहेगी, इसलिए कि ज़ुबान चुप तो रहती ही नहीं या ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल होगी, वरना लग्वियात में। इसी तरह दिल का हाल है कि अगर वह अल्लाह की मुहब्बत में मश्ग़ूल न होगा, तो मख़्लूक़ की मुहब्बत में मुब्तला होगा।

73. शयातीन आदमी के खुले दुश्मन हैं और हर तरह से उसको वहशत में डालते रहते हैं और हर तरफ़ से उसको घेरे रहते हैं। जिस शख़्स का यह हाल हो कि उसके दुश्मन हर वक़्त उसका मुहासरा[1] किये रहते हों, उसका जो हाल होगा, ज़ाहिर है और दुश्मन भी ऐसे कि हर एक उनमें से यह चाहे कि जो तक्लीफ़ भी पहुंचा सकूं, पहुंचाऊं। इन लश्करों को हटाने वाली चीज़ ज़िक्र के सिवा कोई नहीं। बहुत सी अहादीस में बहुत सी दुआएं आयी हैं, जिनके पढ़ने से शैतान क़रीब भी नहीं आता और सोते वक़्त पढ़ने से रात भर हिफ़ाज़त रहती है।

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह॰ ने भी ऐसी दुआएं मुतअद्दद ज़िक्र की हैं, इनके अलावा मुसन्निफ़[2] ने छः नम्बरों में अन्वाए[3] ज़िक्र का तफ़ाज़ुल[4] और ज़िक्र की बाज़ कुल्ली फ़ज़ीलतें ज़िक्र की हैं और उसके बाद पचहत्तर फ़स्लें ख़ुसूसी दुआओं में, जो ख़ास-ख़ास औक़ात में वारिद हुई हैं, ज़िक्र की हैं, जिनको इख़्तिसार की वजह से छोड़ दिया गया है कि तौफ़ीक़ वाले के लिए जो ज़िक्र किया गया है यह भी काफ़ी से ज़्यादा

1. घेरना, 2. इससे हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम मुराद हैं, 3. ज़िक्र की क़िस्में, 4. फ़ज़ीलत,

है और जिस को तौफ़ीक़ नहीं है, उसके लिए हजारहा फ़ज़ाइल भी बेकार हैं।

وَمَا تَوْفِيْقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ-

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु०

दूसरा बाब

कलमा-ए-तय्यिबा

कलमा-ए-तय्यिबा, जिसको कलमा-ए-तौहीद भी कहा जाता है, जिस कसरत से क़ुरआन पाक और हदीस शरीफ़ में ज़िक्र किया गया है, शायद ही उस कसरत से कोई दूसरी चीज़ ज़िक्र की गयी हो और जबकि असल मक़्सूद तमाम शराए[1] और तमाम अंबिया अलै० की बेअसत[2] से तौहीद ही है, तो फिर जितनी कसरत से इसका बयान हो, वह क़रीने क़यास[3] है।

कलाम पाक में मुख़्तलिफ़ उन्वानात और मुख़्तलिफ़ नामों से इस पाक कलमे का ज़िक्र किया गया है, चुनांचे 'कलमा-ए-तय्यिबा', 'क़ौले साबित', 'कलमा-ए-तक़्वा', मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि' (आसमानों और ज़मीनों की कुंजियां) वग़ैरह अल्फ़ाज़ से ज़िक्र किया गया है, जैसा कि आइन्दा आयात में आ रहा है।

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० ने 'एह्या' में नक़ल किया है कि यह कलमा-ए-तौहीद है, कलमा-ए-इख़्लास है, कलमा-ए-तक़्वा है, कलमा-ए-तय्यिबा है, उर्वतुल् वुस्क़ा,[4] है दावतुल हक़[5] है, समनुल् जन्नत[6] है, और चूंकि क़ुरआन पाक में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से इसको ज़िक्र फ़र्माया गया, इसलिए इस बाब को तीन फ़स्लों पर मुंक़सिम किया गया-

पहली फ़स्ल में उन आयात का ज़िक्र है, जिनमें कलमा-ए-तय्यिबा मुराद है और कलमा-ए-तय्यिबा का लफ़्ज़ नहीं है, इसलिए इन आयात की मुख़्तसर तफ़्सीर हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ि० और ख़ुद सय्यदुल बशर अलैहि अफ़्ज़लुस्सवाति से नक़ल की गयी।

---

1. शरीअतें, 2. उठाया जाना, 3. क़ियास (अनुमान) किया जा सकता है
4. मज़बूत कपड़ा, 5. हक़ की दावत, 6. जन्नत की क़ीमत,

दूसरी फ़स्ल में उन आयात का हवाला है, जिनमें कलमा-ए-तय्यिबा पूरा यानी 'लाइला ह इल्लल्लाहू' لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

तमाम का तमाम ज़िक्र किया गया है, या किसी मामूली तग़य्युर के साथ जैसे-

'लाइला ह इल्ला हु व' لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ

और चूंकि इनमें यह कलमा ख़ुद ही मौजूद है या इसका तर्जुमा दूसरे अल्फ़ाज़ से ज़िक्र किया गया है, इसलिए इन आयात के तर्जुमे की ज़रूरत नहीं समझी, सिर्फ़ हवाला-सूरत और रुकूअ पर इक्तिफ़ा[1] किया गया, और

तीसरी फ़स्ल में उन अहादीस का तर्जुमा और मतलब ज़िक्र किया गया, जिनमें इस पाक कलमे की तर्ग़ीब और हुक्म फ़र्माया गया।

व मा तौफ़ीकी इल्ला बिल्लाहि وَمَا تَوْفِيْقِیْٓ اِلَّا بِاللّٰہِ

फ़स्ल अव्वल

उन आयात में, जिनमें लफ़्ज़ कलमा-ए-तय्यिबा नहीं है और मुराद कलमा-ए-तय्यिबा है।

(1) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ○ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ○ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ○ (سورۂ ابراہیم، رکوع ۴)

1. क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने कैसी अच्छी मिसाल बयान फ़र्मायी है कलमा-ए-तय्यिबा की कि वह मुशाबह[2] है एक उम्दा पाकीज़ा दरख़्त के, जिसकी जड़ ज़मीन के अन्दर गड़ी हुई हो और उसकी शाख़ें ऊपर आसमान की तरफ़ जा रही हों और वह दरख़्त अल्लाह के हुक्म से हर फ़स्ल में फल देता हो (यानी ख़ूब फलता हो) और अल्लाह तआला मिसालें इसलिए बयान फ़र्माते हैं ताकि लोग ख़ूब समझ लें और ख़बीस कलमा (यानी कलमा-ए-कुफ़्र) की मिसाल है जैसे एक

---

1. काफ़ी समझा गया। 2. मिलता जुलता,

ख़राब दरख़्त हो कि वह ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए और उसको ज़मीन में कुछ सबात[1] न हो।

फ़— हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि कलमा-ए-तय्यिबा से कलमा-ए-शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु

मुराद है, जिसकी जड़ मोमिन के क़ौल में है और उसकी शाख़ें आसमान में कि उसकी वजह से मोमिन के आमाल आसमान तक जाते हैं और कलमा-ए-ख़बीसा शिर्क है कि उसके साथ कोई अमल क़ुबूल नहीं होता। एक दूसरी हदीस में इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि हर वक़्त फल देने का मतलब यह है कि अल्लाह को दिन-रात हर वक़्त याद करता हो।

हज़रत क़तादा ताबई रह० नक़ल करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! यह मालदार (सदक़ात की बदौलत) सारा सवाब उड़ा ले गये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, भला बताओ तो सही, अगर कोई शख़्स सामान को ऊपर-नीचे रखता चला जाये, तो क्या आसमान पर चढ़ जायेगा। मैं तुझे ऐसी चीज़ बताऊं, जिसकी जड़ ज़मीन में हो और शाख़ें आसमान पर। हर नमाज़ के बाद—

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरू व सुबहानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि०' दस-दस मर्तबा पढ़ा कर, इसकी जड़ ज़मीन में है और शाख़ें आसमान पर।

٢ - مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا، إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ (سورۂ فاطر، رکوع ٢)

2. जो शख़्स इज़्ज़त हासिल करना चाहे, (वह अल्लाह ही से इज़्ज़त हासिल करे, क्योंकि) सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के वास्ते है, उसी तक अच्छे कलमे पहुंचते हैं और नेक अमल उनको पहुंचाता है।

फ़— अच्छे कलमों से मुराद बहुत से मुफ़स्सिरीन के नज़दीक—

---

1. पायदारी, मज़बूती,

है। जैसा कि आम मुफ़स्सिरीन ने नक़्ल किया है और दूसरी तफ़्सीर यह है कि इससे मुराद कलमाते तस्बीह[1] हैं जैसा कि दूसरे बाब में आयेगा।

٣ — وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا (سورۃ انعام رکوع ۱۴)

3. और तेरे रब का कलमा सच्चाई और इन्साफ़ (व एतदाल) के एतबार से पूरा है।

फ़ — हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि रब के कलमे से मुराद–

लाइला-ह इल्लल्लाहू

है। और अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक इससे कलामुल्लाह शरीफ़ मुराद है।

٤ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝ (سورۃ ابراہیم رکوع ۴)

4. अल्लाह तआला ईमान वालों को पक्की बात (यानी कलमा-ए-तय्यिबा) से दुनिया और आख़िरत दोनों में मज़बूत रखता है और काफ़िरों को दोनों जहान में बिचला देता है और अल्लाह तआला (अपनी हिक्मत से), जो चाहता है, करता है।

फ़ — हज़रत बरा रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जब क़ब्र में सवाल होता है तो मुसलमान–

'लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की गवाही देता है। आयते शरीफ़ः में पक्की बात से यही मुराद है।

हज़रत आइशा रज़ि० से भी यही नक़्ल किया गया है और इससे मुराद क़ब्र का सवाल-जवाब है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुसलमान जब मरता है, तो फ़रिश्ते उस वक़्त हाज़िर होते हैं, उसको सलाम करते हैं, जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। जब वह मर जाता है, तो फ़रिश्ते उसके साथ जाते हैं, उसकी नमाज़े जनाज़ा

1. तस्बीह कमे कलमे,

में शरीक होते हैं और जब वह दफ़्न हो जाता है, तो उसको बिठाते हैं और उससे सवाल-जवाब होते हैं, जिनमें यह भी पूछा जाता है कि तेरी गवाही क्या है ? वह कहता है:-

अशहदुअल्लाह इला ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह यही मुराद है आयते शरीफ़ा में।

हजरत अबूक़तादा रज़ि० फ़र्माते हैं कि दुनिया में पक्की बात से मुराद 'लाइलाह इल्लल्लाहू' है और आख़िरत में क़ब्र का सवाल-जवाब मुराद है। हज़रत ताऊस रज़ि० से भी यही नक़ल किया गया है।

(٥) لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَاۗءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۭ وَمَا دُعَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ (سورہ رعد، رکوع ۲)

5. सच्चा पुकारना उसी के लिए ख़ास है, और ख़ुदा के सिवा, जिनको यह लोग पुकारते हैं, वह उनकी दर्ख़्वास्त को इससे ज़्यादा मंज़ूर नहीं कर सकते, जितना पानी उस शख़्स की दर्ख़्वास्त को मंज़ूर करता है, जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाये (और उस पानी को अपनी तरफ बुलाये) ताकि वह उसके मुंह तक आ जाये और वह (पानी उड़ कर) उसके मुंह तक आने वाला किसी तरह भी नहीं और काफ़िरों की दर्ख़्वास्त महज बे-असर है।

फ़- हजरत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़र्माते हैं कि दावतुल हक़[1] से मुराद तौहीद यानी

लाइला ह इल्लल्लाहू

है। हजरत इब्नेअब्बास रज़ि० से भी यही मंकूल है कि दावतुलहक़ से मुराद तौहीद यानी-

लाइला ह इल्लल्लाह

की मुराद है। इसी तरह इनके अलावा दूसरे हजरात से भी यही नक़ल किया गया है।

(٦) قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاۗءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَـيْـــًٔـا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ۝ (سورہ آل عمران، رکوع ۷)

---

1. हक़ की दावत, यानी हक़ की तरफ बुलाना,

6. (ऐ मुहम्मद सल्ल०) आप फ़र्मा दीजिए कि ऐ अह्ले किताब ! आओ एक ऐसे कलमे की तरफ़, जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुस्लिम होने में बराबर है, वह यह कि बजुज़ अल्लाह तआला के हम किसी और की इबादत न करें और अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करें और हम में से कोई किसी दूसरे को रब क़रार न दे, ख़ुदा-ए-तआला को छोड़कर, फिर उसके बाद भी वह एराज़ करें, तो तुम लोग कह दो कि तुम इसके गवाह रहो कि हम लोग तो मुसलमान हैं।

फ़— आयते शरीफ़ा का मज़्मून ख़ुद ही साफ़ है कि कलमा से मुराद तौहीद और कलमा-ए-तय्यिबा है। हज़रत अबुल् आलिया रज़ि० और मुजाहिद रज़ि० से सराहत[1] के साथ मंकूल है कि कलमा से मुराद-

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

लाइला ह इल्लल्लाह है।

٧- كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ (سورۂ آل عمران، رکوع ١٢)

7. (ऐ उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम !) तुम लोग (सब अह्ले मज़ाहिब से) बेहतरीन जमाअत हो कि वह जमाअत लोगों को नफ़ा पहुंचाने के लिए ज़ाहिर की गयी है[3]। तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते, तो उनके लिए बेहतर था। उनमें से बाज़ तो मुसलमान हैं, (जो ईमान ले आये) लेकिन अक्सर हिस्सा उनमें से काफ़िर है।[4]

फ़— हज़रत इब्नेअब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि-

तामरु न बिल् मअ्रूफ़ि تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

(अच्छी बात का हुक्म करते हो) का मतलब यह है कि इसका हुक्म करते

---

1. मान्य, 2. खुले तौर पर, 3. पैदा की गयी है,

4. 'फ़ज़ाइले तब्लीग़' फ़स्ले अव्वल में इस पर तफ़्सील से लिखा गया है।

हो कि वह–

लाइला ह इल्लल्लाह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

की गवाही दें और अल्लाह के अह्काम का इक़रार करें और

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

सारी अच्छी चीजों में से बेहतरीन चीज़ है और सबसे बढ़ी हुई।

٨ - وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ذٰلِکَ ذِکْرٰی لِلذّٰکِرِیْنَ ○ (سورۂ ھود، رکوع ۱۰)

8. और (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम !) आप नमाज़ की पाबंदी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में। बेशक नेक काम मिटा देते हैं (नामा–ए–आमाल से), बुरे कामों को। यह बात एक नसीहत है, नसीहत मानने वालों के लिए।

फ़– इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं, जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आयते शरीफ़ा की तौज़ीह[1] फ़र्माते हुए इर्शाद फ़र्माया है कि नेकियां (आमालनामे से) बुराइयों को मिटा देती है।

हज़रत अबूज़र रज़ि० इर्शाद फ़रमाते है कि मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि मुझे कुछ नसीहत फ़र्मा दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अल्लाह से डरते रहो। जब कोई बुराई सादिर हो जाये, फ़ौरन कोई भलाई उसके बाद करो, ताकि उसकी मुकाफ़ात[2] हो जाये और वह ज़ायल हो जाये। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! क्या–

लाइला ह इल्लल्लाह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

भी नेकियों में शुमार है, यानि इसका विर्द[3], इसको पढ़ना भी इसमें दाख़िल है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह तो नेकियों में अफ़ज़लतरीन चीज है।

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि जो बंदा रात में या दिन में किसी वक़्त भी–

---

1. मतलब बयान फ़र्माते हुए,

2. ताकि उस का असर ख़त्म हो जाये, 3. बार–बार पढ़ना,

लाइला ह इल्लल्लाहू

पढ़ता है, उसके आमालनामे से बुराइयां धुल जाती हैं।

٩ - اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ (سورۂ نحل، رکوع ۱۳)

9. बेशक अल्लाह तआला हुक्म फ़र्माते हैं अद्ल[1] का और एहसान का और क़राबतदारों को देने का और मना फ़र्माते हैं फ़ह्श बातों से और बुरी बातों से और किसी पर ज़ुल्म करने से। हक़ तआला शानुहू तुम को नसीहत फ़र्माते हैं, ताकि तुम नसीहत को क़ुबूल करो।

फ़— अद्ल के माना तफ़ासीर में मुख़्तलिफ़ आये हैं। एक तफ़्सीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से भी मंक़ूल है कि अद्ल से मुराद–

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

का इक़रार करना है और एहसान से मुराद फ़राइज़ का अदा करना है।

١٠ - يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

10. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और रास्ती[2] की (पक्की) बात कहो। अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल अच्छे कर देगा और गुनाह माफ़ फ़र्मा देगा और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा, वह बड़ी कामियाबी को पहुंचेगा।

फ़— हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और हज़रत इक्रमा रज़ि० दोनों हज़रात से यह नक़ल किया गया है कि

क़ूलू क़ौलन् सदीदा[3] قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا

के मानी यह है कि लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

कहा करो

एक हदीस में आया है कि सबसे ज़्यादा पक्के आमाल तीन चीजें है–

1. इन्साफ़, 2. सच्चाई, 3. रास्ती की बात कहो.

(1) हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करना, (ग़मी हो या ख़ुशी, तंगी हो या फ़राख़ी।)

(2) दूसरे अपने बारे में इंसाफ़ का मामला करना, (यह न हो कि दूसरों पर तो ज़ोर दिखलाये और जब कोई अपना मामला हो, तो इधर उधर की कहने लगे।)

(3) तीसरे भाई के साथ माली हमदर्दी करना।

११- فَبَشِّرْ عِبَادِ ○ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ○ (سورۂ زمر، رکوع ۲)

11. पस आप मेरे ऐसे बंदों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो इस कलामे पाक को कान लगा कर सुनते हैं, फिर उसकी बेहतरीन बातों का इत्तिबाअ करते हैं। यही हैं, जिनको अल्लाह ने हिदायत की और यही हैं जो अह्ले अक्ल हैं।

फ़- हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि०, हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि०, यह तीनों हज़रात जाहिलियत के ज़माने ही में-

लाइला ह इल्लल्लाह

पढ़ा करते थे और यही मुराद है इस आयते शरीफ़ा में। 'अह्सनुल क़ौल' से हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ि० से भी इसके क़रीब ही मंक़ूल है कि यह आयतें उन तीन आदमियों के बारे में नाज़िल हुई हैं, जो जाहिलियत के ज़माने में भी-

लाइला ह इल्लल्लाह لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

पढ़ा करते थे- ज़ैद बिन उमर बिन नूफ़ैल रज़ि० और अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० और सल्मान फ़ारसी रज़ि०।

१२- وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ○ لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ○ (سورۂ زمر، رکوع ۴)

12. और जो लोग (अल्लाह की तरफ़ से या उसके रसूल की तरफ़ से) सच्ची

बात लेकर आये और ख़ुद भी उसकी तस्दीक की, उसको सच्चा जाना, तो यह लोग परहेज़गार हैं। यह लोग जो कुछ चाहेंगे, इनके लिए इनके परवरदिगार के पास सब कुछ है। यह बदला है नेक काम करने वालों का, ताकि अल्लाह तआला इनके बुरे आमाल को इनसे दूर कर दे (और माफ़ कर दे) और नेक कामों का बदला (सवाब) दे।

फ़– जो लोग अल्लाह की तरफ़ से लाने वाले हैं, वह अंबिया अला नबीयिना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हैं और जो लोग उसके रसूल की तरफ़ से लाने वाले हैं, वह उलमा किराम हैं।

शकरल्लाहु सअ् यहुम[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से मंकूल है कि सच्ची बात से मुराद

लाइला ह इल्लल्लाहू لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

है। बाज़ मुफ़स्सिरीन से नक़ल किया गया है-कि-

अल्लज़ी जा अ बिसिसद्क़ि الَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ

(जो शख़्स सच्ची बात अल्लाह की तरफ़ से लेकर आया) से मुराद नबी ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। और

सद् द क़ बिही صَدَّقَ بِهٖ

(वह लोग, जिन्होंने उसकी तस्दीक की) से मुराद मोमिनीन हैं।

(١٣) إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَأَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ نَحْنُ أَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝ (سورہ حٰمٓ سجدہ)

13. बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह (जल्ले जलालुहू) है, फिर मुस्तक़ीम रहे (यानी जमे रहे, उसको छोड़ा नहीं) उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (मौत के वक़्त और क़ियामत में यह कहते हुए) कि न अंदेशा करो, न रंज करो और ख़ुशख़बरी लो उस जन्नत की, जिसका तुम से वायदा किया गया है। हम तुम्हारे रफ़ीक़[2] थे दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी रहेंगे और आख़िरत में तुम्हारे लिए,

1. अल्लाह उन उलमा की कोशिशों का बदला अता फ़रमाये, 2. साथी,

जिस चीज़ को तुम्हारा दिल चाहे, वह मौजूद है और वहां जो तुम मांगोगे, वह मिलेगा। (और यह सब इनआम व इकराम) बतौर मेहमानी के हैं, अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ से (कि तुम उसके मेहमान होगे और मेहमान का इकराम किया जाता है।)

फ़— हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि-

सुम्मस्तक़ामू ثُمَّ اسْتَقَامُوْا

के मानी यह हैं कि फिर लाइला ह इल्लल्लाहू के इक़रार पर क़ायम रहे। हज़रत इब्राहीम रज़ि० और हज़रत मुजाहिद रज़ि० से भी यही नक़ल किया गया है कि फिर

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

पर मरने तक क़ायम रहे, शिर्क वग़ैरह में मुब्तला नहीं हुए।

(١٤) وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ (سورۂ حم سجدہ، رکوع ۵)

14. बात की उम्दगी के लिहाज़ से कौन शख़्स उससे अच्छा हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये और नेक अमल करे और यह कहे कि मैं मुसलमानों में से हूं।

फ़— हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि

दुआ इलल्लाहि

से मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) का 'लाइला ह इल्लल्लाह' कहना मुराद है। आसिम बिन हुबैर रह० कहते हैं कि जब तू अज़ान से फ़ारिग़ हो तो-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

'लाइला-ह इल्लल्लाह वल्लाहु अक्बरु व अना मिनल् मुस्लिमीन' कहा कर।

(١٥) هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ (سورۂ رحمٰن، رکوع ۳)

15. भला एहसान का बदला एहसान के सिवा और भी कुछ हो सकता है? सो ऐ (जिन्न-व-इंस!) तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के मुंकिर हो जाओगे?

1. इस आयत के मुताल्लिक़ लेखक ने फ़ज़ाइले तब्लीग़ में फ़स्ले अव्वल में ज़रा तफ़्सील से लिखा है,

फ़– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० से नक़्ल फ़र्माते हैं कि आयते शरीफ़ा का मतलब यह है कि जिस शख़्स पर मैंने दुनिया में–

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

कहने का इनाम क्या, भला आख़िरत में जन्नत के सिवा और क्या बदला हो सकता है ?

हज़रत इक्रमा रज़ि० से भी यही मंकूल है कि–

लाइला ह इल्लल्लाह

कहने का बदला जन्नत के सिवा और क्या हो सकता है ? हज़रत हसन रज़ि० से भी यही नक़्ल किया गया है।

(१६) فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ط (سورہ فتح رکوع ۳)

16. पस अल्लाह तआला ने अपनी सकीना (सुकून–तहम्मुल या ख़ास रहमत) अपने रसूल पर नाज़िल फ़र्मायी और मोमिनीन पर और उनको तक़्वा के कलमे पर (तक़्वा की बात पर) जमाये रखा और वही उस तक़्वे के कलमे के मुस्तहिक़ थे और अह्ल थे।

फ़– तक़्वा के कलमे से मुराद अक्सर रिवायात में यही वारिद हुआ है कि कलमा–ए–तय्यिबा है। चुनांचे हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० व हज़रत सल्मा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० से यही नक़्ल किया है कि इससे मुराद –

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

है और हज़रत उबई बिन कअब रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि०, हज़रत इब्ने उमर रज़ि० वग़ैरह बहुत से सहाबा रज़ि० से यही नक़्ल किया गया है।

अता ख़ुरासानी रह० से पूरा कलमा– لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

नक़्ल किया गया है। हज़रत अली रज़ि० से

लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बरू لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

भी नक़्ल किया गया है। तिर्मिज़ी रज़ि० ने हज़रत बरा रज़ि० से नक़्ल किया है कि इससे मुराद–

लाइला ह इल्लल्लाहु لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

है।

١٧- قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى (سورہ اعلیٰ)

17. फ़लाह[1] को पहुंच गया वह शख़्स, जिसने तज़्किया कर लिया (पाकी हासिल की!)

फ़– हज़रत जाबिर रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० से नक़्ल करते हैं कि 'तज़क्का' से मुराद यह है कि–

'लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की गवाही दे और बुतों को खैरबाद[2] कहे। हज़रत इक्रमा रज़ि० कहते हैं कि 'तज़क्का' के यह मानी हैं कि 'लाइला ह इल्लल्लाह' पढ़े। यही हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी नक़्ल किया गया है।

١٨- فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ○ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ○ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى (سورہ لیل رکوع ١)

18. पस जिस शख़्स ने (अल्लाह की राह में माल) दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात की तस्दीक़ की, तो आसान कर देंगे हम उसको आसानी की चीज़ के लिए।

फ़– आसानी की चीज़ से जन्नत मुराद है कि हर क़िस्म की राहत और सहूलतें वहां मयस्सर हैं और मतलब यह है कि ऐसे आमाल की तौफ़ीक़ उसको देंगे, जिससे वह आमाल सहूलत से होने लगेंगे, जो जन्नत में जल्द पहुंचा देने वाले हों।

अक्सर मुफ़स्सिरीन से नक़्ल किया गया है कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की शान में नाज़िल हुई है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से मंक़ूल है कि अच्छी बात की तस्दीक़ से–

लाइला ह इल्लल्लाह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

---

1. कामियाबी, 2. छोड़ दे,

की तस्दीक़ मुराद है। अबू अब्दुर्रहमान सल्मी रज़ि० से भी यही नक़्ल किया गया है कि अच्छी बात से

लाइला ह इल्लल्लाहू

मुराद है। हज़रत इमाम आज़म रज़ि० ने ब-रिवायत अबुज़ुबैर रह० हज़रत जाबिर रज़ि० से नक़्ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने

सद्द क़ बिल् हुस्ना

पढ़ा और इर्शाद फ़र्माया कि-

लाइला ह इल्लल्लाहू

की तस्दीक़ करे और-

कज़्ज़ ब बिल् हुस्ना

पढ़ा और इर्शाद फ़र्माया कि-

लाइला ह इल्लल्लाहू

की तक्ज़ीब[1] करे।

١٩ - مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ (سورۂ انعام، رکوع ۲۰)

19. जो शख़्स नेक काम करेगा, उसको (कम से कम) दस हिस्से सवाब के मिलेंगे और जो बुरा काम करेगा, उसको उसके बराबर ही बदला मिलेगा और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा (कि कोई नेकी दर्ज न की जाये या बदी को बढ़ाकर लिख लिया जाये।)

फ़- एक हदीस में आया है कि जब आयते शरीफ़ा

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ मन जा अ बिल् ह स नति

---

1. झुठलाये,

नाज़िल हुई, तो किसी शख़्स ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! 'लाइला ह इल्लल्लाह' भी हसना (नेकी) में दाख़िल है ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह तो सारी नेकियों में अफ़ज़ल है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि हसना से 'लाइला ह इल्लल्लाह' मुराद है। हज़रत अबूहुरैरह ग़ालिबन हुज़ूर सल्ल० से नक़ल फ़र्माते हैं कि हस्नतन से 'लाइला ह इल्लल्लाह' मुराद है।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से नक़ल किया है कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' तो सारी नेकियों में अफ़ज़ल है, जैसा कि आयत (8) के ज़ेल में गुज़र चुका है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि दस गुना सवाब अवाम के लिए है। मुहाजिरीन[1] के लिए सात सौ गुना तक सवाब हो जाता है।

٢٠ - حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

20. यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की तरफ़ से, जो ज़बर्दस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है, गुनाह का बख़्शने वाला है और तौबा का क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है, क़ुदरत (या अता) वाला है। उसके सिवा कोई लायके इबादत नहीं, उसी के पास लौट कर जाना है।

फ़– हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से इस आयते शरीफ़ की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है कि गुनाह की मग़्फ़िरत फ़र्माने वाला है, उस शख़्स के लिए, जो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहे और तौबा क़ुबूल करने वाला है, उस शख़्स की, जो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहे, सख़्त अज़ाब वाला है, उस शख़्स के लिए जो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' न कहे, ज़ित्तौलि, के माना ग़िना वाला है।

'लाइला ह इल्लल्लाहू' रद्द है कुफ़्फ़ारे क़ुरैश पर, जो तौहीद के क़ायल न थे। और 'इलैहिल मसीरु' के माना उसकी तरफ़ लौटना है, उस शख़्स का जो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहे ताकि उसको जन्नत में दाख़िल करे और उसी की तरफ़ लौटना है उस शख़्स का, जो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' न कहे, ताकि उसको जहन्नम में दाख़िल करे।

---

1. हिजरत करने वाले,

۲۱- فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى

لَا انْفِصَامَ لَهَا ط (سورۂ بقرہ، رکوع ۳۴)

21. पस जो शख़्स शैतान से बद-एतक़ाद हो और अल्लाह के साथ ख़ुश-अक़ीदा हो, तो उसने बड़ा मज़बूत हल्क़ा पकड़ लिया, जिसको किसी तरह शकस्तगी[1] नहीं।

फ़- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि -

उर्वतिल् वुस्क़ा عُرْوَةِ الْوُثْقٰى

(मज़बूत हल्क़ा) पकड़ लिया, यानी

लाइला ह इल्लल्लाह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ کہا

कहा। सुफ़ियान् रह० से भी यही मंक़ूल है कि-

उर्वतिल वुस्क़ा

से कलमा-ए-इख़्लास मुराद है।

तकमील

قُلْتُ وَقَدْ وَرَدَ

فِيْ تَفْسِيْرِ اٰيَاتٍ اُخَرَ عَدِيْدَةٍ اَيْضًا اَنَّ الْمُرَادَ بِبَعْضِ الْاَلْفَاظِ فِيْ هٰذِهِ الْاٰيَاتِ كَلِمَةُ التَّوْحِيْدِ عِنْدَ بَعْضِهِمْ نَعَمْ قَالَ الرَّاغِبُ فِيْ قَوْلِهٖ فِيْ قِصَّةِ زَكَرِيَّا مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ قِيْلَ كَلِمَةُ التَّوْحِيْدِ وَكَذَا قَالَ فِيْ قَوْلِهٖ تَعَالٰى اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ اَلْاٰيَةَ قِيْلَ هِيَ كَلِمَةُ التَّوْحِيْدِ وَاقْتَصَرْتُ عَلٰى مَا مَرَّ لِلْاِخْتِصَارِ

फ़स्ल दोम

(इस फ़स्ल) में उन आयात का ज़िक्र है, जिनमें कलमा-ए-तय्यिबा का ज़िक्र किया गया है। अक्सर जगह पूरा कलमा मज़्कूर है और कहीं मुख़्तसर और कहीं दूसरे अल्फ़ाज़ में बे ऐनिही[1] कलमा-ए-तय्यिबा के माना मज़्कूर हैं कि कलमा-ए-तय्यिबा-

---

1. टूटना, यानी उन को कहीं कोई परेशानी नहीं,

लाइला ह इल्लल्लाह

के माना हैं - 'कोई माबूद नहीं है, अल्लाह पाक के सिवा।' यही माना 'मा मिन इलाहिन गैरुहू'

के हैं कि- कोई माबूद नहीं है, इसके सिवा।' यही माना-

लाइला ह इल्ला हु व

के हैं और यही माना क़रीब-क़रीब हैं-

ला नअ्बुदु इल्लल्लाहू

के कि- 'नहीं इबादत करते हैं हम अल्लाह के सिवा, और यही माना हैं-

ला नअ्बुदु इल्ला ईयाहु

के कि - 'नहीं इबादत करते हैं हम उसके सिवा किसी की।' इसी तरह

इन्नमा हु व इलाहु व्वाहिद०

के माना हैं कि- 'उसके सिवा नहीं कि माबूद वही एक है।'

इसी तरह और आयात भी हैं, जिनका मफ़्हूम कलमा-ए-तय्यिबा ही के हम माना[2] है, उन आयात की सूरतों और रुकूओं का हवाला इसीलिए लिखा जाता है कि पूरी आयत का तर्जुमा कोई देखना चाहे तो मुतर्जम क़ुरआन शरीफ़ को सामने रखकर हवालों से देखता रहे। और हक़ तो यह है कि सारा ही कलाम मजीद कलमा-ए-तय्यिबा का मफ़्हूम है कि असल मक़्सद तमाम क़ुरआन शरीफ़ का और तमाम दीन का तौहीद ही है। तौहीद ही की तालीम के लिए मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुख़्तलिफ़ अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम मब्अूस हुए[3]। तौहीद ही सब मज़ाहिब में मुश्तरिक रही है और तौहीद के इस्बात के लिए मुख़्तलिफ़ उन्वानात इख़्तियार फ़र्माये गये हैं और यही मफ़्हूम कलमा-ए-तय्यिबा का है

(१) وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ (سورہ بقرہ رکوع ۱۹)

1. व[3] इलाहुकुम इलाहु व्वाहिदुन लाइला ह इल्ला हुवर्रहमानु रहीम० (सूरः बकरः रुकूअ 19)

(२) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ (سورہ آل عمران رکوع ۱)

1. ठीक वही, 2. एक ही मतलब वाला, 3. भेजे गये,

2. अल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूम॰ (सूरः बक़रः, रुकूअ 24)

(٣) اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ (سورۂ بقرہ، رکوع ۲۴)

3. अल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूम॰ (सूरः आले इम्रान, रुकूअ1)

(٤) شَھِدَ اللّٰہُ اَنَّہٗ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَالْمَلٰٓئِکَۃُ وَاُولُوا الْعِلْمِ (سورۂ آل عمران، رکوع ۲)

4. शहिदल्लाहु अन्नहु लाइला ह इल्ला हुव वल् मलाइकतु व उलुल् इल्मि॰ (सूरः आले इम्रान, रुकूअ 2)

(٥) لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ (سورۂ آل عمران، رکوع ۲)

5. लाइला ह इल्ला हुवल् अज़ीज़ुल हकीम॰ (सूरः आले इम्रान, रुकूअ 2)

(٦) وَمَا مِنْ اِلٰہٍ اِلَّا اللّٰہُ وَاِنَّ اللّٰہَ لَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ (سورۂ آل عمران، رکوع ۷)

6. व मा मिन इलाहिन इल्लल्ला ह व इन्नल्ला ह ल हुवल् अज़ीज़ुल हकीम॰ (सूरः आले ईम्रान, रुकूअ 6)

(٧) تَعَالَوْا اِلٰی کَلِمَۃٍ سَوَآءٍ بَیْنَنَا وَبَیْنَکُمْ اَنْ لَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰہَ (سورۂ آل عمران، رکوع ۷)

7. तआलौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना व बैनकुम अल्लानअबु दू इल्लल्लाह॰ (सूर आले इम्रान, रुकूअ 7)

(٨) اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ لَیَجْمَعَنَّکُمْ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ (سورۂ نساء، رکوع ۱۱)

8. अल्लाहु लाइला ह इल्ला हु व ल यज्मअन्नकुम इलायौमिल् क़ियामति (सूरः निसा, रुकूअ 11)

(٩) وَمَا مِنْ اِلٰہٍ اِلَّا اِلٰہٌ وَّاحِدٌ (سورہ مائدہ، رکوع ۱۰)

9. व मा मिन इलाहिन इल्ला इलाहुंव्वाहिद॰ (सूरः माइदा, रुकूअ 10)

(١٠) قُلْ اِنَّمَا ھُوَ اِلٰہٌ وَّاحِدٌ (سورۂ انعام، رکوع ۲)

10. क़ुल इन्नमा हु व इलाहुव्वादि॰ (सूरः अन्आम, रुकूम 2)

(١١) مَا مِنْ اِلٰہٍ غَیْرُ اللّٰہِ یَاْتِیْکُمْ بِہٖ (سورۂ انعام، رکوع ۵)

---

1. इन तमाम आयतों का मफ़्हूम ख़ुलासा के तौर पर वही है जो फ़स्ले दौम के शुरू में बता दिया गया है,

11. मा मिन् इलाहिन ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम बिही॰ (सूरः अन्आम, रुकूअ 5)

(۱۲) ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ (سورۂ انعام، رکوع ۱۳)

12. ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम लाइला ह इल्ला हु व॰ (सूरः अन्आम, रुकूअ 13)

(۱۳) لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (سورۂ انعام، رکوع ۱۳)

13. लाइला ह इल्ला हु व व अअ्रिज़ अनिल् मुश्रिकीन (सूरः अन्आम रुकूअ 13)

(۱۴) قَالَ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْغِيْكُمْ إِلٰهًا (سورۂ اعراف، رکوع ۱۶)

14. क़ाल अ ग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम इलाहन्॰ (सूरः अअ्राफ़, रुकूअ 16)

(۱۵) لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ (سورۂ اعراف، رکوع ۲۰)

15. लाइला ह इल्ला हु व युह्यी व युमीतु॰ (सूरः अअ्राफ रुकूअ 20)

(۱۶) وَمَا أُمِرُوْٓا إِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا إِلٰهًا وَّاحِدًا لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ (سورۂ توبہ، رکوع ۵)

16. व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदू इलाहंव वाहिदन लाइला ह इल्ला हु व॰ (सूरः तौबा, रुकूअ 5)

(۱۷) حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (سورۂ توبہ، رکوع ۱۶)

17. हस्बियल्लाहु लाइला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल् अर्शिल् अज़ीम॰ (सूरः तौबा, रुकूअ 16)

(۱۸) ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ (سورۂ یونس، رکوع ۱)

18. ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम फ़अ्बुदूहु॰ (सूरः यूनुस, रुकूअ 1)

(۱۹) فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ (سورۂ یونس، رکوع ۴)

19. फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल् हक़्क़ु॰ (सूरः यूनुस, रुकूअ 4)

(۲۰) قَالَ اٰمَنْتُ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا إِسْرَآءِيْلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

20. क़ाल: आमन्तु अन्नहू लाइला ह इल्लल्ल ज़ी आ म नत बिही बनू इस्राईल व अना मिनल् मुस्लिमीन॰ (सूर: यूनुस, रुकूअ 9)

(۲۱) فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِیْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ (سورۂ یونس، رکوع ۱۱)

21. फ़ला अअ्बदुल्लज़ी न तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि॰ (सूर: यूनुस रुकूअ 11)

(۲۲) فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ ہود، رکوع ۲)

22. फ़अ्लमू अन्नमा उन्ज़ि ल बिअिल्मिल्लाहि व अल्ला इला ह इल्ला हु व॰ (सूर: हूद, रुकूअ 2)

(۲۳) اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ (سورۂ ہود، رکوع ۳)

23. अल्ला तअ्बुदु इल्लल्लाह (सूर: हूद, रुकूअ 3)

(۲۴، ۲۵، ۲۶) قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ (سورۂ ہود، رکوع ۵، ۶، ۸)

24. 25. 26. क़ा ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला ह मा लकुम मिन इलाहिन ग़ैरुहू॰ (सूर: हूद, रुकूअ 5-6-8)

(۲۷) ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (سورۂ یوسف، رکوع ۵)

27. अ अर्बाबुम् मु त फ़र्रिक़ू न ख़ैरुन अमिल्लाहुल् वाहिदुल् क़ह्हारु॰ (सूर: यूसुफ़, रुकूअ 5)

(۲۸) اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِیَّاهُ (سورۂ یوسف، رکوع ۵)

28. अ म र अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु॰ (सूर: यूसुफ़, रुकूअ 5)

(۲۹) قُلْ هُوَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ رعد، رکوع ۴)

29. क़ुल हु व रब्बी लाइला ह इल्ला हु व॰ (सूर: रअ्द, रुकूअ 4)

(۳۰) وَلِیَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ (سورۂ ابراہیم، رکوع ۷)

30. व लियअ्लमू अन्नमा हु व इलाहुंव्वाहिद॰ (सुर: इब्राहीमए रुकूअ7)

(۳۱) اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ (سورۂ نحل، رکوع ۱)

31. अन्नहू लाइलाह इल्ला अना फत्तकूनि० (सुर: नह्ल रुकूअ 1)

(۳۲) اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ (سورہ نحل، رکوع ۳)

32. इलाहुकुम इलाहुव्वाहिद० (सुर: नह्ल, रुकूअ 3)

(۳۳) اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ (سورہ نحل، رکوع ۷)

33. इन्नामा हू व इलाहुव्वाहिद० (सुर: नह्ल रुकूअ 7)

(۳۴) وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ (سورہ بنی اسرائیل، رکوع ۴)

34. व ला तज्अल मअल्लाहि इलाहन आख़र० (सूर: बनी इस्राईल, रूकूअ4)

(۳۵) قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ (سورہ بنی اسرائیل، رکوع ۵)

35. कुल् लौ का न म अ हू आलिहतुन कमा यकूलून० (सूर: बनी इस्राईल, रूकूअ 4)

(۳۶) فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا

36. फ़क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ लन् नद्उ व मिनदुनिही इलाहन० (सुर: कह्फ़, रूकअ 2)

(۳۷) هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً (سورہ کہف، رکوع ۲)

37. हाउलाइ कौमुनत्तख़ज़ू मिनदूनिही आलिहतन० (सूर: कह्फ़, रूकूअ 2)

(۳۸) يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ (سورہ کہف، رکوع ۲)

38. यूहा इलैय्या अन्नमा इलाहुकुम इलाहु व्वाहिद० (सूर: कह्फ़, रूकूअ 2)

(۳۹) وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ (سورہ مریم، رکوع ۱)

39. व इन्नल्ला ह रब्बी व रब्बुकुम फअ्बुदूहू० (सूर: मर्यम, रुकूअ 1)

(۴۰) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورہ طٰہٰ، رکوع ۱)

40. अल्लाहु लाइला ह इल्ला हु व० (सूर: ताहा, रुकूअ 1)

(۴۱) اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ (سورہ طٰہٰ، رکوع ۱)

41. इन्ननी अनल्लाहु लाइला ह इल्ला अना फ़अ्बुद्नी० (सूर: ताहा, रुकूअ 1)

(۴۲) إِنَّمَا إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ (سورۂ طٰہٰ، رکوع ۵)

42. इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल्लजी लाइला ह इल्ला हु व० (सूरः ताहा, रुकूअ 5)

(۴۳) لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا (سورۂ انبیاء، رکوع ۲)

43. लौ का न फ़ीहिमा आलिहतुन इल्लल्लाहु ल फ़ स दता० (सूरः अंबिया, रुकूअ 2)

(۴۴) أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً (سورۂ انبیاء، رکوع ۲)

44. अमित्त ख़ ज़ू मिन दूनिही आलिहतुन० (सूरः अंबिया, रुकूअ 2)

(۴۵) إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا (سورۂ انبیاء، رکوع ۲)

45. इल्ला नूही इलैहि अन्नहू लाइला ह इल्ला अना० (सूरः अंबिया, रुकूअ 2)

(۴۶) أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا (سورۂ انبیاء، رکوع ۴)

46. अलहुम आलिहतुन तम्नअुहुम् मिन दूनिना० (सूरः अंबिया, रुकूअ 4)

(۴۷) أَفَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ (سورۂ انبیاء، رکوع ۵)

47. अ फ तअ़बुदू न मिन दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुकुम शैअंव्व ला यज़ुर्रुकुम० (सूरः अंबिया, रुकूअ 5)

(۴۸) لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ (سورۂ انبیاء، رکوع ۶)

48. लाइला ह इल्ला अन्त सुब्हान क० (सूरः अंबिया, रुकूअ 6)

(۴۹) إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ (سورۂ انبیاء، رکوع ۷)

49. इन्नमा यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिद० (सूरः अंबिया, रुकूअ 7)

(۵۰) فَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا (سورۂ حج، رکوع ۵)

50. फ़ इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिदुन फ़ लहू अस्लिमू० (सूरः हज, रुकूअ 5)

(۵۱،۵۲) اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ (سورۂ مومنون، رکوع ۲)

51. 52. उअ़्बुदुल्ला ह मा लकुम् मिन इलाहिन ग़ैरुहू० (सूरः मूमिन, रुकूअ 2)

(۵۳) وَمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ (سورۂ مومنون، رکوع ۵)

53. व मा का न म अ़ हू मिन् इलाहिन (सूरः मूमिनून, रुकूअ 5)

(۵۴) فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ مومنون، رکوع ۶)

54. फ़ त आलल्लाहुल् मलिकुल् हक़्क़ु लाइला ह इल्ला हु व (सूरः मूमिनून, रुकूअ 6)

(۵۵) وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ

55. व मंय्यद्‌उ़ मअल्लाहि इलाहन् आ ख़ र ला बुर्हा न लहू बिही फ़इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्द रब्बिही० (सूरः मूमिनून, रुकूअ 6)

(۵۶) ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ (۵ بار)

56. अ इलाहुम् म अल्लाहि० (पांच मर्तबा, सूरः नम्ल, रुकूअ 5 में वारिद है)

(۵۷) وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْحَمْدُ (سورۂ قصص، رکوع ۷)

57. व हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हु व लहुल् हम्दु० (सूरः क़सस, रुकूअ 7)

(۵۸) مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ (سورۂ قصص، رکوع ۷)

58. मन इलाहुन ग़ैरुल्लाहि यअ्‌तीकुम बिलैलिन० (सूरः क़सस, रुकूअ 7)

(۵۹) وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ قصص، رکوع ۱۹)

59. व लातदअ़ु म अल्लाहि इलाहन् आ ख़ र लाइला ह इल्ला हु व० (सूरः क़सस, रुकूअ 19)

(۶۰) وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ (سورۂ عنکبوت، رکوع ۵)

60. व इलाहुना व इलाहुकुम इलाहुव्वाहिद० (सूरः अंकबूत, रुकूअ 5)

(۶۱) لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (سورۂ فاطر، رکوع ۱)

61. लाइला ह इल्ला हु व फ़अन्ना तुअ्फ़कून॰ (सूरः फ़ातिर, रुकूअ 1)

(۶۲) اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ (سورۂ صٰفّٰت رکوع ۱)

62. इन्न इला ह कुम लवाहिद॰ (सूरः साफ़्फ़ात, रुकूअ 1)

(۶۳) اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ (سورۂ صٰفّٰت رکوع ۲)

63. इन्नहुम कानू इज़ा क़ी ल लहुम लाइला ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून॰ (सूरः साफ़्फ़ात, रुकूअ 2)

(۶۴) اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا (سورۂ صٓ رکوع ۱)

64. अ ज अ़ लल् आ लि ह त इलाहंव्वाहिदन॰ (सूरः स्वाद, रुकूअ 1)

(۶۵) وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (سورۂ صٓ رکوع ۵)

65. व मा मिन इलाहिन् इल्लल्लाहुल् वाहिदुल् क़ह्हार॰ (सूरः स्वाद, रुकूअ 5)

(۶۶) هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (سورۂ زمر رکوع ۱)

66. हुवल्लाहुल् वाहिदुल क़ह्हार॰ (सूरः ज़ुमर, रुकूअ 1)

(۶۷) ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ زمر رکوع ۱)

67. ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम लहुल मुल्कु लाइला ह इल्ला हु व (सूरः ज़ुमर, रुकूअ 1)

(۶۸) لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ (سورۂ مؤمن رکوع ۱)

68. लाइला ह इल्ला हु व इलैहिल् मसीरु॰ (सूरः मूमिन, रुकूअ 1)

(۶۹) لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (سورۂ مؤمن رکوع ۷)

69. लाइला ह इल्ला हु व फ़अन्ना तुअ्फ़कून॰ (सूरः मूमिन, रुकूअ 7)

(۷۰) هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ (سورۂ مؤمن رکوع ۷)

70. हुवल् हय्यु लाइला ह इल्ला हु व फ़द्ऊहु॰ (सूरः मूमिन, रुकूअ 7)

(۷۱) يُوْحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ (سورۂ حم سجدہ، رکوع ۱)

71. यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुं व्वाहिद॰ (सूर हाम्मीम सज्दा, रुकूअ 1)

(۷۲) أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللّٰهَ (سورۂ حم سجدہ، رکوع ۲)

72. अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्लाह॰ (सूरः हाम्मीम सज्दा, रुकूअ 2)

(۷۳) اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ (سورۂ شوریٰ، رکوع ۲)

73. अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम॰ (सूरः शूरा, रुकूअ 2)

(۷۴) أَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ (سورۂ زخرف، رکوع ۴)

74. अ जअल्ना मिन दूनिर्रह़्मानि आलिहतंय्युअबुदून॰ (सूरः ज़ुख़्रुफ़, रुकूअ 4)

(۷۵) رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا (سورۂ دخان، رکوع ۱)

75. रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैन हुमा॰ (सूरः दुख़ान, रुकूअ 1)

(۷۶) لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ (سورۂ دخان، رکوع ۱)

76. लाइला ह इल्ला हु व युह़्यी व युमीतु॰ (सूरः दुख़ान, रुकूअ 1)

(۷۷) أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللّٰهَ (سورۂ احقاف، رکوع ۳)

77. अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्लाह॰ (सूरः अह्क़ाफ़, रुकूअ 3)

(۷۸) فَاعْلَمْ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ (سورۂ محمد، رکوع ۲)

78. फ़अ़्लम् अन्नहू लाइला ह इल्लल्लाहु (सूरः मुहम्मद, रुकूअ 2)

(۷۹) وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ (سورۂ ذاریات، رکوع ۳)

79. व ला तज्अ़लू मअ़ल्लाहि इलाहन आख़र॰ सूरः ज़ारियात, रुकूअ 3)

(۸۰) هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ (سورۂ حشر، رکوع ۳)

80. हुवल्लाहुल्लज़ी लाइला ह इल्ला हु व॰ (सूरः हश्र, रुकूअ 3)

(۸۱) إِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ (سورۂ ممتحنہ، رکوع ۱)

81. इन्ना बु र आउ मिन्कुम व मिम्मा तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि० (सूरः मुम्तहिना, रुकूअ 1)

(۸۲) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ تغابن، رکوع ۲)

82. अल्लाहु लाइला ह इल्ला हु व० (सूरः तग़ाबुन, रुकूअ 2)

(۸۳) رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (سورۂ مزمل، رکوع ۱)

83. रब्बुल मश्रिकि वल् मग़्रिबि लाइला ह इल्ला हु व० (सूरः मुज़्ज़म्मिल, रुकूअ 1)

(۸۴) لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ (سورۂ کافرون)

84. ला अअ्बुदु मा तअ्बुदू न व ला अन्तुम आबिदून मा अअ्बुदु० (सूरः काफ़िरून)

(۸۵) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (سورۂ اخلاص)

85. क़ुल हुवल्लाहु अ हद० (सूरः इख़्लास)

यह पचासी आयतें हैं, जिनमें कलमा-ए-तय्यिबा या इसका मज़्मून वारिद हुआ है। इनके अलावा और भी आयात ब-कसरत हैं, जिनमें इसके माना और मफ़्हूम वारिद हुआ है और जैसा मैं इस फ़स्ल के शुरू में लिख चुका हूं, तौहीद ही असल् दीन है इसलिए जितना, इसमें इन्हिमाक और शग़फ़[1] होगा, दीन में पुख़्तगी पैदा होगी, इसीलिए इस मज़्मून को मुख़्तलिफ़ इबारात में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ज़िक्र फ़र्माया है कि दिल की गहराइयों में उतर जाये और अंदरूने दिल में पुख़्ता हो जाये और दिल में अल्लाह के मा-सिवा की कोई जगह बाक़ी न रहे।

फ़स्ले सोम

(इस फ़स्ल) में उन अहादीस का ज़िक्र है, जिनमें कलमा-ए-तय्यिबा की तर्ग़ीब व फ़ज़ाइल ज़िक्र फ़र्माये गये हैं, इस मज़्मून में जब आयात इतनी कसरत से ज़िक्र

1. यानी जितना ही इसमें डूबेगा,

फ़र्मायी हैं, तो अहादीस का क्या पूछना। सबका एहाता ना-मुम्किन है। इसलिए चंद अहादीस ब-तौर नमूना के ज़िक्र की जाती हैं।

١ - عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَفْضَلُ الدُّعَاءِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كذا فى المشكوة برواية الترمذى وابن ماجة وقال المنذرى رواه ابن ماجة والنسائى وابن حبان فى صحيحه والحاكم كلهم من طريق طلحة بن خراش عنه وقال الحاكم صحيح الاسناد قلت رواه الحاكم بسندين وصححهما واقره عليه الذهبى وكذا رقم له بالصحة السيوطى فى الجامع-

1. हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तमाम अज़्कार में अफ़ज़ल 'लाइला ह इल्लल्लाहू' है और तमाम दुआओं में अफ़ज़ल 'अल्हम्दु लिल्लाह' है।

फ़– 'लाइला ह इल्लल्लाहू' का अफ़ज़लुज़्ज़िक्र होना तो ज़ाहिर है और बहुत सी अहादीस में कसरत से वारिद हुआ है नीज़ सारे दीन का मदार ही कलमा-ए-तौहीद पर है, तो फिर उसके अफ़ज़ल होने में क्या तरद्दुद है और–

अल्हम्दु लिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

को अफ़ज़ल दुआ इस लिहाज से फ़र्माया है कि करीम की सना[1] का मतलब सवाल ही होता है। आम मुशाहदा[2] है कि किसी रईस, अमीर, नवाब की तारीफ़ में क़सीदा ख़्वानी[3] का मतलब उससे सवाल ही होता है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़र्माते हैं कि जो शख़्स–

लाइला ह इल्लल्लाहू لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

पढ़े, उसके बाद उसको 'अल्हम्दु लिल्लाह'

भी कहना चाहिए। इसलिए कि क़ुरआन पाक में–

फ़द्ऊहू मुख़्लिसी न लहुद्दीन॰ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ

के बाद–

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन॰ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

वारिद है।

---

1. तारीफ़, गुण-गान, 2. आमतौर पर देखने में आता है,

3. तारीफ़ करना,

मुल्ला अलीकारी रह० फ़र्माते हैं, इसमें ज़रा भी शक नहीं कि तमाम ज़िक्रों में अफ़ज़ल और सबसे बढ़ा हुआ ज़िक्र कलमा-ए-तय्यिबा है कि यही दीन की वह बुनियाद है, जिस पर सारे दीन की तामीर[1] है और यह वह पाक कलमा है कि दीन की चक्की इसी के गिर्द घूमती है। इसी वजह से सूफ़िया और आरिफ़ीन[2] इसी कलमे का एहतमाम फ़र्माते हैं और सारे अज़्कार पर इसको तर्जीह देते हैं और इसी की जितनी मुम्किन हो, कसरत कराते हैं तर्जुबे से इसमें जिस क़दर फ़वाइद और मुनाफ़े मालूम हुए हैं, किसी दूसरे में नहीं। चुनांचे सय्यद अली बिन मैमून मग़रिबी रह० का क़िस्सा मशहूर है कि जब शेख़ उल्वान हमवी, जो एक मुतबह्हिर[3] आलिम और मुफ़्ती और मुदर्रिस थे, सय्यद साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सय्यद साहब की इन पर ख़ुसूसी तवज्जोह हुई, तो इनको सारे मशाग़िल दर्स व तद्रीस[4] फ़त्वा वग़ैरह से रोक दिया और सारा वक़्त ज़िक्र में मशग़ूल कर दिया। आवाम का तो काम ही एतराज़ और गालियां देना है। लोगों ने बड़ा शोर मचाया कि शेख़ के मुनाफ़े से दुनिया को महरूम कर दिया और शेख़ को ज़ाया कर दिया, वग़ैरह-वग़ैरह। कुछ दिनों बाद सय्यद साहब को मालूम हुआ कि शेख़ किसी वक़्त कलामुल्लाह की तिलावत करते हैं। सय्यद साहब ने उसको भी मना कर दिया, तो फिर तो पूछना ही क्या ? सय्यद साहब पर ज़िन्दीक़ी और बद-दीनी का इल्ज़ाम लगने लगा। लेकिन चंद ही रोज़ के बाद शेख़ पर ज़िक्र का असर हो गया और दिल रंग गया, तो सय्यद साहब ने फ़र्माया कि अब तिलावत शुरू कर दो। कलाम पाक जो खोला, तो हर-हर लफ़्ज़ पर वह-वह उलूम व मआरिफ़ खुले कि पूछना ही क्या है। सय्यद साहब ने फ़र्माया कि मैंने ख़ुदा-न-ख़्वास्ता[5] तिलावत को मना नहीं किया था, बल्कि इस चीज़ को पैदा करना चाहता था।

चूंकि यह पाक कलमा दीन की अस्ल है, ईमान की जड़ है, इसलिए जितनी भी इसकी कसरत की जायेगी, उतनी ही ईमान की जड़ मज़बूत होगी। ईमान का मदार इसी कलमे पर है, बल्कि दुनिया के वुजूद का मदार इसी कलमे पर है। चुनांचे सही हदीस में वारिद है कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकती जब तक-

लाइला ह इल्लल्लाहू

---

1. रचना, बनावट 2. मारफ़त वाले लोग, 3. बहुत बड़े,
4. पढ़ना-पढ़ाना, 5. ख़ुदा न करे,

कहने वाला कोई ज़मीन पर हो। दूसरी हदीसों में आया है कि जब तक कोई भी अल्लाह-अल्लाह कहने वाला रू-ए-ज़मीन[1] पर हो, क़यामत नहीं होगी।

(٢) عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رض عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُ قَالَ قَالَ مُوْسٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا رَبِّ عَلِّمْنِيْ شَيْئًا أَذْكُرُكَ بِهٖ وَأَدْعُوْكَ بِهٖ قَالَ قُلْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ قَالَ يَا رَبِّ كُلُّ عِبَادِكَ يَقُوْلُ هٰذَا قَالَ قُلْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ قَالَ إِنَّمَا أُرِيْدُ شَيْئًا تَخُصُّنِيْ بِهٖ قَالَ يَا مُوْسٰى لَوْ أَنَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعَ وَالْأَرَضِيْنَ السَّبْعَ فِيْ كَفَّةٍ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ فِيْ كَفَّةٍ مَالَتْ بِهِمْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ رواه النسائى

وابن حبان والحاكم كلهم من طريق دراج عن ابى الهيثم عنه وقال الحاكم صحيح الاسناد كذا فى الترغيب قلت قال الحاكم صحيح الاسناد ولم يخرجاه واقره عليه الذهبى واخرج فى المشكوة برواية شرح السنة نحوه زاد فى منتخب الكنز ابا يعلى والحكيم وابانعيم فى الحلية والبيهقى فى الاسماء وسعيد بن منصور فى سننه وفى مجمع الزوائد رواه ابو يعلى ورجاله وثقوا وفيهم ضعف

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का इर्शाद है कि एक मर्तबा हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अल्लाह जल्ले शानुहू की पाक बारगाह में अर्ज़ किया कि मुझे कोई विर्द तालीम फ़र्मा दीजिए, जिससे आपको याद किया करूं और आपको पुकारा करूं। इर्शादे ख़ुदा वन्दी हुआ कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहा करो। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार! यह तो सारी दुनिया कहती है। इर्शाद हुआ कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहा करो। अर्ज़ किया, मेरे रब! मैं तो कोई ऐसी मख़्सूस चीज़ मांगता हूं जो मुझी को अता हो। इर्शाद हुआ कि अगर सातों आसमान और सातों ज़मीनें एक पलड़े में रख दी जायें और दूसरी तरफ़ 'लाइला ह इल्लल्लाहू' को रख दिया जाये, तो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' वाला पलड़ा झुक जायेगा।

फ़— अल्लाह जल्ले जलालुहू अम्म नवालुहू की आदते शरीफ़ा यही है कि जो चीज़ जिस क़दर ज़रूरत की होती है, उतनी ही आम अता की जाती है। ज़रूरियाते दीनाविया[2] ही में देख लिया जाये कि सांस, पानी, हवा, कैसी आम ज़रूरत की चीज़ें हैं, अल्लाह जल्ले शानुहू ने इनको किस क़दर आम फ़र्मा रखा है। अलबत्ता, यह ज़रूरी चीज़ है कि अल्लाह के यहां वज़न इख़्लास का है, जिस क़दर इख़्लास से कोई काम किया जायेगा, उतना ही वज़नी होगा और जिस क़दर इख़्लास की कमी और बे-दिली से किया जायेगा, उतना ही हल्का होगा। इख़्लास पैदा करने के लिए भी जिस क़दर

---

1. भू-पटल, धरती, 2. दुनिया की ज़रूरतें,

मुफ़ीद इस कलमे की कसरत है, उतनी कोई दूसरी चीज नहीं कि इस कलमे का नाम ही जिलाउल् क़ुलूब (दिलों की सफ़ाई) है। इसी वजह से हज़रात सूफ़िया इसका विर्द कसरत से बताते हैं और सैकड़ों नहीं, बल्कि हज़ारों की मिक्दार में रोज़ाना का मामूल तज्वीज़ करते हैं।

मुल्ला अलीकारी रह० ने लिखा है कि एक मुरीद ने अपने शेख़ से अर्ज़ किया था कि मैं ज़िक्र करता हूं, मगर दिल ग़ाफ़िल रहता है। उन्होंने फ़र्माया कि ज़िक्र बराबर करते रहो, और इस पर अल्लाह का शुक्र करते रहो कि उसने एक उज़्व यानी ज़बान को अपनी याद की तौफ़ीक़ अता फ़र्मायी और अल्लाह से दिल की तवज्जोह के लिए दुआ करते रहो।

इस क़िस्म का वाक़िआ 'एहयाउल उलूम' में भी अबूउस्मान मग़्रिबी के मुताल्लिक़ नक़्ल किया गया कि उनसे किसी मुरीद ने शिकायत की थी, जिस पर उन्होंने यह जवाब दिया था। दरहक़ीक़त बेहतरीन नुस्ख़ा है। हक़ तआला शानुहू का कलाम पाक में इर्शाद है कि अगर तुम शुक्र करोगे, तो मैं इज़ाफ़ा करूंगा।

एक हदीस में वारिद है कि अल्लाह का ज़िक्र उसकी बड़ी नेमत है। उसका शुक्र अदा किया करो कि अल्लाह ने ज़िक्र की तौफ़ीक़ अता फ़र्मायी।

٣ - عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَدْ ظَنَنْتُ يَا اَبَا هُرَيْرَةَ رض اَنْ لَّا يَسْئَلَنِیْ عَنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ اَحَدٌ اَوَّلُ مِنْكَ لِمَا رَاَيْتُ مِنْ حِرْصِكَ عَلَى الْحَدِيْثِ اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِیْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَالِصًا مِّنْ قَلْبِهٖ اَوْ نَفْسِهٖ رواه البخاری و قد اخرج الحاکم بمعناه وذکر صاحب بهجة النفوس فی الحدیث اربعا و ثلثین بحثا

3. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्ल० से दर्याफ़्त किया कि आपकी शफ़ाअत का सबसे ज़्यादा नफ़ा उठाने वाला क़यामत के दिन कौन

शख़्स होगा ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मुझे अहादीस पर तुम्हारी हिर्स[1] देखकर यही गुमान था कि इस बात को तुमसे पहले कोई दूसरा शख़्स न पूछेगा (फिर हुज़ूर सल्ल० ने सवाल का जवाब इर्शाद फ़र्माया) कि सबसे ज़्यादा सआदत्मंद और नफ़ा उठाने वाला मेरी शफ़ाअत के साथ वह शख़्स होगा, जो दिल के ख़ुलूस के साथ 'लाइला ह इल्लल्लाह' कहे।

फ़— सआदत कहते हैं कि आदमी को ख़ैर की तरफ पहंचाने के लिए तौफ़ीक़े इलाही के शामिले हाल होने को। अब इख़्लास से कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने वाले के सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ शफ़ाअत होने के दो मतलब हो सकते हैं-

1. एक तो यह कि इस हदीस से वह शख़्स मुराद है, जो इख़्लास से मुसलमान हो और कोई नेक अमल बजुज़ कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने के उसके पास न हो। इस सूरत में ज़ाहिर है कि सबसे ज़्यादा सआदत उसको शफ़ाअत ही से हासिल हो सकती है कि अपने पास तो कोई अमल नहीं है। इस मतलब के मुवाफ़िक़ यह हदीस उन अहादीस के क़रीब-क़रीब होगी, जिनमें इर्शाद है कि मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह वालों के लिए है कि वह अपने आमाल की वजह से जहन्नम में डाले जायेंगे। लेकिन कलमा-ए-तय्यिबा की बरकत से हुज़ूर सल्ल० की शफ़ाअत उनको नसीब होगी।

2. दूसरा मतलब यह है कि इसके मिस्दाक़[2] वह लोग हैं, जो इख़्लास से इस कलमे का विर्द रखें और नेक आमाल हों। इनके सबसे ज़्यादा सआदतमंद होने का मतलब यह है कि ज़्यादा नफ़ा हुज़ूर सल्ल० की शफ़ाअत से उनको पहुंचेगा कि तरक़्क़ी-ए-दरजात[3] का सबब बनेगी।

अल्लामा ऐनी रह० ने लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत क़यामत के दिन छः तरीक़ों से होगी-

1. अव्वल मैदाने हश्र की क़ैद से ख़लासी[4] की होगी कि हश्र में सारी मख़्लूक़ तरह-तरह के मसाइब में मुब्तिला, परेशान हाल यह कहती हुई होगी कि हमको जहन्नम ही में डाल दिया जाये, मगर इन मसाइब से तो ख़लासी हो। उस वक़्त जलीलुल् क़द्र अंबिया अलै० की ख़िदमत में यके बाद दीगरे[5] हाज़िरी होगी कि

---

1. लालच, शौक़ 2. जिन पर सही हो, 3. दरजों की तरक़्क़ी, 4. आज़ादी, निजात,
5. एक के बाद दूसरा,

आप ही अल्लाह के यहां सिफ़ारिश फ़र्मायें, मगर किसी को जुर्अत न होगी कि सिफ़ारिश फ़र्मा सकें। बिल् आख़िर हुज़ूर सल्ल० शफ़ाअत फ़र्मायेंगे। यह शफ़ाअत तमाम आलम तमाम मख़्लूक़ जिन्न व इंस, मुस्लिम-काफ़िर सब के हक़ में होगी और सब ही इससे मुन्तफ़अ[1] होंगे। अहादीसे क़यामत में इसका मुफ़स्सल क़िस्सा मज़्कूर है।

2. दूसरी शफ़ाअत बाज़ कुफ़्फ़ार के हक़ में तख़्फ़ीफ़े अज़ाब[2] की होगी, जैसा अबूतालिब[3] के बारे में सही हदीस में वारिद हुआ है।

3. तीसरी शफ़ाअत बाज़ मोमिनों को जहन्नम से निकालने के बारे में होगी, जो उसमें दाख़िल हो चुके हैं।

4. चौथी शफ़ाअत बाज़ मोमिन जो अपनी बद-आमालियों की वजह से, जहन्नम में दाख़िल होने के मुस्तहिक़ हो चुके हैं, उनकी जहन्नम से माफ़ी और जहन्नम में न दाख़िल होने के बारे में होगी।

5. पांचवी शफ़ाअत बाज़ मोमिनीन के बग़ैर हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल होने में होगी, और, 6. छठी शफ़ाअत मोमिनीन के दरजात बुलंद होने में होगी।

(۴) عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصًا
دَخَلَ الْجَنَّةَ قِيْلَ وَمَا إِخْلَاصُهَا قَالَ أَنْ تَحْجُزَهُ عَنْ
مَحَارِمِ اللّٰهِ، رواه الطبراني في الاوسط والكبير.

4. हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं, जो शख़्स इख़्लास के साथ 'लाइला ह इल्लल्लाह' कहे, वह जन्नत में दाख़िल होगा। किसी ने पूछा कि कलमा के इख़्लास (की अलामत) क्या है? आपने फ़र्माया कि हराम कामों से उसको रोक दे।

फ़- और यह ज़ाहिर है कि जब हराम कामों से रुक जायेगा और 'लाइला ह इल्लल्लाहु' का क़ायल होगा, तो उसको सीधा जन्नत में जाने में क्या तरद्दुद है। लेकिन अगर हराम कामों से न भी रुके, तब भी इस कलमा-ए-पाक की यह बरकत तो बिला तरद्दुद है कि अपनी बद-आमालियों की सज़ा भुगतने के बाद किसी न किसी वक़्त जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा अलबत्ता अगर ख़ुदा-नख़्वास्ता

1. फ़ायदा उठाने वाले, 2. अज़ाब कम करने, 3. हुज़ूर सल्ल० के चचा, जिन्होंने आपकी बहुत ज़्यादा मदद की थी,

बद-आमालियों की बदौलत इस्लाम व ईमान ही से महरूम हो जाये, तो दूसरी बात है।

हज़रत फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी रह० 'तंबीहुल्ग़ाफ़िलीन' में लिखते हैं, हर शख़्स के लिए ज़रूरी है कि कसरत से 'लाइला ह इल्लल्लाहू' पढ़ता रहा करे और हक़ तआला शानुहू से ईमान के बाक़ी रहने की दुआ भी करता रहे और अपने को गुनाहों से बचाता रहे, इसलिए कि बहुत से लोग ऐसे हैं कि गुनाहों की नहूसत से आख़िर में उनका ईमान 'सल्ब'[1] हो जाता है और दुनिया से कुफ़्र की हालत में जाते हैं, इससे बढ़कर और क्या मुसीबत होगी कि एक शख़्स का नाम सारी उम्र मुसलमानों की फ़िहरिस्त में रहा हो, मगर क़यामत में वह काफ़िरों की फ़िहरिस्त में हो, यह हक़ीक़ी हसरत और कमाले हसरत है। उस शख़्स पर अफ़सोस नहीं होता, जो गिरजा या बुतख़ाने में हमेशा रहा हो और वह काफ़िरों की फ़िहरिस्त में आख़िर में शुमार किया जाये। अफ़सोस उस पर है, जो मस्जिद में रहा हो और काफ़िरों में शुमार हो जाये। और यह बात गुनाहों की कसरत से और तन्हाइयों में हराम कामों में मुब्तिला होने से पैदा होती है।

बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास दूसरों का माल होता है और वह यह समझते हैं कि यह दूसरों का है, मगर दिल को समझाते हैं कि मैं किसी वक़्त उसको वापस कर दूंगा और साहबे हक़ से माफ़ करा लूंगा, मगर इसकी नौबत नहीं आती और मौत उससे क़ब्ल आ जाती है।

बहुत से लोग हैं कि बीवी को तलाक़ हो जाती है और वह उसको समझते हैं, मगर फिर भी उससे हमबिस्तरी करते हैं और इसी हालत में मौत आ जाती है कि तौबा की तौफ़ीक़ भी नहीं होती है। ऐसे ही हालात में आख़िर में ईमान सल्ब हो जाता है-

अल्लाहुम्मह्फ़ज़्ना मिन्हु

(ऐ अल्लाह ! इससे हमें महफ़ूज रख)

हदीस की किताबों में एक क़िस्सा लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में एक नव-जवान का इन्तिक़ाल होने लगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया कि उससे कलमा नहीं पढ़ा जाता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गये और उससे दर्याफ़्त फ़र्माया, क्या बात है ? अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! एक क़ुफ़्ल[2] सा दिल पर लगा हुआ है। तहक़ीक़े हालात[3] से मालूम हुआ कि उसकी

---

1. छिन जाता है। 2. ताला, 3. हालात का पता लगाने से,

मां उससे नाराज़ है और उसने मां को सताया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मां को बुलाया और दर्याफ़्त फ़र्माया कि अगर कोई शख़्स बहुत सी आग जलाकर तुम्हारे इस लड़के को उसमें डालने लगे, तो तुम सिफ़ारिश करोगी ? उन्होंने अर्ज़ किया, हां हुज़ूर ! करूंगी। तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि ऐसा है, तो उसका क़ुसूर माफ़ कर दे। उन्होंने सब माफ़ कर दिया, फिर उससे कलमा पढ़ने को कहा गया, तो फ़ौरन पढ़ लिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से उन्होंने आग से निजात पायी।

इस क़िस्म के सैकड़ों वाक़िआत पेश आते हैं कि हम लोग ऐसे गुनाहों में मुब्तला रहते हैं, जिनकी नहूसत दीन और दुनिया, दोनों में नुक़्सान पहुंचाती है।

साहबे एह्या रह० ने लिखा है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुत्बा पढ़ा, जिसमें इर्शाद फ़र्माया कि जो शख़्स -लाइला ह इल्लल्लाहू' को इस तरह से कहे कि ख़लत-मलत न हो, तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० इसको वाज़ेह फ़र्मा दें, ख़लत-मलत का क्या मतलब है ? इर्शाद फ़र्माया कि दुनिया की मुहब्बत और उसकी तलब में लग जाना। बहुत से लोग ऐसे हैं कि अंबिया की सी बातें करते हैं और मुतकब्बिर[1] और जाबिर[2] लोगों के से अमल करते हैं, अगर कोई इस कलमे को इस तरह कहे कि वह काम न करता हो, तो जन्नत उसके लिए वाजिब है।

٥- عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رضـ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا قَالَ عَبْدٌ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى يُفْضِيَ إِلَى الْعَرْشِ مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرُ. رواه الترمذي وهكذا في المشكوٰة لكن ليس فيها حسن بل غريب فقط قال القاري و رواه النسائي وابن حبان وعزاه السيوطي في الجامع الى الترمذي و رقم له بالحسن وحكاه السيوطي في الدر من طريق ابن مردويه عن ابي هريرة وليس فيه ما اجتنبت الكبائر وفي الجامع الصغير برواية الطبراني عن معقل ابن يسار لكل شئ مفتاح ومفتاح السموات قول لا إله إلا الله ورقم له بالضعف۔

5. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई बन्दा

---

1. घमंडी, 2. ज़ालिम,

ऐसा नहीं कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाज़े न खुल जायें, यहां तक कि यह कलमा सीधा अर्श तक पहुंचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।

फ़— कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है और क़ुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलमा बराहे रास्त अर्शे मुअल्ला तक पहुंचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक़्त भी ख़ाली नहीं।

मुल्ला अलीकारी रह० फ़र्माते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त क़ुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाज़े खुलने के एतबार से है, वरना सवाब और क़ुबूल से कबाइर के साथ भी ख़ाली नहीं।[1]

बाज़ उलमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फ़र्माया है कि ऐसे शख़्स के वास्ते मरने के बाद उसकी रूह के एज़ाज़[2] में आसमान के सब दरवाज़े खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलमे ऐसे है कि उनमें से एक के लिए अर्श से नीचे कोई मुन्तहा[3] नहीं। दूसरा आसमान और ज़मीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे–

एक 'लाइला ह इल्लल्लाहू'

दूसरा 'अल्लाहु अक्बर

(٦) عَنْ يَعْلَى بْنِ شَدَّادٍ قَالَ حَدَّثَنِيْ أَبِيْ شَدَّادُ ابْنُ أَوْسٍ وَعُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ حَاضِرٌ يُصَدِّقُ قَالَ كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ هَلْ فِيْكُمْ غَرِيْبٌ يَعْنِيْ أَهْلَ الْكِتَابِ قُلْنَا لَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ فَأَمَرَ بِغَلْقِ الْأَبْوَابِ وَقَالَ ارْفَعُوْا أَيْدِيَكُمْ وَقُوْلُوْا لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ فَرَفَعْنَا أَيْدِيَنَا سَاعَةً ثُمَّ قَالَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ بَعَثْتَنِيْ بِهٰذِهِ الْكَلِمَةِ وَوَعَدْتَّنِيْ عَلَيْهَا الْجَنَّةَ وَأَنْتَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ثُمَّ قَالَ أَبْشِرُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ قَدْ غَفَرَ لَكُمْ

رواه احمد باسناد حسن والطبرانی وغيرهما كذا فی الترغيب قلت واخرجه الحاكم وقال اسمعيل بن عياش احد ائمة اهل الشام وقد نسب الى سوء الحفظ وانا عليه شرطه فی امثاله وقال الذهبی راشد ضعفه الدارقطنی وغيره ووثقه رحيم اه وفی مجمع الزوائد رواه احمد والطبرانی والبزار ورجاله موثقون اه

1. मतलब यह है कि कबीरा गुनाहों के साथ क़ुबूलियत हो सकती है 2. आदर,
3. यहां 'ठहराव' मुराद है,

6. हज़रत शद्दाद रह० फ़र्माते हैं और हज़रत उबादह रज़ि० इस वाक़िआ की तस्दीक करते हैं कि एक मर्तबा हम लोग हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त फ़र्माया, कोई अजनबी (ग़ैर-मुस्लिम) तो मज्मे में नहीं ? हमने अर्ज किया, कोई नहीं ! इर्शाद फ़र्माया, किवाड़ बंद कर दो। उसके बाद इर्शाद फ़र्माया, हाथ उठाओ और कहो 'लाइला ह इल्लल्लाहू' हमने थोड़ी देर हाथ उठाये रखे (और कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ा) फिर फ़र्माया 'अल्हम्दु लिल्लाह !' ऐ अल्लाह ! तूने मुझे यह कलमा देकर भेजा है और इस कलमे पर जन्नत का वायदा किया है और तू वायदा-ख़िलाफ़ नहीं है। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमसे फ़र्माया कि ख़ुश हो जाओ, अल्लाह ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी।

फ़– ग़ालिबन[1] अजनबी को इसीलिए दर्याफ़्त फ़र्माया था और इसीलिए किवाड़ बंद कराये थे कि उन लोगों के कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने पर तो हुज़ूरे अक्दस सल्ल० को मग़्फ़िरत की बशारत की उम्मीद होगी, औरों के मुताल्लिक़ यह उम्मीद न हो।

सूफ़िया ने इस हदीस से मशाइख़ का अपने मुरीदीन की जमाअत को ज़िक्र तल्क़ीन करने पर[2] इस्तद्लाल किया है, चुनांचे 'जामिउल् उसूल' में लिखा है, हुज़ूर सल्ल० का सहाबा रज़ि० को जमाअतन[3] और मुन्फ़रिदन[4] ज़िक्र तल्क़ीन करना साबित है। जमाअत को तल्क़ीन करने में इस हदीस को पेश किया है। इस सूरत में किवाड़ों का बंद करना मुस्तफ़ीदीन[5] की तवज्जोह के ताम[6] करने की ग़रज से हो और इसी वजह से अजनबी को दर्याफ़्त फ़र्माया कि ग़ैर का मज्मे में होना हुज़ूर सल्ल० पर तशन्नुत[7] का सबब अगरचे न हो, लेकिन मुस्तफ़ीदीन के तशन्नुत का एहतमाल तो था ही–

चे ख़ुशस्त बा तू बज़्मे ब नहुफ़्ता साज करदन,
दर ख़ाना बंद करदन, सरे शीशा बाज़ करदन।

(कैसी मज़े की चीज है तेरे साथ ख़ुफ़िया साज़ कर लेना, घर का दरवाज़ा बंद कर देना और बोतल का मुंह खोल देना।)

---

1. शायद, 2. यानी बताने पर, 3. जमाअत की हैसियत से, 4. फ़र्द (व्यक्ति) की हैसियत से, 5. फ़ायदा उठाने वाले, 6. पूरा, 7. ज़ेहन का बिखराव,

٧ - عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رضقَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَدِّدُوْا اِیْمَانَکُمْ قِيْلَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَكَيْفَ نُجَدِّدُ اِيْمَانَنَا قَالَ اَكْثِرُوْا مِنْ قَوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

رواه احمد والطبرانی واسناد احمد حسن کذا فی الترغیب قلت ورواه الحاکم فی صحیحه وقال صحیح الاسناد وقال الذهبی صدقة (الراوی) ضعفوه قلت هو من رواة ابی داؤد والترمذی واخرج له البخاری فی الادب المفرد وقال فی التقریب صدوق له اوهام وذکره السیوطی فی الجامع الصغیر برواية احمد والحاکم ورقم له بالصحة وفی مجمع الزوائد رواه احمد واسناده جيد وفی موضع آخر رواه احمد والطبرانی ورجال احمد ثقات۔

7. हुज़ूरे अक़दस सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया है कि अपने ईमान की तज्दीद करते रहा करो, यानी ताज़ा करते रहा करो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ईमान की तज्दीद किस तरह करें ? इर्शाद फ़र्माया कि 'लाइला ह इल्लल्लाहु' को कसरत से पढ़ते रहा करो।

फ़– एक रिवायत में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि ईमान पुराना हो जाता है, जैसा कि कपड़ा पुराना हो जाता है, इसलिए अल्लाह जल्ले शानुहू से ईमान की तज्दीद मांगते रहा करो।

पुराने हो जाने का मतलब यह है कि मआसी से क़ुव्वते ईमानिया और नूरे ईमान जाता रहता है, चुनांचे एक हदीस में आया है कि जब बन्दा कोई गुनाह करता है, तो एक स्याह निशान (धब्बा) उसके दिल में हो जाता है अगर वह सच्ची तौबा कर लेता है, तो वह निशान धुल जाता है, वरना जमा रहता है और फिर जब दूसरा गुनाह करता है, तो दूसरा निशान हो जाता है। इसी तरह आख़िर दिल बिल्कुल काला हो जाता है और ज़ंग आलूद[2] हो जाता है,जिसको हक़ तआला शानुहू ने सूरः तत्फ़ीफ़[3] में इर्शाद फ़र्माया है–

कल्ला बल् रान अला क़ुलूबिहिम मा कानू यक्सिबून० (यानी उनकी बद-अमलियों ने उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया है।)

1. नया करना, 2. मोर्चा लगा हुआ, 3. सूरः वैलुल्लिल मुतफ़्फ़िफ़ीन,

इसके बाद उसके दिल की हालत ऐसी हो जाती है कि हक़ बात उसमें असर और सरायत ही नहीं करती।

एक हदीस में आया है कि चार चीज़ें आदमी के दिल को बर्बाद कर देती हैं–

(1) अहमक़ों से मुक़ाबला, (2) गुनाहों की कसरत, (3) औरतों के साथ कसरते इख़्तिलात[1] और (4) मुर्दा लोगों के पास कसरत से बैठना। किसी ने पूछा, मुर्दों से क्या मुराद है ? फ़र्माया, हर वह मालदार, जिसके अन्दर माल ने अकड़ पैदा कर दी हो।

٨ - عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رضقَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَکْثِرُوْا مِنْ شَهَادَةِ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَبْلَ اَنْ یُّحَالَ بَیْنَکُمْ وَبَیْنَهَا - رواه ابو یعلی باسناد جید قوی کذا فی الترغیب وعزاه فی الجامع الی ابی یعلی وابن عدی فی الکامل ورقم له بالضعف وزاد لقنوها موتاکم وفی مجمع الزوائد رواه ابویعلی ورجاله رجال الصحیح غیر ضمام وهو ثقة -

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' का इक़रार कसरत से करते रहा करो, क़ब्ल इसके कि ऐसा वक़्त आये कि तुम उस कलमे को न कह सको।

फ़– यानी मौत हायल हो जाये कि उसके बाद किसी अमल का भी वक़्त नहीं रहता, ज़िंदगी का ज़माना बहुत ही थोड़ा-सा है और यह ही अमल करने का और तुख़्म[2] बो लेने का वक़्त है और मरने के बाद का ज़माना बहुत ही वसीअ है और वहां वही मिल सकता है, जो यहां बो दिया गया हो ।

٩ - عَنْ عُمَرَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اِنِّیْ لَاَعْلَمُ کَلِمَةً لَّا یَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِّنْ قَلْبِهٖ فَیَمُوْتُ عَلٰی ذٰلِكَ اِلَّا حُرِّمَ عَلَی النَّارِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ - رواه الحاکم وقال صحیح علی شرطهما ورویاه بنحوه کذا فی الترغیب

9. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मैं एक ऐसा कलमा जानता हूं कि कोई बंदा ऐसा नहीं है कि दिल से हक़ समझ कर उसको पढ़े और इसी हाल में मर जाये, मगर वह जहन्नम पर हराम हो जाये, वह कलमा 'लाइला ह इल्लल्लाह' है।

---

1. मिलने-जुलने की ज़्यादती, 2. बीज,

फ़— बहुत सी रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है, इन सबसे अगर यह मुराद है कि वह मुसलमान ही उस वक़्त हुआ है, तब तो कोई इश्काल ही नहीं कि इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र के गुनाह बिल् इत्तिफ़ाक़ माफ़ हैं और अगर यह मुराद है कि पहले से मुसलमान था और इख़्लास के साथ इस कलमे को कहकर मरा है, तब भी क्या बईद है कि हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से सारे ही गुनाह माफ़ फ़रमा दें हक़ तआला शानुहू का तो ख़ुद ही इर्शाद है कि शिर्क के अलावा, सारे ही गुनाह, जिसके चाहेंगे, माफ़ फ़र्मा देंगे।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने बाज़ उलमा से यह भी नक़ल किया है कि यह और इस क़िस्म की अहादीस उस वक़्त के एतबार से हैं, जब तक दूसरे अह्काम नाज़िल नहीं हुए थे।

बाज़ उलमा ने फ़र्माया है कि इससे मुराद इस कलमे को उसके हक़ की अदाएगी के साथ कहना, जैसा कि पहले हदीस न० 4 में गुज़र चुका है।

हसनबसरी रह० वग़ैरह हज़रात की भी यही राय है। इमाम बुख़ारी रह० की तहक़ीक़ यह है कि नदामत[1] के साथ इस कलमे को कहा हो कि यही हक़ीक़त तौबा की है और फिर इसी हाल पर इंतिक़ाल हुआ हो।

मुल्लाअली क़ारी रह० की तहक़ीक़ यह है कि इससे हमेशा जहन्नम में रहने की हुर्मत मुराद है। इस सब के अलावा एक खुली हुई बात और भी है, वह यह कि किसी चीज़ का कोई ख़ास असर होना इसके मनाफ़ी नहीं कि किसी आरिज़[2] की वजह से वह असर न कर सके। सक़मूनिया का असर इस्हाल[3] है, लेकिन अगर इसके बाद कोई सख़्त क़ाबिज़ चीज़ खा ली जाये तो यक़ीनन सक़मूनिया का असर न होगा, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इस दवा का वह असर नहीं, रहा बल्कि इस आरिज़ की वजह से उस शख़्स पर असर न हो सका।

(١٠) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَفَاتِيْحُ الْجَنَّةِ شَهَادَةُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رواه احمد كذا فى المشكوة والجامع الصغير ورقم له بالضعف وفى مجمع الزوائد رواه احمد ورجاله وثقوا الا ان شهرا لم يسمع عن

معاذ اھ ورواه البزار كذا فى الترغيب وزاد السيوطى فى الدر ابن مردويه والبيهقى وذكره فى المقاصد الحسنة برواية احمد بلفظ مفتاح الجنة لا اله الا الله واختلف فى وجه حمل الشهادة وهى مفرد على المفاتيح وهى جمع ـه

1. शर्मिंदगी, 2. मर्ज़, 3. दस्त लाना, क़ब्ज़ तोड़ना.

اقوال اوجہہا عندی انہا لما کانت مفتاحًا لکل باب من ابوابہ صارت کالمفاتیح ۔

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि लाइला ह इल्लल्लाहू का इक़रार करना जन्नत की कुंजियां हैं।

फ़– कुंजियां इस लिहाज़ से फ़र्माया कि हर दरवाज़े की और हर जन्नत की कुंजी यह ही कलमा है इसलिए सारी कुंजियां यही कलमा हुआ या इस लिहाज़ से कि यह कलमा भी दो जुज़्व लिये हुए है-

एक 'लाइला ह इल्लल्लाहू' لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

का इक़रार और दूसरे-

मुहम्मदर्रसूलुल्लाह مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

का इक़रार। इसलिए दो हो गये कि दोनों के मज्मूए से खुल सकता है। और भी इन रिवायात में, जहां-जहां जन्नत के दुख़ूल (दाख़िल होने) या जहन्नम के हराम होने का ज़िक्र है, उससे मुराद पुरा ही कलमा है। एक हदीस में वारिद है कि जन्नत की क़ीमत 'लाइला ह इल्लल्लाहू' है।

(۱۱) عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ فِیْ سَاعَۃٍ مِّنْ لَیْلٍ اَوْ نَہَارٍ اِلَّا طُمِسَتْ مَا فِی الصَّحِیْفَۃِ مِنَ السَّیِّئَاتِ حَتّٰی تَسْکُنَ اِلٰی مِثْلِہَا مِنَ الْحَسَنَاتِ رواہ ابو یعلی کذا فی الترغیب وفی مجمع الزوائد فیہ عثمان بن عبد الرحمن الزہری وہو متروک اھ

11. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो भी बन्दा किसी वक़्त भी, दिन में या रात में लाइला ह इल्लल्लाहू कहता है, तो आमालनामे में से बुराइयां मिट जाती हैं और उनकी जगह नेकियां लिखी जाती हैं।

फ़– बुराइयां मिट कर नेकियां लिखी जाने के मुताल्लिक़ बाब अव्वल, फ़स्ल दोम के न० (10) पर मुफ़स्सल गुज़र चुका है और इस क़िस्म की आयात व रिवायात के चंद माना लिखे गए हैं। हर माना के एतबार से गुनाहों का इस हदीस में आमालनामे से मिटाना तो मालूम होता ही है, अल्बत्ता, इख़्लास होना ज़रूरी है और कसरत से अल्लाह का पाक नाम लेना और कलमा-ए-तय्यिबा का कसरत से पढ़ना ख़ुद भी इख़्लास पैदा करने वाला है। इसीलिए इस पाक कलमे का नाम कलमा-ए-इख़्लास है।

(١٢) عن ابى هريرة رضـ عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان لله تبارك وتعالى عمودا من نور بين يدى العرش فاذا قال العبد لا اله الا الله اهتز ذلك العمود فيقول الله تبارك وتعالى اسكن فيقول كيف اسكن ولم تغفر لقائلها فيقول انى قد غفرت له فيسكن عند ذلك رواه البزار وهو غريب كذا فى الترغيب وفى مجمع الزوائد فيه عبد الله بن ابراهيم بن ابى عمرو وهو ضعيف جدا اه قلت وبسط السيوطى فى اللآلى على طرقه

12. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अर्श के सामने नूर का एक स्तून है। जब कोई शख़्स 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहता है तो वह स्तून हिलने लगता है। अल्लाह का इर्शाद होता है कि ठहर जा। वह अर्ज करता है, कैसे ठहरूं, हालांकि कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने वाले की अभी तक मग़्फ़िरत नहीं हुई, इर्शाद होता है कि अच्छा, मैंने उसकी मग़्फ़िरत कर दी, तो वह स्तून ठहर जाता है।

फ़– मुहद्दिसीन किराम को इस रिवायत में कलाम है, लेकिन अल्लामा सुयूती रह० ने लिखा है कि यह रिवायत कई तरीक़ों से मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से नक़्ल की गयी है। बाज़ रिवायतों में इसके साथ अल्लाह जल्ले शानुहू का यह भी इर्शाद वारिद है कि मैंने कलमा-ए-तय्यिबा उस शख़्स की ज़ुबान पर इसीलिए जारी करा दिया था कि उसकी मग़्फ़िरत करूं। किस क़दर लुत्फ़ व करम है अल्लाह का कि ख़ुद ही तौफ़ीक़ अता फ़र्माते हैं और फिर ख़ुद ही उस लुत्फ़ की तक्मील में मग़्फ़िरत फ़र्माते हैं।

हज़रत अता रह० का क़िस्सा मशहूर है कि वह एक मर्तबा बाज़ार तश्रीफ़ ले गये, वहां एक दीवानी बांदी फ़रोख़्त हो रही थी। उन्होंने ख़रीद ली। जब रात का कुछ हिस्सा गुज़रा, तो वह दीवानी उठी और वुज़ू करके नमाज़ शुरू कर दी और नमाज़ में उसकी यह हालत थी कि आंसुओं से दम घुटा जा रहा था। उसके बाद उसने कहा, ऐ मेरे माबूद ! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम ! मुझ पर रहम फ़र्मा दीजिए। अता ने यह सुनकर फ़र्माया कि लौंडी यों कह, ऐ अल्लाह ! मुझे आपसे मुहब्बत रखने की क़सम ! यह सुनकर उसको ग़ुस्सा आया और कहने लगी, उसके हक़ की क़सम ! अगर उसको मुझसे मुहब्बत न होती, तो तुम्हें यों मीठी नींद न सुलाता और मुझे यों खड़ा न करता । उसके बाद उसने यह अश्आर पढ़े-

اَلْكَرْبُ مُجْتَمِعٌ وَالْقَلْبُ مُحْتَرِقٌ وَالصَّبْرُ مُفْتَرِقٌ وَالدَّمْعُ مُسْتَبِقٌ
كَيْفَ الْقَرَارُ عَلٰى مَنْ لَا قَرَارَ لَهٗ مِمَّا جَنَاهُ الْهَوٰى وَالشَّوْقُ وَالْقَلَقُ
يَا رَبِّ اِنْ كَانَ شَيْءٌ فِيْهِ لِيْ فَرَجٌ فَامْنُنْ عَلَيَّ بِهٖ مَا دَامَ بِيْ رَمَقٌ

अल् कर्बु मुज्तमिअुन वल् क़ल्बु मुह्तरिकुन
वस्सब्रु मुफ़्तरिकुन वद् दम्अु मुस्तबिक़ू।
कैफ़ल् क़रारु अला मल्ला क़रा र लहू
मिम्मा जनाहुल् हवा वश्शौक़ु वल् क ल क़ू।
या रब्बि इन का न शैउन फ़ीहि ली फ र जुन
फ़म्मुन अलय्य बिही मा दा मा बी र म क़ू।

तर्जुमा– बेचैनी जमा हो रही है और दिल जल रहा है और सब्र जुदा हो गया है और आंसू बह रहे हैं। उसको किस तरह क़रार आ सकता है, जिसको इश्क़ व शौक़ और बेचैनी के हमलों की वजह से ज़रा भी सुकून नहीं। ऐ अल्लाह! अगर कोई चीज ऐसी हो सकती है, जिसमें ग़म से निजात हो, तो ज़िंदगी में उसको अता फ़र्मा कर मुझ पर एहसान फ़र्मा।

इसके बाद उसने कहा, ऐ अल्लाह ! मेरा और आपका मामला अब राज़ में नहीं रहा, मुझे उठा लीजिए यह कह कर एक चीख़ मारी और मर गयी।

इस क़िस्म के और भी बहुत से वाक़िआत हैं और खुली हुई बात है कि तौफ़ीक़ जब तक शामिले हाल न हो क्या हो सकता है–

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

व मा तशाऊ न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु रब्बुल आलमीन०.

(और तुम बदून ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन[1] के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते)

(۱۳) عَنْ اِبْنِ عُمَرَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ عَلٰى اَهْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْشَةٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ وَلَا مَنْشَرِهِمْ وَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ اِلٰى اَهْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَهُمْ يَنْفُضُوْنَ التُّرَابَ عَنْ رُءُوْسِهِمْ وَيَقُوْلُوْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ وَفِيْ رِوَايَةٍ لَيْسَ عَلٰى اَهْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْشَةٌ عِنْدَ الْمَوْتِ وَلَا عِنْدَ الْقَبْرِ

رواه الطبراني والبيهقي كلاهما من رواية يحيى بن عبد الحميد الحماني وفي متنه نكارة كذا في الترغيب وذكره في الجامع الصغير برواية الطبراني عن ابن عمر رض ورقم له بالضعف وفي اسنى المطالب رواه الطبراني وابو يعلى بسند ضعيف وفي مجمع الزوائد رواه الطبراني وفي رواية ليس على اهل لا اله الا الله وحشة عند الموت ولا عند القبر

1. दुनियाओं के रब यानी ख़ुदा के चाहे बग़ैर,

فی الاول یحیی الحمانی وفی الاخری مجاشع بن عمرو کلاھما ضعیف اھ وقال السخاوی فی المقاصد الحسنۃ رواہ ابویعلی والبیھقی فی الشعب والطبرانی بسند ضعیف عن ابن عمرؓ اھ قلت وماحکم علیہ المنذری بالنکارۃ مبناہ انہ حمل اَھْلُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ علی الظاھر علٰی کُلِّ مُسْلِمٍ وَمَعْلُوْمٌ اَنَّ بَعْضَ الْمُسْلِمِیْنَ یُعَذَّبُوْنَ فِی الْقَبْرِ وَالْحَشْرِ فَیَکُوْنُ الْحَدِیْثُ مُخَالِفًا لِلْمَعْرُوْفِ فَیَکُوْنُ مُنْکَرًا لٰکِنَّہٗ اِنْ اُرِیْدَ بِہٖ مَخْصُوْصٌ بِھٰذِہِ الصِّفَۃِ فَیَکُوْنُ مُوَافِقًا لِلنُّصُوْصِ الْکَثِیْرَۃِ مِنَ الْقُرْاٰنِ وَالْحَدِیْثِ فَالسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ اُولٰٓئِکَ الْمُقَرَّبُوْنَ وَمِنْھُمْ سَابِقٌ بِالْخَیْرَاتِ بِاِذْنِ اللّٰہِ وَسَبْعُوْنَ اَلْفًا یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّۃَ بِغَیْرِ حِسَابٍ وَغَیْرُ ذٰلِکَ مِنَ الْاٰیَاتِ وَالرِّوَایَاتِ فَالْحَدِیْثُ مُوَافِقٌ لَّھَا لَا مُخَالِفٌ فَیَکُوْنُ مَعْرُوْفًا لَا مُنْکَرًا اَوْ ذکرالسیوطی

فی الجامع الصغیر بروایۃ ابن مردویہ والبیھقی فی البعث عن عمرؓ بلفظ سَابِقُنَا سَابِقٌ وَمُقْتَصِدُنَا نَاجٍ وَظَالِمُنَا مَغْفُوْرٌ لَّہٗ ورقم لہ بالحسن قلت ویؤیدہ حدیث سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ الْمُسْتَھْتِرُوْنَ فِیْ ذِکْرِ اللّٰہِ یَضَعُ الذِّکْرُ عَنْھُمْ اَثْقَالَھُمْ فَیَاْتُوْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ خِفَافًا رواہ الترمذی والحاکم عن ابی ھریرۃ والطبرانی عن ابی الدرداء کذا فی الجامع ورقم لہ بالصحۃ وفی الاتحاف عن ابی الدرداء مرفوعًا اَلَّذِیْنَ لَا تَزَالُ اَلْسِنَتُھُمْ رَطْبَۃً مِّنْ ذِکْرِ اللّٰہِ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّۃَ وَھُمْ یَضْحَکُوْنَ وفی الجامع الصغیر بروایۃ الحاکم ورقم لہ بالصحۃ اَلسَّابِقُ وَالْمُقْتَصِدُ یَدْخُلَانِ الْجَنَّۃَ بِغَیْرِ حِسَابٍ وَالظَّالِمُ لِنَفْسِہٖ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا ثُمَّ یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ۔

13. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि लाइलाह इल्लल्लाहु वालों पर न क़ब्रों में वहशत है, न मैदाने हश्र में। इस वक़्त गोया वह मंज़र मेरे सामने है कि जब वह अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुए (क़ब्रों से) उठेंगे और कहेंगे कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे (हमेशा के लिए) रंज व ग़म दूर कर दिया। दूसरी हदीस में है कि लाइलाह इल्लल्लाहू वालों पर न मौत के वक़्त वहशत होगी, न क़ब्र के वक़्त।

फ़— हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निहायत ग़मगीन थे। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया कि अल्लाह जल्ले जलालुहू ने आपको सलाम फ़र्माया है और इर्शाद फ़र्माया

कि आप को रंजीदा और ग़मगीन देख रहा हूं, यह क्या बात है (हालांकि हक़ तआला शानुहू दिलों के भेद जानने वाले हैं, लेकिन इक्राम व एज़ाज़ और इज़्हारे शराफ़त के वास्ते इस क़िस्म के सवाल कराये जाते थे) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिब्रील अलै० ! मुझे अपनी उम्मत का फ़िक्र बहुत बढ़ रहा है कि क़यामत में उनका क्या हाल होगा। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दर्याफ़्त किया कि कुफ़्फ़ार के बारे में या मुसलमानों के बारे में ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मुसलमानों के बारे में फ़िक्र है।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साथ लिया और एक मक़्बरे पर तश्रीफ़ ले गये, जहां क़बीला बनू सलमा के लोग दफ़्न थे। हज़रत जिब्रील अलै० ने एक क़ब्र पर एक पर मारा और इर्शाद फ़र्माया कि 'क़ुम बिइज़्निल्लाह' (अल्लाह के हुक्म से खड़ा हो जा) उस क़ब्र से एक शख़्स निहायत हसीन, ख़ूबसूरत चेहरे वाला उठा, वह कह रहा था- 'लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह० अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन०' - हज़रत जिब्रील अलै० ने इर्शाद फ़र्माया कि अपनी जगह लौट जा। वह चला गया। फिर दूसरी क़ब्र पर दूसरा पर मारा और इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह के हुक्म से खड़ा हो जा। उसमें से एक शख़्स निहायत बद-सूरत, काला मुंह कैरी आंखों वाला खड़ा हुआ। वह कह रहा था, हाय अफ़सोस ! हाय शर्मिंदगी ! हाय मुसीबत ! फिर हज़रत जिब्रील अलै० ने फ़र्माया, अपनी जगह लौट जा। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि जिस हालत पर यह लोग मरते हैं, उसी हालत पर उठेंगे।

हदीसे बाला में 'लाइला ह इल्लल्लाहु' वालों से बज़ाहिर वह लोग मुराद हैं, जिनको इस पाक कलमे के साथ, ख़ुसूसी लगाव, ख़ुसूसी मुनासबत, ख़ुसूसी शिग़ाल हो, इसलिए कि दूध वाला, जूतों वाला, मोती वाला, बर्फ़ वाला वही शख़्स कहलाता है, जिस के यहां इन चीज़ों की ख़ुसूसी बिक्री और ख़ुसूसी ज़ख़ीरा मौजूद हो, इसलिए 'लाइला ह इल्लल्लाहु' वालों के साथ इस मामले में कोई इश्काल नहीं। क़ुरआन पाक में सूरः फ़ातिर में इस उम्मत के तीन तब्क़े[1] बयान फ़र्माये हैं - एक तब्क़ा साबिक़ बिल ख़ैरात[2] का बयान फ़र्माया, जिनके मुताल्लिक़ हदीस में आया है कि वह बे-हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे।

एक हदीस में वारिद है कि जो शख़्स सौ मर्तबा-लाइला ह इल्लल्लाहु पढ़ा करे, उसको हक़ तआला शानुहू क़यामत के दिन ऐसी हालत में उठायेंगे कि चौदहवीं रात के चांद की तरह उनका चेहरा रोशन होगा। हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं

1. दर्जा, 2. भलाइयों-नेकियों की तरफ़ दौड़ लगाने वाले,

कि जिन लोगों की ज़ुबानें अल्लाह के ज़िक्र से तर व ताज़ा रहती हैं, वह जन्नत में हंसते हुए दाख़िल होंगे।

١٣- عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ يَسْتَخْلِصُ رَجُلًا مِّنْ اُمَّتِيْ عَلٰى رُءُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَيَنْشُرُ عَلَيْهِ تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ سِجِلًّا كُلُّ سِجِلٍّ مِّثْلُ مَدِّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَقُوْلُ اَتُنْكِرُ مِنْ هٰذَا شَيْئًا اَظَلَمَكَ كَتَبَتِي الْحَافِظُوْنَ فَيَقُوْلُ لَا يَا رَبِّ فَيَقُوْلُ اَفَلَكَ عُذْرٌ فَيَقُوْلُ لَا يَا رَبِّ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى بَلٰى اِنَّ لَكَ عِنْدَنَا حَسَنَةً فَاِنَّهٗ لَا ظُلْمَ عَلَيْكَ الْيَوْمَ فَتُخْرَجُ بِطَاقَةٌ فِيْهَا اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ فَيَقُوْلُ اُحْضُرْ وَزْنَكَ فَيَقُوْلُ يَا رَبِّ مَا هٰذِهِ الْبِطَاقَةُ مَعَ هٰذِهِ السِّجِلَّاتِ فَقَالَ فَاِنَّكَ لَا تُظْلَمُ الْيَوْمَ فَتُوْضَعُ السِّجِلَّاتُ فِيْ كِفَّةٍ وَّالْبِطَاقَةُ فِيْ كِفَّةٍ فَطَاشَتِ السِّجِلَّاتُ وَثَقُلَتِ الْبِطَاقَةُ فَلَا يَثْقُلُ مَعَ اللّٰهِ شَيْءٌ

رواه الترمذی وقال حسن غریب وابن ماجة وابن حبان فی صحیحه و البیهقی والحاکم وقال صحیح علی شرط مسلم کذا فی الترغیب قلت کذا قال الحاکم فی کتاب الایمان واخرجه ایضاً فی کتاب الدعوات وقال صحیح الاسناد واقره فی الموضعین الذهبی وفی المشکوٰة اخرجه بروایة الترمذی وابن ماجة وزاد السیوطی فی الدر فیمن عزاه الیهم احمد وابن مردویه واللالکائی و البیهقی فی البعث وفیه اختلاف فی بعض الالفاظ کقوله فی اول الحدیث یُصَاحُ بِرَجُلٍ مِّنْ اُمَّتِیْ عَلٰی رُءُوْسِ الْخَلَائِقِ وَفِیْهِ اَیْضًا فَیَقُوْلُ اَفَلَکَ عُذْرٌ اَوْ حَسَنَةٌ فَیَهَابُ الرَّجُلُ فَیَقُوْلُ لَا یَا رَبِّ فَیَقُوْلُ بَلٰی اِنَّ لَکَ عِنْدَنَا حَسَنَةً الحدیث وعلم منه ان الاستدلال فی الحدیث علی محل ولا حاجة اذا الی ما اوله القاری فی المرقاة وذکر السیوطی ما یؤید الروایة من الروایات الاخر

14. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू क़यामत के दिन मेरी उम्मत में से एक शख़्स को मुंतख़ब[1] फ़र्मा कर तमाम दुनिया के सामने बुलायेंगे और उसके सामने निन्नान्वे दफ़्तर आमाल के खोलेंगे।

1. छांट कर

हर दफ़्तर इतना बड़ा होगा कि मुंतहाए नज़र तक (यानी जहां तक निगाह जा सके, वहां तक) फैला हुआ होगा। उसके बाद उससे सवाल किया जायेगा कि इन आमालनामों में से तू किसी चीज़ का इन्कार करता है ? क्या मेरे उन फ़रिश्तों ने, जो आमाल नामे लिखने पर मुतअय्यन थे, तुझ पर कुछ ज़ुल्म किया है (कि कोई गुनाह बग़ैर किये हुए लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिया हो) वह अर्ज करेगा, नहीं। (न इन्कार की गुंजाइश है, न फ़रिश्तों ने ज़ुल्म किया) फिर इर्शाद होगा कि तेरे पास इन बद-आमालियों का कोई उज़्र[1] है ? वह अर्ज करेगा कोई उज़्र भी नहीं। इर्शाद होगा, अच्छा तेरी एक नेकी हमारे पास है, आज तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं है। फिर एक काग़ज़ का पुर्ज़ा निकाला जायेगा, जिसमें-'अशहदुअल्लाइला ह इल्लल्ला हु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू'- लिखा हुआ होगा। इर्शाद होगा कि जा, इसको तुलवा ले। वह अर्ज करेगा कि इतने दफ़्तरों के मुक़ाबले में यह पुर्ज़ा क्या काम देगा ? इर्शाद होगा कि आज तुझ पर ज़ुल्म नहीं होगा। फिर उन सब दफ़्तरों को एक पलड़े में रख दिया जायेगा और दूसरी जानिब वह पुर्ज़ा होगा, तो दफ़्तरों वाला पलड़ा उड़ने लगेगा उस पुर्ज़े के वज़न के मुक़ाबले में। पस बात यह है कि अल्लाह के नाम से कोई चीज़ वज़नी नहीं।

फ़—यह इख़्लास ही की बरकत है कि एक मर्तबा कलमा-ए-तय्यिबा इख़्लास के साथ का पढ़ा हुआ उन सब दफ़्तरों पर ग़ालिब आ गया। इसीलिए ज़रूरी है कि आदमी किसी मुसलमान को भी हक़ीर न समझे और अपने को उससे अफ़ज़ल न समझे, क्या मालूम कि उसका कौन सा अमल अल्लाह के यहां मक़्बूल हो जाये, जो उसकी निजात के लिए काफ़ी हो जाये और अपना हाल मालूम नहीं कि कोई अमल क़ाबिले क़ुबूल होगा या नहीं।

हदीस शरीफ़ में एक क़िस्सा आता है कि बनी इस्राईल में दो आदमी थे- एक आबिद[2] था, दूसरा गुनाहगार। वह आबिद इस गुनाहगार को हमेशा टोका करता था, वह कह देता कि मुझे मेरे ख़ुदा पर छोड़ो।

एक दिन उस आबिद ने ग़ुस्से में आकर कह दिया कि ख़ुदा की क़सम ! तेरी मग़फ़िरत कभी नहीं होगी। हक़ तआला शानुहू ने आलमे अर्वाह[3] में दोनों को जमा फ़र्माया और गुनाहगार को इसलिए कि वह रहमत का उम्मीदवार था, माफ़ फ़र्माया और आबिद को उस क़सम खाने के पादाश[4] में अज़ाब का हुक्म फ़र्मा दिया और

---

1. मजबूरी, 2. इबादत करने वाला, 3. रूहों की दुनिया, 4. बदला,

इसमें क्या शक है कि यह क़सम निहायत सख़्त थी। ख़ुद हक़ तआला शानुहू तो इर्शाद फ़र्मायें–

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ

इन्नल्लाहा ला यग्फ़िरुअंय्युशरक बिही व यग़्फ़िरु म दू न ज़ालि क लिमंय्यशाउ

(हक़ तआला शानुहू कुफ़्र व शिर्क की मग़्फ़िरत नहीं फ़र्मायेंगे, इस के अलावा हर गुनाह की, जिसके लिए चाहेंगे, मग़्फ़िरत फ़र्मा देंगे।)

तो किसी को क्या हक़ है यह कहने का कि फ़्लां की मग़्फ़िरत नहीं हो सकती, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि मआसी पर, गुनाहों पर, नाजायज़ बातों पर गिरफ़्त न की जाये, टोका न जाये। क़ुरआन व हदीस में सैकड़ों जगह इसका हुक्म है, न टोकने पर वईद है। अहादीस में ब कसरत आया है कि जो लोग किसी गुनाह को करते देखें और उसके रोकने पर क़ादिर हों और न रोकें तो वह ख़ुद उसकी सज़ा में मुब्तला होंगे, अज़ाब में शरीक होंगे। इस मज़्मून को मैं अपने रिसाला 'तब्लीग़'[1] में मुफ़स्सल लिख चुका हूं, जिसका दिल चाहे, उसको देखे।

यहां एक ज़रूरी चीज यह भी क़ाबिले लिहाज है कि जहां दीनदारों का गुनाहगारों को क़तई जहन्नमी समझ लेना मुह्लिक है, वहां जुहला[2] का हर शख़्स को मुक्तदा[3] और बड़ा बना लेना, ख़्वाह कितने ही कुफ़्रियात बके सिम्मे क़ातिल[4] और निहायत मुह्लिक है। नबी–ए–अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी बिदअती की ताज़ीम करता है, वह इस्लाम के मुनहदिम[5] करने पर इआनत करता है।बहुत सी अहादीस में आया है कि आख़िर ज़माने में दज्जाल मक्कार कज़्ज़ाब[6] पैदा होंगे, जो ऐसी अहादीस तुमको सुना देंगे, जो तुमने न सुनी होंगी, ऐसा न हो कि वह तुम को गुमराह करें और फ़ित्ने में डाल दें।

(٥) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَوْجِيْءَ بِالسَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَمَا بَيْنَهُنَّ وَمَا تَحْتَهُنَّ فَوُضِعْنَ فِيْ كِفَّةِ الْمِيْزَانِ وَوُضِعَتْ شَهَادَةُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ فِي الْكِفَّةِ الْأُخْرٰى لَرَجَحَتْ بِهِنَّ. أخرجه الطبراني كذا في الدر وهكذا في مجمع الزوائد وزاد في أوله لقنوا موتاكم شهادة أن لا إله إلا الله فمن قالها عند موته وجبت له الجنة قالوا يا رسول الله فمن قالها في صحته قال تلك أوجب وأوجب ثم قال والذي نفسي بيده

1. इससे मुराद है 'फ़ज़ाइले तब्लीग़' 2. जाहिल लोग, 3. जिसकी पैरवी की जाये,
4. क़त्ल करने वाला ज़हर, 5. ढा देना, गिराना, 6. बहुत बड़ा झूठा,

الحدیث قال رواہ الطبرانی ورجالہ ثقات | الا ان ابن ابی طلحۃ لم یسمع من ابن عباس.

15. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि उस पाक ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तमाम आसमान व ज़मीन और जो लोग उनके दर्मियान में हैं, वह सब और जो चीज़ें उनके दर्मियान में हैं, वह सब कुछ और जो कुछ उनके नीचे है, वह सब का सब एक पलड़े में रख दिया जाये और 'लाइला ह इल्लल्लाहु' का इक़रार दूसरी जानिब हो, तो वही तौल में बढ़ जायेगा।

फ़- इस क़िस्म का मज़मून बहुत सी मुख़्तलिफ़ रिवायतों में ज़िक्र किया गया है। इसमें शक नहीं कि अल्लाह के पाक नाम के बराबर कोई भी चीज नहीं। बदक़िस्मती और महरूमी है उन लोगों की, जो उसको हल्का समझते हैं, अल्बत्ता इसमें वज़न इख़्लास से पैदा होता है। जिस क़दर इख़्लास होगा, उतना ही वज़नी यह पाक नाम हो सकता है। इसी इख़्लास के पैदा करने के वास्ते मशाइख़े सूफ़िया की जूतियां सीधी करनी पड़ती हैं।

एक हदीस में इस इर्शाद नबवी से पहले एक और मज़मून मज़्कूर है, वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह इर्शाद फ़र्माया कि मय्यत को -लाइला ह इल्लल्लाहु' तल्क़ीन किया करो। जो शख़्स मरते वक़्त इस पाक कलमे को कहता है, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर कोई तंदुरुस्ती ही में कहे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, फिर तो और भी ज़्यादा जन्नत का वाजिब करने वाला है। उसके बाद यह क़समिया[1] मज़मून इर्शाद फ़र्माया, जो ऊपर ज़िक्र किया गया।

(۱۶) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ جَاءَ النَّحَّامُ ابْنُ زَيْدٍ وَقَرْدَمُ بْنُ كَعْبٍ وَبَحْرِيُّ بْنُ عَمْرٍو فَقَالُوا يَا مُحَمَّدُ مَا تَعْلَمُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا غَيْرَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ بِذٰلِكَ بُعِثْتُ وَإِلٰى ذٰلِكَ أَدْعُو فَأَنْزَلَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِي قَوْلِهِمْ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ | أَكْبَرُ شَهَادَةً الآية اخرجه ابن اسحاق وابن المنذر وابن ابی حاتم وابو الشیخ کذا فی الدر المنثور.

16. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक मर्तबा तीन काफ़िर हाज़िर हुए और पूछा कि ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को नहीं जानते, (नहीं मानते)? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया,

---

1. क़सम वाला,

लाइला ह इल्लल्लाहू' (नहीं कोई माबूद अल्लाह के सिवा, इसी कलमे के साथ मैं मब्ऊस हुआ हूं[1] और इसी की तरफ लोगों को बुलाता हूं। इसी बारे में आयत – 'क़ुल अय्यु शैइन अक्बरु शहादतन्– नाज़िल हुई।

फ़– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि इसी कलमे के साथ मैं मब्ऊस हुआ हूं यानी नबी बना कर भेजा गया हूं और इसी कलमे की तरफ लोगों को बुलाता हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद का यह मतलब नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इसमें खुसूसियत है, बल्कि सारे ही नबी इस कलमे के साथ नबी बनाकर भेजे गये और सब ही अंबिया ने इसी कलमे को तरफ दावत दी है। हज़रत आदम् अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम से लेकर ख़ातमुल् अंबिया फ़ख़्रेरुसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक कोई भी नबी ऐसा नहीं है, जो इस मुबारक कलमे की दावत न देता हो। किस क़दर बा बरकत और मुहतम्म बिश्शान[2] कलमा है कि सारे अंबिया और सारे सच्चे मज़हब इसी पाक कलमे की तरफ बुलाने वाले और और इसके शाया करने वाले रहे। आख़िर कोई तो बात है कि इससे कोई भी सच्चा मज़हब ख़ाली नहीं।

इसी कलमे की तस्दीक़ में क़ुरआन पाक की आयत-

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَکْبَرُ شَهَادَةً (سورۃ انعام، رکوع ۲)

क़ुल अय्यु शैइन अकबरु शहादतन (सूरः अनआम, रुकूअ 2) नाज़िल हुई, जिसमें नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ में ख़ुद हक़ तआला शानुहू की गवाही का ज़िक्र है।

एक हदीस में वारिद है कि जब बन्दा-

लाइला ह इल्लल्लाहू

कहता है कि हक़ तआला शानुहू इसकी तस्दीक़ फ़र्माते हैं और इर्शाद फ़र्माते हैं, मेरे बंदे ने सच कहा है, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

(١٤)- عَنْ اَبِیْ ... قَالَ قَالَ عِیْسَی بْنُ مَرْیَمَ عَلَیْهِ السَّلَامُ اُمَّةُ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَثْقَلُ النَّاسِ فِی الْمِیْزَانِ ذَلَّتْ اَلْسِنَتُهُمْ بِكَلِمَةٍ ثَقُلَتْ عَلٰی مَنْ كَانَ قَبْلَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اخرجه الاصبهانی فی الترغیب کذا فی الدر۔

1. भेजा गया हूं, 2. शानदार,

17. हज़रत ईसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़र्माते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के आमाल (हश्र की तराज़ु में इसलिए) सबसे ज़्यादा भारी हैं कि इनकी ज़ुबानें एक ऐसे कलमे के साथ मानूस हैं, जो इनसे पहली उम्मतों पर भारी था। वह कलमा 'लाइला ह इल्लल्लाहू' है।

फ़– यह एक खुली हुई बात है कि उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहा अल्फ़ु अल्फ़ु सलातिन व तहीयतिन के दर्मियान कलमा-ए-तय्यिबा का जितना ज़ोर और कसरत है, किसी उम्मत में भी इतनी कसरत नहीं है। मशाइख़े सुलूक की लाखों नहीं, करोड़ों की मिक्दार है और फिर हर शेख़ के कम व बेश सैकड़ों मुरीद और तक़रीबन सब ही के यहां कलमा-ए-तय्यिबा का विर्द हज़ारों की मिक्दार में रोज़ाना के मामूलात में दाख़िल है।

'जामिअुल उसूल' में लिखा है कि लफ़्ज़ अल्लाह का ज़िक्र विर्द के तौर पर कम-अज़-कम[1] पांच हज़ार की मिक्दार है और ज़्यादा के लिए कोई हद नहीं और सूफ़िया के लिए कम-अज-कम पचीस हज़ार रोज़ाना और ला 'इला ह इल्लल्लाहू' की मिक्दार के मुताल्लिक़ लिखा है कि कम अज-कम पांच हज़ार रोज़ाना हो। यह मिक्दारें मशायख़े सुलूक की तज्वीज के मुवाफ़िक़ कम व बेश होती रहती हैं। मेरा मक़्सूद हज़रत ईसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ताईद में मशायख़ का अन्दाज़ा बयान करना है कि एक-एक शख़्स के लिए रोज़ाना की मिक्दारें कम-अज कम यह बतायी गयी हैं।

हमारे हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रह० ने 'क़ौलेजमील' में अपने वालिद से नक़ल किया है कि मैं इब्तिदा-ए-सुलूक में एक सांस में- 'लाइला ह इल्लल्लाहू' को दो सौ मर्तबा कहा करता था।

शेख़ अबूयज़ीद क़र्तबी रह० फ़र्माते हैं, मैंने यह सुना कि जो शख़्स सत्तर हज़ार मर्तबा 'लाइला ह इल्लल्लाहू' पढ़े, उसको दोज़ख़ की आग से निजात मिले। मैंने यह ख़बर सुनकर एक निसाब यानी सत्तर हज़ार की तायदाद अपनी बीवी के लिए भी पढ़ा और कई निसाब ख़ुद अपने लिए पढ़कर ज़ख़ीरा ए आख़िरत[2] बनाया। हमारे पास एक नौ-जवान रहता था, जिसके मुताल्लिक़ यह मशहूर था कि यह साहबे

---

1. कम से कम, 2. आख़िरत का ख़ज़ाना,

कश्फ़ है, जन्नत-दोज़ख़ का भी उसको कश्फ़ होता है। मुझे इसकी सेहत में कुछ तरद्दुद था। एक मर्तबा वह नो-जवान हमारे साथ खाने में शरीक था कि दफ़अतन उसने एक चीख़ मारी और सांस फूलने लगी और कहा कि मेरी मां दोज़ख़ में जल रही है, उसकी हालत मुझे नजर आयी। क़ुर्तबी रह० कहते हैं कि मैं उसकी घबराहट देख रहा था। मुझे ख़्याल आया कि एक निसाब उसकी मां को बख़्श दूं, जिससे इसकी सच्चाई का भी मुझे तर्जुबा हो जायेगा। चुनांचे मैंने एक निसाब सत्तर हज़ार का, उन निसाबों में से, जो अपने लिए पढ़े थे, उसकी मां को बख़्श दिया। मैंने अपने दिल में चुपके ही से बख़्शा था और मेरे इस पढ़ने की ख़बर भी अल्लाह के सिवा किसी को न थी, मगर वह नो-जवान फ़ौरन कहने लगा कि चचा ! मेरी मां दोज़ख़ के अज़ाब से फ़ौरन हटा दी गयी। क़ुर्तबी रह० कहते हैं कि मुझे इस क़िस्से से दो फ़ायदे हुए- एक तो इस बरकत का, जो सत्तर हज़ार की मिक़्दार पर जो, मैंने सुनी थी, उसका तजुर्बा हुआ, दूसरे उस नो-जवान की सच्चाई का यकीन हो गया।

यह एक वाक़िआ है। इस क़िस्म के न मालूम कितने वाक़िआत इस उम्मत के अफ़राद में पाये जाते हैं। सूफ़िया की इस्तिलाह में एक मामूली चीज़ पास 'अन्फ़ास' है यानी इसकी मश्क़ कि कोई सांस अल्लाह के ज़िक्र बग़ैर अन्दर न जाये, न बाहर आये। उम्मते मुहम्मदिया के करोड़ों अफ़राद ऐसे हैं, जिनको इसकी मश्क़ हासिल है तो फिर क्या तरद्दुद है हज़रत ईसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इस इर्शाद में, कि उनकी ज़ुबानें इस कलमा 'लाइला ह इल्ललाहू' के साथ मानूस और मुंक़ाद[1] हो गयीं।

١٨- عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَكْتُوْبٌ عَلٰى بَابِ الْجَنَّةِ إِنَّنِيْ أَنَا اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا لَا أُعَذِّبُ مَنْ قَالَهَا- أخرجه أبو الشيخ كذا في الدر-

18. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जन्नत के दरवाज़े पर यह लिखा है - 'इन्ननी अनल्लाहु लाइला ह इल्ला अना ला उअज़्ज़िबु मन का ल हा' (मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं। जो शख़्स इस कलमे को कहता रहेगा, मैं उसको अज़ाब नहीं करूंगा।)

फ़- गुनाहों पर अज़ाब का होना दूसरी अहादीस में ब-कसरत आया है, इसलिए इससे अगर दायमी[2] अज़ाब मुराद हो, तो कोई इश्काल नहीं, लेकिन कोई

1. फ़र्मांबरदार हो गयीं, 2. हमेशा,

ख़ुश-क़िस्मत ऐसे इख़्लास से इस जुम्ले का विर्द रखने वाला हो कि बावजूद गुनाहों के उसको बिल्कुल अज़ाब न किया जाये, यह भी रहमते ख़ुदावंदी से बईद नहीं है, जैसा हदीस नं० 14 में गुज़रा। इसके अलावा नं० 9 में भी कुछ तफ़्सील गुज़र चुकी है।

١٩ عَنْ عَلِيٍّ رضـ قَالَ حَدَّثَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ جِبْرَئِيْلَ قَالَ قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اِنِّيْ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِيْ مَنْ جَآءَنِيْ مِنْكُمْ بِشَهَادَةِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ بِالْاِخْلَاصِ دَخَلَ فِيْ حِصْنِيْ وَمَنْ دَخَلَ حِصْنِيْ اَمِنَ عَذَابِيْ اخرجه ابونعيم في الحلية كذا في اللآلى وابن عساكر كذا في الجامع الصغير وفيه ايضًا برواية الشيرازى عن على ورقم له بالصحة وفي الباب عن عتبان ابن مالك بلفظ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَبْتَغِيْ بِذٰلِكَ وَجْهَ اللّٰهِ رواه الشيخان وعن ابن عمر بلفظ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُعَذِّبُ مِنْ عِبَادِهٖ اِلَّا الْمَارِدَ الْمُتَمَرِّدَ الَّذِيْ يَتَمَرَّدُ عَلَى اللّٰهِ وَاَبٰى اَنْ يَّقُوْلَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رواه ابن ماجه

19. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत जिब्रील अलै० से नक़्ल करते हैं कि अल्लाह जल्ले जलालुहू का इर्शाद है कि मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, लिहाज़ा, मेरी ही इबादत किया करो। जो शख़्स तुम में से इख़्लास के साथ 'लाइला ह इल्लल्लाहु' की गवाही देता हुआ आयेगा, वह मेरे क़िले में दाख़िल हो जायेगा, और जो मेरे क़िले में दाख़िल होगा वह मेरे अज़ाब से मामून[1] होगा।

फ़— अगर यह भी कबाइर से बचने के साथ मशरूत[2] हो, तो जैसा कि हदीस (5) में गुज़र चुका, तब तो कोई इश्काल ही नहीं और अगर कबाइर के बावजूद यह कलमा कहे, तो फिर क़वाइद के मुवाफ़िक़ तो अज़ाब से मुराद दायमी अज़ाब है। हां, अल्लाह जल्ले शानुहू की रहमत क़वाइद की पाबंद नहीं।

क़ुरआन पाक का साफ़ इर्शाद है कि अल्लाह जल्ले शानुहू शिर्क को माफ़ नहीं फ़रमायेंगे। इसके अलावा जिसको चाहेंगे माफ़ कर देंगे। चुनांचे एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू उसी शख़्स को अज़ाब करते हैं जो अल्लाह पर तमर्रुद (हेकड़ी) करे और 'लाइला ह इल्लल्लाह' कहने से इंकार करे।

---

1. महफ़ूज़, अम्न पाया होगा, 2. यानी इसकी शर्त लगे,

एक हदीस में आया है कि 'लाइला ह इल्लल्लाहु'

हक़ तआला शानुहू के ग़ुस्से को दूर करता रहता है, जब तक कि दुनिया को दीन पर तर्जीह न देने लगे और जब दुनिया को दीन पर तर्जीह देने लगे और 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहते रहें, तो हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं कि तुम अपने दावे में सच्चे नहीं हो।

(٢٠) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَفْضَلُ الدُّعَاءِ الْاِسْتِغْفَارُ ثُمَّ قَرَأَ فَاعْلَمْ اَنَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ الْاٰيَةَ اخرجه الطبرانی

وابن مردويه والديلمى كذا فى الدر وفى الجامع الصغير برواية الطبرانى مَا مِنَ الذِّكْرِ اَفْضَلُ مِنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا مِنَ الدُّعَاءِ اَفْضَلُ مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ ورقم له بالحسن۔

20. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तमाम ज़िक्रों में अफ़्ज़ल 'लाइला ह इल्लल्लाहू' है और तमाम दुआओं में अफ़्ज़ल इस्तग़्फ़ार है। फिर इसकी ताईद में सूरः मुहम्मद की आयत– 'फ़अलम अन्नहू लाइला ह इल्लल्लाहू' तिलावत फ़र्मायी।

फ़– इस फ़स्ल की सबसे पहली हदीस में भी यह मज़मून गुज़र चुका है कि 'लाइला ह इल्लल्लाहू' सब अज़्कार से अफ़्ज़ल है, जिसकी वजह सूफ़िया ने यह लिखी है कि दिल के पाक होने में इस ज़िक्र को ख़ास मुनासिबत है। इसकी बरकत से दिल सारी ही गंदगियों से पाक हो जाता है और जब इसके साथ इस्तग़्फ़ार भी शामिल हो जाये, तो फिर क्या ही कहना।

एक हदीस में वारिद है कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को जब मछली ने खा लिया था, तो उसके पेट में उनकी दुआ यह थी–

'लाइला ह इल्ला अन्त सुब्हान क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०' जो शख़्स भी इन अल्फ़ाज़ से दुआ मांगेगा, तो वह ज़रूर क़ुबूल होगी।

इस फ़स्ल की सबसे पहली हदीस में भी यह मज़मून गुज़रा है कि सबसे अफ़्ज़ल और बेह्तरीन ज़िक्र 'लाइला ह इल्लल्लाहू' है, लेकिन वहां सबसे अफ़्ज़ल दुआ'

अल्हम्दु लिल्लाह

इर्शाद हुआ था और यहां इस्तग़फ़ार वारिद है। इस किस्म का इख़्तिलाफ़ हालात के एतबार से भी होता है। एक मुत्तक़ी परहेज़गार है, उसके लिए-

अल्हम्दु लिल्लाह

सबसे अफ़ज़ल है। एक गुनाहगार है, वह तौबा और इस्तग़फ़ार का बहुत मुहताज है, उसके हक़ में 'इस्तग़फ़ार' सबसे अहम है।

इसके अलावा अफ़ज़लियत भी मुख़्तलिफ़ वुजूह से होती है। मुनाफ़ा के हासिल करने के वास्ते अल्लाह की हम्द-व-सना सबसे ज़्यादा नाफ़ेअ[1] है और मज़र्रतें और तंगियां दूर करने के लिए इस्तग़फ़ार सबसे ज़्यादा मुफ़ीद है। इनके अलावा और भी वुजूह इस क़िस्म के इख़्तिलाफ़ की होती हैं।

(۲۱) عَنْ اَبِیْ بَکْرِ الصِّدِّیْقِ رض عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ عَلَیْکُمْ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالْاِسْتِغْفَارِ فَاَکْثِرُوْا مِنْهُمَا فَاِنَّ اِبْلِیْسَ قَالَ اَهْلَکْتُ النَّاسَ بِالذُّنُوْبِ وَاَهْلَکُوْنِیْ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالْاِسْتِغْفَارِ فَلَمَّا رَاَیْتُ ذٰلِکَ اَهْلَکْتُهُمْ بِالْاَهْوَآءِ وَهُمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ اخرجه ابو یعلی کذا فی الدر (الجامع الصغیر ورقم له بالضعف -

21. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि लाइला ह इल्लल्लाहू और इस्तग़फ़ार को बहुत कसरत से पढ़ा करो। शैतान कहता है कि मैंने लोगों को गुनाहों से हलाक किया और उन्होंने मुझे लाइला ह इल्लल्लाहू और इस्तग़फ़ार से हलाक कर दिया। जब मैंने देखा कि यह तो कुछ भी न हुआ, तो मैंने उनको हवा-ए-नफ़्स (यानी बिद्‌आत से) हलाक किया और वह अपने को हिदायत पर समझते रहे।

फ़- 'लाइला ह इल्लल्लाहू' और इस्तग़फ़ार से हलाक करने का मतलब यह है कि शैतान का मुंतहा-ए-मक़्सद[2] दिल पर अपना ज़हर चढ़ाना है, जिसका ज़िक्र बाब अव्वल, फ़स्ले दोम के नं० 14 पर गुज़र चुका और यह ज़हर जब ही चढ़ता है, जब दिल अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली हो, वरना शैतान को ज़िल्लत के साथ दिल से वापस होना पड़ता है और अल्लाह का ज़िक्र दिलों की सफ़ाई का ज़रिया है। चुनांचे मिश्कात में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि हर चीज़ के लिए एक सफ़ाई होती है, दिलों की सफ़ाई अल्लाह का ज़िक्र है।

---

1. नफ़ा देने वाली, 2. आख़िरी मक़्सद,

इसी तरह इस्तग़फ़ार के बारे में कसरत से अहादीस में यह वारिद हुआ है कि वह दिलों के मैल और ज़ंग को दूर करने वाला है।

अबूअली दक़्क़ाक़ रह० कहते हैं कि जब बन्दा इख़्लास से 'लाइला ह' कहता है, तो एकदम दिल साफ़ हो जाता है (जैसा अईने पर भीगा हुआ कपड़ा फेरा जावे) फिर वह 'इल्ललल्लाह' कहता है तो साफ़ दिल पर उसका नूर ज़ाहिर होता है। ऐसी सूरत में ज़ाहिर है कि शैतान की सारी ही कोशिश बेकार हो गयी और सारी ही मेहनत रायगां[1] गयी।

हवा-ए-नफ़्स से हलाक करने का मतलब यह है कि ना-हक़ को हक़ समझने लगे और जो दिल में आ जाये, उसी को दीन और मजहब बना ले।

क़ुरआन शरीफ़ में कई जगह इसकी मज़म्मत[2] वारिद हुई है। एक जगह इर्शाद है- أَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِن بَعْدِ اللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

(سورۂ جاثیہ رکوع ۲)

'क्या आपने उस शख़्स की हालत भी देखी, जिसने अपना ख़ुदा अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को बना रखा है और ख़ुदा-ए-तआला ने उसको बावजूद समझ-बूझ के गुमराह कर दिया है और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी और आंख पर पर्दा डाल दिया कि हक़ बात को न सुनता है, ने देखता है, न दिल में उतरती है। पस अल्लाह के (गुमराह कर देने के) बाद कौन हिदायत कर सकता है। फिर भी तुम नहीं समझते।' (सूर' जासिया रुकूअ 2)

दूसरी जगह इर्शाद है- وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ○ (سورۂ قصص رکوع ۵)

'ऐसे शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश पर चलता हो, बग़ैर इसके कि कोई दलील अल्लाह की तरफ से (उस के पास) हो। अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता'।

और भी मुतअद्दद जगह उस क़िस्म का मज़्मून वारिद हुआ है। कि यह शैतान

1. बेकार, 2. निंदा

का बहुत ही सख़्त हमला है कि वह ग़ैरे दीन को दीन के लिबास में समझावे और आदमी उस को दीन समझ कर करता रहे और उस पर सवाब का उम्मीदवार बना रहे और जब वह उसको इबादत और दीन समझ कर कर रहा है, तो उससे तौबा क्यों कर सकता है। अगर कोई शख़्स ज़िनाकारी, चोरी वग़ैरह गुनाहों में मुब्तला हो तो किसी न किसी वक़्त तौबा और छोड़ देने की उम्मीद है, लेकिन जब किसी नाजायज काम को वह इबादत समझता है, तो उससे तौबा क्यों करे और क्यों उसको छोड़े, बल्कि दिन-ब-दिन इसमें तरक़्क़ी करेगा।

यही मतलब है शैतान के इस कहने का कि मैंने गुनाहों में मुब्तला किया, लेकिन ज़िक्र-अज़्कार, तौबा, इस्तग़्फ़ार से वह मुझे दिक़ करते रहे[1], तो मैंने ऐसे जाल में फांस दिया कि उससे निकल ही नहीं सकते। इसलिए दीन के हर काम में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० के तरीक़े को अपना रहबर बनाना बहुत ही ज़रूरी अम्र है। और किसी ऐसे तरीक़े को इख़्तियार करना, जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो, नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम है।

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० ने हसन बसरी रह० से भी नक़्ल किया है, वह फ़र्माते हैं, हमें यह रिवायत पहुंची कि शैतान कहता है, मैंने उम्मते मुहम्मदिया के सामने गुनाहों को ज़ेब व ज़ीनत के साथ पेश किया, मगर उनके इस्तग़्फ़ार ने मेरी कमर तोड़ दी, तो मैंने ऐसे गुनाह उन के पास पेश किये, जिनको वह गुनाह ही नहीं समझते कि उनसे इस्तग़्फ़ार करें और वह अहवा यानी बिदआत[2] हैं कि वह उनको दीन समझ कर करते हैं।

वहब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि अल्लाह से डर, तू शैतान को मज्मों में लानत करता है और चुपके से उसकी इताअत करता है और उससे दोस्ती करता है। बाज़ सूफ़िया से मंक़ूल है कि किस क़दर ताज्जुब की बात है कि हक़ तआला शानुहू जैसे मुह्सिन के एह्सानात मालूम होने के बाद, उनके इक़रार के बाद उसकी नाफ़र्मानी की जाए और शैतान की दुश्मनी के बावजूद, उसकी अय्यारी[3] और सरकशी मालूम होने के बावजूद उसकी इताअत की जाये।

٢٢ - عن معاذ بن جبلؓ قال قال رسول الله صلے الله عليه وسلم لا يموت
عبد يشهد ان لا اله الا الله وانى رسول الله يرجع ذلك الى قلب موقن
الا دخل الجنة وفى رواية الا غفر الله له اخرجه احمد والنسائى والطبرانى

1. परेशान करते रहे, 2. ख़्वाहिश और बिद्अतें, 3. धोखादेही, मक्कारी,

والحاكم والترمذى فى نوادر الاصول وابن مردويه والبيهقى فى الاسماء والصفات كذا فى الدر وابن ماجة وفى الباب عن عثمان بلفظ مَنْ عَلِمَ اَنَّ اللّٰهَ رَبُّهُ وَاَنِّىْ نَبِيُّهُ مُوْقِنًا مِنْ قَلْبِهٖ حَرَّمَهُ اللّٰهُ عَلَى النَّارِ رواه البزار ورقم له فى الجامع بالصحة وفيه ايضا برواية البزار عن ابى سعيد مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصًا دَخَلَ الْجَنَّةَ ورقم له بالصحة

22. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स भी इस हाल में मरे कि 'लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की पक्के दिल से शहादत देता हो, ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। दूसरी हदीस में है कि ज़रूर उसकी अल्लाह तआला मग़्फ़िरत फ़रमायेंगे।

फ़- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही हदीस में यह भी नक़ल किया गया कि ख़ुशख़बरी सुनो और दूसरों को भी बशारत सुना दो कि जो शख़्स सच्चे दिल से 'लाइला ह इल्लल्लाहु' का इक़रार करे, वह जन्नत में दाख़िल होगा।

अल्लाह जल्ले जलालुहू के यहां इख़्लास की क़द्र है और इख़्लास के साथ थोड़ा सा अमल भी बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब रखता है। दुनिया के दिखावे के वास्ते, लोगों के ख़ुश करने के वास्ते कोई काम किया जाये, वह तो उनकी सरकार में बेकार है, बल्कि करने वाले के लिए वबाल है, लेकिन इख़्लास के साथ थोड़ा सा अमल भी बहुत कुछ रंग लाता है, इसलिए इख़्लास से जो शख़्स कलमा-ए-शहादत पढ़े, उस की ज़रूर मग़्फ़िरत होगी। वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होकर रहेगा, इसमें ज़रा भी तरद्दुद नहीं। यह मुम्किन है कि वह अपने गुनाहों की वजह से कुछ दिनों सज़ा भुगत कर दाख़िल हो, लेकिन ज़रूरी नहीं, किसी मुख़्लिस का इख़्लास मालिकुल मुल्क को पसन्द हो, उसकी कोई ख़िदमत पसन्द आ जाये, तो वह सारे ही गुनाहों को माफ़ फ़र्मा सकते हैं। ऐसी करीम ज़ात पर हम न मर मिटें, कितनी सख़्त महरूमी है।

बहरहाल इन अहादीस में कलमा-ए-तय्यिबा के पढ़ने वाले के लिए बहुत कुछ वायदे हैं, जिनमें दोनों एहतमाम हैं-

1. क़वाइद के मुवाफ़िक़ गुनाहों की सज़ा के बाद माफ़ी और

2. करम, लुत्फ़, एहसान और मराहिमे ख़ुसरुवाना[1] में बिला अज़ाब माफ़ी।

यहीया बिन अक्सम रह० एक मुहद्दिस हैं। जब उनका इन्तिकाल हुआ तो

1. शाही मेहरबानी।

एक शख़्स ने उनको ख़्वाब में देखा। उनसे पूछा, क्या गुज़री ? फ़रमाने लगे कि मेरी पेशी हुई। मुझसे फ़र्माया, ओ गुनाहगार बूढ़े ! तूने फ़्लां काम किया, फ़्लां किया। मेरे गुनाह गिनवाये गये और कहा गया, तूने ऐसे-ऐसे काम किये हैं। मैंने अर्ज किया, या अल्लाह ! मुझे आप की तरफ़ से यह हदीस नहीं पहुंची। फ़र्माया, और क्या हदीस पहुंची ? अर्ज किया, मुझसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रह० ने कहा, उनसे मामर रह० ने कहा, उनसे ज़ुहरी रह० ने कहा, उनसे उर्वा रह० ने कहा, उनसे हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, उनसे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, उनसे हज़रत जिब्रील अलै० ने अर्ज किया, उनसे आपने फ़र्माया कि जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हो और मैं उसको (उसके आमाल की वजह से) अज़ाब देने का इरादा भी करूं लेकिन उसके बुढ़ापे से शरमा कर माफ़ कर देता हूं और यह आपको मालूम है कि मैं बूढ़ा हूं। इर्शाद हुआ कि अब्दूर्रज़्ज़ाक़ ने सच कहा और मामर ने भी सच कहा, ज़ुहरी ने भी सच कहा, उर्वा ने भी सच नक़्ल किया, आइशा रज़ि० ने भी सच कहा और नबी सल्ल० ने भी सच कहा और जिब्रील ने भी सच कहा और मैंने भी सच्ची बात कही। यह्या रह० कहते हैं कि इसके बाद मुझे जन्नत में दाख़िले का इर्शाद फ़र्माया।

٢٣- عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ شَيْءٌ اِلَّا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ اللّٰهِ حِجَابٌ اِلَّا قَوْلَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَدُعَاءَ الْوَالِدِ- اخرجه ابن مردويه كذا فى الدر وفى الجامع الصغير برواية ابن النجار ورقم له بالضعف وفى الجامع الصغير برواية الترمذى عن ابن عمرو ورقم له بالصحة التَّسْبِيْحُ نِصْفُ الْمِيْزَانِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ تَمْلَؤُهٗ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَيْسَ لَهَا دُوْنَ اللّٰهِ حِجَابٌ حَتّٰى تَخْلُصَ اِلَيْهِ-

23. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हर अमल के लिए अल्लाह के यहां पहुंचने के लिए दर्मियान में हिजाब[1] होता है, मगर 'लाइला ह इल्लल्लाहू' और बाप की दुआ बेटे के लिए, इन दोनों के लिए कोई हिजाब नहीं।

फ़— पर्दा न होने का मतलब यह है कि इन चीज़ों के क़ुबूल होने में ज़रा सी भी देर नहीं लगती। और उमूर के दर्मियान में क़ुबूल तक और भी वास्ते हायल होते हैं, लेकिन यह चीज़ें बराहेरास्त बारगाहे इलाही तक फ़ौरन पहुंचती हैं।

एक काफ़िर बादशाह का क़िस्सा लिखा है कि निहायत मुतशद्दिद[2] मुत अस्सिब[3] था। इत्तिफ़ाक़ से मुसलमानों की एक लड़ाई में गिरफ़्तार हो गया, चूंकि मुसलमानों को उससे तक्लीफ़ें बहुत पहुंची थी, इसलिए इन्तिक़ाम का जोश उनमें

1. पर्दा, 2. ज़ालिम, 3. तंग नज़र,

भी बहुत था। उसको एक देग में डाल कर आग पर रख दिया। उसने अव्वल अपने बुतों को पुकारना शुरू किया और मदद चाही। जब कुछ न बन पड़ा तो वहीं मुसलमान हुआ और 'लाइला ह इल्लल्लाहू' का विर्द शुरू किया। लगातार पढ़ रहा था और ऐसी हालत में जिस ख़ुलूस और जोश से पढ़ा जा सकता है, ज़ाहिर है। फ़ौरन अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से मदद हुई और इस ज़ोर से बारिश हुई कि वह सारी आग भी बुझ गयी और देग ठंडी हो गयी। उसके बाद ज़ोर से आंधी चली, जिस से वह देग उड़ी और दूर किसी शहर में, जहां सब ही काफ़िर थे, जाकर गिरी। यह शख़्स लगातार कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ता जा रहा था। लोग उस के गिर्द जमा हो गए और अजूबा देखकर मुतहय्यर[1] थे। उससे हाल दर्याफ़्त किया। उसने अपनी सरगुज़श्त[2] सुनायी, जिससे वह लोग भी मुसलमान हो गये।

٢٤- عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ رض قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَنْ یُّوَافِیَ عَبْدٌ یَّوْمَ الْقِیٰمَۃِ یَقُوْلُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ یَبْتَغِیْ بِذٰلِکَ وَجْہَ اللّٰہِ اِلَّا حَرَّمَ عَلَی النَّارِ اخرجہ احمد والبخاری ومسلم وابن ماجۃ والبیہقی فی الاسماء والصفات كذا فى الدر-

24. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, नहीं आएगा कोई शख़्स क़यामत के दिन कि लाइला ह इल्लल्लाहू को इस तरह से कहता हो कि अल्लाह कि रज़ा के सिवा कोई मक़्सूद न हो, मगर जहन्नम उस पर हराम होगी।

फ़– जो शख़्स इख़्लास के साथ कलमा-ए-तय्यिबा का विर्द करता रहा हो, उस पर जहन्नम की आग का हराम होना ज़ाहिरी क़वाइद के मुवाफ़िक़ तो मुक़य्यद है कबाइर गुनाह न होने के साथ या जहन्नम के हराम होने से उस में हमेशा का रहना हराम है, लेकिन अल्लाह जल्ले शानुहू इस पाक कलमे को इख़्लास से पढ़ने वाले को बावजूद गुनाहों के बिल्कुल ही जहन्नम से माफ़ फ़र्मा दें, तो कौन रोकने वाला है।

अहादीस में ऐसे बंदों का भी ज़िक्र आता है कि क़यामत के दिन हक़ तआला शानुहू बाज़ लोगों को फ़र्मायेंगे कि तू ने फ्लां गुनाह किया, फ्लां किया। इस तरह से जब बहुत से गुनाह गिनवाये जा चुकेंगे और वह समझेगा कि मैं हलाक हो गया और इक़रार बग़ैर चारा-ए-कार न होगा, तो इर्शाद होगा कि हमने दुनिया में तेरी सत्तारी[3] की, आज भी सत्तारी करते हैं, तुझे माफ़ कर दिया।

इस नौअ के बहुत से वाक़िआत अहादीस में मौजूद हैं, इसलिए उन ज़ाकिरीन

---

1. हैरान, 2. रिपोर्ट, जो कुछ बीता था, 3. परदा पौशी।

के लिए भी इस क़िस्म का मामला हो, तो बईद नहीं है. अल्लाह के पाक नाम में बड़ी बरकत और बहबूदी है, इसलिए जितनी भी कसरत हो सके, दरेग़ न करना चाहिए।

क्या ही ख़ुशनसीब हैं वह मुबारक हस्तियां, जिन्होंने इस पाक कलमे की बरकात को समझा और उसके विर्द में उमरें ख़त्म कर दीं।

(٢٥) عَنْ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللّٰهِ قَالَ رُؤِيَ طَلْحَةُ حَزِيْنًا فَقِيْلَ لَهُ مَالَكَ قَالَ إِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ إِنِّيْ لَأَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ عِنْدَ مَوْتِهٖ إِلَّا نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَتَهٗ وَأَشْرَقَ لَوْنُهٗ وَرَأَى مَا يَسُرُّهٗ وَمَا مَنَعَنِيْ أَنْ أَسْأَلَهٗ عَنْهَا إِلَّا الْقُدْرَةُ عَلَيْهِ حَتّٰى مَاتَ فَقَالَ عُمَرُ إِنِّيْ لَأَعْلَمُهَا قَالَ فَمَا هِيَ قَالَ لَا نَعْلَمُ كَلِمَةً هِيَ أَعْظَمُ مِنْ كَلِمَةٍ أَمَرَ بِهَا عَمَّهٗ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ قَالَ فَهِيَ وَاللّٰهِ هِيَ۔ اخرجه البيهقي في الاسماء والصفات كذا في الدر قلت اخرجه الحاكم وقال صحيح على شرط الشيخين واقره عليه الذهبي واخرجه احمد اخرج ايضا من مسند عمر رض بمعناه بزيادة فيهما واخرجه ابن ماجة عن يحيى بن طلحة عن امه وفي شرح الصدور للسيوطي اخرج ابو يعلى والحاكم بسند صحيح عن طلحة وعمر قالا سمعنا رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اني اعلم كلمة الحديث۔

25. हज़रत तल्हा रज़ि० को लोगों ने देखा कि निहायत ग़मगीन बैठे हैं, किसी ने पूछा, क्या बात है ? फ़र्माया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सुना था कि मुझे एक ऐसा कलमा मालूम है कि जो शख़्स मरते वक़्त उसको कहे, तो मौत की तक्लीफ़ उससे हट जाये और रंग चमकने लगे और ख़ुशी का मंज़र देखे, मगर मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उस कलमे को पूछने की क़ुदरत न हुई (उसका रंज हो रहा है) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, मुझे मालूम है। तल्हा रज़ि० ख़ुश होकर कहने लगे, क्या है ? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, हमें मालूम है कि कोई कलमा उससे बढ़ा हुआ नहीं है, जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा अबूतालिब पर पेश किया था और वह है 'लाइला ह इल्लल्लाहु'। फ़र्माया, वल्लाह![1] यही है, वल्लाह ! यही है !

फ़— कलमा-ए-तय्यिबा का सरासर नूर व सुरूर होना बहुत-सी रिवायात से मालूम और मफ़्हूम होता है।

---

1. ख़ुदा की क़सम,

हाफ़िज इब्नेहज्र रह० ने मुनब्बिहात में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० से नक़्ल किया है कि अंधेरे पांच हैं और पांच ही इनके लिए चिराग़ हैं, दुनियां की मुहब्बत अंधेरा है, जिसका चिराग़ तक़वा है और गुनाह अंधेरा है जिसका चिराग तौबा है और क़ब्र अंधेरा है जिसका चिराग़

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' है, और आख़िरत अंधेरा है, जिस का चिराग़ नेक अमल है और पुल सिरात अंधेरा है, जिसका चिराग़ यक़ीन है।

राबिआ अबदीया रह० मशहूर वलीया[1] हैं, रात भर नमाज़ में मश्ग़ूल रहतीं, सुबह सादिक के बाद थोड़ी देर सो रहतीं और जब सुबह का चांद ना अच्छी तरह हो जाता, तो घबरा कर उठतीं और नफ़्स को मलामत करती कि कब तक सोता रहेगा, अंकरीब क़ब्र का ज़माना आने वाला है, जिसमें सूर फूंकने तक सोना ही होगा। जब इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब हुआ तो एक ख़ादिमा को वसीयत फ़र्मायी कि यह ऊनी गुदड़ी, जिसको वह तहज्जुद के वक़्त पहना करती थीं, उसमें मुझे कफ़न दे देना और किसी को मेरे मरने की ख़बर न करना। चुनांचे हस्बे-वसीयत तज्हीज तकफ़ीन कर दी गयी। बाद में उस ख़ादिमा ने ख़्वाब में देखा कि वह निहायत उम्दा लिबास पहने हुए हैं। उसने दर्याफ़्त किया कि वह आपकी गुदड़ी क्या हुई, जिसमें कफ़न दिया गया था। फ़र्माया कि लपेट कर मेरे आमाल के साथ रख दी गई। उन्होंने दर्ख़्वास्त की कि मुझे कोई नसीहत फ़र्मायें। कहा कि अल्लाह का ज़िक्र जितना भी कर सको, करती रहो कि इसकी वजह से तुम क़ब्र में क़ाबिले रश्क बन जाओगी।

(٢٢) عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اِنَّ رِجَالًا مِّنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ تُوُفِّيَ حَزِنُوْا عَلَيْهِ حَتّٰى كَادَ بَعْضُهُمْ يُوَسْوِسُ قَالَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَكُنْتُ مِنْهُمْ فَبَيْنَا اَنَا جَالِسٌ مَرَّ عَلَيَّ عُمَرُ وَسَلَّمَ فَلَمْ اَشْعُرْ بِهٖ فَاشْتَكٰى عُمَرُ اِلٰى اَبِيْ بَكْرٍ ثُمَّ اَقْبَلَا حَتّٰى سَلَّمَا عَلَيَّ جَمِيْعًا فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ مَا حَمَلَكَ عَلٰى اَنْ لَّا تَرُدَّ عَلٰى اَخِيْكَ عُمَرَ سَلَامَهٗ قُلْتُ مَا فَعَلْتُ فَقَالَ عُمَرُ بَلٰى وَاللّٰهِ لَقَدْ فَعَلْتَ قَالَ قُلْتُ وَاللّٰهِ مَا شَعَرْتُ اَنَّكَ مَرَرْتَ وَلَا سَلَّمْتَ قَالَ اَبُوْ بَكْرٍ صَدَقَ عُثْمَانُ قَدْ شَغَلَكَ عَنْ ذٰلِكَ اَمْرٌ فَقُلْتُ اَجَلْ قَالَ مَا هُوَ قُلْتُ تَوَفَّى اللّٰهُ تَعَالٰى نَبِيَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ اَنْ نَّسْاَلَهٗ عَنْ نَجَاةِ هٰذَا الْاَمْرِ قَالَ اَبُوْ بَكْرٍ قَدْ سَاَلْتُهٗ عَنْ ذٰلِكَ فَقُمْتُ اِلَيْهِ وَقُلْتُ لَهٗ بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ اَنْتَ اَحَقُّ بِهَا قَالَ اَبُوْ بَكْرٍ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا نَجَاةُ هٰذَا الْاَمْرِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

1. औरत वली,

مَنْ قَبِلَ مِنِّی الْكَلِمَةَ الَّتِیْ عَرَضْتُ عَلٰی عَمِّیْ فَرَدَّهَا فَهِیَ لَهٗ نَجَاةٌ رواه احمد كذا فی المشكوٰة وفی مجمع الزوائد رواه احمد والطبرانی فی الاوسط باختصار وابو يعلی بتمامه والبزار بنحوه وفيه رجل لم يسم لكن الزهری وثقه وابهمه اه قلت وذكر فی مجمع الزوائد له متابعات بالفاظ متقاربة۔

26. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (रूही फ़िदाहु) के विसाल के वक्त सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को इस क़दर सख़्त सदमा था कि बहुत से मुख़्तलिफ़ तौर के वसाविस में मुब्तला हो गये। हज़रत उस्मान रज़ि० फ़र्माते हैं कि मैं भी उन्हीं लोगों में था, जो वसाविस में घिरे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० मेरे पास तश्रीफ़ लाए, मुझे सलाम किया, मगर मुझे मुतलक पता न चला। उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से शिकायत की (कि उस्मान रज़ि० भी बज़ाहिर ख़फ़ा हैं कि मैंने सलाम किया और उन्होंने जवाब भी न दिया) इसके बाद दोनों हज़रात इकट्ठे तश्रीफ़ लाये और सलाम किया और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुमने अपने भाई उमर रज़ि० के सलाम का भी जवाब न दिया (क्या बात है?) मैंने अर्ज किया, मैंने तो ऐसा नहीं किया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, ऐसा ही हुआ। मैंने अर्ज किया, मुझे तो आपके आने की भी ख़बर न हुई कि कब आये, न सलाम का पता चला हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़र्माया ऐसा ही हुआ होगा, गालिबन तुम किसी सोच में बैठे होगे। मैंने अर्ज किया, वाक़ई मैं एक गहरी सोच में था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, क्या था ? मैंने अर्ज किया, हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया और हमने यह भी न पूछ लिया कि इस काम की निजात किस चीज में है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़र्माया कि मैं पूछ चुका हूं। मैं उठा और मैंने कहा, तुम पर मेरे मां-बाप क़ुर्बान, वाक़ई तुम ही ज़्यादा मुस्तहिक़ थे इसके दर्याफ़्त करने के (कि दीन की हर चीज में बढ़ने वाले हो) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़र्माया, मैंने हुज़ूर सल्ल० से दर्याफ़्त किया था कि इस काम की निजात क्या है?[1] आपने फ़र्माया कि जो शख़्स उस कलमे को क़ुबूल कर ले, जिसको मैंने अपने चचा (अबूतालिब पर उनके इंतिक़ाल के वक्त) पेश किया था और उन्होंने रद्द कर दिया था, वही कलमा-ए-निजात है।

फ़– वसाविस[2] में मुब्तला होने का मतलब यह है कि सहाबा किराम उस वक़्त रंज व ग़म की शिद्दत में ऐसे परेशान हो गये थे कि हज़रत उमर रज़ि० जैसे

1. इस काम की निजात का मतलब 'फ़ायदे' में आ रहा है, 2. वस्वसे, बुरे और गंदे ख़्याल,

जलीलुलक़द्र[1] बहादुर तलवार हाथ में लेकर खड़े हो गये थे कि जो शख़्स यह कहेगा कि हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया, उसकी गरदन उड़ा दूंगा। हुज़ूर सल्ल० अपने रब से मिलने तश्रीफ़ ले गये हैं, जैसा कि हज़रत मूसा अलै० तूर पर तश्रीफ़ ले गये थे। बाज़ सहाबा रज़ि० को यह ख़्याल पैदा हो गया था कि दीन अब ख़त्म हो चुका, बाज़ इस सोच में थे कि अब दीन के फ़रोग़ की कोई सूरत नहीं हो सकती, बाज़ बिल्कुल गुम थे कि उनसे बोला ही नहीं जाता था। एक अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का दम था, जो हुज़ूर सल्ल० के साथ कमाले इश्क़, कमाले मुहब्बत के बावजूद उस वक़्त साबित क़दम और जमे हुए क़दम से खड़े थे। उन्होंने लल्कार कर ख़ुत्बा पढ़ा, जिसमें–

व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल॰ وَمَامُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ

वाली आयत पढ़ी, जिसका यह तर्जुमा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निरे रसूल ही तो हैं (ख़ुदा तो नहीं हैं, जिसे मौत आ ही न सके) पस क्या अगर वह मर जायें या शहीद हो जायें, तो तुम लोग (दीन से) फिर जाओगे और जो शख़्स (दीन से) फिर जायेगा, वह ख़ुदा का तो कोई नुक़सान नहीं करेगा (अपना ही कुछ खो देगा) मुख़्तसर तौर पर इस क़िस्से को मैं अपने रिसाले 'हिकायते सहाबा' में लिख चुका हूं।

आगे जो इर्शाद है कि इस काम की निजात क्या है, इसके दो मतलब हैं–

एक यह कि दीन के काम तो बहुत से हैं, इन सब कामों में मदार किस चीज़ पर है कि जिसके बग़ैर चारा-ए-कार न हो। इस मतलब के मुवाफ़िक़ जवाब ज़ाहिर है कि दीन का सारा मदार कलमा-ए-शहादत पर है और इस्लाम की जड़ ही कलमा-ए-तैय्यिबा है।

दूसरा मतलब यह है कि इस काम यानी दीन में दिक़्क़तें भी पेश आती है, वसाविस भी घेरते हैं, शैतान की रख़्ना अंदाज़ी[2] भी मुस्तक़िल एक मुसीबत है, दुनियावी ज़रूरियात भी अपनी तरफ़ खींचती हैं। इस सूरत में मतलब इर्शाद नबवी का यह है कि कलमा-ए-तय्यिबा की कसरत इन सब चीज़ों का इलाज है कि वह इख़्लास पैदा करने वाला है, दिलों को साफ़ करने वाला है, शैतान की हलाकत का सबब है, जैसा कि इन सब रिवायात में उसके असरात बहुत से ज़िक्र किये गये हैं।

---

1. महान, 2. रुकावटें डालना।

एक हदीस में आया है कि 'लाइला ह इल्लल्लाहु' का कलमा अपने पढ़ने वाले से निन्नान्वे क़िस्म की बलाएं दूर करता है, जिनमे सबसे कम ग़म है, जो हर वक़्त आदमी पर सवार रहता है।

(٢٧) عَنْ عُثْمَانَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنِّىْ لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِّنْ قَلْبِهٖ اِلَّا حُرِّمَ عَلَى النَّارِ فَقَالَ لَهٗ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ اَنَا اُحَدِّثُكَ مَا هِىَ هِىَ كَلِمَةُ الْاِخْلَاصِ الَّتِىْ اَعَزَّ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى بِهَا مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَصْحَابَهٗ وَهِىَ كَلِمَةُ التَّقْوٰى الَّتِىْ اَلَاصَ عَلَيْهَا نَبِىُّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَمَّهٗ اَبَا طَالِبٍ عِنْدَ الْمَوْتِ شَهَادَةُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. رواه احمد واخرجه الحاكم بهذا اللفظ وقال صحيح على شرطهما واقره عليه الذهبى واخرج الحاكم برواية عثمان عن عمر مرفوعا اِنِّىْ لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِّنْ قَلْبِهٖ فَيَمُوْتُ عَلٰى ذٰلِكَ اِلَّا حَرَّمَهُ اللّٰهُ عَلَى النَّارِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. وقال هذا صحيح على شرطهما ثم ذكر له شاهدين من حديثهما

27. हजरत उस्मान रज़ि० फ़र्माते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना था कि मैं एक कलमा ऐसा जानता हूं कि जो शख़्स उसको हक़ समझ कर इख़्लास के साथ दिल से (यक़ीन करते हुए) उसको पढ़े, तो जहन्नम की आग उस पर हराम है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि मैं बताऊं, वह कलमा क्या है ? वह वही कलमा है, जिस के साथ अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को और उसके सहाबा रज़ि० को इज़्ज़त दी, वह वही तक़्वे का कलमा है, जिस को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा अबूतालिब से उनके इन्तिक़ाल के वक़्त ख़्वाहिश की थी, वह शहादत है 'लाइला ह इल्लल्लाहु' की।

फ़ – हुज़ूर सल्ल० के चचा अबूतालिब का क़िस्सा हदीस, तफ़्सीर और तारीख़ की किताबों में मशहूर व मारूफ़[1] है कि जब उनके इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब हुआ, तो चूंकि उनके एहसानात नबी-ए-अकरम सल्ल० और मुसलमानों पर कसरत से थे, इसलिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गये और इर्शाद फ़र्माया कि ऐ मेरे चचा !

---

1. जाना-पहचाना

'लाइला ह इल्लल्लाहू'

कह लीजिए, ताकि मुझे क़यामत के दिन आपकी सिफ़ारिश का मौक़ा मिल सके और मैं अल्लाह के यहां आपके इस्लाम की गवाही दे सकूं। उन्होंने फ़र्माया कि लोग मुझे यह ताना देंगे कि मौत के डर से भतीजे का दीन क़ुबूल कर लिया। अगर यह ख़्याल न होता, तो मैं इस वक़्त इस कलमे के कहने से तुम्हारी आंखें ठंडी कर देता। इस पर हुज़ूर सल्ल० रंजीदा वापस तशरीफ़ लाये।

इसी क़िस्से में क़ुरआन पाक की आयत–

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ (سورۂ قصص ع ٦)

इन्न क ला तह्दी मन अह्बब्त (सूरः क़सस, रुकूअ 6) नाज़िल हुई, जिसका तर्जुमा यह है कि आप जिसको चाहें, हिदायत नहीं फ़र्मा सकते, बल्कि अल्लाह जिसको चाहें, हिदायत करता है।

इस क़िस्से से यह भी ज़ाहिर हो गया कि जो लोग फ़िस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तला रहते हैं ख़ुदा और उसके रसूलसल्ल० से बेगाना रहते हैं और यह समझते हैं कि किसी अज़ीज़ बुज़ुर्ग की दुआ से बेड़ा पार हो जायेगा, ग़लती में मुब्तला हैं। काम चलाने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है। उस की तरफ़ रुजूअ करना चाहिए, उस से सच्चा ताल्लुक़ क़ायम करना ज़रूरी है, अलबत्ता अल्लाह वालों की सोहबत, उनकी दुआ, उनकी तवज्जोह मुईन व मददगार बन सकती है।

(٣٨) عَنْ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا اَذْنَبَ اٰدَمُ الذَّنْبَ الَّذِیْ اَذْنَبَهٗ رَفَعَ رَأْسَهٗ اِلَی السَّمَاءِ فَقَالَ اَسْأَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اِلَّا غَفَرْتَ لِیْ فَاَوْحَی اللّٰهُ اِلَيْهِ مَنْ مُحَمَّدٌ فَقَالَ تَبَارَكَ اسْمُكَ لَمَّا خَلَقْتَنِیْ رَفَعْتُ رَأْسِیْ اِلٰی عَرْشِكَ فَاِذَا فِيْهِ مَكْتُوْبٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ فَعَلِمْتُ اَنَّهٗ لَيْسَ اَحَدٌ اَعْظَمُ عِنْدَكَ قَدْرًا عَمَّنْ جَعَلْتَ اسْمَهٗ مَعَ اسْمِكَ فَاَوْحَی اللّٰهُ اِلَيْهِ يَا اٰدَمُ اِنَّهٗ اٰخِرُ النَّبِيِّيْنَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ وَلَوْلَا هُوَ مَا خَلَقْتُكَ اخرجه الطبرانی فی الصغير والحاكم وابو نعيم والبيهقی كلاهما فی الدلائل وابن عساكر فی الدر وفی مجمع الزوائد رواه الطبرانی فی الاوسط والصغير وفيه من لم اعرفهم قلت ويؤيد الاخر الحديث المشهور لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاكَ،

1. जाना-पहचाना,

قال القاری فی الموضوعات الکبیر موضوع لکن معناہ صحیح وفی الشرف
معناہ ثابت ویؤید الاول ماورد فی غیر روایۃ من انہ مکتوب علی العرش
واوراق الجنۃ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ کما بسط طرقہ السیوطی فی مناقب
اللآلی فی غیر موضع وبسط لہ شواہد ایضًا
فی تفسیرہ فی سورۃ الم نشرح۔

28. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हज़रत आदम (अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) से जब वह गुनाह सादिर हो गया (जिसकी वजह से जन्नत से दुनियां में भेज दिये गए, तो हर वक्त रोते थे, और दुआ व इस्तग़फ़ार करते रहते थे, एक मर्तबा) आसमान की तरफ मुंह किया और अर्ज किया, या अल्लाह! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वसीले से तुझ से मग़िफ़रत चाहता हूं, वही नाज़िल हुई कि मुहम्मद कौन हैं (जिनके वास्ते से तुमने इस्तग़फ़ार की) अर्ज किया कि जब आपने मुझे पैदा किया था, तो मैंने अर्श पर लिखा हुआ देखा था 'लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' - तो मैं समझ गया था कि मुहम्मद (सल्ल०) से ऊंची हस्ती कोई नहीं है, जिनका नाम तुम ने अपने नाम के साथ रखा, वही नाज़िल हुई कि वह ख़ातिमुन्नबीयीन हैं, तुम्हारी औलाद में से हैं, लेकिन वह न होते, तो तुम भी पैदा न किये जाते।

फ़— हज़रत आदम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस वक्त क्या-क्या दुआएं कीं और किस-किस तरह से गिड़गिड़ाये, इस बारे में बहुत सी रिवायात वारिद हुई हैं और इनमें कोई तआरूज़[1] भी नहीं, जिस पर मालिक की नाराज़गी, आक़ा की ख़फ़गी हुई हो, वही जानता है, इन बे-हक़ीक़त आक़ाओं की नाराज़गी की वजह से नौकरों और ख़ादिमों पर क्या कुछ गुज़र जाता है और वहां तो मालिकुल् मुल्क, रज़्ज़ाक़े आलम और मुख़्तसर यह कि ख़ुदा का इताब था और गुज़र किस पर रही थी उस शख़्स पर, जिसको फ़रिश्तों से सज्दा कराया, अपना मुकर्रब बनाया। जो शख़्स जितना मुकर्रब होता है, उतना ही अिताब का उस पर असर होता है बशर्ते कि कमीना न हो और वह तो नबी थे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत आदम अलै० इस क़दर रोये हैं कि तमाम दुनियां के आदमियों का रोना अगर जमा किया जाये, तो उनके बराबर नहीं हो सकता। चालीस बरस तक सर ऊपर नहीं उठाया।

---

1. टकराव,

हज़रत बुरैदा रज़ि० ख़ुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि अगर हज़रत आदम अलै० के रोने का तमाम दुनिया के रोने से मुक़ाबला किया जावे, तो उनका रोना बढ़ जायेगा। एक हदीस में है अगर उनके आंसुओं को उनकी तमाम औलाद के आंसुओं से वज़न किया जावे, तो उनके आंसू बढ़ जायेंगे, ऐसी हालत में किस-किस तरह ज़ारी[1] फ़र्मायी होगी, ज़ाहिर है-

यां लब पे लाख-लाख सुख़न इज़्तिराब[2] में,

वां एक ख़ामुशी मेरी सब के जवाब में।

इसलिए जो रिवायात में ज़िक्र किया गया, उन सब के मजमूए में कोई इश्काल नहीं। मिन् जुम्ला उनके यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० का वसीला इख़्तियार फ़र्माया। दूसरा मज़मून अर्श पर-

लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

लिखा हुआ होना, यह और भी बहुत सी मुख़्तलिफ़ रिवायतों में आया है।

हुज़ूर सल्ल० इर्शाद फ़र्माते हैं, मैं जन्नत में दाख़िल हुआ, तो मैंने उसकी दोनों जानिबों में तीन सतरें सोने के पानी से लिखी हुई देखीं-

पहली सतर में-

लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

लिखा हुआ था, दूसरी सतर में-

مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا اَکَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَفْنَا خَسِرْنَا

'मा क़द्दम्ना वजद्ना व मा अकल्ना रबिह्ना व मा ख़लफ़्ना ख़सिरना, था (जो हमने आगे भेज दिया यानी सद्क़ा वग़ैरह कर दिया वह पा लिया और जो दुनिया में खाया, वह नफ़ा में रहा और जो कुछ छोड़ आये, वह नुक़्सान रहा) और तीसरी सतर में था-

उम्मतुम मुज़्निबतुन व रब्बुन ग़फ़ूर اُمَّۃٌ مُّذْنِبَۃٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ

(उम्मत गुनाहगार और मालिक बख़्शने वाला।)

एक बुज़ुर्ग कहते हैं, मैं हिंदुस्तान के एक शहर में पहुंचा, तो मैंने वहां एक दरख़्त देखा, जिसके फल बादाम के मुशाबह[3] होते हैं, उसके दो छिलके होते हैं, जब

---

1. यानी किस-किस तरह रोते होंगे,

2. यहां तो होंठ से लफ़्ज़ अदा होने के लिए बेचैन हैं, 3. मिलते-जुलते

उनको तोड़ा जाता है, तो अन्दर से एक सब्ज पत्ता लिपटा हुआ निकलता है, जब उसको खोला जाता है, तो सुर्खी से-

लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

लिखा हुआ मिलता है। मैंने इस क़िस्से को अबूयाकूब रह० शिकारी से ज़िक्र किया, उन्होंने कहा, ताज्जुब की बात नहीं। मैंने ईला[1] में एक मछली शिकार की थी, उसके एक कान पर-

लाइला ह इल्लल्लाह

और दूसरे पर-

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

लिखा हुआ था।

٢٩ - عَنْ اَسْمَآءَ بِنْتِ يَزِيْدَ بْنِ السَّكَنِ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْہِ وَسَلَّمَ اَنَّہٗ قَالَ اِسْمُ اللّٰہِ الْاَعْظَمُ فِیْ ھَاتَيْنِ الْاٰيَتَيْنِ وَاِلٰھُكُمْ اِلٰہٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَالٓمّٓ اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ. اخرجہ ابن ابی شيبۃ واحمد والدارمی وابوداؤد والترمذی وصححہ وابن ماجۃ وابومسلم الكجی فی السنن وابن الضريس وابن ابی حاتم والبيہقی فی الشعب كذا فی الدر

29. हजरत अस्मा रज़ि० हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करती हैं कि अल्लाह का सब से बड़ा नाम (जो इस्मे आज़म के नाम से आमतौर पर मशहूर है,) इन दो आयतों में है (बशर्ते कि इख़्लास से पढ़ी जाएं) 'व इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिदुन लाइला ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम०' (सूरः बक़रः रुकूअ 19) और अलिफ़-लाम-मीम अल्लाहु लाइला ह इललाहु वल् हय्युल्क़य्यूसुम (सूरः आले इम्रान, रुकूअ 1)

फ़– इस्मे आज़म के मुताल्लिक़ रिवायात हदीस में कसरत से यह वारिद हुआ है कि जो दुआ भी उसके बाद मांगी जाती है, वह क़ुबूल होती है।

अल्बत्ता इस्मे आज़म की तअ्यीन[2] में रिवायात मुख़्तलिफ़ वारिद हुई हैं और यह आदतुल्लाह है कि हर ऐसी मुह्तम्म बिश्शान चीज में इख़्फ़ा[3] की वजह से इख़्तिलाफ़

---

1. एक शहर का नाम है, 2. तै करने में, 3. छिपाये रखने की वजह से,

पैदा फ़र्मा देते हैं, चुनांचे शबे क़द्र तअ़यीन में, जुमा के दिन में, दुआ क़ुबूल होने के ख़ास वक़्त में इख़्तिलाफ़ हुआ, उसमें बहुत सी मसालिह हैं, जिनको मैं अपने रिसाले 'फ़ज़ाइले रमज़ान' में लिख चुका हूं।

इसी तरह इस्मे आज़म की तअ़यीन में भी मुख़्तलिफ़ रिवायात वारिद हुयीं। मिनजुम्ला उनके यह रिवायत भी है, जो ऊपर ज़िक्र की गयी। और भी रिवायात में इन आयतों के मुताल्लिक़ इर्शाद वारिद हुआ है।

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से नक़्ल करते हैं कि मुतमर्रिद और शरीर शयातीन पर इन दो आयतों से ज़्यादा सख़्त कोई आयत नहीं। वह दो आयतें- 'व इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिद' से शुरू है।

इब्राहीम बिन वस्मा रह० कहते हैं कि मजनूना हालत नज़र वग़ैरह के लिए इन आयात का पढ़ना मुफ़ीद है। जो शख़्स इन आयात के पढ़ने का एहतमाम रखे, इस क़िस्म की चीज़ों से महफ़ूज़ रहे- व इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिद से पूरी आयत (सूरः बक़र, रुकूअ 19), आयतुल् कुर्सी और सूरः बक़रः की आख़िर आयत और इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़ से मुह्सिनीन तक सूरः अअ़राफ़, रुकूअ 14) और सूरः हश्र की आख़िरी आयतें (हुवल्लाहुल्लज़ी लाइला ह इल्लल्लाहू से)। हमें यह बात पहुंची कि सब आयात (जिनको गिनवाया अर्श के कोनों पर लिखी हुई हैं और इब्राहीम रह यह भी कहा करते थे कि बच्चों को अगर डर लगता हो, या नज़र का अंदेशा हो, तो यह आयात उनके लिए लिख दिया करो।

अल्लामा शामी रह० ने हज़रत इमामे आज़म रह० से नक़्ल किया है कि इस्मे आज़म लफ़्ज़ अल्लाह है और लिखा है कि यही क़ौल अल्लामा तहावी रह और बहुत से उलमा से नक़ल किया गया है और अक्सर आरिफ़ीन की यही तह्क़ीक़ है। इसी वजह से उनके नज़दीक ज़िक्र भी उसी पाक नाम का कसरत से होता है।

सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रत शेख़ अब्दुल् क़ादिर जीलानी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू से भी यही नक़्ल किया गया, फ़र्माते हैं कि इस्मे आज़म अल्लाह है, बशर्ते कि जब तू उस पाक नाम को ले, तो तेरे दिल में उसके सिवा कुछ न हो। फ़र्माते हैं कि अवाम के लिए इस पाक नाम को इस तरह लेना चाहिए कि जब यह ज़ुबान पर जारी हो, तो अज़्मत और ख़ौफ़ के साथ हो और ख़्वास के लिए इस तरह हो कि इस पाक

---

1. सरकश और शरारत पसंद शैतानों पर, 2. उस की याद ताज़ा हो जाए,

नाम वाले की ज़ात व सिफ़ात का भी इस्तह्ज़ार[1] हो और अख़स्सुल् ख़्वास[2] के लिए यह ज़रूरी है कि उस पाक ज़ात के सिवा दिल में कोई चीज भी न हो।

कहते हैं कि क़ुरआन पाक में भी यह मुबारक नाम इतनी कसरत से ज़िक्र किया गया कि हद नहीं, जिसकी मिक्दार दो हजार तीन सौ साठ बताते हैं।

शेख़ इस्माईल फ़र्ग़ानी रह० कहते हैं कि मुझे एक अर्से से इस्मे आज़म सीखने की तमन्ना थी, मुजाहदे बहुत करता था, कई-कई दिन फ़ाक़े करता, हत्ताकि फ़ाक़ों की वजह से बेहोश होकर गिर जाता। एक रोज़ मैं दमिश्क की मस्जिद में बैठा था कि दो आदमी मस्जिद में दाख़िल हुए और मेरे क़रीब खड़े हो गये मुझे उनको देखकर ख़्याल हुआ कि यह फ़रिश्ते मालूम होते हैं। इसमें से एक ने दूसरे से पूछा तू इस्मे आज़म सीखना चाहता है ? उसने कहा, हां बता दीजिए। मैं यह ग़ुफ़्तगू सुनकर ग़ौर करने लगा, उसने कहा कि वह लफ़्ज अल्लाह है, बशर्ते कि सिदक़े लजा[2] से हो। शेख़ इस्माईल रह० कहते हैं कि सिद्क़े लजा का मतलब यह है कि कहने वाले की हालत उस वक़्त ऐसी हो कि जैसा कोई शख़्स दरिया में ग़र्क हो रहा हो और कोई भी उसको बचाने वाला न हो, तो ऐसे वक़्त जिस ख़ुलूस से नाम लिया जायेगा, वह हालत मुराद है।

इस्मे आज़म मालूम होने के लिए बड़ी अह्लियत और बड़े ज़ब्त व तहम्मुल की ज़रूरत है। एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा लिखा है कि उनको इस्मे आज़म आता था। एक फ़क़ीर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनसे तमन्ना व इस्तिद्आ की[3] कि मुझे भी सिखा दीजिए। उन बुर्ज़ुग ने फ़र्माया कि तुम में अहलियत नहीं है फ़क़ीर ने कहा कि मुझ में इसकी अहलियत है तो बुज़ूर्ग ने फ़र्माया कि अच्छा फ़्लां जगह जा कर बैठ जाओ और जो वाक़िया वहां पेश आये, उसकी मुझे ख़बर दो। फ़क़ीर उस जगह गये, देखा कि एक बूढ़ा शख़्स गधे पर लकड़ियां लादे हुए आ रहा है। सामने से एक सिपाही आया, जिसने उस बूढ़े को मार-पीट की और लकड़ियां छीन लीं। फ़क़ीर को उस सिपाही पर बहुत ग़ुस्सा आया। वापस आकर बुज़ुर्ग से सारा क़िस्सा सुनाया और कहा कि मुझे अगर इस्मे आज़म आ जाता , तो इस सिपाही के लिए बद-दुआ करता। बुज़ुर्ग ने कहा कि उस लकड़ी वाले ही से मैंने इस्मे आज़म सीखा है।

---

1. सच्चे दिल और नर्मी के साथ, 2. यानी बहुत ही ख़ास लोग, 3. दर्ख़्वास्त

٣٠- عَنْ اَنَسٍؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اَخْرِجُوْا مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَفِىْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِّنَ الْاِيْمَانِ. اَخْرِجُوْا مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَوْ ذَكَرَنِىْ اَوْ خَافَنِىْ فِىْ مَقَامٍ- اخرجه الحاكم برواية المؤمل عن المبارك بن فضالة وقال صحيح الاسناد واقره عليه الذهبى وقال الحاكم قد تابع ابوداؤد مؤملا على روايته اختصره-

30. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि (क़यामत के दिन) हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्मायेंगे कि जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लो जिसने 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहा हो और उसके दिल में एक ज़र्रा बराबर भी ईमान हो और हर उस शख़्स को निकाल लो जिसने 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहा हो या मुझे (किसी तरह भी) याद किया हो, या किसी मौक़े पर मुझ से डरा हो।

फ़– इस पाक कलमें में हक़ तआला शानुहू ने क्या-क्या बरकात रखी हैं, इसका मामूली सा अन्दाज़ा इतनी ही बात से हो जाता है कि सौ बरस का बूढ़ा, जिसकी तमाम उम्र कुफ़्र व शिर्क में गुज़री हो, एक मर्तबा उस पाक कलमे को ईमान के साथ पढ़ने से मुसलमान हो जाता है और उम्र भर के सारे गुनाह ज़ायल हो जाते हैं[1] और ईमान लाने के बाद अगर गुनाह भी किये हों, तब भी इस कलमे की बरकत से किसी न किसी वक़्त जहन्नम से ज़रूर निकलेगा।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि०, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राज़दार हैं, फ़र्माते हैं कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया है (एक ज़माना ऐसा आने वाला है) कि इस्लाम ऐसा धुंधला रह जायेगा, जैसे कपड़े के नक़्श व निगार (पुराने हो जाने से) धुंधले हो जाते हैं कि न कोई रोज़े को जानेगा, न हज को, न ज़कात को। आख़िर एक रात ऐसी होगी कि क़ुरआन पाक भी उठा लिया जायेगा, कोई आयत उसकी बाक़ी न रहेगी। बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें यह कहेंगी कि हमने अपने बड़ों को कलमा 'लाइला ह इल्लल्लाहू' पढ़ते सुना था, हम भी उसी को पढ़ेंगे।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के एक शागिर्द ने अर्ज़ किया कि जब ज़कात, हज, रोज़ा कोई रुक्न न होगा, तो यह कलमा ही क्या काम देगा। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने सुकूत

1. यानी दूर हो जाते हैं,

फ़र्माया। उन्होंने फिर यही अर्ज़ किया। तीसरी मर्तबा में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ ने फ़र्माया कि (किसी न किसी वक़्त जहन्नम से निकालेगा (3 बार) यानी अरकाने इस्लाम के अदा न करने का अज़ाब भुगतने के बाद किसी न किसी वक़्त इस कलमे की बरकत से निजात पायेगा।

यही मतलब है हदीसे बाला का कि अगर ईमान का ज़रा सा हिस्सा भी है, तब भी जहन्नम से किसी न किसी वक़्त निकाला जायेगा।

एक हदीस में है, जो शख़्स 'लाइला ह इल्लल्लाहु' पढ़े, वह उसको किसी न किसी दिन ज़रूर काम देगा, गो उसको कुछ न कुछ सज़ा भुगतना पड़े।

(۱۳) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ اَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْرَابِيٌّ عَلَيْهِ جُبَّةٌ مِنْ طَيَالِسَةٍ مَكْفُوْفَةٌ بِالدِّيْبَاجِ فَقَالَ اِنَّ صَاحِبَكُمْ هٰذَا يُرِيْدُ يَرْفَعُ كُلَّ رَاعٍ وَابْنَ رَاعٍ وَيَضَعُ كُلَّ فَارِسٍ وَابْنَ فَارِسٍ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُغْضَبًا فَاَخَذَ بِمَجَامِعِ ثَوْبِهٖ فَاجْتَذَبَهٗ وَقَالَ اَلَا اَرٰى عَلَيْكَ ثِيَابَ مَنْ لَّا يَعْقِلُ ثُمَّ رَجَعَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَلَسَ فَقَالَ اِنَّ نُوْحًا لَّمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ دَعَا ابْنَيْهِ فَقَالَ اِنِّىْ قَاصٌّ عَلَيْكُمَا الْوَصِيَّةَ اٰمُرُكُمَا بِاثْنَيْنِ وَاَنْهَاكُمَا عَنِ اثْنَيْنِ اَنْهَاكُمَا عَنِ الشِّرْكِ وَالْكِبْرِ وَاٰمُرُكُمَا بِلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَاِنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا فِيْهِمَا لَوْ وُضِعَتْ فِىْ كِفَّةِ الْمِيْزَانِ وَوُضِعَتْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فِى الْكِفَّةِ الْاُخْرٰى كَانَتْ اَرْجَحَ مِنْهُمَا وَلَوْ اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا فِيْهِمَا كَانَتْ حَلْقَةً فَوُضِعَتْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَلَيْهِمَا لَفَصَمَتْهَا وَاٰمُرُكُمَا بِسُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ فَاِنَّهُمَا صَلٰوةُ كُلِّ شَيْءٍ وَبِهِمَا يُرْزَقُ كُلُّ شَيْءٍ اخرجه الحاكم وقال صحيح الاسناد ولم يخرجه للصقعب ابن زهير فانه ثقة قليل الحديث اھ واقره عليه الذهبى قال الصقعب ثقة ورواه ابن عجلان عن زيد بن اسلم مرسلاً اھ قلت ورواه احمد فى مسنده بزيادة فيه بطرق وفى بعضها منهما فان السموات السبع والارضين السبع كن حلقة مبهمة تقصمهن لا اله الا الله وذكره المنذرى فى الترغيب عن ابن عمرو مختصراً وفيه لو كانت حلقة لقصمتهن حتى تخلص الى الله ثم قال رواه البزار ورواته محتج بهم فى الصحيح الا ابن اسحق وهو فى النسائى عن صالح بن سعيد رفعه الى سليمان بن يسار الى رجل من الانصار لم يسمه ورواه الحاكم عن عبد الله وقال صحيح الاسناد ثم ذكر لفظه قلت وحديث سليمان بن يسار يأتى فى بيان التسبيح وفى مجمع الزوائد رواه احمد ورواه الطبرانى بنحوه ورواه البزار من حديث ابن عمرو ورجال احمد ثقات وقال فى رواية البزار محمد بن اسحق وهو مدلس وهو ثقة۔

31. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में एक शख़्स गांव का रहने वाला आया, जो रेशमी जुब्बा पहन रहा था और उसके किनारों पर दीबा की गोट थी। (सहाबा रज़ि० से ख़िताब करके) कहने लगा कि तुम्हारे साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह चाहते हैं कि हर चरवाहे (बकरी चराने वाले) और चरवाहे ज़ादे को बढ़ा दें और शहसवार और शहसवारों की औलाद को गिरा दें। हुज़ूर सल्ल० नाराज़गी से उठे उसके कपड़ों को गरेबान से पकड़ कर ज़रा खींचा और इर्शाद फ़र्माया कि (तू ही बता) तू बेवक़ूफ़ों के से कपड़े नहीं पहन रहा है। फिर अपनी जगह वापस आकर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और इर्शाद फ़र्माया कि हज़रत नूह अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जब इंतिक़ाल होने लगा, तो अपने दोनों साहबज़ादों को बुलाया और इर्शाद फ़र्माया कि मैं तुम्हें (आख़िरी) वसीयत करता हूं, जिसमें दो चीज़ों से रोकता हूं और दो चीज़ों का हुक्म करता हूं। जिनसे रोकता हूं, एक शिर्क है, दूसरे तकब्बुर और जिन चीज़ों का हुक्म करता हूं, एक -लाइला ह इल्लल्लाहू' है कि तमाम आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है, अगर सब एक पलड़े में रख दिया जाये और दूसरे में (इख़्लास से कहा हुआ) 'लाइला ह इल्लल्लाहू' रख दिया जायेगा, तो वही पलड़ा झुक जायेगा और अगर तमाम आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें हैं, एक हल्क़ा बनाकर इस पाक कलमे को उस पर रख दिया जावे, तो वह वज़न से टूट जाये और दूसरी चीज जिसका हुक्म करता हूं वह 'सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही' है कि यह दो लफ़्ज़ हर मख़्लूक़ की नमाज़ हैं और इन्हीं की बरकत से हर चीज को रिज़्क़ अता फ़र्माया जाता है।

फ़– हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कपड़ों के मुताल्लिक़ इर्शाद फ़र्माने का मतलब यह है कि ज़ाहिर से बातिन पर इस्तदलाल किया जाता है। जिस शख़्स का ज़ाहिर हाल ख़राब है, उसके बातिन का हाल भी बज़ाहिर वैसा ही है, इसलिए ज़ाहिर को बेहतर रखने की सई[1] की जाती है कि बातिन उसके ताबेअ होता है। इसीलिए सूफ़िया किराम ज़ाहिरी तहारत-वुज़ू वग़ैरह का एहतमाम कराते हैं, ताकि बातिन की तहारत हासिल हो जाये। जो लोग यह कह देते हैं, अजी! बातिन अच्छा होना चाहिए, ज़ाहिर चाहे कैसा ही हो, सही नहीं। बातिन का अच्छा होना मुस्तक़िल मक़्सूद है और ज़ाहिर का बेहतर होना मुस्तक़िल, नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं में है–

1. कोशिश,

अल्लाहुम्मज् अ़ल सरीरती ख़ैरम् मिन अलानीयती वज्अल अलानीयती सालिहतन०

(ऐ अल्लाह ! मेरे बातिन को मेरे ज़ाहिर से ज़्यादा बेहतर बना और मेरे ज़ाहिर को सालेह और नेक बना दे।)

हजरत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फ़र्मायी है।

۳۲- عَنْ اَنَسٍ رض اَنَّ اَبَابَكْرٍ رض دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ كَئِيْبٌ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالِيْ اَرَاكَ كَئِيْبًا قَالَ يَارَسُوْلَ كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَمٍّ لِّيَ الْبَارِحَةَ فُلَانٌ وَهُوَ يَكِيْدُ بِنَفْسِهٖ قَالَ فَهَلْ لَقَّنْتَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَالَ قَدْ فَعَلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ فَقَالَهَا قَالَ نَعَمْ قَالَ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ قَالَ اَبُوْبَكْرٍ يَارَسُوْلَ كَيْفَ هِيَ لِلْاَحْيَاءِ قَالَ هِيَ اَهْدَمُ لِذُنُوْبِهِمْ هِيَ اَهْدَمُ لِذُنُوْبِهِمْ۔ رواه ابويعلى والبزار وفيه زائدة بن ابى الرقاد وثقه القواريرى ضعفه البخارى وغيره كذا فى مجمع الزوائد واخرج بمعناه عن ابن عباس ايضا قلت وروى عن علىؓ مرفوعا مَنْ قَالَ اِذَا مَرَّ بِالْمَقَابِرِ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِنْ اَهْلِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ كَيْفَ وَجَدْتُّمْ قَوْلَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اغْفِرْ لِمَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاحْشُرْنَا فِيْ زُمْرَةِ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ غُفِرَ لَهٗ ذُنُوْبُ خَمْسِيْنَ سَنَةً قِيْلَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ لَّمْ تَكُنْ لَهٗ ذُنُوْبُ خَمْسِيْنَ سَنَةً قَالَ لِوَالِدَيْهِ وَلِقَرَابَتِهٖ وَلِعَامَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ رواه الديلمى فى تاريخ همدان والرافعى وابن النجار كذا فى منتخب كنز العمال لكن روى نحوه السيوطى فى ذيل اللآلى وتكلم على سنده وقال الاسناد كله ظلمات ورمى رجاله بالكذب وفى تنبيه الغافلين وروى عن بعض الصحابة من قال لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِنْ قَلْبِهٖ خَالِصًا وَمَدَّهَا بِالتَّعْظِيْمِ كَفَّرَ اللّٰهُ عَنْهُ اَرْبَعَةَ اٰلَافِ ذَنْبٍ مِّنَ الْكَبَائِرِ قِيْلَ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ اَرْبَعَةُ اٰلَافِ ذَنْبٍ قَالَ يُغْفَرُ مِنْ ذُنُوْبِ اَهْلِهٖ وَجِيْرَانِهٖ اه قلت وروى بمعناه مرفوعا لكنهم حكموا عليه بالوضع

كما في ذيل اللآلي نعم يؤيده الامر بدفن بجوار الصالح وتاذيه بجوار السوء

ذكره السيوطي في اللآلي بطرق وورد السلام على اهل القبور بالفاظ مختلفة في كنز العمال وغيره۔

32. हजरत अूबबक्र सिद्दीक रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में रंजीदा से होकर हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि मैं तुम्हें रंजीदा देख रहा हूं, क्या बात है ? उन्होंने अर्ज किया कि गुज़िश्ता शब[1] मेरे चचा ज़ाद भाई का इन्तिक़ाल हो गया। मैं नजअ[2] की हालत में उनके पास बैठा था (उस मंजर से तबीयत पर असर है) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुमने उसको लाइला ह इल्लल्लाहू की तल्क़ीन भी की थी ? अर्ज किया की थी। इर्शाद फ़र्माया कि उसने यह कलमा पढ़ लिया था ? अर्ज किया कि पढ़ लिया था। इर्शाद फ़र्माया कि जन्नत उसके लिए वाजिब हो गयी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! ज़िंदा लोग इस कलमे को पढ़ें तो क्या हो ? हुज़ूर सल्ल० ने दो मर्तबा यह इर्शाद फ़र्माया कि यह कलमा उनके गुनाहों को बहुत ही मुनहदिम कर देने वाला है (यानी बिल्कुल ही मिटा देने वाला है।)

फ़- मक़ाबिर[3] में और मय्यत के क़रीब कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने के मुताल्लिक़ भी कसरत से अहादीस में इर्शाद हुआ है।

एक हदीस में है कि जनाज़े के साथ कसरत से लाइला ह इल्लल्लाहू पढ़ा करो। एक हदीस में आया है कि मेरी उम्मत का शिआर (निशान), जब वह पुलसिरात पर चलेंगे, तो 'या लाइला ह इल्ला अन्त' होगा।

दूसरी हदीस में है कि जब वह अपनी क़ब्रों से उठेंगे, तो उनका निशान-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

लाइला ह इल्लल्लाहु व अलल्लाहि फ़ल य त वक्कलिल् मुअ्मिनून० होगा।

तीसरी हदीस में है कि क़यामत के अंधेरों में उनका निशान 'लाइला ह इल्ला अन्त' होगा !

'लाइला ह इल्लल्लाहू को कसरत से पढ़ने की बरकतें मरने से पहले भी बसा औक़ात[4] नजअ के वक़्त से महसूस हो जाती हैं और बाज़ अल्लाह के बन्दों को इससे भी पहले ज़ाहिर हो जाती हैं।

अबुलअब्बास रह० कहते हैं कि मैं अपने शहर 'अशबीला' में बीमार पड़ा हुआ था। मैंने देखा कि बहुत से परिन्दें बड़े-बड़े और मुख़्तलिफ़ रंग के सफ़ेद, सुर्ख़,

---

1. पिछली रात, 2. जान निकलने के वक़्त की हालत, 3. क़ब्रस्तान 4. कभी-कभी

सब्ज है, जो एक ही दफ़ा सब के सब पर समेट लेते हैं और एक ही मर्तबा खोल देते हैं और बहुत से आदमी हैं, जिनके हाथ में बड़े बड़े तबाक़ ढके हुए हैं, जिनके अन्दर कुछ रखा हुआ है। मैं इस सब को देख कर यह समझा कि यह मौत के तोहफ़े हैं। मैं जल्दी-जल्दी कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने लगा। इसमें से एक शख़्स ने मुझ से कहा कि तुम्हारा वक़्त अभी नहीं आया, यह एक और मोमिन के लिए तोहफ़ा है, जिसका वक़्त आ गया है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का जब इन्तिक़ाल होने लगा, तो फ़र्माया मुझे बिठा दो। लोगों ने बिठा दिया, फिर फ़र्माया, (या अल्लाह !) तू ने मुझे बहुत से कामों का हुक्म फ़र्माया, मुझ से इस में कोताही हुई ! तू ने मुझे बहुत सी बातों से मना फ़र्माया, मुझ से उस में ना फ़र्मानी हुई-तीन मर्तबा यही कहते रहे, इसके बाद फ़र्माया, लेकिन 'लाइला ह इल्लल्लाहू' यह फ़र्मा कर एक जानिब ग़ौर से देखने लगे। किसी ने पूछा, क्या देखते हो ? फ़र्माया, कुछ सब्ज[1] चीज़ें हैं कि न वह आदमी हैं, न जिन्न, इसके बाद इन्तिक़ाल फ़र्माया ।

ज़ुबेदा को किसी ने ख़्वाब में देखा, उससे पूछा, क्या गुज़री ? उसने कहा कि इन चार कलमों की बदौलत मेरी मग़्फ़िरत हो गयी।

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اُفْنِیْ بِہَا عُمُرِیْ، لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اُدْخِلُ بِہَا قَبْرِیْ، لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اَخْلُوْ بِہَا وَحْدِیْ، لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اَلْقٰی بِہَا رَبِّیْ

'लाइला ह इल्लल्लाहु के साथ अफ़्नी बिहा उम्री-लाइला ह इल्लल्लाहु अद्ख़ुलु बिहा क़ब्री-

लाइला ह इल्लल्लाहु अख़्लू बिहा वह्दी- लाइला ह इल्लल्लाहु अल्क़ा बिहा रब्बी०

1. (लाइला ह इल्लल्लाहु के अपनी उम्र को ख़त्म करूंगी,

2. लाइला ह इल्लल्लाह ही को क़ब्र में लेकर जाऊंगी, 3. लाइला ह इल्लल्लाहू ही के साथ तंहाई का वक़्त गुज़ारूंगी, 4. लाइला ह इल्लल्लाहू ही को लेकर अपने रब के पास जाऊंगी।)

---

1. हरे रंग की,

(۳۳) عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَوْصِنِیْ قَالَ اِذَا عَمِلْتَ سَیِّئَۃً فَاَتْبِعْهَا حَسَنَۃً تَمْحُهَا قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَمِنَ الْحَسَنَاتِ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ قَالَ ہِیَ اَفْضَلُ الْحَسَنَاتِ رواہ احمد وفی مجمع الزوائد رواہ احمد ورجالہ ثقات الا ان شمر بن عطیۃ حدثہ عن اشیاخہ ولم یسم احدا منہم قال السیوطی فی الدر اخرجہ ایضا ابن مردویہ والبیہقی فی الاسماء والصفات قلت واخرجہ الحاکم بلفظ یا اباذر اتق اللّٰہ حیث کنت واتبع السیئۃ الحسنۃ تمحھا و خالق الناس بخلق حسن وقال صحیح علی شرطہما واقرہ علیہ الذہبی وذکرہ السیوطی فی الجامع مختصرا ورقم لہ بالصحۃ۔

33. हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! मुझे कोई वसीयत फ़र्मा दीजिए। इर्शाद हुआ कि जब कोई बुराई सरज़द हो जाये, तो कफ़्फ़ारे के तौर पर फ़ौरन कोई नेक काम कर लिया करो (ताकि बुराई की नहूसत धुल जाये) मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! 'लाइला ह इल्लल्लाहू' पढ़ना भी नेकियों में दाख़िल है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, यह तो सारी नेकियों में अफ़ज़ल है।

फ़— बुराई अगर गुनाहे सग़ीरा है, तो नेकी से उसका मह्व हो जाना और मिट जाना ज़ाहिर है और अगर कबीरा है, तो क़वाइद के मुवाफ़िक़ तौबा से मह्व हो सकती है या महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से, जैसा पहले भी गुज़र चुका है। बहर सूरत मह्व होने का मतलब यह है कि फिर वह गुनाह आमालनामे में रहता है, न कहीं उसका ज़िक्र होता है। चुनांचे एक हदीस में वारिद है कि जब बन्दा तौबा करता है तो हक़ तआला शानुहू वह गुनाह किरामन कातिबीन को भुला देते हैं और उस गुनहागार के हाथ-पांव को भी भुला देते हैं[1] और ज़मीन के उस हिस्से को भी, जिस पर वह गुनाह किया गया है, हत्ताकि कोई भी उस गुनाह की गवाही देने वाला नहीं रहता।

गवाही का मतलब यह है कि क़यामत में आदमी के हाथ-पांव और बदन के दूसरे हिस्से नेक या बद आमाल जो भी किये हों, उनकी गवाहियां देंगे जैसा कि बाब सोम फ़स्ल दोम, हदीस 18 के तहत में आ रहा है। हदीसे वाला की ताईद उन रिवायात से भी होती है, जिनमें इर्शाद फ़र्माया गया है कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि गुनाह किया ही नहीं।

---

1. ताकि ये क़ियामत के दिन गवाही न दे सकें,

यह मजमून कई हदीसों मे वारिद हुआ है। तौबा उसको कहते हैं कि जो गुनाह हो चुका, उस को इन्तिहाई शर्म और नदामत हो और आइन्दा के लिए पक्का इरादा हो कि फिर कभी उस गुनाह को नहीं करूंगा।

एक दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि अल्लाह की इबादत कर और किसी को उसका शरीक न बना और ऐसे इख़्लास से अमल किया कर, जैसा कि वह पाक ज़ात तेरे सामने हो और अपने आपको मुर्दों में शुमार कर और अल्लाह की याद हर पत्थर और हर दरख़्त के क़रीब कर (ताकि बहुत से गवाह क़यामत के दिन मिलें) और जब कोई बुराई हो जाये, तो उसके कफ़्फ़ारे में कोई नेकी किया कर। अगर बुराई मख़्फ़ी की है, तो नेकी भी मख़्फ़ी हो और बुराई को अलल् एलान किया है, तो उसके कफ़्फ़ारे में नेकी भी अलल् एलान हो।

٣٣- عَنْ تَمِيْمِ الدَّارِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ كُتِبَتْ لَهٗ اَرْبَعُوْنَ اَلْفَ حَسَنَةٍ۔ اخرجه احمد قلت اخرج الحاكم شواهده بالفاظ مختلفة-

34. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स 'लाइला ह इल्लल्लाह वाहिदन अ ह दन स म दन लम यत्तख़िज़ साहिबतंव्वला व ल दन व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन अ हद० को दस मर्तबा पढ़ेगा, चालीस हज़ार नेकियां उसके लिए लिखी जायेंगी।

फ़— कलमा-ए-तय्यिबा की ख़ास-ख़ास मिक्दार पर भी हदीस की किताबों में बड़ी फ़ज़ीलतें ज़िक्र फ़र्मायी गई हैं। एक हदीस में आया है कि जब तुम फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा करो, तो हर फ़र्ज़ के बाद दस मर्तबा-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर० पढ़ा करो। इसका सवाब ऐसा है कि जैसे एक गुलाम आज़ाद किया।

٣٥ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ اَبِيْ اَوْفٰى قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ اَلْفَيْ اَلْفِ حَسَنَةٍ رواه الطبراني كذا في الترغيب-

رواہ الطبرانی وفی مجمع الزوائد فیہ فائد ابو الورقاء متروک

35. दूसरी हदीस में इर्शाद है कि जो शख़्स लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू अ ह दन् स म दन लमयलिद व लम यूलद व लम् यकुल्लहु कुफ़ुवन अ हद पढ़े उसके लिए बीस लाख नेकियां लिखी जायेंगे।

फ़– किस क़दर अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां से इनाम व एहसान की बारिश है कि एक मामूली-सी चीज के पढ़ने से, जिसमें न मशक़्क़त, न वक़्त ख़र्च हो, फिर भी हज़ार-हज़ार, लाख-लाख नेकियां अता होती है, लेकिन हम लोग इस क़दर ग़फ़लत और दुनियाबी अग़राज़ के पीछे पड़े हुए हैं कि इन अल्ताफ़ की बारिशों से कुछ भी वसूल नहीं करते। अल्लाह जल्ल शानूहु के यहां हर नेकी के लिए कम अज़ कम दस गुना सवाब तो मुतअय्यन ही है, बशर्ते कि इख़्लास से हो। उसके बाद इख़्लास ही के एतबार से सवाब बढ़ता रहता है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि इस्लाम लाने से पहले जितने गुनाह हालते कुफ़्र में किये हैं, वह माफ़ हो जाते हैं, उसके बाद फिर हिसाब है। हर नेकी दस गुने से लेकर सात सौ तक और जहां तक अल्लाह चाहें, लिखी जाती है और बुराई एक ही लिखी जाती है और अगर अल्लाह जल्ल शानुहू उसको माफ़ फ़र्मा दें, तो वह भी नहीं लिखी जाती।

दूसरी हदीस में है, जब बन्दा नेकी का इरादा करता है, तो सिर्फ़ इरादे से एक नेकी लिखी जाती है और जब अमल करता है, तो दस नेकियां सात सौ तक और इसके बाद जहां तक अल्लाह तआला शानुहू चाहें, लिखी जाती हैं। इस क़िस्म की और भी अहादीस बकसरत हैं, जिनसे मालूम होता है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां देने में कमी नहीं, कोई लेने वाला हो। यही चीज अल्लाह वालों की निगाह में होती है, जिसकी वजह से दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत भी उनको नहीं लुभा सकती।

अल्लाहुम्मज् अल्नी मिन्हुम

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आमाल छः तरीक़े के हैं और आदमी चार तरीक़े के– दो अमल तो वाजिब करने वाले हैं और दो बराबर-सराबर और एक दस गुना और एक सात सौ गुना।

दो अमल, जो वाजिब करने वाले हैं–

एक–यह कि जो शख़्स इस हाल में मरे कि शिर्क न करता हो, वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा।

दूसरे– जो शख़्स शिर्क की हालत में मरे, ज़रूर जहन्नम में जायेगा।

और जो अमल बराबर-सराबर है, वह नेकी का इरादा है कि दिल उसके लिये पुख़्ता हो गया हो, (मगर उस अमल की नौबत न आयी हो,) और दस गुना अज्र है अगर अमल भी कर ले,

और अल्लाह के रास्ते में (जिहाद वग़ैरह में) ख़र्च करना सात सौ दर्जे का अज्र रखता है, और गुनाह अगर करे, तो एक का बदला एक ही है।

और चार क़िस्म के आदमी यह हैं कि बाज़ ऐसे हैं, जिन पर दुनियां में वुस्अत है, आख़िरत में तंगी है। बाज़ ऐसे हैं, जिन पर दुनियां में तंगी है, आख़िरत में वुस्अत। बाज़ ऐसे हैं, जिन पर दोनों जगह तंगी है (कि दुनिया में फ़क्र आख़िरत में अज़ाब है,) बाज़ ऐसे हैं कि दोनों जहान में वुस्अत है।

एक शख़्स हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, मैंने सुना है, आप यह नक़्ल करते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू बाज़ नेकियों का बदला दस लाख गुना अता फ़र्माते हैं। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने फ़र्माया, इसमें ताज्जुब की क्या बात है ? मैंने ख़ुदा की क़सम ! ऐसा ही सुना है।

दूसरी हदीस में है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि बाज़ नेकियों का सवाब बीस लाख तक मिलता है और जब हक़ तआला शानुहू–

يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا

युज़ाअिफ़ुहा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन अज़ीमा० (उसके सवाब को बढ़ाते हैं और अपने पास से बहुत सा अज्र देते हैं) इर्शाद फ़र्मायें, तो जिस चीज़ को अल्लाह तआला 'अज्रे अज़ीम'[1] फ़र्मायें, उसकी मिक्दार का अन्दाज़ा कौन कर सकता है।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़र्माते हैं कि सवाब की इतनी बड़ी मिक्दारें जभी हो सकती है, जब इन अल्फ़ाज़ के मआनी का तसव्वुर और लिहाज़ करके पढ़े कि यह अल्लाह तआला शानुहू की अहम सिफ़ात[2] हैं।

---

1. बहुत सा अज्र (बदला), 2. ख़ूबियां, गुण,

٣٦- عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبْلِغُ اَوْ فَيُسْبِغُ الْوُضُوْءَ ثُمَّ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ يَدْخُلُ مِنْ اَيِّهَا شَاءَ رواه مسلم وابوداود وابن ماجة وَقَالَ فَيُحْسِنُ الْوُضُوْءَ زاد ابوداود ثُمَّ يَرْفَعُ طَرْفَهٗ اِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ يَقُوْلُ فذكرہ ورواه الترمذی کابی داود وزاد اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ الحديث وتكلم فيه كذا فى الترغيب زاد السيوطى فى الدر ابن ابى

36. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छी तरह करे (यानी सुन्नतों और आदाब की पूरी रियायत करे) फिर यह दुआ पढ़े– अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू॰– उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।

फ़– जन्नत में दाख़िल होने के लिए एक दरवाज़ा भी काफ़ी है, फिर आठों का खुल जाना यह ग़ायत एज़ाज़ और इक्राम[1] के तौर पर है।

एक हदीस में वारिद हुआ है कि जो शख़्स इस हाल में मरे कि अल्लाह के साथ शिर्क न करता हो और ना–हक़ किसी का ख़ून न किया हो, वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।

٣٧- عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِائَةَ مَرَّةٍ اِلَّا بَعَثَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَوَجْهُهٗ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ وَلَمْ يُرْفَعْ لِاَحَدٍ يَوْمَئِذٍ عَمَلٌ اَفْضَلُ مِنْ عَمَلِهٖ اِلَّا مَنْ قَالَ مِثْلَ قَوْلِهٖ اَوْ زَادَ رواه الطبرانى وفيه عبد الوهاب بن ضحاك متروك كذا فى مجمع الزوائد قلت هو من رواة ابن ماجة ولا شك انهم ضعفوه جداً الا ان معناه مؤيد بروايات منها ما تقدم من روايات يحيى بن طلحة ولا شك انه افضل الذكر وله شاهد من حديث ام هانى الأتى-

37. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, जो शख़्स सौ मर्तबा

1. यानी बहुत ज़्यादा इज़्ज़त ए एहतमाम के लिए है,

'लाइला ह इल्लल्लाहु' पढ़ा करे, हक तआला शानुहू क़यामत के दिन उसको ऐसा रोशन चेहरे वाला उठायेंगे, जैसे चौहदवीं रात का चांद होता है और जिस दिन यह तस्बीह पढ़े उस दिन उससे अफ़ज़ल अमल वाला वही शख़्स हो सकता है, जो इससे ज़्यादा पढ़े।

फ़— मुतअद्दद रिवायात और आयात से यह मजमून साबित होता है कि लाइला ह इल्लल्लाह दिल के लिए भी नूर है और चेहरे के लिए भी नूर है और यह तो मुशाहदा[1] भी है कि जिन अकाबिर का इस कलमे की कसरत मामूल है, उनका चेहरा दुनियां ही में नूरानी होता है।

(٣٨) عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال افتحوا على صبيانكم اول كلمة بلا اله الا الله ولقنوهم عند الموت لا اله الا الله فانه من كان اول كلامه لا اله الا الله وآخر كلامه لا اله الا الله ثم عاش الف سنة لم يسئل عن ذنب واحد موضوع ابن محموية وابوه مجهولان وقد ضعف البخاري ابراهيم بن مهاجر حكاه السيوطي عن ابن الجوزي ثم تعقبه بقوله الحديث في المستدرك واخرجه البيهقي في الشعب عن الحاكم وقال متن غريب لم نكتبه الا بهذا الاسناد واورده الحافظ ابن حجر في اماليه ولم يقدح فيه بشئ الا انه قال ابراهيم فيه لين وقد اخرج له مسلم في المتابعات كذا في اللآلي وذكره السيوطي في شرح الصدور ولم يقدح فيه بشئ قلت وقد ورد في التلقين احاديث كثيرة ذكرها الحافظ في التلخيص وقال في جملة من رواها وعن عروة بن مسعود الثقفي رواه العقيلي باسناد ضعيف ثم قال وروي في الباب احاديث صحاح عن غير واحد من الصحابة ورواه ابن ابي الدنيا في كتاب المحتضرين من طريق عروة بن مسعود عن ابيه عن حذيفة بلفظ لقنوا موتاكم لا اله الا الله فانها تهدم ما قبلها من الخطايا وروي فيه ايضا عن عمر وعثمان وابن مسعود وانس وغيرهما اه وفي الجامع الصغير لقنوا موتاكم لا اله الا الله رواه احمد ومسلم والاربعة عن ابي سعيد ومسلم وابن ماجة عن ابي هريرة والنسائي عن عائشة ورقم له بالصحة وفي الحصن اذا افصح الولد فليعلمه لا اله الا الله وفي الحرز رواه ابن السني عن عمرو بن العاص اه قلت ولفظه في عمل

1. जिसकी गवाही दी जा सके,

اليوم والليلة عن عمرو بن شعيب وجدت في كتاب جدي الذي حدثه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا افصح اولادكم فعلموهم لا اله الا الله ثم لا تبالوا متى ماتوا واذا اثغروا فمروهم بالصلوٰة وفي الجامع الصغير برواية احمد وابي داؤد والحاكم عن معاذ رض من كان اٰخر كلامه لا اله الا الله دخل الجنة ورقوله بالصحة وفي مجمع الزوائد عن علي رض رفعه من كان اٰخر كلامه لا اله الا الله لم يدخل النار وفي غير رواية مرفوعة من لقن عند الموت لا اله الا الله دخل الجنة.

38. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बच्चे को शुरू में, जब वह बोलना सीखने लगे, 'लाइला ह इल्लल्लाहू' याद कराओ और जब मरने का वक़्त आये, जब भी 'लाइला ह इल्लल्लाहू' तल्क़ीन करो। जिस शख़्स का अव्वल कलमा 'लाइला ह इल्लल्लाह' हो और आख़िरी कलमा भी 'लाइला ह इल्लल्लाहू, हो, वह हज़ार वर्ष भी ज़िंदा रहे तो (इन्शाअल्लाह[1]) किसी गुनाह का उससे मुतालबा नहीं होगा (या इस वजह से गुनाह सादिर न होगा या अगर सादिर हुआ तो तौबा वग़ैरह से माफ़ हो जायेगा या इस वजह से कि अल्लाह जल्ल जलालुहू अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़र्मा देंगे।

फ़– 'तल्क़ीन' इसको कहते हैं कि मरते वक़्त आदमी के पास बैठ कर कलमा पढ़ा जाये, ताकि उसको सुनकर वह भी पढ़ने लगे, उस पर उस वक़्त ज़ब्र या तक़ाज़ा नहीं करना चाहिए कि वह शिद्दते तक्लीफ़ में होता है, अख़ीर वक़्त में कलमा तल्क़ीन करने का हुक्म और भी बहुत सी अहादीसे सहीहा में वारिद हुआ है, मुतअद्दद हदीसों में यह भी इर्शादे नबवी वारिद हुआ है कि जिस शख़्स को मरते वक़्त 'लाइला ह इल्लल्लाहू' नसीब हो जाये, उससे गुनाह ऐसे गिर जाते हैं, जैसे सैलाब की वजह से तामीर,[2] बाज़ अहादीस में यह भी आया है कि जिस शख़्स को मरते वक़्त यह मुबारक कलमा नसीब हो जाता है तो पिछली ख़ताएं माफ़ हो जाती हैं।

एक हदीस में आया है कि मुनाफ़िक़ को इस कलमे की तौफ़ीक़ नहीं होती। एक हदीस में आया है कि अपने मुर्दों को 'लाइला ह इल्लल्लाहू' का तोशा दिया करो। एक हदीस में आया है कि जो शख़्स किसी बच्चे की परवरिश करे, यहां तक कि वह 'लाइला ह इल्लल्लाहू' कहने लगे, उससे हिसाब माफ़ है।

---

1. अगर अल्लाह ने चाहा,
2. जैसे कोई मकान बरसात या बाढ़ से गिर जाए,

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स नमाज़ की पाबंदी करता है, मरने के वक़्त एक फ़रिश्ता उसके पास आता है, जो शैतान को दूर कर देता है और मरने वाले को 'लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' तल्क़ीन करता है।

एक बात कसरत से तर्जुबे में आयी है कि अक्सर व बेशतर तल्क़ीन का फ़ायदा जब ही होता है कि ज़िदंगी में भी उस पाक कलमे की कसरत रखता हो।

एक शख़्स का क़िस्सा लिखा है कि वह भुस फ़रोख़्त किया करता था, जब उसके मरने का वक़्त आया तो लोग उसको कलमा-ए-तय्यिबा की तल्क़ीन करते थे और वह कहता था कि यह गट्ठा इतने का है और यह इतने का है। इसी तरह और भी मुतअद्द वाक़िआत 'नुजहतुल बसातीन' में भी लिखे हैं और मुशाहदा में भी आते हैं।

अफ़्यून खाने में सत्तर नुक़सान हैं

बसा औक़ात किसी गुनाह का करना भी इसका सबब बन जाता है कि मरते वक़्त कलमा-ए-तय्यिबा नसीब नहीं होता।

उलमा ने लिखा है कि अफ़्यून खाने में सत्तर नुक़सान हैं, जिनमें से एक यह है कि मरते वक़्त कलमा याद नहीं आता, इसके बिल् मुक़ाबिल मिस्वाक में सत्तर फ़ायदे हैं, जिनमें से एक यह है कि मरते वक़्त कलमा-ए-तय्यिबा याद आता है।

एक शख़्स का क़िस्सा लिखा है कि मरते वक़्त उसको कलमा-ए-शहादत तल्क़ीन किया गया। वह कहने लगा कि अल्लाह से दुआ करो, मेरी ज़बान से निकलता नहीं। लोगों ने पूछा, क्या बात है ? उसने कहा, मैं तौलने में बे-एहतियाती करता था।

एक दूसरे शख़्स का क़िस्सा है कि जब उसको तल्क़ीन की गयी तो कहने लगा कि मुझ से कहा नहीं जाता। लोगों ने पूछा क्या बात है ? उसने कहा, एक औरत मुझसे तौलिया ख़रीदने आयी थी। मुझे वह अच्छी लगी। मैं उसको देखता रहा। और भी बहुत से वाक़िआत इस नौअ के हैं, जिनमें से बाज़ 'तज़्किरा क़र्तबिया' में भी लिखे हैं। बंदे का काम है कि गुनाहों से तौबा करता रहे और अल्लाह तआला शानुहू से तौफ़ीक़ की दुआ करता रहे।

٩ ٣ - عَنْ اُمِّ هَانِیٍ رض قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا
اللّٰہُ لَا یَسْبِقُھَا عَمَلٌ وَّلَا تَتْرُکُ ذَنْبًا. رواہ ابن ماجۃ کذا فی منتخب کنز

العماني قلت واخرجه الحاكم في حديث طويل وصححه ولفظه قول لا إله إلا الله لا يترك ذنبا ولا يشبهها عمل اهـ وتعقبه عليه الذهبي بان زكريا ضعيف وسقط بين محمد وام هانى وذكره في الجامع برواية ابن ماجة ورقم له بالضعف.

39. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि 'लाइला ह इल्लल्ला' से न तो कोई अमल बढ़ सकता है और न यह कलमा किसी गुनाह को छोड़ सकता है।

फ़– किसी अमल का इससे न बढ़ सकना तो ज़ाहिर है कि कोई भी अमल ऐसा नहीं है, जो बग़ैर कलमा-ए-तय्यिबा पढ़े कारआमद हो सकता हो। नमाज़, रोज़ा, हज ज़कात, ग़रज़ हर अमल ईमान का मुहताज है। अगर ईमान है तो वह आमल भी मक़्बूल हो सकते हैं, वरना नहीं और कलमा-ए-तय्यिबा जो ख़ुद ईमान लाना ही है, वह किसी अमल का भी मुहताज नहीं। इसी वजह से अगर कोई शख़्स फ़क़त ईमान रखता हो और ईमान के अलावा कोई अमल सालेह[1] न हो, तो भी वह किसी न किसी वक़्त इन्शाअल्लाह जन्नत में ज़रूर जायेगा। और जो शख़्स ईमान न रखता हो, ख़्वाह वह कितने ही पसन्दीदा आमाल करे, निजात के लिए काफ़ी नहीं।

दूसरा जुज़्व किसी गुनाह को न छोड़ना है। अगर इस एतबार से देखा जाये कि जो शख़्स आख़िरी वक़्त में मुसलमान हो और कलमा-ए-तय्यिबा पढ़ने के बाद फ़ौरन ही मर जाये तो ज़ाहिर है कि इस ईमान लाने से कुफ़्र की हालत में जितने गुनाह किये थे, वह सब बिल-इज्माअ[2] जाते रहे और अगर पहले से पढ़ना मुराद हो, तो हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि यह कलमा दिलों की सफ़ाई और सैक़ल[3] होने का ज़रिया है। जब इस पाक कलमे की कसरत होगी, तो दिल की सफ़ाई की वजह से तौबा किए बग़ैर चैन ही न पड़ेगा और आख़िरकार गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया बन जायेगा।

एक हदीस में आया है कि जिस शख़्स को सोने के वक़्त और जागने के वक़्त 'लाइला ह इल्लल्लाहू' का एहतमाम हो, उसको दुनिया भी आख़िरत पर मुस्तअिद[4] करेगी और मुसीबत से उसकी हिफ़ाज़त करेगी।

---

1. नेक अमल, 2. सब का मिला-जुला फ़ैसला,
3. क़लई, 4. तैयार,

٤٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْإِيْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ شُعْبَةً فَأَفْضَلُهَا قَوْلُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَدْنَاهَا إِمَاطَةُ الْأَذٰى عَنِ الطَّرِيْقِ وَالْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْإِيْمَانِ رواه الستة وغيرهم بالفاظ مختلفة واختلاف يسير في العدد وغيره وهذا آخر ما اردت ايراده في هذا الفصل رعاية لعدد الاربعين والله الموفق لما يحب ويرضى-

40. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाख़ें हैं। (बाज़ रिवायात में सतहत्तर आयी हैं) उनमें सबसे अफ़्ज़ल 'लाइला ह इल्लल्लाहु' का पढ़ना है और सब से कम दर्जा, रास्ते से किसी तक्लीफ़देह चीज़ (ईंट-लकड़ी-कांटे वग़ैरह) का हटा देना है और हया भी (एक ख़ुसूसी) शोबा है ईमान का।

फ़- हया को ख़ुसूसी एहतमाम की वजह से ज़िक्र फ़र्माया कि यह बहुत से गुनाहों- ज़िना, फ़ह्श गोई, नंगा होना, गाली-गलोच वग़ैरह से बचने का सबब है। इसी तरह रुसवाई के ख़्याल से बहुत से नेक काम करना ज़रूरी हो जाते हैं। बल्कि दुन्यिा और आख़िरत की शर्म सारे ही नेक कामों पर उभारती है। नमाज़, ज़कात, हज वग़ैरह तो ज़ाहिर हैं, इसी तरह से और भी तमाम अह्काम बजा लाने का सबब है, इसी वजह से मिसल मशहूर है- 'तू बेहया बाश व हर चे ख़्वाही कुन' (तू बे ग़ैरत हो जा, फिर जो चाहे कर) इस माना में सही हदीस भी वारिद है-

'इज़ा लम् तस्तह्यी फ़स्नअ मा शिअ्त'

(जब तू हयादार न रहे, तो फिर जो चाहे कर) कि सारी फ़िक्र ग़ैरत और शर्म ही की है। अगर हया है, तो यह ख़्याल भी ज़रूरी है कि नमाज़ न पढ़ूंगा, तो आख़िरत में क्या मुंह दिखलाऊंगा और शर्म नहीं है, तो फिर यह ख़्याल होता है कि कोई कह कर क्या कर लेगा।

(तंबीह) इस हदीस शरीफ़ में ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाख़ें इर्शाद फ़र्मायी हैं। इस बारे में रिवायात मुख़्तलिफ़ वारिद हुई हैं और मुतअद्दद रिवायात में सतहत्तर का अदद आया है। इसीलिए तर्जुमे में इस तरफ़ इशारा भी कर दिया था। इन सतहत्तर की तफ़्सील में उलमा ने बहुत सी मुस्तक़िल तसानीफ़ फ़र्मायी हैं।

इमाम अबूहातिम बिन ह्बान रह० फ़र्माते हैं कि मैं इस हदीस का मतलब एक मुद्दत तक सोचता रहा। जब इबादतों को गिनता तो वह सतहत्तर से बहुत ज़्यादा हो जाती हैं, अहादीस को तलाश करता और हदीस शरीफ़ में जिन चीज़ों को ख़ास तौर से ईमान की शाख़ों के ज़ैल में ज़िक्र किया है, उनको शुमार करता, तो वह इस अदद से कम हो जातीं। मैं क़ुरआन पाक की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और क़ुरआन शरीफ़ में जिन चीज़ों को ईमान के ज़ैल में ज़िक्र किया है, उनको शुमार किया तो वह भी

इस अदद से कम थीं। तो मैंने क़ुरआन शरीफ़ और हदीस शरीफ़ दोनों को जमा किया और दोनों में जिन चीज़ों को ईमान का जुज़्व क़रार दिया उनको शुमार करके, जो चीज़ें दोनों में मुश्तरक थीं, उनको एक-एक अदद शुमार करके मीज़ान, देखी, तो दोनों का मज्मूआ मुकर्ररात[1] को निकाल कर इस अदद के मुवाफ़िक़ हो गया, तो मैं समझा कि हदीस शरीफ़ का मफ़्हूम यही है।

क़ाज़ी अयाज़ रह० फ़र्माते हैं कि एक जमाअत ने इन शाख़ों की तफ़्सील बयान करने का एहतमाम किया है और इज्तिहाद से इन तफ़्सीलात के मुराद होने का हुक्म लगाया है, हालांकि इस मिक्दार की ख़ुसूसी तफ़्सील न मालूम होने से ईमान में कोई नुक़्स पैदा नहीं होता, जबकि ईमान के उसूल व फ़ुरूअ[2] सारे बित्तफ़्सील[3] मालूम व मुहक़्क़[4] हैं।

ख़त्ताबी रह० फ़र्माते हैं कि इस तादाद की तफ़्सील अल्लाह और उसके रसूल के इल्म में है और शरीअते मुतह्हरा[5] में मौजूद है, तो इस तायदाद के साथ तफ़्सील का मालूम न होना कुछ मुज़िर[6] नहीं।

इमाम नववी रह० फ़र्माते हैं कि नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन शाख़ों में सबसे आला तौहीद यानी कलमा 'लाइला ह इल्लल्लाहु' को क़रार दिया है, जिससे मालूम हो गया कि ईमान में सबसे ऊपर इसका दर्जा है, इससे ऊपर कोई चीज़ ईमान की शाख़ नहीं है। जिससे यह बात मालूम हो गयी कि असल तौहीद है, जो हर मुकल्लफ़ पर ज़रूरी है और सब से नीचे दफ़ा करना है उस चीज़ का, जो किसी मुसलमान को नुक़्सान पहुंचाने का एहतमाल रखती हो। बाक़ी सब शाख़ें इनके दर्मियान हैं, जिनकी तफ़्सील मालूम होना ज़रूरी नहीं। इज्मालन् उन पर ईमान लाना काफ़ी है, जैसा कि सब फ़रिश्तों पर ईमान लाना ज़रूरी है, लेकिन उनकी तफ़्सील और उनके नाम हम नहीं जानते। लेकिन एक जमाअते मुहद्दिसीन ने इन सब शाख़ों की तफ़्सील में मुख़्तलिफ़ तसानीफ़ फ़र्मायी हैं। चुनांचे अबूअब्दुल्लाह हलीमी रह० ने एक किताब इसी मज़मून में तस्नीफ़ फ़र्मायी है, जिसका नाम 'फ़वाइदुल मिन्हाज' रखा है और इमाम बैहक़ी रह० ने एक किताब तस्नीफ़ की है, जिसका नाम ही शुअबुल ईमान रखा है। इसी तरह शेख़ अब्दुल् जलील रह० ने भी एक किताब लिखी है, उस का नाम भी शुअबुल ईमान रखा है और इस्हाक़ बिन क़र्तबी रह०ने 'किताबुन्नसाइह' इसी मज़मून में तस्नीफ़ फ़र्मायी है और इमाम अबूहातिम रह० ने अपनी किताब का नाम 'वस्फ़ुल् ईमान व शोअबा' रखा है। शुर्राह बुख़ारी रह० ने इस बाब में मुख़्तलिफ़

---

1. दोबारा आयी हुई बातें, 2. छोड़ी-बड़ी हर चीज़, 3. तफ़्सील के साथ, 4. जांचे-परखे हुए, 5. पाक शरीअत, 6. नुक़्सान देने वाला,

तसानीफ़ से तल्ख़ीस[1] करते हुए इनको मुख़्तसर तौर पर ज़मा फ़र्माया है, जिसका हासिल यह है कि दरअसल ईमाने कामिल तीन चीज़ों के मज्मूए का नाम है- (1) अव्वल तस्दीक़े क़ल्बी यानी दिल से जुम्ला उमूर का यक़ीन करना, (2) दूसरे ज़बान का इक़रार व अमल, (3) तीसरे बदन के आमाल यानी ईमान की जुम्ला शाखें तीन हिस्सों पर मुंकसिम हैं-

1. अव्वल वह, जिनका ताल्लुक़ नीयत व एतक़ाद और अमल क़ल्बी से है।

2. दूसरे वह, जिनका ताल्लुक़ ज़बान से है।

3. तीसरे वह, जिनका ताल्लुक़ बाक़ी हिस्सा-ए-बदन से है। ईमान की जुम्ला चीज़ें इन तीनों में दाख़िल हैं। इनमें से-

पहली क़िस्म- जो तमाम अक़ाइद को शामिल है, उसका ख़ुलासा तीस चीज़ें हैं-

1. अल्लाह पर ईमान लाना, जिसमे उसकी ज़ात, उसकी सिफ़ात पर ईमान लाना दाख़िल है। और इसका यक़ीन भी कि वह पाक ज़ात एक है और उसका कोई शरीक नहीं और न उसका कोई मिस्ल है।

2. अल्लाह के मासिवा सब चीज़ें बाद की पैदावार हैं, हमेशा से वही एक ज़ात है,

3. फ़रिश्तों पर ईमान लाना,

4. अल्लाह की उतारी हुई किताबों पर ईमान लाना,

5. अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाना,

6. तक़्दीर पर ईमान लाना कि भली हो या बुरी, सब अल्लाह की तरफ़ से है।

7. क़यामत के हक़ होने पर ईमान लाना, जिसमें क़ब्र का सवाल व जवाब, क़ब्र का अज़ाब, मरने के बाद दोबारा ज़िंदा होना, हिसाब होना, आमाल का तुलना और पुल-सिरात पर गुज़रना, सब ही दाख़िल हैं।

8. जन्नत का यक़ीन होना और यह कि मोमिन इन्शाअल्लाह हमेशा उसमें रहेंगे।

---

1. ख़ुलासा करना,

9. जहन्नम का यकीन होना और यह कि उसमें सख़्त से सख़्त अज़ाब हैं और वह भी हमेशा-हमेशा रहेगी।

10. अल्लाह तआला शानुहू से मुहब्बत रखना।

11. अल्लाह के वास्ते दूसरों से मुहब्बत रखना और अल्लाह ही के वास्ते बुग़्ज रखना (यानी अल्लाह वालों से मुहब्बत रखना और उसकी ना-फ़र्मानी करने वालों से बुग़्ज रखना) और इसी में दाख़िल है सहाबा किराम, बिलख़ुसूस मुहाजिरीन और अन्सार की मुहब्बत और आले रसूल सल्ल० की मुहब्बत।

12. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत रखना, जिसमें आपकी ताज़ीम भी आ गयी और हुज़ूर सल्ल० पर दरूद शरीफ़ पढ़ना भी और आपकी सुन्नतों का इत्तिबाअ करना भी दाख़िल है।

13. इख़्लास, जिसमें रिया न करना और निफ़ाक से बचना भी दाख़िल हैं।

14. तौबा यानी दिल से गुनाहों पर नदामत और आइन्दा न करने का अह्द।

15. अल्लाह का ख़ौफ, 16. अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार होना है, 17. अल्लाह की रहमत से मायूस न होना, 18. शुक्र गुजारी, 19. वफ़ा 20. सब्र, 21. तवाज़ुअ, जिसमें बड़ों की ताज़ीम भी दाख़िल है। 22. शफ़क़त व रहमत, जिसमें बच्चों पर शफ़क़त करना भी दाख़िल है। 23. मुकद्दर पर राज़ी रहना, 24. तवक्कुल, 25. ख़ुद बीनी[1] और ख़ुद सताई[2] का छोड़ना, जिसमें इस्लाहे नफ़्स भी दाख़िल है। 26. कीना और ख़लिश न रखना, जिसमें हसद भी दाख़िल है।

27. ऐनी में[3] यह नम्बर रह गया है, मेरे ख़्याल में इस जगह हया करना है, जो कातिब की ग़लती से रह गया है। 28. ग़ुस्सा न करना, 29. फ़रेब न देना, जिसमें बद-गुमानी न करना और किसी के साथ मकर न करना भी दाख़िल है।

30. दुनिया की मुहब्बत दिल से निकाल देना, जिसमें माल की और जगह की मुहब्बत दाख़िल है। अल्लामा ऐनी रह० फ़र्माते हैं कि उमूरे बाला में दिल के तमाम आमाल दाख़िल हैं, अगर कोई चीज ब-ज़ाहिर ख़ारिज मालूम हो, तो वह

1. यानी अपने ही को सब समझना,
2. अपनी तारीफ़ आप करना,
3. बुख़ारी शरीफ़ की एक मशहूर शरह का नाम,

ग़ौर से, इन नम्बरों में से किसी न किसी नम्बर में दाख़िल होगी।

दूसरी क़िस्म– ज़बान का अमल था, इसके सात शोबे हैं–

(1) कलमा-ए-तय्यिबा का पढ़ना, (2) क़ुरआन पाक की तिलावत करना, (3) इल्म सीखना, (4) इल्म दूसरों को सिखाना, (5) दुआ करना, (6) अल्लाह का ज़िक्र, जिसमें इस्तग़्फ़ार भी दाख़िल है, (7) लग़्व बातों से बचना।

तीसरी क़िस्म– बाक़ी बदन के आमाल हैं। यह कुल चालीस हैं, जो तीन हिस्सों पर मुंक़सिम हैं।

पहला हिस्सा– अपनी ज़ातों से ताल्लुक़ रखता है। यह सोलह शाखें हैं–

1. पाकी हासिल करना, जिसमें बदन की पाकी, कपड़े की पाकी, मकान की पाकी सब ही दाख़िल है और बदन की पाकी में वुज़ू भी दाख़िल है और हैज़ व निफ़ास और जनाबत का ग़ुस्ल भी।

2. नमाज़ की पाबंदी करना, उसको क़ायम करना[1], जिसमें फ़र्ज़, नफ़्ल, अदा-क़ज़ा सब दाख़िल है।

3. सद्क़ा, जिसमें ज़कात, सद्क़ा-ए-फ़ित्र वग़ैरहभी दाख़िल है और बख़्शिश करना, लोगों को खाना खिलाना, मेहमान का इक्राम करना और ग़ुलामों का आज़ाद करना भी दाख़िल है।

4. रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल, 5. हज करना–फ़र्ज़ हो या नफ़्ल और इसी में उमरा भी दाख़िल है और तवाफ़ भी।

6. एतिकाफ़ करना जिसमें लैलतुल्क़द्र को तलाश करना भी दाख़िल है, 7. दीन की हिफ़ाज़त के लिए घर छोड़ना, जिसमें हिजरत भी दाख़िल है।

8. नज़्र का पूरा करना, 9. क़समों की निगहदाश्त रखना, 10. कफ़्फ़ारों का अदा करना, 11. सतर का नमाज़ में और नमाज़ के अलावा ढांकना, 12. क़ुर्बानी करना और क़ुर्बानी के जानवरों की ख़बरगीरी और उनका एहतमाम करना, 13. जनाज़े का एहतमाम करना, उसके जुम्ला उमूर का इन्तिज़ाम करना।

---

1. नमाज़ का क़ायम करना, उसके आदाब व शरायत की रियायत करते हुए अदा करने का नाम है, जैसा कि फ़ज़ाइले नमाज़ के तीसरे बाब में मज़्कूर है।

14. क़र्ज का अदा करना, 15. मामलात का दुरुस्त करना, सूद से बचना, 16. सच्ची बात की गवाही देना, हक़ को न छिपाना।

दूसरा हिस्सा– किसी दूसरे के साथ के बर्ताव का है। उसकी छः शाखें हैं–

(1) निकाह के ज़रिए से हरामकारी से बचना, (2) अह्ल व अयाल के हुक़ूक़ की रियायत करना और उनका अदा करना। इसमें नौकरों और ख़ादिमों के हुक़ूक़ भी दाख़िल हैं, (3) वालिदैन के साथ सुलूक करना, नर्मी बरतना, फ़र्मांबरदारी करना, (4) औलाद की अच्छी तर्बियत करना, (5) सिला रहमी करना, (6) बड़ों की फ़र्मांबरदारी और इताअत करना।

तीसरा हिस्सा– हक़ूक़ आम्मा का है, जो अठारह शोबों पर मुंक़सिम है–

1. अद्ल के साथ हुकूमत करना, 2. हक़्क़ानी जमाअत का साथ देना, 3. हुक्काम की इताअत करना (बशर्ते कि ख़िलाफ़े शरअ हुक्म न हो), 4. आपस के मामलात की इस्लाह करना, जिसमें मुफ़्सिदों को सज़ा देना, बाग़ियों से जिहाद करना भी दाख़िल है, 5. नेक कामों में दूसरों की मदद करना, 6. नेक कामों का हुक्म करना और बुरी बातों से रोकना, जिसमें तब्लीग़ व वाज़ भी दाख़िल है, 7. हुदूद का क़ायम करना, 8. जिहाद करना जिसमें मोर्चों की हिफ़ाज़त भी दाख़िल है, 9. अमानत का अदा करना, जिसमें ख़ुम्स, जो ग़नीमत के मालों में होता है, वह भी दाख़िल है, 10. क़र्ज का देना और अदा करना, 11. पड़ोसियों का हक़ अदा करना, उनका इकराम करना, 12. मामला अच्छा करना, जिसमें जायज़ तरीक़े से माल का जमा करना भी दाख़िल है, 13. माल का अपने महल (मौक़े) पर ख़र्च करना, इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) और बुख़्ल से बचना भी इसमें दाख़िल है, 14. सलाम करना और सलाम का जवाब देना, 15. छींकने वाले को 'यर्हमुकल्लाह' कहना, 16. दुनिया को अपने नुक़्सान से अपनी तक्लीफ़ से बचाना, 17. लह्व व लअिब से बचना, 18. रास्ते से तक्लीफ़देह चीज़ का दूर करना।

यह सतत्तर शाखें हुईं। इनमें बाज़ को एक दूसरे में मुन्ज़िम[1] भी किया जा सकता है, जैसा कि अच्छे मामले में माल का जमा करना और ख़र्च करना, दोनों

---

1. मिलाया जा सकता है,

दाख़िल हो सकते हैं। इसी तरह से ग़ौर से और भी आदाद को कम किया जा सकता है और इस लिहाज़ से सत्तर वाली रिवायत या सर्सठ वाली रिवायत के तहत में भी यह तफ़्सील आ सकती है। इस तफ़्सील में बन्दे ने अल्लामा ऐनी रह० के कलाम को, जो बुख़ारी शरीफ़ की शरह में है, असल क़रार दिया है कि उन्होंने नम्बरवार इन चीज़ों को ज़िक्र फ़र्माया है। और हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० की फ़त्हुल बारी और अल्लामा रह० क़ारी की मिर्क़ात से तौज़ीह व इज़ाफ़ा किया है। उलमा ने लिखा है कि ईमान के सारे शोबे मुज्मलन् यह हैं, जो मज़्कूर हुए। आदमी को चाहिए कि इन में ग़ौर व फ़िक्र करे, जो औसाफ़ उसमें इनमें से पाये जाते हों, उन पर अल्लाह जल्ले शानुहू का शुक्र अदा करे कि उसी की तौफ़ीक़ व लुत्फ़ से हर भलाई हासिल हो सकती है और जिन औसाफ़ में कमी हो, उनके हासिल करने की सई करे और अल्लाह तआला से उनके हुसूल की तौफ़ीक़ मांगता रहे।

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि - وَمَا تَوْفِيْقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ

तीसरा बाब

तीसरे कलमें के फ़ज़ाइल में

यानी سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु और बाज़ रिवायात में इन कलमात के साथ–

लाहौ ल व ला क़ूव्व त इल्ला बिल्लाहि لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

भी वारिद हुआ है। अहादीस में इन कलमात की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत आयी हैं। यह कलमात 'तस्बीहाते फ़ातिमा' के नाम से भी मशहूर हैं, इसलिए कि यह कलमात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सबसे ज़्यादा लाड़ली साहबज़ादी हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को भी तालीम फ़र्माये हैं, जैसा कि आगे आ रहा है। इस बाब में भी चूंकि कलाम पाक की आयात और अहादीस ब-कसरत वारिद हुई हैं, इसलिए दो फ़स्लों पर इसको मुंक़सिम कर दिया–

पहली फ़स्ल आयाते क़ुरआनीया में,

दूसरी अहादीसे नबवीया में।

फ़स्ले अव्वल

उन आयात के बयान में, जिन में-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु' का मज़मून ज़िक्र फ़र्माया गया है। यह क़ायदे की बात है कि जो चीज़ जितनी मुहतम्म बिशशान होती है, उतने ही एहतमाम से ज़िक्र की जाती है और मुख़्तलिफ़ तरीक़े से ज़ेहन नशीन की जाती है। चुनांचे इन कलमात का मफ़्हूम भी क़ुरआन पाक में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ज़िक्र फ़र्माया गया है, उनमें सबसे पहला कलमा-

'सुब्हानल्लाहि'

है। सुब्हानल्लाहि' के माना हैं अल्लाह जल्ल शानुहू हर ऐब और बुराई से पाक है। मैं उसकी पाकी का पूरा-पूरा इक़रार करता हूं।

इस मज़मून को हुक्म से भी ज़िक्र फ़र्माया है कि अल्लाह की पाकी बयान करो, ख़बर से भी इर्शाद फ़र्माया है कि फ़रिश्ते और दूसरी मख़्लूक़ात अल्लाह की पाकी का इक़रार व बयान करती रहती हैं, वग़ैरह-वग़ैरह। इसी तरह दूसरे अल्फ़ाज़ का भी यही हाल है कि मुख़्तलिफ़ उन्वानात से कलामुल्लाह शरीफ़ में इन मज़ामीन का ज़िक्र फ़र्माया है-

١- وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ - (سورۂ بقرہ، رکوع ۴)

1. (फ़रिश्तों का मक़ूला इन्सान की पैदाइश के वक़्त) और हम बिहम्दिल्लाह आपकी तस्बीह करते रहते हैं और आपकी पाकी का दिल से इक़रार करते रहते हैं।

٢- قَالُوْا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (سورۂ بقرہ، رکوع ۴)

2. (मलाइका का जब ब-मुक़ाबला इन्सान इम्तिहान हुआ तो) कहा, आप तो हर ऐब से पाक हैं। हमको तो इसके सिवा कुछ भी इल्म नहीं, जितना आपने बता दिया है। बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं।

٣ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ (سورۂ آلِ عمران، رکوع ۴)

3. और अपने रब को ब-कसरत याद कीजियो और उसकी तस्बीह कीजियो, दिन ढले भी और सुबह के वक़्त भी।

٤ - رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (سورۂ آلِ عمران، رکوع ۲۰)

4. (समझदार लोग, जो अल्लाह के ज़िक्र में हर वक़्त मश्ग़ूल रहते हैं और क़ुदरत के कारनामों में ग़ौर व फ़िक्र करते रहते हैं) यह कहते हैं ऐ हमारे रब ! आपने यह सब बे-फ़ायदा पैदा नहीं किया है (बल्कि बड़ी हिक्मतें इस में हैं) आपकी ज़ात हर ऐब से पाक है। हम आपकी तस्बीह करते हैं। आप हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा दीजिए।

٥ - سُبْحَانَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ - (سورۂ نساء، رکوع ۲۳)

5. वह ज़ात इससे पाक है कि उसके औलाद हो।

٦ - قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ (سورۂ مائدہ، رکوع ۱۶)

6. क़यामत में जब हज़रत ईसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलाम से सवाल होगा कि अपनी उम्मत[1] को तस्लीस[2] की तालीम क्या तुमने दी थी तो) वह कहेंगे, (तौबा-तौबा) मैं तो आपको (शिर्क से और हर ऐब से) पाक समझता हूं। मैं ऐसी बात कैसे कहता, जिसके कहने का मुझको कोई हक़ नहीं था।

٧ - سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ - (سورۂ انعام، رکوع ۱۲)

7. अल्लाह जल्ल जलालुहू (उन सब बातों से पाक है,) जिन को (यह काफ़िर लोग) अल्लाह की शान में कहते हैं (कि उसके औलाद है या शरीक है, वग़ैरह-वग़ैरह)।

٨ - فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ - (سورۂ اعراف، رکوع ۱۷)

8. (जब तूर पर हक़ तआला शानुहू की एक तजल्ली से हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर गये थे) फिर जब इफ़ाक़ा हुआ तो अ़र्ज़ किया कि बेशक आपकी ज़ात (उन आंखों के देखने से और हर ऐब से) पाक है। मैं (दीदार की दरख़्वास्त से) तौबा करता हूं और सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं।

1. समुदाय मानने वाले लोगों का गिरोह, 2. तीन ख़ुदाओं का अक़ीदा,

(٩) اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَیُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ یَسْجُدُوْنَ (س اعراف ع ۲۴)

9. बेशक जो अल्लाह के मुक़र्रिब हैं (यानी फ़रिश्ते) वह उसकी इबादत से तकब्बुर[1] नहीं करते और उसकी तस्बीह करते रहते हैं और उसीको सज्दा करते रहते हैं।

फ़– सूफ़िया ने लिखा है कि आयत में तकब्बुर की नफ़ी[2] को मुक़द्दम करने में इस तरफ़ इशारा है कि तकब्बुर का इज़ाला[3] इबादात पर एहतमाम का ज़रिया है[4] और तकब्बुर से इबादात में कोताही वाक़ेअ होती है।

(١٠) سُبْحٰنَهٗ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ (سورہ توبہ ع ۵)

10. उस की ज़ात पाक है, उन चीज़ों से, जिनको वह (काफ़िर उसका) शरीक बनाते हैं।

(١١) دَعْوٰىهُمْ فِیْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ج وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (سورہ یونس ع ۱)

11. (उन जन्नतियों के) मुंह से यह बात निकलेगी – 'सुब्हा न कल्लाहुम्म' और आपस का उन का सलाम होगा अससलामु (अलैकुम) और (जब दुनिया की दिक़्क़तों को याद करेंगे और ख़्याल करेंगे कि अब हमेशा के लिए उनसे ख़लासी हो गयी तो) आख़िर में कहेंगे– 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलिमीन'

(١٢) سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ (س یونس ع ۲)

12. वह ज़ात पाक और बरतर है उन चीज़ों से, जिनको वह काफ़िर शरीक बनाते हैं।

(١٣) قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ هُوَ الْغَنِیُّ (س یونس ع ۷)

13. वह लोग कहते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू के औलाद है। अल्लाह तआला इससे पाक है, वह किसी का मुहताज नहीं।

(١٤) وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ (س یوسف ع ۱۲)

14. और अल्लाह जल्ल शानुहू (हर ऐब से) पाक है और मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूं।

---

1. घमंड 2. इन्कार, 3. दूर करना, 4. यानी इबादतों में ज़्यादा लगे रहने से घमंड दूर हो जाता है।

(۱۵) وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ۔ (س رعد ع ۲)

15. और रअ्द (फ़रिश्ता) उसकी हम्द के साथ तस्बीह करता है और दूसरे फ़रिश्ते भी उस के डर से (तस्बीह-तम्हीद करते हैं।)

फ़– उलमा ने लिखा है कि जो शख़्स बिजली के कड़कने के वक़्त–

سُبْحَانَ الَّذِیْ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ

'सुब्हानल्लज़ी युसब्बिहुर्रअ्दु बिहम्दिही वल मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिही॰' पढ़ेगा, उसको बिजली के नुक़्सान से हिफ़ाज़त हासिल होगी। एक हदीस में भी आया है कि जब बिजली की कड़क सुना करो तो अल्लाह का ज़िक्र किया करो। बिजली ज़िक्र करने वाले तक नहीं जा सकती। दूसरी हदीस में वारिद है कि बिजली की कड़क के वक़्त तस्बीह किया करो, तक्बीर न कहा करो।

(۱۶) وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ (س ۱۴ حجر ع ۶)

16. और हमको मालूम है कि यह लोग (जो ना-मुनासिब कलमात आप की शान में) कहते हैं, उनसे आपको दिल तंगी होती है, पस (इसकी परवाह न कीजिए) आप अपने रब की तस्बीह व तह्मीद करते रहें और सज्दा करने वालों (यानी नमाज़ियों) में शामिल रहें और अपने रब की इबादत करते रहें, यहां तक कि आपकी वफ़ात का वक़्त आवे।

(۱۷) سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۔ (سورہ نحل ع ۱)

17. वह ज़ात लोगों के शिर्क से पाक और बालातर है।

(۱۸) وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهٗ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ۔ (سورہ نحل رکوع ۷)

18. और वह अल्लाह के लिए बेटियां तज्वीज़ करते हैं, वह ज़ात इससे पाक है और तमाशा यह है कि अपने लिए ऐसी चीज तज्वीज़ करते हैं जिसको ख़ुद पसन्द करते हैं।[1]

(۱۹) سُبْحَانَ الَّذِیْ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰى (س بنی اسرائیل ع ۱)

19. (हर ऐब से) पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

1. यानी अपने लिए तो लड़के और अल्लाह के लिए लड़कियाँ,

व सल्लम) को रात के वक़्त मस्जिदे हराम (यानी मस्जिदे काबा) से मस्जिदे अक़्सा तक ले गयी (मेअ्राज का क़िस्सा)

(۲۰) سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (س بنی اسرائیل ع ۵)

(۲۱) تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ (س بنی اسرائیل ع ۵)

(۲۲) وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ (س بنی اسرائیل ع ۵)

20. 21. 22. यह लोग जो कुछ कहते हैं, अल्लाह तआला शानुहू उससे पाक और बहुत ज़्यादा बुलंद मर्तबा हैं। तमाम सातों आसमान और ज़मीन और जितने (आदमी, फ़रिश्ते और जिन्न) उनके दर्मियान में हैं, सबके सब उसकी तस्बीह करते हैं (और यही नहीं, बल्कि) कोई चीज़ भी (जानदार हो या बेजान) ऐसी नहीं, जो उसकी तारीफ़ के साथ तस्बीह न करती हो, लेकिन तुम लोग उनकी तस्बीह को समझते नहीं हो।

(۲۳) قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (س بنی اسرائیل ع ۱۰)

23. (आप इन लग्व-मुतालबों के जवाब में, जो वह करते हैं) कह दीजिए कि सुब्हानल्लाह ! मैं तो एक आदमी हूं, रसूल हूं (ख़ुदा नहीं हूं कि जो चाहे करूं।)

(۲۴) وَيَقُوْلُوْنَ سُبْحَانَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا (س بنی اسرائیل ع ۱۲)

24. (इन उलमा पर जब क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा जाता है, तो वह ठोढ़ियों के बल सज्दे में गिर जाते हैं) और कहते हैं कि हमारा रब पाक है। बेशक उसका वायदा ज़रूर पूरा होने वाला है।

(۲۵) فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا (س مریم ع ۱)

25. पस (हज़रत ज़करिया अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) हुज्रे में से बाहर तशरीफ़ लाये और अपनी क़ौम को इशारे से फ़र्माया कि तुम लोग सुबह और शाम ख़ुदा की तस्बीह किया करो।

(۲۶) مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ (س مریم ع ۲)

26. अल्लाह जल्ल शानुहू की यह शान (ही) नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। वह इन सब क़िस्सों से पाक है।

(۲۷) وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (س طٰہٰ ع ۸)

27. (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप उन लोगों की नामुनासिब बातों पर सब्र कीजिए) और अपने रब की हम्द (व सना) के साथ तस्बीह करते

रहा कीजिए। आफ़्ताब निकलने से पहले और ग़ुरूब से पहले रात के औक़ात में तस्बीह किया कीजिए और दिन के अव्वल और आख़िर में, ताकि आप (उस सवाब और बे-इन्तिहा बदले पर जो उनके मुक़ाबले में मिलने वाला है, बेहद) ख़ुश हो जाएं।

(۲۸) يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ (س انبیاء ع ۲)

28. (अल्लाह के मक़्बूल बन्दे उसकी इबादत से थकते नहीं) शब व रोज़ अल्लाह की तस्बीह करते रहते हैं, किसी वक़्त भी मौक़ूफ़ नहीं करते।[1]

(۲۹) فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ (س انبیاء ع ۲)

29. अल्लाह तआला, जो कि मालिक है, अर्श का, उन सब उमूर से पाक है, जो यह लोग बयान करते हैं (कि नऊज़ुबिल्लाहि[2] इसके शरीक हैं, या इसके औलाद है।)

(۳۰) وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ (سورہ انبیاء رکوع ۲)

30. यह (काफ़िर लोग) यह कहते हैं कि (नऊज़ुबिल्लाहि) रह्मान ने (यानी अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को) औलाद बनाया है, उसकी ज़ात इससे पाक है।

(۳۱) وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ (س انبیاء ع ۶)

31. हमने पहाड़ों को दाऊद अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के तानिअ कर दिया था कि उनकी तस्बीह के साथ वह भी तस्बीह किया करें और इसी तरह परिंदों को ताबेअ कर दिया था कि वह भी (हज़रत दाऊद अलै० की तस्बीह के साथ तस्बीह किया करें।)

(۳۲) لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِينَ (سورہ انبیاء رکوع ۶)

32. (हज़रत यूनुस अलै० ने तारीकियों[3] में पुकारा) कि आपके सिवा कोई माबूद नहीं। आप सब अय्यूब से पाक हैं, मैं बेशक क़ुसूरवार हूं।

(۳۳) سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُونَ (س مومنون ع ۵)

33. अल्लाह तआला उन सब उमूर से पाक है, जो यह बयान करते हैं।

---

1. रोकते नहीं, 2. हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं, 3. अंधेरे यानी-समुद्र का अंधेरा, मछली के पेट का अंधेरा, रात का अंधेरा, 4. ऐबों,

(۳۴) سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ (سورہ نور ع ۲)

34. सुब्हानल्लाह ! यह (लोग जो कुछ हजरत आइशा रजि॰ की शान में तोहमत लगाते हैं) बहुत बड़ा बुहतान है[1]।

(۳۵) يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ (س نور ع ۵)

35. उन (मस्जिदों में) ऐसे लोग सुबह-शाम अल्लाह की तस्बीह करते हैं, जिनको अल्लाह की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से, न ख़रीदना ग़फ़लत में डालता है, न फ़रोख़्त करना। वह ऐसे दिन (के अज़ाब से) डरते हैं, जिस में बहुत से दिल और बहुत सी आंखें उलट जायेंगी (यानी क़यामत के दिन से)

(۳۶) اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِمَا يَفْعَلُوْنَ (س نور ع ۶)

36. (ऐ मुख़ातिब !) क्या तुझे (दलाइल और मुशाहदा से) यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह करते हैं, वह सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं और (ख़ुसूसन) परिन्दे भी, जो पर फैलाये हुए (उड़ते-फिरते) हैं, सबको अपनी-अपनी दुआ (नमाज) और अपनी-अपनी तस्बीह (का तरीक़ा) मालूम है और अल्लाह जल्ल शानुहू को सबका हाल और जो कुछ लोग करते हैं, वह सब मालूम है।

(۳۷) قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِىْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوْا قَوْمًا بُوْرًا (س فرقان ع ۲)

37. (क़यामत के रोज़ जब अल्लाह तआला उन काफ़िरों को और जिनको यह पूजते थे सबको जमा करके उन माबूदों से पूछेगा, क्या तुमने उनको गुमराह किया था, तो) वह कहेंगे, सुब्हानल्लाह !हमारी क्या ताक़त थी कि आपके सिवा और किसी को कारसाज़ तज्वीज़ करते, बल्कि (यह अह्मक़[2] ख़ुद ही बजाय शुक्र के कुफ्र में मुब्तला हुए) कि आपने उनको और उनके बड़ों को ख़ूब सर्वत[3] अता फ़र्मायी, यहां तक कि यह लोग (दौलत के नशे में शहवतों में मुब्तिला हुए और) आपकी याद को भुला दिया और ख़ुद ही बर्बाद हो गये।

(۳۸) وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَىِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا (س فرقان ع ۵)

---

1. झूठा आरोप, 2. मूर्ख, 3. दौलत,

38. और उस ज़ात पाक पर तवक्कुल रखिए जो ज़िंदा है और कभी उसको फ़ना नहीं और उसी की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहिए (यानी तस्बीह व तह्मीद में मश्ग़ूल रहिए, किसी की मुख़ालफ़त की परवाह न कीजिए) क्योंकि वह पाक ज़ात अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार है (क़यामत में हर शख़्स की मुख़ालफ़त का बदला दिया जायेगा।)

٣٩- وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ (سورۂ نمل، رکوع ۱)

39. अल्लाह रब्बुल आलमीन हर क़िस्म की कदूरत[1] से पाक है।

۴٠- سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۔ (سورۂ قصص، رکوع ۷)

40. अल्लाह जल्ल जलालुहू उन सब चीज़ों से पाक है, जिनको यह मुश्रिक बयान करते हैं और उनसे बालातर है।

۴۱- فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ۔ (سورۂ روم، رکوع ۲)

41. पस तुम अल्लाह की तस्बीह किया करो शाम के वक़्त (यानी रात में) और सुबह के वक़्त और उसी की हम्द (की जाती है) तमाम आसमानों में और ज़मीन में और उसी की (तस्बीह व तहमीद किया करो) शाम के वक़्त भी (यानी अस्र के वक़्त भी) और ज़ुहर के वक़्त भी।

۴۲- سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۔ (سورۂ روم، رکوع ۴)

42. अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ात पाक और बालातर है उन चीज़ों से, जिनको यह लोग उनकी तरफ़ मंसूब करके बयान करते हैं।

۴۳- اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ۔ (سورۂ سجدہ، رکوع ۲)

43. पस हमारी आयतों पर तो यह लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वह आयतें याद दिलायी जाती हैं, तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की तस्बीह व तहमीद करने लगते हैं और वह लोग तकब्बुर नहीं करते।

---

1. गंदगी, बुराई, ख़राबी,

۴۴-یَاۤیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اذۡکُرُوا اللّٰهَ ذِکۡرًا کَثِیۡرًا وَّسَبِّحُوۡهُ بُکۡرَةً وَّاَصِیۡلًا۔ (سورۂ احزاب، رکوع ۶)

44. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का ज़िक्र ख़ूब कसरत से करो और सुबह–शाम उसकी तस्बीह करते रहो।

۴۵- قَالُوۡا سُبۡحٰنَكَ اَنۡتَ وَلِیُّنَا مِنۡ دُوۡنِهِمۡ۔ (سورۂ سبا، رکوع ۵)

45. (जब क़यामत में सारी मख़्लूक़ को जमा करके हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों से पूछेंगे, क्या यह लोग तुम्हारी परस्तिश करते थे तो) वह कहेंगे आप (शिर्क वग़ैरह अय्यूब से) पाक हैं। हमारा तो महज आपसे ताल्लुक़ है न कि उनसे।

(۴۶) سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ خَلَقَ الۡاَزۡوَاجَ کُلَّهَا (س یٰس ع ۳)

46. वह ज़ात पाक है जिसने तमाम जोड़ की (यानी एक दूसरे के मुक़ाबिल) चीजें पैदा कीं।

(۴۷) فَسُبۡحٰنَ الَّذِیۡ بِیَدِهٖ مَلَکُوۡتُ کُلِّ شَیۡءٍ وَّاِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ (س یٰس ع ۵)

47. पस पाक है वह ज़ात जिसके कब्ज़े में हर चीज का पूरा–पूरा इख़्तियार है और उसी की तरफ लौटाये जाओगे।

(۴۸) فَلَوۡلَاۤ اَنَّهٗ کَانَ مِنَ الۡمُسَبِّحِیۡنَ لَلَبِثَ فِیۡ بَطۡنِهٖۤ اِلٰی یَوۡمِ یُبۡعَثُوۡنَ۔ (س صافات ع ۵)

48. पस अगर (यूनुस अलैहिस्सलाम) तस्बीह करने वालों में न होते तो क़यामत तक उसी (मछली) के पेट में रहते ।

(۴۹) سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ (س صافات ع ۵)

49. अल्लाह की ज़ात पाक है उन चीजों से, जिनको यह लोग बयान करते हैं।

(۵۰) وَاِنَّا لَنَحۡنُ الۡمُسَبِّحُوۡنَ (س صافات ع ۵)

50. (फ़रिश्ते कहते हैं कि हम सब अदब से सफ़बस्ता[1] खड़े रहते हैं) और सब उसकी तस्बीह करते रहते हैं।

(۵۱) سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ وَسَلٰمٌ عَلَی الۡمُرۡسَلِیۡنَ وَ

1. सफ़ बांधे हुए यानी पंक्तिबद्ध,

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ۔ (سورۂ صافات رکوع ٥)

51. आपका रब जो इज़्ज़त (व अज़मत) वाला है, पाक है उन चीज़ों से जिनको यह बयान करते हैं और सलाम हो पैग़म्बरों पर और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के वास्ते साबित है जो तमाम आलम का परवरदिगार है।

(٥٢) اِنَّا سَخَّرۡنَا الۡجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحۡنَ بِالۡعَشِيِّ وَالۡاِشۡرَاقِ وَالطَّيۡرَ مَحۡشُوۡرَةً كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ

(ص ع ٢)

52. हमने पहाड़ों को हुक्म कर रखा था कि उनकी (हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के) साथ शरीक होकर सुबह शाम तस्बीह किया करें। इसी तरह परिंदों को भी हुक्म कर रखा था (जो कि तस्बीह के वक़्त) उनके पास जमा हो जाते थे और सब (पहाड़ और परिंदे मिलकर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के साथ) अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले (और तस्बीह व तहमीद में मशग़ूल होने वाले) होते थे।

٥٣ ـ سُبۡحٰنَهٗ هُوَ اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ۔ (سورۂ زمر رکوع ١)

53. वह अुय्यूब से पाक है, ऐसा अल्लाह है जो अकेला है (कोई उसका शरीक नहीं) ज़बरदस्त है।

٥٤ ـ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ۔ (سورۂ زمر رکوع ٧)

54. वह ज़ात पाक और बरतर है उस चीज़ से, जिसको यह लोग शरीक करते हैं।

٥٥ ـ وَتَرَى الۡمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيۡنَ مِنۡ حَوۡلِ الۡعَرۡشِ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡحَقِّ وَقِيۡلَ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ۔ (سورۂ زمر رکوع ٨)

55. आप (क़यामत में) फ़रिश्तों को देखेंगे कि अर्श के चारों तरफ़ हल्क़ा बांधे खड़े होंगे और अपने रब की तस्बीह व तह्मीद में मशग़ूल होंगे और (उस दिन) तमाम बंदों का ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जायेगा और (हर तरफ़ से) कहा जायेगा 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन०' (तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो तमाम आलम का परवर्दिगार है।)

٥٦ ـ اَلَّذِيۡنَ يَحۡمِلُوۡنَ الۡعَرۡشَ وَمَنۡ حَوۡلَهٗ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَيَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَا وَسِعۡتَ كُلَّ شَىۡءٍ رَّحۡمَةً وَّعِلۡمًا فَاغۡفِرۡ لِلَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاتَّبَعُوۡا سَبِيۡلَكَ وَقِهِمۡ عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ۔

56. जो फ़रिश्ते अर्श को उठाये हुए हैं और जो फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ हैं, वह अपने रब की तस्बीह करते रहते हैं और हम्द करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए इस्तग़फ़ार करते हैं (और कहते हैं) कि ऐ हमारे परवरदिगार ! आपकी रहमत और इल्म हर शै को शामिल है, पस उन लोगों को बख़्श दीजिए, जिन्होंने तौबा कर ली है और आपके रास्ते पर चलते हैं और उनको जहन्नम के अज़ाब से बचाइए।

(۵۷) وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ
(س مومن ع ۲)

57. सुबह और शाम (हमेशा) अपने रब की तस्बीह व तह्मीद करते रहिए।

(۵۸) فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ. (س حم سجدہ ع ۵)

58. जो आपके रब के नज़दीक हैं (यानी मुक़र्रिब हैं, मुराद फ़रिश्ते हैं) वह रात-दिन उसकी तस्बीह करते रहते हैं। ज़रा भी नहीं उकताते।

۵۹- وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ (س شوریٰ ع ۱)

59. और फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह व तह्मीद करते रहते हैं और उन लोगों के लिए जो ज़मीन में रहते हैं, उनके लिए इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।

(۶۰) وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ (س زخرف ع ۱)

60. (और तुम सवारियों पर बैठ जाने के बाद अपने रब को याद करो) और कहो पाक है वह ज़ात जिसने इन सवारियों को हमारे ताबेअ किया और हम तो ऐसे न थे कि उनको ताबेअ कर सकते और बेशक हमको अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है।

(۶۱) سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ. (س زخرف ع ۷)

61. आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार जो मालिक है, अर्श का भी, पाक उन चीज़ों से जिनको ये बयान करते हैं।

(۶۲) وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَّأَصِيلًا (س فتح ع ۱)

62. और तस्बीह करते रहो उसकी सुबह के वक़्त और शाम के वक़्त।

۶۳- فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

الْغُرُوْبِ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ۔ (سورۂ ق، رکوع ۳)

63. पस उन लोगों की (ना-मुनासिब बातों पर) जो कुछ वह कहें सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह व तह्मीद करते रहिए आफ्ताब निकलने से पहले और आफ्ताब के ग़ुरूब के बाद और रात में भी उसकी तस्बीह व तह्मीद कीजिए और (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद भी तस्बीह व तह्मीद कीजिए।

(۶۴) سُبْحَانَ اللّٰہِ عَمَّا یُشْرِکُوْنَ۔ (سورۂ طور، رکوع ۲)

64. अल्लाह की ज़ात पाक है उन चीज़ों से जिनको वह शरीक करते हैं।

(۶۵) وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِیْنَ تَقُوْمُ وَمِنَ الَّیْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ۔ (س طور ع ۲)

65. और अपने रब की तस्बीह व तह्मीद किया कीजिए (मज्लिस से या सोने से) उठने के बाद (यानी तहज्जुद के वक़्त) और रात के वक़्त भी उसकी तस्बीह किया कीजिए और सितारों के (ग़ुरूब होने के) बाद भी।

(۶۶ و ۶۷) فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِیْمِ (س واقعہ ع ۳ و ع ۲)

66. 67. पस अपने उस बड़ी अज़्मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।

۶۸۔ سَبَّحَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ۔ (سورۂ حدید، رکوع ۱)

68. अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह करते हैं वह सब कुछ जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं और वह ज़बरदस्त है और हिक्मत वाला है।

۶۹۔ سَبَّحَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ۔ (سورۂ حشر، رکوع ۱)

69. अल्लाह तआला की तस्बीह करती हैं वह सब चीज़ें जो आसमानों में हैं और वह सब चीज़ें जो ज़मीन में हैं। वह ज़बरदस्त है और हिक्मत वाला है।

۷۰۔ سُبْحَانَ اللّٰہِ عَمَّا یُشْرِکُوْنَ (سورۂ حشر، رکوع ۳)

70. अल्लाह तआला की ज़ात पाक है उस चीज़ से, जिसको ये शरीक करते हैं।

۷۱۔ یُسَبِّحُ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ۔ (سورۂ حشر، رکوع ۳)

71. अल्लाह तआला शानुहू की तस्बीह करती रहती हैं वह सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। वह ज़बरदस्त है और हिक्मत वाला है।

۷۲۔ سَبَّحَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَھُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ (سورۂ صف، رکوع ۱)

72. अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह करती हैं, वह सब चीजें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं। वह जबरदस्त है और हिक्मत वाला है।

(۷۳) یُسَبِّحُ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ الْمَلِکِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ (س جمعہ ع۱)

73. अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह करती हैं वह सब चीजें जो आसमानों में हैं और जो चीजें जमीन में हैं, वह बादशाह है (सब ऐबों से) पाक है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है।

(۷۴) یُسَبِّحُ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (س تغابن ع۱)

74. अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह करती हैं वह सब चीजें जो आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में है, उसी के लिए सारी सल्तनत है और वही तारीफ़ के क़ाबिल है और वह हर शै पर क़ादिर है।

(۷۵، ۷۶) قَالَ اَوْسَطُھُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّکُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا کُنَّا ظٰلِمِیْنَ (س قلم ع۱)

75. 76. उनमें से जो अफ़ज़ल था, वह कहने लगा कि मैंने तुमसे (पहले ही) कहा न था, अल्लाह की तस्बीह क्यों नहीं करते। वह लोग कहने लगे– सुब्हान रब्बिना (हमारा रब पाक है) बेशक हम ख़तावार हैं।

(۷۷) فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّکَ الْعَظِیْمِ (س الحاقہ ع۲)

77. पस अपने अज़्मत वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह करते रहिए।

(۷۸) وَاذْکُرِ اسْمَ رَبِّکَ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا وَمِنَ الَّیْلِ فَاسْجُدْ لَہٗ وَسَبِّحْہُ لَیْلًا طَوِیْلًا (س دہر ع۲)

78. अपने परवर्दिगार का सुबह व शाम नाम लिया कीजिए और रात को भी उसके लिए सज्दा कीजिए और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया कीजिए।

(۷۹) سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلٰی (س اعلیٰ ع۱)

79. आप अपने आलीशान परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिये।

۸۰۔ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّکَ وَاسْتَغْفِرْہُ اِنَّہٗ کَانَ تَوَّابًا۔ (سورۂ نصر، رکوع ۱)

80. पस आप अपने रब की तस्बीह व तहमीद करते रहिए और उससे मग़्फ़िरत तलब करते रहिये। बेशक वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है।

फ़– ये अस्सी आयात हैं जिनमें अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म नवालुहू की तस्बीह का हुक्म है, उसकी पाकी बयान करने और इक़रार करने का हुक्म है या उसकी तर्ग़ीब है। जिस मज़्मून को अल्लाह मालिकुल् मुल्क ने इस एहतमाम से अपने पाक कलाम में बार-बार फ़र्माया हो, उसके मुहतम्म बिश्शान होने में क्या तरद्दुद हो सकता है। इनमें से बहुत सी आयात में तस्बीह के साथ दूसरे कलमा-ए-तहमीद यानी अल्लाह की तारीफ़ करना, उसकी हम्द बयान करना और उसी में अल्हम्दु लिल्लाह कहना भी ज़िक्र किया गया है, जैसा कि ऊपर की आयात से मालूम हो गया, उनके अलावा ख़ास तौर पर अल्लाह की तारीफ़ के बयान का मफ़्हूम है, अल्हम्दु लिल्लाह का और आयात में भी आया है और सबसे अहम यह कि अल्लाह जल्ल शानुहू के पाक कलाम का शुरू ही 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन०' से है, इससे बढ़कर इस पाक कलमे की और क्या फ़ज़ीलत होगी कि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने क़ुरआन पाक का शुरू इससे फ़र्माया है–

۱ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (سورۂ فاتحہ)

1. सब तारीफ़ें अल्लाह को लाइक़ हैं, जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है।

(۲) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ (س انعام ع ۱)

2. तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा फ़र्माया और अंधेरों को और नूर को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग (दूसरों को) अपने रब के बराबर करते हैं।

(۳) فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (س انعام ع ۵)

3. फिर (हमारी गिरफ़्त से) ज़ालिम लोगों की जड़ कट गयी और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है (उसका शुक्र है) जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है।

(۴) وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَا اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ (س اعراف ع ۵)

4. और (जन्नत में पहुंचने के बाद) वह लोग कहने लगे, तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने हमको इस मुकाम तक पहुंचा दिया और हम कभी भी यहां

न पहुंचते, अगर अल्लाह जल्ल शानुहू हमको न पहुंचाते।

٥- اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ. (سورہ اعراف رکوع)

5. जो लोग ऐसे रसूल 'नबी-ए-उम्मी' का इत्तिबाअ करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं।

फ़– तौरात में जो सिफ़ात हुज़ूर सल्ल० की नक़्ल की गयी हैं, उनमें यह भी ज़िक्र किया गया है कि उनकी उम्मत बहुत कसरत से अल्लाह की हम्द करने वाली है। चुनांचे दुर्रे मंसूर में कई रिवायात से यह मज़मून नक़ल किया गया है।

٦- اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ. (سورۂ توبہ رکوع ۱۴)

6. (इन मुजाहिदीन के औसाफ़, जिनके नुफ़ूस को अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है, यह हैं कि) वह गुनाहों से तौबा करने वाले हैं, अल्लाह की इबादत करने वाले हैं, अल्लाह की हम्द करने वाले हैं, रोज़ा रखने वाले हैं (या अल्लाह की रज़ा के लिए सफ़र करने वाले हैं) रुकूअ और सज्दा करने वाले हैं (यानी नमाज़ी हैं) नेक बातों का हुक्म करने वाले हैं और बुरी बातों से रोकने वाले हैं (तब्लीग़ करने वाले हैं) और अल्लाह की हुदूद की (यानी अह्काम की) हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (ऐसे) मोमिनों को आप ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

(٧) وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (س یونس ع ۱)

7. और आख़िरी पुकार उनकी यही है 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन०' (तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है।)

(٨) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ (س ابراہیم ع ۶)

8. तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने बुढ़ापे में मुझको (दो बेटे) इस्माईल व इस्हाक़ अला नबीयिना व अलैहि मुस्सलातु वस्सलाम अता फ़रमाये।

(٩) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ. (س نحل ع ۱۰)

9. तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है (फिर भी वह लोग इस तरफ़

मुतवज्जह नहीं होते) बल्कि अक्सर उनमें से ना-समझ हैं।

(۱۰) يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا (س بنی اسرائیل ع ۵)

10. जिस दिन (सूर फुंकेगा और तुमको ज़िंदा करके पुकारा जायेगा तो तुम मजबूरन उसकी हम्द (व सना) करते हुए हुक्म की तामील करोगे और (उन हालात को देखकर) गुमान करोगे (कि हम दुनिया में और क़ब्र में) बहुत ही कम मुद्दत ठहरे थे।

(۱۱) وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ
لَمْ يَكُنْ لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِيٌّ
مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا۔

11. और आप (अलल्-एलान) कह दीजिए कि तमाम तारीफ़ उसी अल्लाह के लिए है जो न औलाद रखता है और न उसका कोई सल्तनत में शरीक है और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है और उसकी ख़ूब तक्बीर (बड़ाई बयान) किया कीजिए।

۱۲- اَلْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهُ عِوَجًا (سورۂ کہف، رکوع ۱)

12. तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर किताब नाज़िल फ़र्मायी और उस किताब में किसी क़िस्म की ज़रा सी भी कजी[1] नहीं रखी।

۱۳- فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (سورۂ مومنون، رکوع ۲)

13. (हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को ख़िताब है कि जब तुम कश्ती में बैठ जाओ) तो कहना कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमें ज़ालिमों से निजात दी।

۱۴- وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ۔ (نمل ع ۲)

14. और (हज़रत सुलेमान अलै० और हज़रत दाऊद अलै० ने) कहा, तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत दी।

---

1. टेढ़,

١٥.قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى. (سورۂ نمل، رکوع ٥)

15. आप (ख़ुत्बा के तौर पर) कहिए, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और उसके उन बंदों पर सलाम हो, जिनको उसने मुंतख़ब फ़र्माया।[1]

١٦-وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا. (سورۂ نمل، رکوع ٧)

16. और आप कह दीजिए कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के वास्ते हैं, वह अंक़रीब तुमको अपनी निशानियां दिखा देगा, पस तुम उनको पहचान लोगे।

١٧-لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (س قصص ع ٧)

17. हम्द व सना के लाइक़ दुनिया और आख़िरत में वही है और हुकूमत भी उसी के लिए है और उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

١٨.قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ. (سورۂ عنکبوت، رکوع ٦)

18. आप कहिए तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के वास्ते है (ये लोग मानते नहीं) बल्कि अक्सर इनमें से समझते भी नहीं।

(١٩) وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ (س لقمٰن ع ٢)

19. और जो शख़्स कुफ़्र करे (नाशुक्री करे), तो अल्लाह तो बे-नियाज़ है, तमाम ख़ूबियों वाला है।

(٢٠) قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (س لقمٰن ع ٣)

20. आप कह दीजिए, तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है (यह लोग मानते नहीं) बल्कि अक्सर इनमें के जाहिल हैं।

٢١ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (سورۂ لقمٰن، رکوع ٣)

21. बेशक अल्लाह तआला बे-नियाज़ है, तमाम ख़ूबियों वाला है।

(٢٢) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ (س سبا ع ١)

22. तमाम तारीफ़ उसी अल्लाह के लिए है, जिसकी मिल्क है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, उसी की हम्द (व सना) होगी, आख़िरत में (किसी दूसरे की पूछ नहीं।)

1. चुना,

۲۳-اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ - (سورۂ فاطر رکوع ۱)

23. तमाम तारीफ़ अल्लाह ही केलिए है, जो आसमानों का पैदा करने वाला है और ज़मीन का।

(۲۴) يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (س فاطر ع ۳)

24. ऐ लोगों ! तुम मुहताज हो अल्लाह के और वह बे-नियाज़ है और तमाम ख़ूबियों वाला है।

(۲۵) وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ (س فاطر ع ۴)

25. (जब मुसलमान जन्नत में दाख़िल होंगे, तो रेशमी लिबास पहनाये जायेंगे) और कहेंगे तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे (हमेशा के लिए) रंज दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र करने वाला है, जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा के रहने के मुकाम में पहुंचा दिया, न हमको कोई कुल्फ़त[1] पहुंचेगी और न हमको कोई ख़स्तगी[2] पहुंचेगी।

(۲۶) وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (س صافات ع ۵)

26. और सलाम हो रसूलों पर और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के वास्ते है, जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है।

(۲۷) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (س زمر ع ۳)

27. तमाम तारीफ़ अल्लाह के वास्ते हैं (मगर ये लोग समझते नहीं,) बल्कि अक्सर जाहिल हैं।

(۲۸) وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ (س زمر ع ۸)

28. (और जब मुसलमान जन्नत में दाख़िल होंगे तो) कहेंगे कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के वास्ते हैं, जिसने हमसे अपना वायदा सच्चा किया और हमको उस ज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहां चाहें मुकाम करें[3], नेक, अमल

1. तक्लीफ़, 2. बिखराव, 3. ठहरें।

करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

(۲۹) فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (پ جاثیہ ع ۴)

29. पस अल्लाह ही के लिए तमाम तारीफ़ है, जो परवर्दिगार है आसमानों और ज़मीन का और तमाम जहानों का परवर्दिगार है।

(۳۰) وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ یُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط (پ بروج ع ۱)

30. (एक काफ़िर बादशाह के मुसलमानों को सताने और तक्लीफ़ें देने का ऊपर से ज़िक्र है) और उन काफ़िरों ने उन मुसलमानों में और कोई ऐब नहीं पाया था, बजुज़ इसके कि वह ख़ुदा पर ईमान ले आये थे, जो ज़बरदस्त है और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है। उसी के लिए सल्तनत है आसमानों की और ज़मीन की।

फ़— इन आयात में अल्लाह की हम्द और उसकी तारीफ़ की तर्ग़ीब, उसका हुक्म, उसकी ख़बर है।

अहादीस में भी कसरत से अल्लाह की तारीफ़ करने वालों के फ़ज़ाइल ख़ासतौर पर ज़िक्र किये गये हैं। एक हदीस में आया है कि जन्नत की तरफ़ सब से पहले वह लोग बुलाये जायेंगे, जो हर हाल में राहत हो या तक्लीफ़, अल्लाह की तारीफ़ करने वाले हों।

एक हदीस में इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू को अपनी तारीफ़ बहुत पसन्द है और होना भी चाहिए कि दरहक़ीक़त तारीफ़ की मुस्तहिक़ सिर्फ़ अल्लाह ही की पाक ज़ात है। ग़ैरुल्लाह की तारीफ़ क्या, जिसके क़ब्ज़े में कुछ भी नहीं हत्ताकि वह ख़ुद भी अपने क़ब्ज़े में नहीं।

एक हदीस में आया है कि क़यामत के दिन अफ़ज़ल बन्दे वह होंगे जो कसरत से अल्लाह की हम्द व सना करते हों।

एक हदीस में वारिद है कि हम्द शुक्र की असल और बुनियाद है, जिसने अल्लाह की हम्द नहीं की उसने अल्लाह का शुक्र भी अदा नहीं किया।

एक हदीस में आया है, किसी नेमत पर हम्द करना उस नेमत के ज़ाइल हो जाने से हिफ़ाज़त है।

एक हदीस में है कि अगर दुनिया सारी की सारी मेरी उम्मत में से किसी

के हाथ में हो और वह अल्हम्दुलिल्लाह कहे, तो यह कहना उस सबसे अफ़ज़ल है।

एक हदीस में आया है कि जब हक़ तआला शानुहू कोई नेमत किसी बन्दे को अता फ़र्माते हैं और वह उस नेमत पर हम्द करता है तो वह हम्द बढ़ जाती है, ख़्वाह नेमत कितनी ही बड़ी हो।

एक सहाबी रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास बैठे थे। उन्होंने आहिस्ता से-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

अल्हम्दु ल्लिाहि कसीरन तैयीबन मुबारकन फ़ीहि' कहा। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त किया कि यह दुआ किसने पढ़ी। वह सहाबी रज़ि० इससे डरे कि शायद कोई ना-मुनासिब बात हो गयी हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि कुछ मुज़ायका नहीं है। उसने बुरी बात नहीं कही। तब उन सहाबी रज़ि० ने अर्ज किया कि यह दुआ मैंने पढ़ी थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मैंने तेरह फ़रिश्तों को देखा है कि हर एक उनमें से इसकी कोशिश करता था कि इस कलमा को सबसे पहले वह ले जाये। और यह हदीस तो मशहूर है कि जो मुहतम्म बिश्शान काम बग़ैर अल्लाह की तारीफ़ के शुरू किया जायेगा, वह बे-बरकत होगा। इसी वजह से आमतौर पर हर किताब अल्लाह की तारीफ़ के साथ शुरू की जाती है।

एक हदीस में आया है कि जब किसी का बच्चा मर जाता है, तो हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों से फ़र्माते हैं कि मेरे बन्दे के बच्चे की रूह निकाल ली। वह अर्ज़ करते हैं कि निकाल ली। फिर इर्शाद होता है कि उसके दिल के टुकड़े को ले लिया। वह अर्ज़ करते हैं कि बेशक ले लिया। इर्शाद होता है कि फिर मेरे बन्दे ने इस पर क्या कहा। अर्ज़ करते हैं, तेरी हम्द की और-

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

पढ़ा इर्शाद होता है कि अच्छा इसके बदले में जन्नत में एक घर उसके लिए बना दो और उसका नाम -'बैतुल् हम्द' (तारीफ़ का घर) रखो।

एक हदीस में आया है कि हक़ तआला शानुहू इससे बेहद राज़ी होते हैं कि बन्दा कोई लुक्मा खाये या पानी का घूंट पिये और उस पर 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहे।

तीसरा कलमा तह्लील था यानी-

लाइला ह इल्लल्लाहु لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

कहना, जिसका मुफ़स्सल बयान इससे पहले बाब में गुज़र चुका है।

चौथा कलमा तक्बीर कहलाता है यानी अल्लाह की बड़ाई बयान करना, उसकी बुलंदी और अज़्मत का इक़रार करना, जिसका मिस्दाक़–

अल्लाहु अक्बर

कहना भी है वह, इन आयात में भी गुजर चुका है। इनके अलावा सिर्फ़ तक्बीर का यानी अल्लाह की अज़्मत और बड़ाई का बयान भी बहुत सी आयात में वारिद हुआ है, जिनमें से चंद आयात ज़िक्र की जाती हैं।

۱- وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ- (سورۂ بقرہ، رکوع ۲۳)

1. और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इस बात पर कि तुम को हिदायत फ़र्मायी और ताकि तुम शुक्र करो अल्लाह तआला का।

۲- عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالُ- (سورۂ رعد، رکوع ۲)

2.वह तमाम पोशीदा और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, (सबसे) बड़ा है और आलीशान रुत्बे वाला है।

۳- كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ- (سورۂ حج، رکوع ۵)

3. इसी तरह अल्लाह जल्ले शानुहू ने (क़ुर्बानी के जानवरों को) तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र[1] कर दिया ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो। इस बात पर कि उसने तुम को हिदायत की (और क़ुर्बानी करने की तौफ़ीक़ दी) और (मुहम्मद सल्ल० !) इख़्लास वालों को (अल्लाह की रज़ा की) ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

۴،۵ وَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (سورۂ حج، رکوع ۸) (سورۂ لقمٰن، رکوع ۳)

4. 5. और बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू ही आलीशान और बड़ाई वाला है।

(۶) حَتّٰى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (س سبا ع ۳)

6. (जब फ़रिश्तों को अल्लाह की तरफ़ से कोई हुक्म होता है, तो वह ख़ौफ़

1. सधाना, ताबेअ करना,

के मारे घबरा जाते हैं,) यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है, तो एक दूसरे से पूछते हैं कि परवर्दिगार का क्या हुक्म है ? वह कहते हैं कि (फ़्लानी) हक़ बात का हुक्म हुआ। वाक़ई वह आलीशान और बड़े मर्तबे वाला है।

٧- فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ (سورۂ مومن، رکوع ۲)

7. पस हुक्म अल्लाह ही के लिए है, जो आलीशान है, बड़े रुत्बे वाला है।

٨- وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (سورۂ جاثیہ، رکوع ۴)

8. और उसी (पाक ज़ात) के लिए बड़ाई है, आसमानों में ज़मीन में और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

(٩) هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ (س حشر ع ۳)

9. वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह बादशाह है, सब (ऐबों से) पाक है। (सब नुक़्सानात से) सालिम है। अम्न देने वाला है, निगहबानी करने वाला है। (यानी आफ़तों से बचाने वाला है) ज़बरदस्त है, ख़राबी का दुरुस्त करने वाला है, बड़ाई वाला है।

फ़– इन आयात में अल्लाह जल्ल शानुहू की बड़ाई और अज़्मत की तर्ग़ीब और उसका हुक्म फ़र्माया गया है।

अहादीस में भी ख़ुसूसियत के साथ अल्लाह की बड़ाई का हुक्म, उसकी तर्ग़ीब कसरत से वारिद हुई है।

एक हदीस में इर्शाद है कि जब यह देखो कि कहीं आग लग गई तो तक्बीर यानी–

अल्लाहु अक्बर

कसरत से पढ़ा करो। यह उसको बुझा देगी।

दूसरी हदीस में है कि तक्बीर (यानी अल्लाहु अक्बर) कहना आग को बुझा देता है।

एक हदीस में आया है कि जब बन्दा तक्बीर कहता है तो (उसका नूर) ज़मीन से आसमान तक सब चीज़ों को ढांक लेता है।

एक हदीस में इर्शाद है कि मुझे हज़रत जिब्रील अलै० ने तक्बीर का हुक्म

किया।

इन आयात व अहादीस के आलावा अल्लाह की अज़्मत व रफ़अत, उसकी हम्द व सना और उलूवे शान[1] को मुख्तलिफ़ उन्वानात से कला–मुल्लाह शरीफ़ में बहुत से मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज से ज़िक्र फ़र्माया है। इनके अलावा बहुत सी आयात ऐसी हैं, जिनमें इन तस्बीहात के अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं फ़र्माये, लेकिन मुराद यह तस्बीहात हैं। चुनांचे चन्द आयात हस्बे ज़ेल[2] हैं-

(۱) فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّہٖ کَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیۡہِ اِنَّہٗ ہُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیۡمُ (س بقرہ ع ۴)

1. पस हासिल कर लिए हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपने रब से चन्द कलमे (इनके ज़रिए से तौबा की), पस अल्लाह तआला ने रहमत के साथ इन पर तवज्जोह फ़र्मायी। बेशक वही है बड़ी तौबा क़ुबूल करने वाला, बड़ा मेहरबान।

फ़– इन कलिमात की तफ़्सीर में मुख्तलिफ़ अहादीस वारिद हुई हैं। मिन्जुम्ला उनके यह है कि वह कलिमात ये थे-

لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ رَبِّ عَمِلْتُ سُوْٓءًا وَّظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّکَ اَنْتَ خَیْرُ الْغَافِرِیْنَ - لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ رَبِّ عَمِلْتُ سُوْٓءًا وَّظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَارْحَمْنِیْ اِنَّکَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ - لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ رَبِّ عَمِلْتُ سُوْٓءًا وَّظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ -

लाइला ह इल्ला अन्त सुब्हान क व बिहम्दि क रब्बि अमिल्तु सूअन व ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर ली इन्न क अन्त खैरुल ग़ाफ़िरीन०

लाइला ह इल्ला अन्त सुब्हान क व बिहम्दि क रब्बि अमिल्तु सूअन व ज़लम्तु फ़र्हम्नी इन्न क अन्त अर्हमुर्राहिमीन०

लाइला ह इल्ला अन्त सुब्हान क व बिहम्दि क रब्बि अमिल्तु सूअन व ज़लम्तु नफ़्सी फ़तुब अलै य इन्न क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम०

इस क़िस्म के मजमून की और भी मुतअद्दद अहादीस वारिद हुई हैं, जिनको

1. बुलंदी,
2. नीचे लिखी गयी।

अल्लामा सुयूती रह० ने दुर्रे मंसूर में लिखा है और उनमें तस्बीह व तहमीद मज़्कूर है।

(२) مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ (الانعام ع ۲۰)

2. जो शख़्स एक नेकी लेकर आयेगा, उसको दस गुना अज्र मिलेगा और जो शख़्स बुराई लेकर आयेगा, उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी। और उन पर ज़ुल्म न होगा।

फ़– नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दो ख़स्लतें ऐसी है कि जो मुसलमान उनका एहतमाम कर ले, जन्नत में दाख़िल हो और वह दोनों बहुत मामूली चीजें हैं, मगर उन पर अमल करने वाले बहुत कम हैं।

एक यह कि

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बर हर नमाज़ के बाद दस-दस मर्तबा पढ़ लिया करे, तो रोज़ाना एक सौ पचास मर्तबा (पांचों नमाज़ों के बाद का मज्मूआ) हो जायेगा और दस गुना हो जाने की वजह से पन्द्रह सौ नेकियां हिसाब में शुमार की जायेंगी। और दूसरी चीज यह कि सोते वक़्त 'अल्लाहु अक्बर' चौंतीस मर्तबा, 'अल्हम्दु लिल्लाह' तैंतीस मर्तबा, 'सुब्हानल्लाह' तैंतीस मर्तबा पढ़ लिया करे तो सौ कलमे हो गये, जिनका सवाब एक हज़ार नेकियां हो गयीं। अब इनकी और दिन भर की नमाज़ों के बाद की मीज़ान कुल दो हज़ार पांच सौ नेकियां हो गयीं। भला आमाल तौलने के वक़्त ढाई हज़ार बुराइयां रोज़ाना की किस की होंगी, जो इन पर ग़ालिब आ जायें।

बन्दा-ए-नाचीज़ कहता है, सहाबा किराम रज़ि० में अगरचे ऐसा कोई न होगा, जिसकी ढाई हज़ार बुराइयां रोज़ाना हों, मगर इस ज़माने में हम लोगों की बद-आमालियां रोज़ाना की इससे भी बदरजहा ज़्यादा हैं। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (रूही फ़िदाह) ने अपनी शफ़क़त से बुराइयों पर नेकियों के ग़ालिब आ जाने का नुस्ख़ा इर्शाद फ़र्मा दिया। अमल करना, न करना बीमार का काम है।

एक हदीस में आया है कि सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! यह क्या बात है कि यह दोनों चीजें ऐसी सह्ल और इनको करने वाले बहुत कम हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि सोने का वक़्त होता है, तो शैतान उनके पढ़ने

से पहले ही सुला देता है और नमाज़ का वक़्त होता है, तो वह कोई ऐसी बात याद दिलाता है कि पढ़ने से पहले ही उठकर चला जावे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, क्या तुम इससे आजिज़ हो कि हज़ार नेकियां रोज़ाना कमा लिया करो। किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हज़ार नेकियां रोज़ाना किस तरह कमायें ? इर्शाद फ़र्माया कि 'सुब्हानल्लाह' सौ मर्तबा पढ़ो, हज़ार नेकियां हो जायेंगी।

(٣) اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا۔ (سورۂ کہف، رکوع ۶)

3. माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की एक रौनक (फ़क़त) है और बाक़ियात सालिहात (वह नेक आमाल जो हमेशा रहने वाले हैं) वह तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब के एतबार से भी (बदरजहा) बेहतर हैं और उम्मीद के एतबार से भी बेहतर हैं (कि इनके साथ उम्मीदें क़ायम की जायें, ब-ख़िलाफ़ माल और औलाद के कि उन से उम्मीदें क़ायम करना बेकार है।)

(٤) وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ط وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا۔ (سورۂ مریم، رکوع ۵)

4. और अल्लाह तआला हिदायत वालों की हिदायत बढ़ाता है और बाक़ियात सालिहात तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब के एतबार से भी बेहतर हैं और अन्जाम के एतबार से भी।

फ़— अगरचे बाक़िआत सालिहात (वह नेक अमल जो हमेशा रहने वाले हैं) में सारे ही ऐसे आमाल दाख़िल हैं, जिनका सवाब हमेशा मिलता रहता है, लेकिन बहुत सी अहादीस में यह भी आया है कि इसका मिस्दाक़ यही तस्बीहें हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया है कि बाक़ियात सालिहात को कसरत से पढ़ा करो। किसी ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि वह क्या चीज़ें हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि–

तक्बीर (अल्लाहु अक्बर कहना) اَللّٰهُ اَكْبَرُ

तह्लील (लाइला ह इल्लल्लाहु कहना) لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) سُبْحَانَ اللّٰهِ

तह्मीद (अल्हम्दु लिल्लाह कहना) और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَهنا

लाहौ ल व ला क़ूव त इल्ला बिल्लाहि। لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

दूसरी हदीस में आया है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि देखो, ख़बरदार रहो-

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दुलिल्लाहि, लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' बाक़ियात सालिहात में हैं।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि देखो, अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम कर लो। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह ! किसी दुश्मन के हमले से जो दरपेश है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, नहीं, बल्कि जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करो। और वह-

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' का पढ़ना है कि यह क़यामत के दिन आगे बढ़ने वाले कलमे हैं (कि सिफ़ारिश करें) या आगे बढ़ाने वाले हैं कि पढ़ने वाले को जन्नत की तरफ़ बढ़ाते हैं और पीछे रहने वाले हैं (कि हिफ़ाज़त करें), एहसान करने वाले हैं और यही बाक़ियात सालिहात हैं।

और भी बहुत सी रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है, जिनको अल्लामा सुयूती रह० ने दुर्रे मंसूर में ज़िक्र फ़र्माया है।

٥- لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (سورۂ زمر، رکوع ٦) (سورۂ شوریٰ، رکوع ٢)

5. अल्लाह ही के वास्ते हैं, कुंजियां आसमानों की और ज़मीन की।

फ़- हज़रत उसमान रज़ि० से नक़ल किया गया है कि मैनें हुज़ूर सल्ल० से 'मक़ालीदुस्समावाति वल् अर्ज़ि' यानी आसमानों और ज़मीन की कुंजियों के बारे में दर्याफ़्त किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि-

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ يُحْيِیْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि

अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी लाइला ह इल्ला हुवल् अव्वलु वल् आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल् बातिनु युह्यी व युमीतु व हु व हय्युन लायमूतु बियदिहिल् ख़ैरु व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर० हैं। दूसरी हदीस में है कि

مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

मकालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि-सुब्हानल्लाहि अल्हम्दुलिल्लाहि लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बरु

हैं और यह अर्श के ख़ज़ाने से नाज़िल हुई। और भी रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है। (६) اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ (س فاطر ع ٢)

6. उसी की तरफ़ अच्छे कलमे पहुंचते हैं और नेक अमल उनको पहुंचाता है।

फ़—कलमा तय्यिबा के बयान में भी इस आयत का ज़िक्र गुज़र चुका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि जब तुम्हें हम कोई हदीस सुनाते हैं, तो क़ुरआन शरीफ़ से उसकी सनद और ताईद बता देते हैं। मुसलमान जब–

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ

'अल्हम्दु लिल्लाहि लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर तबा र कल्लाहु' पढ़ता है तो फ़रिश्ता अपने परों में निहायत एहतियात से उन कलमों को आसमान पर ले जाता है और जिस आसमान पर गुज़रता है, उस आसमान के फ़रिश्ते उस पढ़ने वाले के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं और उसकी ताईद यह आयते शरीफ़–

इलैहि यस्अदुल् कलिमुत्तैयबु اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ

है।

हज़रत कअ्ब अह्बार रज़ि० फ़र्माते हैं कि–

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि ला इला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' के लिए अर्श के गिर्दागिर्द एक भिनभनाहट है, जिसमें अपने पढ़ने वालों का तज़्किरा

करते रहते हैं।

बाज़ रिवायात में हजरत कअब रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से यह मजमून नकल किया है और एक दूसरे सहाबी रज़ि० हजरत नोमान रज़ि० ने भी इस क़िस्म का मजमून ख़ुद हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही से नक़्ल किया है।

फ़स्ले दोम

उन अहादीस के बयान में, जिनमें इन कलिमात की फ़ज़ीलत और तर्ग़ीब ज़िक्र फ़र्मायी गयी है-

(۱) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ كَلِمَتَانِ خَفِیْفَتَانِ عَلَی اللِّسَانِ ثَقِیْلَتَانِ فِی الْمِیْزَانِ حَبِیْبَتَانِ اِلَی الرَّحْمٰنِ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ رواه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجة كذا فی الترغیب۔

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दो कलमे ऐसे हैं कि ज़ुबान पर बहुत हल्के और तराज़ू में बहुत वजनी और अल्लाह के नजदीक बहुत महबूब हैं। वह सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही और सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम हैं।

फ़— 'ज़ुबान पर हल्के' का मतलब यह है कि पढ़ने में न वक़्त ख़र्च हो कि बहुत मुख़्तसर हैं, न याद करने में कोई दिक़्क़त या देर लगे और इसके बावजूद जब आमाल के तौलने का वक़्त आयेगा, तो तराज़ू में इन कलमों की कसरत की वजह से बहुत ज़्यादा वज़न हो जायेगा और अगर कोई भी फ़ायदा न होता तो भी इससे बढ़कर क्या चीज थी कि अल्लाह तआला के नजदीक ये दो कलमे सबसे ज़्यादा महबूब हैं।

इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी किताब 'सहीह बुख़ारी' को इन ही दो कलमों पर ख़त्म फ़र्माया और यही हदीस किताब के ख़त्म पर ज़िक्र फ़र्मायी है।

एक हदीस में इर्शादे नबवी है कि कोई शख़्स तुममें से इस बात को न छोड़े कि हज़ार नेकियां रोज़ाना कर लिया करे-

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही

सौ मर्तबा पढ़ लिया करे, हज़ार नेकियां हो जायेंगी। इतने गुनाह तो इंशा अल्लाह रोज़ाना के होंगे भी नहीं और इस तस्बीह के अलावा जितने नेक काम किये होंगे, उनका सवाब अलाहिदा नफ़ा में रहा।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स सुबह व शाम एक-एक तस्बीह-

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही

को पढ़े उसके गुनाह माफ़ हो जायेंगे, ख़्वाह समुंदर के झागों से भी ज़्यादा हों।

एक हदीस में आया है कि-

सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' से गुनाह ऐसे झड़ते हैं, जैसे (सर्दी में) दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।

(٢) عَنْ اَبِی ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلَا اُخْبِرُكَ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَی اللّٰہِ قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَخْبِرْنِیْ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَی اللّٰہِ فَقَالَ اِنَّ اَحَبَّ الْكَلَامِ اِلَی اللّٰہِ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ رواہ مسلم والنسائی والترمذی الا انہ قال سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِہٖ وقال حسن صحیح وعزاہ السیوطی فی الجامع الصغیر الی مسلم واحمد والترمذی ورقم لہ بالصحۃ وفی روایۃ لمسلم اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ سُئِلَ اَیُّ الْكَلَامِ اَفْضَلُ قَالَ مَا اصْطَفَی اللّٰہُ لِمَلٰٓئِكَتِہٖ اَوْ لِعِبَادِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ كذا فی الترغیب قلت واخرج الاخیر الحاكم وصححہ علی شرط مسلم واقرہ علیہ الذھبی وذكرہ السیوطی فی الجامع بروایۃ احمد عن رجل مختصرا ورقم لہ بالصحۃ

2. हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं तुझे बताऊं अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा पसंदीदा कलाम क्या है। मैंने अर्ज़ किया ज़रूर बता दें। इर्शाद फ़र्माया सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही।

दूसरी हदीस में है- 'सुब्हान रब्बी व बिहम्दिही'

एक हदीस में यह भी है कि अल्लाह ने जिस चीज़ को अपने फ़रिश्तों के लिए इख़्तियार फ़र्माया, वही अफ़ज़लतरीन है और वह- 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' है।

फ़- पहली फ़स्ल में कई आयतों में यह मज़मून गुज़र चुका है कि मलाइका जो अर्श के क़रीब हैं और उनके अलावा, सब अल्लाह जल्ल शानुहू की तस्बीह व तहमीद में मशग़ूल रहते हैं। उनका मशग़ला यही है कि वह अल्लाह की पाकी बयान

करने में और हम्द करने में मशगूल रहें। इसी वजह से जब आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़र्माने का वक़्त हुआ, तो उन्होंने यही बारगाहे इलाही में ज़िक्र किया कि–

نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दि क व नुकद्दिसु ल क

जैसा कि इससे पहली फ़स्ल की पहली आयत में गुजर चुका है।

एक हदीस में वारिद है कि आसमान (अज़्मते इलाही के बोझ से) बोलता है (चरचराता है, जैसा कि चारपाई वग़ैरह वजन से बोलने लगती है) और आसमान के लिए हक़ है कि वह बोले (कि हैबत का बोझ सख़्त होता है) क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जान है कि आसमान में एक बालिश्त जगह भी ऐसी नहीं, जहां कोई फ़रिश्ता सज्दे की हालत में अल्लाह की तस्बीह व तहमीद में मशगूल न हो।

(٣) عَنْ إِسْحٰقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهٖ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ أَوْ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَمَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ مِائَةَ مَرَّةٍ كَتَبَ اللهُ لَهُ مِائَةَ أَلْفِ حَسَنَةٍ وَأَرْبَعًا وَّعِشْرِيْنَ أَلْفَ حَسَنَةٍ قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ إِذًا لَا يَهْلِكُ مِنَّا أَحَدٌ قَالَ بَلٰى إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَجِيْءُ بِالْحَسَنَاتِ لَوْ وُضِعَتْ عَلٰى جَبَلٍ أَثْقَلَتْهُ ثُمَّ تَجِيْءُ النِّعَمُ فَتَذْهَبُ بِتِلْكَ ثُمَّ يَتَطَاوَلُ الرَّبُّ بَعْدَ ذٰلِكَ بِرَحْمَتِهٖ. رواه الحاكم وقال صحيح الإسناد كذا في الترغيب قلت وأقره عليه الذهبي.

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जो शख़्स– 'लाइला ह इल्लल्लाहु' कहे, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जायेगी और जो शख़्स – 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' सौ मर्तबा पढ़ेगा, उसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखी जायेंगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! ऐसी हालत में तो कोई भी (क़यामत में) हलाक नहीं हो सकता (कि नेकियां ग़ालिब ही रहेंगी)। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया (बाज़ लोग फिर भी हलाक होंगे और क्यों न हों) बाज़ आदमी इतनी नेकियां लेकर आयेंगे कि अगर पहाड़ पर रख दी जायें, तो वह दब जाये। लेकिन अल्लाह की नेमतों के मुकाबले में वह कलअदम[1] हो जायेंगी। अल्बत्ता अल्लाह जल्ले शानुहू फिर अपनी रहमत और फ़ज़्ल से दस्तगीरी फ़र्मायेंगे।[2]

---

1. नहीं के बराबर, यानी ऐसी ही जाएंगी कि जैसे थी ही नहीं, 2. यानी मदद फ़र्माएंगे,

फ़- अल्लाह की नेमतों के मुक़ाबले में दब जाने और कल्अदम हो जाने का मतलब यह है कि क़यामत में जहां नेकियां और बुराइयां तौली जायेंगी, वहां इस चीज़ का भी मुतालबा और मुहासिबा[1] होगा कि अल्लाह जल्ले जलालुहू ने जो नेमतें अता फ़र्मायी थीं, उनका क्या हक़ अदा किया। और क्या शुक्र अदा किया बन्दे के पास हर चीज़ अल्लाह ही की अता की हुई है। हर चीज़ का एक हक़ हैं। उस हक़ की अदायगी का मुतालबा होना है। चुनांचे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि

يُصْبِحُ عَلٰى كُلِّ سُلَامٰى مِنْ اَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ

الحديث فى المشكوٰة برواية مسلم

'युसब्बिहु अला कुल्लि सुलामा मिन अ ह दिकुम सद क़ तुन' – जिसका मतलब यह है कि हर सुबह को हर आदमी के हर जोड़ और हड्डी पर एक सदक़ा वाजिब होता है।

दूसरी हदीस में है कि आदमी में तीन सौ साठ जोड़ है। उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि हर जोड़ की तरफ़ से एक सदक़ा करे यानी इस बात के शुक्र में कि हक़ तआला शानुहू ने सोने के बाद जो मर जाने के मुशाबह हालत थी, फिर अज़सरे नो[2] ज़िन्दगी बख़्शी और हर उज़्व[3] सही-सालिम रहा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, क्या इतने सदक़े रोज़ाना करने की ताक़त कौन रखता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हर तस्बीह सद्क़ा है, हर तक्बीर सद्क़ा-है

लाइला ह इल्लल्लाहु لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

एक मर्तबा कहना सद्क़ा है।

अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ

कहना सद्क़ा है। रास्ते से किसी तक्लीफ़ देने वाली चीज़ का हटा देना सद्क़ा है। ग़रज़ बहुत से सद्क़ात शुमार कराये।

इस क़िस्म की और भी अहादीस हैं, जिनसे आदमी की अपनी ज़ात[1] में जो अल्लाह की नेमतें हैं, उनका बयान है। इसके अलावा खाने-पीने, राहत व आराम

---

1. हिसाब-किताब, 2. नये सिरे से, 3. अंग

के मुताल्लिक, जितनी अल्लाह की नेमतें हर वक़्त मयस्सर होती हैं, वह मजीद बर आ।[1]

क़ुरआन पाक में सूर: 'अल् हाकुमुत्तकासुर' में भी इसका ज़िक्र है कि क़यामत में अल्लाह की नेमतों से भी सवाल होगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि बदन की सेहत, कानों की सेहत, आखों की सेहत से सवाल होगा कि अल्लाह ने यह नेमतें अपने लुत्फ़ से अता फ़रमायी, इनको अल्लाह के किस काम में ख़र्च किया, (या चौपायों की तरह सिर्फ़ पेट पालने में ख़र्च किया?) चुनांचे दूसरी जगह सूर: बनी इस्राईल में इर्शाद है-

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا

इन्नस्सम्अ वल् ब स र वल् फ़ुआ द कुल्लु उलाइ क का न अन्हु मस्ऊला० (कान, आंख, दिल, हर शख़्स से इन सब की क़यामत के दिन पूछ होगी कि इन चीज़ों का इस्तेमाल कहां किया ?)

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिन नेमतों से सवाल होगा, उनमें बे-फ़िक्री, जो अल्लाह की बड़ी दौलत है और सेहते बदन भी है।

मुजाहिद कहते हैं कि दुनियां की हर लज़्ज़त नेमतों में दाख़िल है, जिनसे सवाल होगा। हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि इसमें आफ़ियत[2] भी दाख़िल है। एक शख़्स ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि-

सुम्म लतुस्अलुन्न यौम इज़िन अनिन्नईम० (फिर उस दिन नेमतों से भी सवाल किये जाओगे) का मतलब क्या है। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि गेहूं की रोटी और ठंडा पानी मुराद है कि इससे भी सवाल होगा और रहने के मकान से भी।

एक हदीस में आया है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो बाज़ सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! किन नेमतों का सवाल होगा ? आधी भूख रोटी मिलती है, वह भी जौ की (पेट भराई रोटी भी मयस्सर नहीं) ! वही नाज़िल हुई, क्या पांव में जूता नहीं पहनते ? क्या ठंडा पानी नहीं पीते ? यह भी तो अल्लाह

---

1. आयी आंख नाक, हाथ पांव, सेहत, तंदुरुस्ती, अक्ल व समझ वग़ैरह, 2. कुशलता,

की नेमतें हैं।

एक हदीस में आया है कि बाज़ सहाबा रज़ि० ने इस आयते शरीफ़ा के नाज़िल होने पर अर्ज किया या रसूलल्लाह ! किन नेमतों से सवाल होगा ? खजूर और पानी, सिर्फ़ यह दो चीज़ें खाने-पीने की मिलती हैं और हमारी तलवारें (जिहाद के लिए) हर वक़्त कंधों पर रहती हैं और दुश्मन (काफ़िर कोई न कोई) मुक़ाबिल[1] (जिसकी वजह से वह दो चीज़ें भी इत्मीनान और बे-फ़िक्री से नसीब नहीं होतीं) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अनक़रीब नेमतें मयस्सर होने वाली हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़यामत में जिन नेमतों से सवाल होगा, उनमें सबसे अव्वल यह होगा कि हमने तेरे बदन को तन्दुरुस्ती अता फ़र्मायी (यानी उस तन्दुरुस्ती का क्या हक़ अदा किया और इसमें अल्लाह की रिज़ा की क्या खिदमत अदा की) और हमने ठंडे पानी से तुझको सेराब[2] किया, (दर हक़ीक़त अल्लाह की बड़ी नेमत है, जहां ठंडा पानी मयस्सर नहीं होता, उनसे कोई इसकी क़द्र पूछे, यह अल्लाह की इतनी बड़ी नेमत है कि हद नहीं, मगर हम लोगों को उसके नेमते अजीमा[3] होने की तरफ़ इल्तिफ़ात भी नहीं होता, चजाये कि उसका शुक्र और उसकी अदायगी-ए-हक़।)

एक हदीस में वारिद है कि जिन नेमतों से सवाल होगा, वह यह हैं-

वह रोटी का टुकड़ा, जिससे पेट भरा जाता है,

वह पानी, जिससे प्यास बुझायी जाती है,

वह कपड़ा जिससे बदन ढांका जाता है,

एक मर्तबा दोपहर के वक़्त सख़्त धूप में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० परेशान होकर घर से चले, मस्जिद में पहुंचे ही थे कि हज़रत उमर रज़ि० भी उसी हालत में तशरीफ़ लाये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बैठा हुआ देखकर दर्याफ़्त किया कि तुम इस वक़्त यहां कहां ? फ़र्माया कि भूख की बेताबी ने परेशान किया। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज किया, वल्लाह ![4] इसी चीज़ ने मुझे भी मजबूर किया कि कहीं जाऊं। यह दोनों हज़रात यह गुफ़्तगू कर ही रहे थे कि सरकारे दो आलम नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आये। उनको देखकर दर्याफ़्त फ़र्माया कि

1. मुक़ाबले 2. तर, 3. बड़ी नेमत, 4. अल्लाह की क़सम !

तुम इस वक़्त कहां ? अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! भूख ने परेशान किया, जिससे मुज़्तरिब[1] हो कर निकल पड़े। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, इसी मजबूरी से मैं भी आया हूं। तीनों हज़रात इकट्ठे होकर हज़रत अबूअय्यूब अन्सारी रज़ि० के मकान पर पहुंचे। वह तश्रीफ़ नहीं रखते थे। बीवी ने बड़ी मसर्रत व इफ़्तिख़ार से इन हज़रात को बिठाया। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, अबूअय्यूब ! कहां गये हैं ? अर्ज किया, अभी हाज़िर होते हैं। किसी ज़रूरत से गये हुए हैं। इतने में अबूअय्यूब रज़ि० भी हाज़िरे ख़िद्मत हो गये और फ़र्ते ख़ुशी में खजूर का एक बड़ा-सा ख़ोशा[2] तोड़ कर लाये। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि सारा ख़ोशा क्यों तोड़ा ? इसमें कच्ची और अध-कचरी भी टूट गयीं, छांट कर पकी हुई तोड़ लेते। उन्होंने अर्ज किया इस ख़्याल से तोड़ा कि हर क़िस्म की सामने हों, जो पसन्द हो, वह नोश फ़र्मावें (कि बाज़ मर्तबा पकी हुई से अध-कचरी ज़्यादा पसन्द होती हैं) ख़ोशा सामने रखकर जल्दी से गये और एक बकरी का बच्चा ज़िब्हा किया और जल्दी-जल्दी कुछ तो वैसे ही भून लिया, और कुछ सालन तैयार कर लिया। हुज़र सल्ल० ने एक रोटी में थोड़ा-सा गोश्त रखकर अबूअय्यूब रज़ि० को दिया कि यह फ़ातिमा रज़ि० को पहुंचा दो, उसको भी कई दिन से कुछ नहीं मिल सका। वह फ़ौरन पहुंचा कर आये। इन हज़रात ने भी सेर होकर नोश फ़र्माया।[3] इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि देखो, यह अल्लाह की नेमतें हैं, रोटी है, गोश्त है, हर क़िस्म की कच्ची और पकी खजूरें हैं। यह फ़र्मा कर नबी अकरम सल्ल० की पाक आंखों से आंसू बहने लगे और इर्शाद फ़र्माया, उस पाक ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, यही वह नेमतें हैं, जिससे क़यामत में सवाल होगा (जिन हालात के तहत में इस वक़्त यह चीजें मयस्सर हुई थीं, उनके लिहाज़ से) सहाबा रज़ि० को बड़ी गिरानी और फ़िक्र पैदा हो गया (कि ऐसी मजबूरी और इज़्तिरार[4] की हालत में यह चीजें मयस्सर आयीं और उन पर भी सवाल व हिसाब हो) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह का शुक्र अदा करना तो ज़रूरी है ही। जब इस क़िस्म की चीजों पर हाथ डालो, तो अव्वल 'बिस्मिल्लाह' पढ़ो और जब खा चुको तो कहो-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ اَشْبَعَنَا وَاَنْعَمَ عَلَیْنَا وَاَفْضَلَ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु व अश ब अ ना व अन्अ म अलैना व अफ़ज़ ल

(तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने हमको पेट भर कर खिलाया

---

1. बे-चैन, 2. गुच्छा 3. पेट भर कर खाया, 4. बहुल मज्बूरी,

और हम पर इनाम फ़र्माया और बहुत ज़्यादा अता किया) इस दुआ का पढ़ना शुक्र अदा करने में काफ़ी है।

इस क़िस्म के वाकिआत कई मर्तबा पेश आये जो मुतअद्दद अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से ज़िक्र किये गये हैं। चुनांचे एक मर्तबा अबुल्हैसम मालिक बिन तैहान रज़ि॰ के मकान पर तशरीफ़ ले जाने की नौबत आयी।

इसी क़िस्म का वाक़िआ एक और साहब के साथ पेश आया, जिनको वाक़िफ़ी कहा जाता था।

हज़रत उमर रज़ि॰ का गुज़र एक शख़्स पर हुआ जो कोढ़ी भी था अंधा-बहरा गूंगा भी था। आपने साथियों से दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग अल्लाह की कुछ नेमतें इस शख़्स पर भी देखते हो ? लोगों ने अर्ज़ किया, इसके पास कौन-सी नेमत हैं ? आपने इर्शाद फ़र्माया, क्या पेशाब सहूलत से नहीं कर सकता ?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ फ़र्माते हैं कि क़यामत में तीन दरबार हैं। एक दरबार में नेकियों का हिसाब है, दूसरे में अल्लाह की नेमतों का हिसाब है, तीसरे में गुनाहों का मुतालबा है। नेकियां नेमतों के मुक़ाबले में हो जायेंगी और बुराइयां बाक़ी रह जायेंगी, जो अल्लाह के फ़ज़्ल के तहत में होंगी।

इन सब का मतलब यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की जिस क़दर नेमतें हर आन और हरदम आदमी पर होती हैं, उनका शुक्र करना, उनका हक़ अदा करना भी आदमी के ज़िम्मे है, इसलिए जितनी मिक़्दार भी नेकियों की पैदा हो सके, उनको हासिल करने में कमी न करे और किसी मिक़्दार को भी ज़्यादा न समझे कि वहां पहुंच कर मालूम होगा कि कितने कितने गुनाह हमने अपनी आंख, नाक, कान और दूसरे बदन के हिस्सों से ऐसे किये हैं, जिनको हम गुनाह भी न समझे।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि तुममें से कोई भी ऐसा नहीं है, जिसकी क़यामत में अल्लाह के यहां पेशी न हो कि उस वक़्त न कोई परदा दर्मियान में हायल होगा, न तर्जुमान (वकील वग़ैरह), दायीं तरफ़ देखेगा, तो अपने आमाल का अम्बार होगा। बायीं तरफ़ देखेगा, तब यही मंज़र होगा। जिस क़िस्म के भी अच्छे या बुरे आमाल किये हैं, वह सब साथ होंगे जहन्नम की आग सामने होगी, इसलिए जहां तक मुम्किन हो, सदके से जहन्नम की आग दफ़ा करो, ख़्वाह खजूर का टुकड़ा ही क्यों न हो।

एक हदीस में आया है कि क़यामत में सबसे अव्वल यह सवाल होगा कि

हमने तुझे बदन की सेहत अता की और ठंडा पानी पीने को दिया (यानी इन चीज़ों का क्या हक़ अदा किया।)

दूसरी हदीस में है कि उस वक़्त तक आदमी हिसाब के मैदान से न हटेगा, जब तक पांच चीजों का सवाल न हो जाये-

1. उम्र किस काम में ख़र्च की ? 2. जवानी (की क़ुव्वत) किस मशग़ले में सर्फ़ की ? 3. माल किस तरीक़े से कमाया ? और 4. किस तरीक़े से ख़र्ज किया ? (यानी कमाई के और ख़र्च के तरीक़े जायज थे या ना-जायज ?) 5. जो कुछ इल्म हासिल किया (ख़्वाह किसी दर्जे का हो) उसमें क्या अमल किया ? (यानी जो मसाइल मालूम थे, उन पर अमल किया या नहीं ?)

(٣) عَنْ اِبْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَقِیْتُ اِبْرَاھِیْمَ لَیْلَۃَ اُسْرِیَ بِیْ فَقَالَ یَا مُحَمَّدُ اِقْرَأْ اُمَّتَکَ مِنِّی السَّلَامَ وَاَخْبِرْھُمْ اَنَّ الْجَنَّۃَ طَیِّبَۃُ التُّرْبَۃِ عَذْبَۃُ الْمَاءِ وَاَنَّھَا قِیْعَانٌ وَاَنَّ غِرَاسَھَا سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ۔ رواہ الترمذی والطبرانی فی الصغیر والاوسط وزاد لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ وقال الترمذی حسن غریب من ھذا الوجہ ورواہ الطبرانی ایضًا باسناد رواہ من حدیث سلمان الفارسی وَعَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ مَرْفُوْعًا مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ غُرِسَ لَہٗ بِکُلِّ وَاحِدَۃٍ مِنْھُنَّ شَجَرَۃٌ فِی الْجَنَّۃِ رواہ الطبرانی واسنادہ حسن لاباس بہ فی المتابعات وَعَنْ جَابِرٍ مَرْفُوْعًا مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِہٖ غُرِسَتْ لَہٗ نَخْلَۃٌ فِی الْجَنَّۃِ رواہ الترمذی وحسنہ والنسائی الا انہ قال شجرۃ وابن حبان فی صحیحہ والحاکم فی الموضعین باسنادین قال فی احدھما علی شرط مسلم وفی الاخر علی شرط البخاری وذکرہ فی الجامع الصغیر بروایۃ الترمذی وابن حبان والحاکم ورقم لہ بالصحۃ وَعَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِہٖ وَھُوَ یَغْرِسُ الحدیث رواہ ابن ماجۃ باسناد حسن والحاکم وقال صحیح الاسناد کذا فی الترغیب وعزاہ فی الجامع الی ابن ماجۃ والحاکم ورقم لہ بالصحۃ قلت وفی الباب من حدیث ابی ایوب مرفوعا رواہ احمد باسناد حسن وابن ابی الدنیا وابن حبان فی صحیحہ ورواہ ابن ابی الدنیا والطبرانی من حدیث ابن عمر ایضا مرفوعا مختصرا الا ان فی حدیثھما الحوقلۃ فقط کما فی الترغیب قلت وذکر السیوطی فی الدر حدیث ابن عباس مرفوعا بلفظ حدیث ابن مسعودؓ وقال اخرجہ ابن مردویۃ وذکر ایضًا حدیث ابن مسعود وقال اخرجہ الترمذی وحسنہ والطبرانی وابن مردویہ قلت وذکرہ فی الجامع الصغیر بروایۃ الطبرانی ورقم لہ بالصحۃ وذکر فی مجمع الزوائد عدۃ روایات فی معنی ھذا الحدیث۔

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि शबे मेराज में जब मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई, तो उन्होंने फ़र्माया, कि अपनी उम्मत को मेरा सलाम कह देना और यह कहना कि जन्नत की निहायत उम्दा पाकीज़ा मिट्टी है और बेहतरीन पानी। लेकिन वह बिल्कुल चट्यल मैदान है और उसके पौधे (दरख़्त – 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' हैं जितने किसी का दिल चाहे दरख़्त लगा ले।)

एक हदीस में इसके बाद– 'ला हौ ल वला क़ूव त इल्ला बिल्लाहि' भी है। दूसरी हदीस में है कि इन कलमों में से हर कलमे के बदले एक दरख़्त जन्नत में लगाया जाता है। एक हदीस में है कि जो शख़्स– 'सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि व बिहम्दिही' पढ़ेगा, एक दरख़्त जन्नत में लगाया जावेगा।

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ ले जा रहे थे। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० को देखा कि एक पौधा लगा रहे हैं। दर्याफ़्त फ़र्माया क्या कर रहे हो ? उन्होंने अर्ज़ किया, दरख़्त लगा रहा हूं। इर्शाद फ़र्माया, मैं बताऊं, बेहतरीन पौधे जो लगाये जायें– 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिलाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' – हर कलमे से एक दरख़्त जन्नत में लगता है।

फ़– हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए से हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सलाम भेजा है इसलिए उलमा ने लिखा है जिस शख़्स के पास यह हदीस पहुंचे, उसको चाहिए कि हज़रत ख़लीलुल्लाह के सलाम के जवाब में 'व अलैकुमस्सलामु व रह्मतुल्लाहि व ब र कातुहू' कहे। इसके बाद इर्शाद है कि जन्नत की मिट्टी बेहतरीन है और पानी मीठा। इसके दो मतलब हैं–

अव्वल– यह कि सिर्फ़ उस जगह की हालत का बयान करना है कि बेहतरीन जगह है, जिसकी मिट्टी के मुताल्लिक़ अहादीस में आया है कि मुश्क व ज़ाफ़रान की है और पानी निहायत लज़ीज़। ऐसी जगह हर शख़्स अपना मस्कन[1] बनाना चाहता है। और तफ़्रीह व राहत के लिए बाग़ वग़ैरह लगाने के अस्बाब मुहय्या हों, तो कौन छोड़ सकता है।

दूसरा– मतलब यह है कि जिस जगह ज़मीन बेहतर और पानी बेहतर हो, वहां पैदावार बहुत अच्छी होती है। इस सूरत में मतलब यह है कि एक मर्तबा सुब्हानल्लाह कह देने से एक दरख़्त वहां क़ायम हो जायेगा और फिर वह जगह और पानी की उम्दगी की वजह से ख़ुद ही नश्व-व-नुमा[2] पाता रहेगा, सिर्फ़ एक मर्तबा

---

1. रहने की जगह, 2. पलना-बढ़ना,

बाग़ और दरख़्त वग़ैरह मौजूद होंगे।

दूसरी तौजीह[1] बाज़ उलमा ने यह फ़र्मायी है कि जन्नत के वह बाग़ वग़ैरह उन आमाल के मुवाफ़िक़ मिलेंगे, जब इन आमाल की वजह से और इनके बराबर मिले, तो गोया यह आमाल ही दरख़्तों का सबब हुए।

तीसरी तौजीह यह फ़र्मायी गयी है कि कम से कम मिक़्दार जो हर शख़्स के हिस्से में है, वह सारी दुनिया से कहीं ज़ायद[2] है। इसमें बहुत से हिस्से में ख़ुद अपने असली बाग़ मौजूद हैं और बहुत-सा हिस्सा ख़ाली पड़ा हुआ है, जितना कोई ज़िक्र तस्बीह वग़ैरह करेगा, उतने की दरख़्त और लग जायेंगे।

शेख़ुल मशाइख़ हज़रत मौलाना गंगोही रह० का इर्शाद, जो 'कौकब दुर्रीयुन'[3] में नक़्ल किया गया है, यह है कि इसके सारे दरख़्त ख़मीर की तरह से एक जगह मुज्तमा हैं। हर शख़्स जिस क़दर आमाले ख़ैर करता रहता है, उतना ही उसके हिस्से की ज़मीन में लगते रहते हैं और नश्व-व-नुमा पाते रहते हैं।

٥ - عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ رضؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ ھَالَہُ اللَّیْلُ
اَنْ یُّکَابِدَہٗ اَوْ بَخِلَ بِالْمَالِ اَنْ یُّنْفِقَہٗ اَوْ جَبُنَ عَنِ الْعَدُوِّ اَنْ یُّقَاتِلَہٗ فَلْیُکْثِرْ مِنْ
سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ فَاِنَّھَا اَحَبُّ اِلَی اللّٰہِ مِنْ جَبَلِ ذَھَبٍ یُّنْفِقُہٗ فِیْ
سَبِیْلِ اللّٰہِ رواہ الفریابی والطبرانی واللفظ لہ وھو حدیث غریب ولاباس
باسنادہ انشاء اللہ کذا فی الترغیب و فی مجمع الزوائد رواہ الطبرانی وفیہ سلیمان
بن احمد الواسطی وثقہ عبدان وضعفہ الجمہور والغالب علی بقیۃ رجالہ التوثیق
وفی الباب عن ابی ھریرۃ رض مرفوعًا اخرجہ ابن مردویہ وابن عباس رض
ایضاً بنحوہ کذا فی الدر

5. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स रात की मशक़्क़त झेलने से डरता हो (कि रातों को जागने और इबादत में मुश्ग़ूल रहने से क़ासिर हो) या बुख़्ल की वजह से माल ख़र्च करना दुश्वार हो, या बुज़दिली की वजह से जिहाद की हिम्मत न पड़ती हो, उसको चाहिए कि 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' कसरत से पढ़ा करे कि अल्लाह के नज़दीक यह कलाम पहाड़ के बक़द्र सोना ख़र्च करने से भी ज़्यादा महबूब है।

---

1. वजह बयान करना, 2. ज़्यादा, 3. यह तिर्मिज़ी पर हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही की तक़रीर है, जो मौलाना यह्या साहब में लिखी है, छप चुकी है।

फ़— किस क़दर अल्लाह का फ़ज़्ल है कि हर क़िस्म की मशक़्क़त से बचने वालों के लिए भी फ़ज़ाइल और दरजात का दरवाज़ा बन्द नहीं फ़र्माया, रातों को जागा नहीं जाता, कंजूसी से पैसा नहीं ख़र्च होता, बुज़दिली और कम-हिम्मती से जिहाद जैसा मुबारक अमल नहीं होता, तो इसके बाद भी अगर दीन की क़द्र है, आख़िरत की फ़िक्र है, तो उसके लिए भी रास्ता खुला हुआ है। फिर भी कुछ कमा न सके, तो कम-नसीबी के सिवा और क्या है। पहले यह मज़मून ज़रा तफ़्सील से गुज़र चुका है।

٦- عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَحَبُّ الْكَلَامِ اِلَى اللّٰهِ اَرْبَعٌ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ لَا يَضُرُّكَ بِاَيِّهِنَّ بَدَأْتَ- رواه مسلم وابن ماجة والنسائى وزاد وهن من القرآن ورواه النسائى ايضا وابن حبان فى صحيحه من حديث ابى هريرة رض كذا فى الترغيب وعزاه السيوطى حديث سمرة الى احمد ايضا ورقم له بالصحة وحديث ابى هريرة الى مسند الفردوس للديلمى ورقم له ايضا بالصحة-

6. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कलाम चार कलमे हैं- (1) सुब्हानल्लाहि, (2) अल्हम्दु लिल्लाहि, (3) लाइला ह इल्लल्लाहु, (4) अल्लाहु अक्बर इन में से जिसको चाहे, पहले पढ़े और जिसको चाहे बाद में (कोई) ख़ास तर्तीब नहीं।) एक हदीस में है कि यह कलमे क़ुरआन पाक में भी मौजूद हैं।

फ़— यानी क़ुरआन पाक के अल्फ़ाज़ में भी यह कलमे कसरत से वारिद हुए हैं और क़ुरआन पाक में इनका हुक्म, इनकी तर्ग़ीब वारिद हुई हैं। चुनांचे पहली फ़स्ल में मुफ़स्सिल बयान हो चुका है।

एक हदीस में आया है कि ईदों को इन कलमों के साथ मुज़य्यन[2] किया करो यानी ईद की ज़ीनत यह है कि इन कलमों का कसरत से विर्द किया जाए।

(٧) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ اِنَّ الْفُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِيْنَ اَتَوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوْا قَدْ ذَهَبَ اَهْلُ الدُّثُوْرِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلٰى وَالنَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ فَقَالَ وَمَا ذَاكَ قَالُوْا يُصَلُّوْنَ كَمَا نُصَلِّىْ وَيَصُوْمُوْنَ كَمَا نَصُوْمُ وَيَتَصَدَّقُوْنَ وَلَا نَتَصَدَّقُ وَيُعْتِقُوْنَ وَلَا نُعْتِقُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفَلَا اُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُوْنَ بِهٖ مَنْ

1. यानी जो शख़्स इन कामों में से कुछ न कर सके, उस के लिए यह अमल है। 2. सजाना,

سَبَقَكُمْ وَتَسْبِقُوْنَ بِهٖ مَنْ بَعْدَكُمْ وَلَا يَكُوْنُ أَحَدٌ أَفْضَلَ مِنْكُمْ إِلَّا مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ قَالُوْا بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ تُسَبِّحُوْنَ وَتُكَبِّرُوْنَ وَتَحْمَدُوْنَ دُبُرَ كُلِّ صَلٰوةٍ ثَلٰثًا وَّثَلٰثِيْنَ مَرَّةً قَالَ أَبُوْ صَالِحٍ فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ إِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوْا سَمِعَ إِخْوَانُنَا أَهْلُ الْأَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا فَفَعَلُوْا مِثْلَهٗ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ متفق عليه وليس قول ابى صالح الى آخره الا عند مسلم وفى رواية للبخارى تُسَبِّحُوْنَ فِىْ دُبُرِ كُلِّ صَلٰوةٍ عَشْرًا وَّتَحْمَدُوْنَ عَشْرًا وَّتُكَبِّرُوْنَ عَشْرًا بَدَلَ ثَلٰثًا وَّثَلٰثِيْنَ كذا فى المشكوة وعن ابى ذر رض بنحو هذا الحديث وفيه اِنَّ بِكُلِّ تَسْبِيْحَةٍ صَدَقَةً وَّكُلِّ تَحْمِيْدَةٍ صَدَقَةً وَّفِىْ بُضْعِ أَحَدِكُمْ صَدَقَةً قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ يَأْتِىْ أَحَدُنَا شَهْوَتَهٗ يَكُوْنُ لَهٗ فِيْهَا أَجْرٌ الحديث اخرجه احمد وفى الباب عن ابى الدرداء عند احمد۔

7. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक मर्तबा फ़ुकरा-ए-मुहाजिरीन[1] जमा होकर हाज़िर हुए और अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! यह मालदार सारे बुलंद दर्जे ले उड़े और हमेशा की रहने वाली नेमतें उन्हीं के हिस्से में आ गयीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क्यों ? अर्ज किया कि नमाज़ रोज़ा में तो यह हमारे शरीक कि हम भी करते हैं, यह भी। और मालदार होने की वजह से यह लोग सदका करते हैं, ग़ुलाम आज़ाद करते हैं और हम इन चीज़ों से आजिज़ हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताऊं कि तुम उस पर अमल करके अपने से पहलों को पकड़ लो और बाद वालों से भी आगे बढ़े रहो। और कोई शख़्स तुम से उस वक़्त तक अफ़ज़ल न हो जब तक उन्हीं आमाल को न करे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ज़रूर बता दीजिए। इर्शाद फ़र्माया कि हर नमाज़ के बाद 'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' 33-33 मर्तबा पढ़ लिया करो। (इन हज़रात ने शुरू कर दिया मगर उस ज़माने के मालदार भी इसी नमूने के थे। उन्होंने भी मालूम होने पर शुरू कर दिया) तो फ़ुकरा दोबारा हाज़िर हुए कि या रसूलल्लाह ! हमारे मालदार भाइयों ने भी सुन लिया और वह भी यही करने लगे। हुज़ूर सल्ल०, ने फ़र्माया, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसको चाहे अता फ़र्माये, उसको कौन रोक सकता है ?

एक दूसरी हदीस में भी इसी तरह यह क़िस्सा ज़िक्र किया गया। इसमें हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि तुम्हारे लिए भी अल्लाह ने सदके का क़ायम-मुकाम[2] बना

1. हिजरत करने वाले, 2. की जगह पर, स्थानापन्न,

रखा है। सुब्हानल्लाहि एक मर्तबा कहना सदका है। अल्हम्दु लिल्लाहि एक मर्तबा कहना सदका है, बीवी से सोहबत करना सदका है। सहाबा रज़ि० ने ताज्जुब से अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! बीवी से हमबिस्तरी में अपनी शहवत[1] पूरी करे और यह सदका हो जाए ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर हराम में मुब्तला हो तो गुनाह होगा या नहीं ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ज़रूर होगा। इर्शाद फ़र्माया, इसी तरह हलाल में सदका और अज्र है।

फ़– मतलब यह है कि इस नीयत से सोहबत करना कि हरामकारी से बचे, सवाब और अज्र का सबब है।

इसी क़िस्से की एक दूसरी हदीस में इस इश्काल के जवाब में कि बीवी से हमबिस्तरी अपनी शहवत का पूरा करना है, हुज़ूर सल्ल० का यह जवाब नक़ल किया गया है, बताओ अगर बच्चा पैदा हो जाए, फिर वह जवान होने लगे और तुम उसकी ख़ूबियों की उम्मीद बांधने लगो, फिर वह मर जाए, क्या तुम सवाब की उम्मीद रखते हो ? अर्ज किया गया कि बेशक उम्मीद है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया क्यों, तुमने उसको पैदा किया ? तुमने उसको हिदायत की थी ? तुमने उसको रोज़ी दी थी ? बल्कि अल्लाह ही ने पैदा किया है, उसी ने हिदायत दी है, वही रोज़ी अता करता था, इसी तरह सोहबत से तुम नुतफ़े को हलाल जगह रखते हो, फिर अल्लाह के क़ब्ज़े में है कि चाहे उसको ज़िंदा करे कि उससे औलाद पैदा कर दे या मुर्दा करे कि औलाद पैदा न हो। इस हदीस का मक्तज़ा[2] यह है कि यह अज्र व सवाब बच्चे के पैदा होने का सबब होने की वजह से है।

٨- عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رضـ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَبَّحَ اللّٰهَ فِیْ دُبُرِ كُلِّ صَلٰوةٍ ثَلٰثًا وَّثَلٰثِیْنَ وَحَمِدَ اللّٰهَ ثَلٰثًا وَّثَلٰثِیْنَ وَكَبَّرَ اللّٰهَ ثَلٰثًا وَّثَلٰثِیْنَ فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَّتِسْعُوْنَ وَقَالَ تَمَامَ الْمِائَةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ غُفِرَتْ خَطَایَاهُ وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ. رواه مسلم كذا فى المشكوة وكذا فى مسند احمد۔

8. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल्हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाह अक्बर 33 मर्तबा और एक मर्तबा लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू लहुल्मुल्कु

1. ख़्वाहिश, 2. तक़ाज़ा,

व लहुल् हम्दु व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर० पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, ख़्वाह उतनी कसरत से हों जितने समुन्दर के झाग।

फ़– ख़ताया[1] की मग़फ़िरत के बारे में पहले कई हदीसों के तहत में बहस गुज़र चुकी है कि इन ख़ताया से मुराद उलमा के नज़दीक सग़ीरा गुनाह हैं।

इस हदीस में तीन कलमे 33–33 मर्तबा और लाइला ह इल्लल्लाहु एक मर्तबा वारिद हुआ है। इससे अगली हदीस में दो कलमे 33–33 मर्तबा और अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा आ रहा है।

हज़रत ज़ैद रज़ि० से नक़ल किया गया है कि हमको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने–

سُبْحَانَ اللّٰہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' हर एक को 33 मर्तबा हर नमाज़ के बाद पढ़ने का हुक्म फ़र्माया था। एक अन्सारी रज़ि० ने ख़्वाब में देखा, कि कोई शख़्स कहता है कि हर एक कलमे को 25 मर्तबा कर लो और उसके साथ लाइला ह इल्लल्लाह 25 मर्तबा का इज़ाफ़ा कर लो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया। हुज़ूर सल्ल० ने क़ुबूल फ़र्मा लिया और इसकी इजाज़त फ़र्मा दी कि ऐसा ही कर लिया जाये।

एक हदीस में–

سُبْحَانَ اللّٰہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दुलिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' हर कलमे को हर नमाज़ के बाद ग्यारह मर्तबा का हुक्म है और एक हदीस में 10–10 मर्तबा वारिद हुआ है। एक हदीस में लाइला ह इल्लल्लाहु 10 मर्तबा, बाक़ी तीनों कलमे, हर एक 33 मर्तबा।

एक हदीस में हर नमाज़ के बाद चारों कलमे 100–100 मर्तबा वारिद हुए हैं, जैसा कि हिस्ने हसीन में इन रिवायात को ज़िक्र किया गया है।

यह इख़्तिलाफ़ ब-ज़ाहिर हालात के इख़्तिलाफ़ की वजह से है कि आदमी फ़राग़त और मशाग़िल के एतबार से मुख़्तलिफ़ हैं। जो लोग दूसरे ज़रूरी कामों में

---

1. ख़ताओं, ग़लतियों,

मशगूल हैं, उनके लिए कम मिक्दार तज्वीज फ़र्मायी और जो लोग फ़ारिग़ हैं उनके लिए ज़्यादा मिक्दार। लेकिन मुहक़्क़िक़ीन की राय यह है कि जो अदद अहादीस में मज़्कूर हैं, उनकी रियायत ज़रूरी है कि जो चीज दवा के तौर पर इस्तेमाल की जाती है, उसमें मिक्दार की रियायत भी अहम है।[1]

٩- عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُعَقِّبَاتٌ لَا يَخِيْبُ قَائِلُهُنَّ اَوْ فَاعِلُهُنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلٰوةٍ مَّكْتُوْبَةٍ ثَلٰثٌ وَّثَلٰثُوْنَ تَسْبِيْحَةً وَّثَلٰثٌ وَّثَلٰثُوْنَ تَحْمِيْدَةً وَّاَرْبَعٌ وَّ ثَلٰثُوْنَ تَكْبِيْرَةً- رواه مسلم كذا فى المشكوة وعزاه السيوطى فى الجامع الى احمد ومسلم والترمذى النسائى ورقوله بالضعف وفى الباب عن ابى الدرداء عند الطبرانى-

9. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि चंद पीछे आने वाले (कलमात) ऐसे हैं, जिनका कहने वाला ना-मुराद नहीं होता, वह यह हैं कि हर फ़र्ज नमाज़ के बाद 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह, 33 मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह, 34 मर्तबा अल्लाहु अक्बर।

फ़—इन कलिमात को 'पीछे आने वाले' या तो इस वजह से फ़र्माया कि यह नमाज़ों के बाद पढ़े जाते हैं या इस वजह से कि गुनाह के बाद पढ़ने से उनको धोने और मिटा देने वाले हैं, या इस वजह से कि यह कलमात एक दूसरे के बाद पढ़े जाते हैं।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ फ़र्माते हैं कि हमें नमाज़ों के बाद

सुब्हानल्लाह-अल्हम्दु लिल्लाह   سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

33-33 बार और

अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़ने का हुक्म किया गया है।

١٠- عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَفَعَهُ اَمَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّعْمَلَ كُلَّ يَوْمٍ مِّثْلَ اُحُدٍ عَمَلًا قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَنْ يَّسْتَطِيْعُ قَالَ كُلُّكُمْ يَسْتَطِيْعُ قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَاذَا قَالَ سُبْحَانَ اللّٰهِ اَعْظَمُ مِنْ اُحُدٍ وَّلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَعْظَمُ مِنْ

---

2. यहां जितने भी अदद दिये गये हैं, उन में से किसी न किसी अदद को पूरा पढ़ना चाहिए, यों ही बग़ैर अन्दाज़ा किये न पढ़े, क्योंकि हर अदद में अलग सवाब और अलग तासीर होती है।

أُحُدٍ وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ أَعْظَمُ مِنْ أُحُدٍ للكبير و

والبزار كذا في جمع الفوائد والبهاء في الحصن ومجمع الزوائد وقال رجاله رجال الصحيح

10. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़र्माया, क्या तुम में से कोई ऐसा नहीं है कि रोज़ाना उहद (जो मदीना मुनव्वरा के एक पहाड़ का नाम है (के बराबर अमल कर लिया करे) सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! इसकी कौन ताक़त रखता है (कि इतने बड़े पहाड़ के बराबर अमल करे) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हर शख़्स ताक़त रखता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, इसकी क्या सूरत है ? इर्शाद फ़र्माया कि सुब्हानल्लाह का सवाब उहद से ज़्यादा है, लाइला इल्लाह का उहद से ज़्यादा है अल्हम्दुल्लिाह का उहद से ज़्यादा है। अल्लाहु अकबर का उहद से ज़्यादा है।

फ़– यानी इन कलमों में से हर कलमा ऐसा है जिसका सवाब उहद पहाड़ से ज़्यादा है और एक पहाड़ क्या, न मालूम ऐसे कितने पहाड़ों से ज़्यादा है।

हदीस में आया है कि–

सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि

सारे आसमानों और ज़मीनों को सवाब से भर देते हैं।

एक हदीस में आया है कि–

सुब्हानल्लाहि

का सवाब आधी तराज़ू है और

अल्हम्दु लिल्लाहि। इसको पुर कर देती है और अल्लाहु अक्बर

आसमान-ज़मीन के दर्मियान को पुर कर देती है।

एक हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया है कि–

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि, लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर०' मुझे हर उस चीज से ज़्यादा महबूब है, जिस पर आफ़ताब निकले।

मुल्ला अली रह० फ़र्माते हैं कि मुराद यह है कि सारी ही दुनियां अल्लाह के वास्ते ख़र्च कर दूं, तो इस से भी यह ज़्यादा महबूब हैं।

कहते हैं कि हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम हवाई तख़्त पर तशरीफ़ ले जा रहे थे, परिंदे आप पर साया किए हुए थे और जिन्न व इंस वग़ैरह लश्कर दो क़तार, एक आबिद पर गुज़र हुआ, जिसने हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के इस वुस्अते मुल्की और उमूमे सल्तनत की तारीफ़ की। आपने इर्शाद फ़र्माया कि मोमिन के आमालनामे में एक तस्बीह सुलैमान बिन दाऊद अलै० के सारे मुल्क से अच्छी है कि यह मुल्क फ़ना हो जायेगा और यह तस्बीह बाक़ी रहने वाली चीज है।

۱۱۔ عَنْ اَبِیْ سَلَامٍ مَوْلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ بَخٍ بَخٍ خَمْسٌ مَا اَثْقَلَھُنَّ فِی الْمِیْزَانِ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ۔ الحدیث اخرجہ احمد فی مسندہ کا ورجالہ ثقات کما فی مجمع الزوائد والحاکم وقال صحیح الاسناد واقرہ علیہ الذھبی وذکرہ فی الجامع الصغیر بروایۃ البزار عن ثوبان وبروایۃ النسائی وابن حبان والحاکم عن ابی سلمٰی وبروایۃ احمد عن ابی امامۃ ورقم لہ بالحسن۔ و ذکرہ فی مجمع الزوائد بروایۃ ثوبان وابی سلمٰی راعی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم وسفینۃ مولی لرسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم لم یسم وصحح بعض طرقھا۔

11. एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि वाह ! वाह ! पांच चीजें (आमालनामा तुलने की) तराज़ू में कितनी ज़्यादा वजनी हैं– लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर– सुब्हानल्लाहि–अलहम्दु लिल्लहि और वह बच्चा जो मर जाये और बाप (इसी तरह मां भी) उस पर सब्र करे।

फ़– यह मज़्मून कई सहाबा रज़ि० से मुतअद्दद अहादीस में नक़ल किया गया है। बख़–बख़ बड़े सुरूर और फ़र्हत का कलमा है। जिस चीज को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस ख़ुशी और मसर्रत से इर्शाद फ़र्मा रहे हों, अता, फ़र्मा रहे हों, क्या मुहब्बत का दावा करने वालों के जिम्मे नहीं है कि इन कलमों पर मर मिटें कि हुज़ूर सल्ल० की इस ख़ुशी की क़द्रदानी और उस का इस्तिक़्बाल (स्वागत) यही है।

(١٢) عن سليمان بن يسار عن رجل من الانصار ان النبي صلى الله عليه وسلم قال قال نوح لابنه اني موصيك بوصية وقاصرها كي لا تنساها اوصيك باثنين وانهاك عن اثنين اما اللتي اوصيك بهما فيستبشر الله بهما وصالح خلقه وهما يكثران الولوج على الله اوصيك بلا اله الا الله فان السموات والارض لو كانتا حلقة قصمتهما ولو كانتا في كفة وزنتهما واوصيك بسبحان الله وبحمده فانهما صلوة الخلق وبهما يرزق الخلق وان من شيء الا يسبح بحمده ولكن لا تفقهون تسبيحهم انه كان حليما غفورا واما اللتان انهاك عنهما فيحتجب الله منهما وصالح خلقه انهاك عن الشرك والكبر رواه النسائي واللفظ له والبزار والحاكم من حديث عبد الله بن عمرو وقال صحيح الاسناد كذا في الترغيب قلت وقد تقدم في بيان التهليل حديث عبد الله بن عمرو مرفوعا وتقدم فيه ايضا ما في الباب وتقدم في الآيات قوله عز اسمه وان من شيء الا يسبح بحمده الآية واخرج ابن جرير وابن ابي حاتم وابو الشيخ في العظمة عن جابر مرفوعا الا اخبركم بشيء امر به نوح ابنه ان نوحا قال لابنه يا بني آمرك ان تقول سبحان الله فانها صلوة الخلق وتسبيح الخلق وبها يرزق الخلق واخرج احمد وابن مردويه عن ابن عمر مرفوعا ان نوحا لما حضرته الوفاة قال لابنيه آمركما بسبحان الله وبحمده فانها صلوة كل شيء وبها يرزق كل شيء كذا في الدر

12. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपने सहाबज़ादे से फ़रमाया कि मैं तुम्हें वसीयत करता हूं और इस ख़्याल से कि भूल न जाओ, निहायत मुख़्तसर कहता हूं और वह यह है कि दो काम करने की वसीयत करता हूं और दो कामों से रोकता हूं। जिन दो कामों के करने की वसीयत करता हूं वह दोनों काम ऐसे हैं कि अल्लाह जल्ल जलालहू, उनसे निहायत ख़ुश होते हैं और अल्लाह की नेक मख़्लूक उनसे ख़ुश होती है। इन दोनों कामों की अल्लाह के यहां रसाई[1] (और मक़्बूलियत) भी बहुत ज़्यादा है। इन दो में से एक लाइला ह इल्लल्लाह है कि अगर तमाम आसमान एक हल्क़ा हो जायें, तो भी यह पाक कलमा उनको तोड़ कर आसमान पर जाये बग़ैर न रहे और अगर तमाम आसमान व ज़मीन को एक पलड़े में रख दिया जाये और दूसरे में यह पाक कलमा हो तब भी वही पलड़ा झुक जायेगा और दूसरा काम जो करना है वह सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही का पढ़ना है कि यह कलमा सारी मख़्लूक की इबादत है और इसी की बरकत से तमाम

1. पहुंच,

मख़्लूक़ की रोज़ी दी जाती है। कोई भी चीज मख़्लूक़ में ऐसी नहीं जो अल्लाह की तस्बीह न करती हो, मगर तुम लोग उनका कलाम समझते नहीं हो।

और जिन दो चीज़ों से मना करता हूं, वह शिर्क और तकब्बुर[1] है कि इन दोनों की वजह से अल्लाह से हिजाब हो जाता है और अल्लाह की नेक मख़्लूक़ से हिजाब हो जाता है।

फ़— 'लाइला ह इल्लल्लाहु' के बयान में भी इस हदीस का मज़्मून गुज़र चुका है। तस्बीह के मुताल्लिक़ जो इर्शाद इस हदीस में है, क़ुरआन पाक की आयत में भी गुज़र चुका है।

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ

'व इम् मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही' क़ुरआन पाक की आयत है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद बहुत सी अहादीस में वारिद हुआ है कि शबे मेराज में आसमानों की तस्बीह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद सुनी।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० का ऐसी जमाअत पर गुज़र हुआ, जो अपने घोड़ों और ऊंटों पर खड़ी हुई थी। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जानवरों को मिम्बर और कुर्सियां न बनाओ, बहुत से जानवर सवारों से बेहतर और उनसे ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले होते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि खेती भी तस्बीह करती है और खेती वाले को इसका सवाब मिलता है।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक प्याला पेश किया गया जिसमें सरीद था। आपने इर्शाद फ़र्माया कि यह खाना तस्बीह कर रहा है। किसी ने अर्ज़ किया, आप इसकी तस्बीह समझते हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हां समझता हूं। उसके बाद आपने एक शख़्स से फ़र्माया कि उसको फ़्लां शख़्स के क़रीब कर दो, वह प्याला उनके क़रीब किया गया, तो उन्होंने भी तस्बीह सुनी। इसके बाद फिर एक तीसरे साहब के क़रीब इसी तरह किया गया। उन्होंने भी सुना। किसी ने दर्ख़्वास्त की कि मज्मे के सभी लोगों को सुनवाया जाये। हुज़ूर

---

1. घमंड,

सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अगर किसी को इनमें से सुनाई न दे, तो लोग समझेंगे कि यह गुनहगार है। इस चीज़ का ताल्लुक कश्फ़ से है। हज़रात अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तो यह चीज़ बदर्जहा अतम्म[1] हासिल थी और होना चाहिए थी। हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी बसा औक़ात हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम के फ़ैज़े सोहबत और अन्वारे क़ुर्ब[2] की बदौलत यह चीज़ हासिल हो जाती थी। सैकड़ों वाक़िआत इसके शाहिद हैं।

सूफ़िया को भी अक्सर यह चीज़ मुजाहदों की कसरत से हासिल हो जाती है, जिसकी वजह से वह जमादात[3] और हैवानात[4] की तस्बीह, उनका कलाम, उनकी गुफ़्तगू समझ लेते हैं। लेकिन मुहक़्क़िक़ीन मशायख़ के नज़दीक चूंकि यह चीज़ न दलीले कमाल है, न मूजिबे क़ुर्ब कि जो भी इस क़िस्म के मुजाहिदे करता है, वह हासिल कर लेता है, ख़्वाह उसको हक़ तआला शानुहू के यहां क़ुर्ब हासिल हो या न हो। इसलिए मुहक़्क़िक़ीन इसको ग़ैर-अहम समझते हैं, बल्कि इस लिहाज़ से मुज़िर[5] समझते हैं कि जब मुब्तदी[6] उसमें लग जाता है तो दुनिया की सैर का एक शौक़ पैदा होकर तरक़्क़ी के लिए मानेअ बन जाता है।

मुझे अपने हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० के बाज़ ख़ुद्दाम[7] के मुताल्लिक़ मालूम है कि जब उनको यह सूरते कश्फ़ पैदा होने लगी, तो हज़रत ने चंद रोज़ के लिए एहतमाम से सब ज़िक्र शुग्ल छुड़ा दिया था कि मुबादा यह हालत तरक़्क़ी पकड़ जाये।

इसके अलावा यह हज़रात इसलिए भी बचते हैं कि इस सूरत में दूसरों के गुनाहों का इज़्हार होता है, जो इन हज़रात के लिए तकद्दुर का सबब होता है।

अल्लामा शारानी ने 'मीज़ानुल कुबरा' में लिखा है कि हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु जब किसी शख़्स को वुज़ू करते हुए देखते, तो उस पानी में जो गुनाह धुलता हुआ नज़र आता, उसको मालूम कर लेते। यह भी मालूम हो जाता कि कबीरा गुनाह है या सग़ीरा, मक्रूह फ़ेल है या ख़िलाफ़े औला, जैसा कि हिस्सी[8] चीज़ें नज़र आया करती हैं इसी तरह यह भी मालूम हो जाता था।

चुनांचे एक मर्तबा कूफ़ा की जामा मस्जिद के वुज़ू ख़ाने में तशरीफ़ फ़र्मा

---

1. पूरी तरह, 2. मन की ज्योति, 3. पत्थर वग़ैरह, 4. जानवर, 5. नुक़्सान पहुचाने वाला, 6. नया सीखने वाला, 7. नौकर-चाकर, ख़िदमत करने, 8. यानी नज़र आने वाली चीज़ें,

थे। एक जवान वुज़ू कर रहा था। उसके वुज़ू का पानी गिरते हुए, आपने देखा, उसको चुपके से नसीहत फ़र्मायी कि बेटा, वालिदैन की नाफ़र्मानी से तौबा कर ले। उसने तौबा की। एक दूसरे शख़्स को देखा तो उसको नसीहत फ़र्मायी कि भाई ज़िना न किया कर, बहुत बुरा ऐब है। उस वक़्त उसने भी ज़िना से तौबा की। एक और शख़्स को देखा कि शराबख़ोरी और लह्व व लअिब का पानी गिर रहा है, उसको भी नसीहत फ़र्मायी। उसने भी तौबा की। अलग़रज इसके बाद इमाम रह० ने अल्लाह जल्ल जलालुहू से दुआ की कि ऐ अल्लाह इस चीज को मुझसे दूर फ़र्मा दे कि मैं लोगों की बुराइयों पर मुत्तला होना नहीं चाहता। हक़ तआला शानुहू ने दुआ क़ुबूल फ़र्मा ली और यह चीज ज़ायल हो गयी। कहते हैं कि उसी ज़माने में इमाम साहब रह० ने मुस्तामल पानी के नापाक होने का फ़त्वा दिया था, क्योंकि जब वह पानी गंदा और मुतअफ़्फ़िन[1] नजर आता था, तो कैसे उसको पाक फ़र्माते, मगर जब यह चीज ज़ायल हो गयी, तो उसको नापाक फ़र्माना भी छोड़ दिया।

हमारे हजरत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के ख़ुद्दाम में एक साहब थे, जो कई-कई रोज इस वजह से इस्तिंजा नहीं जा सकते थे कि हर जगह अन्वार नजर आते थे।

और भी सैकड़ों-हजारों वाक़िआत इस क़िस्म के हैं, जिनमें किसी क़िस्म के तरद्दुद की गुन्जाइश नहीं कि जिन लोगों को कश्फ़ से कोई हिस्सा मिलता है, वह उस हिस्से के बक़द्र अह्वाल को मालूम कर लेते हैं।

(١٣) عَنْ اُمِّ هَانِیٍ رض قَالَتْ مَرَّ بِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ کَبِرْتُ وَضَعُفْتُ اَوْ کَمَا قَالَتْ فَمُرْنِیْ بِعَمَلٍ اَعْمَلُهٗ وَاَنَا جَالِسَةٌ قَالَ سَبِّحِی اللّٰهَ مِائَةَ تَسْبِیْحَةٍ فَاِنَّهٗ تَعْدِلُ لَکِ مِائَةَ رَقَبَةٍ تُعْتِقُهَا مِنْ وُلْدِ اِسْمٰعِیْلَ وَاحْمَدِی اللّٰهَ مِائَةَ تَحْمِیْدَةٍ فَاِنَّهَا تَعْدِلُ لَکِ مِائَةَ فَرَسٍ مُسْرَجَةٍ مُلْجَمَةٍ تَحْمِلِیْنَ عَلَیْهَا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَکَبِّرِی اللّٰهَ مِائَةَ تَکْبِیْرَةٍ فَاِنَّهَا تَعْدِلُ لَکِ مِائَةَ بَدَنَةٍ مُقَلَّدَةٍ مُتَقَبَّلَةٍ وَهَلِّلِی اللّٰهَ مِائَةَ تَهْلِیْلَةٍ قَالَ اَبُوْ خَلَفٍ اَحْسِبُهٗ قَالَ تَمْلَاُ مَا بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَلَا یُرْفَعُ لِاَحَدٍ عَمَلٌ اَفْضَلُ مِمَّا یُرْفَعُ لَکِ اِلَّا اَنْ یَّاْتِیَ بِمِثْلِ مَا اَتَیْتِ رواه احمد باسناد حسن واللفظ له والنسائی ولم یقل ولا یرفع الی اخره والبیهقی بتمامه وابن ابی الدنیا فجعل ثواب الرقاب فی التحمید والفرس فی التسبیح وابن ماجة بمعناه باختصار والطبرانی فی الکبیر بنحو احمد ولم یقل احسبه وفی الاوسط باسناد حسن بمعناه کذا فی الترغیب باختصا

1. बदबूदार,

قلت رواه الحاكم بمعناه وصححه وعزاه فی الجامع الصغیر الی احمد والطبرانی والحاکم ورقم له بالصحة وذکره فی مجمع الزوائد بطرق وقال اسانیدهم حسنة وفی الترغیب ایضا عن ابی امامة مرفوعا بنحو حدیث الباب مختصرا وقال رواه الطبرانی ورواته رواة الصحیح خلا سلیم بن عثمان الفوزی یکشف حاله فانه لا یحضرنی الآن فیه جرح ولا عدالة اھ وفی الباب عن سلمی ام بنی ابی رافع قالت یا رسول الله اخبرنی بکلمات ولا تکثر علی الحدیث مختصرا وفیه التکبیر والتسبیح عشرا عشرا اللهم اغفر لی عشرا قال المنذری رواه الطبرانی ورواته محتج بهم فی الصحیح اھ قلت وبمعناه عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن جده مرفوعا بلفظ مَنْ سَبَّحَ اللهَ مِائَةً بِالْغَدَاةِ وَمِائَةً بِالْعَشِیِّ کَانَ کَمَنْ حَجَّ مِائَةَ حَجَّةٍ الحدیث وجعل فیه التحمید کمن حمل علی مائة فرس والتهلیل کمن اعتق مائة رقبة من ولد اسمعیل ذکره فی المشکوة بروایة الترمذی وقال حسن غریب

13. हज़रत उम्मेहानी रजि० फ़र्माती हैं, एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ लाए। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! मैं बूढ़ी हो गयी हूं और ज़ईफ़[1] हूं, कोई अमल ऐसा बता दीजिए कि बैठे-बैठे करती रहा करूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो। इसका सवाब ऐसा है गोया तुम ने सौ ग़ुलाम अरब आज़ाद किए और अल्हम्दु लिल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसा है गोया तुमने सौ घोड़े मय सामान लगाम वग़ैरह जिहाद में सवारी के लिए दे दिए। और अल्लाहु अक्बर सौ मर्तबा पढ़ा करो। यह ऐसा है गोया तुमने सौ ऊंट क़ुर्बानी में ज़िब्ह किये और वह क़ुबूल हो गये और लाइला ह इल्लल्लाहु सौ मर्तबा पढ़ा करो, इसका सवाब तो तमाम आसमान-ज़मीन के दर्मियान को भर देता है, इससे बढ़ कर किसी का कोई अमल नहीं, जो मक़्बूल हो।

हज़रत अबूराफ़िअ रजि० की बीवी हज़रत सल्मा रजि० ने भी हुज़ूर सल्ल० से अर्ज किया कि मुझे कोई वज़ीफ़ा मुख़्तसर-सा बता दीजिए, ज़्यादा लंबा न हो, (हुज़ूर सल्ल० ने) इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाहु अक्बर दस मर्तबा पढ़ा करो। अल्लाह जल्ल शानुहू उसके जवाब में फ़र्माते हैं कि यह मेरे लिए है। फिर सुब्हानल्लाह दस मर्तबा कहा करो। अल्लाह तआला फिर यही फ़र्माते हैं कि यह मेरे लिए है, फिर

1. कमज़ोर,

अल्लहुम्मग़िफ़रली दस मर्तबा कहा करो। हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं हां, मैंने मग़फ़िरत कर दी। दस मर्तबा तुम अल्लाहुम्मग़िफ़रली कहो (दस मर्तबा अल्लाह जल्ले शानुहू फ़र्माते हैं कि मैंने मग़फ़िरत कर दी।)

फ़– ज़ुअफ़ा[1] और बूढ़ों के लिए बिल् ख़ुसूस औरतों के लिए किस क़द्र सह्ल और मुख़्तसर चीज हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तज्वीज फ़र्मा दी है, देखिए ऐसी मुख़्तसर चीज़ों पर जिन में न ज़्यादा मशक़्क़त है, न चलना–फिरना है, कितने बड़े–बड़े सवाबों का वायदा है। कितनी कम नसीबी होगी कि अगर उनको वसूल न किया जाये।

हजरत उम्मे सुलैम रजि॰ कहती हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज किया कोई चीज मुझे तालीम फ़र्मा दीजिए, जिसके ज़रिए से नमाज में दुआ किया करूं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़र्माया कि–

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' – 10–10 मर्तबा पढ़ लिया करो और जो चाहे उसके बाद दुआ किया करो। दूसरी हदीस में इसके बाद यह इर्शाद है जो चाहे दुआ किया करो हक़ तआला शानुहू उस दुआ पर फ़र्माते हैं, हां, हां (मैंने क़ुबूल की) कितने सह्ल और मामूली अल्फ़ाज हैं, जिनको न याद करना पड़ता है, न इनमें कोई मेहनत उठानी पड़ती है। दिन भर हम लोग बकवास में गुजार देते हैं, तिजारत के साथ दुकान पर बैठे–बैठे या खेती के साथ ज़मीन के इंतिजामात में मशग़ूल रहते हुए, अगर ज़बान से इन तस्बीहों को पढ़ते रहें, तो दुनियां की कमाई के साथ ही आख़िरत की कितनी बड़ी दौलत हाथ आ जाये।

(١٤) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ مَلٰٓئِكَةً يَطُوْفُوْنَ فِى الطُّرُقِ
يَلْتَمِسُوْنَ اَهْلَ الذِّكْرِ فَاِذَا وَجَدُوْا قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ
اللّٰهَ تَنَادَوْا هَلُمُّوْا اِلٰى حَاجَتِكُمْ فَيَحُفُّوْنَهُمْ
بِاَجْنِحَتِهِمْ اِلَى السَّمَآءِ فَاِذَا تَفَرَّقُوْا عَرَجُوْا
وَصَعِدُوْا اِلَى السَّمَآءِ فَيَسْاَلُهُمْ رَبُّهُمْ وَهُوَ
يَعْلَمُ مِنْ اَيْنَ جِئْتُمْ فَيَقُوْلُوْنَ جِئْنَا مِنْ عِنْدِ عِبَادٍ
لَكَ يُسَبِّحُوْنَكَ وَيُكَبِّرُوْنَكَ وَيُمَجِّدُوْنَكَ فَيَقُوْلُ
هَلْ رَاَوْنِىْ فَيَقُوْلُوْنَ لَا فَيَقُوْلُ كَيْفَ لَوْ رَاَوْنِىْ
فَيَقُوْلُوْنَ لَوْ رَاَوْكَ كَانُوْا اَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً وَّاَشَدَّ
لَكَ تَمْجِيْدًا وَّاَكْثَرَ لَكَ تَسْبِيْحًا فَيَقُوْلُ فَمَا يَسْاَلُوْنَ
فَيَقُوْلُوْنَ يَسْاَلُوْنَكَ الْجَنَّةَ فَيَقُوْلُ وَهَلْ رَاَوْهَا
فَيَقُوْلُوْنَ لَا فَيَقُوْلُ فَكَيْفَ لَوْ رَاَوْهَا فَيَقُوْلُوْنَ
لَوْ اَنَّهُمْ رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا وَّاَشَدَّ لَهَا

طَلَبًا وَاَعْظَمَ فِيْهَا رَغْبَةً قَالَ فَمِمَّ يَتَعَوَّذُوْنَ يَقُوْلُوْنَ
يَتَعَوَّذُوْنَ مِنَ النَّارِ فَيَقُوْلُ وَهَلْ رَاَوْهَا فَيَقُوْلُوْنَ
لَا فَيَقُوْلُ فَكَيْفَ لَوْ رَاَوْهَا فَيَقُوْلُوْنَ لَوْ اَنَّهُمْ
رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا وَاَشَدَّ لَهَا مَخَافَةً
فَيَقُوْلُ اُشْهِدُكُمْ اَنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ فَيَقُوْلُ
مَلَكٌ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ فُلَانٌ لَيْسَ مِنْهُمْ اِنَّمَا جَآءَ
لِحَاجَةٍ قَالَ هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ
رواه البخاري ومسلم والبيهقي في الاسماء
والصفات كذا في الدر والمشكوة۔

14. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि फ़रिश्तों की एक जमाअत है, जो रास्तों वग़ैरह में गश्त करती रहती है और जहां कहीं उनको अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मिलते हैं, तो वह आपस में एक दूसरे को बुलाकर सब जमा हो जाते हैं और ज़िक्र करने वालों के गिर्द आसमान तक जमा होते रहते हैं। जब वह मज्लिस ख़त्म हो जाती है तो वह आसमान पर जाते हैं। अल्लाह जल्ल जलालुहू बावजूदे कि हर चीज को जानते हैं, फिर भी दर्याफ़्त फ़र्माते हैं कि तुम कहां से आये हो ? वह अर्ज करते हैं कि तेरे बन्दों की फ़्लां जमाअत के पास से आये हैं, जो तेरी तस्बीह और तक्बीर और तह्मीद (बड़ाई बयान करने) और तारीफ़ करने में मशग़ूल थे। इर्शाद होता है, क्या इन लोगों ने मुझे देखा है, अर्ज करते हैं, या अल्लाह! देखा तो नहीं। इर्शाद होता है कि अगर वह मुझे देख लेते तो क्या हाल होता ? अर्ज करते हैं कि और भी ज़्यादा इबादत में मश्ग़ूल होते और इससे भी ज़्यादा तेरी तारीफ़ और तस्बीह में मुन्हमिक होते।[1] इर्शाद होता है कि वह क्या चाहते हैं ? अर्ज करते हैं कि वह जन्नत चाहते हैं। इर्शाद होता है, क्या उन्होंने जन्नत को देखा है अर्ज़ करते हैं कि देखा तो नहीं इर्शाद होता है अगर देख लेते तो क्या होता? अर्ज करते हैं कि इससे भी ज़्यादा शौक़ और तमन्ना और उसकी तलब में लग जाते। फिर इर्शाद होता है कि किस चीज से पनाह मांग रहे थे। अर्ज करते हैं जहन्नम से पनाह मांग रहे थे। इर्शाद होता है कि क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है ? अर्ज करते हैं कि देखा तो है नहीं। इर्शाद होता है कि अगर देखते तो क्या होता ? अर्ज करते हैं, और भी ज़्यादा इससे भागते और बचने की कोशिश करते। इर्शाद होता है अच्छा, तुम गवाह रहो कि मैंने इस मज्लिस वालों को सब को बख़्श दिया। एक फ़रिश्ता अर्ज करता है, या अल्लाह ! फ़्लां शख़्स उस मज्लिस में इत्तिफ़ाक़न अपनी किसी ज़रूरत से आया था। वह इस मज्लिस का शरीक नहीं था। इर्शाद होता है कि यह जमाअत ऐसी मुबारक है कि उनके पास बैठने वाला भी महरूम नहीं होता (लिहाजा उसको भी बख़्श दिया।)

---

1. यानी लगे रहते,

फ़— इस क़िस्म का मज़्मून मुतअद्दद अहादीस में वारिद हुआ है कि फ़रिश्तों की एक जमाअत ज़िक्र की मजालिस और ज़िक्र करने वाली जमाअतों और अफ़राद की तलाश में रहती है और जहां मिल जाती है, उनके पास यह जमाअत बैठती है, उनका ज़िक्र सुनती है। चुनांचे पहले बाब की हदीस न० (8) में यह मज़्मून गुज़र चुका है और उसमें यह गुज़र चुका है कि फ़रिश्तों से तफ़ाख़ुर[1] के तौर पर अल्लाह जल्ल जलालुहू उसका ज़िक्र क्यों फ़र्माते हैं। फ़रिश्ते का यह अर्ज़ करना कि एक शख़्स मज्लिस में ऐसा भी था कि जो अपनी ज़रूरत से आया था, वाक़िआ का इज़हार है कि उस वक़्त यह हज़रात बमंज़िला गवाहों[2] के हैं और इन लोगों की इबादत और ज़िक्रुल्लाह में मश्गूली की गवाही दे रहे हैं। इसी वजह से इसके इज़्हार की ज़रूरत पेश आयी कि मुबादा एतराज़ हो जाये, लेकिन यह अल्लाह का लुत्फ़ है कि ज़ाकिरीन की बरकत से उनके पास अपनी ज़रूरत से बैठने वाले को भी महरूम न फ़र्माया।

अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ (سورۃ توبہ، رکوع ١٥)

'या ऐयुहल्लज़ी न आमनु त्तक़ुल्ल ह व कूनू मअस्सादिक़ीन० (सूरः तौबः, रुकूअ 15) (ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।)

सूफ़िया का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल जलालुहू के साथ रहो और अगर यह नहीं हो सकता तो फिर उन लोगों के साथ रहो, जोकि अल्लाह तआला के साथ रहते हैं।

अल्लाह तआला के साथ रहने का मतलब यह है जैसा कि सही बुख़ारी में इर्शाद है, हक़ तआला फ़र्माते हैं कि बन्दा नवाफ़िल के ज़रिए मेरे क़ुर्ब में तरक़्क़ी करता रहता है, यहां तक कि मैं उसको अपना महबूब बना लेता हूं और जब मैं महबूब बना लेता हूं, तो मैं उसका कान बन जाता हूं, जिससे वह सुने, उसकी आंख बन जाता हूं जिससे देखे, उसका हाथ बन जाता हूं, जिससे पकड़े, उसका पांव बन जाता हूं, जिससे वह चले। जो वह मुझसे मांगता है, मैं उसको देता हूं।

हाथ-पांव बन जाने का मतलब यह है कि उसका हर काम अल्लाह की रिज़ा और मुहब्बत के ज़ैल[3] में होता है, उसका कोई अमल भी अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं होता।

सूफ़िया के अह्वाल और उनके वाक़िआत जो कसरत से तवारीख़ में मौजूद

---

1 फ़ख़्र करने के तौर पर, 2. गवाहों जैसे, 3. अल्लाह की मुहब्बत के मातहत होता है,

हैं, वह शाहिदे अद्ल हैं और वह इतनी कसरत से हैं कि उनके इंकार की भी गुंजाइश नहीं। एक रिसाला इस बाब में 'नुज़्हतुल बसातीन' के नाम में मशहूर है, जिससे इस क़िस्म के हालात का पता चलता है।

शेख़ अबूबक्र कत्तानी रह० कहते हैं कि एक मर्तबा हज के मौक़े पर मक्का मुकर्रमा में चंद सूफ़िया का इज्तिमाअ था, जिनमें सबसे कम उम्र हज़रत जुनैद बग़दादी रह० थे। उस मज्मे में मुहब्बतेइलाही पर बहस शुरू हुई कि मुहिब्ब[1] कौन है? मुख़्तलिफ़ हज़रात मुख़्तलिफ़ इर्शादात फ़र्माते रहे। हज़रत जुनैद रह० चुप रहे। उन हज़रात ने उनसे फ़र्माया, तुम भी कुछ कहो। उस पर उन्होंने सर झुका कर रोते हुए फ़र्माया कि आशिक़ वह है जो अपनी ख़ुदी से जाता रहे, ख़ुदा के ज़िक्र के साथ वाबस्ता हो गया हो और उसका हक़ अदा करता हो, दिल से अल्लाह की तरफ़ देखता हो, उसके दिल को अन्वारे हैबत ने जला दिया हो, उसके लिए ख़ुदा का ज़िक्र शराब का प्याला हो, अगर कलाम करता हो, तो अल्लाह ही का कलाम हो, गोया हक़ तआला शानुहू ही उसकी ज़बान से कलाम फ़र्माता है, अगर हरकत करता हो तो अल्लाह ही के हुक्म से, अगर तस्कीन पाता हो, तो अल्लाह ही के साथ। और जब यह हालत हो जाती है तो फिर खाना-पीना, सोना-जागना सब कारोबार अल्लाह ही की रिज़ा के वास्ते हो जाते हैं, न दुनिया का रस्म व रिवाज क़ाबिले इल्तिफ़ात[2] रहता है, न लोगों के ताने-तिश्ने क़ाबिले वक़अत।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० मशहूर ताबई हैं। बड़े मुहद्दिसीन में शुमार है। उनकी ख़िदमत में एक शख़्स अब्दुल्लाह बिन अबी विदाअ रह० कसरत से हाज़िर हुआ करते थे। एक मर्तबा चंद रोज़ हाज़िर न हो सके। कई रोज़ के बाद जब हाज़िर हुए तो हज़रत सईद रह० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कहां थे? अर्ज किया कि मेरी बीवी का इंतक़ाल हो गया है। उसकी वजह से मशाग़िल में फंसा रहा। फ़र्माया हमको ख़बर न की, हम भी जनाज़े में शरीक होते। थोड़ी देर के बाद मैं उठ कर आने लगा। फ़र्माया दूसरा निकाह कर लिया। मैंने अर्ज किया, हज़रत! मुझसे कौन निकाह कर देगा? दो-तीन आने की मेरी हैसियत है। आपने फ़र्माया, हम कर देंगे। और यह कह कर ख़ुत्बा पढ़ा और अपनी बेटी का निकाह निहायत मामूली मह्र, आठ-दस आने पर मुझसे कर दिया। (इतनी मिक़्दार मह्र की उनके नज़दीक जायज़ होगी, जैसा कि बाज़ इमामों का मज़हब है। हनफ़ीया के नज़दीक ढाई रुपये से कम जायज़ नहीं) निकाह के बाद मैं उठा और अल्लाह ही को मालूम है कि मुझे किस क़दर मसर्रत

---

1. आशिक़, 2. ध्यान देने के क़ाबिल

थी। ख़ुशी में सोच रहा था कि रुख़्सती के इंतिज़ाम के लिए किससे क़र्ज़ मांगू ? क्या करूं? इसी फ़िक्र में शाम हो गयी। मेरा रोज़ा था, मग़रिब के वक़्त रोज़ा इफ़्तार किया, नमाज़ के बाद घर आया, चिराग़ जलाया, रोटी और ज़ैतून का तेल मौजूद था, उसको खाने लगा कि किसी शख़्स ने दरवाज़ा खटखटाया, मैंने पूछा, कौन है? कहा, सईद है। मैं सोचने लगा कि कौन सईद है, हज़रत की तरफ़ मेरा ख़्याल भी न गया कि चालीस वर्ष से अपने घर या मस्जिद के सिवा कहीं आना-जाना था ही नहीं, बाहर आकर देखा कि सईद बिन मुसय्यिब रह० हैं। मैंने अर्ज़ किया आपने मुझे न बुला लिया। फ़र्माया, मेरा ही आना मुनासिब था मैंने अर्ज़ किया क्या इर्शाद है फ़र्माया मुझे यह ख़्याल आया कि अब तुम्हारा निकाह हो चुका है, तंहा रात को सोना मुनासिब नहीं, इसलिए तुम्हारी बीवी को लाया हूं। यह फ़र्मा कर अपनी लड़की को दरवाज़े के अंदर कर दिया और दरवाज़ा बंद करके चले गये। वह लड़की शर्म की वजह से गिर गयी। मैंने अंदर से किवाड़ बंद किये और वह रोटी और तेल, जो चिराग़ के सामने रखा था, वहां से हटा दिया कि इसकी नज़र न पड़े और मकान की छत पर चढ़ कर पड़ोसियों को आवाज़ दी। लोग जमा हो गये, तो मैंने कहा कि हज़रत सईद रह० ने अपनी लड़की से मेरा निकाह कर दिया है और इस वक़्त वह उसको ख़ुद ही पहुंचा गये हैं। सबको बड़ा ताज्जुब हुआ, कहने लगे, वाक़ई वह तुम्हारे घर में है ? मैंने कहा, हां। इसका चर्चा हुआ, मेरी वालिदा को ख़बर हुई। वह भी उसी वक़्त आ गयीं और कहने लगीं कि अगर तीन दिन तक तूने उसको छेड़ा, तो तेरा मुंह न देखूंगी। हम तीन दिन में उस की तैयारी कर लें। तीन दिन के बाद जब मैं उस लड़की से मिला, तो देखा निहायत ख़ूबसूरत, क़ुरआन शरीफ़ की भी हाफ़िज़, और सुन्नते रसूल से भी बहुत ज़्यादा वाक़िफ़, शौहर के हुक़ूक़ से भी बहुत ज़्यादा बा-ख़बर। एक महीने तक न तो हज़रत सईद रह० मेरे पास आये, न मैं उनकी ख़िदमत में गया। एक माह के बाद मैं हाज़िर हुआ तो वहां मज्मा था। मैं सलाम करके बैठ गया। जब सब चले गये, तो फ़र्माया, इस आदमी[1] को कैसा पाया ? मैंने अर्ज़ किया, निहायत बेहतर है कि दोस्त देख कर ख़ुश हों, दुश्मन जलें। फ़र्माया अगर कोई बात नागवार हो तो लकड़ी से ख़बर लेना। मैं वापस आ गया तो एक आदमी को भेजा, जो बीस हज़ार दिरहम (तक़रीबन पांच हज़ार रु०) मुझे दे गया। उस लड़की को अब्दुल् मलिक बिन मर्वान बादशाह ने अपने बेटे वलीद के लिए, जो वली अह्द[2] भी था, मांगा था, मगर हज़रत सईद ने उज़्र कर दिया था, जिसकी वजह से अब्दुल मलिक नाराज़ भी हुआ और एक हीले[3] से हज़रत सईद रह० के सौ कोड़े सख़्त सर्दी में लगवाये

---

1. यानी हज़रत सईद रज़ि० की बेटी, 2. जानशीन, 3. झूठा बहाना,

और पानी का घड़ा उन पर गिरवाया।

١٥ - عَنِ ابْنِ عُمَرَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ كُتِبَتْ لَهُ بِكُلِّ حَرْفٍ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَمَنْ اَعَانَ عَلٰى خُصُوْمَةٍ بَاطِلٍ لَمْ يَزَلْ فِىْ سَخَطِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْزِعَ وَمَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُوْنَ حَدٍّ مِّنْ حُدُوْدِ اللّٰهِ فَقَدْ ضَادَّ اللّٰهَ فِىْ اَمْرِهٖ وَمَنْ بَهَتَ مُؤْمِنًا اَوْ مُؤْمِنَةً حَبَسَهُ اللّٰهُ فِىْ رَدْغَةِ الْخَبَالِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حَتّٰى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ وَلَيْسَ بِخَارِجٍ رواه الطبرانى فى الكبير والاوسط ورجالهما رجال الصحيح كذا فى مجمع الزوائد قلت اخرج ابوداود بدون ذكر التسبيح فيه

15. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स 'सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर पढ़े, हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियां मिलेंगी और जो शख़्स किसी झगड़े में ना हक़ की हिमायत करता है वह अल्लाह के ग़ुस्से में रहता है, जब तक कि उससे तौबा न करे और जो अल्लाह की किसी सज़ा में सिफ़ारिश करे (और शरअी सज़ा के मिलने में हारिज[1] हो) वह अल्लाह का मुक़ाबला करता है और जो शख़्स किसी मोमिन मर्द या औरत पर बुहतान बांधे, वह क़यामत के दिन 'रद्ग़तुल ख़बाल' में क़ैद किया जायेगा, यहां तक कि उस बुहतान से निकले और किस तरह उससे निकल सकता है।

फ़- ना-हक़ की हिमायत हमारी तबीअत बन गयी है। एक चीज को हम समझते हैं कि हम ग़लती पर हैं, मगर रिश्तेदारों की तरफ़दारी है, पार्टी का सवाल है, लाख अल्लाह के ग़ुस्से में दाख़िल हों, अल्लाह की नाराज़गी हो, उसका इताब हो, मगर कुंबा-बिरादरी की बात के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, हम उस ना-हक़ करने वाले को टोक न सकें और सुकूत करें, यह भी नहीं, बल्कि हर तरह से उसकी हिमायत करेंगे। अगर उस पर कोई दूसरा मुतालबा करने वाला खड़ा हो, तो उस का मुक़ाबला करेंगे, किसी दोस्त ने चोरी की, ज़ुल्म किया, अय्याशी की, उसके हौसले बुलंद करेंगे, उसकी हर तरह मदद करेंगे। क्या यही है हमारे ईमान का मुक़्तज़ा, यही है दीनदारी, इसी पर इस्लाम के साथ हम फ़ख़्र करते हैं, या अपने इस्लाम को दूसरों की निगाह में भी बदनाम करते हैं और अल्लाह के यहां ख़ुद भी ज़लील होते हैं ?

1. हरज (रुकावट पैदा करने वाला,)

एक हदीस में है कि जो शख़्स अस्बियत[1] पर किसी को बुलाये, या अस्बियत पर लड़े, वह हममें से नहीं है ?

दूसरी हदीस में है कि अस्बियत से यह मुराद है कि ज़ुल्म पर अपनी क़ौम की मदद करे।

'रद्ग़तुल ख़बाल वह कीचड़ है जो जहन्नमी लोगों के लहू-पीप वग़ैरह से जमा हो जाये, किस क़दर गंदी और अज़ीयत देने वाली जगह है, जिसमें ऐसे लोगों को क़ैद कर दिया जायेगा, जो मुसलमानों पर बोहतान बांधते हों, आज दुनियां में बहुत सरसरी मालूम होता है कि जिस शख़्स के मुताल्लिक़ जो चाहा, मुंह भर कर कह दिया, कल जब ज़बान से कही हुई हर बात को साबित करना पड़ेगा और सबूत भी वही जो शरअन् मोतबर हो, दुनिया की तरह नहीं कि चर्ब लिसानी[2] और झूठी बातें मिलाकर दूसरों को चुप कर दिया जाये, उस वक़्त आंखें खुलेंगी। कि हमने क्या कहा था और क्या निकला ?

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी बाज़ कलाम ज़बान से ऐसा निकालता है जिसकी परवाह भी नहीं करता, लेकिन उसकी वजह से जहन्नम में फेंक दिया जाता है।

एक हदीस में है कि आदमी बाज़ी बात सिर्फ़ इस वजह से कहता है कि लोग ज़रा हंस पड़ेंगे, लेकिन उसकी वजह से इतनी दूर जहन्नम में फेंक दिया जाता है, जितनी दूर आसमान से ज़मीन है, फिर इर्शाद फ़र्माया, ज़बान की लग़्ज़िश[2] पांव की लग़्ज़िश से ज़्यादा सख़्त है।

एक हदीस में है, जो शख़्स किसी को किसी गुनाह से आर[3] दिलाये वह ख़ुद मरने से पहले उस गुनाह में मुब्तला होता है।

इमाम अहमद रह० फ़र्माते हैं कि वह गुनाह मुराद है, जिससे गुनाहगार तौबा कर चुका हो।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ज़बाने मुबारक को पकड़ कर खींचते थे कि तेरी बदौलत हम हलाकतों में पड़ते हैं।

---

1. यानी अपनी क़ौम या बिरादरी की मदद ना-हक़ काम में करे, 2. लम्बी-लम्बी बातें बनाना डींगे हांकना, 2. डगमगाना, झटकाव, ग़लत काम, 3. शर्म ग़ैरत,

इब्नुल् मुंकदिर रह० मशहूर मुहद्दिसीन में हैं और ताबई हैं। इंतिक़ाल के वक़्त रोने लगे। किसी ने पूछा, क्या बात है ? फ़रमाने लगे मुझे कोई गुनाह तो ऐसा मालूम नहीं जो मैंने किया हो, इस पर रोता हूं कि कोई बात ऐसी हो गयी हो, जिसको मैंने सरसरी समझा हो और वह अल्लाह के नजदीक सख़्त हो।

١٦- عَنْ اَبِىْ بَرْزَةَ الْاَسْلَمِىِّ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ بِاٰخِرِهٖ اِذَا اَرَادَ اَنْ يَّقُوْمَ مِنَ الْمَجْلِسِ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّكَ لَتَقُوْلُ قَوْلًا مَا كُنْتَ تَقُوْلُهٗ فِيْمَا مَضٰى قَالَ كَفَّارَةٌ لِّمَا يَكُوْنُ فِى الْمَجْلِسِ

رواه ابن ابى شيبة وابوداؤد والنسائى والحاكم وابن مردويه كذا فى الدر وفيه ايضا برواية ابن ابى شيبة عن ابى العالية بزيادة علمنيهن جبرئيل-

16. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल अख़ीर ज़माना उम्र शरीफ़ में यह था कि जब मज्लिस से उठते तो– 'सुब्हान कल्लाहुम म व बिहम्दि क अश्हदुअल्ला इला ह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरु क व अतूबु इलै क० पढ़ा करते। किसी ने अर्ज किया कि आजकल एक दुआ का मामूल हुज़ूर सल्ल० का है, पहले तो यह मामूल नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह मज्लिस का कफ़्फ़ारा है।

दूसरी रिवायत में भी यह क़िस्सा मज़्कूर है, उसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह क़िस्सा मंक़ूल है कि यह कलिमात मज्लिस का कफ़्फ़ारा हैं, हजरत जिब्रील अलै० ने मुझे बताये हैं।

फ़– हजरत आइशा रज़ि० से भी नक़्ल किया गया है कि नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी मज्लिस से उठते तो–

'सुब्हा न क ल्लाहुम्म रब्बी व बिहम्दि क ला इला ह इल्ला अन्त अस्तग़्फ़िरु क व अतूबु इलै क' पढ़ते। मैंने अर्ज किया कि आप इस दुआ को बड़ी कसरत से पढ़ते हैं। इर्शाद फ़र्माया कि जो शख़्स मज्लिस के ख़त्म पर इसको पढ़ लिया करे तो उस मज्लिस में जो लग़्ज़िशें उससे हुई हों, वह सब माफ़ हो जायेंगी।

मजालिस में उमूमन फ़ुज़ूल बातें, बेकार तज़्किरे हो ही जाते हैं। कितनी मुख़्तसर दुआ है, अगर कोई शख़्स इन दुआओं में से कोई सी एक दुआ पढ़ ले, तो मज्लिस के वबाल से ख़लासी पा सकता है। हक़ तआला शानुहू ने कैसी-कैसी सहूलतें

मरहमत फ़र्मायी है।

١٧- عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ مِنْ جَلَالِ اللّٰهِ مِنْ تَسْبِيْحِهٖ وَتَحْمِيْدِهٖ وَتَكْبِيْرِهٖ وَتَهْلِيْلِهٖ يَتَعَاطَفْنَ حَوْلَ الْعَرْشِ لَهُنَّ دَوِيٌّ كَدَوِيِّ النَّحْلِ يَذْكُرْنَ بِصَاحِبِهِنَّ اَلَا يُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ لَّا يَزَالَ لَهٗ عِنْدَ اللّٰهِ شَيْءٌ يُّذَكِّرُ بِهٖ. رواه احمد والحاكم وقال صحيح الاسناد قال الذهبي موسى بن سالم قال ابوحاتم منكر الحديث ولفظ الحاكم كدوي النحل يقلن لصاحبهن واخرجه بسند واخرى صحح على شرط مسلم واقر عليه الذهبي وفيه كدوي النحل يذكرن بصاحبهن-

17. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो लोग अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करते हैं यानी 'सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाहि, अल्लाहु अक्बर, लाइला ह इल्लल्लाहु' पढ़ते हैं, तो यह कलिमात अर्श के चारों तरफ़ गश्त लगाते हैं कि इसके लिए हल्की सी आवाज़ (भिनभिनाहट) होती है और अपने पढ़ने वाले का तज़्किरा करते हैं, क्या तुम यह नहीं चाहते कि कोई तुम्हारा तज़्किरा करने वाला अल्लाह के पास मौजूद हो, जो तुम्हारा ज़िक्रे ख़ैर करता रहे।

फ़– जो लोग हुक्काम रस[1] हैं, कुर्सी नशीन कहलाते हैं, कोई उनसे पूछे कि बादशाह नहीं, वज़ीर नहीं, वायसराय को भी छोड़ दीजिए, किसी गवर्नर के यहां उनकी तारीफ़ हो जाये, उसका ज़िक्र ख़ैर आ जाये, फूले नहीं समाते, दिमाग़ आसमान पर पहुंच जाता है, हालांकि उस तज़्किरे से न तो दीन का नफ़ा, न दुनिया का, दीन का नफ़ा न होना तो ज़ाहिर और खुला हुआ है और दुनियां का न होना इस वजह से कि शायद जितना नफ़ा इस क़िस्म के तज़्किरों से होता हो, उससे ज़्यादा नुक़्सान इस नौअ के मर्तबे और तज़्किरे हासिल करने में पहुंच जाता है, जायदादें फ़रोख़्त करके सूदी क़र्ज़ लेकर ऐसे मर्तबे हासिल करने की कोशिश की जाती है, मुफ़्त की अदावतें[2] मोल ली जाती हैं और हर क़िस्म की ज़िल्लतें बर्दाश्त की जाती हैं। इलेक्शनों के मंज़र सबके सामने हैं कि क्या-क्या करना पड़ता है। इसके बिल-मुक़ाबल अल्लाह जल्ल जलालुहू के अर्श पर तज़्किरा, मालिकुल् मुल्क के हुज़ूर में तज़्किरा, उस पाक ज़ात के यहां तज़्किरा, जिसके क़ब्ज़े में दीन व दुनियां और सारे जहानों की हर चीज़ हैं, उस क़ुदरत वाले के यहां तज़्किरा, जिसके क़ब्ज़े में बादशाहों के दिल हैं, हाकिमों

---

1. हाकिमों तक पहुंच रखने वाले, 2. दुश्मनियां,

के इख़्तियारात उसके इख़्तियार में है, नफ़ा और नुक़्सान का वाहिद मालिक वही है, सारे जहान के तमाम आदमी हाकिम व महकूम, बादशाह व रिआया किसी को नुक़्सान पहुंचाना चाहें और वह मालिकुल् मुल्क न चाहे, तो कोई बाल भी बींका नहीं कर सकता, सारी मख़्लूक़ किसी को नफ़ा पहुंचाना चाहे और उसकी रिज़ा न हो, तो एक क़तरा पानी का नहीं मिल सकता– ऐसी पाक ज़ात के यहां अपना ज़िक्रे ख़ैर हो, कोई दौलत दुनियां की इसका मुक़ाबला कर सकती है, कोई इज़्ज़त दुनियां की ख़्वाह कितनी ही बड़ी हो जाये, इसकी बराबरी कर सकती है। नहीं हरगिज़ नहीं और इसके मुक़ाबले में दुनियां की किसी इज़्ज़त को अगर वक़ीअ[1] समझा जाये, तो क्या अपने ऊपर ज़ुल्म नहीं।

(۱۸) عَنْ يُسَيْرَةَ وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ قَالَتْ قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْكُنَّ بِالتَّسْبِيْحِ وَالتَّهْلِيْلِ وَالتَّقْدِيْسِ وَاعْقِدْنَ بِالْاَنَامِلِ فَاِنَّهُنَّ مَسْئُوْلَاتٌ مُسْتَنْطِقَاتٌ وَلَا تَغْفُلْنَ فَتَنْسَيْنَ الرَّحْمَةَ رواه الترمذي وابو داؤد كذا في المشكوة وفي المنهل اخرجه ايضا احمد والحاكم اه وقال الذهبي في تلخيصه صحيح وكذا رقم له بالصحة في الجامع الصغير وبسط صاحب الاتحاف في تخريجه وقال عبدالله بن عمرو رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يعقد التسبيح رواه ابوداؤد والنسائي والترمذي وحسنه والحاكم لكن في الاتحاف وبسط في تخريجه ثم قال قال الحافظ معنى العقد المذكور في الحديث احصاء العدد وهو اصطلاح العرب بوضع بعض الانامل على بعض عقد انملة اخرى فالاحاد والعشرات باليمين والمئون والالوف باليسار اه

18. हज़रत युसरा रज़ि० जो हिजरत करने वाली सहाबियात में से हैं, फ़र्माती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि अपने ऊपर तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) और तह्लील (ला इला ह इल्लल्लाह पढ़ना) और तक़्दीस (अल्लाह की पाकी बयान करना, मसलन सुब्हानल् मलिकिल क़ुद्दूस पढ़ना या सुब्बूहुनक़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल् मलाइकति वग़ैरह कहना) लाज़िम कर लो और उंगलियों पर गिना करो, इसलिए कि उंगलियों से क़यामत में सवाल किया जायेगा और उनसे जवाब तलब किया जायेगा कि क्या अमल किये और (जवाब में) गोयाई[2] दी जायेंगी और अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत न करना (अगर ऐसा करोगी तो अल्लाह

---

1. अहम, 2. बोलने की ताक़त,

की) रहमत से महरूम कर दी जाओगी।

फ़– क़यामत में आदमी के बदन से, उसके हाथ-पांव से भी सवाल होगा कि हर-हर हिस्सा-ए-बदन ने क्या-क्या नेक काम किये और क्या-क्या नाजायज़ और बुरे काम किये।

क़ुरआन पाक में मुतअद्दद जगह इसका ज़िक्र है। एक जगह इर्शाद है-

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ الآية

यौ म तश्हदु अलैहिम अल् सि न तुहूम व ऐदीहिम॰ (सूरः नूरः रुकूअ 3) 'जिस रोज़ उनके खि़लाफ़ गवाही देंगी उनकी ज़ुबानें, और उनके हाथ और उनके पांव उन कामों की (यानी गुनाहों की) जिनको यह करते थे।'

दूसरी जगह इर्शाद है-

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ الآيات (سورہ حم سجدہ ۳)

व यौ म् युह्शरु अअ्दाउल्लाहि इलन्नारि॰ (सूरः हाम्मीम सज्दा, 3)

इस जगह कई आयतों में इसका ज़िक्र है, जिनका तर्जुमा यह है कि 'जिस दिन (हश्र में) अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ जमा किये जायेंगे फिर उनको एक जगह रोक दिया जावेगा, फिर सब के सब उस जहन्नम के क़रीब आ जायेंगे, तो उनके कान, उनकी आंखें, उनकी खालें उन पर गवाहियां देंगी (और बतायेंगी कि हमारे ज़रिए से उस शख़्स ने क्या-क्या गुनाह किये।) उस वक़्त वह लोग (ताज्जुब से) उनसे कहेंगे कि तुमने हमारे खि़लाफ़ क्यों गवाही दी (हम तो दुनिया में तुम्हारी ही लज़्ज़त और राहत के वास्ते गुनाह करते थे,) वह जवाब देंगे कि हम को उस पाक अल्लाह ने गोयाई अता की जिसने सब चीज़ों को गोयाई अता फ़र्मायी। उसी ने तुमको भी अव्वल पैदा किया था और उसी के पास अब तुम लौटाये गये हो।

अहादीस में इस गवाही के मुतअद्दद वाकिआत ज़िक्र किये गये हैं-

एक हदीस में वारिद है कि क़यामत के दिन काफ़िर बावजूद कि अपनी बद-आमालियों को जानता होगा फिर भी इन्कार करेगा कि मैंने गुनाह नहीं किये। उससे कहा जायेगा कि यह तेरे पड़ोसी तुझ पर गवाही देते हैं। वह कहेगा कि यह लोग दुश्मनी से झूठ बोलते हैं। फिर कहा जायेगा कि तेरे अज़ीज़ अक़ारिब गवाही देते हैं, वह उनको भी झुठला देगा तो उसके आज़ा को गवाह बनाया जायेगा।

एक हदीस में है कि सबसे पहले रान गवाही देगी कि क्या-क्या बदआमालियां उससे करायी गयी थीं।

एक हदीस में है कि पुल सिरात से आख़िरी गुज़रने वाला इस तरह गिरता-पड़ता गुज़रेगा जैसे कि बच्चा, जब उसको बाप मार रहा हो कि वह कभी इधर गिरता है, कभी उधर। फ़रिश्ते उससे कहेंगे कि अच्छा अगर तू सीधा चलकर पुल सिरात से गुज़र जाए तो अपने सब आमाल बता देगा ? वह इसका वायदा करेगा कि मैं सच-सच सब बता दूंगा और अल्लाह की इज़्ज़त की क़सम खाकर कहेगा कि कुछ नहीं छुपाऊंगा। वह कहेंगे कि अच्छा सीधा खड़ा हो जा और चल। वह सहूलत से पुल सिरात पर गुज़र जायेगा और पार हो जाने के बाद उससे पूछा जायेगा कि अच्छा अब बता। वह सोचेगा कि मैंने इक़रार कर लिया तो ऐसा न हो कि मुझको वापस कर दिया जाये। इसलिए साफ़ इन्कार कर देगा कि मैंने कोई बुरा अमल नहीं किया। फ़रिश्ते कहेंगे कि अच्छा अगर हमने गवाह पेश कर दिये तो ? वह इधर-उधर देखेगा कि कोई आदमी आस-पास नहीं। उसको ख़्याल होगा कि अब गवाह कहां से आयेंगे, सब अपने-अपने ठिकाने पहुंच गए हैं, इसलिए कहेगा कि अच्छा लाओ गवाह, तो उसके आज़ा को हुक्म किया जायेगा और वह कहना शुरू करेंगे, तो मजबूरन उसको इक़रार करना पड़ेगा और कहेगा कि बेशक अभी और भी बहुत से मुह्लिक[1] गुनाह बयान करना बाक़ी हैं, तो इर्शाद होगा कि अच्छा हमने मग़्फ़िरत कर दी। ग़रज इन वुजूह से ज़रूरी है कि आदमी के आज़ा से नेक काम भी बकसरत हों, ताकि गवाह दोनों क़िस्म के मिल सकें। इसीलिए हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने इस हदीसे बाला में उंगलियों पर शुमार करने का हुक्म फ़र्माया है। इसी वजह से दूसरी अहादीस में मस्जिद में कसरत से आने-जाने का हुक्म है कि निशानाते क़दम भी गवाही देंगे और इनका सवाब लिखा जाता है।

किस क़दर ख़ुशक़िस्मत हैं वह लोग, जिनके लिए बुराई का गवाह कोई भी न हो कि गुनाह किये ही नहीं या तौबा वग़ैरह से माफ़ हो गये और भलाई और नेकी के गवाह सैकड़ों-हज़ारों हों, जिसकी सहलतरीन सूरत यह है कि जब कोई गुनाह सादिर हो जाये, फ़ौरन तौबा से उसको मह्व कर डालें[2] कि फिर वह कलअदम[3] हो जाते हैं, जैसा कि बाब दोम, फ़स्ल सोम, हदीस 33 के तहत में गुज़र चुका है और नेकियां आमालनामों में बाक़ी रहें, जिसके गवाह भी मौजूद हों और जिन-जिन आज़ा से नेक आमाल किये हैं, यह सब गवाही दें।

---

1. हलाक करने वाले, 2. मिटा डाले, 3. ख़त्म,

मुतअद्दद अहादीस में ख़ुद नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उंगलियों पर गिनना मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से नक्ल किया गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० फ़र्माते हैं कि नबी-ए-अकरम सल्ल० उंगलियों पर तस्बीह गिनते थे।

इसके बाद हदीस बाला में अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत और रहमते इलाहीया से महरूम किये जाने की वईद है। इससे मालूम होता है कि जो लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र से महरूम रहते हैं वह अल्लाह की रहमत से भी महरूम रहते हैं।

क़ुरआन पाक में इर्शाद है कि तुम मुझे याद करो, मैं (रहमत के साथ) तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। हक़ तआला शानुहू ने अपनी याद को बंदे की याद पर मुरत्तब फ़र्माया।[1]

क़ुरआन पाक में इर्शाद है-

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ۔ (سورۂ زخرف، رکوع ۴)

व मंय्यअ्शु अन ज़िक्रिर्रह्मानि नुक़य्यिज़ लहू शैतानन् फ़ हु व लहू क़रीन० व इन्नहुम लयसुद्दूनहुम अनिस्सबीलि व यह्सबू न अन्नहुम् मुह्तदून० (सूरः ज़ुख़रुफ़, रुकूअ4)

'और जो शख़्स अल्लाह के ज़िक्र से (ख़्वाह किसी क़िस्म का हो, क़ुरआन पाक हो या और किसी क़िस्म का, जान-बूझ कर) अंधा बन जाये, हम उस पर एक शैतान को मुसल्लत कर देते हैं, पस वह शैतान हर वक़्त उसके साथ रहता है (और वह शैतान अपने साथियों के साथ मिल कर) सब के सब उन लोगों को (जो अल्लाह के ज़िक्र से अंधे बन गये हैं, सीधे) रास्ते से हटाते रहते हैं और यह लोग ख़्याल करते हैं कि हम हिदायत पर हैं।'

हदीस में है कि हर शख़्स के साथ एक शैतान मुक़र्रर है, काफ़िर के साथ तो वह हर वक़्त शरीके हाल रहता है, खाने में भी, पीने में भी, सोने में भी, लेकिन मोमिन से ज़रा दूर रहता है और हर वक़्त मुन्तज़िर रहता है, जब उसको ज़रा ग़ाफ़िल पाता है, फ़ौरन उस पर हमला करता है।

1. यानी यह तर्तीब रखी है कि पहले बंदा याद करे, फिर अल्लाह बंदे को याद करे,

दूसरी जगह इर्शाद है- يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ الٰى آخر السورة (سورۂ منافقون، رکوع ۲)

या ऐयुहल्लज़ीन आमनू ला तुल्हिलुकुम व ला औलादुकुम अन्ज़िक्रिल्लाहि० (आख़िरे सूरः तक) –सूरः मुनाफ़िक़ून, रुकूअ 2।

(ऐ ईमान वालो ! तुमको तुम्हारे माल और औलाद (और इसी तरह दूसरी चीजें) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और जो लोग ऐसा करेंगे, वही ख़सारे वाले हैं और हमने जो कुछ (माल व दौलत) अता कर रखा है, उसमें से (अल्लाह के रास्ते में) इससे पहले-पहले ख़र्च कर लो कि तुममें से किसी की मौत आ जाये और फिर (हसरत व अफ़सोस से) कहने लगे कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे कुछ दिनों और मुहलत क्यों न दी, ताकि मैं ख़ैरात कर लेता और नेक बन्दों में शामिल हो जाता और अल्लाह जल्ल-जलालुहू किसी शख़्स को भी मौत का वक़्त आ जाने के बाद मुहलत नहीं देते और अल्लाह को तुम्हारे सारे आमाल की पूरी-पूरी ख़बर है (जैसा करोगे भला या बुरा वैसा ही पाओगे।) अल्लाह जल्ल शानुहू के ऐसे भी बन्दे हैं, जिनको किसी वक़्त भी ग़फ़लत नहीं होती।)

हज़रत शिब्ली रह० फ़र्माते हैं कि मैंने एक जगह देखा कि एक मज्नून शख़्स है, लड़के उसे ढेले मार रहे हैं, मैंने उनको धमकाया। वह लड़के कहने लगे कि यह शख़्स यों कहता है कि मैं ख़ुदा को देखता हूं। मैं उसके क़रीब गया तो वह कुछ कह रहा था। मैंने ग़ौर से सुना तो कह रहा था कि तूने बहुत ही अच्छा किया कि इन लड़कों को मुझ पर मुसल्लत कर दिया। मैंने कहा कि यह लड़के तुझ पर एक तोहमत लगाते हैं। कहने लगा, क्या कहते हैं। मैंने कहा, यह कहते हैं कि तुम ख़ुदा को देखने के मुद्दई[1] हो। यह सुनकर उसने एक चीख़ मारी और यह कहा, शिब्ली। उस ज़ात की क़सम ! जिसने अपनी मुहब्बत में मुझको शकिस्ता हाल[2] बना रखा है और अपने क़ुर्ब व बुअद में मुझको भटका रखा है। अगर थोड़ी देर भी वह मुझ से ग़ायब हो जाये। (यानी हुज़ूरी हासिल न रहे,) तो मैं दर्दे फ़िराक़ से टुकड़े-टुकड़े हो जाऊं। यह कहकर वह मुझ से मुंह मोड़कर यह शेर पढ़ता हुआ भाग गया-

ख़ियालु क फ़ी ऐनी व ज़िक्रु क फ़ी फ़मी : خَيَالُكَ فِيْ عَيْنِيْ وَذِكْرُكَ فِيْ فَمِيْ

व मस्वा क फ़ी क़ल्बी फ़ ऐ न तग़ीबू। — وَمَثْوَاكَ فِيْ قَلْبِيْ فَاَيْنَ تَغِيْبُ

---

1. दावेदार, 2. फटेहाल,

(तेरी सूरत मेरी निगाह में जमी रहती है और तेरा ज़िक्र मेरी ज़बान पर हर वक़्त रहता है। तेरा ठिकाना मेरा दिल है, पस तू कहां ग़ायब हो सकता है।)

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का जब इन्तिक़ाल होने लगा, तो किसी ने कलमा–

लाइला ह इल्लल्लाहु لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

तल्क़ीन किया। फ़रमाने लगे, मैं किसी वक़्त भी इसको नहीं भूला। (यानी याद तो उसको दिलाओ, जिसको किसी वक़्त भी ग़फ़लत हुई हो।)

हज़रत मुम्शाद दैनूरी रह० मशहूर बुज़ुर्ग हैं। जिस वक़्त उनका इन्तिक़ाल होने लगा, तो किसी पास बैठने वाले ने दुआ की, हक़ तआला शानुहू आपको (जन्नत की) फ़्लां-फ़्लां दौलत अता फ़रमायें, तो हंस पड़े, फ़रमाने लगे, तीस वर्ष से जन्नत अपने सारे साज़ व सामान के साथ मेरे सामने ज़ाहिर होती रही है। एक दफ़ा भी तो (अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से तवज्जोह हटा कर) उधर तवज्जोह नहीं की।)

हज़रत रुवैम रह० को इन्तिक़ाल के वक़्त किसी ने कलमा तल्क़ीन किया, तो फ़रमाने लगे, मैं इसके ग़ैर को अच्छी तरह जानता ही नहीं।

अहमद बिन खिज़्रविया रह० के इन्तिक़ाल का वक़्त था, किसी शख़्स ने कोई बात पूछी, आंखों से आंसू निकल पड़े। कहने लगे, पचानवे वर्ष से एक दरवाज़ा खटखटा रहा हूं। वह इस वक़्त खुलने वाला है। मुझे मालूम नहीं कि वह सआदत के साथ खुलता है या बद बख़्ती के साथ, मुझे इस वक़्त बात की फ़ुर्सत कहां।

(١٩) وَعَنْ جُوَيْرِيَةَ رَضِ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا بُكْرَةً حِيْنَ صَلَّى الصُّبْحَ وَهِيَ فِيْ مَسْجِدِهَا ثُمَّ رَجَعَ بَعْدَ اَنْ اَضْحٰى وَهِيَ جَالِسَةٌ فَقَالَ مَازِلْتِ عَلَى الْحَالِ الَّتِيْ فَارَقْتُكِ عَلَيْهَا قَالَتْ نَعَمْ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ اَرْبَعَ كَلِمَاتٍ ثَلٰثَ مَرَّاتٍ لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ رواه مسلم كذا في المشكوة قال القاري وكذا اصحاب السنن الاربعة وفي الباب عن صفية قالت دخل على رسول الله صلى الله عليه وسلم وبين يدي اربعة الاف نواة اسبح بهن الحديث اخرجه الحاكم وقال الذهبي صحيح وَعَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ اَنَّهٗ دَخَلَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَاَةٍ وَبَيْنَ يَدَيْهَا نَوًى اَوْ حَصًى تُسَبِّحُ بِهٖ فَقَالَ اَلَا اُخْبِرُكِ بِمَا هُوَ اَيْسَرُ عَلَيْكِ مِنْ هٰذَا اَوْ اَفْضَلُ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْاَرْضِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا بَيْنَ ذٰلِكَ وسبحان الله عدد ما هو خالق والله اكبر مثل ذلك وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِثْلَ ذٰلِكَ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِثْلَ ذٰلِكَ وَلَا

حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مِثْلَ ذٰلِكَ رواه ابوداؤد والترمذی وقال الترمذی حدیث غریب کذا فی المشکوٰۃ قال القاری وفی نسخۃ حسن غریب اھ
وفی المنھل اخرجه ایضا النسائی وابن ماجة وابن حبان والحاکم والترمذی وقال حسن غریب من ھذا الوجه اھ قلت وصححه

19. उम्मुल्मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की नमाज़ के वक़्त उनके पास से नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गये और यह अपने मुसल्ले पर बैठी हुई (तस्बीह में मशग़ूल थीं)। हुज़ूर सल्ल० चाश्त की नमाज़ के बाद (दोपहर के क़रीब) तशरीफ़ लाये, तो यह उसी हाल में बैठी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, तुम इसी हाल पर हो, जिस पर मैंने छोड़ा था। अर्ज़ किया जी हां! हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैंने तुमसे (जुदा होने) के बाद चार कलमे तीन मर्तबा पढ़े। अगर उनको उस सब के मुक़ाबले में तौला जाये, जो तुमने सुबह से पढ़ा है, तो वह ग़ालिब हो जायें, वह कलमे यह हैं – 'सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिहि अदद ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही व ज़िनत अरशिहि व मिदा द कलिमातिहि (अल्लाह की तस्बीह करता हूं और उसकी तारीफ़ करता हूं बक़द्र उसकी मख़्लूक़ात के अदद के और बक़द्र उस की मर्ज़ी और ख़ुशनूदी के और बक़द्र वज़न उसके अर्श के और उसके कलिमात की मिक्दार के मुवाफ़िक़।)

दूसरी हदीस में है कि हज़रत सअ़द रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सहाबी औरत रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गये। उनके सामने खजूर की गुठलियां या कंकरियां रखी हुई थीं, जिन पर वह तस्बीह पढ़ रही थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं तुझे ऐसी चीज बताऊं जो इससे सह्ल हो (यानी कंकरियां पर गिनने से सह्ल हो (या यह इर्शाद फ़र्माया कि) इससे अफ़ज़ल हो, सुब्हानल्लाहि अदद मा ख़ ल क अख़ीर तक, अल्लाह की तारीफ़ करती हूं बक़द्र उस मख़्लूक़ के, जो आसमान में पैदा की और बक़द्र उस मख़्लूक़ के, जो ज़मीन में पैदा की और बक़द्र उस मख़्लूक़ के जो इन दोनों के दर्मियान है यानी आसमान-ज़मीन के दर्मियान है और अल्लाह की पाकी बयान करती हूं बक़द्र उसके, जिसको वह पैदा करने वाला है और उस सब के बराबर 'अल्लाहु अक्बर' और उसके बराबर ही 'अल्हम्दु लिल्लाहि' और उसी की मानिंद 'लाइला ह इल्लल्लाहु।'

फ़– मुल्ला अलीक़ारी रह० ने लिखा है कि इन कैफ़ियात के साथ तस्बीह के अफ़ज़ल होने का मतलब यह है कि इन अल्फ़ाज़ के ज़िक्र करने से उन कैफ़ियात और सिफ़ात की तरफ़ ज़ेहन मुतवज्जह होगा और यह ज़ाहिर है कि जितना भी तदब्बुर[1]

1. यानी सोच समझ कर पढ़ना,

और ग़ौर व फ़िक्र ज़्यादा होगा, उतना ही ज़िक्र अफ़्ज़ल होगा। इसलिए क़ुरआन पाक जो तदब्बुर से पढ़ा जाये, वह थोड़ा-सा भी उस तिलावत से बहुत ज़्यादा अफ़्ज़ल है, जो बिला तदब्बुर के हो और बाज़ उलमा ने कहा है कि अफ़्ज़लियत इस हैसियत से है कि इसमें अल्लाह जल्ल जलालुहू की हम्द व सना के शुमार से इज्ज़ का इज़्हार है जो कमाल है अब्दियत का।

इसी वजह से बाज़ सूफ़िया से नक़ल किया गया है, वह कहते हैं कि गुनाह तो बिला हिसाब और बे-शुमार करते हो और अल्लाह के पाक नाम को शुमार से और गिन कर कहते हो। इसका मतलब यह नहीं कि शुमार न करना चाहिए, अगर ऐसा होता तो फिर अहादीस में कसरत से ख़ास ख़ास औक़ात में शुमार क्यों बताई जाती है। हालांकि बहुत-सी अहादीस में ख़ास-ख़ास मिक़्दारों पर ख़ास-ख़ास वायदे फ़र्माये गये हैं, बल्कि इसका मतलब यह है कि सिर्फ़ शुमार पर क़नाअत न करना चाहिए बल्कि जो औराद मख़्सूस औक़ात में मुतअय्यन हैं, उनको पूरा करने के अलावा ख़ाली औक़ात में भी, जितना मुम्किन हो, बेशुमार अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहना चाहिए कि यह ऐसी बड़ी दौलत है, जो शुमार की पाबंदियों और उसके हुदूद से बालातर है। इन अहादीस से तस्बीह मुतआरफ़ यानी धागे में पिरोये हुए दानों का जवाज़ साबित होता है।

बाज़ लोगों ने इसको बिद्अत[1] कहा है, मगर यह सही नहीं है, जब इसकी असल साबित है। हुज़ूर सल्ल० ने कंकरियों और गुठलियों पर गिनते हुए देखा और इस पर इन्कार नहीं फ़र्माया, तो फिर असल साबित हो गयी। धागे में पिरो देने में और न पिरोने में कोई फ़र्क़ नहीं, इसी वजह से जुम्ला मशाइख़ और फ़ुक़हा इसका इस्तेमाल फ़र्माते रहे हैं।

मौलाना अब्दुल् हई साहब रह० ने एक मुस्तक़िल रिसाला 'नुज़हतुल् फ़िक्र' इस बारे में तस्नीफ़ फ़र्माया है।

मुल्ला अलीक़ारी रह० कहते हैं कि यह हदीस सही दलील है तस्बीहे मुतआरफ़[2] के जवाज़ की, इसलिए कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन गुठलियों या कंकरियों पर गिनते हुए देखा और उस पर इन्कार नहीं फ़र्माया, जो शरई दलील है और खुले हुए दाने या पिरोये हुए में कोई फ़र्क़ नहीं है। इसलिए जो लोग इसको

1. कोई नयी चीज़ में पैदा करने को बिद्अत कहते हैं,
2. जानी-पहचानी दानों धागों में पिरोयी तस्बीह.

बिद्अत कहते हैं, उनका क़ौल क़ाबिले एतमाद नहीं है। फ़र्माते हैं कि सूफ़िया की इस्तिलाह में इसको शैतान का कोड़ा कहा जाता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के हाथ में किसी ने ऐसे वक़्त में भी तस्बीह देखी, जब वह मुन्तहा-ए-कमाल पर पहुंच चुके थे, तो उनसे इस बारे में सवाल किया, फ़र्माया, जिस चीज़ के ज़रिए से हम अल्लाह तक पहुंचे हैं, उसको कैसे छोड़ दें।

बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से यह नक्ल किया गया है कि उनके पास खजूर की गुठलियां या कंकरियां रहती थीं और वह उन पर गिन कर तस्बीह पढ़ा करते थे। चुनांचे हज़रत अबूसूफ़िया रज़ि० सहाबी से नक़्ल किया गया है कि वह कंकरियों पर गिना करते थे।

हज़रत सअद् बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से गुठलियां और कंकरियां दोनों नक़्ल की गयी हैं।

हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० से भी कंकरियों पर पढ़ना नक़्ल किया गया है।

मिर्क़ात में लिखा है कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० के पास एक धागा रहता था जिसमें गिरहें लगी हुई थीं उन पर शुमार फ़र्माया करते थे और अबूदाऊद में हैं कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० के पास एक थैली थी, जिसमें खजूर की गुठलियां और कंकरियां भरी रहतीं, उन पर तस्बीह पढ़ा करते और जब वह थैली ख़ाली हो जाती तो एक बांदी थी, जो इन सबको फिर उसमें भर देती और हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० के पास रख देती। ख़ाली होने का मतलब यह है कि वह थैली में से निकालते रहते और बाहर डालते रहते थे और जब वह ख़ाली हो जाती, तो सारे दाने समेट कर वह बांदी फिर उस थैली में भर देती।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० से भी यह नक़्ल किया गया है कि उनके पास एक थैली में अज्वा खजूर की गुठलियां जमा रहतीं, सुबह की नमाज़ पढ़कर उसी थैली को लेकर बैठते और जब तक वह ख़ाली न होती, बैठे पढ़ते रहते।

हज़रत अबूसफ़िया रज़ि० जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम थे, उनके सामने एक चमड़ा बिछा रहता उस पर कंकरियां पड़ी रहतीं और सुबह से ज़वाल के वक़्त तक उनको पढ़ते रहते। जब ज़वाल का वक़्त होता तो वह चमड़ा उठा लिया जाता, वह अपनी ज़रूरियात में मश्ग़ूल हो जाते। ज़ुहर की नमाज़ के बाद फिर वह बिछा दिया जाता और शाम तक उनको पढ़ते रहते।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० के पोते नक़ल करते हैं कि दादे अब्बा[1] के पास एक धागा था, जिसमें दो हज़ार गिरहें लगी हुई थीं। उस वक़्त तक नहीं सोते थे, जब तक एक मर्तबा उन पर तस्बीह न पढ़ लेते।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा से भी यही नक़ल किया गया है कि उनके पास एक धागा था, जिसमें गिरहें लगी हुई थीं, उन पर तस्बीह पढ़ा करती थीं।

सूफ़िया की इस्तिलाह में तस्बीह का नाम मुज़क्किरा (याद दिलाने वाली) भी है, इसी वजह से कि जब यह हाथ में होती है, तो ख़्वाहमख़्वाह[2] पढ़ने को दिल चाहता ही है, इसलिए गोया अल्लाह के नाम को याद दिलाने वाली है।

इस बारे में एक हदीस भी नक़ल की जाती है, जो हज़रत अली रज़ि० से नक़ल की गयी है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तस्बीह क्या ही अच्छी मुज़क्किरा (यानी याद दिलाने वाली चीज़) है।

इस बाब में एक मुसल्सल हदीस मौलाना अब्दुल् हई साहिब रह० ने नक़ल फ़र्मायी है, जिसका मतलब यह है कि मौलाना से लेकर ऊपर तक हर उस्ताद ने अपने शागिर्द को एक तस्बीह अता फ़र्माई और उसके पढ़ने की इजाज़त भी दी। अख़ीर में हज़रत जुनैद बग़दादी के शागिर्द तक यह सिलसिला पहुंचता है। वह कहते हैं कि मैंने अपने उस्ताद हज़रत जुनैद रह० के हाथ में तस्बीह देखी, तो मैंने उनसे कहा कि आप इस उलूवि मर्तबा[3] पर भी तस्बीह हाथ में रखते हैं। तो उन्होंने फ़र्माया कि मैंने अपने उस्ताद सिर्री सक़्ती रह० के हाथ में तस्बीह देखी तो उनसे यही सवाल किया था, जो तुमने किया। उन्होंने फ़र्माया कि मैंने भी अपने उस्ताद मारूफ़ कर्ख़ी रह० के हाथ में तस्बीह देखी थी, तो यही सवाल किया था। उन्होने फ़र्माया था कि मैंने अपने उस्ताद हज़रत बिश्रहामी रह० के हाथ में तस्बीह देखी थी, तो यही सवाल किया था, उन्होंने फ़र्माया था कि मैंने अपने उस्ताद हज़रत उमर मक्की रह० के हाथ में तस्बीह देखी थी, तो यही सवाल किया था, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने अपने उस्ताद हज़रत हसन बसरी रह० (जो सारे मशायखे चिश्तिया के सरगिरोह हैं) के हाथ में तस्बीह देखी थी तो अर्ज़ किया था कि आपकी इस रफ़अते शान और उलूवे मर्तबा[3] के बावजूद भी अब तक तस्बीह आपके हाथ में है, तो उन्होंने फ़र्माया था कि हमने तसव्वुफ़ की इब्तिदा में इससे काम लिया था और इसके ज़रिए से तरक़्क़ी हासिल

---

1. यानी मेरे दादा साहब के पास, 2. चाहे-अनचाहे, 3. यानी ऊंचे मर्तबा के होने के बावजूद,

की थी, तो गवारा नहीं कि अब अख़ीर में उस को छोड़ दें। मैं चाहता हूं कि अपने दिल से, ज़बान से, हाथ से, हर तरह अल्लाह का ज़िक्र करूं। मुहद्दिसाना हैसियत से इनमें कलाम भी किया गया है।

(٢٠) عن ابن اعبد قال قال علي الا احدثك عني وعن فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانت من احب اهله اليه قلت بلى قال انها جرت بالرحى حتى اثر في يدها واستقت بالقربة حتى اثر في نحرها وكنست البيت حتى اغبرت ثيابها فاتى النبي صلى الله عليه وسلم خدم فقلت لو اتيت اباك فسألتيه خادما فاتته فوجدت عنده حداثا فرجعت فاتاها من الغد فقال ما كان حاجتك فسكتت فقلت انا احدثك يا رسول الله جرت بالرحى حتى اثرت في يدها وحملت بالقربة حتى اثرت في نحرها فلما ان جاءك الخدم امرتها ان تاتيك فتستخدمك خادما يقيها حر ما هي فيه قال اتقي الله يا فاطمة وادي فريضة ربك واعملي عمل اهلك فاذا اخذت مضجعك فسبحي ثلثا وثلثين واحمدي ثلثا وثلثين وكبري اربعا وثلثين فتلك مائة فهي خير لك من خادم قالت رضيت عن الله وعن رسوله اخرجه ابوداؤد وفي الباب عن الفضل بن الحسن الضمري ان ام الحكم او ضباعة ابنتي الزبير بن عبد المطلب حدثته

عن احديهما انها قالت اصاب رسول الله صلى الله عليه وسلم سبيا فذهبت انا واختي وفاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم فشكونا اليه ما نحن فيه وسألناه ان يامر لنا بشيء من السبي فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم سبقكن يتامى بدر ولكن سادلكن على ما هو خير لكن من ذلك تكبرن الله على اثر كل صلوة ثلثا وثلثين تكبيرة وثلثا وثلثين تسبيحة وثلثا وثلثين تحميدة ولا اله الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير. رواه ابوداؤد. وفي الجامع الصغير برواية ابن منده عن جليس كان يامر نسائه اذا ارادت احداهن ان تنام ان تحمد الحديث ورقم له بالضعف

20. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक शागिर्द से फ़र्माया कि मैं तुम्हें अपना और अपनी बीवी फ़ातिमा रज़ि० का, जो हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी और सब घर वालों में ज़्यादा लाड़ली थीं, क़िस्सा न सुनाऊं ? उन्होंने अर्ज़ किया, ज़रूर सुनायें। फ़र्माया कि वह ख़ुद चक्की पीसती थीं, जिससे हाथों में गट्टे पढ़ गये थे और ख़ुद ही मश्क भर कर लाती थीं, जिस से सीने पर रस्सी के निशान पड़ गये थे, ख़ुद ही झाड़ू देती थीं, जिसकी वजह से कपड़े मैले रहते थे। एक मर्तबा हुज़ूरे

अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ लौंडी-ग़ुलाम आये। मैंने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से कहा कि तुम अगर अपने वालिद साहब की ख़िदमत में जाकर एक ख़ादिम मांग लाओ, तो अच्छा है, सहूलत रहेगी। वह गयीं। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लोगों का मज्मा था, इसलिए वापस चली आयीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दूसरे रोज़ ख़ुद ही मकान पर तश्रीफ़ लाये और फ़र्माया, तुम कल किस काम को आयी थीं। वह चुप हो गयीं (शर्म की वजह से बोल भी न सकीं) मैंने अर्ज किया, हुज़ूर सल्ल० ! चक्की से हाथ में निशान पड़ गये, मश्कीज़ा भरने की वजह से सीने पर भी निशान पड़ गया है, झाड़ू देने की वजह से कपड़े मैले रहते हैं। कल आपके पास कुछ लौंडी-ग़ुलाम आये थे, इसलिए मैंने उनसे कहा था, एक ख़ादिम अगर मांग लायें, तो इन मशक़्क़तों में सहूलत हो जाये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, फ़ातिमा ! अल्लाह से डरती रहो और उसके फ़र्ज अदा करती रहो और घर के कारोबार करती रहो और जब सोने के लिए लेटो तो- 'सुब्हानल्लाह' 33 मर्तबा, 'अल्हम्दु लिल्लाह' 33 मर्तबा, 'अल्लाहु अक्बर' 34 मर्तबा पढ़ लिया करो, यह ख़ादिम से बेहतर है। उन्होंने अर्ज किया कि मैं अल्लाह (की तक्दीर) और उसके रसूल (की तज्वीज़ से) राज़ी हूं।

दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्ल० की फूफीज़ाद बहनों का क़िस्सा भी इसी क़िस्म का आया है। वह कहती हैं कि हम दो बहनें और हुज़ूर सल्ल० की बेटी फ़ातिमा रज़ि० तीनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी मशक़्क़त और दिक़्क़तें ज़िक्र करके एक ख़ादिम की तलब की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि ख़ादिम देने में तो बद्र के यतीम तुम से मुक़द्दम हैं।[1] मैं तुम्हें ख़ादिम से भी बेहतर चीज़ बताऊं। हर नमाज़ के बाद यह तीनों कलमे यानी 'सुब्हानल्लाह' अल्हम्दु लिल्लाह', अल्लाहु अक्बर' 33-33 मर्तबा और एक मर्तबा 'लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर' पढ़ लिया करो। यह ख़ादिम से बेहतर है।

फ़— हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर वालों और अज़ीज़ों को ख़ास तौर से इन तस्बीहात का हुक्म फ़र्माया करते थे।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बीवियों को यह हुक्म फ़र्माया करते थे कि जब वह सोने का इरादा करें तो-

---

1. यानी बद्र के यतीमों को तर्जीह दी जाए,

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहे अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाहु अक्बर' हर एक 33 मर्तबा पढ़ें।

हदीसे बाला में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीनवी मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों के मुक़ाबले में इन तस्बीहात को तल्क़ीन फ़र्माया।[1] इसकी ज़ाहिरी वजह तो ज़ाहिर है कि मुसलमान के लिए दीनवी मशक़्क़त और तक्लीफ़ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं है।[2], उसको हर वक़्त आख़िरत और मरने के बाद की राहत व आराम की फ़िक्र ज़रूरी है, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस चंद रोज़ा ज़िंदगी की मशक़्क़त और तक्लीफ़ की तरफ़ से तवज्जोह हटा कर आख़िरत की राहत के सामान बढ़ाने की तरफ़ मुतवज्जह फ़र्माया और इन तस्बीहात का आख़िरत में ज़्यादा से ज़्यादा नाफ़ेअ होना इन रिवायात से, जो इस बाब में ज़िक्र की गयीं, ज़ाहिर है।

इसके अलावा दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि इन तस्बीहात को हक़ तआला शानुहू ने जहां दीनी मुनाफ़े और समरात से शर्फ़ बख़्शा है, दुनयवी मुनाफ़े भी उनमें रखे हैं।

अल्लाह के पाक कलाम में, उसके रसूले पाक के कलाम में बहुत-सी चीजें ऐसी है, जिनमें आख़िरत के साथ-साथ दुन्यावी मुनाफ़े भी हासिल होते हैं। चुनांचे एक हदीस में आया है कि दज्जाल के ज़माने में मोमिनों की ग़िज़ा फ़रिश्तों की ग़िज़ा होगी यानी तस्बीह व तक़्दीस (सुब्हानल्लाह वग़ैरह अल्फ़ाज का पढ़ना) कि जिस शख़्स का कलाम इन चीजों का पढ़ना होगा, हक़ तआला शानुहू उससे भूख की मशक़्क़त को ज़ायल कर देंगे।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि इस दुनियां में बग़ैर खाये-पिये सिर्फ़ अल्लाह के ज़िक्र पर गुज़ारा मुम्किन हो सकता है और दज्जाल के ज़माने में आम मोमिनीन को यह दौलत हासिल होगी तो इस ज़माने में ख़्वास को इस हालत का मयस्सर हो जाना कुछ मुश्किल नहीं, इसीलिए जिन बुज़ुर्गों से इस क़िस्म के वाक़िआत बकसरत मंक़ूल हैं कि मामूली ग़िज़ा पर या बिला ग़िज़ा के कई-कई दिन गुज़ार देते थे, उनमें कोई वजह इन्कार या तकज़ीब की नहीं।

एक हदीस में आया है कि अगर कहीं आग लग जाये तो तक्बीर (यानी अल्लाहु

---

1. यानी उनकी नसीहत फ़मायर, 3. ध्यान देने के क़ाबिल नहीं हैं,

अक्बर) कसरत से पढ़ा करो। यह उसको बुझा देती है।

हिस्ने हसीन में नक्ल किया है कि जब किसी शख़्स को किसी काम में तअिब[1] और मशक़्क़त मालूम हो या क़ूव्वत की ज़्यादती मत्लूब हो, तो सोते वक़्त सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल्हम्दु लिल्लाहि 33 और अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़े। या तीनों कलमे 33-33 मर्तबा पढ़े या एक कोई-सा 34 मर्तबा पढ़ ले, (चूंकि मुख़्तलिफ़ अहादीस में मुख़्तलिफ़ अदद-आये हैं इसलिए सब ही को नक्ल कर दिया है।)

हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रह० ने भी इन अहादीस से जिनमें नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ख़ादिम के बदले में तस्बीहात तालीम फ़र्मायीं, यह इस्तंबात किया है[2] कि जो शख़्स इन पर मुदावमत करे[3], उसको मशक़्क़त के कामों में तकान और तअिब नहीं होगा।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़र्माते हैं कि अगर मामूली तअिब हुआ भी, तब भी मुर्ज़रत न होगी।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने लिखा है कि यह अमल मुजर्रब है, यानी तर्जुबे से यह बात साबित हुई है कि इन तस्बीहों का सोते वक़्त पढ़ना इज़ाला-ए-तकान और ज़्यादती-ए-क़ूव्वत का सबब होता है।

अल्लामा सुयूती रह० ने 'मिर्क़ातुस्सुऊद' में लिखा है कि इन तस्बीहों का ख़ादिम से बेहतर होना आख़िरत के एतबार से भी हो सकता है कि आख़िरत में यह तस्बीहें जितनी मुफ़ीद कारआमद और नाफ़ेअ होंगी, दुनिया में ख़ादिम उतना कारआमद और नाफ़ेअ नहीं हो सकता। और दुनिया के एतबार से भी हो सकता है कि इन तस्बीहों की वजह से काम पर जिस क़दर क़ूव्वत और हिम्मत हो सकती है, ख़ादिम से उतना काम नहीं हो सकता।

एक हदीस में आया है कि दो ख़स्लतें[4] ऐसी हैं कि जो इन पर अमल करे, वह जन्नत में दाख़िल हो और वह दोनों बहुत सहल हैं, लेकिन इन पर अमल करने वाले बहुत कम हैं-

एक यह कि इन तस्बीहों को हर नमाज़ के बाद दस-दस मर्तबा पढ़े। यह पढ़ने में तो एक सौ पचास हुई लेकिन आमाल की तराज़ू में पन्द्रह सौ होंगी।

दूसरे यह कि सोते वक़्त 'सुब्हानल्लाह', अल्हम्दु लिल्लाह' 33-33 मर्तबा

---

1. थकन, 2. यानी नतीजा निकाला है, 3. यानी हमेशा करता रहे, 4. आदतें।

पढ़े और अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़े कि यह पढ़ने में सौ मर्तबा हुयीं और सवाब के एतबार से एक हज़ार हुयीं।

किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह ! यह क्या बात है कि इन पर अमल करने वाले बहुत थोड़े हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि नमाज़ के वक़्त शैतान आता है और कहता है कि फ़्लां ज़रूरत है और फ़्लां काम है और जब सोने का वक़्त होता है, तो वह इधर-उधर की ज़रूरतें याद दिलाता है, जिनसे पढ़ना रह जाता है।

इन अहादीस में यह बात क़ाबिले ग़ौर है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० अंहा जन्नत की औरतों की सरदार और दो जहान के सरदार की बेटी अपने हाथ से आटा पीसतीं, हत्ताकि हाथों में गट्टे पड़ गये, ख़ुद ही पानी भर कर लातीं, हत्ताकि सीने पर मश्क की रस्सी के निशान हो गये। ख़ुद ही घर की झाड़ू वग़ैरह सारा काम करतीं, जिससे हर वक़्त कपड़े मैले रहते। आटा गूंधना, रोटी पकाना, ग़रज़ सब ही काम अपने हाथों से करती थीं। क्या हमारी बीवियां यह सारे काम तो क्या, इनमें से आध े भी अपने हाथ से करती हैं और अगर नहीं करतीं तो कितनी ग़ैरत की बात है कि जिनके आक़ाओं की यह ज़िंदगी हो, उनके नाम लेकर, उनके नाम पर फ़ख़्र करने वालों की ज़िंदगी इसके आस-पास भी न हो। चाहिए तो यह था कि ख़ादिमों का अमल उनकी मशक़्क़त, आक़ाओं से कुछ आगे होती, मगर अफ़सोस कि यहां इसके आस-पास भी नहीं-

فَإِلَى اللّٰهِ الْمُشْتَكٰى وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ۔

फ़इलल्लाहिल् मुश्तकी वल्लाहुल् मुस्तआन,

ख़ात्मा

ख़ात्मे में एक निहायत मुहतम्म बिश्शान चीज का ज़िक्र करता हू और उसी पर इस रिसाले को ख़त्म करता हूं। यह तस्बीहात, जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया, निहायत ही अहम और दीन व दुनियां में कारआमद और मुफ़ीद हैं, जैसा कि अहादीसे बाला से मालूम हुआ।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन के एहतमाम और फ़ज़ीलत की वजह से एक ख़ास नमाज़ की तर्ग़ीब भी फ़र्मायी है, जो सलातुत्तस्बीह (तस्बीह की नमाज़) के नाम से मशहूर है। और इसी वजह से इसको सलातुत्तस्बीह कहा जाता है कि यह तस्बीहात उस में तीन सौ मर्तबा पढ़ी जाती हैं। हुज़ूर सल्ल० ने बहुत ही

एहतमाम और तर्ग़ीबों के साथ इस नमाज़ को तालीम फ़र्माया। चुनांचे हदीस में वारिद है–

(١) عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم قال للعباس بن عبد المطلب يا عباس يا عماه الا اعطيك الا امنحك الا احبوك الا افعل بك عشر خصال اذا انت فعلت ذلك غفر الله لك ذنبك اوله وآخره قديمه وحديثه خطاه وعمده صغيره وكبيره سره وعلانيته ان تصلي اربع ركعات تقرأ في كل ركعة فاتحة الكتاب وسورة فاذا فرغت من القراءة في اول ركعة وانت قائم قلت سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر خمس عشرة مرة ثم تركع فتقولها وانت راكع عشرا ثم ترفع راسك من الركوع فتقولها عشرا ثم تهوي ساجدا فتقولها وانت ساجد عشرا ثم ترفع راسك من السجود فتقولها عشرا ثم تسجد فتقولها عشرا ثم ترفع راسك فتقولها عشرا فذلك خمس وسبعون في كل ركعة تفعل ذلك في اربع ركعات ان استطعت ان تصليها في كل يوم مرة فافعل فان لم تفعل ففي كل جمعة مرة فان لم تفعل ففي كل شهر مرة فان لم تفعل ففي كل سنة مرة فان لم تفعل ففي عمرك مرة رواه ابوداؤد وابن ماجة والبيهقي في الدعوات الكبير وروى الترمذي عن ابي رافع نحوه كذا في المشكوة قلت واخرجه الحاكم وقال هذا حديث وصله موسى بن عبد العزيز عن الحكم بن ابان وقد اخرجه ابوبكر محمد بن اسحق وابوداؤد وابوعبد الرحمن احمد بن شعيب في الصحيح ثم قال بعد ما ذكر توثيق رواته اما ارسال ابراهيم بن الحكم عن ابيه فلا يوهن وصل الحديث فان الزيادة من الثقة اولى من الارسال على ان امام عصره في الحديث اسحق بن ابراهيم الحنظلي قد اقام هذا الاسناد عن ابراهيم بن الحكم ووصله اھ قال السيوطي في اللآلي هذا اسناد حسن وما قال الحاكم اخرجه النسائي في كتابه الصحيح لم نره في شيء من نسخ السنن لا الصغرى ولا الكبرى۔

1. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ि० से फ़र्माया, ऐ अब्बास ! ऐ मेरे चचा ! क्या मैं तुम्हें एक अतीया करूं ? एक बख़्शिश एक चीज़ बताऊं ? तुम्हें दस चीज़ों का मालिक बनाऊं ? जब तुम उस काम को करोगे तो हक़ तआला शानुहू तुम्हारे सब गुनाह पहले और पिछले, पुराने और नये, ग़लती से किये हुए और जान-बूझकर किये हुए, छोटे और बड़े, छुप कर किये हुए और खुल्लमखुल्ला किये हुए सभी माफ़ फ़र्मा देंगे, वह काम यह है कि चार रकअत नफ़्ल (सलातुत्तस्बीह की नीयत बांध कर पढ़ो) और हर रकअत में

जब अल्हम्दु और सूरः पढ़ चुको तो रुकूअ से पहले– 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' पंद्रह मर्तबा पढ़ो, फिर जब रुकूअ करो तो दस मर्तबा उस में पढ़ो, फिर जब रुकूअ से खड़े हो तो दस मर्तबा पढ़ो, फिर सज्दा करो तो दस मर्तबा इसमें पढ़ो, फिर सज्दे से उठकर बैठो तो दस मर्तबा पढ़ो। फिर जब दूसरे सज्दे में जाओ तो दस मर्तबा इस में पढ़ो फिर जब दूसरे सज्दे से उठो तो (दूसरी रक्अत में) खड़े होने से पहले बैठ कर दस मर्तबा पढ़ो। इन सब की मीज़ान पचहत्तर हुई। इसी तरह हर रक्अत में पचहत्तर दफ़ा होगा। अगर मुम्किन हो सके तो रोज़ाना एक मर्तबा इस नमाज को पढ़ लिया करो, यह न हो सके तो हार जुमे को एक मर्तबा पढ़ लिया करो। यह भी न हो सके तो हर महीने में एक मर्तबा पढ़ लिया करो। यह भी न हो सके तो हर साल में एक मर्तबा पढ़ लिया करो। यह भी न हो सके तो उम्र भर में एक मर्तबा तो पढ़ ही लो।

(٢) وَعَنْ اَبِي الْجَوْزَاءِ عَنْ رَجُلٍ كَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ يَرَوْنَ اَنَّهُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِئْتِنِي غَدًا اَحْبُوكَ وَاُثِيبُكَ وَاُعْطِيكَ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهُ يُعْطِينِي عَطِيَّةً قَالَ اِذَا زَالَ النَّهَارُ فَقُمْ فَصَلِّ اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ فذكر نحوه وفيه وَقَالَ فَاِنَّكَ لَوْ كُنْتَ اَعْظَمَ اَهْلِ الْاَرْضِ ذَنْبًا غُفِرَ لَكَ بِذٰلِكَ قَالَ قُلْتُ فَاِنْ لَمْ اَسْتَطِعْ اَنْ اُصَلِّيَهَا تِلْكَ السَّاعَةَ قَالَ صَلِّهَا

2. एक सहाबी रज़ि॰ कहते हैं, मुझसे हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, कल सुबह को आना, तुम को एक बख़्शिश करूंगा, एक चीज दूंगा, एक अतीया करूंगा। वह सहाबी रज़ि॰ कहते हैं, मैं इन अल्फ़ाज से यह समझा कि कोई (माल) अता फ़रमायेंगे। (जब मैं हाज़िर हुआ) तो फ़र्माया कि जब दोपहर को आफ़्ताब ढल चुके तो चार रक्अत नमाज़ पढ़ो। उसी तरीक़े से बताया जो पहली हदीस में गुज़रा है। और यह भी फ़र्माया कि अगर तुम सारी दुनिया के लोगों से ज़्यादा गुनाहगार होगे, तो तुम्हारे गुनाह माफ़ हो जायेंगे। मैंने अर्ज किया कि अगर उस वक़्त मैं किसी वजह से न पढ़ सकूं? तो इर्शाद फ़र्माया कि जिस वक़्त हो सके, दिन में या रात में पढ़ लिया करो। (٣) عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ وَجَّهَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

جَعْفَرَ بْنَ اَبِي طَالِبٍ اِلٰى بِلَادِ الْحَبَشَةِ فَلَمَّا قَدِمَ اعْتَنَقَهُ وَقَبَّلَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ثُمَّ قَالَ اَلَا اَهَبُ لَكَ اَلَا اُبَشِّرُكَ اَلَا اَمْنَحُكَ اَلَا اُتْحِفُكَ قَالَ نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ تُصَلِّي اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ فذكر نحوه اخرجه الحاكم وقال اسناده صحيح لا غبار عليه وتعقبه الذهبي بان احمد بن داؤد كذبه الدارقطني كذا في

النسهل وكذا قال غيره تبعا للمنا فظ

لكن فى النسخة التى بايدينا من المستدرك وقد صحت الرواية عن ابن عمران رسول الله صلى الله عليه وسلم علم ابن عمه جعفرا ثم ذكر الحديث بسنده و قال فى اخره هذا اسناد صحيح لاغبار عليه وهكذا قال الذهبى فى اول الحديث و اخره ثم لا يذهب عليك ان فى هذا الحديث زيادة لا حول ولا قوة الا بالله العلى العظيم ايضا على الكلمات الاربع۔

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचाज़ाद भाई हज़रत जाफ़र रज़ि॰ को हब्शा भेज दिया था, जब वह वहां से वापस मदीना-तय्यिबा पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको गले लगाया और पेशानी पर बोसा दिया, फिर फ़र्माया, मैं तुझे एक चीज़ दूं ? एक ख़ुशख़बरी सुनाऊं ? एक बख़्शिश करूं ? एक तोहफ़ा दूं ? उन्होंने अर्ज़ किया, ज़रूर । हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़र्माया, चार रक्अत नमाज़ पढ़ । फिर उसी तरीक़े से बतायी जो ऊपर गुज़रा । इस हदीस में उन चार कलमों के साथ-'ला हौ ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीयिल अज़ीम॰ भी आया है ।

(४) وَعَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلَا اَهَبُ لَكَ اَلَا اُعْطِيْكَ اَلَا اَمْنَحُكَ فَظَنَنْتُ اَنَّهٗ يُعْطِيْنِي مِنَ الدُّنْيَا شَيْئًا لَمْ يُعْطِهٖ اَحَدًا مِنْ قَبْلِيْ قَالَ اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ فذكر الحديث وفى اخره غير انك اذا جلست للتشهد قلت ذلك عشر مرات قبل التشهد الحديث اخرجه الدار قطنى فى الافراد وابونعيم فى القربات وابن شاهين فى الترغيب كذا فى اتحاف السادة شرح الاحياء -

4. हज़रत अब्बास रज़ि॰ फ़र्माते हैं, मुझ से हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें बख़्शिश करूं ? एक अतीया दूं ? एक चीज़ अता करूं ? वह कहते हैं, मैं यह समझा कि कोई दुनिया की ऐसी चीज़ देने का इरादा है जो किसी को नहीं दी । (इसी वजह से इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ बख़्शिश, अता वग़ैरह को बार-बार फ़र्माते हैं) फिर आपने चार रक्अत नमाज़ सिखायी, जो ऊपर गुज़री । उसमें यह भी फ़र्माया कि जब अत्तहीयात के लिए बैठो, तो पहले इन तस्बीहों को पढ़ो, फिर अत्तहीयात पढ़ना ।

(۵) قَالَ التِّرْمِذِيُّ وَقَدْ رَوَى ابْنُ الْمُبَارَكِ وَغَيْرُ وَاحِدٍ مِّنْ اَهْلِ الْعِلْمِ صَلٰوةَ التَّسْبِيْحِ وَذَكَرُوا الْفَضْلَ فِيْهِ حَدَّثَنَا اَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ نَا اَبُوْ وَهْبٍ سَاَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْمُبَارَكِ عَنْ

الصلوة التي يسبح فيها قال يكبر ثم يقول سبحانك
اللهم وبحمدك وتبارك اسمك وتعالى جدك
ولا اله غيرك ثم يقول خمس عشرة مرة سبحان
الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر ثم
يتعوذ ويقرأ بسم الله الرحمن الرحيم وفاتحة
الكتاب وسورة ثم يقول عشر مرات سبحان الله

والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر ثم يركع
فيقولها عشرا ثم يرفع راسه فيقولها عشرا
ثم يسجد فيقولها عشرا ثم يرفع راسه فيقولها
عشرا ثم يسجد الثانية فيقولها عشرا يصلي اربع
ركعات على هذا فذلك خمس وسبعون تسبيحة

في كل ركعة ثم قال قال ابو وهب اخبرني عبد العزيز عن عبد الله انه قال يبدأ في
الركوع بسبحان ربي العظيم وفي السجدة بسبحان ربي الاعلى ثلثا ثم يسبح التسبيحات قال
عبد العزيز قلت لعبد الله بن المبارك ان سها فيها يسبح في سجدتي السهو عشرا عشرا قال
لا انما هي ثلثمائة تسبيحة اه مختصرا قلت وهكذا رواه الحاكم وقال رواته عن ابن المبارك كلهم ثقات
اثبات ولا يتهم عبد الله ان يعلمه ما لم يصح عنده سنده اه وقال الغزالي في الاحياء بعد
ما ذكر حديث ابن عباس المذكور وفي رواية اخرى انه يقول في اول الصلوة سبحانك اللهم
ثم يسبح خمس عشرة تسبيحة قبل القراءة وعشرا بعد القراءة والباقي كما سبق عشرا عشرا ولا
يسبح بعد السجود الاخير وهذا هو الاحسن وهو اختيار ابن المبارك اه قال الزبيدي في الاتحاف
ولفظ القوت هذه الرواية احب الوجهين الي اه قال الزبيدي اي لا يسبح في الجلسة الاولى
بين الركعتين ولا في جلسة التشهد شيئا كما في القوت قال وكذلك روينا في حديث عبد الله
بن جعفر بن ابي طالب ان النبي صلى الله عليه وسلم علمه صلوة التسبيح فذكره اه ثم قال
الزبيدي واما حديث عبد الله بن جعفر فاخرجه الدارقطني من وجهين عن عبد الله
بن زياد بن سمعان قال في احدهما عن معوية واسمعيل بن عبد الله ابني جعفر عن ابيهما وقال في
الاخرى عن عون بدل اسمعيل عن ابيهما قال قال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم الا اعطيك
فذكر الحديث وابن سمعان ضعيف وهذه الرواية هي التي اشار اليها صاحب القوت وهي الثانية
عنده قال فيها يفتتح الصلوة فيكبر ثم يقول فذكر الكلمات وزاد فيها الحوقلة ولم يذكر هذا السجدة
الثانية عند القيام ان يقولها قال وهو الذي اختاره ابن المبارك اه قال المنذري في الترغيب وروى
البيهقي من حديث ابي جناب الكلبي عن ابي الجوزاء عن ابن عمرو بن العاص، فذكر الحديث بالصفة
التي رواها الترمذي عن ابن المبارك ثم قال وهذا يوافق ما رويناه عن ابن المبارك ورواه قتيبة

ابن سعید عن یحیی بن سلیم عن عمران بن مسلم عن ابی الجوزاء قال نزل علی عبد اللہ ابن عمرو
بن العاص فذکر الحدیث وخالفہ فی رفعہ الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ولم یذکر التسبیحات فی ابتداء القراءۃ
انما ذکرھا بعدھا ثم ذکر جلسۃ الاستراحۃ کما ذکرھا سائر الرواۃ اھ قلت حدیث ابی الجناب مذکور
فی السنن علی ھذا الطریق طریق ابن المبارک وماذکر من کلام البیھقی لیس فی السنن بھذا اللفظ
فلعلہ ذکرہ فی الدعوات الکبیر وما فی السنن انہ ذکر اولا حدیث ابی جناب تعلیقا مرفوعا ثم قال قال
ابوداؤد ورواہ روح بن المسیب وجعفر بن سلیمان عن عمرو بن مالک النکری عن ابی الجوزاء عن
ابن عباس قولہ وقال فی حدیث روح فقال حدیث النبی صلی اللہ علیہ وسلم اھ وظاھر ان الاختلاف
فی السند فقط لا فی لفظ الحدیث وذکر شارح الاقناع من فروع الشافعیۃ صلوۃ التسبیح واقتصر
علی صفۃ ابن المبارک فقط قال البجیرمی ھذہ روایۃ ابن مسعود والذی علیہ مشائخنا انہ لا یسبح
قبل القراءۃ بل بعدھا خمسۃ عشر والعشرۃ فی جلسۃ الاستراحۃ وھذہ روایۃ ابن عباس
اھ مختصرا وعلم منہ ان طریق ابن المبارک مروی عن ابن مسعود ایضا لکن لم اجد حدیث
ابن مسعود فیما عندی من الکتب بل المذکور فیھا علی ما بسطہ صاحب المنھل وشارح الاحیاء وغیر
ھما ان حدیث صلوۃ التسبیح مروی عن جماعۃ من الصحابۃ منھم عبد اللہ والفضل ابنا العباس
وابوھما عباس بن عبد المطلب وعبد اللہ بن عمرو بن العاص وعبد اللہ بن عمر بن الخطاب وابو
رافع مولی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وعلی بن ابی طالب واخوہ جعفر بن ابی طالب وابنہ عبد اللہ
بن جعفر وام المومنین ام سلمۃ وانصاری غیر مسمی وقد قیل انہ جابر بن عبد اللہ قالہ الزبیدی
وبسط فی تخریج احادیثھم وعلم مما سبق ان حدیث صلوۃ التسبیح مروی بطرق کثیرۃ وقد فرط
ابن الجوزی ومن تبعہ فی ذکرہ فی الموضوعات ولذا تعقب علیہ غیر واحد من ائمۃ الحدیث
کالحافظ ابن حجر والسیوطی والزرکشی قال ابن المدینی قد اساء ابن الجوزی بذکرہ ایاہ فی الموضوعات
کذا فی اللآلی قال الحافظ وممن صححہ او حسنہ ابن مندۃ والف فیہ کتابا والآجری والخطیب
وابو سعد السمعانی وابو موسی المدینی وابو الحسن بن المفضل والمنذری وابن الصلاح والنووی
فی تھذیب الاسماء والسبکی وآخرون کذا فی الاتحاف وفی المرقاۃ عن ابن حجر صححہ الحاکم وابن خزیمۃ
وحسنہ جماعۃ اھ قلت وبسط السیوطی فی اللآلی فی تحسینہ وحکی عن ابی منصور الدیلمی صلوۃ التسبیح
اشھر الصلوات واصحھا اسنادا۔

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० और बहुत से उलमा से इस नमाज की फ़ज़ीलत नक़्ल की गयी है और इसका यह तरीक़ा नक़्ल किया गया है कि 'सुब्हा न कल्लाहुम्म' पढ़ने के बाद अल्हम्दु शरीफ़ पढ़ने से पहले पन्द्रह दफ़ा इन कलमों को पढ़े, फिर 'अऊज़ु' और बिस्मिल्लाह' पढ़ कर 'अल्हम्दु' शरीफ़ और फिर कोई सूर: पढ़े, सूर: के बाद रुकूअ से पहले दस मर्तबा पढ़े, फिर रुकूअ में दस मर्तबा, फिर रुकूअ से उठकर, फिर दोनों सज्दों में और दोनों सज्दों के दर्मियान में बैठ कर दस-दस मर्तबा पढ़े, यह पचहत्तर पूरी हो गयी (लिहाज़ा दूसरे सज्दे के बाद बैठ कर पढ़ने की ज़रूरत नहीं रही) रुकूअ में पहले 'सुब्हा न रब्बियल् अज़ीम' और सज्दे में पहले 'सुब्हा न रब्बियल आला पढ़े, फिर इन कलमों को पढ़े। (हुज़ूर अक़्दस सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी इस तरीक़े से नक़्ल किया गया है।)

फ़— (1) सलातुत्तस्बीह बड़ी अहम नमाज़ है, जिस का अंदाज़ा कुछ अहादीसे बाला से हो सकता है कि नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस क़दर शफ़क़त और एहतमाम से इसको तालीम फ़र्माया है। उलमा-ए-उम्मत, मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा, सूफ़िया हर ज़माने में इस का एहतमाम फ़र्माते हैं।

इमामे हदीस हाकिम रह० ने लिखा है कि इस हदीस के सही होने पर यह भी दलील है कि तबअ ताबिईन[1] के ज़माने से हमारे ज़माने तक मुक़्तदा हज़रात इस पर मुदावमत करते और लोगों को तालीम देते रहे हैं, जिन में अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० भी हैं। यह अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० इमाम बुख़ारी रह० के उस्तादों के उस्ताद हैं।

बैहक़ी रह० कहते हैं कि इब्ने मुबारक रह० से पहले अबुल् जौज़ा रह०, जो मोतमद ताबिई हैं, इसका एहतमाम किया करते थे। रोज़ाना जब ज़ुहर की अज़ान होती, तो मस्जिद में जाते और जमाअत के वक़्त तक उसको पढ़ लिया करते।

अब्दुल् अज़ीज़ बिन अबी रव्वाद रह०, जो इब्ने मुबारक रह० के भी उस्ताद हैं, बड़े आबिद-ज़ाहिद मुत्तक़ी लोगों में हैं, कहते हैं कि जो जन्नत का इरादा करे, उसको ज़रूरी है कि सलातुत्तस्बीह को मज़बूत पकड़े।

अबूउस्मान हियरी, रह० जो बड़े ज़ाहिद हैं, कहते हैं कि मैंने मुसीबतों और ग़मों के इज़ाले के लिए सलातुत्तस्बीह जैसी कोई चीज़ नहीं देखी।

---

1. सहाबा रज़ि० का दौर पाये हुए बुज़ुर्गों को ताबिईन और ताबईन का दौर पाये हुए बुज़ुर्गों को तबअ ताबईन कहते हैं।

अल्लामा तक़ीसुब्की रह० फ़रमाते हैं कि यह नमाज़ बड़ी अहम है। बाज़ लोगों के इन्कार की वजह से धोखा में न पड़ना चाहिए। जो शख़्स इस नमाज़ के सवाब को सुनकर भी ग़फ़लत करे, वह दीन के बारे में सुस्ती करने वाला है, सुलहा के कामों से दूर है, उसको पक्का आदमी न समझना चाहिए। मिर्क़ात में लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० हर जुमा को पढ़ा करते थे।

(2) बाज़ उलमा ने इस वजह से इस हदीस का इंकार किया है कि इतना ज़्यादा सवाब सिर्फ़ चार रक्अत पर मुश्किल है, बिल ख़ुसूस कबीरा गुनाहों का माफ़ होना। लेकिन जब रिवायत बहुत से सहाबा रज़ि० से मंक़ूल है तो इंकार मुश्किल है अलबत्ता दूसरी आयात और अहादीस की वजह से कबीरा गुनाहों की माफ़ी के लिए तौबा की शर्त होगी।

(3) अहादीसे बाला में इस नमाज़ के दो तरीक़े बताये गये हैं–

अव्वल यह कि खड़े होकर अल्हम्दु शरीफ़ और सूर: के बाद पंद्रह मर्तबा चारों कलमे–

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

'सुब्हानल्लाहि, अल-हम्दु लिल्लाहि, लाइला ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर' पढ़े, फिर रुकूअ में 'सुब्हा न रब्बियल अज़ीम' के बाद दस मर्तबा पढ़े फिर रुकुअ से खडे होकर समी अल्ला हुलीमन हमीदा, रब्बना लकल हम्द के बाद दस मर्तबा पढ़े फिर दोनों सज्दों में 'सुब्हा न रब्बियल आला' के बाद दस-दस मर्तबा पढ़े, और दोनों सज्दों के दर्मियान जब बैठे, दस मर्तबा पढ़े और जब दूसरे सज्दे से उठे तो 'अल्लाहु अक्बर' कहता हुआ उठे और बजाए खड़े होने के बैठ जाए और दस मर्तबा पढ़कर बग़ैर अल्लाहु अक्बर कहे खड़ा हो जाए और दो रक्अत के बाद इसी तरह चौथी रक्अत के बाद, पहले इन कलमों को दस-दस मर्तबा पढ़े, फिर अत्तहीयात पढ़े।

दूसरा तरीक़ा यह है कि 'सुब्हानकल्लाहुम्म' के बाद 'अल-हम्दु' से पहले पंद्रह मर्तबा पढ़े और फिर अल-हम्दु और सूर: के बाद दस मर्तबा पढ़े और बाक़ी सब तरीक़ा बदस्तूर[1]। अल-बत्ता इस सूरत में न तो दूसरे सज्दे के बाद बैठने की ज़रूरत है और न अत्तहीयात के साथ पढ़ने की। उलमा ने लिखा है कि बेहतर यह है कि कभी इस तरह पढ़ लिया करे, कभी उस तरह।

1. पहले जैसा,

(4) चूंकि यह नमाज़ आमतौर से राइज नहीं है, इसलिए इसके मुताल्लिक चंद मसाइल भी लिखे जाते हैं, ताकि पढ़ने वालों को सहूलत हो।

मस्अला 1– इस नमाज़ के लिए कोई सूरः क़ुरआन की मुतअय्यन नहीं, जो न सी सूरः दिल चाहे, पढ़े लेकिन बाज़ उलमा ने लिखा है कि सूरः हदीद, सूरः हश्र, सूरः सफ़्फ़, सूरः जुमा, सूरः तग़ाबुन में से चार सूरतें पढ़े। बाज़ हदीसों में बीस आयतों के बक़द्र आया है इसलिए ऐसी सूरतें पढ़े जो बीस आयतों के क़रीब-क़रीब हों। बाज़ ने 'इज़ा ज़ुल ज़िलत', 'वल-आदियात', 'तकासुर' 'वल-अस्र' 'काफ़िरून', 'नस्र', 'इख़्लास' लिखा है कि इनमें से पढ़ लिया करे।

मस्अला 2– इन तस्बीहों को ज़बान से हरगिज़ न गिने कि ज़बान के गिनने से नमाज़ टूट जाएगी। उंगलियों को बन्द करके गिनना और तस्बीह हाथ में लेकर उस पर गिनना जायज़ है, मगर मक्रूह है। बेहतर यह है कि उंगलियां जिस तरह अपनी जगह पर रखी हैं, वैसी ही रहें और हर कलमा पर एक-एक उंगली को उसी जगह दबाता रहे।

मसअला 3– अगर किसी जगह तस्बीह पढ़ना भूल जाए तो दूसरे रुक्न में उस को पूरा करे। अलबत्ता भूले हुए की क़ज़ा रुकूअ से उठ कर और दो सज्दों के दर्मियान न करें। इसी तरह पहली और तीसरी रक्अत के बाद अगर बैठे तो उनमें भी भूले हुए की क़ज़ा न करे, बल्कि सिर्फ़ उनकी ही तस्बीह पढ़े और उनके बाद जो रुक्न हो, उसमें भूली हुई भी पढ़ ले, मसलन अगर रुकूअ में पढ़ना भूल गया तो उनको पहले सज्दे में पढ़ ले। इसी तरह पहले सज्दे की दूसरे सज्दे में और दूसरे सज्दे की दूसरी रक्अत में खड़ा हो कर पढ़ ले और अगर रह जाए तो आख़िरी क़ादे में अत्तहीयात से पहले पढ़ ले।

मस्अला 4– अगर सज्दा-सह्व किसी वजह से पेश आ जाए तो उसमें तस्बीह नहीं पढ़ना चाहिए, इसलिए कि मिक्दार तीन सौ है, वह पूरी हो चुकी। हां अगर किसी वजह से इस मिक्दार में कमी रही हो तो सज्दा सह्व में पढ़ ले।

मस्अला 5– बाज़ अहादीस में आया है कि अत्तहीयात के बाद सलाम से पहले यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ تَوْفِيْقَ اَهْلِ الْهُدٰى وَاَعْمَالَ اَهْلِ الْيَقِيْنِ وَمُنَاصَحَةَ

اَهْلِ التَّوْبَةِ وَعَزْمَ اَهْلِ الصَّبْرِ وَجِدَّ اَهْلِ الْخَشْيَةِ وَطَلَبَ اَهْلِ الرَّغْبَةِ وَ

تَعَبُّدَ اَهْلِ الْوَرَعِ وَعِرْفَانَ اَهْلِ الْعِلْمِ حَتّٰى اَخَافَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ
اَسْئَلُكَ مَخَافَةً تَحْجُزُنِىْ بِهَا عَنْ مَّعَاصِيْكَ وَحَتّٰى اَعْمَلَ بِطَاعَتِكَ
عَمَلًا اَسْتَحِقُّ بِهٖ رِضَاكَ وَحَتّٰى اُنَاصِحَكَ فِى التَّوْبَةِ خَوْفًا مِّنْكَ وَ
حَتّٰى اُخْلِصَ لَكَ النَّصِيْحَةَ حُبًّا لَّكَ وَحَتّٰى اَتَوَكَّلَ عَلَيْكَ فِى الْاُمُوْرِ
حُسْنَ الظَّنِّ بِكَ سُبْحَانَ خَالِقِ النُّوْرِ رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ
اغْفِرْلَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

(رواه ابونعيم فى الحلية من حديث ابن عباس ولفظه اذا فرغت قلت بعد
التشهد قبل التسليم اللّٰهم الخ كذا فى الاتحاف وقال اورده الطبرانى
ايضا من حديث العباس وفى سنده متروك اه قلت زاد فى المرقاة
فى آخر الدعاء بعض الالفاظ بعد قوله خالق النور زدتها تكميلا للفائدة۔

'अल्लाहुम्म इन्नी अस् अलुक तौफ़ी क़ अह्लिल हुदा व अअ्मा ल अह्लिल यक़ीनि व मुना स ह त अह्लि त्तौबति व अज़्म अह्लिस्साब्रि व जिद् द अह्लिल ख़श्यति व त ल ब अह्लिर्रग्बति व त अब्बु द अह्लिल व र अि व अिर फ़ा न अह्लिल अिल्मि हत्ता अ ख़ा फ़ क अल्लाहुम म इन्नी अस्अलु क मख़ा फ़ तन तहजुज़ुनी बिहा अम मआसी क व हत्ता अअ् म ल बिताअति क अ म लन अस्तहिक़्क़ु बिही रिज़ा क व हत्ता उनासिह क फ़ित्तौबति ख़ौफ़म मिन क व हत्ता अख़लसु लकन्नसहित-न्नसीहत हुब्बनप लक व हत्ता अ त व क्क ल अलै क फ़िल उमूरि हुस्नज़्ज़न्नि बि क सुब्हा न ख़ालिक़न्नूरि रब्बना अत् मिम लना नू र ना वग़्फ़िर लना इन्न क अला कुल्लि शैइन क़दीर बिरह्मति क या अर्हमर्राहिमीन०

ऐ अल्लह ! मैं आप से हिदायत वालों की सी तौफ़ीक़ मांगता हूं और यक़ीन वालों के अमल और तौबा वालों का ख़ुलूस मांगता हूं और साबिरीन की पुख़्तगी और आप से डरने वालों की-सी कोशिश (या उहतियात) मांगता हूं और रग़्बत वालों की-सी तलब और परहेज़गारों की-सी इबादत और उलेमा की-सी मारफ़त, ताकि मैं आप से डरने लगूं। ऐ अल्लाह ! ऐसा डर जो मुझे आपकी ना-फ़र्मानी से रोक दे और ताकि मैं आपकी इताअत से ऐसे अमल करने लगूं जिनकी वजह से आपकी रिज़ा व ख़ुशनूदी का मुसतिहक़ बन जाऊं और ताकि ख़ुलूस की तौबा आपके डर से करने लगूं और ताकि सच्चा इख़्लास आपकी मुहब्बत की वजह से करने लगूं और ताकि आपके साथ हुस्ने ज़न की वजह से आप पर तवक्कुल करने लगूं, ऐ नूर के

मस्अला 6– इस नमाज का औकाते मक्रूहा के अलावा बाक़ी दिन-रात के तमाम औक़ात में पढ़ना जायज़ है, अल-बत्ता ज़वाल के बाद पढ़ना ज़्यादा बेहतर है,[1] फिर दिन में किसी वक़्त, फिर रात को।

मस्अला 7– बाज हदीसों में सोम कलमा के साथ ला हौला को भी ज़िक्र किया गया है जैसा कि ऊपर तीसरी हदीस में गुज़रा, इसलिए अगर कभी-कभी इसको बढ़ा ले तो अच्छा है।

व आख़िरु दअ् वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۔

–ज़करिया कांधलवी

शब जुमा शव्वाल 1358 हि०

[1] जैसा कि हदीस नं० 2 में इसका बयान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्मा दिया है,

Click-->

फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद

की

चहल हदीस

मुरत्तबा

हज़रत मौलाना अल-हाफ़िज़, **मुहम्मद ज़करिया** साहब रह०

शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर

अव्वल क़ुरआन पाक के फ़ज़ाइल में चालीस अहादीस मय तर्जुमा
व शरह तहरीर फ़रमायी हैं। इसके बाद सात हदीसें क़ुरआन
पाक के मुतफ़र्रिक़ अहकाम में ज़िक्र फ़रमा कर तलिम्मा में
इन सब मज़ामीन पर इज्माली तबीह फ़रमायी है।
आख़िर में एक दूसरी चहल हदीस का मय तर्जुमा
इज़ाफ़ा फ़रमाया है जो बेहद इख़्तिसार के बावजूद निहायत जामेअ है।

प्रकाशक

सय्यद सिराज अहमद

ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)

2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ الْاِنْسَانَ
وَعَلَّمَهُ الْبَیَانَ وَ اَنْزَلَ لَهُ الْقُرْاٰنَ
وَجَعَلَهُ مَوْعِظَةً وَّشِفَاءً وَّهُدًى وَّ
رَحْمَةً لِّذَوِی الْاِیْمَانِ لَارَیْبَ فِیْهِ
وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهُ عِوَجًا اَنْزَلَهُ قَیِّمًا
حُجَّةً نُوْرًا لِّذَوِی الْاِیْقَانِ وَالصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ الْاَتَمَّانِ الْاَكْمَلَانِ
عَلٰى خَیْرِ الْخَلَائِقِ مِنَ الْاِنْسِ وَالْجَانِّ
الَّذِیْ نَوَّرَ الْقَلْبَ وَالْقُبُوْرَ نُوْرُهٗ
وَرَحْمَةٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ظُهُوْرُهٗ وَعَلٰى اٰلِهٖ
وَصَحْبِهِ الَّذِیْ هُمْ نُجُوْمُ الْهِدَایَةِ
وَنَاشِرُ الْفُرْقَانِ وَعَلٰى مَنْ تَبِعَهُمْ
بِالْاِیْمَانِ وَبَعْدُ فَیَقُوْلُ الْمُفْتَقِرُ
اِلٰى رَحْمَةِ رَبِّهِ الْجَلِیْلِ عَبْدُهُ الْمَدْعُوْ
بِزَكَرِیَّا بْنِ یَحْیٰى بْنِ اِسْمٰعِیْلَ هٰذِهٖ
الْعُجَالَةُ اَرْبَعُوْنِیَّةٌ فِیْ فَضَائِلِ الْقُرْاٰنِ
اِلْتَقَطْتُهَا مُمْتَثِلًا لِاَمْرِ مَنْ اِشَارَتُهٗ حُكْمٌ
وَطَاعَتُهٗ غُنْمٌ۔

'तमाम तारीफ़ उस पाक ज़ात के लिए है जिसने इन्सान को पैदा किया और उसको वज़ाहत[1] सिखाई और इसके लिए वह क़ुरआन पाक नाज़िल फ़र्माया जिसको नसीहत और शिफ़ा और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिए बनाया, जिसमें न कोई शक है और न किसी क़िस्म की कजी[2], बल्कि वह बिल्कुल मुस्तक़ीम[3] है और हुज्जत व नूर है यक़ीन वालों के लिए और कामिल व मुकम्मल दरूद व सलाम उस बेहतरीन ख़लाइक़ पर होजियो, जिसके नूर ने ज़िंदगी में दिलों को और मरने के बाद क़ब्रों को मुनव्वर फ़र्मा दिया, और जिसका ज़हूर तमाम आलम के लिए रहमत है और आपकी औलाद व अस्हाब रज़ि० पर, जो हिदायत के सितारे हैं और कलाम पाक के फैलाने वाले, नीज़ उन मोमिनीन पर भी जो ईमान के साथ उनके पीछे लगने वाले हैं, ह़म्द व सलात के बाद अल्लाह की रहमत का मुहताज बन्दा ज़करिया बिन यहया बिन इस्माईल अर्ज़ करता है कि यह जल्दी में लिखे हुए चंद औराक़[4] 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' में एक चहल हदीस है जिसको मैंने ऐसे हज़रात के इम्तिसाले हुक्म[5] में जमा किया है, जिनका इशारा भी हुक्म है और उनकी इताअत हर तरह मुनतनम है।[6],

हक़ सुब्हानहू तक़द्दुस के उन इनामाते ख़ास्सा में से, जो मदरसा आलिया मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर के साथ हमेशा मख़्सूस रहे हैं, मदरसे का सालाना जलसा

1. तफ़्सील, तश्रीह, 2. टेढ़, 3. सीधा, 4. कुछ पन्ने,
5. हुक्म की तामील में, 6. यानी ज़रूरी है,

है, जो हर साल मदरसे के इज्माली हालात सुनाने के लिए मुनअक़िद होता है। मदरसे के इस जलसे में मुक़र्ररीन, वाइज़ीन और मशाहीरे अह्ले हिन्द[1] के जमा करने का इस क़दर एहतमाम नहीं किया जाता, जितना कि अल्लाह वाले, क़ुलूब वाले, गुमनामी में रहने वाले मशाइख़ के इज्तिमाअ की सई[2] की जाती है। वह ज़माना अगरचे कुछ दूर हो गया है, जबकि हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी क़द्दसल्लाह सिर्रहुल अज़ीज़ और क़ुत्बुल इर्शाद हज़रते अक़्दस मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही नव्वरल्लाहु मर्क़दहू की तशरीफ़ आवरी हाज़िरीने जल्सा के क़ुलूब को मुनव्वर फ़र्माया करती थी। मगर वह मंज़र अभी आंखों से ज़्यादा दूर नहीं हुआ जबकि इन मुजद्दिदीने इस्लाम और शमस हिदायत[3] के जानशीन हज़रत शेख़ुल हिंद रहमतुल्लाह अलैहि हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रहमतुल्लाह अलैहि, हज़रत मौलाना। ख़लील अहमद साहब रहमतुल्लाह अलैहि व हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू, मदरसे के सालाना जल्से में मुज्तमा होकर मुर्दा क़ुलूब के लिए ज़िंदगी व नूरानियत के लिए चश्मे जारी फ़र्माया करते थे और इश्क़ के प्यासों को सेराब फ़र्माते थे।

दौरे हाज़िर में मदरसे का जल्सा उन बदरे हिदायत[4] से भी गो महरूम हो गया, मगर उनके सच्चे जानशीं हुज़्ज़ारे जल्सा[5] को अब भी अपने फ़ुयूज़ व बरकात से मालामाल फ़र्माते हैं। जो लोग (इमसाल) जल्से में शरीक रहे हैं, वह इसके लिए शाहिदे अद्ल[6] हैं, आंखों वाले बरकात देखते हैं, लेकिन हमसे बे-बसर[7] भी इतना ज़रूर महसूस करते हैं कि कोई बात ज़रूर है।

मदरसा के सालाना जल्से में अगर कोई शख़्स शुस्ता तक़ारीर ज़ोरदार लेक्चरों का तालिब बन कर आये तो शायद वह इतना मसरूर न जाए, जिस क़दर कि दवा-ए-दिल का तालिब कामगार व फ़ैज़याब[8] जाएगा। फ़ लिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नतु० فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ وَالْمِنَّةُ

इसी सिलसिले में साले रवां 27 ज़ीक़ादा 1348 हि० के जल्से में हज़रत शाह हाफ़िज़ मुहम्मद यासीन साहब रह० नगीनवी ने क़दमरंजा फ़र्मा कर इस सियहकार पर जिस क़दर शफ़क़त व लुत्फ़ का मेंह बरसाया, यह नाकारा उसके शुक्र[9] से भी क़ासिर[10] है। मम्दूह के मुताल्लिक़ यह मालूम हो जाने के बाद कि आप हज़रत गंगोही रहमतुल्लाह

---

1. तक़रीककरने वाले, वाज़ कहले वाले और हिन्दुस्तान के चोटी के लोग 2. कोशिश, 3. हिदायत के सूरज, 4. हिदायत के चांद, 5. जल्से में हाज़िर होने वाले, 6. सच्चे गवाह, 7. बे-आंख वाले, 8. कामियाब और फ़ैज़ पाया हुआ, 9. शुक्र अदा करना, 10. मजबूर,

अलैहि के ख़ुलफ़ा में से हैं फिर आपके औसाफ़े जलीला यकसूई तक़द्दुस मज़्हरे अन्वार व बरकात वग़ैरह के ज़िक्र की ज़रूरत नहीं रहती, जल्से से फ़राग़त पर मम्दूह जब वापस मकान वापस तश्रीफ़ ले गये तो गरामी नामा, मुकर्रमत नामा, इज़्ज़त नामा से मुझे इसका हुक्म फ़र्माया कि 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' में एक चहल हदीस जमा करके उसका तर्जुमा ख़िदमत में पेश करूं और नीज़ यह कि अगर मम्दूह के हुक्म से मैंने इन्हिराफ़ किया तो वह मेरे जानशीन शेख़ और मसीले वालिद चचा जान मौलाना अलहाफ़िज़ अल-हाज्ज मौलवी मुहम्मद इल्यास साहब रह० से अपने इस हुक्म को मुअक्कद[1] करायेंगे और बहरहाल यह ख़िदमत मम्दूह को मुझ जैसे नाकारा ही से लेना है। यह इफ़्तिख़ार नामा इत्तिफ़ाक़न ऐसी हालत में पहुंचा कि मैं सफ़र में था और मेरे चचा जान यहां तश्रीफ़ फ़र्मा थे। उन्होंने मेरी वापसी पर यह गरामीनामा अपने ताकीदी हुक्म के साथ मेरे हवाले फ़र्माया कि जिसके बाद न मुझे किसी माज़रत की गुंजाइश रही और न अपनी अदमे अह्लियत के पेश करने का मौक़ा रहा। मेरे लिए शरहे मुअत्ता इमाम मालिक[2] की मश्ग़ूलीयत भी एक क़वी उज़्र था, मगर इर्शादाते आलिया की अहमियत की वजह से उसको चन्द रोज़ के लिए मुल्तवी करके मा हज़र ख़िदमाते आलिया में पेश करता हूं और उन लग़्ज़िशों से जिनका वजूद मेरी ना-अह्लियत के लिए लाज़िम है, माफ़ी का ख़्वास्तगार हूं।

رجاء الحشر في سلك من قال فيهم النبي
صلى الله عليه وسلم من حفظ على أمتي
أربعين حديثا في أمر دينها بعثه الله فقيها
وكنت له يوم القيامة شافعا وشهيدا قال
العلقمي الحفظ ضبط الشيء ومنعه من
الضياع فتارة تكون حفظ العلم بالقلب
وإن لم يكتب وتارة في الكتاب وإن لم
يحفظه بقلبه فلو حفظ في كتاب ثم
نقل إلى الناس دخل في وعد الحديث
وقال المناوي قوله من حفظ على أمتي
أي نقل إليهم بطريق التخريج والإسناد
وقيل معنى حفظها أن ينقلها إلى
المسلمين وإن لم يحفظها ولا عرف
معناها وقوله أربعين حديثا صحاحا
أو حسانا قيل أو ضعافا يعمل بها في
الفضائل اهـ فلله در الإسلام ما أيسره
ولله در أهله ما أجود ما استنبطوا
رزقني الله تعالى وإياكم كمال
الإسلام ومما لا بد من التنبيه عليه
أني اعتمدت في التخريج على المشكاة
وتخريجه وشرحه المرقاة وشرح
الإحياء للسيد محمد المرتضى والترغيب

1. ताकीदी, 2. लेखक की अरबी में काफ़ी मोटी शरह,

لِلْمُنْذِرِيِّ وَمَا عَزَوْتُ إِلَيْهَا لِكَثْرَتِ الْأَخْذِ عَنْهَا وَمَا أَخَذْتُ عَنْ غَيْرِهَا عَزَوْتُهُ إِلَىٰ مَأْخَذِهِ وَيَنْبَغِي لِلْقَارِئِ

مُرَاعَاتُ آدَابِ التِّلَاوَةِ عِنْدَ الْقِرَاءَةِ :

'उस जमाअत के साथ हश्र होने की उम्मीद में, जिनके बारे में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी उम्मत के लिए उनके दीनी उमूर में चालीस हदीसें महफ़ूज करेगा, हक़ तआला शानुहू उसको क़यामत में आलिम उठायेगा और मैं उसके लिए सिफ़ारिशी और गवाह बनूंगा।

अलक़मी रह० कहते हैं कि महफ़ूज करना, शै के मुन्ज़बत[1] करने और ज़ाया होने से हिफ़ाज़त का नाम है, चाहे बग़ैर लिखे बर ज़बान याद कर ले या लिख कर महफ़ूज कर ले। अगरचे याद न हो, पस अगर कोई शख़्स किताब में लिख कर दूसरों तक पहुंचावे, वह भी हदीस की बशारत में दाख़िल होगा।

मुनादी रह० कहते हैं, मेरी उम्मत पर महफ़ूज कर लेने से मुराद उनकी तरफ़ नक़्ल करना है सनद के हवाले के साथ और बाज़ ने कहा है कि मुसलमानों तक पहुंचाना है अगरचे वह बरज़बान याद न हों, न उनके माना मालूम हों। इसी तरह चालीस हदीसें भी आम हैं कि सब सहीह हों या हसन या मामूली दर्जे की ज़ईफ़, जिन पर फ़ज़ाइल में अमल जायज़ हो। अल्लाहु अक्बर ! इस्लाम में भी क्या-क्या सहूलतें हैं और ताज्जुब की बात है कि उलमा ने भी किस क़दर बारीकियां निकाली हैं। हक़ तआला शानुहू कमाले इस्लाम मुझे भी नसीब फ़रमायें और तुम्हें भी।

इस जगह एक ज़रूरी अम्र पर मुतनब्बह करना भी लाबुदी[2] है वह यह कि मैंने अहादीस का हवाला देने में मिश्कात[3], तन्कीहुर्रुवात,[4] मिर्क़ात[5] और एह्याउल उलूम[6] की शरह और मंज़री रह० की तर्ग़ीब[7] पर एतमाद किया है और कसरत से उनसे लिया है, इसलिए उनके हवाले की ज़रूरत नहीं समझी, अलबत्ता इनके अलावा कहीं से लिया है, तो उसका हवाला नक़्ल कर दिया, नीज़ क़ारी[7] के लिए तिलावत के वक़्त उसके आदाब की रियायत भी ज़रूरी है। मक़्सूद से क़ब्ल मुनासिब मालूम होता है कि कलाम मजीद पढ़ने के कुछ अदाब भी लिख दिये जायें कि।

---

1. सलीक़े से रखना, 2. बहुत ज़रूरी, 3-6. ये किताबों के नाम हैं,
7. क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने वाला,

बे अदब महरूम गश्त अज़ फ़ज़्ले रब

मुख़्तसर तौर पर आदाब का ख़ुलासा यह है कि कलामुल्लाह शरीफ़ माबूद का कलाम है, महबूब व मत्लूब के फ़र्मूदा अल्फ़ाज़ हैं।

जिन लोगों को मुहब्बत से कुछ वासता पड़ा है, वह जानते हैं कि माशूक़ के ख़त की, महबूब की तक़रीर व तह्रीर की, किसी दिल खोये हुए के यहां क्या वक़अत होती है। इसके साथ जो शैफ़तगी व फ़रीफ़्तगी[1] का मामला होता है और होना चाहिए, वह क़वाइद व ज़वाबित से बालातर है–

मुहब्बत तुझ को आदाबे मुहब्बत ख़ुद सिखा देगी।

इस वक्त अगर जमाले हक़ीक़ी और इनामाते ग़ैर मुतनाही[2] का तसव्वुर हो तो मुहब्बत मौजज़न होगी, अब उसके साथ ही वह अह्कमुल हाकिमीन का कलाम है, सुल्तानुस्सलातीन का फ़र्मान है, उस सत्वत व जबरूत[3] वाले बादशाह का क़ानून है कि जिसकी हमसरी न किसी बड़े से बड़े से हुई और न हो सकती है, जिन लोगों को सलातीन के दरबार से कुछ वास्ता पड़ चुका है, वह तर्जुबे से और जिनको साबक़ा नहीं पड़ा, वह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि सुल्तानी फ़र्मान की हैबत क़ुलूब पर क्या हो सकती है। कलामे इलाही महबूब व–हाकिम का कलाम है, इसलिए दोनों आदाब का मज्मूआ उसके साथ बरतना ज़रूरी है।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० जब कलाम पाक पढ़ने के लिए खोला करते थे तो बे–होश होकर गिर जाते थे और ज़बान पर जारी हो जाता था। 'हाज़ा कलामु रब्बी, हाज़ा कलामु रब्बी' (यह मेरे रब का कलाम है, यह मेरे रब का कलाम है) यह उन आदाब का इज्माल है और उन तफ़्सीलात का इख़्तिसार है जो मशाइख़ ने आदाबे तिलावत में लिखे हैं, जिनकी किसी क़दर तौज़ीह भी नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूं, जिनका ख़ुलासा सिर्फ़ यह है कि बन्दा नौकर बन कर नहीं, चाकर बन कर नहीं, बल्कि बन्दा बनकर आक़ा व मालिक मुह्सिन व मुन्इम[4] का कलाम पढ़े। सूफ़िया ने लिखा है कि जो शख़्स अपने को क़िरात के आदाब से क़ासिर समझता रहेगा,[4] वह क़ुर्ब के मरातिब में तरक़्क़ी करता रहेगा और जो अपने को रज़ा व उज्ब की निगाह से देखेगा, वह तरक़्क़ी से दूर होगा।

---

1. निछावर होने का, 2. बे–इन्तिहा इनाअत 3. रौब व दबदबे वाले अल्लाह, 4. यानी यह समझता रहेगा कि मुझ से तिलावत के आदाब का हक़ अदा नहीं हुआ,

आदाब

मिस्वाक और वुज़ू के बाद किसी यक्सूई की जगह में निहायत विक़ार व तवाज़ो के साथ रू-ब क़िब्ला बैठे और निहायत ही हुज़ूरे क़ल्ब[1] और ख़ुशूअ के साथ इस लुत्फ़ से, जो उस वक़्त के मुनासिब है, इस तरह पढ़े कि गोया ख़ुद हक़ सुब्हानहू व अज़्ज इस्मुहू को कलाम पाक सुना रहा है। अगर वह माना समझता है तो तदब्बुर व तफ़क्कुर[2] के साथ आयाते वअ्द व रहमत पर दुआ-ए-मग़्फ़िरत व रहमत मांगे और आयाते अज़ाब व वईद पर अल्लाह से पनाह चाहे कि उसके सिवा कोई भी चारासाज़ नहीं। आयाते तंज़ीह व तक़्दीस[3] पर सुब्हानल्लाह कहे और अज ख़ुद तिलावत में रोना न आवे तो ब तकल्लुफ़ रोने की सई करे।

وَأَلَذُّ حَالَاتِ الْغَرَامِ لِمُغْرَمٍ ‏ شَكْوَى الْهَوَى بِالْمَدْمَعِ الْمُهْرَاقِ

व अलज़्ज़ु हालातिल ग़ुरामि ल मुग़्रमी
शिक्वल हवा बिल मजिल मुह्राक़ी

तर्जुमा— किसी आशिक़ के लिए सबसे ज़्यादा लज़्ज़त की हालत यह है कि महबूब से उसका गिला[4] हो रहा हो, इस तरह कि आंखों से बारिश हो।

पस अगर याद करना मक़्सूद न हो, तो पढ़ने में जल्दी में करे। कलामे पाक को रेहल या तकिया या किसी ऊंची जगह पर रखे। तिलावत के दर्मियान किसी से कलाम न करे। अगर कोई ज़रूरत ही पेश आ जावे तो कलाम पाक बन्द करके बात करे और फिर उसके बाद अऊज़ु पढ़ कर दोबारा शुरू करे। अगर मज्मे में लोग अपने-अपने कारोबार में मशग़ुल हों तो आहिस्ता पढ़ना अफ़ज़ल है, वरना आवाज़ से पढ़ना औला है। मशाइख़ ने तिलावत के छः आदाब ज़ाहिरी और छः बातिनी इर्शाद फ़र्माये हैं–

ज़ाहिरी आदाब

1. ग़ायते एहतराम से बा-वुज़ू रू-ब-क़िब्ला बैठे,
2. पढ़ने में जल्दी न करे, तर्तील व तज्वीद[5] से पढ़े,
3. रोने की सई करे, चाहे ब-तकल्लुफ़ ही क्यों न हो,

---

1. दिल को हाज़िर करके, 2. सोच-समझ कर, 3. यानी जिन आयतों में अल्लाह तआला की पाकी और मख़्लूक़ की बे-नियाज़ी आयी है, 4. शिकायत,
5. ठहर-ठहर कर अदाएगी के साथ पढ़े,

4. आयाते रहमत व आयाते अज़ाब का हक़ अदा करे जैसाकि पहले गुज़र चुका,

5. अगर रिया[1] का एहतमाल हो या किसी दूसरे मुसलमान की तक्लीफ़ व हर्ज का अंदेशा हो तो अहिस्ता पढ़े वरना आवाज़ से,

6. ख़ुश इल्हानी[2] से पढ़े कि ख़ुश इलहानी से कलाम पाक पढ़ने की बहुत सी अहादीस में ताकीद आई है।

बातिनी आदाब

1. अव्वल कलाम पाक की अज़्मत दिल में रखे कि कैसा आली मर्तबा का कलाम[4] है,

2. हक़ सुब्हानहू तक़द्दस की उलू-वे-शान और रफ़अत व किब्रियाई को दिल में रखें जिसका कलाम है,

3. दिल को वसाविस व ख़तरात से पाक रखे,

4. मआनी का तदब्बुर करे और लज़्ज़त के साथ पढ़े, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शब तमाम रात इस आयत को पढ़ कर गुज़ार दी-

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۔

इन तुअज़्ज़िबहुम फ़ इन्नहुम अिबाद क व इन तग़्फ़िर लहुम फ़ इन क अन्तल् अज़ीज़ुल हकीम०

तर्जुमा- ऐ अल्लाह ! अगर तू उनको अज़ाब दे तो यह तेरे बन्दे है और अगर मग़्फ़िरत फ़र्मा दे तो तू इज़्ज़त व हिक्मत वाला है

सईद बिन हुबैर रज़ि० ने एक रात इस आयत को पढ़ कर सुबह कर दी। 'वम्ताज़ुल यों म अय्युहल मुज्रिमून०'

'ओ मुज्रिमों ! आज क़यामत के दिन फ़र्माबरदारों से अलग हो जाओ।'

5. जिन आयात की तिलावत कर रहा है, दिल को उनके ताबे बना दे, मसलन अगर आयते रहमत ज़बान पर है, दिल में सुरूरे महज़ बन जावे और आयते अज़ाब अगर आ गयी है, तो दिल लरज़ जाए,

---

1. दिखावे, 2. अच्छी आवाज़ के साथ, 4. ऊंचे रुत्बे का,

6. कानों को इस दर्जा मुतवज्जह बना दे कि गोया ख़ुद हक़ सुब्हानहू तक़द्दुस कलाम फ़र्मा रहे हैं और यह सुन रहा है। हक़ तआला शानुहू महज़ अपने लुत्फ़ व करम से मुझे भी इन आदाब के साथ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माएं और तुम्हें भी।

मस्अलाए- इतने क़ुरआन शरीफ़ का हिफ़्ज़ करना जिस से नमाज़ अदा हो जाए, हर शख़्स पर फ़र्ज़ है और तमाम कलाम पाक का हिफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया है। अगर कोई भी अल-अयाज़ बिल्लाह[1] हाफ़िज़ न रहे, तो तमाम मुसलमान गुनाहगार हैं, बल्कि ज़रकशी से मुल्ला अलीक़ारी रह० ने नक़्ल किया है कि जिस शहर या गांव में कोई क़ुरआन पाक पढ़ने वाला न हो, तो सब गुनाहगार हैं।

इस ज़माना-ए-ज़लालत[2] व जिहालत में जहां हम मुसलमानों में और बहुत से दीनी उमूर में गुमराही फैल रही है, वहां एक आम आवाज़ यह भी है कि क़ुरआन शरीफ़ के हिफ़्ज़ करने को फ़िज़ूल समझा जा रहा है। उसके अल्फ़ाज़ रटने को हिमाक़त बतलाया जाता है, उसके अल्फ़ाज़ याद करने को दिमाग़ सोज़ी और तज़्यीअ औक़ात[3] कहा जाता है। अगर हमारी बद-दीनी की यही एक वजह होती तो इस पर कुछ तफ़्सील से लिखा जाता, मगर यहां हर अदा मर्ज़ है और हर ख़्याल बातिल ही की तरफ़ खींचता है, इसलिए किस-किस चीज़ को रोइए, और किस-किस का शिक्वा कीजिए।

फ़ इलल्लाहिल मुश्तकी वल्लाहुल मुस्तआन,[4]

(١) عَنْ عُثْمَانَ رضي الله عنه قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَاَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ كَذَا فِي التَّرْغِيْبِ وَعَزَاهُ اِلٰى مُسْلِمٍ اَيْضًا لٰكِنْ حَكَى الْحَافِظُ فِي الْفَتْحِ عَنْ اَبِي الْعَلَاءِ اَنَّ مُسْلِمًا سَكَتَ عَنْهُ

I. 'हज़रत उस्मान रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मंक़ूल है कि तुम में सबसे बेहतर शख़्स वह है, जो क़ुरआन शरीफ़ को सीखे और सिखाये।'

अक्सर कुतुब में यह रिवायत 'वाव' के साथ है, जिस का तर्जुमा लिखा गया इस सूरत में फ़ज़ीलत उस शख़्स के लिए है कि जो कलाम मजीद सीखे और इस के बाद दूसरों को सिखाये। लेकिन बाज़ कुतुब में यह रिवायत 'अव' के साथ वारिद हुई है। इस सूरत में बेहतरी और फ़ज़ीलत आम होगी कि ख़ुद सीखे या दूसरों को

---

1. अल्लाह की पनाह, 2. भटकना, 3. वक़्त की बर्बादी,

4. बस ख़ुदा ही से शिकायत की जा सकती है और उसी से मदद मांगी जा सकती है,

सिखाये, दोनों के लिए मुस्तक़िल ख़ैर व बेहतरी है।

कलाम पाक चूंकि असल दीन है, उस की बक़ा व इशाअत पर ही दीन का मदार है, इसलिए इसके सीखने और सिखाने का अफ़ज़ल होना ज़ाहिर है, किसी तौज़ीह का मुहताज नहीं, अल-बत्ता इस की अन्वाअ[1] मुख़्तलिफ़ हैं। कमाल इसका यह है कि मतालिब व मक़ासिद समेत सीखे और अद्ना दर्जा इसका यह है कि फ़क़त अल्फ़ाज़ सीखे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दूसरा इर्शाद हदीस मज़्कूर की ताईद करता है जो सईद बिन सुलैम रज़ि० से मुर्सलन मंक़ूल है कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ को हासिल कर ले और फिर किसी दूसरे शख़्स को जो कोई और चीज अता किया गया हो, अपने से अफ़ज़ल समझे, तो उस ने हक़ तआला शानुहू के उस इनाम की, जो अपने कलाम पाक की वजह से उस पर फ़र्माया है, तह्क़ीर की है,[2] और खुली हुई बात है कि जब कलामे इलाही सब कलामों से अफ़ज़ल है जैसाकि मुस्तक़िल अहादीस में आने वाला है, तो उस का पढ़ना-पढ़ाना यक़ीनन सब चीज़ों से अफ़ज़ल होना ही चाहिए।

एक दूसरी हदीस से मुल्ला अलीक़ारी रह० ने नक़्ल किया है कि जिस शख़्स ने कलाम पाक को हासिल कर लिया, उसने उलूमे नुबव्वत को अपनी पेशानी में जमा कर लिया।

सह्ल तस्तरी रह० फ़र्माते हैं कि हक़ तआला शानुहू से मुहब्बत की अलामत यह है कि उसके कलामे पाक की मुहब्बत क़ल्ब में हो। शरह एह्या में उन लोगों की फ़िहरिस्त में जो क़यामत के हौलनाक दिन में अर्श के साए के नीचे रहेंगे, उन लोगों को भी शुमार किया है जो मुसलमानों के बच्चों को क़ुरआन पाक की तालीम देते हैं, नीज उन लोगों को भी शुमार किया है जो बचपन में क़ुरआन शरीफ़ सीखते हैं और बड़े होकर उस की तिलावत का एहतमाम करते हैं।

٢ - عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْاٰنُ عَنْ ذِكْرِىْ وَمَسْئَلَتِىْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَآ اُعْطِى السَّآئِلِيْنَ وَفَضْلُ كَلَامِ اللّٰهِ عَلٰى سَآئِرِ الْكَلَامِ كَفَضْلِ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ ـ (رواه الترمذى والدارمى والبيهقى فى الشعب)

2. 'अबू सईद रज़ि० से हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मंक़ूल है कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का यह फ़र्मान है कि जिस शख़्स को क़ुरआन

1. क़िस्में, 2. छोटा समझा है,

शरीफ़ की मशग़ूली की वजह से ज़िक्र करने और दुआएं मांगने की फ़ुर्सत नहीं मिलती, मैं उस को सब दुआएं मांगने वालों से ज़्यादा अता करता हूं और अल्लाह तआला शानुहू के कलाम को सब कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत है जैसी कि ख़ुद हक़ तआला शानुहू को तमाम मख़्लूक़ पर।'

यानी जिस शख़्स को क़ुरआन पाक के याद करने या जानने और समझने में इस दर्जा मशग़ूली है कि किसी दूसरी दुआ वग़ैरह के मांगने का वक़्त नहीं मिलता, मैं दुआ मांगने वालों के मांगने से भी अफ़ज़ल चीज उसको अता करूंगा। दुनियां का मुशाहदा है कि जब कोई शख़्स शीरीनी वग़ैरह तक़्सीम कर रहा हो और कोई मिठाई लेने वाला उसके ही काम में मशग़ूल हो और उस की वजह से न आ सकता हो, तो यक़ीनन उसका हिस्सा पहले ही निकाल दिया जाता है।

एक दूसरी हदीस में इसी मौक़े पर मज़्कूर है कि मैं उसको शुक्र गुज़ार बन्दों के सवाब से अफ़ज़ल सवाब अता करूंगा।

(٣) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ
أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ
أَوِ الْعَقِيْقِ فَيَأْتِيَ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِي غَيْرِ
إِثْمٍ وَلَا قَطِيْعَةِ رَحِمٍ فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ كُلُّنَا
نُحِبُّ ذٰلِكَ قَالَ أَفَلَا يَغْدُوْ أَحَدُكُمْ إِلَى
الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمُ أَوْ يَقْرَأُ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ خَيْرٌ لَّهٗ
مِنْ نَاقَتَيْنِ وَثَلَاثٌ خَيْرٌ لَّهٗ مِنْ ثَلَاثٍ وَأَرْبَعٌ
خَيْرٌ لَّهٗ مِنْ أَرْبَعٍ وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ
مِنَ الْإِبِلِ (رواه مسلم وابوداود)

3. 'उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये। हम लोग सुफ़्फ़ा में बैठे थे। आपने फ़र्माया कि तुममें से कौन शख़्स उसको पसन्द करता है कि अलस्सुबाह[1] बाज़ार बुत्हान या अक़ीक़ में जावे और दो ऊंटनियां उम्दा से उम्दा बिला किसी क़िस्म के गुनाह के और क़ता रहमी के पकड़ लाये। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि इसको तो हम में से हर शख़्स पसन्द करेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मस्जिद में जा कर दो आयतों का पढ़ना या पढ़ा देना दो ऊंटनियों से और तीन आयत का तीन ऊंटनियों से, इसी तरह चार का चार से अफ़ज़ल है और इनके बराबर ऊंटों से अफ़ज़ल है।'

सुफ़्फ़ा मस्जिदे नबवी में एक ख़ास मुअय्यन चबूतरे का नाम है, जो फ़ुक़रा मुहाजिरीन की नशिस्तगाह[2] थी। अस्हाबे सुफ़्फ़ा की तायदाद मुख़्तलिफ़ औक़ात में कम व बेश होती रहती थी। अल्लामा सुयूती रह० ने एक सौ एक नाम गिनवाये हैं और मुस्तक़िल रिसाला उनके अस्मा-ए-गिरामी में तस्नीफ़ किया है।

---

1. बहुत सवेरे, 2. बैठने की जगह,

बुत्हान और अक़ीक मदीना तय्यबा के पास दो जगहें है, जहां ऊंटों का बाज़ार लगता था। अरब के नजदीक ऊंट निहायत पसंदीदा चीज़ थी, बिल-ख़ुसूस वह ऊंटनी जिस का कोहान फ़रबा[1] हो।

बग़ैर गुनाह का मतलब यह है कि बे-मेहनत चीज अक्सर या छीन कर किसी से ले ली जाती है या यह कि मीरास वग़ैरह में किसी रिश्तेदार के माल पर क़ब्ज़ा करले या किसी का माल चुरा ले। इसलिए हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन सबकी नफ़ी फ़र्मा दी कि बिल्कुल बिला मशक़्क़त और बिंदू किसी गुनाह के हासिल कर लेना जिस क़दर पसंदीदा है, इससे ज़्यादा बेहतर व अफ़ज़ल है चंद आयात का हासिल कर लेना और यक़ीनी अम्र है कि एक दो ऊंट दरकिनार[3] हफ़्त अक़्लीम[4] की सल्तनत भी अगर किसी शख़्स को मिल जाए, तो क्या, आज नहीं तो कल मौत उससे जबरन जुदा कर देगी, लेकिन उस आयात का अज्र हमेशा के लिए साथ रहने वाली चीज़ है। दुनियां ही में देख लीजिए कि आप किसी शख़्स को एक रुपया अता फ़र्मा दीजिए, इसकी उसको मसर्रत होगी, ब मुक़ाबला इसके कि एक हज़ार रुपया उसके हवाले कर दें कि उसको अपने पास रख ले, मैं अभी वापस आकर ले लूंगा कि इस सूरत में बजुज़ उस पर बार अमानत के और कोई फ़ायदा उसको हासिल नहीं होगा, दर हक़ीक़त इस हदीस शरीफ़ में फ़ानी व बाक़ी[5] के तक़ाबुल पर तंबीह भी मक़्सूद है कि आदमी अपनी हरकत व सुकून पर ग़ौर करे कि किसी फ़ानी चीज़ पर उसको ज़ाया कर रहा हूं या बाक़ी रहने वाली चीज पर और फिर हसरत है उन औक़ात पर जो बाक़ी रहने वाला वबाल कमाते हों।

हदीस का अख़ीर जुम्ला उनके बराबर ऊंटों से अफ़ज़ल है, तीन मतालिब का मुह्तमल है-

अव्वल यह कि चार अदद तक बित्तफ़्सील इर्शाद फ़र्माया और उसके मा फ़ौक़[5] को इज्मालन फ़र्मा दिया कि जिस क़दर आयात कोई शख़्स हासिल करेगा, उस के बक़द्र ऊंटों से अफ़ज़ल है। इस सूरत में ऊंटों से जिस मुराद है, ख़्वाह ऊंट हों या ऊंटनियां और बयान है चार से ज़्यादा का, इसलिए कि चार तक का ज़िक्र ख़ुद तसरीहन मज़्कूर हो चुका।

दूसरा मतलब यह है कि उन्हीं आदाद का ज़िक्र है जो पहले मज़्कूर हो चुके और मतलब यह है कि रग़बात[6] मुख़्तलिफ़ हुआ करती है, किसी को ऊंटनी पसंद

---

1. चर्बीदार मोटा, 2. दूरा रहा, 3. सात देशों कर, 4. ख़त्म होने वाला और बाक़ी रहने वाला, इन दोनों का मुक़ाबला है, 5. उससे ऊपर वाली अदद को, 6. दिलचस्पियां,

है, तो कोई ऊंट का गरवीदा है, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने इस लफ़्ज़ से यह इर्शाद फ़र्मा दिया कि हर आयत एक ऊंटनी से भी अफ़ज़ल है। अगर कोई शख़्स ऊंट से मुहब्बत रखता हो तो एक आयत एक ऊंट से भी अफ़ज़ल है।

तीसरा मतलब यह है कि यह बयान उनही आदाद का है जो पहले ज़िक्र किये गये, चार से ज़ायद का नहीं है मगर दूसरे मतलब में जो तक़रीर गुज़री कि एक ऊंटनी या एक ऊंट से अफ़ज़ल है यह नहीं बल्कि मज्मुआ मुराद है कि एक आयत एक ऊंट और एक ऊंटनी दोनों के मज्मुए से अफ़ज़ल है इसी तरह हर आयत अपने मुआफ़िक़ अदद ऊंटनी और ऊंट दोनों के मज्मुए से अफ़ज़ल है तो गोया फ़ी आयत का मुक़ाबला एक जोड़ से हुआ। मेरे वालिद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने इसी मतलब को पसंद फ़र्माया है कि इसमें फ़ज़ीलत की ज़्यादती है। अगरचे यह मुराद नहीं कि एक आयत का अज्र एक ऊंट या दो ऊंट का मुक़ाबला कर सकता है, यह सिर्फ़ तंबीह और तमसील[1] है। मैं पहले लिख चुका हूं कि एक आयत जिसका सवाब दायमी और हमेशा रहने वाला है, हफ़्त अक़्लीम की बादशाहत से जो फ़ना हो जाने वाली है, अफ़ज़ल और बेहतर है।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने लिखा है कि एक बुज़ुर्ग के बाज़ तिजारत पेशा अह्बाब ने उनसे दर्ख़्वास्त की कि जहाज़ से उतरने के वक़्त हज़रत जद्दा तश्रीफ़ फ़र्मा हों, ताकि जनाब की बरकत से हमारे माल में नफ़ा हो और मक़्सूद यह था कि तिजारत के मुनाफ़े से हज़रत के बाज़ ख़ुद्दाम[2] को कुछ नफ़ा हासिल हो। अव्वल तो हज़रत ने उज़्र फ़र्माया, मगर जब उन्होंने इस्रार किया तो हज़रत ने फ़र्माया कि तुम्हें ज़ायद से ज़ायद जो नफ़ा माले तिजारत में होता है, वह क्या मिक़्दार है। उन्होंने अर्ज़ किया कि मुख़्तलिफ़ होता है, ज़ायद से ज़ायद एक के दो हो जाते हैं। हज़रत ने फ़र्माया कि इस क़लील नफ़ा के लिए इस क़दर मशक़्क़त उठाते हो, इतनी सी बात के लिए हम मुह्तरम की नमाज़ कैसे छोड़ दें जहां एक के लाख मिलते हैं।

दर हक़ीक़त मुसलमानों के ग़ौर करने की जगह है कि वह ज़रा-सी दुन्यवी मताअ के ख़ातिर किस क़दर दीनी मुनाफ़े को क़ुर्बान कर देते हैं।

۴- عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْاٰنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ وَالَّذِيْ يَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ وَيَتَتَعْتَعُ فِيْهِ وَهُوَ عَلَيْهِ شَاقٌّ لَهٗ اَجْرَانِ (رواه البخاری ومسلم وابو داؤد والترمذی والنسائی وابن ماجة)

---

1. मिसाल, 2. ख़ादिमों को,

4. 'हजरत आइशा रजि० अनहा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि क़ुरआन का माहिर उन मलाइका के साथ है जो मीर मुंशी हैं और नेक कार[1] हैं और जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ को अटकता हुआ पढ़ता है और उसमें दिक़्क़त उठाता है, उसको दोहरा अज्र है।'

क़ुरआन शरीफ़ का माहिर वह कहलाता है, जिसको याद भी ख़ूब हो और पढ़ता भी ख़ूब हो और अगर मआनी व मुराद पर भी क़ादिर हो तो फिर क्या कहना। मलाइका के साथ होने का यह मतलब है कि वह भी क़ुरआन शरीफ़ के लूहे महफ़ूज से नक़्ल करने वाले हैं और यह भी उसका नक़्ल करने वाला और पहुंचाने वाला है, तो गोया दोनों एक ही मस्लक पर हैं या यह कि हश्र में उनके साथ इज्तिमाअ[2] होगा, अटकने वाले को दोहरा अज्र एक उसकी क़िराअत का, दूसरा उसकी इस मशक़्क़त का जो इस बार-बार अटकने की वजह से बरदाश्त करता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह उस माहिर से बढ़ जाये। माहिर के लिए जो फ़जीलत इर्शाद फ़र्मायी गयी है, वह इससे बहुत बढ़ कर है कि मख़्सूस मलाइका के साथ उसका इज्तिमाअ फ़र्माया है, बल्कि मक़सूद यह कि उसके अटकने की वजह से इस मशक़्क़त का अज्र मुस्तक़िल मिलेगा। लिहाज़ा इस उज्र की वजह से किसी को छोड़ना नहीं चाहिए।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने तिबरानी और बैहक़ी की रिवायत से नक़्ल किया है कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है और वह याद नहीं होता, तो उसके लिए दोहरा अज्र है और जो उसको याद करने की तमन्ना करता रहे, लेकिन याद करने की ताक़त नहीं रखता, मगर वह पढ़ना भी नहीं छोड़ता, तो हक़ तआला शानुहू उसका हुफ़्फ़ाज़[3] ही के साथ हश्र फ़र्माएंगे।

٥- عَنْ اِبْنِ عُمَرَ رَضِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا حَسَدَ اِلَّا عَلَى اثْنَيْنِ رَجُلٌ اٰتَاهُ اللّٰهُ الْقُرْاٰنَ فَهُوَ يَقُوْمُ بِهٖ اٰنَاءَ اللَّيْلِ وَاٰنَاءَ النَّهَارِ وَرَجُلٌ اٰتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ اٰنَاءَ اللَّيْلِ وَ اٰنَاءَ النَّهَارِ (رواه البخاری والترمذی والنسائی)

5. इब्ने उमर रजि० से हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद मंक़ूल है कि हसद दो शख़्सों के सिवा किसी पर जायज नहीं, एक वह जिस को हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत अता फ़र्मायी और वह दिन-रात उसमें मश्ग़ूल रहता है, दूसरे वह जिसको हक़ सुबहानहू ने माल की कसरत अता फ़र्मायी और उसको ख़र्च करता है।

---

1. भले लोग, 2. मेल, एक साथ जमा होना, 3. हाफ़िज़ों

क़ुरआन शरीफ़ की आयात और अहादीसे कसीरा के अमूम से हसद की बुराई और नाजायज होना मुतलकन मालूम होता है। इस हदीस शरीफ़ से दो आदमियों के बारे में जवाज मालूम होता है, चूंकि वह रिवायात ज़्यादा मश्हूर व कसीर हैं, इसलिए उलमा ने इस हदीस के दो मतलब इर्शाद फ़रमाये हैं-

अव्वल यह कि हसद इस हदीस शरीफ़ में रश्क के माना में है, जिसको अरबी में ग़िब्ता कहते हैं। हसद और ग़िब्ता में यह फ़र्क है कि हसद में किसी के पास कोई नेमत देख कर यह आरज़ु होती है कि उसके पास यह नेमत न रहे, ख़्वाह अपने पास हासिल हो या न हो और रश्क में अपने पास उसके हुसूल[1] की तमन्ना व आरज़ू होती है, आम है कि दूसरे से ज़ायल हो या न हो। चूंकि हसद बिल इज्माअ[2] हराम है, इसलिए उलमा ने इस लफ़्ज़ हसद को मजाज़न ग़िब्ता के माना में इर्शाद फ़र्माया है जो दुनयवी उमूर में मुबाह है और दीनी उमूर में मुस्तहब।

दूसरा मतलब यह भी मुम्किन है कि बसा औक़ात 'कलाम अला सबीलिल फ़र्ज़ि वत्तक़दीर' मुस्तामल होता है यानी अगर हसद जायज होता तो यह दो चीजें ऐसी थीं कि इनमें जायज होता।

٦- عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ یَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ مَثَلُ الْاُتْرُجَّۃِ رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَ طَعْمُھَا طَیِّبٌ وَمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ لَا یَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ مَثَلُ التَّمْرَۃِ لَا رِیْحَ لَھَا وَطَعْمُھَا حُلْوٌ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِیْ لَا یَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ کَمَثَلِ الْحَنْظَلَۃِ لَیْسَ لَھَا رِیْحٌ وَطَعْمُھَا مُرٌّ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِیْ یَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ مَثَلُ الرَّیْحَانَۃِ رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَطَعْمُھَا مُرٌّ (رواہ البخاری ومسلم والنسائی و ابن ماجہ)

6. 'अबूमूसा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो मुसलमान क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है, उसकी मिसाल तुरंज[3] की -सी है, इसकी ख़ुश्बू भी उम्दा होती है और मज़ा भी लज़ीज़ और जो मोमिन क़ुरआन शरीफ़ न पढ़े, उसकी मिसाल खजूर की-सी है कि ख़ुश्बू कुछ नहीं, मगर मज़ा शीरीं होता है और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ता, उसकी मिसाल हंज़ल के फल की-सी है कि मज़ा कड़ुवा और ख़ुश्बू कुछ नहीं और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है, उसकी मिसाल ख़ुश्बूदार फूल की-सी है कि ख़ुश्बू उम्दा और मज़ा कड़ुवा।'

मक़्सूद इस हदीस से ग़ैर महसूस शै को महसूस के साथ तश्बीह देना है ताकि ज़ेहन में फ़र्क कलाम पाक के पढ़ने में सहूलत से आ जावे, वरना ज़ाहिर है कि कलाम

---

1. हासिल करना, 2. सब की राय के साथ, 3. नींबू इसी तरह का एक फल जो इस से ज़रा बड़ा होता है,

पाक की हलावत[1] व महक से क्या निस्बत, तुरंज व खजूर को, अगरचे इन अश्या के साथ तश्बीह में ख़ास निकात भी हैं जो उलूमे नबवीया से ताल्लुक़ रखते हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उलूम की वुस्अत की तरफ मुशीर[2] हैं,मसलन तुरंज ही को लीजिए, मुंह में ख़ुश्बू पैदा करता है मेदे के साफ करता है हज़म में कुव्वत देता है वग़ैरा-वग़ैरा यह मुनाफ़े ऐसे हैं कि किराते क़ुरआन शरीफ़ के साथ ख़ास मुनासिबत रखते हैं मसलन मुंह का ख़ुश्बूदार होना, बातिन का साफ़ करना, रूहानियत में क़ूव्वत पैदा करना, यह चुनांचे तिलावत में हैं जो पहले मुनाफे) के साथ बहुत ही मुशाबहत रखते हैं। एक ख़ास असर तुरंज में यह भी बतलाया जाता है कि जिस घर में तरंज हो, वहां जिन्न नहीं जा सकता। अगर यह सही है तो फिर कलामे पाक के साथ ख़ास मुशाबिहत है। बाज अतिब्बा से मैंने सुना है कि तरंज से हाफ़िजा भी क़वी होता है और हजरत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से 'एह्या' में नक़्ल किया है कि तीन चीजें हाफ़िजे को बढ़ाती हैं-

1. मिस्वाक, 2. रोज़ा और, 3. तिलावत कलामुल्लाह शरीफ़ की।

अबूदाऊद की रिवायत में इस हदीस में ख़त्म पर एक और मजमून निहायत ही मुफ़ीद है कि बेहतर हमशींन[3] की मिसाल मुश्क वाले आदमी की सी है अगर तुझे मुश्क न मिल सका तो उसकी ख़ुश्बू तो कहीं गयी नहीं और बद्तर हम नशीन की मिसाल आग की भट्टी वाले की तरह से है कि अगर स्याही न पहुंचे तब भी धुआं तो कहीं गया ही नहीं, निहायत ही अहम बात है। आदमी को अपने हमनशीनों पर भी नजर करना चाहिए कि किस क़िस्म के लोगों में हर वक़्त नशिस्त व बर्ख़ास्त है।[4]

٧- عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَّيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ۔ (رواه مسلم)

7. हजरत उमर रजि० हुज़ूर अक्दस सल्लाहू अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल करते हैं हक़ तआला शानुहू इस किताब यानी क़ुरआन पाक की वजह से कितने ही लोगों को बुलंद मर्तबा करता है और कितने ही लोगों को पस्त व ज़लील करता है।

यानी जो लोग इस पर ईमान लाते हैं, अमल करते हैं, हक़ तआला शानुहू उनको दुनियां व आख़िरत में रफ़्अत इज़्ज़त अता फ़र्माते है और जो लोग इस पर

1. मिठास, 2. इशारा करने वाले, 3. साथ उठने-बैठने वाला, 4. बैठना-उठना,

अमल नहीं करते, हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस उनको ज़लील करते हैं। कलामुल्लाह शरीफ़ की आयात से भी यह मज़मून साबित होता है।

एक जगह इर्शाद है- يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا

युज़िल्लु बिही कसीरंव्व यह्दी बिही कसीरा०

हक़ तआला शानुहू इसकी वजह से बहुत से लोगों को हिदायत फ़र्माते हैं और बहुत से लोगों को गुमराह। दूसरी जगह इर्शाद है-

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु व शिफ़ाउंव्व रह्मतुल्लिल मुअ्मिनी न व ला यज़ी दुज़्ज़ालिमी न इल्ला ख़सारा०

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मंकूल है कि इस उम्मत के बहुत से मुनाफ़िक़ क़ारी होंगे, बाज़ मुशाइख़ से 'एह्या'[1] में नक़्ल किया है कि बन्दा एक सूरः कलाम पाक की शुरू करता है तो मलाइका उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं यहां तक कि वह फ़ारिग़ हो और दूसरा शख़्स एक सूरत शुरू करता है तो मलाइका उसके ख़तम तक उस पर लानत करते हैं। बाज़ उलमा से मंकूल है कि आदमी तिलावत करता है और ख़ुद अपने ऊपर लानत करता है और उसको ख़बर भी नहीं होती। क़ुरआन शरीफ़ में पढ़ता है, 'अला लअ् नतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन' और ख़ुद ज़ालिम होने की वजह से इस वईद में दाख़िल होता है, इसी तरह पढ़ता है 'लअ्नतुल्लाहि अलल् काज़िबीन०' और खुद झूठा होने की वजह से इसका मुस्तहिक़ होता है।

आमिर बिन वासिला रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने नाफ़ेअ बिन अब्दुल हारिस को मक्का मुकर्रमा का हाकिम बना रखा था। उनसे एक मर्तबा दर्याफ़्त फ़र्माया कि जंगलात का नाज़िम किस को मुकर्रर कर रखा है। उन्होंने अर्ज किया कि इब्ने अब्ज़ा को। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, इब्ने अब्ज़ा कौन शख़्स है ? उन्होंने अर्ज किया हमारा एक ग़ुलाम है। हज़रत उमर रज़ि० ने एतराज़न फ़र्माया कि ग़ुलाम को अमीर क्यों बना दिया ? उन्होंने अर्ज किया कि किताबुल्लाह का पढ़ने वाला है। हज़रत उमर रज़ि० ने इस हदीस को नक़्ल किया कि नबी करीम सल्ल० का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू इस कलाम की बदौलत बहुत से लोगों के रफ़ए हैं।

---

1. यानी इमाम ग़ज़्ज़ाली की किताब 'एह्याउल उलूम',

٨- عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ثَلٰثٌ تَحْتَ الْعَرْشِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ الْقُرْاٰنُ يُحَاجُّ الْعِبَادَ لَهٗ ظَهْرٌ وَّبَطْنٌ وَّ الْاَمَانَةُ وَالرَّحِمُ تُنَادِيْ اَلَا مَنْ وَّصَلَنِيْ وَصَلَهُ اللّٰهُ وَمَنْ قَطَعَنِيْ قَطَعَهُ اللّٰهُ-

(رواه فی شرح السنة)

8. 'अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि तीन चीजें क़यामत के दिन अर्श के नीचे होंगी, एक कलाम पाक कि झगड़ेगा बन्दों से, क़ुरआन पाक के लिए ज़ाहिर है और बातिन, दूसरी चीज अमानत है और तीसरी रिश्तेदारी जो पुकारेगी कि जिस शख़्स ने मुझ को जोड़ा, अल्लाह उस को अपनी रहमत से मिला दे और जिसने मुझ को तोड़ा, अल्लाह अपनी रहमत से उस को जुदा कर दे।

इन चीजों के अर्श के नीचे होने से मक़्सूद उनका कमाले क़ुर्ब है यानी हक़ सुब्हानहू व तक़द्दस के आली दरबार में बहुत ही क़रीब होंगी।

कलामुल्लाह शरीफ़ के झगड़ने का मतलब यह है कि जिन लोगों ने उसकी रियायत की, उसका हक़ अदा किया, उस पर अमल किया, उसकी रिवायत की, उसका हक़ अदा किया, उस पर अमल किया, उनकी तरफ़ से दरबारे हक़ सुब्हानहू में झगड़ेगा, शफ़ाअत करेगा, उनके दर्जे बुलंद करायेगा।[1]

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने ब-रिवायत तिर्मिज़ी नक्ल किया है कि क़ुरआन शरीफ़ बारगाहे इलाही में अर्ज करेगा कि उसको जोड़ा मरहमत फ़र्माएं तो हक़ तआला शानुहू करामत का ताज मरहमत फ़र्मा देंगे, फिर वह ज़्यादती की दर्ख़्वास्त करेगा तो हक़ तआला शानुहू इक्राम का पूरा जोड़ा मरहमत फ़र्मा देंगे, फिर वह दर्ख़्वास्त करेगा कि या अल्लाह! आप उस शख़्स से राज़ी हो जाएं तो हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस उससे रज़ा का इज़्हार फ़र्मावेंगे[2] और जब कि दुनियां में महबूब की रज़ा से बढ़ कर कोई भी बड़ी से बड़ी नेमत नहीं होती तो आख़िरत में महबूब की रज़ा का मुक़ाबला कौन सी नेमत कर सकती है और जिन लोगों ने उसकी हक़ तलफ़ी की है, उनसे इस बारे में मुतालबा करेगा कि मेरी क्या रियायत की मेरा क्या हक़ अदा किया।

शरह एह्या में इमाम साहब[3] रह० से नक्ल किया है कि साल में दो मर्तबा

1. दर्जो में बुलंदी, 2. रज़ामंदी, ख़ुशनूदी ज़ाहिर करेंगे, 3. इमाम अबू हनीफ़ा रह०,

ख़त्म करना क़ुरआन शरीफ़ का हक़ है। अब वह हज़रात जो कभी भूल कर भी तिलावत नहीं करते, ज़रा ग़ौर फ़र्मा लें कि इस क़वी मुक़ाबिल के सामने क्या जवाबदही करेंगे। मौत बहरहाल आने वाली चीज़ है, इससे किसी तरह मफ़र नहीं।[1] क़ुरआन शरीफ़ के ज़ाहिर व बातिन होने का मतलब ब-ज़ाहिर यह है कि एक ज़ाहिरी माना हैं, जिनको हर शख़्स समझता है और एक बातिनी माना हैं जिनको हर शख़्स नहीं समझता जिसकी तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इर्शाद ने इशारा किया है कि जो शख़्स क़ुरआन पाक में अपनी राय से कुछ कहे, अगर वह सही भी हो तब भी इस शख़्स ने ख़ता की।

बाज़ मशायख़ ने ज़ाहिर से मुराद उसके अल्फ़ाज़ फ़र्माये हैं कि जिनकी तिलावत में हर शख़्स बराबर है और बातिन से मुराद उसके माना और मतालिब हैं, जो हस्बे इस्तेदाद मुख़्तलिफ़ होते हैं।

इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि अगर इल्म चाहते हो तो क़ुरआन पाक के मआनी में ग़ौर व फ़िक्र करो कि उसमें अव्वलीन आख़िरीन का इल्म है मगर कलाम पाक के माना के लिए जो शरायत व आदाब हैं, उनकी रिआयात ज़रूरी है, यह नहीं कि हमारे इस ज़माने की तरह से जो शख़्स अर्बी के चन्द अल्फ़ाज़ के माना जान ले, बल्कि उससे भी बढ़ कर बग़ैर किसी लफ़्ज़ के माना जाने उर्दू तर्जुमे में देखकर अपनी राय को उसमें दाख़िल कर दे।

अह्ले फ़न ने तफ़्सीर के लिए पन्द्रह उलूम पर महारत ज़रूरी बतलायी है। वक़्ती ज़रूरत की वजह से मुख़्तसर अर्ज़ करता हूं, जिससे मालूम हो जायेगा कि बत्ने कलामे पाक[2] तक रसाई हर शख़्स को नहीं हो सकती—

1. अव्वल, लुग़त, जिससे कलाम पाक के मुफ़्रद अल्फ़ाज़[3] के माना मालूम हो जावें। मुजाहिद रह० कहते हैं कि जो शख़्स अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है, उसको जायज़ नहीं कि बिदूं मारफ़ते लुग़ाते अरब के क़ुरआन पाक में कुछ लबकुशाई[4] करे और चंद लुग़ात का मालूम हो जाना काफ़ी नहीं, इसलिए कि बसा औक़ात लफ़्ज़ चंद मआनी में मुश्तरिक होता है और वह उनमें से एक दो माना जानता है और फ़िलवाक़े उस जगह कोई और माना मुराद होती हैं।

2. दूसरे, नह्व[5] का जानना ज़रूरी है, इसलिए कि आअराब के तग़य्युर व

---

1. बच कर भाग नहीं भग सकते, 2. यानी क़ुरआन पाक के बातिनी और पोशीदा इल्मों तक, 3. अलग-अलग लफ़्ज़, 4. ज़ुबान खोले, 5. व्याकरण,

तबद्दुल से मानी बिल्कुल बदल जाते हैं और आअराब की मारफ़त नह्व पर मौक़ूफ़ है।

3. तीसरे, सर्फ़ का जानना ज़रूरी है, इसलिए कि बिना और सीगों के इख़्तिलाफ़ से माना बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हो जाते हैं। इब्ने फ़ारस रह० कहते हैं कि जिस शख़्स से इल्मे सर्फ़ फ़ौत हो गया, उस से बहुत कुछ फ़ोत हो गया। अल्लामा ज़मख़्शरी 'आजूबाते तफ़्सीर' में नक़्ल करते हैं कि एक शख़्स ने कलाम पाक की आयत 'यौ म नद्‌अू कुल ल उनासिम बि इमामिहिम' (जिस दिन कि पुकारेंगे हम हर शख़्स को उसके मुक़्तदा और पेशरौ के साथ) इसकी तफ़्सीर सर्फ़ की नावाक़फ़ियत की वजह से यह कि जिस दिन पुकारेंगे हर शख़्स को उनकी माओं के साथ। इमाम का लफ़्ज़ जो मुफ़्रिद था, उसको 'उम्मी' की जमा समझ लिया गया। अगर वह सर्फ़ से वाक़िफ़ होता तो मालूम हो जाता कि उम्मी की जमा इमाम नहीं आती।

4. चौथे, इश्तिक़ाक़ का जानना ज़रूरी है। इसलिए कि लफ़्ज़ जब कि दो माद्दों से मुश्तक़ हो, तो उसके माना मुख़्तलिफ़ होंगे जैसा कि मसीह का लफ़्ज़ है कि इसका इश्तिक़ाक़ मसह से भी है जिसके माना छूने और तर हाथ किसी चीज़ पर फेरने के हैं और मसाहत से भी है, जिसके माना पैमाइश के हैं

5. पांचवें, इलमे मआनी का जानना ज़रूरी है, जिससे कलाम की तर्कीबें माना के एतबार से मालूम होती हैं।

6. छठे, इल्म बयान का जानना ज़रूरी है, जिससे कलाम का ज़हूर व ख़िफ़ा, तश्बीह व कनाया मालूम होता है।

7. सातवें, इल्मे बदीअ, जिस से कलाम की ख़ूबियां ताबीर के एतबार से मालूम होती हैं। यह तीनों फ़न (पांचवां, छठा, सांतवां) इल्मे बलाग़त कहलाते हैं। मुफ़स्सिर के अहम उलूम में से हैं, इसलिए कि कलाम पाक, जो सरासर एजाज़ है, उससे इसका एजाज़ मालूम होता है।

8. आठवां, इल्म क़िरात का जानना भी ज़रूरी है, इसलिए कि मुख़्तलिफ़ क़िरातों की वजह से मुख़्तलिफ़ माना मालूम होते हैं और बाज़ माना की दूसरे माना पर तर्जीह मालूम हो जाती है।

9. नवें, इल्मे अक़ाइद का जानना भी ज़रूरी है, इसलिए कि कलाम पाक में बाज़ आयात ऐसी भी हैं, जिनके ज़ाहिरी माना का इत्लाक़ हक़ सुब्हानहू व तक़द्दस पर सही नहीं, इसलिए उनमें किसी तावील की ज़रूरत पड़ेगी, जैसे कि 'यदुल्लाहि

फ़ौ क़ ऐदी हिम।'

10. दसवें, उसूले फ़िक़्ह का मालूम होना ज़रूरी है कि जिससे वुजूहे इस्तिदलाल व इस्तिंबात मालूम हो सकें।

11. ग्यारहवें, अस्बाबे नुज़ूल का मालूम होना ज़रूरी है कि शाने नुज़ूल से आयात के माना ज़्यादा वाज़ेह होंगे और बसा औक़ात असल माना का मालूम होना भी शाने नुज़ूल पर मौक़ूफ़ होता है।

12. बारहवें, नासिख़ व मंसूख़ का मालूम होना भी ज़रूरी है ताकि मंसूख़ शुदा अह्काम मामूलबिहा[1] से मुम्ताज हो सकें।

13. तेरहवें, इल्मे फ़िक़्ह का मालूम होना भी ज़रूरी है कि जुज़इयात के अहाते से कुल्लियात पहचाने जाते हैं।

14. चौदहवें, उन अहादीस का जानना ज़रूरी है जो क़ुरआन पाक की मुज्मल आयात की तफ़्सीर वाक़े हुई हैं।

15. इन सब के बाद पन्द्रहवां वह इल्म वह्बी है जो हक़ सुब्हानहु तक़द्दुस का अतीया-ए-ख़ास है, अपने मख़्सूस बन्दों को अता फ़र्माते हैं, जिसकी तरफ़ इस हदीस में इशारा है-

مَنْ عَمِلَ بِمَا عَلِمَ وَرَّثَهُ اللّٰهُ عِلْمَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

मन अ़मि ल बिमा अ़ लि म वर्र स हुल्लाहु इल् म मा लम यअलम।

(जब कि बन्दा उस चीज़ पर अमल करता है, जिसको जानता है तो हक़ तआला शानुहू ऐसी चीज़ों का इल्म अता फ़र्माते हैं जिनको वह नहीं जानता।)

इसी की तरफ़ हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने इशारा फ़र्माया, जबकि उनसे लोगों ने पूछा कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको कुछ ख़ास उलूम अता फ़र्माये हैं या ख़ास वसाया[2], जो आम लोगों के अलावा आपके साथ मख़्सूस हैं। उन्होंने फ़र्माया कि क़सम है उस ज़ात पाक की, जिसने जन्नत बनायी और जान पैदा की, इस फ़ह्म के अलावा कुछ नहीं है, जिसको हक़ तआला शानुहू ने अपने कलाम पाक के समझने के लिए किसी को अता फ़र्मा दें।

---

2. वसीयतें,

इब्ने अबिद्दुन्या रज़ि० का मक़ूला है कि उलूमे क़ुरआन और जो उससे हासिल हो, वह ऐसा समुन्दर है कि जिसका किनारा नहीं।

यह उलूम जो बयान किये गये, मुफ़स्सिर के लिए ब तौर आला के हैं, अगर कोई शख़्स इन उलूम की वाक़फ़ियत बग़ैर तफ़्सीर करे तो वह तफ़्सीर बिर्राए में दाख़िल है, जिसकी मुमानअत आयी है।[1] सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के लिए उलूमे अरबीया तब्अन हासिल थे और बक़ीया उलूम मिश्काते नुबुवत से मुस्तफ़ाद थे।

अल्लामा सुयूती रह० कहते हैं कि शायद तुझे ख़्याल हो कि इल्मे वह्बी का हासिल करना बन्दे की क़ुदरत से बाहर है, लेकिन हक़ीक़त ऐसी नहीं, बल्कि इससे हासिल करने का तरीक़ा उन अस्बाब का हासिल करना है जिस पर हक़ तआला शानुहू उसको मुरत्तब फ़र्माते हैं, मसलन इल्म से बे रग़्बती वग़ैरह-वग़ैरह।[2]

मया-ए-सआदत में लिखा है कि क़ुरआन शरीफ़ की तफ़्सीर तीन शख़्सों पर ज़ाहिर नहीं होती-

1. अव्वल, वह जो उलूमे अरबीया से वाक़िफ़ न हो,

2. दूसरे, वह शख़्स जो किसी कबीरा गुनाह पर मुसिर[3] हो, या बिद्अती हो कि इस गुनाह और बिद्अत की वजह से उसका दिल सियाह हो जाता है, जिसकी वजह से मारफ़ते क़ुरआन से क़ासिर रहता है।

3. तीसरे, वह शख़्स कि एतक़ादी मस्अले में ज़ाहिर का क़ायल हो और कलामुल्लाह की जो इबादत उसके ख़िलाफ़ हो, उससे तबीयत उचटती हो, उस शख़्स को भी फ़ह्मे क़ुरआन[4] से हिस्सा नहीं मिलता। 'अल्लाहुम्म ह्फ़ज़्ना मिन् हुम०'

٩- عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْاٰنِ اِقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا فَاِنَّ مَنْزِلَكَ عِنْدَ اٰخِرِ اٰيَةٍ تَقْرَؤُهَا۔ (رواه احمد والترمذى و ابوداؤد والنسائى وابن ماجة وابن حبان فى صحيحه)

---

1. जिस से मना किया गया है, 2. जब आदमी पूरी शरीअत पर पाबंदी से अमल करता है और इल्मे शरीअत भी उसके पास होता है, तो फिर उसे वह्बी इल्म अल्लाह तआला ख़ुद-ब-ख़ुद अता फ़र्मा देते हैं। 3. इस्रार करता हो यानी बराबर कोई कबीरा गुनाह करता रहता हो, 4. क़ुरआन की समझ,

9. 'अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है (कि क़यामत के दिन) साहिबे क़ुरआन से कहा जावेगा कि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता जा और बहिश्त के दर्जों में चढ़ता जा और ठहर-ठहर कर पढ़ जैसा कि तू दुनियां में ठहर-ठहर कर पढ़ा करता था। बस, तेरा मर्तबा वहीं है, जहां आख़िर आयात पर पहुंचे।'

साहिबे क़ुरआन से बज़ाहिर हाफ़िज़ मुराद है और मुल्ला अलीक़ारी रह० ने बड़ी तफ़्सील से इसको वाज़ेह किया है कि यह फ़ज़ीलत हाफ़िज़ ही के लिए है। नाज़रा ख़्वां[1] इस में दाख़िल नहीं-

अव्वल इस वजह से कि साहिबे क़ुरआन का लफ़्ज़ भी इसी तरफ़ मुशीर है।

दूसरे इस वजह से कि मस्नद अहमद की रिवायत में है 'हत्ता यक़्रअ् म अ हूं' (यहां तक कि पढ़े जो कुछ क़ुरआन शरीफ़ उसके साथ है। यह लफ़्ज़ उस अम्र[2] में ज़्यादा ज़ाहिर है कि इस से हाफ़िज़ मुराद है, अगरचे मुह्तमल[3] वह नाज़रा ख़्वां भी है जो कि क़ुरआन शरीफ़ बहुत कसरत के साथ पढ़ता हो।

मिर्क़ात में लिखा है, वह पढ़ने वाला मुराद नहीं, जिसको क़ुरआन लानत करता हो। यह उस हदीस की तरफ़ इशारा है कि बहुत से क़ुरआन पढ़ने वाले ऐसे हैं कि वह क़ुरआन को पढ़ते हैं और क़ुरआन उनको लानत करता है, इसलिए अगर किसी शख़्स के अक़ाइद वग़ैरह दुरुस्त हों तो क़ुरआन शरीफ़ के पढ़ने से उसकी मक़्बूलियत पर इस्तदलाल नहीं हो सकता। ख़्वारिज के बारे में बकसरत इस क़िस्म की अहादीस वारिद हुई हैं।

तर्तील के मुताल्लिक़ शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने अपनी तफ़्सीर में तहरीर फ़र्माया है कि तर्तील लुग़त में साफ़ और वाज़ेह तौर से पढ़ने को कहते हैं और शरअ शरीफ़ में कई चीज़ की रिआयत के साथ तिलावत करने को कहते हैं-

1. अव्वल हर्फ़ों को सही निकालना यानी अपने मख़्रज[4] से पढ़ना ताकि 'त्वा'

---

1. सिर्फ़ हर्फ़ों का पढ़ लेने वाला, 2. यानी इस के समझने में, 3. यानी वह नाज़रा ख़्वाँ भी मुराद हो सकता है, 4. हर्फ़ों की आवाज़ के निकलने की जगह, 5. ठहरने की जगह, 6. हुरूफ़ को मिला कर पढ़ना,

की जगह 'ता' और 'ज़्वाद' की जगह 'ज़ा' न निकले।

2. दूसरे वक़ूफ़[5] की जगह पर अच्छी तरह से ठहरना ताकि वस्ल[6] और क़ता कलाम का बे-महल न हो जावे।

3. तीसरे हरकतों में इश्बाअ करना यानी ज़ेर-ज़बर-पेश को अच्छी तरह से ज़ाहिर करना।

4. चौथे आवाज़ को थोड़ा सा बुलंद करना ताकि कलाम पाक के अल्फ़ाज़ ज़बान से निकल कर कानों तक पहुंचें और वहां से दिल पर असर करें।

5. पांचवें आवाज़ को ऐसी तरह से दुरुस्त करना कि उसमें दर्द पैदा हो जावे और दिल पर जल्दी असर करे कि दर्द वाली आवाज़ दिल पर जल्दी असर करती है और इससे रूह को क़ुव्वत और तअस्सुर[1] ज़्यादा होता है। इसी वजह से अतिब्बा ने कहा है कि जिस दवा का असर दिल पर पहुंचाना हो, उसको खुश्बू में मिलाकर दिया जाए कि दिल उसको जल्दी खींचता है और जिस दवा का असर जिगर में पहुंचाना हो उसको शीरीनी में मिलाया जाये कि जिगर मिठाई का जाज़िब[2] है। इसी वजह से बन्दे के नज़दीक अगर तिलावत के वक़्त ख़ुश्बू का ख़ास इस्तेमाल किया जावे तो दिल पर तासीर में ज़्यादा तक़्वियत होगी।

6. छठे तश्दीद और मद्द को अच्छी तरह ज़ाहिर किया जावे कि उसके इज़्हार से कलाम पाक में अज़्मत ज़ाहिर होती है और तासीर में इआनत[3] होगी।

7. सातवें आयाते रहमत व अज़ाब का हक़ अदा करे जैसा कि तम्हीद में गुज़र चुका।

यह सात चीज़ें है जिनकी रिआयत 'तर्तील' कहलाती है और मक़्सूद इन सब से सिर्फ़ एक है यानी कलाम का फ़ह्म व तदब्बुर[4]। हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सल्मा रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल॰ कलामुल्लाह शरीफ़ किस तरह पढ़ते थे। उन्होंने कहा कि सब हरकतों को बढ़ाते थे यानी ज़ेर-ज़बर वग़ैरह को पूरा निकालते थे और एक-एक हर्फ़ अलग-अलग ज़ाहिर होता था। तर्तील से तिलावत मुस्तहब[5] है, अगरचे माना न समझता हो।

इब्ने अब्बास रज़ि॰ कहते हैं कि मैं तर्तील से 'अल-क़ारिअः' और इज़ा ज़ुल

---

1. असर, 2. सीखने वाला, 3. मदद, 4. सोच-फ़िक्र, 5. पसन्दीदा,

ज़िलत' पढ़ूं, यह बेहतर है इससे कि बिला तर्तील 'सूर: बक़र:' और 'आले इम्रान' पढ़ूं।

शुर्राह[1] और मशाइख़ के नज़दीक एक हदीसे वाला का मतलब यह है कि क़ुरान पाक की एक एक आयत -पढ़ता जा और एक-एक दर्जा ऊपर चढ़ता जा, इसलिए कि रिवायात से मालूम होता है कि जन्नत के दरजात कलामुल्लाह शरीफ़ की आयात के बराबर है, लिहाज़ा जो शख़्स जितनी आयात का माहिर होगा, उतने ही दर्जे ऊपर उसका ठिकाना होगा और जो शख़्स तमाम कलामे पाक का माहिर होगा, वह सब से ऊपर के दर्जे में होगा।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने लिखा है कि हदीस में वारिद है कि क़ुरआन पढ़ने वाले से ऊपर कोई दर्जा नहीं, पस क़ुर्रा[2] आयात के बक़द्र तरक़्क़ी करेंगे और अल्लामा दानी रह० से उन का इत्तिफ़ाक़ नक़्ल किया है कि क़ुरआन शरीफ़ की आयात छ: हज़ार (600) हैं, लेकिन इसके बाद की मिक़्दार में इख़्तिलाफ़ और इतने अक़्वाल नक़्ल किये हैं- 204, 24, 19, 25, 36।

शरहे एह्या में लिखा है कि हर आयत एक दर्जा है जन्नत में, पस क़ारी से कहा जावेगा कि जन्नत के दरजात पर अपनी तिलावत के बक़द्र चढ़ते जाओ, जो शख़्स क़ुरआन पाक तमाम पूरा करेगा, वह जन्नत के आला दर्जे पर पहुंचेगा और जो शख़्स कुछ हिस्सा पढ़ा हुआ होगा वह उसकी बक़द्र दरजात पर पहुँचेगा। बिल जुम्ला मुन्तहा-ए-तरक़्क़ी मुन्तहा-ए-क़िरात होगी बन्दे के नज़दीक हदीसे बाला का मतलब कुछ और मालूम होता है- فَاِنْ كَانَ صَوَابًا

فَمِنَ اللّٰهِ وَاِنْ كَانَ خَطَأً فَمِنِّيْ وَمِنَ الشَّيْطَانِ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْهُ بَرِيْئَانِ

(अगर दुरुस्त हो तो हक़ ताला शानुहू की इआनत से है और अगर ग़लत हो तो मेरी अपनी तक़्सीर[3] से है।)

हासिल इस मतलब का यह है कि हदीसे बाला से दरजात की वह तरक़्क़ी मुराद नहीं जो आयात के लिहाज़ से फ़ी आयत एक दर्जा है, इसलिए कि इस तरक़्क़ी में तर्तील से पढ़ने, न पढ़ने को बज़ाहिर कोई ताल्लुक़ मालूम नहीं होता। जब एक आयत पढ़ी जाए, एक दर्जे की तरक़्क़ी होगी। आम है कि तर्तील से हो या बिला, तर्तील बल्कि इस हदीस में बज़ाहिर दूसरी तरक़्क़ी ब-एतबार कैफ़ियत मुराद है, जिसमें तर्तील से पढ़ने, न पढ़ने को दख़ल है। लिहाज़ा जिस तर्तील से दुनिया में पढ़ता था,

---

1. शरह लिखने वाले, 2. क़िरात करने वाले लोग, 3. कोताही,

उसी तर्तील से आख़िरत में पढ़ सकेगा और उसके मुवाफ़िक़ दरजात में तरक़्क़ी होती रहेगी।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने एक हदीस से नक़्ल किया है कि अगर दुनियां में बकसरत तिलावत करता रहा, तब तो उस वक़्त भी याद होगा, वरना भूल जाएगा। अल्लाह जल्ल शानुहू अपना फ़ज़्ल फ़र्मावें कि हम में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनको वालिदैन ने दीनी शौक़ में याद करा दिया था, मगर वह अपनी लापरवाही और बे-तवज्जोही से दुनियां में ज़ाया कर देते हैं और इसके बिल-मुक़ाबिल बाज़ अहादीस में वारिद हुआ है कि जो शख़्स क़ुरआन पाक याद करता हो और इसमें मेहनत व मशक़्क़त बरदाश्त करता हुआ मर जाए, वह हुफ़्फ़ाज़ की जमाअत में शुमार होगा। हक़ तआला के यहां अता में कमी नहीं, कोई लेने वाला हो।

उसके अल्ताफ़ तो है आम शहीदी सब पर,

तुझसे क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता।

(١٠) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَّالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا لَا اَقُوْلُ الٓمّٓ حَرْفٌ اَلِفٌ حَرْفٌ وَّلَامٌ حَرْفٌ مِيْمٌ حَرْفٌ (رواه الترمذی وقال هذا حديث صحيح غريب اسنادا والدارمی)

10. इब्ने मसऊद रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स एक हर्फ़ किताबुल्लाह का पढ़े, उसके लिए उस हर्फ़ के एवज़ एक नेकी है और एक नेकी का अज्र दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि सारा अलिफ़-लाम-मीम एक हर्फ़ है, बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ है, लाम एक हर्फ़, मीम एक हर्फ़।

मक़्सूद यह है कि जैसे और जुमला आमाल में पूरा अमल एक शुमार किया जाता है। कलामे पाक में ऐसे नहीं, बल्कि अज्ज़ा-ए-अमल[1] भी पूरे अमल शुमार किये जाते हैं और इसलिए तिलावते कलाम पाक में हर-हर्फ़ एक-एक नेकी शुमार की जाती है और हर नेकी पर हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से 'मन जा अ बिल ह स नति फ़ लहू अश्रु अम्सालिहा' (जो शख़्स एक नेकी लावे, उसको दस नेकी की बक़द्र अज्र मिलता है) दस हिस्सा अज्र का वायदा है और यह अक़ल्ल[2] दर्जा है। वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमंय्यशाउ' (हक़ तआला शानुहू जिसके लिए चाहते हैं अज्र ज़्यादा फ़र्मा देते हैं) हर हर्फ़ को मुस्तक़िल नेकी शुमार करने की मिसाल हुज़ूर सल्ल० ने

---

1. अमल के हिस्से, 2. सब से कम,

इर्शाद फ़र्मा दी कि 'अलिफ़-लाम-मीम' पूरा एक हर्फ़ शुमार नहीं होगा, बल्कि अलिफ़-लाम-मीम अलाहिदा-अलाहिदा हर्फ़ शुमार किये जाएंगे और इस तरह पर अलिफ़-लाम-मीम के मज्मूए पर तीस नेकियां हो गयीं।

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अलिफ़-लाम-मीम से सूर: बक़र: का शुरू मुराद है या 'अ लम त र कै फ़ फ़ अ ल रब्बु क बिअस्हाबिल फ़ील' मुराद है। अगर सूर: बक़र: का शुरु मुराद है तो बज़ाहिर मतलब यह है कि लिखे हुए हर्फ़ का एतबार है और लिखने में चूंकि वह भी तीन ही हुरूफ़ लिखे जाते हैं, इसलिए तीस नेकियां हुई और अगर इससे सूर: फ़ील का शुरू मुराद है तो फिर सूर: बक़र: के शुरू में जो अलिफ़-लाम-मीम है वह नौ हुरूफ़ हैं[1] इसलिए इसका अज्र नव्वे नेकियां हो गयीं।

बैहक़ी रह० की रिवायत में है कि मैं यह नहीं कहता कि 'बिस्मिल्लाह' एक हर्फ़ है, बल्कि बि स् मि यानी अलाहिदा-अलाहिदा हुरूफ़ मुराद हैं।

١١- عن معاذ الجهني قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من قرأ القران وعمل بما فيه البس والداه تاجا يوم القيمة ضوئه احسن من ضوء الشمس في بيوت الدنيا لو كانت فيكم فما ظنكم بالذي عمل بهذا (رواه احمد وابو داؤد وصححه الحاكم)

11. मआज़ जुहनी रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स क़ुरआन पढ़े और उस पर अमल करे, उसके वालिदैन को क़यामत के दिन एक ताज पहनाया जावेगा, जिसकी रोशनी आफ़्ताब की रोशनी से भी ज़्यादा होगी, अगर वह आफ़्ताब तुम्हारे घरों में हो। पस क्या गुमान है तुम्हारा उस शख़्स के मुताल्लिक़ जो ख़ुद आमिल[2] है।

यानी क़ुरआन पाक के पढ़ने और उस पर अमल करने की बरकत यह है कि उसके पढ़ने वाले के वालिदैन को ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिसकी रोशनी आफ़्ताब की रोशनी से बहुत ज़्यादा हो। अगर वह आफ़्ताब तुम्हारे घरों में हो यानी आफ़्ताब इतनी दूर से इस क़दर रोशनी फैलाता है, अगर वह घर के अंदर आ जाए तो यक़ीनन बहुत ज़्यादा रोशनी और चमक का सबब होगा, तो पढ़ने वाले के वालिदैन को जो ताज पहनाया जावेगा, उसकी रोशनी इस रोशनी से ज़्यादा होगी जिसको घर

---

1. यानी अलिफ़ के अंदर अ लि फ़ है, 2. अमल करने वाला,

में तुलू होने वाला आफ़्ताब फैला रहा है और जबकि वालिदैन के लिए यह ज़खीरा है तो ख़ुद पढ़ने वाले के अज्र का खुद अन्दाज़ा कर लिया जावे कि किस क़दर होगा कि जब उसके तुफैलियों का यह हाल है तो ख़ुद असल का हाल बदर्जहा ज़्यादा होगा कि वालिदैन को यह अज्र सिर्फ़ इस वजह से हुआ है कि वह इसके वजूद या तालीम का सबब हुए हैं। आफ़्ताब के घर में होने से जो तश्बीह दी गयी है, उसमें अलावा अज़ीं कि क़ुर्ब में रोशनी ज़्यादा महसूस होती है, एक और लतीफ़ अम्र की तरफ़ इशारा है, वह यह कि जो चीज़ हर वक़्त पास रहती है, उससे उन्स व उल्फ़त ज़्यादा होती है, इसलिए आफ़्ताब की दूरी की वजह से, जो उससे बेगानगी है, वह हर वक़्त के क़ुर्ब की वजह से मुबद्दल ब उन्स[1] हो जावेगी, तो इस सूरत में रोशनी के अलावा उसके साथ मुवानिसत[2] की तरफ़ भी इशारा है और इस तरफ़ भी कि वह अपनी होगी कि आफ़्ताब से अगरचे हर शख़्स फ़ायदा उठाता है, लेकिन अगर वह किसी को हिबा[3] कर दिया जाए तो उसके लिए किस क़दर इफ़्तिख़ार[4] की चीज़ हो।

हाकिम रह० ने बुरैदा रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़े और उस पर अमल करे, उसको एक ताज पहनाया जाएगा, जो नूर से बना हुआ होगा और उसके वालिदैन को ऐसे दो जोड़े पहनाए जाएंगे कि तमाम दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती। वह अर्ज़ करेंगे कि या अल्ला! यह जोड़े किस सिले में हैं? तो इर्शाद होगा कि तुम्हारे बच्चे के क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने के एवज़[5] में।

'जमउल फ़वाइद' में तबरानी से नक़्ल किया है कि हज़रत अनस रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स अपने बेटे को नाज़िरा क़ुरआन शरीफ़ सिखलावे,उसके सब अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं और जो शख़्स हिफ़्ज़ कराये, उस को क़यामत में चौदहवीं रात के चांद के मुशाबह उठाया जावेगा और उसके बेटे से कहा जावेगा कि पढ़ना शुरू कर, जब बेटा एक आयत पढ़ेगा बाप का एक दर्जा बुलंद किया जावेगा, हत्ताकि इसी तरह तमाम क़ुरआन शरीफ़ पूरा हो।

बच्चे के क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने पर बाप के लिए यह फ़ज़ाइल हैं और इसी पर बस नहीं।

---

1. यानी यह बे-ताल्लुक़ी मुहब्बत से बदल जाएगी, 2. उन्स व लगाव, 3. किसी को दे दिया जाए, 4. फ़ख़्र-ख़ुशी, 5. बदले में,

दूसरी बात भी सुन लीजिए कि अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता आप ने अपने बच्चे को चार पैसे के लालच में दीन से महरूम रखा, तो यह ही नहीं कि आप इस ला यज़ाल[6] सवाब से महरूम रहेंगे, बल्कि अल्लाह के यहां आप को जवाबदेही भी करनी पड़ेगी। आप इस डर से कि यह मौलवी व हाफ़िज़ पढ़ने के बाद सिर्फ मस्जिद के मुल्लाने और टुकड़े के मुहताज बन जाते हैं, इस वजह से आप लाडले बच्चे को इससे बचाते हैं। याद रखें कि इससे आप उसको तो दायमी मुसीबत में गिरफ़्तार कर ही रहे हैं, मगर साथ ही अपने ऊपर भी बड़ी सख़्त जवाबदेही ले रहे हैं।

हदीस का इर्शाद है-

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ الحديث

कुल्लुकुम राअिंव व कुल्लुकुम मस्ऊलुन अन र औयति ही[1]

हर शख़्स से उसके मातहतों और दस्तनिगरों[2] का भी सवाल होगा कि उनको किस क़दर दीन सिखलाया है, हां, यह ज़रूर है कि इन उयूब से आप बचने और बचाने की कोशिश कीजिए, मगर जुओं के डर से कपड़ा न पहनना कोई अक़्ल की बात नहीं, अल-बत्ता उसके साफ़ रखने की ज़रूर कोशिश कीजिए। बिल-जुम्ला अगर आप अपने बच्चे को दीनदारी सलाहीयत सिखलाएंगे, अपनी जवाबदेही से सुबकदोश होंगे और उस वक़्त तक वह ज़िंदा रहे, जिस क़दर नेक अमाल करेगा, दुआ व इस्तिग़फ़ार आप के लिए करेगा, आप के लिए रफ़ए-दरजात[3] का सबब बनेगा, लेकिन दुनियां की ख़ातिर चार पैसे के लालच से आप ने उस को दीन से बे-बहरा रखा, तो यही नहीं कि ख़ुद आप को अपनी हरकत का वबाल भुगतना पढ़ेगा, जिस क़दर बद-अतवारियां,[4] फ़िस्क़ व फ़ुजूर उस से सरज़द होंगे, आप के नामा-ए-आमाल भी उस ज़ख़ीरे से ख़ाली न रहेंगे। ख़ुदारा[5] अपने हाल पर रहम खायें, दुनिया बहर हाल गुज़र जाने वाली चीज है और मौत हर बड़ी से बड़ी तक्लीफ़ का ख़ात्मा है, लेकिन जिस तक्लीफ़ के बाद मौत भी नहीं, उस का कोई मुन्तहा[6] नहीं।

١٢- عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ لَوْ جُعِلَ الْقُرْاٰنُ فِيْ اِهَابٍ ثُمَّ اُلْقِيَ فِي النَّارِ مَا احْتَرَقَ-

12. उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि

1. अबूदाऊद, 2. जो हाथ फैलाये, 3. दर्जों की बुलंदी, 4. बुराइयाँ, 5. ख़ुदा के लिए, 6. हद,

व सल्लम को यह फ़र्माते हुए सुना कि अगर रख दिया जाए क़ुरआन शरीफ़ किसी चमड़े में, फिर वह आग में डाल दिया जावे तो न जले।

मशाइख़े हदीस इस रिवायत के मतलब में दो तरफ़ गये हैं-

1. बाज़ के नजदीक चमड़े से आम मुराद है, जिस जानवर का हो, और आग से दुन्यवी आग मुराद है। इस सूरत में यह मख़्सूस मोजज़ा है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के साथ ख़ास था, जैसा कि और अंबिया के मोजज़े उन के ज़माने के साथ ख़ास हुए हैं।

2. दूसरा मतलब यह है कि चमड़े से मुराद आदमी का चमड़ा है आग से जहन्नम। इस सूरत में यह हुक्म आम होगा, किसी ज़माने के साथ मख़्सूस न होगा यानी जो शख़्स कि हाफ़िज़े[1] क़ुरआन हो, अगर वह किसी जुर्म में जहन्नम में डाला भी जाएगा तो आग उस पर असर न करेगी।

एक रिवायत में 'मा मस्सत हुन्नारु' का लफ़्ज़ भी आया है, यानी आग उस को छूने की भी नहीं।

अबू उमाम रज़ि० की रिवायत, जिस को शर्हुस्सुन्न: से मुल्ला अलीक़ारी रह० ने नक़्ल किया है, इस दूसरे माना की ताईद करती है, जिस का तर्जुमा यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को हिफ़्ज़ किया करो, इसलिए कि हक़ तआला शानुहू उस क़ल्ब को अज़ाब नहीं फ़र्माते, जिस में कलाम पाक महफ़ूज़ हो। यह हदीस अपने मज़्मून में साफ़ और नस्स है। जो लोग हिफ़्ज़ क़ुरआन शरीफ़ को फ़ुज़ूल बतलाते हैं, वह ख़ुदारा ज़रा इन फ़ज़ाइल पर भी ग़ौर करें कि यही एक फ़ज़ीलत ऐसी है जिस की वजह से हर शख़्स को हिफ़्ज़े क़ुरआन पर जान दे देना चाहिए। इस लिए कौन शख़्स ऐसा होगा, जिस ने गुनाह न किये हों, जिस की वजह से आग का मुस्तहिक़ न हो।

शरहे एह्या में उन लोगों की फ़िहरिस्त में जो क़यामत के हौलनाक और वह्शत असर दिन में अल्लाह के साए के नीचे रहेंगे, हज़रत अली रज़ि० की हदीस से बरिवायत दैलमी रह० ने नक़ल किया है कि हामिलीने क़ुरआन यानी हुफ़्फ़ाज़ अल्लाह के साए के नीचे अंबिया और बर्गुज़ीदा[2] लोगों के साथ होंगे।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَظْهَرَهٗ

1. क़ुरआन का हाफ़िज़ भी हो और उस पर अमल भी करता हो,
2. चुने हुए लोगों के साथ,

۱۳- فَاَحَلَّ حَلَالَہٗ وَحَرَّمَ حَرَامَہٗ اَدْخَلَہُ اللّٰہُ الْجَنَّۃَ وَشَفَّعَہٗ فِیْ عَشَرَۃٍ مِّنْ اَھْلِ بَیْتِہٖ کُلُّھُمْ قَدْ وَجَبَتْ لَہُ النَّارُ (رواہ احمد والترمذی وقال ھذا حدیث غریب وحفص بن سلیمان الراوی لیس ھو بالقوی یضعف فی الحدیث رروا ٤)

13. हज़रत अ़ली रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है कि जिस शख़्स ने क़ुरआन पढ़ा, फिर उस को हिफ़्ज़ याद किया और उस के हलाल को हलाल जाना और हराम को हराम, हक़ तआला शानुहू उसको जन्नत में दाख़िल फ़र्मा देंगे और उस के घराने में से ऐसे दस आदमियों के बारे में उस की शफ़ाअत क़ुबूल फ़र्मायेंगे, जिन के लिए जहन्नम वाजिब हो चुकी हो।'

दुख़ूले जन्नत वैसे तो हर मोमिन के लिए इन्शाअल्लाह है ही। अगरचे बद-आमालियों की सज़ा भुगत कर ही क्यों न हो, लेकिन हुफ़्फ़ाज़ के लिए यह फ़ज़ीलत इब्तिदा-ए-दुख़ूल[1] के एतबार से है। वह दस शख़्स जिन के बारे में शफ़ाअत क़ुबूल फ़र्मायी गयी, वह फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार[2] हैं, जो मुर्तकिब कबाइर[3] के हैं, इसलिए कि कुफ़्फ़ार के बारे में तो शफ़ाअत है ही नहीं। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है-

اِنَّہٗ مَنْ یُّشْرِکْ بِاللّٰہِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰہُ عَلَیْہِ الْجَنَّۃَ وَمَاْوٰہُ النَّارُ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ

इन्नहू मंय्युश्रिक बिल्लाहि फ क़द हर्रमल्लाहु अलैहिल जन्न त व मा वाहु न्नारु व मा लिज़्ज़ालिमी न मिन अन्सार॰

'मुश्रिकीन पर अल्लाह ने जन्नत को हराम कर दिया और उनका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमीन का कोई मददगार नहीं।'

दूसरी जगह इर्शाद है-

مَا کَانَ لِلنَّبِیِّ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ یَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِکِیْنَ الآیۃ

मा का न लिन्नबीयि वल्लज़ी न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिलमुश्रिकीन॰

'नबी और मुसलमानों के लिए इस की गुंजाइश नहीं कि वह मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करें, अगरचे वह रिश्तेदार हों,' वग़ैरह-वग़ैरह। नुसूस इस मज़्मून में साफ़ है कि मुश्रिकीन की मग़्फ़िरत नहीं है, इसलिए हुफ़्फ़ाज़ की शफ़ाअत से उन मुसलमानों की शफ़ाअत मुराद है, जिन के मआसी[4] की वजह से उन का जहन्नम में

---

1. यानी ये लोग शुरू ही में दाख़िल हो जाएंगे, 2. ना-फ़रमान व गुनाहगार,
3. बड़े गुनाहों के करने वाले, 4. गुनाहों.

दाख़िल होना ज़रूरी बन गया था। जो लोग जहन्नम से महफ़ूज़ रहना चाहते हैं, उन के लिए ज़रूरी है कि अगर वह हाफ़िज नहीं और ख़ुद हिफ़्ज़ नहीं कर सकते तो कम अज कम अपने किसी क़रीबी रिश्तेदार ही को हाफ़िज बना दें कि इस के तुफ़ैल यह भी अपनी बद-आमालियों की सज़ा से महफ़ूज़ रह सकें। अल्लाह का किस क़दर इनाम है उस शख़्स पर[1], जिस के बाप, चचा, ताए, दादा, नाना, मामूं सब ही हाफ़िज हैं। 'अल्लाहुम म ज़िद फ़ ज़िद।'

١٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ فَاقْرَأُوهُ فَإِنَّ مَثَلَ الْقُرْآنِ لِمَنْ تَعَلَّمَ فَقَرَأَ وَقَامَ بِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ مَحْشُوٍّ مِسْكًا تَفُوحُ رِيحُهُ كُلَّ مَكَانٍ وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهُ فَرَقَدَ وَهُوَ فِي جَوْفِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ أُوكِيَ عَلَى مِسْكٍ (رواه الترمذی والنسائی وابن ماجة وابن حبّان)

14. 'अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है कि क़ुरआन शरीफ़ को सीखो, फिर उस को पढ़ो, इसलिए कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ सीखता है और पढ़ता है और तहज्जुद में उसको पढ़ता रहता है, उसकी मिसाल उस थैली की-सी है जो मुश्क से भरी हुई हो कि उसकी ख़ुश्बू तमाम मकान में फैलती है और जिस शख़्स ने सीखा और फिर सो गया, उसकी मिसाल उस मुश्क की थैली की है, जिस का मुंह बन्द कर दिया गया हो।'

यानी जिस शख़्स ने क़ुरआन पाक पढ़ा और उसकी ख़बरगीरी की, रातों को नमाज़ में तिलावत की, उसकी मिसाल उस मुश्कदान की सी है जो खुला हुआ हो कि उस की ख़ुश्बू से तमाम मकान महकता है। इसी तरह उस हाफ़िज की तिलावत से तमाम मकान अन्वार व बरकात से मामूर[2] रहता है। और अगर वह हाफ़िज सो जाए या ग़फ़लत की वजह से न पढ़ सके, तब भी उसके क़ल्ब में जो कलाम पाक है, वह तो बहरहाल मुश्क ही है। इस ग़फ़लत से इतना नुक़्सान हुआ कि दूसरे लोग उसकी बरकात से महरूम रहे, लेकिन उसका क़ल्ब तो बहरहाल उस मुश्क को अपने अन्दर लिए हुए है।

---

1. ख़ुद किताब के लेखक मौलाना ज़करिया साहब शेख़ुल हदीस मुराद हैं,
2. भरा रहता है,

(١٥) عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الَّذِىْ لَيْسَ فِىْ جَوْفِهٖ شَىْءٌ مِّنَ الْقُرْاٰنِ كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ

(رواه الترمذى وقال هذا حديث صحيح ورواه الدارمى والحاكم وصححه)

15. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जिस शख़्स के क़ल्ब में क़ुरआन शरीफ़ का कोई हिस्सा भी महफ़ूज नहीं, वह ब मंज़िल-ए-वीरान घर के है।'[1]

वीरान घर के साथ तश्बीह देने में एक ख़ास लतीफ़ा भी है, वह यह कि 'ख़ाना ख़ाली रा देव मी गीरद'[2]। इसी तरह जो क़ल्ब कलाम पाक से ख़ाली होता है, शयातीन का उस पर तसल्लुत ज़्यादा होता है। इस हदीस में हिफ़्ज़ की किस क़दर ताक़ीद फ़र्मायी है कि उस दिल को वीरान घर इर्शाद हुआ है, जिसमें कलाम पाक महफ़ूज नहीं।

अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि जिस घर में कलाम मजीद पढ़ा जाता है, उसके अह्ल व अयाल[3] कसीर हो जाते हैं, उस में ख़ैर व बरकत बढ़ जाती है, मलाइका उसमें नाज़िल होते हैं और शयातीन उस घर से निकल जाते हैं और जिस घर में तिलावत नहीं होती है, उसमें तंगी व बे-बरकती होती है, मलाइका उस घर से चले जाते हैं, शयातीन उसमें घुस जाते हैं।

इब्ने मसऊद रज़ि० से मंक़ूल है और बाज लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि ख़ाली घर वही है जिस में तिलावते क़ुरआन शरीफ़ न होती हो।

١٦۔ عَنْ عَائِشَةَ اَنَّ النَّبِىَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ فِى الصَّلٰوةِ اَفْضَلُ مِنْ قِرَاءَةِ الْقُرْاٰنِ فِىْ غَيْرِ الصَّلٰوةِ وَقِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ فِىْ غَيْرِ الصَّلٰوةِ اَفْضَلُ مِنَ التَّسْبِيْحِ وَالتَّكْبِيْرِ وَالتَّسْبِيْحُ اَفْضَلُ مِنَ الصَّدَقَةِ وَالصَّدَقَةُ اَفْضَلُ مِنَ الصَّوْمِ وَالصَّوْمُ جُنَّةٌ مِّنَ النَّارِ (رواه البيهقى فى شعب الايمان)

16. 'हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत बग़ैर नमाज़

---

1. यानी वीरान घर की तरह है, 2. यानी ख़ाली घर पर देव क़ब्ज़ा कर लेता है,

3. बाल बच्चे,

की तिलावत से अफ़ज़ल है और बग़ैर नमाज़ की तिलावत तस्बीह व तक्बीर से अफ़ज़ल है, और तस्बीह सद्का से अफ़ज़ल है और सद्का रोज़े से अफ़ज़ल है और रोज़ा बचाव है आग से'।

तिलावत का अज़्कार से अफ़ज़ल होना ज़ाहिर है, इसलिए कि यह कलामे इलाही है और पहले मालूम हो चुका कि अल्लाह तआला के कलाम को औरों के कलाम पर वही फ़ज़ीलत है जो अल्लाह तआला को फ़ज़ीलत है मख़्लूक़ पर। ज़िक्रुल्लाह का अफ़ज़ल होना सद्के से और रिवायात में भी वारिद है और सद्के का रोज़े से अफ़ज़ल होना जैसा कि इस रिवायात से मालूम होता है और दूसरी बाज़ रिवायात के ख़िलाफ़ है, जिनसे रोज़े की फ़ज़ीलत मालूम होती है, लेकिन यह अह्वाल[1] के एतबार से मुख़्तलिफ़ है। बाज़ हालतों में रोज़ा अफ़ज़ल है और बाज़ में सद्का। इसी तरह लोगों के एतबार से भी मुख़्तलिफ़ है। बाज़ लोगों के लिए रोज़ा अफ़ज़ल है और जबकि रोज़ा आग से बचाव है, जिसका दर्जा इस रिवायत में सबसे आख़िर में है तो फिर तिलावते कलामुल्लाह का क्या कहना जो सबसे अव्वल है।

साहबे एह्या ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से नक़्ल किया है कि जिस शख़्स ने नमाज़ में खड़े होकर कलाम पाक पढ़ा, उसको हर हर्फ़ पर सौ नेकियां मिलेंगी और जिस शख़्स ने नमाज़ में बैठ कर पढ़ा, उसके लिए पचास नेकियां और जिसने बग़ैर नमाज़ के वुज़ू के साथ पढ़ा, उसके लिए पचीस नेकियां और जिस ने बिला वुज़ू पढ़ा, उसके लिए दस नेकियां और जो शख़्स पढ़े नहीं, बल्कि सिर्फ़ पढ़ने वाले की तरफ़ कान लगा कर सुने, उसके लिए भी हर हर्फ़ के बदले एक नेकी।

(١٧) عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اِذَا رَجَعَ اِلٰى اَهْلِهٖ اَنْ يَّجِدَ فِيْهِ ثَلَاثَ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ قُلْنَا نَعَمْ قَالَ فَثَلَاثُ اٰيَاتٍ يَقْرَأُ بِهِنَّ اَحَدُكُمْ فِىْ صَلَاتِهٖ خَيْرٌ لَّهٗ مِنْ ثَلَاثِ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ رواه مسلم

17. 'अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि जब घर वापस आये तो तीन ऊंटनियां हामिला बड़ी और मोटी उसको मिल जावें। हमने अर्ज़ किया, बेशक (ज़रूर पसंद करते हैं) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तीन आयतें, जिनको तुममें से कोई नमाज़ में पढ़ ले, वह तीन हामिला बड़ी और मोटी ऊंटनियों से अफ़ज़ल है।'

---

1. हालात,

इससे मिलता-जुलता मज़्मून हदीस नं० 3 में गुज़र चुका है, इस हदीस शरीफ़ में चूंकि नमाज़ में पढ़ने का ज़िक्र है और वह बग़ैर नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है, इसलिए तश्बीह हामिला ऊंटनियों से दी गई, इसलिए कि वहां भी दो इबादतें हैं- नमाज़ और तिलावत- ऐसे ही यहां भी दो चीज़ें हैं- ऊंटनी और उसका हमल। मैं हदीस नं० 3 के फ़ायदे में लिख चुका हूं कि इस क़िस्म की अहादीस से सिर्फ़ तश्बीह मुराद होती है, वरना एक आयत का बाक़ी[1] अज्र हज़ार फ़ानी[2] ऊंटनियों से अफ़ज़ल है।

١٨- عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ اَوْسٍ الثَّقَفِيِّ عَنْ جَدِّهٖ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِرَاءَةُ الرَّجُلِ الْقُرْاٰنَ فِيْ غَيْرِ الْمُصْحَفِ اَلْفُ دَرَجَةٍ وَقِرَاءَتُهٗ فِي الْمُصْحَفِ تُضَعَّفُ عَلٰى ذٰلِكَ اِلٰى اَلْفَيْ دَرَجَةٍ (رواه البيهقي في شعب الايمان)

18. 'औस सक़फ़ी रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि कलामुल्लाह शरीफ़ का हिफ़्ज़ पढ़ना हज़ार दर्जा सवाब रखता है और क़ुरआन पाक में देख कर पढ़ना दो हज़ार तक बढ़ जाता है।'

हाफ़िज़ क़ुरआन के मुतअद्दद फ़ज़ाइल पहले गुज़र चुके हैं, इस हदीस शरीफ़ में जो देख कर पढ़ने की फ़ज़ीलत है, वह इस वजह से है कि क़ुरआन पाक के देख कर पढ़ने में तदब्बुर और फ़िक्र के ज़्यादा होने के अलावा वह कई इबादतों को मुतज़म्मिन[3] है। क़ुरआन पाक को देखना उसको छूना वग़ैरह-वग़ैरह इस वजह से यह अफ़ज़ल हुआ। चूंकि रिवायत का मफ़्हूम मुख़्तलिफ़ है, इसी वजह से उलमा ने इस में इख़्तिलाफ़ फ़र्माया है कि कलाम पाक का हिफ़्ज़ पढ़ना अफ़ज़ल है या देखकर।

एक जमाअत की राय है कि हदीसे बाला की वजह से और इस वजह से कि इसमें ग़लत पढ़ने से अम्न रहता है, क़ुरआन पाक पर नज़र रहती है, क़ुरआन पाक को देखकर पढ़ना अफ़ज़ल है।

दूसरी जमाअत दूसरी रिवायत की वजह से और इस वजह से कि हिफ़्ज़ पढ़ना ज़्यादती-ए-ख़ुशूअ का सबब होता है, रिया[4] से दूर होता है, और नीज़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा हिफ़्ज़ पढ़ने की थी, हिफ़्ज़ को तर्जीह देती है।

इमाम नववी रह० ने इसमें यह फ़ैसला किया है कि फ़ज़ीलत आदमियों के

---

1. हमेशा बाक़ी रहने वाला, 2. ख़त्म हो जाने वाला,
3. यानी इसमें कई इबादतें आ जाती हैं, 4. दिखावा,

लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ है। बाज़ के लिए देखकर पढ़ना अफ़ज़ल है, जिस को उसमें तदब्बुर व तफ़क्कुर ज़्यादा हासिल होता हो, और जिसको हिफ़्ज़ में तदब्बुर ज़्यादा हासिल होता हो उसके लिए हिफ़्ज़ पढ़ना अफ़ज़ल है।

हाफ़िज़ रह०[1] ने भी फ़त्हुलबारी में इसी तफ़्सील को पसन्द किया है। कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ि० के पास कसरते तिलावत की वजह से दो कलाम मजीद फटे थे[2]।

अम्र बिन मैमून ने शरहे एह्या में नक़्ल किया है कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ पढ़ कर क़ुरआन शरीफ़ खोले और बक़द्र सौ आयत के पढ़ ले, तमाम दुनियां के बक़द्र उसका सवाब लिखा जाता है। क़ुरआन शरीफ़ का देखकर पढ़ना निगाह के लिए मुफ़ीद बतलाया जाता है।

अबूउबैदा रज़ि० ने हदीस मुसलसल नक़ल की है, जिसमें हर रावी ने कहा है कि मुझे आंखों की शिकायत थी, तो उस्ताद ने क़ुरआन शरीफ़ देखकर पढ़ने को बतलाया।

हज़रत इमाम शाफ़ई साहब रह० बसाऔक़ात[3] इशा के बाद क़ुरआन शरीफ़ खोलते थे और सुबह की नमाज़ के वक़्त बन्द करते थे।

(۱۹) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ إِنَّ ھٰذِہِ الْقُلُوْبَ تَصْدَأُ کَمَا یَصْدَأُ الْحَدِیْدُ إِذَا أَصَابَہُ الْمَاءُ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَمَا جِلَاؤُھَا قَالَ کَثْرَۃُ ذِکْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَۃُ الْقُرْاٰنِ (رواہ البیھقی فی شعب الایمان)

19. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि दिलों को भी ज़ंग[4] लग जाता है, जैसा कि लोहे को पानी लगने से ज़ंग लग जाता है। पूछा कि हुज़ूर! उनकी सफ़ाई की क्या सूरत है ? आपने फ़र्माया कि मौत को अक्सर याद करना और क़ुरआन पाक की तिलावत करना।[1]

यानी गुनाहों की कसरत और अल्लाह जल्ल शानुहू की याद से ग़फ़्लत की वजह से दिलों पर भी ज़ंग लग जाता है, जैसाकि लोहे को पानी लग जाने से ज़ंग लग जाता है और कलाम पाक की तिलावत और मौत की याद उनके लिए सैक़ल[5] का काम देता है। दिल की मिसाल एक आईना की-सी है, जिस क़दर वह धुंधला होगा, मारफ़त का इन्इकास[6] उसमें कम होगा और जिस क़दर साफ़ और शफ़्फ़ाफ़

---

1. हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी शाफ़ई, बुख़ारी शरीफ़ की शरह लिखने वाले, 2. इससे मालूम हुआ कि वह देख कर पढ़ते थे, 3. अक्सर, 4. मोर्चा, 5. क़लई, 6. अक्स, सूरत,

होगा, उसी क़दर उसमें मारफ़त का इन्इंकास वाज़ेह होगा, इसीलिए आदमी जिस क़दर मआसी शहवानिया या शैतानिया में मुब्तला होगा, उसी क़दर मारफ़त से दूर होगा और उसी आईने के साफ़ करने के लिए मशाइख़े सुलूक रियाज़ात व मुजाहदात,[1] अज़्कार व अश्ग़ाल तल्क़ीन फ़र्माते हैं।

अहादीस में वारिद हुआ है कि जब बन्दा गुनाह करता है तो एक स्याह नुक़्ता, उसके क़ल्ब में पड़ जाता है। अगर वह सच्ची तौबा कर लेता है तो वह नुक़्ता ज़ायल हो जाता है और अगर वह दूसरा गुनाह कर लेता है तो दूसरा नुक़्ता पैदा हो जाता है, इसी तरह से अगर गुनाहों में बढ़ता रहता है तो शुदा-शुदा[2] इन नुक़्तों की कसरत से दिल बिल्कुल स्याह हो जाता है, फिर उस क़ल्ब में ख़ैर की तरफ़ रग़बत ही नहीं रहती, बल्कि शर ही की तरफ़ माइल होता है। अल्लाहुम्मह्फ़ज़्ना मिन्हु०

इसी की तरफ़ क़ुरआन पाक की इस आयत में इशारा है-

كَلَّا بَلْ سكته رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۔

कल्ला बल रा न अला क़ुलूबिहिम मा कानू यक्सिबून० (बेशक उन के क़ुलूब पर ज़ंग जमा दिया उनकी बद-आमालियों ने) एक हदीस में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि दो वाइज छोड़ता हूं- एक बोलने वाला, दूसरा ख़ामोश। बोलने वाला क़ुरआन शरीफ़ है और ख़ामोश, मौत की याद। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सर आंखों पर, मगर वाइज तो उसके लिए हो, जो नसीहत क़ुबूल करे, नसीहत की ज़रूरत समझे। जहां सरे से दीन ही बेकार हो, तरक़्क़ी की राह में मानेअ हो, वहां नसीहत की ज़रूरत किसे और नसीहत करेगी क्या।

हसन बसरी रह० कहते हैं कि पहले लोग क़ुरआन शरीफ़ को अल्लाह का फ़र्मान समझते थे, रात भर उसमें ग़ौर व तदब्बुर करते थे और दिन को उस पर अमल करते थे और तुम लोग उसके हुरूफ़ और ज़बर व ज़ेर तो बहुत दुरुस्त करते हो, मगर उसको फ़र्माने शाही नहीं समझते, उसमें ग़ौर व तदब्बुर नहीं करते।

۲۰- عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ شَرَفًا يَتَبَاهُوْنَ بِهٖ وَاِنَّ بَهَاءَ اُمَّتِيْ وَشَرَفَهَا الْقُرْاٰنُ۔

---

1. मेहनत व कोशिश, 2. बढ़ते हुए,

20. हज़रत आइशा रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल करती हैं कि हर चीज़ के लिए कोई शराफ़त व इफ़्तिख़ार हुआ करता है, जिससे वह तफ़ाख़ुर किया करता है, मेरी उम्मत की रौनक और इफ़्ख़ार क़ुरआन शरीफ़ है।'

यानी लोग अपने आबा व अज्दाद से, ख़ानदान से और इसी तरह बहुत सी चीज़ों से अपनी शराफ़त व बड़ाई ज़ाहिर किया करते हैं, मेरी उम्मत के लिए ज़रिया-ए-इफ़्तिख़ार कलामुल्लाह शरीफ़ है कि उसके पढ़ने से, उसके याद करने से, उसके पढ़ाने से, उस पर अमल करने से, ग़रज उसकी हर चीज़ क़ाबिले इफ़्तिख़ार है, और क्यों न हो कि महबूब का कलाम है, आक़ा का फ़रमान है। दुनियां का कोई बड़े से बड़ा शर्फ़ भी उसके बराबर नहीं हो सकता, नीज़ दुनियां के जिस क़दर कमालात हैं, वह आज नहीं तो कल ज़ायल होने वाले हैं, लेकिन कलाम पाक का शर्फ़ व कमाल दायमी है, कभी ख़त्म होने वाला नहीं है। क़ुरआन शरीफ़ के छोटे-छोटे औसाफ़ भी ऐसे हैं कि इफ़्तिख़ार के लिए उनमें का हर एक काफ़ी है, च जाए कि उसमें वह सब औसाफ़ क़ामिल तौर पर पाये जाते हैं, मसलन उसकी हुस्ने तालीफ़,[1] हुस्ने सियाक़, अल्फ़ाज़ का तनासुब, कलाम का इर्तिबात गुज़िश्ता और आइन्दा वाक़िआत की इत्तिला, लोगों के मुताल्लिक़ ऐसे तान कि वह अगर उसकी तक्ज़ीब भी करना चाहें तो न कर सकें जैसे कि यहूद का बावजूद इद्दआ-ए-मुहब्बत[2] के मौत की तमन्ना न कर सकना, नीज़ सुनने वाले का उससे मुतास्सिर होना, पढ़ने वाले का कभी न उकताना, हालांकि हर कलाम ख़्वाह वह कितना ही दिल को प्यारा मालूम होता हो, मजनूं बना देने वाले महबूब का ख़त ही क्यों न हो, दिन में दस दफ़ा पढ़ने से दिल न उकताए, तो बीस दफ़ा से उकता जाएगा, बीस से न सही चालीस से उकतावेगा, बहरहाल उकतावेगा, फिर उकतावेगा, मगर कलाम पाक का रुकूअ याद कीजिए, दो सौ मर्तबा पढ़िए, चार सौ मर्तबा पढ़िए, उम्र भर पढ़ते रहिए, कभी न उकतावेगा। अगर कोई आरिज़[3] पेश आ जाये तो वह ख़ुद आरिज़ी होगा और जल्द ज़ायल हो जाने वाला। जितनी कसरत कीजिए, उतनी ही तरावत और लज़्ज़त में इज़ाफ़ा होगा, वग़ैरह-वग़ैरह।

यह उमूर ऐसे हैं कि अगर किसी के कलाम में इनमें से एक भी पाया जावे, ख़्वाह पूरे तौर से न हो, तो उस पर कितना इफ़्तिख़ार किया जाता है, फिर जब कि किसी कलाम[4] में यह सब के सब उमूर अला वज्हिल कमाल पाये जाते हों तो

1. बेहतरीन तर्तीब और बेहतरीन मज़ामीन, 2. मुहब्बत के दावे के बावजूद, 3. रुकावट, 4. कमाल दर्जे के,

इससे कितना इफ़्तिख़ार होगा।

इसके बाद एक लम्हा हमें अपनी हालत पर भी ग़ौर करना है, हममें से कितने लोग हैं, जिनको अपने हाफ़िज़े क़ुरआन होने पर फ़ख़्र है या हमारी निगाह में किसी का हाफ़िज़े क़ुरआन होना बाइसे शर्फ है। हमारी शराफ़त, हमारा इफ़्तिख़ार ऊंची-ऊंची डिग्रियों से, बड़े-बड़े अल्क़ाब से, दीनवी जाह व जलाल और मरने के बाद छूट जाने वाले माल व मताअ से है। फ़ इलल्लाहिल मुश्तका॰

٢١- عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رض قَالَ قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَوْصِنِیْ قَالَ عَلَیْکَ بِتَقْوَی اللّٰہِ فَاِنَّہٗ رَأْسُ الْاَمْرِ کُلِّہٖ قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ زِدْنِیْ قَالَ عَلَیْکَ بِتِلَاوَۃِ الْقُرْاٰنِ فَاِنَّہٗ نُوْرٌ لَّکَ فِی الْاَرْضِ وَ ذُخْرٌ لَّکَ فِی السَّمَاءِ۔ (رواہ ابن حبان فی صحیحہ فی حدیث طویل)

21. 'अबूज़र रज़ि॰ कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्ख़्वास्त की कि मुझे कुछ वसीयत फ़र्माएं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़र्माया, तक़्वा का एहतमाम करो कि तमाम उमूर की जड़ है। मैंने अर्ज किया कि इसके साथ कुछ और भी इर्शाद फ़र्मावें, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़र्माया कि तलावते क़ुरआन का एहतमाम करो कि दुनियां में यह नूर है और आख़िरत में ज़ख़ीरा।'

तक़्वा हक़ीक़तन तमाम उमूर की जड़ है। जिस दिल में अल्लाह का डर पैदा हो जावे, उससे फिर कोई भी मासियत नहीं होती और न फिर उसको किसी क़िस्म की तंगी पेश आती है-

وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجْعَلْ لَّہٗ مَخْرَجًا وَّیَرْزُقْہُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ

व मंय्यत्तक़िल्ला ह यज्अल्लहू मख़्रजन्व वयर्ज़ुक़हु मिन्न हैसु ला यह्तसिब॰

'जो शख़्स तक़्वा हासिल कर ले तो हक़ तआला शानुहू उसके लिए हर ज़ीक़[1] में कोई रास्ता निकाल देते हैं और इसी तरह उसको रोज़ी पहुंचाते हैं, जिसका उसको गुमान भी नहीं होता।'

तिलावत का नूर होना पहली रिवायात से भी मालूम हो चुका। शरहे एह्या में 'मारफ़त अबू नुऐम'[2] से नक़्ल किया है कि हज़रत बासित रह॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सललल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद ज़िक्र किया कि जिन घरों में कलामे पाक

1. परेशानी, तंगी, 2. अबूनुऐम मुहद्दिस की एक किताब का नाम,

की तिलावत की जाती है, वह मकानात आसमान वालों के लिए ऐसे चकमते हैं जैसा कि ज़मीन वालों के लिए आसमान पर सितारे। यह हदीस तर्ग़ीब वग़ैरह में इतनी ही नक़्ल की गयी। यह मुख़्तसर है, असल रिवायत बहुत तवील है, जिसको इब्ने हब्बान रज़ि० वग़ैरह से मुल्ला अली क़ारी ने मुफ़स्सल और सुयूती रह० ने कुछ मुख़्तसर नक़्ल किया है, अगरचे हमारे रिसाले के मुनासिब उतना ही जुज़्व है जो ऊपर गुज़र चुका, मगर चूंकि पूरी हदीस बहुत से ज़रूरी और मुफ़ीद मज़ामीन पर मुश्तमिल है, इसलिए तमाम हदीस का मतलब नक़्ल किया जाता है, जो हस्बे ज़ैल है-

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि हक़ तआला शानुहू ने कुल किताबें किस क़दर नाज़िल फ़र्मायी हैं। आप ने इर्शाद फ़र्माया कि सौ सहाइफ़[1] और चार किताबें। पचास सहीफ़े हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर और तीस सहीफ़े हज़रत इद्‌रीस अलैहिस्सलाम पर और दस सहीफ़े हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और दस सहीफ़े हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, तौरात से पहले और इनके अलावा चार किताबें-तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन शरीफ़ नाज़िल फ़र्माई हैं। मैंने पूछा कि हज़रत इब्राहीम अलैहि सलाम के सहीफ़ों में क्या चीज़ थी? इर्शाद फ़र्माया कि वह सब ज़र्बुलमसलें[2] थीं, मसलन ओ मुतसल्लित व मग़रूर बादशाह! मैंने तुझको इसलिए नहीं भेजा था कि तू पैसे पर पैसा जमा करता रहे, मैंने तुझे इसलिए भेजा था कि मुझ तक मज़्लूम की फ़रियाद न पहुंचने दे, तू पहले ही इसका इन्तिज़ाम कर दे, इसलिए कि मैं मज़्लूम की फ़रियाद को रद्द नहीं करता, अगरचे फ़रियादी काफ़िर ही क्यों न हो। बन्दा-ए-नाचीज़ कहता है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने सहाबा रज़ि० को अमीर या हाकिम बनाकर भेजा करते थे तो मिनजुम्ला और नसाइह के इसको भी एहतमाम से फ़र्माया करते थे-

وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ فَإِنَّهٗ لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللّٰهِ حِجَابٌ

वत्तक़ि दअ़्वतल मज़्लूमि फ़ इन्नहू लै स बै न हा व बैनल्लाहि हिजाब०

'कि मज़्लूम की बद-दुआ से बचना, इसलिए कि उसके और अल्लाह जल्ल शानुहू के दर्मियान में हिजाब[3] और वास्ता नहीं।'

ब तर्स अज़ आहे मज़्लूमां कि हंगामे दुआ करदन

---

1. सहीफ़े यानी छोटी किताबें, 2. कहावतें, 3. परदा,

इजाबत अज़ दरे हक़ बहे इस्तक़्बाल मी आयद।

तर्जुमा– डरो मज़्लूमों की आह से, क्योंकि उनके दुआ करने के वक़्त हक़ तआला की तरफ़ से क़ुबूलियत फ़ौरन आती है।

नीज़ इन सहीफ़ों में यह भी था कि आक़िल के लिए ज़रूरी है, कि जब तक कि वह मग़्लूबुल अक़्ल[1] न हो जाए, कि अमने तमाम औक़ात को तीन हिस्सों पर मुंकसिम करे–

1. एक हिस्से में अपने रब की इबादत करे, और

2. एक हिस्से में अपने नफ़्स का मुहसिबा[2] करे और सोचे कि कितने काम अच्छे किये और कितने बुरे, और

3. एक हिस्से को कस्बे हलाल[3] में ख़र्च करे।

आक़िल पर यह भी ज़रूरी है कि अपने औक़ात की निगहबानी करे, अपने हालात की दुरुस्तगी की फ़िक्र में रहे, अपनी ज़बान की फ़ुज़ूलगोई और बे-नफ़ा गुफ़्तगू से हिफ़ाज़त करे। जो शख़्स अपने कलाम का मुहासिबा करता रहेगा, उसकी ज़बान बे-फ़ायदा कलाम में कम चलेगी।

आक़िल के लिए ज़रूर है कि तीन चीज़ों के अलावा सफ़र न करे,या आख़िरत के लिये तोशा मक़्सूद हो या कुछ फ़िक्रे मआश या तफ़रीह बशर्ते कि मबाह हो। मैंने पूछा कि या रसूलल्लाह ! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में क्या चीज़ थी! इर्शाद फ़र्माया कि सब की सब इबरत की बातें थीं, मसलन मैं ताज्जुब करता हूं उस शख़्स पर कि जिस को मौत का यक़ीन हो, फिर किसी बात पर ख़ुश हो (इसलिए कि जब किसी शख़्स को मसलन यह यक़ीन हो जाए कि मुझे फांसी का हुक्म हो चुका, अंक़रीब सूली पर चढ़ना है, फिर वह किसी चीज़ से ख़ुश नहीं हो सकता)। मैं ताज्जुब करता हूं उस शख़्स पर कि उस को मौत का यक़ीन है, फिर वह हंसता है, मैं ताज्जुब करता हूं उस शख़्स पर जो दुनियां के हवादिस, तग़य्युरात, इन्क़िलाबात हर वक़्त देखता है, फिर दुनियां पर इत्मीनान कर लेता है। मैं ताज्जुब करता हूं उस शख़्स पर कि जिसको तक़्दीर का यक़ीन है फिर रंज व मशक़्क़त में मुब्तला होता है मैं ताज्जुब करता हूं उस शख़्स पर जिसको अंक़रीब हिसाब का यक़ीन है, फिर नेक आमाल नहीं करता। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे कुछ वसीयत फ़र्माएं। हुज़ूर

---

1. यानी अक़्ल ख़राब न हो जाए, 2. जायज़ा लेना, हिसाब-किताब करना, 3. हलाल कमाई,

सल्ल० ने सब से अव्वल तक़्वा की वसीयत फ़र्मायी और इर्शाद फ़र्माया कि यह तमाम उमूर[1] की बुनियाद और जड़ है। मैंने अर्ज किया कि कुछ और भी इज़ाफ़ा फ़र्माइए। इर्शाद हुआ कि तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रल्लाह का एहतमाम कर कि यह दुनियां में नूर है और आसमान में ज़ख़ीरा है। मैंने और इज़ाफ़ा चाहा तो इर्शाद हुआ कि ज़्यादा हंसी से एहतराज़[2] करो कि इससे दिल मर जाता है और चेहरे की रौनक जाती रहती है। (यानी ज़ाहिर व बातिन दोनों को नुक़्सान पहुँचा देने वाली चीज है) मैंने और इज़ाफ़ा की दर्ख़्वास्त की तो इर्शाद हुआ कि जिहाद का एहतमाम कर कि मेरी उम्मत के लिए यही रह्बानियत है (राहिब पहली उम्मतों में वह लोग कहलाते थे जो दुनियां के सब ताल्लुकात मुंक़तअ[3] करके अल्लाह वाले बन जावें) मैंने और इज़ाफ़ा चाहा तो इर्शाद फ़र्माया कि फ़ुक़रा और मसाकीन के साथ मेल-जोल रख, उनको दोस्त बना, उनके पास बैठा कर। मैंने और इज़ाफ़ा चाहा तो इर्शाद हुआ कि अपने से कम दर्जे वाले पर निगाह रखा कर (ताकि शुक्र की आदत हो) अपने से ऊपर के दर्जे वालों को मत देख, मुबादा अल्लाह की नेमतों की जो तुझ पर हैं, तह्क़ीर करने लगे। मैंने और इज़ाफ़ा चाहा तो इर्शाद हुआ कि तुझे अपने अयूब लोगों पर हर्फ़गीरी[4] से रोक दें और उनके अयूब पर इत्तिला की कोशिश मत कर कि तू ख़ुद उनमें मुब्तला है, तुझे ऐब लगाने के लिए काफ़ी है कि तू लोगों में ऐसे ऐब पहचाने, जो तुझ में ख़ुद मौजूद हैं और उनसे तू बे-ख़बर है और ऐसी बातें उनमें पकड़े जिनको तू ख़ुद करता है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपना दस्ते शफ़क़त मेरे सीने पर मार कर इर्शाद फ़र्माया कि अबूज़र तद्बीर के बराबर कोई अक़्लमंदी नहीं और नाजायज उमूर से बचने के बराबर कोई तक़्वा नहीं और ख़ुश ख़ल्क़ी से बढ़ कर कोई शराफ़त नहीं।

(इसमें ख़ुलासा और मतलब का ज़्यादा लिहाज़ किया गया, तमाम अल्फ़ाज़ के तर्जुमे का लिहाज़ नहीं किया गया।)

٢٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِّنْ بُيُوْتِ اللهِ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُوْنَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلٰئِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيْمَنْ عِنْدَهٗ۔ (رواه مسلم وابوداؤد)

22. 'अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह

1. मामलों 2. बचो, 3. काटकर, 4. उंगली उठाना,

इर्शाद नक़्ल किया है कि कोई क़ौम अल्लाह के घरों में से किसी घर में[1] मुज्तमा[2] होकर तिलावते कलाम पाक और उसका दौर नहीं करती, मगर उन पर सकीना नाज़िल होती है और रहमत उनको ढांप लेती है। मलाइका-ए-रहमत उनको घेर लेते हैं और हक़ तआला शानुहू उनका ज़िक्र मलाइका की मज्लिस में फ़र्माते हैं।'

इस हदीस शरीफ़ में मकातिब और मदरसों की ख़ास फ़ज़ीलत ज़िक्र फ़र्मायी गयी जो बहुत सी अन्वाए इक्राम को शामिल है। इनमें हर-हर इक्राम ऐसा है कि जिस के हासिल करने में अगर कोई शख़्स अपनी तमाम उम्र ख़र्च कर दे, तब भी अर्ज़ां[3] हैं। फिर चजाए कि ऐसे-ऐसे मुतअद्दद इनामात मरहमत फ़र्माये जाएं, बिल ख़ुसूस आख़िरी फ़ज़ीलत। आक़ा के दरबार में ज़िक्र, महबूब की मज्लिस में याद एक ऐसी नेमत है, जिसका मुक़ाबला कोई चीज भी नहीं कर सकती।

सकीना का नाज़िल होना मुतअद्दद रिवायात में वारिद हुआ है। उसके मिस्दाक में मशाइख़े हदीस के चन्द क़ौल हैं लेकिन इन में कोई ऐसा इख़्तिलाफ़ नहीं कि जिस से आपस में कुछ तआरुज़[4] हो, बल्कि सब का मज्मूआ भी मुराद हो सकता है।

हज़रत अली रज़ि० से सकीना की तफ़्सीर यह नक़्ल की गयी है कि वह एक ख़ास हवा है, जिसका चेहरा इंसान के चेहरा जैसा होता है। अल्लामा सुद्दी रह० से नक़्ल किया गया कि वह जन्नत के एक तश्त का नाम है जो सोने का होता है। इसमें अंबिया अलै० के क़ुलूब को ग़ुस्ल दिया जाता है। बाज़ ने कहा है कि यह ख़ास रहमत है। तबरी रह० ने इसको पसंद किया है कि इससे सुकूने क़ल्ब मुराद है बाज़ ने कहा कि तमानियत मुराद है, बाज़ ने इसकी तफ़्सीर 'विक़ार' से की है, तो किसी ने मलाइका से। बाज़ ने और भी अक़्वाल कहे हैं। हाफ़िज की राय 'फ़त्हुलबारी' में यह है कि सकीने का इत्लाक़ सब पर आता है। नववी रह० की राय है कि यह कोई ऐसी चीज है जो जामे है, तमानियत, रहमत वग़ैरह को और मलाइका के साथ नाज़िल होती है।

कलामुल्लाह शरीफ़ में इर्शाद है- فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ

फ़ अन्ज़लल्लाहु सकी न त हू अलैहि०

दूसरी जगह इर्शाद है- هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ

---

1. मस्जिद, 2. जमा होकर, 3. सस्ता, 4. टकराव,

हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकी न त फ़ी क़ुलूबिल मुअ् मिनीन०

एक जगह इर्शाद है- فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ

फ़ीहि सकीनतुम मिर्रब्बिकुम०

ग़रज मुतअद्दद आयात में इस का ज़िक्र है और अहादीस में मुतअद्दद रिवायात में इसकी बशारत फ़र्मायी गयी है। एह्या में नक़्ल किया है कि इब्ने सौबान रज़ि० ने अपने किसी अज़ीज से उसके साथ इफ़्तार का वायदा किया, मगर दूसरे रोज़ सुबह के वक़्त पहुंचे। उन्होंने शिकायत की तो कहा कि अगर मेरा तुम से वायदा न होता तो हरगिज़ न बताता कि क्या मानेअ पेश आया। मुझे इत्तिफ़ाक़न देर हो गयी थी हत्ता कि इशा की नमाज का वक़्त आ गया, ख़्याल हुआ कि वित्र भी साथ ही पढ़ लूं कि मौत का इत्मीनान नहीं, कभी रात में मर जाऊं और वह ज़िम्मे पर बाक़ी रह जाएं। मैं दुआ-ऐ-क़ुनूत पढ़ रहा था कि मुझे जन्नत का एक सब्ज बाग़ नजर आया, जिसमें हर नौअ के फूल वग़ैरह थे, उसके देखने में ऐसा मशग़ूल हुआ कि सुबह हो गयी, इस क़िस्म के सैकड़ों वाक़िआत हैं जो बुज़ुर्गों के हालात में दर्ज हैं, लेकिन उनका इज़्हार उस वक़्त होता है, जब मासिवा से[1] इन्क़िताअ हो जावे और उसी जानिब तवज्जोह कामिल हो जावे।

मलाइका का ढांकना भी मुतअद्दद रिवायात में वारिद हुआ है। उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० का मुफ़स्सल क़िस्सा कुतुबे हदीस में आता है कि उन्होंने तिलावत करते हुए अपने ऊपर एक-अब्र सा छाया हुआ महसूस किया हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि यह मलाइका थे, जो क़ुरआन शरीफ़ सुनने के लिए आये थे। मलाइका इज़्दिहाम[2] की वजह से अब्र-सा मालूम होते थे। एक सहाबी रज़ि० को एक मर्तबा अब्र-सा महसूस हुआ तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि यह सकीना था यानी रहमत, जो क़ुरआन शरीफ़ की वजह से नाज़िल हुई थी। मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस ज़्यादा मुफ़स्सिल आयी, जिसमें और भी मज़ामीन हैं। अख़ीर में एक जुम्ला यह भी ज़्यादा है, 'मन ब त अ बिही अ म लुहू लम् युसरिअ् बिही न स बुहू' (जिस शख़्स को उसके बुरे आमाल रहमत से दूर करें, उसका आली नसब होना, ऊंचे ख़ानदान का होना रहमत से क़रीब नहीं कर सकता।)

एक शख़्स जो पुश्तानी शरीफ़ुन्नसब[3] है, मगर फ़िस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तला

---

1. दूसरी तमाम चीजों से बे-ताल्लुक हो जाए, 2. बहुत ज़्यादा भीड़,
3. बाप-दादों से शरीफ़ है,

है, वह अल्लाह के नजदीक उस रजील और कम ज़ात मुसलमान की बराबरी किसी तरह भी नहीं कर सकता, जो मुत्तक़ी-परहेज़गार है। इन्न अक् र म कुम अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम०

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقَاكُمْ

٢٣- عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّكُمْ لَا تَرْجِعُوْنَ إِلَى اللّٰهِ بِشَيْءٍ أَفْضَلَ مِمَّا خَرَجَ مِنْهُ يَعْنِي الْقُرْآنَ (رواه الحاكم وصححه ابوداؤد في مراسيله عن جبير بن نفير والترمذي عن ابي امامة بمعناه)

23. 'अबूज़र रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि तुम लोग अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ रुजूअ और उसके यहां तक़र्रुब इस चीज से बढ़ कर किसी और चीज से हासिल नहीं कर सकते जो ख़ुद हक़ सुब्हानहु से निकला है, यानी कलामे पाक।'

मुतअद्दद रिवायात से यह मज़्मून साबित है कि हक़ तआला शानुहू के दरबार में कलामे पाक से बढ़ कर तक़र्रुब किसी चीज से हासिल नहीं होता। इमाम अहमद बिन हंबल रह० कहते हैं कि मैंने हक़ तआला शानुहू की ख़्वाब में ज़ियारत की तो पूंछा कि सबसे बेहतर चीज, जिससे आप के दरबार में तक़र्रुब हो, क्या चीज है ? इर्शाद हुआ है कि अहमद ! मेरा कलाम है। मैंने अर्ज किया कि समझ कर या बिला समझे ? इर्शाद हुआ कि समझ कर पढ़े या बिला समझे, दोनों तरह मुजिब: तक़र्रुब है।

इस हदीस शरीफ़ की तौज़ीह और तिलावते कलाम पाक का सब से बेहतर तरीक़ा तक़र्रुब होने की तश्रीह, हज़रते अक़्दस बक़ीयतुस्सलफ़ हुज्जतुल ख़ल्क़ मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज साहब देहलवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू की तफ़्सीर से मुस्तंबित होती है, जिस का हासिल यह है कि सुलूक इलल्लाह यानी मर्तबा-ए-एहसान हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस की हुज़ूरी का नाम है जो तीन तरीक़ों से हासिल हो सकती है-

1. अव्वल तसव्वुर जिसको उर्फ़ शरअ में तफ़क्कुर व तदब्बुर से ताबीर करते हैं और सूफ़िया के यहां मुराक़बे से।

2. दूसरा ज़िक्रे लिसानी, और

3. तीसरा तिलावते कलाम पाक। सबसे अव्वल तरीक़ा भी चूंकि ज़िक्रे क़ल्बी है, इसलिए दरअसल तरीक़े दो ही हैं-अव्वल ज़िक्र आम है कि ज़बानी हो या क़ल्बी, दूसरे तिलावत, सो जिस लफ़्ज का इत्लाक़ हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस पर होगा और इसको बार-बार दोहराया जावेगा, जो ज़िक्र का हासिल है, तो मुदरिका[1] के उस ज़ात की तरफ़ तवज्जोह और इल्तिफ़ात का सबब होगा और गोया वह ज़ात मुस्तह्ज़र[2] होगी और इस्तिह्ज़ार के दवाम का नाम मअइयत[3] है जिसको इस हदीस शरीफ़ में इर्शाद फ़र्माया है-

لَا یَزَالُ عَبْدِیْ یَتَقَرَّبُ اِلَیَّ بِالنَّوَافِلِ حَتّٰی اَحْبَبْتُہٗ فَکُنْتُ سَمْعَہُ الَّذِیْ یَسْمَعُ بِہٖ وَبَصَرَہُ الَّذِیْ یُبْصِرُ بِہٖ وَیَدَہُ الَّتِیْ یَبْطِشُ بِھَا الحدیث

ला यज़ालु अब्दी य त क़र्रबु इलय्य बिन्नवाफ़िलि हत्ता अह्बब्तु हू फ़ कुन्तु सम्अे हुल्लज़ी यस्मयु बिही व ब स रू हुल्लज़ी यब्सुरु बिही व य दु हुल्लती यब्तिशु बिहा (अल-अहादीस)

हक़ सुब्हा न हू व तक़द्दुस का इर्शाद है कि बन्दा नफ़्ल इबादतों के साथ तक़र्रुब हासिल करता रहता है, यहां तक कि मैं भी इसको महबूब बना लेता हूं हत्ता कि मैं उसका कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है और आंख बन जाता हूं, जिससे वह देखता है और हाथ जिससे वह किसी चीज़ को पकड़ता है और पांव जिससे वह चलता है। यानी जब कि बन्दा कसरते इबादत से हक़ तआला शानुहू का मुक़र्रब बन जाता है, तो हक़ तआला शानुहू उसके आज़ा के मुहाफ़िज़ बन जाते हैं और आंख कान वग़ैरह सब मरज़ी-ए-आक़ा के ताबेअ हो जाते हैं और नफ़्ल इबादात की कसरत इसलिए इर्शाद फ़र्मायी कि फ़राइज़ मुतअय्यिना हैं, जिनमें कसरत नहीं होती और इसके लिए ज़रूरत है दवामे इस्तिह्ज़ार की[4], जैसा कि पहले मालूम हो चुका, लेकिन तक़र्रुब का यह तरीक़ा सिर्फ़ उसी महबूब की पाक ज़ात के लिए है। अगर कोई चाहे कि किसी दूसरे के नाम की तस्बीह पढ़ कर उससे तक़र्रुब हासिल कर ले तो यह मुम्किन नहीं, इस वजह से कि इस क़िस्म के तक़र्रुब में, जिसकी तरफ़ तक़र्रुब हो, उसमें दो बात का पाया जाना ज़रूरी है।

1. अव्वल यह कि उसका इल्म मुहीत हो, ज़ाकिरीन के क़ल्बी और ज़बानी

---

1. इन्सान के अन्दर की इद्राक करने वाली और क़ुबूल करने वाली सलाहियत,
2. यानी दिल में उसका ध्यान आयेगा, 3. साथ होना, 4. हमेशा ध्यान जमाए रखना, 5. सूफ़िया की इस्तिलाह है, मतलब यह कि अल्लाह से तक़र्रुब,

अज़्कार को, अगरचे वह मुख़्तलिफ़ ज़मानों और मुख़्तलिफ़ औक़ात में ज़िक्र करें।

2. दूसरे यह कि ज़िक्र करने वाले के मुदरिका में तजल्ली और उसके पुर कर देने की क़ुदरत हो, जिसको उर्फ़ में दुन्व और तदुन्नी नुज़ूल और क़ुर्ब से ताबीर करते हैं।

यह दोनों बातें चूंकि उसी मत्लब में पायी जाती हैं, इसलिए तरीक़े बाला से तक़र्रुब भी उसी पाक ज़ात से हासिल हो सकता है और इसी की तरफ़ इस हदीसे क़ुद्सी में इशारा है, जिसमें इर्शाद है-

مَنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا (الحديث)

'मन तक़र्र ब इलय्य शिब्रन तक़र्रब्तु इलैहि ज़िराअ़न-' अल-हदीस

'जो शख़्स मेरी तरफ़ एक बालिश्त नज़दीक होता है, तो मैं उसकी तरफ़ एक हाथ क़रीब होता हूं और जो शख़्स मेरी तरफ़ एक हाथ आता है, मैं उसकी तरफ़ एक बाअ़ आता हूं यानी दोनों हाथों की लम्बाई के बक़द्र और जो शख़्स मेरी तरफ़ मामूली रफ़्तार से आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर चलता हूं।'

यह सब तश्बीहात समझाने के लिए हैं, वरना हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस चलना फिरना वग़ैरा सबसे मुबर्रा हैं मक़्सूद यह है कि हक़ सुबानहु तक़द्दुस अपने याद करने और ढूंढने वालों की तरफ़ उनकी तलब और सई से ज़्यादा तवज्जोह और नुज़ूल फ़र्माते हैं और क्यों न फ़र्मावें कि करीम के करम का मुक़्तज़ा यही है, पस जब कि याद करने वालों की तरफ़ से याद करने में दवाम होता है, तो पाक आक़ा की तरफ़ से तवज्जोह और नुज़ूल में दवाम होता है। कलामे इलाही चूंकि सरासर ज़िक्र है और उसकी कोई आयत ज़िक्र व तवज्जोह इलल्लाह से ख़ाली नहीं। इसलिए यही बात इसमें भी पायी जाती है, मगर इसमें एक ख़ुसूसियत ज़्यादा है जो ज़्यादती तक़र्रुब का सबब है, वह यह कि हर कलाम मुतकल्लिम की सिफ़ात व असरात अपने अन्दर लिए हुए हुआ करता है और यह खुली हुई बात है कि फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार के अश्आर का विर्द रखने से इसके असरात पाये जाते है और अत्क़िया[1] के अश्आर से उनके समरात पैदा होते हैं। इसी वजह से मंतिक़, फ़ल्सफ़ा में ग़ुलू से नख़्वत व तकब्बुर पैदा होता है और हदीस की कसरते मुज़ावलत से तवाज़ोअ़ पैदा होती है। यही वजह है कि फ़ारसी और अंग्रेज़ी नफ़्से ज़बान होने में दोनों बराबर हैं, लेकिन मुसन्निफ़ीन जिन की कुतुब

1. मुत्तक़ी लोग, अच्छे लोग.

पढ़ायी जाती हैं। इनके इख़्तिलाफ़े असरात से समरात में भी इख़्तिलाफ़ होता है, बिल् जुम्ला चूंकि कलाम में हमेशा मुतकल्लिम के तास्सुरात पाये जाते हैं, इसलिये कलामे इलाही के तकरारे विर्द से उसके मुतकल्लिम के असरात भी पैदा होना और उनसे तब्अन मुनासिबत पैदा हो जाना यक़ीनी है, नीज हर मुसन्निफ़ का क़ायदा है कि जब कोई शख़्स उसकी तालीफ़ का एहतमाम किया करता है तो फ़ितरतन उस की तरफ़ इल्तिफ़ात और तवज्जोह हुआ करती है, इसलिए हक़ तआला शानुहू के कलाम का विर्द रखने वाले की तरफ़ हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस की ज़्यादती तवज्जोह भी बदीही और यक़ीनी है, जो ज़्यादती-ए-क़ुर्ब का सबब होती है। आक़ा-ए-करीम अपने करम से मुझे भी इस लुत्फ़ से नवाज़ें और तुम्हें भी।

٢٤ـ عَنْ اَنَسٍؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ اَهْلِيْنَ مِنَ النَّاسِ قَالُوْا مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

قَالَ اَهْلُ الْقُرْاٰنِ هُمْ اَهْلُ اللّٰهِ وَخَاصَّتُهٗ (رواه النسائی وابن ماجة والحاكم واحمد)

24. 'अनस रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है कि हक़ तआला शानुहू के लिए लोगों में से बाज़लोग, ख़ास घर के लोग हैं। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि वह कौन लोग हैं ? फ़र्माया कि क़ुरआन शरीफ़ वाले कि वह अल्लाह के अह्ल हैं' और ख़वास।

क़ुरआन वाले वह लोग हैं जो हर वक़्त कलाम पाक में मश्ग़ूल रहते हों, उस के साथ ख़ुसूसियत रखते हों, उनका अल्लाह के अह्ल और ख़वास होना ज़ाहिर है और गुज़िश्ता मज़्मून से वाज़ेह हो गया कि जब यह हर वक़्त कलाम पाक में मश्ग़ूल रहते हैं, तो अल्ताफ़े बारी भी हर वक़्त उनकी तरफ़ मुतवज्जह रहते हैं और जो लोग हर वक़्त के पास रहने वाले होते हैं, वह अह्ल और ख़वास होते ही हैं। किस क़दर बड़ी फ़ज़ीलत है कि ज़रा सी मेहनत व मशक़्क़त से अल्लाह वाले बनते हैं, अल्लाह के अह्ल शुमार किये जाते हैं और उसके ख़वास होने का शर्फ़ हासिल हो जाता है।

दुन्यावी दरबार में सिर्फ़ दाख़िले की इजाज़त के लिए मिंबरों में सिर्फ़ शुमूल[1] के लिए किस क़दर जानी और माली क़ुर्बानी की जाती है, वोटरों के सामने ख़ुशामद करनी पड़ती है, जिल्लतें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं और इस सबको काम समझा जाता है लेकिन क़ुरआन शरीफ़ की मेहनत को बेकार समझा जाता है।

---

1. शामिले होने के लिए,

बबीं तफ़ावुते रहअज कुजास्त ता ब कुजा

٢٥-عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا اَذِنَ اللّٰہُ لِشَیْءٍ مَا اَذِنَ لِنَبِیٍّ یَتَغَنّٰی بِالْقُرْاٰنِ۔ (رواہ البخاری ومسلم)

25. अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया है कि हक़ सुब्हानुहू इतनी किसी की तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़र्माते जितना कि उस नबी की आवाज़ को तवज्जोह से सुनते हैं जो कलामे इलाही ख़ुश इल्हानी[1] से पढ़ता हो।

पहले मालूम हो चुका कि अल्लाह तआला शानुहू अपने कलाम की तरफ़ ख़ुसूसियत से तवज्जोह फ़र्माते हैं। पढ़ने वालों में अंबिया अलै० चूंकि आदाबे तिलावत बकमालिही[2] अदा करते हैं इसलिए उनकी तरफ़ और ज़्यादा तवज्जोह होना भी ज़ाहिर है, फिर जबकि हुस्ने आवाज उसके साथ मिल जावे तो सोने पर सुहागा है, जितनी भी तवज्जोह हो, ज़ाहिर है और अंबिया अलै० के बाद अल अफ़्ज़ल[3] फ़ल-अफ़्ज़ल हस्बे हैसियत पढने वाले की तरफ़ तवज्जोह होती है।

٢٦-عَنْ فُضَالَةَ ابْنِ عُبَیْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَللّٰہُ اَشَدُّ اُذُنًا اِلٰی قَارِیِٔ الْقُرْاٰنِ مِنْ صَاحِبِ الْقَیْنَةِ اِلٰی قَیْنَتِہٖ (رواہ ابن ماجۃ وابن حبان والحاکم کذا فی شرح الاحیاء قلت وقال الحاکم صحیح علی شرطھما وقال الذھبی منقطع)

26. 'फ़ुज़ाला इब्ने उबैद रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया है कि हक़ तआला शानुहू क़ारी की आवाज़ की तरफ़ उस शख़्स से ज़्यादा कान लगाते हैं जो अपनी गाने वाली बांदी का गाना सुन रहा हो।'

गाने की आवाज़ की तरफ़ फ़ित्रतन और तब्अन तवज्जोह होती है, मगर शरई रोक की वजह से दीनदार लोग इधर मुतवज्जह नहीं होते, लेकिन गाने वाली अपनी मम्लूका[4] हो तो उसका गाना सुनने में कोई शरई नुक़्स भी नहीं, इसलिए इस तरफ़ कामिल तवज्जोह होती है, अलबत्ता कलामे पाक में यह ज़रूरी है कि गाने की आवाज़ में न पढ़ा जाए। अहादीस में इस की मुमानअत आयी है।

---

1. अच्छी आवाज़ के साथ, 2. पूरे कमाल के साथ, 3. दर्जा-ब-दर्जा जो जितना क़रीब हो, 4. बांदी,

एक हदीस में है, 'इय्याकुम व लुहूनु अह्लिल इश्क़' (अल-हदीस) यानी इस से बचो कि जिस तरह आशिक़ ग़ज़लों को आवाज़ बना-बना कर मौसीक़ी क़वानीन पर पढ़ते हैं, इस तरह मत पढ़ो।

मशाइख़ ने लिखा है कि इस तरह का पढ़ने वाला फ़ासिक़ और सुनने वाला गुनाहगार है, मगर गाने के क़वायद की रिवायात किये बग़ैर ख़ुश आवाज़ी मत्लूब है। हदीस में मुतअद्दद जगह इसकी तर्ग़ीब आयी है। एक जगह इर्शाद है कि अच्छी आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ को मुज़य्यन करो।[1]

एक जगह इर्शाद है कि अच्छी आवाज़ से कलामुल्लाह शरीफ़ का हुस्न दोबाला हो जाता है। हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० अपनी किताब 'ग़ुनीया' में इर्शाद फ़र्माते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० एक मर्तबा कूफ़ा के नवाह में जा रहे थे कि एक जगह फ़ुस्साक़ का मज्मा एक घर में जमा था। एक गवैया जिसका नाम ज़ाज़ान था, गा रहा था और सारंगी बजा रहा था। इब्ने मस्ऊद ने उनकी आवाज़ सुन कर इर्शाद फ़र्माया, क्या ही अच्छी आवाज़ थी, अगर क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत में होती और अपने सर पर कपड़ा डाल कर गुज़रे हुए चले गये। ज़ाज़ान ने उनको बोलते हुए देखा। लोगों से पूछने पर मालूम हुआ अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० सहाबी हैं और यह इर्शाद फ़र्मा गये। उस पर इस मक़ूले की कुछ ऐसी हैबत तारी हुई कि हद नहीं और क़िस्सा मुख़्तसर कि वह अपने सब आलात तोड़ कर इब्ने मस्ऊद रज़ि० के पीछे लग गये और अल्लामा-ए-वक़्त हो गये।

ग़रज़ मुतअद्दद रिवायात में अच्छी आवाज़ से तिलावत की मदह आयी है, मगर इसके साथ ही गाने की आवाज़ में पढ़ने की मुमानअत आयी है, जैसा कि ऊपर गुज़र चुका।

हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि क़ुरआन शरीफ़ को अरब की आवाज़ में पढ़ो, इश्क़बाज़ों और यहूद व नसारा की आवाज़ में न पढ़ो। अंक़रीब एक क़ौम आने वाली है जो गाने और नौहा करने वालों की तरह से क़ुरआन शरीफ़ को बना-बना कर पढ़ेगी, वह तिलावत ज़रा भी उन के लिए नाफ़ेअ न होगी, ख़ुद भी वह लोग फ़ित्ने में पड़ेंगे और जिनको वह पढ़ना अच्छा मालूम होगा, उनको भी फित्ने में डालेंगे।

---

1. सजाओ, 2. बात, 3. गाने-बजाने की सब चीज़ें और सामान तोड़-फोड़ कर, 4. तारीफ़, 5. जैसा कि उस का हक़ है,

ताऊस रज़ि० कहते हैं कि किसी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अच्छी आवाज़ से पढ़ने वाला कौन शख़्स है ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह शख़्स कि जब तू उसको तिलावत करते देखे तो महसूस करे कि उस पर अल्लाह का ख़ौफ़ है यानी उस की आवाज़ से मरऊब होना महसूस होता हो। इस सबके साथ अल्लाह जल्ल व अला का बड़ा इनाम यह है कि आदमी अपनी हैसियत व ताक़त के मुवाफ़िक़ इस का मुकल्लफ़ है।

हदीस में है कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस की तरफ़ से फ़रिश्ता इस काम पर मुक़र्रर है कि जो शख़्स कलाम पाक पढ़े और कमा हक़्क़हू उसको दुरुस्त न पढ़ सके तो वह फ़रिश्ता उसको दुरुस्त करने के बाद ऊपर ले जाता है। 'अल्लाहुम-म ला उह्सी स-नाअन अलै क०'

٢٧- عَنْ عُبَيْدَةَ الْمُلَيْكِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا أَهْلَ الْقُرْاٰنِ لَا تَتَوَسَّدُوا الْقُرْاٰنَ وَاتْلُوْهُ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ مِنْ اٰنَاءِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَاَفْشُوْهُ وَتَغَنَّوْهُ وَتَدَبَّرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ وَلَا تَعْجَلُوْا ثَوَابَهٗ فَاِنَّ لَهٗ ثَوَابًا (رواه البيهقى فى شعب الايمان)

27. 'उबैदा मुलैकी रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है, क़ुरआन वालो ! क़ुरआन शरीफ़ से तकिया न लगाओ और उसकी तिलावत शब व रोज़ ऐसी करो, जैसा कि उसका हक़ है। कलाम पाक की इशाअत करो और उसको अच्छी आवाज़ से पढ़ो और उसके मआनी में मदब्बुर करो ताकि तुम फ़लाह को पहुंचो और उसका बदला (दुनिया में) तलब न करो कि (आख़िरत में) इसके लिए बड़ा अज्र व बदला है।'

हदीसे बाला में चंद उमूर इर्शाद फ़र्माये हैं-

1. क़ुरआन शरीफ़ से तकिया न लगाओ। क़ुरआन शरीफ़ से तकिया न लगाने के दो मफ़्हूम हैं- अव्वल यह कि उस पर तकिया न लगाओ कि यह ख़िलाफ़े अदब है। इब्ने हज्र रह० ने लिखा है कि क़ुरआन पाक पर तकिया लगाना, उसकी तरफ़ पांव फैलाना, उसकी तरफ़ पुश्त करना, उसको रौंदना वग़ैरह हराम है। दूसरे यह कि किनाया है ग़फ़लत से कि कलाम पाक बरकत के वास्ते तकिया ही पर रखा रहे, जैसा कि बाज़ मज़ारात पर देखा गया कि क़ब्र के सिरहाने बरकत के वास्ते रेहल पर रखा रहता है। यह कलाम पाक की हक़ तलफ़ी है। उसका हक़ यह है कि उसकी तिलावत की जाए।

2. और उसकी तिलावत करो, जैसा कि उसका हक़ है, यानी कसरत से आदाब की रियायत रखते हुए ख़ुद कलाम पाक में भी इसकी तरफ़ मतवज्जोह फ़र्माया गया। इर्शाद है– اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ

अल्लज़ी न आतैनाहुमुल किता ब यत्लू न हू हक्क़ तिलावतिही०

(जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह उसकी तिलावत करते हैं, जैसा कि उसकी तिलावत का हक़ है, यानी जिस इज़्ज़त से बादशाह का फ़र्मान और जिस शौक़ से महबूब का कलाम पढ़ा जाता है, उसी तरह पढ़ना चाहिए।

3. और इसकी इशाअत करो यानी तक़रीर से, तहरीर से, तर्ग़ीब[1] से, अमली शिर्कत से, जिस तरह हो सके, इसकी इशाअत जितनी हो सके, करो। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कलाम पाक की इशाअत और उसके फैलाने का हुक्म फ़र्माते हैं, लेकिन हमारे रोशन दिमाग़ उसके पढ़ने को फ़ुज़ूल बताते हैं और साथ ही हुब्बे रसूल और हुब्बे इस्लाम के लम्बे-चौड़े दावे भी हाथ से नहीं जाते–

तरसम न रसी बि काबा ए आराबी
कीं रह कि तू मी रवी ब तुर्किस्तानस्त।[2]

आक़ा का हुक्म है कि क़ुरआन पाक को फैलाओ, मगर हमारा अमल है कि जो कोशिश इसकी रुकावट में हो सके, दरेग़ न करेंगे। जब्रया तालीम के क़वानीन बनवाएंगे, ताकि बच्चे बजाए क़ुरआन पाक के प्राइमरी पढ़ें। हमें इस पर ग़ुस्सा है कि मक्तब के मियां जी बच्चों की उम्र ज़ाया कर देते हैं, इसलिए हम वहां नहीं पढ़ाना चाहते, मुसल्लम ![3] वह यक़ीनन कोताही करते हैं, मगर उनकी कोताही से आप सुबुक दोश हो जाते हैं या आप पर से कुराने पाक की इशाअत का फ़रीज़ा हट जाता है इस सूरत में तो यह फ़रीज़ा आप पर आयद होता है। वह अपनी कोताहियों के जवाब दह हैं मगर इनकी कोताही से आप बच्चों को जबरन क़ुरआन पाक के मकातिब से हटा दें और उनके वालिदैन पर नोटिस जारी कराएं कि वह क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ या नाज़रा पढ़ाने से मजबूर हों और इस का वबाल आप की गरदन पर रहे, यह हुमा दिक का इलाज संखिया से नहीं तो और क्या है। अदालते आलिया में अपने इस जवाब को इसलिए जबरन तालीमे क़ुरआन से हटा दिया कि मक्तब के मियां जी बहुत

---

1. शौक़ दिला कर, 2. ऐ आरबी ! मुझे डर है कि तू काबा न पहुंच इस लिए कि तू जिस रास्ते को जाता है, यह तुर्किस्तान का है, 3. यानी माना,

बुरी तरह से पढ़ाते थे, आप ख़ुद ही सोच लीजिए कि कितना वजन रखता है। बनिये की दुकान पर जाने के वास्ते या अंग्रज़ों की चाकरी के वास्ते 3/4 की तालीम अहमियत रखती हो, मगर अल्लाह के यहां तालीमे क़ुरआन सब से अहम है।

4. ख़ुशआवाज़ी से पढ़ो जैसा कि इससे पहली हदीस में गुज़र चुका।

5. और इसके माना में ग़ौर करो। तौरात से उहया में नक़्ल किया है, हक़ सुब्हानुहू व तक़द्दुस इर्शाद फ़रमाते हैं, ऐ मेरे बन्दे ! तुझे मुझ से शर्म नहीं आती। तेरे पास रास्ते में किसी दोस्त का ख़त आ जाता है तो चलते-चलते रास्ते में ठहर जाता है, अलग बैठ कर ग़ौर से पढ़ता है, एक-एक लफ़्ज़ पर ग़ौर करता है, मेरी किताब तुझ पर गुज़रती है मैं ने इस में सब कुछ वाज़ेह कर दिया है। बाज अहम उमूर का बार-बार तकरार किया है ताकि तू इस पर ग़ौर करे और तू बे-परवाही से उड़ा देता है। क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी ज़लील हूं। ऐ मेरे बंन्दे ! तेरे बाज दोस्त तेरे पास बैठ कर बातें करते हैं तू हमातन इधर मुतवज्जह हो जाता है। कान लगाता है, ग़ौर करता है, कोई बीच में तुझसे बात करने लगता है तो तू इशारे से उसको रोकता है, मना करता है, मैं तुझसे अपने कलाम के ज़रिए से बातें करता हूं और तू ज़रा भी मुतवज्जह नहीं होता। क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी ज़्यादा ज़लील हूं। आह ! तदब्बुर और ग़ौर के मुताल्लिक़ कुछ मुक़दमे में और कुछ हदीस न० 8 के ज़ेल में मज़्कूर हो चुका है।

6. और इसका बदला दुनियां में न चाहो यानी तिलावत पर कोई मुआवज़ा न लो कि आख़िरत में इसका बहुत बड़ा मुआवज़ा मिलने वाला है। दुनियां में अगर इसका मुआवज़ा ले लिया जावेगा तो ऐसा है जैसा कि रुपयों के बदले कोई शख़्स कौड़ियों पर राज़ी हो जावे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब मेरी उम्मत दीनार व दिरहम को बड़ी-चीज़ समझने लगेगी, इस्लाम की हैबत[1] इससे जाती रहेगी और जब अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर छोड़ देगी तो बरकते वही से यानी फ़हमे क़ुरआन से महरूम हो जाएगी। 'कज़ा फ़िल एह्याई अल्लाहुम्मह फ़ज़्ना मिन्हु०' كَذَا فِي الْإِحْيَاءِ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ

(٢٨) عَنْ وَاثِلَةَ رَفَعَهُ اُعْطِيْتُ مَكَانَ التَّوْرٰىةِ السَّبْعَ وَاُعْطِيْتُ مَكَانَ الزَّبُوْرِ الْمِئِيْنَ وَاُعْطِيْتُ مَكَانَ الْاِنْجِيْلِ الْمَثَانِيَ وَفُضِّلْتُ بِالْمُفَصَّلِ (لاحمد والكبير كذا في جمع الفوائد)

28. 'वासिला रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि मुझे तौरात के बदले में सब्अ तवील मिली हैं और ज़बूर के बदले में

मईन और इंजील के बदले में मसानी और मुफ़स्सल मख़्सूस है मेरे साथ।'

कलाम पाक की अव्वल सात सूरतें तूल कहलाती हैं। इसके बाद की ग्यारह सूरतें मईन कहलाती हैं। इसके बाद की बीस सूरतें मसानी, इसके बाद ख़त्मे क़ुरआन तक मुफ़स्सल। यह मशहूर क़ौल है। बाज़-बाज़ सूरतों में इख़्तिलाफ़ भी है कि यह तूल में दाख़िल हैं या मईन में, इसी तरह मसानी में दाख़िल हैं या मुफ़स्सल में। मगर हदीस शरीफ़ के मतलब व मक़्सूद में इस इख़्तिलाफ़ से कोई फ़र्क़ नहीं आता। मक़्सद यह है कि जिस क़दर कुतुबे मशहूरा समावीया[1] पहले नाज़िल हुई हैं, उन सब की नज़ीर क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है और उनके अलावा मुफ़स्सल इस कलाम पाक में मख़्सूस है, जिसकी मिसाल पहली किताबों में नहीं मिलती।

(٢٩) عَنْ اَبِىْ سَعِيْدِ نِ الْخُدْرِىِّ قَالَ جَلَسْتُ فِىْ عِصَابَةٍ مِّنْ ضُعَفَآءِ الْمُهَاجِرِيْنَ وَاِنَّ بَعْضَهُمْ لَيَسْتَتِرُ بِبَعْضٍ مِّنَ الْعُرْىِ وَقَارِئٌ يَّقْرَأُ عَلَيْنَا اِذْ جَآءَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ عَلَيْنَا فَلَمَّا قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَكَتَ الْقَارِئُ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُوْنَ قُلْنَا نَسْتَمِعُ اِلٰى كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى فَقَالَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ مِنْ اُمَّتِىْ مَنْ اُمِرْتُ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِىْ مَعَهُمْ قَالَ فَجَلَسَ وَسْطَنَا لِيَعْدِلَ بِنَفْسِهٖ فِيْنَا ثُمَّ قَالَ بِيَدِهٖ هٰكَذَا فَتَحَلَّقُوْا وَبَرَزَتْ وُجُوْهُهُمْ لَهٗ فَقَالَ اَبْشِرُوْا يَا مَعْشَرَ صَعَالِيْكِ الْمُهَاجِرِيْنَ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ اَغْنِيَآءِ النَّاسِ بِنِصْفِ يَوْمٍ وَّذٰلِكَ خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ (رواه ابوداؤد)

29. अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि मैं ज़ुअफ़ा मुहाजिरीन[2] की जमाअत में एक मर्तबा बैठा हुआ था। उन लोगों के पास कपड़ा भी इतना न था कि जिस से पूरा बदन ढांप लें। बाज़ लोग बाज़ की ओट करते थे और एक शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था कि इतने में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा हुए और बिल्कुल हमारे क़रीब खड़े हो गये। हुज़ूर सल्ल० के आने पर क़ारी चुप हो गया तो हुज़ूर सल्ल० ने सलाम किया और फिर दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग क्या कर रहे थे, हमने अर्ज़ किया कि कलामुल्लाह सुन रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़र्माये कि मुझे उनमें ठहरने का हुक्म किया गया, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० हमारे बीच में

1. मशहूर आसमानी मिताबें, 2. मुहाजिर सहाबा में के कमज़ोर लोग,

बैठ गये ताकि सब के बराबर रहें, किसी के क़रीब, किसी से दूर न हों। इसके बाद सबको हल्क़ा कर के बैठने का हुक्म फ़र्माया, सब हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मुंह कर के बैठ गये तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ऐ फ़ुक़रा मुहाजिरीन तुम्हें मुज़्दा[1] हो। क़यामत के दिन नूरे कामिल का और इस बात का कि तुम अग़्निया[2] से आधे दिन पहले जन्नत में दाख़िल होगे और यह आधा दिन पांच सौ बरस के बराबर होगा।

नंगे बदन से बज़ाहिर महल्ले सतर[3] के अलावा मुराद है। मज्मा में सतर के अलावा और बदन के खुलने से भी हिजाब मालूम हुआ करता है, इसलिए एक दूसरे के पीछे बैठ गये थे कि बदन नज़र न आवे। हुज़ूर सल्ल० के तश्रीफ़ लाने की अव्वल तो उन लोगों को अपनी मश्ग़ूली की वजह से ख़बर न हुई, लेकिन जब हुज़ूर सल्ल० बिल्कुल सर पर तश्रीफ़ ले आये तो मालूम हुआ और क़ारी अदब की वजह से ख़ामोश हो गये।

हुज़ूर सल्ल० का दर्याफ़्त फ़र्माना बज़ाहिर इज़्हारे मसर्रत के लिए था, वरना हुज़ूर सल्ल० क़ारी को पढ़ते हुए देख ही चुके थे। आख़िरत का एक दिन, दुनियां के हज़ार वर्ष के बराबर होता है-

وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ

व इन्न यौमन अि न द रब्बि क क अल्फ़ि स न तिम मिम्मा त अुद्दून०

और इसी वजह से बज़ाहिर जहां क़यामत का ज़िक्र आता है, ग़दन के साथ आता है, जिसके मानी 'कल' आइंदा के हैं, लेकिन यह सब ब एतबारे अग़्लब और आम मोमिनीन के है, वरना काफ़िरीन के लिए वारिद हुआ है-

فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ

फ़ी यौमिन का न मिक़्दारुहू ख़म्सीन अल्फ़ स न तिन०

ऐसा दिन जो पचास हज़ार बरस का होगा, और ख़वास मोमिनीन के लिए हस्बे हैसियत कम मालूम होगा, चुनांचे वारिद हुआ है कि बाज़ मोमिनीन के लिए ब-मंज़िला दो रक्अत फ़ज्र के होगा।

---

1. ख़ुशख़बरी, 2. माल वालों से, 3. शर्मगाह, छिपाने की जगह,

क़ुरआन शरीफ़ के पढ़ने के फ़ज़ाइल, जैसा कि बहुत -सी रिवायात में वारिद हुए है, बेहद हैं। इसके सुनने के फ़ज़ाइल भी बहुत सी रिवायात में आये हैं, इससे बढ़कर और क्या फ़ज़ीलत होगी कि सय्यदुल मुर्सलीन को ऐसी मज्लिस में शिर्कत का हुक्म हुआ है जैसा कि इस रिवायत से मालूम हुआ। बाज उलमा का फ़तवा है कि क़ुरआन पाक का सुनना पढ़ने से भी ज़्यादा अफ़ज़ल है, इसलिए कि क़ुरआन का पढ़ना नफ़्ल है और सुनना फ़र्ज और फ़र्ज का दर्जा नफ़्ल से बढ़ा हुआ होता है। इस हदीस से एक और मस्अला भी मुस्तंबित होता है, जिसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि वह नादार जो सब्र करने वाला हो, अपने फ़क्र व फ़ाक़ा को किसी पर ज़ाहिर न करता हो वह अफ़ज़ल है या वह मालदार जो शुक्र करने वाला हो, हुक़ूक़ अदा करने वाला हो।

इस हदीस से साबिर हाजतमंद की अफ़ज़लियत पर इस्तदलाल किया जाता है।

٣٠ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنِ اسْتَمَعَ اِلٰی اٰیَةٍ مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ كُتِبَتْ لَهٗ حَسَنَةٌ مُضَاعَفَةٌ وَمَنْ تَلَاهَا كَانَتْ لَهٗ نُوْرًا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ۔ (رواه احمد عن عبادة بن ميسرة واختلف فى توثيقه عن الحسن عن ابى هريرة والجمهور على ان الحسن لم يسمع عن ابى هريرة۔)

30. अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि जो शख़्स एक आयत कलामुल्लाह की सुने, उसके लिए दो चंद नेकी लिखी जाती है और जो तिलावत करे, उसके लिए क़यामत के दिन नूर होगा।'

मुहद्दिसीन ने सनद के एतबार से अगरचे इसमें कलाम किया है, मगर मज़्मून बहुत सी रिवायात से मुअय्यिद है कि कलाम पाक का सुनना भी बहुत अज्र रखता है, हत्ताकि बाज लोगों ने उसको पढ़ने से भी अफ़ज़ल बताया है।

इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ फ़र्मा थे। इर्शाद फ़र्माया कि मुझे क़ुरआन शरीफ़ सुना, मैंने अर्ज किया कि हुज़ूर पर तो ख़ुद नाज़िल ही हुआ, हुज़ूर को क्या सुनाऊं। इर्शाद हुआ कि मेरा दिल चाहता है कि सुनूं। इसके बाद उन्होंने सुनाया तो हुज़ूर की आंखों से आंसू जारी हो गये। एक मर्तबा सालिम मौला हुज़ैफ़ा रज़ि० कलाम मजीद पढ़ रहे थे कि हुज़ूरे अकरम सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम देर तक खड़े हुए सुनते रहे। अबूमूसा अश्अरी रज़ि० का क़ुरआन शरीफ़ सुना तो तारीफ़ फ़र्मायी।

(٣١) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْجَاهِرُ بِالْقُرْاٰنِ كَالْجَاهِرِ بِالصَّدَقَةِ وَالْمُسِرُّ بِالْقُرْاٰنِ كَالْمُسِرِّ بِالصَّدَقَةِ

(رواه الترمذي وابوداؤد والنسائي والحاكم وقال على شرط البخاري)

31. उक़्बा बिन आमिर रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि कलामुल्लाह का आवाज़ से पढ़ने वाला एलानिया सदक़ा करने वाले के मुशाबह है और आहिस्ता पढ़ने वाला ख़ुफ़िया सद्का करने वाले के मानिन्द है।

सद्का बाज़ औक़ात एलानिया अफ़ज़ल होता है, जिस वक़्त दूसरों की तर्ग़ीब का सबब हो या और कोई मसलहत हो और बाज़ औक़ात मख़्फ़ी अफ़ज़ल होता है, जहां रिया का शुब्हा हो या दूसरे की तज़्लील होती हो वग़ैरह-वग़ैरह। इसी तरह कलामुल्लाह शरीफ़ का बाज़ औक़ात में आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल है, जहां दूसरों की तर्ग़ीब का सबब हो और उसमें दूसरे के सुनने का सवाब भी होता है और बाज़ औक़ात आहिस्ता पढ़ना अफ़ज़ल होता है, जहां दूसरों को तक्लीफ़ हो या रिया का एहतमाल हो वग़ैरह-वग़ैरह, इसी वजह से ज़ोर से और आहिस्ता दोनों तरह पढ़ने की मुस्तक़िल फ़ज़ीलतें भी आयी हैं कि बाज़ औक़ात यह मुनासिब था और बाज़ वक़्त वह अफ़ज़ल था। आहिस्ता पढ़ने की फ़ज़ीलत पर बहुत से लोगों ने ख़ुद इस सद्के वाली हदीस से भी इस्तद्लाल किया है।

बैहक़ी ने किताबुश्शाब[1] में (मगर यह रिवायत बक़वायदे मुहद्दिसीन ज़ईफ़ है) हज़रत आइशा रज़ि० से नक़्ल किया है कि आहिस्ता का अमल एलानिया के अमल से सत्तर हिस्सा ज़्यादा बढ़ जाता है।

जाबिर रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि पुकार कर इस तरह मत पढ़ो कि एक की आवाज़ दूसरे के साथ ख़लत[2] हो जाए।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने मस्जिदे नबवी में एक शख़्स को आवाज़ से तिलावत करते सुना तो उसको मना करा दिया। पढ़ने वाले ने कुछ हुज्जत की तो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने फ़र्माया कि अगर अल्लाह के वास्ते पढ़ता है तो आहिस्ता पढ़ और लोगों की ख़ातिर पढ़ता है तो पढ़ना बेकार है। इसी तरह हुज़ूर सल्ल० से पुकार कर पढ़ने का इर्शाद भी नक़्ल किया गया। शारहे एह्या में दोनों तरह की रिवायात व आसार ज़िक्र किए गये।

1. किताब का नाम 'शाबुल ईमान' है,

(٣٢) عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْقُرْاٰنُ شَافِعٌ مُّشَفَّعٌ وَّمَاحِلٌ مُّصَدَّقٌ مَّنْ جَعَلَهٗ اَمَامَهٗ قَادَهٗ اِلَى الْجَنَّةِ وَمَنْ جَعَلَهٗ خَلْفَ ظَهْرِهٖ سَاقَهٗ اِلَى النَّارِ (رواه ابن حبان والحاكم مطولا وصححه)

32. जाबिर रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया कि क़ुरआन पाक ऐसा शफ़ीअ है, जिसकी शफ़ाअत क़ुबूल की गयी और ऐसा झगड़ालू है कि जिसका झगड़ा तस्लीम कर लिया गया, जो शख़्स उसको अपने आगे रखे, उसको यह जन्नत की तरफ़ खींचता है और जो उसको पसे पुश्त[1] डाल दे उसको जहन्नम में गिरा देता है।

यानी जिसकी यह शफ़ाअत करता है, उसकी शफ़ाअत हक़ तआला शानुहू के यहां मक़्बूल है और जिसके बारे में झगड़ा करता है और झगड़े की तफ़्सील हदीस नं० 8 के ज़ेल में गुज़र चुकी है कि अपनी रिआयत रखने वालों के लिए दरजात के बढ़ाने में अल्लाह के दरबार में झगड़ता है और अपनी हक़तलफ़ी[2] करने वालों से मुतालबा करता है कि मेरा हक़ क्यों नहीं अदा किया, जो शख़्स उसको अपने पास रख ले यानी उसका इत्तिबाअ[3] और उसकी पैरवी अपना दस्तूरुल अमल बना ले, उसको जन्नत में पहुंचा देता है और जो उसको पुश्त के पीछे डाल दे, यानी उसका इत्तिबाअ न करे, उसका जहन्नम में गिरना ज़ाहिर है। बंदे के नज़दीक कलाम पाक, के साथ लापरवाही बरतना भी उसके मफ़्हूम में दाख़िल हो सकता है।

मुतअद्दद अहादीस में कलामुल्लाह शरीफ़ के साथ बे-परवाही पर वईदें वारिद हुई हैं। बुख़ारी शरीफ़ की इस तवील हदीस में, जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बाज़ सज़ाओं की सैर कराई गयी, एक शख़्स का हाल दिखलाया गया, जिसके सर पर एक पत्थर इस ज़ोर से मारा जाता था कि उसका सर कुचल जाता था। हुज़ूर सल्ल० के दर्याफ़्त फ़रमाने पर बतलाया गया कि उस शख़्स को हक़ तआला शानुहू ने अपना कलाम पाक सिखलाया था, मगर उसने न शब को उसकी तिलावत की, न दिन में उस पर अमल किया, लिहाज़ा क़यामत तक उसके साथ यही मामला रहेगा। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ के साथ अपने अज़ाब से महफ़ूज़ रखें कि दर हक़ीक़त कलामुल्लाह शरीफ़ इतनी बड़ी नेमत है कि उसके साथ बे-तवज्जोही पर जो सज़ा दी जावे, मुनासिब है।

---

1. पीठ पीछे, 2. हक़ मारने वालों से, 3. पैरवी,

٣٣- عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصِّيَامُ وَالْقُرْاٰنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَقُوْلُ الصِّيَامُ رَبِّ اِنِّيْ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّرَابَ فِي النَّهَارِ فَشَفِّعْنِيْ فِيْهِ

وَيَقُوْلُ الْقُرْاٰنُ رَبِّ مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِيْ فِيْهِ فَيُشَفَّعَانِ (رواه احمد وابن ابي الدنيا والطبراني في الكبير والحاكم وقال صحيح على ما شرط مسلم)

33. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से नक्ल करते हैं कि रोज़ा और क़ुरआन शरीफ़ दोनों बन्दे के लिए शफ़ाअत करते हैं। रोज़ा अर्ज करता है कि या अल्लाह ! मैंने इसको दिन में खाने-पीने से रोके रखा। मेरी शफ़ाअत क़ुबूल कीजिए और क़ुरआन शरीफ़ कहता है कि या अल्लाह ! मैंने रात को इसको सोने से रोका, मेरी शफ़ाअत क़ुबूल कीजिए, पस दोनों की शफ़ाअत क़ुबूल की जाती है।

तर्ग़ीब[1] में 'अत्तआमु वश्शराबु का लफ़्ज़ है, जिस का तर्जुमा किया गया है। हाकिम[2] में शराब की जगह शहवात का लफ़्ज़ है, यानी मैंने रोज़ेदार को दिन में खाने और ख़्वाहिशाते नफ़सानिया से रोका। इसमें इशारा है कि रोज़ेदार को ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से जुदा रहना चाहिए, अगरचे वह जायज हों जैसा कि प्यार करना, लिपटाना।[3]

बाज़ रिवायत में आया है कि कलाम मजीद जवां मर्द की शक्ल में आएगा और कहेगा कि मैं ही हूं, जिसने तुझे रातों को जगाया और दिन को प्यासा रखा। नीज़ इस हदीस शरीफ़ में इशारा है इस तरफ़ कि कलामुल्लाह शरीफ़ हिफ़्ज़ का मुक्तज़ा यह है कि रात को नवाफ़िल में उसकी तिलावत भी करे। हदीस 27 में इस की तश्रीह भी गुज़र चुकी। ख़ुद कलाम पाक में मुतअद्दद जगह इसकी तर्ग़ीब भी नाज़िल हुई। एक जगह इर्शाद है-

दुसरी जगह इर्शाद है-

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَ سَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا

एक जगह इर्शाद है-

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ

---

1. किताब का नाम, 2. एक किताब के लेखक नाम है, 3. अपनी बीवी से,

एक जगह इर्शाद है- يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ

एक जगह इर्शाद है— وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا

चुनांचे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रात सहाबा रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन को बाज़ मर्तबा तिलावत करते हुए तमाम-तमाम रात गुज़र जाती थी।

हज़रत उस्मान रज़ि० से मर्वी है कि बाज़ मर्तबा वित्र की एक रक्अत में वह तमाम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करते थे। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० भी एक रात में तमाम क़ुरान शरीफ़ पूरा फ़र्मा लिया करते थे। सईद बिन जुबैर रज़ि० ने दो रक्अत में काबे के अन्दर तमाम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। साबित बनानी रह० दिन-रात में एक क़ुरआन ख़त्म करते थे और इसी तरह अबूहुर्रा भी।

अबूशेख़ हनाई कहते हैं कि मैंने एक रात में दो कलाम मजीद पूरे और तीसरे में से दस पारे पढ़े, अगर चाहता तो तीसरा भी पूरा कर लेता। सालेह बिन कैसान रज़ि० जब हज को गये तो रास्ते में अक्सर एक रात में दो कलामे मजीद पूरे करते थे। मंसूर बिन ज़ाज़ान रह० सलातुज़्ज़ुहा में एक कलामे मजीद और दूसरा ज़ुहर से अस्र तक पूरा करते थे और तमाम रात नवाफ़िल में गुज़ारते थे और इतना रोते थे कि अमामा का शम्ला तर हो जाता था, इसी तरह और हज़रात भी जैसा कि मुहम्मद बिन नस्र रह० ने 'क़ियामुल्लैल'[1] में तख़्रीज[2] किया है। शरहे एह्या में लिखा है, कि सलफ़ की आदात ख़त्मे क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ रही हैं। बाज़ हज़रात एक ख़त्म रोज़ाना करते थे जैसा कि इमाम शाफ़ई रह० ग़ैर रमज़ानुल मुबारक में और बाज़ दो ख़त्म रोज़ाना करते थे, जैसा कि ख़ुद इमाम शाफ़ई का मामूल रमज़ानुल मुबारक में था और यही मामूल अस्वद रह० और सालहे बिन कैसान रह०, सईद बिन जुबैर रह० और एक जमाअत का था बाज़ का मामूल तीन ख़त्म रोज़ाना का था। चुनांचे सुलैम बिन अत्र, जो बड़े ताबईन में शुमार किये जाते हैं, हज़रत उमर के ज़माने में फ़त्हेमिस्र में शरीक थे और हज़रत मआविया रज़ि० ने क़सस का अमीर उनको बनाया था। उनका मामूल था कि हर शब में तीन ख़त्म क़ुरआन शरीफ़ करते थे।

नववी 'किताबुल अज़्कार' में नक़्ल करते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा मिक़्दार

---

1. एक किताब का नाम, 2. नतीजा निकाल कर बयान करना, 3. हदबंदी, 4. सहर्ष रुचि,

जो तिलावत के बाब में हमको पहुंची है, वह इब्नुल कातिब का मामूल था कि वह दिन-रात में आठ क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना पढ़ते थे। इब्ने क़ुदामा रज़ि० ने इमाम अहमद रह० से नक़ल किया है कि इसकी कोई तह्दीद[3] नहीं, पढ़ने वाले के निशात[4] पर मौक़ूफ़ है।

अह्ले तारीख़ ने इमाम आज़म रह० से नक़ल किया है कि रमज़ान शरीफ़ में इक्सठ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते थे, एक दिन का और एक रात का और एक तमाम रमज़ान शरीफ़ में तरावीह का, मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि तीन दिन से कम में ख़त्म करने वाला तदब्बुर नहीं कर सकता। इसी वजह से इब्ने हज़म रह० वग़ैरह ने तीन दिन से कम में ख़त्म को हराम फ़र्माया है। बन्दे के नज़दीक यह हदीस शरीफ़ ब-एतबार अक्सर अफ़राद के है, इसलिए कि सहाबा की एक जमाअत से इससे कम में पढ़ना भी साबित है। इसी तरह ज़्यादती में भी जम्हूर के नज़दीक तहदीद नहीं, जितने अय्याम में बसहूलत हो सके, कलाम मजीद ख़त्म करे, मगर बाज़ उलमा का मज़हब है कि चालीस दिन से ज़ायद एक क़ुरआन शरीफ़ में ख़र्च न हों, जिस का हासिल यह है कि कम अज़ कम तीन पाव रोज़ाना पढ़ना ज़रूरी है। अगर किसी वजह से किसी दिन न पढ़ सके तो दूसरे दिन उसकी क़ज़ा करे, ग़रज़ चालीस दिन के अन्दर-अन्दर एक मर्तबा कलाम मजीद पूरा हो जावे, जम्हूर के नज़दीक अगरचे यह ज़रूरी नहीं, मगर जब बाज़ उलमा का मज़हब है तो एहतियात इसमें है कि इससे कम न हो, नीज़ बाज़ अहादीस से इसकी ताईद भी होती है। साहबे मज्मा रह० ने एक हदीस नक़्ल की है-

مَنْ قَرَأَ الْقُرْاٰنَ فِيْ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً فَقَدْ عَذَبَ

जिस शख़्स ने क़ुरआन शरीफ़ चालीस रात में ख़त्म किया, उसने बहुत देर की।

बाज़ उलमा का फ़त्वा है कि हर महीने में एक ख़त्म करना चाहिए और बेहतर यह है कि सात दिन में एक कलाम मजीद ख़त्म करे कि सहाबा रज़ि० का मामूल आम्मतन यही नक़्ल किया जाता है। जुमा के रोज़ शुरू करे और सात रोज़ में एक मंज़िल रोज़ाना करके पंजशंबा[1] के रोज़ ख़त्म करे।

---

1. जुमेरात (बृहस्पति),

इमाम साहब रह० का मक़ूला पहले गुज़र चुका कि साल में दो मर्तबा ख़त्म करना क़ुरआन शरीफ़ का हक़ है, इसलिए इससे कम किसी तरह न होना चाहिए।

एक हदीस में वारिद है कि कलाम पाक का ख़त्म अगर दिन के शुरू में हो तो तमाम दिन और रात के शुरू में हो तो तमाम रात मलाइका उसके लिए रहमत की दुआएं करते हैं। इससे बाज़ मशाइख़ ने इस्तिंबात फ़र्माया है कि गर्मी के अय्याम में दिन के इब्तिदा में ख़त्म करे और मौसमे सरमा में इब्तिदाई शब में, ताकि बहुत-सा वक़्त मलाइका की दुआ का मयस्सर हो।

۳۴-عَنْ سَعِيْدِ بْنِ سُلَيْمٍ مُرْسَلًا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اَعْظَمَ مَنْزِلَةً عِنْدَ اللّٰهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْقُرْاٰنِ لَا نَبِيٌّ وَّلَا مَلَكٌ وَّلَا غَيْرُهٗ - (قال العراقى رواه عبد الملك بن حبيب كذا فى شرح الاحياء)

34. 'सईद बिन सुलैम रज़ि० हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि क़यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक कलाम पाक से बढ़कर कोई सिफ़ारिश करने वाला न होगा, न कोई नबी, न फ़रिश्ता वग़ैरह।'

कलामुल्लाह शरीफ़ का शफ़ी और इस दर्जे का शफ़ी होना जिसकी शफ़ाअत मक़्बूल है और भी मुतअद्दद रिवायत से मालूम हो चुका। हक़ तआला[1] शानुहू अपने फ़ज़्ल से मेरे और तुम्हारे लिए उसको शफ़ी बना दे, न कि फ़रीक़े मुख़ालिफ़ और मुद्दई ल आली मस्नूअः[2] में बज़्ज़ार की रिवायत से नक़्ल किया है और वज़अ का हुक्म भी उस पर नहीं लगाया कि जब आदमी मरता है, तो उस के घर के लोग तज्हीज़ व तक्फ़ीन में मश्ग़ूल होते हैं और उसके सिरहाने निहायत हसीन और जमील सूरत में एक शख़्स होता है, जब कफ़न दिया जाता है, तो वह शख़्स कफ़न के और सीने के दर्मियान होता है, जब दफ़न करने के बाद लोग लौटते हैं और मुन्किर नकीर आते हैं, तो वह उस शख़्स को अलाहिदा करना चाहते हैं कि सवाल यकसूई में करें, मगर यह कहता है कि यह मेरा साथी है, मेरा दोस्त है, मैं किसी हाल में भी इसको तंहा नहीं छोड़ सकता। तुम सवालात के अगर मामूर हो तो अपना काम करो, मैं उस वक़्त तक उस से जुदा नहीं हो सकता कि जन्नत में दाख़िल कराऊं। इसके बाद

---

1. किताब का नाम, 2. लम्बा होने के डर से,

वह अपने साथी की तरफ मुतवज्जह होकर कहता है कि मैं ही वह क़ुरआन हूं, जिसको तू कभी बुलंद पढ़ता था और कभी आहिस्ता, तू बे-फ़िक्र रह। मुन्किर नकीर के सवालात के बाद तुझे कोई ग़म नहीं है। इसके बाद जब वह अपने सवालात से फ़ारिग़ हो जाते है तो यह मला-ए-आला से बिस्तर वग़ैरह का इंतिज़ाम करता है, जो रेशम का होता है और उसके दर्मियान मुश्क भरा हुआ होता है। हक़ तआला अपने फ़ज़्ल से मुझे भी नसीब फ़र्मावें और तुम्हें भी।

यह हदीस बड़े फ़ज़ाइल पर शामिल है, जिस को ततवील,[2] के ख़ौफ से मुख़्तसर कर दिया।

٣٥ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ قَرَأَ الْقُرْاٰنَ فَقَدِ اسْتَدْرَجَ النُّبُوَّةَ بَيْنَ جَنْبَيْهِ غَيْرَ اَنَّهٗ لَا يُوْحٰى اِلَيْهِ لَا يَنْبَغِيْ لِصَاحِبِ الْقُرْاٰنِ اَنْ يَّجِدَ مَعَ مَنْ وَّجَدَ وَلَا يَجْهَلَ مَعَ مَنْ جَهِلَ وَفِيْ جَوْفِهٖ كَلَامُ اللّٰهِ. (رواه الحاكم وقال صحيح الاسناد)

35. 'अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक्ल किया है कि जिस शख़्स ने कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ा, उसने उलूमे नुबूवत को अपनी पसलियों के दर्मियान ले लिया, गो उसकी तरफ वही नहीं भेजी जाती। हामिले क़ुरआन के लिए मुनासिब नहीं कि ग़ुस्सा करने वालों के साथ ग़ुस्सा करे या जाहिलों के साथ जिहालत करे, हालांकि उसके पेट में अल्लाह का कलाम है।'

चूंकि वही का सिलसिला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद ख़त्म हो गया, इसलिए वही तो अब नहीं आ सकती, लेकिन चूंकि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का कलाम पाक है, इसलिए इल्मे नुबुव्वत होने में क्या ताम्मुल[1] है और जब कोई शख़्स उलूमे नुबुव्वत से नवाज़ा जाए, तो निहायत ही ज़रूरी है कि उस के मुनासिब बेहतरीन अख़्लाक़ पैदा करे और बुरे अख़्लाक़ से एहतराज़ करे।[2]

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० कहते हैं कि हाफ़िज़े क़ुरआन इस्लाम का झंडा उठाने वाला है, इसलिए मुनासिब नहीं कि लह्व व लअिब[3] में लगने वालों में लग जावे या ग़ाफ़िलीन में शरीक हो जावे या बेकार लोगों में दाख़िल हो जावे।

---

1. रुकावट, झिझक, 2. बचे, 3. खेल - तमाशा,

(٣٦) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةٌ لَا يَهُوْلُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَلَا يَنَالُهُمُ الْحِسَابُ هُمْ عَلٰى كَثِيْبٍ مِّنْ مِّسْكٍ حَتّٰى يُفْرَغَ مِنْ حِسَابِ الْخَلَائِقِ رَجُلٌ قَرَأَ الْقُرْاٰنَ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَاَمَّ بِهٖ قَوْمًا وَهُمْ بِهٖ رَاضُوْنَ وَدَاعٍ يَدْعُوْا اِلَى الصَّلَوٰتِ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَرَجُلٌ اَحْسَنَ فِيْمَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ رَبِّهٖ وَفِيْمَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ مَوَالِيْهِ (رواه الطبراني في المعاجم الثلاثة)

36. इब्ने उमर रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि तीन आदमी ऐसे हैं, जिन को क़यामत का ख़ौफ़ दामनगीर न होगा, न उन को हिसाब -किताब देना पड़ेगा, इतने मख़्लूक़ अपने हिसाब-किताब से फ़ारिग़ हों, वह मुश्क के टीलों पर तफ़रीह करेंगे-एक वह शख़्स, जिसने अल्लाह के वास्ते क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा और इमामत की, इस तरह पर मुक़्तदी उससे राज़ी रहे। दूसरा वह शख़्स, जो लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता हो, सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते। तीसरा वह शख़्स, जो अपने मालिक से भी अच्छा मामला रखे और अपने मातहतों से भी।

क़यामत की सख़्ती, उसकी दह्शत, उसका ख़ौफ़, उसकी मुसीबतें, और तकालीफ़ ऐसी नहीं कि किसी मुसलमान का दिल उससे ख़ाली हो या बे-ख़बर हो, उस दिन में किसी बात की वजह से बे-फ़िक्री नसीब हो जावे, यह भी लाखों नेमतों से बढ़ कर और करोड़ों राहतों से ग़ुनीमत[1] है। फिर उसके साथ अगर तफ़रीह व तनअ़ुम[2] भी नसीब हो जावे तो ख़ुशा नसीब उस शख़्स के, जिसको यह मयस्सर हो और बरबादी व ख़ुसरान[3] है उन बे-हिसों के लिए, जो इसको लग्व, बेकार और इज़ाअते वक़्त[4] समझते हैं।

मुअ़जमे कबीर में इस हदीस शरीफ़ के शुरू में रिवायत करने वाले सहाबी अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से नक़्ल किया है कि अगर मैंने इस हदीस को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक मर्तबा और एक मर्तबा और एक मर्तबा ग़रज़ सात दफ़ा यह लफ़्ज़ कहा, यानी अगर सात मर्तबा न सुना होता, तो कभी नक़्ल न करता।

---

1. ग़नीमत है, 2. दिल बहलावे और ऐश की चीज़ें,
3. घाटा, टोटा, 4. वक़्त की बरबादी,

(٣٧) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا أَبَا ذَرٍّ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَتَعَلَّمَ آيَةً مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكَ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ وَلَأَنْ تَغْدُوَ فَتَتَعَلَّمَ بَابًا مِّنَ الْعِلْمِ عُمِلَ بِهٖ أَوْ لَمْ يُعْمَلْ بِهٖ خَيْرٌ مِّنْ أَنْ تُصَلِّيَ أَلْفَ رَكْعَةٍ (رواه ابن ماجه باسناد حسن)

37. अबूज़र रज़ि कहते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि ऐ अबूज़र! अगर तू सुबह को जाकर एक आयत कलामुल्लाह शरीफ़ की सीख ले, तो नवाफ़िल की सौ रक्अत से अफ़्ज़ल है और अगर एक बाब इल्म का सीख ले, ख़्वाह उस वक़्त वह मामूल बिही हो या न हो, तो हज़ार रक्आत नफ़्ल पढ़ने से बहतर है।

बहुत -सी अहादीस इस मज़्मून में वारिद हैं कि इल्म का सीखना इबादत से अफ़ज़ल है। फ़ज़ाइले इल्म में जिस क़दर रिवायात वारिद हुई हैं, उनका अहाता बिल् ख़ुसूस इस मुख़्तसर रिसाले में दुश्वार है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आलिम की आबिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है, जैसा कि मेरी फ़ज़ीलत तुम में से अद्ना शख़्स पर।[1] एक जगह इर्शाद है कि शैतान पर एक फ़क़ीह हज़ार आबिदों से ज़्यादा सख़्त है।

٣٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ عَشْرَ آيَاتٍ فِي لَيْلَةٍ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ (رواه الحاكم وقال صحيح على شرط مسلم)

38. अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया है कि जो शख़्स दस आयतों की तिलावत किसी रात में करे, वह उस रात में ग़ाफ़िलीन में शुमार नहीं होगा।

दस आयात की तिलावत से, जिसके पढ़ने में चन्द मिनट सर्फ़ होते हैं, तमाम रात की ग़फ़लत से निकल जाता है, इससे बढ़कर और क्या फ़ज़ीलत होगी।

٣٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ حَافَظَ عَلٰى هٰؤُلَاءِ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ وَمَنْ قَرَأَ فِي لَيْلَةٍ مِائَةَ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِيْنَ (رواه ابن خزيمة في صحيحه والحاكم وقال صحيح على شرطهما)

---

1. यह हदीस तिर्मिज़ी में हज़रत अबू उमामा से रिवायत की गयी है,

39. अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स इन पांचों फ़र्ज़ नमाज़ों पर मुदावमत[1] करे, वह ग़ाफ़िलीन से नहीं लिखा जावेगा। जो शख़्स सौ आयात की तिलावत किसी रात में करे वह उस रात में क़ानितीन से लिखा जावेगा।

हसन बसरी रह० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि जो शख़्स सौ आयतें रात को पढ़े, कलामुल्लाह शरीफ़ के मुतालबे से बच जावेगा और जो दो सौ पढ़ ले, तो उसको रात भर की इबादत का सवाब मिलेगा और जो पांच सौ से हज़ार तक पढ़ ले, उसके लिए एक क़िन्तार है। सहाबा रज़ि० ने पूछा कि क़िन्तार क्या होता है ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि बारह हज़ार के बराबर (दिरहम मुराद हों या दीनार)।

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ نَزَلَ جِبْرَئِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاَخْبَرَهٗ اَنَّهٗ سَتَكُوْنُ فِتَنٌ قَالَ فَمَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا يَا جِبْرَئِيْلُ
قَالَ كِتَابُ اللّٰهِ۔ رواه رزين كذا فى الرحمة المهداة

40. इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी कि बहुत से फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि उनसे ख़लासी की क्या सूरत है ? उन्होंने कहा, क़ुरआन शरीफ़।

किताबुलाह पर अमल भी फ़ित्नों से बचने का कफ़ील है और उसकी तिलावत की बरकत भी फ़ित्नों से ख़लासी का सबब है। हदीस 22 में गुज़र चुका है कि जिस घर में क़ुरआन पाक की तिलावत की जाती है, सकीना और रहमत उस घर में नाज़िल होती है और शयातीन उस घर से निकल जाते हैं।

फ़ित्नों से मुराद ख़ुरूजे दज्जाल, फ़ित्ना-ए-तातार वग़ैरह उलमा ने बताये हैं।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से भी एक तवील रिवायत में हदीसे बाला का मज़्मून वारिद हुआ है कि हज़रत अली रज़ि० की रिवायत में वारिद है कि हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से कहा कि हक़ तआला शानुहू तुमको अपने

1. हमेशा पाबन्दी से पढ़े।

कलाम के पढ़ने का हुक्म फ़र्माता है और उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे कोई क़ौम अपने किले में महफ़ूज़ हो और उसकी तरफ़ कोई दुश्मन मुतवज्जह हो कि जिस जानिब से भी वह हमला करना चाहे, उसी जानिब में अल्लाह के कलाम को उस का मुहाफ़िज़ पावेगा और वह उस दुश्मन को दफ़ा कर देगा।

ख़ात्मा

(यानी कुछ और रिवायतें चालीस से ऊपर जो इस मुक़ाम के मुनासिब है।)

1 عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ مُرْسَلًا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ (رواه الدارمي والبيهقي في شعب الايمان)

1. 'अब्दुल मलिक बिन उमैर रज़ि० हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि सूरः फ़ातिहा में हर बीमारी से शिफ़ा है।'

ख़ात्मा में बाज़ ऐसी सूरतों के फ़ज़ाइल हैं जो पढ़ने में बहुत मुख़्तसर, लेकिन फ़ज़ाइल में बहुत बढ़ी हुई हैं और इसी तरह दो एक ऐसे ख़ास अम्र हैं कि जिन पर तंबीह क़ुरआन पढ़ने वाले के लिए ज़रूरी है।

सूरः फ़ातिहा के फ़ज़ाइल बहुत सी रिवायात में वारिद हुए है।एक हदीस में आया है कि एक सहाबी रज़ि० नमाज़ पढ़ते थे। हुज़ूर सल्ल० ने उनको बुलाया, वह नमाज़ की वजह से जवाब न दे सके। जब फ़ारिग़ होकर हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मेरे पुकारने पर जवाब क्यों नहीं दिया। उन्होंने नमाज़ का उज़्र किया। हुज़ूर सल्ल०ने फ़र्माया कि क़ुरआन शरीफ़ की आयत में नहीं पढ़ा-

'ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल की पुकार का जवाब दो, जब भी वह तुमको बुलावें।' फिर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तुझे क़ुरआन की सब से बड़ी सूरत यानी सबसे अफ़ज़ल बतलाऊंगा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि वह 'अल हम्दु की' सात आयतें हैं, यह सब्अे मसानी हैं और क़ुरआन अज़ीम।

बाज़ सूफ़िया से मंक़ूल है कि जो कुछ पहली किताबों में था, वह सब कलाम पाक में आ गया और जो कलाम पाक में है, वह सब सूरः फ़ातिहा में आ गया और जो कुछ फ़ातिहा में है, वह बिस्मिल्लाह में आ गया और जो बिस्मिल्लाह में है वह

उसके 'बि' में आ गया। इसकी शरह बतलाते हैं कि 'बि' के माने इस जगह मिलाने के हैं और मक्सूद सब चीज से बन्दे का अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ मिला देना है। बाज़ ने इसके आगे इज़ाफ़ा किया है कि 'बि' में जो कुछ है, वह उसके नुक्ते में आ गया, यानी वह्दानियत कि नुक्ता इस्तिलाह में कहते हैं उस चीज को जिसकी तक़्सीम न हो सकती हो।

बाज़ मशाइख़ से मंक़ूल है 'इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्ईन' में तमाम मक़ासिद दुनियवी व दीनवी आ गये। एक दूसरी रिवायत में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस जैसी सूर: नाज़िल नहीं हुई, न तौरात में, न इंजील में, न ज़बूर में, न बक़ीया क़ुरआन पाक में।

मशाइख़ ने लिखा है कि अगर सूर: फ़ातिहा को ईमान और यक़ीन के साथ पढ़े तो हर बीमारी से शिफ़ा होती है, दीनी हो या दुनियवी, ज़ाहिरी हो या बातिनी, लिख कर लटकाना और चाटना भी अम्राज के लिए नाफ़ेअ है।

सिहाह की किताबों में वारिद है कि सहाबा रज़ि० ने सांप-बिच्छू के काटे हुओं पर और मिरगी वालों पर और दीवानों पर सूर: फ़ातिहा पढ़ कर दम किया और हुज़ूर सल्ल० ने उसको जायज़ भी रखा। नीज़ एक रिवायत में आया है कि साइब बिन यज़ीद पर हुज़ूर सल्ल० ने इस सूर: को दम फ़र्माया और यह सूर: पढ़ कर लुआबे[1] दहन दर्द की जगह लगाया और एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स सोने के इरादे से लेटे और सूर: फ़ातिहा और क़ुल हुवल्लाहु अहद० पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले, मौत के अलावा हर बला से अम्न पावे।

एक रिवायत में आया है कि सूर: फ़ातिहा सवाब में दो तिहाई क़ुरआन के बराबर है।

एक रिवायत में आया है कि अर्श के ख़ास ख़ज़ाने से मुझ को चार चीजें मिली है कि और कोई चीज उस ख़ज़ाने से किसी को नहीं मिली-

(1) सूर: फ़ातिहा, (2) आयतुल कुर्सी, (3) सूर: बकर: की आख़िरी आयत और (4) सूर: कौसर।

एक रिवायत में आया है कि हसन बसरी रह० हुज़ूर सल्ल० से नक़्ल करते

---

1. होंठ की राल,

हैं कि जिसने सूर: फ़ातिहा को पढ़ा, उसने गोया तौरात, इंजील ज़बूर और क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ा।

एक रिवायत में आया है कि इब्लीस को अपने ऊपर नौहा और ज़ारी और सर पर ख़ाक डालने की चार मर्तबा नौबत आयी–

अव्वल, जबकि उस पर लानत हुई,

दूसरे, जबकि उस को आसमान से ज़मीन पर डाला गया,

तीसरे, जबकि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत मिली,

चौथे, जबकि सूर: फ़ातिहा नाज़िल हुई।

शाबी रह० से रिवायत है कि एक शख़्स उनके पास आया और दर्दे गुर्दा की शिकायत की। शाबी रह० ने कहा कि 'असासुल क़ुरआन'[1] पढ़ कर दर्द की जगह दम कर, उसने पूछा कि 'आसुल क़ुरआन'[1] क्या है। शाबी रह० ने कहा कि सूर: फ़ातिहा।

मशाइख़ के 'आमाले मुजर्रब' में लिखा है कि सूर: फ़ातिहा 'इस्मे आज़म' है, हर मतलब के लिए पढ़नी चाहिए और इसके दो तरीक़े हैं–

एक, यह कि सुबह की सुन्नत फ़र्ज के दर्मियान 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रही' म के 'मीम'[2] के साथ अलमदुलिल्लाह का लाम मिला कर इक्तालीस बार चालीस दिन तक पढ़े जो मतलब होगा, इन्शा अल्लाह तआला हासिल होगा। और अगर किसी मरीज या जादू किए हुए के लिए ज़रूरत हो तो पानी पर दम कर के उसको पिलावे।

दूसरे, यह कि नौचन्दी इतवार को सुबह की सुन्नत और फ़र्ज के दर्मियान बिला क़ैद 'मीम' मिलाने के सत्तर बार पढ़े और उस के बाद हर रोज़ उसी वक़्त पढ़े और दस-दस बार कम करता जावे, यहां तक कि हफ़्ता ख़त्म हो जावे, अव्वल महीने में अगर मतलब पूरा हो जावे तो फ़बिहा[3], वरना दूसरे-तीसरे महीनें में इसी तरह करे। नीज इस सूर: का चीनी के बर्तन पर गुलाब और मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखकर और धो कर पिलाना चालीस रोज तक अम्राज़े मुज़्मना[4] के लिए मुजर्रब[5] है। नीज दांतों के दर्द सर के दर्द और पेट के दर्द के लिए सात बार पढ़ कर दम

---

1. असल जड़, 2. यानी ऊपर जो बिस्मिल्लाह की मीम को 'अल-हम्दु' से मिलाने को कहा था उस के बग़ैर, 3. तो बेहतर, 4. यानी पुरानी बीमारियां, 5. तर्जुबा किया गया,

करना मुजर्रब है. यह सब मज़्मून 'मज़ाहिरे हक़' से मुख़्तसर तौर पर नक़्ल किया गया।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० एक मर्तबा तशरीफ़ फ़र्मा थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि आसमान का एक दरवाज़ा आज खुला है, जो आज से क़ब्ल कभी नहीं खुला था फिर उसमें से एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि यह एक फ़रिशता नाज़िल हुआ जो आज से क़ब्ल कभी नाज़िल नहीं हुआ था, फिर उस फ़रिश्ते ने अर्ज़ किया कि दो नूरों की बशारत लीजिए जो आप से क़ब्ल किसी को नहीं दिए गए-एक सूरः फ़ातिहा दूसरा ख़ात्मा सूरः बक़रः यानी सूरः बक़रः का आख़िरी रुकूअ उनको नूर इसलिए फ़र्माया कि क़यामत के दिन अपने पढ़ने वाले के आगे-आगे चलेंगे।

٢ - عَنْ عَطَاءِ بْنِ اَبِىْ رَبَاحٍؒ قَالَ بَلَغَنِىْ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ قَرَأَ يٰسٓ فِىْ صَدْرِ النَّهَارِ قُضِيَتْ حَوَائِجُهٗ (رواه الدارمى)

2. अता बिन अबी रिबाह रह० कहते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद पहुंचा है कि जो शख़्स सूरः यासीन को शुरू दिन में पढ़े, उस की तमाम दिन की हवाइज[1] पूरी हो जाएं।

अहादीस में सूरः यासीन के भी बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं। एक रिवायत में वारिद हुआ है कि हर चीज के लिए एक दिल हुआ करता है। क़ुरआन शरीफ़ का दिल सूरः यासीन है, जो शख़्स सूरः यासीन पढ़ता है, हक़ तआला शानुहू उस के लिए दस क़ुरआनों का सवाब लिखता है।

एक रिवायत में आता है कि हक़ तआला शानुहू ने सुरः त्वाहा और सूरः यासीन को आसमान और ज़मीन को पैदा करने से हजार वर्ष पहले पढ़ा। जब फ़रिश्तों ने सुना तो कहने लगे कि ख़ुशहाली है, उस उम्मत के लिए, जिस पर यह क़ुरआन उतारा जाएगा और ख़ुशहाली है उन दिलों के लिए, जो उसको उठाएंगे यानी याद करेंगे और ख़ुशहाली है उन ज़बानों के लिए जो इसको तिलावत करेंगी।

एक हदीस में है कि जो शख़्स सूरः यासीन को सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा के

---

1. ज़रूरतें, 2. सम्मिलित,

वास्ते, पढ़े उसके पहले के सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। पस इस सूरः को अपने मुर्दों पर पढ़ा करो। एक रिवायत में आया है कि सूरः यासीन का नाम तौरात में मुअम्मा है कि अपने पढ़ने वाले के लिए दुनियां व आख़िरत की भलाइयों पर मुश्तमिल है और इससे दुनियां व आख़िरत की मुसीबत को दूर करती है और आख़िरत की हौल को दूर करती है।

इस सूरः का नाम राफ़िअः, ख़ाफ़िजा भी है यानी मोमिनों के रुत्बे बुलंद करने वाली और काफ़िरों को पस्त करने वाली।

एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरा दिल चाहता है कि सूरः यासीन मेरे हर उम्मती के दिल में हो। एक रिवायत में है कि जिसने सूरः यासीन को हर रात में पढ़ा, फिर मर गया तो शहीद मरा। एक रिवायत में है कि जो सूरः यासीन को पढ़ता है, उसकी मग़्फ़िरत की जाती है और जो भूख की हालत में पढ़ता है, वह सेर हो जाता है और जो रास्ता गुम हो जाने की वजह से पढ़े, वह रास्ता पा लेता है और जो शख़्स जानवर के गुम हो जाने की वजह से पढ़ता है, वह पा लेता है जो ऐसी हालत में पढ़े कि खाना कम हो जाने का ख़ौफ़ हो, तो वह खाना काफ़ी हो जाता है और जो ऐसे शख़्स के पास पढ़े, जो नज़अ[1] में हो, तो उस पर नज़अ में आसानी हो जाती है और जो ऐसी औरत पर पढ़े, जिस के बच्चा होने में दुश्वारी हो रही हो, उसके लिए बच्चा जनने में सहूलत होती है।

मुकरी रह० कहते हैं कि जब बादशाह या दुश्मन का ख़ौफ़ हो और उस के लिए सूरः यासीन पढ़े, तो वह ख़ौफ़ जाता रहता है। एक रिवायत में आया है कि जिसने सूरः यासीन और सूरः वस्साफ़्फ़ात जुमा के दिन पढ़ी और फिर अल्लाह से दुआ की, उसकी दुआ पूरी होती है। इसका भी अक्सर हिस्सा मज़ाहिरे हक़ में मंक़ूल है, मगर मशाइख़े हदीस को बाज़ रिवायात की सेहत में कलाम है।

(٣) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ سُوْرَةَ الْوَاقِعَةِ فِيْ كُلِّ لَيْلَةٍ لَمْ تُصِبْهُ فَاقَةٌ أَبَدًا وَكَانَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ يَأْمُرُ بَنَاتِهِ يَقْرَأْنَ بِهَا كُلَّ لَيْلَةٍ (رواه البيهقي في شعب)

3. इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो

1. सांस निकलने की आख़िरी घड़ी,

शख़्स हर रात को सूर: वाक़िआ पढ़े, उसको कभी फ़ाक़ा नहीं होगा और इब्ने मस्ऊद रज़ि० अपनी बेटियों को हुक्म फ़र्माया करते थे कि हर शब में इस सूर: को पढ़े।

सूर: वाक़िअ: के फ़ज़ाइल भी मुतअद्दद रिवायात में वारिद हुए हैं। एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स सूर: हदीद और सूर: वाक़िअ: और सूर: रहमान पढ़ता है वह जन्नतुल फ़िर्दौस के रहने वालों में पुकारा जाता है। एक रिवायत में है कि सूर: वाक़िअ सूरतुलग़िना है, इसको पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ। एक रिवायत में है कि इसको अपनी बीवियों को सिखाओ और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी इसके पढ़ने की ताकीद मंकूल है, मगर बहुत ही पस्त ख़्याली है कि चार पैसे के लिए उसको पढ़ा जावे, अल-बत्ता अगर ग़िना-ए-क़ल्ब और आख़िरत की नीयत से पढ़े तो दुनियां ख़ुद-बख़ुद हाथ जोड़ कर हाज़िर होगी।

(۴) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ سُوْرَةً فِی الْقُرْاٰنِ ثَلٰثُوْنَ اٰیَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتّٰی غُفِرَلَهٗ وَهِیَ تَبَارَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ. (رواه احمد وابوداؤد والنسائی وابن ماجه والحاکم وصححه وابن حبان فی صحیحه)

4. अबूहुरैरह रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि क़ुरआन शरीफ़ में एक सूर: तीस आयात की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती है, यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत करावे, वह सूर: तबारकल्लज़ी है।

सूर: तबारकल्लज़ी के मुताल्लिक़ भी एक रिवायत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद आया है कि मेरा दिल चाहता है कि यह सूर: हर मोमिन के दिल में हो। एक रिवायत में है कि जिसने तबारकल्लज़ी और अलिफ़-लाम-मीम सज्दा को मग़रिब और इशा के दर्मियान पढ़ा, गोया उसने लैलतुलक़द्र में क़याम किया। एक रिवायत में है कि जिसने इन दोनों सूरतों को पढ़ा, उसके लिए सत्तर नेकियां लिखी जाती हैं और सत्तर बुराइयां दूर की जाती हैं। एक रिवायत में है कि जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा, उसके लिए इबादत लैलतुलक़द्र के बराबर सवाब लिखा जाता है। (क़ज़ा फ़िल मज़ाहिर)

तिर्मिज़ी रह० ने इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़्ल किया है कि बाज़ सहाबा रज़ि० ने एक जगह ख़ेमा लगाया, उनको इल्म न था कि वहां क़ब्र है, अचानक इन ख़ेमा

लगाने वालों ने इस जगह किसी को सूरः तबारकल्लज़ी पढ़ते हुए सुना तो हुज़ूर सल्ल० से आकर अर्ज किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि यह सूरः अल्लाह के अज़ाब से रोकने वाली है और निजात देने वाली है। हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त तक सोते न थे जब तक अलिफ़-लाम-मीम सज्दा और सूरः तबारकल्लज़ी न पढ़ लेते थे।

ख़ालिद बिन मादान रज़ि० कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है, कि एक शख़्स बड़ा गुनाहगार था और सूरः सज्दा पढ़ा करता था, इसके अलावा और कुछ नहीं पढ़ता था। इस सूरः ने अपने पर उस शख़्स पर फैला दिए कि ऐ रब ! यह शख़्स मेरी बहुत तिलावत करता था, उसकी शफ़ाअत क़ुबूल की गयी और हुक्म हो गया कि हर ख़ता के बदले एक नेकी दी जाए। ख़ालिद बिन मादान रह० यह भी कहते हैं कि यह सूरः अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से क़ब्र में झगड़ती है और कहती है कि अगर मैं तेरी किताब में से हूं, तो मेरी शफ़ाअत क़ुबूल कर, वरना मुझे अपनी किताब से मिटा दे और बमंज़िला- परिंदे के बन जाती है और अपने पर मय्यत पर फैला देती है और उसपर अज़ाबे क़ब्र होने में मानेअ होती है और यही सारा मज़्मून वह तबारकल्लज़ी के बारे में भी कहते हैं। ख़ालिद बिन मादान रज़ि० उस वक़्त तक न सोते थे, जब तक दोनों सूरतें न पढ़ लेते।

ताऊस रज़ि० कहते हैं कि यह दोनों सूरतें तमाम क़ुरआन की हर सूरः पर साठ नेकियां ज़्यादा रखती हैं। अज़ाबे क़ब्र कोई मामूली चीज़ नहीं हर शख़्स को मरने के बाद सब से पहले क़ब्र से साबक़ा पड़ता है। हज़रत उस्मान रज़ि० जब किसी क़ब्र पर खड़े होते तो इस क़दर रोते कि रीश[1] मुबारक तर हो जाती। किसी ने पूछा आप जन्नत व जहन्नम के तज़्किरे से भी इतना नहीं रोते, जितना कि क़ब्र से। आप ने फ़र्माया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि क़ब्र मनाज़िले आख़िरत में सबसे पहली मंज़िल है। जो शख़्स इस के अज़ाब से निजात पा ले, आइन्दा के वाक़िआत उसके लिए सह्ल होते हैं और अगर इससे निजात न पाये, तो आने वाले हवादिस इससे सख़्त होते हैं, नीज़ मैंने यह भी सुना है कि क़ब्र से ज़्यादा मुतवह्हश[2] कोई मंज़र नहीं।[3]

अल्लाहुम्माहफ़ज़ना मिन्हु बिफ़ज़्लि क व मिन्क

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ بِفَضْلِكَ وَمَنِّكَ۔

---

1. मुबारक दाढ़ी, 2. भयानक, 3. जमउल फवाईद।

(۵) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ اَنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَيُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ قَالَ الْحَالُّ الْمُرْتَحِلُ قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الْحَالُّ الْمُرْتَحِلُ قَالَ صَاحِبُ الْقُرْاٰنِ يَضْرِبُ مِنْ اَوَّلِهٖ حَتّٰى يَبْلُغَ اٰخِرَهٗ وَمِنْ اٰخِرِهٖ حَتّٰى يَبْلُغَ اَوَّلَهٗ كُلَّمَا حَلَّ ارْتَحَلَ (رواه الترمذی كذا فی الرحمة والحاكم وقال تفرد به صالح المری وهو من زهاد اهل البصرة الا ان الشيخين لم يخرجاه وقال الذهبی صالح متروك قلت وهو من رواة ابی داؤد والترمذی)

5. इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा कि बेहतरीन आमाल में से कौन-सा अमल है ? आपने इर्शाद फ़र्माया कि हाल मुर्तहल। लोगों ने पूछा कि हाल मुर्तहल क्या चीज है ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह साहिबे क़ुरआन हैं जो अव्वल से चले हत्ताकि अख़ीर तक पहुंचे, और अख़ीर के बाद फिर अव्वल पर पहुंचे, वहां ठहरे, फिर आगे चल दे।

हाल कहते हैं, मंजिल पर आने वाले को और मुर्तहल कूच करने वाले को यानी यह कि कलाम पाक ख़त्म हो जाए तो फिर अज़ सरे नौ शुरू कर ले, यह नहीं कि बस अब ख़त्म हो गया, दोबारा देखा जाएगा।

'कंज़ुल उम्माल' की एक रिवायत में इसकी शरह वारिद हुई 'अल-ख़ातिम' 'अल-मुफ़्तिह' – ख़त्म करने वाला और साथ ही शुरू करने वाला यानी एक क़ुरआन ख़त्म करने के बाद साथ ही दूसरा शुरू कर ले। इसी से ग़ालिबन वह आदत माख़ूज़ है, जो हमारे दयार में मुतआरफ़[1] है। ख़त्म क़ुरआन शरीफ़ के बाद 'मुफ़्लिहून' तक पढ़ा जाता है, मगर अब लोग इसी को मुस्तकिल अदब समझते हैं और फिर पूरा करने का एहतमाम नहीं करते। हांलाकि ऐसा नहीं, बल्कि दर असल मअन[2] दूसरा क़ुरआन शरीफ़ शुरू करना बज़ाहिर मक़्सूद है जिसको पूरा भी करना चाहिए।

शरह एह्या में और अल्लामा सुयूति रह० ने 'इत्क़ान' में ब-रिवायत दारमी नक़्ल किया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' पढ़ा करते तो सूरः बक़र से 'मुफ़्लिहून' तक साथ ही पढ़ते और इसके बाद ख़त्म क़ुरआन की दुआ फ़र्माते थे।

۶- عَنْ اَبِیْ مُوْسَى الْاَشْعَرِیِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعَاهَدُوا الْقُرْاٰنَ فَوَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ لَهُوَ اَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنَ الْاِبِلِ فِیْ عُقُلِهَا. (رواه البخاری ومسلم)

---

1. जाना पहचाना, 2. साथ-साथ।

6. अबूमूसा अश्अरी रज़ि० ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि क़ुरआन शरीफ़ की ख़बरगीरी किया करो। क़सम है उस ज़ात पाक की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि क़ुरआन पाक जल्द निकल जाने वाला है सीनों से, बनिस्बत ऊंट के अपनी रस्सियों से।

यानी आदमी अगर जानवर की हिफ़ाज़त से ग़ाफ़िल हो जावे और वह रस्सी से निकल जावे जो भाग जावेगा। इसी तरह कलाम पाक की अगर हिफ़ाज़त न की जावे तो वह भी याद नहीं रहेगा और भूल जावेगा और असल बात यह है कि कलामुल्लाह शरीफ़ का हिफ़्ज़ याद हो जाना दर हक़ीक़त यह ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ का एक ख़ुला हुआ मोजज़ा है, वरना इससे आधी तिहाई मिक्दार की किताब भी याद होना मुश्किल ही नहीं, बल्कि क़रीब ब महाल है। इसी वजह से हक़ तआला शानुहू ने इसके याद हो जाने को सूरः क़मर में बतौर एहसान के ज़िक्र फ़र्माया और बार-बार इस पर तंबीह फ़र्मायी وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ

व लक़द यस्सर्नल क़ुरआ न लिज़्ज़िक्रि फ़ हल मिम्मुद्दकिर०

कि हमने कलाम पाक को हिफ़्ज़ करने के लिए सहल कर रखा है, कोई है हिफ़्ज़ करने वाला। साहबे जलालैन ने लिखा है कि इस्तिफ़्हाम[1] इस आयत में अम्र[2] के मानी में है, तो जिस चीज़ को हक़ तआला शानुहू बार-बार ताकीद से फ़र्मा रहे हों, उसको हम मुसलमान लग्व और हिमाक़त और बेकार इज़ाअते वक़्त[3] से ताबीर करते हों। इस हिमाक़त के बाद फिर भी हमारी तबाही के लिए किसी और चीज़ के इंतिज़ार की ज़रूरत बाक़ी है।

ताज्जुब की बात है कि हज़रत उज़ैर रज़ि० अगर अपनी याद से तौरात लिखा दें तो उस की वजह से अल्लाह के बेटे पुकारे जावें और मुसलमानों के लिए अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस लुत्फ़ व एह्सान को आम फ़र्मा रखा है, तो उसकी यह क़द्रदानी की जाए। फ़सयअ लमुल्लज़ी न ज़ ल मू अय्य मुन्क ल बिंय्य न्क़लिबून०

बिल्-जुम्ला यह महज़ हक़ तआला शानुहू का लुत्फ़ व इनाम है कि यह याद हो जाता है। इसके बाद अगर किसी शख़्स की तरफ़ से बे-तवज्जोही पायी जाती

1. सवाल करना, 2. हुक्म,
3. वक़्त का बरबाद करना,

है तो उस से भुला दिया जाता है। क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर भुला देने में बड़ी सख़्त वईदें आयी हैं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुझ पर उम्मत के गुनाह पेश किये गये, मैंने इससे बढ़ कर कोई गुनाह नहीं पाया कि कोई शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर भुला दे। दूसरी जगह इर्शाद है कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर भुला दे, क़यामत के दिन अल्लाह के दरबार मे कोढ़ी हाज़िर होगा।

'जमउल फ़वाइद' में रज़ीन की रिवायत से, आयाते ज़ेल को दलील बनाया है–

اِقْرَؤُا اِنْ شِئْتُمْ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِیْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا

इक़रऊ इन शिअ्‌ तुम का लरब्बि लि म हशर त नी अअ्‌ मा व क़द कुन तु बसीरा०

जो शख़्स हमारे ज़िक्र से ऐराज करता है[1], उसकी ज़िंदगी तंग कर देते हैं और क़यामत के रोज उसको अंधा उठाएंगे। वह अर्ज करेगा कि या अल्लाह ! मैं तो आंखों वाला था, मुझे अंधा क्यों कर दिया। इर्शाद होगा, इसलिए कि तेरे पास हमारी आयतें आयीं और तूने उनको भुला दिया, पस आज तू भी इसी तरह भुला दिया जावेगा यानी तेरी कोई इआनत[2] नहीं।

(٧) عَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ الْقُرْاٰنَ يَتَاَكَّلُ بِهِ النَّاسَ جَآءَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَوَجْهُهٗ عَظْمٌ لَيْسَ عَلَيْهِ لَحْمٌ (رواه البيهقي في شعب الايمان)

7. बुरैदा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स क़ुरआन पढ़े ताकि उस की वजह से खावे लोगों से, क़यामत के दिन वह ऐसी हालत में आएगा कि उसका चेहरा महज हड्डी होगा, जिस पर गोश्त न होगा।

यानी जो लोग क़ुरआन शरीफ़ को तलबे दुनियां की ग़रज से पढ़ते हैं, उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं और हममें अजमी व अरबी हर तरह के लोग हैं, जिस तरह पढ़ते हो, पढ़ते रहो। अंक़रीब एक जमाअत आने वाली है, जो क़ुरआन

---

1. मुंह फेरता है, 2. मदद,

शरीफ़ के हुरूफ़ को इस तरह सीधा करेंगे जिस तरह तीर सीधा किया जाता है यानी ख़ूब संवारेंगे। एक-एक हर्फ़ को घंटों दुरुस्त करेंगे और मख़ारिज की रिआयत में ख़ूब तकल्लुफ़ करेंगे और यह सब दुनियां के वास्ते होगा। आख़िरत से उन लोगों को कोई सरोकार न होगा। मक़्सद यह है कि महज़ ख़ुश-आवाज़ी बेकार है, जब कि उसमें इख़्लास न हो, महज़ दुनियां कमाने के वास्ते किया जावे।

चेहरे पर गोश्त न होने का मतलब यह है कि जब उसने अशरफ़ुल अश्या को ज़लील चीज़ कमाने का ज़रिया किया तो अशरफ़ुल आज़ा चेहरे को रौनक़ से महरूम कर दिया जाएगा। इम्रान बिन हसीन रज़ि० का एक वाइज़ पर गुज़र हुआ जो तिलावत के बाद लोगों से कुछ तलब कर रहा था। यह देख कर उन्होंने 'इन्ना लिल्लाह' पढ़ी और फ़र्माया कि मैंने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो शख़्स तिलावत करे, उसको जो मांगना हो अल्लाह से मांगे। अंकरीब ऐसे लोग आएंगे, जो पढ़ने के बाद लोगों से भीख मांगेंगे।

मशाइख़ से मंकूल है कि जो शख़्स इल्म के ज़रिए से दुनिया कमावे, उसकी मिसाल ऐसी है कि जूते को अपने रुख़्सार से साफ़ करे। इसमें शक नहीं कि जूता तो साफ़ हो जाएगा मगर चेहरे से साफ़ करना हिमाक़त की मुन्तहा है[1]। ऐसे ही लोगों के बारे में नाज़िल हुआ है-

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ.الآية

उलाइकल्लज़ी नश्त र वुज़्ज़ा ल त बिल हुदा०

(यही लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले में गुमराही ख़रीदी है। पस न उनकी तिजारत कुछ नफ़ा वाली है और न यह लोग हिदायत याफ़्ता[2] हैं)

उबई बिन काब रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक शख़्स को क़ुरआन शरीफ़ की एक सूरः पढ़ाई थी, उसने एक कमान मुझे हदिए के तौर से दी। मैंने हुज़ूर सल्ल० से इस का तज़्किरा किया तो हुज़ूरे सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जहन्नम की एक कमान तूने ले ली। इसी तरह का वाक़िआ उबादा बिन सामित रज़ि० ने अपने मुताल्लिक़ नक़्ल किया और हुज़ूर सल्ल० का जवाब यह नक़्ल किया और यह कि जहन्नम की

---

1. हद है, 2. हिदायत पाये हुए,

एक चिंगारी अपने मोढ़ों के दर्मियान लटका दी। दूसरी रिवायत में है कि अगर तू चाहे कि जहन्नम का एक तौक़ गले में डाले तो उसको क़ुबूल कर ले।

यहां पहुंच कर मैं उन हुफ़्फ़ाज़ की ख़िदमत में, जिनका मक़्सूद क़ुरआन शरीफ़ के मक्तबों से फ़क़त पैसा ही कमाना है, बड़े अदब से अर्ज करूंगा कि लिल्लाह! अपने मंसब और अपनी ज़िम्मेदारी का लिहाज कीजिए, जो लोग आपकी बद-नीयतों के हमले की वजह से कलाम मजीद पढ़ाना या हिफ़्ज़ कराना बन्द करते हैं, उसके वबाल में वह तनहा गिरफ़्तार नहीं ख़ुदआप लोग भी उसके जवाबदेह और क़ुरआन पाक के बन्द करने वालों में शरीक हैं। आप लोग समझते हैं कि हम इशाअत करने वाले हैं, लेकिन दर हक़ीक़त इस इशाअत के रोकने वाले हम ही लोग हैं, जिनकी बद-अत्वारियां और बद-नीतियां दुनिया को मजबूर कर रही हैं कि वह क़ुरआन पाक ही को छोड़ बैठें। उलमा ने तालीम की तंख़्वाह को इसलिए जायज नहीं फ़र्माया कि हम लोग, इसी को मक़्सूद बना लें, बल्कि हक़ीक़तन मुदर्रसीन की असल ग़रज सिर्फ़ तालीम और इशाअते इल्म व क़ुरआन शरीफ़ होने की ज़रूरत है और तंख़्वाह इसका मुआवज़ा नहीं, बल्कि रफ़ा-ए-ज़रूरत[1] की एक सूरत है, जिसको मजबूरन और इज़्तिरार की वजह से इख़्तियार किया गया।

तितिम्मा– कलाम पाक के इन सब फ़ज़ाइल और ख़ूबियों के ज़िक्र करने से मक़्सूद उसके साथ मुहब्बत पैदा करना है, इसलिए कला मुल्लाह शरीफ़ की मुहब्बत हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत के लिए लाज़िम व मल्ज़ूम[2] है और एक की मुहब्बत दूसरे की मुहब्बत का सबब होती है। दुनिया में आदमी की ख़िल्क़त[3] सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की मारफ़त के लिए हुई है और आदमी के अलावा सब चीज की ख़िल्क़त आदमी के लिए–

अब्र व बाद व मह व ख़ुर्शीद व फ़लक दर कारंद,
ता तू नाने बकफ़ आरी व ब ग़फ़्लत न ख़ुरी।
हमा अज बह्‌ तू सरगश्ता व फ़र्माबरदार,
शर्ते इंसाफ़ न बशद कि तू फ़र्मा न बरी।

कहते हैं, बादल व हवा, चांद, सूरज, आसमान व ज़मीन ग़रज हर चीज तेरी ख़ातिर काम में मशग़ूल है, ताकि तू अपनी हवाइज[4] उनके ज़रिए से पूरी करे और

---

1. ज़रूरत पूरी करने की, 2. एक दूसरे के लिए ज़रूरी, 3. पैदाइश, 4. ज़रूरतें,

इब्रत की निगाह से देखे कि आदमी की ज़रूरियात के लिए यह सब चीजें किस क़दर फ़रमाबरदार व मुतीअ[1] और वक़्त पर काम करने वाली हैं और तंबीह के लिए कभी-कभी इनमें तख़ल्लुफ़[2] भी थोड़ी देर के लिए कर दिया जाता है। बारिश के वक़्त बारिश न होना, हवा के वक़्त हवा न चलना, इसी तरह गरहन के ज़रिए से चांद, सूरज ग़रज़ हर चीज में कोई तग़य्युर भी पैदा किया जाता है, ताकि एक ग़ाफ़िल के लिए तंबीह ताज़ियाना[3] भी लगे। इन सब के बाद किस क़दर हैरत की बात है कि तेरी वजह से यह सब चीज़ें तेरी ज़रूरियात के ताबेअ की जावें और उन की फ़र्माबरदारी भी तेरी इताअत और फ़र्माबरदारी का सबब न बने और इताअत व फ़र्माबरदारी के लिए बेहतरीन मुईन[4] मुहब्बत है। 'इन्नल मुहिब्ब लिमंय्युहिब्बु मुतीउन।' जब किसी शख़्स से मुहब्बत हो जाती है, इश्क़ व फ़रेफ़्तगी पैदा हो जाती है, तो उसकी इताअत व फ़र्माबरदारी तबीयत और आदत बन जाती है और उसकी नाफ़र्मानी ऐसी ही गरां और शाक़[5] होती है जैसा कि बग़ैर मुहब्बत के किसी की इताअत खिलाफ़ आदत व तबअ होने की वजह से बार होती है। किसी चीज से मुहब्बत पैदा करने की सूरत उसके कमालात व जमाल का मुशाहदा है, हवासे ज़ाहिरा से हो या हवासे बातिना में इस्तह्ज़ार से। अगर किसी के चेहरे को देखकर बे-इख़्तियार इससे वाबस्तगी हो जाती है, तो किसी की दिल आवेज़ आवाज़ भी बसा औक़ात मक़नातीस का असर रखती है:-

न तन्हा इश्क़ अज दीदार खेज़द,
बसाकीं दौलत अज गुफ़्तार खेज़द।

इश्क़ हमेशा सूरत ही से पैदा नहीं होता। बसा औक़ात यह मुबारक दौलत बात से भी पैदा हो जाती है। कान में आवाज़ पड़ जाना अगर किसी की तरफ़ बे-इख़्तियार खींचता है, तो किसी के कलाम की ख़ूबियां, उसके जौहर, उसके साथ उलफ़त का सबब बन जाती है, किसी के साथ इश्क़ पैदा करने की तद्बीर अह्लेफ़न ने यह भी लिखी है कि उसकी ख़ूबियों का इस्तिह्ज़ार किया जावे[6], उसके ग़ैर को दिल में जगह न दी जावे जैसा कि इश्के तबई में यह सब बातें बे-इख़्तियार होती हैं, किसी का हसीन चेहरा या हाथ नजर पड़ जाता है तो आदमी सई करता है, कोशिश करता है कि बक़ीया आज़ा को देखे, ताकि मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो, क़ल्ब को तस्कीन हो, हालांकि तस्कीन होती नहीं।

---

1. फ़र्माबरदार, 2. आगे-पीछे हो जाना, 3. कोड़ा, 4. मददगार,
5. बोझ मुश्किल, 6. ध्यान किया जावे,

मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।

किसी खेत में बीज डालने के बाद अगर उसकी आबपाशी[1] की ख़बर न ली गयी, तो पैदावार नहीं होती। अगर किसी की मुहब्बत दिल में बे-इख़्तियार आ जाने के बाद उसकी तरफ इल्तिफ़ात न किया जावे तो आज नहीं तो कल दिल से महव हो जावेगी, लेकिन इसके ख़त्त व खाल सरापा[2] और रफ़्तार व गुफ़्तार के तसव्वुर से इस क़लबी बीज को सींचता रहे, तो उसमें हर लम्हा इज़ाफ़ा होगा-

मक्तबे इश्क के अन्दाज़ निराले देखे, ।
उसको छुट्टी न मिली जिसने सबक़ याद किया ।।

इस सबक को भुला दोगे, फौरन छुट्टी मिल जावेगी। जितना-जितना याद करोगे, उतना ही जकड़े जाओगे, इसी तरह किसी क़ाबिले इश्क से मुहब्बत करनी हो तो उसके कमालात, उसकी दिल आवेज़ियों का ततब्बुअ़[3] करे, जोहरों को तलाश करे और जिस क़दर मालूम हो जावे, उस पर बस न करे, बल्कि उससे ज़ायद का मुतलाशी[4] हो कि फ़ना होने वाले महबूब के किसी एक अज़्व के देखने पर क़नाअत नहीं की जाती। इससे ज़्यादा की हविस, जहां तक कि इम्कान में हो, बाक़ी रहती है।

हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस जो हक़ीक़तन हर जमाल व हुस्न का मम्बअ़[5] हैं और हक़ीक़तन दुनियां में कोई भी जमाल उनके अलावा नहीं है, यक़ीनन ऐसे महबूब हैं कि जिनके किसी जमाल कमाल पर बस नहीं, न उसकी कोई ग़ायत[6], उन्हीं बे-निहायत कमालात में से उनका कलाम भी है, जिसके मुताल्लिक़ मैं पहले इज्मालन कह चुका हूं कि इस इन्तिसाब[7] के बाद फिर किसी कमाल की ज़रूरत नहीं। उश्शाक़ के लिए इस इंतिसाब के बराबर और कौन सी चीज होगी-

ऐ गुल बतू ख़ुर्सन्दम तू बूए कसे दारी

क़ता-ए-नजर इससे के इस इन्तिसाब को अगर छोड़ भी दिया जाए कि इसका मूजिद[8] कौन है और वह किसकी सिफ़त है, तो फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उसको जो-जो निस्बतें हैं, एक मुसलमान की फ़रेफ़्तगी के लिए वह क्या कम हैं। अगर इससे भी क़ता-ए-नजर की जाए तो ख़ुद कलाम पाक ही

---

1. सिंचाई, 2. यानी ख़ुदा, 3. खोज, 4. खोज करने वाला, 5. निकलने की जगह, 6. हद और अख़ीर, 7. निस्बत करना, 8. ईजाद करने वाला,

में ग़ौर कीजिए कि कौन सी ख़ूबी दुनियां में ऐसी है जो किसी चीज में पायी जाती है और कलाम पाक में न हो-

दामाने निगहे तंग व गुले हुस्न तू बिस्यार,
गुल चीं बहारे तू ज़ दामां गिला दारद।

□ □

फ़िदा हों आप की किस-किस अदा पर,
अदाएं लाख और बेताब दिल एक।

अहादीसे साबिका को ग़ौर से पढ़ने वालों पर मख़्फ़ी[1] नहीं कि कोई भी चीज दुनिया में ऐसी नहीं, जिसकी तरफ़ अहादीसे बाला में मुतवज्जह न कर दिया गया हो और अन्वाए मुहब्बत व इफ़्तिख़ार में से किसी नौअ का दिलदादा[2] भी ऐसा न होगा कि उसी रंग में कलामुल्लाह शरीफ़ की अफ़ज़लीयत व बरतरी इस नौअ मे कमाल दर्जे की न बतला दी गयी हो, मसलन कुल्ली और इज्माली बेहतराई जो दुनियां भर की चीजों को शामिल है, हर जमाल व कमाल उसमें दाख़िल है-

सबसे पहली हदीस 1– ने कुल्ली तौर पर हर चीज से उसकी अफ़ज़लियत और बरतरी बतला दी। मुहब्बत की कोई सी भी नौअ ले लीजिए, किसी शख़्स को अस्बाबे ग़ैर मुतनाहिया[3] में से किसी वजह से कोई पसन्द आये। क़ुरआन शरीफ़ इसी कुल्ली अफ़ज़लियत में उससे अफ़ज़ल है। इसके बाद बिल् उमूम जो अस्बाबे ताल्लुक व मुहब्बत होते हैं, जुज़िइयात व तम्सील के तौर से उन सब पर क़ुरआन शरीफ़ की अफ़ज़लियत बतला दी गयी। अगर किसी को समरात और मुनाफ़े की वजह से किसी से मुहब्बत होती है तो अल्लाह जल्ल शानुहू का वायदा है कि हर मांगने वाले से ज़्यादा अता करूंगा।

हदीस 2– अगर किसी को जाती फ़ज़ीलत, जाती जौहर, जाती कमाल से कोई भाता है तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने बतला दिया कि दुनियां की हर बात पर क़ुरआन शरीफ़ को इतनी फ़ज़ीलत है, जितनी ख़ालिक को मख़्लूक पर, आक़ा को बंदों पर, मालिक को मम्लूक पर।

हदीस 3– अगर कोई माल व मताअ, हश्म व ख़दम[4] और जानवरों का

---

1. छुपा हुआ, 2. चाहने वाला, आशिक़ 3. बे-इन्तिहा अस्बाब, 4. माल व दौलत-नौकर चाकर

गिर्वीदा है और किसी नौअ के जानवर पालने पर दिल खोए है तो जानवरों के बे-मशक़्क़त हासिल करने से तह्सील कलामे पाक की अफ़ज़लियत पर मुतनब्बेह कर दिया।

हदीस 4– अगर कोई सूफ़ी तक़द्दुस व तक़्वे का भूखा है, उसके लिये सरगर्दा हैं, तो हुज़ूर सल्ल० ने बतला दिया कि क़ुरआन के माहिर का मलाइका के साथ शुमार है, जिनके बराबर तक़्वा का होना मुश्किल है कि एक आन भी ख़िलाफ़े इताअत नहीं गुज़ार सकते।

हदीस 5– अगर कोई शख़्स दोहरा हिस्सा मिलने से इफ़्तिख़ार[1] करता है या अपनी बड़ाई इसी में समझता है कि उसकी राय दो रायों के बराबर शुमार की जावे तो अटकने वाले के लिए दोहरा अज्र है।

हदीस 6– अगर कोई हासिद बद-अख़्लाक़ियों का मतवाला है, दुनियां में हसद ही का ख़ूगर[2] हो गया हो, उसकी ज़िंदगी हसद से नहीं हट सकती, तो हुज़ूर सल्ल० ने बतला दिया कि इस क़ाबिल जिसके कमाल पर वाक़ई हसद हो सकती है, वह हाफ़िज़े क़ुरआन है।

हदीस 7– अगर कोई फ़वाकेह[3] का मतवाला है, उस पर जान देता है, फल बग़ैर उसको चैन नहीं पड़ता तो क़ुरआन शरीफ़ तुरंज की मुशाबहत रखता है।

हदीस 8– अगर कोई मीठे का आशिक़ है, मिठाई बग़ैर उस का गुज़र नहीं, तो क़ुरआन शरीफ़ खजूर से ज़्यादा मीठा है। अगर कोई शख़्स इज़्ज़त व विक़ार का दिलदादा है, मिंबरी और कौन्सिल बग़ैर उस से रहा नहीं जाता, तो क़ुरआन शरीफ़ दुनियां और आख़िरत में रफ़ा-ए दरजात का ज़रिया है।

हदीस 9– अगर कोई शख़्स मुईन व मददगार चाहता है, ऐसा जां-निसार चाहता है कि हर झगड़े में अपने साथी की तरफ़ से लड़ने को तैयार रहे, तो क़ुरआन शरीफ़ सुल्तानुस्सलातीन[4] मालिकुल मुल्क शहंशाह से अपने साथी की तरफ़ से झगड़ने को तैयार है।

हदीस 10– अगर कोई नुक्तारस[5] बारीक बीनियों में उम्र ख़र्च करता

---

1. फ़ख़्र घमंड, 2. आदी, 3. फल, 4. बादशाहों के बादशाह यानी अल्लाह, 5. बारीकी निकालने वाला,

है, उसके नज़दीक एक बारीक नुक्ता हासिल कर लेना दुनियां भर के लज़्ज़ात[1] से ऐराज़[2] को काफ़ी है तो बतनेक़ुरआन शरीफ़ दकाइक का ख़ज़ाना है।

हदीस 11– इसी तरह अगर कोई शख़्स मख़्फ़ी राज़ों का पता लगाना कमाल समझता है, मुहक्मा सी० आई० डी० में तजुर्बे को हुनर समझता है, उम्र खपाता है तो बतने क़ुरआन शरीफ़ उन अस्रारे मख़्फ़ीया पर मुतनब्बह करता है, जिनकी इंतिहा नहीं। अगर कोई शख़्स ऊंचे मकानात बनाने पर मर रहा है, सातवीं मंज़िल पर अपना ख़ास कमरा बनाना चाहता है, तो क़ुरआन शरीफ़ सातवें हज़ार मंज़िल पर पहुंचाता है।

हदीस 12– अगर कोई इसका गरवीदा है कि ऐसी सह्ल तिजारत करूं, जिसमें मेहनत कुछ न हो और नफ़ा बहुत सा हो जावे, तो क़ुरआन शरीफ़ एक हर्फ़ पर दस नेकियां दिलाता है।

हदीस 13– अगर कोई ताज व तख़्त का भूखा है, उसकी ख़ातिर दुनियां से लड़ता है, तो क़ुरआन शरीफ़ अपने रफ़ीक़ के वालिदैन[3] को भी वह ताज व तख़्त देता है जिसकी चमक-दमक की दुनियां में कोई नज़ीर ही नहीं।

हदीस 14– अगर कोई शोब्दाबाज़ी में कमाल पैदा करता है, आग हाथ पर रखता है, जलती दियासलाई मुंह में रख लेता है, तो क़ुरआन शरीफ़ जहन्नम तक के आग असर करने से मानेअ है।

हदीस 15– अगर कोई हुक्काम रसी[4] पर मरता है, इस पर नाज़ है कि हमारे एक ख़त से फ़्लां हाकिम ने इस मुल्ज़िम को छोड़ दिया। हमने फ़्लां शख़्स को सज़ा नहीं होने दी, इतनी सी बात हासिल करने के लिए जज व कलेक्टर की दावतों व ख़ुशामदों में जान व माल ज़ाया करता है, हर रोज़ किसी न किसी हाकिम की दावत में सरगरदां रहता है, तो क़ुरआन शरीफ़ अपने हर रफ़ीक़ के ज़रिए ऐसे दस शख़्सों को ख़लासी दिलाता है, जिनको जहन्नम का हुक्म मिल चुका है।

हदीस 16– अगर कोई ख़ुश्बुओं पर मरता है चमन और फूलों का दिलदादा है, तो क़ुरआन शरीफ़ बालछड़ है।

हदीस 17– अगर कोई उतूर[6] का फ़रेफ़्ता है, हिनाए मुश्की में ग़ुस्ल

1. लज़्ज़तों, 2.मुंह मोड़ना, 3.बारीक से बारीक बातों, 4. साथी के मां बाप, 5.हाकिमों तक पहुंच, 6. इत्रों का,

चाहता हो, तो कलाम मजीद सरापा मुश्क है और अगर ग़ौर करोगे तो मालूम हो जावेगा कि इस मुश्क से उस मुश्क को कुछ भी निस्बत नहीं 'च निस्बत ख़ाक रा ब आलमे पाक।

कार ज़ुल्फ़े तुस्त मुश्क अफ़्शानी अमा आशिक़ा
मस्लहत रा तोहमते बर आ हुए चीं बस्ता अन्द।

हदीस 18— अगर कोई जूते का आश्ना[1] डर से कोई काम कर सकता है, तर्ग़ीब उसके लिए कारआमद नहीं, तो क़ुरआन शरीफ़ से ख़ाली होना घर की बरबादी के बराबर है।

हदीस 19— अगर कोई आबिद अफ़्ज़लुल इबादात[2] की तह्क़ीक़ में रहता है और हर काम में इसका मुतमन्नी है कि जिस चीज़ में ज़्यादा सवाब हो, उसी में मश्ग़ूल रहूं, तो किराते क़ुरआन अफ़्ज़लुल इबादत है और तस्रीह से बतला दिया कि नफ़्ल नमाज़, रोज़ा तस्बीह व तह्लील वग़ैरह सब से अफ़्ज़ल है।

हदीस 20— बहुत से लोगों को हामिला जानवरों से दिल-चस्पी होती है। हामिला जानवर क़ीमती दामों में ख़रीदे जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने मुतनब्बह फ़र्मा दिया और ख़ुसूसियत से इस जुज़्व को भी मिसाल में ज़िक्र फ़र्माया कि क़ुरआन शरीफ़ उस से भी अफ़्ज़ल है।

हदीस 21— अक्सर लोगों को सेहत की फ़िक्र दामन गीर रहती है, वर्ज़िश करते हैं, रोज़ाना ग़ुस्ल करते हैं, दौड़ते हैं, अलस्सुबह तफ़्रीह करते हैं, इसी तरह से बाज़ लोगों को रंज व ग़म, फ़िक्र व तश्वीश दामनगीर रहती है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्मा दिया कि सूरः फ़ातिहा हर बीमारी की शिफ़ा है और क़ुरआन शरीफ़ दिलों की बीमारी को दूर करने वाला है।

हदीस 22— लोगों के इफ़्तिख़ार के अस्बाब गुज़िश्ता इफ़्तिख़ारात के अलावा और भी बहुत से होते हैं, जिनका एहाता मुश्किल है। अक्सर अपने नसब पर इफ़्तिख़ार होता है, किसी को अपनी आदतों पर किसी को अपनी हरदिल अज़ीज़ी पर, किसी को अपने हुस्ने तद्बीर पर। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्मा दिया कि हक़ीक़तन क़ाबिले इफ़्तिख़ार जो चीज़ है, वह क़ुरआन शरीफ़ है और क्यों न हो कि दर हक़ीक़त हर जमाल व कमाल को जामेअ़ है—

---

1. डर से काम करने वाला, 2. सब से अफ़्ज़ल इबादत,

आँचे ख़ूबां हमा दारंद तू तंहा दारी।

हदीस 23 – अक्सर लोगों को ख़ज़ाना जमा करने का शौक़ होता है, खाने और पहनने में तंगी करते हैं, तकालीफ़ बरदाश्त करते हैं, और निन्नान्वे के फेर में ऐसे फंस जाते हैं, जिससे निकलना दुश्वार होता है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ज़ख़ीरे के क़ाबिल कलाम पाक है, जितना दिल चाहे आदमी जमा करे कि इससे बेहतर कोई ख़ज़ीना[1] नहीं।

हदीस 24– इसी तरह अगर बर्क़ी रोशनियों का आप को शौक़ है, आप अपने कमरे में दस क़ुमक़ुमे बिजली के इस लिए नसब करते हैं कि कमरा जगमगा उठे, तो क़ुरआन शरीफ़ से बढ़कर नूरानियत किस चीज में हो सकती है।

हदीस 25– अगर आप इस पर जान देते हैं कि आप के पास हदाया[2] आया करें, दोस्त रोजाना कुछ न कुछ भेजते रहा करे, आप तौसी-ए-ताल्लुकात इसी की ख़ातिर करते हैं, जो दोस्त-आश्ना अपने बाग़ के फलों में आप का हिस्सा न लगाये तो आप उसकी शिकायत करते हैं, तो क़ुरआन शरीफ़ से बेहतर तहायफ़ देने वाला कौन है कि सकीना उसके पास भेजी जाती है।[3] पस आप के किसी पर मरने की अगर यही वजह है कि वह आपके पास रोजाना कुछ नज़राना लाता है, तो क़ुरान शरीफ़ में इसका भी बदल है।

हदीस 26– और अगर आप किसी वज़ीर के इसलिए हर वक़्त क़दम चूमते हैं कि वह दरबार में आपका ज़िक्र कर देगा, किसी पेशकार की इस लिए ख़ुशामद करते हैं कि वह कलेक्टर के यहां आप की कुछ तारीफ़ कर देगा या किसी की आप इस लिए चापलूसी करते हैं कि महबूब की मज्लिस में आपका ज़िक्र कर दे, क़ुरआन शरीफ़ अह्कमुल हाकिमीन महबूबे हक़ीक़ी के दरबार में आप का ज़िक्र ख़ुद महबूब व आक़ा की ज़बान से कराता है।

हदीस 27– अगर आप इसके जोयां[4] रहते हैं कि महबूब को सबसे ज़्यादा मर्ग़ूब चीज क्या है कि उसके मुहय्या करने में पहाड़ों से दूध की नहर निकाली जाए, तो क़ुरआन शरीफ़ के बराबर आक़ा को कोई चीज भी मर्ग़ूब नहीं।

हदीस 28– अगर आप दरबारी बनने में उम्र खपा रहे हैं, सुलतान के मुसाहिब बनने के लिए हज़ार तद्बीर इख़्तियार करते हैं, तो कलामुल्लाह शरीफ़ के

---

1. ख़ज़ाना, 2. तोहफ़े, 3. देखिए हदीस 22, 4. खोज करने वाला,

ज़रिए आप उस बादशाह के मुसाहिब शुमार होते हैं, जिसके सामने किसी बड़े से बड़े की बादशाहत कुछ हक़ीक़त नहीं रखती।

हदीस 29– ताज्जुब की बात है कि लोग कौंसिल की मेंबरी के लिए और इतनी सी बात के लिए कि कलेक्टर साहब शिकार में जावें तो आप को भी साथ ले लें, आप किस क़दर क़ुर्बानियां करते हैं, राहत व आराम, जान व माल निसार करते हैं, लोगों से कोशिश कराते हैं, दीन व दुनियां दोनों को बरबाद करते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि आप की निगाह में इससे आपका एज़ाज़ होता है, तो फिर क्या हक़ीक़ी एज़ाज के लिए हक़ीक़ी हाकिम व बादशाह की मुसाहिबत के लिए वाक़ई दरबारी बनने के लिए आपको ज़रा सी भी तवज्जोह की ज़रूरत नहीं। आप इस नुमाइशी एज़ाज़ पर उम्र ख़र्च कीजिए, मगर ख़ुदारा इस उम्र का थोड़ा सा हिस्सा उम्र देने वाले की ख़ुश्नूदी के लिए भी तो ख़र्च कीजिए। इसी तरह अगर आप में चिश्तियत[1] फूंक दी गयी है और उन मजालिस बग़ैर आपको क़रार नहीं तो मजालिसे तिलावत इससे कहीं ज़्यादा दिल को पकड़ने वाली हैं और बड़े से बड़े मुस्तग़्नी के कान अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर लेती हैं।

हदीस 30,31– इसी तरह अगर आप आक़ा को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करना चाहते हैं, तो तिलावत कीजिए।

हदीस 32– और आप इस्लाम के मुद्दई[2] हैं, मुस्लिम होने का दावा है, तो हुक्म है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कि क़ुरआन शरीफ़ की ऐसी तिलावत करो जैसा कि उसका हक़ है। अगर आपके नज़दीक इस्लाम सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च नहीं हैं और अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्माबरदारी से भी आपके इस्लाम को कोई सरोकार है[3] तो यह अल्लाह का फ़र्मान है और उसके रसूल की तरफ़ से उसके तिलावत का हुक्म है।

हदीस 33– अगर आप में क़ौमी जोश बहुत ज़ोर करता है, तुर्की टोपी के आप सिर्फ़ इसलिए दिल दादा हैं कि वह आप के नज़दीक ख़ालिस इस्लामी लिबास है, क़ौमी शिआर में आप ख़ास दिलचस्पी रखते हैं, हर तरफ़ उसके फैलाने की आप तद्बीरें इख़्तियार करते हैं, अख़बारात में मज़ामीन शाया करते हैं, जल्सों में रेज़ुलेशन पास करते हैं, तो अल्लाह का रसूल आप को हुक्म देता है कि जिस क़दर मुम्किन

---

1. तसव्वुफ़ के सिलसिला चिश्तिया की तरफ़ इशारा है,

2. दावेदार, 3. वास्ता, ताल्लुक़,

हो, क़ुरआन शरीफ़ को फैलाओ।

बेजा न होगा अगर मैं यहां पहुंच कर सरबर आवुरद गाने क़ौम[1] की शिकायत करूं कि क़ुरआन पाक की इशाअत में आप की तरफ़ से क्या इआनत होती है और यही नहीं, बल्कि ख़ुदारा ज़रा ग़ौर से जवाब दीजिए कि उसके सिलसिले को बंद करने में आपका किस क़दर हिस्सा है। आज उसकी तालीम को बेकार बतलाया जाता है इज़ाअते उम्र[2] समझा जाता है, उसको बेकार दिमाग़ सोज़ी और बे-नतीजा अरक़ रेज़ी कहा जाता है, मुम्किन है कि आप उसके मुवाफ़िक़ न हों, लेकिन एक जमाअत जब हमातन इसमें कोशां है तो क्या आपका सुकूत[3] उसकी इआनत[4] नहीं है। माना कि आप इस ख़्याल से बेज़ार हैं, मगर आप की इस बेज़ारी ने क्या फ़ायदा दिया—

हम ने माना कि तग़ाफ़ुल[5] न करोगे लेकिन,
ख़ाक हो जाएंगे हम तुम को ख़बर होने तक।

आज इसकी तालीम पर बड़े ज़ोर से इसलिए इंकार किया जाता है कि मस्जिद के मुल्लाओं ने अपने टुकड़ों के लिए धंधा कर रखा है, गो यह आम्मतन नीयतों पर हमला है, जो बड़ी सख़्त जिम्मेदारी है और अपने वक़्त पर[6] इसका सबूत देना होगा। मगर मैं निहायत ही अदब से पूंछता हूं कि ख़ुदारा ज़रा इसको तो ग़ौर कीजिए कि इन ख़ुदग़रज मुल्लाओं की इन ख़ुदग़र्ज़ियों के समरात आप दुनिया में क्या देख रहे हैं और आपकी इन बे-ग़रज़ाना तजवीज़ के समरात क्या होंगे और नश्र व इशाअते कलाम पाक में आपकी इन मुफ़ीद तजावीज़ से किस क़दर मदद मिलेगी। बहरहाल हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद आपके लिए क़ुरआन के फ़ैलाने का है। इसमें आप ख़ुद ही फ़ैसला कर लीजिए कि इस इर्शादे नबवी का किस दर्जा इम्तिसाल आप की ज़ात से हुआ और हो रहा है।

देखिए, एक दूसरी बात का भी ख़्याल रखें। बहुत से लोगों का यह ख़्याल होता है कि हम इस ख़्याल में शरीक नहीं, तो हम को क्या, मगर इससे आप अल्लाह की पकड़ से नहीं बच सकते। सहाबा रज़ि० ने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा था—

اَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ قَالَ نَعَمْ اِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ

(क्या हम ऐसी हालत में हलाक हो जावेंगे कि हममें सुलहा[7] मौजूद हों।

---

1. क़ौम के रहनुमाओं, 2. उम्र की बरबादी, 3. ख़ामोशी, 4. मदद, 5. जान-बूझ कर ग़फ़लत बरतना, 6. यानी क़ियामत के दिन, 7. नेक लोग, 8. गंदगी, दुष्टता,

हुज़ूर सल्ल०ने इर्शाद फ़र्माया कि हां, जब ख़बासत[7] ग़ालिब हो जावे।)

इसी तरह एक रिवायत में आया है कि हक़ तआला शानुहू ने एक गांव के उलट देने का हुक्म फ़र्माया। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि इसमें फ़लां बंदा ऐसा है कि जिसने कभी गुनाह नहीं किया। इर्शाद हुआ कि सही है, मगर यह मेरी ना-फ़र्मानी होते हुए देखता रहा और कभी इसकी पेशानी पर बल नहीं पड़ा। दर-हक़ीक़त उलमा को यही उमूर मजबूर करते हैं कि वे ना जायज़ उमूर को देखकर ना-गवारी का इज़्हार करें, जिसको हमारे रोशन ख़्याल तंगनज़री से ताबीर करते हैं। आप हज़रात अपनी इस वुस्अत ख़्याली और वुस्अते अख़्लाक़ पर मुत्मइन न रहें कि यह फ़रीज़ा सिर्फ़ उलमा ही के ज़िम्मे नहीं, हर उस शख़्स के ज़िम्मे है जो किसी नाजायज़ बात का वक़ूअ देखे और उस पर टोकने की क़ुदरत रखता हो, फिर न टोके।

बिलाल बिन सअद रज़ि० से मर्वी है कि मअसियत जब मख़्फ़ी तौर से की जाती है तो उसका वबाल सिर्फ़ करने वाले पर होता है, लेकिन जब खुल्लम खुला की जावे और उस पर इंकार न किया जावे तो उसका वबाल आम होता है। इसी तरह अगर आप तारीख़ के दिल दादा हैं, जहां कहीं मोतबर तारीख़, पुरानी तारीख़ आप को मिलती हैं, आप उसके लिए सफ़र करते हैं तो क़ुरआन शरीफ़ में तमाम ऐसी कुतुब का बदल मौजूद है, जो क़ुरूने साबिक़ा[1] में हुज्जत व मोतबर मानी गयी हैं।

हदीस 34– अगर आप इस क़दर ऊंचे मर्तबे के मुतमन्नी[2] हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु को आप की मज्लिस में बैठने और शरीक होने का हुक्म हो तो यह बात भी सिर्फ़ कलामुल्लाह शरीफ़ में ही मिलेगी।

हदीस 35– अगर आप इस क़दर काहिल हैं कि कुछ कर ही नहीं सकते, तो बे-मेहनत, बे-मशक़्क़त इक्राम भी आप को सिर्फ़ कला मुल्लाह शरीफ़ में मिलेगा कि चुपचाप किसी मक्तब में बैठे, बच्चों का कलाम मजीद सुने जाइए और मुफ़्त का सवाब लीजिए।

हदीस 36– अगर आप मुख़्तलिफ़ अल्वान[3] के गरवीदा हैं, एक नौअ से उकता जाते हैं, तो क़ुरआन शरीफ़ के माना में मुख़्तलिफ़ अल्वान, मुख़्तलिफ़ मज़ामीन हासिल कीजिए- कहीं रहमत, कहीं अज़ाब, कहीं क़िस्से, कहीं अह्काम और कैफ़ीयते तिलावत में कभी पुकार कर पढ़ें और कभी आहिस्ता।

हदीस 37– अगर आप की सियहकारियां हद से मुतजाविज़[4] हैं और

---

1. बीते ज़मानों में, 2. तमन्ना करने वाले, 3. बहुत से रंग, 4. हद से बढ़ी हुई,

मरने का आप को यक़ीन भी है, तो फिर तिलावते कलाम पाक में ज़रा भी कोताही न कीजिए कि इस दर्जे का सिफ़ारिशी न मिलेगा और फिर ऐसा कि जिसकी सिफ़ारिश क़ुबूल होने का यक़ीन भी हो।

हदीस 38— इसी तरह अगर आप इस क़दर बा-विक़ार वाक़ेअ हुए हैं कि झगड़ालू से घबराते हैं, लोगों के झगड़े के डर से आप बहुत सी क़ुर्बानियां कर जाते हैं तो क़ुरआन शरीफ़ के मुतालबे से डरिए, कि उस जैसा झगड़ालू आपको न मिलेगा। फ़रीक़ैन के झगड़े में हर शख़्स का कोई न कोई तरफ़दार होता है, मगर उसके झगड़ने में इसकी तस्दीक़ की जाती है और हर शख़्स इसी को सच्चा बतलाएगा और आपका कोई तरफ़दार न होगा।

हदीस 39— अगर आप को ऐसा रहबर दरकार है और उस पर आप क़ुर्बान हैं जो महबूब के घर तक पहुंचा दे तो तिलावत कीजिए और अगर आप इससे डरते हैं कि कही जेलखाना न हो जाए तो हर हालत में क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत के बग़ैर चारा नहीं।

हदीस 40— अगर आप उलूमे अंबिया हासिल करना चाहते हैं और उसके गरवीदा व शैदाई हैं तो क़ुरआन शरीफ़ पढ़िए और जितना चाहे कमाल पैदा कीजिए। इसी तरह अगर आप बेहतरीन अख़्लाक़ पर जान देने को तैयार हैं तो भी तिलावत की कसरत कीजिए।

हदीस 41— अगर आपका मचला हुआ दिल हमेशा शिमला और मसूरी की चोटियों ही पर तफ़रीह में बहलता है और सौ जान से आप एक पहाड़ के सफ़र पर क़ुर्बान है तो क़ुरआन पाक मुश्क के पहाड़ों पर ऐसे वक़्त में तफ़रीह कराता है कि तमाम आलम में नफ़्सा-नफ़्सी का ज़ोर हो।

हदीस 42— अगर आप ज़ाहिदों की आला फ़हरिस्त में शुमार चाहते हैं और रात दिन नवाफ़िल से आपको फ़ुर्सत नहीं तो कलाम पाक सीखना, सिखाना इससे पेश-पेश है।[1]

हदीस 43, 44— अगर दुनियां के हर झगड़े से आप निजात चाहते हैं, हर मख़्मसे[2] से आप अलाहिदा रहने के दिलदादा हैं, तो सिर्फ़ क़ुरआन पाक ही में इन से मुख़्लिसी है।[3]

---

1. यानी इसमें सवाब ज़्यादा है, 2. झगड़ा-फ़साद मुराद है, 3. छुटकारा-बचाव

हदीस 45– अगर आप किसी तबीब के साथ वाबसतगी चाहतें हैं, तो सूरः फ़ातिहा में हर बीमारी की शिफ़ा है।

हदीस ख़ात्मा 1– अगर आप की बे-निहायत ग़र्जें पूरी नहीं होंती, तो क्यों रोज़ाना सूरः यासीन की तिलावत आप नहीं करते ?

हदीस 2– अगर आप को पैसे की मुहब्बत ऐसी है कि इसके बग़ैर आप किसी के भी नहीं, तो क्यों रोज़ाना सूरः वाक़िअः की तिलावत नहीं करते?

हदीस 3– अगर आप को अज़ाबे क़ब्र का ख़ौफ़ दामनगीर है और आप इसके मुतहम्मिल[1] नहीं, तो इसके लिए भी कलाम पाक[2] में निजात है।

हदीस 4– अगर आप का कोई दायमी मश्ग़ला दरकार है कि जिसमें आपके मुबारक औक़ात हमेशा मस्रूफ़, रहे फ़र्माया तो क़ुरआन पाक से बढ़कर न मिलेगा।

हदीस 5– मगर ऐसा न हो कि यह दौलत हासिल होने के बाद छिन जावे कि सल्तनत हाथ आने के बाद फिर हाथ से निकल जाना ज़्यादा हसरत व ख़ुसरान का सबब होता है और कोई हरकत ऐसी भी न कर जाइए कि नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम।

हदीस 6,7– 'व मा अलैना इल्लल बलाग़'

मुझ-सा नाकारा क़ुरआन पाक की ख़ूबियों पर क्या मुतनब्बेह[3] हो सकता है। नाक़िस समझ के मुवाफ़िक़ जो ज़ाहिरी तौर पर समझ में आया, ज़ाहिर कर दिया, मगर अह्ले फ़ह्म के लिए ग़ौर का रास्ता ज़रूर खुल गया, इसलिए कि अस्बाबे मुहब्बत, जिनको अह्लेफ़न ने किसी के साथ मुहब्बत का ज़रि बतलाया है, पांच चीज में मुनहसर हैं–

अव्वल अपना वजूद, कि तब्अन आदमी को महबूब रखता है। क़ुरआन शरीफ़ में हवादिस से अम्न है, इसलिए वह अपनी हयात व बक़ा का सबब है। दूसरे तब्ई मुनासबत, जिसके मुताल्लिक इससे ज़्यादा वज़ाहत क्या कर सकता हूं कि कलामे सिफ़ते इलाही है और मालिक व मम्लूक, आक़ा और बंदा में जो मुनासिबत है, वह वाक़िफ़ों से मख़फ़ी नहीं–

---

1. आप इसे बरदाश्त नहीं कर सकते, 2. यानी सूरः मुल्क, 3 क्या बा-ख़बर हो सकता है,

हस्त रब्बुन्नास रा बा जाने नास,
इत्तिसाले बे तकीफ़ व बे-क़ियास।
सब से रब्ते आशनाई है उसे,
दिल में हर एक के रसाई है उसे।

तीसरे जमाल, चौथे कमाल, पांचवें एहसान।

हर सह उमूर के मुताल्लिक़ अहादीसे बाला में अगर ग़ौर फ़र्माएंगे, तो न सिर्फ़ उस जमाल व कमाल पर, जिसकी तरफ़ एक नाक़िसुल फ़ह्म ने इशारा किया है, इक्तिसार किया है, बल्कि वह ख़ुद बे-तरद्दुद इस उम्र तक पहुंचेंगे कि इज़्ज़त-इफ़्तिख़ार, शौक़ व सुकून, जमाल व कमाल, इकराम व एहसान, लज़्ज़त व राहत, माल व मताअ, ग़रज़ कोई भी ऐसी चीज़ न पावेंगे, जो मुहब्बत के अस्बाब में हो सकती है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस पर तंबीह फ़र्मा कर क़ुरआन शरीफ़ को इसी नौअ में इससे अफ़ज़ल न इर्शाद फ़रमाया हो, अल-बत्ता हिजाब में मस्तूर[1] होना दुनियां के लवाज़िमात में से है। लेकिन अक़्लमंद शख़्स इस वजह से कि लीची का छिलका ख़ारदार है, उसके गूदे से एराज़ नहीं करता और कोई दिल खोया हुआ अपनी महबूबा से इसलिए नफ़रत नहीं करता कि वह उस वक़्त बुर्के में है। पर्दे के हटाने की हर मुम्किन से मुम्किन कोशिश करेगा और कामियाब न भी हो सका, तो उस पर्दे के ऊपर से ही आंखें ठंडी करेगा, इसका यक़ीन हो जावे कि जिसकी ख़ातिर वर्षों से सरगर्दां हूं, वह इसी चादर में है। मुम्किन कि फिर उस चादर से निगाह हट सके। इस तरह कलाम पाक उन फ़ज़ाइल व मनाक़िब और कमालात के बाद अगर वह किसी हिजाब की वजह से महसूस नहीं होते तो आक़िल का काम नहीं कि उससे बे-तवज्जोही और लापरवाही करे, बल्कि तक़्सीर और नुक़्सान पर अफ़सोस करे और कमालात में ग़ौर।

हज़रत उस्मान और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से मर्वी है कि अगर क़ुलूब नजासत से पाक हो जावें तो तिलावत कलामुल्लाह से कभी भी सेरी न हो।[2]

साबित बनानी रह० कहते हैं कि बीस वर्ष मैंने कलाम पाक को मशक़्क़त से पढ़ा और बीस बरस से मुझे उसकी ठंडक पहुंच रही है, पस जो शख़्स भी मआसी से तौबा के बाद ग़ौर करेगा, कलाम पाक को, 'आंचे ख़ूबां हमा दारंद तू तंहा दारी'

---

1. छिपा होना, 2. जी न भरे,

का मिस्दाक़ पायेगा। ऐ काश ! कि इन अल्फ़ाज़ के माना मुझ पर भी सादिक आते। मैं नाज़िरीन से यह भी दर्ख़्वास्त करूंगा कि कहने वाले की तरफ़ इल्तिफ़ात न फ़रमाएं कि मेरी नाकारगी आप को अहम मक्सूद से न रोके, बल्कि बात की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाएं और जहां से ये उमूर माख़ूज़[1] है, उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात कीजिए कि मैं दर्मियान में सिर्फ़ नक़्ल का वास्ता हूं। यहां तक पहुंचने के बाद अल्लाह की ज़ात से बईद नहीं कि वह किसी दिल में हिफ़्ज़े क़ुरआन पाक का वलवला पैदा कर दे। पस अगर बच्चे को हिफ़्ज़ कराना है, तो उस के लिए किसी अमल की ज़रूरत नहीं कि बचपन की उम्र ख़ुद हिफ़्ज़ के लिए मुईन व मुजर्रब[2] है, अलबत्ता अगर कोई शख़्स बड़ी उम्र में हिफ़्ज़ का इरादा करे तो इस के लिए हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद फ़र्माया हुआ एक मुजर्रब अमल लिखता हूँ, जिस को तिर्मिज़ी, हाकिम वग़ैरह ने रिवायत किया है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर था कि हज़रत अली रज़ि० हाज़िर हुए और अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हो जावें, क़ुरआन पाक मेरे सीने से निकल जाता है, जो याद करता हूं, महफ़ूज़ नहीं रहता। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं तुझे ऐसी तर्कीब बतलाऊं कि जो तुझे भी नफ़ा दे और जिस को तू बतला दे उसके लिए भी नाफ़ेअ हो और जो कुछ तू सीखे महफ़ूज़ रहे। हज़रत अली रज़ि० के दर्याफ़्त करने पर हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जब जुमा की शब[3] आवे, तो अगर यह हो सकता है कि रात के अख़ीर तिहाई हिस्से में उठे, तो यह बहुत ही अच्छा है कि यह वक़्त मलाइका के नाज़िल होने का है और दुआ उस वक़्त में ख़ासतौर से क़ुबूल होती है, उसी वक़्त के इंतिज़ार में हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों से कहा था 'सौ फ़ अस्तग़्फ़िरू लकुम रब्बी' (अक़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से मग़्फ़िरत तलब करूंगा) (यानी जुमा की रात को) पस अगर उस वक़्त में जागना दुश्वार हो, तो आधी रात के वक़्त और यह भी न हो सके, तो फिर शुरू रात में खड़ा हो और चार रक्अत नफ़्ल इस रात पढ़े कि पहली रक्अत में सूर: फ़ातिहा के बाद सूर: यासीन शरीफ़ पढ़े और दूसरी रक्अत में सूर: फ़ातिहा के बाद सूर: दुख़ान और तीसरी रक्अत में फ़ातिहा के बाद सूर: अलिफ़-लाल-मीम सज्दा और चौथी रक्अत में फ़ातिहा के बाद सूर: मुल्क पढ़े और जब अत्तहीयात से फ़ारिग़ हो जावे तो तो अव्वल हक़ तआला शानुहू की ख़ूब हम्द

1. लिये गये हैं, 2. मददगार और आज़माया गया, 3. रात,

व सना कर और इसके बाद मुझ पर दरूद व सलाम भेज, इसके बाद अंबिया पर दरूद भेज, इसके बाद तमाम मोमिनीन के लिए और उन तमाम मुसलमान भाइयों के लिए, जो तुझ से पहले मर चुके हैं, इस्तग़फ़ार और इस के बाद यह दुआ पढ़।

फ़— दुआ आगे आ रही है और इसके ज़िक्र से क़ब्ल मुनासिब है कि हम्द व सना वग़ैरह, जिन का हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म फ़र्माया है, दूसरी रिवायत से, जिन को शुरू हे हिस्न और मुनाजाते मक़्बूल वग़ैरह में नक़्ल किया है, मुख़्तसर तौर पर एक-एक दुआ नक़्ल कर दी जावे ताकि जो लोग अपने तौर पर नहीं पढ़ सकते, वे इस को पढ़ें और जो हज़रात ख़ुद पढ़ सकते हों, वे इस पर क़नाअत न करें, बल्कि हम्द व सलात को बहुत अच्छी तरह से मुबालग़े से पढ़ें। (दुआ यह है)

(دعا یہ ہے) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمٰتِهٖ اَللّٰهُمَّ لَا اُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْهَاشِمِيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الْبَرَرَةِ الْكِرَامِ وَعَلٰى سَائِرِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ اِنَّكَ سَمِيْعٌ مُّجِيْبُ الدَّعَوَاتِ۔

अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन अ द द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही व ज़ि न त अर्शिही व मिदा द कलि मात्ति ही अल्लाहुम् म ला उह्सी स ना अन अलै क अन् त क मा अस्नै त अला नफ़्सि क अल्लहुम् म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदि न्नबीयिल उम्मीयिल हाश्मी व अला आलिही व अस्हाबिहिल ब र रतिल किरामि व अला साइरिल अंबियाइ वल मुर्सली न वल मलाइकतिल मुक़र्रबी न रब्बनग़्फ़िर ल ना व लि इख़्वानिनल्लज़ी न स ब क़ूना बिल ईमानी व ला तज्अल फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्लिल्लज़ी न आ म नू रब्बना इन्न क रऊफ़ुर्रहीम अल्ला हुम्मग़्फ़िर ली व लि वालिदय् य वलि जमीअिल मुअ् मिनी न वल् मुअ्मिनाति वल मुस्लिमीन वल् मुस्लिमाति इन् न क समीअुम मुजीबुद्दअ वाति०

तर्जुमा— तमाम तारीफ़ जहानों के परवरदिगार के लिए हैं, ऐसी तारीफ़ जो उसकी मख़्लूक़ात के आदाद के बराबर हो, उसकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो, उसके अर्श के वज़न के बराबर हो। उसके कलिमात की स्याहियों के बराबर हो। ऐ अल्लाह!

मैं तेरी तारीफ़ का एहाता नहीं कर सकता, तू ऐसा ही है जैसा कि तूने अपनी तारीफ़ ख़ुद बयान की। ऐ अल्ला! हमारे सरदार नबी उम्मी और हाशमी पर दरूद व सलाम और बरकात नाज़िल फ़र्मा और तमाम नबियों और रसूलों और मलाइका मुक़र्रिबीन पर भी। ऐ हमारे रब! हमारी और हम से पहले मुसलमानों की मग़्फ़िरत फ़र्मा और हमारे दिलों में मोमिनीन की तरफ़ से कीना न कर, ऐ हमारे रब! तू मेहरबान और रहीम है। ऐ इलाहल आलमीन! मेरी और मेरे वालिदैन की और तमाम मोमिनीन और मुसलमानों की मग़्फ़िरत फ़र्मा। बेशक तू दुआओं को सुनने वाला और क़ुबूल करने वाला है।'

इसके बाद वह दुआ पढ़े जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीसे बाला में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तालीम फ़र्मायी और यह है–

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَدًا مَّا اَبْقَيْتَنِيْ وَارْحَمْنِيْ اَنْ اَتَكَلَّفَ مَا لَا يَعْنِيْنِيْ
وَارْزُقْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيْمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
وَالْعِزَّةِ الَّتِيْ لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تُلْزِمَ قَلْبِيْ حِفْظَ
كِتَابِكَ كَمَا عَلَّمْتَنِيْ وَارْزُقْنِيْ اَنْ اَقْرَاَهٗ عَلَى النَّحْوِ الَّذِيْ يُرْضِيْكَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِيْ لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرِ
وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرَ بِكِتَابِكَ بَصَرِيْ وَاَنْ تُطْلِقَ بِهٖ لِسَانِيْ وَاَنْ تُفَرِّجَ بِهٖ عَنْ قَلْبِيْ وَاَنْ
تَشْرَحَ بِهٖ صَدْرِيْ وَاَنْ تَغْسِلَ بِهٖ بَدَنِيْ فَاِنَّهٗ لَا يُعِيْنُنِيْ عَلَى الْحَقِّ غَيْرُكَ وَلَا يُؤْتِيْهِ
اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۝

अल्लाहुम्मर्हम्नी बितर्किल मआसी अ ब दन मा अब्क़ै त नी वर्हम्नी अन अ त कल ल फ़ मा ला यअ्नीनी वर्ज़ुक़्नी हुस्नन्नज़्रि फ़ीमायुर्ज़ी क अन्नी अल्लाहुम म ब दीअुस समावाति वल अर्ज़ि ज़ल जलालि वल् इक्रामि वल् इज़्ज़तिल्लती ला तुरामु अस्अलु क या अल्लाहु या रह्मानु बिजलालि क व नूरि वज्हि क अन् तुल्ज़ि म क़ल्बी हिफ़्ज़ किताबि क कमा अल्लम् त नी वर्ज़ुक़्नी अन् अक़् र अ हू अलन्नहविल्लज़ी युरज़ी क अन्नी अल्लाहुम म बदीअस्समावाति वल अर्ज़ि ज़ल जलालि वल् इक्रामि वल् इज़्ज़जिल्लती ला तुरामु अस अलु क या अल्लाहु या रह्मानु बिजलालि क व नूरि वज्हि क अन तुनव्वि र बिकिताबि क ब स री व अन् तुत लिक़ बिही लिसानी व अन तुफ़र्रि ज बिही अन क़ल्बी व अन तश्र ह बिही सद्री व अन तग़्सि ल बिही

ब द नी फ़ इन्नहू ला युओनुनी अलल हक़्क़ि ग़ैरु क व ला युअ्तीहि इल्ला अन् त व ला हौ ल व ला क़ू व त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०

तर्जुमा– ऐ इलाइल आलमीन ! मुझ पर रहम फ़र्मा कि जब तक मैं ज़िंदा रहूं और मुझ पर रहम फ़र्मा कि मैं बेकार चीज़ों में कुल्फ़त[1] न उठाऊं, और अपनी मर्ज़ीयात में ख़ुश नज़री मरहमत फ़र्मा। ऐ अल्लाह ! ऐ ज़मीन और आसमानों के बे-नमूना पैदा करने वाले ! ऐ अज़्मत और बुज़ुर्गी वाले और उस ग़ल्बा या इज़्ज़त के मालिक, जिस के हुसूल का इरादा भी ना मुम्किन है। ऐ अल्लाह ! ऐ रहमान ! मैं तेरी बुज़ुर्गी और तेरी ज़ात के नूर के तुफ़ैल , तुझ से मांगता हूं कि जिस तरह तूने अपनी कलाम पाक मुझे सिखा दी, उसी तरह उसकी याद भी मेरे दिल से चस्पां कर दे और मुझे तौफ़ीक़ अतता फ़ा फ़र्मा कि मैं उसको इस तरह पढ़ू, जिससे तू राज़ी हो जावे। ऐ अल्लाह! ज़मीन और आसमानों के बे-नमूना पैदा करने वाले, ऐ अज़्मत और बुज़ुर्गी वाले और उस ग़लबा या इज़्ज़त के मालिक, जिसके हुसूल का इरादा भी नामुम्किन! ऐ अल्लाह ! ऐ रहमान! मैं तेरी बुज़ुर्गी और तेरी ज़ात के नूर के तुफ़ैल तुझ से मांगता हूं कि तू मेरी नज़र को अपनी किताब के नूर से मुनव्वर कर दे और मेरी ज़बान को उस पर जारी कर दे और उसकी बरकत से मेरी तंगी को दूर कर दे और मेरे सीने को खोल दे और उस की बरकत से मेरे जिस्म के गुनाहों का मैल धो दे कि हक़ पर तेरे सिवा मेरा कोई मददगार नहीं और तेरे सिवा मेरी यह आरज़ू कोई पूरी नहीं कर सकता और गुनाहों से बचना या इबादत पर क़ुदरत नहीं हो सकती, मगर अल्लाह बरतर व बुज़ुर्गी वाले की मदद से।'

फिर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि ऐ अली! इस अमल को तीन जुमा या पांच जुमा या सात जुमा कर, इनशाअल्लाहु दुआ ज़रूर क़ुबूल की जाएगी। क़सम है उस ज़ात पाक की जिसने मुझे नबी बना कर भेजा है, किसी मोमिन से भी क़ुबूलियत दुआ न चूकेगी।

इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अली रज़ि० को पांच या सात ही जुमा गुज़रे होंगे कि वह हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! पहले मैं तक़रीबन चार आयतें पढ़ता था और वे भी मुझे याद न होती थीं और अब तक़रीबन चालीस आयतें पढ़ता हूं और ऐसी अज़बर[2] हो जाती है कि गोया क़ुरआन शरीफ़ मेरे सामने खुला हुआ रखा है और पहले मैं हदीस सुनता था और जब उस

1. तक्लीफ़, कष्ट, 2. ज़ुबानी याद,

को दोबारा कहता था तो ज़ेहन में नहीं रहती थी और अब हदीस सुनता हूं और जब दूसरों से नक़ल करता हूं, तो एक लफ़्ज़ भी नहीं छूटता।

हक़ तआला शानुहू अपने नबी की रहमत के तुफ़ैल मुझे भी क़ुरआन व हदीस के हिफ़्ज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रवावें और तुम्हें भी।

وصلى الله تبارك وتعالىٰ على خير خلقه سيدنا

ومولانا محمد وآله وصحبه وسلم برحمتك يا ارحم الرّاحمين۔

वसल्लल्लाहु तबा र क व तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्व आलिही व सह्बिही व सल्लम बिरहमति क या अर्हमर्राहिमीन०

तक्मिला

ऊपर जो चहल हदीस लिखी गयी है, वह एक ख़ास मज़्मून के साथ मख़्सूस होने की वजह से इस में इख़्तिसार की रिवायात नहीं हो सकी। इस ज़माने में चूंकि हिम्मतें निहायत ही पस्त हो गयी हैं, दीन के लिए किसी मामूली सी मशक़्क़त का भी बरदाशत करना गरां है, इसलिए इस जगह एक दूसरी चहल हदीस नक़ल करता हूं, जो निहायत ही मुख़्तसर है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक ही जगह मंक़ूल है। इस के साथ ही बड़ी ख़ूबी इसमें यह है कि मुहिम्माते दीनिया को ऐसी जामेअ है कि उस की नज़ीर मिलना मुश्किल है।

कन्ज़ुल उम्माल में क़ुदमा-ए-मुहद्दिसीन की एक जमाअत की तरफ़ इसका इन्तिसाब किया है और मुतअख़्ख़िरीन में से मौलाना क़ुत्बुद्दीन साहब मुहाजिर मक्की ने भी इसको ज़िक्र फ़रमाया है। क्या ही अच्छा हो कि दीन के साथ वाबस्तगी रखने वाले हज़रात कम अज़ कम इसको ज़रूरी हिफ़्ज़ कर लें कि कौड़ियों में लाल मिलते हैं, वह हदीस यह है-

عَنْ سَلْمَانَؓ قَالَ سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْاَرْبَعِيْنَ حَدِيْثًا الَّتِيْ قَالَ مَنْ حَفِظَهَا مِنْ اُمَّتِيْ دَخَلَ الْجَنَّةَ قُلْتُ وَمَا هِيَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكُتُبِ وَالنَّبِيِّيْنَ وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَاَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَتُقِيْمَ

الصَّلٰوةَ بِوُضُوْءٍ سَابِغٍ كَامِلٍ لِوَقْتِهَا وَتُؤْتِيَ الزَّكٰوةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ إِنْ كَانَ لَكَ مَالٌ وَتُصَلِّيَ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ وَالْوِتْرَ لَا تَتْرُكْهُ فِيْ كُلِّ لَيْلَةٍ وَلَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَلَا تَعُقَّ وَالِدَيْكَ وَلَا تَأْكُلْ مَالَ الْيَتِيْمِ ظُلْمًا وَلَا تَشْرَبِ الْخَمْرَ وَلَا تَزْنِ وَلَا تَحْلِفْ بِاللّٰهِ كَاذِبًا وَلَا تَشْهَدْ شَهَادَةَ زُوْرٍ وَلَا تَعْمَلْ بِالْهَوٰى وَلَا تَغْتَبْ أَخَاكَ الْمُسْلِمَ وَلَا تَقْذِفِ الْمُحْصَنَةَ وَلَا تَغُلَّ أَخَاكَ الْمُسْلِمَ وَلَا تَلْعَبْ وَلَا تَلْهُ مَعَ اللَّاهِيْنَ وَلَا تَقُلْ لِلْقَصِيْرِ يَا قَصِيْرُ تُرِيْدُ بِذٰلِكَ عَيْبَهُ وَلَا تَسْخَرْ بِأَحَدٍ مِّنَ النَّاسِ وَلَا تَمْشِ بِالنَّمِيْمَةِ بَيْنَ الْأَخَوَيْنِ وَاشْكُرِ اللّٰهَ تَعَالٰى عَلٰى نِعْمَتِهٖ وَتَصْبِرَ عَلَى الْبَلَاءِ وَالْمُصِيْبَةِ وَلَا تَأْمَنْ مِنْ عِقَابِ اللّٰهِ وَلَا تَقْطَعْ أَقْرِبَاءَكَ وَصِلْهُمْ وَلَا تَلْعَنْ أَحَدًا مِّنْ خَلْقِ اللّٰهِ وَأَكْثِرْ مِنَ التَّسْبِيْحِ وَالتَّكْبِيْرِ وَالتَّهْلِيْلِ وَلَا تَدَعْ حُضُوْرَ الْجُمُعَةِ وَالْعِيْدَيْنِ وَاعْلَمْ أَنَّ مَا أَصَابَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَمَا أَخْطَأَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَكَ وَلَا تَدَعْ قِرَاءَةَ الْقُرْاٰنِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ. (رواه الحافظ ابوالقاسم بن عبد الرحمٰن بن محمد بن اسحاق بن مندة والحافظ ابوالحسن على بن ابى القاسم بن بابويه الرازى فى الاربعين وابن عساكر والرافعى عن سلمان.)

तर्जुमा– सल्मान रज़ि॰ कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि वह चलीस हदीसें, जिन के बारे में यह कहा है कि जो इनको याद कर ले, जन्नत में दाखि़ल होगा, वह क्या हैं ? हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया–

1. अल्लाह पर ईमान लावे, यानी उसकी ज़ात व सिफ़ात पर,

2. और आख़िरत के दिन पर,

3. और फ़रिश्तों के वजूद पर,

4. और पहली किताबें पर,

5. और तमाम अंबिया पर,

6 और मरने के बाद दोबारा ज़िंदगी पर,

7. और तक़्दीर पर कि भला और बुरा जो कुछ होता है, सब अल्लाह ही

की तरफ़ से है।

8. और गवाही दे, तू इस अम्र की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके सच्चे रसूल हैं।

9. हर नमाज़ के वक़्त कामिल वुज़ू कर के नमाज़ क़ायम करे (कामिल वुज़ू वह कहलाती है जिस में आदाब व मुस्तहिब्बात की रियायत रखी गयी हो। हर नमाज़ के वक़्त इशारा है इस बात की तरफ़ कि नई वुज़ू हर नमाज़ के लिए करे, अगरचे पहले से वुज़ू हो कि यह मुस्तहब है और नमाज़ के क़ायम करने से इसके तमाम सुनने और मुस्तहिब्बात का एहतमाम करना मुराद है। चुनांचे दूसरी रिवायत में वारिद है-

इन् न तस्वियतस्सुफ़ूफ़ मिन इक़ामतिस्सलाति०

(यानी जमाअत में सफ़ों का हमवार करना कि किसी क़िस्म की कजी[1] या दर्मियान में ख़ला न रहे) यह भी नमाज़ क़ायम करने के मफ़्हूम में दाख़िल है

10. और ज़कात अदा करे,

11. और रमज़ान के रोज़े रखे।

12. अगर माल हो तो हज करे, यानी अगर जाने की क़ुदरत रखता हो, तो हज भी करे, चूंकि अक्सर मानेअ माल ही होता है, इस लिए इस को ज़िक्र फ़र्मा दिया, वरना मक़्सूद यह है कि हज के शरायत पाये जाते हों, तो हज करे।

13. बारह रक्अत सुन्नते मुअक्किदा रोज़ाना अदा करे। इसकी तफ़्सील दूसरी रिवायत में इस तरह आयी है कि सुबह से पहले दो रक्अत, ज़ुहर से पहले चार रक्अत, ज़ुहर के बाद दो रक्अत मग़्रिब के बाद दो रक्अत, इशा के बाद दो रक्अत,

14. और वित्र को किसी रात में न छोड़े, चूंकि वह वाजिब है और उस का एहतमाम सुन्नतों से ज़्यादा है, इसलिए उसको ताकीदी लफ़्ज़ से ज़िक्र फ़र्माया,

15. और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करे,

16. और वालिदैन की नाफ़रमानी न करे,

17. और ज़ुल्म से यतीम का माल न खावे, यानी अगर किसी वजह से यतीम

1. टेढ़,

का माल खाना जायज हो, जैसा कि बाज़ सूरतों में होता है, तो मुज़ाइका नहीं।

18. और शराब न पिये।

19. ज़िना न करे।

20. झूठी क़सम न खावे।

21. झूठी गवाही न दे।

22. ख़्वाहिशाते नफ़सानिया पर अमल न करे।

23. मुसलमान भाई की ग़ीबत न करे।

24. अफ़ीफ़ा[1] औरत को तोहमत न लगाये (इसी तरह अफ़ीफ़ मर्द को)

25. अपने मुसलमान भाई से कीना न रखे।

26. लह्व लअिब में मश्ग़ूल न हो।

27. तमाशाइयों में शरीक न हो।

28. किसी पस्ता क़द को ऐब की नीयत से ठिगना मत कहो यानी कोई एबदार लफ़्ज़ ऐसा मशहूर हो कि उसके कहने से ऐब समझा जाता हो, न ऐब की नीयत से कहा जाता हो, जैसा कि किसी का नाम बुद्ध, पढ़ जावे, तो मुज़ाइका नहीं, लेकिन तान की ग़रज़ से किसी को ऐसा कहना जायज़ नहीं।

29. किसी का मज़ाक मत उड़ा,

30. न मुसलमानों के दर्मियान चुग़लख़ोरी कर,

31. और हर हाल में अल्लाह जल्ल शानुहू की नेमतों पर उस का शुक्र कर।

32. बला और मुसीबत पर सब्र कर,

33. और अल्लाह के अज़ाब से बे-ख़ौफ़ मत हो,

34. अअिज़्ज़ा[2] से क़ता-ए-तअल्लुक मत कर,

35. बल्कि उनके साथ सिला रहमी[3] कर।

36. अल्लाह की किसी मख़्लूक को लानत मत कर।

---

1. पाकदामन औरत, 2. रिश्तेदार, 3. यानी रिश्ते जोड़,

37. सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाहि, ला इला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर इन अल्फ़ाज़ का अक्सर विर्द रखा कर।

38. जुमा और ईदैन में हाज़िरी मत छोड़,

39. और इस बात का यकीन रख कि जो कुछ तक्लीफ़ व राहत तुझे पहुंची, वह मुक़द्दर में थी, जो टलने वाली न थी और जो कुछ नहीं पहुंचा, वह किसी तरह भी पहुंचने वाला न था,

40. और कलामुल्लाह शरीफ़ की तिलावत किसी हाल में भी मत छोड़।

सल्मान रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि जो शख़्स इस को[1] याद कर ले, उसको क्या अज्र मिलेगा ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस उसका अंबिया और उलमा के साथ हश्र फ़र्मावेंगे।

हक़ सुब्हानहू तआला सय्यिआत[2] से दरगुजर फ़र्मा कर अपने नेक बन्दों में महज अपने लुत्फ़ से शामिल फ़र्मा लें तो उसकी करीमी शान से कुछ भी बईद नहीं। पढ़ने वाले हजरात से बड़ी ही लजाजत[3] के साथ इस्तदआ है कि दुआ-ए-ख़ैर से इस स्याहकार की भी दस्तगीरी फ़र्मावें।

وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ

व मा तौफ़ीकी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कलतु व इलैहि उनीबु०

मुहम्मद ज़करिया उफ़िय अन्हु कांधलवी

मुक़ीम मदरसा मज़ाहिरुल उलूम, सहारनपुर

29 ज़िल हिज्जा 1348 हि पंजशंबा

---

1. यानी इन चालीस हदीसों को, 2. बुराइयों, गुनाहों से, 3. नर्मी से,

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ
هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ؕ
कालल्लाहु तआला शहरु रमज़ा नल्लज़ी
उन्ज़िलफ़ी हिल क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व
बयियनातिम मिनल हुदा वल फ़ुर्कान॰
Click-->
फ़ज़ाइले रमज़ान
मुअल्लिफ़
हज़रत मौलाना अल-हाज्ज मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब रह॰
शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर
इस की फ़स्ले अव्वल में दस हदीसें रमज़ान शरीफ़ के फ़ज़ाइल में, दूसरी फ़स्ल में सात अहादीस लैलतुल क़द्र के बारे में और सूरः क़द्र की तफ़सीर में, तीसरी फ़स्ल में तीन हदीसें एतकाफ़ के फ़ज़ाइल में, ख़ात्मे में एक तवील हदीस जो बहुत से बेहतरीन मज़ामीन पर मुश्तमिल है, ग़रज़ कि यह मालूम करने के लिए कि रमज़ानुल मुबारक कितनी बड़ी नेमत है, अन्वारे इलाही इस माह में कितनी कसरत से नाज़िल होते हैं और उन के हासिल करने का क्या तरीक़ा है, इस में मुलाहज़ा फ़रमाएं।
प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद
खुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256 अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम !

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम-हामिदंव्व मुसल्लियंव्व मुसल्लिमा०। نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا

हम्द व सलात के बाद यह चंद अहादीस का तर्जुमा है जो रमज़ानुल् मुबारक् के बारे में वारिद हुई हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहमतुल् आलमीन् ज़ात ने मुसलमानों के लिए हर बाब में जिस क़दर फ़ज़ाइल और तरग़ीबात इर्शाद फ़र्माई हैं, उनका अस्ल शुक्रिया और क़द्रदानी तो यह थी की हम उन पर मर मिटते, मगर हमारी कोताहियां और दीनी बे-रग़्बतियां इस क़दर रोज़ अफ़्ज़ूं[1] हैं कि उन पर अमल तो दर किनार उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात और तवज्जोह भी नहीं रही, हत्ता कि अब लोगों को इनका इल्म भी बहुत कम हो गया है।

इन औराक़ का मक़्सद यह है कि अगर मसाजिद के अइम्मा,[2] तरावीह के हुफ़्फ़ाज़[3] और वे पढ़े-लिखे हज़रात जिनको दीन की किसी दर्जे में भी रग़्बत है, अवाइले रमज़ान[4] में इस रिसाले को मसाजिद और मजामे[5] में सुना दिया करें तो अल्लाह की रहमत से क्या बईद[6] है कि अपने महबूब[7] के कलाम की बरकत से हम लोगों को मुबारक महीने की कुछ क़द्र और उस की बरकात की तरफ़ कुछ तवज्जोह हो जाया करे और नेक आमाल करने की ज़्यादती और बद आमालियों की कमी का ज़रिया बन जाया करे। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अगर हक़ तआला शानुहू तेरी वजह से एक शख़्स को भी हिदायत फ़र्मा दें तो तेरे लिए सुर्ख़ ऊंटों से (जो उम्दा माल शुमार होता है) बेहतर और अफ़्ज़ल है।

रमज़ानुल मुबारक का महीना मुसलमानों के लिए हक़ तआला शानुहू का बहुत ही बड़ा इनाम है, मगर जब ही कि इस इनाम की क़दर भी की जाये। वरना हम से[8] महरूमों के लिए एक महीने तक रमज़ान-रमज़ान चिल्लाये जाने के सिवा कुछ भी नहीं।

एक हदीस में है कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाए कि रमज़ान क्या

---

1. यानी हर दिन बढ़ रही है, 2. बहुत से इमाम, 3. बहुत से हाफ़िज़, 4. रमज़ान के शुरू, 5. मज्लिसों, 6. दूर, 7. हज़रत मुहम्मद सल्ल०, 8. हम जैसे,।

चीज है? तो मेरी उम्मत यह तमन्ना करे कि सारा साल रमज़ान ही हो जाए। हर शख़्स समझता है कि साल भर के रोज़ें रखने कारे दारद, मगर रमज़ानुल मुबारक के सवाब के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि लोग इसकी तमन्ना करने लगें।

एक और हदीस में इर्शाद है कि रमज़ानुल मुबारक के रोज़े और हर महीने में तीन रोज़े रखना दिल की खोट और वसाविस को दूर करता है। आख़िर कोई तो बात है कि सहाबा किराम रज़ि० रमज़ान के महीने में, जिहाद के सफ़र में, बावजूद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बार-बार इफ़्तार की इजाज़त फ़र्मा देने के, रोज़े का एहतिमाम फ़र्माते, हत्ता कि हुज़ूर सल्ल० को हुक्मन मना फ़र्माना पड़ा।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि सहाबा किराम रज़ि० एक ग़ज़वे[1] के सफ़र में एक मंज़िल पर उतरे, गर्मी निहायत सख़्त थी और ग़ुरबत[2] की वजह से इस क़दर कपड़ा भी सब के पास न था कि धूप की गर्मी से बचाव कर लें। बहुत से लोग अपने हाथ से आफ़ताब की शुआ[3] से बचते थे। इस हालत में भी बहुत से रोज़ेदार थे, जिन से खड़े हो सकने का तहम्मुल न हुआ[4] और गिर गए। सहाबा किराम रज़ि० की एक जमाअत गोया हमेशा तमाम साल रोज़ेदार ही रहती थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सैकड़ों रिवायत में मुख़्तलिफ़ अनवाअ[5] के फ़ज़ाइल नक़ल किए गए, जिन का अहाता तो मुझ जैसे नाकारा के इम्कान से ख़ारिज है ही, लेकिन मेरा यह भी ख़्याल है कि अगर इन को कुछ तफ़्सील से लिखूं तो देखने वाले उकता जायेंगे कि इस ज़माने में दीनी उमूर[6] में जिस क़दर बे इल्तफ़ाती[7] की जा रही है, वह मोहताजे बयान नहीं इल्म व आमल दोनों में जिस क़द्र बेपरवाही दीन के बारे में बढ़ती जा रही है। वह हर शख़्स अपनी ही हालत में ग़ौर करने से मालूम कर सकता है। इसलिए इक्कीस अहादीस पर इक्तिफ़ा[8] करता हूं और इन को तीन फ़स्लों पर मुन्क़सिम[9] करता हैं।

फ़स्ल अव्वल रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल में, जिसमें दस अहादीस मज़कूर हैं।

दूसरी फ़स्ल शबे क़द्र के बयान में, जिस में सात हदीसें हैं।

---

1. लड़ाई, 2. ग़रीबी, 3. सूरज की किरनों, 4. यानी खड़े होने की भी ताक़त न रही, 5. क़िस्मों, 6. मामलों, 7. लापरवाई, 8. बस करता हूं, 9. बांटता हूं।

तीसरी फ़स्ल में एतकाफ़ का ज़िक्र है जिसमें तीन हदीसें हैं। इसके बाद ख़ातमे में एक तवील[1] हदीस पर इस रिसाले को ख़त्म कर दिया —

हक़ तआला शानुहू अपनी करीम ज़ात और अपने महबूब सल्ल० के तुफ़ैल इसको क़ुबूल फ़र्मावें और मुझ स्याहकार को भी इसकी बरकात से इंतिफ़ाअ[2] की तौफ़ीक़ अता फ़र्मावें, फ़ इन्नहू बर्रुन जवादुन करीम[3]।

फ़स्ले अव्वल
फ़ज़ाइले रमज़ान में

١ — عن سلمانؓ قال خطبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم في آخر يوم من شعبان فقال يايها الناس قد اظلكم شهر عظيم مبارك شهر فيه ليلة خير من الف شهر شهر جعل الله صيامه فريضة و قيام ليله تطوعا من تقرب فيه بخصلة كان كمن ادى فريضة فى ماسواه ومن ادى فريضة فيه كان كمن ادى سبعين فريضة فيما سواه وهو شهر الصبر والصبر ثوابه الجنة وشهر المواساة وشهر يزاد فى رزق المومن فيه من فطر فيه صائما كان مغفرة لذنوبه و عتق رقبته من النار وكان له مثل اجره من غير ان ينقص من اجره شئ قالوا يارسول الله ليس كلنا يجد مايفطر الصائم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يعطى الله هذا الثواب من فطر صائما على تمرة او شربة ماء او مذقة لبن وهو شهر اوله رحمة واوسطه مغفرة واخره عتق من النار من خفف عن مملوكه فيه غفر الله له واعتقه من النار واستكثروا فيه من اربع خصال خصلتين ترضون بهما ربكم وخصلتين لاغناء بكم عنهما فاما الخصلتان اللتان ترضون بهما ربكم فشهادة ان لا اله الا الله وتستغفرونه واما الخصلتان اللتان لاغنا بكم عنهما فتسئلون الله الجنة و

1. लम्बी, 2. फ़ायदा उठाने, 3. बिला शुब्ह वह बड़ा मेहरबान, सख़ी और करम वाला है।

تعوذون بہ من النار ومن اسقی صائما سقاہ اللہ من حوضی شربۃ
لا یظمأ حتی یدخل الجنۃ۔ (رواہ ابن خزیمۃ فی صحیحہ
وقال ان صح الخبر ورواہ البیہقی و رواہ ابو الشیخ بن حبان فی الثواب
باختصار عنہما وفی اسانیدہم علی بن زید بن جدعان ورواہ ابن
خزیمۃ ایضا والبیہقی باختصار عنہ من حدیث ابی ھریرۃ وفی اسنادہ

کثیر بن زید کذا فی الترغیب ص۲۰۲

قلت علی بن زید ضعفہ جماعۃ وقال الترمذی صدوق وصحح لہ حدیثا
فی السلام وحسن لہ غیر ما حدیث وکذا کثیر ضعفہ النسائی وغیرہ وقال
ابن عدی لم ار بحدیثہ باسا واخرج بحدیث ابن خزیمۃ فی صحیحہ
کذا فی رجال المنذری ص۲ لکن قال العینی الخبر منکر فتامل۔

1. हज़रत सलमान (रज़ि०) कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाबान की आख़िर तारीख़ में हम लोगों को वाज़ फ़र्माया[1] कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है, जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है। इस में एक रात है (शबे क़द्र), जो हज़ारों महीनों से बढ़कर है। अल्लाह तआला ने उसके रोज़े को फ़र्ज़ फ़र्माया और उसके रात के क़ियाम (यानी तरावीह) को सवाब की चीज़ बनाया है। जो शख़्स इस महीने में किसी नेकी के साथ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल[2] करे, ऐसा है, जैसा कि ग़ैर रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया और जो शख़्स इस महीने में किसी फ़र्ज़ को अदा करे, वह ऐसा है जैसा कि ग़ैर रमज़ान में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे। यह महीना सब्र का है। और सब्र का बदला जन्नत है और यह महीना लोगों के साथ ग़म ख़्वारी[3] करने का है। इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है। जो शख़्स किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार कराए, उस के लिए गुनाहों के माफ़ होने और आग से ख़लासी का सबब होगा और रोज़ेदार के सवाब की मानिंद उसको सवाब मिलेगा, मगर इस रोज़ेदार के सवाब से कुछ कम नहीं किया जाएगा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! हम में से हर शख़्स तो इतनी वुसअत[4]

1. नसीहत, 2. नज़दीकी, 3. यानी हमदर्दी करने का, 4. कुशादगी,

नहीं रखता कि रोज़ेदार को इफ़्तार कराये ? तो आप सल्ल० ने फ़र्माया कि (पेट भर खिलाने पर मौकूफ़ नहीं) यह सवाब तो अल्लाह जल्ल शानुहू एक खजूर से कोई इफ़्तार करा दे, या एक घूंट पानी पिला दे, या एक घूंट लस्सी पिला दे, उस पर भी मरहमत[1] फ़र्मा देते हैं। यह ऐसा महीना है कि इसका अव्वल हिस्सा अल्लाह की रहमत है और दर्मियानी हिस्सा मग्फ़िरत है और आखिरी हिस्सा आग से आज़ादी है। जो शख़्स इस महीने में हल्का कर दे अपने ग़ुलाम[2] (व ख़ादिम) के बोझ को, हक़ तआला शानुहू उसकी मग्फ़िरत फ़र्माते हैं और आग से आज़ादी फ़र्माते हैं। और चार चीज़ों की इसमें कसरत[3] रखा करो, जिन में से दो चीज़ें अल्लाह तआला की रज़ा[4] के वास्ते और दो चीज़ें ऐसी हैं कि जिन से तुम्हें चारा-ए-कार नहीं। पहली दो चीज़ें जिन से तुम अपने रब को राज़ी करो, वह कलमा-ए-तय्यिबा और इस्तग़फ़ार की कसरत है। और दूसरी दो चीज़ें यह हैं कि जन्नत की तलब करो और आग से पनाह मांगो। जो शख़्स किसी रोज़ेदार को पानी पिलाए, हक़ तआला (क़ियामत के दिन) मेरी हौज़ से उस को ऐसा पानी पिलायेंगे जिस के बाद जन्नत में दाखिल होने तक प्यास नहीं लगेगी।

फ़ – मुहद्दिसीन[5] को इसके बाज़ रुवात[6] में कलाम[7] है। लेकिन अव्वल तो फ़ज़ाइल में इस क़दर कलाम क़ाबिले तहम्मुल[8] है। दूसरे उसके अक्सर मज़ामीन की दूसरी रिवायत मुईद[9] है। इस हदीस से चन्द उमूर मालूम होते हैं-

अव्वल – नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एहतमाम कि शाबान की अख़ीर तारीख़ में ख़ास तौर से इसका वाज़ फ़र्माया और लोगों को तम्बीह फ़र्माई ताकि रमज़ानुल मुबारक का एक सेकेंण्ड भी ग़फ़लत से न गुज़र जाए। फिर इस वाज़ में तमाम महीने की फ़ज़ीलत बयान फ़र्माने के बाद चन्द अहम उमूर की तरफ़ ख़ास तौर से मुतवज्जह फ़र्माया -

सब से अव्वल शबे क़द्र, कि वह हक़ीक़त में बहुत ही अहम रात है। इन औराक़ में इसका बयान दूसरी फ़स्ल में मुस्तक़िल आएगा- इसके बाद इर्शाद है कि अल्लाह ने इसके रोज़े को फ़र्ज़ किया और इसके क़ियाम यानी तरावीह को सुन्नत किया। इससे मालूम हुआ कि तरावीह का इर्शाद भी ख़ुद हक़ सुब्हनाहू व तक़द्दुस की तरफ़ से है। फिर जिन रिवायात में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको

---

1. दे देते हैं, 2. नोकर, 3. ज़्यादती, 4. खुशी, 5. हदीस के आलिमों, 6. बयान करने वाले, 7. एतराज़, 8. बरदाश्त के क़ाबिल, 9. ताईद करने वाली,

अपनी तरफ़ मंसूब फ़र्माया कि मैंने सुन्नत किया, उनसे मुराद ताकीद है कि हुज़ूर सल्ल० उसकी ताकीद बहुत फ़र्माते थे। इसी वजह से सब अइम्मा इसके सुन्नत होने पर मुत्तफ़िक़[1] हैं। 'बुर्हान' में लिखा है कि मुसलमानों में से रवाफ़िज़[2] के सिवा कोई शख़्स इस का मुन्किर नहीं।

हज़रत मौलाना अश-शाह अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी रह० ने 'मा स ब त बिस्सुन्नत'[3] में बाज कुतुबे फ़िक़्ह से नक़ल किया है कि किसी शहर के लोग अगर तरावीह छोड़ दें तो उस के छोड़ने पर इमाम उनसे मुक़ातला करे।[4] इस जगह ख़ुसूसियत से एक बात का लिहाज रखने की ज़रूरत है, वह यह कि बहुत से लोगों को ख़्याल होता है कि जल्दी से किसी मस्जिद में आठ-दस दिन में कलाम मजीद सुन लें, फिर छुट्टी। यह ख़्याल रखने की बात है कि ये दो सुन्नतें अलग-अलग हैं। तमाम कलामुल्लाह शरीफ़ का तरावीह में पढ़ना या सुनना यह मुस्तक़िल सुन्नत है और पूरे रमजान शरीफ़ की तरावीह मुस्तक़िल सुन्नत है। पस इस सूरत में एक सुन्नत पर अमल हुआ और दूसरी रह गयी। अलबत्ता जिन लोगों को रमज़ानुल मुबारक में सफ़र वग़ैरह या और किसी वजह से एक जगह रोजाना तरावीह पढ़नी मुश्किल हो, उनके लिए मुनासिब है कि अव्वल क़ुरआन शरीफ़ चन्द रोज में सुन लें ताकि क़ुरआन शरीफ़ नाक़िस न रहे। फिर जहां वक़्त मिला और मौक़ा हुआ वहां तरावीह पढ़ ली कि क़ुरआन शरीफ़ भी इस सूरत में नाक़िस नहीं होगा और अपने काम का भी हर्ज न होगा।

हुज़ूर सल्ल० ने रोज़ा और तरावीह का ज़िक्र फ़र्माने के बाद आम फ़र्ज़ और नफ़्ल इबादात के एहतमाम की तरफ़ मुतवज्जह फ़र्माया कि इसमें एक नफ़्ल का सवाब दूसरे महीनों के फ़राइज़ के बराबर है और उसके एक फ़र्ज़ का सवाब दूसरे महीनों के सत्तर फ़राइज़ के बराबर है इस जगह हम लोगों को अपनी-अपनी इबादात की तरफ़ भी जरा ग़ौर करने की ज़रूरत है कि इस मुबारक महीने में फ़राइज़ का हम से किस क़दर एहतमाम होता है और नवाफ़िल में कितना इज़ाफ़ा होता है। फ़राइज़ में तो हमारे एहतमाम की यह हालत है कि सहर खाने के बाद जो सोते हैं तो अक्सर सुबह की नमाज़ क़ज़ा हो गयी और कम अज़ कम जमाअत तो अक्सरों की फ़ौत हो ही जाती है, गोया सहर खाने का शुक्रिया अदा किया कि अल्लाह के सबसे ज़्यादा मुहतम्म बिश्शान[5] फ़र्ज़ को या बिल्कुल क़ज़ा कर दिया या कम अज़ कम नाक़िस

1. एक राय, 2. शिया मस्लक का एक तब्क़ा, 3. किताब का नाम, 4. यानी जंग करे और लड़े, 5. बड़ी शान।

कर दिया कि बग़ैर जमाअत के नमाज़ पढ़ने को अहले उसूल ने अदा-ए-नाक़िस फ़र्माया है। और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तो एक जगह इर्शाद है कि मस्जिद के क़रीब रहने वालों की तो (गोया) नमाज़ बग़ैर मस्जिद के, होती ही नहीं।

मज़ाहिरे हक़[1] में लिखा है कि जो शख़्स, बग़ैर उज्र के बिदून जमाअत[2] नमाज़ पढ़ता है, उस के ज़िम्मे से फ़र्ज़ तो साक़ित[3] हो जाता है, मगर उस को नमाज़ का सवाब नहीं मिलता। इसी तरह दूसरी नमाज़ मग़रिब की भी जमाअत अक्सरों की इफ़्तार की नज़्र हो जाती है और रकअते ऊला[4] या तक्बीरे ऊला का तो ज़िक्र ही क्या है? और बहुत से लोग तो इशा की नमाज़ भी तरावीह के एहसान के बदले में वक़्त से पहले ही पढ़ लेते हैं। यह तो रमज़ानुल मुबारक में हमारी नमाज़ का हाल है, जो अहमतरीन फ़राइज़ में है कि एक फ़र्ज़ के बदले में तीन को ज़ाया किया,[5] ये तीन तो अक्सर हैं, वरना ज़ुहर की नमाज़ क़ैलूले[6] की और अस्र की जमाअत इफ़्तारी का सामान खरीदने की नज़्र होते हुए आंखों से देखा गया है इसी तरह और फ़राइज़ पर आप ख़ुद ग़ौर फ़र्मा लें कि कितना एहतमाम रमज़ानुल मुबारक में इनका किया जाता है। और जब फ़राइज़ का यह हाल है तो नवाफ़िल का क्या पूछना ? इश्राक़ और चाश्त तो रमज़ानुल मुबारक में सोने की नज़्र हो ही जाते हैं और अव्वाबीन का कैसे एहतमाम हो सकता है, जब कि अभी रोज़ा खोला है और आइन्दा तरावीह का सहम[7] है और तहज्जुद का वक़्त तो है ही ऐन सहर खाने का वक़्त, फिर नवाफ़िल की गुन्जाइश कहां ? लेकिन ये सब बातें बे-तवज्जोही और न करने की हैं, कि-

(तू ही अगर न चाहे तो बातें हज़ार हैं।)

कितने अल्लाह के बन्दे हैं कि जिन के लिए इन्हीं औक़ात में सब चीज़ों की गुनजाइश निकल आती है। मैंने अपने आक़ा हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब[8] नव्वरल्लाहु मरक़दहू को मुतअद्दद[9] रमज़ानों में देखा है कि बावजूद ज़ौफ़[10] और पीराना साली[12] के मग़रिब के बाद नवाफ़िल में सवा पारा पढ़ना या सुनाना और उसके बाद आधा घन्टे खाना वग़ैरह ज़रूरियात के बाद हिन्दुस्तान के क़ियाम में तक़रीबन दो सवा दो घंटे तरावीह में ख़र्च होते थे और मदीना पाक के क़ियाम में तक़रीबन तीन

1. तर्जुमा मिश्कात शरीफ़, 2. जमाअत बग़ैर 3. उतर जाता है, 4. पहली रक्अत, 5. बर्बाद किया, 6. दोपहर का आराम, 7. डर, 8. अंबहटा, ज़िला सहारनपुर के रहने वाले थे, मज़ाहिरे उमूल, सहारनपुर के शैख़ुल हदीस थे, मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पायी, 9. कई, 10. कमज़ोरी 11. बुढ़ापा,।

घंटे में इशा और तरावीह से फ़रागत होती। इसके बाद आप हस्बे इख़्तिलाफ़ मौसम दो तीन घंटे आराम फ़र्माने के बाद तहज्जुद में तिलावत फ़र्माते और सुबह से निस्फ़[1] घंटे क़ब्ल सहर तनावुल[2] फ़र्माते। इसके बाद से सुबह की नमाज़ तक कभी हिफ़्ज़ तिलावत फ़र्माते और कभी औराद व वज़ाइफ़ में मश्गूल रहते। इस्फ़ार यानी चांदनी[3] में सुबह की नमाज़ पढ़ कर इश्राक़ तक मुराक़िब रहते और इश्राक़ के बाद तक़रीबन एक घंटा आराम फ़र्माते, इसके बाद से तक़रीबन बारह बजे तक और गर्मियों में एक बजे तक 'बज़लुल जहूद'[4] तहरीर फ़र्माते और डाक वग़ैरह मुलाहज़ा फ़र्मा कर जवाब लिखाते। इसके बाद ज़ुहर की नमाज़ तक आराम फ़र्माते और ज़ुहर से अस्र तक तिलावत फ़र्माते, अस्र से मग़रिब तक तस्बीह में मशग़ूल रहते और हाज़िरीन से बातचीत भी फर्माते, बज़लुल जहूद ख़त्म हो जाने के बाद सुबह का कुछ हिस्सा तिलावत में और कुछ कुतुब बीनी[5] में, 'बज़लुल जहूद' और 'वफ़ा उल वफ़ा' ज़्यादातर इस वक़्त ज़ेरे नज़र रहती थी। यह इस पर था कि रमज़ानुल मुबारक में मामूलात में कोई ख़ास तग़य्युर[6] न था कि नवाफ़िल का यह मामूल दायमी[7] था और नवाफ़िल मज़्कूरा का तमाम साल भी एहतमाम रहता था। अलबत्ता रकआत के तूल[8] में रमज़ानुल मुबारक में इज़ाफ़ा हो जाता था, वरना जिन अकाबिर[9] के यहां रमज़ानुल मुबारक के ख़ास मामूलात मुस्तक़िल, थे उनका इत्तिबाअ[10] तो हर शख़्स से निभना भी मुश्किल है।

हज़रत अक़्दस मौलाना शेख़ुल हिन्द[11] रहमतुल्लाह अलैहि तरावीह के बाद से सुबह की नमाज़ तक नवाफ़िल में मशग़ूल रहते थे। और यके बाद दीगरे[12] मुतफ़र्रिक़[13] हुफ़्फ़ाज़ से कलाम मजीद ही सुनते रहते थे। और हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी क़द्दस सिर्रहू के यहां तो रमज़ानुल मुबारक का महीना दिन व रात तिलावत ही का होता था कि इसमें डाक भी बन्द, और मुलाक़ात भी ज़रा गवारा न थी। बाज़ मख़्सूस ख़ुद्दाम को सिर्फ़ इतनी इजाज़त होती थी कि तरावीह के बाद जितनी देर हज़रत सादी चाय के एक दो फ़िन्जान नोश फ़र्मायें उतनी देर हाज़िरे ख़िदमत हो जाया करें। बुज़ुर्गों के ये मामूलात इस वजह से नहीं लिखे जाते कि सरसरी निगाह से उन को पढ़ लिया जाये या कोई तफ़रीही फ़िक़्रा उन पर कह दिया जाए

---

1. आधा, 2. खाते, 3. यानी जब अच्छी तरह सुबह हो जाती, 4. बज़लुल जहूद पांच जिल्दों में मुकम्मल शरह अबूदाऊद की है, 5. किताब देखने में, 6. तब्दीली, 7. हमेशा-हमेशा का, 8. लम्बाई, 9. बुज़ुर्गों, 10. पैरवी, 11. मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी, असीरे मालटा, 12. एक-एक करके, 13. अलग-अलग,

बल्कि इसलिए हैं कि अपनी हिम्मत के मुवाफ़िक़ उनका इत्तिबाअ किया जाए और हत्तल वसअ[1] पूरा करने का एहतमाम किया जाए कि हर लाइन अपने मख़्सूस इम्तियाज़ात में दूसरे पर फ़ाइक़[2] है। जो लोग दुनियावी मशाग़िल[3] से मजबूर नहीं हैं, क्या ही अच्छा हो कि ग्यारह महीने ज़ाया कर देने के बाद एक महीने मर मिटने की कोशिश कर ले। मुलाज़िम पेशा हज़रात जो दस बजे से चार बजे तक दफ़्तर में रहने के पाबन्द हैं, अगर सुबह से दस बजे तक कम अज़ कम रमज़ानुल मुबारक का मुबारक महीना तिलावत में ख़र्च कर दें तो क्या दिक़्क़त है। आख़िर दुनियावी ज़रूरियात के लिए दफ़्तर के अलावा औक़ात में से वक़्त निकाला ही जाता है। और खेती करने वाले तो न किसी के नौकर, न औक़ात के तग़य्युर में उनको ऐसी पाबन्दी कि उसको बदल न सकें या खेत पर बैठे-बैठे तिलावत न कर सकें और ताजिरों के लिये तो इसमें कोई दिक़्क़त ही नहीं कि इस मुबारक महीने में दुकान का वक़्त थोड़ा सा कम कर दें या कम अज़ कम दुकान ही पर तिजारत के साथ तिलावत भी करते रहा करें कि इस मुबारक महीने को कलामे इलाही के साथ बहुत ही ख़ास मुनासबत है।

इसी वजह से उमूमन[4] अल्लाह जल्ल शानुहू की तमाम किताबें इसी माह में नाज़िल हुई हैं, चुनांचे क़ुरआन पाक लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर तमाम का तमाम इसी माह में नाज़िल हुआ और वहां से हस्बे मौक़ा थोड़ा-थोड़ा तेईस साल के अर्से में नाज़िल हुआ। इसके अलावा हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सहीफ़े इसी माह की यकुम[5] या तीन तारीख़ को अता हुए। और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़बूर 18 या 12 रमज़ान को मिली और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरेत 6 रमज़ानुल मुबारक को अता हुई, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इन्जील 12 या 13 रमज़ानुल मुबारक को मिली, जिससे मालूम होता है कि इस माह को कलामे इलाही के साथ ख़ास मुनासबत है। इसी वजह से तिलावत की कसरत इस महीने में मन्क़ूल है। और मशाइख़ का मामूल, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हर साल रमज़ान में तमाम क़ुरआन शरीफ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुनाते थे और बाज़ रिवायात में आया है कि नबी करीम सल्ल० से सुनते थे। उलमा ने इन दोनों हदीसों के मिलाने से क़ुरआन पाक के दौर करने का जो आम तौर से राइज है, इस्तिहबाब[6] निकाला है। बिल जुम्ला तिलावत का ख़ास एहतमाम

---

1. जहां तक बस चले, 2. बढ़कर, 3. कामों, 4. आम तौर से ?, 5. पहली, 6. पसंदीदा काम।

जितना भी मुम्किन हो सके, करे और जो वक़्त तिलावत से बचे उसको भी ज़ाया करना मुनासिब नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी हदीस के आख़िर में चार चीज़ों की तरफ़ ख़ास तौर से मुतवज्जह फ़र्माया और इस महीने में इनकी कसरत[1] का हुक्म फ़र्माया-कलमा-ए-तय्यबा और इस्तिग़फ़ार और जन्नत के हुसूल और दोज़ख़ से बचने की दुआ। इसलिए जितना भी वक़्त मिल सके इन चीज़ों में सर्फ़ करना सआदत समझे और यही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद मुबारक की क़द्र है। क्या दिक़्क़त है कि अपने दुनियावी कारोबार में मशग़ूल रहते हुए ज़बान से दरूद शरीफ़ या कलमा तय्यबा का भी विर्द रहे और कल को यह कहने का मुंह बाक़ी रहे।

मैं गो रहा रहीन सितम हाए रोज़गार।
लेकिन तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल नहीं रहा।।

इसके बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस महीने की कुछ ख़ुसूसियतें और आदाबे इर्शाद फ़र्माए-

अव्वलन यह कि यह सब्र का महीना है। यानी अगर रोज़ा वग़ैरह में कुछ तक्लीफ़ हो तो इसे ज़ौक़ व शौक़ से बर्दाश्त करना चाहिए। यह नहीं कि मार-धाड़, हौल-पुकार जैसा कि अक्सर लोगों की गर्मी के रमज़ान में आदत होती है। इसी तरह अगर इत्तिफ़ाक़ से सहर न खायी गयी तो सुबह से ही रोज़े का सोग शुरू हो गया, इसी तरह रात की तरावीह में अगर दिक़्क़त हो तो इसको बड़ी बशाशत[3] से बर्दाश्त करना चाहिए। इसको मुसीबत और आफ़त न समझें कि यह बड़ी सख़्त महरूमी की बात है। हम लोग दुनियावी मामूली अग़राज की बदौलत खाना-पीना राहत व आराम सब छोड़ देते हैं तो क्या रज़ा-ए-इलाही के मुक़ाबले में इन चीज़ों की कोई वक़अत हो सकती है।[4]

फिर इर्शाद है कि यह ग़मख़्वारी का महीना है यानी ग़ुरबा व मसाकीन के साथ मदारात[5] का बर्ताव करना। अगर दस चीज़ें अपनी इफ़्तारी के लिए तैयार की हैं तो दो-चार ग़ुरबा के लिए भी कम अज़ कम होनी चाहिएं, वरना असल तो यह था कि इनके लिए अपने से अफ़ज़ल न होता तो मुसावात[6] ही होती। ग़रज़ जिस क़दर भी हिम्मत हो सके अपने इफ़्तार व सहर के खाने में ग़ुरबा का हिस्सा भी ज़रूर लगाना चाहिए। सहाबा किराम रज़ि० उम्मत के लिए अमली नमूना और दीन के

---

1. ज़्यादती, 2. हंसी-ख़ुशी, 3. क़ीमत, 4. इज़्ज़त, 5. बराबरी।

हर जुज़[1] को इस क़दर वाज़ेह तौर पर अमल फ़र्माकर दिखला गए कि अब हर नेक काम के लिए उनकी शाहराहे अमल खुली हुई है। ईसार व ग़मख्वारी के बाब में इन हज़रात का इत्तिबाअ भी दिल-गुर्दे वाले का काम है। सैंकड़ों-हज़ारों वाक़िआत हैं जिनको देख कर बजुज़[2] हैरत के कुछ नहीं कहा जाता।

एक वाक़िया मिसालन लिखता हूं। अबू जह्म रज़ि० कहते हैं कि यरमूक की लड़ाई में मैं अपने चचाज़ाद भाई को तलाश करने चला और इस ख्याल से पानी का मशकीज़ा भी ले लिया कि अगर उस में कुछ रमक़[3] बाक़ी हुई तो पानी पिला दूंगा और हाथ मुंह धो दूंगा। वह इत्तिफ़ाक़ से पड़े हुए मिले। मैंने उन से पानी को पूछा, उन्होंने इशारे से मांगा कि इतने में बराबर से दूसरे ज़ख्मी ने आह की, चचाज़ाद भाई ने पानी पीने से पहले उसके पास जाने का इशारा किया। उसके पास गया और पूछा तो मालूम हुआ कि वह भी प्यासे हैं। और पानी मांगते हैं कि इतने में उनके पास वाले ने इशारा कर दिया। उन्होंने भी ख़ुद पानी पीने से क़ब्ल[4] उस के पास जाने का इशारा किया, इतने में वहां तक पहुंचा तो उन की रूह परवाज़ कर चुकी थी। वापस दूसरे साहब के पास पहुंचा तो वह भी ख़त्म हो चुके थे, तो लौट कर चचाज़ाद भाई के पास आया तो देखा कि इनका भी विसाल[5] हो गया। ये हैं तुम्हारे अस्लाफ़[6] के ईसार, कि ख़ुद प्यासे जान दे दी और अजनबी भाई से पहले पानी पीना गवारा न किया।

رضی اللہ عنہم وارضاھم ورزقنا اتباعھم۔ آمین۔

रज़ियल्लाहु अन्हुम व अर्ज़ाहुम व र ज़ क़ ना इत्तिबाअ हुम आमीन।

'रूहुल् बयान' में सुयूती (रहम०) की 'जामिउस्सग़ीर' और सख़ावी (रहम०) की 'मक़ासिद' से ब रिवायत हज़रत उमर (रज़ि०) नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है है कि मेरी उम्मत में हर वक़्त पांच सौ बरगुज़ीदा[7] बन्दे और चालीस अब्दाल रहते हैं। जब कोई शख़्स उन में से मर जाता है, तो फ़ौरन दूसरा इसकी जगह ले लेता है। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया कि इन लोगों के ख़ुसूसी आमाल क्या हैं ? तो आपने इर्शाद फ़र्माया कि ज़ुल्म करने वालों से दर गुज़र[8] करते हैं और बुराई का मामला करने वालों से (भी) एहसान का बर्ताव करते हैं और अल्लाह

1. हिस्से, 2. के अलावा, 3. यानी कुछ भी जान हुई, 4. पहले, 5. मौत हो गयी, 6. बुज़ुर्गों, 7. चुने हुऐ, 8. माफ़ करते हैं।

के अता फ़र्माए हुए रिज़्क़ में लोगों के साथ हमदर्दी और ग़मख़्वारी का बर्ताव करते हैं। एक दूसरी हदीस से नक़ल किया है कि जो शख़्स भूखे को रोटी खिलाए या नंगे को कपड़ा पहनाए या मुसाफ़िर को शब बाशी[1] की जगह दे, हक़ तआला शानुहू क़ियामत के हौलों से उस को पनाह देते हैं।

यह्या बरमकी (रहम०) हज़रत सुफ़ियान सौरी (रहम०) पर हर माह एक हज़ार दिरहम ख़र्च करते थे। तो हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० सज्दे में उनके लिए दुआ करते थे कि या अल्लाह! यह्या ने मेरी दुनिया की किफ़ायत की, तू अपने लुत्फ़ से उस की आख़िरत की किफ़ायत फ़र्मा। जब यह्या का इंतिक़ाल हुआ तो लोगों ने ख़्वाब में उनसे पूछा कि क्या गुज़री? उन्होंने कहा कि सुफ़ियान (रहम०) की दुआ की बदौलत मग़्फ़िरत हुई।

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने रोज़ा इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत इर्शाद फ़र्माई। एक और रिवायत में आया है कि जो शख़्स हलाल कमाई में रमज़ान में रोज़ा इफ़्तार कराए, उस पर रमज़ान की रातों में फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रील अलैहिस्सलाम उससे मुसाफ़हा करते हैं और जिससे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मुसाफ़हा करते हैं उसकी अलामत यह है कि उस के दिल में रिक़्क़त[2] पैदा होती है। और आंखों से आंसू बहते हैं। हम्माद बिन सलमा एक मशहूर मुहद्दिस हैं। रोज़ाना पचास आदमियों के रोज़े इफ़्तार कराने का एहतमाम करते थे।

(रुहुलबयान)

इफ़्तार की फ़ज़ीलत इर्शाद फ़र्माने के बाद फ़र्माया है कि इस महीने का अव्वल हिस्सा रहमत है। यानी हक़ तआला शानुहू का इनाम मुतवज्जह होता है, और यह रहमते आम्मा[3] सब मुसलमानों के लिए होती है। इसके बाद जो लोग उसका शुक्र अदा करते हैं उनके लिए इस रहमत में इज़ाफ़ा होता है ल इन शकर्तुम ल अज़ीदन्नकुम[4] और इसके दर्मियानी हिस्से से मग़्फ़िरत शुरू हो जाती है। इसलिए कि रोज़ों का कुछ हिस्सा गुज़र चुका है। इस का मुआवज़ा और इक्राम मग़्फ़िरत के साथ शुरू हो जाता है और आख़िरी हिस्सा तो बिल्कुल आग से ख़लासी है ही।

और भी बहुत सी रिवायात में ख़त्म रमज़ान पर आग से ख़लासी की बशारतें[5]

---

1. रात गुज़ारने, 2. डर-नर्मी, 3. आम रहमत, 4. अगर तुम ने शुक्र अदा किया, तो मैं (रहमत) बढ़ा दूंगा, 5. ख़ुश ख़बरियां।

वारिद हुई हैं। रमज़ान के तीन हिस्से किये गये जैसा कि मज़्मून वाला से मालूम हुआ। बन्दा-ए-नाचीज के ख़्याल में तीन हिस्से रहमत और मग़्फ़िरत और आग से ख़लासी के दर्मियान में फ़र्क़ यह है कि आदमी तीन तरह के हैं-

एक वह लोग, जिन के ऊपर गुनाहों का बोझ नहीं, उनके लिए शुरू ही से रहमत और इन्आम की बारिश हो जाती है।

दूसरे वह लोग जो मामूली गुनाहगार हैं। इनके लिए कुछ हिस्सा रोज़ा रखने के बाद उन रोज़ों की बरकत और बदले में मग़्फ़िरत और गुनाहों की माफ़ी होती है।

तीसरे वह जो ज़्यादा गुनाहगार हैं। उनके लिए ज़्यादा हिस्सा रोज़ा रखने के बाद आग से ख़लासी होती है। और जिन लोगों के लिए इब्तिदा ही से रहमत थी और उनके गुनाह बख़्शे बख़्शाये थे, उनका तो पूछना ही क्या, उन के लिए रहमतों के किस क़दर अम्बार होंगे।

वल्लाहु अअलमु व इल्मुहू अतम्मु०

इसके बाद हुज़ूर (सल्ल०) ने एक और चीज की तरफ़ रग़्बत दिलाई है कि आक़ा लोग अपने मुलाज़िमों पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़[1] रखें, इसलिए कि आख़िर वे भी रोज़ेदार हैं, काम की ज़्यादती से उनको रोजे में दिक्क़त होगी, अलबत्ता अगर काम ज़्यादा हो तो इसमें मुज़ायक़ा नहीं कि रमज़ान के लिए हंगामी मुलाज़िम एक आध बढ़ा लें, मगर जभी कि मुलाज़िम रोज़ादार भी हो, वरना उसके लिए रमज़ान, बे-रमज़ान बराबर और इस ज़ुल्म व बे-ग़ैरती का तो ज़िक्र ही क्या कि खुद रोज़ाख़ोर[2] होकर बेहया मुंह से रोज़ेदार मुलाज़िमों से काम ले और नमाज़ रोज़े की वजह से अगर तामील में कुछ तसाहुल[3] हो तो बरसने लगे।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

व स यअलमुल्लज़ी न ज़ ल मू अय य मुन्क़लिबिंय्यं क़लिबून०

(तर्जुमा) और अक़रीब ज़ालिम लोगों को मालूम हो जाएगा कि वह कैसी (मुसीबत) की जगह लौट कर जायेंगे, मुराद जहन्नम है।

---

1. यानी काम का बोझ कम कर दें, 2. बे-रोज़ा होकर, 3. कोताही,।

इसके बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमजानुल मुबारक में चार चीज़ों की कसरत का हुक्म फ़र्माया–

अव्वल – कलमा-ए-शहादत, अहादीस में उस को अफ़जलुज्जिक्र इर्शाद फ़र्माया है। मिश्कात में ब रिवायत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से नक़ल किया है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने एक मर्तबा अल्लाह जल्ल जलालुहू की बारगाह में अर्ज किया कि या अल्लाह ! तू मुझे कोई ऐसी दुआ बतला दे कि उसके साथ मैं तुझे याद किया करूं और दुआ किया करूं। वहां से लाइला ह इल्लल्लाह[1] इर्शाद हुआ। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया कि यह कलमा तो तेरे सारे ही बंदे कहते हैं, मैं तो कोई दुआ या ज़िक्र मख़्सूस चाहता हूं। वहां से इर्शाद हुआ कि ए मूसा! अगर सातों आसमान और उनके आबाद करने वाले मेरे सिवा यानी मलाइका और सातों ज़मीन एक पलड़े में रख दिए जायें और दूसरे में कलिमा-ए-तय्यिबा रख दिया जाए तो वही झुक जायेगा।

एक हदीस में वारिद हुआ है कि जो शख़्स इख़्लास से इस कलिमे को पढे, आसमान के दरवाज़े उस के लिए फ़ौरन खुल जाते हैं और अर्श तक पहुंचने में किसी क़िस्म की रोक नहीं होती-बशर्ते कि कहने वाला कबाइर[2] से बचे। आदतुल्लाह इसी तरह जारी है कि ज़रूरते आम्मा[3] की चीज़ को कसरत से मरहमत फ़र्माते हैं। दुनिया में ग़ौर करने से मालूम होता है कि जो चीज़ जिस क़दर ज़रूरत की होती है उतनी आम होती है। मसलन पानी है कि आम ज़रूरत की चीज है, हक़ तआला शानुहू की बेपायां रहमत ने उस को किस क़दर आम कर रखा है और किमयाई जैसी लग्व और बेकार चीज़ को उनका कर दिया इसी तरह कलमा तय्यिबा अफ़ज़लुज़्ज़िक्र है, मुतअद्दद अहादीस से इस की तमाम अज़्कार पर अफ़ज़िलयत मालूम होती है। इसको सब से आम कर रखा है। कि कोई महरूम न रहे। फिर भी अगर कोई महरूम रहे तो उस की बदबख़्ती है। बिलजुम्ला बहुत सी अहादीस इसकी फ़ज़ीलत में वारिद हुई हैं, जिनको इख़्तिसारन[4] तर्क किया जाता है।

दूसरी चीज़ जिस की कसरत करने को हदीस बाला में इर्शाद फ़रमाया गया, वह इस्तिग़्फ़ार है। अहादीस में इस्तिग़्फ़ार की भी बहुत ही फ़ज़ीलत वारिद हुई है। एक हदीस में वारिद हुआ है कि जो शख़्स इस्तिग़्फ़ार की कसरत रखता है, हक़ तआला शानुहू हर तंगी में उसके लिए रास्ता निकाल देते हैं और हर ग़म से ख़लासी नसीब फ़र्माते हैं और इसी तरह रोजी पहुंचाते हैं कि उसको गुमान भी नहीं होता। एक

1. नहीं है कोई इबादत के लायक़, मगर अल्लाह, 2. बड़े गुनाह, 3. जिस चीज़ की सब को ज़रूरत हो, 4. मुख़्तसर करने की वजह से,।

हदीस में आया है कि आदमी गुनाहगार तो होता ही है बेहतरीन गुनाहगार वह है जो तौबा करता रहे। एक हदीस क़रीब आने वाली है कि जब आदमी गुनाह करता है तो एक काला नुक़्ता उसके दिल पर लग जाता है। अगर तौबा करता है तो वह धुल जाता है वरना बाक़ी रहता है।

इसके बाद हुज़ूर (सल्ल०) ने दो चीज के मांगने का अम्र फ़र्माया है, जिनके बग़ैर चारा ही नहीं, - जन्नत का हुसूल और दोज़ख़ से अम्न - अल्लाह अपने फ़ज़्ल से मुझे भी मरहमत फ़रमाये और तुम्हें भी।

۲ - عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم اعطیت امتی خمس خصال فی رمضان لم تعطہن امۃ
قبلہم خلوف فم الصائم اطیب عند اللہ من ریح المسک وتستغفر لہم
الحیتان حتی یفطروا ویزین اللہ عز وجل کل یوم جنتہ ثم یقول یوشک
عبادی الصالحون ان یلقوا عنہم المؤنۃ ویصیروا الیک وتصفد فیہ
مردۃ الشیاطین فلا یخلصوا فیہ الی ما کانوا یخلصون الیہ فی غیرہ ویغفر لہم
فی اخر لیلۃ قیل یا رسول اللہ اہی لیلۃ القدر قال لا

2. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया कि मेरी उम्मत को रमज़ान शरीफ़ के बारे में पांच चीजें मख़सूस तौर पर दी गयी हैं, जो पहली उम्मतों को नहीं मिली हैं-

(1) यह कि उन के मुंह की बदबू अल्लाह के नज़दीक मुश्क से ज़्यादा पसंदीदा है-

(2) यह कि इनके लिए दरिया की मछलियां तक दुआ करती हैं और इफ़्तार के वक़्त तक करती रहती हैं।

(3) जन्नत हर रोज़ उन के लिए आरास्ता[1] की जाती है, फिर हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं कि क़रीब है कि मेरे नेक बन्दे (दुनिया की) मशक़्क़तें अपने ऊपर से फेंक कर तेरी तरफ़ आवें,

(4) इसमें सरकश श्यातीन क़ैद कर दिए जाते हैं कि वे रमज़ान में उन बुराईयों

---

1. सजायी जाती है,।

की तरफ नहीं पहुंच सकते जिनकी तरफ ग़ैर रमज़ान में पहुंच सकते हैं।

5. रमज़ान की आख़िरी रात में रोज़ेदारों के लिए मग़्फ़िरत की जाती है। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज किया कि यह शबे मग़्फ़िरत, शबे क़द्र है। फ़र्माया नहीं बल्कि दस्तूर यह है कि मज़दूर को काम ख़त्म होने के वक़्त मज़दूरी दे दी जाती है।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस पाक में पांच ख़ुसूसियतें इर्शाद फ़र्माई हैं, जो इस उम्मत के लिए हक़ तआला शानुहू की तरफ से मख़सूस इनाम हुई और पहली उम्मत के रोज़ेदारों को मरहमत नहीं हुई काश हमें इस नेमत की क़द्र होती और इन ख़ुसूसी अताया[1] के हुसूल की कोशिश करते।

अव्वल यह कि रोज़ेदार के मुंह की बदबू जो भूख की हालत में हो जाती है, हक़ तआला शानुहू के नज़दीक मुश्क से भी ज़्यादा पसंदीदा है। शुरहि हदीस[2] के इस लफ़्ज के मतलब में आठ क़ौल हैं, जिनको मुअत्ता[3] की शरह में बन्दा मुफ़स्सल नक़्ल कर चुका है, मगर बन्दे के नज़दीक इनमें से तीन क़ौल राजेह हैं। अव्वल यह कि हक़ तआला शानुहू आख़िरत में इस बदबू का बदला और सवाब ख़ुश्बू से अता फ़र्मायेंगे जो मुश्क से ज़्यादा उम्दा और दिमाग़परवर होगी। यह मतलब तो ज़ाहिर है और इसमें कुछ बुअद[4] भी नहीं, नीज़, दुर्रे मन्सूर[5] की एक रिवायत में इसकी तसरीह भी है। इसलिए यह बमंज़िले मुतअय्यन[6] के हैं। दूसरा क़ौल यह है कि क़ियामत में जब क़ब्रों से उठेंगे, तो यह अलामत होगी कि रोज़ेदार के मुंह से एक ख़ुश्बू, जो मुश्क से भी बेहतर होगी, वह आएगी। तीसरा मतलब जो बन्दे की नाक़िस राय में इन दोनों से अच्छा है, वह यह कि दुनिया ही में अल्लाह के नज़दीक इस बू की क़द्र मुश्क की ख़ुश्बू से ज़्यादा पसंदीदा है और यह अम्र बाबुल मुहब्बत[7] से है। जिसको किसी से मुहब्बत व ताल्लुक़ होता है, उसकी बदबू भी फ़रेफ्ता के लिए हज़ार ख़ुश्बूओं से बेहतर हुआ करती है।

ऐ हाफ़िज़े मिस्कीं च कुनी मुश्के ख़तन रा,
अज गेसू-ए-अहमद बस्तान इत्रे अदन रा।

---

1. तोहफ़े, 2. हदीस की शरह करने वाले, 3. मुअत्ता इमाम मालिक की अरबी शरह 'औजज़ुल मसालिक' 4. दूरी, नामुम्किन, 5. किताब का नाम, 6. मक़रर 7. मुहब्बत में से हैं,

मक़्सूद रोज़ेदार का कमाले तक़र्रुब[1] है कि ब-मंज़िले महबूब के बन जाता है। रोज़ा हक़ तआला शानुहू की महबूबतरीन इबादतों में से है। इसी वजह से इर्शाद है कि हर नेक अमल का बदला मलाइका[2] देते हैं। मगर रोज़े का बदला मैं ख़ुद अता करता हूं। इसलिए कि वह ख़ालिस मेरे लिए है। बाज़ मशाइख़ से मंक़ूल है कि यह लफ़्ज़ -उज्ज़ा बिहि' है यानी यह कि इसके बदले में मैं ख़ुद अपने को देता हूं और महबूब के मिलने से ज़्यादा ऊंचा बदला और क्या हो सकता है ? एक हदीस में इर्शाद है कि सारी इबादतों का दरवाज़ा रोज़ा है। यानी रोज़े की वजह से क़ल्ब मुनव्वर हो जाता है। जिस की वजह से हर इबादत की रग़बत पैदा होती है मगर जब ही कि रोज़ा हो, सिर्फ़ भूखा रहना मुराद नहीं, बल्कि आदाब की रियायत रख कर, जिन का बयान हदीस न० 9 के ज़ैल में मुफ़स्सल आयेगा।

इस जगह एक ज़रूरी मस्अला क़ाबिले तम्बीह यह है कि इस मुंह की बदबू वाली हदीसों की बिना पर बाज़ अइम्मा[3] रोज़ेदार को शाम के वक़्त मिस्वाक करने को मना फ़र्माते हैं। हनफ़िया के नज़दीक मिस्वाक हर वक़्त मुस्तहब है, इसलिए कि मिस्वाक से दांतों की बू ज़ाइल होती है और हदीस में जिस बू का ज़िक्र है वह मेदे के ख़ाली होने की है, न कि दांतो की। हनफ़िया के दलाइल अपने मौक़े पर कुतुबि फ़िक़्ह[4] व हदीस में मौजूद है।

दूसरी ख़ुसूसियत मछलियों के इस्तिग़फ़ार करने की है। इससे मक़्सूद कसरत से दुआ करने वालों का बयान है। मुतअद्दद[5] रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है। बाज़ रिवायात में है कि मलाइका इसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। मेरे चचा[6] जान का इर्शाद है कि मछलियों की ख़ुसूसियत ब-ज़ाहिर इस वजह से है कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है ! إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا

(तर्जुमा) जो लोग ईमान लाये और अच्छे आमाल किए, हक़ तआला शानुहू उनके लिए (दुनिया ही में) महबूबियत फ़र्मा देंगे और हदीस पाक में इर्शाद है, जब हक़ तआला शानुहू किसी बन्दे से मुहब्बत फ़र्माते हैं, तो जिब्रील अलैहिस्सलाम

---

1. क़ुर्ब की इन्तिहा, 2. फ़रिश्ते, 3. कुछ इमाम, 4. फ़िक़्ह की किताबों, 5. कई, 6. यानी मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब कांधलवी रहमतुल्लाह अलैहि।

से इर्शाद फ़र्माते हैं कि मुझे फ़्लां शख़्स पसन्द है। तुम भी उससे मुहब्बत करो। वे ख़ुद मुहब्बत करने लगते हैं और आसमान पर आवाज़ देते हैं। कि फ़्लां बन्दा अल्लाह का पसन्दीदा है। तुम सब उससे मुहब्बत करो, पस उस आसमान वाले उससे मुहब्बत करते हैं और फिर उसके लिए ज़मीन पर क़ुबूलियत रख दी जाती है। और आम क़ायदे की बात यह है कि हर शख़्स की मुहब्बत उसके पास रहने वालों को होती है, लेकिन उस की मुहब्बत इतनी आम होती है कि आस-पास रहने वालों ही को नहीं, बल्कि दरिया के रहने वाले जानवरों को भी इससे मुहब्बत होती है कि वे भी दुआ करते हैं। और गोया बर[1] से मुतजाविज़ हो कर बह्र[2] तक पहुंचना महबूबियत की इन्तिहा है। नीज़ जंगल के जानवरों का दुआ करना ब तरीक़े औला मालूम हो गया।

तीसरी ख़ुसूसियत जन्नत का मुज़य्यन[3] होना है यह भी बहुत सी रिवायात में वारिद हुआ है। बाज़ रिवायात में आया है कि साल के शुरू ही से रमज़ान के लिए जन्नत को आरास्ता करना शुरू हो जाता है और क़ायदे की बात है कि जिस शख़्स के आने का जिस क़दर एहतमाम होता है, उतना ही पहले से इसका इंतिज़ाम किया जाता है। शादी का एहतमाम महीनों पहले से किया जाता हैं।

चौथी ख़ुसूसियत सरकश शयातीन का क़ैद हो जाना है कि जिसकी वजह से मआसी[4] का ज़ोर कम हो जाता है। रमज़ानुल मुबारक में रहमत के जोश और इबादत की कसरत का मुक़्तज़ा[5] यह था कि शयातीन बहकाने में बहुत ही अन-थक कोशिश करते और पांव चोटी का ज़ोर ख़त्म कर देते हैं और इसी वजह से मआसी की कसरत इस महीने में इतनी हो जाती है कि हद से ज़्यादा। लेकिन बावजूद इस के यह मुशाहदा[6] है और मुहक़्क़क़[7] कि मजमूई तौर से गुनाहों में बहुत कमी हो जाती है। कितने शराबी-कबाबी ऐसे हैं कि रमज़ान में ख़ुसूसियत से नहीं पीते और इसी तरह और भी गुनाहों में खुली कमी हो जाती है लेकिन इसके बावजूद गुनाह होते ज़रूर हैं। मगर इसके सरज़द होने से इस हदीस पाक में तो कोई इश्काल[8] नहीं। इसलिए कि इस का मज़मून ही यह है कि सरकश शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं, इस बिना पर अगर वह गुनाह ग़ैर सरकशों का असर हो तो कुछ ख़लजान[9] नहीं।

---

1. ख़ुश्की, 2. तरी, समुद्र, 3. सजा हुआ होना, 4. गुनाहों, 5. तक़ाज़ा, 6. देखा हुआ, 7. तहक़ीक़ किया हुआ, 8. शुब्हा, 9. परेशानी।

अलबत्ता दूसरी रिवायत में सरकश की क़ैद बग़ैर मुत्लकन श्यातीन के मुक़य्यद होने का इर्शाद भी मौजूद है। पस अगर इन रिवायात से भी सरकश श्यातीन का ही क़ैद होना मुराद है कि बसा औक़ात[1] लफ़्ज मुत्लक़ बोला जाता है मगर दूसरी जगह से इस की क़यूदात[2] मालूम हो जाती हैं, तब भी कोई इश्काल नहीं रहा। अलबत्ता अगर इन रिवायात से सब श्यातीन का महबूस होना[3] मुराद हो, तब भी इन मआसी के सादिर होने से कुछ ख़लजान न होना चाहिए। इसलिए कि अगरचे मआसी उमूमन श्यातीन के असर से होते हैं, मगर साल भर तक उनके तलब्बुस[4] और इख़्तिलात और ज़हरीले असर के जमाव की वजह से नफ़्स उन के साथ इस दर्जा मानूस और मुतास्सिर हो जाता है कि थोड़ी बहुत ग़ैबत महसूस नहीं होती। बल्कि वही ख़्यालात अपनी तबियत बन जाती है और यही वजह है कि बग़ैर रमज़ान के जिन लोगों से गुनाह ज़्यादा सरज़द होते हैं, रमज़ान में भी उन्हीं से ज़्यादातर सुदूर होता है और आदमी का नफ़्स चूंकि साथ रहता है, इसीलिए उसका असर है। दूसरी बात एक और भी है, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब आदमी कोई गुनाह करता है तो उसके क़ल्ब में एक काला नुक़्ता लग जाता है। अगर वह सच्ची तौबा कर लेता है तो वह धुल जाता है, वरना लगा रहता है और अगर दूसरी मर्तबा गुनाह करता है तो दूसरा नुक़्ता लग जाता है, हत्ताकि उस का क़ल्ब बिल्कुल स्याह हो जाता है। फिर ख़ैर की बात उसके क़ल्ब तक नहीं पहुंचती इसी को हक़ तआला शानुहू ने अपने कलामे पाक में–

कल्ला बल रा न अला क़ुलूबिहिम॰ — كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ ـ

से इर्शाद फ़र्माया है कि उन के क़ुलूब ज़ंग आलूद हो गए। ऐसी सूरत में वे क़ुलूब इन गुनाहों की तरफ़ ख़ुद मुतवज्जह होते हैं। यही वजह है कि बहुत से लोग एक नौअ के गुनाह को बे-तकल्लुफ़ कर लेते हैं लेकिन इसी जैसा जब कोई दूसरा गुनाह सामने होता है तो क़ल्ब को उससे इन्कार होता है। मसलन जो लोग शराब पीते हैं उनको अगर सुअर खाने को कहा जाए तो उनकी तबीयत को नफ़रत होती है, हालांकि मासियत में दोनों बराबर हैं। तो इसी तरह जबकि ग़ैर रमज़ान में वे इन गुनाहों को करते रहते हैं, तो दिल उनके साथ रंगे जाते हैं, जिसकी वजह से रमज़ानुल

1. कभी-कभी, 2. लफ़्ज के असल माना क़ैद व पाबंदियाँ हैं, 3. क़ैद होना, 4. मेल-जोल,

मुबारक में भी उनके सरज़द होने के लिए श्यातीन की ज़रूरत नहीं रहती बिल् जुम्ला अगर हदीस पाक से सब श्यातीन का मुक़य्यद हो जाना मुराद है, तब भी रमज़ानुल मुबारक में गुनाहों के सरज़द होने से कुछ इश्काल नहीं और अगर मुतमर्रिद[1] और ख़बीस श्यातीन का मुक़य्यद होना मुराद हो तब तो कोई इश्काल है ही नहीं। और बन्दा-ए-नाचीज के नज़दीक यही तौजीह औला[2] है। और हर शख़्स इसको ग़ौर कर सकता है और तजुर्बा कर सकता है कि रमज़ानुल मुबारक में नेकी करने के लिए या किसी मासियत से बचने के लिए इतने ज़ोर लगाने नहीं पड़ते, जितने कि ग़ैर रमज़ान में पड़ते हैं। थोड़ी सी हिम्मत और तवज्जोह काफ़ी हो जाती है।

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद इस्हाक़ साहब रहमतुल्लाह अलैहि की राय यह है कि ये दोनों हदीसें मुख़्तलिफ़ लोगों के एतबार से हैं, यानी फ़ुस्साक़[3] के हक़ में सिर्फ़ मुतकब्बिर श्यातीन क़ैद होते हैं और सुलहा[4] के हक़ में मुत्लक़न हर क़िस्म के श्यातीन महबूस हो जाते हैं।

पांचवीं ख़ुसूसियत यह है कि रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी रात में सब रोज़ेदारों की मग़फ़िरत कर दी जाती है। यह मज़मून पहली रिवायत में भी गुज़र चुका है, चूंकि रमज़ानुल मुबारक की रातों में शबे क़द्र सब से अफ़ज़ल रात है, इसलिए सहाबा किराम रज़ि० ने ख़्याल फ़र्माया कि इतनी बड़ी फ़ज़ीलत इसी रात के लिए हो सकती है, मगर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उस के फ़ज़ाइल मुस्तक़िल अलाहिदा चीज़ हैं। यह इन्आम तो ख़त्म रमज़ान का है।

٣ — عن كعب بن عجرة قال قال رسول الله صلى الله عليه
وسلم احضروا المنبر فحضرنا فلما ارتقى درجة قال آمين. فلما ارتقى
الدرجة الثانية قال آمين. فلما ارتقى الدرجة الثالثة قال آمين. فلما نزل
قلنا يا رسول الله لقد سمعنا منك اليوم شيئا ما كنا نسمعه قال ان جبرئيل
عرض لي فقال بعد من ادرك رمضان فلم يغفر له قلت آمين. فلما رقيت
الثانية قال بعد من ذكرت عنده فلم يصل عليك قلت آمين. فلما
رقيت الثالثة قال بعد من ادرك ابويه الكبر او احدهما فلم يدخلاه
الجنة قلت آمين. رواه الحاكم وقال صحيح الاسناد كذا في الترغيب
وقال السخاوي رواه ابن حبان في ثقاته وصحيحه والطبراني في الكبير

---

1. सरकश, 2. बेहतर, 3. फ़ासिक़ लोग, 4. नेक लोग।

والبخاری فی برالوالدین لہ و البیہقی فی الشعب وغیرہم ورجالہ

ثقات وبسط طرق ورو ی الترمذی

عن ابی ھریرۃ بمعناہ وقال ابن حجر

طرقہ کثیرۃ کما فی الس قاۃ۔

3. 'कअब बिन उजरा कहते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि मिंबर के क़रीब हो जाओ। हम लोग हाज़िर हो गए। जब हुज़ूर सल्ल० ने मिम्बर के पहले दर्जे पर क़दम मुबारक रखा तो फ़रमाया 'आमीन'। जब दूसरे पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया 'आमीन'। जब तीसरे पर क़दम रखा तो फिर फ़र्माया 'आमीन'। जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो कर नीचे उतरे तो हम ने अर्ज़ किया कि हम ने आज आप से (मिम्बर पर चढ़ते हुए) ऐसी बात सुनी जो पहले कभी नहीं सुनी थी। आप ने इर्शाद फ़र्माया कि उस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे सामने आये थे (जब पहले दर्जे पर मैंने क़दम रखा, तो) उन्होंने कहा कि हलाक होजियो वह शख़्स, जिसने रमज़ान का मुबारक महीना पाया, फिर भी उसकी मग़फ़िरत न हुई मैंने कहा आमीन, फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा, हलाक होजियो वह शख़्स जिस के सामने आपका ज़िक्र मुबारक हो और वह दरूद न भेजे। मैंने कहा आमीन, जब मैं तीसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा हलाक हो वह शख़्स जिसके सामने उसके वालिदैन या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पावे और वे उस को जन्नत में दाखिल न कराएं। मैंने कहा, आमीन।

फ़ – इस हदीस में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने तीन बददुआएं दी हैं और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तीनों पर आमीन फ़र्माई –

अव्वल तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम जैसे मुक़र्रब फ़रिश्ते की बद-दुआ ही क्या कम थी और फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की आमीन ने तो जितनी सख़्त बद-दुआ बना दी, वह ज़ाहिर है। अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल से हम लोगों को इन तीनों चीज़ों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मावें और इन बुराइयों से महफ़ूज़ रखें वरना हलाकत में क्या तरद्दुद[1] है, 'दुर्रे मंसूर' की बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि ख़ुद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर (सल्ल०) से कहा कि आमीन कहो, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, आमीन, जिससे और भी ज़्यादा एहतमाम मालूम होता है।

---

1. शुब्हा।

अव्वल वह शख़्स कि जिस पर रमज़ानुल मुबारक गुज़र जाए और उसकी बख़्शिश न हो, यानी रमज़ानुल मुबारक जैसा ख़ैर व बरकत का ज़माना भी ग़फ़लत और मआसी में गुज़र जाये कि रमज़ानुल मुबारक में मग़िफ़रत और अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमत बारिश की तरह बरसती है, पस जिस शख़्स पर रमज़ानुल मुबारक का महीना भी इसी तरह गुज़र जाए कि इसकी बद-आमालियों और कोताहियों की वजह से वह मग़िफ़रत से महरूम रहे तो उसकी मग़िफ़रत के लिए और कौन सा वक़्त होगा और उसकी हलाकत में क्या ताम्मुल है और मग़िफ़रत की सूरत यह है कि रमज़ानुल मुबारक के जो काम हैं यानी रोज़ा व तरावीह, इनको निहायत एहतमाम से अदा करने के बाद हर वक़्त कसरत के साथ अपने गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे।

दूसरा शख़्स, जिस के लिए बद-दुआ की गयी, वह है जिसके सामने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र मुबारक हो और वह दरूद न पढ़े। और भी बहुत सी रिवायात में यह मज़मून वारिद हुआ है, इसी वजह से बाज़ उलमा के नज़दीक जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्रे मुबारक हो तो सुनने वालों पर दरूद शरीफ़ का पढ़ना वाजिब है। हदीसे बाला के अलावा और भी बहुत सी वईदें इस शख़्स के बारे में वारिद हुई हैं जिस के सामने हुज़ूर सल्ल॰ का तज़्किरा[1] हो और वह दरूद न भेजे। बाज़ अहादीस में उसको शक़ी[2] और बख़ील तर लोगों में शुमार किया गया है, नीज़ जफ़ाकार और जन्नत का रास्ता भूलने वाला, हत्ता कि जहन्नम में दाख़िल होने वाला और बद-दीन तक फ़र्माया है। यह भी वारिद हुआ है कि वह नबी करीम सल्ल॰ का चेहरा-ए-अन्वर न देखेगा। मुहक़्क़िक़ीन[3] उलमा ने ऐसी रिवायात की तावील फ़र्माई हो मगर इससे कौन इन्कार कर सकता है कि दरूद शरीफ़ न पढ़ने वाले के लिये आप के ज़ाहिर इर्शादात इस क़दर सख़्त हैं कि उनका तहम्मुल दुशवार है और क्यों न हो कि आप के एहसानात उम्मत पर इससे कहीं ज़्यादा है कि तहरीर व तक़रीर उनका इहसा[4] कर सके। इसके अलावा आप के हुक़ूक़ उम्मत पर इस क़दर ज़्यादा हैं कि उनको देखते हुए दरूद शरीफ़ न पढ़ने वालों के हक़ में हर वईद और तम्बीह बजा और मौज़ू मालूम होती है, ख़ुद दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल इस क़दर हैं कि उनसे महरूमी मुस्तक़िल बद-नसीबी है। इससे

---

1. ज़िक्र, 2. ज़ालिम बद-बख़्त, 3. तहक़ीक़ करने वाले, खोजी, 4. अहाता करना,

बढ़ कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि जो शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर एक मर्तबा दरूद भेजे, हक़ तआला जल्ल शानुहू उस पर दस मर्तबा रहमत भेजते हैं। नीज मलाइका[1] का उसके लिए दुआ करना, गुनाहों का माफ़ होना दरजात का बुलन्द होना, उहद पहाड़ के बराबर सवाब का मिलना, शफ़ाअत का उसके लिए वाजिब होना वग़ैरह-वग़ैरह उमूर मज़ीद बर आं, नीज अल्लाह जल्ल जलालुहु की रज़ा, उसकी रहमत, उसके ग़ुस्से से अमान, क़यामत के हौल से निजात, मरने से क़ब्ल जन्नत में अपने ठिकाने का देख लेना वग़ैरह बहुत से वायदे दरूद शरीफ़ की खास-खास मिक्दारों पर मुक़र्रर फ़र्माये गए हैं।

इन सब के अलावा दरूद शरीफ़ से तंगी-ए-मईशत[2] और फ़क्र[3] दूर होता है, अल्लाह और उसके रसूल के दरबार में तक़र्रुब नसीब होता है, दुश्मनों पर मदद नसीब होती है, और क़ल्ब की निफ़ाक़ और ज़ंग से सफ़ाई होती है। लोगों को उससे मुहब्बत होती है और बहुत सी बशारतें हैं जो दरूद शरीफ़ की कसरत पर अहादीस में वारिद हुई हैं। फ़ुक़हा ने इसकी तसरीह की है कि एक मर्तबा उम्र भर में दरूद शरीफ़ का पढ़ना अमलन फ़र्ज़ है और इस पर उलमा-ए-मज़हब का इत्तिफ़ाक़ है, अलबत्ता इस में इख़्तिलाफ़ है कि जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र मुबारक हो, हर मर्तबा दरूद शरीफ़ का पढ़ना वाजिब है या नहीं, बाज़ उलमा के नज़दीक हर मर्तबा दरूद शरीफ़ का पढ़ना वाजिब है और दूसरे बाज़ के नज़दीक मुस्तहब।[4]

तीसरे वह शख़्स कि जिसके बूढ़े वालिदैन में से दोनों या एक मौजूद हों और वह उनकी इस क़दर ख़िदमत न करे कि जिसकी वजह से जन्नत का मुस्तहिक़ हो जाए-वालिदैन के हुक़ूक़ की भी बहुत सी अहादीस में ताकीद आई है। उलमा ने इनके हुक़ूक़ में लिखा है कि मुबाह[5] उमूर में उनकी इताअत[6] ज़रूरी है। नीज यह भी लिखा है कि उनकी बे अदबी न करे। तकब्बुर[7] से पेश न आए, अगरचे वह मुश्रिक हो, अपनी आवाज़ को उनकी आवाज़ से ऊंची न करे, उनका नाम लेकर न पुकारे, किसी काम में उनसे पेश क़दमी न करे, अम्र बिल मारूफ़[8] और नही अनिलमुन्कर[9] में नर्मी करे, अगर क़ुबूल न करें तो सुलूक करता रहे और हिदायत की दुआ करता

---

1. फ़रिश्तों का, 2. रोज़ी की कमी, 3. ग़रीबी, 4. दरूद शरीफ़ का तफ़्सीली बयान 'फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़' में आ रहा है, 5. जायज, 6. फ़रमांबरदारी, 7. घमंड, 8. नेकी का हुक्म देना, 9. बुराइयों से रोकना।

रहे, ग़रज हर बात में इनका बहुत एहतराम मलहूज रखे। एक रिवायत में आया है कि जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतरीन दरवाज़ा बाप है, तेरा जी चाहे उस की हिफ़ाज़त कर या इसको ज़ाया कर दे। एक सहाबी॰ रज़ि॰ ने हुज़ूर से दर्याफ़्त किया कि वालिदैन का क्या हक़ है। आपने फ़रमाया कि वह तेरी जन्नत है या जहन्नम ! यानी उन की रजा जन्नत है है और नाराज़गी जहन्नम है। एक हदीस में आया है कि मुतीअ[1] बेटे की मुहब्बत और शफ़्क़त से एक निगाह वालिद की तरफ़, एक हज का सवाब रखती है। एक हदीस में इर्शाद है कि शिर्क के सिवा तमाम गुनाहों की, जिस क़दर दिल चाहे अल्लाह मआफ़ फ़र्मा देते हैं, मगर वालिदैन की नाफ़र्मानी का मरने से क़ब्ल दुनिया में भी वबाल पहुंचाते हैं। एक सहाबी (रज़ि॰) ने अर्ज किया कि मैं जिहाद में जाने का इरादा करता हूं। हुज़ूर (सल्ल॰) ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि तेरी मां भी ज़िन्दा हैं ? उन्होंने अर्ज किया कि हां। हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़र्माया कि उनकी ख़िदमत कर कि उन के क़दमों के नीचे तेरे लिए जन्नत है, एक हदीस में आया है कि अल्लाह की रजा बाप की रजा में है और अल्लाह की नाराज़गी, बाप की नाराज़गी में है और भी बहुत सी रिवायात में उसका एहतमाम और फ़ज़्ल वारिद हुआ है। जो लोग किसी ग़फ़लत से इसमें कोताही कर चुके हैं और अब उनके वालिदैन मौजूद नहीं, शरीअते मुतह्हरा में उसकी तलाफ़ी भी मौजूद है। एक हदीस में इर्शाद है कि जिसके वालिदैन इस हालत में मर गये हों कि वह उनकी नाफ़र्मानी करता हो तो उनके लिये कसरत से दुआ और इस्तिग़फ़ार करने से मुतीअ शुमार हो जाता है, एक दूसरी हदीस में वारिद है कि बेहतरीन भलाई बाप के बाद उस के मिलने वालों से हुस्ने सुलूक है।

۴ - عن عبادة بن الصامت رضـ ان رسول الله صلے الله علیه وسلم
قال یوما وحضر نا رمضان اتاکم رمضان شهر برکة یغشاکم الله فیه
فینزل الرحمة ویحط الخطایا و یستجیب فیه الدعاء ینظر الله تعالیٰ
الی تنافسکم فیه ویباهی بکم ملئکته فأروا الله من انفسکم خیرا فان الشقی
من حرم فیه رحمة الله عزوجل - رواه الطبرانی ورواته ثقات الاان
محمد بن قیس لایحضرنی فیه جرح ولاتعدیل کذا فی الترغیب)

1. फ़र्माबरदार,

4. हज़रत उबादा बिनिस्सामित रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर (सल्ल०) ने रमज़ानुल मुबारक के क़रीब इर्शाद फ़र्माया कि रमज़ान का महीना आ गया हे जो बड़ी बरकत वाला है। हक़ तआला शानुहू इस में तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और अपनी रहमते ख़ास्सा नाज़िल फ़र्माते हैं, ख़ताओं को माफ़ फ़र्माते हैं, दुआ को क़ुबूल करते हैं, तुम्हारे तनाफ़ुस को देखते हैं और मलाइका से फ़ख़्र करते हैं। पस अल्लाह को अपनी नेकी दिखलाओ। बद नसीब है वह शख़्स, जो इस महीने में भी अल्लाह की रहमत से महरूम रह जावे।

फ़ — तनाफ़ुस उसको कहते हैं कि दूसरे की हिर्स में काम किया जावे और मुक़ाबले पर दूसरे से बढ़-चढ़ कर काम किया जावे, तफ़ाख़ुर और तक़ाबुल वाले आवें और यहां अपने-अपने जौहर दिखलावें, फ़ख़्र की बात नहीं तहदीस बिन नैमत[1] के तौर पर लिखता हूं अपनी नाअहलियत से ख़ुद अगरचे कुछ नहीं कर सकता, मगर अपने घराने की औरतों को देखकर खुश होता हूं कि अक्सरों को इसका एहतमाम रहता है कि दूसरी से तिलावत में बढ़ जावे, ख़ानगी कारोबार के साथ पन्द्रह बीस पारे रोज़ाना बेतकल्लुफ़ पूरे कर लेती हैं। हक़ तआला शानुहू अपनी रहमत से क़ुबूल फ़र्मावें और ज़्यादती की तौफ़ीक़ अता फ़र्मावें

(۵) عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰہِ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی عُتَقَاءَ فِیْ کُلِّ یَوْمٍ وَّلَیْلَۃٍ یَعْنِیْ فِیْ رَمَضَانَ وَاِنَّ لِکُلِّ مُسْلِمٍ فِیْ کُلِّ یَوْمٍ وَّلَیْلَۃٍ دَعْوَۃً مُّسْتَجَابَۃً (رواہ البزار کذا فی الترغیب)

5. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रमज़ानुल मुबारक की हर शब व रोज़ में अल्लाह के यहां से (जहन्नम के) क़ैदी छोड़े जाते हैं और हर मुसलमान के लिए हर शब व रोज़ में एक दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है।

फ़ — बहुत सी रिवायत में रोज़ेदार की दुआ का क़ुबूल होना वारिद हुआ है। बाज़ रिवायात में आता है कि इफ़्तार के वक़्त दुआ क़ुबूल होती है, मगर हम लोग उस वक़्त खाने पर इस तरह गिरते हैं कि दुआ मांगने की तो कहां फ़ुर्सत, ख़ुद इफ़्तार की दुआ भी याद नहीं रहती। इफ़्तार की मशहूर दुआ यह है।

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ

---

1. नेमत के बयान के तौर पर.

'अल्लाहुम् म ल क सुम्तु व बि क आमन्तु व अलै क तवक्कल्तु व अला रिज़्क़ि क अफ़्तर्तु॰ ।

तर्जुमा – ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए रोजा रखा, और तुझी पर ईमान लाया हूं और तुझी पर भरोसा है। तेरे ही रिज़्क़ के इफ़्तार करता हूं।

हदीस की किताबों में यह दुआ मुख़्तसर मिलती है। हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि॰ इफ़्तार के वक़्त यह दुआ करते थे –

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْاَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ

अल्लाहुम् म इन्नी अस्अलु क बिरह्महितकल्लती वसिअत कुल्ल शैइन अन् तग़्फि र ली॰

तर्जुमा – ऐ अल्लाह ! तेरी उस रहमत के सदके जो हर चीज को शामिल है, यह मांगता हूं कि तू मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दे।

बाज कुतुब[1] में ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ से यह दुआ मन्क़ूल है-

या वासिअल् फ़ज़्लि इग़्फ़िर ली॰

يَا وَاسِعَ الْفَضْلِ اغْفِرْ لِیْ

'ऐ वसीअ अता वाले, मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा'

और भी मुतअद्दद दुआयें रिवायत में वारिद हुई हैं, मगर किसी दुआ की तख़्सीस नहीं, इजाबत दुआ[2] का वक़्त है, अपनी-अपनी ज़रूरत के लिए दुआ फ़र्मावें, याद आजावे तो इस स्याहकार को भी शामिल फ़र्मा लें कि साइल हूं और साइल का हक़ होता है-

चश्मा-ए-फ़ैज से गर एक इशारा हो जाये।
लुत्फ़ हो आप का और काम हमारा हो जाये।।

(٦) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَةٌ لَا تُرَدُّ دَعْوَتُهُمُ الصَّائِمُ حَتّٰى يُفْطِرَ وَالْاِمَامُ الْعَادِلُ وَدَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ فَوْقَ الْغَمَامِ وَيُفْتَحُ لَهَا اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَيَقُوْلُ الرَّبُّ وَعِزَّتِیْ لَاَنْصُرَنَّكَ وَلَوْ بَعْدَ حِيْنٍ (رواه احمد فی حديث والترمذی وحسنه وابن خزيمة وابن حبان فی صحيحيهما كذا فی الترغيب)

1. किताबें, 2. दुआ के क़ुबूल कोने का वक़्त है,

6. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि तीन आदमियों की दुआ रद्द नहीं होती। एक रोज़ेदार की, इफ़्तार के वक़्त दूसरे आदिल-बादशाह की दुआ, तीसरे मज़लूम की, जिस को हक़ तआला शानहू बादलों से ऊपर उठा लेते हैं और आसमान के दरवाज़े उसके लिए खोल दिए जाते हैं, और इर्शाद होता है कि मैं तेरी ज़रूर मदद करूंगा, गो (किसी मसलहत से) कुछ देर हो जाए।

फ़ – दुर्रे मन्सूर में हज़रत आइशा रज़ि० से नक़ल किया है, जब रमज़ान आता था तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रंग बदल जाता था और नमाज़ में इज़ाफ़ा हो जाता था और दुआ में बहुत आजिज़ी फ़र्माते थे और ख़ौफ़ ग़ालिब हो जाता था। दूसरी रिवायत में फ़र्माती हैं कि रमज़ान के ख़त्म तक बिस्तर पर तशरीफ़ नहीं लाते थे।

एक रिवायत में है कि हक़ तआला शानुहू रमज़ान में अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमा देते हैं कि अपनी-अपनी इबादत छोड़ दो और रोज़ेदारों की दुआ पर आमीन कहा करो, बहुत सी रिवायात से रमज़ान की दुआ का ख़ुसूसियत से क़ुबूल होना मालूम होता है और यह बेतरद्दुद बात है कि जब अल्लाह का वायदा है और सच्चे रसूल का नक़ल किया हुआ है तो उसके पूरा होने में कुछ तरद्दुद नहीं, लेकिन इसके बाद भी बाज़ लोग किसी ग़रज़ के लिए दुआ करते हैं, मगर वह काम नहीं होता, तो इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि वह दुआ क़ुबूल नहीं हुई बल्कि दुआ के क़ुबूल होने के माना समझ लेना चाहिए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब मुसलमान दुआ करता है, बशर्ते कि क़ता-ए-रहमी[2] या किसी गुनाह की दुआ न करे तो हक़ तआला शानुहू के यहां से तीन चीज़ों में से एक चीज़ ज़रूर मिलती है। या ख़ुद वही चीज मिलती है जिसकी दुआ की या उसके बदले में कोई बुराई-मुसीबत उससे हटा दी जाती है या आख़िरत में उसी क़दर सवाब उसके हिस्से में लगा दिया जाता है।

एक हदीस में आया है कि क़यामत के दिन हक़ तआला शानुहू बंदे को बुला कर इर्शाद फ़रमायेंगे कि ऐ मेरे बन्दे ! मैंने तुझे दुआ करने का हुक्म दिया था और उसके क़ुबूल करने का वायदा किया था। तूने मुझ से दुआ मांगी थी ? वह अर्ज़ करेगा कि मांगी थी, इस पर इर्शाद होगा कि तूने कोई दुआ ऐसी नहीं की जिसको मैंने क़ुबूल न किया हो, तूने फ़्लां दुआ मांगी थी कि फ़्लां तकलीफ़ हटा दी जाए, मैंने उसको

---

1. दुआ के क़ुबूल होने का वक़्त है, 2. ताल्लुक काटने की,

दुनिया में पूरा कर दिया था और फ़्लां ग़म के दफ़ा होने के लिए दुआ की थी मगर उसका असर कुछ तुझे मालूम नहीं हुआ, मैंने इसके बदले में फ़्लां अज्र व सवाब अब तेरे लिए मुतअय्यन किया। हुज़ूर सल्ल० इर्शाद फ़र्माते हैं कि उसको हर-हर दुआ याद कराई जावेगी और उसका दुनिया में पूरा होना या आख़िरत में उसका एवज़ बतलाया जावेगा। इस अज्र व सवाब की कसरत[1] को देखकर वह बन्दा इसकी तमन्ना करेगा कि काश दुनिया में इस की कोई भी दुआ पूरी न हुई होती कि यहां उसका इस क़दर अज्र मिलता, ग़रज़ दुआ निहायत ही अहम चीज़ है। इसकी तरफ़ से ग़फ़लत बड़े सख़्त नुकसान और ख़सारे[2] की बात है और ज़ाहिर में अगर क़ुबूल के आसार न देखें तो बद-दिल न होना चाहिए।

इस रिसाले के ख़त्म पर जो लम्बी हदीस आ रही है इससे यह भी मालूम होता है कि इस में भी हक़ तआला शानुहू बंदे ही के मसालेह[3] पर नज़र फ़र्माते हैं। अगर उसके लिए उस चीज़ का अता फ़र्माना मसलहत होता है तो मरहमत फ़र्माते हैं, वरना नहीं। यह भी अल्लाह का बड़ा एहसान है कि हम लोग बसा औक़ात अपनी ना-फ़हमी से ऐसी चीज़ मांगते हैं, जो हमारे लिये मुनासिब नहीं होती।

इस के साथ दूसरी ज़रूरी और अहम बात क़ाबिले लिहाज़ यह है कि बहुत से मर्द और औरतें तो ख़ास तौर से इस मर्ज़ में मुब्तला हैं कि बसा औक़ात ग़ुस्से और रंज में औलाद वग़ैरह को बद-दुआ देते हैं। याद रखें कि अल्लाह जल्ल शानुहू के आली दरबार में बाज़ औक़ात ऐसे ख़ास क़ुबूलियत के होते हैं कि जो मांगो, मिल जाता है। ये अहमक़ ग़ुस्से में अव्वल तो औलाद को कोसती हैं और जब वह मर जाती है या किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाती है तो फिर रोती-फिरती हैं और इसका ख़्याल भी नहीं आता कि यह मुसीबत ख़ुद ही अपनी बद-दुआ से मांगी है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अपनी जानों और औलाद को नीज़ माल और ख़ादिमों को बद-दुआ न दिया करो, मुबादा अल्लाह के किसी ऐसे ख़ास वक़्त में वाक़े हो जाए जो क़ुबूलियत का है, बिल ख़ुसूस रमज़ानुल मुबारक का तमाम महीना तो बहुत ही ख़ास वक़्त है, इसमें एहतमाम से बचने की कोशिश अशद ज़रूरी[4] है।

---

1. ज़्यादती, 2. घाटे, मसलहतें, 4. ज़्यादा ज़रूरी।

हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नकल करते हैं कि रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह को याद करने वाला शख़्स बख़्शा-बख़्शाया है और अल्लाह से मांगने वाला ना मुराद नहीं रहता।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० की एक रिवायत से 'तर्ग़ीब' में नक़ल किया है कि रमज़ानुल मुबारक की हर रात में एक मुनादी पुकारता है कि ऐ ख़ैर के तलाश करने वाले! मुतवज्जह हो और आगे बढ़ और ऐ बुराई के तलबगार! बस कर और आंखें खोल। इसके बाद वह फ़रिश्ता कहता है, कोई मग़्फ़िरत का चाहने वाला है कि उसकी मग़्फ़िरत की जाए ? कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा क़ुबूल की जाए ? कोई दुआ करने वाला है कि उसकी दुआ क़ुबूल की जाये। कोई मांगने वाला है कि उसका सवाल पूरा किया जाए ?

इस सब के बाद यह अम्र भी निहायत ज़रूरी और क़ाबिले लिहाज़ है कि दुआ के क़ुबूल होने के लिए कुछ शरायत भी वारिद हुई हैं कि उन के फ़ौत होने से बसा औक़ात दुआ रद्द कर दी जाती है। मिन्जुम्ला इनके, हराम ग़िज़ा है कि इस की वजह से भी दुआ रद्द हो जाती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बहुत से परेशान हाल आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर दुआ मांगते है और या रब या रब करते हैं मगर खाना हराम, पीना हराम, लिबास हराम, ऐसी हालत में कहां दुआ क़ुबूल हो सकती है ?

मुवर्रिख़ीन[1] ने लिखा है कि कूफ़े में मुस्तजाबुद्दुआ[2] लोगों की एक जमाअत थी। जब कोई हाकिम उन पर मुसल्लत होता तो उसके लिए बद-दुआ करते, वह हलाक हो जाता, हज्जाज ज़ालिम का जब वहां तसल्लुत हुआ तो उसने एक दावत की, जिसमें इन हज़रात को ख़ास तौर से शरीक किया और जब खाने से फ़ारिग़ हो चुके, तो उसने कहा कि मैं उन लोगों की बद-दुआ से महफ़ूज़ हो गया कि हराम की रोज़ी इनके पेट में दाख़िल हो गयी। इसके साथ हमारे ज़माने की हलाल रोज़ी पर भी एक निगाह डाली जाए, जहां हर वक़्त सूद तक के जवाज़ की कोशिशें ज़ारी हों, मुलाज़िमीन रिश्वत को और ताजिर धोखा देने को बेहतर समझते हों।

٧- عَنِ ابْنِ عُمَرَؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ وَ مَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی الْمُتَسَحِّرِیْنَ (رواہ الطبرانی فی الاوسط وابن حبان فی صحیحہ کذا فی الترغیب)

1. तारीख़ जानने वाले, 2. दुआ क़ुबूल होने वाले।

7. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि ख़ुद हक़ तआला शानुहू और उसके फ़रिश्ते सहरी खाने वालों पर रहमत नाज़िल फ़र्माते हैं।

फ़ – किस क़दर अल्लाह जल्ल जलालुहू का इन्आम व एहसान है कि रोज़े की बरकत से इससे पहले खाने को जिस को सहरी कहते हैं उम्मत के लिए सवाब की चीज बना दिया और इस में भी मुसलमानों को अज्र दिया जाता है। बहुत सी अहादीस में सहर खाने की फ़ज़ीलत और अज्र का ज़िक्र है। अल्लामा ऐनी रह० ने सत्रह सहाबा रज़ि० से इसकी फ़ज़ीलत की अहादीस नक़ल की हैं और उसके मुस्तहब होने पर इज्माअ[1] नक़ल किया है। बहुत से लोग काहिली की वजह से इस फ़ज़ीलत से महरूम रह जाते हैं। और बाज़ लोग तरावीह पढ़ कर खाना खा कर सो जाते हैं और वे उसके सवाब से महरूम रहते हैं। इसलिए कि लुग़त में सहर उस खाने को कहते हैं जो सुबह के क़रीब खाया जाए जैसा कि क़ामूस ने लिखा है। बाज़ ने कहा है कि आधी रात से उसका वक़्त शुरू हो जाता है।[2] साहबे कश्शाफ़ ने अख़ीर के छठे हिस्से को बतलाया है यानी तमाम रात को छः हिस्सों पर तक़्सीम कर के अख़ीर का हिस्सा मसलन अगर ग़ुरूबे आफ़्ताब से तुलूए सुबह सादिक़ तक बारह घंटे हों तो अख़ीर के दो घंटे सहर का वक़्त हैं और इनमें भी ताख़ीर औला है बशर्ते कि इतनी ताख़ीर न हो कि रोज़े में शक होने लगे। सहर की फ़ज़ीलत बहुत सी अहादीस में आई हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हमारे और अहले किताब (यहूद व नसारा) के रोज़े में सहरी खाने से फ़र्क़ होता है कि वह सहरी नहीं खाते। एक जगह इर्शाद है कि सहरी खाया करो कि कि इसमें बरकत है। एक जगह इर्शाद है कि तीन चीज़ों में बरकत हैं जमाअत में और सरीद में और सहरी खाने में। इस हदीस में जमाअत से आम मुराद है, नमाज़ की जमाअत और हर वह काम जिसको मुसलमानों की जमाअत मिलकर करे कि अल्लाह की मदद उसके साथ फ़र्माई गई है और सरीद गोश्त में पकी हुई रोटी कहलाती है जो निहायत लज़ीज़ खाना होता है, तीसरे सहरी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी सहाबी रज़ि० को अपने साथ सहर खिलाने के लिए बुलाते तो इर्शाद फ़र्माते कि आओ बरकत का खाना खा लो। एक हदीस में इर्शाद है कि सहरी खा कर रोज़े पर क़ूव्वत हासिल करो और दोपहर को सोकर अख़ीर शब के उठने पर मदद चाहा करो।[3]

---

1. एक राय होना, 2. मिर्क़ात। 3. यानी दोपहर को सोने से रात को तहज्जुद के लिए उठने में मदद मिलेगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) एक सहाबी से नकल करते हैं कि मैं हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में ऐसे वक़्त हाज़िर हुआ कि आप सहरी नोश फ़र्मा रहे थे, आपने फ़र्माया कि यह एक बरकत की चीज है जो अल्लाह ने तुमको अता फ़र्माई, इसको मत छोड़ना। हुज़ूर सल्ल० ने मुतअद्दद रिवायत में सहूर[1] की तरग़ीब फ़र्माई, हत्ता कि इर्शाद है कि और कुछ न हो तो एक छुवारा ही खा ले या एक घूंट पानी ही पी ले। इसलिए रोज़ेदार को इस 'हम ख़ुरमा व हम सबाब' का ख़ासतौर से एहतमाम करना चाहिए कि अपनी राहत, अपना नफ़ा और मुफ़्त का सवाब। मगर इतना ज़रूरी है कि इफ़रात व तफ़रीत[2] हर चीज़ में मुज़िर[3] है, इसलिए न इतना कम खावे कि इबादात में ज़ोफ़ महसूस होने लगे और न इतना ज़्यादा ख़ावे कि दिन भर खट्टी डकारें आती रहें। ख़ुद इन अहादीस में भी इस तरफ़ इशारा है कि चाहे एक छुवारा हो या एक घूंट पानी। नीज मुस्तक़िल अहादीस में भी बहुत खाने की मुमानअत आई है। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रज़ि०) बुख़ारी की शरह में तहरीर फ़र्माते हैं कि सहरी की बरकात मुख़्तलिफ़ वजूह से हैं। इत्तिबाअ सुन्नत, अहले किताब की मुख़ालफ़त कि वह सहरी नहीं खाते और हम लोग हत्तलवसअ इनकी मुख़ालफ़त के मामूर हैं।

नीज इबादत पर क़ुव्वत, इबादत में दिल बस्तगी की ज़्यादती, नीज़ शिद्दते भूख से अक्सर बद खुल्क़ी[4] पैदा हो जाती है, इसकी मुदाफ़अत[5], इस वक़्त कोई ज़रूरतमन्द साइल आ जाए तो उसकी इआनत[6], कोई पड़ोस में ग़रीब फ़क़ीर हो उस की मदद, यह वक़्त ख़ुसूसियत से क़ुबूलियते दुआ का है। सहरी की बदौलत दुआ की तौफ़ीक़ हो जाती है, उस वक़्त में ज़िक्र की तौफ़ीक़ हो जाती है। वग़ैरह-वग़ैरह।

इब्न दक़ीक़ुल ईद कहते हैं कि सूफ़िया को सहूर के मसअले में कलाम है कि वह मक़्सदे रोज़ा के ख़िलाफ़ है, इसलिए कि मक्सदे रोज़ा पेट और शर्मगाह की शहवत का तोड़ना है और सहरी खाना इस मक़्सद के ख़िलाफ़ है। लेकिन यह सही है कि मिक़्दार में इतना खाना कि यह मसलहत बिल् कुल्लिया फ़ौत हो जाए, यह तो बेहतर नहीं, इसके अलावा हस्बे हैसियत व ज़रूरत मुख़्तलिफ़ होता रहता है। बंदे के नाक़िस ख़्याल में, इस बारे में क़ौले फ़ैसल भी यही है कि अस्ल सहूर व इफ़्तार में तक़लील[7] है, मगर हस्बे ज़रूरत इस में तग़य्युर हो जाता है। मस्लन तलबा की जमाअत, कि इनके लिए तक़लीले तआम, मुनाफ़ा-ए-सौम[1] के हासिल होने के साथ तहसीले इल्म की मज़र्रत[2] को शामिल है, इसके लिए इनके लिए बेहतर यह है कि तक़लील न करें

---

1. यानी सहरी, 2. कभी इस इन्तिहा को, कभी उस इन्तिहा को, 3. नुक़सानदेह है, 4. बुरा अख़्लाक़, 5. दफ़ा करना, 6. मदद, 7. कम खाना-पीना।

कि इल्मे दीन की अहमियत शरीअत में बहुत ज़्यादा है, इसी तरह ज़ाकिरीन की जमाअत, अला हाज़ा दूसरी जमाअतें जो तक़्लीले तआम की वजह से किसी दीनी काम में अहमियत के साथ मश्गूल न हो सकें, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा जिहाद को तश्रीफ़ ले जाते हुए एलान फ़र्मा दिया कि सफ़र में रोज़ा नेकी नहीं, हालांकि रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा था। मगर इस जगह जिहाद का तक़ाबुल[3] आ पड़ा था अलबत्ता जिस जगह किसी ऐसे दीनी काम में जो रोज़े से ज़्यादा अहम हो ज़ौफ़ और कस्ल[4] पैदा न हो वहां तक़्लीले तआम ही मुनासिब है। शरह इक्ना में अल्लामा शअरानी रह० से नक़ल किया है कि हम से इस पर अह्द लिये गये कि पेट भर कर खाना न खायें, बिल ख़ुसूस रमज़ानुल मुबारक की रातों में, बेहतर यह है कि रमज़ान के खाने में ग़ैर रमज़ान से कुछ तक़्लील करे। इसलिए कि इफ़्तार व सहरी में जो शख़्स पेट भर कर खाये उसका रोज़ा ही क्या है। मशाइख़ ने कहा है कि जो शख़्स रमज़ान में भूखा रहे, आइन्दा रमज़ान तक तमाम साल शैतान के ज़ोर से महफ़ूज़ रहता है। और भी बहुत से मशाइख़ से इस बाब में शिद्दत मन्क़ूल हैं।

शरह एह्या में अवारिफ़ से नक़ल किया है कि सह्ल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी (रह०) पन्द्रह रोज़ में एक मर्तबा खाना तनावुल फ़र्माते थे और रमज़ानुल मुबारक में एक लुक़मा, अलबत्ता रोज़ाना इत्तिबा-ए-सुन्नत की वजह से महज़ पानी से रोज़ा इफ़्तार फ़र्माते थे। हज़रत जुनैद (रह०) हमेशा रोज़ा रखते, लेकिन (अल्लाह वाले) दोस्तों में से कोई आता तो उस की वजह से रोज़ा इफ़्तार फ़र्माते और फ़र्माया करते थे कि (ऐसे) दोस्तों के साथ खाने की फ़ज़ीलत कुछ रोज़े की फ़ज़ीलत से कम नहीं। और भी सलफ़[5] के हज़ारों वाक़िआत इसकी शहादत देते हैं कि वे खाने की कमी के साथ नफ़्स की तादीब[6] करते थे, मगर शर्त वही है कि उसकी वजह से और दीनी अहम उमूर में नुक़्सान न हो।

٨ - عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ رضـ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُبَّ صَائِمٍ لَيْسَ لَهٗ مِنْ صِيَامِهٖ إِلَّا الْجُوْعُ وَرُبَّ قَائِمٍ لَيْسَ لَهٗ مِنْ قِيَامِهٖ إِلَّا السَّهْرُ (رواہ ابن ماجۃ واللفظ لہ والنسائی وابن خزیمۃ فی صحیحہ والحاکم وقال علی شرط البخاری ذکر لفظہا المنذری فی الترغیب)

1. रोज़े का नफ़ा, 2. नुक़सान दह 3. मुक़ाबला, 4. सुस्ती, 5. पहले के बुज़ुर्ग लोग, 6. अदब सिखाना, सज़ा देना, सुधार करना।

8. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बहुत से रोज़ा रखने वाले ऐसे हैं कि इन को रोज़े के समरात में बजुज़[1] भूखा रहने के कुछ भी हासिल नहीं और बहुत से शब बेदार ऐसे हैं कि इनको रात के जागने (की मशक़्क़त) के सिवा कुछ भी न मिला।

फ़ – उमला के इस हदीस की शरह में चन्द अक़्वाल हैं-

अव्वल यह कि इस से वह शख़्स मुराद है जो दिन भर रोज़ा रख कर माले हराम से इफ़्तार करता है कि जितना सवाब रोज़े का हुआ था, उससे ज़्यादा गुनाह हराम माल खाने का हो गया और दिन भर भूखा रहने के सिवा और कुछ न मिला।

दूसरे यह कि वह शख़्स मुराद है जो रोज़ा रखता है, लेकिन ग़ीबत में भी मुब्तला रहता है, जिस का बयान आगे आ रहा है।

तीसरा क़ौल यह है कि रोज़े के अन्दर गुनाह वग़ैरह से एहतराज़[2] नहीं करता। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात जामेअ होते हैं। ये सब सूरतें इसमें दाख़िल हैं और इनके अलावा भी। इसी तरह जागने का हाल है कि रात भर शब बेदारी की मगर तफ़रीहन, थोड़ी सी ग़ीबत या कोई और हिमाक़त भी कर ली, तो वह सारा जागना बेकार हो गया। मस्लन सुबह की नमाज़ ही क़ज़ा कर दी या महज़रिया[3] और शोहरत के लिए जागा, तो वह बेकार है।

٩ ـ عَنْ اَبِیْ عُبَیْدَۃَ رض قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ الصِّیَامُ جُنَّۃٌ مَّا لَمْ یَخْرِقْھَا (رواہ النسائی وابن ماجۃ وابن خزیمۃ والحاکم وصححہ علی شرط البخاری والفاظھم مختلفۃ حکاھا المنذری فی الترغیب)

9. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि रोज़ा आदमी के लिए ढाल है, जब तक उस को फाड़ न डाले।

फ़ – ढाल होने का मतलब यह है कि जैसे आदमी ढाल से अपनी हिफ़ाज़त करता है उसी तरह रोज़े से भी अपने दुश्मन यानी शैतान से हिफ़ाज़त होती है। एक रिवायत में आया है कि रोज़ा हिफ़ाज़त है अल्लाह के अज़ाब से, दूसरी रिवायत में

1. के अलावा, 2. बचना, 3. दिखावा।

है कि रोज़ा जहन्नम से हिफ़ाजत है।

एक रिवायत में वारिद हुआ है कि किसी ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! रोज़ा किस चीज़ से फट जाता है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि झूठ और ग़ीबत से, इन दोनों रिवायतों में और इसी तरह और भी मुतअद्दद रिवायात में रोज़े में इस क़िस्म के उमूर से बचने की ताक़ीद आई है और रोज़े का गोया ज़ाया कर देना इसको क़रार दिया है। हमारे इस ज़माने में रोज़े के काटने के लिए मश्ग़ला इसको क़रार दिया जाता है कि वाही-तबाही, मेरी-तेरी बातें शुरू कर दी जाएं। बाज़ उलमा के नजदीक झूठ और ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है। ये दोनों चीज़ें इन हज़रात के नजदीक ऐसी हैं, जैसे कि खाना-पीना वग़ैरह, सब रोज़े को तोड़ने वाली अश्या हैं। जम्हूर के नजदीक अगरचे रोज़ा टूटता नहीं, मगर रोज़े के बरकात जाते रहने से तो किसी को भी इन्कार नहीं।

मशाइख़ ने रोज़े के आदाब में छः उमूर तहरीर फ़र्माये हैं कि रोज़ेदार को इनका एहतमाम ज़रूरी है-

अव्वल निगाह कि हिफ़ाजत, कि किसी बे-महल जगह पर न पड़े, हत्ता कि कहते हैं कि बीवी पर भी शहवत की निगाह न पड़े, फिर अजनबी का क्या ज़िक्र और इसी तरह किसी लह्व व लअिब वग़ैरह नाजायज़ जगह न पड़े। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि निगाह इब्लीस के तीरों में से एक तीर है। जो शख़्स इससे अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से बच रहे, हक़ तआला जल्ल शानुहू उसको ऐसा नूरे ईमानी नसीब फ़र्माते हैं, जिसकी हलावत और लज़्ज़त क़ल्ब में महसूस करता है। सूफ़िया ने बे-महल की तफ़्सीर यह कि है कि हर ऐसी चीज का देखना इसमें दाख़िल है, जो दिल को हक़ तआला जल्ल शानुहू से हटा कर किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जह कर दे।

दूसरी चीज़ ज़बान की हिफ़ाजत है। झूठ, चुग़लख़ोरी, लग्व बकवास, ग़ीबत, बद-गोई, बद-कलामी, झगड़ा वग़ैरह, सब चीजें, इसमें दाख़िल हैं। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि रोज़ा आदमी के लिए ढाल है, इसलिए रोज़ेदार को चाहिए कि ज़बान से कोई फ़हश[1] बात या जिहालत की बात, मस्लन तमस्ख़ुर[2], झगड़ा वग़ैरह न करे। अगर कोई दूसरा झगड़ने लगे तो कह दे कि मेरा रोज़ा है, यानी दूसरे की

1. गंदी बातें, 2. हंसी मज़ाक़,

इब्तिदा करने पर भी उससे न उलझे। अगर वह समझने वाला हो तो उस से कह दे कि मेरा रोज़ा है और अगर वह बेवक़ूफ ना-समझ हो तो अपने दिल को समझाये कि तेरा रोज़ा है। तुझे ऐसी लग़्वियात का जवाब देना मुनासिब नहीं, बिल् ख़ुसूस ग़ीबत और झूठ से तो बहुत ही एतराज़ ज़रूरी है कि बाज़ उलमा के नज़दीक इससे रोज़ा टूट जाता है, जैसा कि पहले गुज़र चुका है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दो औरतों ने रोज़ा रखा। रोज़े में इस शिद्दत से भूख लगी कि ना-क़ाबिले बर्दाश्त बन गई। हलाक़त के क़रीब पहुंच गई। सहाबा किराम (रज़ि०) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने एक प्याला उनके पास भेजा और उन दोनों को इसमें क़ै करने का हुक्म फ़र्माया। दोनों ने क़ै की, तो इसमें गोश्त के टुकड़े और ताज़ा खाया हुआ ख़ून निकला। लोगों को हैरत हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उन्होंने हक़ तआला शानुहू की हलाल रोज़ी से तो रोज़ा रखा और हराम चीज़ों को खाया कि दोनों औरतें लोगों की ग़ीबत करती रहीं। इस हदीस से एक मज़्मून और भी मुतरश्शह[1] होता है कि ग़ीबत करने की वजह से रोज़ा बहुत ज़्यादा मालूम होता है, हत्ता कि वे दोनों औरतें रोज़े की वजह से मरने के क़रीब हो गईं, इसी तरह और भी गुनाहों का हाल है और तर्जुबा इसकी ताईद करता है कि रोज़े में अक्सर मुत्तक़ी लोगों पर ज़रा भी असर नहीं होता और फ़ासिक़ लोगों की अक्सर बुरी हालत होती है। इस लिए अगर यह चाहें कि रोज़ा न लगे, तब भी उसकी बेहतर सूरत यह है कि गुनाहों से इस हालत में एहतराज़ करें, बिल् ख़ुसूस ग़ीबत से, जिसको लोगों ने रोज़ा काटने का मश्ग़ला तज्वीज़ कर रखा है। हक़ तआला शानुहू ने अपने कलाम पाक में ग़ीबत को अपने भाई के मुरदार गोश्त से ताबीर फ़र्माया है और अहादीस में भी ब कसरत इस क़िस्म के वाक़िआत इर्शाद फ़रमाए गए हैं, जिन से साफ़ मालूम होता है कि जिस शख़्स की ग़ीबत की गई उसका हक़ीक़तन गोश्त खाया जाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा चन्द लोगों को देखकर इर्शाद फ़र्माया कि दांतों में ख़िलाल करो। उन्होंने अर्ज़ किया कि हम ने तो आज गोश्त चखा भी नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि फ़्लां शख़्स का गोश्त तुम्हारे दांतों को लग रहा है। मालूम हुआ कि उनकी ग़ीबत की थी। अल्लाह तआला अपने हिफ़्ज़ में रखे कि हम लोग इस से बहुत ग़ाफ़िल हैं। अवाम का ज़िक्र नहीं, ख़्वास मुब्तला हैं, उन लोगों को छोड़ कर जो दुनियादार कहलाते हैं, दीनदारों की मजालिस भी बिलउमूम इस से कम ख़ाली होती हैं, इस से बढ़ कर यह है कि अक्सर इस को ग़ीबत भी नहीं समझा जाता है। अगर अपने या किसी

---

1. मतलब यह कि एक और मज़्मून भी निकलता है।

के दिल में कुछ खटका भी पैदा हो तो इस पर इज़्हारे वाक़िआ का पर्दा डाल दिया जाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने दर्याफ़्त किया कि ग़ीबत क्या चीज़ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि किसी की पसे पुश्त[1] ऐसी बात करनी, जो उसे नागवार हो। साइल ने पूछा कि अगर उस में वाक़िअतन वह बात मौजूद हो जो कही गई ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जब ही तो ग़ीबत है। अगर वाक़िअतन मौजूद न हो, तब तो बुहतान है। एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इन दोनों को अज़ाबे क़ब्र हो रहा है। एक को, लोगों की ग़ीबत करने की वजह से, दूसरे को पेशाब से एहतियात न करने की वजह से। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सूद के सत्तर से ज़्यादा बाब हैं, सब से सह्ल और हल्का दर्जा अपनी मां से ज़िना करने के बराबर है और एक दरहम सूद का 35 ज़िना से ज़्यादा सख़्त है और बदतरीन सूद और सबसे ज़्यादा ख़बीस-तरीन सूद मुसलमान की आबरूरेज़ी है। अहादीस में ग़ीबत और मुसलमान की आबरू रेज़ी पर सख़्त से सख़्त वईदें आई हैं। मेरा दिल चाहता था कि उन में से कुछ मोतद्द बिही[2] रिवायात जमा करूं, इसलिये कि हमारी मज्लिसें इस से बहुत ही ज़्यादा पुर रहती हैं, मगर मज़मून दूसरा है इसलिए इसी क़दर पर इक्तिफ़ा[3] करता हूं अल्लाह तआला हम लोगों को इस बला से महफ़ूज़ फ़र्माए और बुज़ुर्गों और दोस्तों की दुआ से मुझ स्याहकार को भी महफ़ूज़ फ़र्मायें कि बातिनी अमराज़ में कसरत से मुब्तला हूं।

किब्र व नख़्वत, जह्ल व ग़फ़लत, हक्द व कीना, बद ज़नी,
किज़्ब व बद अहदी, रिया व बुग़्ज़ व ग़ीबत, दुश्मनी।
कौन बीमारी है यरब जो नहीं मुझ में हुई,
आफ़िनी मिन् कुल्लि दाइन वक़्ज़ि अन्नी हाजती।
इन्न ली क़ल्बन सक़ीमन, अन्त शाफ़िन लिल् अलील।।

तीसरी चीज़ जिसका रोज़ेदार को एहतमाम ज़रूरी है, वह कान की हिफ़ाज़त है। हर मकरूह चीज़ से जिस का कहना और ज़बान से निकालना नाजायज़ है, इस की तरफ़ कान लगाना और सुनना भी नाजायज़ है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ग़ीबत का करने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाह में शरीक हैं।

---

1. पीठ पीछे, 2. बड़ी तादाद में, 3. बस, काफ़ी।

चौथी – चीज़ बाक़ी आज़ा-ए-बदन, मसलन हाथ का नाजायज़ चीज़ के पकड़ने से, पांव का नाजायज़ चीज़ की तरफ़ चलने से रोकना और इसी तरह और बाक़ी आज़ा-ए-बदन का, इसी तरह पेट का इफ़्तार के वक़्त मुश्तबहा चीज़ से महफ़ूज़ रखना, जो शख़्स रोज़ा रख कर हराम माल से इफ़्तार करता है, उसका हाल उस शख़्स का सा है कि किसी मर्ज़ के लिए दवा करता है मगर उसमें थोड़ा सा संख्या मिला लेता है कि उस मर्ज़ के लिए तो वह दवा मुफ़ीद हो जाएगी, मगर यह ज़हर साथ ही हलाक भी कर देगा।

पांचवीं चीज़ इफ़्तार के वक़्त हलाल माल से भी इतना ज़्यादा न खाना कि शिकम सेर[1] हो जाए, इस लिए कि रोज़े की ग़रज़ इस से फ़ौत हो जाती है। मक़्सूद रोज़े से क़ुव्वते शहवानिया[2] और बहीमिया[3] का कम करना है। क़ुव्वते नूरानिया और मलकिया का बढ़ाना है। ग्यारह महीने तक बहुत कुछ खाया है, अगर एक महीना इस में कुछ कमी हो जायेगी तो क्या जान निकल जाती है। मगर हम लोगों का हाल है कि इफ़्तार के वक़्त तलाफ़ि-ए-माफ़ात[4] में और सहर के वक़्त हिफ़्ज़े मा तक़द्दम में[5] इतनी ज़्यादा मिक़्दार खा लेते हैं कि बग़ैर रमज़ान के और बग़ैर रोज़े की हालत के इतनी मिक़्दार खाने की नौबत भी नहीं आती, रमज़ानुल मुबारक भी हम लोगों के लिए ख़ोद का काम देता है। अल्लामा ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि रोज़े की ग़रज़ यानी क़हरे इब्लीस और शहवते नफ़सानिया का तोड़ना कैसे हासिल हो सकता है, अगर आदमी इफ़्तार के वक़्त इस मिक़्दार की तलाफ़ी कर ले जो फ़ौत हुई हक़ीक़तन हम लोग बुजुज़ इसके कि अपने खाने के औक़ात बदल देते हैं, इसके सिवा कुछ भी कमी नहीं करते, बल्कि और ज़्यादती मुख़्तलिफ़ अन्वाअ की कर जाते हैं जो बग़ैर रमज़ान के मयस्सर नहीं होती। लोगों की आदत कुछ ऐसी हो गयी है कि उम्दा-उम्दा अश्या रमज़ान के लिए रखते हैं और नफ़्स दिन भर के फ़ाक़े के बाद जब उन पर पड़ता है तो ख़ूब ज़्यादा सेर हो कर खाता है, तो बजाए क़ूवते शह्वानिया के ज़ईफ़ होने के और भड़क उठती है और जोश में आ जाती है और मक़्सद के ख़िलाफ़ हो जाता है। रोज़े के अन्दर मुख़्तलिफ़ अग़राज़ और फ़वाइद और इस के मशरूअ होने से मुख़्तलिफ़ मुनाफ़े मक़्सूद हैं। वे सब जब ही हासिल हो सकते हैं, जब कुछ भूखा भी रहे। बड़ा नफ़ा तो यही है जो मालूम हो चुका, यानी शहवतों को तोड़ना, यह भी इसी पर मौक़ूफ़ है कि कुछ वक़्त भूख की हालत में गुज़रे।

---

1. बहुत ज़्यादा पेट भर जाए, 2. लज़्ज़त की ख़्वाहिश, 3. हैवानी कामों की ख़्वाहिश, दरिन्दगी के काम, 4. पिछले को पूरा करने में, 5. आगे की हिफ़ाज़त में,।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि शैतान आदमी के बदन में ख़ून की तरह चलता है। इसके रास्तों को भूख से बन्द करो, तमाम आज़ा का सेर होना नफ़्स के भूखा रहने पर मौक़ूफ़ है। जब नफ़्स भूखा रहता है तो तमाम आज़ा सेर रहते हैं और जब नफ़्स सेर होता है तो तमाम आज़ा भूखे रहते हैं। दूसरी ग़रज रोज़े से फ़ुकरा के साथ तशब्बोह[1] और उनके हाल पर नजर है, वह भी जब ही हासिल हो सकती है जब सहर में मेदे को दूध जलेबी से इतना न भर ले कि शाम तक भूख ही न लगे, फ़ुकरा के साथ मुशाबहत जब ही हो सकती है जब कुछ वक़्त भूख की बेताबी का भी गुज़रे। बश्र हाफी (रह०) के पास एक शख़्स गये। वह सर्दी में कांप रहे थे और कपड़े पास रखे हुए थे। उन्होंने पूछा कि यह वक़्त कपड़ा निकालने का है। फ़र्माया कि फ़ुकरा बहुत हैं और मुझमें इनकी हमदर्दी की ताक़त नहीं। उतनी हमदर्दी कर लू कि मैं भी उन जैसा हो जाऊं। मशाइख़ सूफ़िया ने आम्मतन इस पर तम्बीह फ़र्माई है और फ़ुकहा ने भी इसकी तसरीह की है। साहबे मराक़िपुल फ़लाह रह० लिखते हैं कि सहूर[2] में ज़्यादती न करे। जैसा कि मुतनाअम[3] लोगों की आदत है कि यह ग़रज को फ़ौत कर देता है। अल्लाम तहतावी रह० इसकी शरह में तहरीर फ़र्माते हैं कि ग़रज का मक़्सूद यह है कि भूख की तल्ख़ी कुछ महसूस हो, ताकि ज़्यादती-ए-सवाब का सबब हो। और मसाकीन व फ़ुकरा पर तरस आ सके। ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला जल्ल शानुहू को किसी बरतन का भरना इस क़दर नापसन्द नहीं है, जितना कि पेट का पुर होना ना पसन्द है। एक जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी के लिए चन्द लुक़मे काफ़ी हैं, जिन से कमर सीधी रहे। अगर कोई शख़्स बिलकुल खाने पर तुल जाये, तो इससे ज़्यादा नहीं कि एक तिहाई पेट खाने के लिए रखे और एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई ख़ाली। आख़िर कोई तो बात थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई-कई रोज़ तक मुसलसल रोज़ा रखते थे कि दर्मियान में कुछ भी नोश नहीं फ़र्माते थे, मैंने अपने आक़ा हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू को पूरे रमज़ानुल मुबारक देखा है कि इफ़्तार व सहर दोनों वक़्त की मिक़दार तक़रीबन डेढ़ चपाती से ज़्यादा नहीं होती थी। कोई ख़ादिम अर्ज भी करता तो फ़र्माते कि भूख नहीं होती। दोस्तों के ख़्याल से, साथ बैठ जाता हूं और इस से बढ़ कर हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी रहमतुल्लाह अलैहि के मुतल्लिक़ सुना है कि कई-कई दिन मुसलसल ऐसे ही गुज़र

1. हमशक्ल, 2. सहरी, 3. मालदार।

जाते थे कि तमाम शब की मिक़दार सहर व-इफ़्तार बे-दूध की चाय के चन्द फ़िन्जान[1] के सिवा कुछ न होती थी। एक मर्तबा हज़रत के मुख़्लिस ख़ादिम हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर[2] साहब रह० ने लजाजत[3] से अर्ज किया कि ज़ौफ़[4] बहुत हो जायेगा, हज़रत कुछ तनावुल ही नहीं फ़र्माते। तो हज़रत ने फ़र्माया कि अलहम्दु लिल्लाह जन्नत का लुत्फ़ हासिल हो रहा है। हक़ तआला हम स्याहकारों को भी इन पाक हस्तियों का इत्तिबाअ नसीब फ़र्मावें तो ज़हे नसीब। मौलाना सादी रह० कहते हैं।

न दारंद तन परवरां आगही
कि पुर मेदा बाशद ज़ि हिक्मत तिही

छठी – चीज़ जिसका लिहाज़ रोज़ेदार के लिए ज़रूरी फ़र्माते हैं, यह है कि रोज़े के बाद इससे डरते रहना भी ज़रूरी है कि न मालूम यह रोज़ा क़ाबिले क़ुबूल है या नहीं और इसी तरह हर इबादत के ख़त्म पर कि न मालूम कोई लग़्ज़िश जिसकी तरफ़ इल्तिफ़ात[5] भी नहीं होता, ऐसी तो नहीं हो गयी जिसकी वजह से यह मुंह पर मार दिया जाए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बहुत से क़ुरआन पढ़ने वाले हैं कि क़ुरआन पाक इनको लानत करता रहता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत में जिन लोगों का अव्वलीन वहले में फ़ैसला होगा (उन के मिनजुम्ला) एक शहीद होगा जिसको बुलाया जायेगा और अल्लाह के जो-जो इनाम दुनिया में उस पर हुए थे, वह उसको जिताए जायेंगे, वह उन सब नेमतों का इक़रार करेगा। इसके बाद उस से पूछा जाएगा कि इन नेमतों में क्या हक़ अदायगी की। वह अर्ज करेगा कि तेरे रास्ते में क़िताल किया, हत्ता कि शहीद हो गया। इर्शाद होगा झूठ है बल्कि क़िताल इस लिए किया था कि लोग बहादुर कहें, सो कहा जा चुका। उसके बाद हुक्म होगा और मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फ़ेंक दिया जाएगा। ऐसे ही एक आलिम बुलाया जाएगा उसको भी इसी तरह अल्लाह के इनामात जितला कर पूछा जाएगा कि उन इनामात के बदले में क्या कारगुज़ारी है। वह अर्ज करेगा कि इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया और तेरी

---

1. प्याली 2. हज़रत मौलाना रायपुरी (रह०) के अज़ल्ल (बड़े) ख़ुलफ़ा में हैं। रायपुर ही क़ियाम रहता है। अपने शेख़ के क़दम ब क़दम मुत्तबेअ हैं, जो लोग रायपुरी दरबार से महरूम रह गए, मौलाना के वजूद को ग़नीमत समझें कि हर जाने वाला अपनी नज़ीर नहीं छोड़ता। (अब हज़रत हक़्दस शाह अब्दुल क़ादिर साहब का भी 15 रबीउल अव्वल सन् 1383 हिजरी जुमेरात को इन्तिक़ाल हो गया।) 3. नर्मी से, 4. कमज़ोरी, 5. तवज्जोह नहीं होती।

रजा की ख़ातिर तिलावत की। इर्शाद होगा कि झूठ है। वह इसलिए किया गया था कि लोग अल्लामा कहें, सो कहा जा चुका। उसको भी हुक्म होगा और मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। इसी तरह एक दौलतमंद बुलाया जाएगा। उससे इन आमाले इलाही शुमार कराने और इक़रार लेने के बाद पूछा जाएगा कि अल्लाह की इन नेमतों में क्या अमल किया। वह कहेगा कि कोई ख़ैर का रास्ता ऐसा नहीं छोड़ा जिसमें मैंने कुछ ख़र्च न किया हो। इर्शाद होगा कि झूठ है। यह इसलिए किया गया था कि लोग सख़ी कहें। सो कहा जा चुका, उसको भी हुक्म होगा और मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। अल्लाह महफ़ूज फ़र्माएं कि यह सब बदनीयती के समरात हैं।

इस क़िस्म के बहुत से वाक़िआत अहादीस में मज़कूर हैं। इसलिए रोज़ेदार को अपनी नीयत की हिफ़ाज़त के साथ इससे ख़ायफ़[1] भी रहना चाहिए और दुआ भी करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला शनुहू इसको अपनी रजा का सबब बना लें। मगर साथ ही यह अम्र भी क़ाबिले लिहाज़ है कि अपने अमल को क़ाबिले क़ुबूल न समझना, अम्रे आख़िर और करीम आक़ा के लुत्फ़ पर निगाह अम्रे आख़िर है[2]। उसके लुत्फ़ के अन्दाज़ बिल्कुल निराले हैं। मासियत[3] पर भी कभी सवाब दे देते हैं तो फिर कोताहि-ए-अमल का क्या ज़िक्र।

ख़ूबी हमीं करिश्मा ओ नाज़ व ख़राम नीस्त।
बिसयार शेवा हास्त बतांरा कि नाम नीस्त।।

ये छह चीजें आम सुलहा[4] के लिए ज़रूरी बतलाई जाती हैं। ख़्वास और मुक़र्रिबीन के लिए इनके साथ एक सातवीं चीज का भी इज़ाफ़ा फ़रमाते हैं कि दिल को अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की तरफ़ मुतवज़्जह न होने दें, हत्ता कि रोज़े की हालत में इस का ख़्याल और तद्बीर कि इफ़्तार के लिए कोई चीज है या नहीं, यह भी खता फ़र्माते हैं। बाज़ मशाइख़ ने लिखा है कि रोज़े में शाम को इफ़्तार के लिए किसी चीज के हासिल करने का क़स्द भी ख़ता है, इसलिए कि यह अल्लाह के वायदा-ए-रिज़्क़ पर एतमाद की कमी है। शरह एह्या में बाज़ मशाइख़ का क़िस्सा लिखा हैं कि अगर इफ़्तार के वक़्त से पहले कोई चीज कहीं से आ जाती थी तो उसको किसी दूसरे को दे देते थे, मुबादा[5] दिल को उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात हो जाए और

---

1. भयभीत, 2. अपने अमल को तो यही समझे कि क़ुबूल होने के क़ाबिल नहीं है, मगर अल्लाह के करम पर निगाह रहे। 3. गुनाह के काम, 4. नेक लोगों, 5. शायद।

तवक्कुल में किसी क़िस्म की कमी हो जाए। मगर ये उमूर बड़े लोगों के लिए हैं, हम लोगों को इन उमूर की हविस करना भी बे-महल है। और इस हालत पर पहुंचे बग़ैर इसको इख़्तियार करना अपने को हलाकत में डालना है। मुफ़स्सिरीन[1] ने लिखा है कि-

कुति ब अलैकुमुस्सियामु। كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ

में आदमी के हर जुज़्व पर रोज़ा फ़र्ज किया गया है। पस ज़बान का रोज़ा झूठ बग़ैरह से बचना है और कान का रोज़ा नाजायज चीज़ों के सुनने से एहतराज़, आंख का रोज़ा लह्व व लअिब की चीज़ों से एहतराज़ है और ऐसे ही बाक़ी आज़ा, हत्ता कि नफ़्स का रोज़ा हिर्स व शहवतों से बचना, दिल का रोज़ा हुब्बे दुनिया से ख़ाली रखना रूह का रोज़ा आख़िरत की लज़्ज़तों से भी एहतराज़, और सरे ख़ास का रोज़ा ग़ैर अल्लाह के वजूद से भी एहतराज़ है।

١٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضه أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ أَفْطَرَ يَوْمًا مِّنْ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ رُخْصَةٍ وَلَا مَرَضٍ لَمْ يَقْضِهِ صَوْمُ الدَّهْرِ كُلِّهِ وَإِنْ صَامَهُ۔

(رواه احمد والترمذی وابوداؤد وابن ماجة والدارمی والبخاری فی ترجمة باب کذا فی المشکوٰة قلت وبسط الکلام علٰی طرقه العینی فی شرح البخاری)

10. नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स (क़सदन) बिला किसी शरई उज़्र के एक दिन भी रमज़ान के रोज़े को इफ़्तार कर दे, ग़ैर रमज़ान का रोज़ा चाहे तमाम उम्र के रोज़े रखे इसका बदल नहीं हो सकता।

फ़ — बाज़ उलमा का मज़हब[2], जिनमें हज़रात अली कर्रमल्लाहु वज्हहू वग़ैरः हज़रात भी हैं, इस हदीस की बिना पर यह है कि जिस ने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े को बिला वजह खो दिया, उसकी क़ज़ा हो ही नहीं सकती, चाहे उम्र भर रोज़े रखता रहे। मगर जम्हूर फ़ुक़हा के नज़दीक अगर रमज़ान का रोज़ा रखा ही नहीं तो एक रोज़े के बदले एक रोज़े से क़ज़ा हो जायेगी और अगर रोज़ा रख कर तोड़ दिया तो

1. तफ़्सीर लिखने वाले। 2. यहां मज़हब के माना 'मस्लक' के हैं, राय होना।

क़ज़ा के एक रोज़े के अलावा दो महीने के रोज़े कफ़्फ़ारे के अदा करने से फ़र्ज़ ज़िम्मे से साक़ित हो जाता है, अलबत्ता वह बरकत और फ़ज़ीलत जो रमज़ानुल मुबारक की है, हाथ नहीं आ सकती और इस हदीस पाक का मतलब है कि वह बरकत हाथ नहीं आ सकती कि जो रमज़ान शरीफ़ में रोज़ा रखने से हासिल होती, यह सब कुछ इस हालत में है कि बाद में क़ज़ा भी करे और अगर सिरे से रखे ही नहीं जैसा कि इस ज़माने के बाज़ फ़ुस्साक़[1] की हालत है तो इस गुमराही का क्या पूछना ? रोज़ा अरकाने इस्लाम से एक रुक्न है। नबी करीम सलल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर इर्शाद फ़र्माई हैं-

सब से अव्वल तौहीद व रिसालत का इक़रार,

इसके बाद इस्लाम के चारों मशहूर रुक्न नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज,

कितने मुसलमान हैं जो मरदुम शुमारी[2] में मुसलमान शुमार होते हैं लेकिन इन पांचों में से एक के भी करने वाले नहीं। सरकारी काग़ज़ात में वे मुसलमान लिखे जायें, मगर अल्लाह की फ़हरिस्त में वे मुसलमान शुमार नहीं हो सकते। हत्ता कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि इस्लाम की बुनियाद तीन चीज़ पर है, कलमा-ए-शहादत और नमाज़ और रोज़ा। जो शख़्स इनमें से एक भी छोड़ दे, वह काफ़िर है उसका ख़ून कर देना हलाल हैं।

उलमा ने इन जैसी रिवायात को इन्कार[3] के साथ मुक़य्यद किया हो या कोई तावील फ़र्माई हो, मगर इससे इन्कार नहीं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात ऐसे लोगों के बारे में सख़्त से सख़्त वारिद हुए हैं। फ़राइज़ के अदा करने में कोताही करने वालों को अल्लाह के क़हर से बहुत ही ज़्यादा डरने की ज़रूरत है कि मौत से किसी को चारा नहीं, दुनिया की ऐश व इशरत बहुत जल्द छूटने वाली चीज है। कारआमद[4] चीज सिर्फ़ अल्लाह की इताअत है। बहुत से जाहिल तो इतने ही पर किफ़ायत करते हैं कि रोज़ा नहीं रखते, लेकिन बहुत से बददीन ज़बान से भी इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ बक देते हैं कि जो कुफ़्र तक पहुंचा देते हैं। मसलन रोज़ा वह रखे, जिस के घर खाने को न हो या हमें भूखा मारने से अल्लाह को क्या मिल जाता है, वग़ैरह। इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ से बहुत ही ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है और बहुत ग़ौर व एहतमाम से एक मस्अला समझ लेना चाहिए कि दीन की छोटी से छोटी बात का तमस्ख़ुर और मज़ाक़ उड़ाना भी कुफ़्र का सबब होता है। अगर कोई

---

1. नाफ़रमान लोग, बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होने वाले, 2. जन-गणना, 4. यानी जो इन्कार कर दे, यह डरावा उन के लिए हैं, 4. काम आने वाली, मुफ़ीद।

शख़्स उम्र भर नमाज़ न पढ़े, कभी भी रोज़ा न रखे, इसी तरह और कोई फ़र्ज अदा न करे, बशर्ते कि उसका मुन्किर न हो, वह काफ़िर नहीं। जिस फ़र्ज को अदा नहीं करता उसका गुनाह होता है और जो आमाल अदा करता है उनका अज्र मिलता है। लेकिन दीन की किसी अदना से अदना[1] बात का तमस्ख़ुर भी कुफ़्र है जिससे और भी तमाम उम्र के नमाज़, रोज़े, नेक आमाल ज़ाया हो जाते हैं। बहुत ज़्यादा क़ाबिले लिहाज़ अम्र है। इस लिए रोज़े के मुताल्लिक़ भी कोई ऐसा लफ़्ज़ हरगिज़ न कहे और अगर तमस्ख़ुर वग़ैरह न करे, तब भी बग़ैर उज़्र इफ़्तार करने वाला[2] फ़ासिक़ है हत्ता कि फ़ुक़हा ने तसरीह की है कि जो शख़्स रमज़ान में अललऐलान बग़ैर उज़्र के खावे, उसको क़त्ल किया जावे, लेकिन क़त्ल पर अगर इस्लामी हुकूमत न होने की वजह से क़ुदरत न हो कि यह काम अमीरुल मोमिनीन का है, तो इस फ़र्ज से कोई भी सुबकदोश[3] नहीं कि इसकी नापाक हरकत पर इज़्हारे नफ़रत करे और इससे कम तो ईमान का कोई दर्जा ही नहीं कि उसको दिल से बुरा समझे। हक़ तआला शानुहू अपने मुतीअ[4] बन्दों के तुफ़ैल मुझे भी नेक आमाल की तौफ़ीक़ नसीब फ़र्मावें कि सब से ज़्यादा कोताही करने वालों में हूं।

फ़स्ल अव्वल में दस हदीसें काफ़ी समझता हूं कि मानने वाले के लिये एक भी काफ़ी है, च जाये कि तिल क अश रतुन् कामिलतुन् और न मानने वाले के लिए जितना भी लिखा जाए, बेकार है। हक़ तआला शानुहू सब मुसलमानों को अमल की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमावें।

शबे क़द्र के बयान में

रमज़ानुल मुबारक की रातों में से एक रात शबे क़द्र कहलाती है, जो बहुत ही बरकत और ख़ैर की रात है। कलामे पाक में उसको हज़ार महीनों से अफ़ज़ल बतलाया है हज़ार महीने के तिरासी बरस चार माह होते हैं। ख़ुश नसीब है वह शख़्स जिसको इस रात की इबादत नसीब हो जाए कि जो शख़्स इस एक रात को इबादत में गुज़ार दे, उसने गोया तिरासी बरस चार माह से ज़्यादा ज़माने को इबादत में गुज़ार दिया और इस ज़्यादती का भी हाल मालूम नहीं कि हज़ार महीने से कितने

1. कम से कम, 2. बेरोज़ेदार, 3. छुटकारा पाने वाला, 4. फ़र्माबरदार।

माह ज़्यादा अफ़्ज़ल है।

अल्लाह जल्ल शानुहू का हक़ीक़तन बहुत ही बड़ा इनाम है कि क़द्रदानों के लिए यह एक बे-निहायत नेमत मरहमत फ़र्माई। दुर्रे मन्सूर में हज़रत अनस रज़ि० से हुज़ूर (सल्ल०) का यह इर्शाद नक़ल किया है कि शबे क़द्र हक़ तआला जल्ल शानुहू ने मेरी उम्मत को मरहमत फ़र्माई है, पहली उम्मतों को नहीं मिली। इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं कि इस इनाम का सबब क्या हुआ ? बाज़ अहादीस में वरिद हुआ है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली उम्मतों की उम्रों को देखा कि बहुत-बहुत हुई हैं और आप की उम्मत की उम्रें बहुत थोड़ी हैं। अगर वे नेक आमाल में इनकी बराबरी भी करना चाहें, तो नामुम्किन। इससे अल्लाह के लाडले नबी सल्ल० को रंज हुआ। इसको तलाफ़ी[1] में यह रात मरहमत हुई कि अगर किसी ख़ुश नसीब को दस रातें भी नसीब हो जायें और इनको इबादत में गुज़ार दे तो गोया आठ सौ तैतीस बरस चार माह से भी ज़्यादा ज़माना कामिल इबादत में गुज़ार दिया। बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का ज़िक्र फ़र्माया कि एक हज़ार महीने तक अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता रहा सहाबा रज़ि० को उस पर रश्क आया तो अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म नवालुहू ने इसकी तलाफ़ी के लिए इस रात का नुज़ूल फ़र्माया। एक रिवायत में है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनी इस्राईल के चार हज़रात का ज़िक्र फ़र्माया, हज़रत अय्यूब अलै०, हज़रत ज़करीया अलै०, हज़रत हिज़कील अलै०, हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम कि अस्सी-अस्सी बरस तक अल्लाह की इबादत में मशग़ूल रहे और पल झपकने के बराबर भी अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं की। इस पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को हैरत हुई, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िरे ख़िदमत हुए और सूरतुल क़द्र सुनाई। इसके अलावा और भी रिवायात हैं। इस क़िस्म के इख़्तिलाफ़े रिवायात की अक्सर वजह यह होती है कि एक ही ज़माने में जब मुख़्तलिफ़ वाक़िआत के बाद कोई आयत नाज़िल होती है, तो हर वाक़िया कि तरफ़ निस्बत हो सकती है। बहरहाल सबब नुज़ूल, जो भी कुछ हुआ हो, लेकिन उम्मते मुहम्मदिया के लिए यह अल्लाह जल्ल शानुहू का बहुत ही बड़ा इनाम है। यह रात भी अल्लाह ही का अतीया[2] है और इसमें अमल भी इसी की तौफ़ीक़ से मयस्सर होता है। वरना-

तही दस्ताने क़िस्मत रा च सूद अज़ रहबरे कामिल
कि ख़िज़्र ज़ आबे हैवां तिश्ना मी आरद सिकन्दर रा

1. कमी को दूर करने में, 2. देन।

किस क़दर क़ाबिले रश्क हैं वे मशाइख़ जो फ़र्माते हैं, कि बुलूग़[1] के बाद से मुझ से शबे क़द्र की इबादत कभी फ़ौत नहीं हुई, अलबत्ता इस रात की तायीन[2] में उलमा-ए-उम्मत के दर्मियान में बहुत ही कुछ इख़्तिलाफ़ है। तक़रीबन पचास के क़रीब अक्वाल हैं। अलबत्ता मशहूर अक्वाल का ज़िक्र अन्क़रीब आने वाला है। कुतुबे अहादीस में इस रात की फ़ज़ीलत मुख़्तलिफ़ अन्वाअ और मुतअद्दद रिवायात से वारिद हुई है, जिनमें से बाज़ का ज़िक्र आता है। मगर चूंकि इस रात की फ़ज़ीलत ख़ुद क़ुरआन पाक में भी मज़्कूर है और मुस्तक़िल एक सूरत इसके बारे में नाज़िल हुई है, इसलिए मुनासिब है कि अव्वल इस सूरः शरीफ़ा की तफ़्सीर लिख दी जाये- तर्जुमा हज़रते अक़्दस हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी नव्वरल्लाहु मरक़दहु की तफ़्सीर 'बयानुल क़ुरआन' से माख़ूज़ है और फ़वायद दूसरी कुतुब से।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम : इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल क़द्रि० 'बेशक हम ने क़ुरआन पाक को शबे क़द्र में उतारा है।'

फ़ — यानी क़ुरआन पाक लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर इसी रात में उतरा है। यह ही एक बात इस रात की फ़ज़ीलत के लिए काफ़ी थी। कि क़ुरआन जैसी अज़्मत वाली चीज़ इसमें नाज़िल हुई च जाय कि उसमें और भी बहुत से बरकात व फ़ज़ाइल शामिल हो गये हों।

आगे ज़्यादती-ए-शौक़ के लिए इर्शाद फ़र्माते हैं-

वमा अदरा क मा लैलतुल् क़द्रि० وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

'आप को कुछ मालूम भी है, कि शबे क़द्र कैसी बड़ी चीज़ है।' यानी इस रात की बड़ाई और फ़ज़ीलत का आप को इल्म भी है कि कितनी ख़ूबियां और किस क़दर फ़ज़ाइल इसमें है। उसके बाद चंद फ़ज़ाइल का ज़िक्र फ़र्माते हैं।

लैलतुल क़द्रि ख़ैरुम्मिन् अल्फ़ि शह्रि० لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। यानी हज़ार महीने तक इबादत करने का जिस क़दर सवाब है उससे ज़्यादा शबे क़द्र में इबादत करने का सवाब है। और

1. बालिग होना, 2. मुतअय्यन करने, तै करने,

इस ज़्यादती का इल्म भी नहीं कि कितनी ज़्यादा है।

तनज़्ज़लुल मलाइकतु تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ

'उस रात में फ़रिश्ते उतरते हैं।'

अल्लाम राज़ी (रह०) लिखते हैं कि मलाइका ने जब इब्तिदा में तुझे देखा था तो, तुझ से नफ़रत ज़ाहिर की थी और बारगाहे आली में अर्ज़ किया था कि ऐसी चीज़ को आप पैदा फ़र्माते हैं, जो दुनिया में फ़साद करे और ख़ून बहावे। इसके बाद वालिदैन ने जब तुझे अव्वल देखा था, जबकि तू मनी का क़तरा था, तो तुझ से नफ़रत की थी हत्ता कि कपड़े को अगर लग जाता तो कपड़े को धोने की नौबत आती, लेकिन जब हक़ तआला शानुहू ने उस क़तरे को बेहतर सूरत मरहमत फ़र्मादी[1] तो वालिदैन को भी शफ़क़त और प्यार की नौबत आई। और आज जब कि तौफ़ीक़े इलाही से तू शबे क़द्र में मारफ़ते इलाही और ताअते रब्बानी में मशग़ूल है, तो मलाइका भी अपने इस फ़िक़रे की माज़रत[2] करने के लिए उतरते हैं।

वर्रूहु फ़ीहा وَالرُّوْحُ فِيْهَا

और इस रात में रूहुल क़ुद्स यानी हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलामु भी नाज़िल होते हैं। रूह के माना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं। जमहूर का यही क़ौल है, जो ऊपर लिखा गया कि इससे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मुराद हैं। अल्लामा राज़ी[3] रह० ने लिखा है, कि यही क़ौल ज़्यादा सही है। और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अफ़ज़लियत की वजह से मलाइका के ज़िक्र के बाद ख़ास तौर से उनका ज़िक्र फ़र्माया।

बाज़ का क़ौल है कि रूह से मुराद एक बहुत बड़ा फ़रिश्ता है कि तमाम आसमान व ज़मीन उसके सामने एक लुक़मे के बक़द्र हैं। बाज़ों का क़ौल है कि इससे मुराद फ़रिश्तों की एक मख़्सूस जमाअत है, जो और फ़रिश्तों को भी सिर्फ़–

'लैलतुल क़द्र'

ही में नज़र आते हैं। चौथा क़ौल यह है कि यह अल्लाह की कोई मख़्सूस मख़्लूक़ है जो खाते-पीते हैं, मगर न फ़रिश्ते हैं, न इंसान। पांचवां यह है कि हज़रत ईसा (अलै०) मुराद हैं, जो उम्मते मुहम्मदिया के कारनामे देखने के लिए मलाइका के साथ उतरते हैं। छठा क़ौल यह है कि यह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत है,

---

1. यानी इन्सान को देखा था, 2. माफ़ी मांगना, 3. इमाम राज़ी मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन।

यानी इस रात में मलाइका नाज़िल होते हैं। और इनके बाद मेरी रहमते ख़ास नाज़िल होती है, इनके अलावा और भी चन्द अक़वाल हैं। मगर मशहूर क़ौल पहला ही है। सुनन बैहक़ी हज़रत अनस (रज़ि०) के वास्ते से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मन्क़ूल है कि शबे क़द्र में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों के एक गिरोह के साथ उतरते हैं और जिस शख़्स को ज़िक्र वग़ैरह में मशग़ूल देखते हैं उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं।

बिइज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्र० بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ

'अपने परवरदिगार के हुक्म से हर अम्रे ख़ैर को लेकर ज़मीन की तरफ़ उतरते हैं।'

मज़ाहिरे हक़ में लिखा है कि इसी रात में मलाइका की पैदाइश हुई और इसी रात में आदम अलै० का माद्दा जमा होना शुरू हुआ। इसी रात में जन्नत में दरख़्त लगाये गये और दुआ वग़ैरह का क़ुबूल होना तो ब-कसरत रिवायात में वारिद है। दुर्रे मन्सूर की एक रिवायात में है कि इसी रात में हज़रत ईसा अलै० आसमान पर उठाए गये और इसी रात में बनी इस्राईल की तौबा क़ुबूल हुई।

सलामुन سَلَامٌ

'वह रात सरापा सलाम है।

यानी तमाम रात मलाइका की तरफ़ से मोमिनीन पर सलाम होता रहता है कि एक फ़ौज आती है, दूसरी जाती है। जैसा कि बाज़ रिवायात में इस की तसरीह है। या यह मुराद है कि यह रात सरापा सलामती है, शर' व फ़साद वग़ैरह से अम्न है।

हि य हत्ता मत्लइल फ़ज्र हِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ

'वह रात (इन ही बरकात के साथ तमाम रात तुलू-ए-फ़ज्र[1] तक रहती है।' यह नहीं कि रात के किसी ख़ास हिस्से में यह बरकत हो और किसी में न हो बल्कि सुबह होने तक इन बरकात का ज़हूर रहता है। इस सूरः शरीफ़ा के ज़िक्र के बाद कि ख़ुद अल्लाह जल्ल जलालहु के कलाम पाक में इस रात को कई नौअ की फ़ज़ीलतें इर्शाद फ़रमाई गई हैं, अहादीस के ज़िक्र की ज़रूरत नहीं रहती। लेकिन अहादीस में भी इस की फ़ज़ीलत ब-कसरत वारिद हुई है। उन में से चन्द अहादीस ज़िक्र की

1. सूरज निकलने तक।

जाती हैं।

ا – عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ (كذا في الترغيب عن البخاري ومسلم)

1. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स लैलतुल क़द्र में ईमान के साथ और सवाब की नीयत से इबादत के लिए खड़ा हो, उस के पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

फ़ – खड़ा होने का मतलब यह है कि नमाज़ पढ़े और इसी हुक्म में यह भी है कि किसी और इबादत, तिलावत, और ज़िक्र वग़ैरह में मशग़ूल हो और सवाब की उम्मीद रखने का मतलब यह है कि रिया[1] वग़ैरह किसी बद-नीयती से खड़ा न हो, बल्कि इख़्लास के साथ महज अल्लाह की रज़ा और सवाब के हुसूल की नीयत से खड़ा हो। ख़त्ताबी रह० कहते हैं, इस का मतलब यह है कि सवाब का यक़ीन करके बशाशते क़ल्ब[2] से खड़ा हो, बोझ-समझ कर, बद-दिली के साथ नहीं। और खुली हुई बात है कि जिस क़दर सवाब का यक़ीन और एतक़ाद ज़्यादा होगा, उतना ही इबादत में मशक़्क़त का बर्दाश्त करना सहल होगा। यही वजह है कि जो शख़्स क़ुर्बे इलाही में जिस क़दर तरक़्क़ी करता जाता है, इबादत में इन्हिमाक ज़्यादा होता रहता है, नीज यह मालूम हो जाना भी ज़रूरी है कि हदीसे वाला और उस जैसी अहादीस में गुनाहों से मुराद उलमा के नज़दीक सग़ीरा[3] गुनाह होते हैं, इसलिए कि क़ुरआन पाक में जहां कबीरा[4] गुनाहों का ज़िक्र आता है। उनको

'इल्ला मन ता ब'

के साथ ज़िक्र किया है। इसी बिना पर उलमा का इजमाअ[5] है कि कबीरा गुनाह, बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होता, पस जहां अहादीस में गुनाहों के माफ़ होने का ज़िक्र आता है, उलमा इस को सग़ायर[6] के साथ मुक़य्यद फ़र्माया करते हैं। मेरे वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू व बर्रद मज़जअहू का इर्शाद है कि अहादीस में सग़ायर की क़ैद दो वजह से मज़कूर नहीं होती।

अव्वल तो यह कि मुसलमान की शान यह है ही नहीं कि इस के ज़िम्मे

---

1. दिखावा, 2. दिल की खुशी, या खुश-दिली से, 3. छोटे, 4. बड़े, 5. सब का मिला-जुला फ़ैसला, 6. छोटे गुनाह,

कबीरा गुनाह हो, क्योंकि जब कबीरा गुनाह इस से सादिर हो जाता है तो मुसलमान की असल शान यह है कि उस को उस वक़्त तक चैन ही न आवे, जब तक कि उस गुनाह से तौबा न कर ले।

दूसरी वजह यह है कि जब इस क़िस्म के मौक़े होते हैं, मसलन लैलतुल क़द्र ही में, जब कोई शख़्स ब उम्मीदे सवाब[1] इबादत करता है, तो अपनी बदआमालियों पर नदामत[2] उसके लिए लाज़िम है और हो ही जाती है। इसलिए तौबा का तहक़्क़ुक़[3] ख़ुद ब ख़ुद हो ही जाता है कि तौबा की हक़ीक़त गुज़िश्ता पर नदामत और आइन्दा न करने का अज़्म है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स कबाइर का मुरतकिब भी हो, तो इसके लिए ज़रूरी है कि लैलतुल क़द्र हो या कोई और इजाबत[4] का मौक़ा हो, अपनी बद-आमालियों से सच्चे दिल से पुख़्तगी के साथ दिल व ज़बान से तौबा भी कर ले, ताकि अल्लाह की रहमते कामिला मुतवज्जह हो, और सग़ीरा-कबीरा सब तरह के गुनाह माफ़ हो जावें। और याद आ जावे तो इस स्याहकार[5] को भी अपनी मुख़्लिसाना दुआओं में याद फ़र्मा लें।

٢- عَنْ اَنَسٍؓ قَالَ دَخَلَ رَمَضَانُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ هٰذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا اِلَّا مَحْرُوْمٌ (رواه ابن ماجة و اسناده حسن ان شاء الله كذا في الترغيب وفي المشكوة عنه الاكل محروم)

2. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा रमज़ानुल मुबारक का महीना आया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आया है, जिस में एक रात है, जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। जो शख़्स इस रात से महरूम रह गया, गोया सारी ही ख़ैर से महरूम रह गया और उसकी भलाई से महरूम नहीं रहता मगर वह शख़्स जो हक़ीक़तन महरूम ही हैं।

फ़ – हक़ीक़तन उसकी महरूमी में क्या ताम्मुल है, जो इस क़दर बड़ी नेमत को हाथ से खो दे। रेलवे मुलाज़िम चन्द कौड़ियों की ख़ातिर रात-रात भर जागते हैं, अगर अस्सी बरस इबादत की ख़ातिर कोई एक महीने तक रात में जाग ले तो क्या दिक़्क़त है। असल यह है कि दिल में तड़प ही नहीं, अगर ज़रा सा चस्का पड़ जाये तो फिर एक रात क्या सैकड़ों रातें जागी जा सकती हैं।

---

1. सवाब की उम्मीद से, 2. शर्मिंदगी, 3. असलियत का मालूम होना, 4. जवाब पाने, क़ुबूलियत, 5. लेखक अपने बारे में फ़रमाते हैं कि मुझे भी दुआओं में याद कर ले,

उलफ़त में बराबर है वफ़ा हो कि जफ़ा हो।
हर चीज में लज़्ज़त है अगर दिल में मजा हो।।

आख़िर कोई तो बात थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बावजूद सारी बशारतों और वायदों के, जिनका आपको यक़ीन, था, फिर इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ते थे कि पांव वरम कर जाते थे, उन्हीं के नाम लेवा और उम्मती आख़िर हम भी कहलाते हैं। हां, जिन लोगों ने इन उमूर की क़द्र की, वह सब कुछ कर गये और नमूना बन कर उम्मत को दिखला गए। कहने वालों को यह मौक़ा भी नहीं रहा कि हुज़ूर सल्ल० की हिर्स कौन कर सकता है और किससे हो सकती है। दिल में समा जाने की बात है कि चाहने वाले के लिए दूध की नहर पहाड़ से खोदनी भी मुश्किल नहीं होती, मगर यह बात किसी की जूतियां सीधी किए बग़ैर मुश्किल से हासिल होती हैं।

तमन्ना दर्दे दिल की है तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की।
नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के खज़ीने में।।

आख़िर क्या बात थी कि हजरत उमर रज़ियल्लाह तआला अन्हु इशा की नमाज के बाद घर में तशरीफ़ ले जातेऔर सुबह तक नमाज़ में गुज़ार देते थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दिन भर रोजा रखते और रात भर नमाज़ में गुज़ार देते। सिर्फ़ रात के अव्वल हिस्से में थोड़ा सा सोते थे। रात की एक-एक रक्अत में पूरा क़ुरआन पढ़ लेते थे। शरह एह्या में अबूतालिब मक्की रह० से नक़ल किया है कि चालीस ताबईन से ब-तरीक़े तवातुर[1] यह बात साबित है कि वह इशा के वुज़ू से नमाज़ सुबह पढ़ते थे। हजरत शद्दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रात को लेटते और तमाम रात करवटें बदल कर सुबह कर देते और कहते या अल्लाह ! आग के डर ने मेरी नींद उड़ा दी। अस्वद बिन यज़ीद रह० रमज़ान में मग़्रिब-इशा के दर्मियान थोड़ी देर सोते, और बस। सईदुब्निल् मुसय्यिब रह० के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि पचास बरस तक इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज पढ़ी। सिला बिन अशयम रहम० रात भर नमाज़ पढ़ते और सुबह को यह दुआ करते कि या अल्लाह, मैं इस क़ाबिल तो नहीं हूं कि जन्नत मांगू, सिर्फ़ इतनी दरख़्वास्त है कि आग से बचा दीजियो। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम रमज़ान तो हर तीन रात में एक ख़त्म फ़र्माते, मगर अशरा-ए-अख़ीरा[2] में हर रात में एक क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म करते। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि का चालीस साल तक इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज

---

1. यानी बहुत से लोगों से नकल की गयी है, 2. आख़िरी दस दिन,

ना इतना मशहूर व मारूफ़ है कि इससे इन्कार तारीख़ के एतमाद को हटाता है।[1] जब उनसे पूछा गया कि आप को यह क़ुव्वत किस तरह हासिल हुई, तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह के नामों के तुफ़ैल एक मख़सूस तरीक़े पर दुआ की थी। सिर्फ़ दोपहर को थोड़ी देर सोते और फ़रमाते कि हदीस में क़ैलूला का इर्शाद है, गोया दोपहर के सोने में भी इत्तिबा-ए-सुन्नत का इरादा होता, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हुए इतना रोते कि पड़ोसियों को तरस आने लगता था। एक मर्तबा सारी रात इस आयत को पढ़ते और रोते गुज़ार दी।

बलिस्सा अ़तु मौअ़िदुहुम... आख़िर तक[2] (सूरः क़मर, रुकूअ 3)

इब्राहीम बिन अदहम (रह०) रमज़ानुल मुबारक में न तो दिन को सोते, न रात को, इमाम शाफ़ई रह० रमज़ानुल मुबारक में दिन-रात की नमाज़ों में साठ क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म करते और इनके अलावा सैकड़ों वाक़िआत हैं, जिन्होंने-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ

व मा ख़लक़्तुल जिन्न वल्इन्स इल्ला लियअ़बुदून[3]

पर अमल करके बतला दिया कि करने वाले के लिए कुछ मुश्किल नहीं।

यह सलफ़[4] के वाक़िआत हैं अब भी करने वाले मौजूद हैं। इस दर्जे का मुजाहदा[5] न सही, मगर अपने ज़माने के मुवाफ़िक़ अपनी ताक़त व क़ुदरत के मुवाफ़िक़, नमूना-ए-सलफ़ अब भी मौजूद है और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चा इक़्तिदा[6] करने वाले इस दौरे फ़साद में भी मौजूद हैं, न राहत व आराम इन्हिमाक इबादत[7] से मानअ़[8] होता है न दुनियावी मशाग़िल सद्दे राह[9] होते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है, ऐ इब्ने आदम! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा मैं तेरे सीने को ग़िना से भर दूंगा और तेरे फ़क्र[10] को बन्द कर दूंगा, वरना तेरे सीने को मशाग़िल से भर दूंगा और फ़क्र ज़ायल नहीं होगा। रोज़मर्रा के मुशाहदात इस सच्चे इर्शाद के शाहिदे अद्ल[11] हैं।

---

1. यानी इस का न मानना पूरी तारीख़ पर से ऐतबार उठा देता है, 2. तर्जुमा-'बल्कि क़ियामत है वायदागाह उनका और क़ियामत है वायदागाह उनका और क़ियामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़ुवी है, 3. तर्जुमा-'नहीं पैदा किया मैंने जिन्न को और इन्सान को, मगर सिर्फ़ इबादत के लिए, 4. बुज़ुर्गों, पूरखों, 5. कोशिश, 6. पैरवी, 7. इबादत में लगे रहने, 8. रुकावट, 9. रास्ते की रोक, 10. ग़रीबी, मुफ़लिसी, 11. इन्साफ़ के गवाह,

٣- عن انسٍ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان ليلة
القدر نزل جبرئيل في كبكبة من الملائكة يصلون على كل عبد
قائم او قاعد يذكر الله عز وجل فاذا كان يوم عيدهم يعني يوم
فطرهم باهى بهم ملائكته فقال يا ملائكتي ما جزاء اجير وفّى عمله
قالوا ربنا جزاؤه ان يوفّى اجره قال ملائكتي عبيدي وامائي قضوا
فريضتي عليهم ثم خرجوا يعجّون الى الدعاء وعزتي وجلالي وكرمي
وعلوي وارتفاع مكاني لاجيبنهم فيقول ارجعوا فقد غفرت لكم
وبدلت سيأتكم حسنات قال فيرجعون مغفورًا لهم. رواه البيهقي

3. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि शबे क़द्र में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मलाइका की एक जमाअत के साथ आते हैं, और उस शख़्स के लिए, जो खड़े या बैठे, अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है और इबादत में मशग़ूल है, दुआ-ए-रहमत करते हैं और जब ईदुल फ़ित्र का दिन होता है, तो हक़ तआला जल्ल शानुहू अपने फ़रिश्तों के सामने बन्दों की इबादत पर फ़ख़्र फ़र्माते हैं (इसलिए कि उन्होंने आदमियों पर तअ्न[1] किया था) और उनसे दर्याफ़्त फ़र्माते हैं कि ऐ फ़रिश्तो! उस मज़दूर का जो अपनी ख़िदमत पूरी-पूरी अदा कर दे क्या बदला है? वह अर्ज़ करते हैं कि ऐ हमारे रब! इसका बदला यही है कि उसकी उज्रत पूरी दे दी जाए। तो इर्शाद होता है कि फ़रिश्तो! मेरे ग़ुलामों ने और बांदियों ने मेरे फ़रीज़े को पूरा कर दिया, फिर दुआ के साथ चिल्लाते हुए (ईदगाह की तरफ़) निकले हैं। मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम। मेरे जलाल की क़सम मेरी बख़्शिश की क़सम, मेरे उलू-ए-शान[2] की क़सम। मेरे बुलन्दी-ए-मर्तबे की क़सम, मैं इन लोगों की दुआ ज़रूर क़ुबूल करूंगा। फिर उन लोगों को ख़िताब फ़र्मा कर इर्शाद होता है कि जाओ, तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दिये हैं और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया है। पस यह लोग ईदगाह से ऐसे हाल में लौटते हैं कि इनके गुनाह माफ़ हो चुके होते हैं।

फ़ – हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का मलाइका के साथ आना ख़ुद क़ुरआन पाक में भी मज़्कूर है, जैसा कि पहले गुज़र चुका और बहुत सी अहादीस में भी इसकी तसरीह है। रिसाले की सबसे आख़िरी हदीस में इसका मुफ़स्सल ज़िक्र आ रहा है

1. यानी ऐतराज़ किया था उन की पैदाइश पर, 2. बड़ी शान,

कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तमाम फ़रिश्तों को तकाजा फ़र्माते हैं कि हर ज़ाकिर व शाग़िल के घर जावें और उनसे मुसाफ़हा करें। ग़ालियातुल् मवाइज में हज़रते अक़्दस शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहि की 'ग़ुनया' से नकल किया है कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है कि फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील के कहने से मुतफ़र्रिक़[1] हो जाते हैं और कोई घर, छोटा-बड़ा जंगल या कश्ती ऐसी नहीं होती जिसमें कोई मोमिन हो और वह फ़रिश्ते मुसाफ़हा करने के लिए वहां न जाते हों। लेकिन उस घर में दाख़िल नही होते, जिसमें कुत्ता या सुअर हो या हरामकारी की वजह से जुन्बी[2] या तस्वीर हो। मुसलमानों के कितने घर ऐसे हैं जिनमें ख़्याली ज़ीनत की ख़ातिर तस्वीरें लटकाई जाती हैं और अल्लाह की इतनी बड़ी नेमत रहमत से अपने हाथों अपने को महरूम करते हैं। तस्वीर लटकाने वाला एक आध होता है, मगर इस घर में रहमत के फ़रिश्तों के दाख़िल होने से रोकने का सबब बनकर सारे ही घर को अपने साथ महरूम रखता है।

٤- عَنْ عَائِشَةَ رض قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ (مشكوة عن البخارى)

4. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नकल फ़र्माती हैं कि लैलतुल क़द्र को रमजान के अख़ीर अशरे[3] की ताक़ रातों में तलाश किया करो।

फ़ — जम्हूर उलमा के नजदीक अख़ीर अशरा इक्कीसवीं रात से शुरू होता है। आम है महीना 29 का हो या 30 का, इस हिसाब से हदीसे बाला के मुताबिक़ शबे क़द्र की तलाश 21, 23, 25, 27, 29 की रातों में करना चाहिए। अगर महीना 29 का हो तब भी अख़ीर अशरा यही कहलाता है। मगर इब्ने हज़्म (रहम०) की राय है कि अश्रे के माना दस के हैं। लिहाज़ा अगर तीस का चांद रमज़ानुल मुबारक का हो तब तो यह है, लेकिन अगर 29 का चांद हो तो इस सूरत में अख़ीर अशरा बीसवीं शब से शुरू होता है और इस सूरत में वित्र[4] रातें यह होंगी- 20, 22, 24, 26, 28। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लैलतुल क़द्र ही की तलाश में रमज़ानुल मुबारक का एतकाफ़ फ़र्माया करते थे और वह बिल् इत्तिफ़ाक़ इक्कीसवीं शब से शुरू होता था, इसलिए भी जमहूर का क़ौल इक्कीसवीं रात से ताक़ रातों में क़वी एहतमाल है, ज़्यादा राजेह है, अगरचे एहतमाल और रातों में भी है और

---

1. फैल जाते हैं, 2. ना-पाक, 3. आख़िरी दस दिन, 4. यानी ताक़ रातें,

दोनों क़ौलों पर तलाश जब मुम्किन है कि बीसवीं शब से लेकर ईद की रात तक, हर रात में जागता रहे और शबे क़द्र की फ़िक्र में लगा रहे। दस-ग्यारह रातें कोई ऐसी अहम या मुश्किल चीज नहीं, जिनको जाग कर गुजार देना उस शख़्स के लिए कुछ मुश्किल हो जो सवाब की उम्मीद रखता हो।

उर्फ़ी अगर बिगिरया मयस्सर शुदे विसाल।
सद साल मी तवां बे तमन्ना ग्रीस्तन।।[1]

٥ - عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُخْبِرَنَا بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى رَجُلَانِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَقَالَ خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى فُلَانٌ وَفُلَانٌ فَرُفِعَتْ وَعَسَى اَنْ يَّكُوْنَ خَيْرًا لَّكُمْ فَالْتَمِسُوْهَا فِي التَّاسِعَةِ وَالسَّابِعَةِ وَالْخَامِسَةِ۔ (مشكوة عن البخاري)۔

5. हजरत उबादा रजि० कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसलिए बाहर तश्रीफ़ लाये ताकि हमें शबे क़द्र की इत्तिला फ़र्मावें। मगर दो मुसलमानों में झगड़ा हो रहा था, हजरत सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मैं इसलिए आया था कि तुम्हें शबे क़द्र की ख़बर दूं, फ़्लां-फ़्लां शख़्सों में झगड़ा हो रहा था कि जिस की वजह से इस की ताईन उठा ली गई। क्या बईद है कि यह उठा लेना अल्लाह के इल्म में बेहतर हो, लिहाजा अब इस रात को नवीं और सातवीं और पांचवीं रात में तलाश करो।

फ़ — इस हदीस में तीन मज़्मून क़ाबिले ग़ौर हैं-

अम्र अव्वल, जो सबसे अहम है वह झगड़ा है, जो इस क़दर सख़्त बुरी चीज है कि इसकी वजह से हमेशा के लिए शबे क़द्र की ताईन उठा ली गई और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि झगड़ा हमेशा बरकात से महरूमी का सबब हुआ करता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तुम्हें नमाज, रोज़ा-सद्क़ा वग़ैरह सबसे अफ़ज़ल चीज बतलाऊं। सहाबा रजियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया ज़रूर, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि आपस का सलूक सबसे अफ़ज़ल है और आपस की लड़ाई दीन को मूंडने वाली है, यानी जैसे उस्तरे से सर के बाल एकदम साफ़ हो जाते हैं। दुनियादार, दीन से बे-ख़बर लोगों का क्या ज़िक्र, जबकि बहुत सी लम्बी-लम्बी तस्बीहें पढ़ने वाले दीन के दावेदार भी, हर वक़्त आपस की लड़ाई में मुब्तला रहते हैं, अव्वल हुज़ूर के इर्शाद को ग़ौर से देखें और फिर अपने

1. यानी ऐ उर्फ़ी ! अगर रोने से मिलन हो सकता है, तो सौ वर्ष भी रोते हुए गुजारे जा सकते हैं,

इस दीन की फ़िक्र करें, जिस के घमंड में सुलह के लिए झुकने की तौफ़ीक़ नहीं होती।

फ़स्ले अव्वल में रोज़े के आदाब में गुज़र चुका है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की आबरूरेज़ी को बदतरीन सूद और ख़बीस तरीन सूद इर्शाद फ़र्माया है, लेकिन हम लोग लड़ाई के ज़ोर में न मुसलमान की आबरू की परवाह करते हैं, न अल्लाह और उसके सच्चे रसूल के इर्शादात का ख़याल ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है-

وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا

व ला तनाज़ऊ फ़ तफ़शलू (अल आयः)

'और नज़ाअ[1] मत करो वरना कम हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।' (बयानुल क़ुरआन) आज वह लोग जो हर वक़्त दूसरों का वक़ार घटाने की फ़िक्र में रहते हैं तन्हाई में बैठ कर ग़ौर करें कि ख़ुद वह अपने वक़ार को कितना सदमा पहुंचा रहे हैं और अपनी उन नापाक और कमीना हरकतों से अल्लाह तआला की निगाह में कितने ज़लील हो रहे हैं और फिर दुनिया की ज़िल्लत बदीही[2], नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाइ से तीन दिन से ज़्यादा छूट-छुटाव रखे, अगर इस हालत में मर गया तो सीधा जहन्नम में जायेगा। एक हदीस में इर्शाद है कि हर पीर व जुमेरात के दिन अल्लाह की हुज़ूरी में बन्दों के आमाल पेश होते हैं और अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमत से (निक आमाल की बदौलत) मुश्रिकों के अलावा औरों की मग़्फ़िरत होती रहती है, मगर जिन दो में झगड़ा होता है उनकी मग़्फ़िरत के मुताल्लिक़ इर्शाद होता है कि इनको छोड़े रखो, जब तक सुलह न हो। एक हदीस पाक में इर्शाद है कि हर पीर-जुमेरात को आमाल की पेशी होती है, इसमें तौबा करने वालों की तौबा क़ुबूल होती है और इस्तिग़फ़ार करने वालो की इस्तिग़फ़ार क़ुबूल की जाती है, मगर आपस में लड़ने वालों को इनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। एक जगह इर्शाद है कि शबे बरात में अल्लाह की रहमत आम्मा-ए-ख़लक़त[3] की तरफ़ मुतवज्जह होती है (और ज़रा-ज़रा से बहाने से) मख़लूक़ की मग़्फ़िरत फ़र्माई जाती है, मगर दो शख़्सों की मग़्फ़िरत नहीं होती, एक काफ़िर, दूसरा वह जो किसी से कीना रखे। एक जगह इर्शाद है कि तीन शख़्स हैं जिनकी नमाज़ क़ुबूलियत के लिए इनके सर से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती, जिन में आपस में लड़ने वाले भी फ़र्माए हैं। यह जगह उन रिवायात के अहाते की

---

1. लड़ाई-झगड़ा, 2. ज़रूरी, 3. आम लोगों पर, 4. गुनाह की वजह से, 5. ताल्लुक़ ख़त्म करना,

नहीं, मगर चन्द रिवायात इसलिए लिख दी हैं कि हम लोगों में, अवाम का ज़िक्र नहीं, ख़्वास में और उन लोगों में जो शुरफ़ा कहलाते है, दीनदार समझे जाते हैं, इन की मजालिस, इनके मजामे, इनकी तक़रीबात इस कमीन हरकत से लबरेज़ हैं।

فَإِلَى اللّٰهِ الْمُشْتَكَىٰ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ

फ़ इलल्लाहिल मुश्तका वल्लाहुल मुस्तआन,

लेकिन इन सब के बाद भी यह मालूम होना ज़रूरी है कि यह सब दुनियावी दुश्मनी और अदावत पर है, अगर किसी शख़्स के फ़िस्क़ की वजह से या किसी दीनी अम्र की हिमायत की वजह से तर्के ताल्लुक़ करे तो जायज़ है, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नकल फ़र्माया तो उन के बेटे ने इस पर ऐसा लफ़्ज कह दिया जो सूरतन हदीस पर एतराज़ था। हज़रत इब्ने उमर मरने तक उनसे नहीं बोले। और भी इस क़िस्म के वाक़िआत सहाबा किराम रज़ि॰ के साबित हैं, लेकिन अल्लाह तआला शानुहू दाना व बीना हैं, क़ुलूब के हाल को अच्छी तरह जानने वाले हैं, इससे ख़ूब वाक़िफ़ हैं कि कौन सा तर्क-ताल्लुक़ दीन की ख़ातिर है और कौन सा अपनी वजाहत और कसरे शान और बड़ाई की वजह से है, वैसे तो हर शख़्स अपने कीने और बुग्ज़ को दीन की तरफ़ मंसूब कर ही सकता है।

दूसरा अम्र जो हदीसे बाला में मालूम होता है वह हिक्मते इलाही के सामने रज़ा और क़ुबूल व तस्लीम है, बावजूद इसके कि शबे क़द्र की ताईन का उठ जाना सूरतन बहुत बड़ी ख़ैर का उठ जाना था लेकिन चूंकि अल्लाह की तरफ़ से है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि शायद हमारे लिए यही बेहतर हो। निहायत इबरत और ग़ौर का मक़ाम है, अल्लाह जल्ल शानुहू की रहीम व करीम ज़ात बन्दे पर हर वक़्त मेहरबान है, अगर बन्दा अपनी बद आमाली से किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाता है, तब भी अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से थोड़ी सी तवज्जोह और इक़रारे इज्ज़ के बाद अल्लाह का करम शामिले हाल हो जाता है और वह मुसीबत भी किसी बड़ी ख़ैर का सबब बना दी जाती है और अल्लाह के लिए कोई चीज़ मुश्किल नहीं, चुनांचे उलमा ने इस के इख़्फ़ा में भी चन्द मसालेह इर्शाद फ़र्माये हैं-

अव्वल यह कि अगर ताईन बाक़ी रहती तो बहुत सी कोताह तबाए ऐसी होतीं कि और रातों का एहतमाम बिल्कुल तर्क कर देतीं और इस सूरते मौजूदा में इस एहतमाल पर कि आज ही शायद शबे क़द्र हो, मुतअद्दद रातों में इबादत की तौफ़ीक़ तलब वालों को नसीब हो जाती है।

दूसरी यह कि बहुत से लोग हैं कि मआसी किए बग़ैर उनसे रहा ही नहीं जाता, ताईन की सूरत में अगर बावजूद मालूम होने के इस रात में मासियत की जुरअत की जाती तो सख़्त अन्देशा नाक था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा मस्जिद में तशरीफ़ लाये, कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सो रहे थे। आप सल्ल० ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से इर्शाद फ़र्माया कि इनको जगा दो ताकि वुज़ू कर लें, हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्जहू ने जगा तो दिया मगर हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि आप तो ख़ैर की तरफ़ बहुत तेज़ी से चलने वाले हैं, आप ने ख़ुद क्यों न जगा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुबादा इन्कार कर बैठता और मेरे कहने पर इन्कार कुफ़्र हो जाता। तेरे कहने से इन्कार कुफ़्र नहीं होगा। तो इसी तरह हक़ सुब्हानुहू व तक़द्दुस की रहमत ने गवारा न फ़र्माया कि इस अज़मत वाली रात के मालूम होने के बाद कोई गुनाह पर जुरअत करे।

तीसरी यह कि ताईन की सूरत में अगर किसी शख़्स से वह रात इत्तिफ़ाक़न छूट जाती तो आइन्दा रातों में अफ़सुर्दगी वग़ैरह की वजह से फिर किसी रात का भी जागना नसीब न होता और अब रमज़ान की एक दो रात तो कम अज़ कम हर शख़्स को मयस्सर हो ही जाती हैं।

चौथी – यह कि जितनी राते तलब में ख़र्च होती हैं इन सबका मुस्तक़िल सवाब अलाहिदा मिलेगा।

पांचवीं यह कि रमज़ान की इबादत में हक़ तआला जल्ल शानुहू मलाइका पर तफ़ाख़ुर फ़र्माते हैं, जैसा कि पहली रिवायात में मालूम हो चुका, इस सूरत में तफ़ाख़ुर का ज़्यादा मौक़ा है कि बन्दे बावजूद मालूम न होने के महज़ एहतमाल और ख़्याल पर रात-रात भर जागते हैं और इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं कि जब एहतमाल पर इस क़दर कोशिश कर रहे हैं, अगर बतला दिया जाता कि यही रात शबे क़द्र है तो फिर इनकी कोशिशों का क्या हाल होता। इनके अलावा और भी मसालेह हो सकती हैं। ऐसे ही उमूर की वजह से आदतुल्लाह यह जारी है कि इस नौअ की अहम चीज़ों को मख़्फ़ी[1] फ़र्मा देते हैं। चुनांचे इस्मे आज़म को मख़्फ़ी फ़र्मा दिया, इसी तरह जुमे के दिन एक वक़्ते ख़ास मक़बूलियते दुआ का है, इसको भी मख़्फ़ी फ़र्मा दिया। ऐसे ही और भी बहुत सी चीज़ें इसमें शामिल हैं। यह भी मुम्किन है कि झगड़े की वजह से इस ख़ास रमज़ानुल मुबारक में ताईन भुला दी गई हो और

---

1. छुपा हुआ,

इसके बाद दीगर मसालेह मजकूरा की वजह से हमेशा के लिए तायीन हटा दी हो।

तीसरी बात जो इस हदीस पाक में वारिद है वह शबे क़द्र की तलाश के लिए तीन रातें इर्शाद फ़र्माई हैं, नवीं, सातवीं, पांचवीं, दूसरी रिवायात के मिलाने से इतना तो मुहक्क़क़[1] है कि यह तीनों रातें अख़ीर अश्रे[2] की हैं, लेकिन इसके बाद फिर चन्द एहतमाल हैं कि अख़ीर अश्रे में अगर अव्वल से शुमार किया जावे तो हदीस का महमल[3] 29, 27, 25 रात होती है और अगर अख़ीर से शुमार किया जाये, जैसा कि बाज़ अल्फ़ाज से मुतरश्शह है तो फिर 29 के चांद की सूरत में 21, 23, 25 और 30 के चांद की सूरत में 22, 24, 26 है। इस के अलावा भी ताईन में रिवायात बहुत मुख़्तलिफ़ हैं और इसी वजह से उलमा के दर्मियान में इसके बारे में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ है जैसा कि पहले जिक्र हुआ कि पचास के क़रीब उलमा के अक़वाल हैं। रिवायात के ब-कसरत इख़्तिलाफ़ की वजह मुहक़्क़िक़ीन के नजदीक यह है कि यह रात किसी तारीख़ के साथ मख़सूस नहीं, बल्कि मुख़्तलिफ़ सालों में मुख़्तलिफ़ रातों में होती है जिस की वजह से रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं कि हर साल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस साल के मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रातों में तलाश का हुक्म फ़र्माया और बाज़ सालों में मुतअय्यन तौर से भी इर्शाद फ़र्माया। चुनांचे अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में एक मर्तबा शबे क़द्र का जिक्र आया तो आपने फ़र्माया कि आज कौन सी तारीख़ है। अर्ज किया गया कि 22 है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि आज ही की रात में तलाश करो।

अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज किया कि शबे क़द्र नबी के ज़माने के साथ ख़ास रहती है या बाद में भी होती है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि क़यामत तक रहेगी। मैंने अर्ज किया कि रमज़ान के किस हिस्से में होती है ? आप ने फ़र्माया कि अश्रा-ए-अव्वल और अश्रा-ए-आख़िर में तलाश करो। फिर हुज़ूर सल्ल० और बातों में मशग़ूल हो गए। मैंने मौक़ा पाकर अर्ज किया, अजी यह तो बतला ही दीजिए कि अश्रे के कौन से हिस्से में होती है ? हुज़ूर सल्ल० इतने नाराज हुए कि न इस से क़ब्ल मुझ पर इतने ख़फ़ा हुए थे न बाद में। और फ़र्माया कि अगर अल्लाह तआला शानुहू का यह मक़्सूद होता तो बतला न देते, आख़िर की सात रात में तलाश करो। पस इसके बाद और कुछ न पूछियो। एक सहाबी रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने 23 शब मुतअय्यन तौर पर इर्शाद फ़र्माई।

1. जिसकी तहक़ीक हो चुकी, यही सही है, 2. आख़िरी दस दिन, 3. मौक़ा व जगह,

इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं सो रहा था। मुझे ख़्वाब में किसी ने कहा कि उठ, आज शबे क़द्र है। मैं जल्दी से उठ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया तो आप की नमाज की नीयत बंध रही थी और यह रात 23 शब थी। बाज रिवायात में मुतअय्यन तौर से 24 शब का होना भी मालूम होता है। हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० का इर्शाद है कि जो शख़्स तमाम साल रात को जागे, वह शबे क़द्र को पा सकता है (यानी शबे क़द्र तमाम साल में दायर[1] रहती है।) किसी ने इब्ने कअ्ब रज़ि० से इसको नकल किया, तो वह फ़रमाने लगे कि इब्ने मस्ऊद रज़ि० की ग़रज यह है कि लोग एक रात पर क़नाअत करके न बैठ जाएं, फिर क़सम खाकर यह बतलाया कि वह 27 रमज़ान को होती है। और इसी तरह बहुत से सहाबा रज़ि० और ताबईन रह० की राय है कि वह 27 शब में होती है। उबई बिन कअब रज़ि० की तहक़ीक़ यही है, वरना इब्ने मस्ऊद रज़ि० की तहक़ीक़ वही है कि जो शख़्स तमाम साल जागे, वह इसको मालूम कर सकता है और दुर्रे मन्सूर की एक रिवायत से मालूम होता है कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही नकल करते हैं।

अइम्मा में से भी इमामा अबूहनीफ़ा रह० का मशहूर क़ौल यह है कि यह तमाम साल में दायर रहती है। दूसरा क़ौल इमाम साहब का यह है कि तमाम रमज़ान में दायर रहती है। साहिबैन का क़ौल है कि तमाम रमज़ान की किसी एक रात में है जो मुतअय्यन है, मगर मालूम नहीं। शाफ़ईया का राजेह क़ौल यह है कि 21 शब में होना अक़रब[2] है। इमाम मालिक रह० और इमाम अहमद इब्ने हम्बल (रह०) का क़ौल यह है कि रमज़ान के आख़िर अश्रे की ताक़ रातों में दायर रहती है, किसी साल किसी रात में और किसी साल किसी दूसरी रात में।

जमहूर उलमा की राय यह है कि 27वीं रात में ज़्यादा उम्मीद है। शेख़ुल आरिफ़ीन मुहीउद्दीन इब्ने अरबी रह० कहते है कि मेरे नजदीक उन लोगों का क़ौल ज़्यादा सही है, जो कहते है कि तमाम साल में दायर रहती है, इसलिए कि मैंने दो मर्तबा इसको शाबान में देखा है। एक मर्तबा पन्द्रह को, और एक मर्तबा 19 को और दो मर्तबा रमज़ान के दर्मियानी अश्रे में 13 को और 18 को और रमज़ान के आख़िर अश्रे की हर ताक़[3] रात में देखा है। इसलिए मुझे इसका यक़ीन है कि वह

---

1. घूमती रहती है, 2. क़रीबी बात, 3. वह तादाद जो दो से तक़्सीम न हो, जैसे 21, 23, 25, 27।

साल की रातों में फ़िरती रहती है, लेकिन रमज़ानुल मुबारक में ब-कसरत पाई जाती है।

हमारे हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रहमतुल्लाहि अलैहि इर्शाद फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र साल में दो मर्तबा होती है, एक वह रात है, जिसमें अहकामें ख़ुदावन्दी नाज़िल होते हैं और इसी रात में क़ुरआन शरीफ़ लूहे महफ़ूज़ से उतरा है। यह रात रमज़ान के साथ मख़सूस नहीं, तमाम साल में दायर रहती है, लेकिन जिस साल क़ुरआन पाक नाज़िल हुआ उस साल रमज़ानुल मुबारक में थी और अक्सर रमज़ानुल मुबारक ही में होती है। और दूसरी शबे क़द्र वह है, जिसमें रूहानियत का एक ख़ास इंतिशार[1] होता है और मलाइका ब-कसरत ज़मीन पर उतरते हैं और श्यातीन दूर रहते हैं। दुआएं और इबादतें क़ुबूल होती हैं। यह हर रमज़ान में होती है और आख़िर अश्रा की वित्र रातों में होती है और बदलती रहती है। मेरे वालिद नव्वरल्लाहु मर्क़दहू व बर्रद मज़जअहू इसी क़ौल को राजेह फ़रमाते थे।

बहर-हाल शबे क़द्र एक हो या दो, हर शख़्स को अपनी हिम्मत व वुसअत के मुवाफ़िक़ तमाम साल इसकी तलाश में सई करना चाहिए, न हो सके तो रमज़ान भर जुस्तुजू करना चाहिए। अगर यह भी मुश्किल हो तो अश्रा-ए-अख़ीरा को ग़नीमत समझना चाहिये। इतना भी न हो सके तो अश्रा अख़ीर की ताक़ रातों को हाथ से न देना चाहिए और अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता यह भी न हो सके तो सत्ताईसवीं शब को तो बहरहाल ग़नीमते बारिदा समझना ही चाहिए। अगर ताईदे ईज़दी शामिले हाल है और किसी ख़ुश नसीब को मयस्सर हो जाए, तो फिर तमाम दुनिया की नेमतें और राहतें इस के मुक़ाबले में हेच[2] हैं, लेकिन अगर मयस्सर न भी हो, तब भी अज्र से ख़ाली नहीं, बिलख़ुसूस मग़रिब-इशा की नमाज़ जमाअत से मस्जिद में अदा करने का एहतमाम तो हर शख़्स को तमाम साल बहुत ही ज़रूर होना चाहिए कि अगर ख़ुश क़िस्मती से शबे क़द्र की रात में यह दो नमाज़ें जमाअत से मयस्सर हो जाएं तो किस क़दर बा-जमाअत नमाज़ों का सवाब मिले। अल्लाह का किस क़दर बड़ा इन्आम है कि किसी दीनी काम में अगर कोशिश की जावे तो कामियाबी न होने की सूरत में भी इस कोशिश का अज्र ज़रूर मिलता है, लेकिन इसके बावजूद कितने हिम्मत वाले हैं जो दीन के दर पै हैं, दीन के लिए मरते हैं, कोशिश करते हैं और इस के बिलमुक़ाबिल अग़राज़े दीनवी[3] में कोशिश के बाद अगर नतीजा मुरत्तब न हो, तो वह कोशिश बेकार और ज़ाया। लेकिन इस पर भी कितने लोग हैं कि दुनयवी

1. फैलाव, 2. कम, घटिया, 3. दुनिया के काम,

अग़राज़ और बेकार व लग्व उमूर के हासिल करने के लिए जान व माल, दोनों को बरबाद करते हैं।

ब बीं तफ़ावुते रह अज़ कुजास्त ता ब कुजा

٦ - عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ اَنَّهُ سَأَلَ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَنْ لَیْلَۃِ الْقَدْرِ فَقَالَ فِیْ رَمَضَانَ فِی الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ فَاِنَّھَا فِیْ لَیْلَۃٍ وِتْرٍ فِیْ اِحْدٰی وَعِشْرِیْنَ اَوْ ثَلٰثٍ وَّ عِشْرِیْنَ اَوْ خَمْسٍ وَّعِشْرِیْنَ اَوْ سَبْعٍ وَّعِشْرِیْنَ اَوْ تِسْعٍ وَّعِشْرِیْنَ اَوْ اٰخِرِ لَیْلَۃٍ مِّنْ رَمَضَانَ مَنْ قَامَھَا اِیْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَہٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِہٖ وَمِنْ اَمَارَاتِھَا اَنَّھَا لَیْلَۃٌ بَلْجَۃٌ صَافِیَۃٌ سَاکِنَۃٌ سَاجِیَۃٌ لَا حَارَّۃٌ وَّلَا بَارِدَۃٌ کَاَنَّ فِیْھَا قَمَرًا سَاطِعًا وَّلَا یَحِلُّ لِنَجْمٍ اَنْ یُّرْمٰی بِہٖ تِلْکَ اللَّیْلَۃَ حَتَّی الصَّبَاحِ وَمِنْ اَمَارَاتِھَا اَنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ صَبِیْحَتَھَا لَا شُعَاعَ لَھَا مُسْتَوِیَۃً کَاَنَّھَا الْقَمَرُ لَیْلَۃَ الْبَدْرِ وَحَرَّمَ اللّٰہُ عَلَی الشَّیْطَانِ اَنْ یَّخْرُجَ مَعَھَا یَوْمَئِذٍ (در منثور عن احمد والبیہقی ومحمد بن نصر وغیرھم)

6. हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शबे क़द्र के बारे में दर्याफ़्त किया, तो आपने इर्शाद फ़र्माया कि रमज़ान के अख़ीर अशरा की ताक़ रातों में है, 21, 23, 25, 27, व 29 या रमज़ान की आख़िर रात में। जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की नीयत से, इस रात में इबादत करे, उस के पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। इस रात की मिन्जुम्ला और अलामतों के यह है कि वह रात खुली हुई चमकदार होती है, साफ़, शफ़्फ़ाफ़, न ज़्यादा गर्म, न ज़्यादा ठंडी, बल्कि मोतदिल[1], गोया कि इसमें (अन्वार की कसरत की वजह से) चांद खुला हुआ है, इस रात में सुबह तक आसमान के सितारे शयातीन को नहीं मारे जाते, नीज़ इसकी अलामतों में से यह भी है कि इसके बाद भी सुबह को आफ़्ताब बग़ैर शुआअ[2] के तुलू होता है, ऐसा बिल्कुल हमवार टिकिया की तरह होता है जैसा कि चौदहवीं रात का चांद। अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस दिन के आफ़्ताब के तुलूअ के वक़्त शैतान को उसके साथ निकलने से रोक दिया (ब ख़िलाफ़ और दिनों के कि तुलू-ए-आफ़्ताब के वक़्त शैतान का इस जगह ज़ुहूर होता है।)

---

1. बीच की, 2. किरण,

फ़ — इस हदीस का अव्वल मज़्मून तो साबिक़ा रिवायात में ज़िक्र हो चुका है। आख़िर में शबे क़द्र की चंद अलामात ज़िक्र की हैं, जिन का मतलब साफ़ है, किसी तौज़ीह का मुहताज नहीं, इनके अलावा और भी बाज़ अलामात रिवायात में और इन लोगों के कलाम में ज़िक्र की गयी हैं, जिनको इस रात की दौलत नसीब हुई है, बिलख़ुसूस इस रात के बाद जब सुबह को आफ़्ताब निकलता है तो बग़ैर शुआअ के निकलता है। यह अलामत बहुत सी रिवायाते हदीस में वारिद हुई है, और हमेशा पायी जाती है, इसके अलावा और अलामतें लाज़िमी और लाबुदी[1] नहीं है। अब्दतुब्ने अबीलुबाब्बा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब को समुंदर का पानी चखा, तो बिल्कुल मीठा था। अय्यूब बिन ख़ालिद रह० कहते हैं कि मुझे नहाने की ज़रूरत हो गई। मैंने समुंदर के पानी से ग़ुस्ल किया तो बिल्कुल मीठा था और यह तेईसवीं शब का क़िस्सा है।

मशाइख़ ने लिखा है कि शबे क़द्र में हर चीज़ सज्दा करती है, हत्ताकि दरख़्त ज़मीन पर गिर जाते हैं और फिर अपनी जगह खड़े हो जाते हैं। मगर ऐसी चीजों का ताल्लुक़ उमूरे कश्फ़िया[2] से है जो हर शख़्स को महसूस नहीं होते।

٧- عَنْ عَائِشَةَ رض قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَرَاَيْتَ اِنْ عَلِمْتُ اَيَّ لَيْلَةٍ لَيْلَةُ الْقَدْرِ مَا اَقُوْلُ فِيْهَا قَالَ قُوْلِيْ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ- (رواه احمد وابن ماجة والترمذى وصححه كذا فى المشكوٰة)

7. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि या रसूलल्लाह ! अगर मुझे शबे क़द्र का पता चल जावे तो क्या दुआ मांगू ? हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाहुम्म से आखिर तक दुआ बतलाई जिस का तर्जुमा यह है कि ऐ अल्लाह ! तू बेशक माफ़ करने वाला है और पसंद करता है माफ़ करने को। पस माफ़ फ़र्मा दे मुझ से भी।

फ़ — निहायत जामे दुआ है कि हक़ तआला अपने लुत्फ़ व करम से आख़िरत के मुतालबे से माफ़ फ़र्मा दें, तो उससे बढ़ कर और क्या चाहिए ?

मन न गोयम कि ताअतम बि पज़ीर।
क़लमे अफ़्व बर गुनाहम कश।।

हज़रत सुफ़ियान रह० कहते हैं कि इस रात में दुआ के साथ मशग़ूल होना

---

1. ज़रूरी, 2. कश्फ़ व करामात की बातें,.

ज़्यादा बेहतर है, ब निस्बत दूसरी इबादात के। इब्ने रजब रह० कहते हैं कि सिर्फ़ दुआ नहीं, बल्कि मुख़्तलिफ़ इबादात में जमा करना अफ़ज़ल है। मसलन तिलावत, नमाज़, दुआ, और मुराक़बा वग़ैरह। इसलिए कि नबी-ए-करीम सल्ल० से यह सब उमूर मन्क़ूल हैं। यही क़ौल ज़्यादा अक़रब है कि साबिक़ा अहादीस में नमाज़, ज़िक्र वग़ैरह कई चीज़ों की फ़ज़ीलत गुज़र चुकी है।

फ़स्ले सालिस

एतिकाफ़ के बयान में

एतिकाफ़ कहते हैं, मस्जिद में एतिकाफ़ की नीयत कर के ठहरने को। हनफ़ीया के नज़दीक इस की तीन क़िस्में हैं :-

एक वाजिब, जो मन्नत और नज़्र की वजह से हो। जैसे यह कहे कि अगर मेरा फ़्लां काम हो गया, तो इतने दिनों का एतिकाफ़ करूंगा, या बग़ैर किसी काम पर मौक़ूफ़ करने के, योंही कह ले कि मैंने इतने दिनों का एतिकाफ़ अपने ऊपर लाज़िम कर लिया, वह वाज़िब होता है और जितने दिनों की नीयत की है, उसका पूरा करना ज़रूरी है।

दूसरी क़िस्म, सुन्नत है जो रमज़ानुल मुबारक के अख़ीर अशरे का है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा इन अय्याम[1] के एतिक़ाफ़ फ़रमाने की थी।

तीसरा एतिकाफ़ नफ़्ल है, जिसके लिए न कोई वक़्त, न अय्याम की मिक़्दार, जितने दिन का जी चाहे कर ले। हत्ताकि कोई शख़्स अगर तमाम उम्र के एतिकाफ़ की नीयत कर ले, तब भी जायज़ है। अलबत्ता कमी में इख़्तिलाफ़ है

---

1. दिनों,

कि इमाम साहब के नज़दीक एक दिन से कम का जायज़ नहीं। लेकिन इमाम मुहम्मद रह० के नज़दीक थोड़ी देर का भी जायज़ है और इसी पर फ़त्वा है। इसलिए हर शख़्स के लिए मुनासिब है कि जब मस्जिद में दाख़िल हो, एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करे कि इतने नमाज़ वग़ैरह में मश्ग़ूल रहे, एतिकाफ़ का सवाब भी रहे। मैंने अपने वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू व बर्र द मज़जअुहू को हमेशा इसका एहतमाम करते देखा कि जब मस्जिद में तश्रीफ़ ले जाते, तो दायां पांव अन्दर दाख़िल करते ही एतिकाफ़ की नीयत फ़र्माते थे और बसाऔक़ात ख़ुद्दाम की तालीम की ग़रज़ से आवाज़ से भी नीयत फ़र्माते थे।

एतिकाफ़ का बहुत ज़्यादा सवाब है और इसकी फ़ज़ीलत इससे ज़्यादा क्या होगी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा इसका एहतमाम फ़र्माते थे। मोतकिफ़[1] की मिसाल उस शख़्स की सी है कि किसी के दर पर जा पड़े कि इतने मेरी दरख़्वास्त क़ुबूल न हो, टलने का नहीं।

निकल जाए दम तेरे क़दमों के नीचे।
यही दिल की हसरत, यही आरज़ू है।।

अगर हक़ीक़तन यही हाल हो तो सख़्त से सख़्त दिल वाला भी पसीजता है और अल्लाह जल्ल शानुहू की करीम ज़ात तो बख़्शिश के लिए बहाना ढूंढती है, बल्कि बे-बहाना मरहमत फ़र्माते हैं।

तू वह दाता है कि देने के लिए।
दर तेरी रहमत के हैं हर दम खुले।।
ख़ुदा की देन का मूसा से पूछिये अह्वाल
कि आग लेने को जाएं, पयम्बरी मिल जाये।

इसलिए, जब कोई शख़्स अल्लाह के दरवाज़े पर दुनिया से मुन्क़ता[2] हो कर जा पड़े, तो इसके नवाज़े जाने में क्या ताम्मुल हो सकता है और अल्लाह जल्ल शानुहू जिसको इकराम फ़र्मावें, उसके भरपूर ख़ज़ानों का बयान कौन कर सकता है। इसके आगे कहने से क़ासिर हूं कि ना मर्द बुलूग़ की कैफ़ियत क्या बयान कर सकता है, मगर हां यह ठान ले कि–

जिस गुल को दिल दिया है जिस फूल पर फ़िदा हूं।
या वह बग़ल में आए, या जां क़फ़स से छूटे।।

---

1. एतिकाफ़ करने वाले, 2. कट कर,

इब्ने क़य्यिम रह० कहते हैं कि एतिकाफ़ का मक्सूद और उसकी रूह दिल को अल्लाह की पाक ज़ात के साथ वाबस्ता कर लेना है, कि सब तरफ़ से हट कर उसी के साथ मुजतमा हो जाये और सारी मशग़ूलियों के बदले में उसी की पाक ज़ात से मशग़ूल हो जाए और उसके ग़ैर की तरफ़ से मुन्क़तअ होकर ऐसी तरह उस में लग जावे कि ख़्यालात, तफ़क्कुरात, सबकी जगह इसका पाक ज़िक्र, इसकी मुहब्बत समा जावे, हत्ताकि मख़्लूक़ के साथ उन्स[1] के बदले अल्लाह के साथ उन्स पैदा हो जावे कि यह उन्स क़ब्र की वहशत में काम दे कि उस दिन अल्लाह की पाक ज़ात के सिवा न कोई मूनिस, न दिल बहलाने वाला, अगर दिल उसके साथ मानूस हो चुका होगा तो किस क़दर लज़्ज़त से वक़्त गुज़रेगा-

दिल ढूंढता है फिर वही फ़ुरसत के रात-दिन
बैठा रहूं तसव्वुरे जानां किए हुए।

साहिबे मराक़ियुल फ़लाह (रह०) कहते हैं कि एतिकाफ़ अगर इख़्लास के साथ हो तो अफ़ज़ल तरीन आमाल से है। इस की ख़ुसूसियतें हद्दे एहसा[2] से ख़ारिज हैं कि इसमें क़ल्ब को दुनिया व माफ़ीहा[3] से यकसू कर लेना है और नफ़्स को मौला के सुपुर्द कर देना और आक़ा की चौखट पर पड़ जाना है-

फिर जी में है कि दर पे किसी के पड़ा रहूं।
सर ज़ेरे बारे मिन्नते दरबां किए हुए।।

नीज़ इसमें हर वक़्त इबादत में मशग़ूली है कि आदमी सोते-जागते हर वक़्त इबादत में शुमार होता है और अल्लाह के साथ तक़र्रुब है। हदीस में आया है कि जो शख़्स मेरी तरफ़ एक हाथ क़रीब होता है, मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूं और जो मेरी तरफ़ (आहिस्ता भी) चलता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूं, नीज़ इसमें अल्लाह के घर पड़ जाना है और करीम मेज़बान हमेशा घर आने वाले का इकराम करता है। नीज़ अल्लाह के क़िले में महफ़ूज़ होता है कि दुश्मन की रसाई वहां तक नहीं, वग़ैरह-वग़ैरह। बहुत से फ़ज़ाइल और ख़्वास इस अहम इबादत के हैं।

मस्अला – मर्द के लिए सबसे अफ़ज़ल जगह मस्जिदे मक्का है, फिर

---

1. मुहब्बत, 2. इन को पूरा-पूरा गिना नहीं जा सकता, 3. दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से,

मस्जिदे मदीना मुनव्वरा, फिर मस्जिदे बेतुल मुक़द्दस। इनके बाद मस्जिदे जामिआ, फिर अपनी मस्जिद। इमाम साहब[1] रह० के नज़दीक यह भी शर्त है कि जिस मस्जिद में एतिकाफ़ करे, उसमें पांचों वक़्त की जमाअत होती हो। साहिबैन के नज़दीक शरई मस्जिद होना काफ़ी है, अगरचे जमाअत न होती हो। औरत के लिए अपने घर की मस्जिद में एतिकाफ़ करना चाहिए। अगर घर में कोई जगह मस्जिद के नाम से मुतअय्यन न हो, तो किसी कोने को इसके लिए मख़्सूस करे। औरतों के लिए एतिकाफ़ बनिस्बत मर्दों के ज़्याद सहल है कि घर में बैठे-बैठे कारोबार भी घर की लड़कियों वग़ैरह से लेती रहें और मुफ़्त का सवाब भी हासिल करती रहें, मगर इसके बावजूद, औरतें इस सुन्नत से गोया, बिल्कुल ही महरूम रहती हैं।

١ - عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیْ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اعْتَکَفَ الْعَشْرَ الْاَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ اعْتَکَفَ الْعَشْرَ الْاَوْسَطَ فِیْ قُبَّةٍ تُرْکِیَّةٍ ثُمَّ اَطْلَعَ رَاْسَهٗ فَقَالَ اِنِّیْ اعْتَکَفْتُ الْعَشْرَ الْاَوَّلَ اَلْتَمِسُ هٰذِهِ اللَّیْلَةَ ثُمَّ اعْتَکَفْتُ الْعَشْرَ الْاَوْسَطَ ثُمَّ اُتِیْتُ فَقِیْلَ لِیْ اِنَّهَا فِی الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ فَمَنْ کَانَ اعْتَکَفَ مَعِیَ فَلْیَعْتَکِفِ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ فَقَدْ اُرِیْتُ هٰذِهِ اللَّیْلَةَ ثُمَّ اُنْسِیْتُهَا وَقَدْ رَاَیْتُنِیْ اَسْجُدُ فِیْ مَاءٍ وَّطِیْنٍ مِّنْ صَبِیْحَتِهَا فَالْتَمِسُوْهَا فِی الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ وَالْتَمِسُوْا فِیْ کُلِّ وِتْرٍ قَالَ فَمُطِرَتِ السَّمَاءُ تِلْکَ اللَّیْلَةَ وَکَانَ الْمَسْجِدُ عَلٰی عَرِیْشٍ فَوَکَفَ الْمَسْجِدُ فَبَصُرَتْ عَیْنَایَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰی جَبْهَتِهٖ اَثَرُ الْمَاءِ وَالطِّیْنِ مِنْ صَبِیْحَةِ اِحْدٰی وَّعِشْرِیْنَ -

(مشکوٰۃ عن المتفق علیہ باختلاف اللفظ)

1. अबूसईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ानुल मुबारक के पहले अश्रे में एतिकाफ़ फ़र्माया और फिर दूसरे अश्रे में भी फिर तुर्की ख़ेमे से जिसमें एतिकाफ़ फ़र्मा रहे थे, बाहर सर निकाल कर इर्शाद फ़र्माया कि मैंने पहले अश्रे का एतिकाफ़ शबे क़द्र की तलाश और एहतमाम की वजह से किया था, फिर उसी की वजह से दूसरे अश्रे में किया, फिर मुझे किसी बतलाने वाले (यानी फ़रिश्ते) ने बतलाया कि वह रात अख़ीर अश्रे में है, लिहाज़ा जो लोग मेरे साथ एतिकाफ़ कर रहे हैं, वह अख़ीर अश्रे का भी एतिकाफ़ करें। मुझे

---

1. इमाम अबूहनीफ़ा रह०,

यह रात दिखला दी गई थी, फिर भुला दी गई (इसकी अलामत यह है कि मैंने अपने आप को इस रात के बाद की सुबह में कीचड़ में सज्दा करते देखा) लिहाज़ा अब इसको अख़ीर अश्रे की ताक़ रातों में तलाश करो। रावी कहते हैं कि इस रात में बारिश हुई और मस्जिद छप्पर की थी, वह टपकी और मैंने अपनी आंखों से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशानी-ए-मुबारक पर कीचड़ का असर इक्कीस की सुब्ह को देखा।

फ़ — नबी-ए-करीम सल्लं० की आदते शरीफ़ा एतिकाफ़ की हमेशा रही है। इस महीने में तमाम महीने का एतिकाफ़ फ़र्माया और जिस साल विसाल[1] हुआ है, उस साल बीस रोज़ का एतिकाफ़ फ़र्माया था। लेकिन अक्सर आदते शरीफ़ा चूंकि अख़ीर अश्रे ही के एतिकाफ़ की रही है, इसलिए उलमा के नज़दीक सुन्नते मोअक्कदा वही है। हदीसे बाला से यह भी मालूम हो गया कि इस एतिकाफ़ की बड़ी ग़रज शबे क़द्र की तलाश है और हक़ीक़त में एतिकाफ़ उसके लिये बहुत ही मुनासिब है कि एतिकाफ़ की हालत में अगर आदमी सोता हुआ भी हो तब भी इबादत में शुमार होता है।

नीज एतिकाफ़ में चूंकि आना-जाना और इधर-उधर के काम भी कुछ नहीं रहते, इसलिए इबादत और करीम आक़ा की याद के अलावा और कोई मश्ग़ला भी न रहेगा। लिहाज़ा शबे क़द्र के क़द्रदानों के लिए एतिकाफ़ से बेहतर सूरत नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अव्वल तो सारे ही रमज़ान में इबादत का बहुत ज़्यादा एहतमाम और कसरत फ़र्माते थे, लेकिन अख़ीर अश्रे में कुछ हद ही नहीं रहती थी। रात को ख़ुद भी जागते और घर के लोगों को भी जगाने का एहतमाम फ़र्माते थे, जैसा की सहीहैन[2] की मुतअद्दद रिवायात से मालूम होता है, बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायात में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़र्माती हैं कि अख़ीर अश्रे में हुज़ूर सल्ल० लुंगी को मज़बूत बांध लेते और रातों का एह्या[3] फ़रमाते और अपने घर के लोगों को भी जगाते। लुंगी मज़बूत बांधने से कोशिश में एहतमाम की ज़्यादती भी मुराद हो सकती है और बीवियों से बिल्कुल्लिया एहतराज़[4] भी मुराद हो सकता है।

٢ - عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ فِی الْمُعْتَکِفِ هُوَ یَعْتَکِفُ الذُّنُوْبَ وَیَجْرِیْ لَہٗ مِنَ الْحَسَنَاتِ کَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ کُلِّهَا (مشکوٰۃ عن ابن ماجۃ)

---

1. इन्तिकाल फ़रमाया है, 2. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, 3. शब-बेदारी, 4. बचना, अलग रहना,

2. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुअ्तकिफ़ गुनाहों से महफ़ूज रहता है और उसके लिये नेकियां उतनी ही लिखी जाती हैं जितनी कि करने वाले के लिए।

फ़ – दो मख़्सूस नफ़े एतिकाफ़ के इस हदीस में इर्शाद फ़रमाये गये हैं–

एक यह कि एतिकाफ़ की वजह से गुनाहों से हिफ़ाज़त हो जाती है, वरना बसा औक़ात कोताही और लग़्ज़िश से कुछ असबाब ऐसे पैदा हो जाते हैं कि इसमें आदमी गुनाह में मुब्तला हो ही जाता है। और ऐसे मुतबर्रक वक़्त में मासियत का हो जाना किस क़दर ज़ुल्मे अ़ज़ीम है। एतिकाफ़ की वजह से इन से अम्न और हिफ़ाज़त रहती है।

दूसरे – यह कि बहुत से नेक आमाल जैसा कि जनाज़े की शिर्कत, मरीज़ की अयादत वग़ैरह ऐसे उमूर हैं कि एतिकाफ़ में बैठ जाने की वजह से मुअ्तकिफ़ इनको नहीं कर सकता, इसलिये एतिकाफ़ की वजह से जिन इबादतों से रूका रहा, उनका अज्र बग़ैर किये भी मिलता रहेगा। अल्लाहु अक्बर ! किस क़दर रहमत और फ़य्याज़ी है कि एक इबादत आदमी करे और दस इबादतों का सवाब मिल जाये। दर हक़ीक़त अल्लाह की रहमत बहाना ढूंढती है और थोड़ी सी तवज्जोह और मांग से धुआं धार बरसती है। बबहाना मीं देहद, बबहा, न मीं देहद[1], मगर हम लोगों को सिरे से इस की क़द्र ही नहीं, ज़रूरत ही नहीं, तवज्जोह कौन करे और क्यों करे कि दीन की वकअ़त ही हमारे क़ल्ब में नहीं।

उस के अल्ताफ़ तो हैं आम शहीदी सब पर।
तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता।।

٣- عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ كَانَ مُعْتَكِفًا فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى
اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ ثُمَّ جَلَسَ فَقَالَ لَهُ ابْنُ
عَبَّاسٍ يَا فُلَانُ أَرَاكَ مُكْتَئِبًا حَزِينًا قَالَ نَعَمْ يَا ابْنَ عَمِّ رَسُولِ اللهِ
لِفُلَانٍ عَلَيَّ حَقٌّ وَلَا حُرْمَةُ صَاحِبِ هٰذَا الْقَبْرِ مَا أَقْدِرُ عَلَيْهِ قَالَ ابْنُ
عَبَّاسٍ أَفَلَا أُكَلِّمُهُ فِيكَ قَالَ إِنْ أَحْبَبْتَ قَالَ فَانْتَعَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ
ثُمَّ خَرَجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ أَنَسِيتَ مَا كُنْتَ فِيهِ قَالَ
لَا وَلٰكِنِّي سَمِعْتُ صَاحِبَ هٰذَا الْقَبْرِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ
الْعَهْدُ بِهِ قَرِيبٌ فَدَمَعَتْ عَيْنَاهُ وَهُوَ يَقُولُ مَنْ مَشٰى فِي حَاجَةِ أَخِيْ

1. किसी बहाने, हीले हवाले से देती है क़ीमत अदा करने से नहीं देती है। यानी बिला क़ीमत देती है।

وَبَلَغَ فِيْهَا كَانَ خَيْرًا لَّهُ مِنِ اعْتِكَافِ عَشْرِ سِنِيْنَ وَمَنِ اعْتَكَفَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ جَعَلَ اللّٰهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ ثَلٰثَ خَنَادِقَ اَبْعَدَ مِمَّا بَيْنَ الْخَافِقَيْنِ

(رواه الطبراني في الاوسط والبيهقي واللفظ له والحاكم مختصرا وقال صحيح الاسناد كذا في الترغيب وقال السيوطي في الدر صححه الحاكم وضعف البيهقي)

3. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० एक मर्तबा मस्जिदे नबवी अला साहिबिहिस्सलातु वस्सलाम में मुअ्तकिफ़ थे। आप के पास एक शख़्स आया और सलाम कर के (चुप-चाप) बैठ गया-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उससे फ़र्माया कि मैं तुम्हें ग़मज़दा ओर परेशान देख रहा हूं, क्या बात है ? उसने कहा कि ऐ रसूलल्लाह के चचा के बेटे ! मैं बेशक परेशान हूं कि फ्लां का मुझ पर हक़ है और नबी करीम सल्ल० की क़ब्रे अत्हर की तरफ़ इशारा करके कहा कि इस क़ब्र वाले की इज़्ज़त की क़सम ! मैं इस हक़ के अदा करने पर क़ादिर नहीं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़र्माया कि अच्छा ! क्या मैं इस से तेरी सिफ़ारिश करूं ? उसने अर्ज़ किया कि जैसा आप मुनासिब समझें। इब्ने अब्बास रज़ि० यह सुन कर जूता पहन कर मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाये। उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि आप अपना एतिकाफ़ भूल गये। फ़र्माया, भूला नहीं हूं बल्कि मैंने इस क़ब्र वाले (सल्ल०) से सुना है और अभी ज़माना कुछ ज़्यादा नहीं गुज़रा, यह लफ़्ज़ कहते हुये, इब्ने अब्बास रज़ि० की आंखों से आंसू बहने लगे कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स अपने भाई के किसी काम में चले-फिरे, और कोशिश करे, उसके लिये दस बरस के एतिकाफ़ से अफ़्ज़ल है और जो शख़्स एक दिन का एतिकाफ़ भी अल्लाह की रज़ा के वास्ते करता है, तो हक़ तआला शानुहू उसके और जहन्नम के दर्मियान तीन ख़न्दकें आड़ फ़र्मा देते हैं, जिनकी मुसाफ़त आसमान और ज़मीन की दर्मियानी मुसाफ़त से भी ज़्यादा चौड़ी है (और जब एक दिन के एतिकाफ़ की यह फ़ज़ीलत है तो दस बरस के एतिकाफ़ की क्या कुछ मिक़्दार होगी ?

फ़ – इस हदीस से दो मज़्मून मालूम हुये :-

अव्वल यह कि एक दिन के एतिकाफ़ का सवाब यह है कि हक़ तआला शानुहू उसके और जहन्नम के दर्मियान तीन खंदकें हायल फ़र्मा देते हैं, और हर खंदक इतनी बड़ी है जितना सारा जहान, और एक दिन से ज़्यादा जिस क़दर ज़्यादा दिनों का एतिकाफ़ होगा, उतना ही अज्र ज़्यादा होगा। अल्लामा शअरानी रह० ने कश्फ़ुल ग़ुम्मा में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स अशरा-ए-रमज़ान का एतिकाफ़ करता है, उसको दो हज और दो उमरों का अज्र है। और जो शख़्स मस्जिद में मग़्रिब से इशा तक का एतिकाफ़ करे कि नमाज़ क़ुरआन के अलावा किसी से बात न करे, हक़ तआला शानुहू उसके लिए जन्नत में

एक महल बनाते हैं।

दूसरा मज़्मून जो इससे भी ज़्यादा अहम है वह मुसलमानों की हाजत रवाई कि दस बरस के एतिकाफ़ से अफ़्ज़ल इर्शाद फ़र्माया है। इसी वजह से इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एतिकाफ़ की परवाह नहीं फ़र्माई कि उसकी तलाफ़ी फिर हो सकती है और इसकी क़ज़ा मुमकिन है, इसी वजह से सूफ़िया का मक़ूला है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां टूटे हुए दिल की जितनी क़दर है कि इतनी किसी चीज की नहीं। यही वजह है कि मज़्लूम की बद-दुआ से अहादीस में बहुत डराया गया है हुज़ूर सल्ल० जब किसी शख़्स को हाकिम बना कर भेजते थे और नसायह[1] के साथ –वत्तक़ि दअ्वतल मज़्लूमि'

भी इर्शाद फ़र्माते थे कि मज़्लूम की बद-दुआ से बचियो–

बतर्स अज आहे मज़्लूमां कि हंगामे दुआ करदन
इजाबत अज दरे हक़, बहरे इस्तिक़बाल मी आयद[2]

इस जगह एक मस्अले का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि किसी मुसलमान की हाजतरवाई के लिए भी मस्जिद से निकलने से एतिकाफ़ टूट जाता है और अगर एतिकाफ़ वाजिब हो, तो इसकी क़ज़ा वाजिब होती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़रूरते बशरी के अलावा किसी ज़रूरत से भी मस्जिद से बाहर तशरीफ़ नहीं लाते थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का यह ईसार कि दूसरे की वजह से अपना एतिकाफ़ तोड़ दिया, ऐसे ही लोगों के लिये मुनासिब है कि दूसरों की ख़ातिर ख़ुद प्यासे तड़प-तड़प कर मर जावें, मगर पानी का आख़िरी क़तरा इसलिये न पियें कि दूसरा ज़ख़्मी जो पास लेटा हुआ है वह अपने से मुक़द्दम है।[3] यह भी मुम्किन है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का यह एतिकाफ़ नफ़्ली एतिकाफ़ हो, इस सूरत में कोई इश्काल नहीं।

ख़ात्मे में एक तवील हदीस, जिस में कई नौअ के फ़ज़ाइल इर्शाद फ़र्माये हैं, ज़िक्र करके इस रिसाले को ख़त्म किया जाता है।

(۴) عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍؓ اَنَّهٗ سَمِعَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَقُوْلُ اِنَّ الْجَنَّةَ لَتُبَخَّرُ وَتُزَيَّنُ مِنَ
الْحَوْلِ اِلَى الْحَوْلِ لِدُخُوْلِ شَهْرِ رَمَضَانَ
فَاِذَا كَانَتْ اَوَّلُ لَيْلَةٍ مِّنْ شَهْرِ رَمَضَانَ
هَبَّتْ رِيْحٌ مِّنْ تَحْتِ الْعَرْشِ يُقَالُ لَهَا
الْمُثِيْرَةُ فَتَصْفِقُ وَرَقَاتِ اَشْجَارِ
الْجِنَانِ وَحَلَقَ الْمَصَارِيْعِ فَيُسْمَعُ
لِذٰلِكَ طَنِيْنٌ لَّمْ يَسْمَعِ السَّامِعُوْنَ
اَحْسَنَ مِنْهُ فَتَبْرُزُ الْحُوْرُ الْعِيْنُ
حَتّٰى يَقِفْنَ بَيْنَ شُرَفِ الْجَنَّةِ فَيُنَادِيْنَ
هَلْ مِنْ خَاطِبٍ اِلَى اللّٰهِ فَيُزَوِّجُهٗ

1. नसीहतें, 2. डर मज़्लूम की आह से क्योंकि उन की दुआ के वक़्त अल्लाह के यहाँ से मक़्बूलियत आ कर, इस्तक़बाल करती है, 3. सब से पहले,

ثُمَّ يَقُلْنَ الْحُوْرُ الْعِيْنُ يَا رِضْوَانَ
الْجَنَّةِ مَا هٰذِهِ اللَّيْلَةُ فَيُجِيْبُهُنَّ
بِالتَّلْبِيَةِ ثُمَّ يَقُوْلُ هٰذِهٖ اَوَّلُ
لَيْلَةٍ مِّنْ شَهْرِ رَمَضَانَ فُتِحَتْ
اَبْوَابُ الْجَنَّةِ عَلَى الصَّائِمِيْنَ
مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ قَالَ وَيَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ
يَا رِضْوَانُ اِفْتَحْ اَبْوَابَ الْجِنَانِ
وَيَا مَالِكُ اَغْلِقْ اَبْوَابَ
الْجَحِيْمِ عَلَى الصَّائِمِيْنَ مِنْ
اُمَّةِ اَحْمَدَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ وَيَا جِبْرَئِيْلُ اِهْبِطْ اِلَى
الْاَرْضِ فَاصْفِدْ مَرَدَةَ الشَّيَاطِيْنِ
وَغُلَّهُمْ بِالْاَغْلَالِ ثُمَّ اقْذِفْهُمْ
فِي الْبِحَارِ حَتّٰى لَا يُفْسِدُوْا عَلٰى
اُمَّةِ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِيْ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صِيَامَهُمْ قَالَ وَ
يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيْ كُلِّ لَيْلَةٍ
مِّنْ شَهْرِ رَمَضَانَ لِمُنَادٍ يُنَادِيْ
ثَلٰثَ مَرَّاتٍ هَلْ مِنْ سَائِلٍ
فَاُعْطِيَهٗ سُؤْلَهٗ هَلْ مِنْ تَائِبٍ
فَاَتُوْبَ عَلَيْهِ هَلْ مِنْ مُّسْتَغْفِرٍ
فَاَغْفِرَ لَهٗ مَنْ يُّقْرِضُ الْمَلِيَّ غَيْرَ
الْعَدُوْمِ وَالْوَفِيَّ غَيْرَ الظَّلُوْمِ قَالَ
وَلِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ مِّنْ شَهْرِ
رَمَضَانَ عِنْدَ الْاِفْطَارِ اَلْفُ اَلْفِ

عَتِيْقٍ مِّنَ النَّارِ كُلُّهُمْ قَدِ اسْتَوْجَبُوا
النَّارَ فَاِذَا كَانَ اٰخِرُ يَوْمٍ مِّنْ شَهْرِ
رَمَضَانَ اَعْتَقَ اللّٰهُ فِيْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ
بِقَدْرِ مَا اَعْتَقَ مِنْ اَوَّلِ الشَّهْرِ اِلٰى
اٰخِرِهٖ وَاِذَا كَانَتْ لَيْلَةُ الْقَدْرِ
يَاْمُرُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ جِبْرَئِيْلَ
فَيَهْبِطُ فِيْ كَبْكَبَةٍ مِّنَ الْمَلٰئِكَةِ
وَمَعَهُمْ لِوَاءٌ اَخْضَرُ فَيَرْكُزُ اللِّوَاءَ
عَلٰى ظَهْرِ الْكَعْبَةِ وَلَهٗ مِائَةُ
جَنَاحٍ مِّنْهَا جَنَاحَانِ لَا يَنْشُرُهُمَا
اِلَّا فِيْ تِلْكَ اللَّيْلَةِ فَيَنْشُرُهُمَا فِيْ
تِلْكَ اللَّيْلَةِ فَيُجَاوِزُ الْمَشْرِقَ اِلَى
الْمَغْرِبِ فَيَحُثُّ جِبْرَئِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ
الْمَلٰئِكَةَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَيُسَلِّمُوْنَ
عَلٰى كُلِّ قَائِمٍ وَّقَاعِدٍ وَّمُصَلٍّ
وَّذَاكِرٍ وَّيُصَافِحُوْنَهُمْ وَيُؤَمِّنُوْنَ
عَلٰى دُعَائِهِمْ حَتّٰى يَطْلُعَ الْفَجْرُ
فَاِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ يُنَادِيْ جِبْرَئِيْلُ
مَعَاشِرَ الْمَلٰئِكَةِ اَلرَّحِيْلَ اَلرَّحِيْلَ
فَيَقُوْلُوْنَ يَا جِبْرَئِيْلُ فَمَا صَنَعَ اللّٰهُ فِيْ
حَوَائِجِ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اُمَّةِ اَحْمَدَ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُوْلُ نَظَرَ اللّٰهُ اِلَيْهِمْ
فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَعَفَا عَنْهُمْ اِلَّا اَرْبَعَةً
فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ هُمْ قَالَ رَجُلٌ
مُّدْمِنُ خَمْرٍ وَّعَاقٌّ لِّوَالِدَيْهِ وَقَاطِعُ
رَحِمٍ وَّمُشَاحِنٌ قُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

مَا الْمُشَاحِنُ قَالَ هُوَ الْمُصَارِمُ فَإِذَا كَانَتْ لَيْلَةُ الْفِطْرِ سُمِّيَتْ تِلْكَ اللَّيْلَةُ لَيْلَةَ الْجَائِزَةِ فَإِذَا كَانَتْ غَدَاةُ الْفِطْرِ بَعَثَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ الْمَلٰئِكَةَ فِي كُلِّ بِلَادٍ فَيَهْبِطُوْنَ إِلَى الْأَرْضِ فَيَقُوْمُوْنَ عَلٰى أَفْوَاهِ السِّكَكِ فَيُنَادُوْنَ بِصَوْتٍ يَسْمَعُ مَنْ خَلَقَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَّا الْجِنَّ وَالْإِنْسَ فَيَقُوْلُوْنَ يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ أُخْرُجُوْا إِلٰى رَبٍّ كَرِيْمٍ يُعْطِي الْجَزِيْلَ وَيَعْفُوْا عَنِ الْعَظِيْمِ فَإِذَا بَرَزُوْا إِلٰى مُصَلَّاهُمْ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ لِلْمَلٰئِكَةِ مَا جَزَاءُ الْأَجِيْرِ إِذَا عَمِلَ عَمَلَهُ قَالَ فَتَقُوْلُ الْمَلٰئِكَةُ إِلٰهَنَا وَسَيِّدَنَا جَزَاؤُهُ أَنْ تُوَفِّيَهُ أَجْرَهُ قَالَ فَيَقُوْلُ فَإِنِّي أُشْهِدُكُمْ يَا مَلَائِكَتِي إِنِّي قَدْ جَعَلْتُ ثَوَابَهُمْ مِنْ صِيَامِهِمْ شَهْرَ رَمَضَانَ وَقِيَامِهِمْ رِضَائِي وَمَغْفِرَتِي وَيَقُوْلُ يَا عِبَادِي سَلُوْنِي فَوَعِزَّتِي وَجَلَالِي لَا تَسْأَلُوْنِي الْيَوْمَ شَيْئًا فِي جَمْعِكُمْ لِآخِرَتِكُمْ إِلَّا أَعْطَيْتُكُمْ وَلَا لِدُنْيَاكُمْ إِلَّا نَظَرْتُ لَكُمْ فَوَعِزَّتِي لَأَسْتُرَنَّ عَلَيْكُمْ عَثَرَاتِكُمْ مَا رَاقَبْتُمُوْنِي وَعِزَّتِي وَجَلَالِي لَا أُخْزِيْكُمْ وَلَا أَفْضَحُكُمْ بَيْنَ أَصْحَابِ الْحُدُوْدِ إِنْصَرِفُوْا مَغْفُوْرًا لَكُمْ قَدْ أَرْضَيْتُمُوْنِي وَرَضِيْتُ عَنْكُمْ فَتَفْرَحُ الْمَلٰئِكَةُ وَتَسْتَبْشِرُ بِمَا يُعْطِي اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ هٰذِهِ الْأُمَّةَ إِذَا أَفْطَرُوْا مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ.

(كذا في الترغيب وقال رواه ابو الشيخ بن حبان في كتاب الثواب والبيهقي واللفظ له وليس في اسناده من اجمع على ضعفه قلت قال السيوطي في التدريب قد التزم البيهقي ان لا يخرج في تصانيفه حديثا يعلمه موضوعا الخ وذكر القاري في المرقاة بعض طرق الحديث ثم قال فاختلاف طرق الحديث يدل على ان له اصلا)

4. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जन्नत को रमज़ान शरीफ़ के लिये ख़ुश्बुओं की धूनी दी जाती है और शुरू साल से आख़िर साल तक रमज़ान की ख़ातिर आरास्ता किया जाता है[1], पस जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है, तो अर्श के नीचे से एक हवा चलती है, जिसका नाम मसीरा है। (जिसके झोंकों की वजह से) जन्नत के दरख़्तों के पत्ते और किवाड़ों के हल्क़े बजने लगते हैं, जिस से ऐसी दिल आवेज़

1. सजाया-संवारा जाता है,

सुरीली आवाज निकलती है कि सुनने वालों ने इस से अच्छी आवाज कभी नहीं सुनी। पस ख़ुशनुमा आंखों वाली हूरें अपने मकानों से निकल कर जन्नत के बालाख़ानों के दर्मियान खड़े होकर आवाज देती हैं कि कोई है अल्लाह तआला की बारगाह में हम से मंगनी करने वाला ताकि हक़ तआला शानुहू उस को हम से जोड़ दें। फिर वही हूरें जन्नत के दारोग़ा रिजवान से पूछती हैं कि यह कैसी रात है। वह 'लब्बैक' कह कर जवाब देते हैं कि रमज़ानुल मुबारक की पहली रात है। जन्नत के दरवाजे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए (आज) खोल दिये गये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हक़ तआला शानुहू रिजवान से फ़र्मा देते हैं कि जन्नत के दरवाज़े खोल दे, और मालिक (जहन्नम के दारोग़ा) से फ़र्मा देते हैं कि अहमद सल्ल० की उम्मत के रोज़ेदारों पर जहन्नम के दरवाजे बंद कर दे। और जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म होता है कि ज़मीन पर जाओ और सरकश श्यातीन को क़ैद करो और गले में तौक़ डाल कर दरिया में फैंक दो कि मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के रोजों को ख़राब न करें। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी इर्शाद फ़र्माया कि हक़ तआला शानुहू रमज़ान की हर रात में एक मुनादी[1] को हुक्म फ़र्माते हैं कि तीन मर्तबा आवाज दे कि है कोई मांगने वाला जिस को मैं अता करूं ? कोई तौबा करने वाला कि मैं उस की तौबा क़ुबूल करूं ? कोई है मग़्फ़िरत चाहने वाला कि मैं उस की मग़्फ़िरत करूं ? कौन है जो ग़नी को क़र्ज दे? ऐसा ग़नी जो नादार[2] नहीं, ऐसा पूरा-पूरा अदा करने वाला, जो ज़रा भी कमी नहीं करता। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हक़ तआला शानुहू रमज़ान शरीफ़ में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त ऐसे दस लाख आदमियों को जहन्नम से ख़लासी मरहमत फ़र्माते हैं जो जहन्नम के मुस्तहिक़ हो चुके थे और जब रमज़ान का आख़िरी दिन होता है तो यकुम रमज़ान से आज तक जिस क़दर लोग जहन्नम से आज़ाद किये गये थे उन के बराबर उस एक दिन में आज़ाद फ़र्माते है और जिस रात शबे क़द्र होती है हक़ तआला शानुहू हज़रत जिब्रील अलै० को हुक्म फ़र्माते है। वह फ़रिश्तों के एक बड़े लश्कर के साथ ज़मीन पर उतरते हैं। इन के साथ एक सब्ज झंडा होता है, जिसको काबे के ऊपर खड़ा करते हैं और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाहु वस्सलाम के सौ बाज़ू हैं जिन में से दो बाज़ू को सिर्फ़ इसी रात में खोलते हैं जिन को मश्रिक से मग़्रिब तक फैला देते हैं, फिर हज़रत जिब्रील अलै० फ़रिश्तों को तकाज़ा फ़र्माते हैं कि जो मुसलमान आज की रात में खड़ा हो या बैठा हो, नमाज पढ़ रहा हो या ज़िक्र कर रहा हो, उस को सलाम करें और मुसाफ़हा करें और उनकी दुआओं पर आमीन कहें, सुब्ह

1. आवाज लगाने वाला, 2. ग़रीब,

तक यही हालत रहती है। जब सुबह हो जाती है तो जिब्रील अलै० आवाज़ देते हैं कि ऐ फ़रिश्तों की जमाअत! अब कूच करो और चलो। फ़रिश्ते हजरत जिब्रील अलै० से पूछते हैं कि अल्लाह तआला ने अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के मोमिनों की हाजतों और जरूरतों में क्या मामला फ़रमाया? वह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने इन पर तवज्जोह फ़र्माई और चार शख़्सों के अलावा सब को माफ़ फ़र्मा दिया। सहाबा रज़ि० ने पूछा कि या रसूलल्लाह! वे चार शख़्स कौन हैं? इर्शाद हुआ कि एक वह शख़्स, जो शराब का आदी हो, दूसरा वह शख़्स जो वालिदैन की ना-फ़र्मानी करने वाला हो। तीसरा वह शख़्स जो क़ता-ए-रहमी[1] करने वाला और नाता तोड़ने वाला हो, चौथा वह शख़्स जो कीना रखने वाला हो और आपस में क़ता-ए-ताल्लुक करने वाला हो। फिर जब इदुल्-फ़ित्र की रात होती है तो इसका नाम आसमानों पर लैलतुल जाइज़ा, (इन्आम की रात) से लिया जाता है और जब ईद की सुबह होती है तो हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों को तमाम शहरों में भेजते हैं। वह ज़मीन पर उतर कर तमाम गलियों, रास्तों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और ऐसी आवाज़ से, जिसको जिन्नात और इन्सान के सिवा हर मख़्लूक़ सुनती है, पुकारते हैं कि ऐ मुहम्मद सल्ल० की उम्मत! उस करीम रब की दरगाह की तरफ़ चलो, जो बहुत ज़्यादा अता फ़र्माने वाला है और बड़े से बड़े कुसूर को माफ़ फ़र्माने वाला है। फिर जब लोग ईदगाह की तरफ़ निकलते हैं, तो हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों से दर्याफ़्त फ़र्माते हैं, क्या बदला है उस मज़दूर का जो अपना काम पूरा कर चुका हो? वह अर्ज़ करते हैं कि हमारे माबूद और हमारे मालिक इस का बदला यही है कि उसकी मज़दूरी पूरी-पूरी दे दी जाये। तो हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्माते हैं कि ऐ फ़रिश्तों! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं, मैंने इनको रमज़ान के रोज़ों और तरावीह के बदले में अपनी रज़ा और मग़्फ़िरत अता कर दी और बन्दों से ख़िताब फ़र्मा कर इर्शाद होता है कि मेरे बन्दो! मुझ से मांगो। मेरी इज़्ज़त की क़सम! मेरे जलाल की क़सम, आज के दिन अपने इस इज्तिमाअ में मुझ से अपनी आख़िरत के बारे में जो सवाल करोगे, अता करूंगा और दुनिया के बारे में जो सवाल करोगे, उसमें तुम्हारी मस्लहत पर नज़र करूंगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम कि जब तक तुम मेरा ख़्याल रखोगे, मैं तुम्हारी लग़्ज़िशों पर सत्तारी करता रहूंगा और उनको छुपाता रहूंगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम और मेरे जलाल की क़सम! मैं तुम्हें मुज्रिमों (और काफ़िरों) के सामने रुसवा और फ़ज़ीहत न करूंगा। बस अब बख़्शे-बख़्शाए अपने घरों को

1. रिश्ते ताल्लुकात ख़त्म करने वाला,

लौट जाओ। तुमने मुझे राज़ी कर दिया और में तुम से राज़ी हो गया। पस फ़रिश्ते इस अज्र व सवाब को देख कर जो इस उम्मत को इफ़्तार के दिन मिलता है, ख़ुशियां मनाते हैं और खिल जाते हैं। अल्लहुम्मज् अल्ना मिन हुम।

फ़ — इस हदीस के अक्सर मज़ामीन रिसाले के गुज़िश्ता औराक़[1] में बयान हो चुके हैं; अलबत्ता चन्द उमूर क़ाबिले ग़ौर हैं जिनमें सब से-

अव्वल और अहम तो यह है कि बहुत से महरूम रमज़ान की मग़्फ़िरते आम्मा से भी मुस्तस्ना[2] थे जैसा कि पहली रिवायात में मालूम हो चुका है और वह ईद को इस मग़्फ़िरते आम्मा से भी मुस्तस्ना कर दिये गये जिनमें से आपस के लड़ने वाले और वालिदैन की नाफ़र्मानी करने वाले भी हैं।

उनसे कोई पूछे कि तुमने अल्लाह को नाराज़ करके अपने लिये कौनसा ठिकाना ढूंढ रखा है, अफसोस तुम पर भी और तुम्हारी उस इज़्ज़त पर भी जिसके हासिल करने के ग़लत ख़याल में तुम रसूल अल्लाह की बद दूआऐं बर्दाशत कर रहे हो जिब्रील अलैहिस्सलाम की बद दुआयें उठा रहे हो। और अल्लाह की रहमत व मग़्फ़िरते आम्मा से भी निकाले जा रहे हो। मैं पूछता हूं कि आज तुमने अपने मुक़ाबिल को ज़क दे ही दी। अपनी मूंछ ऊंची कर ही ली। वह कितने दिन तुम्हारे साथ रह सकती है। जबकि अल्लाह का प्यारा रसूल तुम्हारे ऊपर लानत कर रहा हैं अल्लाह का मुक़र्रब फ़रिश्ता तुम्हारी हलाकत की बद दुआ दे रहा है। अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हें अपनी मग़्फ़िरत व रहमत से निकाल रहे हैं अल्लाह के वास्ते सोचो और बस करो सुबह का भटका शाम को घर आ जाये तो कुछ नहीं गया।

आज वक़्त है और तलाफ़ी मुम्किन और कल जब ऐसे हाकिम की पेशी में जाना है। जहां न इज़्ज़त व वजाहत की पूछ न माल व मता कार आमद वहां सिर्फ तुम्हारे आमाल की पूछ है और हर हरकत लिखी लिखाई सामने हैं हक़ तआला शानुहू अपने हुक़ूक़ में दर गुज़र फर्माते हैं मगर बंदों के आपस के हक़ूक़ में बग़ैर बदला दिये नहीं छोड़ते। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि मुफ़लिस मेरी उम्मत में वह शख़्स है कि क़यामत के दिन नेक आमाल के साथ आवे और नमाज़-रोज़ा सदक़ा सब ही कुछ लावे। लेकिन किसी को ग़ाली दे रखी है। किसी को तोहमत

---

1. पिछले पन्ने, 2. अलग।

लगा दी थी। किसी को मारपीट की थी पस यह सब दावेदार आवेंगे और उसके नेक आमाल में से इन हरकतों का बदला वुसूल कर लेंगे और जब उसके पास नेक आमाल ख़त्म हो जावेंगे तो अपनी बुराईयां उन हरकतों के बदले में उसपर डालते रहेंगे और फिर उस अम्बार की बदौलत वह जहन्नम रसीद हो जायेगा और अपनीं कसरते आमाल के बावजूद जो हसरत वयास का आलम होगा वह मोहताजे बयान नहीं।

वह मायूसे तमन्ना क्यों न सुअे आसमां देखें
कि जो मंज़िल ब मंज़िल अपनी मेहनत रायेगां देखें

दुसरा – अम्र काबिले ग़ौर यह है कि इस रिसाले में चंद मवाके मग़्फ़िरत के ज़िक्र किये गये हैं और उनके अलावा भी बहुत से उमूर ऐसे हैं। कि वह मग़्फ़िरत के सबब होते है। और गुनाह उनसे माफ़ हो जाते हैं उस पर एक ईश्काल होता है वह यह कि जब एक मर्तबा गुनाह माफ़ हो चूके तो उसके बाद दूसरी मर्तबा माफ़ी के क्या मानी। इसका जवाब यह है कि मग़्फ़िरत का क़ायदा यह है कि जब वह बंदा की तरफ मुतवज्जह होती है अगर उसपर कोई गुनाह होता है तो उसको मिटाती हैं। और अगर उसके ऊपर कोई गुनाह नहीं होता तो उसके ब क़द्र रहमत और इनाम का इज़ाफ़ा हो जाता है।

तीसरी – अम्र यह है कि साबिका अहादीस में भी बाज़ जगह और इस हदीस में अभी हक़ तआला शानुहू ने अपनी मग़्फ़िरत फ़र्माने पर फ़रिश्तों को गवाह बनाया है इसकी वजह यह है कि क़यामत की अदालत के मामलात ज़ाबता पर रखे गये हैं। अमबिया अलैहिस्सलातु व सलाम से उनकी तब्लीग़ के बारे में भी गवाह तलब किये जायेंगे। चूनांचे अहादीस की किताबों में बहुत से मवाके पर नबी करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया है कि तुमसे मेरे बारे में सवाल होगा। लिहाज़ा तुम गवाह रहो कि मैं पहुंचा चुका हूं बुख़ारी वग़ैरह में इर्शाद है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

---

1. तर्जुमा– 'हर शख़्स इस तरह आवेगा कि एक उस को साथ लावेगा और एक गवाह आवेगा' (सूर: क़ाफ़, रुकूअ 2) 'वह कोई लफ़्ज मुंह से नहीं निकलने पाते, मगर उस के पास ही एक ताक लगाने वाला तैयार है (सूर: क़ाफ़, रुकूअ 2) 'और तुम पर याद रखने वाले मुअज़्ज़ज लिखने वाले मुकर्रर हैं' 2. तर्जुमा – 'मैं उन पर मुत्तला रहा, जब तक उन में रहा, (सूर: माइदा, रुकूअ, 16), 'सो उस वक़्त भी क्या हाल होगा जबकि हर–हर उम्मत में से एक–एक को गवाह करेंगे और आप को भी उन लोगों पर गवाही देने के लिए हाज़िर करेंगे (सूर: निसा रुकूअ 6), 3. और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जायेंगे, 4. जिस दिन उन के ख़िलाफ़ में उन की ज़बानें गवाही देंगी और उन के हाथ (सूर: नूर , रुकूअ 5) 5. बुराईयों, 6. पर्दा डालना।

कियामत के दिन बुलाये जायेंगे उनसे दरियाफ़्त किया जायेगा कि तुमने रिसालत का हक़ अदा किया। हमारे अहकाम पहुंचाये वह अर्ज़ करेंगे पहुंचाये थे। फिर उनकी उम्मत से पूछा जायेगा कि तुम्हें अहकाम पहुंचाये थे वह कहेंगे।

مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ

तर्जुमा – हमारे पास न कोई बशारत देने वाला आया न डराने वाला तो हज़रत नुह अलै० से पूछा जायेगा कि अपने गवाह पेश करो। वह मुहम्मद सल्ल० और उनकी उम्मत को पेश करेंगे, उम्मते मुहम्मदिया बुलाई जायेगी और गवाही देगी बाज़ रिवायात में आता है कि उनसे जिरह की जायेगी कि तुमको क्या ख़बर कि नूह अलै० ने अपनी उम्मत को अहकाम पहुंचाये यह अर्ज़ करेंगे। कि हमारे रसूल सल्ल० ने ख़बर दी हमारे रसूल पर जो सच्ची किताब उतरी उसमें ख़बर दी गई। इसी तरह और अम्बिया की उम्मत के साथ यही पेश आयेगा। उसी के मुतल्लिक इर्शाद खुदा बंदी हैं। وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ـ

इमाम फ़ख़्रउद्दीन राज़ी रह० लिखते है कियामत में गवाहियां चार तरह की होंगी।

एक – मलाइका की जिसके मुताल्लिक आयाते ज़ैल में तज़्किरा है।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ـ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ـ

दूसरी – गवाही अम्बिया अलैस्सलातु व सलाम की होगी जिसके मुताल्लिक इर्शाद है

وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۝ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ۝

तीसरी – उम्मते मुहम्मदिया की गवाही होगी जिसके मुताल्लिक इर्शाद है–

व जी अ बिन्नबीयीन वशु ह दाह०[1] وَجِيْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ ۝

1. चांद रात,

चौथी आदमी की अपने आज़ा की गवाही जिस के मुताल्लिक़ इर्शाद है-

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ

यौ म तश्हदु अलैहिम अल सि न तुहुम व ऐदी हिम०[1] अल आयत और

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ

अल् यौ म नख़्तिमु अ़ला अफ़वाहि हिम व तुकल्लिमुना ऐ-दीहिम !

इख़्तिसार के ख़्याल से इन आयात का तर्जुमा नहीं लिखा। सब आयात का हासिल क़ियामत के दिन इन चीज़ों की गवाही देने का ज़िक्र है जिनका बयान आयत के शुरू में लिख दिया गया।

चौथा अम्र हदीसे बाला में यह इर्शाद मुबारक है कि मैं तुम को कुफ़्फ़ार के सामने रुसवा और फ़ज़ीहत न करूंगा। यह हक़ तआला शानुहू का ग़ायत दर्जे का लुत्फ़ व करम और मुसलमानों के हाल पर ग़ैरत है कि अल्लाह की रज़ा के ढूंढने वालों के लिये यह भी लुत्फ़ व इनाम है कि उनकी लग़्ज़िशों और सय्यिआत[2] से वहां भी दरगुज़र और परदापोशी की जाती है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि क़यामत के दिन हक़ तआला शानुहू एक मोमिन को अपने क़रीब बुला कर उस पर परदा डाल कर कि कोई दूसरा न देखे, उसकी लग़्ज़िशों और सय्यिआत याद दिला कर, उससे हर-हर गुनाह का इक़रार करायेंगे और वह अपने गुनाहों की कसरत और इक़रार पर यह समझेगा कि अब हलाकत का वक़्त क़रीब आ गया, तो इर्शाद होगा कि मैंने दुनिया में तुझ पर सत्तारी[3] फ़र्माई है तो आज भी उन पर परदा है और माफ़ हैं। इसके बाद उसके नेक आमाल का दफ़्तर उसके हवाले कर दिया जायेगा।

और भी सैंकड़ों रिवायात से यह मज़्मून मुस्तबंत होता है कि अल्लाह की रज़ा के ढूंढने वालों, उसके अहकाम की पाबन्दी करने वालों की लग़्ज़िशों से दरगुज़र कर दिया जाता है, इसलिये निहायत अहमियत के साथ एक मज़मून समझ लेना चाहिए कि जो लोग अल्लाह वालों की कोताहियों पर, उनकी ग़ीबत में मुब्तला रहते हैं, वह

1. यानी हज़रत शेख़ुल हदीस मद्द ज़िल्लुहू और इस हक़ीर को दुआ में याद रखें तो एहसान होगा (मनी फ़ज़ाइले रमज़ान,) 2. गुनाह की वजह से, 3. पर्दा पोशी।

इसका लिहाज़ रखें कि मुबादा क़ियामत में उनके नेक आमाल की बरकत से उनकी लग़्ज़िशें तो माफ़ कर दी जायें और परदापोशी फ़र्माई जाये लेकिन तुम लोगों के आमालनामें ग़ीबत का दफ़्तर बन कर हलाकत का सबब बनें। अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ से हम सबसे दर गुज़र फ़र्मावें।

पांचवा अम्र ज़रूरी यह है कि हदीसे बाला में ईद की रात को इनआम की रात से पुकारा गया इस रात में हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से अपने बंदों को इनआम दिया जाता है, इसलिए बन्दों को भी इस रात की बेहद क़द्र करना चाहिए। बहुत से लोग आवाम का तो पूछना ही क्या ख़्वास भी रमज़ान के थके-मांदे इस रात में मीठी नींद सोते हैं, हालांकि यह रात भी ख़ुसूसियत से इबादत में मश्ग़ूल रहने की है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स सवाब की नीयत करके दोनों ईदों में जागे और इबादत में मश्ग़ूल रहे, उसका दिल उस दिन न मरेगा, जिस दिन सब के दिल मर जायेंगे (यानी फ़िला व फ़साद के वक़्त) जब लोगों के क़ुलूब पर मुरदनी छा जाती है, उसका दिल जिन्दा रहेगा और मुम्किन है कि सूर फूंके जाने का दिन मुराद हो कि उसकी रूह बेहोश न होगी।

एक हदीस में इर्शाद है कि जो शख़्स पांच रातों में (इबादत के लिए) जागे, उसके वास्ते जन्नत वाजिब हो जायेगी-लैलतुल तरविया (आठ ज़िल हिज्जा की रात), लैलतुल अरफ़ा (9 ज़िल् हिज्जा की रात), लैलतुल नह्र (10 ज़िल हिज्जा की रात) और ईदुल फ़ित्र की रात और शबे बरात यानी 15 शाबान की रात।

फ़ुक़हा ने भी ईदैन की रात में जागना मुस्तहब लिखा है 'मा सबत बिस्सुन्नह में इमाम शाफ़ई साहब रह० से नक़ल किया है कि पांच रातें दुआ की क़ुबूलियत की हैं, जुमे की रात, ईदैन की रातें, ग़ुर्रा-ए-रजब की रात और निस्फ़ शाबान की रात।

तम्बीह

बाज़ बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि रमज़ानुल मुबारक में जुमे की रात का भी ख़ुसूसियत से एहतमाम चाहिये कि जुमा और उसकी रात, बहुत मुतबर्रक औक़ात हैं। अहादीस में इनकी बहुत फ़ज़ीलत आई है, मगर चूंकि बाज़ रिवायात में जुमे की रात को क़याम के साथ मख़्सूस करने की मुमानअत भी वारिद हुई है, इसलिए बेहतर है कि एक दो रात को उसके साथ और भी शामिल कर ले-

आख़िर में नाज़िरीन से लजाजत से दर्ख़्वास्त है कि रमज़ानुल मुबारक के मख़्सूस औक़ात में जब आप अपने लिये दुआ फ़र्मायें, तो एक स्याहकार[1] को भी शामिल फ़र्मायें, क्या बईद है कि करीम आक़ा तुम्हारी मुख़्लिसाना दुआ से इसको भी अपनी रज़ा व मुहब्बत से नवाज़ दें।

गरचे मैं बदकार व नालायक़ हूं ऐ शाहे जहां,
पर तेरे दर को बता, अब छोड़कर जाऊं-कहां
कौन है तेरे सिवा, मुझ बे नवा के वास्ते।

कश्मकश से ना उम्मीदी की हुआ हूं मैं तबाह
देख मत मेरे अमल, कर लुत्फ़ पर अपने निगाह
या रब! अपने रहम व एहसान व अता के वास्ते।

चर्ख इस्यां सर पे है ज़ेरे क़दम बहरे अलम,
चार सू है फ़ौजे ग़म, कर जल्द अब बहरे करम,
कुछ रिहाई का सबब इस मुब्तला के वास्ते।

है इबादत का सहारा, आबिदों के वास्ते,
और तकिया ज़ुह्द का है, ज़ाहिदों के वास्ते,
है असाए आह मुझ बे-दस्त व पा के वास्ते।

नै फ़क़ीरी चाहता हूं, नै अमीरी की तलब
नै इबादत, नै वरअ, नै ख़्वाहिशे इल्म व अदब
दर्दे दिल, पर चाहिये, मुझ को ख़ुदा के वास्ते।

1. शैख़ुल हदीस रह०

अक़्लो होशो फ़िक्र और नेमाए दुनिया बे-शुमार,
की अता तूने मुझे, पर अब तो ऐ परवरदिगार!
बख़्श, वह नेमत जो काम आये, सदा के वास्ते।

हद से अबतर हो गया है हाल, मुझ नाशाद का
कर मेरी इम्दाद, अल्लाह, वक़्त है इम्दाद का
अपने लुत्फ़ो व रहमते बे इन्तिहा के वास्ते।

गौ मैं हू एक बन्दा-ए-आसी ग़ुलामे पुर क़सूर
जुर्म मेरा हौसला है, नाम है तेरा ग़फ़ूर,
तेरा कहलाता हूं मैं जैसा हूं ऐ रब्बे शकूर,
अंत शाफ़िन अंत काफ़िन फ़ी मुहिम्मातिल उमूर,
अंत हस्बी अंत रब्बी अंत नी नेमल वकील।।

–मुहम्मद ज़करीया कांधलवी

मुक़ीम मज़ाहिरे उलूम,
सहारनपुर
(वारिद बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन देहली)
27 शब रमज़ानुल मुबारक, 1349 हि०

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا
या ऐयुहल्लज़ी न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा०
ऐ ईमान वालो! हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद और ख़ूब सलाम भेजो।
Click-->
फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
मुअल्लिफ़ :
रासुल मुहद्दिसीन हज़रत अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़ मौलाना
मुहम्मद ज़करिया साहब रह० शेख़ुल हदीस मदरसा
मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर
जिसमें
दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल और न पढ़ने पर वईदें और ख़ास-ख़ास दरूदों के फ़ज़ाइल और आदाब व मसाइल और रौज़ा-ए-अक्दस पर सलात व सलाम पढ़ने का तरीक़ा और दरूद शरीफ़ के मुताल्लिक़ पचास क़िस्से ज़िक्र किये गये हैं।
प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद
ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

विषय-सूची

क्या? कहाँ?

पहली फ़सल

दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाईल में

दूसरी फ़सल

तीसरी फ़सल

चौथी फ़सल

पांचवी फ़सल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصّٰلِحٰتُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمَوْجُوْدَاتِ
الَّذِىْ قَالَ اَنَا سَيِّدُ وُلْدِ اٰدَمَ وَلَا فَخْرَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ اِلٰى يَوْمِ الْحَشْرِ

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल् करीमि हामिदंव्व मुसल्लियंव्व व मुसल्लिमन०

अल्हम्दु लिल्लाहिलज़ी बिनिअ्मतिही ततिम्मुस्सालिहातु वस्सलातु अला सय्यिदिल् मौजूदातिल्लज़ी क़ा ल अना सय्यिदु वुल्दि आद म वला फ़ख़् र व अला आलिही व अस्हाबिही व अत्बाअिही इला यौमिल् हशर०

अम्मा बअ़्दु–अल्लाह जल्ले जलालुहू व अम्म नवालुहू के लुत्फ़ व इन्आम और महज उसके फ़ज़्ल व एहसान और उसके नेक बन्दों की शफ़क़त और तवज्जुहात से इस नाकारा व नाबकार, स्याहकार के क़लम से 'फ़ज़ाइल' के सिलसिले में मुतअद्दिद रसाइल लिखे गये, जो निज़ामुद्दीन के तब्लीग़ी सिलसले के निसाब में भी दाख़िल हैं और अह्बाब के सैकड़ों ख़ुतूत से उनका बहुत ज़्यादा नाफ़ेअ होना मालूम होता रहा। इस नाकारा का इसमें कोई दख़ल नहीं।

अव्वलन महज अल्लाह जल्ले शानुहू का इन्आम,

सानियन उस पाक रसूल के कलाम की बरकत, जिसके तराजुम इन रसाइल में पेश किये गये,

सालिसन उन अल्लाह वालों की बरकतें, जिनके इर्शादात से यह रसाइल लिखे गये हैं यह अल्लाह का महज़ लुत्फ़ व करम है कि इन सारी बरकात में इस नापाक की गंदगी हाइल न हुई– اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ وَلَكَ الشُّكْرُ كُلُّهٗ

اَللّٰهُمَّ لَا اُحْصِىْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ۔

अल्लाहुम-म लकल्हम्दुकुल्लहू व लकश्शक्रु कुल्लुहू अल्लाहुम-म ला उह्सी सनाअन अलै-क अन्-त कमा अस्नै-त अला नफ़्सिक०

इस सिलसिले का सबसे पहला रिसाला सन् 1348 हि० में 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' के नाम से हज़रते अक़्दस शाह मुहम्मद यासीन साहब[1] रह० नगीनवी ख़लीफ़ा क़ुतबे आलम शेख़ुल मशाइख़ हज़रत गंगोही[2] क़द्दस सिर्रुहू की तामीले हुक्म में लिखा गया था, जैसाकि उस रिसाले के शुरू में तफ़्सील से[3] लिखा गया है। हज़रत शाह साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू का विसाल 30 शव्वाल सन् 1360 हि० शब पंजशंबा में हुआ था। नव्वरल्लाहु मर्क़दहू व अअ़लल्लाहु मरातिब हू०

हज़रत रह० ने अपने विसाल के वक़्त अपने अजल्ल ख़लीफ़ा मौलाना अलहाज्ज अब्दुल अज़ीज़ दुआजू के ज़रिए यह पयाम और वसीयत भेजी कि जिस तरह 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' लिखा गया है, मेरी ख़्वाहिश है कि इसी तरह 'फ़ज़ाइले दरूद' भी लिख दे। हज़रत शाह साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के विसाल के बाद मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब बार-बार इस वसीयत की याद दहानी और तामील पर इस्रार करते रहे और यह नाकारा भी अपनी ना-अह्लियत के बावजूद दिल से ख़्वाहिश करता रहा कि यह सआदत मयस्सर हो जाये। शाह साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के अलावा और भी बहुत से हज़रात का इस्रार होता रहा, मगर इस नाकारा पर सय्यिदिल कौनैन फ़ख़्रुर्रुसुल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की जलालते शान का कुछ ऐसा रोब तारी रहा कि जब भी इसका इरादा किया, यह ख़ौफ़ तारी हुआ कि मुबादा कोई चीज़ शाने आली के ख़िलाफ़ न लिखी जाए। इसी लैत व लअ़ल[4] में गुज़िश्ता साल अज़ीज़ी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के इस्रार पर तीसरी मर्तबा हिजाज़ की हाज़िरी मयस्सर हुई और अल्लाह के फ़ज़्ल से चौथे हज की सआदत हासिल हुई। हज से फ़राग़ पर जब मदीना पाक हाज़िरी हुई, तो वहां पहुंच कर बार-बार दिल

---

1. हज़रत शाह साहब की विलादत रबीउ़ल् अव्वल 1285 हि० में हुई। इस लिहाज़ में 75 साल की उम्र में विसाल हुआ, निहायत बुज़ुर्ग, निहायत मुतवाज़िअ, निहायत कमगो, साहबे कश्फ़ और साहबे तसर्रुफ़ात बुज़ुर्ग थे। इस नकारा पर बहुत की शफ़्क़त फ़रमाते थे। हज़रते मम्दूह मदरसे के सालाना जल्सों में निहायत एहतमाम से तशरीफ़ लाया करते और जल्से से फ़राग़ पर कई दिन इस नाकारा के पास क़ियाम फ़रमाते, बड़े एहतमाम से इस नकारा के हदीस के सबक़ में भी तशरीफ़ फ़रमा होते। इस नाबकार की आदत अस्बाक़ में डिबिया, बटुआ साथ ले जाने को भी थी। एक मर्तबा हज़रत मर्हूम ये यों फ़रमाया कि मैं पान खाने को तो मना नहीं करता, लेकिन हदीस पाक के सबक़ में न खाया करें, उस वक़्त से आज तक तक़रीबन 35 साल हो चुके है, बाज़ मर्तबा 5-6 घंटे मुसलसल भी सबक़ हुआ, लेकिन सबक़ में कभी पान का ख़्याल भी नहीं आया। यह हज़रत की का तसर्रुफ़ था। इसके अलावा और बहुत से वाक़िआत हज़रत की करामतों के सुनने में आये थे। र-फ़- अल्लाह द-र-जातुहू। 2. हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह०,

यह में सवाल पैदा होता था कि 'फ़ज़ाइले दरूद' न लिखने का क्या जवाब है। हरचंद कि मैं अपने आज़ार[1] पर सोचता था, लेकिन बार-बार इस क़ल्बी सवाल पर यह नाकारा पुख़्ता इरादा करके आया था कि सफ़र से वापसी पर इन्शा अल्लाह इस मुबारक रिसाले की तक्मील की कोशिश करूंगा, मगर 'खुए बद रा बहाना-ए-बिस्यार' यहां वापसी पर भी इमरोज व फ़र्दा होता रहा। इस माहे मुबारक में इस दाअिया ने फिर औद किया, तो आज 25 रमज़ानुल मुबारक सन् 1384 हि० आख़िरी जुमा को नमाज़ के बाद अल्लाह के नाम से इब्तिदा तो कर ही दी। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से तक्मील की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए और इस रिसाले में और इससे पहले जितने रिसाले लिखे गये हैं। या अरबी की किताबें लिखी गई हैं, इनमें जो लग़्ज़िशें हुई हों, महज़ अपने लुत्फ़ व करम से उनको माफ़ फ़र्मायें।

इस रिसाले को चंद फ़ुसूल और एक ख़ात्मे पर लिखने का ख़्याल है-

पहली फ़स्ल में फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़,

दूसरी फ़स्ल में ख़ास-ख़ास दरूद शरीफ़, के ख़ास फ़ज़ाइल

तीसरी फ़स्ल में दरूद शरीफ़ न पढ़ने की वईदें

चौथी फ़स्ल फ़वाइदे मुतफ़र्रिक़ा में,

पांचवी फ़स्ल हिकायात में।

हक़ तआला, शानुहू लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा दरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये। इस रिसाले के देखने से हर शख़्स ख़ुद ही महसूस कर लेगा कि दरूद शरीफ़ कितनी बड़ी दौलत है और इसमें कोताही करने वाले कितनी बड़ी सआदत से महरूम हैं।

पहली फ़सल

दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में

इसमें सबसे अहम और सबसे मुक़द्दम तो ख़ुद हक़ तआला शानुहू जल्ले जलालुहू व अम्म नवालुह का पाक इर्शाद और हुक्म है। चुनांचे क़ुरआन पाक में इर्शाद है-

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا۔ (پاره ۲۲، رکوع ۳)

इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन्नबीयि या ऐयुहल्लज़ी न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा०

'बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर। ऐ ईमान वालो ! तुम भी आप पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो।' (बयानुल क़ुरआन)

फ़– हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में बहुत से अह्काभात इर्शाद फ़रमाये हैं। नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरह और बहुत से अंबिया-ए-किराम की तौसीफ़ें और तारीफ़ें भी फ़र्मायीं, उनके बहुत से एज़ाज़ व इकराम भी फ़र्माये। हज़रत आदम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को पैदा फ़र्माया, तो फ़रिश्तों को हुक्म फ़र्माया कि उनको सज्दा किया जाए, लेकिन किसी हुक्म या किसी एज़ाज़ व इकराम में यह नहीं फ़र्माया कि मैं भी यह काम करता हूं, तुम भी करो। यह एज़ाज़ सिर्फ़ सय्यिदुल कौनैन फ़ख्ने आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के लिए है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने सलात की निस्बत[1] अव्वल अपनी तरफ़, इसके बाद अपने पाक फ़रिश्तों की तरफ़ करने के बाद मुसलमानों को हुक्म फ़र्माया कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो ! तुम भी दरूद भेजो। इससे बढ़ कर और क्या फ़ज़ीलत होगी, कि इस अम्ल में अल्लाह और उसके फ़रिश्तों के साथ मोमिनीन की शिर्कत है।

---

1. यानी दरूद शरीफ़ की निस्बत,

फिर अरबीदां[1] हज़रात जानते हैं कि आयते शरीफ़ा को लफ़्ज़ 'इन्ना' के साथ शुरू फ़र्माया, जो निहायत ताकीद पर दलालत करता है और सेग़ा-ए-मूज़ारेअ के[2] साथ ज़िक्र फ़र्माया, जो इस्तम्रार[3] और दवाम पर दलालत करता है, यानी यह क़तई चीज़ है कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते हमेशा दरूद भेजते रहते हैं नबी पर।

अल्लामा सख़ावी रह० लिखते हैं कि आयते शरीफ़ा मुज़ारेअ़ सेग़ा के साथ जो दलालत करने वाला है इस्तम्रार और दवाम पर, दलालत करती है, इस बात पर कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते हमेशा दरूद भेजते रहते हैं नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

साहिबे रूहुल बयान रह० लिखते हैं, बाज़ उलमा ने लिखा है कि अल्लाह के दरूद भेजने का मतलब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक़ामे महमूद[4] तक पहुंचाना है और वह मकामे शफ़ाअत है और मलाइका के दरूद का मतलब उनकी दुआ करना है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यादती-ए-मर्तबा के लिए और हुज़ूर सल्ल० की उम्मत के लिए इस्तिग़फ़ार और मोमिनीन के दरूद का मतलब हुज़ूर सल्ल० का इत्तिबाअ और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत और हुज़ूर सल्ल० के औसाफ़े जमीला का तज़्किरा और तारीफ़, यह भी लिखा है कि यह एज़ाज़ व इकराम, जो अल्लाह जल्ले शानुहू ने हुज़ूर सल्ल० को अता फ़र्माया है, उस एज़ाज़ से बहुत बढ़ा हुआ है, जो हज़रत आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को फ़रिश्तों से सज्दा कराकर अता फ़र्माया था, इसलिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस एज़ाज़ व इकराम में अल्लाह जल्ले शानुहू ख़ुद भी शरीक हैं, बख़िलाफ़ हज़रत आदम अलै० के एज़ाज़ के कि वहां सिर्फ़ फ़रिश्तों को हुक्म फ़र्माया-

अक़्ल दूरदेश मीदानद कि तश्रीफ़े चुनीं।
हेच दीं परवर नदीदव हेच पैग़म्बर नयाफ़्त

يُصَلِّي عَلَيْهِ اللّٰهُ جَلَّ جَلَالُهُ ۔ بِهٰذَا بَدَا لِلْعَالَمِيْنَ كَمَالُهُ

युसल्ली अलैहिल्लाहु जल्ल जलालुहू
बिहाज़ा बदअ लिल् आलमीन कमालुहू।

---

1. अरबी जानने वाले, 2. वर्तमान-भविष्य, 3. हमेशा और लगातार, 4. ऐसी जगह जहां तारीफ़ ही तारीफ़ हो,

उलमा ने लिखा है कि आयते शरीफ़ा में हुज़ूरे सल्ल० को नबी के लफ़्ज़ के साथ ताबीर किया, मुहम्मद सल्ल० के लफ़्ज़ से ताबीर नहीं किया, जैसा कि और अंबिया को उनके अस्मा[1] के साथ ज़िक्र फ़र्माया है, यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़ायत अज़्मत और ग़ायत शराफ़त की वजह से है। और एक जगह जब हुज़ूर सल्ल० का ज़िक्र हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ आया, तो उनको नाम के साथ ज़िक्र किया और आप सल्ल० को नबी के लफ़्ज़ से, जैसा कि

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ

'इन-न औलन्नासि बि इब्राही-म लल्लज़ीनत्तबिअूहु व हाज़न्नबीयु', में है और जहां कहीं नाम लिया गया है, वह ख़ुसूसी मस्लहत की वजह से लिया गया है। अल्लामा सख़ावी रह० ने इस मज़्मून को तफ़्सील से लिखा है।

यहां एक बात क़ाबिले ग़ौर यह है कि सलात का लफ़्ज़ जो आयते शरीफ़ा में वारिद हुआ है और इसकी निस्बत अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ और उसके फ़रिश्तों की तरफ़ और मोमिनीन की तरफ़ की गई है, वह एक मुश्तरक लफ़्ज़ है, जो कई मानी में मुस्तामल होता है, और कई मक़ासिद इससे हासिल होते हैं, जैसा कि साहिबे 'रूहुल बयान' के कलाम में भी गुज़र चुका। उलमा ने इस जगह सलात के बहुत से माना लिखे हैं। हर जगह जो माना अल्लाह तआला शानुहू और फ़रिश्तों और मोमिनीन के हाल के मुनासिब होंगे, वह मुराद होंगे।

बाज़ उलमा ने लिखा है कि सलात अलन्नबी का मतलब नबी की सना व ताज़ीम रहमत व उत्फ़त के साथ है, फिर जिसकी तरफ़ यह सलात मन्सूब होगी, उसी के शान व मर्तबा के लायक़ सना व ताज़ीम मुराद ली जाएगी, जैसा कि कहते हैं कि बाप बेटे पर, बेटा बाप पर भाई-भाई पर मेहरबान है तो ज़ाहिर है कि जिस तरह की मेहरबानी, बाप की बेटे पर है, उस नौअ की बेटे की बाप पर नहीं और भाई की भाई पर दोनों से जुदा है। इसी तरह यहां भी अल्लाह जल्ले शानुहू भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलात भेजता है, यानी रहमत व शफ़्क़त के साथ आपकी सना व एज़ाज़ व इक्राम करता है और फ़रिश्ते भी भेजते हैं। मगर हर एक कि सलात और रहमत व तक्रीम अपनी शान व मर्तबे के मुवाफ़िक़ होगी। आगे मोमिनीन को हुक्म है कि तुम भी सलात व रहमत भेजो।

---

1. नामों, 2. बे-इन्तिहा, 3. इस्तेमाल होता है, 4. नर्मी व मेहरबानी,

इमाम बुख़ारी रह० ने अबुल आलिया से नकल किया है कि अल्लाह के दरूद का मतलब उसका आपकी तारीफ़ करना है फ़रिश्तों के सामने, और फ़रिश्तों का दरूद उनका दुआ करना है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से 'युसल्लून' की तफ़्सीर 'युबर्रिकून' नकल की गई है, यानी बरकत की दुआ करते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० कहते हैं, यह क़ौल अबुल् आलिया के मुवाफ़िक़ है, अल-बत्ता उससे ख़ास है। हाफ़िज़ रह० ने दूसरी जगह सलात के कई माना लिखकर लिखा है कि अबुल् आलिया का क़ौल मेरे नज़दीक ज़्यादा औला है कि अल्लाह की सलात से मुराद अल्लाह की तारीफ़ है, हुज़ूर सल्ल० पर और मलाइका वग़ैरह की सलात उसकी अल्लाह से तलब है और तलब से मुराद ज़्यादती की तलब है, न कि असल की तलब।

हदीस में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई, तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! सलाम का तरीक़ा तो हमें मालूम हो चुका यानी अत्तहीयात में जो पढ़ा जाता है-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

अस्सलामु अलै क अय्युहन्नबीयु व रह्मतुल्लाहि व ब र कातुहू०

सलात का तरीक़ा भी इर्शाद फ़र्मा दीजिए। आप ने यह दरूद शरीफ़ इर्शाद फ़र्माया-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اِلخ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंन्व अला आलि मुहम्मद (आख़िर तक) फ़स्ल सानी तक की हदीस (1) पर यह दरूद मुफ़स्सल आ रहा है यानी अल्लाह जल्ले शानुहू ने मोमिनीन को हुक्म दिया था कि तुम भी नबी पर सलात भेजो। नबी सल्ल० ने उसका तरीक़ा बता दिया कि तुम्हारा भेजना यही है कि तुम अल्लाह ही से दरख़्वास्त करो कि वह अपनी बेश अज़ बेश[1] रहमतें अबदलआबाद[2] तक नबी पर नाज़िल फ़र्माता रहे, क्योंकि उसकी रहमतों की कोई हद व निहायत नहीं। यह भी अल्लाह की रहमत है कि इस दरख़्वास्त पर मज़ीद रहमतें नाज़िल फ़र्माये, वह हम आजिज़ व नाचीज़

1. ज़्यादा से ज़्यादा, 2. हमेशा-हमेशा के लिए,

बन्दों की तरफ मंसूब कर दी जायें, गोया हमने भेजी हैं, हालांकि हर हाल में रहमत भेजने वाला वही अकेला हैं किसी बंदे की क्या ताक़त थी कि सय्यिदुल् अंबिया की बारगाह में उनके रुत्बे के लायक़ तोहफ़ा पेश कर सकता ।

हजरत शाह अब्दुल क़ादिर[1] नव्वरल्लाहू मर्कदहू लिखते हैं, अल्लाह से रहमत मांगनी, अपने पैग़म्बर पर और उनके साथ उनके घराने पर बड़ी क़ुबूलियत रखती है, उन पर उनके लायक़ रहमत उतरती है और एक दफ़ा मांगने से दस रहमतें उतरती हैं, मांगने वाले पर, अब जिसका जितना भी जी चाहे, उतना हासिल कर ले।

मुख़्तसरन यह हदीस, जिसकी तरफ शाह साहब ने इशारा फ़र्माया, अंकरीब (2)[3] पर आ रही है।

इस मज़्मून से यह भी मालूम हो गया कि बाज़ जाहिलों का यह एतराज़ कि आयाते शरीफ़ा में मुसलमानों को हुज़ूर सल्ल० पर सलात भेजने का हुक्म है और उस पर मुसलमानों का–

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

'ऐ अल्लाह ! तू दरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर' मज़्हका खेज़[3] है। यानी जिस चीज का हुक्म दिया था अल्लाह ने बंदों को, वही चीज़ अल्लाह तआला शानुहू की तरफ लौटा दी बंदों ने। चूंकि अव्वल तो ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आयते शरीफ़ा के नाज़िल होने पर, जब सहाबा रज़ि० ने उसकी तामील की सूरत दर्याफ़्त की तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही तालीम फ़र्माया जैसा कि ऊपर गुजरा। नीज जैसा कि फ़स्ले सानी की हदीस (1) पर मुफ़स्सल आ रहा है।

दूसरा इस वजह से कि हमारा यह दर्ख़्वास्त करना अल्लाह जल्ले शानुहू से कि तू अपनी रहमत ख़ास नाज़िल कर यह इससे बहुत ही ज़्यादा ऊंचा है कि हम अपनी तरफ से कोई हदिया हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजें।

अल्लामा सख़ावी रह० 'क़ौले बदीअ' में तह्रीर फ़र्माते हैं–

फ़ायदा–ए–मुहिम्मा– अमीर मुस्तफ़ा तुर्कमानी हनफ़ी की किताब में लिखा है कि अगर यह कहा जाये कि इसमें क्या हिक्मत है कि अल्लाह ने हमें

---

1. देहलवी रह०, 2. पहली फ़स्ल की तीसरी हदीस, 3. हंसी उड़ाने लायक़ है,

दरूद का हुक्म फ़र्माया है और हम यों कहकर कि–

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन– اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

ख़ुद अल्लाह जल्ले शानुहू से उल्टा सवाल करें कि वह दरूद भेजे यानी नमाज़ में हम–

उसल्लि अला मुहम्मदिन[1] اُصَلِّیْ عَلٰی مُحَمَّدٍ کی جگہ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

की जगह 'अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद' पढ़ें इसका जवाब यह है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़ात में कोई ऐब नहीं और हम सरापा व अयूब व नकाइस[2] हैं पस जिस शख़्स में बहुत ऐब हों, वह ऐसे शख़्स की क्या सना[3] करे, जो पाक है, इसलिए हम अल्लाह ही से दरख़्वास्त करते हैं कि वही हुज़ूर सल्ल॰ पर सलात भेजे, ताकि रब्बे ताहिर की तरफ़ से नबी-ए-ताहिर पर सलात हो।

ऐसे ही अल्लामा नीशापुरी रह॰ से भी नक़ल किया है कि उनकी किताब 'लताइफ़ व हिकम', में लिखा है कि आदमी को नमाज़ में–

'सल्लैतु अला मुहम्मदिन' न पढ़ना चाहिए, इस वास्ते कि बन्दे का मर्तबा इससे क़ासिर है। इसलिए अपने रब ही से सवाल करे कि वह हुज़ूर सल्ल॰ पर सलात भेजे, तो इस सूरत में रहमत भेजने वाला तो हक़ीक़त में अल्लाह जल्ले शानुहू ही है और हमारी तरफ़ उसकी निस्बत मजाज़न ब-हैसियत दुआ की है।

इब्ने अबी हज्ला रह॰ ने भी इसी क़िस्म की बात फ़र्मायी है। वह कहते हैं कि जब अल्लाह जल्ले शानुहू ने हमें दरूद का हुक्म फ़र्माया और हमारा दरूद हक़्क़े वाजिब तक नहीं पहुंच सकता था, इसलिए हमने अल्लाह जल्ले शानुहू ही से दरख़्वास्त कि वही ज़्यादा वाक़िफ़ है, इस बात से कि हुज़ूर सल्ल॰ के दर्जे के मुवाफ़िक़ क्या चीज़ है। यह ऐसा ही है, जैसा दूसरी जगह–

لَآ اُحْصِیْ ثَنَآءً عَلَیْکَ اَنْتَ کَمَآ اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِکَ

ला उह्सी सनाअन अलै क अन् त कमा अस्नैता आला नफ़्सिक॰

हुज़ूर सल॰ का इर्शाद है कि या अल्लाह! मैं आपकी तारीफ़ करने से क़ासिर हूं। आप ऐसे ही हैं, जैसा कि आप ने अपनी ख़ुद सना फ़र्मायी है।

---

1. मैं दरूद भेजता हूं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, 2. सर से पैर तक ऐब ही ऐब हैं, 3. तारीफ़, 4. मैंने दरूद भेजा मुहम्मद पर,

अल्लामा सखावी रह० फ़र्माते हैं कि जब यह बात मालूम हो गयी तो बस जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने तल्क़ीन फ़र्माया है, उसी तरह तेरा दरूद होना चाहिए कि उसी से तेरा मर्तबा बुलंद होगा और निहायत कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए और इसका बहुत एहतमाम और इस पर मुदावमत[1] चाहिए, इसलिए कि कसरते दरूद मुहब्बत की अलामात में से है-

فَمَنْ أَحَبَّ شَيْئًا أَكْثَرَ مِنْ ذِكْرِهِ

फ़मन अहब्ब शैअन अक्सरि मिन् ज़िक्रिही०

'जिसको किसी से मुहब्बत होती है, उसका ज़िक्र बहुत कसरत से किया करता है।'

अल्लामा सखावी रह० ने इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कसरत से दरूद भेजना अह्ले सुन्नत होने की अलामत है। (यानी सुन्नी होने की)

अल्लामा ज़र्क़ानी रह० 'शर्हे मुवाहिब' में नक़ल करते हैं कि मक़्सूद दरूद शरीफ़ से अल्लाह तआला शानुहू की बारगाह में उसके इम्तिसाले हुक्म[2] से तक़र्रुब हासिल करना है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक़ूक़, जो हम पर हैं, उसमें से कुछ की अदाएगी है।

हाफ़िज़ अज़्ज़द्दीन बिन अब्दुस्सलाम रह० कहते हैं कि हमारा दरूद हुज़ूर सल्ल० के लिए सिफ़ारिश नहीं है, इसलिए कि हम जैसा, हुज़ूर सल्ल० के लिए सिफ़ारिश क्या कर सकता है, लेकिन बात यह है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने हमें मुह्सिन के एहसान का बदला देने का हुक्म दिया है और हुज़ूर सल्ल० से बढ़कर कोई मुह्सिने आज़म[3] नहीं। हम चूंकि हुज़ूर सल्ल० के एहसानात के बदले से आजिज़ थे, अल्लाह जल्ले शानुहू ने हमारा अिज्ज़ देखकर हमको उसकी मकाफ़ात[4] का तरीक़ा बताया कि दरूद पढ़ा जाये और चूंकि हम इससे भी आजिज़ थे, इसलिए हमने अल्लाह जल्ले शानुहू से दर्ख्वास्त की कि तू अपनी शान के मुवाफ़िक़ मकाफ़ात फ़र्मा।

चूंकि क़ुरआने पाक की आयते बाला में दरूद शरीफ़ का हुक्म है, इसलिए उलेमा ने दरूद शरीफ़ पढ़ने को वाजिब लिखा है, जिसकी तफ़्सील चौथी फ़स्ल में फ़ायदा 1 पर आयेगी।

---

1. पाबंदी, 2. हुक्म पूरा करने से, 3. बहुत बड़ा एहसान करने वाला, 4. बदला पूरा करना,

यहां एक इश्काल[1] पेश आता है, जिसको अल्लामा राज़ी[2] रह० ने तफ़्सीर कबीर में लिखा है कि जब अल्लाह जल्ले शानुहू और उसके मलाइका हुज़ूर सल्ल० पर दरूद भेजते हैं, तो फिर हमारे दरूद की क्या ज़रूरत रही। इसका जवाब यह है कि हमारा हुज़ूर सल्ल० पर दरूद हुज़ूर सल्ल० की एहतियाज[3] की वजह से नहीं, अगर ऐसा होता तो अल्लाह तआला के दरूद के बाद फ़रिश्तों के दरूद की भी ज़रूरत न रहती, बल्कि हमारा दरूद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्हारे अज़्मत के वास्ते है, जैसा कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने अपने पाक ज़िक्र का बन्दों को हुक्म किया, हालांकि अल्लाह जल्ले शानुहू को उसके पाक ज़िक्र की बिल्कुल ज़रूरत नहीं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० सलात लिखते हैं कि मुझ से बाज़ लोगों ने यह इश्काल किया कि आयते शरीफ़ा में सलात की निस्बत तो अल्लाह तआला की तरफ़ की गई है, सलाम की नहीं की गयी। मैंने इसकी वजह बतायी कि शायद इस वजह से कि सलाम दो माना में मुस्तामल होता है[4]–

एक दुआ में, दूसरे इन्क़ियाद व इत्तिबाअ[5] में।

मोमिनीन के हक़ में दोनों माना सही हो सकते थे, इसलिए उनको इसका हुक्म किया गया और अल्लाह और फ़रिश्तों के लिहाज़ से ताबेदारी के माना सही नहीं हो सकते थे, इसलिए इसकी निस्बत नहीं की गई।

इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ अल्लामा सखावी रह० ने एक बहुत ही इब्रतनाक क़िस्सा लिखा है अहमद यमानी रह० से नक़ल करते हैं कि मैं सुन्आ[6] में था। मैंने देखा कि एक शख़्स के गिर्द बड़ा मज्मा हो रहा है। मैंने पूछा, यह क्या बात है ? लोगों ने बताया, यह शख़्स बड़ी अच्छी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने वाला था। क़ुरआन पढ़ते हुए जब इस आयत पर पहुंचा तो 'युसल्लू न अलन्नबीयि, के बजाय 'युसल्लून अला अलीयिन्नबीयि' पढ़ दिया, जिसका तर्जुमा यह हुआ कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते हज़रत अली पर दरूद भेजते हैं, जो नबी हैं (ग़ालिबन पढ़ने वाला राफ़ज़ी होगा) उसके पढ़ते ही गूंगा हो गया, बर्स और जूज़ाम यानी कोढ़ की बीमारी में मुब्तला हो गया और अंधा और अपाहिज हो गया।

बड़ी इब्रत का मुक़ाम है अल्लाह ही महफ़ूज़ रखे। अपनी पाक बारगाह

---

1. शुबहा, कठिनाई, 2. इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी, 3. ज़रूरत, मुहताजी, 4. इस्तेमाल किया जाता है, 5. इताअत, फ़र्माबरदारी, 6. एक शहर का नाम,

में और अपने पाक कलाम और पाक रसूलों की शान में, बेअदबी से हम लोग अपनी जिहालत और लापरवाई से इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करते कि हमारी ज़ुबान से क्या निकल रहा है। अल्लाह तआला ही अपनी पकड़ से महफ़ूज़ रखे।

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى (پ ۲۰ ع ۱)

2. आप कहिए कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए सज़ावार हैं और उसके उन बन्दों पर सलाम हो जिसको उसने मुंतख़िब[1] फ़र्माया है (बयानुल्क़ुरआन)

फ़– उलमा ने लिखा है कि यह आयते शरीफ़ा अगले मज़्मून के लिए ब–तौर ख़ुत्बा के इर्शाद है। इस आयते शरीफ़ा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह की तारीफ़ और अल्लाह के मुंतख़िब बंदों पर सलाम का हुक्म किया गया है।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० अपनी तफ़्सीर में तहरीर फ़र्माते हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को हुक्म फ़र्माया है कि सलाम भेजें अल्लाह के मुख़्तार[2] बंदों पर और वह उसके रसूल और अंबिया किराम हैं, जैसा कि अब्दुर्रहमान इब्ने ज़ैद बिन अस्लम रज़ि० से नक़ल किया गया है कि 'इबादि हिल्लज़ीन स्तफ़ा से मुराद अंबिया हैं। जैसा कि दूसरी जगह अल्लाह के पाक इर्शाद

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

सुब्हा न रब्बिल् इज़्ज़ति, अम्मा यसिफ़ून वसलामुन अलल् मुर्सलीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन' में इर्शाद है और इमाम सौरी रह० व सद्दी रह० वग़ैरह से यह नक़ल किया गया है कि इससे मुराद सहाबा किराम रज़ि० हैं और इब्ने अब्बास रज़ि० से भी यह क़ौल नक़ल किया गया है और इन दोनों में कोई मुनाफ़ात[3] नहीं कि अगर सहाबा किराम रज़ि० इसके मिस्दाक़ है तो अंबिया किराम इसमें बतरीक़ि औला[4] दाख़िल हैं। عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رض اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلٰوةً وَّاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا۔ (رواه مسلم وابوداؤد و ابن حبان فى صحيحه وغيرهم كذا فى الترغيب)

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, कि जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद पढ़े, अल्लाह जल्ल शानुहू उस पर दस दफ़ा सलात भेजते हैं।

फ़– अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ से तो एक ही दरूद और एक ही रहमत

---

1. चुनना, 2. चुने हुए, 3. एक दूसरे के ख़िलाफ़, 4. बेहतर तरीक़े से

सारी दुनिया के लिए काफ़ी है, चजायकि[1] एक दफ़ा दरूद पढ़ने पर अल्लाह तआला की तरफ़ से दस रहमतें नाज़िल हों। इससे बढ़कर और क्या फ़ज़ीलत दरूद शरीफ़ की होगी कि उसके एक दफ़ा दरूद पढ़ने पर अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ से दस दफ़ा रहमतें नाज़िल हों। फिर कितने ख़ुश क़िस्मत हैं वह अकाबिर[2], जिनके मामूलात में रोज़ाना सवा लाख दरूद शरीफ़ का मामूल हो, जैसा कि मैंने अपने बाज़ ख़ानदानी अकाबिर के मुताल्लिक़ सुना है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने आमिर बिन रबीआ रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर दस दफ़ा दरूद भेजता है। तुम्हें इख़्तियार है, जितना चाहे कम भेजो, जितना चाहे ज़्यादा और यही मज़्मून अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से भी नक़ल किया गया और इसमें यह इज़ाफ़ा है कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दस बार दरूद भेजते हैं।

और भी मुतअद्दिद सहाबा रज़ि० से अल्लामा सख़ावी रह० ने यह मज़्मून नक़ल किया है और एक जगह लिखते हैं कि जैसा अल्लाह जल्ले शानुहू ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम को अपने पाक नाम के साथ कलमा-ए-शहादत में शरीक किया और आपकी इताअत को अपनी इताअत, आपकी मुहब्बत को अपनी मुहब्बत क़रार दिया, ऐसे ही आप पर दरूद को अपने दरूद के साथ शरीक फ़र्माया, पस जैसा कि अपने ज़िक्र के मुताल्लिक़ फ़र्माया-

'उज़्कूरूनी अज़्कुर्कुम०' ऐसे ही दरूद के बारे में इर्शाद फ़र्माया, जो आप पर एक दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह उस पर दस दफ़ा दरूद भेजता है।

तर्ग़ीब[3] की एक रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि० से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स हुज़ूर सल्ल० पर एक दफ़ा दरूद भेजे, अल्लाह तआला शानुहू और उसके फ़रिश्ते उस पर सत्तर दफ़ा दरूद (रहमत) भेजते हैं।

यहां एक बात समझ लेना चाहिए कि किसी अमल के मुताल्लिक़ अगर सवाब के मुताल्लिक़ कमी-ज़्यादती हो जैसा कि यहां एक हदीस में दस और एक में सत्तर आया है, तो इसके मुताल्लिक़ बाज़ उलमा की राय यह है कि चूंकि अल्लाह जल्ले शानुहू के एहसानात उम्मते मुहम्मदिया पर रोज़ अफ़्ज़ू हुए है, इसलिए जिन रिवायतों में सवाब की ज़्यादती है, वह बाद की हैं, गोया अव्वलन् हक़ तआला शानुहू ने दस का वायदा फ़र्माया, बाद में सत्तर का। और बाज़ उलमा ने इसको अश्ख़ास और

1. कहाँ यह कि, 2. बड़े और बुज़ुर्ग लोग, 3. हदीस की एक किताब का नाम,

अह्वाल और औक़ात के एतबार से कम व बेश बताया है। 'फ़ज़ाइले नमाज़' में जमाअत की नमाज़ में पचीस गुने और सत्ताईस गुने के इख़्तिलाफ़ के बारे में यह मज़्मून गुज़र चुका है।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने सत्तर वाली रिवायत के मुताल्लिक़ लिखा कि शायद यह जुमा के दिन के साथ मख़्सूस है, इसलिए कि दूसरी हदीस में आया है कि नेकियों का सवाब जुमा के दिन सत्तर गुना होता है।

(۴) وَعَنْ اَنَسٍ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ ذُکِرْتُ عِنْدَہٗ فَلْیُصَلِّ عَلَیَّ وَمَنْ صَلّٰی عَلَیَّ مَرَّۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ عَشْرًا وَفِیْ رِوَایَۃٍ مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ صَلٰوۃً وَّاحِدَۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَحَطَّ عَنْہُ عَشْرَ سَیِّئَاتٍ وَرَفَعَہٗ بِھَا عَشْرَ دَرَجَاتٍ رواہ احمد والنسائی واللفظ لہ وابن حبان فی صحیحہ کذا فی الترغیب

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिसके सामने मेरा तज़्किरा आवे उसको चाहिए कि मुझ पर दरूद भेजे और जो मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजेगा अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर दस दफ़ा दरूद भेजेगा है और उसकी दस ख़तायें माफ़ करेगा और उसके दस दर्जे बुलंद करेगा।

फ़– अल्लामा मुंज़री रह० ने तर्ग़ीब में हज़रत बरो रज़ि० की रिवायत से भी यही मज़्मून नक़ल किया है और इसमें उतना इज़ाफ़ा है कि यह उसके लिए दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बक़द्र होगा और तबरानी की रिवायत से यह हदीस नक़ल की है कि जो मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस दफ़ा दरूद भेजता है, और जो मुझ पर दस दफ़ा दरूद भेजता है अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर सौ दफ़ा दरूद भेजता है। और जो मुझ पर सौ दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह जल्ले शानुहू उसकी पेशानी पर–

بَرَاۗءَۃٌ مِّنَ النِّفَاقِ وَبَرَاۗءَۃٌ مِّنَ النَّارِ

बराअतुम मिनन्निफ़ाक़ि व बराअतुम मिन्नारि०

लिख देते हैं यानी यह शख़्स निफ़ाक़ से भी बरी है और जहन्नुम से भी बरी है और क़यामत के दिन शहीदों के साथ इसका हश्र फ़र्मायेंगे।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है, जो मुझ पर दस दफ़ा दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर सौ दफ़ा दरूद भेजेंगे और जो मुझ पर सौ दफ़ा दरूद भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर हज़ार दफ़ा दरूद भेजेंगे। और जो इश्क़ व शौक़ में उस पर ज़्यादती करेगा, मैं उसके लिए क़यामत के दिन सिफ़ारिशी हूंगा और गवाह।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ के साथ यह मज़्मून नकल किया गया है कि हम चार-पांच आदमियों में से कोई न कोई शख़्स हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहता था, ताकि कोई ज़रूरत अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेश आये, तो उसकी तामील की जाए।

एक दफ़ा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी बाग़ में तश्रीफ़ ले गये, मैं भी पीछे-पीछे हाज़िर हो गया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां जाकर नमाज़ पढ़ी और इतना तवील[1] सज्दा किया कि मुझे अंदेशा हुआ कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह परवाज़ कर गई[2]। मैं इस तसव्वुर से रोने[3] लगा। हुज़ूरे सल्ल० के क़रीब जाकर हुज़ूर सल्ल० को देखा। हुज़ूर सल्ल० ने सज्दे से फ़ारिग़ होकर दर्याफ़्त फ़र्माया, अब्दुर्रहमान ! क्या बात है ? मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आपने इतना तवील सज्दा किया कि मुझे अंदेशा हुआ कि कहीं (ख़ुदा-न-ख़्वास्ता[4]) आपकी रूह तो नहीं परवाज़ कर गई। हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने मेरी उम्मत के बारे में मुझ पर एक इनाम फ़र्माया है, उसके शुक्राने में इतना तवील सज्दा किया वह इनआम यह है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने यों फ़र्माया, कि जो मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजे, अल्लाह जल्ले शानुहू उसके लिए दस नेकियां लिखेंगे और दस गुनाह माफ़ फ़र्मायेंगे।

एक रिवायत में इसी क़िस्से में है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त फ़र्माया, अब्दुर्रहमान क्या बात है ? मैंने अपना अंदेशा ज़ाहिर किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अभी जिब्रील अलै० मेरे पास आये थे और मुझ से यों कहा कि क्या तुम्हें इससे ख़ुशी नहीं होगी कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने यह इर्शाद फ़र्माया है, जो तुम पर दरूद भेजेगा, मैं उस पर दरूद भेजूंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा, मैं उस पर सलाम भेजूंगा।[5]

हज़रत अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत उमर रज़ि० से भी इसी क़िस्म का मज़्मून नकल किया है।

हज़रत अबूतल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत ही बश्शाश[6] तश्रीफ़ लाये। चेहरा-ए-अन्वर पर बशाशत[7] के असरात थे। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह!

---

1. लम्बा, 2. इन्तिकाल फ़रमा गये, 3. ख़्याल, 4. ख़ुदा न करे, 5. क़ज़ा फ़ित्तर्ग़ी, 6. ख़ुश-ख़ुश, 7. ख़ुशी,

आपके चेहरा-ए-अन्वर पर आज बहुत ही बशाशत ज़ाहिर हो रही है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया सही है। मेरे पास मेरे रब का पयाम आया है, जिसमें अल्लाह जल्ले शानुहू ने यों फ़र्माया है कि तेरी उम्मत में से जो शख़्स एक दफ़ा दरूद भेजेगा, अल्लाह जल्ले शानुहू उसके लिए दस नेकियां लिखेगा और दस सैयिआत[1] उससे मिटायेंगे और दस दर्जे उसके बुलंद करेंगे।

एक रिवायत में इसी क़िस्से में है कि तेरी उम्मत में से जो शख़्स एक दफ़ा दरूद भेजेगा, मैं उस पर दस दफ़ा दरूद भेजूंगा और जो मुझ पर एक दफ़ा सलाम भेजेगा, मैं उस पर दस दफ़ा सलाम भेजूंगा।

एक और रिवायत में इसी क़िस्से में है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा-ए-अन्वर बशाशत से बहुत ही चमक रहा था और ख़ुशी के अन्वार चेहरा-ए-अन्वर पर बहुत ही महसूस हो रहे थे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! जितनी ख़ुशी आज चेहरा-ए-अन्वर पर महसूस हो रही है, उतनी तो पहले महसूस नहीं होती थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, मुझे क्यों न ख़ुशी हो, अभी जिब्रील अलै० मेरे पास से गये हैं और वह यों कहते थे कि आपकी उम्मत में से जो शख़्स एक दफ़ा भी दरूद पढ़ेगा, अल्लाह जल्ले शानुहू उसकी वजह से दस नेकियां उसके नामा-ए-आमाल में लिखेंगे और दस गुनाह माफ़ फ़र्मायेंगे और दस दर्जे बुलंद करेंगे और एक फ़रिश्ता उससे वही कहेगा, जो उसने कहा। हुज़ूर सल्ल० फ़र्माते हैं, मैंने जिब्रील से पूछा, यह फ़रिश्ता कैसा ? तो जिब्रील ने कहा कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने एक फ़रिश्ते को क़यामत तक के लिए मुक़र्रर कर दिया है कि जो आप पर दरूद भेजे, वह उसके लिए-

وَاَنْتَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ

व अन् त सल्लल्लाहु अलै क की दुआ करे।[2]

अल्लामा सख़ावी रह० ने एक इश्काल[3] किया है कि जब क़ुरआन पाक की आयत- مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا

'मन् जा अ बिल् ह स नति फ़ लहू अश्रु अम् सालिहा' की बिना पर हर नेकी का सवाब दस गुना मिलता है, तो फिर दरूद शरीफ़ की क्या ख़ुसूसियत रही।

बंदे के नज़दीक तो इसका जवाब आसान है और वह यह कि हस्बे ज़ाबिता[4]

---

1. बुराइयां, 2. कज़ा फ़ित्तर्गीब, 3. संदेह, 4. उसूल के मुताबिक़,

उसकी दस नेकियां अलाहिदा हैं और अल्लाह जल्ले शानुहू का दस दफा दरूद भेजना, मुस्तक़िल मजीद इनाम है और ख़ुद अल्लामा सख़ावी ने इस का जवाब यह नक़ल किया है कि अव्वल तो अल्लाह जल्ले शानुहू का दस दफ़ा दरूद भेजना उसकी अपनी नेकी के दस गुने सवाब से कहीं ज़्यादा है। इसके अलावा दस मर्तबा दरूद के साथ दस दर्जों का बुलंद करना, दस गुनाहों का माफ़ करना, दस नेकियों का उसके नामा-ए-आमाल में लिखना और दस गुलामों के आज़ाद करने के बक़द्र सवाब मिलना मजीदबरआं[1] है।

हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने 'ज़ादुस्सईद' में तहरीर फ़र्माया है कि जिस तरह हदीस शरीफ़ की तस्रीह से मालूम होता है कि एक बार दरूद पढ़ने से दस रहमतें नाज़िल होती हैं, उसी तरह से क़ुरआन शरीफ़ के इशारे से मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० की शाने अर्फ़अ[2] में एक गुस्ताख़ी करने से 'नऊज़ुबिल्लाहि मिनहा' (हम उस चीज़ से अल्लाह की पनाह चाहते हैं) उस शख़्स पर मिन जानिब अल्लाह[3] दस लानतें नाज़िल होती हैं। चुनांचे वलीद बिन मुग़ीरह के हक़ में अल्लाह तआला ने ब सज़ा-ए-इस्तह्ज़ा[4] यह दस कलिमात इर्शाद फ़रमाये हैं-

1. हल्लाफ़ (बहुत क़स्में खाने वाला)
2. महीन (ज़लील)
3. हम्माज़ (ताने देने वाला)
4. मश्शाअ बिनमीम (चुग़ल ख़ोरी करने वाला)
5. मन्नाअिल्लिल् ख़ैरि (भले कामों से रोकने वाला)
6. मुअ्तदिन (हद से बढ़ जाने वाला)
7. असीम (गुनाहगार)
8. अुतुल्ल (बद-मिज़ाज)
9. ज़नीम (जिसका नसब सही न हो)
10. मुकज़्ज़िबुल्लिल् आयाति (आयतों को झुठलाने वाला) ब द लालत क़ौलुहू तआला-

इज़ा तुल्ला अलैहि आयातुना क़ा ल-असातीरुल अव्वलीन० फ़क़त यह अल्फ़ाज़ जो हज़रत थानवी रह० ने तहरीर फ़र्माये हैं, यह सब के सब उन्तीसवें पारे में सूरः नून की इस आयत में वारिद हुए हैं-

---

1. इसके अलावा, 2. ऊंची शान, 3. अल्लाह की तरफ़ से, 4. मज़ाक़ उड़ाने की सज़ा के तौर पर,

व ला तुतिअ कुल्ल हल्लाफ़िम् महीनिन् हम्माज़िम् मश्शाइम् बिनमी मिम् मन्नाअि ल्लिल् ख़ैरि मुअ्तदिन असीमिन अुतुल्लिम् बअ्द ज़ालि क ज़नीमिन अन् का न ज़ा मालिंव्व बनी न इज़ा तुल्ला अलैहि आयातुना क़ा ल असातीरुल् अव्वलीन॰

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ اِذَا - ا لخ

तर्जुमा— और आप किसी ऐसे शख़्स का कहना न मानें, जो बहुत क़स्में खाने वाला हो, बे-वक्अत हो, ताना देने वाला हो, चुग़लियां लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहों का करने वाला हो, सख़्त मिज़ाज हो, इसके अलावा हरामज़ादा[1] हो, इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला हो। जब हमारी आयतें उसके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो वह कहता है कि यह बे-सनद बातें हैं, जो अगलों से मंक़ूल चली आती है।[2]

(٥) عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلٰوةً
رواه الترمذی وابن حبان فی صحیحه

کلاهما من روایة موسی بن یعقوب کذا فی الترغیب وبسط السخاوی فی القول البدیع الکلام علی تخریجه

5. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बिलाशक क़यामत में लोगों में से सबसे ज़्यादा मुझसे क़रीब वह शख़्स होगा, जो सबसे ज़्यादा मुझ पर दरूद भेजे।

फ़— अल्लामा सख़ावी रह॰ ने 'क़ौले बदीअ़' में अद्दुर्रुल् मुनज़्ज़म[3] से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया है कि तुम में कसरत से दरूद पढ़ने वाला कल क़यामत के दिन मुझ से सबसे ज़्यादा क़रीब होगा।

हज़रत अनस रज़ि॰ की हदीस से भी यह इर्शाद नक़ल किया है कि क़यामत में हर मौक़े पर मुझसे ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा, जो मुझ पर कसरत से दरूद पढ़ने वाला होगा। फ़स्ले दोम की हदीस (3) में भी यह मज़्मून आ रहा है, नीज़ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो, इसलिए कि क़ब्र में इब्तिदाअन[4] तुम से मेरे बारे में सवाल किया जायेगा।

एक दूसरी हदीस में नक़ल किया है कि मुझ पर दरूद भेजना। क़यामत के

---

1. वलीद बिन मुग़ीरह, जिस के मुताल्लिक़ इन आयात का नुज़ूल हुआ है, यह ज़िना की औलाद था, 2. बयानुल क़ुरआन, 3. एक किताब का नाम, 4. शुरू में,

दिन पुल सिरात के अंधेरे में नूर है और जो यह चाहे कि इसके आमाल बहुत बड़ी तराज़ू में तुलें, उसको चाहिए कि मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करे।

एक और हदीस में हज़रत अनस रज़ि० से नकल किया है कि सबसे ज़्यादा निजात वाला क़यामत के दिन उसके हौलों[1] से और उसके मक़ामात से वह शख़्स है, जो दुनिया में सबसे ज़्यादा मुझ पर दरूद भेजता हो।

'ज़ादुस्सईद' में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत नक़ल की है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जो मुझ पर दरूद की कसरत करेगा, वह अर्श के साये में होगा।

अल्लामा सख़ावी रह० ने एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया है कि तीन आदमी क़यामत के दिन अल्लाह के अर्श के साये में होंगे, जिस दिन उसके साये के अलावा किसी चीज का साया न होगा–

1. एक वह शख़्स, जो किसी मुसीबत ज़दा[2] की मुसीबत हटाये,
2. दूसरा वह जो मेरी सुन्नत को ज़िंदा करे,
3. तीसरा वह जो मेरे ऊपर कसरत से दरूद भेजे।

एक और हदीस में अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के वास्ते से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया है कि अपनी मजालिस को दरूद शरीफ़ के साथ मुज़य्यन किया करो, इसलिए कि मुझ पर दरूद पढ़ना तुम्हारे लिए क़यामत में नूर है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने 'कुव्वतुल क़ुलूब' से नक़ल किया है कि कसरत की कम से कम मिक़्दार तीन सौ मर्तबा है और हज़रत अक़्दस गंगोही क़द्दससिर्रहू अपने मुतवस्सिलीन[3] को तीन सौ मर्तबा बताया करते थे, जैसा कि आइंदा फ़स्ले सोम हदीस तीन पर आ रहा है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हदीसे बाला 'इन्न औलन्नासि' के ज़ैल में लिखा है कि इब्ने हब्बान ने अपनी सही में हदीसे बाला के बाद में लिखा है कि इस हदीस में वाज़ेह दलील है, इस बात पर कि क़यामत के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब सबसे ज़्यादा हज़राते मुहद्दिसीन होंगे, इसलिए कि यह हज़रात सबसे ज़्यादा दरूद पढ़ने वाले हैं।

इसी तरह हज़रत अबूउबैदा रज़ि० ने भी कहा है कि इस फ़ज़ीलत के साथ हज़राते मुहद्दिसीन मख़्सूस हैं, इसलिए कि जब वह हदीस नक़ल करते हैं या लिखते

---

1. डर और घबराहट, 2. मुसीबत के मारे हुए, 3. संबंधित लोगों,

हैं तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम के साथ दरूद शरीफ़ ज़रूर होता है।[1]

इसी तरह से ख़तीब ने अबू नुऐम से भी नक़ल किया है कि यह फ़ज़ीलत मुहद्दिसीन के साथ मख़्सूस है।

उलमा ने लिखा है कि इसकी वजह यह है कि जब वह अहादीस पढ़ते हैं या नक़ल करते हैं, या लिखते हैं, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम के साथ कसरत से दरूद लिखने या पढ़ने की नौबत आती है।

मुहद्दिसीन से मुराद इस मौक़े पर अइम्मा-ए-हदीस[2] नहीं हैं, बल्कि वह सब हज़रात इसमें दाख़िल हैं जो हदीसे पाक की किताबें पढ़ते या पढ़ाते हों, चाहें अरबी में हों या उर्दू में।

ज़ादुस्सईद में तबरानी रह० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स मुझ पर दरूद भेजे किसी किताब में (यानी लिखे) हमेशा फ़रिश्ते उस पर दरूद भेजते रहेंगे, जब तक मेरा नाम उस किताब में रहेगा और तबरानी ही से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स सुबह को मुझ पर दस बार दरूद भेजे और शाम को दस बार, क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शफ़ाअत होगी। और इमाम मुस्तग़्फ़िरी रह० से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो कोई हर रोज़ सौ बार मुझ पर दरूद भेजे उसकी सौ हाजतें पूरी की जायें, तीस दुनिया की, बाक़ी आख़िरत की।

(٦) عَنْ اِبْنِ مَسْعُوْدٍ رض عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ لِلّٰهِ مَلٰٓئِكَةً سَيَّاحِيْنَ يُبَلِّغُوْنِيْ عَنْ اُمَّتِيَ السَّلَامَ رَوَاهُ النسائی

وابن حبان فی صحیحہ کذا فی الترغیب زاد فی القول البدیع احمد والحاکم وغیرھما وقال الحاکم صحیح الاسناد

6. इब्ने मसऊद रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह जल्ले शानुहू के बहुत से फ़रिश्ते ऐसे हैं जो (ज़मीन में) फिरते रहते हैं और मेरी उम्मत की तरफ़ से मुझे सलाम पहुंचाते हैं।

फ़– और भी मुतअद्दिद सहाबा किराम रज़ि० से यह मज़्मून नक़ल किया गया है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की रिवायत से भी

1. लोगों को चाहिए कि जब भी हुज़ूर सल्ल० का नाम ज़ुबान पर आये या लिखा जाए तो यह दरूद भी लिखा जाए कि -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' 2. हदीस के इमाम।

यही मज़्मून नक़ल किया है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन में फिरते रहते हैं, जो मेरी उम्मत का दरूद मुझ तक पहुंचाते रहते हैं।

तर्ग़ीब में हज़रत इमाम हसन रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि तुम जहां कहीं हो, मुझ पर दरूद पढ़ते रहा करो। बेशक तुम्हारा दरूद मेरे पास पहुंचता रहता है और हज़रत अनस रज़ि० की हदीस से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है, जो कोई मुझ पर दरूद भेजता है, वह दरूद मुझ तक पहुंच जाता है और मैं उसके बदले में उस पर दरूद भेजता हूं और इसके अलावा उसके लिए दस नेकियां लिखी जाती हैं।

मिश्कात में हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की हदीस से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इरशाद नक़ल किया है कि मुझ पर दरूद पढ़ा करो इसलिए कि तुम्हारा दरूद मुझ तक पहुंचता है।

(७) عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ اللّٰهَ وَكَّلَ بِقَبْرِيْ مَلَكًا أَعْطَاهُ أَسْمَاعَ الْخَلَائِقِ فَلَا يُصَلِّيْ عَلَيَّ أَحَدٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ إِلَّا أَبْلَغَنِيْ بِاسْمِهٖ وَاسْمِ أَبِيْهِ هٰذَا فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ قَدْ صَلّٰى عَلَيْكَ. (رواه البزار كذا في الترغيب وذكر تخريجه السخاوي في القول البديع)

7. हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० का इरशाद नक़ल किया है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने एक फ़रिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर कर रखा है, जिसको सारी मख़्लूक़ की बातें सुनने की क़ुदरत अता फ़र्मा रखी है। पस जो शख़्स भी मुझ पर क़यामत तक दरूद भेजता रहेगा, वह फ़रिश्ता मुझको उसका और उसके बाप का नाम लेकर दरूद पहुंचाता है कि फ़्लां शख़्स जो फ़्लां का बेटा है उसने आप पर दरूद भेजा है।

फ़– अल्लामा सख़ावी रह० ने 'क़ौले बदीअ' में भी इस हदीस को नक़ल किया है और इसमें इतना इज़ाफ़ा है कि फ़्लां शख़्स जो फ़्लां का बेटा है, उसने आप पर दरूद भेजा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि फिर अल्लाह जल्ले शानुहू उसके हर दरूद के बदले में उस पर दस मर्तबा दरूद (रहमत) भेजते हैं।

एक और हदीस से यह मज़्मून नक़ल किया है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ते को सारी मख़्लूक़ की बातें सुनने की क़ूव्वत अता फ़र्मायी है, वह क़यामत तक मेरी क़ब्र हर मुतअय्यन रहेगा। जब कोई शख़्स मुझ पर दरूद भेजेगा, तो वह फ़रिश्ता उस शख़्स का और उसके बाप का नाम लेकर मुझसे कहता

है कि फ़्लां ने जो फ़्लां का बेटा है, आप पर दरूद भेजा है और अल्लाह तआला जल्ले शानुहू ने मुझ से यह ज़िम्मा लिया है कि जो मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजेगा, अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर दस दफ़ा दरूद भेजेंगे।

एक और हदीस से भी यही फ़रिश्ते वाला मज़्मून नक़ल किया है और इसके आख़िर में यह मज़्मून है कि मैंने अपने रब से यह दर्ख़्वास्त की थी कि जो मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजे, अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर दस दफ़ा दरूद भेजे। हक़ तआला शानुहू ने मेरी यह दर्ख़्वास्त क़ुबूल फ़र्मा ली।

हज़रत अबू एमामा रज़ि० के वास्ते से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह जल्ले शानुहू इस पर दस दफ़ा दरूद व रहमत भेजते हैं और एक फ़रिश्ता इस पर मुक़र्रर होता है, जो उस दरूद को मुझ तक पहुंचाता है।

एक जगह हज़रत अनस रज़ि० की हदीस से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स मेरे ऊपर जुमा के दिन या जुमा की शब में दरूद भेजे, अल्लाह जल्ले शानुहू उसकी सौ हाजतें पूरी करते हैं और उस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर देते हैं, जो उसको मेरी क़ब्र में मुझ तक ऐसी तरह पहुंचाता है, जैसे तुम लोगों के पास हदाया[1] भेजे जाते हैं।

इस हदीस पर यह इश्काल न किया जाये कि इस हदीस से मालूम होता है कि वह एक फ़रिश्ता है जो क़ब्रे अत्हर पर मुतअय्यन है, जो सारी दुनिया के सलवात व सलाम हुज़ूर सल्ल० तक पहुंचाता रहे और इस से पहली हदीस में आया था कि अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते ज़मीन में फिरते रहते हैं, जो हुज़ूर सल्ल० तक उम्मत का सलाम पहुंचाते रहते हैं, इसलिए कि जो फ़रिश्ता क़ब्रे अतहर पर मुतअय्यन है, उसका काम सिर्फ़ यही है कि हुज़ूर सल्ल० के उम्मत का सलाम पहुंचाता रहे और यह फ़रिश्ते, जो सय्याहीन[2] हैं, यह ज़िक्र के हल्क़ों को तलाश करते रहते हैं और जहां कहीं दरूद मिलता है, उसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचाते हैं और यह आम मुशाहदा है कि किसी बड़े की ख़िद्मत में अगर कोई पयाम भेजा जाता है और मज्मे में उसका ज़िक्र किया जाता है, तो हर शख़्स उसमें फ़ख़्र और तक़र्रुब[3] समझता है कि वह पयाम पहुंचाये, अपने अकाबिर और बुज़ुर्गों के यहां यह मंज़र बारहा देखने की नौबत आयी। फिर सैयदुल क़ौनेन फ़ख़्रुर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि

1. तोहफ़े, 2. घूमने फिरने वाले, 3. क़रीबी

व सल्लम की पाक बारगाह का तो पूछना ही क्या, इसलिए जितने भी फ़रिश्ते पहुंचाएं, बरमहल है।

٨- عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ عِنْدَ قَبْرِيْ سَمِعْتُهُ وَمَنْ صَلّٰى عَلَيَّ نَائِيًا اُبْلِغْتُهُ- رواه البيهقى في شعب الايمان كذا فى المشكوة و بسط السّخاوى فى تخريجه-

8. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स मेरे ऊपर मेरी क़ब्र के क़रीब दरूद भेजता है, मैं उसको ख़ुद सुनता हूं और जो दूर से मुझ पर दरूद भेजता है वह मुझको पहुंचा दिया जाता है।

फ़— अल्लामा सख़ावी रह॰ ने 'क़ौले बदीअ' में मुतअद्दद रिवायात से यह मज़्मून नक़ल किया है कि जो शख़्स दूर से दरूद भेजे, फ़रिश्ता इस पर मुतअय्यन है कि हुज़ूर सल्ल॰ तक पहुंचाये। और जो शख़्स क़रीब से पढ़ता है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको ख़ुद सुनते हैं, जो शख़्स दूर से दरूद भेजे उसके मुताल्लिक़ तो पहली रिवायात में तफ़्सील से गुज़र ही चुका कि फ़रिश्ते इस पर मुतअय्यन हैं कि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो शख़्स दरूद भेजे, उसको हुज़ूर सल्ल॰ तक पहुंचा दें।

इस हदीस पाक में दूसरा मज़्मून जो क़ब्रे अत्हर के क़रीब दरूद पढ़े, उसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ब नफ़्से नफ़ीस ख़ुद सुनते हैं बहुत ही क़ाबिले फ़ख़्र, क़ाबिले इज़्ज़त, क़ाबिले लज़्ज़त चीज़ है।

अल्लामा सख़ावी रह॰ ने 'क़ौले बदीअ' में सुलेमान बिन सहीम रह॰ से नक़ल किया है कि मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। मैंने दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह ! यह जो लोग हाज़िर होते हैं और आप पर सलाम करते हैं, आप इसको समझते हैं ? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़र्माया, हां, समझता हूं और इनके सलाम का जवाब भी देता हूं।

इब्राहीम बिन शैबान रह॰ कहते हैं कि में हज से फ़राग़[2] पर मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ और मैंने क़ब्र शरीफ़ के पास जाकर सलाम अर्ज किया तो मैंने हुजरा

1. ख़ुद-ब-ख़ुद, 2. छुट्टी पाना,

शरीफ़ के अन्दर से 'वअलैकस्सलाम' की आवाज़ सुनी। मुल्ला अलीकारी रह० कहते हैं कि इसमें शक नहीं कि दरूद शरीफ़ क़ब्रे अत्हर के क़रीब पढ़ना अफ़्ज़ल है, दूर से पढ़ने से। इसलिए कि क़ुर्ब में जो ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ और हुज़ूरे क़ल्ब हासिल होता है। वह दूर से नहीं होता।

साहबे मज़ाहिरे हक़ इस हदीस पर लिखते हैं यानी पास वाले का दरूद ख़ुद सुनता हूं, बिला वास्ता और दूर वाले का दरूद मलाइका सय्याहीन पहुंचाते हैं और जवाब सलाम का ब-हर सूरत देता हूं।

इससे मालूम क्या चाहिए कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम भेजने की क्या बुज़ुर्गी है और हज़रत सल्ल० पर सलाम भेजने वाले को ख़ुसुसन बहुत भेजने वाले को क्या शर्फ़ हासिल होता है। अगर तमाम उम्र के सलामों का एक जवाब आवे, सआदत है, चजायकि हर सलाम का जवाब आवे-

बहर सलाम मकुन रंजा दर जवाब आं लब,
कि सद सलाम मेरा बस यके जवाब अज़ तू ।[1]

इस मज़्मून को अल्लामा सख़ावी रह० ने इस तरह ज़िक्र किया है कि किसी बंदे की शराफ़त के लिए यह काफ़ी है कि उसका नाम ख़ैर के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आ जाये। इसी ज़ैल में यह शेर भी कहा गया है- ومن خطرت منه ببالك خطرة ـ حقيق بان يسموو ان يتقدّما

व मन ख़ तर त मिन्हु बिबालिका क ख़त्रतुन,
हक़ीक़ुन बिअंय्यस्मू व अंय्य त क़द्दमा।

तर्जुमा- 'जिस ख़ुश क़िस्मत का ख़्याल भी तेरे दिल में गुज़र जाये, वह इसका मुस्तहिक़ है कि जितना भी चाहे, फ़ख़्र करे और पेश क़दमी करे (उछले-कूदे)।'

'ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि इस महफ़िल में है।'

इस रिवायत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुद सुनने में कोई इश्लाक नहीं, इसलिए कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अपने क़ुबूर में ज़िंदा है।

---

1. यानी होठों को हर सलाम के जवाब की तक्लीफ़ न दो। मुझे सौ सलामों के जवाब में आपका एक सलाम काफ़ी है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने 'क़ौले बदीअ' में लिखा है कि हम इस पर ईमान लाते हैं और इसकी तस्दीक़ करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िंदा हैं अपनी क़ब्रे शरीफ़ में और आपके बदने अत्हर को ज़मीन नहीं खा सकती, और इस पर इज्माअ[1] है।

इमाम बैहक़ी रह० ने अंबिया की हयात में एक मुस्तक़िल रिसाला तस्नीफ़ फ़र्माया है और हज़रत अनस रज़ि० की हदीस –

'अल-अंबियाउ अह्याउन फ़ी क़ुबूरिहिम युसल्लून०[2]

الانبیاء احیاءٌ فی قبورھم یصلّون

(कि अंबिया अपनी क़ब्रों में ज़िंदा होते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं।)

अल्लामा सख़ावी रह० ने इसकी मुख़्तलिफ़ तुरुक़ से तख़्रीज की है और इमाम मुस्लिम ने हज़रत अनस रज़ि० ही की रिवायत से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि मैं शबे मेअराज में हज़रत मूसा अलै० के पास से गुज़रा। वह अपनी क़ब्र में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे। नीज़ मुस्लिम ही कि रिवायत से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि मैंने हज़राते अंबिया की एक जमाअत के साथ अपने आपको देखा, तो मैंने हज़रत ईसा और हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल[3] के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब नाश[4] मुबारक के क़रीब हाज़िर हुए, तो हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर को, जो चादर से ढका हुआ था, खोला और उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब करते हुए अर्ज़ किया, मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान! ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह जल्ले शानुहू आप पर दो मौतें जमा न करें। एक मौत जो आपके लिए मुक़द्दर थी, वह आप पूरी कर चुके। (बुख़ारी)

अल्लामा सुयूती रह० ने हयाते अंबिया में मुस्तक़िल एक रिसाला तस्नीफ़ फ़र्माया है। और फ़स्ले सानी की हदीस नं० 3 पर भी मुस्तक़िल यह मज़्मून आ रहा है कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने ज़मीन पर यह चीज़ हराम कर रखी है कि वह अंबिया

1. इस पर सभी राज़ी हैं, 2. तरीक़ों, 3. देहावसान, 3. शव, 4. यानी अपने अन्दर लिए हुए है

अलैहिमुस्सलाम के बदनों को खाये।

अल्लामा सख़ावी रह० 'क़ौले बदीअ' में तह्रीर फ़र्माते हैं कि मुस्तहब यह है कि जब मदीना मुनव्वरा के मकानात और दरख़्तों वग़ैरह पर नजर पड़े तो दरूद शरीफ़ क़सरत से पढ़े और जितना क़रीब होता जाये, उतना ही दरूद शरीफ़ में इज़ाफ़ा करता जाये, इसलिए कि यह मवाक़े वहि और क़ुरआन पाक के नुज़ूल से मामूर है। हजरत जिब्रील और हजरत मीकाईल की बार-बार यहां आमद हुई है और इसकी मिट्टी सय्यिदुल् बशर पर मुश्तमिल्[1] है। इसी जगह से अल्लाह के दीन और उसके पाक रसूल सल्ल० की सुन्नतों की इशाअत हुई है। यह फ़ज़ाइल और ख़ैरात के मनाज़िर हैं। यहां पहुंच कर अपने क़ल्ब को निहायत हैबत और ताज़ीम से भरपूर कर ले, गोया कि वह हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत कर रहा है और यह तो मुहक़्क़क़[2] है हुज़ूर सल्ल० उसका सलाम सुन रहे हैं। आपस के झगड़े और फ़ुज़ूल बातों से एहतिराज़[3] करे, इसके बाद क़िब्ले की जानिब से क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो और बक़द्र चार हाथ फ़ासले से खड़ा हो, और नीची निगाह रखते हुए निहायत ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ और अदब व एहतिराम के साथ यह पढ़े-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَانَبِيَّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا
خِيَرَةَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاخَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاحَبِيْبَ اللّٰهِ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاخَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاقَائِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَابَشِيْرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَانَذِيْرُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اَهْلِ
بَيْتِكَ الطَّاهِرِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اَزْوَاجِكَ الطَّاهِرَاتِ اُمَّهَاتِ
الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اَصْحَابِكَ اَجْمَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ
وَعَلٰى سَائِرِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَسَائِرِ عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ جَزَاكَ
اللّٰهُ عَنَّا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَفْضَلَ مَاجَزٰى نَبِيًّا عَنْ قَوْمِهٖ وَرَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ
وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ كُلَّمَا ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ الْغَافِلُوْنَ وَ
صَلّٰى عَلَيْكَ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَصَلّٰى عَلَيْكَ فِى الْاٰخِرِيْنَ اَفْضَلَ وَاَكْمَلَ وَاَطْيَبَ
مَاصَلّٰى عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنَ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ كَمَا اسْتَنْقَذَنَا بِكَ مِنَ

1. यक़ीनी बात है, 2. परहेज करे, 3. आख़िरी नबी

الضَّلَالَةِ وَبَصَّرَنَا بِكَ مِنَ الْعَمٰى وَالْجَهَالَةِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاَمِيْنُهٗ وَخِيَرَتُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ وَ
اَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَاَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَنَصَحْتَ
الْاُمَّةَ وَجَاهَدْتَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ-
اَللّٰهُمَّ اٰتِهٖ نِهَايَةَ مَا يَنْبَغِيْ اَنْ يَّاْمُلَهُ الْاٰمِلُوْنَ-

आप पर सलाम, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप पर सलाम, ऐ अल्लाह के नबी ! आप पर सलाम, ऐ अल्लाह की बर्गुज़ीदा हस्ती ! आप पर सलाम, ऐ अल्लाह की मख़्लूक में सबसे बेहतर ज़ात ! आप पर सलाम, ऐ अल्लाह के हबीब ! आप पर सलाम, ऐ रसूलों के सरदार ! आप पर सलाम, ऐ ख़ातमन्नबीयीन[1] ! आप पर सलाम, ऐ रब्बुल आलमीन[2] के रसूल ! आप पर सलाम, ऐ सरदार उन लोगों के जो क़यामत में रोशन चेहरे वाले और रोशन हाथ-पांव वाले होंगे। (यह मुसलमानों की ख़ास अलामत है कि दुनिया में जिन आज़ा को वह वुज़ू में धोते रहे हैं, वह क़यामत के दिन मे निहायत रोशन होंगे) आप पर सलाम, ऐ जन्नत की बशारत देने वाले ! आप पर सलाम, ऐ (जहन्नम) से डराने वाले ! आप और आपके अह्ले बैत पर सलाम, जो ताहिर हैं। सलाम आप पर और आप की अज़्वाजे मुतह्हरात पर जो सारे मोमिनों को मायें हैं। सलाम आप पर और आपके तमाम सहाबा किराम रज़ि० पर । सलाम आप पर और तमाम अंबिया और तमाम रसूलों पर और तमाम अल्लाह के नेक बन्दों पर या रसूलल्लाह ! अल्लाह जल्ले शानुहू आपको हम लोगों की तरफ़ से उन सबसे बढ़कर जज़ा-ए-ख़ैर[3] अता फ़र्मायें, जितनी की किसी नबी को उसकी क़ौम की तरफ़ से और किसी रसूल को उसकी उम्मत की तरफ़ से अता फ़र्मायी हो और अल्लाह तआला आप पर दरूद भेजे, जब भी ज़िक्र करने वाले आपका ज़िक्र करें और जब भी कि ग़ाफ़िल लोग आपके ज़िक्र से ग़ाफ़िल हों। अल्लाह तआला शानुहू आप पर अव्वलीन में दरूद भेजे। अल्लाह तआला आप पर आख़िरीन में दरूद भेजे, उस सब से अफ़ज़ल और अक्मल और पाकीज़ा जो अल्लाह ने अपनी सारी मख़्लूक़ में से किसी पर भी भेजा हो जैसा कि उसने निजात दी, हम को आपकी बरकत से, गुमराही से और आपकी वजह से जिहालत और अंधेपन से बसीरत[3] अता फ़र्मायी है। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं इस बात की कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उसके अमीन हैं और सारी मख़्लूक़ में से उसकी

---

1. दुनियाओं के पालनहार, 2. अच्छा बदला, 3. रोशनी।

बर्गुज़ीदा ज़ात हैं और इसकी गवाही देता हूं कि आपने अल्लाह की रिसालत को पहुंचा दिया और उसकी अमानत को अदा कर दिया, उम्मत के साथ पूरी-पूरी ख़ैरख़्वाही फ़र्मायी और अल्लाह के बारे में कोशिश का हक़ अदा फ़र्मा दिया। या अल्लाह ! आपको इससे ज़्यादा से ज़्यादा अता फ़र्मा, जिसकी उम्मीद करने वाले उम्मीद कर सकते हैं।' यहाँ तक सलाम का तर्जुमा हुआ।

इसके बाद अपने नफ़्स के लिए और सारे मोमिनीन और मोमिनात के लिए दुआ करे। इसके बाद हज़रात शैख़ैन-हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा पर सलाम पढ़े और इनके लिए भी दुआ करे और अल्लाह से इसकी भी दुआ करे कि अल्लाह जल्ले शानुहू इन दोनों हज़रात को भी उनकी मसाओ-ए-जमीला[1] जो उन्होंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद में ख़र्च की है और जो हुज़ूर सल्ल० की हक़ अदाएगी में ख़र्च की हैं, उन पर बेहतर से बेहतर जज़ाए ख़ैर अता फ़र्माए, और यह समझ लेना चाहिए कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अतहर के पास खड़े होकर सलाम पढ़ना दरूद पढ़ने से ज़्यादा अफ़ज़ल है। (यानी 'अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह' अफ़ज़ल है 'अस्सलातु अलैक या रसूलल्लाह' से)

अल्लामा बाजी रह० की राय है कि दरूद अफ़ज़ल है।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि पहला ही क़ौल ज़्यादा सही है[2], जैसा कि अल्लामा मुजदुद्दीन साहबे क़ामूस रह० की राय है, इसलिए कि हदीस में 'मा मिन मुस्लिमिन् युस्लिमु अलय्य इन्दा क़ब्री०' आया है।

अल्लामा सख़ावी रह० का इशारा इस हदीस पाक की तरफ़ है जो अबूदाऊद शरीफ़ वग़ैरह में हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से नकल की गयी है कि जब कोई शख़्स मुझ पर सलाम करता है, तो अल्लाह जल्ले शानुहू मुझ पर मेरी रूह लौटा देते हैं, यहां तक कि मैं उसके सलाम का जवाब देता हूं, लेकिन इस नकारा[3] के नज़दीक 'सलात' का लफ़्ज़ (यानी दरूद) भी कसरत से रिवायात में ज़िक्र किया गया है। चुनांचे इसी रिवायत में जो ऊपर अभी न० (8) पर गुज़री है उसमें यह है कि जो शख़्स मेरी क़ब्र के क़रीब दरूद पढ़ता है, मैं उसको सुनता हूं। इसी तरह बहुत-सी रिवायात में यह मज़्मून आया है, इसलिए बन्दे के ख़्याल में अगर हर जगह दरूद व सलाम

---

1. बेहतरीन कोशिशें, 2. यानी यही ज़्यादा सही है कि सलाम पढ़ना दरूद पढ़ने से ज़्यादा अफ़ज़ल है, 3. यानी लेखक,

दोनों को जमा किया जाये तो ज़्यादा बेहतर है, यानी बजाय–

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ

अस्सलामु अलै क या रसूलल्लाह ! अस्सलामु अलै क या नबीयल्लाह वग़ैरह के

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ

अस्सलातु वस्सलामु अलै क या रसूलल्लाह ! अस्सलातु वस्सलामु अलै क या नबीयल्लाह।

इसी तरह आख़ीर तक अस्सलामु के साथ अस्सलातु का लफ़्ज़ भी बढ़ा दे तो ज़्यादा अच्छा है। इस सूरत में अल्लामा बाजी और अल्लामा सख़ावी रह०, दोनों के क़ौल पर अमल हो जायेगा।

वफ़ा उल् वफ़ा में लिखा है कि अबूअब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हुसैन सामरी हंबली रह० अपनी किताब 'मुस्तौअब' में ज़ियारते क़ब्रे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाब में आदाबे ज़ियारत ज़िक्र करने के बाद लिखते हैं, फिर क़ब्र शरीफ़ के क़रीब आये और क़ब्र शरीफ़ की तरफ़ मुंह करके और मिम्बर को अपने बायीं तरफ़ करके खड़ा हो और इसके बाद अल्लामा सामरी हंबली रह० ने सलाम और दुआ की कैफ़ियत लिखी है और मिन्जुम्ला इसके यह भी लिखा है कि यह पढ़े–

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ فِيْ كِتَابِكَ لِنَبِيِّكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا۔ وَاِنِّيْ قَدْ اَتَيْتُ نَبِيَّكَ مُسْتَغْفِرًا فَاَسْئَلُكَ اَنْ تُوْجِبَ لِيَ الْمَغْفِرَةَ كَمَا اَوْجَبْتَهَا لِمَنْ اَتَاهُ فِيْ حَيَاتِهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अल्लाहुम्म इन्न क क़ुल्त फ़ी किताबि क लि नबीयि क अलैहिस्सलामु व लौ अन्नहुम इज़ ज़ ल मू अन्फ़ु स हुम जाऊ क फ़स्तग़्फ़रुल्ला ह वस्तग़्फ़ र लहुमर्रसूलु ल व ज दुल्ला ह तव्वाबर्रहीमा० व इन्नी क़द अतैतु नबी य क मुस्तग़्फ़िरन फ़ अस् अलु अन् तूजि ब लियल् मग़्फ़ि र त कमा औजब्त हा लिमनअताहु फ़ी हयातिही अल्लाहुम्म इन्नी अतवज्जहु इलै क बिनबीयि क सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम०

तर्जुमा– ऐ अल्लाह ! तूने अपने कलाम पाक में अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यों इर्शाद फ़र्माया कि अगर वह लोग, जब उन्होंने अपनी जानों

पर ज़ुल्म किया था आप[1] की ख़िदमत में हाज़िर हो जाते तो अल्लाह जल्ले शानुहू से माफ़ी चाहते और रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी उनके लिए अल्लाह तआला से माफ़ी चाहते, तो ज़रूर अल्लाह तआला को तौबा का क़ुबूल करने वाला, रहमत करने वाला पाते और मैं तेरे नबी के पास हाज़िर हुआ हूं, इस हाल में कि इस्तग़फ़ार करने वाला हूं तुझसे, यह मांगता हूं कि तू मेरे लिए मग़्फ़िरत को वाजिब कर दे जैसा कि तू ने मग़्फ़िरत वाजिब की थी, उस शख़्स के लिए, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में, उनकी ज़िंदगी में आया हो ! ऐ अल्लाह! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं, तेरे नबी सल्ल० के वसीले से। (इसके बाद और लम्बी चौड़ी दुआएं ज़िक्र की[1])

٩- عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ اُكْثِرُ الصَّلٰوةَ عَلَيْكَ فَكَمْ اَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلٰوتِيْ فَقَالَ مَا شِئْتَ قُلْتُ الرُّبُعَ قَالَ مَا شِئْتَ فَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ النِّصْفَ قَالَ مَا شِئْتَ فَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ فَالثُّلُثَيْنِ قَالَ مَا شِئْتَ فَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ اَجْعَلُ لَكَ صَلٰوتِيْ كُلَّهَا قَالَ اِذًا تُكْفٰى هَمُّكَ وَيُكَفَّرُ لَكَ ذَنْبُكَ. (رواه الترمذى زاد المنذرى فى الترغيب احمد والحاكم وقال صححه وبسط السخاوى فى تخريجه)

9. हज़रत उबई बिन कअ्ब रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मैं आप पर दरूद कसरत से भेजना चाहता हूं तो उसकी मिक़्दार अपने औक़ाते दुआ में से कितनी मुक़र्रर करूं ? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जितना तेरा जी चाहे। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! एक चौथाई ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुझे इख़्तियार है और अगर इस पर बढ़ा दे, तो तेरे लिए बेहतर है। तो मैंने अर्ज़ किया कि निस्फ़[1] कर दूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुझे इख़्तियार है और अगर बढ़ा दे तो तेरे लिए ज़्यादा बेहतर है। मैंने अर्ज़ किया, दो तिहाई कर दूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुझे इख़्तियार है और इससे बढ़ा दे तो तेरे लिए ज़्यादा बेहतर है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! फिर मैं अपने सारे वक़्त को आपके दरूद के

---

1. यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में,

लिए मुक़र्रर करता हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया तो, इस सूरत में तेरे सारे, फ़िक्रों की किफ़ायत की जाएगी और तेरे गुनाह भी माफ़ कर दिए जाऐंगे।

फ़– मतलब तो वाज़ेह है, वह यह कि मैंने कुछ वक़्त अपने लिए दुआओं का मुक़र्रर कर रखा है और चाहता यह हूं कि दरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ा करूं, तो अपने इस मुअय्यन[1] वक़्त में से दरूद शरीफ़ के लिए कितना वक़्त तज्वीज़ करूं। मसलन, मैंने अपने अवराद व वज़ाइफ़ के लिए दो घंटे मुक़र्रर कर रखे हैं, तो इसमें से कितना वक़्त दरूद शरीफ़ के लिए तज्वीज़ करूं।

अल्लामा सख़ावी रह० ने इमाम अहमद रह० की एक रिवायत से यह नक़ल किया है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! अगर मैं अपने सारे वक़्त को आप के दरूद के लिए मुक़र्रर कर दूं तो कैसा ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ऐसी सूरत में हक़ तआला शानुहू तेरी दुनिया और आख़िरत के सारे फ़िक्रों की किफ़ायत फ़र्माएगा।

अल्लामा सख़ावी रह० ने मुतअद्दिद सहाबा रज़ि० से इसी क़िस्म का मज़्मून नक़ल किया है। इसमें कोई इश्काल नहीं कि मुतअद्दिद सहाबा किराम ने इस क़िस्म की दर्ख़्वास्तें की हों।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि दरूद शरीफ़ चूंकि अल्लाह के ज़िक्र पर और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम पर मुश्तमिल है, तो हक़ीक़त में यह ऐसा ही है, जैसा दूसरी हदीस में अल्लाह जल्ले शानुहू का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि जिसको मेरा ज़िक्र मुझ से दुआ मांगने में मानेअ हो, यानी कसरते ज़िक्र की वजह से दुआ का वक़्त न मिले तो मैं उसको दुआ मांगने वालों से ज़्यादा दूंगा।

साहबे मज़ाहिरे हक़ ने लिखा है कि सबब इसका यह है कि जब बन्दा अपनी तलब व रग़बत को अल्लाह तआला की पसंदीदा चीज़ में करता है और अल्लाह तआला की रज़ा को मुक़द्दम रखता है अपने मतालिब[2] पर तो वह किफ़ायत करता है उसके सब मुहिम्मात[3] की –

'मन का न लिल्लाहि कानल्लाहु लहू' यानी जो अल्लाह का हो रहता है, वह किफ़ायत करता है उसको।

जब शेख़ बुज़ुर्गवार अब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी रहमतुल्लाहि तआला ने इस मिस्कीन को यानी अब्दुल हक़ को वास्ते ज़ियारते मदीना मुनव्वरा को रुख़्सत किया, फ़र्माया कि जानो और आगाह हो कि नहीं है इस राह में कोई इबादत बाद

---

1. आधा, 2. मुक़र्रर , तै, 3. यानी अपनी पसंद की चीज़ों पर,

अदा-ए-फ़रायज़ के, मानिन्द दरूद के, ऊपर सय्यिदे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के, चाहिए कि तमाम औक़ात अपने को इसमें सर्फ़ करना, और चीज़ में मश्गूल न होना। अर्ज किया गया कि इसके लिए कुछ अदद मुअय्यन हो। फ़र्माया, यहां मुअय्यन करना अदद का शर्त नहीं। इतना पढ़ो कि साथ उसके रतबुल्लिसान[1] हो और उसके रंग में रंगीन हो और मुस्तग़र्क़[2] हो इसमें।

इस पर यह इश्काल न किया जाये कि इस हदीस पाक से यह मालूम हुआ कि दरूद शरीफ़ सब औराद व वज़ाइफ़ के बजाय पढ़ना ज़्यादा मुफ़ीद है, इसलिए कि-

1. अव्वल तो ख़ुद इस हदीसे पाक के दर्मियान मे इशारा है कि उन्होंने यह वक़्त अपनी ज़ात के लिए दुआओं का मुक़र्रर कर रखा था। इसमें से दरूद शरीफ़ के लिए मुक़र्रर करने का इरादा फ़र्मा रहे थे।

2. दूसरी बात यह है कि यह चीज लोगों के अह्वाल के एतबार से मुख़्तलिफ़ हुआ करती है, जैसा कि 'फ़ज़ाइले ज़िक्र' के बाब दोम हदीस (20) के ज़ैल में गुज़रा है कि बाज़ रिवायात में 'अलहम्दु लिल्लाह' को अफ़्ज़लुद्दुआ[3] कहा गया है और बाज़ रिवायत में इस्तग़्फ़ार को अफ़्ज़लुद्दुआ कहा गया है। इसी तरह से और आमाल के दर्मियान में भी मुख़्तलिफ़ अहादीस में मुख़्तलिफ़ आमाल को सबसे अफ़्ज़ल क़रार दिया गया है। यह इख़्तिलाफ़ लोगों के हालात के इख़्तिलाफ़ के एतबार से और औक़ात के एतबार से हुआ करता है, जैसा कि अभी मज़ाहिरे हक़ से नकल किया गया है कि शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस नव्वरल्लाहु मर्क़दहू को उनके शेख़ रह० ने मदीना पाक के सफ़र में यह वसीयत की कि तमाम औक़ात दरूद शरीफ़ ही में ख़र्च करें। अपने अकाबिर का भी यही मालूम है कि वह मदीना पाक के सफ़र में दरूद शरीफ़ की बहुत ताकीद करते हैं।

अल्लामा मुंज़री रह० ने 'तर्ग़ीब' में हज़रत उबई रज़ि० की हदीसे बाला में उनके सवाल से पहले एक मज़्मून और भी नकल किया है, वह कहते हैं कि जब चौथाई रात गुज़र जाती, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो जाते और इर्शाद फ़र्माते, ऐ लोगों! अल्लाह का ज़िक्र करो[4] (यानी बार-बार फ़र्माते) 'राजिफ़ा' आ गई और 'रादिफ़ा' आ रही है। मौत उन सब चीज़ों के साथ, जो इसके साथ लाहिक़ हैं, आ रही है। मौत उन सब चीज़ों के साथ, जो उसके साथ लाहिक़ हैं, आ रही हैं। इसको भी दो मर्तबा फ़र्माते।

---

1. ज़रूरी कामों की, 2. ज़ुबान उससे तर रहे, 3. डूब जाए, 4. सबसे अच्छी दुआ,

'राजिफ़ा' और रादिफ़ा' क़ुरआन पाक की आयत जो सूर: वन्नाज़ि आति में है, की तरफ इशारा है, जिस में अल्लाह पाक का इर्शाद है–

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ

यौ म तर्जुफ़ु राजिफ़तु तत् बअु हर्रा दिफ़तु कुलूबुय्यौमइज़िंववाजिफ़तुन अब्सारुहा खाशिअः०

जिसका तर्जुमा और मतलब यह है कि ऊपर चंद चीज़ों की क़सम खाकर अल्लाह तआला का इर्शाद है, कि क़यामत ज़रूर आयेगी, जिस दिन हिला देने वाली चीज सब को हिला डालेगी। इससे मुराद पहला सूर है। इसके बाद एक पीछे आने वाली चीज आयेगी इससे मुराद दूसरा सूर है बहुत से दिल उस रोज मारे खौफ़ के धड़क रहे होंगे, शर्म की वजह से उनकी आंखें झुक रही होंगी।[1]

عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا وَّحِيْنَ يُمْسِيْ عَشْرًا اَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (رواه الطبراني باسنادين احدهما جيد لكن فيه انقطاع كذا في القول البديع)

10. हज़रत अबूदर्दा रज़ि० ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नकल किया है कि जो शख्स सुबह और शाम मुझ पर दस-दस मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े, उसको क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत पहुंच कर रहेगी।

फ़– अल्लामा सखावी रह० ने मुतअद्दिद हदीस से दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को हुज़ूर सल्ल० की शफ़ाअत हासिल होने का मुज़्दा[2] नकल किया है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० की हदीस से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया है जो मुझ पर दरूद पढ़े क़यामत के दिन मैं उसका सिफ़ारशी बनूंगा। इस हदीसे पाक में किसी मिक्दार की भी क़ैद नहीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक और हदीस से दरूद नमाज़ के बाद भी यह लफ़्ज नकल किया है कि में क़यामत के दिन उसकी गवाही दूंगा और उसके लिए सिफ़ारिश करूंगा।

हज़रत रुऐफ़अ बिन साबित रज़ि० की रिवायत से हुज़ूर का यह इर्शाद नकल

---

1. बयानुल क़ुरआन मय जियादा।

किया है कि जो शख़्स यह दरूद शरीफ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अन्ज़िल् हुल् मक़अदल मुक़र्रब अिन्द-क यौमल क़यामति० उनके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हजरत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत से नक़ल किया है कि जो शख़्स मेरी क़ब्र के पास दरूद शरीफ़ पढ़ता है, मैं उसको सुनता हूं और जो शख़्स दूर से मुझ पर दरूद पढ़ता है, अल्लाह जल्ले शानुहू, उसके लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर देते हैं, जो मुझ तक दरूद को पहुंचाये और उसके दुनिया व आख़िरत के कामों की क़िफ़ायत कर दी जाती है और मैं क़यामत के दिन उसका गवाह या सिफ़ारशी बनूंगा।

'या' का मतलब यह है कि बाज़ के लिए सिफ़ारिशी और बाज़ के लिए गवाह, मसलन अह्ले मदीना के लिए गवाह, दूसरों के लिए सिफ़ारिशी या फ़र्माबरदारों के लिए गवाह और गुनाहगारों के लिए सिफ़ारिशी वग़ैरह ज़ालिक कमा क़ालहुस्सख़ावी।

عَنْ عَائِشَةَ رض قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ عَبْدٍ صَلّٰى عَلَىَّ صَلٰوةً اِلَّا عَرَجَ بِهَا مَلَكٌ حَتّٰى يُحَيِّيَ بِهَا وَجْهَ الرَّحْمٰنِ عَزَّ وَجَلَّ فَيَقُوْلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اِذْهَبُوْا بِهَا اِلٰى قَبْرِ عَبْدِيْ تَسْتَغْفِرُ لِقَائِلِهَا وَتَقَرُّ بِهَا عَيْنُهٗ - (اخرجه ابوعلى بن البناء والديلمى فى مسند الفردوس وفى سنده عمر بن حبيب ضعفه النسائى وغيره كذا فى القول البديع-

11. हजरत आइशा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स मुझ पर दरूद भेजता है, तो एक फ़रिश्ता उस दरूद को ले जाकर अल्लाह जल्ले शानुहू की पाक बारगाह में पेश करता है, वहां से इर्शाद आली होता है कि इस दरूद को मेरे बंदे की क़ब्र के पास ले जाओ यह उसके लिए इस्तिग़फ़ार करेगा और इसकी वजह से उसकी आंख ठंडी होगी।

फ़— ज़ादुस्सईद में 'मवाहिबे लदुनिया' से नक़ल किया है कि क़यामत में किसी मोमिन की नेकियां कम हो जायेंगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक पर्चा सरे अंगुश्त[1] के बराबर निकाल कर मीज़ान में रख देंगे, जिससे नेकियों का

1. एक उंगली के सिरे के बराबर,

पल्ला वज़नी हो जायेगा। वह मोमिन कहेगा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हो जायें, आप कौन हैं, आपकी सूरत व सीरत कैसी अच्छी है। आप फ़र्मायेंगे, मैं तेरा नबी हूं और यह दरूद है, जो तूने मुझ पर पढ़ा था, तेरी हाजत के वक़्त मैंने इसको अदा कर दिया।

इस पर यह इश्काल न किया जाये कि एक पर्चा सरे अंगुश्त के बराबर मीज़ान के पलड़े को कैसे झुका देगा, इसलिए कि अल्लाह जल्ले शानुहू के यहां इख़्लास की क़द्र है और जितना भी इख़्लास ज़्यादा होगा उतना ही वज़न ज़्यादा होगा। 'हदीसुल बताक़ा' यानी एक टुकड़ा काग़ज़ का, जिस पर कलमा-ए-शहादत लिखा हुआ था, वह निन्नान्वे दफ़्तरों के मुकाबले में और हर दफ़्तर इतना बड़ा कि मुन्तहा-ए-नज़र तक ढेर लगा हुआ था, ग़ालिब आ गया।

यह हदीस मुफ़स्सल इस नाकारा के रिसाला 'फ़ज़ाइले ज़िक्र' बाब दोम, फ़स्ल सोम की नं० (14) पर गुज़र चुकी है, जिसका जी चाहे, मुफ़स्सल वहां देखे और उसमें यह भी है कि अल्लाह के नाम के मुकाबले में कोई चीज़ भारी नहीं हो सकती और भी उस रिसाले में मुतअद्दिद रिवायात इसी मज़्मून की गुज़री हैं कि जिनसे मालूम होता है कि अल्लाह के यहां वज़न इख़्लास का होता है।

फ़स्ल पंजुम हिकायात के ज़ैल में हिकायत (20) पर भी इसके मुताल्लिक़ मुख़्तसर-सा मज़्मून आ रहा है।

(۱۲) عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِنِ الْخُدْرِيِّ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَالَ اَيُّمَا رَجُلٍ مُسْلِمٍ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهٗ صَدَقَةٌ فَلْيَقُلْ فِيْ دُعَائِهٖ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ فَاِنَّهَا زَكٰوةٌ وَقَالَ لَا يَشْبَعُ الْمُؤْمِنُ خَيْرًا حَتّٰى يَكُوْنَ مُنْتَهَاهُ الْجَنَّةُ رواه ابن حبان فی صحیحه کذا فی الترغیب وبسط السخاوی فی تخریجه وعزاه السیوطی فی الدر الی الادب المفرد للبخاری.

12. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कर यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिसके पास सद्क़ा करने को कुछ न हो, वह यों दुआ मांगा करे, (अल्लाहुम-म सल्लि से अख़ीर तक) 'ऐ अल्लाह! दरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो तेरे बंदे हैं और तेरे रसूल हैं और रहमत भेज मोमिन मर्द और मोमिन औरतों पर और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों पर। 'पस यह दुआ उसके लिए ज़कात यानी सद्क़ा होने के क़ायम मुक़ाम है और मोमिन

का पेट किसी ख़ैर से कभी नहीं भरता, यहां तक कि वह जन्नत में पहुंच जाये।

फ़– अल्लामा सख़ावी रह० ने लिखा है कि हाफ़िज़ इब्ने हब्बान रज़ि० ने इस हदीस पर यह फ़स्ल बांधी है, इस चीज़ का बयान कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़ना सद्क़ा न होने की सूरत में सद्क़ा के क़ायम-मुक़ाम हो जाता है।'

उलमा में इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि सद्क़ा अफ़ज़ल है या हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद। बाज़ उलमा ने कहा है कि हुज़ूर सल्ल० पर दरूद सद्क़े से भी अफ़ज़ल है इसलिए कि सद्क़ा सिर्फ़ एक ऐसा फ़रीज़ा है जो बंदों पर है और दरूद शरीफ़ ऐसा फ़रीज़ा है जो बंदों पर फ़र्ज़ होने के अलावा अल्लाह तआला शानुहू और उसके फ़रिश्ते भी उस अमल को करते हैं, अगरचे अल्लामा सख़ावी रह० ख़ुद इसके मुवाफ़िक़ नहीं है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि मुझ पर दरूद भेजा करो, इसलिए कि मुझ पर दरूद भेजना, तुम्हारे लिए ज़कात (सद्क़े) के हुक्म में है।

एक और हदीस से नक़ल किया है कि मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो कि वह तुम्हारे लिए ज़कात (सद्क़ा) है। नीज़ हज़रत अली रज़ि० की रिवायत से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि मुझ पर तुम्हारा दरूद भेजना तुम्हारी दुआओं को महफ़ूज़ करने वाला है,[1] तुम्हारे रब की रज़ा का सबब है और तुम्हारे आमाल की ज़कात है (यानी उनको बढ़ाने वाला और पाक करने वाला है)

हज़रत अनस रज़ि० की हदीस से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि मुझ पर दरूद भेजा करो, इसलिए कि मुझ पर दरूद तुम्हारे लिये (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा है और ज़कात (यानी सद्क़ा) है।

और हदीसे पाक का आख़िरी टुकड़ा कि मोमिन का पेट नहीं भरता, उसको साहिबे मिश्कात ने फ़ज़ाइले इल्म में नक़ल किया है और साहिबे मिर्क़ात वग़ैरह ने ख़ैर से इल्म मुराद लिया है। अगरचे ख़ैर का लफ़्ज़ आम है और हर ख़ैर की चीज़ और हर नेकी को शामिल है और मतलब ज़ाहिर है कि मोमिन कामिल का पेट नेकियां कमाने से कभी नहीं भरता, वह हर वक़्त इस कोशिश में रहता है कि जो नेकी भी

1. यानी इससे दुआएं क़ुबूल होती हैं,

जिस तरह उसको मिल जाये, वह हासिल हो जाये। अगर उसके पास माली सद्का नहीं है, तो दरूद शरीफ़ ही से सद्के की फ़ज़ीलत हासिल करे।

इस नाकारा के नज़दीक खै़र का लफ़्ज़ अलल उमूम ही ज़्यादा बेहतर है कि वह इल्म और दूसरी चीज़ों को शामिल है। लेकिन साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने भी साहिबे मिर्क़ात वग़ैरह के इत्तिबाअ में खै़र से इल्म ही मुराद लिया है। इसलिए वह तहरीर फ़र्माते हैं, हरगिज़ नहीं सेर होता मोमिन खै़र से, यानी इल्म से, यानी अखी़र उम्र तक तलबे इल्म में रहता है और उसकी बरकत से बहिश्त में जाता है।

इस हदीस में ख़ुशख़बरी है तालिबे इल्म को कि दुनिया से बा-ईमान जाता है इन्शाअल्लाह तआला और इस दर्जे को हासिल करने के लिए बाज़ अह्लुल्लाह अखी़र उम्र तक तह्सीले इल्म में मश्गूल रहे हैं, बावजूद हासिल करने बहुत से इल्म के और दाइरा इल्म का बहुत वसीअ है जो कि मश्गूल हो साथ इल्म के। अगरचे साथ तालीम व तस्नीफ़ के हो। हक़ीक़त में सवाब तलबे इल्म और तक्मील उसकी का ही है उसको (हक़)।

तक्मला– इस फ़स्ल को क़ुरआन पाक की दो आयतों और दस अहादीस शरीफ़ा पर इख़्तिसारन ख़त्म करता हूं कि फ़ज़ाइल की रिवायात बहुत कसरत से हैं। इनका इह्सा[1] भी इस मुख़्तसर रिसाले में दुश्वार है और सआदत की बात यह है कि अगर एक भी फ़ज़ीलत न होती, तब भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि व सह्बिही व अत्बाअिही व बारिक व सल्लिम के उम्मत पर इस क़दर एहसानात हैं कि न उनका शुमार हो सकता है और न उनकी हक़्क़ अदाएगी हो सकती है। इस बिना पर जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा आदमी दरूदे पाक में रतबुल्लिसान रहता, वह कम था, चायकि अल्लाह जल्ले शानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम से इस हक़ अदायगी के ऊपर भी सैकड़ों अज्र व सवाब और एहसानात फ़र्मा दिए।

अल्लामा सख़ावी रह० ने अव्वल मुज्मलन उन इंआमात की तरफ़ इशारा किया है, जो दरूद शरीफ़ पर मुरत्तब हुए हैं, चुनांचे वह लिखते हैं, बाब सानी, दरूद शरीफ़ के सवाब में अल्लाह जल्ले शानुहू का बंदे पर दरूद भेजना इसके फ़रिश्तों का दरूद भेजना और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ुद उस पर दरूद भेजना और दरूद पढ़ने वालों की ख़ताओं का कफ़्फ़ारा होना और उनके आमाल को पाकीज़ा बना देना और उनके दर्जात का बूलंद होना और गुनाहों का माफ़ होना

---

1. गिनती,

और ख़ुद दरूद का मग़फ़िरत तलब करना दरूद पढ़ने वाले के लिए और उसके नामा-ए-आमाल में एक क़ीरात के बराबर सवाब का लिखा जाना और क़ीरात भी वह जो उहद पहाड़ के बराबर हो और उसके आमाल का बहुत बड़ी तराज़ू में तुलना और जो शख़्स अपनी सारी दुआओं को दरूद बना दे, उसके दुनिया व आख़िरत के सारे कामों की किफ़ायत, जैसाकि क़रीब ही (9) पर हज़रत उबई रज़ि० की हदीस में गुज़र चुका है और ख़ताओं का मिटा देना, उसके सवाब का गुलामों के आज़ाद करने से ज़्यादा होना और इसकी वजह से ख़तरात से निजात पाना और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़यामत के दिन इसके लिए शाहिद व गवाह बनना और आप की शफ़ाअत का वाजिब होना और अल्लाह की रज़ा और उसकी रहमत का नाज़िल होना और उसकी नाराज़गी से अम्न का हासिल होना और क़यामत के दिन अर्श के साये में दाख़िल होना और आमाल के तुलने के वक़्त नेक आमाल के पलड़े का झुकना और हौज़े कौसर पर हाज़िरी का नसीब होना और क़यामत के दिन की प्यास से अम्न-नसीब होना और जहन्नुम की आग से ख़लासी का नसीब होना और पुल सिरात पर सहूलत से गुज़र जाना और मरने से पहले अपना मुकर्रिब-ठिकाना जन्नत में देख लेना और जन्नत में बहुत सारी बीवियों का मिलना और इसके सवाब का बीस जिहादों से ज़्यादा होना और नादार[1] के लिए सद्क़ा के क़ायम मुक़ाम होना और दरूद शरीफ़ ज़कात है और तहारत है और इसकी वजह से माल में बरकत होती है और इसकी बरकत से, सौ हाजतें बल्कि इससे भी ज़्यादा पूरी होती हैं और इबादत तो है ही और आमाल में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा महबूब है और मजालिस के लिए ज़ीनत है और फ़क्र को और तंगी-ए-मआशत[2] को दूर करता है और इसके ज़रिए अस्बाबे ख़ैर तलाश किये जाते हैं और यह कि दरूद पढ़ने वाला क़यामत के दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे ज़्यादा क़रीब होगा और इसकी बरकात से ख़ुद दरूद पढ़ने वाला और उसके बेटे और पोते मुन्तफ़अ[3] होंगे और वह भी मुन्तफ़अ होता है कि जिस को दरूद शरीफ़ का ईसाले सवाब किया जाये और अल्लाह और उसके रसूल की बारगाह में तक़र्रुब हासिल होता है और वह बेशक नूर है और दुश्मनों पर ग़लबा हासिल होने का ज़रिया है और दिलों को निफ़ाक़ से और ज़ंग से पाक करता है और लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा होने का ज़रिया है और ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत का ज़रिया है और इसका पढ़ने वाला इससे महफ़ूज़ रहता है कि लोग उसकी ग़ीबत करें। दरूद

1. ग़रीब, 2. रोज़ी की तंगी, 3. नफ़ा हासल करते हैं।

शरीफ़ बहुत बा-बरकत आमाल में से है और अफ़ज़लतरीन आमाल में से है और दीन व दुनिया दोनों में सब से ज़्यादा नफ़ा देने वाला अमल है और इसके अलावा बहुत से सवाब जो समझदार के लिए इसमें रग़्बत पैदा करने वाले हैं, ऐसा समझदार जो आमाल के ज़ख़ीरों के जमा करने पर हरीस[1] हो, और ज़ख़ाइरे आमाल[2] के समरात हासिल करना चाहता हो।

अल्लामा सख़ावी रह० ने बाब के शुरू में यह इज्माली मज़्मून ज़िक्र करने के बाद फिर उन मज़ामीन की रिवायात को तफ़्सील से ज़िक्र किया जिनमें से बाज़ फ़स्ल अव्वल में गुज़र चुकी हैं और बाज़ फ़स्ल सानी में आ रही हैं और इन रिवायात को ज़िक्र करने के बाद लिखते हैं कि इन अहादीस में उस इबादत की शराफ़त पर बय्यन[3] दलील है कि अल्लाह जल्ले शानुहू का दरूद पढ़ने वाले पर अल-मुज़ाइफ़ (यानी दस गुना) होता है और उसकी नेकियों में इज़ाफ़ा होता है, गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है, दरजात बुलंद होते हैं। पस जितना भी हो सकता हो सय्यिदुस्सादात[4] और मअ़दनुस्सआदात[5] पर दरूद की कसरत किया करो इसलिए कि वह वसीला है मुसर्रात[6] के हुसूल का और ज़रिया है बेहतरीन अताओं का और ज़रिया है मुज़र्रात[7] से हिफ़ाज़त का और तेरे लिए हर उस दरूद के बदले में जो तू पढ़े, दस दरूद हैं जब्बारुल् अर्ज़ीन वस्समावाति[8] की तरफ़ से और दरूद है उसके मलाइका किराम की तरफ़ से वग़ैरह-वग़ैरह।

एक और जगह अक़्लेशी का यह क़ौल नक़ल करते हैं कि कौन-सा वसीला ज़्यादा शफ़ाअत वाला हो सकता है और कौन-सा अमल ज़्यादा नफ़ा वाला हो सकता है, इस ज़ाते अक़्दस सल्ल० पर दरूद के मुक़ाबले में जिस पर अल्लाह जल्ले शानुहू दरूद भेजते है और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं और अल्लाह जल्ले शानुहू ने उसको दुनिया और आख़िरत में अपनी क़ुर्बत के साथ मख़्सूस फ़र्माया है, यह बहुत बड़ा नूर है और ऐसी तिजारत है, जिसमें घाटा नहीं यह औलिया-ए-किराम का सुबह व शाम का मुस्तक़िल मामूल रहा है। पस जहां तक हो सके, दरूद शरीफ़ पर जमा रहा कर, इससे अपनी गुमराही से निकल आयेगा और तेरे आमाल साफ़-सुथरे हो जायेंगे तेरी उम्मीदें बर आयेंगी, तेरा क़ल्ब मुनव्वर हो जायेगा। अल्लाह तआला शानुहू की रज़ा हासिल होगी। क़यामत के सख़्ततरीन दहशतनाक दिन में अम्न नसीब होगा।

---

1. जमा करने की मुहब्बत हो, 2. आमाल के ख़ज़ाने, 3. खुली हुई, 4. सरदारों के सरदार, 5. सआदतों की खान यानी हुज़ूर सल्ल०, 6. ख़ुशिया, 7. नुक़्सानों, 8. यानी अल्लाह,

फ़स्ले दोम

ख़ास-ख़ास दरूद के ख़ास-ख़ास फ़ज़ाइल के बयान में

❶ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِىْ لَيْلٰى قَالَ لَقِيَنِىْ كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ اَلَا اُهْدِىْ لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ بَلٰى فَاَهْدِهَا لِىْ فَقَالَ سَاَلْنَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ كَيْفَ الصَّلٰوةُ عَلَيْكُمْ اَهْلِ الْبَيْتِ فَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكَ قَالَ قُوْلُوْا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (رواه البخارى وبسط السخاوى

فى تخريجه واختلاف الفاظه)

1. हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि मुझ से हज़रत कअ़ब रज़ि० की मुलाक़ात हुई। वह फ़रमाने लगे कि मैं तुझे एक ऐसा हदिया दूं, जो मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है। मैंने अ़र्ज़ किया ज़रूर मरहमत फ़र्माइए। उन्होंने फ़र्माया कि हमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ! आप पर दरूद किन अल्फ़ाज़ से पढ़ा जाये, यह तो अल्लाह तआला ने हमें बतला दिया कि आप पर सलाम किस तरह भेजें। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इस तरह दरूद पढ़ा करो (अल्लाहुम्म सल्लि अला से अख़ीर तक) यानी ऐ अल्लाह ! दरूद भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल पर, जैसा कि आपने दरूद भेजा, हज़रत इब्राहीम अलै० पर और उनकी आल (औलाद) पर। ऐ अल्लाह बे-शक आप सतूदा सिफ़ात और बुज़ुर्ग हैं। ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) और उनकी आल (औलाद) पर जैसा कि बरकत नाज़िल फ़र्मायी आपने हज़रत इब्राहीम अलै० पर और उनकी आल (औलाद पर। बे-शक आप सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग हैं।

फ़- हदिया देने का मतलब यह है कि उन हज़रात के यहां (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन) मेहमानों और दोस्तों के लिए बजाय खाने-पीने की चीज़ों के बेहतरीन तहायफ़ और बेहतरीन हदिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र शरीफ़, हुज़ूर सल्ल० की अहादीस, हुज़ूर सल्ल० के हालात थे। इन चीज़ों की क़द्र इन हज़रात के यहां माद्दी चीज़ों से कहीं ज़्यादा थी, जैसा कि इनके हालात इसके शाहिदे अदल हैं । इसी बिना पर हज़रत कअ्ब रज़ि० ने इसको हदिया से ताबीर किया। यह हदीस शरीफ़ बहुत मश्हूर हदीस है और हदीस की सब किताबों में बहुत कसरत से ज़िक्र की गई है और बहुत से सहाबा रज़ि० से मुख़्तसर और मुफ़स्सल अल्फ़ाज़ में नक़ल की गई है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने क़ौले बदीअ में इसके बहुत तुरुक़ और मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं। वह एक हदीस में हज़रत हसन रज़ि० से मुर्सलन नक़ल करते हैं कि जब आयत शरीफ़ा-

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ

इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन नबीयि० नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सलाम तो हम जानते हैं कि वह किस तरह होता है आप हमें दरूद शरीफ़ पढ़ने का किस तरह हुक्म फ़र्माते हैं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوٰتِكَ وَبَرَكَاتِكَ الخ

अल्लाहुम्मज्अल सला वाति क व ब र काति क (आख़िर तक) पढ़ा करो।

दूसरी हदीस में अबूमस्ऊद बद्री रज़ि० से नक़ल किया है कि हम हज़रत सअ्द बिन अुबादह रज़ि० की मज्लिस में थे कि वहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये। हज़रत बशीर रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! अल्लाह जल्ले शानुहू ने हमें दरूद पढ़ने का हुक्म दिया है। पस इर्शाद फ़र्माइये कि किस तरह आप पर दरूद पढ़ा करें। हुज़ूर सल्ल० ने सुकूत[1] फ़र्माया, यहां तक कि हम तमन्ना करने लगे कि वह शख़्स सवाल ही न करता। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि यों कहा करो-

---

1. ख़ामोशी फ़रमायी,

'अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंन्न व अला आलि मुहम्मदन-'

यह रिवायत मुस्लिम व अबूदाऊद वग़ैरह में है। इसका मतलब कि 'हम इसकी तमन्ना करने लगे' यह है कि इन हज़राते सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन को ग़ायत मुहब्बत और ग़ायत एहतराम की वजह से जिस बात के जवाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ताम्मुल[1] होता, या सुकूत फ़र्माते, तो उनको यह ख़ौफ़ होता कि यह सवाल कहीं मन्शा-ए-मुबारक के ख़िलाफ़ तो नहीं हो गया या यह कि इसका जवाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम नहीं था, जिसकी वजह से हुज़ूर अक्दस सल्ल० को ताम्मुल फ़र्माना पड़ा।

बाज़ रिवायात से इसकी ताईद भी होती है। हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० ने तबरी की रिवायत से यह नकल किया है कि हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने सुकूत फ़र्माया, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० पर वहि नाज़िल हुई।

मस्नद अहमद और इब्ने हब्बान वग़ैरह ने एक और रिवायत से नकल किया है कि एक सहाबी रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० के सामने बैठ गये। हम लोग मज्लिस में हाज़िर थे। उन साहब ने सवाल किया या रसूलुल्लाह ! सलाम का तरीक़ा तो हमें मालूम हो गया, जब हम नमाज़ पढ़ा करें तो उसमें आप पर दरूद कैसे पढ़ा करें। हुज़ूर सल्ल० ने इतना सुकूत फ़र्माया कि हम लोगों की यह ख़्वाहिश होने लगी कि यह शख़्स सवाल ही न करता। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जब नमाज़ पढ़ा करो, तो यह दरूद पढ़ा करो-

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद० (आख़िर तक) اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

एक और रिवायत में अब्दुर्रहमान बिन बशीर रज़ि० से नकल किया है, किसी ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! अल्लाह जल्ले शानुहू ने हमें सलात व सलाम का हुक्म दिया है। सलाम तो हमें मालूम हो गया, आप पर दरूद कैसे पढ़ा करें, तो हुज़ूरे सल्ल० ने फ़र्माया, यों पढ़ा करो-

अल्लाहुम्म सल्लि अला आलि मुहम्मद० اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ

मस्नद अहमद, तिर्मिज़ी बैहक़ी वग़ैरह की रिवायत में ज़िक्र किया गया कि जब आयते शरीफ़ा-

1. झिझक,

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ الاية

'इन्नल ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन्नबीयि' नाज़िल हुई, तो एक साहब ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! सलाम तो हमें मालूम है, आप पर दरूद कैसे पढ़ा करें, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको दरूद तल्क़ीन फ़र्माया।

और भी बहुत सी रिवायात में इस क़िस्म के मज़्मून ज़िक्र किये गये हैं और दरूदों के अल्फ़ाज़ में इख़्तिलाफ़ भी है, जो इख़्तिलाफ़ रिवायात में हुआ ही करता है, जिसकी मुख़्तलिफ़ वजूह होती हैं। इस जगह ज़ाहिर यह है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ सहाबा रज़ि० को मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़र्माये, ताकि कोई लफ़्ज़ ख़ासतौर से वाजिब न बन जाये। नफ़्स दरूद का वजूब[1] अलाहिदा चीज़ है जैसा कि चौथी फ़स्ल में आ रहा है और दरूद शरीफ़ के किसी ख़ास लफ़्ज़ का वजूब अलाहिदा चीज़ है कोई ख़ास लफ़्ज़ वाजिब नहीं। यह दरूद शरीफ़ जो इस फ़स्ल के शुरू में नं० 1 पर लिखा गया है, यह बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है, जो सबसे ज़्यादा सही है और हनफ़ीया के नज़दीक नमाज़ में इसी का पढ़ना, औला[2] है जैसा कि अल्लामा शामी रह० ने लिखा है कि हज़रत इमाम मुहम्मद रह० से सवाल किया गया कि हुज़ूर सल्ल० पर दरूद किन अल्फ़ाज़ से पढ़ें, तो उन्होंने यही दरूद शरीफ़ इर्शाद फ़र्माया, जो फ़स्ल के शुरू में लिखा गया और दरूद मुवाफ़िक़ है इसके जो सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) वग़ैरह में है।

अल्लामा शामी रह० ने यह इबारत शरहे मुनिया से नक़ल किया है। शरहे मुनिया की इबारत यह है कि यह दरूद मवाफ़िक़ है उसके जो सहीहैन में हज़रत कअ़ब बिन उज्रा रज़ि० से नक़ल किया गया है और कअ़ब बिन उज्रा की यही रिवायत है, उपर जो गुज़री।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि हज़रत कअ़ब रज़ि० वग़ैरह की अहदीस से उन अल्फ़ाज़ की तायीन[3] होती है जो हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० को आयते शरीफ़ा के इम्तिसाले अमर में सिखलाये। और भी बहुत से अकाबिर से इसका अफ़ज़ल होना नक़ल किया गया है।

एक जगह अल्लामा सख़ावी रह० लिखते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने सहाबा रज़ि० के इस सवाल पर कि हम लोगों को अल्लाह जल्ल शानुहू ने सलात व सलाम का हुक्म दिया है, तो, कौन-सा दरूद पढ़ें, हुज़ूर सल्ल० ने यह तालीम फ़र्माया, इससे

1. वाजिब होना, 2. बेहतर, 3. तै होना

मालूम हुआ कि यह सब से अफ़ज़ल है।

इमाम नववी ने अपनी किताब 'रौज़ा' में तो यहां तक लिख दिया है कि अगर कोई शख़्स यह क़सम खा बैठे कि मैं सबसे अफ़ज़ल दरूद पढ़ूंगा तो इस दरूद के पढ़ने से क़सम पूरी हो जायेगी।

हिस्ने हसीन के हाशिये पर 'हिर्ज़े समीन' से नक़ल किया है कि यह दरूद शरीफ़ सबसे ज़्यादा सही है और सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल है नमाज़ में और वग़ैर नमाज़ के इसी का एहतमाम करना चाहिए।

यहां एक बात क़ाबिले तंबीह यह है कि 'ज़ादुस्सईद' के बाज़ नुस्ख़ों में कातिब की ग़लती से 'हिर्ज़े समीन' की यह इबारत बजाय इस दरूद शरीफ़ के एक दूसरे दरूद के नम्बर पर लिख दी गयी, इसका लिहाज़ रहे।

इसके बाद इस हदीस शरीफ़ में चन्द फ़वायद क़ाबिले ज़िक्र हैं-

1. अव्वल यह है कि सहाबा किराम रज़ि० का यह अर्ज करना कि सलाम हम जान चुके हैं, इससे मुराद अतहीयात के अन्दर-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

'अस्सलामु अलै० क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब र कातुहू' है, अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि हमारे शेख़ यानी हाफ़िज इब्ने हज्र रह० के नजदीक यही मतलब ज़्यादा ज़ाहिर है। 'अव्जज़'[1] में इमाम बैहक़ी से भी यही नक़ल किया गया है और इसमें भी मुतअद्दिद उलमा से यही मतलब नक़ल किया गया है।

2. एक मशहूर सवाल किया जाता है कि जब किसी चीज़ के साथ तश्बीह दी जाती है, मसलन यों कहा जाये कि फ़्लां शख़्स हातिम ताई जैसा सख़ी है, तो सख़ावत में हातिम का ज़्यादा सख़ी होना मालूम होता है, इस वजह से इस हदीस पाक में हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दरूद का अफ़ज़ल होना मालूम होता है। इसके भी 'अव्जज़' में कई जवाब दिये गये हैं और हाफ़िज इब्ने हज्र रह० ने फ़त्हुल बारी' में दस जवाब दिये हैं। कोई आलिम हो तो ख़ुद देख ले, ग़ैर आलिम हो, तो किसी आलिम से दिल चाहे तो दर्याफ़्त कर ले। सबसे आसान जवाब यह है कि क़ायदा-ए-अक्सरिया तो वही है जो ऊपर गुज़रा, लेकिन बसा औक़ात

---

1. लेखक की एक किताब का नाम,

बाज़ मसालेह से इसका उलटा होता है, जैसा क़ुरआन पाक के दर्मियान में अल्लाह जल्ले शानुहू के नूर के मुताल्लिक़ इर्शाद है–

مَثَلُ نُوْرِہٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ اَلآيۃ

मस लु नूरिहि कमिश्कातिन फ़ीहा मिस्बाहुन

तर्जुमा– उसके नूर की मिसाल उस ताक़ की-सी है जिस में चिराग़ हो (अख़ीर आयत तक)

हालांकि अल्लाह जल्ले शानुहू के नूर को चिराग़ों के नूर के साथ क्या मुनासबत।

3. यह भी मश्हूर इश्काल है कि सारे अंबिया किराम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के दरूद को क्यों ज़िक्र किया। इसके भी अवज़्ज में कई जवाब दिये गये हैं। हज़रत अक़्दस थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने भी 'ज़ादुस्सईद' में कई जवाब इर्शाद फ़र्माये हैं। बंदे के नज़दीक तो ज़्यादा पंसद यह जवाब है कि हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अल्लाह जल्ले शानुहू ने अपना ख़लील क़रार दिया। चुनांचे इर्शाद है–

वत्त ख़ ज़ल्लाहु इब्राहीम ख़लीला॰ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلًا

लिहाज़ा जो दरूद अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर होगा, वह मुहब्बत की लाइन का होगा और मुहब्बत की लाइन की सारी चीजें सब से ऊंची होती हैं। लिहाज़ा जो दरूद मुहब्बत की लाइन का होगा, वह यक़ीनन सबसे ज़्यादा लज़ीज़ और ऊंचा होगा। चुनांचे हमारे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह जल्ले शानुहू ने अपना हबीब क़रार दिया और हबीबुल्लाह बनाया और इसलिए दोनों का दरूद एक दूसरे के मुशाबेह[1] हुआ।

मिश्कात में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ की रिवायत से क़िस्सा नक़ल किया गया है कि सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत अंबिया किराम का तज़्किरा कर रही थी कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलै॰ को ख़लील बनाया और हज़रत मूसा अलै॰ से कलाम किया और हज़रत ईसा अलै॰ अल्लाह का कलमा और रूह और हज़रत आदम अलै॰ को अल्लाह ने अपना सफ़ी क़रार दिया। इतने में हुज़ूर सल्ल॰ तश्रीफ़ लाये। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़र्माया, मैंने तुम्हारी गुफ़्तगू सुनी। बे-शक इब्राहीम अलै॰

1. मिलता-जुलता

ख़लीलुल्लाह हैं और मूसा नजीयुल्लाह हैं। (यानी कलीमुल्लाह) और ऐसे ही हज़रत ईसा अलै॰ अल्लाह का कलमा और रूह हैं और आदम अलै॰ अल्लाह के सफ़ी हैं। लेकिन बात यों है ग़ौर से सुनो कि मैं अल्लाह का हबीब हूं और इस पर कोई फ़ख़्र नहीं करता और क़यामत के दिन हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा और उस झंडे के नीचे आदम अलै॰ और सारे अंबिया होंगे और इस पर फ़ख़्र नहीं करता और क़यामत के दिन सबसे पहले मैं शफ़ाअत करने वाला हूंगा और सबसे पहले जिसकी शफ़ाअत क़ुबूल की जायेगी वह मैं हूंगा और इस पर भी मैं कोई फ़ख़्र नहीं करता और सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा खुलवाने वाला मैं हूंगा और सबसे पहले जन्नत में मैं और मेरी उम्मत के फ़ुक़रा दाख़िल होंगे और इस पर भी कोई फ़ख़्र नहीं करता और मैं अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा मुकर्रम हूं, अव्वलीन और आख़िरीन में[1] और कोई फ़ख़्र नहीं करता। और भी मुतअद्दिद रिवायात से हुज़ूर सल्ल॰ का हबीबुल्लाह होना मालूम होता है।

मुहब्बत और ख़ुल्लत[2] में जो मुनासबत है वह ज़ाहिर है, इसलिए एक के दरूद को दूसरे के दरूद के साथ तश्बीह दी और चूंकि हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आबा[3] में हैं, इसलिए भी 'मन अश्ब ह अबाहु फ़मा ज़ल म ' (आबा व अजदाद[4] के साथ मुशाबहत बहुत मम्दूह[5] है।)

मिश्कात के हाशिए पर 'लम्आत' से उसमें एक नुक्ता भी लिखा है, वह यह कि हबीबुल्लाह का लक़ब सबसे ऊंचा है। चुनांचे फ़र्माते हैं कि हबीबुल्लाह का लफ़्ज़ जामेअ है ख़ुल्लत को भी और कलीमुल्लाह होने को भी और सफ़ीयुल्लाह होने को भी, बल्कि, इनसे ज़ायद चीज़ों को भी, जो दीगर अंबिया के लिए साबित नहीं और वह अल्लाह का महबूब होना है एक ख़ास मुहब्बत के साथ में जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के साथ मख़्सूस है।

(२) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهٗ اَنْ یُّکْتَالَ بِالْمِکْیَالِ الْاَوْفٰی اِذَا صَلّٰی عَلَیْنَا اَهْلَ الْبَیْتِ فَلْیَقُلِ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَ اَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ ذُرِّیَّتِهٖ وَ اَهْلِ بَیْتِهٖ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

(رواه ابوداؤد و ذکره السخاوی بطرق عدیدة)

---

1. अव्वल आने वालों में और पीछे आने वालों में, 2. ख़लील (प्रिय) होना, 3. पुर्खे, 4. बाप दादे, 5. तारीफ़ के क़ाबिल।

2. हजरत अबूहुरैरह रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया है कि जिस शख़्स को यह बात पसंद हो कि जब वह दरूद पढ़ा करे हमारे घराने पर, तो इसका सवाब बहुत बड़े पैमाने में नापा जाय तो वह इन अल्फ़ाज से दरूद पढ़ा करे (अल्ला हुम्म सल्लि अला मुहम्मद से अख़ीर तक)

तर्जुमा— ऐ अल्लाह ! दरूद भेज मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जो नबी-ए-उम्मी हैं और उनकी बीवियों पर, जो सारे मुसलमानों की माऐं हैं और आप की आल-औलाद पर और आप सल्ल॰ के घराने पर, जैसा कि दरूद भेजा आपने आले इब्राहीम अलै॰ पर। बेशक आप ही सज़ा वारे हम्द हैं, बुज़ुर्ग हैं।

फ़—नबी-ए-उम्मी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ास लक़ब है और यह लक़ब आपका तौरात, इंजील और तमाम किताबों में जो आसमान से उतरीं, ज़िक्र किया गया है (कज़ा फ़िल मज़ाहिर।)

आप को नबी-ए-उम्मी क्यों कहा जाता है ? इसमें उलमा के बहुत से अक़्वाल हैं, जिनको शुरूहे हदीस 'मिर्क़ात' वग़ैरह में तफ़्सील से ज़िक्र किया गया है। मशहूर क़ौल यह है कि उम्मी अनपढ़ को कहते हैं। कि जो लिखना-पढ़ना न जानता हो, और यह चूंकि अहम तरीन मोजज़ा है कि जो शख़्श लिखना-पढ़ना न जानता हो, वह ऐसा फ़सीह व बलीग़[1] क़ुरआने पाक लोगों को पढ़ाये।

ग़ालिबन इसी मोजज़ा की वजह से कुतुबे साबिक़ा[2] में इस लक़ब को ज़िक्र किया गया-

यतीमे के ना करदा क़ुरआं दुरुस्त
कुतुब ख़ाना-ए-चंद मिल्लत ब शुस्त।

('जो यतीम कि उसनें पढ़ना भी न सीखा हो उसने कितने ही मजहबों के कुतुबख़ाने धो दिये। यानि मंसूख़ कर दिये)

निगारे मन कि ब-मक्तब न रफ़्त व ख़त न नविश्त,
ब ग़म्ज़ा मस्अला आमोज सद् मुदर्रिस शुद।

(मेरा महबूब, जो कभी मक्तब में भी नहीं गया, लिखना भी नहीं सीखा, वह अपने इशारों से सैकड़ों मुदर्रिसों[3] का मुअल्लिम[4] बन गया।)

---

1. ज़ुबान के एतबार से साफ़-सुथरी और मेयारी ज़ुबान, 2. पिछली किताबों, 3. उस्तादों, 4. पढ़ाने वाला,

हज़रते अक्दस शेख़ुल मशाइख़ हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रहमतुल्लाह 'हिर्ज़े समीन' नं० 13 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि मुझे मेरे वालिद ने इन अल्फ़ाज़ के साथ दरूद पढ़ने का हुक्म किया था-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि-नि-न्नबी यिल् उम्मीयि व आलिही व बारिक व सल्लिम०

मैंने ख़्वाब में इस दरूद शरीफ़ को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में पढ़ा, तो हुज़ूर सल्ल० ने इसको पसन्द फ़र्माया। इसका मतलब कि 'बहुत बड़े पैमाने में नापा जाए', यह है कि अरब में खजूरें, ग़ल्ला वग़ैरह पैमानों में नाप कर बेचा जाता था, जैसा कि हमारे शहरों में यह चीज़ें वज़न से बिकती हैं, तो बहुत बड़े पैमाने का मतलब गोया बहुत बड़ी तराज़ू हुआ और गोया हदीसे पाक का मतलब यह हुआ कि जो शख़्स यह चाहता हो कि उसके दरूद का सवाब बहुत बड़ी तराज़ू में तौला जाये और ज़ाहिर है कि बहुत बड़ी तराज़ू में वही चीज़ तौली जायेगी जिसकी मिक्दार बहुत ज़्यादा होगी, थोड़ी मिक्दार बड़ी तराज़ू में तौली भी नहीं जा सकती। जिन तराज़ुओं में हम्माम के लक्कड़ तौले जाते हों, उनमें थोड़ी चीज़ वज़न में भी नहीं आ सकती, पासंग में रह जायेगी।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने और इससे क़ब्ल अल्लामा सख़ावी रह० ने यह लिखा है कि जो चीज़ें थोड़ी मिक्दारों में हुआ करती हैं, वह तराज़ुओं में तुला करती हैं और जो बड़ी मिक्दार में हुआ करती हैं, वह आमतौर से पैमानों ही में नापी जाती हैं, तराज़ुओं में उनका आना मुश्किल होता है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत अबूमस्ऊद रज़ि० से भी हुज़ूर सल्ल० का यही इर्शाद नक़्ल किया है और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की हदीस से भी यही नक़्ल किया है कि जो शख़्स यह चाहता हो कि उसका दरूद बहुत बड़े पैमाने से नापा जाये, जब वह हम अह्ले बैत पर दरूद भेजे, तो यूं पढ़ा करे-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوٰتِكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्मज्अल् स ल वाति क व ब र काति क अला मुहम्मदिनि-न्नबीयि व अज़्वाजिही उम्महातिल मुअ्मिनी न वज़ुर्रियतिही व अह्लि बैतिही कमा सल्लै तअला आलि इब्राहीम इन्न क हमीदुम मजीद०

और हसनबसरी रह० से यह नक़ल किया है कि जो शख़्स यह चाहे कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हौज़ से भरपूर प्याला पीवे, वह यह दरूद

पढ़ा करे- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

وَعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ وَ وَاَنْصَارِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ وَمُحِبِّيْهِ وَاُمَّتِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलिही व अस्हाबिहि व औलादिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयातिही व अह्लि बैतिही व अस्हारिही व अश्याअिही व मुहिब्बीही व अलैना म अ हुम अज्मअीन या अर्हमर्राहिमीन०

इस हदीस को क़ाज़ी अयाज रह० ने भी 'शिफ़ा' में नक़ल किया है-

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ﴿﴾ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब द न।
अला हबीबि क ख़ैरिल ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।।

(३) عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اَكْثِرُوا مِنَ الصَّلٰوةِ عَلَىَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَاِنَّهٗ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَاِنَّ اَحَدًا لَنْ يُّصَلِّىَ عَلَىَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَىَّ صَلٰوتُهٗ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا قَالَ قُلْتُ وَبَعْدَ الْمَوْتِ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ. رواه ابن ماجة باسناد جيد كذا فى الترغيب زاد السخاوى فى آخر الحديث فنبى الله حى يرزق وبسط فى تخريجه واخرج معناه عن عدة من الصحابة وقال القارى وله طرق كثيرة بالفاظ مختلفة

3. हज़रत अबूदर्दा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरे ऊपर जुमा के दिन कसरत से दरूद भेजा करो, इसलिए कि यह ऐसा मुबारक दिन है कि मलाइका इसमें हाज़िर होते हैं और जब कोई शख़्स मुझ पर दरूद भेजता है, तो वह दरूद उसके फ़ारिग़ होते ही मुझ पर पेश किया जाता है। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! आपके इंतिक़ाल के बाद भी ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हां इंतिक़ाल के बाद भी। अल्लाह जल्ले शानुहू ने ज़मीन पर यह बात हराम कर दी है कि अंबिया अलै० के बदनों को खाये। पस अल्लाह का नबी ज़िंदा होता है, रिज़्क़ दिया जाता है।

फ़—मुल्ला अलीक़ारी रह० कहते हैं कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने अंबिया

के अज्साद[1] को ज़मीन पर हराम कर दिया, पस कोई फ़र्क नहीं है उनके लिए दोनों हालतों यानी ज़िंदगी और मौत में और इस हदीसे पाक में इस तरफ़ भी इशारा है कि दरूद रूहे मुबारक और बदने मुबारक दोनों पर पेश होता है और हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद कि अल्लाह का नबी ज़िंदा है, रिज़्क दिया जाता है, इससे मुराद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़ात हो सकती है और ज़ाहिर यह है कि इससे हर नबी मुराद है, इसलिए कि हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी क़ब्र में खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा और इसी तरह हज़रत इब्राहीम अला नबीयिना व अलैहिस्सलात वस्सलाम को भी देखा, जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है और यह हदीस कि अंबिया अलै० अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, सही है और रिज़्क से मुराद रिज़्के मानवी भी हो सकता है और इसमें भी कोई मानेअ[2] नहीं कि रिज़्के हिस्सी[3] मुराद हो और वही ज़ाहिर और मुतबादिर है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने यह हदीस बहुत से तुरुक से नकल की है। हज़रत औस रज़ि० के वास्ते से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक्ल किया है, तुम्हारे अफ़ज़लतरीन अय्याम में से जुमा का दिन है। इसी दिन में हज़रत आदम अलै० की पैदाइश हुई, इसी में उनकी वफ़ात हुई इसी दिन में नफ़्ख़ा (पहला सूर) और इसी में सअ़्क़ा (दूसरा सूर) होगा, पस इस दिन में मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो, इसलिए कि तुम्हारा दरूद मुझ पर पेश किया जाता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! हमारा दरूद आप पर कैसे पेश किया जायेगा ? आप तो क़ब्र में बोसीदा[4] हो चुके होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने ज़मीन पर यह बात हराम कर दी है कि वह अंबिया अलैहिस्सलाम के बदनों को खावे।

हज़रत अबूउमामह रज़ि० की हदीस से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक्ल किया है कि मेरे ऊपर हर जुमा के दिन कसरत से दरूद भेजा करो इसलिए कि मेरी उम्मत का दरूद हर जुमा को पेश किया जाता है। पस जो शख़्स मेरे ऊपर दरूद पढ़ने में सब से ज़्यादा होगा, वह मुझ से क़यामत के दिन सब से ज़्यादा क़रीब होगा।

यह मज़्मून कि कसरत से दरूद पढ़ने वाला क़यामत के दिन हुज़ूर सल्ल० से सब से ज़्यादा क़रीब होगा, फ़स्ले अव्वल के (5) में गुज़र चुका है।

हज़रत अबू मस्ऊद अंसारी रज़ि० की हदीस से भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु

---

1. जिस्म, 2. रुकावट, 3. वह रिज़्क जो महसूस तौर पर देखा न जा सके, 4. यानी गल कर मिट्टी में मिल चुके होंगे,

अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जुमा के दिन मेरे ऊपर कसरत से दरूद भेजा करो, इसलिए कि जो शख़्स भी जुमा के दिन मुझ पर दरूद भेजता है, वह मुझ पर फ़ौरन पेश होता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया गया है कि मेरे ऊपर रोशन रात (यानी जुमा की रात) और रोशन दिन (यानी जुमा के दिन) में कसरत से दरूद भेजा करो, इसलिए कि तुम्हारा दरूद मुझ पर पेश होता है, तो मैं तुम्हारे लिए दुआ और इस्तग़फ़ार करता हूं, इसी तरह हज़रत इब्ने उमर रज़ि०, हसन बसरी रह०, हज़रत ख़ालिद बिन मअ़दान वग़ैरह से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया गया है कि जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो।

सुलैमान बिन सहीम रह० कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! जो लोग आपकी ख़िद्मत में हाज़िर होते हैं और आप की ख़िद्मत में सलाम करते हैं, क्या आप को इस का पता चलता है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हां और मैं उनके सलाम का जवाब देता हूं।

इब्राहीम बिन शैबान रह० कहते हैं कि मैंने जब हज किया और मदीना पाक हाज़िरी हुई और मैंने क़ब्रे अत्हर की तरफ़ बढ़कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में सलाम अर्ज़ किया, तो मैंने रौज़ा-ए-अत्हर से 'व अलैकुम अस्सलाम' की आवाज़ सुनी।

'बलूग़ुल् मसर्रात' में हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० से यह नक़्ल किया है कि जुमा के दिन दरूद शरीफ़ की ज़्यादा फ़ज़ीलत की वजह यह है कि जुमा का दिन तमाम दिनों का सरदार है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते अत्हर सारी मख़्लूक़ की सरदार है, इसलिए उस दिन को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद के साथ एक ऐसी ख़ुसूसियत है, जो और दिनों को नहीं। और बाज़ लोगों ने यह भी कहा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० बाप की पुश्त से अपनी मां के पेट में उसी दिन तशरीफ़ लाये थे।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि जुमा के दिन दरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत हज़रत अबूहुरैरह रज़ि०, अनस रज़ि०, औस बिन औस रज़ि०, अबूउमामा रज़ि०, अबूदर्दा रज़ि०, अबूमस्ऊद रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, उनके साहबज़ादे अब्दुल्लाह वग़ैरह हज़रात रज़ि० से नक़्ल की गई है, जिन की रिवायात अल्लामा सख़ावी रह० ने नक़्ल की हैं।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि क़ुल्लिहिमी।।

④ وَعَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلصَّلٰوةُ عَلَيَّ نُوْرٌ عَلَى الصِّرَاطِ وَمَنْ صَلّٰى عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ ثَمَانِيْنَ مَرَّةً غُفِرَتْ لَهٗ ذُنُوْبُ ثَمَانِيْنَ عَامًا (ذكره السخاوى من عدة روايات ضعيفة بالفاظ مختلفة)

4. अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि मुझ पर दरूद पढ़ना पुल सिरात पर गुज़रने के वक़्त नूर है और जो शख़्स जुमा के दिन अस्सी दफ़ा मुझ पर दरूद भेजे, उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे।

फ़— अल्लामा सख़ावी रह० ने 'क़ौले बदीअ' में इस हदीस को मुतअद्दिद रिवायात से, जिन पर ज़ोफ़ का हुक्म भी लगाया है, नक़्ल किया, और साहिबे इत्तिहाफ़ ने भी शरह एह्या में इस हदीस को मुख़्तलिफ़ तुरुक़ से नक़्ल किया है और मुहद्दिसीन का क़ायदा है, ज़ईफ़ रिवायत, बिल ख़ुसूस, जब कि वह मुतअद्दिद तुरुक़ से नकल की जाये, फ़ज़ाइल में मोतबर होती है, ग़ालिबन इसी वजह से 'जामिउलस्सग़ीर' में अबुहुरैरा रज़ि० की इस हदीस पर हसन की अलामत लगाई है मुल्ला अलीक़ारी रह० ने शरह शिफ़ा में जामिउस्सग़ीर के हवाले से ब-रिवायत तबरानी व दारेक़ुत्नी इस हदीस को नक़्ल किया है।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि यह हदीस हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत से भी नक़्ल की जाती है और हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की एक हदीस में यह नकल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले 80 मर्तबा यह दरूद शरीफ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا.

(अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि-निन्नबीयिल् उम्मीयि व अला आलिही व सल्लिम तस्लीमा०) उसके 80 साल के गुनाह माफ़ होंगे और 80 साल की इबादत का सवाब उसके लिए लिखा जायेगा।

दारेक़ुत्नी की एक रिवायत में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़्ल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन मुझ पर 80 मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े, उस के 80 साल

के गुनाह माफ़ किये जायंगे। किसी ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! दरूद किस तरह पढ़ा जाये ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

(अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दि क व नबीयि क व रसूलि क-न्नबीयिल उम्मीयि०) और यह पढ़ कर एक उंगली बंद कर ले। उंगली बंद करने का मतलब यह है कि उंगलियों पर शुमार किया जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उंगलियों पर गिनने की तर्ग़ीब वारिद हुई है और इर्शाद हुआ है कि उंगलियों पर गिना करो, इसलिए कि क़यामत में उन को गोयाई[1] दी जायेगी और उनसे पूछा जायेगा, जैसा कि 'फ़ज़ाइले ज़िक्र' की फ़स्ल दोम की हदीस न० 18 में यह मज़्मून तफ़्सील से ज़िक्र किया जा चुका हम लोग अपने हाथों से सैकड़ों गुनाह करते हैं, जब क़यामत के दिन पेशी के वक़्त में हाथ और उंगलियां वह हजारों गुनाह गिनवायें, जो उन से ज़िंदगी में किये गये हैं, तो उनके साथ कुछ नेकियां भी गिनवायें, जो उन से की गई हैं या उन से गिनी गयी हैं। दारे क़ुत्नी की इस रिवायत को हाफ़िज़ इराक़ी रह० ने हसन बतलाया है।

हज़रत अली रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन सौ मर्तबा दरूद पढ़े, उसके साथ क़यामत के दिन एक ऐसी रोशनी आयेगी कि अगर उस रोशनी को सारी मख़्लूक़ पर तक़्सीम किया जाये, तो सबको काफ़ी हो जाये।

हज़रत सह्ल बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से नक़्ल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

('अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदि-नि-न्नबीयिल उम्मीयि व अला आलिही व सल्लिम') 80 दफ़ा पढ़े, उस के 80 साल के गुनाह माफ़ हों।

अल्लामा सख़ावी रह० ने एक दूसरी जगह हज़रत अनस रज़ि० की एक हदीस से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजे और वह क़ुबूल हो जाये, तो उस के 80 साल के गुनाह माफ़ होते हैं।

हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने 'ज़ादुस्सईद' में ब-हवाला 'दुर्रे मुख़्तार' अस्बहानी से भी हज़रत अनस रज़ि० की इस हदीस को नक़्ल फ़र्माया है।

अल्लामा शामी रह० ने इस पर तवील बहस की है कि दरूद शरीफ़ में भी मक़्बूल और ग़ैर मक़्बूल होते हैं या नहीं।

शेख़ अबूसुलैमान दारानी रह० से नक़ल किया है कि सारी इबादतों में मक़्बूल और मरदूद[1] होने का एहतमाल है, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० पर तो दरूद शरीफ़ क़ुबूल ही होता है और भी बाज़ सूफ़िया से यही नक़ल किया है।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۔ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन,।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी ।।

(٥) عَنْ رُوَيْفِعِ بْنِ ثَابِتِ الْاَنْصَارِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِيْ. (رواه البزار والطبرانی فی الاوسط وبعض اسانيدهم حسن كذا فی الترغيب)

5. हज़रत रुवैफ़अ रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करते हैं, जो शख़्स इस तरह कहे-अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अन्ज़िल्हुल् मक़्अदल् मुक़र्र ब अिन्दि क यौमल क़ियामति० उस के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जाती है।

फ़— दरूद शरीफ़ के अल्फ़ाज़ का तर्जुमा यह है- 'ऐ अल्लाह! आप (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दरूद भेजिए और उन को क़यामत के दिन ऐसे मुबारक ठिकाने पर पहुंचाइए, जो आपके नज़दीक मुक़र्रब हो।'

उलमा के मक़्अद मुक़र्रब यानी मुक़र्रब ठिकाने में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि मुह्तमल[2] है कि इससे वसीला मुराद हो या मक़ामे महमूद या आप का अर्श पर तश्रीफ़ रखना या आप का वह मक़ामे आली, जो सब से आला व अर्फ़अ[3] है। 'हिर्ज़े समीन, में लिखा है कि मक़्अद को मुक़र्रब के साथ इसलिए मौसूफ़ किया है कि जो शख़्स इसमें होता है, वह मुक़र्रब होता है, इस वजह से गोया उस मकान ही को मुक़र्रब क़रार दिया और इसके मिस्दाक़ में अलावा उन अक़्वाल के, जो सख़ावी रह० से गुज़रे हैं कि कुर्सी पर तश्रीफ़ फ़र्मा

1. जिसे रद्द कर दिया गया हो, 2. इसका एहतमाल है, 3. सब से ऊंचा।

होने का इज़ाफ़ा किया है।

मुल्ला अलीकारी रह० कहते हैं कि मक्अद मुक़र्रब से मुराद मक़ामे महमूद है, इसलिए कि रिवायत में 'यौमल क़ियामति' का लफ़्ज़ ज़िक्र किया गया है और बाज़ रिवायात में 'अल-मुक़र्रब अिन्द क फ़िल् जन्नति' यानी वह ठिकाना, जो जन्नत में मुक़र्रब हो। उस बिना पर इससे मुराद वसीला होगा, जो जन्नत के दरजात में सब से आला दर्जा है।

बाज़ उलमा ने कहा है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए दो मक़ाम अलाहिदा-अलाहिदा हैं। एक मक़ाम तो वह है जब कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शफ़ाअत के मैदान में अर्शे मुअल्ला के दायीं जानिब होंगे, जिस पर अव्वलीन व आख़िरीन सब को रश्क होगा।

और दूसरा आपका मक़ाम जन्नत में, जिसके ऊपर कोई दर्जा नहीं।

बुख़ारी शरीफ़ की एक बहुत तवील हदीस में जिस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बहुत तवील ख़्वाब जिस में हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने दोज़ख़-जन्नत वग़ैरह और ज़िनाकार, सूद ख़्वार वग़ैरह लोगों के ठिकाने देखे, उसके अख़ीर में है कि फिर वह दोनों फ़रिश्ते मुझे एक घर में ले गये, जिस से ज़्यादा हसीन और बेहतर मकान मैंने नहीं देखा था। इसमें बहुत से बूढ़े और जवान, औरतें और बच्चे थे, इसके बाद वहां से निकाल कर मुझे वह एक दरख़्त पर ले गये, वहां एक मकान पहले से भी बढ़िया था, मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि पहला मकान आम मुसलमानों का है और यह शुह्दा[1] का। इसके बाद उन्होंने कहा, ज़रा ऊपर सर उठाइये, तो मैंने सर उठा कर देखा, तो एक अब्र सा नज़र आया। मैंने कहा कि मैं इसको भी देख लूं। उन दोनों फ़रिश्तों ने कहा कि अभी आप की उम्र बाक़ी है, जब पूरी हो जायेगी, जब आप उसमें तश्रीफ़ ले जाएंगे।

दरूद शरीफ़ की मुख़्तलिफ़ अहादीस में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ पर शफ़ाअत वाजिब होने का वायदा पहले भी गुज़र चुका, आइंदा भी आ रहा है। किसी क़ैदी या मुज्रिम को अगर यह मालूम हो जाये कि हाकिम के यहां फ़्लां शख़्स का असर है और उसकी सिफ़ारिश हाकिम के यहां बड़ी वक़ीअ[3] होती है, तो उस सिफ़ारिशी की ख़ुशामद में कितनी दौड़-धूप की जाती है। हम में से कौन सा ऐसा है जो बड़े से बड़े गुनाह का मुज्रिम नहीं और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा

---

1. शहीदों का, 2. बादल, 3. यानी मोतबर होती है,

सिफ़ारिशी, जो 'अल्लाह का हबीब', सारे रसूलों और तमाम मख़्लूक़ का सरदार, वह कैसी आसान चीज़ पर अपनी सिफ़ारिश का वायदा और वायदा भी ऐसा मुअक्कद[1] फ़र्माते हैं कि मुझ पर उसकी सिफ़ारिश वाजिब है, फिर भी अगर कोई शख़्स इससे फ़ायदा न उठाये तो किस क़दर ख़सारे की बात है, लग्वियात[2] में औक़ात ज़ाया करते हैं, फ़िज़ूल बातों बल्कि ग़ीबत वग़ैरह गुनाहों में क़ीमती औक़ात को बरबाद करते हैं, इन औक़ात को दरूद शरीफ़ में अगर ख़र्च किया जाये, तो कितने फ़वाइद हासिल हों–

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ﴿ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब द न
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

٦ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَالَ جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ اَتْعَبَ سَبْعِيْنَ كَاتِبًا اَلْفَ صَبَاحٍ۔
(رواه الطبرانی فی الكبير و الاوسط كذا فی الترغيب وبسط السخاوی فی تخريجه ولفظه اتعب سبعين ملكا الف صباح)

6. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं, जो शख़्स यह दुआ करे– जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदममा हु व अह्लुहू (अल्लाह) जल्ल शानुहू जज़ा दे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हम लोगों की तरफ़ से, जिस बदले के वह (मुस्तहिक़ हैं) तो इसका सवाब सत्तर फ़रिश्तों को एक हज़ार दिन तक मशक़्क़त में डालेगा।

फ़– 'नुज़हतुल् मजालिस' में ब रिवायत तब्रानी हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स सुबह-शाम यह दरूद पढ़ा करे–

اَللّٰهُمَّ رَبَّ مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاجْزِ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا هُوَ اَهْلُهٗ

अल्लाहुम्म रब्ब मुहम्मदिन सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिंव व ज़्ज़ि मुहम्मदन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमा मा हु व अह्लुहू०

---

1. ताकीद किया हुआ, 2. फ़िज़ूल बातें,

वह इसका सवाब लिखने वालों को एक हज़ार दिन तक मशक़्क़त में डाले रखेगा, 'मशक़्क़त में डालेगा' का मतलब यह है कि वह एक हज़ार दिन तक उसका सवाब लिखते-लिखते थक जायेंगे।

बाज़ उलमा ने 'जिस बदले के वह मुस्तहिक़ हैं, की जगह जो बदला अल्लाह की शान के मुनासिब है, लिखा है, यानी जितना बदला अता करना तेरी शायाने शान हो, वह अता फ़र्मा और अल्लाह तआला की शान के मुनासिब बिल्-ख़ुसूस अपने महबूब के लिए ज़ाहिर है कि बे-इन्तिहा होगा।

हज़रत हसनबसरी रह० से एक तवील दरूद शरीफ़ के ज़ेल में नक़ल किया गया है कि वह अपने दरूद शरीफ़ में यह अल्फ़ाज़ भी पढ़ा करते थे-

وَاجْزِهِ عَنَّا خَيْرَ مَا جَزَيْتَ نَبِيًّا عَنْ أُمَّتِهٖ

वज़िही अन्ना ख़ैर र मा जज़ै त नबीयन अन उम्मतिहि०

(ऐ अल्लाह ! हुज़ूर सल्ल० को हमारी तरफ़ से उस से ज़्यादा बेहतर बदला अता फ़र्माइए, जितना किसी नबी को उसकी उम्मत की तरफ़ से आप ने अता फ़र्माया।)

एक और हदीस में नक़ल किया गया है, जो शख़्स यह अल्फ़ाज़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًا وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ
وَالْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَاجْزِهٖ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ وَاجْزِهٖ عَنَّا مِنْ اَفْضَلِ
مَا جَزَيْتَ نَبِيًّا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصَّالِحِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहद्दिंव्व अला आलि मुहम्मदिन सलाततकूनु ल क रिज़ंव्व लिहक़्क़िही अदा अंव्व अअ्तिहिल वसील त वल् मकामल् मह्मूदल्लज़ी वअत्तहू वज़िही अन्ना मा हु व अह्लुहू वज़िही अन्ना मिन अफ़ज़लि मा जज़ैत नबीयन अन उम्मति ही व सल्लि अला जमीअि इख़्वानिही मिन्ननबीयी न वस्सालिहीन या अर्हमर्राहिमीन०

जो शख़्स सात जुमे तक हर जुमे को सात मर्तबा इस दरूद को पढ़े उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब है। एक अल्लामा जो इब्नुल् मुश्तहिर के नाम से मश्हूर हैं, यों कहते हैं कि जो शख़्स यह चाहता हो कि अल्लाह जल्ले शानुहू की ऐसी हम्द करे जो इस सब से ज़्यादा अफ़ज़ल हो, जो अब तक उसकी मख़्लूक़ में से किसी ने की हो, अव्वलीन व आख़िरीन और मलाइका मुक़र्रबीन, आसमान वालों और ज़मीन वालों से भी अफ़ज़ल हो और इसी तरह यह चाहे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम पर ऐसा दरूद शरीफ़ पढ़े जो उस सब से अफ़ज़ाल हो, जितने दरूद किसी ने पढ़ें हैं और इसी तरह यह भी चाहता हो कि अल्लाह तआला शानुहू से कोई ऐसी चीज मांगे जो उस सबसे अफ़ज़ाल हो, जो किसी ने मांगी हो, तो वह यह पढ़ा करे–

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَافْعَلْ بِنَا مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَاِنَّكَ اَنْتَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

अल्लाहुम्म लकल्हम्दु कमा अं त अह्लुहू फ़सल्लि अला मुहम्मदिन कमा अंत अह्लुहू वफ़अल बिना मा अंत अह्लुहू फ़इन्न क अन्त अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल् मग़्फ़िरति०

तर्जुमा– ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए हम्द है जो तेरी शान के मुनासिब है, पस तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेज जो तेरी शान के मुनासिब है और हमारे साथ भी वह मामला कर, जो तेरी शाया ने शान हो। बेशक तू ही इसका मुस्तहिक़ है कि तुझ से डरा जाये और मग़्फ़िरत करने वाला है।'

अबुल फ़ज़्ल कुमानी रह० कहते हैं कि एक शख़्स ख़ुरासान से मेरे पास आया और उसने यह बयान किया कि मैं मदीना पाक में था। मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की, तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझ से यह इर्शाद फ़र्माया, जब तू हमदान जावे तो अबुल फ़ज़्ल बिन जीरक को मेरी तरफ़ से सलाम कह देना। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! यह क्या बात है ? तो हुज़ूरे सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह मुझ पर रोज़ाना सौ मर्तबा या उस से भी ज़्यादा यह दरूद पढ़ा करता है–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ جَزَى اللّٰهُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि-नि-न्नबियिल उम्मीयि व अला आलि मुहम्मदिन जज़ल्लाहु मुहम्मदन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्ना मा हु व अह्लुहू०

अबुलफ़ज़्ल रह० कहते हैं कि उस शख़्स ने क़सम खायी कि वह मुझे या मेरे नाम को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़्वाब में बताने से पहले नहीं जानता था। अबुल्फ़ज़्ल रह० कहते हैं, मैंने उसको कुछ ग़ल्ला देना चाहा तो उसने यह कह कर इंकार कर दिया कि मैं हुज़ूरे अक्दस सल्ल० के पयाम को बेचता नहीं। (यानी उसका कोई मुआवज़ा नहीं लेता) अबुलफ़ज़्ल रह० कहते हैं कि इसके बाद फिर मैंने उस शख़्स को नहीं देखा। (बदीअ़)

इस नौअ का एक दूसरा क़िस्सा हिकायात में नं० 39 पर आरहा है।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क खैरिल खल्कि कुल्लिहिमी ।।

(۷) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُوْلُوْا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ ثُمَّ صَلُّوْا عَلَيَّ فَاِنَّهٗ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلٰوةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا ثُمَّ سَلُوا اللّٰهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ فَاِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لَا تَنْبَغِيْ اِلَّا لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللّٰهِ وَاَرْجُوْ اَنْ اَكُوْنَ اَنَا هُوَ فَمَنْ سَاَلَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ، رواه مُسْلِمٌ وَاَبُوْدَاؤد والترمذى كذا فى الترغيب

7. हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नकल करते हैं कि जब तुम अज़ान सुना करो तो जो अल्फ़ाज़ मुअज़्ज़िन कहे, वही तुम कहा करो, इसके बाद मुझ पर दरूद भेजा करो, इसलिए कि जो शख्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजता है, अल्लाह जल्ले शानुहू उस पर दस दफ़ा दरूद भेजते हैं। फिर अल्लाह जल्ले शानुहू से मेरे लिए वसीला की दुआ किया करो। वसीला जन्नत का एक दर्जा है, जो सिर्फ़ एक ही शख्स को मिलेगा और मुझे उम्मीद है कि वह एक शख्स में ही हूं, पस जो शख्स मेरे लिए अल्लाह से वसीले की दुआ करेगा, उस पर मेरी शिफ़ाअत उतर पड़ेगी।

फ़- उतर पड़ेगी का मतलब यह है कि मुहक्कक[1] हो जायेगी इसलिए कि बाज़ रिवायात में उसकी जगह यह इर्शाद है कि उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जायेगी।

बुखारी शरीफ़ की एक हदीस में यह है कि जो शख्स अज़ान सुने और यह दुआ पढ़े- اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ वतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मद निल्-वसील त वल् फ़ज़ील त वब्असहू मकामम्महमूद-निल्लज़ी वअत्तहू० उसके लिए मेरी शफ़ाअत उतर जाती है। हजरत अबू दर्दा रज़ि० से नकल किया गया है कि जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ान सुनते, तो खुद भी यह दुआ पढ़ते- اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰتِهٖ سُؤْلَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

1. यानी उस को मेरी शफ़ाअत मिलनी यकीनी हो जायेगी,

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअवतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ा इमति सल्लि अला मुहम्मदिंव्व आति ही सुअ् लहू यौमल् क़ियामति० और हुज़ूरे सल्ल० इतनी* आवाज से पढ़ा करते थे कि पास वाले उसको सुनते थे और भी मुतअद्दिद अहादीस से अल्लामा सख़ावी रह० ने यह मज़्मून नक़ल किया है और हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का यह इर्शाद नक़्ल किया है कि जब तुम मुझ पर दरूद पढ़ा करो, तो मेरे लिए वसीला भी मांगा करो। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वसीला क्या चीज़ है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जन्नत का आला दर्जा है जो सिर्फ़ एक ही शख़्स को मिलेगा और मुझे यह उम्मीद है कि वह शख़्स मैं ही हूंगा।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि वसीला के असली मानी लुग़त में तो वह चीज़ है कि जिसकी वजह से किसी बादशाह या किसी बड़े आदमी की बारगाह में तक़र्रुब हासिल किया जाये, लेकिन इस जगह एक आली दर्जा मुराद है जैसा कि ख़ुद हदीस में वारिद है कि वह जन्नत का एक दर्जा है और क़ुरआन पाक की आयत–

वब्तग़ू इलैहिल् वसील त وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ

में अइम्मा-ए-तफ़्सीर[1] के दो क़ौल हैं–

1. एक तो यह कि इस से वही तक़र्रुब मुराद है, जो ऊपर गुज़रा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि०, मुजाहिद, अता वग़ैरह से यही क़ौल नक़ल किया गया है। क़तादा रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की तरफ़ तक़र्रुब हासिल करो, उस चीज़ के साथ, जो उसको राज़ी कर दे। वाहिदी रह०, बग़वी रह०, ज़मख़्शरी रह० से भी यही नक़ल किया गया है कि वसीला हर वह चीज़ है, जिससे तक़र्रुब हासिल किया जाता हो, क़राबत हो या कोई अमल और इस क़ौल में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए से तवस्सुल[2] हासिल करना भी दाख़िल है।

अल्लामा जज़्री रह० ने 'हिस्ने हसीन' में आदाब दुआ' में लिखा है–

وَاَنْ يَّتَوَسَّلَ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِاَنْبِيَآئِهٖ خ ر مس وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِهٖ خ

व अंय्य त वस्स ल इलल्लाहि तआला बिअम्बियाइही (ख़ र मस) वस्सलिही न मिन अिबादिही (ख़)

यानी तवस्सुल हासिल करे अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ उसके अंबिया

---

1. तफ़्सीर के इमाम, 2. वसीला,

के साथ, जैसा कि बुख़ारी, मस्नद, बज़्ज़ार और हाकिम की रिवायत से मालूम होता है और अल्लाह के नेक बंदों के साथ, जैसा कि बुख़ारी से मालूम होता है, अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं।

2. और दूसरा क़ौल आयते शरीफ़ा मे यह है कि इससे मुराद मुहब्बत है यानी अल्लाह के महबूब बनो, जैसा कि मावरदी रह० वग़ैरह ने अबूज़ैद से नकल किया है और हदीस पाक में फ़ज़ीलत से मुराद वह मर्तबा-ए-आलिया[1] है, जो सारी मख़्लूक़ से ऊंचा हो और एहतमाल है कोई और मर्तबा मुराद हो या वसीले की तफ़्सीर हो और मक़ामे महमूद वही है, जिसको अल्लाह जल्ले शानुहू ने अपने पाक कलाम में सूरः बनी इस्राईल में इर्शाद फ़र्माया है عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا

असा अंय्यब् अ स क रब्बु क मक़ामम् महमू दा०

तर्जुमा– 'उम्मीद है कि पहुंचायेंगे आपको आपके रब मक़ामे महमूद में।' मक़ामे महमूद, की तफ़्सीर में उलमा के चंद अक़्वाल हैं, यह कि वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी उम्मत के उपर गवाही देना है और कहा गया है कि हम्द का झंडा जो क़यामत के दिन आप को दिया जायेगा, मुराद है। और बाज़ ने कहा है अल्लाह जल्ले शानुहू आपको क़यामत के दिन अर्श पर और बाज़ ने कहा, कुर्सी पर बिठाने को कहा है।

इब्ने जौज़ी रह० ने इन दोनों क़ौलों को बड़ी जमाअत से नकल किया है और बाज़ों ने कहा कि इससे मुराद शफ़ाअत है, इसलिए कि वह ऐसा मक़ाम है कि उसमें अव्वलीन व आख़िरीन सभी आपकी तारीफ़ करेंगे।

अल्लामा सख़ावी रह० अपने उस्ताद हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० की इत्तिबाअ में कहते हैं, इन अक़्वाल में कोई मुनाफ़ात[1] नहीं, इस वास्ते कि एहतमाल है अर्श व कुर्सी पर बिठाना शफ़ाअत की इजाज़त की अलामत हो और जब हुज़ूर अक़्दस सल्ल० वहां तश्रीफ़ फ़र्मा हो जायें, तो अल्लाह जल्ले शानुहू उनको हम्द का झंडा अता फ़र्मायें और इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत पर गवाही दें।

इब्ने हब्बान की एक हदीस में हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ि० से हुज़ूर अक़्दस सल्ल० का इर्शाद नकल किया गया है कि अल्लाह जल्ले शानुहू क़यामत के

---

1. ऊंचा मर्तबा,

इब्ने हब्बान की एक हदीस में हज़रत कअ्ब बिन मालिक रज़ि॰ से हुज़ूर अक्दस सल्ल॰ का इर्शाद नकल किया गया है कि अल्लाह जल्ले शानुहू क़यामत के दिन लोगों को उठायेंगे, फिर मुझे एक सब्ज जोड़ा पहनायेंगे, फिर मैं कहूंगा जो अल्लाह चाहें, पस यही मक़ामे महमूद है।

हाफ़िज इब्ने हज्र रह॰ कहते हैं कि 'फिर मैं कहूंगा' से मुराद वह हम्द व सना है, जो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शफ़ाअत से पहले कहेंगे और मक़ामे महमूद उन सब चीजों के मज्मूए का नाम है, जो उस वक्त में पेश आयेंगी। हुज़ूर सल्ल॰ के इस इर्शाद का मतलब है कि मैं वह कहूंगा, जो अल्लाह तआला चाहेंगे, हदीस की किताबों बुख़ारी, मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरह में शफ़ाअत की तवील हदीस में हज़रत अनस रज़ि॰ से नकल किया गया है, जिसमें यह मज़्कूर है कि जब मैं अल्लाह तआला की ज़ियारत करूंगा, तो सज्दे में गिर जाऊंगा, अल्लाह जल्ल शानुहू मुझे सज्दे में जब तक चाहेंगे, पड़ा रहने देंगे। इसके बाद अल्लाह जल्ले शानुहू का इर्शाद होगा, मुहम्मद सल्ल॰ सर उठाओ और कहो, तुम्हारी बात सुनी जायेगी, सिफ़ारिश करो, क़ुबूल की जायेगी, मांगो तुम्हारा सवाल पूरा किया जायेगा। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माते हैं, इस पर मैं सज्दे से सर उठाऊंगा, फिर अपने रब की वह हम्द व सना करूंगा जो उस वक्त मेरा रब मुझे इल्हाम[1] करेगा, फिर मैं उम्मत के लिए सिफ़ारिश करूंगा। बहुत लम्बी हदीस सिफ़ारिश की है, जो मिश्कात में भी मज़्कूर है-

हां, हां, इजाज़त है तुझे, आ आज इज़्ज़त है तुझे।
जेबा शफ़ाअत है तुझे, बेशक यह है हिस्सा तेरा।।

यहां एक बात क़ाबिले लिहाज है कि ऊपर की दुआ में 'अलवसी ल त वल् फ़ज़ी ल त के बाद वद्द र ज तर्रफ़ीअ त' का लफ़्ज भी मशहूर है। मुहद्दिसीन फ़र्माते हैं कि यह लफ़्ज इस हदीस में साबित नहीं, अलबत्ता बाज रिवायात में, जैसा कि 'हिस्न हसीन' में भी है, इसके अख़ीर में–

इन्न क ला तुख़्लिफ़ुल् मी आद॰ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ का इज़ाफ़ा है-

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ÷ عَلَىٰ حَبِيبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन,।

1. टकराव.

अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी ।।

(٨) عَنْ اَبِیْ حُمَیْدٍ اَوْ اَبِیْ اُسَیْدٍ السَّاعِدِیِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذَا دَخَلَ اَحَدُکُمْ فِی الْمَسْجِدِ فَلْیُسَلِّمْ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ثُمَّ لِیَقُلْ اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ وَاِذَا خَرَجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَلْیُسَلِّمْ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ثُمَّ لِیَقُلْ اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِکَ اَخْرَجَہٗ اَبُوْعَوَانَۃَ فِیْ صَحِیْحِہٖ وَاَبُوْدَاوٗدَ وَالنَّسَائِیُّ وَابْنُ خُزَیْمَۃَ وَابْنُ حِبَّانَ فِیْ صَحِیْحِھِمَا کَذَا فِی الْبَدِیْعِ۔

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब तुम में से कोई शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ करे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम भेजा करे, फिर यों कहा करें– 'अल्लाहुम्मफ़्तह ली अब्वा ब रह्मति क' (ऐ मेरे अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। और जब मस्जिद से निकला करे, तब भी नबी (करीम) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम भेजा करे और यों कहा करे– अल्लाहुम्मफ़्तह ली अब्वाब फ़ज़्लिक' (ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपने फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) के दरवाज़े खोल दे।

फ़– मस्जिद में जाने के वक़्त रहमत के दरवाज़े खुलने की वजह यह है कि जो मस्जिद में जाता है, वह अल्लाह की इबादत में मशग़ूल होने के लिए जाता है, वह अल्लाह की रहमत का ज़्यादा मुहताज है कि वह अपनी रहमत से इबादत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, फिर उसको क़ुबूल फ़रमाये।

'मज़ाहिरे हक़ में लिखा है दरवाज़े रहमत के खोल ब सबब बरकत इस मकान शरीफ़ के या ब सबब तौफ़ीक़ देने नमाज़ की इस में या ब सबब खोलने हक़ायक़ नमाज़ के और मुराद फ़ज़्ल से रिज़्क़ हलाल है कि बाद निकलने के नमाज़ से उसकी तलब को जाता है।

इसमें क़ुरआन पाक की इस आयत की तरफ़ इशारा है जो सूरः जुमा में वारिद है

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوۃُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰہِ۔

फ़ इज़ा क़ुज़ि य तिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल् अर्ज़ि वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाह

अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत अली रज़ि० की हदीस से नक़ल किया है कि जब मस्जिद में दाख़िल हुआ करो, तो हुज़ूर सल्ल० पर दरूद भेजा करो और हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मस्जिद में दाख़िल होते, तो दरूद व सलाम भेजते मुहम्मद पर (यानी ख़ुद अपने ऊपर) और फिर यों

1. यानी मेरे दिल में डाल देगा,

फ़र्माते–

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह ली अब्वा ब रह्मा तिक और जब मस्जिद से निकलते, तब भी अपने ऊपर दरूद व सलाम भेजते और फ़र्माते–

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ूनूबी वफ़्तह ली अब्बा ब फ़ज़्लिक॰

हज़रत अनस रज़ि॰ इर्शाद फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मस्जिद में दाख़िल होते तो पढ़ा करते–

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद॰

और जब बाहर तशरीफ़ लाते, तब भी यही पढ़ा करते–

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

बिस्मिलाहि अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद॰

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने नवासे हज़रत हसन रज़ि॰ को यह दुआ सिखलाई थी कि जब वह मस्जिद में दाख़िल हुआ करें, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा करें और यह दुआ पढ़ा करें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَافْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

'अल्लाहुम्मग़्फ़िर लना ज़ुनू ब ना वफ़्तह लना अब्बा ब रह्मतिक' और जब निकला करें, तब भी यही दुआ पढ़ें और 'अब् वा ब रह्मति क की जगह 'अब्वा ब फ़ज़्लि क' पढ़ें।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि॰ से हुज़ूरे सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि जब कोई शख़्स तुम में से मस्जिद में जाया करे तो हुज़ूर सल्ल॰ पर सलाम पढ़ा करे और यों कहा करे अल्लहुम इफ़्ताहलि अब्वा ब रहमितिक और जब मस्जिद से निकला करे तो हुज़ूर सल्ल॰ पर सलाम पढ़ा करे और यों कहा करे।

اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِیْ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ

अल्लाहुम अ्सिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम

हज़रत कअ़ब ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ि॰ से कहा कि में तुझे दो बातें बताता हूं, उन्हें भूलना मत।

एक यह कि जब मस्जिद में जाए तो हुज़ूरे सल्ल॰ पर दरूद भेजे और यह दुआ पढ़े–

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मफ़तह ली अब्बा ब रह्मतिक

और जब बाहर निकले (मस्जिद से), तो यह दुआ पढ़ा करे–

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَاحْفَظْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वह्फ़ज़नी मिनश्शैतानिर्रजीम॰

और भी बहुत से सहाबा रज़ि॰ और ताबिईन रह॰ से यह दुआएं नकल की गयी हैं।

साहिबे हिस्न हसीन रह॰ने मस्जिद में जाने की और मस्जिद से निकलने की मुतअद्दिद दुआऐं मुख़्तलिफ़ अहादीस से नकल की है।

अबूदाऊद शरीफ़ की रिवायत से मस्जिद में दाख़िल होने के वक़्त यह दुआ नकल की है–

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊ़ज़ु बिल्लाहिल् अ़ज़ीमि व बिवज्हिहिल करीमि व सुल्तानिहिल् क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम॰

'मैं पनाह मांगता हूं उस अल्लाह के ज़रिए से, जो बड़ी अज़्मत वाला है और उसकी करीम ज़ात के ज़रिए से और उसकी क़दीम बादशाहत के ज़रिए से शैतान मरदूद के हमले से।'

'हिस्ने हसीन' में तो इतना ही है, लेकिन अबूदाऊद में इसके बाद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पाक इर्शाद भी नकल किया है कि जब आदमी यह दुआ पढ़ता है, तो शैतान यों कहता है कि मुझ से तो यह शख़्स शाम तक के लिए महफ़ूज हो गया। इसके बाद साहिबे हिस्न मुख़्तलिफ़ अहादीस से नकल करते हैं कि जब मस्जिद में दाख़िल हो तो–

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व स्सलामु अला रसूलिल्लाहि॰ कहे। एक और हदीस में-

وَعَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

व अला सुन्नति रसूलिल्लाह

है और एक हदीस में - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंन अला आलि मुहम्मदिन और मस्जिद में दाख़िल होने के बाद اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन॰ पढ़े और जब मस्जिद से निकलने लगे, जब भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम पढ़े-

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि॰ और एक हदीस में-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंन अला आलि मुहम्मदिन अल्लाहुम्मअ़सिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम॰ है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ، عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

9. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की तमन्ना कौन-सा मुसलमान ऐसा होगा, जिसको न हो, लेकिन इश्क़ व मुहब्बत के बक़द्र उसकी तमन्नाएं बढ़ती रहती हैं और अकाबिर व मशाइख़ ने बहुत से आमाल और बहुत से दरूदों के मुताल्लिक़ अपने तजुर्बात तहरीर किये हैं कि उन पर अमल से सैयदुल् कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत नसीब हुई।

अल्लामा सख़ावी रह॰ ने क़ौले बदीअ़ में ख़ुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी एक इर्शाद नक़ल किया है-

مَنْ صَلّٰى عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِى الْاَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ فِى الْقُبُوْرِ

मन सल्ला अला रूहि मुहम्मदिन फ़िल् अर्वाहि व अला ज स दिही फ़िल अज्सादि व अला क़ब्रिही फ़िल क़ुबूरि०

'जो शख़्स रूहे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अर्वाह में और आप के जस दे अतहर पर बदनों में और आपकी क़ब्रे मुबारक पर क़ुबूर में दरूद भेजेगा वह मुझे ख़्वाब में देखेगा।'

और जो मुझे ख़्वाब में देखेगा, वह क़यामत में देखेगा और जो मुझे क़यामत में देखेगा मैं उसकी सिफ़ारिश करूंगा और जिसकी मैं सिफ़ारिश करूंगा, वह मेरी हौज़ से पानी पियेगा और अल्लाह जल्ले शानुहू उसके बदन को जहन्नुम पर हराम फ़र्मा देंगे।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते है कि अबुल क़ासिम बस्ती रह० ने अपनी किताब में यह हदीस नक़ल की है, मगर मुझे अब तक उसकी असल नहीं मिली। दूसरी जगह लिखते हैं, जो शख़्स यह इरादा करे कि नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखे, वह यह दरूद पढ़े।[1]

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَآ اَمَرْتَنَآ اَنْ نُّصَلِّيَ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कमा अमर्तना अन् नुसल्लि य अलैहि अल्लाहुम्म सल्लि मुहम्मदिन कमा हु व अह्लुहू अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व तर्ज़ा०

जो शख़्स इस दरूद शरीफ़ को ताक़ अदद के मुवाफ़िक़ पढ़ेगा, वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत करेगा और उस पर इसका इज़ाफ़ा भी करना चाहिए–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَرْوَاحِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ
فِي الْاَجْسَادِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِي الْقُبُوْرِ

अल्लाहुम्म सल्लि अला रूहि मुहम्मदिन फ़िल् अर्वाहि अल्लाहुम्म सल्लि अला ज स दि मुहम्मदिन फ़िल् अज्सादि अल्लाहुम्म सल्लि अला क़ब्रि मुहम्मदिन फ़िल् क़ुबूरि०

---

1. यानी जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत करना चाहता हो, यह दरूद शरीफ़ पढ़े, 2. बहुत मीठा,

हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू 'ज़ादुस्सईद' में तहरीर फ़र्माते हैं कि सब से ज़्यादा लज़ीज़ तर और शीरीं तर ख़ासियत दरूद शरीफ़ की यह है कि इसकी बदौलत उश्शाक़ को ख़्वाब में हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दौलते ज़ियारत मयस्सर हुई है। बाज़ दरूदों को बिल् ख़ुसूस बुज़ुर्गों ने आज़माया है।

शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने किताब 'तर्ग़ीब अह्लिस्सआदात' में लिखा है कि शबे जुमा में दो रक्अत नमाज़ नफ़्ल पढ़े और हर रक्अत में ग्यारह बार आयतल् कुर्सी और ग्यारह बार कुल्हुवल्लाहु और बाद सलाम सौ बार यह दरूद शरीफ़ पढ़े, इन्शाअल्लाह तीन जुमे न गुज़रने पायेंगे कि ज़ियारत नसीब होगी। वह दरूद शरीफ़ यह है-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि-नि-न्नबीयिल् उम्मीयि व आलिही व अस्हाबिही व सल्लि०

दीगर शेख़ मौसूफ़ ने लिखा है कि जो शख़्स दो रक्अत नमाज़ पढ़े और हर रक्अत में बाद अल्हम्दु के पचीस बार क़ुल्हुवल्लाहु और बाद सलाम के यह दरूद शरीफ़ हज़ार मर्तबा पढ़े, दौलते-ज़ियारत नसीब हो, वह यह है-

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ۔ सल्लल्लाहु अलन्नबीयिल् उम्मीय०

दीगर– नीज़ शेख़ मौसूफ़ ने लिखा है कि सोते वक़्त सत्तर बार इस दरूद को पढ़ने से ज़ियारत नसीब हो-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَحْرِ اَنْوَارِكَ وَمَعْدَنِ
اَسْرَارِكَ وَلِسَانِ حُجَّتِكَ وَعَرُوْسِ مَمْلَكَتِكَ وَاِمَامِ حَضْرَتِكَ وَطِرَازِ
مُلْكِكَ وَخَزَائِنِ رَحْمَتِكَ وَطَرِيْقِ شَرِيْعَتِكَ الْمُتَلَذِّذِ بِتَوْحِيْدِكَ اِنْسَانِ
عَيْنِ الْوُجُوْدِ وَالسَّبَبِ فِىْ كُلِّ مَوْجُوْدٍ عَيْنِ اَعْيَانِ خَلْقِكَ الْمُتَقَدِّمِ مِنْ نُوْرِ
ضِيَائِكَ صَلٰوةً تَدُوْمُ بِدَوَامِكَ وَتَبْقٰى بِبَقَائِكَ لَا مُنْتَهٰى لَهَا دُوْنَ عِلْمِكَ،
صَلٰوةً تُرْضِيْكَ وَتُرْضِيْهِ وَتَرْضٰى بِهَا عَنَّا يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बह्रि अन्वारि क व मअ़दिनि अस्रारि क व लिसानि हुज्जति क व अ़ुरुसि मम्लकति क व इमामि हज़्रति क व तराज़िमुल्मि क व ख़ज़ाइनि रह्मति क व तरीक़ि शरिअतिकल् मु त लज़्ज़िज़ बितौ

---

1. गुनाहों।

हीदि क इन्सानु ऐनिल् वुजूदि वस्स ब बु फ़ी कुल्लि मौजूदिन ऐनू अअयानि ख़ल्किकल् मु त क़दि्दमु मिन् नूरि ज़िया इ क स ल वातन तदूमु बिदवामि क व तब्क़ा बिबक़ाइ क ला मुन्तहा लहा दू न अिल्मि क स ल वातन तुर्ज़ी क व तुर्ज़ी हि व तर्ज़ा बिहा अन्ना या रब्बल् आलमीन०

दीगर– इसको भी सोते वक़्त चन्द बार पढ़ना ज़ियारत के लिए शेख़ रह० ने लिखा है–

अल्लाहुम्म रब्बल् हिल्लि वल् हरामि व रब्बल् बैतिल् हरामि व रब्बर् रुक्नि वल् मक़ामि अब्लिग़ लिरूहि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन मिन्नस्सलाम० मगर बड़ी शर्त इस दौलत के हुसूल में क़ल्ब का शौक़ से पुर होना और ज़ाहिरी व बातिनी मासियतों[1] से बचना है।

हमारे हज़रत शेख़ुल मशाइख़, क़ुत्बुल इर्शाद शाह वसीयुल्लाह नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने अपनी किताब 'नवादिर' में बहुत से मशाइख़ तसव्वुफ़ और अब्दाल के ज़रिए से हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम से मुतअद्दिद आमाल नक़ल किये हैं। अगरचे मुहद्दिसाना हैसियत से उन पर कलाम है, लेकिन कोई फ़िक़्ही मस्अला नहीं जिसमें दलील और हुज्जत की ज़रूरत हो, मुबश्शरात[2] और मनामात[3] हैं। मिन्जुमला इनके लिखा है कि अब्दाल में से एक बुज़ुर्ग ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम से दर्ख़्वास्त की कि मुझे कोई अमल बताइए जो मैं रात में किया करूं। उन्होंने फ़र्माया कि मग़रिब से इशा तक नफ़्लों में मशग़ूल रहा कर, किसी शख़्स से बात न कर, नफ़्लों की दो-दो रक्अत पर सलाम फेरता रहा कर और हर रक्अत में एक मर्तबा सूर: फ़ातिहा और तीन मर्तबा क़ुलहुवल्लाहु पढ़ता रहा कर, इशा के बाद भी बग़ैर बात किए अपने घर चला जा और वहां जाकर दो रक्अत नफ़्ल पढ़, हर रक्अत में एक दफ़ा सूर: फ़ातिहा और सात मर्तबा क़ुलहुवल्लाहु नमाज़ का सलाम फेरने के बाद एक सज्दा कर, जिस में सात दफ़ा इस्तग़फ़ार, सात मर्तबा दरूद शरीफ़ और सात दफ़ा–

سُبْحَانَ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि लाइला ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर लाहौ ल व ला क़ू व त इल्ला बिल्लाहि०

फिर सज्दे से सर उठा कर दुआ के लिए हाथ उठा और यह दुआ पढ़–

1. बशारतें, ख़ुशख़बरी, 2. ख़्वाब में आने वाली अच्छी चीज़ें, 3. कोशिश से हासिल।

या हय्यु या क़य्यूमु या ज़ल् जलालि वल् इक्रामि या इलाहल् अव्वली न वल् आख़िरी न या रह्मानुद्दुन्या वल आख़िरति व रही म हुमा या रब्बि या रब्बि या रब्बि या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु०

फिर इसी हाल में हाथ उठाये हुए खड़ा हो और खड़े होकर फिर यही दुआ पढ़, फिर दायीं करवट पर क़िब्ले की तरफ मुंह करके लेट जा और सोने तक दरूद शरीफ़ पढ़ता रह। जो शख़्स यकीन और नेक नीयती के साथ इस अमल पर मुदावमत करेगा, मरने से पहले हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को ज़रूर ख़्वाब में देखेगा। बाज़ लोगों ने इसका तजुर्बा किया। उन्होंने देखा कि वह जन्नत गये, वहां अंबिया-ए-किराम और सय्यदुल कौनन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई और उन से बात करने का शर्फ़ हासिल हुआ। इस अमल के बहुत से फ़ज़ाइल हैं, जिन को हम ने इख़्तिसारन छोड़ दिया। और भी मुतअद्दिद अमल इस नौअ के हज़रत पीरानेपीर रहमतुल्लाहि अलैहि से नकल किये हैं।

अल्लामा दिम्यरी रह० ने हयातुल् हयवान में लिखा है कि जो शख़्स जुमा के दिन जुमा की नमाज़ के बाद बा वुज़ू एक पर्चे पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अहमद रसूलुल्लाह पैंतीस मर्तबा लिखे और इस पर्चे को अपने साथ रखे, अल्लाह जल्ले शानुहू उसको ताअत पर क़ुव्वत अता फ़र्माता है और उसकी बरकत में मदद फ़र्माता है और शयातीन के वसाविस से हिफ़ाज़त फ़र्माता है और अगर इस पर्चे को रोज़ाना तुलूए आफ़्ताब के वक़्त दरूद शरीफ़ पढ़ते हुए ग़ौर से देखता रहे तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत ख़्वाब में कसरत से हुआ करे।

तंबीह– ख़्वाब में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हो जाना बड़ी सआदत है, लेकिन दो अम्र क़ाबिले लिहाज़ हैं–

1. अव्वल वह जिस को हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने 'नशरुत्तीब' में तहरीर फ़र्माया है। हज़रत रह० तहरीर फ़र्माते हैं, 'जानना चाहिए कि जिस को बेदारी में यह शर्फ़ नसीब नहीं हुआ, उसके लिए बजाये इसके ख़्वाब में ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो जाना सरमाया-ए-तसल्ली फ़ी नफ़्सिही एक नेमते उज़्मा, दौलते कुबरा है और इस सआदत में इक्तिसाब[1] को अस्लन दख़ल नहीं, महज़ मौहूब[2] है व लिनिअ्म मा क़ील।

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا إِلٰهَ الْأَوَّلِيْنَ وَالْآخِرِيْنَ

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا اَللّٰهُ

1. देन, बख़्शिश, 2. यानी यह चीज़ हासिल हो जाती है,

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त
ता न बख़्शाद ख़ु दा ए बख़्शंदा।

तर्जुमा— किसी ने क्या ही अच्छा कहा कि यह सआदत क़ूव्वते बाज़ू से नहीं हासिल होती है, जब तक अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ से अता और बख़्शिश न हो।

हज़ारों की उम्रें इस हसरत में ख़त्म हो गई। अलबत्ता ग़ालिब यह है कि कसरते दरूद शरीफ़ व कमाले इत्तिबाए सुन्नत व ग़ल्बा-ए-मुहब्बत पर इसका तरत्तुब[1] हो जाता है लेकिन चूंकि लाज़िमी और कुली नहीं इसलिए इसके न होने से मग़मूम व महज़ून[2] न होना चाहिए कि बाज़ के लिए इसी में हिकमत व रहमत है, आशिक़ को रज़ा-ए-महबूब से काम, ख़्वाह वस्ल हो तब, हिज्र हो तब, व लिल्लाहि द र मन क़ाल-

أريد وصاله ويريد هجري ... فأترك ما أريد لما يريد

उरिदु विसा ल हू व युरीदु हिज्री
फ़ अतरुक मा उरीदु लिमा युरीदु

(और अल्लाह ही के लिए ख़ूबी है उस कहने वाले की, जिसने कहा कि मैं उसका विसाल चाहता हूं और वह मुझ से फ़िराक़ चाहता है। मैं अपनी ख़ुशी को उसकी ख़ुशी के मुक़ाबले में छोड़ता हूं)।

क़ालल् आरिफ़ुश्शीराज़ी-

फ़िराक़ व वस्ल च बाशद रज़ा-ए-दोस्त तलब
कि हैफ़ बाशद अज़ो ग़ैर ऊ तमन्ना ए।

तर्जुमा— आरिफ़ शीराज़ी फ़रमाते हैं, फ़िराक़ व वस्ल क्या होता है, महबूब की रज़ा ढूंढ कि महबूब से उसकी रज़ा के सिवा तमन्ना करना ज़ुल्म है।

इसी से यह भी समझ लिया जाये कि अगर ज़ियारत हो गयी, मगर ताअत से रज़ा हासिल न की, तो वह काफ़ी न होगी। क्या ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्दे मुबारक में बहुत से सूरतन ज़ाइर[3], मानन महजूर और बाज़े सूरतन महजूर जैसे उवैस क़रनी मानन क़ुर्ब से मसरूर थे, यानी हुज़ूरे अक़्दस

---

1. ग़मगीन दुखी, 2. यानी सूरत में तो देखते थे, मगर अन्दर से दूर थे, 3. यानी शक्ल में भी हिज्र के शिकार,

सल्ल० के पाक ज़माने में कितने लोग ऐसे थे कि जिन्को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर वक़्त ज़ियारत होती थी, लेकिन अपने कुफ़्र व निफ़ाक़ की वजह से जहन्नुमी रहे और और हज़रत उवैस क़र्नी रज़ि० मशहूर ताबई है, अकाबिर सूफ़िया में हैं। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मुसलमान हो चुके थे। लेकिन अपनी वालिदा की ख़िदमत की वजह से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर न हो सके लेकिन इसके बावजूद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से इनका ज़िक्र फ़र्माया और यह भी इर्शाद फ़र्माया कि जो तुम में से उन से मिले, वह उन से अपने लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत कराये-

एक रिवायत में हज़रत उमर रज़ि० से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल० ने उनसे हज़रत उवैस रह० के मुताल्लिक़ फ़र्माया कि अगर वह किसी बात पर क़सम खा बैठें, तो अल्लाह उसको ज़रूर पूरा करे। तुम उनसे दुआ-ए-मग़फ़िरत कराना (असाबा)-

गो थे उवैस दूर मगर हो गये क़रीब,
बू जह्ल था क़रीब, मगर दूर हो गया।

2. दूसरा अम्र क़ाबिले तंबीह यह है कि जिस शख़्स ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा, उसने यक़ीनन और क़तअन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की ज़ियारत की। रिवायते सहीहा से यह बात साबित है और मुहक़्क़क़ है कि शैतान को अल्लाह तआला ने यह क़ुदरत अता नहीं फ़र्मायी कि वह ख़्वाब में आकर किसी तरह अपने आपको नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होना ज़ाहिर करे, मसलन यह कहे कि मैं नबी हूं या ख़्वाब देखने वाला शैतान को नऊज़ुबिल्लाह नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समझ बैठे। इसलिए यह तो नहीं हो सकता, लेकिन इसके बावजूद अगर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी असली हैअत[1] में न देखे यानी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी हैअत और हुलिया में देखे, जो शाने अक्दस सल्ल० के मुनासिब न हो, तो वह देखने वाले का क़ुसूर होगा, जैसा कि किसी शख़्स की आंख पर सुर्ख़ या सब्ज़ या स्याह ऐनक लगा दी जाये, तो जिस रंग की आंख पर ऐनक होगी, उसी रंग की सब चीज़ें नज़र आयेंगी[2], इसी तरह भेंगे को एक के दो नज़र आते हैं। अगर नये टाइम पीस की लंबाई में कोई शख़्स अपना चेहरा देखे, तो इतना लंबा नज़र

---

1. शक्ल, 2. क्योंकि देखने वालों के जैसे अमल अच्छे-बुरे होते हैं, वैसे उस को आप की ज़ियारत होती है।

आयेगा कि हद नहीं। और अगर उस की चौड़ाई में अपना चेहरा देखे, तो ऐसा चौड़ा नजर आयेगा कि खुद देखने वाले को अपने चेहरे पर हंसी आ जायेगी। इसी तरह से अगर ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई इर्शाद शरीअते मुतह्हरा के ख़िलाफ़ सुने, तो वह मुहताजे ताबीर[1] है। शरीअत के ख़िलाफ़ उस पर अमल करना जायज़ नहीं, चाहे कितने ही बड़े शेख़ और मुक़्तदा[2] का ख़्वाब हो, मस्लन कोई शख़्स देखे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी नाजायज़ काम के करने की इजाज़त या हुक्म दिया तो वह दर हक़ीक़त हुक्म नहीं, बल्कि डांट है। जैसा कोई शख़्स अपनी औलाद को किसी बुरे काम को रोके और वह मानता न हो, तो उसको तंबीह के तौर पर कहा जाता है कि कर, और कर, यानी इस का मज़ा चखाऊंगा। और इसी तरह से कलाम के मतलब का समझना, जिसको ताबीर कहा जाता है, यह भी एक दक़ीक़ फ़न[3] है।

'तातीरुल् अनाम फ़ी ताबीरिल् मनाम[4]' में लिखा है, एक शख़्स ने ख़्वाब में यह देखा कि उस से एक फ़रिश्ते ने यह कहा कि तेरी बीवी तेरे फ़लां दोस्त के ज़रिए तुझे ज़हर पिलाना चाहती है। एक साहब ने उस की ताबीर यह दी और वह सही थी कि तेरी बीवी उस फ़लां से ज़िना करती है, इसी तरह और बहुत से वाक़िआत इस क़िस्म के फ़ने ताबीर की किताबों में लिखे हैं।

मज़ाहिरे हक़ में लिखा है कि इमाम नववी रह० ने लिखा है कि सही यही है कि जिसने हुज़ूर सल्ल० को ख़्वाब में देखा, उसने आं-हज़रत सल्ल० ही को देखा, ख़्वाह आप की सिफ़ते मारूफ़ा[5] पर देखा हो या इसके अलावा, और इख़्तिलाफ़ और तफ़ावुत सूरतों का ब-एतबारे कमाल व नुक़्सान देखने वाले के है। जिसने हज़रत सल्ल० को अच्छी सूरत में देखा, ब-सब-ब कमाले दीन अपने को देखा और जिस ने बर-ख़िलाफ़ इसके देखा, ब-सबबे नुक़्सान अपने दीन के देखा। इसी तरह एक ने बुड्ढा देखा, एक ने जवान और एक ने राज़ी और एक ने ख़फ़ा, यह तमाम मब्नी है, ऊपर इख़्तिलाफ़े हाल देखने वाले के। पस देखना आं हज़रत सल्ल० का गोया कसौटी है, मारफ़त अह्वाल देखने वाले के और इसमें ज़ाब्ता-ए-मुफ़ीदा है सालिकों के लिए कि इससे अह्वाल अपने बातिन का मालूम करके इलाज उसका करें। और इसी क़यास पर बाज़ अरबाबे तम्कीन ने कहा कि जो कलाम आं-हज़रत सल्ल० से ख़्वाब में सुने तो उस को सुन्नते क़वीमा पर अर्ज़ करें[6], अगर मुवाफ़िक़ है तो हक़

---

1. यानी उस सपने का फल बताने की ज़रूरत है, 2. जिस की पैरवी की जाये, 3. बारीक कला, 4. स्वप्न फल बताने वाली एक किताब का नाम, 5. जानी-पहचानी ख़ूबियां, या मशहूर और अमल हालत में, 6. यानी शरीअत के हुक्मों से मिला कर देखे।

है और अगर मुख़ालिफ़ है, तो बसबबे ख़लल सामिआ[1] उसी के है, पस रूअया-ए-ज़ाते करीमा और उस चीज का कि देखी या सुनी जाती है, हक़ है और जो तफ़ावुत और इख़्तिलाफ़ से है, तुझ से है।

हज़रत शेख़ अली मुत्तक़ी रह० नक़ल करते थे कि एक फ़क़ीर ने फ़ुक़रा-ए-मग़्रिब[2] से आं-हज़रत सल्ल० को ख़्वाब में देखा कि उस को शराब पीने के लिए फ़र्माते हैं। उसने वास्ते रफ़अ इस इश्काल के उलमा से इस्तिफ़्ता किया कि हक़ीक़ते हाल क्या है। हर एक आलिम ने मह्मिल और तावील[3] उस की बयान की। एक आलिम थे मदीना में निहायत मुत्तबओ सुन्नत[4], उनका नाम शेख़ मुहम्मद अरात था। जब वह इस्तफ़्ता उनकी नजर से गुज़रा, फ़र्माया, यों नहीं, जिस तरह उसने सुना है। आं-हज़रत सल्ल० ने उस को फ़र्माया कि 'ला तश्रबिल् ख़म्र' यानी शराब न पिया कर, उसने ला तश्रब को 'इश्रब' सुना। हज़रत शेख़ (अब्दुल हक़ रह०) ने इस मक़ाम को तफ़्सील से लिखा है और मैंने मुख़्तसर (इंतिहा मुख़्तसिरन बतग़ैयुर)। जैसा कि हज़रत शेख़ रह० ने फ़र्माया कि ला तश्रब को इश्रब सुन लिया, मुह्तमल है, लेकिन जैसा इस नाकारा ने ऊपर लिखा, अगर इश्रबिल् ख़म्र ही फ़र्माया हो यानी पी शराब, तो यह धमकी भी हो सकती है, जैसा कि लहजे के फ़र्क़ से इस क़िस्म की चीजों में फ़र्क़ हो जाया करता है। सहारनपुर से दिल्ली जाने वाली लाइन पर आठवां स्टेशन खातौली है। मुझे ख़ूब याद है कि बचपन में मैं जब इब्तिदाई सर्फ़ व नह्व[5] पढ़ता था और उस स्टेशन पर गुज़र होता था, तो उसके मुख़्तलिफ़ मानी बहुत देर तक दिल में घूमा करते थे, यह मज़्मून मुख़्तसर तौर पर रिसाला 'फ़ज़ाइले हज' और 'शिमाइले तिर्मिज़ी' के तर्जुमा 'ख़साइल'[5] में भी गुज़र चुका।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

10. हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने 'ज़ादुस्सईद' में दरूद व सलाम की एक चहल हदीस तह्रीर फ़र्मायी है और उसी से 'नश्रुत्तीब' में भी हवालों के हज़्फ़ के साथ नक़ल फ़र्मायी है। इसको इस रिसाले में तर्जुमे के इज़ाफ़े के साथ नक़ल किया जाता है ताकि वह बरकत हासिल हो, जो हज़रत रह० ने तह्रीर फ़र्मायी है। 'ज़ादुस्सईद' में हज़रत रह० ने तह्रीर फ़र्माया है कि यों तो मशाइख़े किराम रह०

---

1. अगर शरीअत के ख़िलाफ़ पाये तो समझे वह फ़र्क़ है मेरे सुनने का, 2. मग़्रिबी मुल्क के किसी फ़क़ीर में से, 3. मौक़ा और मतलब, 4. सुन्नत पर अमल करने वाले, 5. अरबी क़वायद (व्याकरण),

सदहा[1] सीगे[2] इसके मंकूल हैं, 'दलाइलुल् खैरात' इसका एक नमूना है, मगर इस मकाम पर सिर्फ़ जो सीगे सलात व सलाम के अहादीसे मर्फ़ूआ हक़ीक़ीया या हुक्मिया में वारिद हैं, उनमें से चालीस सीगे मर्कूम[3] होते हैं जिस में 25 सलात और 15 सलाम के हैं, गोया यह मज्मूआ दरूद शरीफ़ की चहल हदीस है, जिस के बाब में यह बशारत आयी है कि जो शख़्स अम्रे दीन के मुताल्लिक चालीस हदीसें मेरी उम्मत को पहुंचा दे, उस को अल्लाह तआला ज़ुमरा-ए-उलमा[4] में महशूर[5] फ़रमायेंगे[6] और मैं उसका शफ़ीअ हूंगा।

दरूद शरीफ़ का अम्र दीन से होना ब वजह उसका मामूर बिहि होने के ज़ाहिर है, तो इन अहादीस शरीफ़ के जमा करने से मुज़ाअफ़ सवाब (अज्रे दरूद व अज्रे तब्लीग़ चहल हदीस) की तवक़्क़ो[7] है। इन अहादीस से क़ब्ल दो सीगे क़ुरआन मजीद से तबर्रुना[8] लिखे जाते हैं, जो अपने उमूमे लफ़्ज़ी[9] से सलाते नबवीया को भी शामिल हैं। अगर कोई शख़्स इन सब सीगों को रोज़ाना पढ़ लिया करे, तो तमाम फ़ज़ाइल व बरकात, जो जुदा-जुदा हर सीगे के मुताल्लिक है, व तमामहा[9] उस शख़्स को हासिल हो जाएं।

सीग़ा-ए-क़ुरआनी

سَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِيْنَ

1. सलाम नाज़िल हो अल्लाह के बर्गुज़ीदा बंदों पर।
2. सलाम हो रसूलों पर। سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ

चहल हदीस मुश्तमिल बर सलात व सलाम (ब-इज़ाफ़ा तर्जुमा) सियगे सलात

(1) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ.

1. ऐ अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले मुहम्मद पर दरूद नाज़िल फ़र्मा और आप को ऐसे ठिकाने पर पहुंचा, जो तेरे नज़दीक मुक़र्रब हो।

---

1. 'ख़साइले नबवी' लेखक की एक किताब का नाम है, 2. सैकड़ों, 3. अल्फ़ाज़, 4. लिखे जाते हैं, 5. उलमा की सफ़ में, 6. हश्र फ़रमायेंगे, 7. शफ़ाअत करने वाला, 8. बरकत के तौर पर, 9. यानी अल्फ़ाज़ आम होने की वजह से,

٢- اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الْقَائِمَةِ وَالصَّلٰوةِ النَّافِعَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ ارْضَ عَنِّيْ رِضًا لَّا تَسْخَطُ بَعْدَهٗ اَبَدًا۔

2. ऐ अल्लाह ! (क़यामत तक) क़ायम रहने वाली उस पुकार और नाफ़ेअ नमाज़ के मालिक ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैयिदिना मुहम्मद सल्ल० पर और मुझ से इस तरह राज़ी हो जा कि इसके बाद कभी नाराज़ न हो।

٣- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ۔

3. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैयिदिना मुहम्मद सल्ल० पर, जो तेरे बंदे और रसूल हैं और दरूद नाज़िल फ़र्मा सारे मोमिनीन और मोमिनात और मुस्लिमीन और मुस्लिमात पर।

٤- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّاٰلَ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ وَرَحِمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

4. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद सल्ल० और आले सैयिदिना मुहम्मद पर और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैयिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सयिदिना मुहम्मद पर और रहमत नाज़िल फर्मा सैयिदिना मुहम्मद और आले सैयिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तूने दरूद व बरकत व रहमत सैयिदिना इब्राहीम व आले सैयिदिना इब्राहीम पर नाज़िल फ़र्माया। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٥- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

5. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैयिदिना मुहम्मद और आले सैयिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तू ने दरूद नाज़िल फ़र्माया आले सैयिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! बरकत नाज़िल फ़र्मा सैयिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैयिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तू ने सैयिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٦- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

---

1. यानी सब और तमाम, 2. सलात के सीगे.

6. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० पर, जैसा कि तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया आले सैय्यिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्मायी सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٧- اللهم صل على محمد وعلى
آل محمد كما صليت على إبراهيم
إنك حميد مجيد اللهم بارك على
محمد وعلى آل محمد كما
باركت على إبراهيم إنك
حميد مجيد۔

7. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जिस तरह तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया सैय्यिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तू ने सैय्यिदिना इब्राहीम पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٨- اللهم صل على محمد وعلى
آل محمد كما صليت على إبراهيم
وعلى آل إبراهيم إنك حميد
مجيد وبارك على محمد وعلى
آل محمد كما باركت على إبراهيم
إنك حميد مجيد۔

8. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया सय्यिदिना इब्राहीम और आले सैय्यिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़र्मायी सैय्यिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात[1] बुज़ुर्ग है।

٩- اللهم صل على محمد وعلى آل على آل محمد كما باركت
آل محمد كما صليت على على إبراهيم إنك حميد
إبراهيم وبارك على محمد مجيد۔

9. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया सैय्यिदिना इब्राहीम पर। और बरकत

---

1. अच्छी सिफ़तों का मालिक है,

नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तू ने सैय्यिदिना इब्राहीम पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١٠- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

10. ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तू ने दरूद नाज़िल फ़र्माया सैय्यिदिना इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जैसा कि तू ने सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी, बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١١- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ فِي الْعٰلَمِيْنَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

11. ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तूने आले सैय्यिदिना इब्राहीम पर दरूद नाज़िल फ़र्माया और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तूने सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। सारे जहानों में बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١٢- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ
وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ
وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

12. ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात और ज़ुर्रीयात[1] पर, जिस तरह तूने सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़र्माया और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आप की अज़्वाजे

1. औलाद,

मुतह्हरात और ज़ुरींयात पर, जिस तरह तू ने सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात वाला बुज़ुर्ग है।

١٣- اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اَزْوَاجِهٖ وَ ذُرِّيَّتِهٖ كَمَا
صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَزْوَاجِهٖ
وَ ذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

13. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आप की अज़्वाजे मुतह्हरात और आप की ज़ुरींयात पर, जैसा तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया आले इब्राहीम पर और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात और आपकी ज़ुरींयात पर, जैसा कि तूने आले इब्राहीम पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١٤- اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ
وَ اَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ
وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ
مَّجِيْدٌ۔

14. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा नबी अकरम की की सैय्यिदिना मुहम्मद पर और आप की अज़्वाजे मुतह्हरात पर जो सारे मुसलमानों को मायें हैं और आप की ज़ुरींयात और आप के अह्ले बैत पर जैसा तूने सैय्यिदिना इब्राहीम पर दरूद नाज़िल फ़र्माया, बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١٥- اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ
تَرَحَّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا تَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ۔

15. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर जिस तरह तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया सैय्यिदिना इब्राहीम और आले सैय्यिदिना इब्राहीम पर और बरकत नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर जिस तरह तूने बरकत नाज़िल फ़र्मायी हज़रत इब्राहीम पर और रहमत भेज सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर जिस तरह तू ने रहमत भेजी सैय्यिदिना इब्राहीम पर और सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर।

١٦- اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ مَجِيْدٌ. اللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ اَللّٰهُمَّ تَرَحَّمْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا تَرَحَّمْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ اَللّٰهُمَّ تَحَنَّنْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا تَحَنَّنْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا سَلَّمْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

16. ऐ अल्लाह ! सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर दरूद नाज़िल फ़र्मा, जिस तरह तूने हजरत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़र्माया। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! सैय्यिदिना मुहम्मद और सय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मा, जिस तरह तूने सैय्यिदिना इब्राहीम और सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! रहमत भेज, सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर, जिस तरह तूने सैय्यिदिना इब्राहीम और सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर रहमत भेजी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर मुहब्बत आमेज़ शफ़क़त[1] फ़र्मा, जिस तरह तू ने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर मुहब्बत आमेज़ शफ़क़त फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! सलाम भेज सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० की औलाद पर, जिस तरह तू ने हजरत इब्राहीम और हजरत इब्राहीम की औलाद पर सलाम भेजा। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

١٧ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا

1. मुहब्बत की मेरबानी,

صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ وَتَرَحَّمْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ فِى الْعٰلَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

17. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की आल पर और बरकत व सलाम भेज सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर और रहमत फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर जैसा तू ने दरूद बरकत और रहमत नाज़िल फ़र्मायी सैय्यिदिना इब्राहीम और आले सैय्यिदिना इब्राहीम पर, सारे जहानों में बेशक तू सतूदा सिफ़ात वाला बुज़ुर्ग है।

١٨۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

18. ऐ अल्लाह ! सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़रमा, जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़र्माया। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! सय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मा, जिस तरह तू ने सय्यिदिना इब्राहीम और सैय्यिदिना इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी, बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

यह नमाज़ वाला मशहूर दरूद है। फ़सले सानी की हदीस (1) में इस पर मुफ़स्सल कलाम गुज़र चुका है। 'ज़ादुस्सईद' में लिखा है कि यह सब सीग़ों से बढ़ कर सही है। एक ज़रूरी बात क़ाबिले तंबीह यह है कि ज़ादुस्सईद के हवालों में कातिब की ग़लती से तक़द्दुम तअख़्ख़ुर[1] हो गया इसका लिहाज़ रहे।

١٩۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ۔

19. ऐ अल्लाह ! अपने बंदे और रसूल सैय्यिदिना मुहम्मद पर दरूद नाज़िल फ़र्मा, जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़र्माया और सैय्यिदिना मुहम्मद और आले सैय्यिदिना मुहम्मद पर बरकत नाज़िल फ़र्मा, जिस तरह

1. यानी आगे का पीछे और पीछे का आगे हो गया है,

तू ने हज़रत इब्राहीम की औलाद पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी।

٢٠- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

20. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा नबी-ए-उम्मी सैयिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर, जिस तरह तूने हजरत इब्राहीम पर दरूद फ़र्माया और बरकत नाज़िल फ़र्मा नबी-ए-उम्मी सैय्यिदिना मुहम्मद पर, जिस तरह तूने हजरत इब्राहीम पर बरकत नाज़िल फ़र्मायी। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٢١- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًى وَّلَهٗ جَزَاءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَاجْزِهٖ اَفْضَلَ مَا جَازَيْتَ نَبِيًّا عَنْ قَوْمِهٖ وَرَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصّٰلِحِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔

21. ऐ अल्लाह ! अपने (बुर्गुज़ीदा) बंदे और अपने रसूल नबी-ए-उम्मी सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर दरूद नाज़िल फ़र्मा। ऐ अल्लह ! सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर ऐसा दरूद नाज़िल फ़र्मा, जो तेरी रज़ा का ज़रिया हो और हुज़ूर सल्ल० के लिए पूरा बदला हो और आप के हक़ की अदाएगी हो और आप को वसीला और फ़ज़ीलत और मक़ामे महमूद, जिसका तूने वायदा किया है, अता फ़र्मा।[1] इन तीनों का बयान फसले सानी की हदीस नं०-7 पर गुज़र गया और हुज़ूर को हमारी तरफ़ से ऐसी जज़ा[2] अता फ़र्मा, जो आपकी शाने आली के लायक़ हो और आपको इन सब से अफ़ज़ल बदला अता फ़र्मा, जो तूने किसी नबी को उसकी क़ौम की तरफ़ से और किसी रसूल को उसकी उम्मत की तरफ़ से अता फ़र्माया और हुज़ूर सल्ल० के तमाम बिरादरान अंबिया व सालिहीनपर, ऐ अर्हमर्राहिमीन! दरूद नाज़िल फ़र्मा।

٢٢- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

---

1. इन तीनों का बयान फ़स्ले सानी की हदीस 7 पर गुज़र गया, 2. अच्छा बदला,

22. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा नबी-ए-उम्मी सैय्यिदिना मुहम्मद पर और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर, जैसा तूने दरूद नाज़िल फ़र्माया हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर और बरकत नाज़िल फ़र्मा नबी-ए-उम्मी सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर जैसा तूने बरकत नाज़िल फ़र्मायी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

٢٣- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى
اَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلَيْنَا مَعَهُمْ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓى اَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَيْنَا مَعَهُمْ صَلَوٰتُ
اللّٰهِ وَصَلَوَاتُ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مُحَمَّدِ
نِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ.

23. ऐ अल्लाह ! दरूद नाज़िल फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद पर और आप के घर वालों पर, जैसा तूने हज़रत इब्राहीम पर दरूद नाज़िल फ़र्माया। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! हमारे ऊपर इन के साथ दरूद नाज़िल फ़र्मा। ऐ अल्लाह ! बरकत नाज़िल फ़र्मा सय्यिदिना मुहम्मद पर और आप के घर वालों पर जैसा तू ने बरकत नाज़िल फ़र्मायी हज़रत इब्राहीम पर। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! हमारे ऊपर इनके साथ[1] बरकत नाज़िल फ़र्मा, अल्लाह तआला के ब कसरत दरूद और मोमिनीन के ब कसरत दरूद नबी-ए-उम्मी सैय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हों।

٢٤- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوَاتِكَ وَرَحْمَتَكَ
وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا جَعَلْتَهَا عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

24. ऐ अल्लाह ! अपने दरूद और अपनी रहमत और अपनी बरकतें सैय्यिदिना मुहम्मद और सैय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर (नाज़िल) फ़र्मा, जैसा तू ने हज़रत इब्राहीम की औलाद पर फ़र्माया। बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है और बरकत फ़र्मा सैय्यिदिना मुहम्मद और सय्यिदिना मुहम्मद की औलाद पर, जैसा तू ने बरकत नाज़िल

---

1. यानी इनके साथ ही हमारे ऊपर भी बरकत नाज़िल फ़र्मा, 2. यानी सलाम के सीग़े,

फ़र्मायी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू सतूदा सिफ़ात बुज़ुर्ग है।

۲۵- وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ

सियग़ुस्सलाम[2]

25. और अल्लाह तआला दरूद नाज़िल फ़र्मायें नबी-ए-उम्मी पर।

۲۶- اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

26. सारी इबादाते क़ौलिया और इबादाते बदनिया और इबादाते मालिया अल्लाह तआला के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें आप पर नाज़िल हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं इस बात की शहादत देता हूं कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और शहादत देता हूं कि बेशक सैय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।

۲۷- اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوٰتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

27. सारी इबादाते क़ौलिया[1], इबादाते मालिया[2], इबादाते बदनिया[3] अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी ! आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें नाज़िल हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं गवाही देता हूं इस बात की अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और गवाही देता हूं कि बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और उस के रसूल हैं।

۲۸ اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوٰتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ

1. यानी ज़ुबानी इबादतें, 2. माली इबादतें, 3. वे इबादतें तो बदन से की जाती हैं,

عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

28. तमाम इबादाते कौलिया, मालिया, बदनिया, अल्लाह ही के लिए हैं। ऐ नबी ! आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें नाज़िल हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह तंहा है, उसका कोई शरीक नहीं है और शहादत देता हूं कि सैय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।

٢٩ اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوٰتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ سَلَامٌ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ سَلَامٌ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

29. सारी बा बरकत इबादाते कौलिया, इबादाते बदनिया, इबादाते मालिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं गवाही देता हूं कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि बेशक सैय्यिदिना, मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।

٣٠۔ بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَسْاَلُ اللّٰهَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ۔

30. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं और अल्लाह की तौफ़ीक़ से शुरू करता हूं सारी इबादाते कौलिया, इबादाते बदनिया, इबादाते मालिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर (भी) सलाम हो। मैं शहादत देता हूं कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और शहादत देता हूं कि बेशक सैय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। अल्लाह तआला से मैं जन्नत की दरख़्वास्त करता

हूं और जहन्नम से अल्लाह की पनाह चाहता हूं।

٣١- اَلتَّحِيَّاتُ الزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

31. पाकीज़ा इबादाते क़ौलिया, इबादाते मालिया, इबादाते बदनिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर (भी) सलाम हो। मैं शहादत देता हूं कि बेशक अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और शहादत देता हूं कि बेशक सैय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल है।

٣٢- بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَآءِ اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوٰتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَاهْدِنِيْ۔

32. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं और अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से, जो सारे नामों में सब से बेहतर नाम है, सारी इबादातें क़ौलिया इबादाते मालिया, इबादाते बदनिया अल्लाह के लिए हैं। मैं गवाही देता हूं कि बिला शक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह तंहा है, उसका कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि बिला शक सय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। आपको हक़ के साथ (फ़र्मांबरदारों के लिए) ख़ुशख़बरी देने वाला, (नाफ़र्मानों के लिए) डराने वाला बना कर भेजा और इस बात की गवाही देता हूं कि क़यामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं है। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। ऐ अल्लाह ! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा और मुझको हिदायत दे।

٣٣ اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ وَالصَّلَوٰتُ لِلّٰهِ وَالْمُلْكُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

33. सारी इबादाते क़ौलिया, इबादाते मालिया और इबादाते बदनिया और मुल्क अल्लाह के लिए है। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों।

٣٤- بِسْمِ اللهِ التَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الصَّلَوٰتُ لِلّٰهِ الزَّاكِيَّاتُ لِلّٰهِ السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْنَ شَهِدْتُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ شَهِدْتُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ۔

34. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं सारी इबादाते क़ौलिया अल्लाह के लिए है, सारी इबादाते बदनिया अल्लाह के लिए हैं, सारी पाकीज़ा इबादात अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो नबी पर और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैंने इस बात की गवाही दी कि बिला शक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैंने गवाही दी कि बिला शक सय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

٣٥- اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوٰتُ الزَّاكِيَّاتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْنَ۔

35. सारी इबादाते क़ौलिया, इबादाते मालिया, इबादाते बदनिया और सारी पाकीज़गियां अल्लाह के लिए हैं। मैं शहादत देता हूं कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तंहा है, उसका कोई शरीक नहीं और बेशक सय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हो। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदो पर।

٣٦ اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوٰتُ الزَّاكِيَّاتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْنَ۔

36. सारी इबादाते क़ौलिया, मालिया और इबादाते बदनिया और सारी पाकीज़गियां अल्लाह के लिए हैं। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि सय्यिदिना मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल

हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर।

٣٧ اَلتَّحِيَّاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ
رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ۔

37. तमाम इबादाते क़ौलिया, बदनिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर।

٣٨ اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا
النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ
الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

38. तमाम इबादाते क़ौलिया, बदनिया, मालिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत हो। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं गवाही देता हूं कि बिला शक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि सय्यिदिना मुहम्मद बे-शुबह अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।

٣٩۔ اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوٰتُ الطَّيِّبٰتُ
لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ
الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
رَّسُوْلُ اللّٰهِ۔

39. सारी बा बरकत इबादाते क़ौलिया, इबादाते बदनिया, इबादाते, मालिया अल्लाह के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर। मैं शहादत देता हूं कि बे-शुबह अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और शहादत देता हूं कि बेशक सय्यिदिना मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं।

٤٠۔ بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ۔

40. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं और सलाम हो अल्लाह के रसूल पर।

तक्मिला– अल्लामा सख़ावी रह० ने 'क़ौले बदीअ' में मुस्तक़िल एक बाब इन दरूदों के बारे में तहरीर फ़र्माया है जो औक़ाते मख़्सूसा[1] में पढ़े जाते हैं और उसमें यह मवाक़े गिनवाये हैं-

वुज़ू और तयम्मुम से फ़रागत पर और ग़ुस्ले जनाबत[2] और ग़ुस्ले हैज़[3] से फ़रागत पर, नीज नमाज़ के अन्दर और नमाज़ से फ़राग़[4] पर, और नमाज़ क़ायम होने के वक़्त[5] और उसका मुअक्कद होना, सुबह की नमाज़ के बाद, और मग़्रिब के बाद, और अत्तहीयात के बाद और क़ुनूत में, और तहज्जुद के लिए खड़े होने के वक़्त और उसके बाद और मसाजिद पर गुज़रने के वक़्त और मसाजिद को देख कर और मसाजिद में दाख़िल होने के वक़्त और मसाजिद से बाहर आने के वक़्त और अज़ान के जवाब के बाद, और जुमा के दिन में और जुमा की रात में और शंबा[6] को इतवार को, पीर[7] को, मंगल को और खुत्बे में जुमा के और दोनों ईदों के ख़ुत्बे में और इस्तिस्क़ा की नमाज़ के, और कुसूफ़ के और ख़ुसूफ़ के ख़ुत्बों में और ईदैन और जनाज़े की तक्बीरात के दर्मियान में और मय्यत के क़ब्र में दाख़िल करने के वक़्त और शाबान के महीने में और काबा शरीफ़ पर नज़र पड़ने के वक़्त और हज में सफ़ा मर्व: पर चढ़ने के वक़्त और लब्बैक से फ़रागत पर और हुजरे अस्वद के बोसा के वक़्त और मुल्तज़िम से चिमटने के वक़्त और अर्फ़े की शाम को, और मिना की मस्जिद में और मदीना मुनव्वरा पर निगाह पड़ने के वक़्त और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत के वक़्त और रुख़्सत[8] के वक़्त और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आसारे शरीफ़ा और गुज़रगाहों और क़यामगाहों जैसे बद्र वग़ैरह पर गुज़रने के वक़्त और जानवर को ज़िब्ह करने के वक़्त और तिजारत के वक़्त और वसीयत के लिखने के वक़्त निकाह के ख़ुत्बे में दिन के अव्वल-आख़िर में, सोने के वक़्त और सफ़र के वक़्त और सवारी पर सवार होने के वक़्त, और जिसको नींद कम आती हो उसके लिए और बाज़ार में जाने के वक़्त, दावत में जाने के वक़्त और घर में दाख़िल होने के वक़्त और रिसाले शुरू करने के वक़्त और बिस्मिल्लाह के बाद और ग़म के वक़्त बेचैनी के वक़्त, सख़्तियों के वक़्त और फ़क्र की हालत

---

1. ख़ास-ख़ास वक़्तों में, 2. नापाकी का नहान , 3. महावारी का नहान, 4. फ़ारिग़ होने के बाद, 5. यानी जमाअत खड़ी होते वक़्त, 6. सनीचर, 7. सोमवार , 8. यानी क़ब्रे अत्हर के पास से वापस होते वक़्त,

में और डूबने के मौक़े पर, और ताऊन के ज़माने में और दुआ के अव्वल और आख़िर और दर्मियान में, कान बजने के वक़्त, पांव सौनें के वक़्त छींक आने के वक़्त और किसी चीज़ को रखकर भूल जाने के वक़्त और किसी चीज़ के अच्छा लगने के वक़्त और मूली खाने के वक़्त और गधे के बोलने के वक़्त और गुनाह से तौबा के वक़्त और जब ज़रूरतें पेश आवें और हर हाल में और उस शख़्स के लिए, जिसको कुछ तोहमत लगायी गयी हो और वह उससे बरी हो और दोस्तों से मुलाक़ात के वक़्त और मज्मे के इज्तिमाअ के वक़्त और उनके अलाहिदा होने के वक़्त और क़ुरआन पाक के ख़त्म के वक़्त और क़ुरआन पाक के हिफ़्ज़ करने की दुआ में और मज्लिस से उठने के वक़्त और हर उस जगह में, जहां अल्लाह के ज़िक्र के लिए इज्तिमाअ किया जाता हो और हर कलाम के इफ़्तिताह में और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्रे मुबारक हो, इल्म की इशाअत के वक़्त हदीसे पाक की क़िरात के वक़्त , फ़त्वा और वाज़ के वक़्त और जब हुज़ूरे अक़्दस का नामे मुबारक लिखा जाये।

अल्लामा सख़ावी रह० ने औक़ाते मख़्सूसा के बाब में यह मवाक़े ज़िक्र किये है और फिर उनकी ताईद में रिवायात और आसार ज़िक्र किये हैं। इख़्तिसारन सिर्फ़ मवाक़े के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया गया, अलबत्ता इनमें से बाज़ की रिवायात इस फ़स्ल में ज़िक्र की जा चुकी हैं। अलबत्ता एक बात क़ाबिले तंबीह यह है कि अल्लामा सख़ावी रह० शाफ़ई -उल-मज़्हब हैं और यह सब मवाक़े शाफ़ई के यहां मुस्तहब हैं। हनफ़ीया के नज़दीक यहां चंद मवाक़े में मुस्तहब नहीं, बल्कि मकरूह है।

अल्लामा शामी रह० लिखते हैं कि दरूद शरीफ़ नमाज़ के क़ादा-ए-अख़ीर में मुत्लक़न और सुन्नतों के अलावा बक़ीया नवाफ़िल के क़ादा-ए-औला में भी और नमाज़े जनाज़ा में भी सुन्नत है और जिन औक़ात में भी पढ़ सकता हो, पढ़ना मुस्तहब है, बशर्ते कि कोई मानेअ न हो और उलमा ने तस्रीह की है इसके इस्तिह्बाब[1] की जुमा के दिन में और उसकी रात में और शंबे को इतवार को, जुमेरात को और सुबह-शाम और मस्जिद के दाख़िल होने में और निकलने में और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत के वक़्त और सफ़ा-मर्व: पर जुमा वग़ैरह के ख़ुत्बे में, अज़ान के जवाब के बाद और तक्बीर के वक़्त और दुआ मांगने के शुरू में, बीच में और अख़ीर में और दुआ-ए-क़ुनूत के बाद और लब्बैक से फ़राग़त के बाद और इज्तिमाअ और इफ़्तिराक़[2] के वक़्त, वुज़ू के वक़्त, कान

1. मुस्तहब होना, 2. मिलन और जुदाई,

के बजने के वक़्त और किसी चीज़ के भूल जाने के वक़्त, वाज़ के वक़्त, उलूम की इशाअत के वक़्त, हदीस की क़िरात की इब्तिदा में और इन्तिहा में, इस्तफ़्ता और फ़त्वा की किताबत[1] के वक़्त और हर मुसन्निफ़ और पढ़ने-पढ़ाने वाले के लिए और ख़तीब के लिए और मंगनी करने वाले के लिए, अपना निकाह करने वाले के लिए, दूसरे का निकाह करने वाले के लिए और रिसालों में और अहम उमूर के शुरू के वक़्त और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम लेने या सुनने या लिखने के वक़्त और सात औक़ात में दरूद शरीफ़ पढ़ना मक्रूह है–

सोहबत के वक़्त, पेशाब-पाख़ाना के वक़्त, बेचने की चीज़ की तश्हीर[2] के लिए, ठोकर खाने के वक़्त, ताज्जुब के वक़्त, जानवर के ज़िब्ह करने के वक़्त, छींक के वक़्त।

इसी तरह क़ुरआन पाक की क़िरात के दर्मियान में अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम आये, तो दर्मियान में दरूद शरीफ़ न पढ़े और चौथी फ़स्ल के आदाबे मुतफ़र्रिक़ा के नं० 5 पर भी इसके मुताल्लिक़ बाज़ मसाइल आ रहे हैं।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

तीसरी फ़स्ल

उन अहादीस के बयान में, जिनमें नबी करीम सल्ल० पर दरूद न पढ़ने की वईदें (धमकियां) वारिद हुई हैं

1. عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رضـ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُحْضُرُوا الْمِنْبَرَ فَحَضَرْنَا فَلَمَّا ارْتَقٰى دَرَجَةً قَالَ اٰمِيْنَ ثُمَّ ارْتَقَى الثَّانِيَةَ فَقَالَ اٰمِيْنَ ثُمَّ ارْتَقَى الثَّالِثَةَ ـــ

1. यानी किसी फ़त्वे का जवाब देते वक़्त, 2. प्रचार, प्रोपग्रंडा,

فَقَالَ اٰمِيْنَ فَلَمَّا نَزَلَ قُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ سَمِعْنَا مِنْكَ الْيَوْمَ شَيْئًا مَا كُنَّا نَسْمَعُهُ فَقَالَ اِنَّ جِبْرِيْلَ عَرَضَ لِيْ فَقَالَ بَعُدَ مَنْ اَدْرَكَ رَمَضَانَ فَلَمْ يُغْفَرْ لَهُ قُلْتُ اٰمِيْنَ فَلَمَّا رَقِيْتُ الثَّانِيَةَ قَالَ بَعُدَ مَنْ ذُكِرْتَ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْكَ فَقُلْتُ اٰمِيْنَ فَلَمَّا رَقِيْتُ الثَّالِثَةَ قَالَ بَعُدَ مَنْ اَدْرَكَ اَبَوَيْهِ الْكِبَرُ عِنْدَهُ اَوْ اَحَدَهُمَا فَلَمْ يُدْخِلَاهُ الْجَنَّةَ قُلْتُ اٰمِيْنَ.

رواه الحاكم وقال صحيح الاسناد والبخارى فى بـــر

1. हज़रत काब बिन उज्रा रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि मिम्बर के क़रीब हो जाओ हम लोग हाज़िर हो गये। जब हुज़ूर सल्ल० ने मिम्बर के पहले दर्जे पर क़दम मुबारक रखा, तो फ़र्माया, आमीन, जब दूसरे पर क़दम रखा, तो फिर फ़र्माया, आमीन, जब तीसरे पर क़दम रखा, तो फिर फ़र्माया, आमीन। जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ होकर नीचे उतरे, तो हमने अर्ज किया कि हम ने आज आप से (मिंबर पर चढ़ते हुए) ऐसी बात सुनी, जो पहले कभी नहीं सुनी। आप ने इर्शाद फ़र्माया कि इस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे सामने आये थे (जब पहले दर्जे पर मैंने क़दम रखा, तो) उन्होंने कहा, हलाक होजियो वह शख़्स, जिस ने रमज़ान का मुबारक महीना पाया, फिर भी उस की मग़्फ़िरत न हुई। मैंने कहा, आमीन फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा, तो उन्होंने कहा, हलाक होजियो वह शख़्स जिस के सामने आपका ज़िक्रे मुबारक हो और वह दरूद न भेजे। मैंने कहा, आमीन। जब मैं तीसरे दर्जे पर चढ़ा, तो उन्होंने कहा, हलाक हो वह शख़्स जिसके सामने उसके वालिदैन या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पावे और वह उसको जन्नत में दाख़िल न करायें। मैंने कहा आमीन !

फ़– यह रिवायत 'फ़ज़ाइले रमज़ान'[1] में गुज़र चुकी है, उसमें यह लिखा था इस हदीस में हज़रत जिब्रील अलै० ने तीन बद-दुआएं दी हैं और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन तीनों पर आमीन फ़र्मायी–

अव्वल, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम जैसे मुक़र्रब फ़रिश्ते की बद-दुआ ही क्या कम थी और फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमीन ने तो

---

1. फ़ज़ाइले रमज़ान की फ़स्ले अव्वल की तीसरी हदीस है,

जितनी सख़्त बद-दुआ बना दी, वह ज़ाहिर है अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़्ल से हम लोगों को इन तीनों चीजों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मावें और इन बुराइयों से महफ़ूज़ रखें, वरना हलाकत में क्या तरद्दुद है।

दुर्रे मंसूर की बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि ख़ुद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि आमीन कहो, तो हुज़ूर ने आमीन फ़र्माया, जिससे और भी ज़्यादा एहतमाम मालूम होता है।

अल्लामा सख़ावी रह० ने इस मज़्मून की मुतअद्दिद रिवायतें ज़िक्र की हैं। हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से भी एक रिवायत नक़ल की है, वह फ़र्माते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा मिंबर पर चढ़े। जब पहले दर्जे पर क़दम रखा, तो फ़र्माया, आमीन, फिर दूसरे दर्जे पर क़दम रखा, तो फ़र्माया, आमीन, फिर तीसरे पर क़दम रखा, तो फ़र्माया, आमीन। फिर इर्शाद फ़र्माया कि मेरे पास जिब्रील आये थे। उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) जो शख़्स रमज़ान को पावे और उसकी मग़्फ़िरत न की जाये, अल्लाह उसको हलाक करे। मैंने कहा, आमीन। और वह शख़्स कि जिसने मां-बाप या इन में से एक का ज़माना पाया हो, फिर भी जहन्नुम में दाख़िल हो गया हो (यानी उनकी नाराज़ी की वजह से), अल्लाह उसको हलाक करे। मैंने कहा, आमीन और जिस के सामने आप का ज़िक्रे मुबारक आवे और वह दरूद न पढ़े, अल्लाह उसको हलाक करे। मैंने कहा, आमीन।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी यह ही मज़्मून नक़ल किया गया है, वह इर्शाद फ़र्माते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर के एक दर्जे पर चढ़े और फ़र्माया, आमीन, फिर दूसरे दर्जे पर चढ़ कर फ़र्माया, आमीन। फिर तीसरे पर चढ़ कर फ़र्माया, आमीन। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आपने आमीन किस बात पर फ़र्मायी थी? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मेरे पास जिब्रील आये थे और उन्होंने कहा, (ज़मीन पर) नाक रगड़े[1] वह शख़्स जिसने अपने वालिदैन या इन में से एक का ज़माना पाया हो और उन्होंने उस को जन्नत में दाख़िल न कराया हो। मैंने कहा आमीन और नाक रगड़े वह शख़्स (यानी ज़लील हो,) जिस ने रमज़ान का महीना पाया और उसकी मग़्फ़िरत न की गयी हो। मैंने कहा, आमीन। और नाक रगड़े वह शख़्स, जिस के सामने आप का ज़िक्र किया जाये और वह आप

---

1. यानी ज़लील व रुसवा हो जाए,

पर दरूद न भेजे, मैंने कहा, आमीन।

हज़रत जाबिर रज़ि० से भी यह क़िस्सा नक़ल किया गया है और इसमें भी मिंबर पर तीन मर्तबा आमीन-आमीन के बाद सहाबा रज़ि० के सवाल पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जब मैं पहले दर्जे पर चढ़ा, तो मेरे पास जिब्रील अलै० आये और उन्होंने कहा, बद-बख़्त होजियो वह शख़्स, जिसने रमज़ान का महीना पाया और वह मुबारक महीना ख़त्म हो गया और उसकी मग़्फ़िरत न हुई। मैंने कहा, आमीन। फिर उन्होंने कहा, बद-बख़्त होजियो वह शख़्स, जिसने अपने वालिदैन को या उन में से किसी एक को पाया हो और उन्होंने उस को जन्नत में दाख़िल न कराया हो। मैंने कहा, आमीन, फिर कहा बद-बख़्त होजियो वह शख़्स, जिस के सामने आपका ज़िक्र मुबारक हो और उसने आप पर दरूद न भेजा हो। मैंने कहा, आमीन।

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० से भी यह क़िस्सा नक़ल किया गया है और इस में हज़रत जिब्रील की हर बद-दुआ के बाद यह इज़ाफ़ा है कि जिब्रील ने मुझसे कहा, आमीन कहो।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से भी यह हदीस नक़ल की गयी है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी मिंबर वाला क़िस्सा नक़ल किया गया है और इसमें और सख़्त अल्फ़ाज़ हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया जिब्रील मेरे पास आये थे उन्होंने यों कहा कि जिस शख़्स के सामने आप का ज़िक्र किया जाये और वह आप पर दरूद न भेजे, वह जहन्नुम में दाख़िल होगा, अल्लाह तआला उसको हलाक करे और उसको मलिया मेट[1] कर दे। मैंने कहा, आमीन। इसी तरह वालिदैन और रमज़ान के क़िस्से में भी नक़ल किया।

हज़रत अबूज़र व हज़रत बुरैदा और हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी इन मज़ामीन की रिवायतें ज़िक्र की गयी हैं। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत में भी यह इज़ाफ़ा है कि हर मर्तबा में मुझ से हज़रत जिब्रील ने कहा कि कहो, आमीन, जिस पर मैंने आमीन कहा।

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० से भी यह मज़्मून नक़ल किया गया है, नीज़ अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ि० से भी यह हदीस नक़ल की गयी है। इसमें बद-दुआ दो दफ़ा है। इसमें इर्शाद है कि जिस के सामने आप का ज़िक्र किया गया हो और

---

1. बर्बाद,

उसने दरूद न पढ़ा हो, अल्लाह तआला उसको हलाक करे, फिर हलाक करे।

हज़रत जाबिर रज़ि० ने एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया है कि जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह मुझ पर दरूद न भेजे, वह बद-बख़्त[1] है और भी इस क़िस्म की वईदें कसरत से ज़िक्र की गयी हैं।

अल्लामा सख़ावी रह० ने इन वईदों को जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र मुबारक के वक़्त दरूद शरीफ़ न पढ़ने पर वारिद हुई हैं, मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में जमा किया है। वह कहते हैं कि ऐसे शख़्स पर हलाकत की बद-दुआ है और शक़ावत[2] के हासिल होने की ख़बर है, नीज़ जन्नत का रास्ता भूल जाने की और जहन्नुम में दाख़िल होने की और यह कि वह शख़्स ज़ालिम है और यह कि वह सब से ज़्यादा बख़ील है और किसी मज्लिस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद शरीफ़ न पढ़ा जाये, उसके बारे में कई तरह की वईदें ज़िक्र की हैं और यह कि जो शख़्स हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद न पढ़ेगा, उस का दीन (सालिम) नहीं और यह कि वह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर की ज़ियारत न कर सकेगा। इस के बाद अल्लामा सख़ावी रह० ने इन सब मज़ामीन की रिवायात ज़िक्र की है-

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन

अला हबीबि क ख़ैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

٢- عَنْ عَلِيٍّ رض عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْبَخِيْلُ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ رواه النسائى والبخارى فى تاريخه والترمذى وغيرهم بسط طرقه السخاوى-

2. हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया गया है कि बख़ील है वह शख़्स, जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जावे और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

फ़— अल्लामा सख़ावी रह० ने क्या ही अच्छा शेर नकल किया है-

مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ اِنْ ذُكِرَ اسْمُهٗ ۞ فَهُوَ الْبَخِيْلُ وَزِدْهُ وَصْفَ جَبَانٍ

---

1. बद बख़्ती,

मल्लम् युसल्लि अलैहि इन् जुकिरस्मुहू
फ़हुवल् बख़ीलु व ज़िदहु वस्फ़ जबानी।

तर्जुमा— 'जो शख़्स हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद न भेजे, जिस वक़्त कि हुज़ूर का पाक नाम ज़िक्र किया जा रहा हो, पस वह पक्का बख़ील है और इतना इज़ाफ़ा कर इस पर कि वह बुज़्दिल ना-मर्द भी है।'

हदीसे बाला का मज़्मून भी बहुत सी अहादीस में बहुत से सहाबा रज़ि० से नक़ल किया गया है। अल्लामा सख़ावी रह० ने हज़रत इमाम हसन रज़ि० की रिवायत से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया है कि आदमी के बुख़्ल के लिए यह काफ़ी है कि मेरा ज़िक्र उसके सामने किया जाये और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया गया है, बख़ील वह शख़्स है कि जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की हदीस से यह मज़्मून नक़ल किया गया है कि बख़ील और पूरा बख़ील है वह शख़्स, जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत अनस रज़ि० से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि वह शख़्स बख़ील है, जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

एक और हदीस में यह अल्फ़ाज़ नक़ल किए गए हैं कि मैं तुम को सब बख़ीलों से ज़्यादा बख़ील बताऊं, मैं तुम्हें लोगों में सब से ज़्यादा आजिज़ बताऊं, वह शख़्स है, जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया गया हो, फिर वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत आइशा रज़ि० से एक क़िस्सा नक़ल किया गया है, जिसके अख़ीर में हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद है कि हलाकत है उस शख़्स के लिए जो मुझे क़यामत में न देखे। हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, वह शख़्स कौन है, जो आप की ज़ियारत न करे ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, बख़ील। हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, बख़ील कौन ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो मेरा नाम सुने और दरूद न भेजे।

हज़रत जाबिर रज़ि० से भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

यह इर्शाद नकल किया गया है कि, आदमी के बुख़्ल[1] के लिए यह काफ़ी है कि जब मेरा ज़िक्र उसके पास किया जाए और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत हसन बसरी रज़ि० की रिवायत से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नकल किया गया है कि आदमी के बुख़्ल के लिए यह काफ़ी है कि मैं उस के सामने ज़िक्र किया जाऊं और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया, मैं तुम को सबसे ज़्यादा बख़ील आदमी बताऊं ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ज़रूर। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जिस शख़्स के सामने मेरा ज़िक्र किया जावे और वह मुझ पर दरूद न भेजे, वह शख़्स सबसे ज़्यादा बख़ील है।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

٣- عَنْ قَتَادَةَ مُرْسَلًا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْجَفَاءِ اَنْ اُذْكَرَ عِنْدَ رَجُلٍ فَلَا يُصَلِّيْ عَلَيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَخْرَجَهُ النميرى ورواته ثقات قاله السخاوى۔

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि यह बात ज़ुल्म से है कि किसी आदमी के सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

फ़— यक़ीनन उस शख़्स के ज़ुल्म में क्या तरद्दुद है, जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इतने एहसानात पर भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद न पढ़े।

हज़रत गंगोही क़द्दुस सिर्रुहू की सवानेह उम्री[1] 'तज़्किरतुर्रशीद' में लिखा है कि हज़रत[2] उमूमन मुतवस्सिलीन को दरूद शरीफ़ पढ़ने की तालीम फ़र्माते थे कि कम से कम तीन सौ मर्तबा रोज़ाना पढ़ा जाये और इतना न हो सके तो एक तस्बीह में तो कमी न होनी चाहिए। आप फ़र्माया करते थे कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बहुत बड़ा एहसान है। फिर आप पर दरूद भेजने में भी बुख़्ल

---

1. कंजूसी, 2. जीवनी, 2. यानी हज़रत गंगोही,

हो तो बड़ी बे-मुरव्वती की बात है। दरूद शरीफ़ में ज़्यादा तर पसंद वह था, जो नमाज़ में पढ़ा जाता है और इसके बाद वह अल्फ़ाज सलात व सलाम, जो अहादीस में मंकूल है। बाक़ी दूसरों के मुअल्लफ़ा दरूद ताज, तक्खी वग़ैरह अमूमन आप को पंसद न थे, बल्कि बाज़ अल्फ़ाज़ को दूसरे मानी का मुवहिम[1] होने के सबब ख़िलाफ़े शरअ फ़र्मा देते थे।

अल्लामा सख़ावी रह० फ़र्माते हैं कि 'जफ़ा' से मुराद बिर्र व सिला[2] का छोड़ना है और तबियत की सख़्ती और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूरी पर भी इत्लाक़ किया जाता है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

٤ـ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رضـ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللّٰهَ وَلَمْ يُصَلُّوْا عَلَى نَبِيِّهِمْ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ مِنَ اللّٰهِ تِرَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُمْ رواه احمد وابو داؤد وغيرهما بسطه السخاوي

4. हज़रत अबूहुरैरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नकल करते हैं, जो क़ौम किसी मज्लिस में बैठे और उस मज्लिस में अल्लाह का ज़िक्र और उसके नबी पर दरूद न हो, तो वह मज्लिस उन पर क़यामत के दिन एक वबाल होगी, फिर अल्लाह को अख़्तियार है कि उन को माफ़ कर दे या अज़ाब दे।

फ़— एक और हदीस में हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ही से यह अल्फ़ाज़ नक़ल किये गये हैं कि जो क़ौम किसी मज्लिस में बैठती है, फिर वह अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दरूद से पहले मज्लिस बर्ख़ास्त कर दे, तो इन पर क़यामत तक हसरत रहेगी।

एक और हदीस में इन अल्फ़ाज़ से नकल किया गया है कि जो क़ौम किसी मज्लिस मे बैठती है और उस मज्लिस में हुज़ूर सल्ल० पर दरूद न हो, तो वह मज्लिस उन पर वबाल होती है।

हज़रत अबूउमामा रज़ि० से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

---

1. वहम पैदा करने वाला, 2. नेकी और बदला,

का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि लोग किसी मज्लिस में बैठें, फिर अल्लाह के ज़िक्र और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद से पहले उठ खड़े हों, तो वह मज्लिस क़यामत के दिन वबाल है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि जो लोग किसी मज्लिस में बैठें और वह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद से पहले मज्लिस बर्ख़ास्त करें, तो उन को हसरत होगी, चाहे वह जन्नत ही में (अपने आमाल की वजह से) दाख़िल हो जाएं, ब-वजह इस सवाब के जिसको वह देखेंगे यानी अगर वह अपने दूसरे आमाल की वजह से जन्नत में दाख़िल हो भी जायें, तब भी उनको दरूद शरीफ़ का सवाब देख कर इसकी हसरत होगी कि हमने उस मज्लिस में दरूद क्यों न पढ़ा था।

हज़रत जाबिर रज़ि० से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि जब लोग किसी मज्लिस से बग़ैर अल्लाह के ज़िक्र और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद के उठें तो ऐसा है जैसा किसी सड़े हुए मुर्दार जानवर पर से उठे हों यानी ऐसी गंदगी महसूस होगी जैसे किसी सड़े हुए जानवर के पास बैठ कर दिमाग़ सड़ जाता है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

٥- عَنْ فُضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رض قَالَ بَيْنَمَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ إِذْ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى فَقَالَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي وَارْحَمْنِي فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَجِلْتَ أَيُّهَا الْمُصَلِّي فَإِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللّٰهَ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ قَالَ ثُمَّ صَلَّى رَجُلٌ آخَرُ بَعْدَ ذٰلِكَ فَحَمِدَ اللّٰهَ وَصَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّهَا الْمُصَلِّي ادْعُ تُجَبْ رَوَاهُ التِّرمذي وروى ابوداؤد والنسائي

5. हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० फ़र्माते हैं, एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ फ़र्मा थे। एक साहब दाख़िल हुए और नमाज़ पढ़ी, फिर 'अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली वर्हम्नी' के साथ दुआ की। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, ओ नमाज़ी !जल्दी कर दी। जब तू नमाज़ पढ़े तो अव्वल तो अल्लाह

जल्ले शानुहू की हम्द कर, जैसा कि उसकी शान के मुनासिब है, फिर मुझ पर दरूद पढ़, फिर दुआ मांग। हजरत फ़ुज़ाला रजि० कहते हैं, फिर एक और साहब आये, उन्होंने अव्वल अल्लाह जल्ले शानुहू की हम्द की और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा। हुज़ूर सल्ल० ने उन साहब से यह इर्शाद फ़र्माया, ऐ नमाज़ी ! अब दुआ कर, तेरी दुआ क़ुबूल की जायेगी।

फ़— यह मज़्मून भी ब-कसरत रिवायात में ज़िक्र किया गया है। अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि दरूद शरीफ़ दुआ के अव्वल में, दर्मियान में और अख़ीर में होना चाहिए। उलमा ने इस के इस्तिह्बाब[1] पर इत्तिफ़ाक़ नक़ल किया है कि दुआ की इब्तिदा अल्लाह तआला शानुहू की हम्द व सना, फिर हुज़ूरे अक्दस सल्ल० पर दरूद से होनी चाहिए। और इसी तरह इसी पर ख़त्म होना चाहिए।

अक्लीशी रह० कहते हैं कि जब तू अल्लाह से दुआ करे, तो पहले हम्द के साथ इब्तिदा कर, फिर हुज़ूरे सल्ल० पर दरूद भेज और दरूद शरीफ़ को दुआ के अव्वल में, दुआ के बीच में, दुआ के अख़ीर में कर और दरूद के वक़्त में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आला फ़ज़ाइल को ज़िक्र किया कर। उसकी वजह से तू मुस्तजाबुद्दअवात[2] बनेगा और तेरे और उसके दर्मियान से हिजाब उठ जायेगा।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा०

हज़रत जाबिर रजि० हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझको सवार के प्याले की तरह से न बनाओ। सहाबा रजि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सवार के प्याले से क्या मतलब ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुसाफ़िर अपनी हाजत से फ़रागत पर बर्तन में पानी डालता है, इसके बाद उसको अगर पीने की या वुज़ू की ज़रूरत होती है, तो पीता है या वुज़ू करता है, वरना फेंक देता है। मुझे अपनी दुआ के अव्वल में भी किया करो, औसत में भी, आख़िर में भी।

अल्लामा सख़ावी रह० कहते हैं कि मुसाफ़िर के प्याले से मुराद यह है कि मुसाफ़िर अपना प्याला सवारी के पीछे लटकाया करता है। मतलब यह है कि मुझे दुआ में सब से अख़ीर में न रखो। यही मतलब साहबे 'इत्तिहाफ़' ने शरहे एह्या में भी लिखा है कि सवार अपने प्याले को पीछे लटका देता है, यानी मुझे अपनी दुआ

1. मुस्तहब होने पर, 2. वह, जिसकी दुआ क़ुबूल हो जावे,

में सब से अखीर में न डाल दो।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि जब कोई शख़्स अल्लाह से कोई चीज़ मांगने का इरादा करे तो उस को चाहिए कि अव्वलन अल्लाह तआला की हम्द व सना के साथ इब्तिदा करे। ऐसी हम्द व सना, जो उसकी शायाने शान हो,. फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे और उसके बाद दुआ मांगे, पस अक़रब यह है कि वह कामियाब होगा और मक़्सद को पहुंचेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यस्र रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि दुआएं सारी की सारी रुकी रहती हैं, यहां तक कि उसकी इब्तिदा अल्लाह की तारीफ़ और हुज़ूर सल्ल॰ पर दरूद से न हो। अगर इन दोनों के बाद दुआ करेगा, तो उसकी दुआ क़ुबूल की जाएगी।

हज़रत अनस रज़ि॰ से भी हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि हर दुआ रुकी रहती है[1], यहां तक की हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि तुम्हारा मुझ पर दरूद पढ़ना तुम्हारी दुआओं की हिफ़ाज़त करने वाला है, तुम्हारे रब की रज़ा का सबब है।

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़र्माते हैं, मुझे यह बताया गया है कि दुआ आसमान और ज़मीन के दर्मियान मुअल्लक़[2] रहती है, ऊपर नहीं चढ़ती, यहां तक कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ पर दरूद पढ़े। एक दूसरी हदीस में यह मज़्मून इन अल्फ़ाज़ से ज़िक्र किया गया है कि दुआ आसमान पर पहुंचने से रुकी रहती है और कोई दुआ आसमान तक उस वक़्त तक नहीं पहुंचती, जब तक हुज़ूर सल्ल॰ पर दरूद न भेजा जाये। जब हुज़ूर सल्ल॰ पर दरूद भेजा जाता है तब वह आसमान पर पहुंचती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया है, जब तू दुआ मांगा करे तो अपनी दुआ में हुज़ूर सल्ल॰ पर दरूद भी शामिल किया कर, इसलिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद तो मक़्बूल है ही और अल्लाह जल्ले शानुहू के करम से यह बईद है कि वह कुछ को क़ुबूल करे और कुछ को रद्द कर दे।

हज़रत अली रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद

1. यानी क़ुबूल होने से रुकी रहती है, 1. लटकी रहती है,

नकल करते हैं, कोई दुआ ऐसी नहीं है कि जिसमें और अल्लाह के दर्मियान हिजाब न हो, यहां तक कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे। पस जब वह ऐसा करता है, तो वह परदा फट जाता है और वह महल्ले इजाबत[1] में दाख़िल हो जाती है, वरना लौटा दी जाती है।

इब्ने अता रह० कहते हैं कि दुआ के लिए कुछ अरकान हैं और कुछ पर है, कुछ अस्बाब हैं और कुछ औक़ात हैं। अगर अरकान के मुवाफ़िक़ होती है, तो दुआ क़वी होती है और परों के मुवाफ़िक़ होती है तो आसमान पर उड़ जाती है और अगर अपने औक़ात के मुवाफ़िक़ होती है, तो फ़ाइज़[2] होती है और अस्बाब के मुवाफ़िक़ होती है तो कामियाब होती है।

दुआ के अरकान–हुज़ूरे क़ल्ब[3], रिक़्क़त, आजिज़ी, ख़ुशूअ और अल्लाह के साथ क़ल्बी ताल्लुक़ और इसके पर 'सिद्क़' है और इसकी औक़ात रात का आख़िरी हिस्सा और इसके अस्बाब नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना।

और भी मुतअद्दिद अहादीस में यह मज़्मून आया है कि दुआ रुकी रहती है, जब तक कि हुज़ूर सल्ल० पर दरूद न भेजे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबीऔफ़ा रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाये और यों इर्शाद फ़र्माया कि जिस शख़्स को कोई हाजत अल्लाह तआला शानुहू से या किसी बंदे से पेश आ जाये, तो उसको चाहिए कि अच्छी तरह वुज़ू करे और दो रक्अत नमाज़ पढ़े, फिर अल्लाह जल्ले शानुहू पर हम्द व सना करे और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे, फिर यह दुआ पढ़े–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَ
وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ لَا
تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً
هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَآ اَرْحَمَ
الرّٰحِمِيْنَ۔

---

1. क़ुबूल होने की जगह, 2. कामियाब, 3. यानी दिल हाज़िर करना,

नहीं कोई माबूद बजुज़ अल्लाह के जो बड़े हिल्म वाला है और बड़े करम वाला है, हर ऐब से पाक है अल्लाह, जो रब है अर्शे अज़ीम का। तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो रब है सारे जहानों का। ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से सवाल करता हूं उन चीज़ों का, जो तेरी रहमत को वाजिब करने वाली हों और मांगता हूं तेरी मग़फ़िरत की मुअक्किदात को (यानी ऐसे आमाल को, जिनसे तेरी मग़फ़िरत ज़रूरी हो जाये) और मांगता हूं हिस्सा हर नेकी से और सलामती हर गुनाह से। मेरे लिए कोई ऐसा गुनाह न छोड़िए, जिसकी आप मग़फ़िरत न कर दें और न कोई ऐसा फ़िक्र व ग़म, जिसको तू ज़ायल न कर दे और न कोई ऐसी हाजत, जो तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो और तू उसको पूरा न कर दे, ऐ अर्हमर्राहिमीन।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ बदन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

चौथी फ़स्ल

फ़वाइदे मुतफ़र्रिक़ा के बयान में

1. फ़स्ले अव्वल में अल्लाह जल्ले शानुहू का हुक्म दरूद के बारे में गुज़र चुका और हुक्म का तक़ाज़ा वजूब है, इसलिए जम्हूर उलमा के नजदीक दरूद शरीफ़ का कम से कम उम्र में एक मर्तबा पढ़ना फ़र्ज़ है, बाज़ उलमा ने इस पर इज्माअ[1] भी नक़ल किया है, लेकिन तीसरी फ़स्ल में जो वईदें इस मज़्मून की गुज़री हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम के आने पर दरूद न पढ़ने वाला बख़ील है, ज़ालिम है, बदबख़्त है, इस पर हुज़ूर सल्ल० की और हज़रत जिब्रील अलै० की तरफ़ से हलाकत की बद-दुआएं हैं वग़ैरह-वग़ैरह उनकी बिना पर बाज़ उलमा का मज़हब यह है कि जब भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी आये, उस वक़्त हर मर्तबा दरूद शरीफ पढ़ना वाजिब है।

हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० ने 'फ़त्हुल्बारी'[2] में, इसमें दस मज़हब नक़ल किए

---

1. पूरी उम्मत की मुत्तफ़िक़ा राय (सहमति), 2. लेखक की एक अरबी किताब का नाम;

हैं और 'औजज़ुल मसालिक' में ज़्यादा बहस तफ़्सीली इस पर की गयी है, उसमें लिखा है कि बाज़ उलेमा ने इस पर इज्माअ नक़ल किया है कि हर मुसलमान पर उम्र भर में कम से कम एक मर्तबा पढ़ना फ़र्ज़ है और इसके बाद में इख़्तिलाफ़ है।

ख़ुद हनफ़ीया के यहां भी इसमें दो क़ौल हैं। इमाम तहावी रह० वग़ैरह की राय यह है कि जब भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम नामी आये, तो दरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है, उन रिवायात की बिना पर, जो तीसरी फ़स्ल में गुज़रीं। इमाम कर्ख़ी वग़ैरह की राय यह है कि फ़र्ज़ का दर्जा एक ही मर्तबा है और हर मर्तबा इस्तिह्बाब का दर्जा है।

2. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम नामी के साथ शुरू में 'सय्यिदिना' का लफ़्ज़ बढ़ा देना मुस्तहब है। दुर्रे मुख़्तार में लिखा है कि सय्यिदिना बढ़ा देना मुस्तहब है, इसलिए कि ऐसी चीज़ की ज़्यादती, जो वाक़िआ में हो, वह ऐन अदब है, जैसा कि रमली रह०, शाफ़ई रह० वग़ैरह ने कहा है- यानी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सय्यिद होना एकअम्र वाक़ई है, लिहाज़ा इसके बढ़ाने में कोई इश्काल की बात नहीं, बल्कि अदब यही है। लेकिन बाज़ लोग इससे मना करते हैं। ग़ालिब न उनको अबूदाऊद शरीफ़ की एक हदीस से इश्तिबाह[1] हो रहा है।

अबूदाऊद शरीफ़ में एक सहाबी अबूमुत्रिफ रज़ि० से यह नकल किया गया है कि मैं एक वफ़्द के साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हमने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज किया-

अन्त सैयिदुना أَنْتَ سَيِّدُنَا

(आप हमारे सरदार हैं।) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया-

अस्सय्यिदु अल्लाहू اَلسَّيِّدُ اللّٰهُ

यानी हक़ीक़ी सय्यिद तो अल्लाह ही है और यह इर्शाद आली बिल्कुल सही है। यक़ीनन हक़ीक़ी सियादत और कमाले सियादत[2] अल्लाह ही के लिए है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हुज़ूर सल्ल० के नाम पर सय्यिदिना का बढ़ाना नाजायज़ है। बिलख़ुसूस जबकि ख़ुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद,

---

1. शुबहा, संदेह, 2. सच्ची सरदारी और पूरी सरदारी,

जैसा कि मिश्कात में ब रिवायत शैख़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से नकल किया गया है कि-

أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (الحديث)

'अना सय्यिादुनासि यौमल् क़यामति' (हदीस) कि मैं लोगों का सरदार हूंगा क़यामत के दिन। और दूसरी हदीस में मुस्लिम की रिवायत से नकल किया है-

أَنَا سَيِّدُ وُلْدِ اٰدَمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

'अना सय्यिदु वुल्दि आद म यौमल् क़यामति०' कि मैं क़यामत के दिन औलादे आदम का सरदार हूंगा। नीज़-ब-रिवायते तिर्मिज़ी हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० की हदीस से भी हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नकल किया गया है-

أَنَا سَيِّدُ وُلْدِ اٰدَمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا فَخْرَ

'अना सैयिदु वुल्दि आद म यौमल् क़यामति वला फ़ख्र०' कि मैं क़यामत के दिन औलादे आदम का सरदार रहूंगा और कोई फ़ख्र की बात नहीं।' हुज़ूर सल्ल० के इस पाक इर्शाद का मतलब, जो अबूदाऊद शरीफ़ की रिवायत में गुज़रा, वह कमाले सियादत मुराद है, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नकल किया गया है कि मिस्कीन वह नहीं है, जिसको एक-एक, दो-दो लुक्मे दर-ब-दर फिराते हों, बल्कि मिस्कीन वह है, जिसके पास न वुस्अत हो, न लोगों से सवाल करे।

इसी तरह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० की रिवायत से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नकल किया है कि तुम पछाड़ने वाला किसको समझते हो ? (यानी वह पहलवान, जो दूसरे को ज़ेर कर दे) सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! उसको समझते हैं, जिसको कोई दूसरा पछाड़ न सके। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, यह पहलवान नहीं, बल्कि पछाड़ने वाला (यानी पहलवान) वह है, जो ग़ुस्से के वक़्त में अपने नफ़्स पर क़ाबू पाये। इसी हदीसे पाक में हुज़ूर सल्ल० का यह सवाल भी नकल किया गया कि तुम रक़ूब (यानी ला वलद) किसको कहते हो? सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि जिसके औलाद न हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, यह ला वलद नहीं, बल्कि ला वलद वह है, जिसने किसी छोटी औलाद को ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत न बनाया हो (यानी उसके किसी मासूम बच्चे की मौत न हुई हो।) अब ज़ाहिर है कि जो मिस्कीन भीख मांगता हो, उसको मिस्कीन कहना कौन नाजायज़ कह देगा, इसी तरह जो पहलवान लोगों को पछाड़ देता हो, लेकिन अपने

ग़ुस्से पर उसको क़ाबू न हो, वह तो बहरहाल पहलवान ही कहलायेगा।

इसी तरह से अबूदाऊद शरीफ़ में एक सहाबी रज़ि० का क़िस्सा नक़ल किया है कि उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुश्ते मुबारक पर मुहरे नुबूवत देखकर यह दर्ख़्वास्त की थी कि आपकी पुश्ते मुबारक पर यह (जो उभरा हुआ गोश्त है) मुझे दिखलाइए कि मैं इसका इलाज करूं, क्योंकि मैं तबीब हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तबीब तो अल्लाह तआला शानुहू ही हैं, जिसने उसको पैदा किया, इला आख़िरिल् क़िस्सा (आख़िरी क़िस्से तक।)

अब ज़ाहिर है इस हदीसे पाक से मुआलिजों[1] को तबीब कहना कौन हराम कह देगा, बल्कि साहबे 'मज्मा' ने तो यह कहा है कि अल्लाह के नामों में से तबीब नहीं है और इसी तरह से अहादीस में बहुत कसरत से यह मज़्मून मिलेगा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे मवाक़े में कमाल के एतबार से नफ़ी फ़र्मायी है, हक़ीक़त की नफ़ी नहीं।

अल्लामा सख़ावी रह० फ़र्माते हैं कि अल्लामा मुजद्दिदुदीन रह० (साहबे क़ामूस) ने लिखा है, जिसका ख़ुलासा यह है कि बहुत से लोग अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन' कहते हैं और इसमें बहस है। वह यों कहते हैं कि नमाज़ में तो ज़ाहिर है कि न कहना चाहिए[2], नमाज़ के अलावा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस शख़्स पर इन्कार किया था, जिसने आपको सय्यिदिना से ख़िताब किया था, जैसा कि हदीस मशहूर में है (वही हदीस अबूदाऊद जो ऊपर गुज़री) लेकिन हुज़ूर सल्ल० का इन्कार एह्तमाल रखता है कि तवाज़ुअ हो या मुंह पर तारीफ़ करने को पसन्द न किया हो, या इस वजह से कि यह ज़माना-ए-जाहिलियत का दस्तूर था, या इस वजह से कि उन्होंने मुबालग़ा बहुत किया। चुनांचे उन्होंने कहा था कि आप हमारे सरदार हैं, आप हमारे बाप हैं, आप हमसे फ़ज़ीलत में बहुत ज़्यादा बढ़े हुए हैं, आप हम पर बख़्शिश करने में सबसे बढ़े हुए हैं और आप जुफ़्नतुलग़ुर्रा हैं। यह भी ज़माना-ए-जाहिलियत का एक मशहूर मक़ूला है कि वह अपने उस सरदार को जो बड़ा कहलाने वाला हो और बड़े-बड़े प्यालों में लोगों को दुंबों की चकती और घी से लबरेज़ प्यालों में खिलाता हो और आप ऐसे हैं और आप ऐसे हैं तो इन सब बातों के मज्मूए पर हुज़ूर सल्ल० ने इन्कार फ़र्माया था और फ़र्माया था कि शैतान

---

1. इलाज करने वालों, 2. क्योंकि नमाज़ में जो दरूद शरीफ़ आया है, उसमें 'सय्यिदिना' का लफ़्ज़ नहीं है।

तुम को मुबालगे में न डाल दे। हालांकि सही हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद साबित है–

अना सय्यिदु वुल्दि आदमा أَنَا سَيِّدُ وُلْدِ آدَمَ

कि मैं औलादे आदम का सरदार हूं। नीज हुज़ूर सल्ल० का क़ौल साबित है, अपने नवासे हसन रज़ि० के लिए–

इब्नी हाजा सय्यिदुन اِبْنِيْ هٰذَا سَيِّدٌ

'मेरा यह बेटा सरदार है।' इसी तरह से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हजरत सअ्द रज़ि० के बारे में उनकी क़ौम को यह कहना 'क़ूमू इला सय्यिदिकुम' कि खड़े हो जाओ अपने सरदार के लिए और इमाम नसई की किताब 'अमलुल् यौमि वल्लैले' में हजरत सह्ल बिन हनीफ़ रज़ि० का हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को 'या सय्यिददी' के साथ ख़िताब करना वारिद है और हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के दरूद में– 'अल्लाहुम्म सल्लि अला सयियिदिल् मुर्सलीन०' का लफ़्ज वारिद है। इन सब उमूर में दलालते वाज़िहा है और रोशन दलाइल हैं इस लफ़्ज के जवाज में और जो इसका इन्कार करे, वह मुह्ताज है इस बात का कि कोई दलील क़ायम करे, अलावा उस हदीस के, जो ऊपर गुजरी, इसलिए कि इसमें एहतमालाते मज़्कूरा होने की वजह से उसको दलील नहीं बनाया जा सकता। (इला आख़िर मा ज़करहु)

यह तो जाहिर है, जैसा कि ऊपर भी जिक्र किया गया कि कमाले सियादत अल्लाह ही के लिए है, लेकिन कोई दलील ऐसी नहीं, जिसकी वजह से इसका इतलाक़ ग़ैर अल्लाह पर नाजायज मालूम होता हो।

क़ुरआन पाक में हजरत यह्या अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलामु के बारे में 'सैयिदव्व हुसूरन' का लफ़्ज वारिद है। बुख़ारी शरीफ़ में हजरत उमर रज़ि० का इर्शाद मंक़ूल है, वह फ़र्माया करते थे–

أَبُوْبَكْرٍ سَيِّدُنَا وَأَعْتَقَ سَيِّدَنَا يَعْنِيْ بِلَالًا

अबूबक्रिन सयि्यदुना व अअ् त क़ सयि्यदना यअ़नी बिलालन०

(अबूबक्र रज़ि० हमारे सरदार हैं और हमारे सरदार यानी बिलाल रज़ि० को आज़ाद किया।)

अल्लामा ऐनी रह० शरहे बुख़ारी में लिखते हैं कि जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने अन्सार को हज़रत सअद रज़ि० के बारे में 'क़ूमू इला सैयिदिकुम' (अपने सरदार के लिए खड़े हो जाओ) कहा, तो इससे इस्तद्लाल किया जाता है, इस बात पर कि अगर कोई शख़्स सय्यिदी और मौलाई (मेरे सरदार और मेरे आक़ा) कहे तो उसको नहीं रोका जायेगा, इसलिए कि सियादत का मर्जअ और मआल[1] अपने मातहतों पर बड़ाई है और इनके लिए हुस्ने तद्बीर, इसीलिए ख़ाविंद को सैयिद कहा जाता है, जैसा कि क़ुरआन पाक में 'व अल्फ़या सय्यिदहा' फ़र्माया।

हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी शख़्स ने पूछा था कि क्या कोई शख़्स मदीना मुनव्वरा में इसको मक्रूह समझता है कि अपने सरदार को या सय्यिदी कहे ? उन्होंने फ़र्माया कोई नहीं। अल आख़िर इमाम बुख़ारी रह० ने उसके जवाज़ पर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद 'मन सय्यिदुकुम' से भी इस्तद्लाल किया है जो एक हदीस का टुकड़ा है, जिसको ख़ुद इमाम बुख़ारी ने 'अदबुल् मुफ़्रिद' में ज़िक्र किया है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनूसल्मा से पूछा 'मन सय्यिदुकुम' (कि तुम्हारा सरदार कौन है ?) उन्होंने अर्ज़ किया जद्दुबिन क़ैस। हुज़ूर ने फ़र्माया 'बल् सयियदुकुम अम्रब्नि जमूहिन' (बल्कि तुम्हारा सरदार अम्र बिन जमूह है।) नीज़

'इज़ा नसहल् अब्दु सैयिदुहू' إِذَا نَصَحَ الْعَبْدُ سَيِّدَهُ

मशहूर हदीस है, जो मुतअद्दिद सहाबा किराम से हदीस की अक्सर किताबों बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में मज़्कूर है। नीज़ हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की हदीस से बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि कोई शख़्स 'अत्इम रब्ब क वज़्ज़िअ् रब्बक' न कहे, यानी अपने आक़ा को रब के लफ़्ज़ से ताबीर न करे–

'वल्यक़ुल सय्यिदी व मौला य' وَلْيَقُلْ سَيِّدِي وَمَوْلَايَ

'बल्कि यों कहे कि मेरा सय्यिद और मेरा मौला,) यह तो सय्यिद और मौला कहने का हुक्म साफ़ है।[2]

3. इसी तरह से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम पर मौलाना का लफ़्ज़ भी बाज़ लोग पसन्द नहीं करते। मुमानअत की कोई दलील बावजूद तलाश के इस नाकारा को अब तक नहीं मिली अलबत्ता ग़ज़्वा-ए-उहद[3] के क़िस्से

---

1. यानी मरज और नतीजा, 2. इन तमाम बातों से यह बात साफ़ हो गयी हज़रत मुहम्मद सल्ल० को 'सय्यिदुना' कहने में कोई रोक नहीं है, 3. उहद की लड़ाई,

में अबू सुफ़ियान को जवाब देते हुए नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद-

अल्लाहु मौलाना वला मौला लकुम اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ

वारिद है और क़ुरआन पाक में सूरः मुहम्मद में-

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ

'ज़ालि क बिअन्नल्ला ह मौलल्लज़ी न आमनू व अन्नल् काफ़िरी न ला मौला लहुम' है, लेकिन इससे ग़ैर अल्लाह पर लफ़्ज़ मौला के इत्लाक़ की मुमानअत मालूम नहीं होती। यहां भी कमाले विलायत मुराद है कि हक़ीक़ी मौला वही पाक ज़ात है, जैसा कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने इर्शाद फ़र्माया-

مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ

मा लकुम मिन दूनिल्लाहि मिंव्वलीयिंव्व ला नसीर०

'कि तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई वली है, न कोई मददगार' और दूसरी जगह इर्शाद है-

वल्लाहु वलीयुल् मुअ्मिनीन० وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ

और बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है-

مَنْ تَرَكَ كَلًّا اَوْ ضِيَاعًا فَاَنَا وَلِيُّهٗ

मन त र क कल्लन औउ ज़ियाअन फ़ अना वलीयुहु०

यहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आपको वली बताया है। अभी बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद-

वल् यकुल सय्यिदी व मौला य وَلْيَقُلْ سَيِّدِيْ وَمَوْلَايَ

गुज़र ही चुका है कि अपने आक़ा को सय्यिदी व मौलाई कहा करे। हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद-

मौलल् क़ौमि मिन् अन्फ़ुसिहिम مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

मशहूर है। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद है-

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ الآية

वलि कुल्लिन जअ़ल्ना मवालि य मिम्मा त र कल् वालिदानि०

और हदीस व फ़िक़्ह की किताबुन्निकाह तो किताबुल् औलियासे पुर है और मिश्कात शरीफ़ में ब रिवायते शैख़ैन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के मुताल्लिक़ 'अन्त अख़ूना व मौलाना'

वारिद है, नीज़ ब रिवायते मस्नद अहमद व तिर्मिज़ी हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया है–

मन कुन्तु मौलाहु फ़ अलीयुन मौलाहु مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

यानी जिसका मैं मौला हूं, अली उसके मौला हैं, यह हदीस मशहूर है। मुतअद्दिद सहाबा किराम रज़ि० से नक़ल की गयी है। मुल्ला अली क़ारी रह० इस हदीस की शरह में निहायह से लिखते हैं कि मौला का इत्लाक़ बहुत से मानी पर आता है, जैसे रब और मालिक और सय्यिद और मुन्‌इम यानी एहसान करने वाला और मुअ्तिक़ यानी ग़ुलाम आज़ाद करने वाला और नासिर (मददगार) और मुहिब्ब[1] और ताबेअ और पड़ोसी और चचाज़ाद भाई और हलीफ़[2] वग़ैरह–वग़ैरह बहुत से मानी गिनवाये हैं, इसलिए हर के मुनासिब मानी मुराद होंगे। जहां–

अल्लाहु मौलाना वला मौला लकुम اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ

वारिद हुआ है, वहां रब के मानी में है और हुज़ूरे सल्ल० के नामे मुबारक पर आया है, जैसा कि–

मन् कुन्तु मौलाहु फ़ अलीयुन मौलाहु مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

वहां नासिर और मददगार के मानी हैं।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने इस हदीस का शाने वरूद यह लिखा है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु से यह कह दिया था कि तुम मेरे मौला नहीं हो, मेरे मौला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फ़र्माया कि मैं जिसका मौला हूं, अली रज़ि० उसके मौला हैं।

अल्लामा सख़ावी रह० ने क़ौले बदीअ में और अल्लामा क़ुस्तलानी रह० ने मवाहिबे लदुनया में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असमा–ए–मुबारका[3] में भी लफ़्ज़ मौला का शुमार कराया है।

---

1. जिस से मुहब्बत की जाये, 2. मित्र, 3. मुबारक नामों,

अल्लामा ज़र्कानी रह० लिखते हैं, मौला यानी सय्यिद, मुन्इअम, मददगार, मुहिब्ब और यह अल्लाह तआला शानुहू के नामों में से है और अंकरीब मुसन्निफ़, यानी अल्लामा क़ुस्तलानी रह० का इस्तद्लाल इस नाम पर 'अना औला बिकुल्लिन मुअ्मिनिन' से आ रहा है। इसके बाद अल्लामा ज़र्कानी रह०, अल्लामा क़ुस्तलानी रह० के कलाम की शरह करते हुए हुज़ूर सल्ल० के नामों की शरह में कहते हैं कि वली और मौला, यह दोनों अल्लाह के नामों में से हैं और इन दोनों के मानी मदद्गार के हैं। और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है जैसा कि बुख़ारी ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से नकल किया है, 'अना वलीयु कुल्लि मुअ्मिनिन' और बुख़ारी ही में हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नकल किया गया है कि कोई मोमिन ऐसा नहीं कि मैं उसके साथ दुनिया व आख़िरत में औला[1] न हूं। पस जिसने माल छोड़ा हो, वह उसके वुरसा को दिया जाये और जिसने क़र्ज़ा या ज़ाया होने वाली चीज़ें छोड़ी हों, वह मेरे पास आये, मैं उसका मौला हूं, नीज़ हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया है कि जिसका मैं मौला हूं, अली रज़ि० उसका मौला है।

इमाम तिर्मिज़ी ने इसको रिवायत किया है और इसको हसन बताया है।

अल्लामा राज़ी रह० सूर मुहम्मद की आयते शरीफ़ा–

व अन्नल् काफ़िरी न ला मौला लहुम وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَامَوْلٰى لَهُمْ

के ज़ैल में तह्रीर फ़र्माते हैं कि अगर यह इश्काल किया जाये कि आयते बाला और दूसरी आयते शरीफ़ा–

सुम्म रूद्दू इलल्लाहि मौला हुमुल् हक्कि० ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ

में किस तरह जमा किया जाये, तो यह कहा जायेगा कि मौला के कई मानी आते हैं– सरदार के, रब के, मदद्गार के, पस जिस जगह यह कहा गया है कि कोई मौला नहीं है, वहां यह मुराद है कि कोई मददगार नहीं और जिस जगह 'मौलाहुमल् हक्कु' कहा गया है, वहां उनका रब और मालिक मुराद है।

साहबे जलालैन रह० ने सूरः अन्आम की आयत 'मौलाहुमुल् हक्कु' की तफ़्सीर मालिक के साथ की है, इस पर साहबे जुमल लिखते हैं कि मालिक के साथ तफ़्सीर इस वास्ते की गयी है कि आयते शरीफ़ा मोमिन और काफ़िर दोनों के बारे में वारिद हुई है और दूसरी आयत यानी सूरः मुहम्मद में–

---

1. बेहतर,

'अन्नल् काफ़िरी न ला मौला लहुम' إِنَّ الْكَافِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ,

वारिद हुआ है, इन दोनों में जमा इस तरह पर है कि मौला से मुराद पहली आयत में मालिक, ख़ालिक और माबूद है और दूसरी आयत में मददगार। लिहाज़ा कोई तआरुज़[1] नहीं रहा।

इसके अलावा बहुत सी वुजूह इस बात पर दाल्ल[2] हैं कि मौलाना, जब कि रब और मालिक के मानी में इस्तेमाल हो, तो वह मख़्सूस है अल्लाह जल्ले शानुहू के साथ। लेकिन जब सरदार और इस जैसे दूसरे मानी में मुस्तामल हो, तो इसको न सिर्फ़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, बल्कि हर बड़े पर इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे पहले नम्बर में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद ग़ुलामों के बारे में गुज़र चुका है कि वह अपने आका को सय्यिदी व मौलाई के लफ़्ज़ से पुकारा करें।

मुल्ला अलीक़ारी रह० ने ब रिवायत अहमद हज़रत रिबाह से नक़ल किया है कि एक जमाअत हज़रत अली रज़ि० के पास कूफ़ा में आयी। उन्होंने आकर अर्ज़ किया, 'अस्सलामु अलैकुम या मौलाना।' हज़रत अली रज़ि० ने फ़र्माया, मैं तुम्हारा मौला कैसे हूं, तुम अरब हो। उन्होंने अर्ज़ किया, हमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है-

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

मन कुन्तु मौलाहु फ़ अलीयुन मौलाहु
(मैं जिसका मौला हूं, अली उसके मौला हैं)।

जब यह जमाअत जाने लगी, तो मैं उनके पीछे लगा, और मैंने पूछा, यह कौन लोग हैं, तो मुझे बताया गया कि यह अन्सार की जमाअत है, जिसमें हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी भी हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हज्र रह० फ़त्हुल् बारी में इस सिलसिले में बहस करते हुए फ़र्माते हैं कि मौला का इत्लाक़ सय्यिद के बनिस्बत 'अक़्रबु इला अ द मिल् कराहति[3] है इसलिए कि सय्यिद का लफ़्ज़ तो आला ही पर बोला जाता है, लेकिन लफ़्ज़ मौला तो आला और असफ़ल[4] दोनों पर बोला जाता है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन

---

1. टकराव, 2. दलालत करती हैं यानी ताईद करती हैं, 3. यानी सय्यिद कहने के मुक़ाबले में मौला कहने की कराहत कम है, 4. कमतर लोग,

अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

4. आदाब में से यह है कि अगर किसी तह्रीर में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम गुज़रे, तो वहां भी दरूद शरीफ़ लिखना चाहिए।

मुहद्दिसीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन के यहां इस मस्अले में इन्तिहाई तशद्दुद[1] है कि हदीस पाक लिखते हुए कोई ऐसा लफ़्ज न लिखा जाए, जो उस्ताद से न सुना हो, हत्ताकि अगर कोई लफ़्ज उस्ताद से ग़लत सुना हो, तो उसको भी यह हज़रात नक़ल में बिऐनिही[2] उसी तरह लिखना ज़रूरी समझते हैं, जिस तरह उस्ताद से सुना है। उसको सही करके लिखने की इजाज़त नहीं देते। इसी तरह अगर तौज़ीह के तौर पर किसी लफ़्ज के इज़ाफ़े की ज़रूरत समझते हैं, तो उसको उस्ताद के कलाम से मुम्ताज़[3] करके लिखना ज़रूरी समझते हैं, ताकि यह शुब्हा न हो कि यह लफ़्ज भी उस्ताद ने कहा था। इस सबके बावजूद जुम्ला हज़राते मुहद्दिसीन इसकी तस्रीह फ़र्माते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी आये, तो दरूद शरीफ़ लिखना चाहिए। अगरचे उस्ताद की किताब में न हो, जैसाकि इमाम नववी रह० ने शरहे मुस्लिम शरीफ़ के मुक़दमे में इसकी तस्रीह की है। इसी तरह इमाम नववी रह० तक़रीब में और अल्लामा सुयूती रह० उसकी शरह में लिखते हैं ज़रूरी है यह बात की हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र मुबारक के वक्त ज़ुबान को और उंगलियों को दरूद शरीफ़ के साथ जमा करे यानी ज़ुबान से दरूद शरीफ़ पढ़े और उंगलियों से लिखे भी और इसमें असल किताब का इत्तिबाअ न करे। अगरचे बाज़ उलमा ने यह भी कहा है कि असल का इत्तिबाअ करे।बहुत से रिवायाते हदीस भी इस सिलसिले में वारिद हुई हैं, अगरचे वह मुतकल्लम फ़ीहि[4], बल्कि बाज़ के ऊपर मौज़ूअ[5] होने का हुक्म भी लगाया गया है, लेकिन कई रिवायात में इस क़िस्म के मज़्मून के वारिद होने पर और जुम्ला उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ और इस पर अमल इस बात की दलील है कि इन अहादीस की कुछ असल ज़रूर है।

अल्लामा सख़ावी रह० 'क़ौले बदीअ' में लिखते हैं कि जैसे कि तू हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी लेते हुए ज़ुबान से दरूद पढ़ता है, उसी तरह नामे मुबारक लिखते हुए अपनी उंगलियों से भी दरूद शरीफ़ लिखा कर कि तेरे लिए इसमें बहुत बड़ा सवाब है और यह एक ऐसी फ़ज़ीलत है, जिसके साथ इल्मे

---

1. सख़्ती, 2. ठीक उसी तरह, 3. यानी कुछ फ़र्क़ करके, 4. जिसमें कलाम किया गया हो, 5. गढ़ी हुई,

हदीस लिखने वाले कामियाब होते हैं।

उलमा ने इस बात को मुस्तहब क़रार दिया है कि अगर तहरीर में बार-बार नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम आये तो बार-बार दरूद शरीफ़ लिखे और पूरा दरूद लिखे और काहिलों और जाहिलों की तरह से सल्ल० वग़ैरह के अल्फ़ाज के साथ इशारे पर क़नाअत[1] न करे। इसके बाद अल्लामा सख़ावी रह० ने इस सिलसिले में चंद हदीसें भी नकल की हैं। वह लिखते हैं कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया गया है कि जो शख़्स किसी किताब में मेरा नाम लिखे, फ़रिश्ते उस वक़्त तक लिखने वाले पर दरूद भेजते रहते हैं, जब तक मेरा नाम उस किताब में रहे।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया गया है कि जो शख़्स मुझ से कोई इल्मी चीज लिखे और उस के साथ दरूद शरीफ़ भी लिखे, उसका सवाब उस वक़्त तक मिलता रहेगा, जब तक कि वह किताब पढ़ी जाये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नकल किया गया है कि जो शख़्स मुझ पर किसी किताब में दरूद लिखे, उस वक़्त तक उसको सवाब मिलता रहेगा, जब तक मेरा नाम उस किताब में रहे।

अल्लामा सख़ावी रह० ने मुतअद्दिद रिवायात से यह मज़्मून भी नकल किया है कि क़यामत के दिन उलेमा-ए-हदीस हाज़िर होंगे और उनके हाथों में दावातें होंगी (जिन से वह हदीस लिखते थे) अल्लाह जल्ले शानुहू हज़रत जिब्रील से फ़र्माएंगे कि इन से पूछो, यह कौन हैं और क्या चाहते हैं। वह अर्ज करेंगे कि हम हदीस लिखने-पढ़ने वाले हैं। वहां से इर्शाद होगा कि जाओ, जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम मेरे नबी पर कसरत से दरूद भेजते थे। अल्लामा नववी 'तक़रीब' में और अल्लामा सुयूती रह० उसकी शरह में लिखते हैं कि यह ज़रूरी है कि दरूद शरीफ़ की किताबत[2] का भी एहतमाम किया जाये, जब भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम गुज़रे और उसके बार-बार लिखने से उकतावे नहीं, इस वास्ते कि इस में बहुत ज़्यादा फ़वाइद हैं और जिसने इसमें तसाहिल[3] किया, बहुत बड़ी ख़ैर से महरूम रह गया।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِي يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

1. यानी सिर्फ़ इसी को काफ़ी न समझे, 2. लिखना, 3. सुस्ती,

उलमा कहते हैं कि हदीसे पाक– 'इन्न औलन्नासि बी यौमल क़यामति (नं० 5–फ़स्ले अव्वल में गुज़री है) उसके मिस्दाक़ मुहद्दिसीन ही हैं कि वह बहुत कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले हैं और उलेमा ने इस सिलसिले में उस हदीस का भी ज़िक्र किया है, जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है, जो शख़्स मेरे ऊपर किसी किताब में दरूद भेजे, मलाइका उसके लिए उस वक़्त तक इस्तग़फ़ार करते रहते हैं, जब तक मेरा नाम उस किताब में रहे और यह हदीस अगरचे ज़ईफ़ है, लेकिन इस जगह इसका ज़िक्र करना मुनासिब है और उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात न किया जाये कि इब्ने जौज़ी रह० ने इसको मौज़ूआत में ज़िक्र कर दिया है, इसलिए कि इसके बहुत से तुरुक़ हैं, जो इसको मौज़ूअ होने से ख़ारिज कर देते हैं और इस के मुक़्तज़ा हैं कि इस हदीस की अस्ल ज़रूर है, इसलिए कि तबरानी ने इस को अबूहुरैरह रज़ि० की हदीस से नकल किया है और इब्ने अदी रह० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की हदीस से और अस्सबहानी रह० ने इब्ने अब्बास रज़ि० की हदीस से और अबुनईम रह० ने हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस से नकल किया है।

साहबे 'इत्तिहाफ़' रह० ने शरहे एह्या में भी इसके तुरुक़ पर कलाम किया है। वह कहते हैं कि हाफ़िज़ सखावी रह० ने कहा है कि यह हदीस जाफ़र सादिक़ रह० के कलाम से मौक़ूफ़न नकल की गयी है।

इब्ने क़य्यिम रह० कहते हैं कि यह ज़्यादा अक़रब[1] है।

साहबे 'इत्तिहाफ़' रह० कहते हैं कि तलबा-ए-हदीस को उज्लत और जल्दबाज़ी की वजह से दरूद शरीफ़ को छोड़ना न चाहिए, हमने इस में बहुत मुबारक ख़्वाब देखे हैं। इसके बाद फिर उन्होंने कई ख़्वाब इसके बारे में नकल किये हैं।

हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना रह० से नकल किया है कि मेरा एक दोस्त था, वह मर गया, तो मैंने उसको ख़्वाब में देखा, मैंने उससे पूछा कि क्या मामला गुज़रा। उसने कहा कि अल्लाह तआला ने मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। मैंने कहा, किस अमल पर? उसने कहा कि मैं हदीसे पाक लिखा करता था और जब हुज़ूरे अक़्दस का पाक नाम आता था, तो मैं उस पर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा करता था। इसी पर मेरी मग़्फ़िरत हो गयी।

अबुलहसन मैमूनी रह० कहते हैं कि मैंने अपने उस्ताद अबूअली को ख़्वाब में देखा, उन की उंगलियों के ऊपर कोई चीज़ सोने या ज़ाफ़रान के रंग से लिखी

---

1. सही,

हुई थी। मैंने उनसे पूछा, यह क्या है ? उन्होंने कहा कि मैं हदीस पाक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा करता था।

हसन बिन मुहम्मद रह० कहते हैं कि मेंने इमाम अहमद बिन हंबल रह० को ख़्वाब में देखा, उन्होंने मुझसे फ़र्माया कि काश तू यह देखता कि हमारा नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किताबों में दरूद लिखना कैसा हमारे सामने रोशन और मुनव्वर हो रहा है। (बदीअ) और भी मुतअद्दिद ख़्वाबात इस क़िस्म के ज़िक्र किये हैं। फ़स्ले हिकायात में इस क़िस्म की चीज़ें कसरत से आएंगी-

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन

अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

5. हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने 'ज़ादुस्सईद' में एक मुस्तक़िल फ़स्ल -आदाबे मुतफ़र्रिक़ा' में लिखी है। अगरचे इसके मुतफ़र्रिक़ मज़ामीन पहले गुज़र चुके हैं। अहमियत की वजह से उनका यकजाई ज़िक्र किया जाता है। वह इर्शाद फ़र्माते हैं-

(1) जब इस्मे मुबारक लिखे, सलात व सलाम भी लिखे यानी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरा लिखे, इसमें कोताही न करे, सिर्फ़ सल्ल० पर इक्तिफ़ा[1] न करे।

(2) एक शख़्स हदीस शरीफ़ लिखता था और बसबबे बुख़्ल नामे मुबारक के साथ दरूद शरीफ़ न लिखता था। उसके सीधे हाथ को मर्ज़े अक्ला आरिज़ हुआ यानी उसका हाथ गल गया।

(3) शेख़ इब्ने हजर मक्की रह० ने नक़ल किया है कि एक शख़्स सिर्फ़ सल्लल्लाहु अलैहि पर इक्तिफ़ा करता था, व सल्लम न लिखता था, हुज़ूरे अन्वर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको ख़्वाब में इर्शाद फ़र्माया, तू अपने को चालीस नेकियों से क्यों महरूम रखता है, यानी व सल्लम में चार हुरूफ़ हैं। हर हर्फ़ पर एक नेकी और हर नेकी पर दस गुना सवाब। लिहाज़ा व सल्लम में चालीस नेकियां हुईं। मुफ़स्सल हिकायत में न० 26 पर भी इस नौअ का एक क़िस्सा आ रहा है।

(4) दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को मुनासिब है कि बदन व कपड़े पाक व साफ़ रखे।

---

1. काफ़ी न समझे,

(5) आप के नामे मुबारक से पहले लफ़्ज सय्यिदिना बढ़ा देना मुस्तहब और अफ़ज़ल है।

इस अक्ला वाले किस्से को और चालीस नेकियों वाले किस्से को अल्लामा सख़ावी रह० ने भी 'क़ौले बदीअ' में ज़िक्र किया है। इसी तरह हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने दरूद शरीफ़ के मुताल्लिक़ एक मुस्तक़िल फ़स्ल मसाइल के बारे में तहरीर फ़र्मायी है, इसका इज़ाफ़ा भी इस जगह मुनासिब है। हज़रत तहरीर फ़र्माते हैं–

मस्अला 1. उम्र भर में एक बार दरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज है, व ब वजह हुक्म 'सल्लू',के जो शाबान सन० 2 हि० में नाज़िल हुआ।

2. अगर एक मज्लिस में कई बार आपका नामे पाक ज़िक्र किया जाये, तो तहावी रह० का मज़हब यह है कि हर बार में ज़िक्र करने वाले और सुनने वाले पर दरूद पढ़ना वाजिब है, मगर मुफ़्ताबिही[1] यह है कि एक बार पढ़ना वाजिब है, फिर मुस्तहब है।

3. नमाज़ में बजुज तशह्हुद अख़ीर के दूसरे अरकान में दरूद शरीफ़ पढ़ना मकरूह है। (दुर्रे मुख़्तार)

4. जब ख़ुत्बे में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक आये या ख़तीब यह आयत पढ़े– 'या ऐयुहल्लज़ी न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा०' अपने दिल में बिला जुंबिश ज़ुबान[2] के सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कह ले।[3] (दुर्रे मुख़्तार)

5. बे-वुज़ू दरूद शरीफ़ पढ़ना जायज़ है और बा-वुज़ू नूरुन अला नूर है।

6. बजुज हज़राते अंबिया, हज़राते मलाइका अला जमीहिमुस्सलामु के किसी और पर इस्तक़्लालन दरूद शरीफ़ न पढ़े, अल-बत्ता त ब अन मुज़ायक़ा नहीं, मसलन यों न कहे 'अल्लाहुम्म सल्लि अला आलि मुहम्मदिन' बल्कि यों कहे– 'अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंन अला आलि मुहम्मदिन' (दुर्रे मुख़्तार)

7. दुर्रे मुख़्तार में है कि अस्बाबे तिजारत खोलने के वक़्त या ऐसे ही किसी मौक़े पर यानी जहां दरूद शरीफ़ पढ़ना मक़्सूद न हो, बल्कि किसी दुनियावी ग़रज

---

1. यानी फ़त्वा इस पर है, 2. ज़ुबान हिलाये बग़ैर, 3. यानी ज़ुबान से न पढ़ें,

का उसको ज़रिया बनाया जाये, दरूद शरीफ़ पढ़ना मम्नूअ है।

8. दुर्रे मुख़्तार में है कि दरूद शरीफ़ पढ़ते वक़्त आज़ा को हरकत देना और बुलंद आवाज़ करना जहल है। इस से मालूम हुआ कि बाज़ जगह जो रस्म है कि नमाज़ों के बाद हल्क़ा बांधकर बहुत चिल्ला-चिल्ला कर दरूद शरीफ़ पढ़ते है, क़ाबिले तर्क है।[1]

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۝ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

पांचवीं फ़स्ल

दरूद शरीफ़ के मुताल्लिक़ हिक़ायात में

दरूद शरीफ़ के बारे में अल्लाह तआला शानुहू के हुक्म और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शादात के बाद हिकायात[2] की कुछ ज़्यादा अहमियत नहीं रहती। लेकिन लोगों की आदत कुछ ऐसी है कि बुज़ुर्गों के हालात से तर्ग़ीब ज़्यादा होती है, इसीलिए अकाबिर का दस्तूर इस ज़ैल में कुछ हिकायात लिखने का भी चला आ रहा है।

हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने एक फ़स्ल 'ज़ादुस्सईद' में मुस्तक़िल हिकायात में लिखी है, जिसको बिऐनिही लिखता हूं। इसके बाद चंद दूसरी हिकायात भी नक़्ल की जायेंगी और इस सिलसिले की बहुत सी हिकायात इस नाकारा के रिसाले 'फ़ज़ाइले हज' में भी गुज़र चुकी हैं। हज़रत रह० तहरीर फ़र्माते हैं-

फ़स्ले पंजुम हिकायात व अख़बारे मुताल्लिक़ा दरूद शरीफ़ के बयान में-

1. मवाहिबे लदुन्या में तफ़्सीरे क़िशयरी से नक़ल किया है कि क़यामत में किसी मोमिन की नेकियां कम वज़न हो जायेंगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

1. यानी यह तरीक़ा छोड़ने के क़ाबिल है, 2. सच्ची कहानियां,

व सल्लम एक परचा सरे अंगुश्त के बराबर निकाल कर मीज़ान में रख देंगे, जिससे नेकियों का पल्ला वज़नी हो जायेगा। वह मोमिन कहेगा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हो जायें आप कौन हैं ? आप की सूरत और सीरत कैसी अच्छी है ! आप फ़रमायेंगे, मैं तेरा नबी हूं और यह दरूद शरीफ़ है, जो तूने मुझ पर पढ़ा था। मैंने तेरी हाजत के वक़्त उसको अदा कर दिया (हाशिया हिस्न) यह क़िस्सा फ़स्ले अव्वल की हदीस 11 पर भी गुज़रा और इस जगह उसके मुताल्लिक़ एक कलाम और भी गुज़रा।

2. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० कि जलीलुल क़द्र ताबिअी हैं और ख़लीफ़ा राशिद हैं, शाम से मदीना मुनव्वरा को ख़ास क़ासिद भेजते थे कि उनकी तरफ़ से रौज़ा शरीफ़ा पर हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ करे (हाशिया हिस्न अज़ फ़त्हुल् क़दीर)

3. रौज़तुल् अह्बाब में इमाम इस्माईल बिन इब्राहीम मुज़्नी रह० से, जो इमाम शाफ़िअी रह० के बड़े शागिर्दों में हैं नक़ल किया है कि मैंने इमाम शाफ़िअी रह० को बाद इन्तिक़ाल के ख़्वाब में देखा और पूछा, अल्लाह तआला ने आपसे क्या मामला फ़र्माया ? वह बोले, मुझे बख़्श दिया और हुक्म फ़र्माया कि मुझको ताज़ीम व एहतराम के साथ बहिश्त में ले जायें और यह सब बरकत एक दरूद की है, जिसको मैं पढ़ा करता था। मैंने पूछा, वह कौन सा दरूद है ? फ़र्माया यह है-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ.

अल्ला हुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्लमा ज़ क र हुज़्ज़ाकिरून व कुल्लमा ग़ फ़ ल अन् ज़िक्रिहिल् ग़ाफ़िलून० (हाशिया हिस्न)

4. मनाहिजुल् ह स नाति में इब्ने फ़ाकिहानी रह० की किताब 'फ़ज्रे मुनीर' से नक़ल किया है कि एक बुज़ुर्ग नेक सालेह मूसा ज़रीर रह० भी थे। उन्होंने अपना गुज़रा हुआ क़िस्सा मुझसे नक़ल किया कि एक जहाज़ डूबने लगा और मैं उसमें मौजूद था। इस वक़्त मुझ को ग़ुनूदगी[1] सी हुई। इस हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझको यह दरूद तालीम फ़र्मा कर इर्शाद फ़र्माया कि जहाज़ वाले इसको हज़ार बार पढ़ें। हुनूज़[2] तीन सौ बार पर नौबत पहुंची थी कि जहाज़ ने निजात पायी और 'बअ़दल् ममात' के बाद इन्न क अला कुल्लि शैइन क़दीर' भी उसमें पढ़ना मामूल है और ख़ूब है। वह दरूद यह है-

1. ऊंघ, 2. अभी तक,

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنْجِيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِيْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِي الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तुन्जीना बिहा मिन् जमीअिल् अह्वालि वल् आफ़ाति व तक़्ज़ी लना बिहा जमीअल् हाजाति व तुतह्हिरु ना बिहा मिन् जमीअिस् सय्यिआति व तर्फ़अुना बिहा अअ्लद्द र जाति व तुबल्लिग़ुना बिहा अक़्सल् ग़ायाति मिन जमीअिल् ख़ैराति फ़िल् हयाति व बअ्दल् ममाति०

और शेख़ मुजद्दिदुद्दीन साहबे क़ामूस रह० ने भी इस हिकायत को ब सनदे ख़ुद ज़िक्र किया है।

5. बाज़ रसाइल[1] में उबैदुल्लाह बिन उमर क़वारीरी रह० से नक़ल किया है कि एक कातिब मेरा हमसाया[2] था, वह मर गया, मैंने उसको ख़्वाब में देखा और पूछा, अल्लाह तआला ने तेरे साथ क्या मामला किया ? कहा, मुझे बख़्श दिया। मैंने सबब पूछा, कहा मेरी आदत थी, जब नामे पाक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का किताब में लिखता, तो सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बढ़ाता। ख़ुदा-ए-तआला ने मुझ को ऐसा कुछ दिया कि न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना, न किसी दिल पर गुज़रा। (गुलशने जन्नत)

6. दलाइलुल् ख़ैरात की वज्हे तालीफ़[3] मशहूर है कि मुअल्लिफ़[4] के सफ़र में वुज़ू के लिए पानी की ज़रूरत थी और डोल-रस्सी के न होने की वजह से परेशान थे। एक लड़की ने यह हाल देखकर दर्याफ़्त किया और कुएं के अन्दर थूक दिया। पानी किनारे तक उबल आया। मुअल्लिफ़ ने हैरान होकर वजह पूछी। उसने कहा, यह बरकत है दरूद शरीफ़ की, जिसके बाद उन्होंने यह किताब 'दलाइलुल ख़ैरात' तालीफ़ की।[5]

7. शेख़ ज़ुर्दक रह० ने लिखा है कि मुअल्लिफ़ दलाइलुल् ख़ैरात की क़ब्र से ख़ुश्बू मुश्क व अम्बर की आती है और यह सब बरकत दरूद शरीफ़ की है।

8. एक मोतमद[6] दोस्त ने राक़िम[7] से एक ख़ुश्नवीस[8] लखनऊ की हिकायत

---

1. सख़ावी रह० ने इसे मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किया है, 2. पड़ोसी, 3. लिखने की वजह, 4. लिखने वाले, 5. लिखा, 6. एतिमाद (विश्वास) जिस पर किया जाये, 7. लेखक, 8. अच्छा लिखने वाले,

बयान की, उनकी आदत थी कि जब सुबह के वक़्त किताबत[1] शुरू करते, तो अव्वल एक बार दरूद शरीफ़ एक बियाज़[2] पर, जो इसी ग़रज से बनायी थी, लिख लेते, उस के बाद काम शुरू करते। जब उन के इंतिक़ाल का वक़्त आया, तो ग़लबा-ए-फ़िक्रे आख़िरत से ख़ौफ़ज़दा होकर कहने लगे कि देखिए वहां जा कर क्या होता है। एक मज्ज़ूब आ निकले और कहने लगे, बाबा क्यों घबराता है। वह बयाज़ सरकार सल्ल० में पेश है और उस पर 'स्वाद' बन रहे हैं।[3]

9. मौलाना फ़ैज़ुल् हसन साहब रह० सहारनपुरी मर्हूम के दामाद ने मुझसे बयान किया कि जिस मकान में मौलवी साहब का इंतिक़ाल हुआ, वहां एक महीने तक ख़ुश्बू इत्र की आती रही। हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह्मतुल्लाहि अलैहि से इस को बयान किया, फ़र्माया, यह बरकत दरूद शरीफ़ की है। मौलवी साहिब का मामूल था कि हर शबे जुमा को बेदार रहकर दरूद शरीफ़ का शग़्ल फ़र्माते।

10. अबू ज़ुर्आ रह० ने एक शख़्स को ख़्वाब में देखा कि आसमान में फ़रिश्तों के साथ नमाज़ पढ़ रहा है, उससे सबबे हुसूल उस दर्जे का पूछा, उसने कहा, मैंने दस लाख हदीसें लिखी हैं। जब नामे मुबारक आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आता, मैं दरूद लिखता था, इस सबब से मुझे यह दर्जा मिला। 'ज़ादुस्सईद' में यह क़िस्सा इसी तरह नक़ल किया है। बंदे के ख़्याल में कातिब से ग़लती हुई, सही यह है कि अबू ज़ुर्आ रह० को एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा, जैसा कि हिकायात में न० 29 पर आ रहा है।

11. इमाम शाफ़िई रह० की एक और हिकायत है कि उन को बाद इन्तिक़ाल के किसी ने ख़्वाब में देखा और मग़्फ़िरत की वजह पूछी, उन्होंने फ़र्माया, यह पांच दरूद शरीफ़ जुमा की रात को मैं पढ़ा करता था-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَ بِالصَّلٰوةِ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ اَنْ يُّصَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا يَنْبَغِىْ اَنْ تُصَلّٰى عَلَيْهِ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिम बि अ द दि मन सल्ला अलैहि व सल्लि अला मुहम्मदिम बि अ द दि मल्लम युसल्लि अलैहि व सल्लि अला मुहम्मदिन कमा

---

1. लिखाई, 2. कापी, 3. यानी उन को सही कहा जा रहा है,

अमर्त बिस्सलाति अलैहि व सल्लि अला मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु अंय्युसल्ला अलैहि व सल्लि अला मुहम्मदिन कमा यन्बगी अंतुसल्ला अलैहि०

इस दरूद को दरूदे ख़म्सा कहते हैं। इमाम शाफ़िई रह० के मुताल्लिक़ और भी हिकायात नक़ल की गयी हैं, जो न० 30 पर आ रही हैं।

12. शेख़ इब्ने हजर मक्की रह० ने नक़ल किया है कि एक सालेह[1] को किसी ने ख़्वाब में देखा, उससे हाल पूछा। उसने कहा, अल्लाह तआला ने मुझ पर रहम किया और मुझे बख़्स दिया और जन्नत में दाख़िल किया। सबब पूछा गया तो उसने कहा, फ़रिश्तों ने मेरे गुनाह और मेरे दरूद को शुमार किया, सौ दरूद का शुमार ज़्यादा निकला। हक़ तआला ने फ़र्माया, इतना बस है, इसका हिसाब मत करो और इस को बहिश्त में ले जाओ। यह क़िस्सा न० 19 पर क़ौले बदीअ से भी आ रहा है।

13. शेख़ इब्ने हजर मक्की रह० ने लिखा है कि एक मर्दे सालेह[2] ने मामूल मुक़र्रर किया था कि हर रात को सोते वक़्त दरूद बे अददे मुअय्यन[3] पढ़ा करता था। एक रात ख़्वाब में देखा कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पास तशरीफ़ लाये और तमाम घर उसका रोशन हो गया। आप ने फ़र्माया, वह मुंह लाओ जो दरूद पढ़ता है कि बोसा दूं, उस शख़्स ने शर्म की वजह से रुख़्सारा[4] सामने कर दिया। आपने उस रुख़्सारे पर बोसा दिया, बाद इस के वह बेदार[5] हो गया, तो सारे घर में मुश्क की ख़ुश्बू बाक़ी रही। यह वाक़िआ न० 38 पर तफ़्सील से आ रहा है।

14. शेख़ अब्दुल् हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० ने 'मदारिजुन्नुबूवत' में लिखा है कि जब हज़रत हव्वा अलैहस्सलाम पैदा हुयीं, हज़रत आदम अलै० ने उन पर हाथ बढ़ाना चाहा। मलाइका ने कहा सब्र करो, जब तक निकाह न हो जाये और महर अदा न कर दो। उन्होंने पूछा, मह्र क्या है ? फ़रिश्तों ने कहा कि रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तीन बार दरूद शरीफ़ पढ़ना और एक रिवायत में बीस बार आया है। फ़क़त यह वाक़िआत 'ज़ादुस्सईद' में नक़ल किए गए हैं। उन्में से बाज़ को दूसरे हज़रात ने भी नक़ल किया है और इनके अलावा भी बहुत से वाक़िआत और बहुत से ख़्वाब दरूद शरीफ़ के सिलसिले में मशाइख़ ने लिखे हैं। जिनमें से बाज़ का ज़िक्र इस रिसाले में किया जाता है, जो 'ज़ादुस्सईद' के क़िस्सों पर इज़ाफ़ा है-

---

1. 2. यानी एक नेक आदमी, 3. बिना किसी तै अदद के, 4. गाल, 5. जाग गया,

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ﴿ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

15. अल्लामा सख़ावी रह० लिखते हैं कि रशीद अत्तार ने बयान किया कि हमारे यहां मिस्र में एक बुज़ुर्ग थे, जिनका नाम अबूसईद ख़य्यात रह० था, वह बहुत यक्सू[1] रहते थे, लोगों से मेल-जोल बिल्कुल नहीं रखते थे। इसके बाद उन्होंने इब्ने रशीक़ रह० की मज्लिस में बहुत कसरत से जाना शुरू कर दिया और बहुत एहतमाम से जाया करते, लोगों को इस पर ताज्जुब हुआ। लोगों ने उनसे दर्याफ़्त किया, तो उन्होंने बताया कि उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की और कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझ से ख़्वाब में इर्शाद फ़र्माया कि इनकी मज्लिस में जाया कर, इसलिए कि यह अपनी मज्लिस में मुझ पर कसरत से दरूद पढ़ता है। يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ﴿ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

16. अबुल् अब्बास अहमद बिन मंसूर रह० का जब इन्तिक़ाल हो गया तो अह्ले शीराज़ में से एक शख़्स ने उस को ख़्वाब में देखा कि वह शीराज़[2] की जामा मस्जिद में मेहराब में खड़े हैं और उन पर एक जोड़ा है और सर पर एक ताज है जो जवाहर और मोतियों से लदा हुआ है। ख़्वाब देखने वाले ने उनसे पूछा। उन्होंने कहा अल्लाह जल्ले शानुहू ने मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा दी और मेरा बहुत इक्राम फ़र्माया और मुझे ताज अता फ़र्माया और यह सब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कसरते दरूद की वजह से है। (क़ौले बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ﴿ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

17. सूफ़िया में से एक बुज़ुर्ग नक़ल करते हैं कि मैंने एक शख़्स को जिस का नाम मिस्तह था और वह अपनी ज़िंदगी में दीन के एतबार से बहुत ही बे-परवाह और बेबाक था (यानी गुनाहों की कुछ परवाह नहीं करता था) मरने के बाद ख़्वाब

---

1. तंहाई-पसंद, 2. मुल्क फ़ारस का एक मशहूर शहर,

में देखा। मैंने उससे पूछा कि अल्लाह तआला ने क्या मामला क्या। उसने कहा कि अल्लाह तआला शानुहू ने मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। मैंने पूछा, यह किस अमल से हुई ? उसने कहा कि मैं एक मुहद्दिस की ख़िदमत में हदीस नक़ल कर रहा था, उस्ताद ने दरूद शरीफ़ पढ़ा, मैंने भी उन के साथ बहुत आवाज़ से दरूद पढ़ा। मेरी आवाज़ सुनकर सब मज्लिस वालों ने दरूद पढ़ा। हक़ तआला शानुहू ने उस वक़्त सारी मज्लिस वालों की मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। 'नुजहतुल् मजालिस' में भी इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा नक़ल किया है कि एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मेरा एक पड़ोसी था, बहुत गुनाहगार था, मैं उसको बार-बार तौबा की ताकीद करता था, मगर वह नहीं करता था। जब वह मर गया, तो मैंने उसको जन्नत में देखा, मैंने उससे पूछा कि तू इस मर्तबे पर कैसे पहुंच गया ? उसने कहा, मैं एक मुहद्दिस की मज्लिस में था। उन्होंने यह कहा कि जो शख़्स नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ज़ोर से दरूद पढ़े, उसके लिए जन्नत वाजिब है। मैंने आवाज़ से दरूद पढ़ा और उस पर और लोगों ने भी पढ़ा और इस पर हम सबकी मग़्फ़िरत हो गयी।

इस क़िस्से को 'रौज़ुल् फ़ाइक़' में भी ज़रा तफ़्सील से ज़िक्र किया है। वह कहते हैं कि सूफ़िया में से एक बुज़ुर्ग ने कहा कि मेरा एक पड़ोसी था, बहुत गुनाहगार, हर वक़्त शराब के नशे में मदहोश रहता था। उस को दिन-रात की भी ख़बर न रहती थी। मैं उसको नसीहत करता तो सुनता नहीं था। मैं तौबा को कहता,, तो वह मानता नहीं था। जब वह मर गया तो मैंने उसको ख़्वाब में बहुत ऊंचे मक़ाम पर और जन्नत के लिबासे फ़ाख़िरा[1] में देखा, बड़े एज़ाज़ व इकराम में था। मैंने उसका सबब पूछा, तो उसने ऊपर वाला क़िस्सा मुहद्दिस का ज़िक्र किया-

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ❖ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

18. अबुलहसन बग़दादी दारमी रह० कहते हैं कि उन्होंने अबू अब्दुल्लाह बिन हामिद रह० को मरने के बाद कई दफ़ा ख़्वाब में देखा। उनसे पूछा कि क्या गुज़री ? उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी और मुझ पर रहम फ़र्माया। उन्होंने उनसे यह पूछा कि मुझे कोई ऐसा अमल बताओ, जिससे मैं सीधा जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। उन्होंने बताया कि एक हज़ार रक्अत नफ़्ल पढ़ और हर रक्अत में एक हज़ार मर्तबा क़ुलहुवल्लाहु। उन्होंने कहा कि यह तो बहुत मुश्किल

1. वह लिबास जिस पर फ़ख़्र किया जाए,

अमल है तो उन्होंने कहा कि फिर तो हर शब में एक हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ा कर। दारमी रह० कहते हैं कि यह मैंने अपना मामूल बना लिया। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

19. एक साहब ने अबूहफ़्स काग़ज़ी रह० को उनके मरने के बाद ख़्वाब में देखा, उनसे पूछा कि क्या मामला गुज़रा। उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला शानुहू ने मुझ पर रहम फ़र्माया, मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा दी, मुझे जन्नत में दाख़िल करने का हुक्म दे दिया। उन्होंने कहा, यह क्या हुआ ? उन्होंने बताया कि जब मेरी पेशी हुई तो मलाइका को हुक्म दिया गया। उन्होंने मेरे गुनाह और मेरे दरूद शरीफ़ को शुमार किया,तो मेरा दरूद शरीफ़ गुनाहों पर बढ़ गया, तो मेरे मौला जल्ले जलालुहू ने इर्शाद फ़र्माया कि ऐ फ़रिश्तो ! बस, बस आगे हिसाब न करो और उसको मेरी जन्नत में ले जाओ। (बदीअ) यह क़िस्सा न० 12 पर इब्ने हजर मक्की रह० से मुख़्तसर गुज़र चुका- है

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

20. अल्लामा सख़ावी रह० बाज़ तवारीख़ से नकल करते हैं कि बनी इस्राईल में एक शख़्स बहुत गुनाहगार था। जब वह मर गया तो उसको लोगों ने वैसे ही ज़मीन पर फेंक दिया। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही भेजी कि उस को ग़ुस्ल देकर उस पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ें। मैंने उस शख़्स की मग़फ़िरत कर दी। हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया, या अल्लाह ! यह कैसे हो गया ? अल्लाह जल्ले शानुहू ने फ़र्माया कि उसने एक दफ़ा तौरात को खोला था, उसमें मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम देखा था, तो उसने उन पर दरूद पढ़ा था, तो मैंने उसकी वजह से मग़फ़िरत कर दी। (बदीअ)

इस क़िस्म के वाक़िआत में कोई इश्काल की बात नहीं, न तो इनका यह मतलब है कि एक दफ़ा दरूद शरीफ़ पढ़ लेने से सारे गुनाहे कबीरा और हुक़ूक़ुल

1. इन्सानों के हक़,

इबाद[1] माफ़ हो जाते हैं और न इस क़िस्म के वाक़िआत में कोई मुबालग़ा [illegible] वग़ैरह है। यह मालिक के क़ुबूल कर लेने पर है। वह किसी शख़्स की मामूली सी इबादत, एक दफ़ा का कलमा-ए-तैयबा क़ुबूल कर ले, जैसा कि फ़स्ले अव्वल की हदीस न० 11 में 'हदीसुल बताक़ा' में गुज़र चुका है, तो उस की बरकत से सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ

इन्नल्ला ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र क बिही व यग़्फ़िरु मा दू न ज़ालि क लिमंय्यशाउ०

अल्लाह तआला का क़ुरआन पाक में इर्शाद है तर्जुमा- बेशक अल्लाह तआला शानुहू उसकी तो मग़्फ़िरत नहीं फ़र्माते कि उनके साथ किसी को शरीक किया जाये (यानी मुश्रिक व काफ़िर की तो मग़्फ़िरत है नहीं) इसके अलावा जिसको चाहेंगे, बख़्श देंगे। इसलिए इन क़िस्सों में और इस क़िस्म के दूसरे क़िस्सों में कोई इश्काल नहीं है कि अल्लाह तआला शानुहू को किसी का एक दफ़ा का दरूद पढ़ना पसन्द आ जाये, वह उसकी वजह से सारे गुनाह माफ़ कर दे, बा-अख़्तियार है।

एक शख़्स के किसी के ज़िम्मे हज़ारों रुपए क़र्ज़ हैं, वह क़र्ज़दार की किसी बात पर, जो क़र्ज़ देने वाले को पसंद आ गयी हो या बग़ैर ही किसी बात के ही अपना सारा क़र्ज़ा माफ़ कर दे, तो किसी को क्या एतराज़ हो सकता है। इसी तरह अल्लाह जल्ले शानुहू अगर किसी को महज़ अपने लुत्फ़ व करम से बख़्श दे तो इसमें क्या इश्काल की बात है। इन क़िस्सों से इतना ज़रूर मालूम होता है कि दरूद शरीफ़ को मालिक की ख़ुश्नूदी में बहुत ज़्यादा दख़ल है, इसलिए बहुत ही कसरत से पढ़ते रहना चाहिए, न मालूम किस वक़्त का पढ़ा हुआ और किस मुहब्बत का पढ़ा हुआ पसन्द आ जाए। एक दफ़ा का भी पसंद आ जाये तो बेड़ा पार है-.

बस है अपना एक ही नाला अगर पहुंचे वहां
गरचे करते हैं बहुत से नाला व फ़रियाद हम।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ؎ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

1. बद-शक्ल.

21. एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में एक बहुत ही बुरी बद-हैअत[1] सूरत देखी। उन्होंने उससे पूछा, तू क्या बला है ? उसने कहा, मैं तेरे बुरे अमल हूं। उन्होंने पूछा, तुझ से निजात की क्या सूरत है ? उसने कहा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद की कसरत। (बदीअ) हममें से कौन-सा शख़्स ऐसा है, जो रात दिन बद आमालियों में मुब्तला नहीं है। इसके बदरक़ा[1] के लिए दरूद शरीफ़ बेहतरीन चीज़ है, चलते-फिरते, उठते-बैठते, जितना भी पढ़ा जा सके, दरेग़ न किया जाये कि अक्सीर आज़म है।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِالْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन

अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

22. शेख़ुल मशाइख़ शिब्ली नव्वरल्लाहु मर्कदहू से नकल किया गया है कि मेरे पड़ोस में एक आदमी मर गया। मैंने उसको ख़्वाब में देखा। मैंने उससे पूछा क्या गुज़री। उसने कहा, शिब्ली ! बहुत ही सख़्त-सख़्त परेशानियां गुज़रीं और मुझ पर मुन्किर-नकीर के सवाल के वक़्त गड़बड़ होने लगी। मैंने अपने दिल में सोचा कि या अल्लाह ! यह मुसीबत कहां से आ रही है ? क्या मैं इस्लाम पर नहीं मरा ? मुझे एक आवाज़ आई कि यह दुनिया में तेरी ज़ुबान की बे-एहतियाती की सज़ा है। जब उन दोनों फ़रिश्तों ने मेरे अज़ाब का इरादा किया, तो, फ़ौरन एक निहायत हसीन शख़्स मेरे और उनके दर्मियान हायल हो गया। उसमें से निहायत ही बेहतर ख़ुश्बू आ रही थी। उसने मुझको फ़रिश्तों के जवाबात बता दिए, मैंने फ़ौरन कह दिए। मैंने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला आप पर रहम करे, आप कौन साहब हैं ? उन्होंने कहा, मैं एक आदमी हूं, जो तेरे कसरते दरूद से पैदा किया गया हूं। मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं हर मुसीबत में तेरी मदद करूं। (बदीअ) नेक आमाल बेहतरीन सूरतों में और बुरे आमाल क़बीह सूरतों में आख़िरत में मुमस्सिल[2] होते हैं।

फ़ज़ाइले सदक़ात हिस्सा दोम में मुर्दे के जो अह्वाल तफ़्सील से ज़िक्र किए गए हैं, उसमें तफ़्सील से यह ज़िक्र किया गया है कि मय्यत की लाश जब क़ब्र में रखी जाती है, तो नमाज़ उसकी दायीं तरफ़, रोज़ा बायीं तरफ़ और क़ुरआन पाक की तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र सर की तरफ़ वग़ैरह-वग़ैरह खड़े हो जाते हैं और जिस जानिब से अज़ाब आता है, वह मुदाफ़अत[3] करते हैं। इसी तरह से बुरे आमाल

1. इस कमी को दूर करने के लिए, 2. उस जैसी शक्ल अख़्तियार करते हैं, 3. उस को दूर करते है,

ख़बीस सूरतों में, जकात का माल अदा न करने की सूरत में तो क़ुरआन पाक और अहादीस में कसरत से यह ज़िक्र किया गया है कि वह माल अजदहा बन कर उसके गले का तौक़ हो जाता है।

अल्लाहुम्मह्फ़ज़्नामिन्हु اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ﴿﴾ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

23. हज़रत अब्दुल्ल रहमान बिन समुरा रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तश्रीफ़ लाये और इर्शाद फ़र्माया कि मैंने रात एक अजीब मंजर देखा कि एक शख़्स है, वह पुल सिरात के ऊपर कभी तो घिसट कर चलता है, कभी घुटनों के बल चलता है, कभी किसी चीज में अटक जाता है। इतनें में मुझ पर दरूद पढ़ना उस शख़्स का पहुंचा और उसने उसको खड़ा कर दिया, यहां तक कि वह पुल सिरात से गुज़र गया (बदीअ अनित्तबरानी वग़ैरह)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ﴿﴾ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

24. हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना रज़ि० हज़रत ख़ल्फ़ रज़ि० से नक़ल करते हैं कि मेरा एक दोस्त था, जो मेरे साथ हदीस पढ़ा करता था उसका इन्तिक़ाल हो गया, मैंने उसको ख़्वाब में देखा कि वह नये सब्ज कपड़ों में दौड़ता फिर रहा है। मैंने उससे यह कहा कि तू हदीस पढ़ने में तो हमारे साथ था, फिर यह इज़ाज़ व इकराम तेरा किस बात पर हो रहा है ? उसने कहा कि हदीसें तो मैं तुम्हारे साथ ही लिखा करता था, लेकिन जब भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम हदीस में आता मैं उसके नीचे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिख देता था। अल्लाह जल्ले शानुहू ने उसके बदले में मेरा यह इक्राम फ़र्माया, जो तुम देख रहे हो। (बदीअ)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ﴿﴾ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

25. अबूसुलैमान मुहम्मद बिन हुसैन हर्रानी रह० कहते हैं कि हमारे पड़ोस में एक साहब थे कि जिनका नाम फ़ज़्ल था, बहुत कसरत से नमाज़-रोज़े में मश्गूल रहते थे। उन्होंने बयान किया कि मैं हदीस लिखा करता था, लेकिन उसमें दरूद शरीफ़ नहीं लिखता था। वह कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जब तू मेरा नाम लिखता है या लेता है, तो दरूद शरीफ़ क्यों नहीं पढ़ता। (इसके बाद उन्होंने दरूद का एहतमाम शुरू कर दिया) उसके कुछ दिनों बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तेरा दरूद मेरे पास पहुंच रहा है जब मेरा नाम लिया करे तो सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा कर (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

26. इन्हीं अबूसुलैमान हर्रानी रह० का ख़ुद अपना एक क़िस्सा नक़ल किया गया है। वह कहते हैं मैंने एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अबूसुलैमान ! जब तू हदीस में मेरा नाम लेता है और उस पर दरूद भी पढ़ता है, तो फिर 'व सल्लम' क्यों नहीं कहा करता। यह चार हुरूफ़ हैं और हर हर्फ़ पर दस नेकियां मिलती हैं, तो तू चालीस नेकियां छोड़ देता है। (बदीअ) फ़स्ल चहारुम के अख़ीर में आदाब के सिलसिले में 'ज़ादुस्सईद' में भी इस नौअ का एक क़िस्सा गुज़र चुका।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

27. इब्राहीम नसफ़ी रह० कहते हैं, मैंने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की, तो मैंने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ अपने से मुन्क़बिज़[1] पाया, तो मैंने जल्दी से हाथ बढ़ाकर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक को बोसा दिया और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मैं तो हदीस के ख़िदमतगारों में हूं, अह्ले सुन्नत से हूं, मुसाफ़िर हूं।

---

1. खिंचा हुआ,

हुज़ूर सल्ल० ने तबस्सुम फ़र्माया[1] और यह इर्शाद फ़र्माया कि जब तू मुझ पर दरूद भेजता है, तो सलाम क्यों नहीं भेजता। उसके बाद से मेरा मामूल हो गया कि मैं सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखने लगा। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

28. इब्ने अबी सुलैमान रह० कहते हैं कि मैंने अपने वालिद को इन्तिक़ाल के बाद ख़्वाब में देखा। मैंने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला शानुहू ने आपके साथ क्या मामला फ़र्माया ? उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। मैंने पूछा, किस अमल पर ? उन्होंने फ़र्माया कि हर हदीस में मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद लिखा करता था। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

29. जाफ़र बिन अब्दुल्लाह रह० कहते हैं कि मैंने (मशहूर मुहद्दिस) हज़रत अबूज़अ़ा रह० को ख़्वाब में देखा कि वह आसमान पर हैं और फ़रिश्तों की इमामत नमाज़ में कर रहे हैं। मैंने पूछा कि यह आली मर्तबा किस चीज़ से मिला है ? उन्होंने कहा कि मैंने अपने इस हाथ से दस लाख हदीसें लिखी हैं और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक लिखता तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे नामी पर सलात व सलाम लिखता और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दरूद भेजे, अल्लाह तआला उस पर दस दफ़ा दरूद (रहमत) भेजते हैं। (बदीअ) इस हिसाब से हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से एक करोड़ दरूद हो गया। अल्लाह तआला शानुहू की तो एक ही रहमत सब कुछ है फिर च जाय कि एक करोड़–

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

---

1. मुस्कराये,

30. हजरत इमाम शाफ़िई रह्मतुल्लाहि अलैहि के मुताल्लिक एक दो क़िस्से 'ज़ादुस्सईद' से भी गुज़र चुके हैं। हज़रत मौसूफ़ रह० के मुताल्लिक इस नौअ के कई ख़्वाब मंकूल हैं। अल्लामा सख़ावी रह० 'क़ौले बदीअ' में अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हकम रह० से नकल करते हैं कि मैंने हजरत इमाम शाफ़िई रह० को ख़्वाब में देखा। मैंने उनसे पूछा कि अल्लाह ने आपके साथ क्या मामला किया ? उन्होंने कहा कि अल्लाह ने मुझ पर रहम फ़र्माया, मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी और मेरे लिए जन्नत ऐसी मुज़य्यन[1] की गयी, जैसा कि दुल्हन को मुज़य्यन किया जाता है और मेरे ऊपर ऐसी बखेर की गयी जैसा दुल्हन पर बखेर की जाती है। (शादी में दुल्हा और दुल्हनों पर रुपये-पैसे वग़ैरह निछावर किये जाते हैं) मैंने पूछा कि यह मर्तबा कैसे पहुंचा ? मुझ से किसी कहने वाले ने यों कहा कि किताब –अर-रिसाला'[2] में यह जो दरूद लिखा है, उसकी वजह से पूछा, वह क्या है ? मुझ से बताया गया कि वह- صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

عَدَدَ مَاذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَعَدَدَ مَاغَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ.

सल्ल० अल्लाहु अला मुहम्मदिन अ द द मा ज़ क र हुज़्ज़ा किरून व अ द द मा ग़ फ़ ल अन ज़ि क्रिहिल् ग़ाफ़िलून० है जब मैं सुबह को उठा, तो मैंने इमाम साहब रह० की किताब 'अर-रिसाला' में यह दरूद इसी तरह पाया।

नुमैरी रह० वग़ैरह ने इमाम मुज़्नी रह० की रिवायत से उनके ख़्वाब का क़िस्सा इस तरह नकल किया है कि मैंने 'हजरत इमाम शाफ़िई रह० को ख़्वाब में देखा। मैंने पूछा कि आपके साथ अल्लाह ने क्या मामला किया ? उन्होंने कहा, मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी, एक दरूद की वजह से जो मैंने अपनी किताब 'अर-रिसाला' में लिखा था वह यह है-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ
وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्लमा ज़ क र हुज़्ज़ाकिरून व सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्ला ग़ फ़ ल अन ज़िक्रिहिल् ग़ाफ़िलून०

बैहक़ी ने अबुलहसन शाफ़ई रह० से उनका अपना ख़्वाब नकल किया है वह कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत

---

1. सजाना, संवारना, 2. हजरत इमाम शाफ़िई की एक किताब का नाम,

की। मैंने हुज़ूर सल्ल० से दर्याफ़्त किया कि या रसूलल्लाह ! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इमाम शाफ़ई रह० ने जो अपने रिसाले में दरूद लिखा है-

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

'सल्लल्लाहु अला मुहम्मदिन कुल्लामा ज क रहुज़्ज़ाकि रून व ग़ फ़ ल अन ज़िक्रिहिल ग़ाफ़िलून०' आपकी तरफ़ से उनको इसका क्या बदला दिया गया है ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरी तरफ़ से यह बदला दिया गया है कि वह हिसाब के लिए नहीं रोके जाएंगे।

इब्ने बनान अस्हबानी रह० कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में जियारत की। मैंने पूछा या रसूलल्लाह ! मुहम्मद बिन इद्रीस यानी इमाम शाफ़ई रह० आपके चचा की औलाद हैं (चचा की औलाद इस वजह से कहा कि आपके दादे हाशिम पर जा कर उनका नसब मिल जाता है। वह अब्द यज़ीद बिन हाशिम की औलाद में हैं) आपने कोई ख़ुसूसी इक्राम उनके लिए फ़र्माया है। हुज़ूरे सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हां ! मैंने अल्लाह तआला से यह दुआ की है कि क़ियामत में इसका हिसाब न लिया जाये। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! यह इक्राम उन पर किस अमल की वजह से हुआ ? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मेरे ऊपर दरूद ऐसे अल्फ़ाज़ के साथ पढ़ा करता था जिन अल्फ़ाज़ के साथ किसी और ने नहीं पढ़ा। मैंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! वह क्या अल्फ़ाज़ हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ (بديع)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्लमा ज करहुज़्ज़ाकिरून व सल्लि अला मुहम्मदिन कुल्लमा ग़ फ़ ल अन ज़िक्रिहिल् ग़ाफ़िलून० (बदीअ)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

31. अबुल क़ासिम मिखज़ी रह० कहते हैं कि मैं और मेरे वालिद रह० रात में हदीस की किताब का मुकाबला[1] किया करते थे, ख़्वाब में यह देखा गया कि जिस

---

1. यानी सही करने की ग़रज़ से एक कापी से दूसरा मिलाता था,

जगह हम मुकाबला किया करते थे, उस जगह एक नूर का स्तून है, जो इतना ऊंचा है कि आसमान तक पहुंच गया। किसी ने पूछा यह स्तून कैसा है, तो यह बताया गया कि वह दरूद शरीफ़ है, जिसको यह दोनों किताब के मुकाबले के वक़्त पढ़ा करते थे। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व शर्रफ़ व कर्रमा

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

32. अबूइस्हाक़ नह्शल रह० कहते हैं कि मैं हदीस की किताब लिखा करता था और उसमें हुज़ूर सल्ल० का पाक नाम इस तरह लिखा करता था–

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا

'क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम म तस्लीमा०' मैंने ख़्वाब में देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी लिखी हुई किताब मुलाहज़ा फ़र्मायी[1] और मुलाहज़ा फ़र्मा कर इर्शाद फ़र्माया कि यह उम्दा है। (बज़ाहिर लफ़्ज़ तस्लीमन के इज़ाफ़े की तरफ़ इशारा है।)

अल्लामा सख़ावी रह० ने और भी बहुत से हज़रात के ख़्वाब इस क़िस्म के लिखे हैं कि उनको मरने के बाद जब बहुत अच्छी हालत में देखा गया और उनसे पूछा गया कि यह एज़ाज़ किस वजह से है, तो उन्होंने बताया कि हर हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम पर दरूद शरीफ़ लिखने की वजह से। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ बदन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

33. हसन बिन मूसा अल-हज़रमी रह०, जो इब्ने उजैना के नाम से मशहूर हैं, कहते हैं कि मैं हदीसे पाक नक़ल किया करता था और जल्दी के ख़्याल से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम पर दरूद लिखने में चूक हो जाती थी। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूरे

1. देखी,

अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जब तू हदीस लिखता है, तो मुझ पर दरूद क्यों नहीं लिखता, जैसा कि अबू उमर व तबरी रह० लिखते हैं, मेरी आंख खुली तो मुझ पर बड़ी घबराहट सवार थी। मैंने उसी वक्त अह्द कर लिया कि अब से जब कोई हदीस लिखूंगा तो सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़रूर लिखूंगा। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ❁ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क खैरिल् खल्कि कुल्लिमहिमी।

34. अबूअली हसन बिन अली अत्तार रह० कहते हैं कि मुझे अबू ताहिर ने हदीसे पाक के चन्द अज्ज़ा[1] लिखकर दिए। मैंने उनमें देखा कि जहां भी कहीं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम आया, वह हुज़ूर सल्ल० के पाक नाम के बाद–

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरन कसीरा०' लिखा करते थे। मैंने पूछा कि इस तरह क्यों लिखते हो। उन्होंने कहा कि मैं अपनी नव-उम्री में हदीसे पाक लिखा करता था और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक नाम पर दरूद नहीं लिखा करता था। मैंने एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख्वाब में ज़ियारत की। मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और मैंने सलाम अर्ज किया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुंह फेर लिया। मैंने दूसरी जानिब हाज़िर होकर सलाम अर्ज किया। हुज़ूर सल्ल० ने उधर से भी मुंह फेर लिया। मैं तीसरी दफ़ा चेहरा-ए-अन्वर की तरफ हाज़िर हुआ। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! आप मुझ से रू-गरदानी क्यों फ़र्मा रहे हैं ?[2] हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि इसलिए कि जब तू अपनी किताब में मेरा नाम लिखता है, तो मुझ पर दरूद नहीं भेजता। उस वक्त से मेरा यह दस्तूर हो गया कि जब मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक नाम लिखता हूं तो–

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

---

1. हिस्से, 2. यानी आप मुझ से मुंह क्यों फेर रहे हैं,

'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरन कसीरा०[1]' लिखता हूं। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

35. अबूहफ़्स समरकन्दी रह० अपनी किताब 'रौनकुल मजालिस' में लिखते हैं कि बल्ख़ में एक ताजिर था, जो बहुत ज़्यादा मालदार था। उसका इन्तिक़ाल हुआ। उसके दो बेटे थे। मीरास में उसका माल आधा-आधा तक़्सीम हो गया, लेकिन तर्का में तीन बाल भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मौजूद थे। एक-एक दोनों ने ले लिया। तीसरे बाल के मुताल्लिक़ बड़े भाई ने कहा कि इसको आधा-आधा कर लें। छोटे भाई ने कहा, हरगिज नहीं। ख़ुदा की क़सम ! हुज़ूर सल्ल० का मू-ए-मुबारक नहीं काटा जा सकता। बड़े भाई ने कहा, क्या तू इस पर राज़ी है कि यह तीनों बाल तू ले ले और यह सारा माल मेरे हिस्से में लगा दे। छोटा भाई ख़ुशी से राज़ी हो गया। बड़े भाई ने सारा माल ले लिया और छोटे भाई ने तीनों मु-ए-मुबारक ले लिए। वह उनको अपनी जेब में हर वक़्त रखता और बार-बार निकालता, उनकी ज़ियारत करता और दरूद शरीफ़ पढ़ता। थोड़ा ही ज़माना गुज़रा था कि बड़े भाई का सारा माल ख़त्म हो गया और छोटा भाई बहुत ज़्यादा मालदार हो गया। जब उस छोटे भाई की वफ़ात हुई, तो सु ल हा[2] में से बाज़ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिस किसी को कोई ज़रूरत हो, इसकी क़ब्र के पास बैठकर अल्लाह तआला शानुहू से दुआ किया करे। (बदीअ)

नुज़्हतुल् मजालिस में भी यह क़िस्सा मुख़्तसर नक़ल किया है, लेकिन इसमें इतना इज़ाफ़ा है कि बड़ा भाई, जिसने सारा माल ले लिया था, बाद में फ़क़ीर हो गया, तो उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की और हुज़ूर सल्ल० से अपने फ़क़्र व फ़ाक़ा की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने ख़्वाब में फ़र्माया, ओ महरूम ! तूने मेरे बालों में बे-रग़्बती की और तेरे भाई ने उनको ले लिया और वह जब उनको देखता है, मुझ पर दरूद भेजता है। अल्लाह जल्ल

---

1. इन लफ़्ज़ों का मतलब यह है कि 'बहुत-बहुत तो पहली कमी को दूर करने के लिए वह ऐसा करते थे, 2. नेक लोगों बुज़ुर्गों,

शानुहू ने उसको दुनिया और आख़िरत में सईद[1] बना दिया। जब उसकी आंख खुली तो आकर छोटे भाई के ख़ादिमों में दाख़िल हो गया। फ़क़त !

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

36. एक औरत हज़रत हसन बसरी रह० के पास आयी और अर्ज़ किया कि मेरी लड़की का इंतिक़ाल हो गया। मेरी यह तमन्ना है कि मैं उसको ख़्वाब में देखूं। हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़र्माया कि इशा की नमाज़ पढ़ कर चार रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़ और हर रक्अत में अल-हम्दु शरीफ़ के बाद 'अल-हु कुमुत्तकासुर' पढ़ और उसके बाद लेट जा और सोने तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़ती रह। उसने ऐसा ही किया। उसने लड़की को ख़्वाब में देखा कि निहायत ही सख़्त अज़ाब में है। तारकोल लिबास उस पर है। दोनों हाथ उसके जकड़े हुए हैं और उसके पांव आग की ज़ंजीरों में बंधे हुए हैं। मैं सुबह को उठकर फिर हज़रत हसन बसरी रह० के पास गयी। हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़र्माया कि उसकी तरफ़ से सद्का कर, शायद अल्लाह जल्ले शानुहू उसकी वजह से तेरी लड़की को माफ़ फ़र्मा दे। अगले दिन हज़रत हसन रह० ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत का एक बाग़ है और उसमें एक बहुत ऊंचा तख़्त है और उस पर एक बहुत निहायत हसीन व जमील ख़ूबसूरत लड़की बैठी हुई है। उसके सर पर एक नूर का ताज है। वह कहने लगी, हसन ! तुमने मुझे भी पहचाना। मैंने कहा नहीं, मैंने तो नहीं पहचाना। कहने लगी मैं वही लड़की हूं, जिस की मां को तुमने दरूद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म दिया था (यानी इशा के बाद सोने तक)। हज़रत हसन रह० ने फ़र्माया कि, तेरी मां ने तो तेरा हाल इसके बर-अक्स[2] बताया था, जो मैं देख रहा हूं। उसने कहा, कि मेरी हालत वही थी जो मां ने बयान की थी। मैंने पूछा, फिर यह मर्तबा कैसे हासिल हुआ ? उसने कहा कि हम सत्तर हज़ार आदमी इसी अज़ाब में मुब्तला थे, जो मेरी मां ने आप से बयान किया। सुलहा में से एक बुज़ुर्ग का गुज़र हमारे क़ब्रस्तान पर हुआ। उन्होंने एक दफ़ा दरूद शरीफ़ पढ़ कर उस का सवाब हम सब को पहुंचा दिया। उन का दरूद अल्लाह तआला के यहां ऐसा क़ुबूल हुआ कि उस की बरकत से हम सब उस अज़ाब से आज़ाद कर दिये गए। और उन बुज़ुर्ग की बरकत से यह रुत्बा नसीब हुआ। (बदीअ)

---

1. नेक बख़्त, 2. उल्टे,

'रौज़ुल् फ़ाइका' में इसी नौअ का एक दूसरा क़िस्सा लिखा है कि एक औरत थी। उसका लड़का बहुत ही गुनाहगार था। उसकी मां उसको बार-बार नसीहत करती, मगर वह बिल्कुल नहीं मानता था। इसी हाल में वह मर गया। उसकी मां को बहुत ही रंज था कि वह बग़ैर तौबा के मरा। उसको बड़ी तमन्ना थी कि किसी तरह उसको ख़्वाब में देखे। उसको ख़्वाब में देखा, तो वह अज़ाब में मुब्तला था। इस की वजह से उसकी मां को और भी ज़्यादा सदमा हुआ। एक ज़माने के बाद उसने दोबारा ख़्वाब में देखा, तो बहुत अच्छी हालत में था, निहायत ख़ुश व ख़ुर्रम। मां ने पूछा, यह क्या हो गया ? उसने कहा कि एक बहुत बड़ा गुनाहगार शख़्स उस क़ब्रस्तान पर गुज़रा, क़ब्रों को देख कर उसको कुछ इब्रत हुई। वह अपनी हालत पर रोने लगा और सच्चे दिल से तौबा की और कुछ क़ुरआन शरीफ़ और बीस मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़कर इस क़ब्रस्तान वालों को बख़्शा, जिसमें मैं था, इसमें से जो हिस्सा मुझे मिला, उसका यह असर है, जो तुम देख रही हो। मेरी अम्मां ! हुज़ूर सल्ल० पर दरूद दिलों का नूर है, गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और ज़िंदा और मुर्दा दोनों के लिए रहमत है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَىٰ حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।।

37. हज़रत कअ़ब अह्बार रज़ि०, जो तौरात के बहुत बड़े आलिम थे, वह कहते थे कि अल्लाह जल्ले शानुहू ने हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास वही भेजी कि ऐ मूसा ! अगर दुनिया में ऐसे लोग न हों जो मेरी हम्द व सना करते रहते हैं, तो आसमान से एक क़तरा पानी का न टपकाऊं और ज़मीन से एक दाना न उगाऊं और भी बहुत सी चीज़ों का ज़िक्र किया। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया , ऐ मूसा ! अगर तू यह चाहता है कि मैं तुझ से इससे भी ज़्यादा क़रीब हो जाऊं जितना तेरी ज़ुबान से तेरा कलाम और जितना तेरे दिल से इस के ख़तरात और तेरे बदन से इसकी रूह और तेरी आंख से इस की रोशनी। हज़रत मूसा अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अर्ज़ किया, या अल्लाह ! ज़रूर बतायें। इर्शाद हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कसरत से दरूद पढ़ा कर। (बदीअ)

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

38. मुहम्मद बिन सईद बिन मुत्रिफ रह० जो नेक लोगों मे से एक बुज़ुर्ग थे कहते थे कि मैंने अपना यह मामूल बना रखा था कि रात को जब सोने के वास्ते लेटता, तो एक मिक्दारे मुअय्यन[1] दरूद शरीफ़ की पढ़ा करता था। एक रात को मैं बाला ख़ाने पर अपना मामूल पूरा करके सो गया, तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। मैंने देखा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बालाख़ाने के दरवाज़े से अंदर तश्रीफ़ लाए। हुज़ूर सल्ल० की तश्रीफ़ आवरी से बालाख़ाना सारा एक दम रोशन हो गया। हुज़ूर सल्ल० मेरी तरफ़ को तश्रीफ़ लाये, और इर्शाद फ़र्माया कि, ला इस मुंह को ला, जिससे तू कसरत से मुझ पर दरूद पढ़ता है, मैं उसको चुमूंगा। मुझे इससे शर्म आयी कि मैं देहने मुबारक[2] की तरफ़ मुंह करूं। तो मैंने उधर से अपने मुंह को फेर लिया, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे रुख़्सारे पर प्यार किया। मेरी घबरा कर एक दम आंख खुल गई। मेरी घबराहट से मेरी बीवी, जो मेरे पास पड़ी सोइ हुई थी, उसकी भी एक दम आंख खुल गयी, तो सारा बालाख़ाना मुश्क की ख़ुश्बू से महक रहा था। और मुश्क की ख़ुश्बू मेरे रुख़्सार में से आठ दिन तक आती रही। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

39. मुहम्मद बिन मालिक रह० कहते हैं कि मैं बग़दाद गया ताकि क़ारी अबूबक्र बिन मुजाहिद रह० के पास कुछ पढ़ूं। हम लोगों की एक जमाअत उन की ख़िदमत में हाज़िर थी और क़िरअत हो रही थी। इतने में एक बड़े मियां उनकी मज्लिस में आये, जिनके सर पर बहुत ही पुराना अमामा[3] था एक पुराना कुर्ता था, एक पुरानी सी चादर थी। अबूबक्र रह० उनको देख कर खड़े हो गये और उनको अपनी जगह बिठाया और उनसे उनके घर वालों के अह्ल व अयाल[4] की ख़ैरियत पूछी। उन बड़े मियां ने कहा, रात मेरे एक लड़का पैदा हुआ। घर वालों ने मुझ से घी और शहद की फ़र्माइश की। शेख़ अबूबक्र रह० कहते हैं कि मैं उन का हाल सुनकर बहुत ही

---

1. तै मिक़दार (यानी मुक़र्रर तायदाद में), 2. मुबारक होंठ, 3. पगड़ी, 4. बाल बच्चे,

रंजीदा हुआ और इसी रंज व ग़म की हालत में मेरी आंख लग गयी, तो मैंने ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, इतना रंज क्यों है ? अली बिन ईसा वज़ीर के पास जा और उसको मेरी तरफ़ से सलाम कहना और यह अलामत बताना कि तू हर जुमा की रात को उस वक़्त तक नहीं सोता, जब तक कि मुझ पर एक हज़ार मर्तबा दरूद न पढ़ ले और इस जुमा की रात में तूने सात सौ मर्तबा पढ़ा था कि तेरे पास बादशाह का आदमी बुलाने आ गया, तू वहां चला गया और वहां से आने के बाद तूने इस मिक्दार को पूरा किया। यह अलामत बताने के बाद उससे कहना कि इस नौ मौलूद[1] के वालिद को सौ दीनार (अशर्फ़ियां) दे दे ताकि यह अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर ले। क़ारी अबूबक्र रह० उठे और इन बड़े मियां नौ मौलूद के वालिद को साथ लिया और दोनों वज़ीर के पास पहुंचे। क़ारी अबूबक्र रह० ने वज़ीर से कहा, इन बड़े मियां को हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हारे पास भेजा है। वज़ीर खड़े हो गये और उनको अपनी जगह बिठाया, और उनसे क़िस्सा पूछा।

शेख़ अबूबक्र रह० ने सारा क़िस्सा सुनाया, जिससे वज़ीर को बहुत ही ख़ुशी हुई और अपने गुलाम को हुक्म किया कि एक तोड़ा निकाल कर लाये (तोड़ा हमयानी थैली, जिसमें दस हज़ार की मिक्दार होती है) उसमें से सौ दीनार उस नौमौलूद के वालिद को दिए, इसके बाद सौ और निकाले, ताकि शेख़ अबूबक्र रह० को दे। शेख़ ने उनके लेने से इंकार किया। वज़ीर ने इस्रार किया कि इनको ले लीजिए, इसलिए कि यह उस बशारत की वजह से है, जो आपने मुझे इस वाक़िए के मुताल्लिक़ सुनायी, इसलिए कि यह वाक़िआ यानी एक हज़ार दरूद वाला एक राज़ है, जिस को मेरे और अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। फिर सौ दीनार और निकाले और यह कहा कि यह उस ख़ुशख़बरी के बदले में है कि तुमने मुझे उसकी बशारत सुनायी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेरे दरूद शरीफ़ पढ़ने की इत्तिला है। और फिर सौ अशर्फ़ियां और निकालीं और यह कहा कि यह उस मशक़्क़त के बदले में है, जो तुम को यहां आने में हुई और इसी तरह सौ-सौ अशर्फ़ियां निकालते रहे, यहां तक कि एक हज़ार अशर्फ़ियां निकालीं, मगर उन्होंने यह कह कर इन्कार कर दिया कि हम इस मिक्दार यानी सौ दीनार से ज़ायद नहीं लेंगे, जिनका हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फ़र्माया (बदीअ)

1. नये पैदा हुए बच्चे,

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दामन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

40. अब्दुर्रहीम बिन अब्दुर्रहमान रह० कहते हैं कि एक दफ़ा ग़ुस्लख़ाने में गिरने की वजह से मेरे हाथ में बहुत ही सख़्त चोट लग गयी, इसकी वजह से हाथ में वरम हो गया। मैंने रात बहुत बेचैनी में गुज़ारी, मेरी आंख लग गयी, तो मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। मैंने इतना ही अर्ज किया था कि या रसूलल्लाह ! हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तेरी कस्रते दरूद ने मुझे घबरा दिया। मेरी आंख खुली तो तक्लीफ़ बिल्कुल जाती रही थी और वरम भी जाता रहा था। (बदीअ)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

41. अल्लामा सख़ावी रह० फ़र्माते हैं कि मुझ से शेख़ अहमद बिनर्असलान रह० के शागिर्दों में से एक मोतमद ने कहा कि उनको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई और हुज़ूरे सल्ल० की ख़िद्मत में यह किताब 'क़ौले बदीअ फ़िस्सलाति अलल् हबीबिश्शफ़ीअ्', जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद ही के बयान में अल्लामा सख़ावी रह० की मशहूर तालीफ़ है और इस रिसाला के अक्सर मज़ामीन इसी से लिए गए हैं, हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में यह किताब पेश की गयी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको क़ुबूल फ़र्माया। बहुत तवील ख़्वाब है, जिसकी वजह से मुझे इन्तिहाई मसर्रत हुई और मैं अल्लाह की और उसके पाक रसूल सल्ल० की तरफ़ से उसकी क़ुबूलियत की उम्मीद रखता हूं और इन्शाअल्लाह दारैन में ज़्यादा से ज़्यादा सवाब का उम्मीदवार हूं, पस तू भी ऐ मुख़ातिब ! अपने पाक नबी सल्ल० का ज़िक्र ख़ूबियों के साथ करता रहा कर, और दिल और ज़ुबान से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कसरत से दरूद भेजता रहा कर, इसलिए कि तेरा दरूद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हुज़ूर सल्ल० की क़ब्रे अतहर में पहुंचता है और तेरा नाम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में पेश किया जाता है। (बदीअ)

صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا كُلَّمَا ذَكَرَهٗ

الذَّاكِرُوْنَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिहि व सह्बिही व अत्बाअिही व सल्ल म तस्लीमन कसीरन कसीरन कसीरन कुल्लमा ज़क र हुज़्ज़ाकिरून व कुल्लमा ग़ फ़ ल अन ज़िक्रिहिल् ग़ाफ़िलून०

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

42. अल्लामा सख़ावी रह०, अबूबक्र बिन मुहम्मद रह० से नक़ल करते हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र बिन मुजाहिद रह० के पास था कि इतने में शेख़ुल मशाइख़ हज़रत शिबली रह० आये। उनको देख कर अबूबक्र बिन मुजाहिद रह० खड़े हो गए। उनसे मुआनक़ा[1] किया, उनकी पेशानी को बोसा दिया। मैंने उन से अर्ज़ किया कि मेरे सरदार! आप शिब्ली के साथ यह मामला करते हैं, हालांकि आप और सारे उलमा–ए–बग़दाद यह ख़्याल करते हैं कि यह पागल हैं। उन्होंने फ़र्माया कि मैंने वही किया कि जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को करते देखा। फिर उन्होंने अपना ख़्वाब बताया कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में शिब्ली हाज़िर हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गये और उन की पेशानी को बोसा दिया और मेरे इस्तिफ़्सार[2] पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि यह हर नमाज़ के बाद–

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

'ल क़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम' आख़िर सूर: तक पढ़ता है और इस के बाद मुझ पर दरूद पढ़ता है।

एक और रिवायत में है कि जब भी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता है, उसके बाद यह आयते शरीफ़ा–

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

ल क़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम०

---

1. गले मिले, 2. पूछने पर,

पढ़ता है और इसके बाद तीन मर्तबा–

صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ

–सल्लल्लाहु अलै क या मुहम्मदु सल्लल्लाहु अलै क या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलै क या मुहम्मद०' पढ़ता है। अबूबक्र रह० कहते हैं कि इस ख़्वाब के बाद जब शिब्ली आये, तो मैंने उनसे पूछा कि नमाज़ के बाद क्या दरूद पढ़ते हो ? तो उन्होंने यही बताया।

एक और साहब से इसी नौअ का एक क़िस्सा नक़ल किया गया है, अबूल क़ासिम ख़िफ़ाफ़ रह० कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत शिब्ली रह० अबूबक्र बिन मूजाहिद रह० की मस्जिद मे गये, अबूबक्र रह० उनको देख कर खड़े हो गये। अबूबक्र रह० के शागिर्दों में इसका चर्चा हुआ। उन्होंने उस्ताद से अर्ज़ किया कि आप की ख़िदमत में वज़ीर आज़म आये, उनके लिये तो आप खड़े हुए नहीं, शिब्ली के लिए आप खड़े हो गये। उन्होंने फ़र्माया कि मैं ऐसे शख़्स के लिए क्यों न खड़ा हूं, जिसकी ताज़ीम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद करते हों। इसके बाद उस्ताद ने अपना एक ख़्वाब बयान किया और यह कहा कि रात मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की थी। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में इर्शाद फ़र्माया था कि कल को तेरे पास एक जन्नती शख़्स आयेगा, जब वह आये तो उसका इक्राम करना।

अबूबक्र रह० कहते हैं कि इस वाक़िआ के दो एक दिन के बाद फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में इर्शाद फ़र्माया कि ऐ अबूबक्र ! अल्लाह तुम्हारा भी ऐसा ही इक्राम फ़र्माये, जैसा कि तुम ने एक जन्नती आदमी का इक्राम किया। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! शिब्ली का यह एज़ाज़ आप के यहां किस वजह से है? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह पांचों नमाज़ों के बाद यह आयत पढ़ता है – लक़द जाअकुम रसूलुन (अल-आय:) – और अस्सी वर्ष से इसका यह मामूल है। (बदीअ)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا ۞ عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

43. इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० ने एहयाउल् उलूम में अब्दुल् वाहिद बिन ज़ैद बसरी

रह० से नकल किया है कि मैं हज को जा रहा था, एक शख़्स मेरा रफ़ीके सफ़र हो गया। वह हर वक़्त चलते-फिरते, उठते-बैठते, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा करता था। मैंने उससे इस कसरते दरूद का सबब पूछा। उसने कहा कि जब मैं सबसे पहले हज के लिए हाजिर हुआ तो मेरे बाप भी साथ थे। जब हम लौटने लगे तो हम एक मंज़िल पर सो गये, मैंने ख़्वाब में देखा, मुझ से कोई शख़्स कह रहा है कि, उठ तेरा बाप मर गया और उसका मुंह काला हो गया। मैं घबराया हुआ उठा तो अपने बाप के मुंह पर से कपड़ा उठा कर देखा तो वाक़ई मेरे बाप का इंतिक़ाल हो चुका था और उसका मुंह काला हो रहा था। मुझ पर इस वाक़िया से इतना ग़म सवार हुआ कि मैं इसकी वजह से बहुत ही मर्अूब हो रहा था। इतने में मेरी आंख लग गयी। मैंने दोबारा ख़्वाब में देखा कि मेरे बाप के सर पर चार हब्शी काले चेहरे वाले, जिनके हाथ में लोहे के बड़े डंडे थे, मुसल्लत हैं। इतने में एक बुज़ुर्ग निहायत हसीन चेहरा, दो सब्ज़ कपड़े पहने हुए तशरीफ़ लाये और उन्होंने उन हब्शियों को हटा दिया और अपने दस्ते मुबारक को मेरे बाप के मुंह पर फेरा और मुझ से इर्शाद फ़र्माया कि उठ, अल्लाह तआला ने तेरे बाप के चेहरे को सफ़ेद कर दिया। मैंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! आप कौन हैं? आप ने फ़र्माया, मेरा नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है। इसके बाद से मैंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद कभी नहीं छोड़ा।

'नुज्हतुल मजालिस' में एक और क़िस्सा इसी नौअ़ का अबूहामिद क़ज़्वेनी रह० के हवाले से नकल किया है कि एक शख़्स और उसका बेटा दोनों सफ़र कर रहे थे। रास्ते में बाप का इन्तिक़ाल हो गया और उसका सर (मुंह वग़ैरह) सुअर जैसा हो गया। वह बेटा बहुत रोया और अल्लाह जल्ले शानुहू की बारगाह में दुआ और आजिज़ी की। इतने में उसकी आंख लग गयी, तो ख़्वाब में देखा, कोई शख़्स कह रहा है कि तेरा बाप सूद खाया करता था, इसलिए यह सूरत बदल गयी, लेकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके बारे में सिफ़ारिश की है, इसलिए कि जब यह आप सल्ल० का ज़िक्रे मुबारक सुनता, तो दरूद भेजा करता था। आप सल्ल० की सिफ़ारिश से उसको उसकी अपनी असली सूरत पर लौटा दिया गया।

'रौज़ुल फ़ाइक़' में इसी नौअ का एक और क़िस्सा नक़ल किया है, वह हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० से नकल करते हैं कि मैं तवाफ़ कर रहा था। मैंने एक शख़्स को देखा कि वह हर क़दम पर दरूद ही पढ़ता है और कोई चीज़ तस्बीह व तह्लील वग़ैरह नहीं पढ़ता। मैंने उससे पूछा इसकी क्या वजह ? उसने पूछा, तू कौन है ? मैंने कहा कि मैं सुफ़ियान सौरी रह० हूं। उसने कहा कि अगर तू अपने ज़माने का

यक्ता न होता, तो मैं न बताता और अपना राज़ न खोलता। फिर उसने कहा कि मैं और मेरे वालिद हज को जा रहे थे। एक जगह पहुंच कर मेरा बाप बीमार हो गया। मैं इलाज का एहतमाम करता रहा कि एकदम उनका इन्तिक़ाल हो गया। और मुंह काला हो गया। मैं देखकर बहुत ही रंजीदा हुआ और 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ी और कपड़े से उनका मुंह ढक दिया। इतने में मेरी आंख लग गयी। मैंने ख़्वाब में देखा कि एक साहब जिनसे ज़्यादा हसीन मैंने किसी को नहीं देखा और उनसे ज़्यादा साफ़-सुथरा लिबास किसी का नहीं देखा और उनसे ज़्यादा बेहतरीन ख़ुश्बू मैंने कहीं नहीं देखी, तेजी से क़दम बढ़ाये चले आ रहे हैं। उन्होंने मेरे बाप के मुंह पर से कपड़ा हटाया और उसके चेहरे पर हाथ फेरा तो उसका चेहरा सफ़ेद हो गया। वह वापस जाने लगे तो मैंने जल्दी से उनका कपड़ा पकड़ लिया और मैंने कहा, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, आप कौन हैं कि आपकी वजह से अल्लाह तआला ने मेरे बाप पर मुसाफ़रत में एहसान फ़र्माया। वह कहने लगे कि तू मुझे नहीं पहचानता, मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, साहबे क़ुरआन हूं (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), यह तेरा बाप बड़ा गुनाहगार था, लेकिन मुझ पर कसरत से दरूद भेजता था। जब उस पर यह मुसीबत नाज़िल हुई, तो मैं उसकी फ़रियाद को पहुंचा और मैं हर उस शख़्स की फ़रियाद को पहुंचता हूं, जो मुझ पर कसरत से दरूद भेजे।

يَامَنْ يُّجِيْبُ دُعَا الْمُضْطَرِّ فِي الظُّلَمِ (۱) يَا كَاشِفَ الضُّرِّ وَالْبَلْوٰى مَعَ السَّقَمِ

شَفِّعْ نَبِيَّكَ فِيْ ذُلِّيْ وَمَسْكَنَتِيْ (۲) وَاسْتُرْ فَإِنَّكَ ذُوْ فَضْلٍ وَّذُوْ كَرَمٍ

وَاغْفِرْ ذُنُوْبِيْ وَسَامِحْنِيْ بِهَا كَرَمًا (۳) تَفَضُّلًا مِّنْكَ يَا ذَا الْفَضْلِ وَالنِّعَمِ

إِنْ لَّمْ تُغِثْنِيْ بِعَفْوٍ مِّنْكَ يَا أَمَلِيْ (۴) وَاخَجْلَتِيْ وَحَيَائِيْ مِنْكَ وَانَدَمِيْ

يَارَبِّ صَلِّ عَلَى الْهَادِي الْبَشِيْرِ وَمَنْ (۵) لَّهُ الشَّفَاعَةُ فِي الْعَاصِيْ أَخِي النَّدَمِ

يَارَبِّ صَلِّ عَلَى الْمُخْتَارِ مِنْ مُّضَرٍ (۶) أَزْكَى الْخَلَائِقِ مِنْ عُرْبٍ وَّمِنْ عَجَمٍ

يَارَبِّ صَلِّ عَلٰى خَيْرِ الْأَنَامِ وَمَنْ (۷) سَادَ الْقَبَائِلَ فِي الْأَنْسَابِ وَالشِّيَمِ

صَلَّى عَلَيْهِ الَّذِيْ أَعْطَاهُ مَنْزِلَةً (۸) عُلْيَاءَ إِذْ كَانَ حَقًّا أَفْضَلَ الْأُمَمِ

صَلَّى عَلَيْهِ الَّذِيْ أَعْلَاهُ مَرْتَبَةً (۹) ثُمَّ اصْطَفَاهُ حَبِيْبًا بَارِئُ النَّسَمِ

صَلَّى عَلَيْهِ صَلٰوةً لَا انْقِطَاعَ لَهَا (۱۰) مَوْلَاهُ ثُمَّ عَلٰى صَحْبٍ وَّذِيْ رَحِمٍ

तर्जुमा 1. ऐ वह पाक ज़ात ! जो मुज़्तर[1] की अंधेरियों की दुआएं क़ुबूल

---

1. वह शख़्स जो बिल्कुल मजबूर हो गया हो, 2. मुफ़्लिसी,

करता है, ऐ वह पाक ज़ात ! जो मज़र्रतों[2] को बलाओं को, बीमारियों को ज़ायल करने वाला है।

2. अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत मेरी ज़िल्लत और आजिज़ी में क़ुबूल फ़र्मा ले और मेरे गुनाहों की पर्दापोशी फ़र्मा, बेशक तू एहसान और करम वाला है।

3. मेरे गुनाहों को माफ़ फ़र्मा और उनसे मुसामहत[1] फ़र्मा अपने करम और एहसान की वजह से, ऐ एहसान वाले ! और ऐ नेमतों वाले ।

4. ऐ मेरी उम्मीदगाह ! अगर तू अपने अफ़्व[2] से मेरी मदद नहीं फ़र्मायेगा, तो मुझे कितनी ख़जालत[3] होगी, कितनी तुझ से शर्म आयेगी और कितनी नदामत[4] होगी।

5. ऐ मेरे रब ! दरूद भेज हादी[5], बशीर[6] पर और उस ज़ात पर जिसके लिए शफ़ाअत का हक है, गुनाहगार और नदामत वाले के हक में।

6. ऐ रब ! दरूद भेज, उस शख़्स पर, जो कबीला मुज़र में सबसे ज़्यादा बर्गुज़ीदा है और जो सारी मख़्लूक में, अरब हो या अजम को,सब से अफ़्ज़ल है।

7. ऐ रब ! दरूद भेजिए उस शख़्स पर जो सारी दुनिया से अफ़्ज़ल है और उस शख़्स पर, जो तमाम कबाइल का सरदार बन गया है,नस्ब के एतबार से भी और अख़्लाक के एतबार से भी।

8. जिस पाक ज़ात ने उसको आला मर्तबा अता फ़र्माया है, वही उस पर दरूद भी भेजे। बेशक वह इस दर्जे का मुस्तहिक़ भी है और सारी मख़्लूक से अफ़्ज़ल।

9. वही पाक ज़ात उस पर दरूद भेजे, जिसने उसको आला मर्तबा अता फ़र्माया, फिर उसको अपना महबूब बनाने के लिए छांटा, वह पाक ज़ात, जो मख़्लूक को पैदा करने वाली है।

10. उसका मौला, उस पर ऐसा दरूद भेजे, जो कभी ख़त्म होने वाला न हो। इसके बाद उसके सहाबा पर दरूद भेजे, और उसके रिश्तेदारों पर।[7]

---

1. यानी तवज्जोह न फ़र्मा, 2. बख़्शिश, 3. 4. शर्मिंदगी, 5. रहनुमाई करने वाले, 6. ख़ुशख़बरी देने वाले पर, 7. रौज़ुल फ़ाइक,

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

44. 'नुज़्हतुल् मजालिस' में लिखा है कि एक साहब किसी बीमार के पास गये। (उनकी नज़अ़ की हालत थी,) उनसे पूछा कि मौत की कड़वाहट कैसी मिल रही है ? उन्होंने कहा कि मुझे कुछ नहीं मालूम हो रहा है, इसलिए कि मैंने उलमा से सुना है कि जो शख़्स कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ता है, वह मौत की तल्ख़ी से महफ़ूज़ रहता है।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ۞ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सलिल्लम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

45. 'नुज़्हतुल मजालिस' में लिखा है कि बाज़ सुलहा में से एक साहब को हब्स बोल[1] का मर्ज़ हो गया। उन्होंने ख़्वाब में आरिफ़ बिल्लाह हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन बिन रसलान रह० को, जो बड़े ज़ाहिद और आलिम थे, देखा और उनसे अपने मर्ज़ की शिकायत व तक्लीफ़ कही। उन्होंने फ़र्माया, तू तिरयाक़ मुजर्रब[2] से कहाँ ग़ाफ़िल है, यह दरूद पढ़ा कर–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَلْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُلُوْبِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ وَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम व बारिक अला रूहि सय्यिदिना मुहम्मदिन फ़िल् अर्वाहि व सल्लि व सल्लिम अला क़ल्बि सय्यिदिना मुहम्मदिन फ़िल् क़ुलूबि व सल्लि व सल्लिम अला ज स दि मुहम्मदिन फ़िल् अज्सादि व सल्लि व सल्लिम अला क़ब्रि सय्यिदिना मुहम्मदिन फ़िल् क़ुबूरि०

ख़्वाब से उठने के बाद उन साहब ने इस दरूद को कसरत से पढ़ा और उनका मर्ज़ ज़ायल हो गया।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

1. पेशाब रुकने का मर्ज़, 2. तर्जुबे की अक्सीर दवा,

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्क़ि कुल्लिहिमी।

46. हाफ़िज़ अबू नईम रह० हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० नक़ल करते हैं कि मैं एक दफ़ा बाहर जा रहा था। मैंने एक जवान को देखा कि जब वह क़दम उठाता है, या रखता है, तो यों कहता है–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

'अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मद' मैंने उनसे पूछा क्या किसी इल्मी दलील से तेरा यह अमल है ? (या महज़ अपनी राय से ?) उसने पूछा, तुम कौन हो ? मैंने कहा, सुफ़ियान सूरी रह०। उसने कहा, क्या इराक़ वाले सुफ़ियान ? मैंने कहा, हां ! कहने लगा, तुझे अल्लाह की मारफ़त हासिल है, मैंने कहा, हां है। उसने पूछा, किस तरह मारफ़त हासिल है ? मैंने कहा, रात से दिन निकालता है, दिन से रात निकालता है, मां के पेट में बच्चे की सूरत पैदा करता है। उसने कहा कि कुछ नहीं पहचाना। मैंने कहा, फिर तू किस तरह पहचानता है? उसने कहा, किसी काम का पुख़्ता इरादा करता हूं, उसको फ़स्ख़[1] करना पड़ता है और किसी काम के करने की ठान लेता हूं, मगर नहीं कर सकता। इससे मैंने पहचान लिया कि कोई दूसरी हस्ती है, जो मेरे कामों को अन्जाम देती है। मैंने पूछा, यह तेरा दरूद क्या चीज़ है ? उसने कहा, मैं अपनी मां के साथ हज को गया था। मेरी मां वहीं रह गयी (यानी मर गयी) उसका मुंह काला हो गया और उसका पेट फूल गया, जिससे मुझे यह अन्दाज़ा हुआ कि कोई बहुत बड़ा सख़्त गुनाह हुआ है। इससे मैंने अल्लाह जल्ले शानुहू की तरफ़ दुआ के लिए हाथ उठाये, तो मैंने देखा कि तिहामा (हिजाज़) से एक अब्र आया, उससे एक आदमी ज़ाहिर हुआ। उसने अपना मुबारक हाथ मेरी मां के मुंह पर फेरा, जिससे वह बिल्कुल रोशन हो गया और पेट पर हाथ फेरा तो वरम बिल्कुल जाता रहा। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि आप कौन हैं कि मेरी और मेरी मां की मुसीबत को आपने दूर किया। उन्होंने फ़र्माया कि मैं तेरा नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हूं। मैंने अर्ज़ किया, मुझे कोई वसीयत कीजिए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जब कोई क़दम रखा करे या उठाया करे तो–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

---

1. तोड़ना,

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन॰ पढ़ा कर। (नुजहत)

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا ؛ عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

47. साहबे एह्या रह॰ ने लिखा है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद हजरत उमर रज़ि॰ रो रहे थे और यों कह रहे थे कि या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! एक खजूर का तना, जिस पर सहारा लगाकर आप मिम्बर बनने से पहले ख़ुत्बा पढ़ा करते थे, फिर जब मिम्बर बन गया और आप उस पर तशरीफ़ ले गये तो वह खजूर का तना आपके फ़िराक़[1] से रोने लगा, यहां तक कि आपने अपना दस्ते मुबारक उस पर रखा, जिससे उसको सुकून हुआ, (यह हदीस का मशहूर क़िस्सा है) या रसूलल्लाह ! आपकी उम्मत आप के फ़िराक़ से रोने की ज़्यादा मुस्तहिक़ है ब निस्बत उस तने के (यानी उम्मत अपने सुकून के लिए तवज्जोह की ज़्यादा मुहताज है) या रसूलल्लाह ? मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान । आपका आली मर्तबा अल्लाह के नजदीक इस क़दर ऊंचा हुआ कि उसने आपकी इताअत को अपनी इताअत क़रार दिया। चुनांचे इर्शाद फ़र्माया-

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ

'मंय्युतिअिर्रसू ल फ़क़द अता अल्लाह' (जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की) या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! आपकी फ़ज़ीलत अल्लाह के नजदीक इतनी ऊंची हुई कि आपसे मुतालबा से पहले माफ़ी की इत्तिला फ़र्मा दी, चुनांचे इर्शाद फ़र्माया -

अफ़ल्लाहु अन्क लि म अजिन्त लहुम عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ

(अल्लाह तआला तुम्हें माफ़ करे, तुमने इन मुनाफ़िक़ों को जाने की इजाज़त दी ही क्यों ? या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान ! आपका उलूले शान अल्लाह के नजदीक ऐसा है कि आप अगरचे ज़माने के एतबार से आख़िर में आये, लेकिन अंबिया की मीसाक़ में आप को सबसे पहले जिक्र किया गया। चुनांचे इर्शाद है-

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ (الاية)

व इज़ अख़ज़्ना मिनन्नबी यी न मीसा क़ हुम व मिन्क व मिन् नूहिंन व

1. जुदाई,

इब्राही म (अल-आय:) या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान। आपकी फ़ज़ीलत का अल्लाह के यहां यह हाल है कि काफ़िर जहन्नुम में पड़े हुए इसकी तमन्ना करेंगे कि काश ! आपकी इताअत करते और कहेंगे-

يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَ

या लै त ना अतअनल्ला ह व अतअनर्रसू ल०

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान ! अगर हज़रत मूसा (अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) को अल्लाह जल्ले शानुहू ने यह मोजज़ा अता फ़र्माया है कि पत्थर से नहरें निकाल दें, तो यह उससे ज़्यादा अजीब नहीं है कि अल्लाह तआला ने आपकी उंगलियों से पानी जारी कर दिया (कि हुज़ूर सल्ल० का यह मोजज़ा मशहूर है) या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! कि अगर हज़रत सुलैमान (अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) कि हवा उनको सुबह के वक़्त में एक महीने का रास्ता तै करा दे और शाम के वक़्त में एक महीने का तै करा दे, तो यह उससे ज़्यादा अजीब नहीं है कि आपका बुराक़ रात के वक़्त में आपको सातवें आसमान से भी परे ले जाये और सुबह के वक़्त आप मक्का मुकर्रमा वापस आ जायें। 'सल्लल्लाहु अलैक' (अल्लाह ही आप पर दरूद भेजे।) या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान, अगर हज़रत ईसा (अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) को अल्लाह तआला ने यह मोजज़ा अता फ़र्माया कि वह मुर्दों को ज़िंदा फ़र्मा दें, तो यह उससे ज़्यादा अजीब नहीं कि एक बकरी, जिसके गोश्त के टुकड़े आग में भून दिये गये हों, वह आप से यह दर्ख़्वास्त करे कि आप मुझे न खायें, इसलिए कि मुझमें ज़हर मिलाया गया है। या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान, हज़रत नूह अला नबीयिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी क़ौम के लिए यह इर्शाद फ़र्मा कि-

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا

रब्बि ला तज़र अलल् अर्ज़ि मिनल् काफ़िरी न दय्यारा०

(ऐ रब ! काफ़िरों में से ज़मीन पर बसने वाला कोई न छोड़।) अगर आप भी हमारे लिए बद-दुआ कर देते, तो हममें से एक भी बाक़ी न रहता। बेशक काफ़िरों ने आपकी पुश्ते मुबारक को रौंदा (कि जब आप नमाज़ में सज्दे में थे, आपकी पुश्ते मुबारक पर ऊंट का बच्चादान रख दिया था और ग़ज़्वा-ए-उहद में आपके चेहरा-ए-मुबारक को ख़ून आलूद किया, आप के दन्दाने मुबारक को शहीद किया, और आपने बजाय बद-दुआ के यों इर्शाद फ़र्माया-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिक़ौमी फ़ इन्नहुमला यअ़्लमून० ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को माफ़ फ़र्मा कि यह लोग जानते नहीं (जाहिल) हैं या रसूल अल्लाह मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान, आपकी उम्र के बहुत थोड़े से हिस्से में (कि नबूवत के बाद 23 ही साल मिले) इतना बड़ा मज्मा आप पर ईमान लाया कि हजरत नूह अला नबीयिना अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तवील[1] उम्र (एक हज़ार वर्ष) में इतने आदमी मुसलमान न हुए (कि हज्जतुल् विदाअ में एक लाख चौबीस हज़ार तो सहाबा रजि० थे और जो लोग ग़ाइबाना मुसलमान हुए, हाजिर न हो सके, उनकी तायदाद तो अल्लाह ही को मालूम है) आप पर ईमान लाने वालों की तायदाद बहुत ज़्यादा है। बुखारी की मशहूर हदीस 'उरिज़त अलल् उमूमि' में है-

रऐ तु सवादन कसीरन सद्दल् उफ़ क़ رَاَيْتُ سَوَادًا كَثِيْرًا سَدَّ الْاُفُقَ

(कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उम्मत को इतनी कसीर मिक़्दार में देखा कि जिसने सारे जहान को घेर रखा था) और हजरत नूह अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं। क़ुरआन पाक में है-

व मा आम न मअ़ हू इल्ला क़लील० وَمَا اٰمَنَ مَعَهٗ اِلَّا قَلِيْلٌ

या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान, अगर आप अपने हमजिंसों ही के साथ नशिस्त व बर्ख़ास्त[2] फ़र्माते, तो आप हमारे पास कभी न बैठते और अगर आप निकाह न करते, मगर अपने ही हम-मर्तबा से, तो हमारे में से किसी के साथ भी आपका निकाह न हो सकता था और अगर आप अपने साथ खाना न खिलाते, मगर अपने ही हमसरों को, तो हममें से किसी को अपने साथ खाना न खिलाते। बेशक आपने हमें अपने पास बिठाया, हमारी औरतों से निकाह किया, हमें अपने साथ खाना खिलाया, बालों के कपड़े पहने, (अरबी) गधे पर सवारी फ़र्मायी और अपने पीछे दूसरे को बिठाया और ज़मीन पर (दस्तरख़्वान बिछाकर) खाना खाया और खाने के बाद अपनी उंगलियों को (ज़ुबान) से चाटा और यह सब उमूर आपने तवाज़ुअ के तौर पर अख़्तियार फ़र्माये। 'सल्लल्लाहु अलैक व सल्लम' अल्लाह तआला ही आप पर दरूद व सलाम भेजे।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

---

1. लम्बी, 2. उठना-बैठना,

या रब्बि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

48. 'नुज़्हतुल् बसातीन' में हज़रत इब्राहीम ख़्वास रह० से नक़ल किया है, वह फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा मुझको सफ़र में प्यास मालूम हुई और शिद्दते प्यास से बेहोश होकर गिर पड़ा। किसी ने मेरे मुंह पर पानी छिड़का। मैंने आंखे खोलीं, तो एक मर्दे हसीन ख़ूबरू[1] को घोड़े पर सवार देखा। उसने मुझको पानी पिलाया, और कहा, मेरे साथ रहो। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि उस जवान ने मुझको कहा, तुम क्या देखते हो। मैंने कहा, यह मदीना है। उसने कहा उतर जाओ, मेरा सलाम हज़रते रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहना और अर्ज़ करना, आप का भाई ख़िज़र आपको सलाम कहता है।

शेख़ अबुल् ख़ैर अक़्तअ रह० फ़र्माते हैं, मैं मदीना मुनव्वरा में आया। पांच दिन वहां क़याम किया, कुछ मुझ को ज़ौक़ व लुत्फ़ हासिल न हुआ। मैं क़ब्र शरीफ़ के पास हाज़िर हुआ और हज़रते रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० को सलाम किया और अर्ज़ किया, ऐ रसूलल्लाह! आज मैं आप का मेहमान हूं। फिर वहां से हटकर मिम्बर के पीछे सो रहा। ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० आपकी दाहिनी और हज़रत उमर रज़ि० आपकी बायीं जानिब थे और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू आपके आगे थे। हज़रत अली रज़ि० ने मुझ को हिलाया और फ़र्माया कि उठ रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये हैं। मैं उठा[2] और हज़रत सल्ल० के दोनों आंखों के दर्मियान चूमा। हुज़ूर सल्ल० ने एक रोटी मुझको इनायत फ़र्मायी। मैंने आधी खायी और जागा तो आधी मेरे हाथ में थी।

यह शेख़ अबुल ख़ैर रह० का क़िस्सा अल्लामा सख़ावी रह० ने 'क़ौले बदीअ' में भी नक़ल किया है, जिससे मालूम होता है कि नुज़्हत के तर्जुमे में कुछ तसामह[3] हुआ। 'क़ौले बदीअ' के अल्फ़ाज़ ये हैं–

अक़म्तु ख़म्स त अय्यामिन मा ज़ुक़्तु जवाक़न जिसका तर्जुमा यह है कि मैं पांच दिन रहा और मुझे इन दिनों में कोई चीज चखने को भी नहीं मिली। ज़ौक़ व शौक़ हासिल न होना तर्जुमे का तसामह है। इस नाकारा के रिसाला 'फ़ज़ाइले हज' के ज़ियारते मदीना के क़िस्सों में न० 8 पर भी यह क़िस्सा गुज़र चुका है और

1. ख़ूबसूरत मर्द, 2. यनी नींद ही में मुझे खड़ा किया तो मैं खड़ा हो गया, 3. भूल हो गयी,

इसमें इसी नौअ का एक क़िस्सा न० 23 पर इबनुल जला का भी वफ़ाउल् वफ़ा में गुज़र चुका है। और इस नौअ के और भी मुतअद्दिद क़िस्से अकाबिर के साथ पेश आ चुके हैं, जो वफ़ाउल् वफ़ा[1] में कसरत से ज़िक्र किए गए हैं।

हमारे हज़रते अक़्दस शेखुल मशाइख़ मस्नदे हिंद अमीरुल् मोमिनीन फ़िल् हदीस हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहिब नव्वरल्लाह मर्क़दहू अपने रिसाला 'हिर्जे समीन फ़ी मुबश्शरातिन्नबी यिल अमीन', जिसमें उन्होंने चालीस ख़्वाब या मुकाश्फ़ात अपने या अपने वालिद माजिद के हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के सिलसिले में तहरीर फ़र्माये हैं, इसमें न० 12 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि एक रोज मुझे बहुत ही भूख लगी (न मालूम कितने दिन का फ़ाक़ा होगा) मैंने अल्लाह जल्ले शानुहू से दुआ की, तो मैंने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुक़द्दस आसमान से उतरी। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक रोटी थी, गोया अल्लाह जल्ले शानुहू ने हुज़ूर सल्ल० को इर्शाद फ़र्माया था कि यह रोटी मुझे मरहमत फ़र्मायें। न० 13 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि एक दिन मुझे रात को खाने को कुछ नहीं मिला, तो मेरे दोस्तों में से एक शख़्स दूध का प्याला लाया, जिसको मैंने पिया और सो गया। ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि वह दूध मैंने ही भेजा था, यानी मैंने तवज्जोह से उसके दिल में यह बात डाल दी थी कि वह दूध लेकर जाये।

और जब अकाबिर सूफ़िया की तवज्जोहात मारूफ़ व मुतवातिर हैं, तो फिर सय्यिदुल् अव्वलीन वल् आख़िरीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तवज्जोह का क्या पूछना।

हज़रत शाह साहब रह० न० 15 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि मेरे वालिद ने मुझसे बताया कि वह एक दफ़ा बीमार हुए। तो ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मेरे बेटे कैसी तबियत है ? इसके बाद शिफ़ा की बशारत अता फ़र्मायी, और अपनी दाढ़ी मुबारक में से दो बाल मरहमत फ़र्माये मुझे उसी वक़्त सेहत हो गयी और जब मेरी आंख खुली, तो वह दोनों बाल मेरे हाथ में थे।

हज़रत शाह साहब रह० फ़र्माते हैं कि वालिद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने इन दोनों बालों में से एक मुझे मरहमत फ़र्माया था। इसी तरह शाह साहब रह० 18 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि मुझसे मेरे वालिद साहब ने इर्शाद फ़र्माया कि

---

1. एक किताब का नाम, 2. शक झिझक,

इब्तिदा-ए-तालिब इल्मी में मुझे यह ख़्याल पैदा हुआ कि मैं हमेशा रोज़ा रखा करूं, मगर मुझे इसमें उलमा के इख़्तिलाफ़ की वजह से तरद्दुद था कि ऐसा करूं या न करूं। मैंने ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे ख़्वाब में एक रोटी मरहमत फ़र्मायी। हज़रात शेख़ैन[1] वग़ैरह तश्रीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़र्माया- अल हदाया मुश्तरिकतुन[2] - मैंने वह रोटी उनके सामने कर दी। उन्होंने एक टुकड़ा तोड़ लिया, फिर उमर रज़ि० ने फ़र्माया- अलहदाया मुश्तरिकतुन-मैंने वह रोटी उनके सामने कर दी। उन्होंने भी एक टुकड़ा तोड़ लिया। फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़र्माया- अल-हदाया मुश्तरिकतुन। मैंने अर्ज़ किया कि अगर यही अल-हदाया मुश्तरिकतुन रहा, यह रोटी तो इसी तरह तक़्सीम हो जायेगी, मुझ फ़क़ीर के पास क्या बचेगा।

'हिज़्र समीन' में तो यह किस्सा इतना ही लिखा है, लेकिन हज़रत रह० की दूसरी किताब 'अन्फ़ासुल् आरिफ़ीन' में कुछ और भी तफ़्सील है, वह यह है कि मैंने सोने से उठने के बाद इस पर ग़ौर किया कि इसकी क्या वजह है कि हज़रत शेख़ैन के कहने पर तो मैंने रोटी उनके सामने कर दी और हज़रत उस्मान रज़ि० के फ़र्माने पर इन्कार कर दिया। मेरे ज़ेहन में इसकी वजह यह आयी कि मेरी निस्बत नक़्शबंदिया हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० से मिलती है और मेरा सिलसिला-ए-नसब हज़रत उमर रज़ि० से मिलता है, इसलिए इन दोनों हज़रात के सामने तो मुझे इन्कार की जुर्रत नहीं हुई और हज़रत उस्मान रज़ि० से मेरा न तो सिलसिला-ए-सुलूक मिलता था, न सिलसिला-ए-नसब। इसलिए वहां बोलने की जुर्रत हो गयी। फ़क़त।

यह हदीस- अल-हदाया मुश्तरिकतुन मुहद्दिसीन के नज़दीक तो मुतकल्लम फ़ीह[3] है और इसके मुताल्लिक़ अपने 'रिसाले फ़ज़ाइले हज' के ख़त्म पर भी दो क़िस्से-एक क़िस्सा एक बुज़ुर्ग का और दूसरा क़िस्सा हज़रत इमाम अबूयूसुफ़ रह० फ़क़ीहुल उम्मत का लिख चुका हूं। इस जगह इस हदीस से तअर्रुज़[4] नहीं करना था। इस जगह तो यह बयान करना था कि-

أَجْوَدُ النَّاسِ سَيِّدُ الْكَوْنَيْنِ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ

अज्वदुन्नासि सय्यिदुल् कौनैनि अलैहि अफ़्ज़लुस्सलाति वत्तस्लीम०[5] की उम्मत

---

1. यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि०, 2. यानी हदिया सब का होता है, उस में सब का हिस्सा होता है, इसलिए हमें भी दो, 3. यानी जिस में बहुत इख़्तिलाफ़ है, 4. यानी यह हदीस कैसी है, इससे बहस नहीं, 5. यानी अल्लाह के रसूल सल्ल०,

पर माद्दी बरकात भी रोज अफ़्ज़ू हैं।

हज़रत शाह साहब रह०[1] अपने रिसाले 'हिर्जे समीन' में न० 19 पर तहरीर फ़र्माते हैं कि–मुझसे मेरे वालिद ने इर्शाद फ़र्माया कि वह रमज़ानुल मुबारक में सफ़र कर रहे थे, निहायत शदीद गर्मी थी, जिसकी वजह से बहुत ही मशक़्क़त उठानी पड़ी। इसी हालत में मुझे ऊंघ आ गयी, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्ल० ने बहुत ही लज़ीज़ खाना, जिसमें चावल और मीठा और ज़ाफ़रान और घी ख़ूब था (निहायत लज़ीज़ ज़र्दा) मरहमत फ़र्माया, जिसे ख़ूब सेर होकर खाया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने पानी मरहमत फ़र्माया, जिसको ख़ूब सेर होकर पिया, जिससे भूख–प्यास सब जाती रही और जब आंख खुली तो मेरे हाथों में से ज़ाफ़रान की ख़ुश्बू आ रही थी।

इन क़िस्सों में कुछ तरद्दुद न करना चाहिए, इसलिए कि अहादीस सौमि विसाल[2] में–

इन्नी युतअिमुनी रब्बी व यस्क़ीनी إِنِّي يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِي

(मुझे मेरा रब खिलाता और पिलाता है) में इन चीज़ों का माख़ज़[3] और असल मौजूद है और हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद–

इन्नी लस्तु कहै अतिकुम إِنِّي لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ

(कि मैं तुम जैसा नहीं हूं) अवाम के एतबार से है। अगर किसी ख़ुशनसीब को यह करामत हासिल हो जाये तो कोई मानेअ नहीं। अह्ले सुन्नत वल् जमाअत का अक़ीदा है कि करामाते औलिया हक़ हैं। क़ुरआन पाक में हज़रत मर्यम अलैहस्सलाम के क़िस्से में–

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا الخ

कुल्लमा द ख़ ल अलैहा ज़ क रीयल् मेहरा ब व ज द अिन्द हा रिज़्क़ा० वारिद है, यानी जब भी हज़रत ज़करीया अलै० उनके पास तश्रीफ़ ले जाते तो उनके पास खाने–पीने की चीज़ें पाते और उनसे दर्याफ़्त फ़र्माते कि ऐ मर्यम ! यह चीज़ें तुम्हारे पास कहां से आयीं ! वह कहती कि अल्लाह तआला के पास से आई हैं बेशक जिसको अल्लाह तआला चाहते हैं, बे–इस्तिह्क़ाक़ रिज़्क़[4] अता फ़र्माते हैं।

---

1. हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब, 2. मिला कर रखे गए रोज़े, 3. जहां से ली गयी हो, 4. रोज़ी का हक़ रखे बग़ैर,

दरमंसूर की रिवायत में इस रिज़्क की तफ़सील वारिद हुई है कि बग़ैर मौसम के अंगूरों की जंबील भरी हुई होती थी और गर्मी के ज़माने में सर्दी के फल और सर्दी के ज़माने में गर्मी के फल। يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

49. 'नुज़्हतुल् मजालिस' में एक अजीब किस्सा लिखा है कि रात और दिन में आपस में मुनाज़रा[1] हुआ कि हममें से कौन-सा अफ़्ज़ल है। दिन ने अपनी फ़ज़ीलत के लिए कहा कि मेरे में तीन फ़र्ज नमाज़ें हैं और तेरे में दो और मुझ में जुमा के दिन एक साअते इजाबत[2] है, जिसमें आदमी जो मांगे वह मिलता है। (यह सही और मशहूर हदीस है) और मेरे अन्दर रमज़ानुल मुबारक के रोजे रखे जाते हैं, तू लोगों के लिए सोने और ग़फ़लत का ज़रिया है और मेरे साथ तयक्कुज[3] और चौकन्नापन है और मुझ में हरकत है और हरकत में बरकत है। और मेरे में आफ़्ताब निकलता है, जो सारी दुनिया को रोशन कर देता है। रात ने कहा कि अगर तू अपने आफ़्ताब पर फ़ख़्र करता है तो मेरे आफ़्ताब अल्लाह वालों के क़ुलूब है, अह्ले तहज्जुद और अल्लाह की हिक्मतों में ग़ौर करने वालों के क़ुलूब हैं, तू इन आशिक़ों के शराब तक कहां पहुंच सकता है जो ख़लवत के वक़्त में मेरे साथ होते हैं, तू मेराज की रात का क्या मुक़ाबला कर सकता है, तू अल्लाह जल्ले शानुहू के पाक इर्शाद का क्या जवाब देगा, जो उसने अपने पाक रसूल से फ़र्माया-

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ

'वमिनल्लैलि फ़ त हज्जद बिही नाफ़िलतल्लक' कि रात को तहज्जुद पढ़िए जो बतौर नाफ़िला[4] के है आपके लिए। अल्लाह ने मुझे तुझ से पहले पैदा किया, मेरे अन्दर लैलतुलक़द्र है, जिसमें मालिक की न मालूम क्या-क्या अताएं होती हैं। अल्लाह का पाक इर्शाद कि वह हर रात के आख़िरी हिस्से में यों इर्शाद फ़र्माता है, कोई है मांगने वाला, जिसको दूं, कोई है तौबा करने वाला, जिसकी तौबा क़ुबूल करूं। क्या तुझे अल्लाह के इस पाक इर्शाद की ख़बर नहीं-

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا

---

1. बहस, 2. दुआ क़ुबूल होने की घड़ी, 3. जागना, 4. यानी नफ़्ल के दर्जे में है,

'ऐयुहल् मुज़्ज़म्मिलु क़ुमल्लै ल इल्ला क़लीलन०'[1] क्या तुझे अल्लाह के अल्लाह ने इस पाक इर्शाद की ख़बर नहीं कि जिसमें अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا

'सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअब्दिही लैलम् मिनल् मस्जिदिल् हरामि इलल् मस्जिदिल् अक़्सा०' 'पाक है वह ज़ात जो रात को ले गया अपने बंदे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक-फ़क़त- यक़ीनन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजज़ात में मेराज का क़िस्सा भी एक बड़ी अहमियत और बड़ी ख़ुसूसियत रखता है।

क़ाज़ी अयाज़ शिफ़ा में फ़र्माते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल में मेराज की करामत बहुत ही अहमियत रखती है और बहुत ही फ़ज़ाइल को मुतज़म्मिन[2] है। अल्लाह जल्ले शानुहू से सरगोशी, अल्लाह तआला शानुहू की ज़ियारत, अंबिया किराम की इमामत और सिद्‌रतुल मुन्तहा तक तश्रीफ़ बरी-

وَمَا رَاٰی مِنۡ اٰیٰتِ رَبِّہِ الۡکُبۡرٰی

'व मा रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुब्रा०' कि इस जगह अल्लाह शानुहू की बड़ी-बड़ी निशानियों की सैर, यह मेराज का क़िस्सा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुसूसियात में से है और इस क़िस्से में जितने दरजाते रफ़ीया[3] जिन पर क़ुरआन पाक और अहादीसे सहीहा में रोशनी डाली गयी है, यह सब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुसूसियात है। इस क़िस्से को साहबे क़सीदा बुर्दा ने मुख़्तसर लिखा है और जिसको हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने मअ तर्जुमा के 'नश्रुत्तीब' में ज़िक्र किया है, उसी से यहां नक़ल किया जाता है-

मिनल क़सीदा[4]

سَرَیۡتَ مِنۡ حَرَمٍ لَیۡلًا اِلٰی حَرَمٍ | کَمَا سَرَی الۡبَدۡرُ فِیۡ دَاجٍ مِّنَ الظُّلَمِ

आप एक शब में हरम शरीफ़ मक्का से हरम मोहतरम मस्जिदे अक़्सा तक (बावजूद कि इनमें फ़ासला चालीस रोज़ के सफ़र का है) ऐसे (ज़ाहिर व बाहिर तेज़

---

1. यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़र्माया गया है कि रात को कुछ देर नमाज़ पढ़ा करे। 2. ज़मानत देती है, यानी शामिल है, 3. बुलंद दर्जे, 4. क़सीदा का हिस्सा,

रौ कमाले नूरानियत व इख़्तिफ़ाए कदूरत के साथ तशरीफ़ ले गये, जैसा कि बद्र[1] तारीकी के पर्दे में निहायत दरख़्शानी के साथ जाता है।

وَبِتَّ تَرْقٰى اِلٰى اَنْ نِلْتَ مَنْزِلَةً | مِنْ قَابِ قَوْسَيْنِ لَمْ تُدْرَكْ وَلَمْ تُرَمِ

और आपने बहालते तरक़्क़ी रात गुज़ारी और यहां तक तरक़्क़ी फ़र्मायी कि ऐसा क़ुर्बे इलाही हासिल किया जिस पर मुक़र्रिबान दरगाहे ख़ुदावंदी से कोई नहीं पहुंचाया गया था, बल्कि इस मर्तबे का ब सबब ग़ायत रफ़अत किसी ने क़स्द भी नहीं किया था।

وَقَدَّمَتْكَ جَمِيْعُ الْاَنْبِيَاءِ بِهَا | وَالرُّسْلِ تَقْدِيْمَ مَخْدُوْمٍ عَلٰى خَدَمِ

और आपको मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस में तमाम अम्बिया व रुसूल ने अपना इमाम व पेशवा बनाया जैसा मख़्दूम ख़ादिमों का इमाम व पेशवा होता है।

وَاَنْتَ تَخْتَرِقُ السَّبْعَ الطِّبَاقَ بِهِمْ | فِيْ مَوْكِبٍ كُنْتَ فِيْهِ صَاحِبَ الْعَلَمِ

और (मिनजुम्ला आपकी तरक़्क़ियात के, यह अम्र है कि) आप सात आसमानों को तै करते जाते थे, जो एक दूसरे पर है ऐसे लश्करे मलाइका में (जो बलिहाज़ आपकी अज़्मत व शान व तालिफ़े क़ल्बे मुबारक आपके हमराह था और) जिसके सरदार और साहबे अलम[2] आप ही थे।

حَتّٰى اِذَا لَمْ تَدَعْ شَأْوًا لِمُسْتَبِقٍ | مِنَ الدُّنُوِّ وَلَا مَرْقًى لِمُسْتَنِمِ

आप रुत्बा-ए-आली की तरफ़ बराबर तरक़्क़ी करते रहे और आसमानों को बराबर तै करते रहे, यहां तक कि जब आगे बढ़ने वाले की क़ुर्ब व मन्ज़िलत की निहायत न रही और किसी तालिबे रफ़अत के वास्ते कोई मौक़ा तरक़्क़ी का न रहा, तो–

خَفَضْتَ كُلَّ مَكَانٍ بِالْاِضَافَةِ اِذْ | نُوْدِيْتَ بِالرَّفْعِ مِثْلَ الْمُفْرَدِ الْعَلَمِ

(जिस वक़्त आप की तरक़्क़ियात निहायत दर्जे को पहुंच गयीं, तो आपने हर मकामे अम्बिया को या हर साहबे मकाम को) ब निस्बत अपने मर्तबे के जो ख़ुदावंद तआला से इनायत हुआ, पस्त कर दिया, जब कि आप 'उदनु' (यानी क़रीब आ जा) कह कर वास्ते तरक़्क़ी-ए-मर्तबा के मिस्ल यक्ता व नामवर शख़्स के पुकारे गये।

---

1. चौदहवीं रात का चाँद, 2. यानी फ़रिश्तों के लश्कर के सरदार आप थे। साहबे अलम का मतलब झंडा उठाने वाला,

كَيْمَا تَفُوْزَ بِوَصْلٍ اَىِّ مُسْتَتِرٍ عَنِ الْعُيُوْنِ وَسِرٍّ اَىِّ مُكْتَتِمٍ

(यह निदाया मुहम्मद की इसलिए थी) ताकि आपको वह वस्ल हासिल हो, जो निहायत दर्जे आंखों से पोशीदा था और कोई मख़्लूक़ उस को देख नहीं सकती और ताकि आप कामियाब हों उस अच्छे भेद से जो ग़ायत मर्तबा पोशीदा है।'

–इत्रुल् वरदाह

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन।
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।।

यहां तक तो हजरत रह० ने क़सीदा बर्दा से मेराज का किस्सा नकल फ़र्माया और 'इत्रुल वर्दाह' जो क़सीदा बर्दा की उर्दू शरह हजरत शैखुलहिंद मौलाना–अल–हाज्ज महमूदुल् हसन साहब देवबंदी क़द्दस सिर्रहू के वालिद माजिद हजरत मौलाना जुल्फ़िकार अली रह० की है, इससे तर्जुमा नकल किया। इसके बाद आख़िरी शेर या रब्बि सल्लि व सल्लिम' (आख़िर तक) तहरीर फ़र्मा कर अपनी तरफ़ से इबारते ज़ैल का इज़ाफ़ा किया है–

وَلْنَخْتِمِ الْكَلَامَ عَلٰى وَقْعَةِ الْاِسْرَاءِ، بِالصَّلٰوةِ عَلٰى سَيِّدِ اَهْلِ الْاِصْطِفَاءِ، وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَهْلِ الْاِجْتِبَاءِ، مَادَامَتِ الْاَرْضُ وَالسَّمَاءُ،

जिस का तर्जुमा यह है– हम ख़त्म करते हैं मेराज वाले क़िस्से पर कलाम को दरूद शरीफ़ के साथ उस ज़ात पर जो सरदार है सारे बर्गुज़ीदा लोगों के और उनके आल व अस्हाब पर जो मुंतख़ब हस्तियां हैं, जब तक कि आसमान व ज़मीन क़ायम रहें।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

या रब्बि सल्लि व सल्लिम दाइमन अ ब दन
अला हबीबि क ख़ैरिल् ख़ल्कि कुल्लिहिमी।

50. इस स्याहकार को इन फ़ज़ाइल के रसाइल लिखने के ज़माने में बाज मर्तबा ख़ुद को और बाज मर्तबा बाज़ दूसरे अह्बाब को कुछ मनामात व मुबश्शिरात भी आये। इस रिसाले 'फ़ज़ाइले दरूद' के लिखने के ज़माने में एक रात ख़्वाब में यह देखा कि मुझे यह हुक्म दिया जा रहा है कि इस रिसाले में क़सीदा ज़रूर लिखूं,

लेकिन क़सीदा की तायीन[1] नहीं मालूम हो सकी। अलबत्ता ख़ुद इस नाकारा के ज़ेहन में, ख़्वाब ही में या जागते वक़्त दो ख़्वाबों के दर्मियान में इसलिए कि उसी वक़्त दोबारा भी उसी क़िस्म का ख़्वाब देखा था, यह ख़्याल आया कि इसका मिस्दाक़ मौलाना जामी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू की वह मशहूर नात है, जो यूसुफ़–ज़ुलैख़ा[2] के शुरू में है। जब इस नाकारा की उम्र तक़रीबन दस ग्यारह साल की थी, गंगोह में अपने वालिद साहब रहमतुल्लाह अलैहि से यह किताब पढ़ी थी, उसी वक़्त उनकी ज़ुबानी इसके मुताल्लिक एक क़िस्सा भी सुना था और वह क़िस्सा ही ख़्वाब में उसकी तरफ़ ज़हन के मुंतक़िल होने का दाअिया बना।

क़िस्सा यह सुना था कि मौलाना जामी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू व अलल्लाहु मरातिब हू यह नाअत कहने के बाद एक मर्तबा हज के लिए तशरीफ़ ले गये, तो इनका इरादा यह था कि रौज़ा–ए–अक़्दस के पास खड़े हो कर इस नज़्म को पढ़ेंगे। जब हज के बाद मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी का इरादा किया, तो अमीरे मक्का ने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में उनको यह इर्शाद फ़र्माया कि इसको (जामी को) मदीना न आने दें। अमीरे मक्का ने मुमानअत कर दी, मगर उन पर जज़्ब व शौक़ इस क़दर ग़ालिब था कि यह छुप कर मदीना मुनव्वरा की तरफ़ चल दिये।

अमीरे मक्का ने दोबारा ख़्वाब देखा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वह आ रहा है, उस को यहां न आने दो। अमीर ने आदमी दौड़ाए और उन को रास्ते मे पकड़वा कर बुलाया। उनपर सख़्ती की और जेलख़ाने में डाल दिया। इस पर अमीर को तीसरी मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, यह कोई मुज्रिम नहीं, बल्कि इसने कुछ अशआर कहे हैं। जिनको यहां आकर मेरी क़ब्र पर खड़े होकर पढ़ने का इरादा कर रहा है। अगर ऐसा हुआ तो क़ब्र से मुसाफ़ा के लिए हाथ निकलेगा, जिसमें फ़ित्ना होगा। इस पर उन को जेलख़ाने से निकाला गया और बहुत एज़ाज़ व इकराम किया गया।

इस क़िस्से के सुनने में या याद में तो इस नाकारा को तरद्दुद नहीं, लेकिन इस वक़्त अपने ज़ोफ़े बीनाई[3] और अम्राज़ की वजह से मुराजअते कुतुब[4] से माज़ूरी है। नाज़िरीन में से किसी को किसी किताब में इसका हवाला इस नाकारा की ज़िंदगी में मिले, तो इस नाकारा को भी मुत्तला फ़र्मा कर मम्नून फ़र्मायें और मरने के बाद

---

1. यानी यही मालूम न हो सका कौन सा क़सीदा, 2. मौलाना जामी रह० की एक किताब का नाम है, 3. रोशनी की कमज़ोरी, 2. किताबें देखने,

मिले तो हाशिया इज़ाफ़ा फ़र्मा दें। इस क़िस्से ही की वजह से इस नाकारा का ख़्याल उस नात की तरफ़ गया था, और अब तक यही ज़ेह्न में है और इस में कोई इस्तब्आद नहीं।[1]

सय्यिद अहमद रिफ़ाअ़ी रह० मशहूर बुज़ुर्ग अकाबिर सूफ़िया में से हैं। उन का क़िस्सा मशहूर है कि जब 555 हि० में वह ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए और क़ब्रे अत्हर के क़रीब खड़े होकर दो शेर पढ़े तो दस्ते मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसका चूमा। इस नाकारा के रिसाला 'फ़ज़ाइले हज' की हिकायात ज़ियारते मदीना के सिलसिले में न० 13 पर यह क़िस्सा मुफ़स्सल अल्लामा सुयूती रह० की किताब 'अल् हादी' से गुज़र चुका है और भी मुतअ़द्दिद क़िस्से इसमें में रौज़ा-ए-अक़्दस से सलाम का जवाब मिलने के ज़िक्र किए गए हैं। बाज़ दोस्तों का ख़्याल यह है कि मेरे ख़्वाब का मिस्दाक़ क़सीदा बर्दा है, इसीलिए इससे पहले नम्बर पर चंद अशआर उससे ब सिलसिला मेराज नक़ल कर दिये और बाज़ दोस्तों की राय यह है कि हज़रत नानौतवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहु के क़साइद में से कोई क़सीदा मुराद है, इसलिए ख़्याल है कि मौलाना जामी रह० की नात के बाद हज़रते अक़्दस मौलाना नानौतवी नव्वल्लाहु मर्क़दहू के क़साइदे क़ासिमी में से भी कुछ अशआर नक़ल कर दूं और उन्हीं पर इस रिसाले को ख़त्म कर दूं।

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि०

मौलाना जामी रह० का क़सीदा फ़ारसी में है और हमारे मदरसे के नाज़िम मौलाना अल-हाज्ज असअ़दुल्लाह साहब फ़ारसी से ख़ुसूसियत के अश्आर से भी ख़ुसूसी मुनासबत रखते हैं और हज़रते अक़्दस हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के जलीलुल् क़द्र ख़ुलफ़ा में हैं जिसकी वजह से इश्के नबवी का जज़्बा भी जितना हो, बर महल है, इसलिए मैंने मौलाना मौसूफ़ से दर्ख़्वास्त की थी कि वह इसका तर्जुमा फ़र्मा दें जो इस नात की शान के मुनासिब हो। मौलाना ने इसको क़ुबूल फ़र्मा लिया, इसलिए इन अशआर के बाद इनका तर्जुमा भी पेश कर दिया जायेगा और इसके बाद क़साइदे क़ासिमी के चंद अश्आर लिख दिए जायेंगे।

مثنوی مولانا جامی رحمۃ اللہ علیہ

1. कोई शुब्हे की बात नहीं,

زمہجوری برآمد جانِ عالم ۱ ترحم یا نبی اللہ ترحم
نہ آخر رحمۃ للعالمینی ۲ ز محروماں چرا غافل نشینی
زخاک اے لالۂ سیراب برخیز ۳ چو نرگس خواب چند از خواب برخیز
بروں آور سر از بردِ یمانی ۴ کہ روئے تست صبح زندگانی
شب اندوہ مارا روز گرداں ۵ ز رویت روز ما فیروز گرداں
بہ تن در پوش عنبر بوئے جامہ ۶ بسر بربند کافوری عمامہ
فرود آویز از سر گیسواں را ۷ فگن سایہ بپا سروِ رواں را

ادیم طائفی نعلین پا کن ۸ شراک از رشتۂ جانہائے ما کن
جہانے دیدہ کردہ فرش رہ اند ۹ چو فرش اقبالِ پابوس تو خواہند
ز حجرہ پائے در صحن حرم نہ ۱۰ بفرق خاکِ رہ بوساں قدم نہ
بدہ دستی ز پا افتادگاں را ۱۱ بکن دلداریئے دِل دادگاں را
اگرچہ غرق دریائے گناہیم ۱۲ فتادہ خشک لب برخاک راہیم
تو ابر رحمتی آں بہ کہ گاہے ۱۳ کنی برحال لب خشکاں نگاہے
خوشا کز گرد رہ سویت رسیدیم ۱۴ بدیدہ گرد از کویت کشیدیم
بمسجد سجدۂ شکرانہ کردیم ۱۵ چراغت را ز جاں پروانہ کردیم
بگردِ روضات گشتیم گستاخ ۱۶ دلم چوں پنجرہ سوراخ سوراخ
زدیم از اشک ابرِ چشم بےخواب ۱۷ حریم آستاں روضات آب
گہے رفتیم زاں ساحت غبارے ۱۸ گہے چیدیم زو خاشاک و خارے
ازاں نورِ سواد دیدہ دادیم ۱۹ وزیں بر ریش دل مرہم نہادیم
بسوئے منبرت رہ برگرفتیم ۲۰ زچہرہ پایہ اش در زر گرفتیم
زمحرابت بسجدہ کام جستیم ۲۱ قدم گاہت بخون دیدہ شستیم
بپائے ہر ستون قد راست کردیم ۲۲ مقام راستاں درخواست کردیم
زداغ آرزویت با دلِ خوش ۲۳ زدیم از دل بہر قندیل آتش
کنوں گرتن نہ خاک آں حریم است ۲۴ بحمد اللہ کہ جاں آں جا مقیم است
بجود درماندہ ام از نفس خود رائے ۲۵ ببیں درماندۂ چندیں بہ بخشائے

اگر نہ بود چو لطفت دست یارے ۲۶ ز دست ما نیاید ہیچ کارے
قضا می افگند از راہ مارا ۲۷ خدارا از خدا در خواہ مارا
کہ بخشد از یقیں اول حیاتے ۲۸ دہد آنگہ بکار دیں ثباتے
چو ہول روز رستا خیز خیزد ۲۹ بآتش آبروئے ما نہ ریزد
کند با ایں ہمہ گمراہیٔ ما ۳۰ ترا اذنِ شفاعت خواہیٔ ما
چو چوگاں سر فگندہ آوری روے ۳۱ بمیدانِ شفاعت اُمتی گوے
بحسن اہتمامت کار جامی ۳۲ طفیلِ دیگراں یابد تمامی

तर्जुमा मस्नवी मौलाना जामी रह० अज़ : हज़रत मौलाना अस अदुल्लाह साहब नाज़िमे मदरसा मज़ाहिरे उलूम,[1] ख़लीफ़ा मजाज़ बैअत अज़ हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अलहाज्ज अशरफ़ अली साहब थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू

1. आप के फ़िराक़ से कायनाते आलम का ज़र्रा-ज़र्रा जां-बलब है और दम तोड़ रहा है। ऐ रसूले ख़ुदा निगाहे करम फ़र्माइए। ऐ ख़ तम मुल् मुर्सलीन रहम फ़र्माइये।

2. आप यक़ीनन रहमतुल् लिल्आलमीन हैं, हम हिर्मांनसीबों और नाकामाने क़िस्मत से आप कैसे तग़ाफ़ुल फ़र्मा सकते हैं।

3. ऐ लाला-ए-ख़ुश रंग अपनी शादाबी व सेराबी से आलम को मुस्तफ़ीद फ़र्माइए और ख़्वाबे नर्गिसीं से बेदार होकर हम मुह्ताजाने हिदायत के क़ुलूब को मुनव्वर फ़र्माइए।

ऐ ब सरा पर्दा ए-यस्रिब ब ख़्वाब।
ख़ेज़ कि शुद मश्रिक व मग़रिब ख़राब।

4. अपने सरे मुबारक को यम्नी चादरों के कफ़न से बाहर निकालिए, क्योंकि आप का रू-ए-अन्वर सुबहे ज़िंदगानी है।

5. हमारी ग़मनाक रात को दिन बना दीजिए और अपने जमाल जहां आरा

---

1. मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर,

से हमारे दिन को फ़ीरोज़ मंदी व कामियाबी अता कर दीजिए।

6. जिस्में अत्हर पर हस्बे आदत अंबरे बेज लिबास आरास्ता फ़र्माइए और सफ़ेद काफ़ूरी अमामा ज़ेबे सर फ़र्माइए।

7. अपनी अंबरबार व मुश्कीं ज़ुल्फ़ों को सरे मुबारक से लटका दीजिए ताकि उनका साया आप के बा-बरकत क़दमों पर पड़े (क्योंकि मशहूर है कि क़ामत अतहर व जिस्मे अन्वर का साया न था, लिहाज़ा गेसू-ए-शबगूं का साया डालिए।

8. हस्बे दस्तूर ताइफ़ के मशहूर चमड़े की मुबारक नालैन (पा पोश) पहनिए और उनके तस्मे और पट्टियां हमारे रिश्ता-ए-जां से बनाइये।

9. तमाम आलम अपने दीदा व दिल को फ़र्शे राह किये हुए और बिछाए हुए है और फ़र्शे ज़मीन की तरह आप की क़दमबोसी का फ़ख़्र हासिल करना चाहता है।

10. हुज्रा-ए-शरीफ़ यानी गुंबदे ख़िज़रा से बाहर आ कर सेहनेहरम में तशरीफ़ रखिए, राहे मुबारक के ख़ाक बोसों के सर पर क़दम रखिए।

11. आजिज़ों की दस्तगीरी, बेकसों की मदद फ़र्माइए, और मुख़्लिस उश्शाक़ की दिल जोई व दिलदारी कीजिए।

12. अगरचे हम गुनाहों के दरिया में अज सर ता पा ग़र्क़ हैं, लेकिन आप की राहे मुबारक पर तिश्ना व ख़ुश्क लब पड़े हैं।

13. आप अब्रे रहमत हैं, शायाने शान गरामी हैं कि प्यासों और तिश्ना लबों पर एक निगाहे करम बार-बार डाली जाये।

अब अगले अश्आर के तर्जुमे से पहले यह अर्ज कर देना ज़रूरी मालूम होता है कि अक्सर हज़रात का तो ख़्याल है कि हज़रत जामी रह० यहां से ज़माना-ए-गुज़िश्ता की ज़ियारत मुक़द्दसा का हाल बयान फ़र्माते हैं और बाज़ के कलाम से मफ़्हूम होता है कि आइन्दा के लिए तमन्ना फ़र्मा रहे हैं। हज़रत अक़्दस शेख़ुल हदीस साहब रह० का रुझान इसी तरफ़ है, इसीलिए अब तर्जुमा में इसकी रियायत की जायेगी।

14. हमारे लिए कैसा अच्छा वक़्त होता कि हम गर्दे राह से आप की ख़िदमते गरामी में पहुंच जाते और आंखों में आप के कूचा-ए-मुबारक की ख़ाक का सुर्मा लगाते।

वह दिन ख़ुदा करे कि मदीना को जायें हम,

ख़ाके दरे रसूल का सुर्मा लगायें हम।

15. मस्जिदे नबवी में दोगाना शुक्र अदा करते, सज्दा-ए-शुक्र बजा लाते, रौज़ा-ए-अक्दस की शमा-ए-रोशन का अपनी जान हज़ीं[1] को परवाना बनाते।

16. आप के रौज़ा-ए-अतहर और गुंबदे ख़ज़रा के इस हाल में मस्ताना और बेताबाना चक्कर लगाते कि दिल सदमा हाए इश्क़ और वफ़ूरे शौक़ से पाश-पाश और छलनी होता।

17. हरीमे क़ुद्स और रौज़ा-ए-पुर नूर के आस्ताना-ए-मोहतरम पर अपनी बे-ख़्वाब आंखों के बादलों से आंसू बरसाते और छिड़काव करते।

18. कभी सेहने हरम में झाड़ू देकर गर्द व ग़ुबार को साफ़ करने का फ़ख़्र और कभी वहां के ख़स व ख़ाशाक को दूर करने की सआदत हासिल करते।

19. गो गर्द व ग़ुबार से आंखों को नुक़्सान पहुंचता है, मगर हम इससे मर्दमुक चश्म के लिए सामाने रोशनी मुहय्या करते और गो ख़स व ख़ाशाक ज़ख़्मों के लिए मुज़िर है, मगर हम उस को जराहते दिल[2] के लिए मरहम बनाते।

20. आप के मिम्बर शरीफ़ के पास जाते और उसके पाए-मुबारक को अपने आशिक़ाना ज़र्द चेहरे से मल-मल कर ज़र्रीन व तलाई[3] बनाते।

21. आप के मुसल्ला-ए-मुबारक व मेहराब शरीफ़ में नमाज़ पढ़ पढ़ कर तमन्नाएं पूरी करते और हक़ीक़ी मक़ासिद में कामियाब होते और मुसल्ले में जिस जा-ए-मुक़द्दस पर आप के क़दमे मुबारक होते थे, उसको शौक के अश्के ख़ूनें से धोते।

22. आप की मस्जिदे अतहर के हर स्तून के पास अदब से सीधे खड़े होते और सिद्दीक़ीन के मर्तबे की दर्ख़्वास्त व दुआ करते।

23. आप की दिल आवेज़ तमन्नाओं के ज़ख़्मों और दिल नशीन आरज़ूओं के दाग़ों से (जो हमारे दिल में है) इन्तिहाई मसर्रत के साथ हर क़िन्दील को रोशन करते।

---

1. दुखी दिल, 2. दिल के ज़ख़्म, 3. सुनहरा व रूपहला,

24. अब अगरचे मेरा जिस्म इस हरीमे अन्वर व शबिस्ताने अतहर में नहीं हैं, लेकिन ख़ुदा का लाख-लाख- शुक्र है कि रूह वहीं है।

25. मैं अपने ख़ुदबीन व ख़ुदराय नफ़्से अम्मारा से सख़्त आजिज़ आ चुका हूं, ऐसे आजिज़ व बेकस की जानिब इल्तिफ़ात फ़र्माइए और बख़्शिश की नज़र डालिए।

26. अगर आप के अल्ताफ़े करीमाना की मदद शामिले हाल न होगी तो हम उज़्वे मुअत्तल व मफ़्लूज हो जायेंगे और हम से कोई काम अंजाम न पा सकेगा।

27. हमारी बद-बख़्ती हमें सिराते मुस्तक़ीम व राहे ख़ुदा से भटका रही है, ख़ुदारा हमारे लिए ख़ुदावंदे क़ुद्दूस से दुआ फ़र्माइए।

28. (यह दुआ फ़र्माइए) कि ख़ुदावंद क़ुद्दूस अव्वलन हम को पुख़्ता यक़ीन और कामिले एतक़ाद की अज़ीमुश्शान ज़िंदगी बख़्शे और फिर अह्कामे दीन में मुकम्मल इस्तक़लाल और पूरी साबित क़दमी अता फ़र्माए।

29. जब क़यामत की हश्रख़ेज़ियां और उसकी ज़बरदस्त हौल नाकियां पेश आये तों मालिकि यौमिद्दीन रहमान व रहीम हमको दोज़ख़ से बचा कर हमारी इज़्ज़त बचाये।

30. और हमारी ग़लत रवी और सग़ीरा-कबीरा गुनाहों के बावजूद आपको हमारी शफ़ाअत के लिए इजाज़त मरहमत फर्माए, क्योंकि बग़ैर उसकी इजाज़त शफ़ाअत नहीं हो सकती है।

31. हमारे गुनाहों की शर्म से आप सर्ख़मिदा चौगान की तरह मैदाने शफ़ाअत से सर झुका कर (नफ़्सी नफ़्सी नहीं, बल्कि) 'या रब्बि ! उम्मती, उम्मती' फ़र्माते हुए तश्रीफ़ लायें।

32. आप के हुस्ने एहतमाम और सई-ए-जमील से दूसरे मक़्बूल बंदगाने ख़ुदा के सदक़े में ग़रीब जामी का भी काम बन जायेगा।

शुनीदम कि दर रोज़े उम्मीद बीम,
बिदां रा बे नेकां ब बख़्शद करीम।

अल्हम्दु लिल्लाह हज़रत शेख़ की तवज्जोह व बरकत से उल्टा-सीधा तर्जुमा ख़त्म हो गया।

सुबह 26 ज़ीक़ादा सन् 84 हि० में।

अस मौलाना अब्दुल्लाह सा० ज़ादे मुज्दहू

इसके बाद क़साइदे कासिमी में से हज़रते अक्दस हुज्जतुल् इस्लाम मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब बानी दारुल् उलूम[1] नव्वरल्लाहु मर्कदहू के मशहूर क़सीदा बहारिया में से चंद अशआर पेश करता हूं, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका। यह क़सीदा बहुत तवील है। डेढ़ सौ से ज़ायद अश्आर इस क़सीदा के हैं, इसलिए सबका लिखना तो मूजिबे तूल था जो साहब पूरा देखना चाहें, असल क़सीदा को मुलाहज़ा फ़रमायें। इसमें से साठ अश्आर से कुछ ज़ायद पर इक्तिफ़ा किया जा रहा है, जिससे हज़रते क़द्दुस सिर्रुहू की वालिहाना मुहब्बत और इश्क़े नबवी का अंदाज़ा होता है।

क़सीदा हज़रत मुहम्मद क़ासिम साहब

न होवे नग़्मासरा किस तरह से बुलबुले ज़ार,
कि आयी है नये सिरे से चमन-चमन में बहार।

हर इक को हस्बे लियाक़त बहार देती है,
किसी को बर्ग,[2] किसी को गुल और किसी को बार।

ख़ुशी से मुर्गे चमन नाच-नाच गाते हैं,
कफ़े वरक़ से बजाते हैं तालियां अश्जार।

बुझाई है दिले आतिश की भी तपिश या रब,
करम में आप को दुश्मन से भी नहीं इन्कार।

यह क़द्रे ख़ाक है हैं बाग़-बाग़ वह आशिक़,
कभी रहे था सदा जिन के दिल के बीच ग़ुबार।

यह सब्ज़ा ज़ार का रुत्बा है शज़रा-ए-मूसा,
बना है ख़ास तजल्ली का मत्ला-ए-अन्वार।

इसी लिए चमनिस्तां में रंगे मैंहदी ने
किया ज़ूहर वरक़हाए सब्ज़ा में नाचार।

पहुंच सके शज्रे तूर को कहीं तूबा,
मक़ामे यार को कब पहुंचे मस्कने अग़ियार।

ज़मीं व चर्ख़ में हो क्यों न फ़र्क़े चर्ख़े व ज़मीं,
यह सब का बार उठाये वह सब के सर पर बार।

करे है ज़र्रे-ए-कूये मुहम्मदी से ख़जिल,[3]
फ़लक के शम्स व क़मर को ज़मीन लैल व नहार।

1. दारुल उलूम देवबंद, जिला सहारनपुर (उ० प्र०), 2. पत्ता 3. शर्मिंदा

फ़लक पे ईसा व इद्रीस हैं तो ख़ैर सही,
जमीं पे जल्वा नुमा है मुहम्मदे मुख़्तार।

फ़लक पे सब सही पर है न सानी-ए-अहमद,
जमीं पे कुछ न हो पर है मुहम्मदी सरकार।

सना कर इस की फ़क़त क़ासिम और सब को छोड़,
कहां का सब्ज़ा, कहां का चमन, कहां की बहार।

इलाही ! किस से बयां हो सके सना उस की,
कि जिस पे ऐसा तेरी ज़ाते ख़ास का हो प्यार।

जो तू उसे न बनाता तो सारे आलम को,
नसीब होती न दौलतन्न वजूद की ज़िन्हार।

कहां वह रुत्बा, कहां अक़्ले नारसा अपनी,
कहां वह नूरे ख़ुदा और कहां यह दीदा-ए-ज़ार।

चिराग़े अक़्ल है गुल उस के नूर के आगे,
ज़बां का मुंह नहीं जो मद्ह में करे गुफ़्तार।

जहां के जलते हों पर अक़्ले कुल के भी, फिर क्या,
लगी है जान जो पहुंचे वहां मेरे अफ़्कार।

मगर करे मेरी रूहुल क़ुदूस मदद्गारी,
तो इस की मद्ह में मैं भी करूं रक़मे अश्आर।

जो जिब्रील मदद पर हो फ़िक्र की मेरी,
तो आगे बढ़ के कहूं ऐ जहान के सरदार।

तू फ़ख़्रे कौनो मकां ज़ुब्दा-ए-ज़मीन व ज़मां,
अमीर लश्करे पैग़म्बरां शहे अब्रार।

तू बूए गुल है अगर मिस्ले गुल हैं और नबी,
तू नूरे शम्स गर और अंबिया हैं शम्स व नहार।

हयाते जान है तो हैं अगर वह जाने जहां,
तू नूरे दीदा है गर हैं वह दीदा-ए-बेदार।

तुफ़ैल आप के है कायनात की हस्ती,
बजा है कहिए अगर तुम को मब्-दउलआसार।

ज़ुलू में तेरे सब आए अदम से ताबवजूद,
क़यामत आप की थी, देखिए तो इक रफ़्तार।

जहां के सारे कमालात एक तुझ में हैं,
तेरे कमाल किसी में नहीं मगर दो चार।

पहुंच सका तेरे रुत्बे तलक न कोई नबी,
हुए हैं मोजज़े वाले भी इस जगह नाचार।

जो अंबिया हैं वह आगे तेरी नुबूवत के,
करें हैं उम्मती होने का या नबी इक़रार।

लगाता हाथ न पुतले को बुल् बशर के ख़ुदा,
अगर ज़हूर न होता तुम्हारा आख़िर कार।

ख़ुदा के तालिबे दीदार हज़रते मूसा।,
तुम्हारा लीजिए ख़ुदा आप तालिबे दीदार।

कहां बुलंदि-ए-तूर और कहां तेरी मेराज,
कहीं हुए हैं ज़मीं आसमान भी हमवार ?

जमाल को तेरे कब पहुंचे हुस्न युसूफ़ का,
वह दिलरुबाय ज़ुलेख़ा तू शाहिदे सत्तार।

रहा जमाल पे तेरे हिजाबे बशरीयत,
न जाना कौन है कुछ भी किसी ने जुज़ सत्तार।

समा सके तेरी ख़लवत में कब नबी व मलक,
ख़ुदा ग़यूर तो उस का हबीब और अग़्यार।

न बन पड़ा वह जमाल आपका-सा इक शब भी,
क़मर ने गो कि करोड़ों किए चढ़ाव-उतार।

ख़ुशा नसीब यह निस्बत कहां नसीब मेरे,
तू जिस क़दर है भला, मैं बुरा उसी मिक़्दार।

न पहुंचे गिनती में हरगिज़ तेरे कमालों की,
मेरे भी ऐब शहे दोसरा शहे अब्रार।

अजब नहीं तेरी ख़ातिर से तेरी उम्मत के,
गुनाह होवे, क़यामत को ताअतों में शुमार।

बिकेंगे आप की उम्मत के जुर्म ऐसे गरां,
कि लाखों मग़्फ़िरतें कम से कम पे होंगी निसार।
तेरे भरोसे पे रखता है ग़र्रा-ए-ताअत,
गुनाहे क़ासिमे बरगश्ता, बख़्त बद-अतवार।
तुम्हारे हर्फ़ शफ़ाअत पे अफ़्व है आशिक़,
अगर गुनाह को है ख़ौफ़ ग़ुस्सा-ए-क़ह्हार।
यह सुन के आप शफ़ी-ए-गुनाहगारां हैं,
किए हैं मैंने इकट्ठे गुनाह के अंबार।
तेरे लिहाज़ से इतनी तो हो गयी तख़्फ़ीफ़
बशर गुनाह करें और मलायक इस्तग़फ़ार।
यह है इजाबते हक़ को तेरी दुआ का लिहाज़,
क़ज़ाये मब्रम व मशरूत की सुनें न पुकार।
बुरा हूं, बद् हूँ गुनाहगार हूं पर तेरा हूं,
तेरा कहे हैं मुझे गो कि हूं में नाहंजार।
लगे है तेरे सग को गो मेरे नाम से ऐब,
पर तेरे नाम का लगना मुझे है इज़्ज़ व विकार[2]।
तू बेहतरीन ख़लायक़, मैं बद्तरीन जहां,
तू सरवरे दो-जहां, मैं कमीनाए ख़िद्मतगार।
बहुत दिनों से तमन्ना है कीजिये अर्ज़े हाल,
अगर हो अपना किसी तरह तेरे दर तक बार।
मगर जहां हो फ़लके आस्तां से भी नीचा,
वहां हो क़ासिमे बेबाल व पर का क्योंकि गुज़ार।
दिया है हक़ ने तुझे सबसे मर्तबा आली,
किया है सारे बड़े छोटों का तुझे सरदार।
जो तू ही हम को न पूछे तो कौन पूछेगा?
बनेगा कौन हमारा तेरे सिवा ग़म ख़्वार।
लिया है सग नमत इब्लीस[3] ने मेरा पीछा,
हुआ है नफ़्स मुआ सांप सा गले का हार।

1. कमी, 2. इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, 3. कुत्ते जैसे इब्लीस यानी शैतान ने मेरा पीछा घेर रखा है,

रिज़ा व ख़ौफ़[1] की मौजों में है उम्मीद की नाव,
कि हो सगाने मदीना में मेरा नाम शुमार।
जियूं तो साथ सगाने हरम के तेरे फिरूं,
मरूं तो खायें मदीना के मुझ को मोर व मार।
उड़ा के बाद मेरी मुश्ते ख़ाक को पसे मर्ग,
करे हुज़ूर के रौज़े के आस-पास निसार।
वले यह रुत्बा कहां मुश्त ख़ाक क़ासिम का,
कि जाए कूचा-ए-अतहर में तेरे, बन के ग़ुबार।
ग़रज़ नहीं मुझे इस से भी कुछ रही लेकिन,
ख़ुदा की और तेरी उल्फ़त से मेरा सीनाए फ़गार।
लगे वह तीर ग़म-ए-इश्क़ का मेरे दिल में,
हज़ार पारा हो दिले ख़ूने दिल में हों सरशार।
लगे वह आतशे इश्क़ अपनी जान में जिस की,
जला दे चर्ख़े सितमगार को एक ही झोंकार।
तुम्हारे इश्क़ में रो-रो के हुँ नहीफ़ इतना,
कि आंखें चश्मा-ए-आबी से हों दरूने ग़ुबार।
रहे न मंसब शेख़ुल मशाइख़ी की तलब,
न जी कोभाए यह दुनिया का कुछ बनाव-सिंगार।
हुआ इशारे में दो-टुकड़े जूं क़मर का जिगर,
कोई इशारा हमारे भी दिल के हो जा पार।
तू थाम अपने तईं हद से पा न धर-बाहर[2],
संभाल अपने तईं और संभल के कर गुफ़्तार।
अदब की जा है यह चुप हो तो और ज़बां बंद कर,
वह जाने छोड़ इसे, पर न कर तू कुछ इसरार।
बस अब दरूद पढ़ उस पर और उसकी आल पर तू,
जो ख़ुश हो तुझसे वह और उसकी इत्रते अत्हार।
इलाही उस पर और उसकी तमाम आल पे भेज,
वह रहमतें कि अदद कर सके न इन को शुमार।

---

1. उम्मीद और डर, 2. पाँव हद से बाहर न रख,

यह रिसाला जैसा कि शुरू में लिखा गया 25 रमज़ानुल-मुबारक को शुरू किया गया था। माह-मुबारक के मशाग़िल की वजह से उस वक़्त तो बिस्मिल्लाह और चन्द सुतूर के अलावा लिखवाने का वक़्त ही नहीं मिला। इसके बाद भी मेहमानों के हुजूम और मदरसे के इब्तिदा-ए-साल के मशाग़िल की वजह से बहुत ही थोड़ा वक़्त मिलता रहा ताहम थोड़ा बहुत सिलसिला चलता ही रहा कि गुज़िश्ता जुमे को अज़ीज़े मोहतरम मौलाना अलहाज्ज मुहम्मद युसुफ़ साहब रह० कांधलवी अमीरे जमाअत तब्लीग़ के हादसा-ए-इन्तिक़ाल से यह तख़य्युल पैदा हुआ कि अगर यह नाकारा भी इसी तरह बैठे-बैठे चल दिया तो यह औराक़ जो अब तक लिखे हैं, यह भी बेकार हो जाएंगे। इसलिए जितना हो चुका है उसी पर इक्तिफ़ा करूं और आज 6 ज़िल्हिज्जा जुमे की सुबह को इस रिसाले को ख़त्म करता हूं। अल्लाह जल्ले शानुहू अपने लुत्फ़-व-करम से अपने पाक रसूल सल्ल० के तुफ़ैल से जो लग़ज़िशें इस में हुई हों उनको माफ़ फ़र्माएं।

मुहम्मद ज़करिया उफ़िय अन्हू कांधलवी
मुक़ीम मदरसा मज़ाहिरे उलूम,
सहारनपुर (उ० प्र०)

Click-->
मुसलमानों की
मौजूदा पस्ती का
वाहिद इलाज
मुअल्लिफ़ :
हज़रत मौलाना मुहम्मद एहतिशामुल हसन
कांधलवी रह०
रफ़ीक़े कार ख़लीफ़ा-ए-ख़ास हज़रत मौलाना
शाह मुहम्मद इलयास साहब रह०
- तस्हील करदा -
मौलाना मुहम्मद एहतिरामुल हसन साहब कांधलवी
ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

इज़्हारे हक़ीक़त

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम

सय्यिदी व मौलाई ज़ुब्दतुल फ़ुज़ला क़दवतुल उलमा हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रह० के ख़ास शग़फ़ और इन्हिमाक और दीगर बुज़ुर्गाने मिल्लत और उलमा-ए-उम्मत की तवज्जह और बरकत और अमली जद्दोजेहद से एक अर्से से मख़्सूस अन्दाज़ में तब्लीग़े दीन और इशाअते इस्लाम का सिलसिला जारी है, जिससे बा-ख़बर तबक़ा बख़ूबी वाक़िफ़ है।

मुझ बे-इल्म और सियाहकार को इन मुक़द्दस हस्तियों का हुक्म हुआ कि इस तर्ज़े तब्लीग़ और इसकी ज़रूरत और अहमियत को क़लम-बंद किया जाए, ताकि समझने और समझाने में आसानी हो और नफ़ा आम हो जाए।

तामीले इर्शाद में यह चन्द कलिमे नज़्रे क़िरतास किये जाते हैं, जो इन मुक़द्दस हस्तियों के दरिया-ए-उलूम व मआरिफ़ के चंद क़तरे और इस बाग़ीचा-ए-दीने मुहम्मदी के चन्द ख़ोशे हैं जो इंतिहाई उज्लत में जमा किये गए हैं।

अगर इनमें कोई ग़लती या कोताही नज़र से गुज़रे, तो वह मेरी लग़्ज़िशे क़लम और बे-इल्मी का नतीजा है, नज़रे लुत्फ़ व करम से उसकी इस्लाह फ़र्मावें तो मूजिबे शुक्र व मिन्नत होगा।

हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल व करम से मेरी बद-आमालियों और सियाकारियों की परदापोशी फ़र्मावें और मुझे और आप को इन मुक़द्दस हस्तियों के तुफ़ैल से अच्छे आमाल और अच्छे किरदार नसीब फ़र्मावें और अपनी रज़ा व मुहब्बत और अपने पसन्दीदा दीन की इशाअत और अपने बरगज़ीदा रसूल सल्ल० की इताअत और फ़र्मांबरदारी की दौलत से सरफ़राज़ फ़र्मावें, 'वमा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअ़ज़ीज़'

–ख़ाक पाए बुज़ुर्गान

मुहम्मद एहतिशामुल हसन

18, रबीउस्सानी 1358 हि०

मदरसा काशिफ़ुलउलूम

बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रह०

दिल्ली

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ خَاتَمِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल अव्वलीन वलआख़िरीन ख़ातिमिल अंबियाइ वल मुर्सलीन मुहम्मदिं-व आलिही व अस्हाबिहित्तय्यि-बीनत्ताहिरीन०

आज से तक़रीबन चौदह सौ साल क़ब्ल जब दुनिया कुफ्र व ज़लालत, व जिहालत व सफ़ाहत की तारीकियों में घिरी हुई थी, बतहा की संगलाख[1] पहाड़ियों से रुश्द व हिदायत का माहताब नमूदार[2] हुआ और मश्रिक़ व मग़्रिब, शुमाल व जुनूब, ग़रज़ दुनिया के हर-हर गोशे को अपने नूर से मुनव्वर किया और तेईस साल के क़लील अर्से में बनी नौअ-ए-इंसान को उस मेराजे तरक़्क़ी पर पहुंचाया कि तारीख़े आलम उसकी नज़ीर पेश करने से क़ासिर है और रुश्द व हिदायत, सलाह व फ़लाह की वह मशअ़ल मुसलमानों के हाथ में दी, जिस की रोशनी में हमेशा शाहराहे तरक़्क़ी पर गामज़न रहे और सदियों इस शान व शौकत से दुनिया पर हुकूमत की कि हर मुख़ालिफ़ क़ुव्वत को टकरा कर पाश-पाश[3] होना पड़ा। यह एक हक़ीक़त है जो ना-क़ाबिले इंकार है, लेकिन फिर भी एक पारीना[4] दास्तान है, जिस को बार-बार दोहराना न तसल्लीबख़्श है और न कारआमद और मुफ़ीद, जबकि मौजूदा मुशाहदात और वाक़िआत ख़ुद हमारी साबिक़ा ज़िंदगी और हमारे अस्लाफ़ के कारनामों पर बद-नुमा दाग़ लगा रहे हैं।

मुसलमानों की चौदह सौ साला ज़िंदगी को जब तारीख़ के औराक़ में देखा जाता है, तो मालूम होता है, कि हम इज़्ज़त व अज़्मत, शान व शौकत,दबदबा व

1. पथरीली, 2. ज़ाहिर, 3. टुकड़े-टुकड़े, 4. पुरानी,

हश्मत के तंहा मालिक और इजारादार हैं, लेकिन जब इन औराक़ से नजर हटा कर मौजूदा हालात का मुशाहदा किया जाता है, तो हम इंतिहाई ज़िल्लत व ख़्वारी, इफ़्लास व नादारी में मुब्तला नजर आते हैं, न ज़ोर व क़ूव्वत है, न ज़ोर व दौलत है, न शान व शौकत है, न बाहमी उख़ूव्वत व उलफ़त, न आदात अच्छी, न अख़्लाक़ अच्छे, न आमाल अच्छे, न किरदार अच्छे, हर बुराई हममें मौजूद और हर भलाई से कोसों दूर, अग्यार[1] हमारी इस ज़बूंहाली पर ख़ुश हैं और बरमाला हमारी कमजोरीयों को उछाला जाता है और हमारा मज़्हाका[2] उड़ाया जाता है, उसी पर बस नहीं, बल्कि ख़ुद हमारे जिगर गोशे[3] नयी तहज़ीब के दिलदादा नोजवान इस्लाम के मुक़द्दस उसूलों का मजाक़ उड़ाते हैं, बात-बात पर तंक़ीदी नजर डालते हैं और उस मुक़द्दस शरीअत को नाक़ाबिले अमल, लग्व और बेकार गरदानते हैं। अक़्ल हैरान है कि जिस क़ौम ने दुनिया को सैराब किया, वह आज क्यों तिश्ना है।[4] जिस क़ौम ने दुनिया को तहज़ीब व तमद्दुन का सबक़ पढ़ाया, वह आज क्यों ग़ैर-मुहज़्ज़ब और ग़ैर-मुतमद्दिन है ?

रहनुमायाने क़ौम ने आज से बहुत पहले हमारी इस हालतेज़ार[5] का अन्दाज़ा लगाया, और मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हमारी इस्लाह के लिए जद्दोजेहद की मगर-

'मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की',

आज जबकि हालत बद से बदतर हो चुकी और आने वाला ज़माना सबक़[6] से भी ज़्यादा पुरख़तर और तारीक नज़र आ रहा है, हमारा ख़ामोश बैठना और अमली जद्दोजेहद न करना एक नाक़ाबिले तलाफ़ी जुर्म है।

लेकिन इससे पहले कि हम कोई अमली क़दम उठाएं, ज़रूरी यह है कि इन अस्बाब पर ग़ौर करें, जिनके बाइस हम इस ज़िल्लत व ख़्वारी के अज़ाब में मुब्तला किये गये हैं, हमारी इस पस्ती और इन्हितात के मुख़्तलिफ़ अस्बाब बयान किये जाते हैं और इनके इज़ाले[7] की मुतअ़द्दद तदाबीर इख़्तियार की गयीं, लेकिन हर तदबीर ना-मुवाफ़िक़ व नाकाम साबित हुई जिसके बाइस हमारे रहबर भी यास व हिरास[8] में घिरे नजर आते हैं।

असल हक़ीक़त यह है कि अब तक हमारे मरज की तश्ख़ीस ही पूरे तौर पर नहीं हुई। यह जो कुछ अस्बाब बयान किये जाते हैं, असल मर्ज नहीं, बल्कि इसके अवारिज़ हैं, पस तावक़्तेकि असल मर्ज की जानिब तवज्जोह न होगी और माद्दा हक़ीक़ी

---

1. बेगाने, 2. हंसी-मजाक़, 3. लाडली औलाद, 4. प्यासी, 5. गिरी हुई हालत, 6. गुजरा हुआ ज़माना, 7. ज़ाइल करना, 8. ना-उम्मीदी और ख़ौफ़,

की इस्लाह न होगी, अवारिज की इस्लाह नामुम्किन और महाल है, पस जब तक कि हम असल मर्ज की ठीक तश्ख़ीस और सही इलाज न मालूम कर लें, हमारा इस्लाह के बारे में लबकुशाई[1] करना सख़्ततरीन ग़लती है।

हमारा यह दावा है कि हमारी शरीअ़त एक मुकम्मल क़ानूने इलाही है, जो हमारी दीनी और दुनयवी फ़लाह व बहबूद[2] का ताक़ियामे क़यामत ज़ामिन है, फिर कोई वजह नहीं कि हम ख़ुद ही अपना मर्ज तश्ख़ीस करें और ख़ुद ही इसका इलाज शुरू कर दें, बल्कि हमारे लिए ज़रूरी है कि हम क़ुरआने हकीम से अपना असल मर्ज मालूम करें और उसी मर्कज़े रुश्द व हिदायत से तरीक़े इलाज मालूम करके उस पर कारबन्द हों। जब क़ुरआन हकीम क़यामत तक के लिए मुकम्मल दस्तूरुल अमल[3] है, तो कोई वजह नहीं कि वह इस नाज़ुक हालत में हमारी रहबरी से क़ासिर रहे।

मालिके अर्ज व समा हक़ जल–ल अला का सच्चा वायदा है कि रू–ए–ज़मीन की बादशाहत व ख़िलाफ़त मोमिनों के लिए–

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ ط (نور ع ۷)

तर्जुमा– अल्लाह तआला ने वायदा किया है उन लोगों से, जो तुम में से ईमान लाये और उन्होंने अमले सालेह किये कि उनको ज़रूर रू–ए–ज़मीन का ख़लीफ़ा बनायेगा। (क़द अफ़–ल–ह, रुकूअ 13)

और यह भी इत्मीनान दिलाया है कि मोमिन हमेशा कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब रहेंगे और काफ़िरों का कोई यार व मददगार न होगा।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا

तर्जुमा– और अगर तुम से यह काफ़िर लड़ते, तो ज़रूर पीठ फेर कर भागते, फिर न पाते कोई यार व मददगार! (पारा 26, रुकूअ 11)

और मोमिनों की नुसरत और मदद अल्लाह तआला के ज़िम्मे हैं और वही हमेशा सरबुलन्द व सरफ़राज़ रहेंगे।

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ

---

1. बोलना, बात करना, 2. कामियाबी, 3. ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा,

तर्जुमा– और हक़ है हम पर मदद ईमान वालों की।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○ (آل عمران ع ١٤)

तर्जुमा– और तुम हिम्मत मत हारो और रंज मत करो और ग़ालिब तुम ही रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन रहे। (पारा 4, रुकूअ 5)

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ (منافقون ع ١)

तर्जुमा– और अल्लाह ही की है इज़्ज़त और उसके रसूल सल्ल० की और मुसलमानों की। (सूरः मुनाफ़िक़ून)

मज़्कूरा बाला इर्शादात पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि मुसलमानों की इज़्ज़त, शान व शौकत, सरबुलन्दी व सरफ़राज़ी और हर बरतरी व ख़ूबी उनकी सिफ़ते ईमान के साथ वाबिस्ता[1] है। अगर इन का तअल्लुक़ ख़ुदा और रसूल सल्ल० के साथ मुस्तह्कम[2] है, (जो ईमान का मक़्सूद है) तो सब कुछ उनका है और अगर ख़ुदा–न–ख़्वास्ता इस राबिता–तअल्लुक़ में कमी और कमज़ोरी पैदा हो गयी है, तो फिर सरासर ख़ुसरान[3] और ज़िल्लत व ख़्वारी है, जैसा कि वाज़ेह तौर पर बतला दिया गया है।

وَالْعَصْرِ ○ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ○ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ○ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ○

तर्जुमा– क़सम है ज़माने की, इंसान बड़े ख़सारे में है, मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की फ़हमाइश करते रहे और एक दूसरे को पाबन्दी की फ़हमाइश करते रहे। (पारा अम्म)

हमारे अस्लाफ़ इज़्ज़त के मुन्तहा को पहुंचे हुए थे और हम इंतिहाई ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला हैं। पस मालूम हुआ कि वह कमाले ईमान से मुत्तसिफ़ थे और हम इस नेमते उज़्मा से महरूम हैं, जैसा कि मुख़बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी है–

سَيَاْتِيْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقٰى مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اِسْمُهٗ وَلَا مِنَ الْقُرْاٰنِ اِلَّا رَسْمُهٗ ـ

तर्जुमा– क़रीब ही ऐसा ज़माना आने वाला है कि इस्लाम का सिर्फ़ नाम

---

1. जुड़ी हुई, 2. मज़बूत, 3. नाकामी

बाक़ी रह जाएगा और क़ुरआन के सिर्फ़ नुक़ूश रह जाएंगे।

अब ग़ौर तलब अम्र यह है कि अगर वाक़ई हम उस हक़ीक़ी इस्लाम से महरूम हो गये, (जो खुदा और रसूल सल्ल० के यहां मतलूब है जिसके साथ हमारी दीन और दुनिया की फ़लाह व बहबूद वाबस्ता है) तो क्या ज़रिया है, जिससे वह खोयी हुई नेमत वापस आए ? और वह क्या अस्बाब हैं, जिनकी वजह से रूहे इस्लाम हममें से निकाल ली गयी और हम जसदे बेजान[1] रह गये ?

जब मस्हफ़े आसमानी की तिलावत की जाती है और 'उम्मते मुहम्मदिया' सल्ल० की फ़ज़ीलत और बरतरी की इल्लत [2] व ग़ायत ढूंढी जाती है, तो मालूम होता है कि इस उम्मत को एक आला और बरतर काम सुपुर्द किया गया था, जिसकी वजह से 'ख़ैरुल उमम' का मुअ़ज़्ज़ज़ ख़िताब उसको अता किया गया।

दुनिया की पैदाइश का मक़्सदे असली ख़ुदा-ए-वह दहू ला शरी-क-लहू की ज़ात व सिफ़ात की मारफ़त[3] है और यह उस वक़्त तक नामुम्किन है, जब तक बनी नौए इंसान को बुराइयों और गन्दगियों से पाक करके भलाइयों और ख़ूबियों के साथ आरास्ता[4] न किया जाए। इसी मक़्सद के लिए हज़ारों रसूल और नबी भेजे गए और आख़िर में इस मक़्सद की तक्मील के लिए सय्यिदुल अंबिया वलमुर्सलीन को मब्ऊस फ़र्माया और

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

अलयौ-म अक्मल्तु लकुमदीनकुम व अत-मम्तु अलैकुम नेमती का मुज़दा[5] सुनाया गया

अब चूंकि मक़्सद की तक्मील हो चुकी थी, हर भलाई और बुराई को खोल-खोल कर बयान कर दिया गया था, एक मुकम्मल निज़ामे अमल दिया जा चुका था, इसलिए रिसालत व नुबूवत के सिलसिले को ख़त्म कर दिया गया और जो काम पहले नबी और रसूल से लिया जाता था वह क़यामत तक 'उम्मते मुहम्मदिया' के सुपुर्द कर दिया गया।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ (آل عمران ۱۱۰)

---

1. बे-रूह जिस्म, 2. वजहें, 3. पहचान, 4. सजाया हुआ, 5. ख़ुशख़बरी,

तर्जुमा– ऐ उम्मते मुहम्मदिया ! तुम अफ़ज़ल उम्मत हो तुमको लोगों के नफ़ा के लिए भेजा गया है, तुम भली बातों को लोगों में फैलाते हो और बुरी बातों से उनको रोकते हो। और अल्लाह पर ईमान रखते हो। (पारा लन् तनालू)

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ
اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِؕ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ (آل عمران ع ١١)

तर्जमा– और चाहिए कि तुम में ऐसी जमाअत हो कि लोगों को ख़ैर की तरफ बुलाये, और भली बातों का हुक्म करे और बुरी बातों से मना करे और सिर्फ़ वही लोग फ़लाह वाले हैं जो इस काम को करते हैं। (पारा लन तनालू)

पहली आयत में 'ख़ैरे उमम'[1] होने की वजह यह बतलायी गयी कि तुम भलाई को फैलाते हो और बुराई से रोकते हो। दूसरी आयत में हस्र के साथ फ़र्मा दिया कि फ़लाह व बहबूद सिर्फ़ उन्हीं लोगों के लिए है जो इस काम को अंजाम दे रहे हैं। इसी पर बस नहीं, बल्कि दूसरी जगह साफ़ तौर पर बयान कर दिया गया कि इस काम को अंजाम न देना लानत और फिटकार का मूजिब है।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ○ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ
لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ○ (مائدہ ع ١١)

तर्जुमा– बनी इस्राईल में जो लोग काफ़िर थे, उन पर लानत की गयी थी दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से। यह लानत इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गये, जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था, उस से बाज न आते थे, वाक़ई उनका यह फ़ेल बेशक बुरा था। -सूरः माइदा

इस आख़िरी आयत की मज़ीद वज़ाहत अहादीसे ज़ेल से होती है–

(١) وَفِى السُّنَنِ وَالْمُسْنَدِ مِنْ حَدِيْثِ
عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ
اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ مَنْ
كَانَ قَبْلَكُمْ كَانَ اِذَا عَمِلَ الْعَامِلُ فِيْهِمْ

---

1. सब उम्मतों में बेहतरीन,

بِالْخَطِيْئَةِ جَاءَهُ النَّاهِي تَعْزِيْرًا فَقَالَ يَا
هٰذَا اتَّقِ اللّٰهَ فَإِذَا كَانَ مِنَ الْغَدِ جَالَسَهٗ
وَوَاكَلَهٗ وَشَارَبَهٗ كَأَنَّهٗ لَمْ يَرَهٗ عَلٰى خَطِيْئَةٍ
بِالْأَمْسِ فَلَمَّا رَأَى عَزَّ وَجَلَّ ذٰلِكَ مِنْهُمْ

ضَرَبَ بِقُلُوْبِ بَعْضِهِمْ عَلٰى بَعْضٍ ثُمَّ
لَعَنَهُمْ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّهِمْ دَاوُدَ وَ
عِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ

तर्जमा— हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि तुम से पहली उम्मतों में जब कोई ख़ता करता, तो रोकने वाला उसको धमकाता और कहता कि ख़ुदा से डर, फिर अगले ही दिन उसके साथ उठता बैठता, खाता-पीता, गोया कल उसको गुनाह करते हुए देखा ही नहीं। जब हक़ अज़-ज़ व जल-ल ने उनका यह बर्ताव देखा तो बाज़ के क़ुलूब को बाज़ के साथ ख़लत कर दिया और उनके नबी दाऊद और ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम की ज़ुबानी उन पर लानत की और यह इसलिए कि उन्होंने ख़ुदा की नाफ़र्मानी की और हद से तजावुज़ किया।

كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ
بِيَدِهٖ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَلَتَأْخُذُنَّ عَلٰى يَدِ

السَّفِيْهِ وَلَتَأْطُرُنَّ عَلَى الْحَقِّ أَطْرًا
أَوْ لَيَضْرِبَنَّ اللّٰهُ بِقُلُوْبِ بَعْضِكُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ثُمَّ يَلْعَنُكُمْ لَعَنَهُمْ

तर्जुमा— क़सम है उस ज़ात पाक की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल॰ की जान है, तुम ज़रूर अच्छी बातों का हुक्म करो और बुरी बातों से मना करो और चाहिए कि बेवक़ूफ़ नादान का हाथ पकड़ो उसको हक़ बात पर मजबूर, करो वरना हक़ तआला तुम्हारे क़ुलूब को भी ख़लत-मलत कर देंगे और फिर तुम पर भी लानत होगी, जैसा कि पहली उम्मतों पर लानत हुई।

(٢) وَفِيْ سُنَنِ أَبِيْ دَاوُدَ وَابْنِ مَاجَهْ
عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ سَمِعْتُ
رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يَقُوْلُ مَا مِنْ رَجُلٍ يَكُوْنُ فِيْ قَوْمٍ
يَعْمَلُ فِيْهِمْ بِالْمَعَاصِيْ يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى أَنْ يُغَيِّرُوْا عَلَيْهِ وَلَا يُغَيِّرُوْنَ

तर्जुमा— हज़रत जाबिर रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि अगर किसी जमाअत और क़ौम में कोई आदमी गुनाह करता है और वह क़ौम बावजूद क़ुदरत के उसको नहीं रोकती, तो उन पर मरने से पहले ही हक़ तआला अपना अज़ाब भेज देते हैं यानी दुनिया ही में उनको

तरह-तरह के मसाइब में मुब्तला कर दिया जाता है।

وروی الاصبہانی عن انسؓ ان رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال لاتزال لا الٰہ
الا اللہ تنفع من قالہا وترد عنہم العذاب و
النقمۃ مالم یستخفوا بحقہا قالوا یارسول
اللہ وما الاستخفاف بحقہا قال یظہر العمل
بمعاصی اللہ فلا ینکر ولا یغیر۔ (ترغیب)

तर्जुमा— हजरत अनस रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि हमेशा कलमा ला इला-ह इल्लल्लाह अपने पढ़ने वालों को नफ़ा देता है और उस से अज़ाब व बला को दूर करता है, जब तक कि उसके हुक़ूक़ से बेपरवाई न बरती जाए। सहाबा ने अर्ज किया, उसके हुक़ूक़ की बेपरवाई क्या है ? हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ ने इर्शाद फ़र्माया कि हक़ तआला की नाफ़र्मानी खुले तौर पर की जाए, फिर न उन का इन्कार किया जाए, और न उन को बन्द करने की कोशिश की जाए।

عن عائشۃؓ قالت دخل علی النبی صلی
اللہ علیہ وسلم فعرفت فی وجہہ ان قد حضرہ
شئی فتوضأ وما کلم احدًا فلصقت بالحجرۃ
استمع مایقول فقعد علی المنبر فحمد اللہ واثنی
علیہ وقال یاایہا الناس ان اللہ تعالیٰ یقول لکم
مروا بالمعروف وانہوا عن المنکر قبل ان تدعوا
فلا اجیب لکم وتسألونی فلا اعطیکم وتستنصرونی
فلا انصرکم فما زاد علیہن حتی نزل۔
(ترغیب)

तर्जुमा— हजरत आइशा रज़ि॰ फ़र्माती हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तश्रीफ़ लाये, तो मैंने चेहरा-ए-अन्वर पर एक ख़ास असर देख कर महसूस किया कि कोई अहम बात पेश आयी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ ने किसी से कोई बात नहीं की और वुज़ू फ़र्मा कर मस्जिद में तश्रीफ़ ले गये। मैं मस्जिद की दीवार से लग गयी, ताकि जो कुछ इर्शाद हो, उसको सुनूं। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ मिंबर पर जलवा अफ़रोज हुए और हम्द व सना के बाद फ़र्माया, 'लोगो! अल्लाह तआला का हुक्म है कि भली बातों का हुक्म करो और बुरी बातों से मना करो। मुबादा[1] वह वक़्त आ जाए कि तुम दुआ मांगो और मैं उसको क़ुबूल न करूं और तुम मुझसे सवाल करो और मैं उस को पूरा न करूं और तुम मुझसे मदद चाहो और

1. अचानक,

मैं तुम्हारी मदद न करूं।' हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने यह सिर्फ कलमात इर्शाद फ़र्माये और मिंबर से उतर गये।

عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا عظمت امتی الدنیا نزعت منہا ھیبۃ الاسلام واذا ترکت الامر بالمعروف والنھی عن المنکر حرمت برکۃ الوحی واذا تسابت امتی سقطت من عین اللہ ۔ (کذا فی الدر عن الحکیم الترمذی)

तर्जुमा– हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि जब मेरी उम्मत दुनिया को क़ाबिले वकअत व अज़मत समझने लगेगी, तो इस्लाम की वकअत व हैबत उनके क़ुलूब से निकल जाएगी और जब अम्र बिल मारूफ़ और नहिल अनिल मुन्कर को छोड़ देगी, तो वह्यी की बरकत से महरूम हो जाएगी और जब आपस में एक दूसरे को सब्ब व शतम[1] करना इख़्तियार करेगी तो अल्लाह जल्ले-शानुहू की निगाह से गिर जाएगी।

अहादीसे मज़्कूरा पर ग़ौर करने से यह बात मालूम हुई कि अम्र बिल मारूफ़[2] व नहियअनिल मुन्कर[3] को छोड़ना ख़ुदा-ए-वह्दहू ला शरीक की लानत और ग़ज़ब का बाइस है और जब उम्मते मुहम्मदिया इस काम को छोड़ देगी, तो सख़्त मसाइब व आलाम और ज़िल्लत व रुस्वारी में मुब्तला कर दी जाएगी और हर क़िस्म की ग़ैबी नुसरत व मदद से महरूम हो जाएगी। और यह सब कुछ इसलिए होगा कि उसने अपने फ़र्ज़ेमंसबी को नहीं पहचाना और जिस काम की अंजामदही की ज़िम्मेदार थी, उससे ग़ाफ़िल रही। यही वजह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अम्र बिल मारूफ़ और नहिअनिल मुन्कर को ईमान का ख़ास्सा और जुज़्व लाज़मी क़रार दिया और उसके छोड़ने को ईमान के ज़ोफ़ और इज़्मिहलाल[4] की अलामत बतायी।

हदीसे अबूसईद ख़ुदरी में है– مَنْ رَاٰى مِنْكُمْ مُّنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ وَذٰلِكَ اَضْعَفُ الْاِيْمَانِ ۔ (مسلم)

1. गाली-गलौच, 2. नेकी का हुक्म देना, 3. बुरे काम से रोकना,
4. कमज़ोरी,

तर्जुमा :– 'तुम में से जब कोई शख़्स बुराई को देखे, तो चाहिए कि अपने हाथों से काम लेकर उसको दूर करे और अगर उसकी ताक़त न पाये, तो ज़ुबान से और अगर उस की भी ताक़त न पाये तो दिल से और यह आख़िरी सूरत ईमान की बड़ी कमज़ोरी का दर्जा है।' (-मुस्लिम)

पस जिस तरह आख़िरी दर्जा अज़अफ़े ईमान[1] का हुआ उसी तरह पहला दर्जा कमाले दावत और कमाले ईमान का हुआ। इससे भी वाज़ेह तर हदीस इब्ने मसऊद रज़ि० की है-

مَا مِنْ نَبِيٍّ بَعَثَهُ اللّٰهُ قَبْلِي إِلَّا كَانَ لَهُ فِي أُمَّتِهِ حَوَارِيُّونَ وَأَصْحَابٌ يَأْخُذُونَ بِسُنَّتِهِ وَيَقْتَدُونَ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِنَّهَا تَخْلُفُ مِنْ بَعْدِهِمْ خُلُوفٌ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ وَيَفْعَلُونَ مَا لَا يُؤْمَرُونَ فَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِيَدِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِلِسَانِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِقَلْبِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَيْسَ وَرَاءَ ذٰلِكَ مِنَ الْإِيمَانِ حَبَّةُ خَرْدَلٍ (مسلم)

तर्जुमा :– 'यानी सुन्नते इलाही यह है हर नबी अपने साथियों और तर्बियत याफ़ता यारों की एक जमाअत छोड़ जाता है। यह जमाअत नबी की सुन्नत को क़ायम रखती है और ठीक-ठीक उसकी पैरवी[2] करती है यानी शरीअते इलाही को जिस हाल और जिस शक्ल में नबी छोड़ गया है, उसको बेऐनिही[3] महफ़ूज़ रखते हैं और इसमें ज़रा भी फ़र्क़ नहीं आने देते, लेकिन इसके बाद शर व फ़ितन का दौर आता है और ऐसे लोग पैदा हो जाते हैं, जो तरीक़ा-ए-नबी से हट जाते हैं। इनका फ़ेल इनके दावे के ख़िलाफ़ होता है और उनके काम ऐसे होते हैं, जिनके लिए शरीअत ने हुक्म नहीं दिया। सो ऐसे लोगों के ख़िलाफ़, जिस शख़्स ने क़ियामे हक़ व सुन्नत की राह में अपने हाथ से काम लिया वह मोमिन है और ऐसा जो न कर सका, मगर ज़ुबान से काम लिया, वह भी मोमिन है और जिससे यह भी न हो सका और दिल के एतक़ाद और नीयत के सबात को उनके ख़िलाफ़ काम में लाया, वह भी मोमिन है, लेकिन इस आख़िरी दर्जे के बाद ईमान का कोई दर्जा नहीं, इस पर ईमान की सरहद ख़त्म हो जाती है, हत्ताकि अब राई के दाने बराबर भी ईमान नहीं हो सकता।'

---

1. ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा, 2. ताबेदारी, 3. ज्यों की त्यों,

इस काम की अहमियत और ज़रूरत को इमाम ग़ज़ाली रह० ने इस तरह ज़ाहिर फ़र्माया है-

'इस में कुछ शक नहीं कि अम्र बिल मारूफ़ और नहिय अनिल मुन्कर दीन का ऐसा ज़बरदस्त रुक्न है, जिससे दीन की तमाम चीज़ें वाबस्ता हैं। इसको अंजाम देने के लिए हक़ तआला ने तमाम अंबिया-ए-किराम अलै० को मब्ऊस फ़र्माया। अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता उसको बाला-ए-ताक़ रख दिया जाए और उसके इल्म व अमल को तर्क कर दिया जाए, तो अल-अयाज़ु बिल्लाही, नुबूवत का बेकार होना लाज़िम आएगा। दियानत, जो शराफ़ते इंसानी का ख़ास्सा है, मुज़्महिल[1] और अफ़सुर्दा हो जाएगी। काहिली और सुस्ती आम हो जाएगी। गुमराही और ज़लालत की शाहराहें खुल जाएंगी, जिहालत आलमगीर हो जाएगी, तमाम कामों में ख़राबी आ जाएगी। आपस में फूट पड़ जाएगी, आबादियां ख़राब हो जाएंगी, मख़्लूक़ तबाह व बर्बाद हो जाएगी और इस तबाही व बर्बादी की उस वक़्त ख़बर होगी, जब रोज़े मह्शर ख़ुदा-ए-बाला व बरतर के सामने पेशी और बाज़पुर्स होगी।

अफ़सोस, सद अफ़सोस, जो ख़तरा था, वह सामने आ गया, जो खटका था, आंखों ने देख लिया।

كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا فَاِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ○

इस सर सब्ज़ स्तून के इल्म व अमल के निशानात मिट चुके, इस की हक़ीक़त व रसूम की बरकतें नेस्त व नाबूद[2] हो गयीं। लोगों की तह्क़ीर व तज़्लील का सिक्का क़ुलूब पर जम गया। ख़ुदा-ए-पाक के साथ का क़ल्बी ताल्लुक़ मिट चुका और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के इत्तिबाअ में जानवरों की तरह बेबाक हो गये। रू-ए-ज़मीन पर ऐसे सादिक़ मोमिन का मिलना दुश्वार व कमयाब ही नहीं, बल्कि मादूम[3] हो गया जो इज़्हारे हक़ की वजह से किसी की मलामत गवारा करे।

अगर कोई मर्दे मोमिन इस तबाही व बर्बादी के इज़ाले में सई[4] करे और इस सुन्नत के एह्या में कोशिश करे और इस मुबारक बोझ को

---

1. कमज़ोर, 2. मलयामेट, 3. ख़त्म, 4. कोशिश,

लेकर खड़ा हो और आस्तीन चढ़ा कर इस सुन्नत के ज़िंदा करने के लिए मैदान में आए, तो यक़ीनन वह शख़्स तमाम मख़्लूक़ में एक मुम्ताज़ और नुमायां हस्ती का मालिक होगा।'

इमाम ग़ज़ाली रह० ने जिन अलफ़ाज़ में इस काम की अहमियत और ज़रूरत को बयान किया है, वह हमारी तंबीह और बेदारी के लिए काफ़ी हैं।

हमारे इस क़दर अहम फ़रीज़ा से ग़ाफ़िल होने की चंद वुजूह मालूम होती हैं।

पहली वजह यह है कि हमने इस फ़रीज़े को उलमा के साथ ख़ास कर लिया, हालांकि ख़िताबाते क़ुरआनी आम हैं, जो उम्मते मुहम्मदिया के हर-हर फ़र्द को शामिल हैं और सहाबा किराम रज़ि० और ख़ैरुल क़ुरून[1] की ज़िंदगी इसके लिए शाहिदे अदल[2] है।

फ़रीज़ा-ए-तब्लीग़ और अम्र बिल मारूफ़ और नहि अनिल मुन्कर को उलमा के साथ ख़ास कर लेना और फिर उनके भरोसे पर इस अहम काम को छोड़ देना हमारी सख़्त नादानी है। उलमा का काम राहे हक़ बतलाना और सीधा रास्ता दिखलाना है, फिर उस के मुआफ़िक़ अमल कराना और मख़्लूक़े ख़ुदा को उस पर चलाना यह दूसरे लोगों का काम है। इसी की जानिब इस हदीस शरीफ़ में तंबीह की गयी है।

أَلَا كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ فَالْأَمِيْرُ الَّذِيْ عَلَى النَّاسِ رَاعٍ عَلَيْهِمْ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْهُمْ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلٰى أَهْلِ بَيْتِهٖ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْهُمْ وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلٰى بَيْتِ بَعْلِهَا وَوَلَدِهٖ وَهِيَ مَسْئُوْلَةٌ عَنْهُمْ وَالْعَبْدُ رَاعٍ عَلٰى مَالِ سَيِّدِهٖ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْهُ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ.

तर्जुमा– बेशक तुम सब के सब निगहबान हो और तुम सब अपनी रैय्यत के बारे में सवाल किये जाओगे। पस बादशाह लोगों पर निगेहबान है। वह अपनी रैय्यत के बारे में सवाल किया जाएगा और मर्द अपने घर वालों पर निगेहबान है

---

1. मुराद दौरे नुबूवत, 2. सच्चे गवाह,

उससे उनके बारे में सवाल किया जाएगा और औरत अपने ख़ाविंद के घर औलाद पर निगेहबान है, वह उन के बारे में सवाल की जाएगी और ग़ुलाम अपने मालिक के माल पर निगेहबान है, इससे उसके बारे में सवाल किया जावेगा। पस तुम सब निगेहबान हो और तुम सब से अपनी रैय्यत के बारे में सवाल किया जावेगा।

और इसी को वाज़ेह तौर पर इस तरह बयान फ़र्माया है-

قَالَ الدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ قُلْنَا لِمَنْ قَالَ لِلّٰهِ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِاَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامَّتِهِمْ. (مسلم)

तर्जुमा– हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने फ़र्माया, दीन सरासर नसीहत है। हमने (यानी सहाबा ने) अर्ज़ किया, किस के लिए ? फ़र्माया, अल्लाह के लिए और अल्लाह के रसूल के लिए और मुसलमानों के मुक़्तदाओं के लिए और आम मुसलमानों के लिए।

और अगर बफ़र्ज़महाल मान भी लिया जाए कि यह उलमा का काम है, तब भी इस वक़्त फ़िज़ा-ए-ज़माना का मुक़्तज़ा[1] यही है कि हर शख़्स इस काम में लग जाए और ऐअला-ए-कलिमतुल्लाह और हिफ़ाज़ते दीने मतीन के लिए कमरबस्ता हो जाए।

दूसरी वजह यह है कि हम यह समझ रहे हैं कि अगर हम ख़ुद अपने ईमान में पुख़्ता हैं, तो दूसरों की गुमराही हमारे लिए नुक़्सानदेह नहीं, जैसा कि इस आयते शरीफ़ा का मफ़्हूम है-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ (مائده-ع ١٤)

तर्जुमा– ऐ ईमान वालो, अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो, तो जो आदमी गुमराह है, उससे तुम्हारा कोई नुक़्सान नहीं। (बयानुल्क़ुरआन)

लेकिन दर हक़ीक़त आयत से यह मक़्सूद नहीं, जो ज़ाहिर में समझा जा रहा है, इसलिए कि यह मानी हिक्मते ख़ुदावन्द और तालीमाते शरईया के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। शरीअ़ते इस्लामी ने इज्तिमाई ज़िंदगी और इज्तिमाइ इस्लाह और इज्तिमाइ तरक़्क़ी को असल बतलाया है और उम्मते मुस्लिमा को बमंज़िला एक जिस्म के क़रार दिया है कि अगर एक अज़्व में दर्द हो जाए, तो तमाम जिस्म बेचैन हो जाता है।

---

1. तक़ाज़ा,

बात दरअसल यह है कि बनी नौए इन्सान ख़्वाह कितनी ही तरक़्क़ी कर जाए और कमाल को पहुंच जावे, उसमें ऐसे लोगों का होना भी ज़रूरी है, जो सीधे रास्ते को छोड़ कर गुमराही में मुब्तला हों तो आयत में मोमिनों के लिए तसल्ली है कि जब तुम हिदायत और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ायम हो, तो तुम को उन लोगों से मज़र्रत[1] का अंदेशा नहीं, जिन्होंने भटक कर सीधा रास्ता छोड़ दिया।

नीज़ असल हिदायत यह है कि इंसान शरीअते मुहम्मदिया को मय तमाम अह्काम के क़ुबूल करे और मिनजुम्ला अह्कामे ख़ुदावन्दी के एक अम्र बिल मारूफ़ और नहि अनिल मुन्कर भी है।

हमारे इस क़ौल की ताईद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस इर्शाद से होती है–

عَنْ اَبِی بَكْرِ الصِّدِّيْقِ قَالَ اَيُّهَا النَّاسُ اِنَّكُمْ تَقْرَءُوْنَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ وَاِنِّیْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنَّ النَّاسَ اِذَا رَاَوُا الْمُنْكَرَ فَلَمْ يُغَيِّرُوْهُ اَوْشَكَ اَنْ يَّعُمَّهُمُ اللّٰهُ بِعِقَابِهٖ

तर्जुमा– हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत हैं, आपने फ़र्माया, ऐ लोगों ! तुम यह आयत या ऐयुहल्लज़ी–न आमनू अलैकुम अन्फ़ुसकुम ला यज़ुर्रुकुम मन ज़ल–ल इज़हतदैतुम० को पढ़ते हो और मैंने रसूलुल्लाह सल्लाहू अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़र्माते हुए सुना है कि जब लोग ख़िलाफ़े शरह किसी चीज़ को देखें और उस में तग़य्यूर[2] न करें, तो क़रीब है कि हक़ तआला उन लोगों को अपने उमूमी अज़ाब में मुब्तला फ़र्मा दे।

उलमा–ए–मुहक़्क़िक़ीन ने भी आयत के यही मानी लिए हैं। इमाम नववी रह० शरहे मुस्लिम में फ़र्माते हैं–

'उलमा–ए–मुहक़्क़िक़ीन का सही मज़हब इस आयत के मानी में यह है कि जब तुम उस चीज़ को अदा कर दो, जिस का तुम्हें हुक्म दिया

1. तब्दीली, 2. नसीहत करने वाला,

> गया है, तो तुम्हारे ग़ैर की कोताही तुम्हें मज़र्रत न पहुंचाएगी, जैसा कि हक़ तआला का इर्शाद हैं **'ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़-र उख़रा'** और जब ऐसा है तो मिन जुम्ला इन अश्या के जिनका हुक्म दिया गया अम्र बिल मारूफ़ व नहि अनिल मुन्कर है। पस जब किसी शख़्स ने इस हुक्म को पूरा कर दिया और मुख़ातिब ने इसकी तामील न की, तो अब नासेह[2] पर कोई इताब और सरज़निश नहीं, इसलिए कि जो कुछ उस के ज़िम्मे वाजिब था और वह अम्र व नहि है, उसने उसको अदा कर दिया, दूसरे का क़ुबूल करना, उसके ज़िम्मे नहीं, वल्लाहु आलम !'

तीसरी वजह यह है कि अवाम ख़वास, आलिम व जाहिल हर शख़्स इस्लाह से मायूस हो गया। और उन्हें यक़ीन हो गया कि अब मुसलमानों की तरक़्क़ी और उन का उरूज नामुम्किन और दुश्वार है। जब किसी शख़्स के सामने कोई इस्लाही निज़ाम पेश किया जाता है, तो जवाब यही मिलता है कि मुसलमानों की तरक़्क़ी अब कैसे हो सकती है ? जबकि उनके पास न सलतनत व हुकूमत है, न माल व ज़र और न सामाने हर्ब[1] और न मर्कज़ी हैसियत, व क़ूव्वते बाज़ू और न बाहमी इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद।'

बिल ख़ुसूस दीनदार तब्क़ा तो बज़ोमे ख़ुद[2] यह तै कर चुका है कि अब पंद्रवीं सदी है, ज़माना-ए-रिसालत को बोद[3] हो चुका। अब इस्लाम और मुसलमानों का इन्हितात[4] एक लाज़मी शै है, पस इसके लिए जद्दोजेहद करना अब्स और बेकार है यह सही है कि जिस क़दर मिश्काते नुबूवत से बोद होता जाएगा, हक़ीक़ी इस्लाम की शुआएं मांद पड़ती जाएंगी, लेकिन इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि बक़ाए शरीअत और हिफ़ाज़ते दीने मुहम्मदी के लिए जद्दोजेहद और सई न की जाए, इस लिए कि अगर ऐसा होता और हमारे अस्लाफ़ भी ख़ुदा-न-ख़्वास्ता यही समझ लेते, तो आज हम तक इस दीन के पहुंचने की कोई सबील न थी। अलबत्ता जबकि ज़माना नामुवाफ़िक़ है, तो रफ़्तारे ज़माना को देखते हुए ज़्यादा हिम्मत और इस्तक़्लाल के साथ इस काम को लेकर खड़े होने की ज़रूरत है।

ताज्जुब है कि जो मज़हब सरासर अमल और जहद[5] पर मुब्नी था, आज उसके पैरू[6] अमल से यकसर ख़ाली हैं, हालांकि क़ुरआने मजीद और हदीस शरीफ़

---

1. जंगी सामान, 2. अपने गुमान में, 3. दूरी, 4. पस्ती, 5. कोशिश,
6. पैरवी करने वाले,

में जगह-जगह अमल और जद्द का सबक पढ़ाया और बतलाया है कि एक इबादतगुज़ार तमाम रात नफ़्ल पढ़ने वाला, दिन भर रोज़े रखने वाला, अल्लाह-अल्लाह करने वाला हरगिज़ उस शख़्स के बराबर नहीं हो सकता, जो दूसरों की इस्लाह और हिदायत की फ़िक्र में बेचैन हो।

क़ुरआन करीम ने जगह-जगह जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की ताकीद की और मुजाहिद की फ़ज़ीलत और बरतरी को नुमायां किया।[1]

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

(نساء - ع ١٣)

तर्जुमा— बराबर नहीं वह मुसलमान, जो बिला किसी उज़्र के घर में बैठे हैं और वह लोग जो अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करें। अल्लाह तआला ने उन लोगों का दर्जा बहुत ज़्यादा बुलन्द किया है, जो अपने माल व जान से जिहाद करते हैं बनिस्बत घर में बैठने वालों के और सबसे अल्लाह तआला ने अच्छे घर का वायदा कर रखा है और अल्लाह तआला ने मुजाहिदों को बमुक़ाबला घर में बैठने वालों के बड़ा अज्रे अज़ीम दिया है यानी बहुत से दर्जे जो ख़ुदा की तरफ़ से मिलेंगे और मग़्फ़िरत व रहमत और अल्लाह बड़ी मग़्फ़िरत व रहमत वाले हैं।

अगरचे आयत में जिहाद से मुराद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सीना-ए-सपर[2] होना है, ताकि इस्लाम का बोलबाला हो और कुफ़्र व शिर्क मग़्लूब व मक़्हूर हो, लेकिन अगर बद-क़िस्मती से आज हम इस सआदते उज़्मा से महरूम है, तो इस मक़्सद के लिए जिस क़दर जद्दोजेहद हमारी मक़्दरत और इस्तिताअत में हैं, उसमें तो हरगिज़ कोताही न करना चाहिए, फिर हमारी यही मामूली हरकते अमल और जद्दोजहद हमें कशा-कशा आगे बढ़ाएगी यानी जो लोग हमारी दीन के लिए कोशिश करते हैं हम उनके लिए अपने रास्ते खोल देते हैं।

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

---

1. ज़ाहिर किया, 2. तवज्जोह,

इसमें शक नहीं कि दीने मुहम्मदी की बक़ा और तहफ़्फ़ुज़ का हक़ तआला ने वायदा किया है, लेकिन इसके उरूज व तरक़्क़ी के लिए हमारा अमल और सई मत्लूब है। सहाबा किराम ने इसके लिए जिस क़दर अनथक कोशिश की, उसी क़दर समरात[1] भी मुशाहदा किये और ग़ैबी नुसरत से सरफ़राज़ हुए, हम भी उन के नाम लेवा हैं, अगर अब भी हम उनके नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करें और ऐअला-ए-कलिमतुल्लाह और इशाअते इस्लाम के लिए कमरबस्ता हो जाएं तो यक़ीनन हम भी नुसरते ख़ुदाबन्दी और इम्दादे ग़ैबी से सरफ़राज़ होंगे।

إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ط

तर्जुमा:- यानी अगर तुम ख़ुदा के दीन की मदद के लिए खड़े हो जाओगे, तो ख़ुदावन्दे करीम तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा।

चौथी वजह यह है कि हम यह समझते हैं कि जब हम ख़ुद इन बातों के पाबन्द नहीं और इस मंसब के अहल नहीं, तो दूसरों को किस मुंह से नसीहत करें, लेकिन यह नफ़्स का सरीह धोखा है। जब एक काम करने का और हक़ तआला की जानिब से हम इसके मामूर हैं, तो फिर हमें इसमें पस व पेश की गुंजाइश नहीं। हमें ख़ुदा का हुक्म समझ कर काम शुरू कर देना चाहिए फिर इन्शाअल्लाह यही जद्दोजेहद हमारी पुख़्तगी इस्तिहकाम और इस्तिक़ामत का बाइस होगी और उसी तरह करते-करते एक दिन तक़र्रुबे ख़ुदावन्दी की सआदत नसीब हो जाएगी। यह नामुम्किन और मुहाल है कि हम हक़ तआला के काम में जद्दोजेहद करें और वह रहमान व रहीम हमारी तरफ़ लुत्फ़ करम न फ़र्माये।

मेरे इस क़ौल की ताईद इस हदीस से होती है-

عَنْ أَنَسٍ قَالَ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللّٰهِ لَا نَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ حَتّٰى نَعْمَلَ بِهِ كُلِّهِ وَلَا نَنْهٰى عَنِ الْمُنْكَرِ حَتّٰى نَجْتَنِبَهُ كُلَّهُ فَقَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَلْ مُرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَإِنْ لَمْ تَعْمَلُوا بِهِ كُلِّهِ وَانْهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَإِنْ لَمْ تَجْتَنِبُوهُ كُلَّهُ۔

(رواه الطبراني في الصغير والاوسط)

तर्जुमा- हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हम भलाइयों का हुक्म न करें, जब तक ख़ुद तमाम पर अमल न करें और बुराइयों से मना न करें, जब तक ख़ुद तमाम बुराइयों से न बचें। हुज़ूरे अक़्दस

---

1. फ़ायदा उठाने वाला,

सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, नहीं, बल्कि तुम भली बातों का हुक्म करो, अगरचे तुम ख़ुद इन सब के पाबन्द न रहो और बुराइयों से मना करो, अगरचे तुम इन सब बुराइयों से न बच रहे हो।

पांचवी वजह यह है कि हम समझ रहे हैं कि जगह-जगह मदारिसे दीनिया का क़ायम होना, उलमा का वाज़-नसीहत करना, ख़ानक़ाहों का आबाद होना, मज़हबी किताबों का तस्नीफ़ होना, रिसालों का जारी होना यह सब अम्र बिल मारूफ़ व नहि अनिल मुन्कर के शोबे हैं और इनके ज़रिए इस फ़रीज़े की अदाएगी हो रही है। इस में शक नहीं कि इन सब इदारों का क़याम और बक़ा बहुत ज़रूरी है और उनकी जानिब ऐअतना[1] अहम उमूर से है, इसलिए कि दीन की जो कुछ थोड़ी बहुत झलक दिखलायी दे रही है, वह इन्हीं इदारों के मुबारक आसार हैं, लेकिन फिर भी अगर ग़ौर से देखा जाए, तो हमारी मौजूदा ज़रूरत के लिए यह इदारे काफ़ी नहीं हैं और इन पर इक्तिफ़ा करना हमारी ख़ुली ग़लती है, इसलिए कि इन इदारों से उस वक़्त मुन्तफ़अ[2] हो सकते हैं, जब हम में दीन का शौक़ और तलब हो और मज़हब की वकअत और अज़्मत हो। अब से 50 साल पहले हममें शौक़ व तलब मौजूद था और ईमानी झलक दिखलाई देती थी, इसलिए इन इदारों का क़याम हमारे लिए काफ़ी था, लेकिन आज ग़ैर-अक़्वाम की अनथक कोशिशों ने हमारे इस्लामी जज़्बात बिल्कुल फ़ना कर दिये और तलब व रग़बत के बजाए आज हम मज़हब से मुतनिफ़्फ़र[3] और बेज़ार नज़र आते हैं। ऐसी हालत में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम मुस्तक़िल कोई तहरीक ऐसी शुरू करें, जिससे अवाम में दीन के साथ ताल्लुक़ और शौक़ व रग़बत पैदा हो और उनके सोये हुए जज़्बात बेदार हों। फिर हम इन इदारों से इनकी शान के मुताबिक़ मुन्तफ़अ हो सकते हैं, वरना अगर इसी तरह दीन से बे-रग़बती और बे-एतनाई बढ़ती गयी, तो इन इदारों से इन्तिफ़ाअ[4] तो दर किनार, इनका बक़ा भी दुश्वार नज़र आता है।

छठी वजह यह है कि जब हम इस काम को लेकर दूसरों के पास जाते हैं, तो वह बुरी तरह पेश आते हैं और सख़्ती से जवाब देते हैं और हमारी तौहीन व तज़्लील करते हैं, लेकिन हमें मालूम होना चाहिए कि यह काम अंबिया किराम की नियाबत है और इन मसाइब और मशक़्क़तों में मुब्तला होना इस काम का ख़ास्सा है और यह सब मसाइब व तकालीफ़, बल्कि इससे भी ज़ाइद अंबिया किराम अलै०

---

1. तवज्जोह, 2. फ़ायदा उठाने वाला, 3. नफ़रत करने वाले, 4. फ़ायदा उठाना,

ने इस राह में बर्दाश्त कीं। हक़ तआला का इर्शाद है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ (حجر ع ۱)

तर्जुमा– हम भेज चुके हैं रसूल तुम से पहले अगले लोगों के गिरोहों में और उनके पास कोई रसूल नहीं आया था, मगर यह उसकी हंसी उड़ाते रहे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है–

'दावते हक़ की राह में जिस क़दर मुझ को अज़ीयत और तक्लीफ़ में मुब्तला किया गया है, किसी नबी और रसूल को नहीं किया गया।'

पस जब सरदारे दो आलम सल्ल० और हमारे आक़ा और मौला ने इन मसाइब और मशक़्क़तों को तहम्मुल और बुर्दबारी के साथ बरदाश्त किया, तो हम भी उन के पैरो हैं और उन्हीं का काम लेकर खड़े हुए हैं, हमको भी इन मसाइब से परेशान न होना चाहिए और तहम्मुल और बुर्दबारी के साथ उनको बर्दाश्त करना चाहिए।

मसबक़ से यह बात बख़ूबी मालूम हो गयी कि हमारा असल मर्ज़ रूहे इस्लामी और हक़ीक़ते ईमानी का ज़ोफ़ और इज़्मिहलाल है, हमारे इस्लामी जज़्बात फ़ना हो चुके और हमारी ईमानी क़ूव्वत ज़ायल हो चुकी और जब असल शै में इन्हितात आ गया, तो उसके साथ जितनी ख़ूबियां और भलाइयां वाबस्ता थीं, उनका इन्हितात पज़ीर होना भी लाबुदी और ज़रूरी था और उस ज़ोफ़ व इन्हितात का सबब उस असल शै को छोड़ देना है, जिस पर तमाम दीन का बक़ा और दारोमदार है और वह अमर बिल मारूफ़ और नहि अनिल मुन्कर है। ज़ाहिर है कि कोई क़ौम उस वक़्त तक तरक़्क़ी नहीं कर सकती, जब तक कि उसके अफ़राद ख़ूबियों और कमालात से आरास्ता न हों।

पस हमारा इलाज सिर्फ़ यह है कि हम फ़रीज़ा-ए-तब्लीग़ को ऐसी तरह लेकर खड़े हों, जिससे हममें क़ूव्वते ईमानी बढ़े और इस्लामी जज़्बात उभरें। हम ख़ुदा और रसूल को पहचानें और अह्कामे ख़ुदावन्दी के सामने सरनगूं हों और इस के लिए हमें वही तरीक़ा इख़्तियार करना होगा जो सय्यिदुल अंबिया वल मुर्सलीन ने मुश्रिकीने अरब की इस्लाह के लिए अख़्तियार फ़र्माया–

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

तर्जुमा:– बेशक तुम्हारे लिए रसूल अल्लाह मे अच्छी पैरवी है इसी की जानिब इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु इशारा फ़र्माते हैं–

لَنْ يُّصْلِحَ اٰخِرَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اِلَّا مَآ اَصْلَحَ اَوَّلَهَا

तर्जुमा:– यानी इस उम्मते मुहम्मदिया के आख़िर में आने वाले लोगों की हरगिज इस्लाह नहीं हो सकती, जब तक कि वही तरीक़ा इख़्तियार ने किया जाए, जिसने इब्तिदा में इस्लाह की है।

जिस वक्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दावते हक़ लेकर खड़े हुए, आप सल्ल॰ तंहा थे, कोई आप का साथी और हम–ख़्याल न था। दीनवी कोई ताक़त आप को हासिल न थी। आपकी क़ौम में ख़ुदसरी[1] और ख़ुद राई इन्तिहा दर्जे को पहुंची हुई थी। इनमें से कोई हक़ बात सुनने और इताअत करने पर आमादा न था, बिल ख़ुसूस जिस कलिमा–ए–हक़ की आप तब्लीग़ करने को खड़े हुए थे, उससे तमाम क़ौम के क़ुलूब मुतनफ़्फ़िर और बेजार थे। इन हालात में कौन–सी ताक़त थी, जिस से एक मुफ़्लिस व नादार बे–यार व मददगार इंसान ने तमाम क़ौम को अपनी तरफ़ खींचा। अब ग़ौर कीजिए कि आख़िर यह क्या चीज थी, जिसकी तरफ़ आप ने मख़्लूक़ को बुलाया और जिस शख़्स ने इस चीज को पा लिया, वह फिर हमेशा के लिए आप का हो रहा। दुनिया जानती है कि सिर्फ़ एक सबक़ था जो आप का मतमहे नज़र और मक़्सूदे असली था, जिसको आप ने लोगों के सामने पेश किया कि–

اَنْ لَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا
اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ (آل عمران ع٧)

तर्जुमा– बजुज़ अल्लाह तआला के हम किसी और की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हममें से कोई दूसरे को रब न क़रार दे अल्लाह तआला को छोड़ कर।

अल्लाह व वहदहू लाशरी–क लहू के सिवा हर शै की इबादत और इताअत और फ़र्मांबरदारी की मुमानअत की और अग़यार के तमाम बन्धनों और इलाक़ों को तोड़ कर एक निज़ामे अमल मुक़र्रर कर दिया और बतला दिया कि इससे हट कर किसी दूसरी तरफ़ रुख़ न करना।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ (اعراف ع١)

तर्जुमा– तुम लोग उसकी इत्तिबा करो, जो तुम्हारे पास रब की तरफ़

से आयी है और अल्लाह तआला को छोड़ कर दूसरे लोगों का इत्तिबाअ मत करो।

यही वह असल तालीम थी, जिसकी इशाअत का आप सल्ल० को हुक्म दिया गया–

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ○ (نحل ١٥٤)

तर्जुमा– ऐ मुहम्मद सल्ल० ! बुलाओ लोगों को अपने रब के रास्ते की तरफ हिक्मत और नेक नसीहत से और उनके साथ बहस करो जिस तरह बेहतर हो। बेशक तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है उस शख़्स को जो गुमराह हो उसकी राह से। वही ख़ूब जानता है राह पर चलने वालों को और यही वह शाह राह थी जो आपके लिए और आपके हर पैरो के लिए मुक़र्रर की गयी।

قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ○ (يوسف)

तर्जुमा– कह दो यह है मेरा रास्ता, बुलाता हू अल्लाह की तरफ समझ–बूझ कर मैं और जितने मेरे ताबेअ हैं, वह भी और अल्लाह पाक है और मैं शरीक करने वालों में से नहीं हूं।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ○ (حم سجده ع ٤)

तर्जुमा– और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है, जो ख़ुदा की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे, मैं फ़र्मांबरदारों में से हूं।

पस अल्लाह तआला की तरफ़ से उसकी मख़्लूक़ को बुलाना, भटके हुओं को राहे हक़ दिखलाना, गुमराहों को हिदायत का रास्ता दिखलाना, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वज़ीफ़ा–ए–हयात[1] और आपका मक़्सदे असली था और इसी मक़्सद की नश्व व नुमा और आबयारी के लिए हज़ारों नबी और रसूल भेजे गये।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ○ (الانبياء ع ٢)

1. तकब्बुर और बड़ाई,

तर्जुमा– और हम ने नहीं भेजा तुमसे पहले कोई रसूल, मगर उसकी जानिब यही वहि भेजते थे कि कोई माबूद नहीं, बजुज़ मेरे, पस मेरी बन्दगी करो।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यिबा[1] और दीगर अंबियाए किराम के मुक़द्दसे लम्हाते ज़िंदगी पर जब नज़र डाली जाती है, तो मालूम होता है कि सब का मक्सद और नस्बुलऐन सिर्फ़ एक है और वह अल्लाह रब्बुल आलमीन वहदहू ला शरी-क लहू की ज़ात व सिफ़ात का यक़ीन करना यही ईमान और इस्लाम का मफ़्हूम है और इसीलिए इंसान को दुनिया में भेजा गया।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

तर्जुमा– यानी हमने जिन्नात और इंसान को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है कि वह बन्दा बनकर ज़िंदगी बसर करें।

अब जबकि मक्सदे ज़िंदगी वाज़ेह हो गया और असल मर्ज़ और उसके मुआलजा की नोईयत मालूम हो गयी, तो तरीक़े इलाज की तज्वीज़ में ज़्यादा दुश्वारी पेश न आएगी, और इस नज़रिए के मातहत जो भी इलाज का तरीक़ा इख़्तियार किया जाएगा, इन्शाअल्लाह नाफ़ेअ और सूदमंद होगा। हमने अपनी नारसा फ़हम के मुताबिक़ मुसलमानों की फ़लाह व बहबूद के लिए एक निज़ामे अमल तज्वीज़ किया है , जिस को फ़िल हक़ीक़त इस्लामी ज़िंदगी या अस्लाफ़ की ज़िंदगी का नमूना कहा जा सकता है, जिसका इज्माली नक़्शा आपकी ख़िदमत में पेश है।

सबसे अहम और पहली चीज़ यह है कि हर मुसलमान तमाम अग़राज़ व मक़ासिदे दीनवी से क़ता-ए-नज़र[2] करके ऐअ-ए-कलिमतुल्लाह और इशाअते इस्लाम और अह्कामे ख़ुदावन्दी के रिवाज और सरसब्ज़ी को अपना नस्बुलऐन बना दे और इस बात का पुख़्ता अहद करे कि हक़ तआला के हर हुक्म को मानूंगा और उस पर अमल करने की कोशिश करूंगा और कभी ख़ुदावन्दे करीम की नाफ़र्मानी न करूंगा।

और इस नस्बुलऐन की तक्मील के लिए इस दस्तूरुल अमल पर कारबन्द हो।

1. कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** का सेहते अल्फ़ाज़ के साथ याद करना और उस के माना व मफ़्हूम को समझना और ज़ेहन नशीन करने

---

1. पाक-साफ़-साफ़, 2. नज़र फेरना,

की कोशिश करना, और अपनी पूरी ज़िन्दगी को उसके मुआफ़िक़ बनाने की फ़िक्र करना।

2. नमाज़ का पाबन्द होना, उस के आदाब व शराइत का लिहाज़ रखते हुए ख़ुशूअ[1] और ख़ुज़ूअ के साथ अदा करना और हर-हर रुक्न में ख़ुदावन्दे करीम की अज़्मत व बुज़ुर्गी और अपनी बन्दगी और बेचारगी का ध्यान करना, ग़रज़ इस कोशिश में लगे रहना कि नमाज़ इस तरह अदा हो, जो उस रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह की हाज़िरी के शायाने शान हो। ऐसी नमाज़ की कोशिश करता रहे और हक़ तआला से उस की तौफ़ीक़ तलब करे। अगर नमाज़ का तरीक़ा मालूम न हो, तो उस को सीखे और नमाज़ में पढ़ने की तमाम चीज़ों को याद करे।

3. क़ुरआन करीम के साथ वाबस्तगी और दिलबस्तगी पैदा करना, जिस के दो तरीक़े हैं-

(क) कुछ वक़्त रोज़ाना अदब और एहतिराम के साथ, माना व मफ़्हूम का ध्यान करते हुए तिलावत करना। अगर आलिम न हो और माना व मफ़्हूम को समझने से क़ासिर हो, तब भी बग़ैर माना समझे कलामे रब्बानी की तिलावत करे और समझे कि मेरी फ़लाह व बहबूद इसी में मुज़्मर[2] है। महज़ अल्फ़ाज़ का पढ़ना भी सआदते उज़्मा है और मूजिबे ख़ैर व बरकत है और अगर अल्फ़ाज़ भी नहीं पढ़ सकता, तो थोड़ा वक़्त रोज़ाना क़ुरआन मजीद की तालीम में सर्फ़ करना।

(ख) अपने बच्चों और अपने मुहल्ले और गांव के लड़कों और लड़कियों की क़ुरआन मजीद और मज़हबी तालीम की फ़िक्र करना और हर काम पर उस को मुक़द्दम रखना।

4. कुछ वक़्त यादे इलाही और ज़िक्र व फ़िक्र में गुज़ारना। पढ़ने के लिए कोई चीज़ किसी शेख़े तरीक़त मुत्तबए सुन्नत से दरयाफ़्त करे, वरना कलिमा सोम

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا
قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۝

सुब्हानल्लाहि वल-हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम० और दरूद व

---

1. आजिज़ी, 2. छुपा होना,

इस्तिग़फ़ार की तस्बीह सुबह और एक शाम माना का ध्यान करते हुए जी लगा कर इत्मीनाने क़ल्ब के साथ पढ़े। हदीस में इस की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है।

5. हर मुसलमान को अपना भाई समझना, उसके साथ हमदर्दी और ग़मगुसारी का बर्ताव करना, सिफ़ते इस्लाम की वजह से उस का अदब व एहतराम करना और ऐसी बातों से बचना, जो किसी मुसलमान भाई की तक्लीफ़ व अज़ीयत का बाइस हो। इन बातों का ख़ुद भी पाबन्द बने और कोशिश करे कि हर मुसलमान उनका पाबन्द बन जाए।

जिसका तरीक़ा यह है कि ख़ुद भी अपना कुछ वक़्त दीन की ख़िदमत के लिए फ़ारिग़ करे और दूसरों को भी तर्ग़ीब देकर दीन की ख़िदमत और इशाअते इस्लाम के लिए आमादा करे।

जिस दीन की इशाअत के लिए अंबिया-ए-किराम अलै० ने मशक़्क़तें बर्दाश्त कीं, तरह-तरह के मसाइब में मुब्तला हुए, सहाबा किराम और हमारे अस्लाफ़ ने अपनी उम्रों को उसमें सर्फ़ किया और उसकी ख़ातिर राहे ख़ुदा में अपनी जानों को क़ुर्बान किया, उस दीन की तर्वीज[1] व बक़ा के लिए थोड़ा वक़्त न निकालना बड़ी बद-नसीबी और ख़ुसरान[2] है और यही वह अहम फ़रीज़ा है, जिसको छोड़ देने की वजह से आज हम तबाह व बर्बाद हो रहे हैं।

पहले मुसलमान होने का मफ़्हूम यह समझा जाता था कि अपनी जान व माल, इज़्ज़त व आबरू इशाअते इस्लाम और ऐअला-ए-कलिमतुल्लाह की राह में सर्फ़ करे और जो शख़्स इसमें कोताही करता था, वह बड़ा नादान समझा जाता था, लेकिन अफ़सोस कि आज हम मुसलमान कहलाते हैं और दीन की बातों को अपनी आंखों से मिटता हुआ देख रहे हैं, फिर भी इस दीन की बक़ा व तरवीज के लिए कोशिश करने से गुरेज़ करते हैं। ग़रज़ ऐअला-ए-कलिमतुल्लाह और इशाअते दीने मतीन जो मुसलमान का मक़्सदे ज़िंदगी और असली काम था और जिसके साथ हमारे दोनों जहान की फ़लाह व तरक़्क़ी वाबस्ता थी और जिसको छोड़ कर आज हम ज़लील व ख़्वार हो रहे हैं, अब फिर हमें अपने उसी असल मक़सद को इख़्तियार करना चाहिए और इस काम को अपना जुज़्वे ज़िंदगी और हक़ीक़ी मश्ग़ला बनाना चाहिए, ताकि फिर रहमते ख़ुदावन्दी जोश में आवे और हमें दुनिया व आख़िरत की सुर्ख़रूई और शादाबी नसीब हो।

---

1. आम करना, चालू करना, 2. घाटा-नुक़सान।

इसका यह मतलब हरगिज नहीं कि अपना तमाम कारोबार छोड़ कर बिल्कुल इस काम में लग जाएं, बल्कि मक्सद यह है कि जैसा और दुनियावी ज़रूरियात इंसान के साथ लगी हुई हैं और उनको अंजाम दिया जाता है, इस काम को भी ज़रूरी और अहम समझ कर इसके वास्ते वक्त निकाला जाए। जब चंद आदमी इस मक्सद के लिए तैयार हो जाएं, तो हफ़्ते में चंद घन्टे अपने मुहल्ले में और महीने में तीन दिन क़ुर्ब व जवार के मवाज़आत में और साल में एक चिल्ला दूर के मवाज़आत में इस काम को करें और कोशिश करें कि हर मुसलमान अमीर हो या ग़रीब, ताजिर हो या मुलाज़िम, ज़मींदार हो या काश्तकार, आलिम हो या जाहिल, इस काम में शरीक हो जाए और इन उमूर का पाबन्द बन जाए।

काम करने का तरीक़ा

कम से कम दस आदमियों की जमाअत तब्लीग़ के लिए निकले। अव्वल अपने में से एक शख़्स को अमीर बना दे और फिर सब मस्जिद में जमा हों और वुज़ू कर के दो रक्अत नफ़्ल अदा करें (बशर्ते कि वक़्त मक्रूह न हो) बाद नमाज़ सब मिल कर हक़ तआला की बारगाह में इल्तिजा करें और नुस्रत व कामियाबी और ताईदे ख़ुदावन्दी और तौफ़ीक़े इलाही को तलब करें और अपने सबात और इस्तक्लाल की दुआ मांगे। दुआ के बाद सुकून व वकार के साथ आहिस्ता-आहिस्ता हक़ तआला का ज़िक्र करते हुए रवाना हों और फ़िज़ूल बात न करें। जब उस जगह पहुंचें, जहां तब्लीग़ करनी है, तो फिर सब मिल कर हक़ तआला से दुआ मांगें, और तमाम मुहल्ले या गांव में गश्त कर के लोगों को जमा करें। अव्वल उनको नमाज पढ़वाएं और इन उमूर की पाबन्दी का अहद लें और इस तरीक़े पर काम करने के लिए आमादा करें और इन लोगों के हमराह घरों के दरवाज़ों पर जाकर औरतों से भी नमाज़ पढ़वाएं, और इन बातों की पाबन्दी की ताकीद करें।

जो लोग इस काम को करने के लिए तैयार हो जाएं, उनकी एक जमाअत बना दी जाए, और उनमें से एक शख़्स को उनका अमीर मुकर्रर कर दिया जाए और अपनी निगरानी में उनसे काम शुरू करा दिया जाए, और फिर उनके काम की निगरानी की जाए। हर तब्लीग़ करने वाले को चाहिए कि अपने अमीर की इताअत करे और अमीर को चाहिए कि अपने साथियों की ख़िदमतगुज़ारी और राहतरसानी, हिम्मत अफ़ज़ाई और हमदर्दी में कमी न करे और क़ाबिले मश्वरा बातों में सबसे मश्वरा लेकर उस के मुवाफ़िक़ अमल करे।

तब्लीग़ के आदाब

यह काम हक़ तआला की एक अहम इबादत और सआदते उज़्मा है और अंबिया-ए-किराम की नियाबत है। काम जिस क़दर बड़ा होता है, उसी क़दर आदाब को चाहता है। इस काम से मक़्सद दूसरों की हिदायत नहीं, बल्कि ख़ुद अपनी इस्लाह और अब्दियत[1] का इज़्हार और हुक्मे ख़ुदावन्दी की बजाआवरी और हक़ की रज़ाजूई है। पस चाहिए कि उमूरे मुन्दरजा को अच्छी तरह ज़ेहन नशीन करे और उनकी पाबंदी करे।

1. अपना तमाम ख़र्च खाने-पीने किराये वग़ैरह का हत्तल वुसअ़[2] ख़ुद बरदाश्त करे और अगर गुंजाइश और वुसअ़त हो तो अपने नादार साथियों पर भी ख़र्च करे।

2. अपने साथियों और इस मुक़द्दस काम के करने वालों की ख़िदमतगुज़ारी और हिम्मत अफ़ज़ाई को अपनी सआ़दत समझे और उनके अदब व ऐहतराम में कमी न करे।

3. आम मुसलमानों के साथ निहायत तवाज़ो और इन्किसारी का बर्ताव रखे। बात करने में नर्म लेहजा और ख़ुशामद का पहलू इख़्तियार करे। किसी मुसलमान को हिक़ारत और नफ़रत की नजर से न देखे, बिलख़ुसूस उलमा-ए-दीन की इज़्ज़त व अज़्मत में कोताही न करे, जिस तरह हम पर क़ुरआन व हदीस की इज़्ज़त व अज़्मत व अदब व एहतराम वाजिब और ज़रूरी है, उसी तरह इन मुक़द्दस हस्तियों की इज़्ज़त व अज़्मत, व अदब व एहतमाम भी ज़रूरी है, जिनको अल्लाह तआला ने अपनी इस नेमते उज़्मा से सरफ़राज़ फ़रमाया। उलमा-ए-हक़ की तौहीन दीन की तौहीन के मुरादिफ़ है जो ख़ुदा के ग़ैज़ व ग़ज़ब का मूजिब है।

4. फ़ुर्सत के ख़ाली वक़्तों को बजाए झूठ, ग़ीबत, फ़साद, लड़ाई, खेल-तमाशे के मज़हबी किताबों के पढ़ने और मज़हब के पाबन्द लोगों के पास बैठने में गुज़ारे, जिस से ख़ुदा व रसूल सल्ल० की बातें मालूम हों, ख़ुसूसन अय्यामे तब्लीग़ में फ़िज़ूल बातों और फ़िज़ूल कामों से बचे और अपने फ़ारिग़ औक़ात को यादे इलाही और ज़िक्र व फ़िक्र और दरूद व इस्तग़फ़ार में और तालीम और तअल्लुम में गुज़ारे।

---

1. बन्दा होना-गुलाम, 2. ताक़तभर-पूरी पूरी,

5. जायज तरीक़ों से हलाल रोज़ी हासिल करे और किफ़ायत शआरी के साथ उसको ख़र्च करे और अपने अह्ल व अयाल और दीगर अक़रबा के शरई हुक़ूक़ को अदा करे।

6. किसी नज़ाअी[1] मस्अला और फ़ुरूअी बात को न छेड़े, बल्कि सिर्फ़ असल तौहीद की तरफ़ दावत दे और अरकाने इस्लाम की तब्लीग़ करे।

7. अपने तमाम अफ़आल व अक्वाल को ख़ुलूसे नीयत के साथ मुजय्यन और आरास्ता करे कि इख़्लास के साथ थोड़ा अमल भी मुजिबे ख़ैर व बरकत और बाइसे समराते हूसना होता है और बग़ैर इख़्लास के न दुनिया ही में कोई समरा[2] निकलता है और न आख़िरत में अज्र व सवाब मिलता है। हज़रत मआज़ रज़ि० को जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यमन का हाकिम बना कर भेजा, तो उन्हों ने दर्ख़्वास्त की कि मुझे नसीहत कीजिए। हुज़ूरे अक्दस सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि दीन के कामों में इख़्लास का एहतिमाम रखना कि इख़्लास के साथ थोड़ा अमल भी काफ़ी है।

एक और हदीस में इर्शाद है कि 'हक़ तआला शानुहू आमाल में से सिर्फ़ उसी अमल को क़ुबूल फ़र्माते हैं जो ख़ालिस उन्हीं के लिए किया गया हो।'

दूसरी जगह इर्शाद है, 'हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे माल को नहीं देखते, बल्कि तुम्हारे क़ुलूब और तुम्हारे आमाल को देखते हैं।' पस सबसे अहम और असल शै यह है कि इस काम को ख़ुलूस के साथ करे, रिया और नमूद[3] का उसमें दख़ल न हो। जिस क़दर इख़्लास होगा, उसी क़दर काम में तरक़्क़ी और सरसब्ज़ी होगी।

उस दस्तूरुल अमल का मुख़्तसर ख़ाका आप के सामने आ गया और उस की ज़रूरत और अहमियत पर भी काफ़ी रोशनी पड़ गयी, लेकिन देखना यह है कि मौजूदा कशमकश और इज़्तिराब व बेचैनी में यह तरीक़े कार किस हद तक हमारी रहबरी कर सकता है और कहां तक हमारी मुश्किलात को दूर कर सकता है ?

इसके लिए फिर हमें क़ुरआन हकीम की तरफ़ रुजूअ करना होगा। क़ुरआन हकीम ने हमारी इस जद्दोजेहद को एक सूदमंद[4] तिजारत से ताबीर किया है और उसकी जानिब इस तरह रग़्बत दिलायी है—

---

1. इख़्तिलाफ़ी मस्अला, 2. फल-नतीजा 3. दिखावा, 4. फ़ायदेमंद,

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ
مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۝ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ
وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(صف، ع ٢)

तर्जुमा– ऐ ईमान वालो ! क्या मैं तुमको ऐसी सौदागरी बतलाऊं, जो तुमको एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले, तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल सल्ल॰ पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में तुम अपने माल और जान से जिहाद करो। यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है, अगर तुम कुछ समझ रखते हो। अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा और तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और उम्दा मकानों में, जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे। यह बड़ी कामियाबी है और एक और भी है कि तुम उसको पसन्द करते हो, अल्लाह की तरफ़ से मदद और जल्द फ़तहयाबी और आप मोमिनीन को बशारत दे दीजिए।

इस आयत में एक तिजारत का तज़्किरा है, जिसका पहला समरा यह है कि वह अज़ाबे अलीम[1] से निजात दिलाने वाली है, वह तिजारत यह है कि हम ख़ुदा और उस के रसूल सल्ल॰ पर ईमान लाएं और ख़ुदा की राह में अपने जान व माल के साथ जिहाद करें। यह वह काम है जो हमारे लिए सरासर ख़ैर है, अगर हममें कुछ भी अक्ल व फ़हम हो। इस मामूली काम पर हमें क्या मुनाफ़ा मिलेगा। हमारी तमाम लग़्ज़िशों और कोताहियों को एकदम माफ़ कर दिया जाएगा और आख़िरत में बड़ी-बड़ी नेमतों से सरफ़राज़ किया जाएगा। यह ही बहुत बड़ी कामियाबी और सरफ़राज़ी है, मगर इस पर बस नहीं, बल्कि हमारी चाहती चीज़ भी हमें दे दी जाएगी और वह दुनिया की सरसब्ज़ी और नुसरत व कामियाबी और दुश्मनों पर ग़ल्बा व हुक्मरानी है।

हक़ तआला ने हम से दो चीज़ों का मुतालबा किया–

अव्वल यह कि हम ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल॰ पर ईमान लावें, दूसरे यह कि अपने जान व माल से ख़ुदा की राह में जिहाद करें और उसके बदले में दो

---

1. दर्दनाक

चीज़ों की हमसे ज़मानत की। आख़िरत में जन्नत और अबदी चैन[1] और राहत और दुनिया में नुस्रत व कामियाबी।

पहली चीज़ जो हमसे मत्लूब है, वह ईमान है। ज़ाहिर है कि हमारी इस तरीक़ का मंशा भी यही है कि हमें हक़ीक़ी ईमान की दौलत नसीब हो।

दूसरी चीज जो हमसे मत्लूब है वह जिहाद है। जिहाद की असल अगरचे कुफ़्फ़ार के साथ जंग और मुक़ाबला है, मगर दर हक़ीक़त जिहाद का मंशा भी ऐअ़ला-एला-ए-कलिमतुल्लाह और अहकामे ख़ुदावन्दी का निफ़ाज़ और इजरा है और यही हमारी तह्‌रीक का मक़्सदे असली है।

पस यह मालूम हुआ कि जैसा कि मरने के बाद की ज़िंदगी का ख़ुशगवार होना और जन्नत की नेमतों से सरफ़राज़ होना ख़ुदा और रसूल सल्ल० पर ईमान लाने और उसकी राह में जद्दोजेहद करने पर मौक़ूफ़ है। ऐसा ही दुनियावी ज़िंदगी की ख़ुशगवारी और दुनिया की नेमतों से मुन्तफ़ा होना भी इस पर मौक़ूफ़ है कि हम ख़ुदा और रसूल सल्ल० पर ईमान लावें और अपनी तमाम जद्दोजेहद को उसकी राह में सर्फ़ करें और जब हम इस काम को अंजाम दे लेंगे यानी ख़ुदा और रसूल पर ईमान ले आवेंगे और उसकी राह में जद्दोजेहद कर के अपने आपको आमाले सालेहा से आरास्ता बना लेंगे, तो फिर हम रू-ए-ज़मीन की बादशाहत और ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ हो जाएंगे और सल्तनत व हुकूमत हमें दे दी जाएगी।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ
فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ
لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ
اَمْنًا ط يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ
بِيْ شَيْئًا ط (نور رکوع نمبر ٦)

तर्जुमा– तुम में जो लोग ईमान पर लावें और नेक अमल करें उनसे, अल्लाह तआला वायदा फ़र्माता है कि उनको ज़मीन में हुकूमत अता फ़र्मायेगा, जैसा कि इनसे पहले लोगों को हुकूमत दी थी और जिस दीन को उनके लिए पसन्द किया है, उसको उनके लिए क़ुव्वत देगा और उनके इस ख़ौफ़ के बाद उसको अम्न से बदल देगा, बशर्ते कि मेरी बन्दगी करते रहें और मेरे साथ किसी को शरीक न करें।

---

1. आराम-सुकून।

इस आयत में तमाम उम्मत से वायदा है ईमान व अमले सालेहा पर हुकूमत देने का, जिस का ज़हूर ख़ुद अहदे नबवी से शुरू हो कर ख़िलाफ़ते राशिदा तक मुत्तसलन मुम्तद रहा। चुनांचे जज़ीरा अरब आप के ज़माने में और दीगर मुमालिक ज़माना ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन में फ़त्ह हो गये और बाद में भी वक़्तन फ़-वक़्तन गो इत्तिसाल न हो, दूसरे सुलहा मुलूक व ख़ुलफ़ा के हक़ में इस वायदे का ज़हूर होता रहा औरआइन्दा भी होता रहेगा, जैसा कि दूसरी आयत में है-

إِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغَالِبُوْنَ ۝ (نحو٤ ربيان القرآن)

तर्जुमा:- पस मालूम हुआ कि इस दुनिया में चैन व राहत और इत्मीनान व सुकून और इज़्ज़त व आबरू की ज़िंदगी बसर करने की इसके अलावा कोई सूरत नहीं कि हम इस तरीक़े पर मज़बूती के साथ कारबन्द हों और अपनी इज्तिमाई और इन्फ़िरादी हर क़िस्म की क़ूव्वत इस मक़्सद की तक्मील के लिए वक़्फ़ करें।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

तर्जुमा- तुम सब अल्लाह के दीन को मज़बूत पकड़ो और टुकड़े-टुकड़े मत बनो।

यह एक मुख़्तसर 'निज़ामे अमल' है जो दरहक़ीक़त इस्लामी ज़िंदगी और अस्लाफ़ की ज़िंदगी का नमूना है।

मुल्क मेवात में एक अर्से से इस तर्ज़ पर काम करने की कोशिश की जा रही है और उस ना तमाम कोशिश का नतीजा यह है कि वह क़ौम रोज़-ब-रोज़ तरक़्क़ी करती जा रही है। इस काम के वह बरकात व समरात इस क़ौम पर मुशाहदा किये गये जो देखने से ताल्लुक़ रखते हैं। अगर तमाम मुसलमान इज्तिमाई तौर पर इस तरीक़े ज़िंदगी को इख़्तियार कर लें, तो हक़ तआला की ज़ात से उम्मीद है कि उनके तमाम मसाइब और मुश्किलात दूर हो जाएंगी और वह इज़्ज़त व आबरू और इत्मीनान व सुकून की ज़िंदगी पा लेंगे और अपने खोये हुए दबदबा और वक़ार को फिर हासिल कर लेंगे।

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

हर चंद मैंने अपने मक़सद को सुलझाने की कोशिश की, लेकिन यह चन्द तजावीज का मज्मूआ नहीं, बल्कि एक अमली निजाम का ख़ाका है, जिसको अल्लाह का एक बर्गज़ीदा बन्दा (सय्यिदी व मौलाई मख़्दूमी व मख़्दूमुल आलम हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रहमतुल्लाहि अलैहि) लेकर खड़ा हुआ और अपनी ज़िंदगी को इस मुकद्दस काम के लिए वक़्फ़ किया। इसलिए आपके लिए ज़रूरी है कि आप इन बे-रब्त सुतूर के पढ़ने और समझने पर हरगिज़ इक्तिफ़ा न करें। बल्कि इस काम को सीखें और इस निजाम का अमली नमूना देख कर उस से सबक़ हासिल करें और अपनी ज़िंदगी को इस सांचे में ढालने की कोशिश करें। इसी जानिब मुतवज्जह करना मेरा मक़्सूद है और बस-

मेरी क़िस्मत से इलाही पाएं यह रंगे क़ुबूल ,
फूल कुछ मैंने चुने हैं उन के दामन के लिए।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلٰى رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ
بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ؕ

व आख़िरुदअ़ वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही मुहम्मदिंव-व आलिही व अस्हाबिही अजमईन बिरहमति-क-या अर्हमर्राहिमीन०

محمود احمد حامد محمود قاسم عاقب فاتح خاتم حاشر ماح
داع سراج رشید منیر بشیر نذیر هاد مهدی رسول نبی طٰه یٰس مزمل
مدثر شفیع خلیل کلیم حبیب مصطفٰی مرتضٰی مجتبٰی مختار ناصر منصور قائم
حافظ شهید عادل حلیم نور حجة برهان ابطحی مؤمن مطیع مذکر واعظ
امین صادق مصدق صاحب
محمد صلی اللہ علیہ وسلم
مکی مدنی عربی هاشمی
تهامی حجازی نزاری قریشی مضری امی عزیز حریص رؤف رحیم یتیم غنی
جواد فتاح عالم طیب طاهر مطهر خطیب فصیح سید متقی امام بار
شاف متوسط سابق مقتصد مهدی حق مبین اول آخر ظاهر باطن رحمة
محرم امر ناه شکور قریب منیب مجیب مبلغ طس